



# आर्य सन्देश

६-११-१९५१ दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का साप्ताहिक मुखपत्र  
१९५१-५२

इस एक प्रति ५० पैसे वष ६ प्रक १ रविवार ४ नवम्बर १९५४ आय मर-नर १९५३-५४ १९ कार्तिक २०५१ दयान दार-५५

## अलगाववाद की ताकतों का विरोध करना होगा

हम राष्ट्र को खरिडत नहीं होने देंगे सभी देशवासी सकल्प ले  
स्वराज्य के मन्त्रदाता महर्षि दयानन्द का दिल्ली में १०१वां मध्य निर्वाण दिवस

### आर्य नेताओं का उद्बोधन :

इशाल सार्वजनिक सभा में महर्षि की श्रद्धाजलि

नई दिल्ली। महर्षि दयानन्द सरस्वती पहले भारतीय यजुर्विद्वान् उन्हीन उनी-  
श्री गान्धी ने मधुसूदन मानव समाज के अन्तर्गत श्री बान कही वह पहल भारतीय  
न क के जि गेन पुन स्वराज्य की बात कही उस बाद म हुमर राजनीति का और  
पस के तुहुराया। आज के ही नाकन फिर एकजुट हो रही हैं जि होन देस का पहल  
अने की कार्याय की धम प्रदा एय भाय के आधार पर अलगाववाद का माय का  
म जम कर विरोध करना होगा पिठना वष भक्तवान का बीता है उसम आयममाजन  
जगाववाद और विखण्डन के विरुद्ध राष्ट्रीय मुद्रासेवा द्वारा की कायबाही का समवन  
म्या है। इन कथा म मावदेविक सभा के प्रधान लाला रामगोपाल बालबाल न दवाता  
६ अक्तूबर, १९५६ के दिन प्राप्त 'रामनीना सेवा' के मध्य के द्वीय मभा दि-बी द्वारा  
योजित विशाल जनमभा का उद्बोधन किया। भारत सरकार की स्वास्थ उप  
जिनीमुषी कुमुद बन आगी ने जनता का आह्वान करत हू कहा—'आज हम स कल  
रना होगा कि हम राष्ट्र को खण्डित नही होने देंगे हमारा पुन स्वराज्य टूटे नही,  
पुल और पुष्ट हो इसके लिए आयजन प्रयत्नशील हू। नारी को उसका सम्मान देवान  
ले महर्षि दयानन्द ही के आयसमाज के वस नियम हमारे लिए पब प्रदमक है।  
बा पीठी को उनका अनुकरण करना चाहिए। इन अवसर पर श्री किनीस वैदालकार  
श्री बाबस्वति उपाध्याय के भाषण हुए।

इस अवसर पर सांख्यिक मभा के प्रधान श्री बालबाले ने घोषणा की कि  
१९२१ के ब्रिटिश सरकार के विरुद्ध निकाले गए जुलूस का घण्टाघर न नतुल करने  
न स्वामी खदानन्द के नाम पर चांदनी चौक का नाम खदानन्द चौक रखत का  
हवाल दिल्ली प्रशासन न स्वीकार कर लिया है इनसे पुन नियम न चौक पर रामसरण  
प्रवाल चौक की पट्टी लगाई की।

### ऐसी उपस्थिति पहले कभी नहीं

इस अवसर पर भाषण होते हुए  
हरी विधानसदन सरस्वती ने कहा—  
ज के-वि सभा द्वारा चासीसवी बार  
लिपि निर्वाण दिवस मनाया जा रहा  
परन्तु मैं कह सकता हू कि यह  
जगोह के समय इतनी बड़ी  
स्थिति पहले कभी नहीं रही। हमें  
रूप रखना होगा कि जिस राष्ट्र जन  
नस से सकृति, परम्परा तथा जन  
कह जाते हैं, उसकी आत्मा लभ हो  
जा है। इस की बान्ना की सुरक्षा के  
एककी सकृति और सम्पत्ति की  
न कनी होनी।

सांख्य परम्परा और सकृति की  
रक्षा कर ही भारत की आत्मा की फिर  
जोवी कर सकते हैं। यू यू ससद सदस्य  
श्री सिन्धुमार शास्त्री ने कहा कि महर्षि  
ने प्रतिपक्ष परिस्थितियों के काय कर  
भारतीय आत्मा की रक्षा की है। उन्होंने  
भारतीय महिलाओं का ऊपर उठाया है  
आयममाज ने क्षमकरणवास जैसे कायस्थ  
कुल म जन्मे व्यक्तियों को निवेदी बना कर  
अधवेद का भाष्य करने की क्षमता देना  
की है। इसी प्रकार गुरुकुल ने जन्मे पं  
सुश्रवत देव मन्त्रे महापु हाकर वेदमध्य  
कर रहे हैं।

सम्पादक—नरेन्द्र विद्याबास्वति



आय महासम्मेलन की अध्यक्षता करते हुए पं सत्यवत मिश्राजीवर  
परिदृष्टा मुद्रक्य कामजी विरारविद्यालय हनुमान रोड समाज के  
प्रधान श्री रामधुनि कला उनका स्थापित कर रहे हैं।

सावदासिक सभा के महाप-नी था  
बीम्पकाश लामो ने १९वीं शत-वीं के  
मुनप्रवर्तकों ने महर्षि दयानन्द की काल  
माषम ने तुलना की। विंगरी भी आय  
समाज के नियमा की महत्ता स्मारक करत  
हैं। महर्षि ने दिल्ली म ममार भग का मक  
वष प्रबलित करत का प्रय न किया न।

हम मभा म हनी आयममाज पजावी  
बात की मनिष्की कीमती भारत कुमार  
और श्रीमती ए की कपुन न शीतमर के  
हजुरी बात के वलन आयममाज मांवर

और आय पाठमामा के पुननिर्माण के  
लिए ५०००) आठ हजार रुपए का पैक  
सावदासिक सभा के प्रधान लाला राम-  
गोपाल गानवान का भेंट किया। बुधवार  
५ अक्तूबर का दीवाली का पब दिल्ली  
अर को धायममाजा आय मस्थाबा और  
आयजनता न आय क-नीय सभा के तस्था-  
बधान म १०१ व निवाण सष के रूप में  
मनाया। प्राप्त व बज विद्यालय वष हुभा,  
उसके बाद स्वामी विद्यानन्द सरस्वती ने  
भा-म पलाका कहाई।

व्यवस्थापक—प्रह मन्सास तलवार





## अग्नि आदि देवता क्यों कहलाते हैं ?

—मनोहर विद्यालयाकर

अग्नि-बना वाता देवता सूर्यो देवता चंद्रमा देवता  
वसुको देवता इंद्रा देवतादि वा देवता मरुतो देवता

विष्णुदेवा देवता ब्रह्मदेवित्ववन् द्वौ देवता वरुणो देवता यज्ञः १५।१०

ऋषि विद्वन् देवता—  
अग्नयं छत्रं—भूरिषि वाही विष्टप

गन्धर्व (अग्नि) उभयन  
माते'शान यति कांति और भस्म करने  
वाले तब—परमा मा जीवा मा मन  
गुप्त आश्रय महाभूत अग्नि आग्नि (देवता)  
स्वयं दीप्त हुनरा का गीत्य करन और  
किन्ती न किन्ती रूप म दान करन के  
कारण देवता है। (वान) गतिमय होकर  
प्रवृत्त तथा दीप्त का दूर करने वाल ०त्त्व  
(मृग) उपानयन करने प्रणा दान ए वय  
मय हान तथा ऐश्वर्य प्रकाश देने वाल  
तत्त्व (चंद्रमा) अग्निवाप्यामा का पुन करन  
तथा आह्लादित करने वाले गन्धर्व (देवता)  
देवता है (वयव) निवास का साधन  
बनने आगतिवा से अन्तर्गम द्वारा रक्षा  
करन वन तथा अघात को दूर करने  
वान तत्त्व (इन्द्र) उभय-द्वारा ज्ञान  
वा परिश्रम देने वाले तथा दण्ड द्वारा  
अपराधिया का रत्नाने वाल तत्त्व  
(आदिवा) भूयय तथा अतिरिक्त  
भाग को देने वाल अद्विष्ट प्रकृति के पुत्र  
अर्थात् उसके निकट रहने वाल तत्त्व  
(मरुत) कम बोलकर विविध प्रकार  
से रोषमान होने वाले हुनरा का रोषमान  
करने और अपने वर का पुन करन म  
मरुत तथा भारने सन हिंसकन वाल  
(विष्णुदेवा) जगत का धर्म सब ०त्त्व  
गुप्त स्मरण तत्त्व (देवता) देवता हैं  
(ब्रह्मदेव) ब्रह्म लोका तथा स्वर्गमा  
के पालक तथा रक्षिता (इन्द्र) किन्ती  
ऐश्वर्य से सम्पन्न तत्त्व तथा (वरुण)  
मत्त पनाही वाला माको को वरण करने  
और कराने वाल तत्त्व देवता है

किम्बध—जगत के प्रत्येक पदार्थ म  
दि यथा वा दान वन और साम पशुधान  
का सामर्थ्य है इसलिए उसे दान या देवता  
कह सकते हैं वेन म प्रकृत सभी नाम  
आवालयन अर्थात् यौगिक है इसलिए  
प्रत्येक नामको शब्द के स्थान और प्रयोग  
की दृष्टि से जानकर अर्थ किए जा सकते हैं।  
किन्ती नो नामवाचो गन्धर्वो किन्ती एक  
पदार्थ क लिए रुकनही मानना चाहिए।  
जगत क प्रत्येक पदार्थ परमा मा की  
अन्तर्गम शक्ति काय करती है इसलिए  
प्रत्येक पदार्थको नाम स अन्तिम अर्थ  
पर्यन्त न प्रत्येक म न इल म न के  
वर्णन देवताओं म स किन्ती क म की भुक्तो  
को धारण करके देव या देवता बन सकते  
हैं।

विशेष इस मन्त्र के ऋषि शब्द  
का अर्थ मन्त्र करता है कि ऋषि का  
प्रत्येक पदार्थ दिव्य है अथवा वह परमा  
म मा ही विद्वद्देव है उसके गुणा तथा  
उपयोगों का ज्ञान वाता ०त्त्व से साथ  
प्राप्त कर सकता है

मन्त्र क प्रत्येक नामवाचो शब्द को  
देवता माना है इससे भी ऊपर के संकेत  
की पुष्टि होती है कि मन्त्र म जाया प्रत्येक  
नामवाचो शब्द देवता के गुणों से युक्त  
है मन्त्र का छत्र का शब्द अमरकन करता  
है कि वह विष्टि मिष्टयुक्त बन अर्थात् काम  
काय को मा का अन्तर्गम कर धारण मन  
म मा तीना की साधना कर और अनेक  
समयस्थ तथा कर्मिष्ठ तीनों की स्तुति  
प्रधान उनके साथ वय योय अन्तर्गम  
कर ता प्रत्येक पदार्थ से अपना भरण  
पोषण कर सकते हैं और आह्लादी स्वति  
की प्राप्त करने का महागुण से युक्त हाकर  
कुछ भ्रमा से ब्रह्मसम बन सकते हैं

अयोध्या प्रमाण—नामाना वाक्या  
तजानि गिरं ११२ त नाम यनाभि  
वधाति स मम। देवता देवी दानाद्वा दीप  
नाद्वा वातनाद्वा वाक्वा स दावता निर  
द १५। अग्नि—अग्नीषो भवति अग्नि  
प्रथोभ्यन् ध्रग्यनयति द नमम ११५ प  
यति स्मरुष्यति अग्निं नृणि एति (इष्टमती  
११५३ उक्ति कर्त्तुं वा  
दह मस्मी करणे के दाय का) नि (नीज)  
प्रापय) वात—वा गतिन घनया।  
म घन हिंसनम दूय—य प्ररण बज  
प्रसवेदमयय। पुत्र अग्निपय। चंद्रमा—  
चन्दि आह्लासाने दापोय। वसव—  
वस निवासे वर का आश्रयने निवासयति  
वा तमा। मरुत भित्तवति अग्निमरुति  
बहुप्रकारम भित्तमग्निम वा रोच त रोच  
यत्तु वा स्मिय त बानन्त पुण्या द्वा—  
इल शब्दप्रत्यय कुमति रोचयत वा  
आदि य आवाहित बादीय त वा  
अग्नि पुना वा। विष्णुदेवा—सब  
देवता। ब्रह्मपति—ब्रह्मा नामना  
बहुतो वा जगत पति पालिता  
रक्षिता वा इन्द्र—इन्द्रा अन्तर्गम  
धारयति दातिना बीज बीहाधि  
दधानि विचारयति वा इव द्रवति  
गन्धर्वि वा इरी रमेत इ गीयेपति वरी  
भूत दि दध्यते प्राण वा इव करोति  
उपादीश्वराति पर्ययति वा। अस्व स्वयं  
धुमायुधममया दयता वा। वयव जा  
वाति कायिषत वा वृज वरण।

५२२ ईश्वरभवन सारीबाबाजी  
दिल्ली ६

## ❖ दीवाली दयानन्द की ❖

लेखिका श्रीमती सुशीलादेवी विद्यालकृता साहित्यरत्न

एक बार महर्षि अरवि द से किसी ने  
पे सुछा—आप दयानन्द जी को स्वामी  
दयानन्द या महर्षि दयानन्द क्यों नहीं  
कहते ? सिक दयानन्द ही क्यों कहते हैं ?  
महर्षि अरवि द ने कहा—महर्षि जो भारत  
भूमि पर अनेक हुए हैं और स्वामी भी  
जहां जहां दक्षिणाग्रह हो जाते हैं पर तु  
भारत की भूमि पर वय न द जसा आज  
तक न कोई हुआ है न होगा। इसलिए  
मैं तो उ ह दयानन्द ही कहूंगा। वरतु  
दीन दक्षिणो प दया करके ही आनंदित  
रहने वाल दयानन्द अपने आप मे एक ही  
से। दीवाली की राति है। ऋषिदयानन्द का  
पुण्य शरीर रोम रोम छांसे से भरा पड़ा  
है। कोई साधारण व्यक्तित्व होता ता करा  
होते कराहते ही कमरा गिर पर उठा  
लेता वर तु वहाहे दयानन्द। उस पीछा  
असह पीछा म भी प्रवृत्त वर अन्तिमचन व  
आमा। मांभो न पुछा स्वामीजी अ प कहा  
है ? उत्तर मिला—ईश्वरदेवता म। सच  
मुच ही दित दे ता ऐसा परश्रमिगार द  
कि र क का बड़ी की खुशी म गुजार द  
पीछा की पछिछो म भी सबका ज्ञान द  
वातन बना अनोखा ही व्यक्तित्व वा  
दयानन्द। स्वामीजी को अपने दद कांतिता  
नहीं थी। चिंता थी ता यह कि जाते जाते  
भी घबरे दिना म प्रकाश की किरण  
बिखेर कर जाए। ० गुरुदत्त विष्ट की  
नास्तिक से। प्रभु विष्टास के लिए भी ता  
प्रभु की कृपा की आवश्यकता है न वयैव  
वगत तन स व हृष्टप्रभु कृपा का पछो  
गुरुदत्त विष्टाधी ने गिया आ पृष्ट की  
स्व की ीन भवता मे कहा

१ सच विष्टिका दयन व वाल दो।  
२ स लग भागे दो पीछा जा जायो।  
३ ० गुरुदत्त विष्टाधी को अपने  
सामने की निशा म खड़ा रहने के लिए कथा  
५० गुरुदत्त विष्टाधी ऋषि दयानन्द के  
अन य मन्त्र से ऋषि के साथ तक  
वितक क त वे। पर तु उनम प्रभ  
विष्टास जाना न हो सका। महर्षि से  
कहते स्वामीजी! आपके तक अग्राप्य है  
पर तु क्या कक। मन म विष्टास नहीं  
जमता ऋषि कहते बहु समय भी आपणा  
जब विष्टास जमगा ऋषि ने स वा।  
इत प्रभरे दीए का प्रकाशित करता है।  
ऋषि दयानन्द न प्रभुभक्ति क म प्र  
पय। आ वि वादि वन अतिवृष्टिनि  
परामुख। मरमद्र त न सविमल रहते  
शक्ति यह कीर्तन भी अन्तर्गमिष्ठ है जिसके  
सहारे से इस पीछा म भी ऋषि के बेहतर  
पर दिव्य ०त्त्व है। चमक है। मुसकान है।  
माना पति प्र तज से कायुम। जा रह  
हो। अन्तर्गम की आध्यात्मिक शक्तिल है।  
भरसा छट चुका था। प्रभु विष्टास  
का प्रकाश मन म व्याप्त हो गया था।  
यह भी दयानन्द की ही दीवाली रजनी को  
तमपति कह जा सट पतिज जमम  
करती। क्या प्रकाश की किरण पाकर रह  
सकता काली घरता।  
१७५६ वरदान सूत्र बाबरपत्नी  
निज द्वावा (आश्रम प्रवच)



## एकता का बल।

पञ्जाब के महाशायन राजोतिमिह अपनी राजधानी लाहौर म ये कि उ न उनक  
गुप्तचरी ने खबर दी कि कबीली लुटेरो का एक दल सरहद क सूच क पेवाबर के शहर म  
पुप्त गया है और उसे लूट रहा है। महाशायन राजोतिमिह ने तुर त इलाके के सेनापति  
को बुलाया और पुछा— आपने पञ्जाबर नगर की सुरक्षा क्यों नहीं की ? सेनापति  
ने कुछ संकोच से कहा— महाशायन हमारे पास शहर के वरबर १५० सैनिक म और  
कबीली लुटेरो की सहाय बह हजार भी फलत हम उनका मुकाबला नहीं कर सके।

महाशायन राजोतिमिह ने अपने पास से बल द की सिपाही लिए और वह पञ्जाबर  
से लुटेरो की ओर पर टूट पड। उन सैनिका की बीरता और तलवाग के हमले के  
से सम्मुख कबीली लुटेरे टिक नहीं सके वे भागने ही नजर आए। लोटकर महाशायन  
से सेनापति से पुछा— मरे साथ कितने सिपाही थे और कबीली बिलत सिप ही थे ? सेना  
पति ने कहा महाशायन आपके साथ केवल बह सा सिपाही थे और कबील बह हजार  
थे। महाशायन ने कहा— इतने पर भी वे हार गए क्या कारण है ? आपणा हाहुरी  
और रोषमान ने कहा— महाशायन ने कहा— नही मेरे अकेले की बाहुरी से नहीं  
पर सबकी मिली हुई बहादुरी के कारण। इसी एकता से एक एक की दुस्मनी के सवा  
लाक के बराबर हो गिया।

—नरेंद्र

### जहाज से मृत्यु पर विजय

ओरेम बहादुर के तलाश देवा मृत्युमात्रात ।

इ जो हू बहादुर देवेस स्वराष्ट्रमात्र । ॥अथ ११५१६॥

जहाज और तप से देवो ने म म का हूर किया । इन्द्र न जहाज से हा देवा अवस्था दिव्य शक्ति सम्प न इन्द्रा के लिए तेज एव सुख को धारण किया ।

## ओम आर्य सन्देश

### सत्य एव न्याय का पक्षधर

पक्ष के हकी अ क मे बहीदा की आयसमाज कारीबाव म म के एक उ नारी आय काव कर्ता ने बही देवना ने एक प्रश्न उठाया है कि जिस आयसमाज की स्थापना ने बहुमन्यक जनता के सहयोग के साथ प्रत्येक व्यक्ति को एक मिश्र का वागदान रहा काकबाव आयसमाज म शिवा यास र धर व उनके नाम का उल्लेख है नाहीर है आयसमाज की स्थापना एक मुस्लिम मज्जम के घर हुई फिर बाव कारण है कि उसी आयसमाज का पाकिस्तान मे पक्ष स्पष्ट न बरित न बही ? उनका तथा उन जैसे बिबा रिका का कलन है कि जिस प्रकार बहिदान द मरस्वी स एव याव के पक्षधर के जैसे उनके अनुयायी नही रह गए है । महर्षि दयान द सरस्वत मुस्लिम विषय बिब सय माग ना उ होने बहा निराकार मयबा की स्तुति की बहा उनके रंगमन्त्र एव धमय व की पुनिकपक आलाचना करने मे कभी सक्ता नही किया । धियोवाफिस्ट आगमना के निम्नाने म अनुकूल व पर तु महर्षि न बिना ओ बह से ब मानव को ला । का खान रंगमन्त्र मानने से द कार कर दिया । महर्षि का भारतीय या बिदेसी मप्रदाया एव मन मना तपो से किसी उ द्वाय वा अनुयायी नही था इनके बावजूत उ होने मेक धर्मा के मौलिक म मिश्रता की एका तम उनके साम्प्रदायिक दूषणा की कलाई खालने मे कना मगोषी किया । बहु मन विषय के आशुता का उनक अन्ध और बुद्ध त शो का ठीक से ममक कर देवानुकुच मय वयकाषा क समर्थन क लिए निर नर अलत रहन उ हकी कारण इनकी म य एव यावियता का सभा स्वीकार करत थे ।

आयसमाज नस्था और उनके मस्थाक महर्षि का से देव पिछनी सभा गान्धी से देव बिदेशा म गज रहा है । इसके प्राथमिक जीवन मे इसके सदस्यो एव कायकान्वि की स यमिष्टा एव उच्च लक्ष्यो के लिए साधारण करन की बलि सभी सर हते थे । स्वकीनता के लक्ष्य का प्रश्न होता था छद्म समाज म व्य त कुरीतियो बरान्यो की दूर करने एव जनता के दुख से य को दूर बन का जब कभी कोई भी प्रश्न उठाया था तब उनमे महर्षि के अनयाया आयव पु मदा आन रहते थे प्राकृतिक सामाजिक एव राष्ट्रीय बिदेशा आन पर ये कम आबाव न मदा सदावा अवे रहते थे राष्ट्रीय चारित्रिक जन जीवन व वप्रणा व पर तु आज स्थिति इधर बैनी नही रह ग । यह ठीक है कि आज मसार पर म ५ ६ हजार से भी अधिक मिलती मे आयसमाज कायत है । इन मस्थाओ के ज मगत महर्षो शिष्य सस्थाए अज्ञान को दूर करने मे प्रयनशील हैं इसी तरह महात्मागान्धार नारी सु नति प्रीतिवाच निवारणा मे भी बही नस्था म आयजन एव हस्त्या का कर रही है । इतर लक्ष्य का साथ यह भी हलन्क्षनीय है कि आज आयसमाजो एव आयमस्थाओ का मौलिक स्वध्व बूटत बिषय हो गया है और बिषय भर मे इत बिचारधारा को धमोकार करने बाग भी काटि काटि आयबनो की गिनती की जा सकती है पर तु स्के बावजूत प्रकी सप्रदाया व समाज म कौमी इराई अ बाव एव भावा को दूर करने मे कदावा सदा उसक समर्थन का एहता जवा प्रचल सामुहिक उ माह देखने को नही मिलता ।

यही कारण है कि आज महर्षो के शास्त्राय देखने को नही मिलत सिधो मुसलमाना ईसाइयो अथवा हि दू धम क धरप गमत दुरास्था एव मुनताओ की ओर इ गित कर सच्चे मानवधम का सेता गजान वाले नही मिलते । ऐसे स्मरण रहना हकीमा के महर्षि दयान द सरस्वती का प्रकीर्ण एव मसबादा से परिपुण बरित बिषय हि दू समाज के म रूप मे आयसमाज का शास्त्र नही किया था । उन्होंने ता भारतीय बिदेशी सभा सन्ध्याओ की कुरीतियो एव ब धविस्थाओ आत धाराओ का उग्रपलन कर आज बिदेश मे परितुष्ट मानव धम के प्रतीक वैदिक धम का से देश सुनया था । जब बहु निराकार मयबा का स्तवन करते थे उसका गुणगानुदा करते थे तब ईसाई मुस्लिम और सिख उनके चरणो मे पड़ुते थे पर त उनके पड़ुते पर ये उनके मतो की कुरीतियो और दुराधो का परीक्षा करन मे रती भर भी सकोष नही करते थे । यदि महर्षि ५६ वष की आयु मे हो बलि नही बढ जाते तो मन्मथ या कि बहु अपनी धारा की स्थिति मे उन प्रवेशो का दुरा कायाका न कर जाते बहा आज पाकिस्तान

का बिदेशी निर्माण कर गए हैं । महर्षि निर्माण के बाद की लघा आयसमाज के जीवन की दूधरी घाताब्दी मे शक्ति हत महर्षि के हाग प्रशंति माग का अनुमरण कर बराई को बुआई और ब-आई को अ-आई कहन की उगाओर सन्धाई का अनंतरण कर सके ता अय व यो ने म महर्षि और आयसमाज का म देव ऐस मना म म्या त ह सफा जहू वह आज दिखाई नही दे रहा ।



चिट्ठी पत्री

त्रिभाषा सूत्र के प्रस्तवत  
हिंदी प्रनियाव विषय

मह जानकर अ य त प्रस नमा हूड कि नि प्रशासन म ११ १० ८४ का हिंदी शिक्षक सम्मेलन की गई व पणा के अनंतर नवी तथा न्स्वी बसाका म त्रिभाषा सूत्र के जनगत हिंदी का अनियाव विषय बनान का नियम किया है । इन नियम क लिए दिल्ली प्रशासन क यवाग का राज है और के द मरकार मे आहूत कन ह कि बहु इस नियम को गीन स्वीकार करे और यह निजी क स्मनो म यवाधीन साम किया जा नके । ग्याहूवी तथा ग्याहूवी बसाका म सभी विपदा का माध्यम हिंदी रखा जाना चाहिए । ग्याहूवी तथा ग्याहूवी बसा के विधाओ भारतीय मयि व अ न स स्थित न रहेगा इस उद्देश्य से न्न कभासा म किसी एव भारनाय म या का बिक व अनियाव किया जाना चाहिए ।

बस्तुतः हिंदी का उनका उचित प्रतिष्ठित स्थान बलत सभी मिश्रा सब सभी उच्च शिक्षा की तथा म्मा पण पर नोकरे की परीक्षाया म स श य का अनियावना ममान का जाए ।

डा० इण्णाला प्रधान आयसमाज एव मयज हिंदी उपमिति  
अयमना मरस्वी बिहार निम्ना १००० ६

### पाकिस्तान मे श्रायदमाज का प्रस्तित्व क्यों नहीं ?

महर्षि न्याय न मरस्वी के अनुयायियो से मैं कहुया वनन समय म आज मगज पर गांधीवादी एव गोवलकरवादी गुन का वचन छाया हुआ है यानि आय समाज के अस्तित्व पर इन्की स्थापना स संका म्म के विभाजन का तम और तबन वतमान समय तक बिगत निया जाएता यह निश्चय निजसता है कि सभी जग मे प्रबल पुष्टाव करण हुए भी आयसमाज का पुषक अतिन व बनाए रखन न मयात उषेता का गई है अ यथा आज भी पाकिस्तान म आयसमाज माना अलित व बनाए रखना एव भारत की गजनीति पर जोरदार प्रभाव डाल सकता था । यह एक मौलिक तथ्य है कि आयसमाज के डार म नव म न के अने हैं । अय नमन की पुकार है कि महर्षि न्याय न क सच्चे अनुय यिया का आयसमाज का जयन बिगड़ स्वरूप म उभारकर बिबन्ध पी बन न क लिए अपना करर गणा क हित ।

—प्रा धम दधीश आचार कज साधारण माग बरता । ०००१

### क्या देव यज्ञ तम युग की कल्पना है ?

भी युधिष्ठिर ओ मीमांस ने अपनी बरिहत् स्मर मीमांसा म पठ ८० पर लिखा है कि देवाय का अथ आधिदैविक तथा आध्यात्मिक जनन है पर तु जनात त म सत्के साथ देवाय का एक गीण क्षत्र यज्ञ भी ममिगत हो गया । मनुष्या की बुद्धि का हाल देखकर ऋषियो ने त तम युग के आरम्भ मे अर्जुनान्त्स पीणमना विविध क्षीत यज्ञा की कल्पना की उनर काल म वेणय के वास्तविक अ मल हो ग । और गीण यानिक अथ हो प्रथान हा एव मना का यज्ञ कर्म के माय कोलिक गठन धन कमकावत म मको का को विमिश्रण किया गया यह इव प्रकार कायनिक है—अन र मचरित विद्याल के लिए रवी गई रायगण की चौपाइया का गमनाला के प्याश का माष गठन धन है । अत यज्ञो के पराव ह ने क कारण यानिक अय गीण है । मना का यानिक अर्थ तो ऊपर मे जोडा गया है । स्वका वेन क माय को मय्य व नही माशान काई सत्य नही है । यमो किमो का आरम्भ तम युग के आरम्भ म हुआ । अत य माओ वेन मे पन्पात यमो यना का विधान कैसे हा सकता है ? अत वेन के निम्न म मज हृदि कनु आदि कनो का निर्देत है उनमे भी त तम युग के आरम्भ किए गम द्रव्य मय यज्ञा का वणन नही है । श्रीमान ओ यदि यज्ञ कर्म तम युग के प्याश का कल्पना है तो की स्वाभा दयान न ओ अनय स याग प्राकण स्कार विधि कानि पुस्तका म यज्ञ करने का विधान क्या किया है ? और यज्ञ के लाभ मेक न क्या लिख है ? तथा यावयर निरामयि राज महाराज ऋषि महर्षि सय यज्ञ करते व यदि अब भी यज्ञ करते ता सब सूखी हो जाए ।

—आकाश स्वामी रामेश्वरान व गुरुकुल प । डा कल्याण (हरियाणा)

## उत्तराखण्ड के सीमान्त प्रदेश मे राष्ट्र और धर्म-रक्षा अभियान

—स्वामी वेदगुनि परिराजक, अध्यक्ष—बैदिक सत्यान, नजीबाबाद, उ० प्र०

राम कृष्ण और ऋषिमुनियों की सन्तानों । उत्तराखण्ड के सीमान्त प्रदेश गढ़वाल के पीछी, चमोली, उत्तर काशी और टिहरी जनपदों के निवासियों की अविद्या और निरपत्ता का अनुचित ताम्र उठाने के लिए ईसाई इन क्षेत्रों में स्कूल कालिओ तथा अस्पतालों का जाल बिछाने के लगे हैं । ईसाईसौहृ के जन्म दिन पर तेल, माहुन, बनिमान, कापी पसिली आदि वा मनुष्य वितरण करते हैं । दूसरी ओर उस सत्र के मन्त्र हिन्दू तीर्थ हिन्दुओं से भी घृणा कराते हैं । यह स्थिति यदि अल्पकाली रहती तो वहाँ के अविद्या-अज्ञान दलित हिन्दू ईसाई बन जायेंगे और सत्र इन सीमान्त प्रदेश की दशा भी नापा लज्ज देती हो जायगी ।

नागालैण्ड को ईसाई बहुलक्षेत्र बन चुका है वहाँ के ईसाई मंत्र दुष्ट नागाओं की भीन में छापासार युद्ध का प्रशिक्षण देकर सन्तान्त्रिय दिए और अब समग्र क्षेत्र कथ से लोभ देवा से निद्राह्न रहते हैं तथा भारत सरकार व देश के लिए घिरा दर्ब बने हुए हैं । गढ़वाल जैसे सीमांत प्रदेश में जो एकलम पीन की सीमा पर अज्ञान है यदि ईसाइयत बढती है ता चीन यहा भी सत्यान बाटने और उन हिंदू ईसाई बने लोगो को छापासार युद्ध का प्रशिक्षण देने के नही चुकेगा । उस समय की स्थिति की कल्पना करके भी रामाच हो जाता है । इस स्थिति को उत्पन्न होने से रोकन और दश के लिए यह दुर्भाग्यपूर्ण अवसर न बाने देन कि लिए बैदिक सत्यान नजीबाबाद ने कृष्णकल्ह हाकर काय प्रारम्भ कर दिया है ।

अविद्या म पठ हुए दलित निधन जना का काय करके क साथ-साथ वहा क सवर्णों मे भी इस बात का प्रचार करना अन्त्यक्षय्य है कि यह दलित बालों के साथ मृग के पात्र नही, अस्तितु उन्ही ऋषि-मुनियों और राम कृष्ण की सन्ताने है, जिनके आप हैं । वे भी आप वे और उन की सन्तान होने से व्याप और ये सब आप (हिन्दू) हैं । इस प्रकार के प्रचार से सवर्णों म दलितों के प्रति घृणा की समाप्ति होगी । ऐसा होने से ईसाइयत की गति मन्द हो जायगी और ईसाइयत से सैदाधिक्य टकर लेकर उसका प्रचार रोकना संभवेगा । यदि उन लोगों के साथ सवर्णों का घृणा का व्यवहार बना रहता तो लाख प्रयत्न करके भी ईसाइयत की बाढ को रोकना जा सकता । इसी कारण बैदिक सत्यान नजीबाबाद न वहा

के प्रचार के लिए साहित्य वितरण का काय प्रारम्भ किया है । इस समय 'हिन्दू नदी बाय' पुस्तक पाच सहस्र छपवाकर वितरित कराई जा रही है और अब बर्ष जन्म से नही अस्तितु गुण कम से छह सहस्र छप रही है । इसे छपवाने के लिए दान प्राप्त हो चुका है । इसके गुरुत्प पचात् 'आर्यसमाज क्या है' पुस्तक की तो लागत ४००) रु है । इसके अतिरिक्त महर्षि दयानन्द प्रणीत सत्यानं प्रकाश' नामक ग्रन्थ का वितरण भी गढ़वाल क्षेत्र में कराना है । ४००) संकडा सत्यानप्रकाश का लक्ष्य है । इसके साथ ही ईसाई मत के विषय मे भी पुस्तक तैयार की जा रही है उनके प्रकाशन और वितरण के लिए भी दानी महानुभावो का सहयोग आवश्यक है ।

### आर्यों सावधान !

आर्यसमाज की यह निरसता रही है कि वह जाति-बन्धन नही टोक सको और महर्षि दयानन्द सरस्वती के शब्दों मे 'वस्तमान जाति भेद को समाप्त पिए बिना बर्ष व्यवस्था का रूप ठीक नही हो सकता ।'

हम दिन-रात वय व्यवस्था के गुण-कमनिष्ठार होने के पक्ष मे पुजाधार माधन करने और लेख लिख तथा जन्मलग्न जाति भेद का छुड़न करे किन्तु जातिभेद को तोड़न के लिए तैयार कदापि न हो ता हम ऋषिपर दयानन्द के शिष्य और वेद के भक्त नही अस्तितु द्राही प्रमाणित हो जाते है ।

बैदिक सत्यान, नजीबाबाद ने मार्च सन, १९६३ मे संकडो आर्यसमाजो को अपने जातिभेद निवारक विभाग की प्रचारणीय व विज्ञप्ति भेजी थी, परन्तु शेद यह है किस्ती एक भी आर्यसमाज का इस कार्य मे सहयोग नथन नही हुआ हो तो ही बात नही, अस्तितु प्रतिज्ञा भी उल्लंघन नही हुई ।

सत्यान न अपनी विज्ञप्ति समाजो को सहायिप भेजी थी कि आपसमाजे अपने अपने क्षेत्र से एक-एक, दो-दो सदस्य भी सत्यान के जातिभेद निवारक विभाग के लिए बना देगो तो सहजो न सही, संकडो सदस्य तो बन ही जायेंगे और इस प्रकार जातिभेद निवारण की ओर हमारा यह एक पग होगा ।

व्यवस्था यह बनाई गई है कि जो व्यक्ति अपने सन्तानों के विवाह जाति-बन्धन तोड़कर करना चाहे, से सदस्य बने

तथा ऐसे व्यक्ति जिनके सम्पुत्र बन्धो के विवाह का प्रयत्न न हो, इस कार्य मे सहायताएं सदस्य बने । सदस्या कुल्ल १०० रुपए मासिक अथवा १० रुपए मासिक रखा गया है । साथ ही यह सूचना भी दी गई थी कि कम से कम २५० रुपए का भार देकर बैदिक सत्यान के आजीवन सदस्य बनने वाले उन्मज जातिभेद निवारक विभाग के सदस्य माने जायेंगे । यदि कुछ समाजे ऐसी हो, जो जातिभेद तोड़कर अपनी सन्तानों के विवाह कर सकने का साहस करने वाले तथा धन द्वारा इस कार्य को प्रोत्साहन देने वाले सदस्य भी न के सके तो कम से कम २५० रुपए भेज कर भी सन्तानें स्वयं तो सदस्य बन सकती हैं, किन्तु ऐसी किसी एक भी समाज न नही किया ।

आर्यजन स्वयं भी तोषे और अपनी समाज के साप्ताहिक और अन्तरय अक्षि-क्षेत्र मे भी इस प्रयत्न पर विचार करे कि वस्तमान परिस्थितियों मे, जब इस्लाम और ईसाइयत होने हृष्यने की दुरी धावित के साथ जुटे हुए हैं विमा इस प्रकार के ठोस पग उठाए क्या साप्ताहिक और जायिक अक्षि-क्षेत्र और उनमें होने वाले पुजाधार माधन हमें क्या सक्षेपे ?

जब कही से भी कोई प्रतिक्रिया व्यक्त नही हुई तब मन को बडी उल्लं सगी । हमारे जीवन मे कोई बैदिक आधार नही, हमें वेदो का स्वाभ्यास करते नही । बैदिक हस्तकार और कृप्य पवन-

पद्धति के अनुसार पर्व हृष्यने अपनाए नही तथा जातिभेद टोक कर हम-सन्तानों के विवाह करने को तैयार नही तो कृष्णत्ता विश्वमार्गम् के जोष सगाने मात्र से क्या होगा ?

महर्षि दयानन्द सरस्वती ने लिखा है कि 'आजो सगाने-सगाने राज्य पाट, वन-धाम सब पर तो चौका तथा दिशा और कही जाकर सब भी करीये ।' सोचना पडता है कि यदि मुसल बाज होते और हमारी इस चौकोनी पीडादायक स्थिति की बेमते तो कइ उठते कि स्वाहा-स्वाहा करने करते सम्मता, सङ्कृति, आधार-व्यवहार सब कुछ तो स्वाहा कर डेंगे और कही जाकर सब भी करीये ।' क्या आज जन इस दिशा मे विचार करने को तैयार हैं ? यदि हा तो दुष्ट निधनच के साथ बाधे बहिप, आपका स्वागत है । यदि नही, तो परिणाम भीमने और दहिहास के पृच्छे पर यह शक्ति कराने को तैयार रहिए कि विश्वादाता जगन्नाथ ने तो महर्षि दयानन्द के नश्वर शरीर की हत्या की थी, उनके वास्तविक हत्यारे तो उनके मिशन की हत्या करने वाले उनके शिष्य ही हैं, जो भीष तो 'महर्षि दयानन्द की जय, बैदिक धर्म की जय और आर्यसमाज अमर रहे' क सगाने रहे किन्तु बाधन्य द्वारा यह सिद्ध करते रहे कि वास्तव मे हम न तो महर्षि दयानन्द के मिश्व न न वेदमन्त्र और न आर्यसमाजो ही हैं ।

### अन्धा-निष्ठा से आर्यों स्त्री समाज का उत्सव सम्पन्न

१९२०-६५ छुकरार हनुमान रोड, आर्य स्त्री समाज का वाणिज्योत्सव माया बहिन ईश्वरदेवी की अत्यक्षता मे हर्षोल्लास से सम्पन्न हुआ । यज्ञ, स्तुति प्राशन बहिन कृष्णा जो बहरी से मौज्जब से विधिवत-बडी अन्धा निष्ठा से हुई ।

भी कृष्ण रसबन्त की प्रेरणा से पहायत्र की बहिनो ने भजनो से समा ही बाध दिया । रघुमन कलत की छात्राओ ने रत्नार कायक्रम प्रस्तुत किया । बाणी की महता' विधेय प्रेयसादायक और प्रभावशाली रही । अन्त्यापको ने भी भजन सुनाए ।

आर्य कन्या गुरुकुल राजेन्द्र नगर की छात्राओ ने वद पाठ किया । ४०) क्राति ने आचार्य देशोभ' का प्रिया पर प्रभावशाली व्याख्यान दिया । बहिनो ने नायकविहार होकर गुरुकुल की कन्याओ को पुरस्कार तथा माधुष्या दिया ।

भीमती कृष्णा महेन्द्र की कविताए हृदयग्राही रही ।

दिल्ली की प्रमुख स्त्री समाजो की प्रतिनिधि बहिनो ने बहुत योगदान किया । विषेयक, मरिच मान, करोसबाग और राजात्री गावन, दीवानहारा स्वादिप ने । भजनो और कविताओ की हो-हो सगी रही । नृत्यमय प्रधान शांति मणिक ने अपनी विधेय यात्रा के सत्समर सुनाए ।

भी उधा वासिनी और भी० डा० शशिप्रभा के व्याख्यान मन्त्रमुग्ध करने वाले थे । विदुषी बहिनो का स्वागत भी बैदिक-साहित्य से किया गया डा० चन्द्रप्रभा तथा प्रकाश शास्त्री की कविताए मनमोहक रही ।

—प्रकाश आर्या बनिधो

### श्री सत्यमेव जयतेक द्वारा वेद प्रचार

आयसम ज आमवहियार हरिनगर एल्ल आका मे १५ अक्टूबर से २१ अक्टूबर तक प्रात ६-३० से ८ बजे तक श्री सत्यमेव जयतेक म यक्ष का सत्पावन एव वेदोपदेश किया । प्रतिनिध रात्रि को ८ से १० तक श्री कीरामनाओ के चरित्रो का आश्रय प्रस्तुत किया ।

## यात्रा-पर्यटन : वैदिक परम्परा में

ऐतरेय ब्राह्मण की एक कथा के अनुसार जब राजा हरित्यन्त्र का पुत्र उत्पन्न हुआ और बहुत बड़ा हो गया तब वह जन में पर्यटन के लिए निकल पड़ा। जब उस उसकी मापन तोलने की दृष्टिवा होतो की, तब-तब इन्ह उसे कहते थे—पर्यटन करते रहो, पर्यटन करते रहो, 'वरैर्वित चरै-र्वित'। पर्यटन का माहात्म्य बताते हुए कहा कि जो बिचरण करता है उसे ही मनुष्य मिलता है—चरन् न मनुष्य विन्यति'। दृष्टान्त सूर्य का दिया गया है कि देखो, सूर्य प्राचीन में उदय होकर गगन में यात्रा करता हुआ प्रतीतो में पहुँच जाता है और फिर प्रतीतो से प्राचीन में, वह यात्रा करता हुआ यकता गही है।

सूर्य के सवान हो वेदों के अन्य प्रधान देव भी यात्री हैं। उनके हाथों का भी काष्ठाकारिक बन्धन मिलता है। इन्द्र के हाथ 'हृदि' हैं, अग्नि के 'रोहिण', आर्य के 'हृदि' अक्षिगुण के 'परास' पृथिवी के 'अक्ष' मयूरी की 'पुवर्तिषा', उषा की 'अक्षय्यामा'ए, सविता के 'परास', यज्ञ-स्वति के 'विश्वकर्मा' और वायु के 'निगुप्त' वेदों पर्यटन के समान मनुष्य के अपने पैरों, अक्षर, रज, अक्षय्यामा, आकाशवायु, धनिमान, विश्वतमान आदि रणित हुए हैं। अन्तरे में 'मृग्यु' की समुद्र यात्रा के प्रथम में उसके असीय मान के दृष्ट आने तक अक्षिगुण द्वारा उसे समुद्र में डूबने से रोककर मानो द्वारा सकुल्लय यथास्थान पहुँचा दिए जाने का बन्धन मिलता है। 'मृग्यु' समुद्र सार से भोग्य पदार्थों की अवाप्त-निर्वाप्त करने भासा व्यापारी है।

किसी काल में क्षामिक दृष्टि से भारत में समुद्र यात्रा निषिद्ध ठहरा दी गई थी, परन्तु वेदों में समुद्र यात्रा के कई प्रयोग आते हैं। अक्षिगुण द्वारा 'मृग्यु' के समुद्र उद्धार का वर्णन वैदिक—

तिस्र आस्तिरहास्तिरभद्रिम  
नात्यस मृग्युम् अहम्प एतज्ज्।

समुद्रस्य धनन्नाद्रस्य पारे  
चित्रि रक्षे शस्यद्विषि पदवर्त्ते ॥

म्ह १११६४

यहा समुद्रयात्री 'मृग्यु' की दृष्टने से बचने की दृष्टिसे पुनः की कार्यकुशलता वणित की गई है। जो तीन दिन और तीन रात्रि सप्तागात्र चलते हैं ऐसे यात्री में पडाकर अक्षिगुण मृग्यु को उसके पिता के पास लाते हैं। इस काय में तीन प्रकार के रथों का प्रयोग करते हैं—जलयात्रा, स्वस्थान और आकाशयात्रा। उन रथों में मंत्रों का यन्त्र सगे होते हैं और अग्नि, वायु आदि छह अस्त्र जुते होते हैं।

अन्तरे में कहा है कि इन्द्रदेव धुम इन्द्रस्य से पर्यटन करने वाले अश्वेक यात्री के रथ की रक्षा करते हैं—एवं त्वमिन्द्रो रश्मिन् प्राणं मुतावत (म्ह १० १७१ १)। वेद के अनुसार 'वैतल पर्यटन का भी महत्त्व है। अश्ववन्दे में वैतल चलने या दोहन की क्षमता को बाधनीय बताते हुए लिखा है कि—हे पुत्र, यदि तू घोड़े जैसी तेज बाण से तीन या पाँच योजन दौड़ सकता हो और उसी बाण से फिर लोट सकता हो, तभी तूके पुत्रों का पिता बनने का अधिकार है—

यद्वाचित नियोजन,

पञ्चयोजनयथाविश्वम्।

सत्त्वत्त पुनरापति,

पुत्राणां नो ब्रतं पिता ॥

अथर्व ११११३

### —शां रामनाथ वेदालकार

वैदिक साहित्य में यात्राएँ कई प्रकार की पाई जाती हैं। यथा विजय-यात्रा, संश्लिष्ट यात्रा, व्यापार यात्रा, सास्कृतिक यात्रा। राजा भोग चक्रवर्ती सम्राट् बनने के लिए अन्तर्देशिक यात्रा करते हैं, जिस में घोड़े की साथ लेकर सैनिक सख्य पर्यटन करते हैं। जो घोड़ा का पकड़ने का साहस करता था, उसके साथ युद्ध होता था और उसे पराजित कर अपने अधीन कर लिया जाता था। यह एक प्रकार की विजय-यात्रा होती थी।

छात्रोपय उपनिषद् में सत्यकाम आबाल को उसके धार्माय चार सौ गाएँ भोग कर कहते हैं कि इन्हें ले जाओ, इनके साथ साथ परित्रण करते रहो जहा ये जाएँ, जाने दो। जब चार सौ की हजारा हो जाएँ तब लोट कर आना। सत्यकाम पर्यटन करता रहता है और इसी काल में प्रकृति-निराश्रित्य करते-करते अह्यवन, अग्नि, हस और एक अलवर पक्षी मरुद् के स्वभाव आदि को देखते-देखते उसे क्रमशः काल के एक एक पाद का ज्ञान होकर अनुभव बड़ा का साक्षात्कार हो जाता है। यह सत्यकाम का वैशालिक पर्यटन है।

छात्रोपय उपनिषद् में ही आर्यजित का पुत्र वसुदेव पर्यटन करता-करता पचास वेश के अश्वियों की सभा में जा पहुँचता है। राजा प्रवाहुय वैश्वजित उससे पाँच प्रश्न पूछते हैं। एक का भी उत्तर उसने नहीं बनाता। सब जानचर्चा होती है और पात्रों रहस्यात्मक प्रश्नों का उत्तर उसे मिला जाता है। इसी प्रश्न में प्राचीन क्षाल, सत्यकाम, इन्द्रमन्त्र, जन और बुद्धि नामक पाँच व्यक्ति विभिन्न स्थानों से वैशालिक विचित्र के लिए एकत्र होते हैं

और 'आत्मा कौन है बड़ा क्या है?' इन विषयों पर चर्चा करता है।

बृहदारण्यक उपनिषद् में जनक के यज्ञ में कुछ देव और पचाम देव के सभी प्रमुख ब्राह्मण वाकर एकत्र होते हैं। जनक की यह विज्ञाता होती है कि इनमें सबसे बड़ा विद्वान कौन है। वह एक हजार गाएँ इकट्ठी कर अश्वेक के दोनों ओगों पर दस-दस स्वर्ण-मुद्राएँ बाणकर ब्राह्मणों की सम्मोचन कर कहता है कि आपने जो सबसे बड़ा ब्रह्मन्ति हो वह इन गावों को हाक ले जाएँ। किसी को साहस करते न देख याज्ञवल्क्य अपने स्थित्य सामर्थ्य को कहते हैं कि इन गावों को हाक कर ले चलो। याज्ञवल्क्य का दुस्साहस समझकर सब कुम्भित हो जाते हैं और उसके ज्ञान की परीक्षा लेने के लिए उससे एक एक करके प्रश्न पूछते हैं। यह भी एक अच्छा शिक्षण-विधिर हो गया है, जिसमें अनेक रहस्यमय प्रश्न सामने आते हैं और याज्ञवल्क्य उन सबका सही उत्तर देते चलते हैं। इस प्रकार के शिक्षण-विधिर उपनिषद् काल में प्रायः सगते रहते थे।

छात्रोपय में एक पवकट उपलब्ध यात्रायात्रा की कथा मिलती है, जो प्राचीन पत्नी के साथ हस्तिनापुर के एक ग्राम में जा पहुँचा था। वहा उसे विज्ञा में एक हाथीबान से भूट्टे डूबती ही जाने को मिल पाएँ। उन्हीं से उसने शुभा शान्त की। अगले दिन उसे पता चला कि कोई राजा

यत्र कर रहा है। वह वही जा पहुँचा और यत्र के पुरोहितों को बेलेंज दे देता कि यदि तुम अपने अपने काय के देवता की विज्ञा जानो यज्ञ-काय कर रहे हो तो तुम्हारा मुर्दा मिर जाएगा। धन्य में उस का पापिष्व देखकर राजा ने उसी की मुख्य पुरोहित के रूप में बर लीया। इस प्रकार उपनिषदों में कोई विद्वान यज्ञ-तन्त्र अपनी विद्वता का सिद्धा बसाने के लिए भी पर्यटन करते दिखाई देते हैं।

व्यापार यात्राएँ भी होती हैं। इस प्रत्यय में मृग्यु की समुद्र यात्रा का उल्लेख पूरा किया जा चुका है। अश्ववन्दे के नायिष्व दृष्टत में बाणा पृथिवी के मध्य में विश्वामान बाणास मार्गों द्वारा बयन है—

ये पन्नामो बहो देवयाना  
अन्तरा धावापृथिवी सचरन्ति।  
ते मा युष्मता पयसा भूतेन  
यथा क्षीयता बयमाह्वारिण ॥

अथर्व १११२

अपनी वस्तुवित के प्रचार के निमित्त साप्ताहिक यात्राओं का संकेत भी वेदों में मिलता है। इन यात्राओं द्वारा हम अपनी वस्तुवित को विश्व में फैला सकते हैं—सा सप्तहति प्रथमा विषयवारा (यजु० ७ १४)। प्राचीन आर्यों लोग इत वैदिक सन्देश का अनुकरण करते अमेरिका, चीन, जापान, युगुभा आदि में अपनी वस्तुवित का प्रचार करते रहे हैं। विभिन्न देशों की चित्रकला, मूर्ति, प्राचीन सिक्कों आदि से ये तथ्य प्रमाणित होते हैं।

१११६४ कृष्णभाग पतञ्जल (नैनीताल)

## एक की महत्ता

ले० स्वामी स्वर्णपानम्, अधिष्ठाता वेदप्रचार वि, दि आ प्र सभ

एक की श्रेष्ठ को व्याप्त, सकल पञ्च विचार।

सर्वोत्तम प्रिय नाम यह, मुमुरो बारम्बार ॥

एक रहे है खिलाड़ी, एक वेद से खेल।

एक नरक की चूक से, जो जात है फँस।

एक दो गायी रेल में, छिपे रहे अनेक।

ले जाता है लीचकर, सबको इनत एक ॥

एक मृग आकाश में, देशा है प्रकाश।

एक सत्य के वचन का, करे सभी विस्थाप।

एक ही मना सगले में, कुश की राखे लाज।

एक ही युद्ध विचार से, सफल होय सब काज ॥

एक भृगुना चन्द्र से, जितने चाहती रात।

एक दूहा के साथ में, घोषा देय बारगत ॥

एक बकेले ने किया, वेदों का प्रचार।

दयावान् अष्टिराय का, जाने सब सत्तार ॥

जाना सबको एक दिन, छोड़ जगत जजाल।

सकसे किर मरता रहा, एक काम विकरास ॥

एक त्रत धारण करे, हीरे स्वस्थ साज ॥

एक ईश की धारण यह, पात्रो परमानन्द ॥



## चण्डीगढ़ का प्रश्न अबोहर-फाजिल्का से जुड़ा

प्रधानमन्त्री का कथन चण्डीगढ़ पंजाब का ही है, अर्द्ध-सत्य है—प्रो० खेरसिंह

सप्ताचार पत्रों में प्रकाशित प्रधानमन्त्री श्रीमती इन्दिरा गांधी के उस वक्तव्य पर जिसमें उन्होंने कहा है कि 'चण्डीगढ़ तो पंजाब का ही है' पर अपनी प्रतिक्रिया करते हुए हरयाणा राजा बाहिरि के अध्यक्ष प्रो० खेरसिंह ने प्रधानमन्त्री के कथन को खर्द मर्या कहा है। उन्होंने स्मरण करवाया है कि प्रधानमन्त्री ने चण्डीगढ़ के बन्दे अबोहर फाजिल्का हरयाणा को देने का एवज दिया था। अतः चण्डीगढ़ पंजाब को दिया जाता है। उनकोहर फाजिल्का पर हरयाणा का पूरा अधिकार है। उन्होंने स्पष्ट किया कि साहू कमीशन के रूतने से अनुसूचित चण्डीगढ़ को हिन्दी भाषी क्षेत्र मानकर हरयाणा में शामिल करने का निर्णय था, परन्तु प्रधानमन्त्री ने बकाली नेता सप्त फनेहमिह को जता बचाने के लिए हो पाहू कमीशन के नियम को बदलकर चण्डीगढ़ पंजाब को जता बकाली-फाजिल्का हरयाणा को देने का एवज दिया था।

प्रो० खेरसिंह ने अपने वक्तव्य में प्रधानमन्त्री को सुझाव दिया है कि चण्डीगढ़ पंजाब को देने से पूर्व अबोहर फाजिल्का हरयाणा को लौटा जाए। अन्यथा हरयाणा की जनता इस अन्याय को सहन नहीं करेगी।

## बालावास में शराब का ठेका बन्द होने पर आर्य विजय-महोत्सव

आर्यसमाज के कार्यकर्ताओं की ओर से शाम बालावास जिला हिसार में १४ अक्टूबर से शराब के ठेके पर धरना आरम्भ किया गया। यह धरना निरन्तर ६ मास तक जारी रहा और धरना स्थल पर प्रतिदिन यज्ञ, सस्त्र तथा शराब के विरोध प्रचार किया गया। इस प्रकार शराब की बिन्नी बन्द हो गई। हरयाणा के इतिहास में यह हम प्रथम का एक प्रथम सशस्त्र धरना है।

अन्ततः जनसंघ के सामने शराब के ठेकेदार तथा सरकार ने २ अक्टूबर को इन यात्रा का ठेका बन्द कर दिया। इसी उपलक्ष्य में बालावास में १४ अक्टूबर को आर्य विजय महोत्सव बुधवार से मनाया गया। इस अवसर पर हाथी, साजवा, कबारी, मुजादपुर, उमरा, सुलतानपुर, धनाना, भोजपुर, गारणपुर, कला, नूर, नववा, दुपेडा, सोमी, मुकलान, भीरनवा, कार्यनगर, सोराना, मानसा, लोथाम, राहपुर, सागा, हिसार, दिल्ली, राहलक, मिचानी, निचानी, साक बादि स्थानों से सारी सख्या में नरनारी उपस्थित हुए।

## आर्यसमाज निर्माण विहार नई दिल्ली का बायिकोत्सव

आर्यसमाज निर्माण विहार (समुदाय) नई दिल्ली का बायिकोत्सव १० अक्टूबर से २१ अक्टूबर, १९८४ तक सप्ताह का निर्माण विहार में बड़े समारोह पूर्वक मनाया गया। १८ से २० अक्टूबर तक प्रातः पूजार्चन महोत्सव हुआ। जिसके बड़ा प्रोग्राम मेधावी, कुलपति गुरुकुल महाविद्यालय सिराया (हस्ताबाद) थे। रात्रि को भी मेधावी जी के प्रशस्तिपत्रों वचन होते रहे।

२१ अक्टूबर को प्रातः १० बजे सभ की पूर्णाहुति हुई जिसमें श्री विद्याप्रकाश सेठी, श्री सूर्यदेव, प्रधान दिल्ली आर्यप्रतिनिधि सभा, श्री कुन्दलाल भाटिया, सनातन धर्म मन्त्री (श्रील विहार बाले) ने भाग लिया। १० बजे से १ बजे तक राष्ट्रीय एकता सम्मेलन ला रामनोबास सालवाले, प्रधान सार्वदेविक सभा को अध्यक्षता से बड़ी सफलतापूर्वक सम्पन्न हुआ जिसमें श्री रामचन्द्र विकल सदस्य राज्यसभा, बाबाय हरिदेव व ७० विचारक मेधावी व अन्य विद्वानों ने अपने विचार रखे। अन्त में श्री विद्या-प्रकाश सेठी के कर कर्मनो द्वारा सत्याग्रहका परोक्षाओं ने उत्तरीय बन्धन को प्रयाण-पत्र दे दिया।

## आर्यसमाज जिनय नगर बाई ब्लाक सरोजिनी नगर

नई दिल्ली के तत्वावधान में वेद प्रवचन

सरोजिनी माफिद पाक (पंजाब नेगल बँक के सामने) सोमवार ५ नवम्बर १९८४ से १० नवम्बर १९८४ तक रात्रि ७.३० से ९ बजे तक आर्याय पुस्तकालय जी वेदकाया किया करे। श्री सूर्यदेव स्नातक (रेडियो सिगर) के मनोहर मञ्चन होते।

## नवयुवकों को प्रोत्साहन दीजिए

आर्यसमाज एक पवित्र धार्मिक सन्स्था है, यह एक शान्तिकारी आन्दोलन है। धार्मिक, सामाजिक, आर्थिक उन्नति के लिए आग्रह करना आर्यसमाज का मुख्य उद्देश्य है। वेद ईश्वर की कल्पना की बाणी है। वेद का पढ़ना-पढ़ाना और कुतना सुनाना सभी भाषाओं का परम कर्तव्य है। वेद और मनुस्मृति के आधार पर सही स्वामी रचनायन में 'सत्याग्रहप्रकाश' जैसे अमूल्य ग्रन्थ को लिख कर रास्ते से भटके लोगों को नई दिशा दी। वेद को छोड़कर सत्याग्रहका ज्ञान अन्य ग्रन्थ नहीं हो सकता। वैदिक साहित्य का स्वयं भी अध्ययन करें और दूसरों को भी स्वाध्याय करने को प्रेरणा दें। आज की युवा पीढ़ी आर्यसमाज से विमुख होती जा रही है। सभी पुराने आर्यसमाजियों को नव-युवकों को प्रोत्साहन देना चाहिए उन्हें आर्यसमाज में आन आने का अवसर देना चाहिए अपनी धर्मपत्नी, लड़के, लड़कियों व परिवार के अन्य सदस्यों को आर्यसमाज में लाना चाहिए जिससे वे आर्यसमाज के कार्यक्रमों में रुचि लें।

—उत्पलकर तारा बाब १०० हाउसिंग बोर्ड कालानी, मिचानी (हरियाणा)

## आर्यसमाज महासम्मेलन ११ नवम्बर को होगा

आर्यसमाज (बनारसली) गवर्नर माग में ६० से बायिकोत्सव पर ११ नवम्बर को दोपहर २ बजे से ५ बजे तक आयुधवृक्ष परिरक्ष के तत्वावधान में आयुधवृक्ष महासम्मेलन किया जाएगा। सम्मेलन के अध्यक्ष श्री आर्यनरेश होने और ध्वजाग्रहण दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के उपप्रधान श्री विद्याप्रकाश सेठी करेंगे। सम्मेलन का उद्घाटन दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के महासमर्थी डा० धर्मपाल बाबू करेंगे। मुख्य अतिथि आर्यसमाज पश्चिम बिहार के प्रधान श्री हीरालाल भावसा होने। प्रो० सारस्वत मोहन महीवी जी ए बी कालेज अबोहर, प्रो० वेदमुन वैदालाबादी जी ए बी कालेज करनाल बादि के भाषण होने और आयुधवृक्ष आनन, पण्डितक, लाठी तुलवार, जूटो-कराटे बालिसन के प्रदर्शन करेंगे।

## आर्यसमाज गोविन्दपुरी का बायिकोत्सव

आर्यसमाज गोविन्दपुरी (कालका जी) नई दिल्ली-१६ का ११ नवम्बर बायिकोत्सव २५ से २८ अक्टूबर तक मनाया गया। उसमें स्वामी दीक्षानन्द जी सरस्वती के ब्रह्मात्म में यज्ञ हुआ। रात्रि का स्वामी दीक्षानन्द होने और कथा हुई। २६ अक्टूबर के दिन आर्य महिला सम्मेलन किया गया। २८ अक्टूबर को आर्य सम्मेलन में स्वामी दीक्षानन्द जी एवं प विष्णुकुमार शास्त्री के भाषण हुए। श्रुति सत्र आय ली समाज के सहयोग से किया गया।

**दंतों की हर बीमारी का घरेलू इलाज**

**दंत मंजन**  
लोग युक्त

मन्मो की सुजन

23 जडी बूटियों से निर्मित  
आयुर्वेदिक औषधि

दाने से बचने के लिए

अब नये पैकिंग में उपलब्ध

मुह की दुर्गन्ध

ठंडा गर्म पानी लगाना

सात का दर्द

महाशिवरात्री की हट्टी (प्रा०) लि०

9/84 इण्डियन एरिया कीर्ति नगर - नई दिल्ली 110085 538600, 537987 537341

## गुरुकुल शुक्रताला का वार्षिकोत्सव

नवप्रचाराध्य बसो की विशेष व्यवस्था

वैदिक योग धर्म गुरुकुल शुक्रताला का बीसवा वार्षिकोत्सव ५ से ८ नवम्बर तक हो रहा है। इस अवसर पर नवम् प्रारण्य महासभा भी हो रहा। जिसकी पूर्णाहुति ८ नवम्बर को होगी। ५ नवम्बर को योग साधना विधिर आवाजित होगा। उत्सव पर बह्मचारि योगासन आश्रम ल ठी सरिया माहना जकोर तोबरे काच गीयन आदि के कार्यक्रम प्रदर्शित करे।

उत्सव का आयोजन कार्तिक पूर्णिमा क अवसर पर किया जा रहा है जब सगा स्नान के लिए लाक्षा नर नारी सगा तट पर बसे शकनाल आत है। बायसमाज का स देश प्रचारित प्रचारित करने के लिए यह बन्हा अवसर है दि ली बाय प्रतिनिधि सभा की आर से गुरुकुल जाने के लिए विशेष व्यवस्था की गई है। ७ नवम्बर का रात ७ बजे आर्यमाज करील बाग से घन बलसी और बापसी ८ नवम्बर को दोपहर २ बजे होगी। बस दिल्ली साय ५ बजे पहुँचेगी इस से अधिक सवारियां होने पर उ हे सम्भ विषय सवाज से किया जाएगा। प्रति भासि बसो का किरया ३२ है निवास और भोजन की व्यवस्था गुरुकुल की ओर से की गई है यह गुरुकुल दि ली से ८० मील दूर मुम्बई नगर के पास है जो सञ्जन अनी काग स जना चाह जा सकते है। इस अवसर पर गिनी आय प्रतिनिधि सभा की ओर से उपदेशक प्रचारक और प्रचार वाहन के बने की व्यवस्था की गई है। लोटा का शारण्य दिल्ली जय प्रतिनिधि सभा कार्यालय (३१०१४० फोन) या आयमाज करीलबाग ५६४५८ पर ५ नवम्बर तक करावा सकते हैं। बस व्यवस्था के सहायक श्री रामलाल मलिक हैं।

## मस्जिद मोठ क्षेत्र मे प्राम प्रचार

मस्जिद मोठ क्षेत्र मे गिनी आय प्रतिनिधि सभा और दक्षिण दिल्ली वेद प्रचार मण्डल के संयुक्त उत्सवाधान मा दि० २३ १० ८४ चौथी मज्दैन पटवारी की व्यवस्था मे प्राय प्रचार क सम्पन्न हुआ थी ईश्वरचंद मारल इस अवसर पर मुख्य बलिधि थे। सभा के मनोपेयन्सक श्री चुनौबास और श्री वेदव्यास जी ने सु दर उप देश किया। सभा की प्रचार वाहन भी वहा पर मई जियमे कस्टे और साउन्डलीकर बादि गया है।

स्मरण रखें कि विसम्बर के प्रतिम सप्ताह मे दिल्ली आय प्रतिनिधि सभा के उत्सवाधान मे ज प्रीय महर्षि निधिप क्षान्दी मनाई जायगी। अपना सक्रिय सहयोग करें।

सोबान मे शुद्धि सत्कार

हिंदू धर्म से बिछड़कर मस्जिद सम्प्रदाय मे गए हुए धाम तुलसीपुर पो० पचकड़ा जिला कैबाबाद निवासी दा राजपुत महानुभावा का उन की हन्डा तुलार सोबान बायसमाज प्राण मे बाय सख्यो एव बध प्रतिष्ठित सन्तो की उपस्थिति में ता० १६ ५ ८४ को शुद्धकर पुन वरिध धर्म मे सम्मिलित किया गया तथा उक्त शुद्ध किए गए धाबीर हसनबा का श्री शकपालसिंह तथा गुरुमन्द मल्लिनबा का शिवपालसिंह नामकरण किया गया।

सोबान बायसमाज प्राण मे ता० २२ २ और २४ सितम्बर ८४ को बंद कथा एव वेद प्रचार काय सम्पन्न हुआ।

करनाल मे श्री देवीदास

प्राय का प्रतिनिधन

करनाल आय प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा हरियाणा के उत्सवाधान मे बायो जित महर्षि दयानन्द बलिवान सदा श्री सवारोह के अवसर मे विम्यात महिला उद्धारक बायसमाजी नेता श्री देवीदास बाय (काकपुर) का मागर्गि बनिम दल किया गया। बनिमन्तन १३ मे हजारो पठित क थाओ व महिलाओ को पुष्पो से सुक कराने विधियों को हिंदू धर्म शासित करने तथा अन्य समाज तुलार के कावो की भूरि भूरि प्रशसा की गई।

## शत शत प्रणाम :-

(शरर एम ए)

जातुङ्ग हिमालय श जू मुख्य उज्ज्वल महान

सम्पत्ति पर पावन चरित्र तथा समान।

कोकहाय्य साकार गिनी बीजन जन्य पाषण्ड दम्भ के लिए तब विहाह रूप को दया अहिंसा स य माय के चम का—आ अबला दीन क्षमाय दलित के की कार

को पयोदधि से शात बिजिया से मिले

को प्रखर तेज मे सूप व दमा से शीतल

निर्भीक तपस्वि पवित्र ट कौन न धारि—अ चाय ऋषिचर दय न न को श्छाह रि

को जगद्गुरु निज भीजन अप्रति करन जान

विष दो पी कर भी पीदा हरने वाले

ओ तेजस्वि आ का तवर्ण जा स यकाम

गुगुपुष्य हमार्य धम धम सव सभका प्रथाम।

स्वराय्य यन्त्र के उदगाता महर्षि दयानन्द

४ नवम्बर रविवर रात्रि ८ १५ पर बाबागुरु जी व दि ला ए क इ स प्रा० जयदेव बाय की एक व ना प्र प्ररित होगा जिसका विषय है—स्वरा य म न क प्रथम उदगाता—महर्षि दयानन्द।

## वैदिक कैसेट

प्रसिद्ध फिल्मि पायक महेश्वर कपूर द्वारा महर्षि दयानन्द की अमर कहानी

सन्ध्या—यज्ञ शान्तिप्रकरण स्वतंत्रवाचन आदि प्रसिद्ध भजनेपदेशको—

सत्यपाल पथिक ओमप्रकाश वर्मा पन्नालाल पीयूष सोहनलाल पथिक शिवराजवर्ती जी के सर्वोत्तम भजना व केसटम तथा प बददेव विद्यालंकार के भजनों का संग्रह।

आय समाज के अय भी बान्त स कैसेटस के सजीवक क लिए लिख



कन्स्टोर्कन इलेक्ट्रोनिक्स (डीपब्लू) प्रा लि  
14 मफिट 11 फेस 11 अशाक विहार दहली 5  
फोन 118326 744170 टेलेस 31-46 3 AKC IN

— प्राप्ति स्थान —

यह कैसेट लिस्ती बाय प्रतिनिधि सभा

१५ हनुमान रोड नई दिल्ली पर भी मिलते हैं।

## उत्तमता का एक मात्र विश्वास

Grover'sons

Paris Beauty

पैरिस ब्यूटी

शान्ति  
सन्स

ब्रा.पैन्टी.बनियान अन्डरवियर व बेबीपैन्टी आदि



पैरिस ब्यूटीसेल्स कारपोरेशन

2665 ए/2 बीकन पूरा अजमल एनारोह  
कठौल बाग नई दिल्ली ११००१५  
दूरभाष 569224 574120 582036

### नागालैण्ड में बेध प्रचार कार्यक्रम

दिल्ली आग प्रतिनिधि सभा के सचिवपदेशक श्री बेध यास बाय ने ८ अक्तूबर म २० अक्तूबर तक भारत के पूर्वोत्तर अन्तर्गते अवस्थित नागालैण्ड की यात्रा की। इस यात्रा म स्वामी दीक्षानन्द जी सरस्वती श्री धन्वीराज मास्त्री कापाप्यल्ल श्री वेदप्रकाश भट्टा और श्री तनेजा भी गए थे।

दीमापुर में १२ अक्तूबर से १८ अक्तूबर तक दयानन्द सेवाश्रम के विद्यालय में स्वामी दीक्षानन्द जी ने महायज्ञ कराया। रात्रि को बेधोपदेश एवं सचिवपदेश का आकाशवाणी कार्यक्रम हुआ जिसमें स्थानीय जनता ने उत्साह से भाग लिया। एक विद्यार्थी कार्यक्रम म १४ अक्तूबर के दिन साप्ताहिक सभा के प्रधान श्री रामगोपाल खाल्सावे तथा सभामंत्री श्री आम्प्रकाश त्यागी ने जनता का उद्बोधन किया।

### बसहटा पर्व और राखण बघ—

आवसन्धे के अक्तूबर के एक में श्री कृष्णदास का सेवा राम वादरभीय ही नहीं अनुकरणीय भी हैं पढा। लखन की मायनाओ से सहस्रत होना आवश्यक है किन्तु ऐतिहासिक तथ्य यह है कि राम ने राखण का बघ आचिन्तन में नहीं आणित पैन में किया था जसा कि बाल्मीकि रामायण से विवक्षित होता है। वस्तुतः यह पर्व बिजयदशमी का है जो शास्त्रमय में स्वीकृत विजय यात्राओं तथा अस्त्र शस्त्रों के प्रदर्शन से सम्बद्ध है। इस विषय म मैं अधिक जानकारी के लिए महात्मा अमर स्वामी रचित पुस्तक या राखण विजयदशमी का मारा गया था? पढ़ने की सत्सुति करता हूँ।

डा० भवानीलाल भारतीय बच्चोंगड

### मस्जिद मोठ में शराम प्रचार कार्यक्रम

७ अक्तूबर को ॥ से ६ बजे तक चौधरी भद्रसेन पटवारी की अध्यक्षता में मस्जिद मोठ में प्रचार मण्डल के त्रि-वाचक म. महिला मण्डल आग जनरल स्टोर मस्जिद मोठ के समग्र शराम प्रचार कार्यक्रम हुआ। इसमें मंगलाचार्य श्री बुनीनाल और मंगीताचार्य बेन्ध्यास का भजन हुए।



आग के डीय सभा दिल्ली द्वारा आयोजित १०१४ महर्षि निर्वाण उत्सव पर रामलीला मैदानमें आयोजित विद्यालय सभा को सम्मोहित करती हुई के डीय स्वास्थ्य उपमन्त्री सुशी कुमुद बेन बोधी। मंच पर साप्ताहिक सभा के प्रधान आशा रामगोपाल खाल्सावे स्वामी विद्यानन्द सरस्वती डा० भवपाल महायज्ञ समपाल श्री सुमेश्वर श्री रतनचन्द सूतल सभा के अवसर पर भाषण देते हुए श्री बिलीस बेवालकार।



**उत्तम स्वास्थ्य के लिए**  
**गुरुकुल कांगड़ी फार्मसी,**  
**हरिद्वार की औषधियां**  
**सेवन करें**

आशा कार्यालय ६३, गली राजा केदारनाथ

फोन नं० २४६८३८

बागवती बाजार, दिल्ली-८

**गुरुकुल चर्च**

**भीमसेनी सुरमा**

**पापविनाश**

**गुरुकुल**

**गुरुकुल कांगड़ी फार्मसी**

**हरिद्वार**

दिल्ली आग प्रतिनिधि सभा के लिए श्री सरकारीनाथ वर्मा द्वारा सम्पादित एवं प्रकाशित तथा माटिया प्रैस २४७४ रजिस्ट्रार नं० २

— विभागीय दिल्ली २४ के प्रिन्टिंग : १०४ मजदूरों के अर्थ दिल्ली १

फोन ३१०१४०

रवि. नं० बी (टी०) ७५

# आइम् कृष्णन्तो दिव्यमार्गम्

# आर्य सन्देश

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का साप्ताहिक मुखपत्र

मूल्य एक प्रति ५० पैसे वर्ष ६ अंक २ रविवार ११ नवम्बर १९६४ आय मन्वर १६.००५३००५ २५ कानिक २०४१ पन्था नाम १५०

## अलगाववादी देशी-विदेशी षड्यन्त्रों का घृणित परिणाम

प्रधानमन्त्री इन्दिरागांधी की हत्या : भारतीय लोकतन्त्र को गहरी क्षति

गुप्तचर व्यवस्था प्रधानमन्त्री को रक्षा करने में सर्वथा विफल रही

### राष्ट्र के नेताओं को मावपूर्ण श्रद्धांजलियां

नई दिल्ली । ३१ अक्टूबर १९६४ के दिन प्रातः ६। बज प्रथामन श्री श्रीमती इन्दिरा गांधी पर उनके सफर-रथग नई दिल्ली स्थित निवास स्थान पर उनके दो सुरक्षा अग्ररक्षकों द्वारा गतिमा मारकर हत्या कर दी गई। अखिल भारतीय मातृविज्ञान संस्थान में उनके १६ गोलीबो से छलती शरीर ने प्राण त्याग दिए। प्रथामन श्री श्रीमती इन्दिरा गांधी की हत्या का सभी राजनीतिक दलों और नेताओं द्वारा साकल न पर भारी आघात बताया गया। मूलपत्र प्रथामन श्री श्री मोरारजी देसाई ने कहा— साकल तन की आतकवाद और मता घता से बचना सभी का कलम्य है। दलित मजदूर किसान पार्टी के नेता श्री धरम सिंह ने कहा— यह मानना पया कि देश के इतिहास में उनकी महत्त्वपूर्ण भूमिका रही है। उनकी हत्या में प्रत्येक देशमन्त्र को आघात पहुंचा है। भारतीय जनता पार्टी के अध्यक्ष श्री अटल बिहारी वाजपेयी ने कहा— उनकी हत्या से मनुष्य राष्ट्र को गहरा आघात पहुंचा है। जनता पार्टी के अध्यक्ष श्री चंद्र सेखर ने कहा— महात्मा गांधी की हत्या के बाद यह हमारे मावजनिक जीवन का सबसे दुःखदायक घटना है। काय स (ब) क व्यपक्ष श्री जयजीवनराम ने कहा— 'श्रीमती गांधी की हत्या से देश पर भारी विपदा आ गई है। उनकी हत्या से स्पष्ट है कि हमारी गुप्तचर व्यवस्था प्रथामन श्री की सुरक्षा करने में गुणनमा असफल रही है।

सावर्धक आर्य प्रतिनिधि सभा के अध्यक्ष श्री रामगोपाल शास्त्रिजी और महासचिव श्री आनन्दराय चव्वा ने श्रीमती गांधी के जीवन पर कायतरागुण हमले की निन्दा करते हुए उम देश का विषटन चाहने वाली अलगाववादी देशी विदेशी यहूदे धव्यभों का परिणाम कहा। उन्होंने भारतीय जनता और राजनातिक दलों से अपील की है कि उहे देश को अस्थिर करने में लिए प्रयत्नशील और राष्ट्र के मान्ओं को पहुंचा कर उनका कडा सतुक्त मुकामला करना चाहिए।

### हिंसा देश के लिए कड़ी चुनौती

इन्दिरा जी का बलिदान राष्ट्रीय एकता के लिए

—श्री बाल्ले

आर्यसमाज अजमेर के प्रधान तथा तथा दयाल द कालेज धवरेर बाकि आर्य समाज की शिक्षण संस्थाओं में श्री श्रीरी रेडकल के नेयरमें की दलाय व मान् ने श्रीमती इन्दिरा गांधी के असायमिक निधन पर शोक मवदता व्यक्त की है।

उप पर किए गए कायतरागुण और विषयासघाती धाक्रमण की निन्दा करते हुए उन्होंने कहा है कि हमारे देश की राजनीति में हत्या और हिंसा का उदाहरण सारे देश के लिए चुनौती है।

श्रीमती इन्दिरा गांधी ने देश की सखण्डता स्वतंत्रता और एकता के लिए जीवन पर दंडता से जो सतुक्त किया, उसी के लिए यह उनका ऐतिहासिक बलिदान हुआ है।

सम्पादक—मरेन सिद्धाचार्यसति

### भारत मा के रूप में

बलि दे दो

इन्दिरा जी के बलिदान पर श्री शालबाले हाल आर्यसमाज मे गाक प्रस्ताव

आर्यन न न्वाव हाल के माया हिक सत्यन क बाग भारत का प्रन नमथा श्रीमती इंदिरा गांधी की दनाक ह व पर प्रस्ताव पारित किया गया। सभा का सभोचित करते हुए मावन्विक सभा क प्रथाम सभी रामगाय न १ ममान न कहा कि श्रीमती गांधी की ददनक ह व स सतुक्त सवार हिक गया है। श्रीमती गांधी ने जिन लोगों पर विश्व स कल विश्वामान करके आधवयकल करदिय अमर अगन न हो गया इंदिराजी का नाम। भारत का स्वतंत्रता अखण्डता और प्रमुसता की रक्षा करन हुए उहोव अयने शरीर की अतिम व द श्री बलि दे दो

गांधी का शत्रुगिक अतीत भारत माता का कल्पना करक ही लोग अजबज कार करते मे। उ हाते सासायन रत म ता का रूप बारण करक अयन का बलि दान किया है

### विद्वद में सम्मानजनक स्थान दिलाया

प्रधानमन्त्री की हत्या अत्यन्त निन्दनीय

दिल्ली सभा के प्रधान श्री सूर्यदेव का वक्तव्य

नई दिल्ली। दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री सुबब ने एक प्रन वक्तव्य मे घोषित किया है कि देश की लोकप्रिय नेता प्रधान म श्री श्रीमती इन्दिरागांधी की जयव ह या की सारा आधवत कड खस्ता मे ति दा करता है। श्रीमती गांधी ने देश को विश्व क राष्ट्रा एव शत्रुादीय क्षत्र मे सयमानजनक स्थान दिलाया था। ह व आर्य इयसि के समय प्रण लेता चाहिए कि राष्ट्र की अखण्डता के लिए प्राणपण से काय करते रह्ये।

### शहादत से सीख लें : अखण्डता रखें

इन्दिरा जी का निधन मानव मात्र की क्षति—शालबाले नई दिल्ली। सावर्धक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री सुबब ने एक प्रन वक्तव्य मे घोषित किया है कि श्रीमती इंदिरा गांधी का निधन केवल भारत के लिए नहीं मानव मात्र के लिए एक महती क्षति है। सारा आधवजन इतने शोक से तल दल सत्य है तथा इस निम्न ह याकाण्ड की मयना करता है। हमें आगा है कि राष्ट्रवादी बलिदान श्रीमती इंदिरा गांधी की इस शहादत से पाठ लेकर राष्ट्र की अखण्डता के लिए एकजुट होकर काय करेगी।

व्यवस्थापक—प्रमुसता तसबाव



श्रीमती इन्दिरा गांधी

व द हमसा बरेगा भारत देश मम म अमर अगन न हो गया इंदिराजी का नाम।





## परमात्मा हमारी राक्षसी व धूर्तों से रक्षा करे

—प्रेमनाथ एडवोकेट

पाहि नो बने रक्षस पाहि पूर्वराज्य ।

पाहि रचित उतवा जिवास्तो बहुमानो यमिष्ठि ॥

(॥० १३६१२९)

बीर काण्व-श्रुति अग्नि देवता, विराट् पण्या बृहती छन्द, मध्यम स्वर ।

छात्रार्थ—[बृहद्माननो] हे महान् तेज वाले [वृषिष्ठ्य] अलवतम [महान् अलवत बल वाले] [अग्ने] आज त्वत्सु सर्वे पुण्यो दुष्टो को दण्ड करने वाले [न] हमारी [रक्षस] राक्षस अर्थात् हितापीन दुष्ट स्वभाव मनुष्य से [पाहि] रक्षा करो [आन] हमारी [पूर्व] विश्वास प्राप्त करी कपी कपटी [वा] [अराज्य] दान बर्ष रहित क्षत्रिय मनुष्य से [पाहि] हमारी रक्षा करो । [उत्त] और [रिपव] श्वाप्रावि हितक प्राणियो से [वा] अथवा [जो दुष्ट अथवा पागल] [विषासत] [हमे मारने की जो इच्छा करता है उससे भी [पाहि] हमारी रक्षा करो ।

व्याख्या—इस वेदमन्त्र से परमात्मा से प्रार्थना की गई है कि वह हमें राक्षसों, चतों, स्वार्थी क्षत्रिय (जो धन होते हुए भी कुछ भी दान नहीं करते) मनुष्यों वा हितक (अप्राप्त स्वार्थी) जीवों से हमारी रक्षा करे । कोई भी प्रार्थना हमारी सफल नहीं हो सकती जब तक हम उसके लिए स्वयं पुरा पुश्ताप न करें, व्यक्तिगत अथवा मिलकर अथवा शासन (सरकार) की सहायता से । इसके लिए हमें बलवान् होना चाहिए और सब साधनों उप-साधनों से सुसज्जित होना चाहिए, आपस में नेतृत्व-साधन से एक दूसरे की सहायता करते हुए रहना चाहिए वा शासन पुरा प्रजातामिक होना चाहिए और शासनवर्ग से कोई भी करवी स्वार्थी हितक नहीं होना चाहिए । इसके लिए हमें शीघ्रसमा अथवा विधामसमा आदि के गुलाबी भी बनाया किसी जाति आदि के नेतृत्व के धार्मिक (सदाचार) विद्वानों को ही मत-

दान करना चाहिए । ताकि हमारे देश में अथवा ससार में रामराज्य (शांति संपन्न) हो हो ।

अग्ने हन वेद मन्त्र से परमात्मा को 'अग्ने' कहकर सम्बोधित किया गया है । 'अग्नि' मन्त्र अथ-मनुष्य शत्रु से निकला है जिसके अर्थ हैं आन, भयन, प्राप्ति वा दाना के । परमात्मा ज्ञानस्वरूप सर्वत्र व्यापक, सबको प्राप्त करने वा पुनः के योग्य होने से उसको 'अग्नि' कहते हैं । वह अगनी (हमारा सच्चा नेता) वा दुष्टो का दाहक होने से भी उसकी अग्नि कहते हैं ।

रक्षस—'रक्षस' शब्द के अर्थ हैं 'राक्षस' के अर्थात् जो अपने स्वार्थ की रक्षा करता है और इसके लिए छल, कपट, चोरी, डाका वध आदि करता है । अराज्य—यह शब्द 'रा' शत्रु से निकला है, जिसके कार्य 'दान' करते के हैं और दान धर्म से रहित क्षत्रिय दुष्ट मनुष्य है उसको अराज्य कहते हैं अर्थात् परमात्मा हमें 'अराज्य' जो दानघीन नहीं उससे भी हमारी रक्षा करे । इस काल का रामायण का रामधर्म से कोई सम्बन्ध नहीं ।

भावार्थ—सब मनुष्यों को चाहिए कि वे सब प्रकार रक्षा के लिए सर्वा-भिरक्षक परमात्मा से सर्वदा प्रार्थना करें और अपने आप भी बलवान् हो या दुष्ट स्वभाव वाले प्राणियों से रहूँ रहूँ वा सब पापों से दूर रहूँ । और वासक (प्रधान मन्त्री, मुख्य मंत्री आदि की भी छत्री, कपटी, चोरी डाकूजी व हत्यारो आदि से रक्षा के लिए बाध्य करें, जिससे देश में शांति का राज्य हो और जवा सुखी हो ।

बी०-१०३, नीति भाग, नई दिल्ली-४६

### जोधपुर में महर्षि निर्वाण शताब्दी

१०-११-१२ नवम्बर, १९८४ को जोधपुर में प्रतीय स्तर पर महर्षि निर्वाण शताब्दी मनाई जा रही है । जनकत कानैज के पाम दयानन्द माग, जोधपुर में यह शताब्दी कार्यक्रम किया जा रहा है ।

### प्रार्थयसमा लक्ष्मीनगर का बाबिकोत्सव

आयसमा लक्ष्मीनगर, विस्तार, दिल्ली ५२ से आयसमाज का दूसरा बाबिकोत्सव रविवार, ११ नवम्बर, १९८४ को प्रातः ८। से दोपहर १। बजे तक की रत्न सिंह समारोह की अध्यक्षता में मनाया जा रहा है । इस अवसर पर श्री अशापा शास्त्री, श्री रामचन्द्र विक्रम, पवन कुमार शास्त्री, श्री जैमिनी शास्त्री आदि के भाषण होते ।



## सेवा की सच्ची भावना ।

उस वर्ष पञ्जाब में गयकर अकाल पड़ा था, जैसा कि बुढ़ी की याद में भी कभी नहीं हुआ था । उन दिनों पञ्जाब में महाराजा रणजीत सिंह का राज था । उन्होंने ऐलान करवा दिया 'हुकम महाराज का, शाही कोठार हर अकूरतमन्द के लिए खुले हैं', 'हर अकूरत मन्द एक बार में जितना अनाज उठा सके, ले जाए ।' ऐलान होते ही अकूरत मन्द प्रजा उमक पड़ी, गांवो-साहरो से अकाल से पीड़ित लोगो का सिलसिला बन गया । उन दिनों साहीर ने एक सद्गुरुहृदय बुद्ध सज्जन कहते थे । कट्टर सनातनी विचारों के, जीवन में कभी उन्होंने कभी हाथ नहीं पसारा था, अन्धेरा होने पर वह साहीर कोठार के द्वार पर पहुँचे, वहाँ दरवाजा खुला था, किसी तरह की कोई जाच-पकताय छुछाछ नहीं हुई । उन्होंने बड़ी भिन्नक से अपनी बादर फैलाई, उसके कोने में मोठा-सा नाज बाधा, अधिक अनाज उठाना उनके लिए कठिन था । इतने में पयसी बांधे एक भावभीन बड़ा आवा । उसने कहा—'प्रतापी, आपने तो बहुत कम अनाज लिया ।' बुद्ध सज्जन बोले—'कसल में मैं नुहा लाचार हूँ, इस अकाल में थोडा अनाज लेना ही ठीक है, जिससे सब अकूरतमन्दों को बच मिल जाए ।'

उस आगमनक से बुद्ध सज्जन की गठरी कोल दी । उसमें भरपूर अनाज भर दिया । बुद्ध सज्जन ने कहा— मैं इसना अनाज नहीं उठा सकता और न इसकी मयकूरी का पैसा ही दे सकता हूँ ।' बुद्ध सज्जन हितकते ही रहे, उस अजनबी ने वह अनाज का गट्टर उठा लिया और चल पड़ा । घर के द्वार पर दी बच्चे सहते थे, बोले—'आमा-कहा चले गए थे ?' बुद्ध पुरा रहा । अजनबी ने पुछा—'घर में कीसे बड़ा मरका नहीं है ?' बुद्ध बोला—'ससका था, पर काबुल की सलाई में कुचल हो गया, अब बहुत है और मेरे ये दो पोते ।' वह अजनबी बोला—'माई जी, धन्य हूँ आप, जिनका मेरा देश के लिए कुचल हो गया ।'

रोशनी से बुद्ध सज्जन ने उस अजनबी को पहचान लिया । वह स्वयं महाराजा रणजीत सिंह थे, बुद्ध पोते थे बोले—'इतके सामने मरका ठेकी ! और बुद्ध की प्रमाण करने लगे, बोले—'आज बड़ा पाप हो गया, आपसे बोका उठवाया ।' 'महरी, वह पाप नहीं मेरी किस्मत है कि मैं एक छवि के परिवार की सेवा कर सकूँ । आप सबकी सेवा करना मेरा फर्ज है, जब तक जीवन है, आप हमारे साथ ही रहिए ।'

—नरदर

## दक्षिण-पूर्वी एशिया

### (थाईलैंड, मलायीशिया, सिंगापुर, जावा और बाली की द्वितीय सांस्कृतिक तीर्थयात्रा)

१६ जनवरी, १९८५ से २ फरवरी १९८५ तक को सप्ताह की यात्रा का कुल व्यय १३५० रुपए प्रति व्यक्ति (जिसमें हवाई जहाज द्वारा जाना-माना, सातानु-सिंह होटलों में निवास, जीवनक बचो द्वारा वसोयन स्थानों का व्यवस्थापन तथा साक्षा-हारी प्राप्त काल और साय काल का भोजन भव्य शामिल है ।)

दक्षिण-पूर्वी एशिया के देशों में अब से सावल 'पास' खरी पहले एक हिन्दु धर्म एव भारतीय संस्कृति का प्रचार था । बड़ा बानी नाम का एक ऐसा द्वीप है, जिसमें अब भी पञ्चीस लाख के लगभग हिन्दु रहते हैं, और जिते सच्चे अर्थों में 'सन्तु आर्य-वर्त' कहा जा सकता है । जाबा के निवासियों में भी पंतीस लाख के लगभग हिन्दु हैं । इन द्वीपों में धनके ऐसे मन्दिर व लीप स्थान भी हैं, जिनका हरिद्वार व रामेश्वरम् के समान महत्त्व है । इस तीर्थयात्रा में सम्मिलित होकर दक्षिण-पूर्वी एशिया के साक्षो हिन्दुओं के साथ एकानकला व सम्पर्क स्थापित कीजिए, और भारत के विशाल सांस्कृतिक साम्राज्य की एक जनक देखिए । साथ ही, बड़ा के हिन्दुओं को महर्षि दयानन्द सरस्वती की शिवाली तथा धर्मनाम के कार्य से परिचित कराइए ।

विवरण के लिए सम्पर्क करें—

—श्री अशोक मिश्रा

ट्रबल ट्रस्ट, नो-२४, निशामुनी ईस्ट, नई दिल्ली-२६

टेलीफोन-६८००४१

धर्मपूर्वक धन की प्राप्ति

कोडेम् भूयुषं त्वं सुप्रभा ब्रह्माणि स्याम ।

सुवीरा भीरं सुप्रभा पीवं । यत्पूर्व ८५३

हम भूमीक, अन्तरिक्ष लोक और च्छुलोक की उत्पत्तिस्थानों में पहुँचते हुए तथा सन्तानों से अच्छी सन्तानों वाले और पोषक पदार्थों से अच्छे पाषाण अथवा गोमय पदार्थों वाले हो ।

## आर्यसन्देश

### एक युग बीता : नए युग की शुरुआत

हमारे महान राष्ट्र परम सत्त की काली घटाए कई बार चिरो हैं हर बार बहु सभी बाधाओं विराधो एव प्रतिमुक्त परिस्थितियों से जुझता हुआ बढता गया है । सन् १९४८ ई० की ३० जनवरी को य गांधी का जन बलिदान हुआ था, उस समय हमारी राजनीतिक स्वाधीनता को प्राप्त किए हुए कुछ महीने ही व्यतीत हुए थे परन्तु उस समय देश का नेतृत्व करने के लिए प० जवाहरलाल नेहरू, सरदार वल्लभ भाई, डा० राजेन्द्रप्रसाद जैसे परीक्षित एवं परबे हुए नेताओं का पथ-प्रदर्शन उपलब्ध था । १९६५ में २० मई के दिन जब प० नेहरू का देहावसान हुआ था तब देश के सम्मुख एक बड़ा प्रश्न था कि प० नेहरू के बाद कौन ? परन्तु जल्दी ही श्री लाल बहादुर शास्त्री एक श्रीमती इन्दिरा गांधी ने अपने-अपने समर्थों से देश की बागडोर सम्भाल ली यह प्रदर्शित कर दिया कि हो सकता है अनुभव की दृष्टि से वे नई पीढ़ी के रहे हो परन्तु अपनी निष्ठा, दृढ़ता और अनुभव देशपरिधि से वे किसी से भी पीछे नहीं रहे, दोनों ने अपने नेतृत्व से प्रभावित कर दिया कि स्वकीय निष्ठा और तपे हुए समर्पण से राष्ट्र लिए उच्चतम नीतिवादानुसार स्थापित का सकते हैं ।

त्रिपक्षिणी इन्दिरा गांधी को नेहरू जी ने अपने प्रतिष्ठ पत्रों में लिखा था— 'इतिहास का अध्ययन धन्यता होता है परन्तु यह कही बेहतर है कि भूद इतिहास लेखा जाए ।' इन्दिरा जी ने अपने पयस्वी जीवन से सिद्ध कर दिया कि अपने पिता की तहज़ूब ही साहस की नैभी थी । उन्होंने युग के ही प्रत्येक समस्या का अध्ययन कर स्वतः अपना मन बनाया । जिस प्रकार की अप्रष्ट बाधाओं एवं प्रतिमुक्त परिस्थितियों का उन्होंने सामना किया उससे दूसरा कोई भी व्यक्ति पस्त हो सकता था वे परिस्थितियाँ पाहे सन् १९६६ में राष्ट्रपति के पद के निर्वाचन का प्रश्न रहा हो प्रथमा १९७१ में बनम' देश के सम्बन्ध में पाकिस्तान से युद्ध हो, अपना हिन्द महासागर में अमेरिकी सातवें बेड़े की उपस्थिति हो अथवा सन् ८५ में उपवास के सह को ज्वलत करने का समय रहा हुए उन्होंने पूरी दृढ़ता, साहस और लगन से भीषणतम परिस्थितियों और बाधाओं का सामना कर प्रदर्शित कर दिया कि बड़े मनोबल और की अदम्य साह-बाधी को सच्ची प्रीतिक थी । अपने कार्यों से उन्होंने सामान्य जन के सिद्धांत की प्रतियुक्त को तो साह ही अत्यन्तस्पर्शका का विस्मय भी प्राप्त किया ।

३१ अक्तूबर की प्रातः देशी-विदेशी साम्राज्यवादी अणुबाधवादी ताकतों के हस्तक प्रभार से भारतीय राष्ट्र एवं जनता को बाकाशकों की प्रतीक भीमती इन्दिरा गांधी का पारिव शरीर निष्ठाभ हो गया है । उनके असाधारण दुःख निम्न से बाधु-निष्ठ आत का एक युग बीत गया है और एक युग की शुरुआत हुई है । अभी तक सन्दर्भ की परिधियाँ गहराने पर देश को या तो अनुभव की एवं परीक्षित नेतृत्व का साम निगता था, अथवा उसे ऐसे भारी मिले जो अनुभव की और परीक्षित तन थे, परन्तु उन्होंने ऐसे समय तक अनुभव की व्यक्तियों के सान्निध्य से सहित प्रथम प्रदर्शन पाया था । प्रातः देश के स्थिति पर अणुबाधवादी जातकवाद की दुष्टिगत घटाए फिर धार्य हैं, ऐसे समय यदि प्रमुख राजनीतिक दल राष्ट्रीय हिंदों के लिए एक न सयुक्त होकर कार्य कर सकें और राष्ट्रीय समस्याओं को सुलझाने का प्रयत्न कर सकें तब स्थिति का सुवर्ण समाधान हो सकता है । इन्दिरा जी के असाधारण निम्न से भारतीय राजनीति में एक अनुपमिय मूल पैदा हो गया है जिसे भरने के लिए सभी राष्ट्रहितपूर्वियों को प्रयत्नशील होना चाहिए । कार्यसमय एवं कार्यजनों को इस सन्दर्भ की यकी में राष्ट्रीय शक्ति की अधिकाधिक शक्ति, सच्चा और प्रभावित बनाने का प्रयत्न कर सभी विद्या-निर्धारण से अपना उत्प्रेक्षणीय योगदान करना चाहिए जैसा कि उन्होंने राष्ट्र के नव वागमय एवं स्वाधीनता सपने के दिनों में प्रस्तुत किया था ।

### आर्य विद्वानों, समाधान करो या सशोधन करो ।

महर्षि दयानन्द सरस्वती द्वारा रचित ब्रह्मसूत्र में जो मन्त्रों का नाम संस्कार विधि ग्रन्थ में बताया है उसमें अनेक परिशुद्धि कथों, वर्तमान में प्रचलित सन्ध्या पुस्तकों में प्रायः १६ मन्त्रों का क्रम बताया है, परन्तु ऋषि ब्राह्मणानुसार मन्त्रों की संख्या २१ है । इसके अतिरिक्त आरम्भ में सन्ध्या का उच्चारण बताया है । शनो देवी० मन्त्र द्वारा तीन स्थानों पर आचमन बताया है । इस प्रकार विधि विधान में शास्त्रोक्त होकर सन्ध्या करे । प्राधान्य करे जो युन से युन पीन भयदा तो समय लगता ही है, परन्तु देखा यह जाता है कि आचमन खाना पूति के लिए तीन मिमट या पाच मिमट से ज्यादा समय सन्ध्या में नहीं लगाते ।

अथ नित्य सन्ध्या यथोपासनाविधि यन्—सदा स्त्री पुंस्य १० बजे शयन और रात्रि के प्रभूर ब्रह्मवेसा में ४ बजे उठकर प्रथम हृदय में परमेश्वर का चिन्तन करके यमें अर्ध का विचार करना और धम और अर्ध के अनुष्ठान व उद्योग करने में पीडा यदि हो उपाधि वर्मयुक्त पुण्यायं को कभी नहीं छोड़ना चाहिए । किन्तु सदा शरीर और बाह्या की रक्षा के लिए युक्त वाह्यार विहार बोधय सेवन सुषमादि से निर-सद उद्योग करके व्यावहारिक और परमाणु कर्तव्य कम की सिद्धि के लिए ईश्वरोपासना को करवा । जिस परमेश्वर की कृपा दृष्टि और सन्ध्या से महा कष्टों की सुमगता से सिद्ध हो सके इसके लिए निम्न वेद मन्त्रों से ईश्वर की प्राधान्य सपरिवार निमकर करें ।

ओ३म् प्रातरग्नि० आदि आद्यदेव के मन्त्र ७ सुस्त ५१ मंत्र १ से ५ तक का पाठ करें । सत्पत्तात्त बोध-दत्तकावच, मुक्त प्रशान्तन करके स्नान कर । सन्ध्यापासनादि नित्य कर्म नीचे लिखे अनुसार यथा विधि उचित समय में किया करें ।

आरम्भ में मन्त्र उच्चारण करें, ओ३म् तत्सत् यद्गुणो आदि विधि संहित करें । फिर इन मन्त्रों का एक-एक आचमन करें । ओ३म् अमृतपेत्तरपमासि स्वाहा, ओ३म् अमृता पिबामसि स्वाहा ओ३म् सत्य वषा भीमवि भीमवता स्वाहा इसके अनन्तर पायवी मन द्वारा शिक्षा बाधकर सत्ता । आचमन मन—तना देवी द्वारा तीन आचमन, अथ इन्द्रिय स्पर्श मन्त्र—ओ३म् नाक बाध्वादि, अथ ईश्वर प्रार्थना पूर्व मर्वाच—ओ३म् भू भुनाडु विरति आदि, आध्यात्म मन्त्र—ओ३म् भू भूम आदि, अथमर्पण मन्त्र—ओ३म् कृतघ्न सत्यय आदि तीन मन्त्र ।

अथ मन्त्रा परिक्रमा मन्त्र—आ३म् प्राची में ऊर्ध्वो पयत ६ मन्त्रों द्वारा परमेश्वर से प्रार्थना करें । अथोपस्थान मन्त्रा—सत्पत्तात्त परमात्मा का उत्पत्तान बभूवि परमेश्वर के निकट मैं और मेरे अति निमट परमात्मा है, ऐसी बुद्धि एवं भागन करके करें ।

उपस्थान मन्त्रों में अनानम प्रचलित सन्ध्या पुस्तकों में एक महत्त्वपूर्ण मन्त्र को हटा दिया है । मन्त्रों का क्रम भी बदल दिया है । यह आज अनो की भारी भूल है ऐसा जान पड़ता है । उपस्थान मन्त्र १। क्रम ओ३ सन्ध्या महर्षि द्वारा निर्धारित निम्न प्रकार संस्कार विधि गृह्य प्रकरण में विद्यमान है । अथ उपस्थान मन्त्र—

ओ३म् जातवेदे सुबवान साम मरालीयम् नि दहोति २४ ।

सन पचदति दुर्गाणि बिस्वा वावेन सित्पु दुग्मात्मा० ॥

ओ३म् अथ देवाना ममादनि आदि ॥२॥

ओ३म् उजय जात वेदेस देव बहुनि केव आदि ॥३॥

ओ३म् उदय तमस्स्वरिष्य पयस्य आदि ॥४॥

ओ३म् तुष्यमर्चयं हित आदि ॥५॥

युन — गाथी मन्त्र, अथ समपमन्त्र—ईश्वर दयानिधि आदि, ओ३म् नम साम्नाय च आदि मन्त्र से परमात्मा को समस्कार करके या नो देवी इस मन्त्र से तीन आचमन करके अग्निहोम का आरम्भ करें ।

आर्य विद्वानों से निमट प्राधान्य है कि उपर्युक्त क्रमानुसार मन्त्रों का सशोधन करा जाए । इस क्रम का सफल ऋषि सन्ध्या के बाधार पर शास्त्रानुसार निवासी आय सधु की सोहलसाय की शारदा द्वारा प्रकाशित पुस्तक अथ नित्य सन्ध्या यथोपासना विधि' नि शुक्रम मन्त्रकर ऋषि ब्राह्मणानुसार अपने परिवार को अद्यावत् नाना, यही निमट प्राधान्य है ।

—कल्पवेधेन यागप्रश्नो वैदिक सन्ध्या आश्रम, पुष्कर

महर्षि दयानन्द निर्वाण दिवस एवं दीपावली पूर्वे कार्यसमय विधाओं की एक श्रवणा में ऋषि दयानन्द निर्वाण दिवस एवं दीपावली पूर्वे दिनांक १५-२०-८५ को समारोहपूर्ण मनाया गया । पूर्व पद्धति के अनुसार बृहत् मह सन्ध्या प्रार्थना की राधामण्य की आर्या प्रजापति ४०० वर्षा का महर्षि दयानन्द सरस्वती के जीवन पर सारांशित भाषण दिया, भी ५० नम्य किछोर ओ द्विषेदी में श्रेष्ठ की वर्तमान परिस्थिति और हमारा कर्तव्य पर अपने विचार रखे ।

# जीवन ज्योति क प्रतीक

— जमनसात प्रधान कार्यसमाज अखी विहार दिल्ली-५२

पर्वोत्सवा त्योहारो का मानव के जीवन मे एक उच्चा स्थान हे। स्वर्गीय लोकमध्य बाल्यवापार तिलक यहा तक कहा करते थे कि त्योहारो को मनाया ही हे। जतने जितने उमाह, उल्लास थड़ा और प्रेम से कोई राट अपने त्याहार मनाता हे, उनी भुपति मे उस राट के निमागियो मे जीवन ज्योति ममनमा बाहिए हुमादे देस मे जितनी अधिक ममनमा न त्याहार मनाए जात हे सम्भव विषय न त्याहार अन्ध-धर्म मे नही मनाए जात होमे। इमारे कुछ त्याहार खुदपुरक और कुछ महापुरुषो के नाम से सम्भिगत हे। कुछ राटुग्य त्याहार भी हे। परन्तु इन मन् मे नीन बडे त्याहार सभाया पनि मगोहा उपयोक्त नाम के नाम से सम्भिगत हे—रामनवमी—आ प्रसिध्द बैन शुक्ला नवमी का देश बिदेशो मे बडे उमाह से मनाई जातो हे। परन्तु दो त्याहार विजयदशमी का त्याहार असोज मास की शुक्ला १० बी को मनाया जाता हे। जिनके सम्बन्ध मे कहा जाता हे। राम की रासपति रावण पर विजय इस दिन हुई की और तीसरा त्याहार दीपावली विजय दशमी के ठीक बीस दिन बाद आता हे। कार्तिक की कृष्ण सप्तमी अमावस्या को मनाया जाता हे कि अयोध्यावासियो मे की राम जी की रासण पर विजय प्राप्ति करके बापम नौदने पर दीप माला का उमभ मनाया वा परन्तु इतिहास बराम जीवन क मन्त्रे प्रमाणित ग्रन्थ वास्वीक रामायण से दैत त्याहारा का इत तिथियो मे पडना बदाचित प्रमाणित नही होता। मे मन् पडनाए मन्त्रे मे इम प्रकार हे—

अयापापनि राजा दशरथ जब बुढा-  
मन्धा को प्राप्न हुए नब उठोनि राख्य क  
मनिषा, पुत्रजना तथा और अन्य अन्ध  
जाओ का बुलाएर नन्ब मन्मुख राम  
—अपन उपाट पुत्र का रात्र का काम  
भार नौपन का प्रत्यक्ष रखा और उनकी  
अनुमति मे राम का बुवराज क लिए सब  
मामरी जुटान के आदेश दिए गए। यह  
बैन राम का महीना वा।

यहा रहते-रहते रात्र खुनु बीत गई हेमन्त का आरम्भ हुन। कुछ ममभ पर्वकारा राम खन्-रुपट से माता बीत को हुर कर ले गया। उसको अपनी अशक बाटिका मे रखकर, डरा-धमका कर मोता को अपनी पत्नी बनान मे अमकल रह। तो उसने सीता का एक वप का समय सोचने के बान्ते दिया और जब हुनुमान नीता को लका मे निवात उस एक वर्ष मे से केवल दो मास ही छब रह गए थे।

इति प्रत्यक्ष तानु राजा ब्राह्मणा  
निदरवर्त्तान्। बैन बुधवासव च तेषा-  
नोपेयसुखायाम्। श्रीभीमानय मास  
पुष्प पुष्पितकानन। रावराज्याय रामभ्य  
मन्त्रेयैक की कुछ और ही रचना हे।

परन्तु विधि का विधान बडा बिचित्र हे। आदमी सोचता कुछ हे, परन्तु परमा-  
न्यदेव की कुछ और ही रचना हे।  
बैनयाम क पुष्प नखत्र मे निष्पाय  
राम को अवाध्या। का युवराज बनने की  
बजाय दुष्टा दासी मन्मा तथा कैंकेयो के  
पडन-रचन क कारण साधु बेध मे पिता  
की आशा से वन जाना पडा और जब  
मरत की राम को बापम सीटाने वन म  
मए तब चिन्तक पत पर कुटी बनाकर  
रहते व।

‘अनन्तर ए तन्त्रितविचित्र दृष्टर  
मन्त्र। तदा एषण्टो तात तव ती वसतो  
ध्रुवः ॥’

मन् मण्डली क घाघर करन की  
राम न १५ वर्ष के वनवास की अर्धाधिक  
समाप्ति से पुन लौटने से इन्कार कर दिया  
तो रात्र राम की पाहुनाए लेकर राम से  
बाँहवर्ष की समाप्ति पर लौटने की  
प्रतिज्ञा वचन मे वापस गते गए और यह  
कहते हुए कि यदि बीहवर्ष वप के अनिम  
दिन राम न लौटो तो मे (मरत) पिता  
बनाकर दानि मे प्रवेश कर दूंगा।

अरत के लौटने पर राम ने चिन्तक  
ओर कर किसी अन्ध स्थान पर जान का  
निश्चय किया और इस प्रकार वन मे  
पुनर्न पुनर्न और चिन्त आश्रमो की आभा  
शोभा देखते दस वर्ष बीत गए और दण्ड-  
काण्ड्य के एक सुन्दर स्थान पचवटी मे  
कुटी बनाकर वेच वास वप निगान को  
१८=८ से निश्चय किया।

हुनुमान जी न राम का सीता का  
सदके दिया और राखण द्वारा ही दो  
मास की अवधि बनाई, तो राम बड  
बाहुुर होकर बाने यदि मीना एक मास  
नब की जीर्णोपा न बहुत ममका, मे न  
उसके बिना एक क्षण भी नही जी सकना।  
अन राम न मुर्गी को जल्दी न लका  
पर बचाई करने को कहा और उत्तरा-  
फाल्गुनी नखत्र मे बचाई कर ती और जब  
राखण पर क्षौराम न विजय प्राप्त की,  
तब बीहवर्ष वयो मे से केवल एक दिन शेष  
बा, अत राम जी उनी दिन अयोध्या  
जाना चाहते थे, इसलिए बहु राखण के  
पुण्य दिमान म ठीक १५वर्ष की समाप्ति  
पर बगीचा वा पहुँचे।

इस सप्ताहकाण्ड से स्पष्ट हे कि  
राम राखण दुष्ट फालुन बैन मास मे  
दुष्टा और बीहवर्ष वयो भी बैन मास मे

ही समाप्त होते हे। अत विजयदशमी का  
त्योहार अखी मास मे न मना कर कही  
बैन मास मे मनाया बाहिए और इसी  
प्रकार दीपावली, विजय दशमी मे दुसरे  
ही दिन कही बैन मास मे पडतो हे। यह  
तो हुई इन दोनो त्याहारो का राम से  
सम्बन्ध रखने वाली बात। न जाने कब  
से यह प्रथा बनी। इतिहासवास्थियो का  
यह कर्त्तव्य हे कि ठीक ठीक खोजकर सही  
तिथिया इन त्याहारो को निश्चय करे।

दीपावली त्योहार का एक अपना ही  
विशेष महत्त्व हे, इसको राष्ट्रीय त्योहार  
कहना भी कुछ अनुचित न होगा। यह  
खुदपुरक और फनली त्योहार की कहु-  
साता हे। दुसरे मन्त्रो मे इसे ‘नवमाल्योष्टि’  
भी कहना ठीक ठीक होगा क्योंकि इस अव-  
सर पर गायत्री (शरीर) को फसल के  
अनाज ज्वार, मक्का, बाजरा, उड़द,  
चावल, गुड-मकरन्द निमादि सभी जा  
जाते हे। और सभी नाग इसको लक्ष्मी-  
पूजा क रूप मे मनाया बडा पुण्य समझते  
ह। लक्ष्मी के स्थापन क लिए मारी राधि  
बरो मे राधानो खलते हे ताकि कही अमा-  
वस्या की घार घघरी रात्रि मे प्रकाश क  
अभाव मे लक्ष्मी वापस न बनी जाय।

इसी लक्ष्मी की प्राप्ति के लिए कुछ भुत,  
पुर्न लोग जुडा लेलकर आनन्द नृत्य हे,  
स्योकि ऐसे लोगो का अन्धविश्वास हे कि  
को इस दिन जुडा नही लेवता, बहु मरक  
मे जाता हे। अर्वाकि वेद मे जुडा लेवना,  
दुष्कर्म पाप बताना हे। जैनियो के लिए  
भी यह दिन कुछ कम महत्त्वपूर्ण नही हे।  
स्योकि बाज के दिन उदके अस्थि तोर्न-  
कर महावीर स्वामी ने निर्वाण प्राप्त  
किया वा। बाज के ही दिन मन् १६=६  
मे स्वामी राम ने ममा माता की गोद मे  
जीवित ममाधि सी थी, परन्तु इस दिवस  
का महत्तर एक एक वष से पूर्व अर्धुनि  
और बड गया हे।

अब इस कार्तिक की अमावस्या के  
दिन गुग अर्धर्षक महर्षि दयाकन मरस्वती  
के इस महत्तर देव को त्याग कर पुन्य वप  
विजय प्राप्त कर—इदवर मनी इच्छा  
पुन हो। कड़न-कड़न अगमजनी अगम्या  
माग्य नी पम्प पायनी गाद मे किन्तु म  
पाया वा। उनी दिन मे अन्ध वास  
—त्योहार का ख्यि निभांगान्ध अथवा  
ख्यि बानिर्गन्ध के रूप मे प्रतिवर्ष मनाने

आर्यसमाज तिलकनगर का ३५ वा बाँकिकोत्सव

आवसानत तिलकनगर २८ दिसरी १८ का ३५ वा बाँकिकोत्सव ११ नवम्बर  
से १८ नवम्बर तक मनाया जा रहा हे। इस अवसर पर दून्नी दिगो प्रात ७।। से १  
बजे तक मानवेय यज्ञ ५० यमपाल मुधाप्य के ब्रह्मयन्त्र हो रहा हे। प्रतिदिन रात्रि  
को ८ से ८-५५ बजे तक ५० चुनौसाजी के अमनोपदेश तथा ८-५५ से ८-५५ तक  
५० यमपाल मुधाप्य के वेदोपदेश होते हे। १८ नवम्बर को मुधाप्योत्सव हो। उत्तरे बाद  
ही रामगोपाल शास्त्रावली, श्री सूर्यदेव की, महाशय्य भूमाल की, ५० बनीपाव की, ए  
ही रामगोपाल के प्रबचन हो।

हे।

मन् बत बत अवसर मे उनकी बनिधान  
वलासी बडे सगारोहपुन्यक मनाई गई की  
और उसके बाद पूरे वर्ष विमान-विमन  
मन्त्रो पर बहु उत्सव मनाया जा रहा हे  
को भी बतबर पर।

दीपावली हर वष आतो हे और बाई-  
बन्धु ख्यि मन्त्र उनके अभाव मे बडी अनेक  
पडतोको की बचाई करके अपने को क्षु-  
क्षुप्य समझते हे, परन्तु जरा ध्यान देकर  
बेई को ही स्या ख्यि द्वारा ओडे अर्धुन  
कामें किस हतक वे पूरे कर पाये। मन्  
एक सो एक बर्षो मे। देश के बापार,  
नैतिकता का पतन ख्यि के समय से भी  
कही अधिक इस समय हो गया हे। महर्षि  
एक जाति क बेश विचार के लिए काय  
नहीं करते थे। मन् तो समस्त विचार की  
मानवता के कल्याण के लिए धारा जीवन  
प्रवर्तनीय रहे और इसी मानव-कल्याण  
के लिए उन्होंने अपनी १८-१८ बडे की  
समाधि का दिव्य अनाम भी त्याग कर  
ही टोन्-पन्त्रो के प्रहार मन् और विष के  
प्याले भी पीए। उन्होंने वेद को स्वत  
प्रमाण मान कर इसके आधार पर स्थाप  
किया और प्राचीन ख्यि-मुनियो की  
विस्तृत परम्पराको को फिर से जीवित  
किया।

यह महान् देशयोद्धा वे और देशा को  
सम्पन्न, शांतिप्राप्ती स्थापनकी और  
स्वातन्त्र्य सत्ता बना देवना चाहते थे।  
सांसारिक क्षुत्रियावले के बडे शत्रु, वे और  
बडे विचार और प्रसिद्धतावादावले मे  
भी अनेको ख्यि मे कुतुहिलो के बडे गह  
को भू-चूर करके रख दिया। उन्होंने  
प्राणीय देशप्राप्ती को मुलाकर स्वयं-  
प्राप्ती होते हुए भी हिन्दी की राष्ट्रप्राप्ती  
के रूप मे स्वीकार किया और अपने सभी  
ग्रन्थ हिन्दी के ही लिखे। देश की एकता  
अखण्डता के लिए यह जीवन भर प्रयत्न-  
शील रहे।

दीपावली निर्वाण दिवस पर ख्यि  
के प्रति सभी अर्धान्धिये बही होनी कि  
हम मन् गुरुजुट होकर आपसी भेदभावो/को  
मुलाकर निष्काम भाव से ख्यि के  
लुहारे होते हुए भी पुति मे यलाकर्षित सहयोग  
देकर ख्यि के ख्यि से उज्ज्वल होने का  
प्रयत्न करे।





## जनता शांति और सद्भाव बनाए रख

### श्री शालवाले द्वारा व्यापक हिंसा की भर्त्सना

सार्वभौमिक कार्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान साभा राममोयाम भास्कराने ने दिल्ली में जोर देना के विभिन्न स्थानों में हुई हिंसा की भर्त्सना की तथा आम जनता से शांति तथा आजीव सद्भाव बनाए रखने का अनुरोध किया। उन्होंने कहा कि श्रीमती इन्दिरा गांधी ने भारत को एकता के लिए अपने प्रयास व्योधावर किए। उनके बादलों के अनुसार राष्ट्रीय एकता के लिए कार्य करते ही हम उन्हें मन्त्री अद्यावत बर्णित कर सकेंगे।

### स्वर्गीया श्रीमती इन्दिरा गांधी के लिए

#### आर्यसमाजों में शोकसमाए

सभा प्रधान श्री सुप्रेमेश चौर प्रधान श्री डा. बर्माल ने दिल्ली की सभी आर्यसमाजों के अनुरोध किया कि वे अपने साप्ताहिक बैठकियों में स्व. श्रीमती इन्दिरा गांधी के लिए शोक समाए तथा शांति व्रत धारण करें। शोक प्रस्तावों की प्रति राष्ट्रपति, प्रधानमंत्री और गृहमंत्री को भेजें तथा समाचार पत्रों में भी दें।

### महर्षि दयानन्द सरस्वती पार्क का उद्घाटन

#### महर्षि दयानन्द सरस्वती निबन्धोत्सव सम्पन्न

महर्षि दयानन्द सरस्वती निबन्धों का प्रथम दिन २५-१०-८४ को प्रातः ८-३० से १०-१५ तक महर्षि दयानन्द सरस्वती पार्क में इस क्षेत्र की समस्त समाजों के साथ पुरुष (महोदय) प्रतीक विहार क्षेत्र १-११ रानी बाग पंजाबी बाग तथा विनय के सहभागियों के साथ इन्हीं स्थानों पर भी आयोजित की गई थी। इनके व्यक्तित्वगत अथक प्रयासों से दिल्ली में पहली बार एक बहुत बड़े पार्क का नाम महर्षि के नाम पर रखा गया।

इस अवसर पर महर्षि दयानन्द सरस्वती पार्क का उद्घाटन श्री दीपचन्द बन्धु (उपमहापौर) द्वारा किया गया। इस पार्क के नाम करण करने का अर्थ इस क्षेत्र के श्री विनय भाग्य श्री साहिब सिंह जी वर्मा को प्राप्त है। इनके व्यक्तित्वगत अथक प्रयासों से दिल्ली में पहली बार एक बहुत बड़े पार्क का नाम महर्षि के नाम पर रखा गया।

श्री दरबारी लाल का स्वागत किया गया। महर्षि का अद्यावत देते हुए समस्त समाजों को इस पार्क में प्रतिवर्ष इसी प्रकार उत्सव मनाने के लिए प्रेरणा दी तथा अपना गुण सहयोग देने का कथन दिया।

दिल्ली भाग प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री सुप्रेमेश जी का स्वागत किया गया। श्री स्वामी विद्यावानन्द जी ने अद्यावत देते हुए आर्यसमाजों को सर्वत्र रहकर और अधिक शक्तिशाली बनने का आह्वान किया।

उपमहापौर श्री दीपचन्द जी बन्धु के स्वागत के लिए आए सहस्रेक मन्त्रीभा आर्य पलिक स्कूल के बच्चों द्वारा बजाया गया बेल वास्तव में साराहनीय था।

कार्य विद्यावानन्द भागसमाज के साथ पुरुष (महोदय) तथा कुशाभी इस-राज मंडल स्कूल अथक विहार के बच्चों के द्वारा रंग कार्यक्रम उपस्थित सभी जनो मोह रहे थे।

मनेन्द्र शक्ति विद्यालय विनय के बच्चों ने भी बालुरी वादन से अतिथि का मन मोह लिया।

मुख्य अतिथि ने मंच पर बोलेते हुए अपना समाज के अटूट सम्बन्ध बताया और कहा कि कार्यसमाज जैसी श्रेष्ठ सभा समाज में कोई दूसरी नहीं है। उन्होंने आगे कहा कि हमें पार्टी विधेय से दूर रहकर समाज कल्याण में लगे रहना चाहिए।

श्रीमती सुधमा भार्या ने अपने मधुर गीतों से श्रोताओं को मुग्ध किया। श्रीमती प्रेमवील महेन्द्र जी उपस्थिति ने मंच की सीमा में पार बाध लगा दिए।

स्वर्गीय श्री दीपचन्द जी भार्या (अतिथि सन्तुन) वालों के श्रेष्ठ सुधुष की वेषाण जी ने पार्क के सम्पन्न में लगाए गए महर्षि के नाम, गणपति तथा विद्याओं से बुरी चीनी विलासों का व्यय करीब ३००० रुपये सहस्रेक नहल किया।

मंच टेन्ट बादि की व्यवस्था श्री दरबारी लाल जी ने स्वयं कराकर समाजों की अनमनीय किया।

### भारतीय संस्कृति का अपमान-लता

बम्बई। स्वर कोकिला लता मंगेशकर ने कहा है कि श्रीमती इन्दिरा गांधी को हत्या से बहुरी भारतीय संस्कृति हित नहीं है, जिससे महिलाओं के लिए विशेष सम्मान है।

लता मंगेशकर ने श्रीमती गांधी की अद्यावत देने के लिए बुलाए गए एक समारोह में मंचन बोलेने से पूर्व यह बात कही।

हलांकि ने श्रीमती गांधी की हत्या करने के बाद भी शांति से बची बा रही भारतीय संस्कृति को भोट पहुँचाई है। उन्होंने भारत का अपमान किया है, उन्होंने जारी संस्कृति को सहस-सहस कर दिया का अभाव हिंसा नहीं है। गुना को गुना से समान नहीं जा सकता। गुना को प्यार से ही समान हो सकती है।

### आर्य स्त्री समाज अशोक बिहार का वार्षिकोत्सव

आर्य स्त्रीसमाज अशोक बिहार फ़ेब-१ दिल्ली ५२ का १०वा वार्षिकोत्सव शुक्रवार दिनांक १६ ११ ८४ को आर्यसमाज अशोक ५ अशोक बिहार दिल्ली ५२ में श्रीमती सरला महुता की अध्यक्षता में दोपहर १२।। से ४।। तक हो रहा है, जिसमें श्रीमती डा. आर्य देव बाता प्राचार्या सन्तान विध्वंसितालय के बोसस्त्री माधव, श्रीमती ईश्वर देवी जी तथा अन्य विदुषी बहिनो के प्रबचन होंगे।

यह की बहूया श्रीमती शारितदेवी अग्निहोत्री तथा कविता पाठ कवयित्री श्रीमती पद्मा सर्वा मेरात भागों के होंगे।

सभी कार्य बहिनो ने इसमें भाग लेने के लिए आमंत्रित किया जाता है। कार्य समाज अशोक अशोक बिहार फ़ेब-१ ५२ का वार्षिकोत्सव की १२ ११ ८४ से १८ १२ ८४ तक होगा।

मंचन की पत्रिक जी के रात्रि को हुवा करेंगे। लक्ष्य कोटि के विद्याओं के माधव भी होंगे।

सभी आमंत्रित हैं

सचिविका श्रीमती प्रेमवील महेन्द्र होमी। —पद्मा लताबा मंत्रिणी आर्य स्त्रीसमाज

## दाँतों की हर बीमारी का घरेलू इलाज

**दंत मंजना**  
लौह युक्त

मस्तूरी की सूजन

23 जडी बूटियों से निर्मित  
आयुर्वेदिक औषधि

मुठ की दुर्गन्ध

उष्ण गर्म पाणी लगना

दाँतों का अद्भुत

दाँत का खट

**महाशियां वी हट्टी (प्रा०) लि०**  
६/६४ इण्डियन स्ट्रीट, दिल्ली-११०००१

## एक सामयिक ग्रन्थ तूफान के दौर से पजाव

तूफान के दौर से पजाव—लेखक श्री क्षितीय दालकार प्रकाशक—विड वॉर्ड पब्लिकेशन्स ८००।७१५ नेहरू प्लेस, नई दिल्ली १८। पृष्ठसंख्या २२०, अविन्द्य का मूल्य ४८।

यह ग्रन्थ है किमल्लुपु ये खैबर तक और तहास से सिंधु की सीमा तक कर्ना विलुप्त मुसलमान का ४० वर्ष का खालसा राज केवल दस वर्ष की अन्धविधि में विदेशी प्रभुत्वन विद्रुप्त स्वामी पारस्परिक कूट के कारण विद्रुप्त साम्राज्य में बिलीन हो गया था। खालसा राज के समय होते ही समस्त सिख सैनिकों को निहत्ता करके बैठन देकर घरों पर बापल पम्की छुट्टी पर भेज दिया गया, दूसरे ठेका में सिखों की धर्ती बन्द कर दी गई। तीसरे सिखों ने बिना किसी विरासत के हथियार बाल दिए। कुछ ही वर्षों में बेरोकथार खालसा सैनिक सिखों के समूह बेतरतीब घुसने लगे। उस समय सर जान भारत और साह बलहोमी न दमन की अवेक्षा सुनिचा देकर खालसा सिख सैनिकों की विद्रोही पुरबियों और मुस्लिम सैनिकों के विरुद्ध प्रतिपक्ष की भावना से भर दिया। जातीयो और पेशवों के आदवांस से वे फिरबियों के हाथ के खिलाफे बल गए, उन्होंने आजादी की लड़ाई में प्रथम जो का साथ दिया।

बाद की जटिलयती लगती है परन्तु भी टोके के पक्षों की महाराजा रणजीत सिंह के खालसा राज की समाप्ति करने वाला साह बलहोमी जूते पहनकर स्वामन्दिर गया था और उसके स्वागत में बहादीवासी मजार्ई गई थी स्वामन्दिर की बाबिया अथ जो को सोप दी गई थी सिंह समा का सत्य एक सच न हो सके था। परन्तु सहजवादी हिन्दू नहीं, तब १८४७ के स्वतन्त्रता युद्ध में प्रथम जो के विरुद्ध लोहा लेने वालों का गद्गार कहा गया था और उसा के लिए प्रथम जोखाने करन बाने नामवासी कूकाबा को पब-प्रष्ट कहा गया।

पिछले जून मास में पाकिस्तान, अमेरिका कनाडा और ब्रिटेन विगत तत्वा के सहयोग से भारत के परियोगांतराज से खालिदाद बाने का प्रथम न पनप रहा था। विगत ३ वर्षों से पजाब में हत्याओं, बर्कियों, लडायों और अराजकता का नमन न प्रचलित था प्रभुत्वन एक दल काण्डो से जस्त होकर केन्द्रीय सरकार को बहा आपरेखान नु स्तार करता पड़ा। आपरेखान के फलस्वरूप बहु प्रभुत्वन नो बकारस गया पजाब में पब्लिशन का नया माहौल बाया। इस प्रभुत्वन के बावजूद बलकवादियों ने सुरक्षा सैनिकों के माध्यम से उन्हें अस्माक ३३ अक्रुडर के दिग भारत की लोकप्रिय प्रभावमन्त्री को हत्या करा दी है।

पिछले वर्षों में पजाब तूफान के भीषण दौर से गुजरा है उस दौर की भीषण प्रतिक्रिया प्रभावमन्त्री इन्दिरा जी की हुई है से भारतीय राष्ट्र को भी सहृदयी पडो है, पजाब की यह सारी समस्या क्या है उसकी पुष्टयुधि निज तत्को ने तैयार की है, और उनका समुचित समाधान क्या हो सकता है इन सबका सामयिक विवेचन प्रस्तुत सामयिक ग्रन्थ में किया गया है राजनीतिज्ञान के अध्येताओं के साथ सामान्य पाठकों के लिए भी यह ग्रन्थ पठनीय है।

## ‘एकला चलो रे!’

मह दिवसी ‘एकला चलो रे’ श्री गुरदेव रवीन्द्रगोष की यह कविता श्रीमती इन्दिरा गांधी की कुष्ठेक चुनौती पर दीव्य कविताओं में से एक थी। इस कविता के लिए श्रीमती गांधी को दिल में एक खास जगह थी। बसंत को इस कविता को बगला में सुनाता कलती थी।

हवा से एक माह पूव ही एक विदेशी लडकी ने उन्हें एक कविता नेजी की जिसे उसके दिल में कही महराई में छुा था। श्रीमती गांधी उस लडकी का एकला चलो नेजना स्मरहोती थी इसलिए उन्होंने इस कविता के कई अनुवाद कराए और उनसे छाटकर खुद अपनी कलम से उसमें फर बदल किए ताकि वो भावना वा कविता में वाहती है वो उसमें बा सा। श्रीमती गांधी ने अपनी कलम से उस लडकी को एक सत विद्या कि गुरदेव की कविता का मैंने यह टूटा फूटा अनुवाद किया है।

## आह इंदिरा !

रखक भी भसक बन जाय नहीं मिलेनी कही भिगल।

कूर कमीने हूयारा ने, कंभा रबा बिनोना बाब।

छोन लिया क्यों हाथ हमसे ? इंदिरा जहा अदभुत बाब।

कंभा बिधि का बजपात बाब, चौकाकुड़ी है चाल बाब।

—प्रकाश प्रकाशक (सौमित्र)

## इन्दिरा हत्या-योजना का ब्लू प्रिंट कनाडा

स्थित उग्रवादियों ने मेजा था।

मह दिवसी ६ नवम्बर। विषय प्रभावमन्त्री श्रीमती इन्दिरा गांधी की हत्या के विषय में केन्द्रीय गुप्तचर ब्यूरो को कुछ ऐसे सूत्र मिले हैं, जिनसे हत्या के प्रयत्न में कुछ विदेशी सज्जनों का हाथ होने तथा उन के द्वारा कुछ कविताओं के माध्यम से आतिया फैलाए जाने की पुष्टि हुई है। इसके साथ ही इन कविताओं वाले सुरागा से जांच की विद्या नो बल गई।

गुरु मास के सूत्रा के अनुसार श्रीमती गांधी की हत्या के निमित्त में गुप्तचर ब्यूरो के अधिकारों वार विभिन्न कविता को परस्पर जांचकर जांच पढना कर रहे हैं। वे कविता राम मनाहूर साहिबा भग्यलता में अर्थात् हत्यारा सतवत सिंह उसे छाप पढना बाना चानी बरणजीत सिंह नो दुष्टना म पायल हाकर तीपरा म बरप तास में मर्ते हो और कुछ सूत्रा के अनुसार विषय भाग मा बनाव जाता है, एक बरिष्ठ पुलिस अधिकारी और हत्याका का एक अन्य साथी को फिलहाल हिरासत में है।

## दिसम्बर के अन्तिम सप्ताह में

## निर्वाण शताब्दी के श्रवसर पर

## मध्य स्मारिका का प्रकाशन

## अपनी रचनाएं और विज्ञापन भेजिए

### वैदिक कैसेट

प्रसिद्ध फ़िल्मी गायक महेश्वर कपूर द्वारा महर्षि दयानन्द की अमर कृतियों

संस्था—यश, शान्तिप्रकर, स्वस्तिवाचन आदि

प्रसिद्ध भजनों-पेशाको—

सत्यापन पथिक, ओमप्रकाश वर्मा, पन्नालाल पीपूष, सोहनलाल पथिक, शिवराजबली जी के सर्वोत्तम भजनों के वमनस तथा

५ बुद्धिबल विद्यालकर के भजनों का संग्रह।

आप समाज के अन्य भी बन्त स कैसेटस के सूचीपत्र क लिए लिख

कन्ट्रीमैन इन्फोर्मेन्स (गुप्त्य) प्र नि

14 मासिक 11 फेस 11 अराक विहार वलती 52

फोन 7118326 744170 टैलेक्स 31-4623 AKC IN

## — प्राप्ति स्थान —

यह कैसेट दिल्ली श्राव्य प्रतिनिधि सभा,

1४ हुनगान रोड नई दिल्ली पर भी मिलते हैं।

**सत्य के प्रचारार्थ**

केवल  
**800/-**  
सेंकेड

केवल  
**400/-**  
सेंकेड

## मृत्युार्थ प्रकाश

यह घर पहुँचाए

सफेद कागज सुन्दर छपाई

शुद्ध संस्कृत पठितारण करनेवालों के

आकार (20×30 15 पृष्ठ ४२४ की दर) लिप्यप्रचारार्थ

(23×36—16 पृष्ठ ४२० की दर)

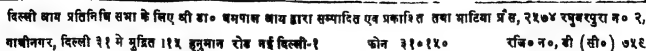
**आर्षसाहित्य प्रचार ट्रस्ट**

५५५, रवारी बाबाजी, दिल्ली-६ दूरभाष : 23४360/233112

30वें संस्करण से उपरोक्त मूल्य देय होगा।

—आनन्द एक बन्धु

राजयोगपाल खालसा मारक्षक	सुयदेव	महाशाय धर्मपाल	आत्मप्रकाश आषाढ
निधिपाल एक प्रधान	रित्नी आषा प्रति	प्रधान आषा	मन्त्री महाशाय
ता० आ० प्रति० मभा,	निधि मभा	कैटवी मभा	बन्नीताल बेरि डू
सौत्र यमे	मद्रा गवा श्री हग प्रा० विविदिङ्ग	२४ की नगरा मोडो गवक्ष च	नई दिल्ली १९०१



# आर्य समाज आर्य सन्देश

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि समा का साप्ताहिक मुखपत्र

मूल्य एक प्रति ५० पैसे

पृष्ठ ६

पृष्ठ ३

रविवार १८ नवम्बर १९८४

आय नव नर १९८० म३३०८४

३ मागशीष २०४१

दयानन्दानन्द—१५८

## इन्दिरा जी का निधन मानव मात्र के लिए महती क्षति सभी राष्ट्रवादी शक्तियां शहादत से सीख ले : अखण्डता की रक्षा करे दिल्ली आर्य प्रतिनिधि समा द्वारा दोबारा हाल में शांति-यज्ञ व श्रद्धांजलियां

नई दिल्ली। इन्दिरा गांधी युगमानवी थी, वह भारतीयता का जीवन्त प्रमाण थी, यह अत्यन्त बेद की बात है कि पञ्जाब के लोगों ने जहाँ साजसज्जाय मदनलाल झीगरा और मलत सिन्हा जैसे शहीद और राष्ट्रवादी रहे थीं वहीं इन्दिरा गांधी की हत्या की जघन्य हत्या का अपराध किया। ११ रविवार ११ नवम्बर को प्रातः १० बजे बीजान हाल में दिल्ली आर्य प्रतिनिधि तथा द्वारा थीमती इन्दिरा गांधी की स्मृति में आयोजित एक श्रद्धांजलि समा में लोकसभा के अध्यक्ष श्री बलराम जख्खर ने उक्त उद्गार प्रकट करते हुए आगे कहा— युद्ध आत्मा, कम है तपस्या से ही यह युगल पाप क्षमा या करेगा। कितने दुःख की बात है कि रक्तक हो मसक हो गया। ठीक उही प्रकार जैसे एक बाकू ने साधु के बैग में सलत इन्दिरा के बाड़े पर कब्जा कर लिया था।

इस अवसर पर केन्द्रीय ऊर्जा मंत्री श्री पी. विमलेश्वर ने थीमती इन्दिरा गांधी के शिष्टीय गुणों व बहादुरी की प्रशंसा की। प्रमुख परकार श्री बीजान द्वारा का सोसला ने थीमती गांधी की राष्ट्रमाता की सत्ता केते हुए अपनी श्रद्धांजलि अर्पित की। समा में साधवैशिक समा के प्रधान आत्मा रामगोपाल आलवाले, दैमिक हिन्दुस्तान के सम्पादक श्री बिनोद कुमार मिश्र आदिसमाज के मुद्र-य विद्वान् म-यासी स्वामी सत्यप्रकाश सरस्वती आदि ने दिवंगत आत्मा की श्रद्धांजलि प्रस्तुत करते हुए उनके उज्ज्वल व्यक्तित्व एवं कार्यों से प्रेरणा लेना का आह्वान किया।

### शांतिप्रियों के विशुद्ध कायवाही हो

श्रद्धांजलि समा से पूर्व दिवंगत आत्मा की संपत्ति के लिए शांति यज्ञ किया गया। समा में एक प्रस्ताव स्वीकृत कर घोषित किया गया कि वेदों विदेशी उग्रप्राणवादी, अलगाववादी शाक्तों के हस्त प्रहार से भारतीय राष्ट्र की जगतां नि आकाशवाणी की प्रतीक थीमती इन्दिरा गांधी की श्रद्धांजलि हत्या से भारत की स्वतन्त्रता एकता अखण्डता और प्रगु-सत्ता की रक्षा उन्हीने शरीर की अन्तिम ब्रह्म तप भारत माता की वेदों पर बलि-दान कर था।

थीमती गांधी एक महान् आत्मा थी उन्हीने भारत की अन्तराष्ट्रीय स्तर पर अस्मानजयक स्थान दिखाने में महत्व-पूर्ण भूमिका निवाही। उनका निधन केवल भारत के लिए ही नहीं बल्कि आयाज मानव के लिए एक महती क्षति है। इस अवसर पर सभी राष्ट्रवादी शक्तियों की खणकी शहादत से सबक लेकर राष्ट्र



ऊर्जा मंत्री श्री पी० विमलेश्वर श्रद्धांजलि प्रस्तुत करते हुए।

बाएं से लोकसभा अध्यक्ष श्री बलराम जख्खर माधवैशिक समा के प्रधान श्री आलवाले को आभ्यक्ष की मरवाहा किया।

### इन्दिरा जी शताब्दी की सबसे महान् महिला

आयसमाज सन्धन के प्रधान श्री० सत्यदेव एवं भारद्वाज ने ब्रिटन स्थित भारतीय उष्णागुप्त की मातन भारत के प्रधानमन्त्री श्री राजीव गांधी की सन्धन मेजकर भारत की प्रधानमन्त्री थीमती इन्दिरा गांधी पर किए कायरागुप्त पातक हत्ये की तीव्र भत्सना करते हुए थीमती गांधी को इस शताब्दी की सबसे महान् महिला घोषित किया है। आशा है कि पूज्य परम्पराओं का मानन करते हुए भारत को समृद्ध शक्तिशाली और बल्लरे देशों के लिए अग्रकण्ठीय बनाया जाएगा।

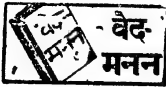
### पुलिस अधिकारियों की सराहना

आयसमाज बीजान हाल के प्रधान श्री सुयदेव ने एक प्रस वक्तव्य में पिछले दशे दौरान बाधनी फोक में क्षत्र के स्थानीय जतता की जान माल की सुरक्षा में स्थानीय पुलिस अधिकारियों की दूरप्रशिक्षा व काम कुशलता का सराहा है कसत महा में किसी धार्मिक श्री स्थान को क्षति नहीं पहुंची।

### श्रद्धांजलि निमित्त हवन भजन-कीर्तन

रविवार ११ नवम्बर को सप्त सन्धय एवं विश्व हि की समाज के अध्यक्ष आचार्य अग्रवाल देवे के सां निधय में १३ थीमती एस्टेट नई दिल्ली २ में विशेष श्रद्धांजलि कार्यक्रम आयोजित किया गया। इस अवसर पर दिवंगत प्रधानमन्त्री इन्दिरा गांधी की स्मृति में श्रद्धांजलि परक हवन भजन-कीर्तन किया गया।





## परमात्मा सब सृष्टि के उत्पादक

## आर्यसमाज को आर्य का एक प्रतिशत या अधिक क्यों ?

—राजेश्वर

स्वयम् पारे रजसो ज्योमन स्वभूत्योना बबसे भूतलन ।

नकृषे भूमि प्रतिमानमोजोतिं स्व परिपूर्येया सिध्द ॥ ३८ ॥ १।२।१२॥

भागरिष सज्ज ऋषि, इन्द्र देवता,  
निर्गुणधृष्ट, छन्द, वैवत स्वर ।

अन्धार्थ—हे परमपुरुषस्वम् परमात्मन् ॥ [स्वम्] बाप [स्व] इस सत्ता के [रजस] पृथिव्यादि सब लोको (सत्ता) [ज्योमन] आकाश के (भी) [पारे] पार धर्मादि परे ही (और) [स्वभूत्योना] अपने अनन्त ऐश्वर्य या पराक्रम के विराजमान हो के [भूतलन] दुष्टो के मन को सर्वत्र प्रभाति विरक्ता करके हुए [बबसे] (हमारी) सब के लिए [परिपूर्ये] सब पर वर्तमान और सबको [एवि] प्राप्त हो रहे हो (किञ्च प्राप्ते) [ओस] अपने अपने प्रभाति प्रान्त सामर्थ्य के [प्रतिमानम्] अवधि सहित लोक मान के [भूमिम्] भूमि को (क) [स्व] कुछ विशेष भय लोक, (वा) [सिध्द] परमाकाश धरणा सर्वार्थी लोक को (और) [भूय] प्रसरित लोक का बल (इत सबको) [आनन्दम्] प्रभो प्रकाश दे रहा है।

व्याख्या—पृथिवी सूक्ष्म चन्द्रमा सारा गगानि विविध प्रकार के सब लोक लोकात्मन ही ठीक परिमाण से ज्ञान-पुरुष रचना करने वाला परमात्मा ही है। बहु धर्मन् बहु इत समस्त सृष्टि के अन्तर और बाहर भी व्यापक हो रहा है। उसका पार कोई नहीं पा सकता। बहु धर्मन् ऐश्वर्य या अनन्त बल वाला भी है।

और हमारी रक्षा के लिए दुष्टो के मनो को सदा विरक्ता कर रहा है जिससे उन को पाप करने समय भय, शका व लज्जा उत्पन्न होती है और फिर भी यदि हम कुछ करते हैं तो इस लिए कि हम इसके लिए पूर्ण पुरुषार्थ नहीं करते हैं बल्कि जिस को हम चूना डारा जासकायध (प्रधानमन्त्री) मुख्यमन्त्री आदि) बनाते हैं वह ऊँचे जाकार का बच्चा बसलान मन वाला नहीं होता और अपने कर्तव्य का पालन नहीं करता। यदि हम अपनी सहायता स्वयं नहीं करेंगे, तो परमात्मा हमारी सहायता और करेगा।

भाषार्थ—परमेश्वर सबसे उत्तम और सब दुष्टो से परे अपने अनन्त ज्ञान का अनन्त सामर्थ्य के इत समस्त भगत को धर्मपुत्र रचना करने वाला है और सर्वत्र व्यापक होकर इन सब लोकानो को की ठीक व्यवस्था मो कर रहा है और सब चीजों को उनके वाप-पुष्पो का फल यथोचित देकर पूर्ण व्यापकीय सिद्ध हो रहा है। ऐसे ही समस्त (प्रधानमन्त्री धरणा मुख्यमन्त्री) को भी चाहिए कि ठीक साधन द्वारा प्रजा को सुख देने के लिये और बोर-कड़, हत्यारा, छली, कपटी, विषयी, गुधारी, आलसी बच्चा विद्या-हीन देश में न रहे और प्रजा की रक्षा पूर्णता करे।

बी १०३, नीतिबान, नई दिल्ली-५६



## धर्म की दुहाई।

महाराष्ट्र के युद्ध का प्रमाण है। औरयो और पाण्डवों की सेनाओं के मध्य भोजन युद्ध चल रहा था। औरयो के रहते ही प्रधान सेनापति भीष्म पितामह और युध्द्रोनाथार्थ युद्ध अथ वे सिवा ही कहे के। औरयो की सेनाओं का नेतृत्व योद्धा कर्ण को सौंपा गया था। कर्ण ने एक वर्षाकार बाण शरीर पर चडाकर फेंका चतुर सारथी भी कृष्ण ने रथ के पीछे की लगातार लीककर उन्हें दुष्टों के पराजित किया। रथ नीचा हो गया, पण्डित पृथ्वी ने गड गए, कर्ण का तीरछिद्र पर गुजरते हुए उसके शिर को गिरा गया, युद्ध के नियमों के अनुसार कर्ण को युद्ध बन्द कर देना चाहिए था, परन्तु वह युद्ध करता रहा, श्री कृष्ण ने पहिले की निकाल दिया और अपने न लब्धा रहा, कुछ ही वर में अर्जुन के तीर से कर्ण बेहोश हो गया, अर्जुन ने युद्ध बन्द कर दिया।

इतने में कर्ण के रथ का पहिया पृथ्वी में घस गया, कर्ण ने अर्जुन को सभाम-धर्म की दुहाई दी तब भी कृष्ण ने उत्तर दिया—जब भीम को जह्द-भरा भोजन दिया था, तब तुम्हारा धर्म कहा गया था, जब बाबा कुली संवत पा०० के अ जलन के लिए लाक्षणिक का निर्माण किया गया था, तब तुम्हारा धर्म कहा गया था, तेरह बरस का बन्धन युद्ध होने पर जब हम लोगों ने पाण्डवों का राध नहीं लीटाया, तब तुम्हारी धर्म की दुहाई कहा गई थी, अकने बालक बालमय को छह महारथियों द्वारा मारते समय तुम्हारा धर्म कहा गया था आताभी लोगो द्वारा धर्म की दुहाई सोना नहीं देती। मैं कर्ण लगेगा, उसका बाण से अर्जुन ने सुन लिया था। अबकर पाकर कर्ण पहिले की पडे से लकालने लगा, तब तक अर्जुन संवत हो गया था, उसने कर्ण के सम्मुखने भी पहिले ही उसकी धर्म पर विनाना जमा दिया।

—नरेश

भारत में आर्यसमाज के प्राचीन सग-ठन व विवेक में राष्ट्रीय सगठन प्राथमिक (कम से कम १० सभासद) आर्यसमाजों से बाप का १० प्रतिशत लिया करते हैं। प्राचीन सगठनों की प्राथमिक आर्यसमाजों से शिकायत रहती है कि प्राथमिक सभासदों की बाप के बसाबा अन्य बाप (किराया बादि) का बाप नहीं मिलता प्राथमिक आर्यसमाजों परेशान हैं कि समासद उनकी बाप का एक प्रतिशत नहीं देना चाहते। बहुत कोड़े से ऐसे समासद हैं जो लेखका से एक प्रतिशत या अधिक देते रहते हैं। अभी अधिक आर्यसमाजों तो ऐसी ही हैं जिनके सारे अधिकारी भी १२ नहीं देते हैं। सभासदों में बहा तक प्रेरणा भरने की बात है वह कार्य तो पुरोहित एवं बाप कर करते हैं। सगठन या प्राथमिक सभासद के अधिकारी को व्यवस्था को इस प्रकार से करे कि एक प्र० मिल ही जाए, बहुत रहते भी अधिक हो मिले। प्राथमिक आर्यसमाज ने जो उपनिषत्-पुस्तक हो इनसे निम्न लूनाए हो—१ समासद बनने की शिक्ष, २ नाप । इसके साथ बर्न-व्यवस्था-निष्ठा-उपनिष आदि को र्णक मान रहे उपनाम नहीं हो। ३ पिता का नाम या पति। बच्चा पत्नी। नाम, ४ स्वधर्म नाम। विवाहित स्त्री समासद हैं जो उसका बन्ध, पति का नहीं। ५ व्यवसाय। अपनी मेहनत की बाप का साधन। ६ पूरा रात। जिससे चिट्ठी मिले, साथ ही कोई बर पशुनामा बाहे तो पहुच सके। ७ स्व धर्मित बाप —

अपने शारीरिक या बौद्धिक धन द्वारा प्राप्त बाप को एक भाग है। यदि मेहनत की कमाई से बचत होती है जो अधिकारी (बैंक) में बना है तो उसका भाग भी। साथ ही अपनी मेहनत से कोई मकान बनाना या बनाए हैं तो उनका किराया भी।

उपनिषत् पत्रिका में दिनांक १ से ३१ तक सकेतित होता है। जब समासद अपने हस्ताक्षर जित लिन जाएँगा, उस दिन कर देना। बाप धर्म को जो स्थापन है उसमें भी समासद के हाथ की निष्ठा-वट होनी चाहिए। कोकार एक प्रतिशत आदि की रसीद अपने हाथ से बनाए। समासद स्व ही बाप धर्मो तो अपने का अधिक उत्तरदायी बानेगा। बापधर्म के लिए जो बागा (कालम) है उसमें से तीनो सोत मिले जाएँगे। हर जोत में जो बाप उस नाम विशेष है होते वह समासद द्वारा लीजा जाय।

जिना मेहनत की बाप भी हो जाओ हैं। जैसे अन्धारा। नास या धर्म के जो

उपहार मिलते हैं—यदि कुछ, तो उसका भी सकेत हो। पिशा या दाश आदि की ओर से निशा धन व उसका व्याज भी जायबाद व उसका किराया ये तो उपहार हैं ही। उसकी पत्नी अधिकारी से किसी प्रत्यय में उसको कोई वस्तु मिले या धन-सम्पत्ति आदि वे सभ उपहार ही हैं। कारण इनकी प्राप्ति से उसकी अपनी मेहनत तो कुछ है नहीं। सगठन बापों के प्राप्ति बाहे विवाह के समय बच्चा विवाह के बाद वे बहु तो सारी उपहार है।

आर्यसमाज, वेद प्रतिपादित भाषम पत्रित को स्वीकार करता है। किसी भी प्रकार का बचपन बा वैतुष बच्चा धर्म-हीन अधिकार वैतुषकुल नहीं है। भाषम बन्ध ही बहाता है, सभ ओर यानी ६ पिशाओं को ही उनके लिए धन करता है। बत बाप्य समासद होते को सार्वक करता है तो पितृव्य-मातृव्य पत्नी के काला-पिता के वध सा अन्य किसी से किसी भी प्रकार का उपहार नहीं दिया जाए। 'उपहार' के जो मासिक या वार्षिक बाप है उसका एक प्रतिशत ही क्या बहु तो पुरी ही मातृव्यमात्र को ही जानी चाहिए। यदि समासद कुछ अन्य लोक कल्याणकारी सत्कारों का भी सदस्य है तो उपहार को बाप में से उनको भी से लकना है, परन्तु बाप समासद के लिए योग्य तो यही है कि बम रहित-नैतिक अधिकारी आदि की बाप स्वयं के उपभोग में नहीं ले। ऐसा होने से आर्यसमाजों की बाप जित गति से बढ़ जायेंगे। एक प्रतिशत स्वयं बाप देने से ही आर्यसमाजों को बाप बाज्जी माना में बढ सकेगी।

समासदों की बाप का एक प्रतिशत या अधिक ? इस बारे में हर प्राथमिक आर्यसमाज में परिचर्चा हो जाती है। किस किस प्राथमिक समाज में किसने सदस्य एक प्रतिशत देने, मिलने अधिक प्रतिशत देने। ये बाज्जी को एकत्र किए जाए। एक प्रतिशत या अधिक बापों को पराधिकारी का प्रतिनिधि बनाने में बरीयता दी जाए। सार्व आर्यसमाज सगठन को योग्य है कि सब बाप पत्नी में बहु निबन्ध प्रस्थापित कराए। प्राचीन-राष्ट्रीय सापेक्षिक समा की बाप बढाने का वातावरण इस गति से बनेगा।

स्वाध्याय-सुख,

गणेश कुटीर, दोहासाल, नई दिल्ली-१०१०१

अभयान् शांतिप्रद हो ।

बोझू वनो मित्र । व वनन वनो भवत्यस्यमा ।

व न हन्ती बहुलस्य सनो विष्णुवृक्षकम् । ॥ ७० १-१० ६,

यन्त्र ३६ ६, वर्ष १९८६

मित्र स्वरूप अग्रवाण् हमारे लिए सुखकारी हो, सर्वेच्छं परसेखर सुखदायक हो, त्यागकारी ईश्वर हमारे लिए शांतिप्रद हो, नियायक हन्त्र एव सर्वविधो बहुलस्य तथा कल्याणकारी विष्णु रूप परसेखर हम सबके लिए कल्याणकारी हो ।

## आर्यसन्देश शक्तियों के संघर्ष में हमारा वायित्व

आर्यसमाज सामान्यतः प्रत्यक्ष राजनीति में भाग नहीं लेता, परन्तु वह राष्ट्रीय रामरंग पर चलते बान्ने हितक राष्ट्रविरोधी घटनाओं की उपेक्षा भी नहीं कर सकता । पिछले दो-तीन वर्षों से देश के परिस्थितियों के बीच प्रसार के हितक राष्ट्रविरोधी अलगाववादी इच्छा हो रही है, जिनसे देश का यह स्वदेशीय लोच समष्टिगत हो उठा था, उसे निरामय करने के लिए जून के प्रथम सत्राह में केन्द्रीय सरकार को आतंकवादियों के अग्रुतत्वर स्थित गड का निरामय करने के लिए सैनिक कार्यवाही करनी पड़ी । उस कार्यवाही के बाद प्रवेश में स्थित कुछ नियमित हुई की कि ३१ अक्टूबर के दिन भारत की प्रधान मन्त्री श्रीमती इंदिरा गांधी की उनके सुरक्षा सैनिकों ने ही हत्या कर दी । इस घटना से सारा देश स्तब्ध एवं किर्णमयिभूत हो गया । देश का विषय है कि कुछ गुप्तदाह लोगों ने इस घृणित इच्छा पर अपनी प्रत्यक्षा व्यक्त की । यह देश की बात है कि इसकी भी अत्यन्त भीषण प्रतिष्ठा हुई । देश के अनेक स्थानों पर अत्यन्त बल और अराजकता स्थापित करने की कोशिश की गई । यह उतथो को बात है कि प्रारम्भिक अवस्था के बाद अब सारे देश में शांति स्थापित हो गई है ।

देश में शासन बाहे किन्हीं की दल का हो, परन्तु प्रत्येक राष्ट्रवादी को कुछ मौलिक बुनियादी विषयों में स्पष्ट नीति धारित करनी चाहिए । आधुनिक प्रजातन्त्री राष्ट्रों की तरह इसे यह धारित करना चाहिए कि देश उन्नति कैसे करे, वह किस प्रकार की रीति-नीति धारित करे, वह किस प्रकार के बाह्य को मान्य करे, उसमें स्वतन्त्रता रखने के बावजूद राष्ट्र को आंतरिक अत्यन्त एव बाह्य धातुओं से सुरक्षित करने के लिए किसी प्रकार का मतेपरे नहीं होना चाहिए । गम्भीरों के राजा चित्रम हटाने का मोरव पक्ष के नेताओं को गिरल्लार करने पर युधिष्ठिर द्वारा कपने भाइयों की ही हुई सीख हमारे लिए आज भी मागवर्धक हो सकती । युधिष्ठिर ने अपने भाईयों को परामर्श दिया था—कोरव ने ही और हम भाई पाव । हमारे बापकी विषया वा मनरेड हो सकते हैं, उन्हें सुझाने के लिए हमें यत्नशील होना चाहिए । परन्तु यदि हमारे विषय कोई बाहरी शक्ति आए हो हमें मिलकर एक सौ पाव के रूप में अग्रवृद्ध करनी चाहिए । आज हमारे राजनीतिक नेत्र स्वस्थ प्रजातन्त्री की इस पीछ की मानकर राष्ट्रीय अग्रवृद्ध के कार्य करें तो अनेक समस्याएँ सुलभ सकती हैं ।

हमारे साथ हमें यह भी स्मरण रखना होगा कि भारत की स्वतन्त्रता देश की केन्द्रीय सत्ता के दिवंग होने से अनेक बार खतरे में पड़ी है । जब-जब केन्द्र कमजोर हुआ, देश बंट गया और विदेशी यद्वा प्रभुत्व स्थापित करने में सफल हुए । इसी के साथ हम यह भी नहीं सुन सकते कि हमारे देश में जयन्त, और गीराज और हूरे गद्गार पंचमांगी सदा रहें हैं, जिनके बोध से देश का पराजय का सामना करना पड़ा । देश की प्रजातन्त्रता की हत्या सुखसा नैमिकी द्वारा साक्षी विदेशी मुद्रा की भुल सेने के कारण हो सकते हैं । स्पष्ट है कि हमारे देश में वह राष्ट्रप्रतिष्ठा, अकाराधी और नैतिकता नहीं है जो हमारे देशों में है । देश भर में—कम से कम आर्यजनों में नैतिकता एवं अरिष्ट के ऊँचे भावधृष्ट को स्थापित करने में आर्यसमाज अपनी यक्ष्मि भूमिका प्रस्तुत कर सकता है । भारत में ईश्वरी आसुरी शक्तियों के संघर्ष की घड़ी में कुछ सहस्र-सहस्र का शक्ति सन्धे आर्यजन अपनी सन-सन बन की बहुलित देकर शास्त्रीय मस्कीति एवं वैदिक मानवीय उत्पन्नान की प्रतिष्ठा में अपनी गौरवर्धनी भूमिका प्रस्तुत कर सकते हैं ।



चिट्ठी पत्रों  
आर्यसमाज सगठन और पौरोहित्य अधिष्ठाता

सांवेदिक-राष्ट्रीय-प्रदेशों की आर्य प्रतिनिधि समाजों में वेदप्रचार बलिष्ठता हुआ करता है । ठीक ऐसे ही पौरोहित्य अधिष्ठाता भी हर स्तर पर हैं । सांवेदिक का पौरोहित्य अधिष्ठाता, सुचनाएं प्राप्तकर्ता रहें, राष्ट्रीय पौरोहित्य अधिष्ठाताओं से । उनका मार्गदर्शन भी करता रहे । इसी प्रकार से राष्ट्रीय पौरोहित्य अधिष्ठाता प्रवेश पौरो अधि, जिला पौरो अधि किया करें । जिले स्तर पर जैसे पौरो अधि हो वैसे ही हर प्राथमिक आर्यसमाज में पुरोहित हो । सबकी विधि (शास्त्रीय-आधुनिक-सामाजिक) उन्नति करने की समता उत्पन्न करना भी एक कार्य है पौरो अधि का । जिला पौरो अधि के बाये प्रत्यक्ष (या कि तत्पराप्तिका) स्तर पर पौरो अधि बन सके तो बहुत अच्छा । अन्यथा तब तक जिला पौरो अधि प्राथमिक आर्यसमाजों का कोष (ग्राम पंचायत या नगर सन्ध) तब कर दें । सत्तल योग के माध्यम से शास्त्रीय-आधुनिक उन्नति तथा परिवार (या कुटुम्ब) मधुरता से सामाजिक उन्नति करने का सतत प्रयास पौरो अधि करें । गोष्ठी या विधिर कोई भी एक माध्यम बनाया जा सकता है इस कार्य के लिए ।

आर्यसमाज यवन में जो पुरोहित सब आर्य समाजों की परिवार (पत्नी-संतानें) गोष्ठी कराके ही नियमित रूप से । आर्यसमाजसुतारा भाव पत्नी, भाव पुत्री (या पुत्री) इन इनकी गोष्ठीया भी कराई जाए । अलग-अलग तथा घुरे परिवार की सन्ध-सित गोष्ठीयों के अतिरिक्त पुरोहित हर समाज के परिवार में जाया करें । जहाँ सबकी सन्धिसित तथा व्यक्तित्व चर्चाओं के माध्यम से पारिवारिक स्वास्थ्यवर्द्धन करें । ताकि समाज के परिवार जनों में परस्पर मित्रता-अभिरुद्धा बढती रहे, मोर ये परस्पर व्यक्तित्व विकास करते रहे । यह कार्य सतता प्रयासशीली हो सकता है कि जो आर्य समाजस्थ नहीं है वो 'आर्य पुरोहित' को बुलाते लें । पुरोहित हर समाज की सत्ताओं का पुरा विवरण भी रहे ताकि आर्य पुत्र (या पुत्री) के विवाह सम्बन्धी माग दर्शन कर सके । कार्य का विवरण पुरोहित रहे, प्रत्यक्ष (या जिला) पौरो अधि की । ऐसे ही प्रदेश-राष्ट्रसर्वोच्च पौरो अधि की विवरण जाये । यदि कोई समाज रंगार हो । तो उस क्षेत्र के पुरोहितों को प्रशिक्षित किया जा सकता है ।

—रामलक्ष्मण द्वारा स्वास्थ्य-सुख, गणेश कुटीर, गेडावाल माग, अक्टूबर-३०५०१

“महाकवि रवीन्द्रनाथ ठाकुर और इतिहास चिन्तन”

शिवाजी के प्रत्यक्ष से समूचे देश में एक प्रख्यात उल्लाह फैल गया और हमने समग्र विषया कि देश सगठित हो गया । परन्तु समूचे समाज रूपी राश्री में घुई दर्रा में और छिद्र मुक्त रूप से काय किया करते हैं । उनके कारण हम किसी उच्छ्वादाय को विरक्तता तब बनाए नहीं रख सकते । शिवाजी ने इन दरारों को ढँकी की बनी बनाए रखना चाहा । वह युगपत के आक्रमण से एक ऐसे हिन्दू समाज की रक्षा करना चाहता था, जो आग्निप्रेर के विभाजन और अलगका को ही जीवन का स्वप्न समझता है । वह विषमता से भरे हुए पाप-अशुनी समाज को समूचे भारत का विभाजित बनाया चाहता था, इसलिए मानो वह बाणू की दीवारें खोल कर रहा था । यह अग्रमन्त्र को सम्मन बनाने आ रहा था । जाति पात से मुक्त रहने हुए भीतर से फटे और बिखरे हुए हिन्दू समाज का भारत जैसे विषाल महाद्वीप पर स्वराज्य स्थापित करना मनुष्य की शक्ति से बाहर और निसर्ग के विरुद्ध है । (शिवाजी एण्ड हिज टाइम, पृष्ठ-४३०-४३७)

अंक या वर्धन पौरा, जोकरा कुंज, शारीबा रोड, बमोदर २६००१

स्वामी दयानन्द और महात्मा गांधी

दि ७ अक्टूबर के आयमदेश में डा कमन'केशरी गोकना में उपपुस्त गीपक लेख के अन्तर्गत महात्मा गांधी के स्वामी दयानन्द एवं आर्यसमाज विषयक विचारों की सुन्दर विवेचना की है । वहा यह स्मरणिय है कि २६ मई १९२४ में 'यय इण्डिया' में महात्माजी ने सत्यार्थप्रकाश को एक निराशाजनक पुस्तक तथा स्वामी दयानन्द को सहिष्णु, अनुदार तथा हिन्दू धर्म को सहीमें बनाने वाला आदि लिखा था । कालान्तर में दिल्ली के साक्षात्कार में सत्यार्थप्रकाश की पुस्तक लिखकर महात्माजी को इन आपत्तियों का उत्तर दिया था । यह पृष्ठ १९३३ में प्रकाशित हुआ था । इसका उद्घाटन इन्होंने हीकीक सहीमें प्रकाशित हुआ ।

डा अमलीवाल शारीबा, पच्छीयगढ़

## दक्षिण एशिया की सांस्कृतिक तीर्थयात्रा

— डा० सत्येन्नु बिद्यालसकार

हजारों पर्यटक प्रतिभास भारत से बाईसह और सिंगापुर जाते हैं। उनमें से कुछ पूर्ण विद्या में और भागे बहकुर हाग-काग तक चले जाते हैं और कुछ ज्ञान प्राप्त कर। पटकको के लिए ये देश विश्वका वाक-रक्त हैं। सिंगापुर और हागकाग कस्टम्स की (आयात कर से मुक्त) नगर हैं। वहा टेसीबिजन, चिबिया, ऊनी बल्म और बीबीयो आदि सस्ते मूल्य पर प्राप्त किए जा सकते हैं। आधुनिक, भौतिक सम्पत्ता का उत्कर्ष आपन में देखने को मिलाता है। और हागकाग विला पटाया (बाईसह की एक नगरी) विलासिता के प्रसिद्ध स्थान है। इन सब की ओर पर्यटकों का आकर्षक होना सदा स्वाभाविक है।

पर सिंगापुर के दक्षिण-पूर्व में इण्डो-नेशिया के ओ दीप हैं, उनको और भारत के पटकको का बनी ध्यान नहीं गया। प्रकृति की रमणीयता तथा आधुनिक सुख-सम्पत्ता की दृष्टि से ये द्वीप विश्व के किसी भी पर्यटन-स्थल से कम नहीं हैं। बासी द्वीप में अवेरिका, आस्ट्रेलिया, जापान और यूरोप में लाखों पर्यटक प्रभण के लिए आए हैं। और दक्षिण-पूर्व एशिया में एक पर्यटन क्षेत्र के रूप में उसकी बनी स्थिति है, पर भारत से कोई भी पर्यटक यात्री नहीं गयी जाते। यह बात इस कारण और भी बलवती आकर्षक की है, क्योंकि बासी द्वीप के ६५ प्रतिशत निवासी हिन्दू धर्म के अनुयायी हैं, और धर्म तथा संस्कृति की दृष्टि से भारत के साथ उसका अनित्य सम्बन्ध है। केवल बासी में ही नहीं, अपितु इण्डोनेशिया के जावा व समूहका आदि द्वीपों में भी लाखों हिन्दुओं का निवास है, और ये द्वीप सांस्कृतिक दृष्टि से अब तक भी भारत से प्रभावित हैं। सोलहवीं सदी के प्रारम्भ तक इस्लाम का प्रायः सब द्वीपों में हिन्दू धर्म का प्रचार था और वहा के राजा हिन्दू धर्म के अनुयायी थे। उस समय तक दक्षिण-पूर्व एशिया का यह क्षेत्र बहुतरास का ही भूगर्भ था। पिछली चार सदीयों में इण्डो-नेशिया के बहुतरास निवासी को इस्लाम को अपना धर्म है। पर अपनी पुरानी सांस्कृतिक परम्पराओं का उन्होंने परि-रक्षण नहीं किया है। वहा की भाषा, कला, रीति-रिवाज, त्योहार, उत्सव, मनोरंजन आदि सब पर भारत का पुरा-पुरा प्रभाव आज भी विद्यमान है। हिन्दू धर्म का बासी वहा लोग नहीं हुआ है। इण्डोनेशिया के ओ लोग हिन्दू धर्म के अनुयायी हैं, उनको सदा अग्रही लाभ व लगभग है, जिनमें से पक्कीस लाख से लगभग बासी द्वीप में निवास करते हैं, और दस लाख के लगभग समूह द्वीप में। इण्डोनेशिया के ये हिन्दू श्रीजी, माटीरम् से हुए और केनीया आदि हिन्दुओं के समान दस

हैं। बासी वहाँ में वहा जाकर नहीं बसे हैं। भारतीय हिन्दुओं के समान ये भी हजारों वर्षों से हिन्दु धर्म का अनुकरण कर रहे हैं। बासी द्वीप तो सन्धे वर्षों में हिन्दू प्रवेश का मार्ग राज्य है। कोई-कोई भारतीय हिन्दू पिछली सदी में वहा बसव गए हैं, और वहा के भी कोई-कोई विद्यार्थी आदि निकले-तन व हिन्दू विश्वविद्यालय सत्त्वाओं में शिक्षा के लिए आए हैं, पर सुदूर दक्षिण-पूर्व एशिया के इन लाखों हिन्दुओं के साथ भारत का सम्बन्ध नाम मात्र का ही रहता है। गुप्तकाल के काल (चौथी-छठी सदी) के परम्परा विज्ञानों व पण्डितों की कोई भी सम्पत्ति इस क्षेत्र में नहीं गई, जिसके कारण इण्डोनेशिया के हिन्दू धर्म का भारत के हिन्दू धर्म के साथ सम्पर्क नहीं रह गया, और सम्पत्तिका में भारत में जिस वनित बायोधर्म का प्रादुर्भाव हुआ, वही इण्डोनेशिया के हिन्दुओं के रूप में महत्वपूर्ण स्थान इस देश के हिन्दू धर्म में प्राप्त कर लिया, इण्डोनेशिया के हिन्दू लोग के परिचित रहे।

यह सम्बन्ध की बात है, कि इस क्षेत्र के हिन्दुओं के साथ सम्पर्क स्थापित करने की ओर कतिपय महागुणों का ध्यान गया, जिसके द्वारा सम्पर्क हिन्दू पर्यटकों की एक मण्डली भारत से दक्षिण-पूर्व एशिया की यात्रा के लिए नई बाईसह-संस्था तथा सिंगापुर के साथ-साथ वहा जाया और बासी द्वीपों में भी गई। इस मण्डली में बीस नव-वर्गीय थे, जो सभी सुशिक्षित एवं उच्च-वर्गीय के थे। परा-प-कारिणी सभा के प्रधान स्वामी ज्ञानानन्द सरस्वती (अनार्य उच्च-विदित विद्वान् तथा एक विद्या के साथ), चित्रकला के ज्ञान-रत्न रवि प्रसाद कर्माकर श्री नेन्द, धर्मशास्त्र कर्मज्ञ के प्रतिनिधि श्री लक्ष्मीनारायण आचार्य, विश्व हिन्दू परिषद् के प्रचार-मन्त्री श्री वसन्त-विहारी, बन्धु चन्द्रशेखर आचार्य हृदयार के बा० मेहरा, लक्ष्मण विश्वविद्यालय की प्रोफेसर डा० आरति देवबाबा, कानपुर के प्रसिद्ध पत्रकार श्री सत्यनारायण जायसवाल, डा० कमला प्रभाल श्रीमती रत्नमो दीवी, रामासा ठाकुर आदि कितने ही सम्प्रदाय एवं सुशिक्षित नर-नारी इस यात्रा-मण्डली में सम्मिलित हुए थे। मैं भी इस यात्रा में साथ गया था। यात्रा की सत्र व्यवस्था ठीक-बुरा टूट (२० दिनांक गिबन ईस्ट), नई दिल्ली द्वारा की गई थी, और इस यात्रा की ओर से यात्रा का प्रबन्ध श्रीमती उषा निखा के हाथों में था। इण्डो-नेशिया की यात्रा पर गई इस पर्यटक मण्डली को मध्य वर्षों में भारतीय द्वीप प्राप्ति-पत्र कहा जा सकता है। लोग दिन-दैनिक तथा पटाया का परिग्रहण

कर २५ सितम्बर, १९८४ की रात के नी बसे हम जकार्ता पहुँचे। जकार्ता जावा का सबसे बड़ा नगर है, और इण्डोनेशिया की राजधानी है। उसकी जनसंख्या ७५ लाख से भी अधिक है। शाम चौकत और सांस्कृतिक रंगाने में यह किसी भी आधुनिक नगर से पीछे नहीं है। जकार्ता की भूमि पर पर-रखे ही मुझे राजा गुणवर्मा का स्थान ज्ञाया, जो छठी सदी में इस प्रदेश का शासक था। उस समय इस नगरी का नाम जकार्ता न होकर ताकम था। राजा गुणवर्मा में वहा एक नहर का निर्माण कराया था, जिसका नाम 'मन्दी' था। पन्द्रहवाँ नहर वहा पहले से विद्यमान थी, जिसे पूर्ण वर्मा के पिता राजाविजय ने बनवाया था। मोरोठी नहर के निर्माण के पुरा हो जाने पर राजा गुणवर्मा ने एक हजार वर्षों बाद को दक्षिणा में प्रदान की थी। मैं शाकम नगरी के प्राचीन शिक्षा लेकों के स्मरण में मन था। नमस्ते शाकम सुकर मेरा ध्यान मग हुआ। सामन देखा, तो इण्डोनेशिया की पारिभाषिक के हिन्दू सत्य की गुणवर्मा राजा स्वागत करने के लिए खड़े थे। भारत से आए रहने विज्ञानों को अपने देश में देखकर उन्होंने प्रसन्नता से सभी की, और बगले विन का कायस्थ निर्वासित कर इस अपने होटल में बने गए। जकार्ता में हमने बहुत कुछ देखा, पर ६५ एकड़ के विस्तृत क्षेत्र में निर्मित लघु इण्डोनेशिया में हम विशेष रूप से आकृष्ट तथा जापान-यात्रा के बहुत वक्तार हैं। लघु इण्डोनेशिया में विश्व द्वीपों की संस्कृति को खोज रूप से प्रस्तुत किया गया है। जावा, बासो, गुमात्रा, कनिस्मन (कोलिन) आदि सभी द्वीपों के लिए उन्नी सौ से कम बन गए हैं। और उन्नी प्रकार के भोजन आदि की बहा व्यवस्था की गई है, जेसे कि उन द्वीपों में यथार्थ पाए जाते हैं। उनके प्राकृतिक दृश्य भी वास्तविकता के अनुकूल हैं। सिनी इण्डोनेशिया का जनसंघन कर सारे देश का यथार्थ भावों के सामने स्पष्ट हो जाता है।

लघु इण्डोनेशिया के समीप ही एक मध्य हिन्दु नदिर है। इस सुदूर देश के हिन्दू किस रूप से दक्षिण-पूर्व एशिया का करते हैं, इसे देखने का अवसर हमें इस नदिर से जाकर प्राप्त हुआ। साथ कास का समय था। जाते के अधिक नर-नारी वहा उपस्थित थे। जिनके के प्रभण में एक ऊँचे बन्दूको पर सब बैठे हुए थे। हम भी एक ओर बैठ गए। प्रायः नर-उप-

सना प्रारम्भ हुई। ओर ३५ युवक एवं का गायत्री मन्त्र के साथ सत्त्वा के मन्त्रों का उच्चारण प्रारम्भ हुआ। सब उपस्थित नर-नारीयों में समस्त स्वर में वेद के मन्त्रों तथा महाभारत आदि के लेखों के प्रायः नर-उपसना की। जकार्ता के हिन्दुओं की सत्त्वा के साथ हम सबने महान् दयानन्द सरस्वती द्वारा विहित विधि से सत्त्वा तथा प्रायः मन्त्रों का पाठ किया। किला अनुत्तुन्य था। हम इण्डोनेशिया की भाषा नहीं समझते थे। और वहा के लोग हिन्दी से अनभिज्ञ थे पर हमें परस्पर कोने वाली हम सब के एकालसका की भाषा उल्लन करने वाली वेद शास्त्री की वे धार्मिक एवं सांस्कृतिक परम्परा थी, जिन्हें हमने समान रूप से विरासत में प्राप्त किया था। ओर ३५ के नाम, गायत्री मन्त्र तथा वेदिक गुणों में महाभारत के लेखों को हमें इस क्षण से एक अनुत्तुन्य रूप से भाव रहा था, कि संकोक एवं कीर्ति जाने पर भी उसके सुदृढ मन्त्रों से डील नहीं आई थी। की गुणवर्मा इस अवसर पर हमारे साथ थे। यह भी अपने देश के हिन्दुओं के गुणवर्मा में अन्य पण्डितों के समान ही भाग ले रहे थे। पारिभाषिक के सत्य होने के नाते उनमें उच्च व श्रेष्ठ होने की भावना प्रादुर्भाव नहीं हुई थी। हमारे स्वागत में जकार्ता के हिन्दू मन्दिर में बसना की भी व्यवस्था की गई थी। हमने इण्डोनेशिया के हिन्दू भाषाओं के साथ वैठकर सत्त्वा, मिथलन, धाम, वृष आदि महान् किए। सब को यह अनुभव कर रहे थे, कि तो बहुत-सी देशों के हिन्दु संकोक वर्षों के पश्चात् आज फिर मिल कर एक साथ बैठे हैं। मैं और संस्कृति की उन्नी देशों एकावस्था है, जो सब हजारों मीलों की दूरी विधिम कर रही है और न संकोक वर्षों का अन्तराह।

जो दिन जकार्ता का परिग्रहण कर हम लोग जकार्ता गए। यह मध्य जावा का प्रभण नगर है। ओर वहा का विशाल बौद्ध महापरिचर के लिए बने हैं। उस की गिती ससार के सात आर्यों में की जाती है, जिसे देखने के लिए कपरेली यूरोप, जापान आदि सारे देश के लाखों प्रतिवर्ष लोग जकार्ता जाते हैं। इण्डो-नेशिया का एक धर्म द्वीपस्थता है। जिसके सीरेन-वर्मा राजा बौद्ध धर्म के अनुयायी थे। इण्डो राजधानी की विधिम श्री वीरेन्द्र राजा बड़े प्रतापी थे। अपनी क्षमता का विस्तार करते हुए बासी सदी में उन्होंने जावा को भी जीत लिया था। श्रीविजय (गुमात्रा) के इस वैभववासी बौद्ध सम्राटों ने ही जावा में जोगजकार्ता के समीप कोरोबोर के महापरिचर का निर्माण कराया था। महापरिचर भी विशाल बन्दूको था। बन्दूको से मिलकर बना है, (शेष पृष्ठ ८५)

# अस्तेय-चोरी न करना

—पुरेवाचरण वेदात्मकार एम ए एल टी

'अस्तेय' न होने से लाखों रुपए का नुकसान सरकार को होर है। शरीर शरीर से जनता का हो रहा है। एक टिकटा मुनि।

रत्ने कर्मचारियों को रेल में बिना टिकट चलने का अधिकार सरकार ने दिया है या नहीं। पर उन्होंने स्वयं ले लिया है। इसके लिए उन्हें एक मन सीलना पड़ता है। मन बतलाने से पूर्व एक घटना सुनाऊं ? मैं एक बार देहरादून से गोरखपुर आ रहा था। मेरे पास टिकट थी था। मैं बिना टिकट यात्रा करना अपने दिल, जनता के प्रति और राष्ट्र के प्रति अपराध मानता हूँ। बहुत यात्रा भी नहीं करता, परन्तु बड़ा मैं रेल में चढ़ा था, वहीं मुझे बार्न और लोरी बंद कर देकर उनको भी बंद कर दिया। बार्न से कुछ हिन्दी और कुछ अंग्रेजी में कर रहे थे। शायद रेलवे में कुछ अच्छे कर्मचारी थे। टिकटचेकर के लिए दमिस्त करने की धमकी दी और कुछ ने देकर निराश करने के उसे छोड़ दिया। वह जाने बड़ा और उन सख्तों ने भी टिकट मांगा। उन्होंने एक मन पड़ा। मैं न था 'स्टाफ'। बर्नल टिकट मांगने पर स्ट्राफ घबरा उठारा किया। टिकट चेकर को भी टिकट मांगा। हुस्से ने भी कहा 'स्टाफ'। वही लोरी के पास पहुँचा और भी बोला 'स्टाफ'। उसके बाद मैं था। मेरे पास टिकट तो था पर मैंने भी साप्ताहिक 'स्टाफ' बर्न की धमकी का परिणाम प्राप्त कर बर्न टिकट मांगने पर बड़ी गम्भीरता से बोला 'स्टाफ'। बाव बिबाब कीजिए, वह मुझे भी छोड़ कर भागे बड़ गया।

गेट से बाहर जाते हुए भी मैंने उन लोगों के माग का अनुसरण किया। जब मैं कहा भी स्ट्राफ कहने से भी टिकट दिखाए बाहर जाने लगा तो उन्हें इसका अजिआय समझने के बिचार से अपना टिकट लौटाया और उन्हें उनका कर्तव्य सुझाया। पर मेरी कौन सुनता है ?

बाजीबवा के नाम पर बुनाब लवने वाले, मुसलमानों और हिन्दुओं की धार्मिक भावनाओं को उभार कर एम एल ए करने वाले राजनीतिक नेता, महाराष्ट्र, असम, पंजाब, बंगाल राजस्थान की मारकर सम्पन्न होने वाले हुस्से प्रांतीय सख्तन चोरी की निराली में आये। इसी प्रकार हिन्दीभाषियों को हटाकर अंग्रेजों के हियापरी लोग अन्धी नोकरिया पाते पर सत्यवर्ति वाले नहीं माने आये ? किसानों को मजदूर बना कर, रात-दिन गुलामी की भाति उन्हें कष्ट देकर उनके द्वारा पैदा किए हुए फल के नगण से अपने को भरकर धनवान बनने

बाता अयोग्य और है। मजदूरों से सख्त सघट दल अन्धी में ठाह काम करवा कर उन्हें वेत पर भोजन न देने वाला, उनके रहने की ठीक व्यवस्था न करने वाला, उनके बाल इन्फो की चिन्ता न रखने वाला और इस प्रकार धनी बनने वाला कारखानेदार और है। धम्यापकों से विधायक मे ६-९ वटा पदवाने वाला, उन्हें बार-बार माग तब देत न देने वाला, बैठन कम देकर अधिक पर हस्ताक्षर करवाने वाला स्वयं जाकी हियाब रखने वाला विधायक का प्रत्यक्ष और प्रभावनावाला चोरी की अन्धी में न आये ? इसका कार्य अन्याय और अधर्म पर आधारित है। किसानों पर चाहे उनके बाल बनाव दिया हो, या न हुआ हो, मरगामी ब्याज की दर लगाते वाला, उनके नगण को जल करवा कर उसके घर-बार को नष्ट करवा देने वाला, बाल-बच्चों को मरगाल को मोहलान बना देने वाला, स्वयं मौज उताने वाला, हुस्सहीन कृषक, साहूकार अथवा का स्वेय का अन्ध-होले साजना रहा है। ये सभी चोरी हैं। इनके समान मे इन कार्यों के प्रति युवा के माग करने हो ? परन्तु, साप्ताही हम दुपार से युवा करने वाले हो, दुरे से नहीं को दुपार बनवाने को यह किसी तरह तैयार नहीं हुई और रात मर कटपटाती रही। बर्नकी ही दुपार, वह दवा पड़ती रहती तो बर्नस ही उनका काम का पर्व जाता रहता।

बड़ी बड़ी हुस्सियों के बर्नसर पर रेलवे कर्मचिया जौनल टिकट वाला करती है, उन पर लोगों के माग और उग्र दज रहती है पर बहुत से यमी और राष्ट्रीय कार्यकर्ता हुस्से के टिकटों का प्रयोग करते हैं और इसे अनुचित नहीं समझते।

कहदुरी के कर्न की येचकार से आपकी गेट हुस्से और हाथ उठा कर लोगों को सवेत करते हुए आप के चिन को दिखाकर उनके नीचे जिवे अन्धी घुस लेता और देता पाव है। की और नकेत किया हो तो आपको वह व्यक्ति जरा सुझाते हुए बड़ी नम्रता और बिबाब से कर्नकी हाथ में कक्षा मियेगा, 'पार है, आप जानते नहीं, इसका सवा मतलब है ? देखते नहीं आपकी हाथ का हाथ उठाकर सख्त रूप से अपनी अनुचित से द्वाका कर रहे हैं कि प्रपरी के सत्य को सवा सत्य की दक्षिणा हाथ में जाती भी वह लेना-पाप उनके उनके स्थान पर पाच सए देने चाहिए।

इस प्रकार उचित या अनुचित उपायों का बर्नसमन करने मुख्य धन बढोने से बचाव है। यमी भावने के बढे से बढे बर्नसत्य विधायकों के शय की बर्न बर्नसत्य में मिलाने की कला सुनी हो है और सत्य को माता मानने वाले तमाकषित अधिक लोग हैं। हम सच सवाकर चोरी करने को युवा की

दृष्टि में देख रहे हैं किसी के घर जाकर सए एम धन्य सलुए उठाने वाले को नकसत की दृष्टि से देखते हैं, परन्तु देखा जाय तो सवा के अधिकतर व्यक्ति अपने-अपने दायरे में गठकरते, चोर, डाकू और लुटेरे हैं। डाक्टर बढ रहे हैं। बर्नस और के साथ रोग बढ रहे हैं। बर्नस बढ रहे हैं तो मुकम्मे औरिया और अन्याय बढ रहे हैं। आज का डाक्टर रोग और रोगी को ब्याल दिए बिना रोगी की जेब पर ब्याल दे रहा है। इसलिए रोग बढ रहे हैं। मोरखपुर के चिकित्सकों का अनुभव आपको बताऊँ तो आप आपसब नरने कि डाक्टर रोगों के बिषय में कितने कम निम्न हैं।

जमी १०-१५ वर्ष की बाल है। मेरी धर्मपत्नी के काम के पास बर राख हुआ। मैंने एक डाक्टर को दिखाया। यद्यपि वह कमरोग विशेषज्ञ नहीं थे परन्तु काम देखने के साथ काम को बताते हुए तथा कुछ चिन्ता व्यक्त करते हुए बोले, वेदात्मकार जी जानते हैं, काम का पार् एक्सेन्ट है। एक्सेन्ट शब्द सुनते ही मैंने उन्हें अच्छी दवा देने को कहा। उन्होंने मे ऐसी दवा डाली कि बर्न की तक दर्द काम और गाल के बीच मे वा बढ वह काम के बन्दर को होने लगा और वह घटपटान लग्यी। मैंने कहा डाक्टर अच्छे हैं दवा सवती हो तो बरराती क्यों हो ? जब तो ५) बर्न की हो चुके हैं। परन्तु उर दवा को दुपार बनवाने को यह किसी तरह तैयार नहीं हुई और रात मर कटपटाती रही। बर्नकी ही दुपार, वह दवा पड़ती रहती तो बर्नस ही उनका काम का पर्व जाता रहता।

जब मैं हुस्से डाक्टर के पास पहुँचा। उन्होंने काम देखकर जरा गम्भीरता से कहा कि काम मे देह हुआ गया है। आप यह दवा शामिल और सल, पीली लोरी, हरी पचासी गोसिया एक के बाद हुस्से जाने की दी और १० प्रतिदिन का सुझा तैयार हो गया। दिन ५-५ चिकित्सा के बाद हालत बेसी की अन्धी रही तो मेने उन्हें एक प्रसिद्ध डाक्टर के पास भेजा। उन्होंने उसका काम साफ किया और कुछ दवाए मे जाने लिए और एक-दो डोजनस देकर कहा, 'मास्टर साहब, अब सब समाप्त। पन्द्रह सए प्रतिदिन के हियाब से ५-५ दिन चिकित्सा के बाद भी कोई लाभ न होने पर मैंने अपने पुत्र के साथ हुस्से प्रसिद्ध डाक्टर के यहाँ भेजा। उन्होंने तो नजब कर दिया। वह जज मेरे पुत्र के साथ लौटी तो उनके तिर के चारा और मास्टर बड़ा हुआ बा और मे एक कमाडर सी दीक्ष रही भी घर जाते ही मैंने उन्हें सलुट मारा और कहा 'आज ठीक है।'

वह बरा उड्डिम-सी दीक्ष रही थी। परेशान होकर अपने दिन वह पट्टी उतार

कर फेंक दी और दर्द जरा भी कम न हुआ। जब मैंने कम रोग विशेषज्ञमरकारी बस्तालले के डाक्टर की सेवा में उचित होकर अपनी माया गाई। उन्होंने काम देख कर बिना व्यस्त करते हुए बढ भ्रम से घर आने की सलाह दी। मैंने सोचा कि डाक्टर मरीजों से सहानुभूति रखता है और घर जाने की स्वीकृति उन्हें दी तो सल्लाह उन्होंने कहा बैसे घर पर देखने की मेरी कीमत दस सए है पर ब्याप ब्याप-क मैं वह जाय से आठ गु आ। लेते आइएगा।

जमी उनसे निवट कर मैं बिना मे मे हुआ हुआ घर आ रहा था कि एक दुपार पर सँडे डाक्टर को देखा। मैंने मरीज की देता—बच्छी तरह देखा बाकिर से परिचित डाक्टर थे। लोरी केर बाद अलतल गम्भीर और चिलित मुद्रा मे कहा 'बेलाकार जी, वह काम का दर्द नहीं, यह उपजक दवा है, और यह साधारण सात का दर्द नहीं बल्कि काम ब्याल है कि यह केर है। कसर ? कैसर सुनते ही मेरा दिमाग बिबादा। कैसर—ठीक हो या न हो, यदि मुझे चिकित्सा करानी पयो तो कहा से आया पैसा ? जब मैंने दा के केसर को दिखाते के लिए दात के डाक्टर की धार की। उनका भावसंवाक से भ्रम था—समया-भास से जाते तो कम मे पर उनका परि-वार सिद्धा बायभाय मे जाता रहता था। उन्होंने कहा 'पासनी की, तब डाक्टर कुछ नहीं जानते। याद रखिए काम का दर्द नहीं मही होगा यहा तो सल का दर्द होगा और तो सल दिन सवा देने के बाद उन्होंने दात उठाकर दिया और बढ वह कैसर मायब हो गया, काम ठीक हो गया, बिदामि की कमी पूरी हो गई। आज भी जब डाक्टर की हाथ बाटी हो तो हुस्स काप उठता है।

२०-२२ दिन मे पूरे ५००-५५० सए डाक्टर की सेवा मे आ। उनके सल सल के नियमों मे काम आए। सवा डाक्टर और बकील, ब्यापार और उदरपेदा यमगन और दुगुडिहा राष्ट्रीय के लिए बल्लेय पैली बनाने का प्रयत्न करने। महाराष्ट्र चिन्ताओं न सल तुकाराम के लिए पासकी, मयासे, मोजे और सवारीया मेजी। उन्हें देखकर तुकाराम मे कहा 'मयमन मे मोजे मे पासकिया मे छत्र चामर सव किस लिए है ? तुकाराम तो सेवा के लिए सेवा चाहते थे, उन् मोषकन भी नहीं चाहिए। था। स्वामी भवान्द मे कहा मोल के स्थान पर दुमो जनता की सेवा पुत्रमन लेकर चाहता है। यह है अलतल दृष्टि।

आप बरिक्त सहकृति का दृष्टिकोण देखिए पैसा एक साधन है या न नहीं, रहता है नजिल नहीं। यही अस्तेय सत है।

१५५, बापरा बापरा गोरखपुर



## आर्यसमाज पानीपत की सफल शताब्दी

अनेक अन्नकरणीय यज्ञ एवं ग्रन्थ-प्रकाशन

आर्यसमाज (बहा बाजार) पानीपत की स्थापित हुए ही बस हो चुके हैं आर्य समाज (बहा बाजार) पानीपत का शताब्दी समारोह बड़ी भूमिका के साथ सम्पन्न हुआ।

रविवार १४ १० ८४ का यह दस्य मध्य या अर्धक आर्यसमाज के सम्मुख भारत के उच्चस्तरीय विद्वानों की जिह्वाएँ अपना जीवन वैदिक साहित्य के अध्याहन में फोका समाप्त किया गया। जिन समाज में विद्यालय बच बेट विद्वानों को प्रशिक्षण के फल प्राप्त करने के साथ स्वागत किया प्रत्येक को ११०० रुपए का धान दो पुस्तकें प्रशस्ति पत्र तथा माने जाने का मान अर्थ दिया। सम्मानितों में एक श्री अमर शशीय श्री रामप्रसाद बिसमल की बहुत शीघ्रता शास्त्री देवी की।

समारोह के आयोजकों ने आर्य समाज की जानकारी के लिए आर्यसमाज (बहा बाजार) तथा पानीपत के विद्वानों को आमंत्रित किया। इन दोनों को कराने के लिए दक्षिण के विद्वान श्री रामराज कृष्ण लाल बाजपुरी को महाराष्ट्र से श्री अमिताभ श्री रामराज लालबाय कृष्णलाल को तमिलनाडु से तथा पं० बिसमल श्री हारी को आंध्रप्रदेश से आमंत्रित किया गया। इनकी वैध रोज में यज्ञ किए गए। इन विद्वानों के विचारों को जनता ने अपार श्रद्धा के साथ ही सुना यद्यपि वे भाषण संस्कृत भाषा में थे।

आर्यसमाज की शताब्दियों के आर्य समाजियों के अनुसार पर स्थापित भिका लने की परंपरा में आर्यसमाज पानीपत ने एक नई परंपरा स्थापित की है। स्थापित के स्थापन पर एक प्रकाशित किया है। वेम और संस्कृति के नामक इस ग्रन्थ में वेम विषयक उच्चकोटि के विद्वानों के लेख हैं। लेखों की विभिन्नता इतनी से स्पष्ट होती है कि उनमें वैदिक संहिता जैसे लेखपूर्ण आर्यसमाजों के साथ है। इसके अतिरिक्त यह पुस्तक का अध्ययन चिन्ता के साथ एक पुस्तक विषयका रखती है। आर्यसमाज ने यह पुस्तक आर्य की दृष्टि से नवीन अतिरिक्त साहित्य के प्रकार की दृष्टि से प्रकाशित की है।

आर्यसमाज ने इस अवसर पर नेमहोनों के लिए की आयोजकों ने बंजलिय में ने आर्यसमाज का प्रकाशन किया जो शीघ्र ही नेमहोनों के हाथों में पहुंच जाएगा। हैदराबाद के आर्यसमाज दृष्टि विज्ञान की प्रवर्धनी श्री बख्शीय श्री बिसमल केरातुसार पुस्तिकाओं की गणना प्रशिक्षित की गई थी।

शताब्दी तथा गोहृया सम्मेलन प्रस्ताव प्रस्ताव हुए तथा लोगों द्वारा ब मीने व मान माने का प्रश्न किया।

गमनीय समारोह में सम्मिलित विद्वानों की अनेक विषयों पर गोष्ठियाँ हुईं या 'इन्टर पेरिड' के नाम से एक परिषद का गठन हुआ। स्वासी विद्यालय की सरस्वती की सव्यमस्ति से इस परिषद का प्रधान मनोनीत किया गया।

## प्रधानमन्त्री पर घातक हमले की भर्त्सना

बिल्लीभर की आर्यसमाजों में बिजोय शोकसमाए

दिनो प्रवेश की समय सभी आर्यसमाजों में ४ नवम्बर के दिन साप्ताहिक उत्सव के साथ अन्तर्देशीय मुद्रितलेख जा बालन की नेत्री एवं भारत की प्रधानमन्त्री श्रीमती इन्दिरा गांधी की निमग्न हत्या पर बिजोय शोकसमाए पर हादिक शोक एवं सवदना प्रकट की गई साथ ही निमग्न जा मा की सवदति के लिए शांति एवं शोक मनन परिषदों की सा लना के लिए आग्रह की गई।

आर्यसमाज नेला प्रस्ताव के बाद हिंसक घटनाओं की रोकथाम के लिए परसक प्रयत्न करने का कसता किया। आर्यसमाज के पराधिकारियों ने सवदनों की एक शांति समिति बनाई गई। आर्यसमाज बाजार शीताराम ने शोक प्रस्ताव के साथ कतिपय परिस्थितियों में प्रधानमन्त्री का कायाराम सम्मानने बाने श्री राधोब गांधी की सफनता की कामना की। आर्यसमाज सदर बाजार और आर्यसमाज गुजराबादा डाउन ने और 'गांधी पुनरु' के साथ प्रधानमन्त्री श्रीमती इन्दिरा गांधी पर किए हमले की तीव्र मलनता की।

आर्यसमाज मोदीनगर ने शोक प्रस्ताव स्वीकृत कर यह भाग की कि बिजोय लोगों के धृषा और द्वेष भरे प्रकार के परमाण्वस्त्रक यह प्रणीत आय हुआ है, वे सुस्त ऐसा प्रणिन प्रकार ब व कर और राजनीति की हिसा से मुक्त करें।

## दक्षिण एशिया की सांस्कृतिक तीर्थयात्रा (पृष्ठ ४ का देखें)

जिनमें से प्रत्येक ऊपर का बचकर अपने के बीचों बीच बचकर की तुलना में बोधा भीतर की बोर सिमटा हुआ है। तीर्थयात्रा की बचकरी में वे निम्नले छह सवकीय बचकरी के रूप में है और ऊपर के छह तीन बचकर बोधाकार हैं। सबसे निम्नले बचकरी या बचकर की लम्बाई ४०० फुट है और सबसे ऊपर बावें की १० फुट। महाकैय के बचकरी की लम्बाई पर क्वाथसिमा बनाई गई है जिनमें दुध की बोधी की प्रस्तरी पर उत्कीर्ण किया गया है। मूल्यतः की पुष्टि से वे क्वाथसिमा स्थित उत्कृष्ट है। इस प्रकार की विद्यासिमा बोरोबदुर के महाकैय पर उत्कीर्ण है जन्मे यदि एक साव एक पक्षि से बना दिया जाए तो उनकी लम्बाई साठ तीस तीस हो जाएगी। विद्यासिमा के बीचों बीच में गवाक्ष बने हैं जिनमें से प्रत्येक में ध्यानी बुद्धों की एक एक प्रति प्रतिष्ठापित है। सारे महाकैय में ऐसी ४३२ प्रतिष्ठा हैं। हमारी मन्थनी में अन्तर्देशीय स्वाति के चित्रकार की केने थी वे। यह इन प्रतिष्ठों और क्वाथसिमा की देखकर इतने निमग्न हो गए कि उन्हें न अपना ध्यान रहा और न समय का। वे एक टक हो इस बचकरी महाकैय और सवकी उत्कृष्ट कला की देखते रह गये।

बोध बजारों के लगे में कितने ही हिन्दू मन्दिर की विद्यासिमा हैं। आर्यसमाज का बिजोय महाकैय का मन्दिर हमने सबसे अधिक महत्त्व का है। यह मन्दिर एक ऊपे विद्यासिमा बचकरी पर बना है। और इसके चारों ओर चार द्वार हैं। मन्दिर की दीवारों को बसकृत करने के लिए प्रस्तरी पर पदम पुष्पों, भावि की बाइलियों को उत्कीर्ण किया गया है और रामायण की सभुष क्वाथसिमा के रूप में बकित की गई है। पौराणिक बेनी-देवताओं की भी कितनी ही प्रतिष्ठा मन्दिर की दीवारों के साथ निमित्त हैं। बिजोय महाकैय के इस विद्यासिमा १४ गगन बुन्नी मन्दिर के बोरो बोरो की बस मन्दिर है और इनमें कुछ हट कर छोटे छोटे मन्दिरों की म्मलना ने चारों ओर उन्म रहा हुआ है। इस प्रकार मुख्य मन्दिर के अतिरिक्त को बस मन्दिर को बस मन्दिर बहा बसित या बसित दशा में बहा विद्यासिमा हैं उनकी लम्बाई २४० है। इस उस समय की कल्पना कर रोमान्तिव हो गा बस कि वे सव हिन्दू मन्दिर प्रभु व बसित दशा में थे, और बस इतने प्रभा पाठ के लिए बहा हिन्दुओं की बोध रहा करती थी। उस समय बगनाय बिजोय महाकैय के विद्यासिमा (छप पृष्ठ ४ पर)

### दंतों की हर बीमारी का घरेलू इलाज

**दंत मंचन**  
लौंग युक्त

मसूरी की राजन

23 जकी बुटियों में निर्मित आयुर्वेदिक औषधि

दालेय शकटर

मुह की दुर्गन्ध

तुका गर्म पासी लज्जा

दांत का दर्द

महाशिव की हठी (प्रा०) लि०

9/84 बचकरीद्वारा एशिया कीर्ति ऊपर २४ दिनांकी १५ अक्षर 638600 637987 637241

## समाज का कार्य देश-विदेशों में फैलाएं

### दयानन्द के आदर्श पर चलें : ऋषि मेला सम्पन्न

इस वर्ष बीनाधी की परवर्त १०१ वा समारोह अबेर स्थित ऋषि उद्यान में दिनांक २७, २८, २९ अक्टूबर को बुधवार से मनाया गया। समारोह के अवसर पर यमुनोत्री की शासन ऋषिवासी से ऋषि उद्यान स्थित विद्यालय परिसर में यह सम्पन्न किया गया। २६ अक्टूबर को विद्यामित्र मेधावी कुलपति गुरुकुल विराटू के ब्रह्मचर्य से बस का प्रारम्भ हुआ।

वेदशास्त्र का कार्य श्री० रामवीर शास्त्री, ५० यदुनोहन शास्त्री, ५० रामदेव एण प्रो यमवीर बाटि विद्वानों ने सम्पन्न किया। स्वामी बीमानन्द जी सरस्वती डा० सत्यदेव बाटि के परामर्श पर हुए। इसमें बतौर स्थित इस अवसर पर कार्य कल्या महाविद्यालय की छात्राओं तथा भवनोपदेशक श्री पन्नालाल जी पीयूष ने अपने मधुर संगीत और भजनों के माध्यम से कार्यवाही का परिचय कराया।

अन्तिम दिन २९ अक्टूबर को यशपाला ने विविध कार्यक्रम समाप्त दीक्षा का सम्पन्न हुआ। कर्मपरिवेक भागप्रस्थ ने स्वामी बीमानन्द जी महाराज से सत्यास की दीक्षा लेकर देश में भुव-भुव कर भाग्यसमाज के प्रचार का सन्देश दिया।

यज्ञ के अवसर पर अलग-अलग विषय की श्रीकृष्ण शास्त्रा श्रीमती कमला शारदा श्री कर्मचारी जी पुनः संपलीक, श्री यमसिंह जी कोठारी संपलीक श्री पुनम चन्द जी आनंद व अन्य अनेक स्वामीय एण बाहर से पधारें सभानों ने यजमान बनकर अपनी श्रद्धा पूर्ण ऋषि उद्यान की।

ऋषि मेले का विविध प्रारम्भ यज्ञ के पश्चात् पञ्चांगोत्सव से हुआ। २७ अक्टूबर को प्रातः काव यज्ञ के उपरान्त तथा प्रधान कार्य जगत् के प्रसिद्ध सत्यापी स्वामी बीमानन्द जी महाराज ने यज्ञ का उत्तोलन कर ऋषि मेले का प्रारम्भ किया। इस अवसर पर स्वामी जी ने कार्यभार का साक्षात्कार किया और बाह्य भाव समाज को वेद और विवेक से ऊँचाने के लिए सज्जित होकर हमें बड़ी तब्यथा से अपने व्यवस्थित कार्य को छोड़कर वेद-वेद तक सन्देश लेकर जाना चाहिए।

#### कार्यसमाज अतिथि के तत्पश्चात्कार्यकारी

प्रधान—श्री रीतनलाल, उपप्रधान—श्री बमरलाल, मन्त्री—श्री कृष्णकुमार उपमन्त्री—श्री विद्यादीपाल, कोषाध्यक्ष—श्रीमती कमला जी माटिया, निष्ठाचरितेक—श्री बीमप्रकाश मल्ला

#### दक्षिण एशिया की सांस्कृतिक लीकचर

(पृष्ठ ६ का खण्ड)

मन्दिर का यह विस्तृत परिचय किन्ता प्रथम एण कार्यक्रम होगा, इसकी कल्पना में ही निहित है एक सांस्कृतिक यात्रा तथा यज्ञ का साधुप्राप्त होने लगता है।

शिव-महादेव के विद्यालय मन्दिर के बतौर स्थित अन्य भी बहुत से मन्दिर प्रामाण्य के कोने में हैं। इनमें चण्डी कासमन, चण्डी सरी, चण्डी मे-पुत और चण्डी सर जोधपुर के मन्दिर उल्लेखनीय हैं। हमने इन पर भी दृष्टिपात किया और यह सत्य स्पष्ट रूप से हमारे सम्मुख आ गया कि जब से कुछ सदी पुनः तक सम्पन्न जाया से हिन्दुधर्म का प्रचार था। जब जाया के बहुलक निवासी इस्लाम को अपना चुके हैं पर उन्होंने अपनी सत्कृति का परिचय नहीं किया है। प्राश्नवन्त के मन्दिरों का दर्शन करते हुए हमने एक कृष्ण परिवार से बातचीत की। पृष्ठ पर बात हुआ कि वे सब सुसलमान हैं, पर उस परिवार की महिला का नाम सुखी था। और सलमान ने दुष्पत्य तथा सुखी। जाया में सर्वत्र यही दशा है। हम चाहते थे कि पूर्वी जाया की जाए। इसकी सदी के द्वितीय चरण में इन्डोनेशिया की राजधानी पूर्वी जाया के केन्द्रित होनी प्रारम्भ हो चुकी थी। वहाँ के सब राजा हिन्दू धर्म के अनुयायी थे, और उन्होंने बहुत से भव्य व विद्यालय मन्दिरों का निर्माण कराया था। पूर्वी जाया के इन मन्दिरों के सुर-

भावा मन्दिर सभ से प्रसिद्ध हैं। समय के अनुसार से हम इनका धरोकर नहीं कर सके। इस धीम से बीस साली दीप जाला चाहते थे जो वर्तमान समय में भी वस्तुतः एक हिन्दू प्रदेस है। १२ सितम्बर को तीसरे पहर हम बावों की राजधानी जेनपरा पड़ गये थे।

ए-११३२ सफरजग एन्सेब, नई दिल्ली-२६

## ऋषि मेले पर टकारा चले

महर्षि दयानन्द बन्ध स्वामी टकारा से टकारा ट्रस्ट की ओर से ऋषि मेला १६, १७, १८, फरवरी १९८५ को मनाया जाएगा। दिल्ली से एक विशेष रेलगाड़ी का प्रस्थान किया जा रहा है। इस समय ऋषि दयानन्द बन्धस्थानी टकारा म अन्तर्राष्ट्रीय उपदेशक महाविद्यालय, गोवाला बाहर से जाने वाले बतौरियों के लिए अतिथि गुरु बाटि कार्य बुलाकर रूप से पत्र भेजे हैं। जिन कार्यो पर ट्रस्ट का अवाई साक्ष स्पष्ट बाधक व्यव हो जाता है। ऋषि मेले के अवसर पर ऋषि लगर की भी ट्रस्ट द्वारा नि शुल्क व्यवस्था होती है। बत ऋषि भक्त दानी महापुरुष इस के लिए अधिक से अधिक दान की राशि महर्षि दयानन्द स्मारक ट्रस्ट टकारा पिन-२६३६५० अथवा महर्षि दयानन्द स्मारक ट्रस्ट के उप कार्यलय—आयसमाज मन्दिर माग नई दिल्ली को बैंक, डाक अथवा मनोबाहिर द्वारा भिजवाने की कृपा करें।

#### गुरुकुल होशवाबाद का समुचित विकास होगा

दिनांक २१-१०-८४ को गुरुकुल होशवाबाद में व्यवस्था समिति की बैठक हुई जिससे निर्णय किया गया कि, गुरुकुल की (कृषि गोशाला) यज्ञ शाखा का विकास सुव्यवस्थित रूप से किया जाएगा। गुरुकुल होशवाबाद की व्यवस्था पर आय प्रतिनिधि सभा (५० प्र० विरम) ११२००० रु० प्रतिवर्ष व्यय करती है। इस भागामी वर्षों में ६० एकड़ जमीन हरित क्रांति के माध्यम से बाटे को कम किया जाएगा।

## \* वैदिक कैसेट

प्रसिद्ध फिल्म गायक महेन्द्र कपूर द्वारा महर्षि दयानन्द की अमर कहानी

सम्पदा—यज्ञ, शान्तिप्रकाश, स्वातिवाचन आदि

प्रसिद्ध भजनों पर शोके—

सत्यपाल पथिक, ओमप्रकाश वर्मा, पन्नालाल पीयूष, सोहनलाल पथिक, शिवराजवती जी के सर्वोत्तम भजनों के केमेट्स तथा प बुद्धदेव विद्यालयर के भजनों का संग्रह।

आय समाज के अन्य भी बतूत से कैसेट के सूचीकरण के लिए लिख



कन्ट्रोलिंग इन्फोर्मेशन (गोपनीय) प्र नि

१४ सितम्बर ११ फेब ११ अज्ञात विचार वहनी ५२

फोन ७११८३२६ ७४१७० टेलैक्स ११-४६२३ AKC IN

#### — प्राप्ति स्थान :—

यह कैसेट दिल्ली भाग्य प्रतिनिधि सभा,

१५, हनुमान रोड, नई दिल्ली पर भी मिलते हैं।

## उत्तमता का एक मात्र विश्वास

# Groversons



Pure Beauty  
पैरिस ब्यूटी

गोवर  
सन्स

ब्रा, पैन्टी, बनियान, अन्डरवियर व बेबी पैन्टी आदि



पैरिस ब्यूटी सैल्स कापेरेशन्स

२६६५ ए/२ ब्रिजम सूर्य अजयन रजो गेट  
कॉलेज बाग नई दिल्ली-११०००४  
दूरभाष ५६९२२४ ५७४२००-५८२०३६

ऋषि निर्माण शताब्दी  
हम मिलकर सभी मनाएंगे

ऋषि निर्वाण-प्राप्त्यै ह्यम्, मिलकर सभी भगएँ॥  
 वेद प्रवर्णक बरामणम्, नृप संदेश सुभाएँ॥  
 लहराएँ बीम पताका, दयानन्द गुजर बहाएँ॥  
 उडे सुख, सुगुण हवन की, वेद मन्त्र बुभाएँ॥  
 होया नाटावर्ण शास्त्रिम, सकट-दूर भगएँ॥  
 कर नन्द ब्रह्मा ब्रह्मकार, सत्य नाग दखाएँ॥  
 सत्री क्रमेण पद परस्पर, दुष्यंभवर मिटाएँ॥  
 निज देश धर्म पर तन, मन, मन, अर्घ्य कट्ठा सिसाएँ॥  
 पावन प्रसिद्धि सत्य हरिवास, भूने उन्हे बहाएँ॥  
 शिव ब्रह्माणि सत्य सख, भूने उन्हे को पाठ पढाएँ॥  
 मध, मास मासक इत्येते, दुहना दूर सिसाएँ॥  
 दहेव आदिक कुमुभाए, वष से नाच कराएँ॥  
 सप्त दिग्घात्र-विशार विद्या की, बन्दी मरुत बजाएँ॥  
 कण्ठक विचार मिटाने की, सुख सात सुधा बरगाएँ॥  
 ऊष, नीम और देश-भाष तन, सबकी सते जगाएँ॥  
 ऋषि निर्वाण प्राप्तायै ह्यम्, मिलकर सभी भगएँ॥

अभिष्ठाता वेद प्रचार विभाग से०—स्वामी स्वरूपानन्द सरस्वती.

**वेदविद्यालय गौतमनगर में विद्यवासी महायज्ञ**  
श्रीमद्वायन्य वेदविद्यालय, ११६ गौतमनगर, नई दिल्ली-५६ में १८ नवम्बर से ६ दिसम्बर ८४ तक विद्यवासी महायज्ञ स्वीया प्रधानमन्त्री श्रीमती इन्दिरा गांधी के पवित्र सपनों को साकार करने के लिए चारो वेदों के ऋषा पाराम्य महायज्ञ के आध्यय से सम्पन्न होगा ।

यज्ञ समय—प्रातः ६ से ९ । साय—३ से ६ ।

उत्तम स्वास्थ्य के लिए  
गुरुकुल कांगड़ी फार्मसी,  
हरिद्वार की औषधियां  
सेवन करें

शाखा कार्यालय - ६३, मसी राजा केदारनाथ

फोन न० २६६८३८

**बाबडी बाजार, दिल्ली-६**

## अघन्य हत्या की निन्हा

वर्षसमाज सल्लापुरा वाराणसी के साप्ताहिक अधिवेशन में एक प्रस्ताव द्वारा भागत की प्रधान मन्त्री श्रीमती इन्दिरा गांधी की जयन्त हृत्या की निन्दा की गई। भाष समाज सल्लापुरा का होने वाला ३८ वा वार्षिक उत्सव जो १५ नवम्बर से १८ नवम्बर ८४ तक होने वाला था उसको स्थगित किया गया।

॥ ओ३म् ॥

## आर्य जगत की शान २०० बिस्तर वाले

निर्माणाधीन नेत्र चिकित्सालय  
(अनमानित लागत दो करोड़ रुपए) के लिए

दिल खोलकर दान दीजिए

दान की राशि आयकर अधिनियम जी० ८० के अन्तर्गत करमुक्त होगी।

सारा वान चैक/मनीऑर्डर/बैंक ड्राफ्ट द्वारा

के पते पर भेजा जाए।

दानदाताओं के नाम चिकित्सालय की शिला पर अंकित किए जाएंगे।

**निवेदक**

रामनोयाल बालबाले सरक्षक	सुयदेव	महाधाय बमपाल	बोमप्रकाश बायें
जिकिस्तालय एव प्रधान,	दिल्ली बायें प्रति-	प्रधान बाय	मन्त्री महाधाय
सा० बा० प्रति० सभा,	निधि सभा	केन्द्रीय सभा	मुन्नीसाल केरि दु
सौजन्य से महाधिया ही ह्दी प्रा० लिमिटेड, ६/४४ कीर्तनयन	बोडोधिक क्षेत्र		नई दिल्ली ११००१



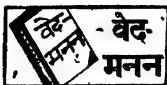
दिल्ली कार्य प्रतिनिधि सभा के लिए श्री डा० बर्मपास द्वारा सम्पादित एवं प्रकाशित तथा आदित्य प्रेस, २३७४ रज्जुबपुरा न० २,  
बाबाीनगर, दिल्ली-३१ में मुद्रित ११५, हनुमान रोड, बर्डी दिल्ली-१ कोड ३१०१५० रजि० न०, डी (सी०) ७५६

फोन ३१०१५०

रजि० न०, डी (सी०) ७५६







परमात्मा सबको ३, चर्छ  
प्रकार जानता है हम  
भी उन्हें जाने ?

—प्रेमनाथ एडवोकेट

विजानीह्ययान य च अस्यबो बहिमत रन्धयाशासद्व्रतान ।

स्वाकी भव यजमानस्य चोदिता विश्वेना ते सघतादेषु चाकन ॥ ऋ० १।५१॥

आगिरम मय्य ऋषि इन्द्र देवना  
विराड जगती छ द ऋषत स्वर ।

॥ शायं हे मन्त्रको यथा योग्य  
 ज्ञानेन वान ईश्वर । आप [आयान]  
 धार्मिक विद्वान् पर्योपकारी मनुष्या को  
 [विजानाहि] विषय रूप से जानने हो  
 [न] और [ने] जा [दस्य] को  
 हाक विश्वासघाती मूल स्वार्थी बनाय  
 मनुष्य हैं उनको भी जानन हा । आप  
 कृपया यह जा दस्यु हैं इनको [विहित]  
 उनम सत्य अथाहार आदि की सिद्धि  
 ना करित मय्यन क लिए [र दम] ममस  
 वद शक्ति वीजिए (तथा) अथ भाषण  
 द्रष्टव्य वीज से रहित अनाचारियो पर

समस्त जगत अदभुत रचना करने वाला है। और सत्य व्यापक होकर इन म को लक्ष्य नोकांतरों में भी जीव व्यवस्था को सही राह देकर सब जीवों को उनके पाप पुण्यों का फल यथोचित देकर पुनः नया जीवन प्रदान करता है। ऐसे ही समस्त प्राणी (प्रधान मन्त्री वगैरह मन्त्र मन्त्री) को भी वास्तविक जीवन मार्ग द्वारा प्रशिक्षण देकर पुनः नया जीवन प्रदान करके पुनः नया जीवन प्रदान करता है।

श्री १०२ नीति बाग नहीं दि ली ४६

### गुरुकुल शिक्षा प्रणाली की देश-व्यापकता

सत्यव्रत सिद्धान्तालंकारः

गुरुकुल निष्ठा प्रणाली व मूल  
निष्ठाले के विचार में पूजा आ सकता है कि  
कि भाव में परिवर्तन में क्या आवश्यकता  
है? क्या उह किमात तब किया जा सकता है  
है? आज का गुरु उन्को जो पवन के  
क निग नही उन्को उन्को उन्को उन्को  
मनार गुरुकुल निष्ठा पद्धति में प्रवर्तित  
है। प्रथम प्रश्नको जो कि वा परंपराय  
जीवन बिनात नही जाहता। मुह कहता  
है कि- ये ग नही करना दूसरो को तरह  
जाहता कि दिखीये। उर आज का  
मनार वाहिए नहीये में पवन-कभी  
सावर वाहिए सविदा न गीजर तथा शीतो  
वाहिए अथवा प्रभाव के लिए रेखित  
तथा लीजीवन वाहिए। सस भवत लिए  
उत्का वेदन हिमोदित बढावा वाहिए  
न जह नथि चिथियो का मन्त्र है है वेतुको  
म प्रतिक स मानत मानत है न पिता का  
सा उमे मन्त्र है मन्त्र उन्क लिए  
पुनः पुनः नमस्कार सवक है वन व  
ह इतुको मन्त्रा कर्ता है प्राणाको मन्त्र  
का वरह वरह अन्त गुरु व गुरु मन्त्र  
क मन्त्रा वेदन के लिए नही नही आ  
प्राणाको मन्त्र के शिथ्य प्रमाण व रक्त  
हृत् मन्त्र मन्त्रा का दिशा मन्त्र व बहो  
न न निष्ठा मन्त्रा का मन्त्र को मानव का  
अन्तुम करने का मन्त्र है गुरु को शिथ्य  
को उमेक शिथ्य का कथानत को  
नुकाश को दोषागत है जोर कुश नही  
आज जिन्दा बडा विद्यालय है उतनी  
वने तथि गुरु को र्थिकक स्तुता  
म पयाता तो गुरु को जो अन्य शाखा  
र स्तुती में पयाता जाता है पन्तु

पब्लिक स्कूल के नाम से उनमें एक सैकड़ों गुणा ज्यादा लिया जाता है। पब्लिक स्कूल—यह एक जालू बिकवा हो गया है न इसमें पब्लिकपना रहा, न स्कूलपना रहा। पब्लिक स्कूल यह नाम रख लिया ताकि ज्यादा अनुना शुल्क वसूल किया जा सके या बच्चों को भ्रष्टाचार प्रवृत्ति सिखा दिया जा सके।

ऐसी स्थिति में गुरुकुल के वे छात्र जिन्होंने पिछले लेख में चर्चा की गई है, कहाँ तक समयानुकूल तथा व्यावहारिक है। अयापकता वैसे ही मिलने जैसे मिल रहे हैं। आजीविका के लिए अयापन कार्य तरन बाल बच्चों का जीवन बनाने के लिए तप त्याग और तपस्या करने वाले नहीं।

शिक्षा को ही मानते हैं। जो सामान्य रूप  
का जो ज्ञाती है। जब धर्मज्ञ लोग नास्त  
का नव इन उर्द्धव से से राज्ञान्ना म  
मध्यक्षा तथा जनता का नास्त कथा  
विषय भाषा को श्रोतार कथन म सुविधा  
हो भाषा म शा प्रमाणो वा नृपुत्रात दुःखा  
जकारा श्रय मैनल को है। इस म्पु मे  
नस्तक बारोना को का म दुःखा विराम से  
शिक्षा के क्षेत्र म जिस भाषोवन से जन्म  
लिया है दुःखमुक्त शिक्षा प्रमाणो वा  
आदानना वा। प्रमुख शिक्षा प्रमाणो वा  
भाषाश वा रिण्डे स्मृति तैपार  
प्रो हो प्राचीन वैदिक स्मृति से कोत  
प्रो हो प्राचीन सक्कोरो तथा भाषोरो  
की जीवन से पछाड को को स्मृन्ना  
के विषय को के विषयो वना को है।

इस प्रणाली का बीज ऋषि दयानन्द

इस स्वल्पावकाश में था परन्तु इसके मूल रूप विषा महीनाः मृत्यु होराओं में ने गुप्त कुम्भ विषा प्रजाती का एक हृदिहार के समीप रहता था, जिस समय हृदिहार के समीप काही हुई शत्रुने गुप्त कुम्भ को स्वा पना हुई उस समय स्व परन्तु का और परतना के समय की प्रतिक्रिया का रूप ही विषा के लव में प्रकटित था। शिशा का माध्यमि विषा के लव गया और दायन गणित व्यापित होतिका कादि विषा को धावरी के स्थान में हित्ति में प्रवेशा जगता, इन विषयो पर हित्ति ने ही गुप्त के प्रकाशित की गई। विषा विषो को बुद्धयवारी नीर दावरी में दिखिषाए गए। विषाविषो भी दिखनर्प ऐरो रको गैर डैनी में दिवको की हातो है। उरतना का लव रहे ठउ जगता, वयनः प्रशस्तन के लव नि निप्र प्रकाश के योगदान जगता दद देवक व्यापरा कुतो जगता जगता परन्तु नीर ही सर्वो गमि सवना जुता बायन न गयता कादि विन वयरी हित्ति रकी गई जिधे देवकर वयन काय देव हेता का यहा तो मीनिक तैवपर विर जता है।

सरकारी क्षत्रों में प्रसिद्ध था कि कुछ कुल कामगो में क्षात्रों के वंशिक तैयार किए जाते हैं। इसी किंवदन्ती का सुनकर साहब ने कहा कि वेम्पुली तथा बरवा निघा के प्रधान मंत्री रैम्जे योशोनालड वुडमुल खलने के लिए आए थे। वे लोग चाहते थे कि वुडकुल सरकारी मदद से तैयार किए जा सकें। क्षात्रिकारियों का वंश वुडकुल से उदासीन हो जाय। महामा मुजीबम जी ने सरकार के हाथों जाना बख्शीकार कर दिया।

स्वतन्त्रता प्राप्ति के बाद देश का स्व-  
यत्तव्य भाषा स्वतन्त्रता प्राप्ति के रूप में  
बेसमयिनी का रूप स्वयं बदल गया, अतः  
अनुसूचि गुरुकुल शिक्षा पद्धति का सरकारी  
के निधी प्रसार और सहायता न लेने की  
नीति भी बदल गई। सत्तावादी बजनी भी  
सरकारी बाह्यती भी कि गुरुकुल शिक्षा  
पद्धति के मूल मिथ्या-न होकर और उच्चतर  
सफलता प्राप्ति के लिए गुरुकुल पद्धति के  
ममानको के हाथ डूब दिया जाय। इस  
की वजह से निम्न प्रकार के निम्न दृष्टि  
से होना चाहिये। मान्य देना गुरुकुल  
उम उम का किमान रूप देने से हट  
सम उम हट। हम सफल न होय —  
हमका यह कारण नहीं कि हमने देह-  
कारी सहायता माग करना शुच किया  
हम देह माग मफल न होय। हमो कि  
हमको के साथ रहें होय।

इसमें कोई सन्देह नहीं कि गुरुकुल शिक्षा पद्धति के जो आधारभूत सिद्धान्त हैं वे शिक्षा क्षेत्र में सर्वमान्य हैं कोई उन उनसे इनकार नहीं कर सकता। गुरु का अपने छात्रों को पुनर्गत मान कर उनके साथ जीवन बिताना, सब छात्रों का एक साथ रहना, अपने को दूसरों के साथ भाई भाई

बाई का सम्बन्ध रहना जैसा परिवार में होता है, ऊपर नीचे का भेदभाव न होना न जापतता का भेदभाव होना, जल्दी तोप जल्दी उठना सम्बन्धों पर करना, सम्बन्धों पर तब हस्तक्षेप का जीवन बिताना भोजन करना और व्यायाम बाई स सारी को हृष्ट पुष्ट बनाना—कौन हो शिक्षा पढ़ति है वो इन बातों को स्वीकार न करेगी। इसी का नाम बाई-बास है इसी का नाम गरुडस बास है

गुरुकुल कागरी को विद्वत्विद्यालय  
को मानना प्रथम हो चुकी है। परन्तु इस  
मे गुरुकुलीयता नहीं है। विद्वत्विद्यालय  
के छात्र साक्षिकों पर चक्कर बाहर हो  
जाते हैं, और पढ़कर अपने-अपने घर को  
बल जात हैं। प्रोफ़ेसर का भी इन्हीं हाथ  
हैं। अन्य-सुखी कालों को तरफ से पढ़ा-  
कर अपने घर आ बैठते हैं। रहना सगुल  
उनका उद्योग नहीं है। जसा सुखी भ्रष्टा-  
पको का होता है। तत्पर्याय का किसी  
प्रकार का माना-मान्य नहीं है। वे गुरुकुल  
में रहने वाल सुखी आश्रय नहीं हैं  
लेखकर रोहत तथा अप्रत्यक्ष हैं।

गुरुमुख विश्वा पदति का मुलाधार  
तो शुक्ल काशी की है। वतनाय न  
गुरुमुख काशी को हो पाया न बाटा  
या मन्ता है। एक पाद या वह है को  
वायु पदति पर ही बस रहा है, बुद्धि  
भाग वह है जिसमें गुरुमुख पदति के  
मुक्त भाग को ही रह है जो सत्त्व है।  
सिंहा भाग का, गुरुमुख कहकर हम प्रायः  
पहले भाग के लिए ले रहे हैं। पहले भाग  
न छाया की सत्त्वा अर्थात् है, परन्तु वह  
नारायण का गुरुमुख है, हरे प्रायः न  
छाया की सत्त्वा कहते हैं परन्तु पद्मार्ध न  
वही गुरुमुख है। एक गम्भीरकाल में से  
विकसने का उत्पत्ति यह है कि हम  
प्रायः को बुद्धि न बाटा कि उस भाग में  
पद्म भाग का, ऐसे छात्र जिन्होंने  
हो और भी बोरे विज्ञान यह भाग कि  
पहले भाग में सिर्जक गुरुमुख में विश्वा  
छात्र ही रह जाए, ऐसे छात्र जिन्होंने  
गुरुमुख के विज्ञान पद्मार्ध में गुरु के विज्ञान  
पद्मार्ध में गुरुमुख विश्वा पदति को  
देख लिया। बताने की पहली सत्त यह है  
कि गुरुमुख काशी में विज्ञान विज्ञान से  
निम्नविज्ञान विज्ञान का नही है जो अक्षर पर  
जागे को गुरुमुख विश्वा पदति में रह  
जा जिसका सोना पायना छाया पीना,  
जोला पायना, वैश्व प्रभु—सब कुछ  
गुरुमुखी हो।

जहाँ तक पुस्तक शिक्षा का प्रश्न है हमें यह समझकर चलना चाहिए कि मुक्तक शिक्षा पद्धति वास्तव में जीवन की पद्धति है। शिक्षा के साथ ही हम जहाँ संस्कृत साहित्य, दशन तथा वैदिक प्राचीन ग्रन्थों एवं उनकी विषय पर विशेष ध्यान देते हैं वहाँ वाष्पात्य विद्वानों को भी पाठविधि में स्थान देते हुए यह ध्यान में (लेखक पृष्ठ ६२)



जनता के जीवन पर हिन्दू धर्म का प्रभाव पड़ना पड़ता है? इस विषय पर श्री वादय्या शर्मा ने कहा कि हिन्दू धर्म के श्री गौड़ों का धर्म मान्यता (धर्म) की पहाड़ी और मुस्लिम सिद्धि में संस्कृत सिद्धि के अन्तर्गत ही, और इनका साक्षात् ज्ञान की उन्नत मुस्लिम सिद्धि में केन्द्रित पर, जाकर संस्कृत के ओम्निवर्स पर पर काय कर रहे हैं। उन्नीह शताब्दी या साक्षात् सा मुस्लिम सिद्धि में, और धर्म की उन्नतता का उन्नीह शताब्दी परियोजना है। उन्होंने हमें बताया कि सिद्धा साक्षात् धर्म की निशान में चोरी की कोई शक्ति नहीं है, उन्नीह शताब्दी की कोई शक्ति नहीं है, उन्नीह शताब्दी के जो धर्म मान्यता में शक्ति-धर्म नहीं है। यह किन्हीं की मोटर सिद्धि का आधार पर उन्नीह जाए, और सिद्धि की बात भी उन्नीह शताब्दी पर लक्ष्य या एक दूसरे की दोष देने के बजाय मुक्त-कामते हुए जो धर्म मान्यता के स्वरूप अपने-अपने हाल पर चले जाते हैं। स्वरूप के सम्बन्ध पर विचारित रखते हैं, जो मानते हैं कि जिसका दोष होता उसे परेशान कर कमजोर होता है, परस्पर शक्ति के साथ साथ। हिन्दू समाज का ऐसा ही उन्नीह शताब्दी की शक्ति मान्यता में भारत में

(सिद्ध पृष्ठ ५२)

## मानव-जीवन का सर्वश्रेष्ठ मार्ग

वैदिक साहित्य और साथ ही संस्कृत साहित्य के अध्ययन से स्पष्ट होता है कि पशुपत्नी, कीट-पतम—रंगेन इत्यादि योनियों के प्राणिज अणुम स्वर के हैं, और भयकर पापों के फलस्वरूप हैं। अथर्ववेद ४.२२ मन्त्र 'उन्मथमातु' इत्यादि के अनुसार उल्लु, भेडिया, कुत्ता, बिडिया (कीक) मिड, गहवर ६ रासभो से बचने और इन्हें अन्न खाने से बचने की प्रायश्चा की गई है। इस के विपरीत वैदिक यज्ञ है जिस मन्त्र की ५ बार पढ़ा जाता है—'अमृत हव्य आत्मन्' के प्रजा, पशु, महाबल, अन्न और अन्न की खाने वाले—अन्नाद्य इनकी बुद्धि की प्रायश्चा की गई है। वस से बड़े स्वतंत्रतापन के मन्त्रों में प्रायश्चा की गई है—'पीपीस्थात बहोयजमानस्य पशूः पाहि' गोए के स्वामी हो और यजमान के पशुओं की रक्षा करो। शान्ति करण के मन्त्रों में 'समुद्रमुत्तं गाव' 'स नो अस्तु द्विपरे बहुयशः' और 'यो शान्ति' अथ में एक बैठने सब प्रकार के पदार्थों में और उनके द्वारा शान्ति की कामना की गई है।

### अमानव योनि, प्रेरक आदर्श

इसके साथ बहु भी ध्यान देने योग्य साध्य है कि साहित्य—विशेषकर 'संस्कृत साहित्य' के लेखकों की विभिन्न उपयोग है, वे सब पशु-पक्षियों आदि अथर्व वेदों पर हैं। उदाहरण के लिए शक्ति पर परमात्म के लिए सिंह, लोचन के लिए कमल, पवित्रता और शुद्धता के लिए दुग्ध अल्प योनी अन्तों के लिए परम हथ, मोडे स्वर और गान के लिए कोकिल आदि और प्रतीक्षा के लिए 'पातक' मयूह की जायना के लिए मयूकर (प्रमर), भारत का राष्ट्रीय पक्षी 'मयूर' आदि अथर्व वेदों में पावने वाला, प्रत्यक्ष, सुन्दर नासिका के लिए तोता (कुत), बाबा में बने के लिए 'पातक', बालाकी-पुतला के लिए सोमबी, स्वर्णमयि के लिए कुत्ता, सीसा सरस अर्थात् के लिए गी, परिश्रमी के लिए बैल, अन्धकार में भी प्रकाश के लिए चूल्हा, पैसा और परिश्रम के लिए हानी, मस्ती और उल्लस-भूत के लिए मूंग, मेहनत के लिए बैल, चमत्ता के लिए बदर, पुर्वता के लिए गीवड देवेन के लिए सप्त श्री प्रकार वृक्षों में कल्पद्रुम, चन्दन, पारिजात वृक्ष, अशोक, मालवी, केतकी शक्तिम, द्राक्षा, नासिक, शाल्विक नीम, हनु (गन्ना), कपास, की-र, बास, सता इत्यादि नैन अथर्व पशु-पक्षी, पदार्थ इत्यादि की उपयोगों से भारत का संस्कृत साहित्य भरपूर जाता है जब कि मनुष्य सर्वश्रेष्ठ प्राणि कहा जाता है।

### धृव सत्य मानव सर्वश्रेष्ठ है

यह सत्य यही है कि मनुष्य सर्वश्रेष्ठ है। क्योंकि उसके पास बुद्धि, मन, भाषा सहित यह अदम्य शक्ति प्रभावर है जिस के सहारे सबगुण प्रभावर परमात्मा से सब ओर प्रकाश की रायना और उसके लिए अहर्निश सक्ति रहता हुआ जब पतन के अन्धकारमय गर्त से निकल हिमालय की सर्वोच्च कोटी तक पहुँच सकता है। निरव इतिहास इस प्रकार के अन्त-त जीवन के अर्थता से आपूरित है। अथर्ववेद में मन्त्र प्रभु से प्रार्थना करता है—

### आर्षादे दीनाना सिद्धात्तालकार

पुष्टात हविष्या अह्वनरिषा माहव्य अन्तरिक्षात् दिवमाहव्य दिवो नाकस्य पृथुतात स्वर्गोति राहव्य।

अर्थात् पृथ्वी की पीठ से अन्तरिक्ष पर पहुँच। अन्त से धौलोक और धौलोक से सुक्ष्मप्र ज्योति की प्राप्ति कर। पर कैसे? क्या प्रमाण प्रारम्भ? नहीं—इस के लिए नोतिहारी में तीन मार्ग बताए हैं—

### प्रथम मार्ग—पिपीलिका

१ पिपीलिका मार्ग—पिड्डी का मार्ग। मन्त्र के फल के एक कोष में अन्न पाया है। पिड्डी उसे अन्न छत पर ले आता पावती है। यह अन्न कण को अपने मुँह में बाल पीने-पीने योग्य बनाती हुई छत पर बाल पीने-पीने प्रारम्भ करती है। आप ध्यान से पिड्डी के क्रिया-कलाप का निरीक्षण करें। जहाँ एक ओर बाया बड़ रही है वहाँ साथ ही दाहिने में निम्नले वाली चिह्नितिया के मुँह से मुँह लगा फर्क पर फेरे इसके बारे में यह लम्बे देती जाती है। एक प्रवेज विज्ञान में इस मुँह और अन्त प्रत्यक्ष रूप में बाया बिरकाल तक अध्ययन करने के बाद अपनी पुस्तक में लिखा है कि 'साठन और पास्त्यरि एकता और होहार की दृष्टि से पिड्डी मनुष्य से कहीं अधिक आगे है। बल्लु यो मार्ग पर चमने के लिए नियमित और बहुत जले ही स्वल्प रंग सहित प्रयत्न करनी चाहिए। गीता में योगिष्ठा का निम्न उल्लेख साधक के समुच्च अहर्निश रहना चाहिए—

यत्नं नैव स्वरयेत्तु दुष्टाया मुहीतया।

आय सत्य मनस कृत्वा न कश्चि यि

विनयेत्तु। ६५५

सर्वात्—यैय के कानु की गई बुद्धि की सहायता से धीमे-धीमे अपने मन में साधारण विषयों के उदाहरण रहते का ज्ञाना कर। इन दोनों साधनों के बाद मन को भाषा के आधीन कर। इसकी फलप्रति कहीं फिर किसी प्रकार की चिन्ता

न करे।

महामात्र, उद्यान पर्व ३३।४२ में व्यासमुनि कहते हैं कि जिस प्रकार दीपक बन्धीक (अपना भिड़ो से धीमे-धीमे चर चर बनाता है), धीमे प्रकार की प्राणि को कष्ट न देता हुआ पर लोक सहायता के लिए बम का धीमे-धीमे सचय करे। नोतिहार कहते हैं 'प्रतिबिम्ब मनुष्य अपने आचरण की प्रवृत्तान कर यह देखे कि क्या मैं पशु माग पर चल रहा हूँ सबवा अर्थ पशुओं के मार्ग पर। है मनुष्य। बार-बार साधना होकर यह देखे कि क्या मैं पशु तुल्य हूँ अथवा यह पशुओं की तरह। पुष्टारे जीवन का आन के विषय याद रखी हूँ वस्तु हो जाएगा।

### २ कृषि मार्ग

हृत्तरा कृषि—मानव मार्ग है। सदा चरल, अन्तरिक्ष और एक जाला व बृक्ष से हृत्तरा जाला व बृक्ष पर सदा छत्राग मारते रहना। मारा जीवन इस प्रकार चमत्ता में ही नष्ट कर देता, इस मार्ग का यही परिणाम होता है।

### पुष्ट ५ का लेख

वेदा का जब बहु गुण देण के दातनकाल में भारत जाया था। डा० बर्मा के अनुसार हिन्दू धर्म से प्रभावित बाली के अन्न जीवन का भाव भी यही उन्मूलन रूप है। बाली के हिन्दू जब परस्पर मिलते हैं तो 'यो स्वस्ति अस्तु' कहकर एक दूसरे का अभिवादन करते हैं। विद्याम व बर्मा लोग बायोर्बिह से हुए 'यो दीर्घायस्तु' तथा 'यो बलिष्मयस्तु' भी कहते हैं। वहाँ के जनजीवन पर संस्कृत भाषा के इस प्रभाव की देखकर गीतक की अनुपुति होती है। केवल बाली में ही नहीं अपितु अन्यत्र भी संस्कृत का यही प्रभाव विद्यमान है। वहाँ के होटलों के नाम स्वस्तिक 'अम्बर रक्त' और 'आय' आदि हैं। एक कैम का नाम 'अम्बोकोह' है। इण्डोनेशिया में राजपति की कपास नगर 'रक्षा' है। वहाँ की भाषा में नगर का बर्मा है राज्य और संस्कृत में मुर्बा का पर्व है। इण्डोनेशिया के हुमाई बहने की दीवारों पर रामायण की कथा कथाविधा विचित्र है। बाली में प्रवेश करते ही यह अनुभव होने लगता है, कि हम आवागमन में आ गए हैं। जहाँ की प्रत्येक व्यक्ति हिन्दू का भाव है, और जहाँ बहुत से लोगों को गायत्री मन्त्र कण्ठस्थ है।

इण्डोनेशिया में वर्मसिया सबके लिए अनिवादी है। हिंदुओं की हिन्दुधर्म की विद्या अनियाय रूप से जो जाती है और सबसे उत्तीर्ण हुए, बिना कोई विचारों ऊपर की कक्षा में नहीं आ सकता। यही कारण है कि वे सब निवासियों अपने

### ३ विहाम मार्ग

विहाम अर्थात् आकाश में बहुत ऊँचा उठने वाले पक्षी को कहते हैं। मरसे में कुछ व्यक्ति ऊँचा उठने वाले पक्षी की तरह उठने उन्म चरित के होते हैं कि सामान्य पुरुष उनकी ओर आकर्षण और भ्रम से तन्मय हो देख तो सकता है पर उनका उस सामान्य अत्यन्त ल लिए सम्मन नहीं होता। कबीरदास न ऐसे महापुरुषों के लिए ही आश्चर्य कहा था ऊँचा ऊँचा सब कोई कहे, ऊँचन में ताव खडू।

बैठन की छाया नहीं। फल जाता विलि ४८।

### योगबोशनी का मार्ग—वृद्ध सुमि

महाकवि कालिदास न रघुवध के प्रारम्भ से ही भीराम के जीवन की तुलना उस बाह्य बल के की है जो छाया और फलो से चमकते हैं। बके यानी की इसके नीचे बैठ पूर्ण शान्ति और भूक मिटाते के लिए फल—लोभी की यथेष्ट प्राप्ति होती है। इन्हीं लक्ष्यों का प्राप्ति करने का प्रयत्न मानव को करना चाहिए—अपने और दूसरों के कल्याण के लिए। इसे ही योगबोशने के प्रथम पाद में 'जीवन की बुद्धिपूर्ण' कहते हुए दीपकानि निरन्तर और अन्धकारपूर्ण पालने का उपदेश दिया गया है।

के सी ३० की अथोकि विहार दिल्ली-४२

धर्म से परिचय रखते हैं।

बाली के राज्यपाल की मन्त्र हैं। हम उल्लेख भेंट करने के लिए उल्लेख में। अपने स्वस्थ समय में वे इस मित्रित विचार का उन्होंने हमसे मिलना स्वीकार कर लिया। पर हम हम उनसे बात करने बैठे, तो लयक का किसी को अर्थ नहीं रहा। एक बन्दे तक उनसे बातचीत होती रही। भारत की विश्वप्रसिद्ध से विमलक उन्होंने कहा सचियों के बाद भारत के इतने विज्ञानों में हमारे देश में पदार्थन किया है। भारत से हमारी पर्यटक अमेरिका, यूरोप, जामाक आदि जाते हैं। पर दक्षिण पूर्व एशिया के इस क्षेत्र में भारतीय यात्रियों की यह पहली मन्त्र रही है। प्रकृति की रमणीयता की दृष्टि से यह देश अनुपम है। भारत के साथ हमारा सम्बन्ध हमारी साधन पुराना है। हमारी ओर आपकी सांस्कृतिक तथा धार्मिक परम्परा एक है। इन दशा में हमारे ओर आपके मन्त्रों में वे बुद्धि हानी चाहिए। मुझे आशा है, कि नॉर्थम में भी भारत के विज्ञानों व यात्रियों की मन्त्रविद्या बाली आती रहेगी। राज्यपाल महाराज न जन-पाद द्वारा हमारा आतिथ्य किया और हमारे मान फाटो की लिखवाई। जिस बालीयारा का साथ भीमन में हम से भेंट की, उससे सबसे हृदय गन्धर्व हो गए।

सी ३३ दिन साप्ताहिक हिन्दुधर्म सत्यन में एक अन्य आयोजन हुआ, जिसमें स्वामी बोधामन्य संस्वरी के सिध्य महाचारी

(वेब पृष्ठ ८२२)

दात कम वर्ध



रजि० न०, डी (सी०) ७५६

# आर्य सन्देश

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का साप्ताहिक मुखपत्र

मूल्य एक प्रति ५० पैसे वष ६ प्रथम १ दिवस १६८५ आय सप्ताहर १६०५१०५१ १० मासवीय सु० २०४१ वि० दशानुत्सव—१५८

## जनतन्त्र का आठवां महाकुम्भ प्रारम्भ चुनाव रणभेरी बजी : नामांकन पत्र भरे गए

‘सुराज्य बनाने के लिए अपना मत दे’ आर्य समाज की घोषणा

नई दिल्ली। भारत के लोकतन्त्र की आठवीं ससद के लिए चुनाव घोषणा हो चुकी है। २४ दिसम्बर एव २७ दिसम्बर ८४ को लगभग ३८ करोड़ मतदाता विरक्त के सबसे बड़े जनतन्त्र के लिए ५१५ प्रतिनिधियों का चयन करेंगे।

महर्षि दयानन्द और आर्य समाज ने देश की स्वतन्त्रता और जनतन्त्र के लिए सतत प्रयत्न किया है। देश के हित को आर्य समाज ने सर्वत्र सर्वोपरि माना है और ठीक उसी दिशा में प्रयत्नशील रहा है। क्योंकि यह आर्य समाज का अपना स्वभाव है, कर्तव्य है। आर्य समाज का अपना मत है कि देश के सुराज्य स्थापित किया जाए। फलतः यहाँ पर स्वच्छ स्वच्छ न्याय पराजय कोरक्षित प्रकाशन के लिए राष्ट्र के समस्त नागरिक विवेक से काम लेंगे ऐसी आर्य समाज की मान्यता है।

### राम गोपाल शालवाले की विहार यात्रा

#### सफलता पूर्वक सम्पन्न

#### डा० दुसनराम से विचार-विमर्श

दिनांक २४ नवम्बर ८४ गया रेलवे स्टेशन पर संकटो की सभा में विभिन्न आर्य समाज के अधिकारियों एवं कार्यकर्ताओं ने लावा राम गोपाल शालवाले का स्वागत किया। रेलवे स्टेशन पर श्री प्रतिनिधि सभा के प्रधान पंडित बाबूदेव शर्मा, मन्त्री हरिदास उवाह बार्बादोर दल के सभाध्यक्ष रामाश्व वैरागी नवावा के मंत्री द्वारा का-प्रसाद आदि धार्मिक स्वागतार्थ उपस्थित थे।

रेलवे स्टेशन से लावाजी आर्य समाज मन्दिर में पहुंचे जहाँ हजारों की सभा में लोग जनकी प्रतीक्षा कर रहे थे। लोगों ने सावधानिक प्रमाण का हादिक स्वागत किया और उन्हें पुष्प मालाओं से लाद दिया। लावाजी का ओजस्वी माधव हुआ। इसी प्रकार के कार्यक्रम विहार के अ व आर्य समाज—नवादा रजोकी में भी हुए। पटना में लावाजी ने दुसनराम से मठ की। मठ में समस्त आर्य समाज के सभा प्रधान को रेलवे स्टेशन पर आने की भी विदाई दी।

### वैदिक धर्म-महासभा का चुनाव

हाल ही में वैदिक धर्म-महासभा के वार्षिकारियों का आ चयन किया गया थे निम्न प्रकार से है—

स्वामी रत्नदेव जी सरस्वती—सम्पादक एव प्रधान। महात्मा आनन्द मुनि बाणप्रसी—उप प्रधान। स्वामी अश्व मुनि जी—उप प्रधान। स्वामी गारुडा सरस्वती—उप प्रधान। डा० सुखदेव बाबाय (एम० ए० पी० एच० बी० रोहतास)—महा-मन्त्री। बाबू ब्रह्मचारिणी बहिन म्नावती शास्त्री।—मन्त्री एम० ए० प्रधान—स्वामी भागानन्द सरस्वती—मन्त्री। श्री अरविह बाबू कालिकारी—प्रचारक मन्त्री एव कोषाध्यक्ष।

सम्पादक—नरेन्द्र विद्यावाचस्पति

### देश में डाकघरों की स्थिति

- १५ अक्टूबर १९४० को स्वतन्त्रता प्राप्ति के समय हमारे देश में केवल २२ ११६ डाकघर थे।
- ३० सितम्बर, १९८४ तक डाकघरों की संख्या बढ़कर १,४४,७७२ हो गई।
- ग्रामीण क्षेत्रों में डाकघर इस प्रकार से फैले जा रहे हैं कि ग्रामीणों को डाकघर पहुंचने के लिए दौड़ किमीमीटर से अधिक न चलना पड़े। पिछले और जनजाति क्षेत्रों को डाकघर जोड़ने में प्राथमिकता दी जा रही है।
- बचत करने की भावना जलने के लिए प्रत्येक डाकघर में बचत बैंक की सुविधा है और यह देश का सबसे बड़ा बैंकिंग तन्त्र है।
- देश की कुल पांच लाख पेटिकाओं में से चार लाख से अधिक ग्रामीण क्षेत्रों में हैं।
- देश के विभिन्न भागों के लोगों के बीच सम्पर्क की कमी होने के कारण डाक तन्त्र राष्ट्रीय एकता का एक प्रभावी यन्त्र बन गया है।

### भारत का समुद्री तट

- भारत का समुद्री तटवर्ती क्षेत्र ६,०८० कि० मी० लम्बा है तथा इस तट रेखा पर १० प्रमुख तथा ८५ छोटे बन्दरगाहों के बलाभा अवसर छोट छोट बन्दरगाह हैं।
- हमारे देश में समुद्र में चलन वाले ८० लाख जों भार ० टों स अधिक जहाजों का नेवा है।
- भारत का विदेशी व्यापार १० ००० करोड़ ६० का है और लगभग यह पूरा व्यापार समुद्र से होता है। विदेशी व्यापार की ३३ प्रतिशत से अधिक की दुलाई भारतीय जहाजों द्वारा होती है।
- जलपटीय क्षेत्र में तेल की खान के लिए देश में २० करोड़ ६० का निवेश हुआ है और हम औद्योगिक ३०० लाख टन तेल निकालेंगे।
- हमारे पास हिन्द महासागर में अधिकतम विशिष्ट आर्थिक क्षेत्र है जिसमें सैनिक एवं जैव सम्पदाओं का विशाल भंडार है।
- भारत में समुद्री सतह के खनन में अग्रणी निवेशक की स्थिति प्राप्त कर ही है और सैनिक सम्पदाओं के विभिन्न क्षेत्रों की खान के प्रयत्न किए जा रहे हैं।

### वाई० बी० चट्टाण नहीं रहे

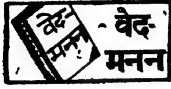
भूतपूर्व उप प्रधान मन्त्री वष वृद्ध स्वतन्त्रता सेनाजी एव देश के मध्य राजनेता की वसवत राय चट्टाण का २२ नवम्बर का दिल्ली में दशहोत्सव हो गया। उनको बाबु ७१ वर्ष की थी।

### हिन्दू परिषद् के अध्यक्ष का निधन

विश्व हिन्दू परिषद के अध्यक्ष महाराजा मयवत सिंह जी का निधन हो गया। उन्हें हिल का दौरा पड़ा था। वे ६० वर्ष के थे।

ध्यक्षस्थान—डा० गणेशोत्तल





परमपिता परमेश्वर न सृष्टि के आदि में आज के एक अरब छियावै करोड़ घाट लाख और हजारों बस पूब मानव-व्यपार के लिए चार ऋषियों की आस्थाओं के एक-एक वेद का ज्ञान दिया ज़रूरिए वेद का नाम खुति भी है। वेद ईश्वरीय ज्ञान है यह तर्क सुविष्ट शास्त्र प्रमाण एवं स्वयं वेद प्रमाण से भी विदित किया जा सकता है। जैसा कि मयूकंद ने कहा है —  
तस्मादप्यज्ञातं सर्ववृत्तञ्च सामानि जज्ञिरे।

छन्दानि जज्ञिरे तस्माद यजुस्तस्माद आग्नयः॥  
(यजु० ३१।७)

यागी उसी परमेश्वर से ही ऋग, साम, यजु और अथर्व वेदों की उत्पत्ति हुई।

एसा ही हम अथर्व वेद का एक और अर्थ लेते हैं —  
जस्मायुक्ती ब्रह्मातसन् यजुस्तस्माद पाकभूतः।  
सामानि यत्न सोमाम्यथर्वाङ्गिज्ञ रसो मयुजः॥

स्कन्ध ७ बृहत् कथम् त्विषेयम्॥  
अथर्व १०-३३॥

अर्थात् उस (स्कन्धम्) सर्व ज्ञात की भावना करने वाले परमेश्वर की वेदों का प्रकाश जानो। ऐसे वेद तथा मनुष्यवृत्ति आदि में अपने को प्रमाण है। हम शत रूप ब्राह्मण का एक प्रमाण और भी लेते हैं—  
महर्षि याज्ञवल्क्य अपनी पत्निया पत्नी अर्चनी की बता रहे हैं—एव वाच अरे बाल्य महतो नूनम् नि स्वमिमेन्न ऋषेभो मयूकंद सामवेदान्यर्वाङ्गिज्ञ रसो १०-३४ य ५॥

अर्थात् मैं मैंनी। जो आकाशादि से बड़ा तब व्यापक परमेश्वर है उसी ऋग, यजु, साम और अथर्व यचारों वेद उत्पन्न हुए हैं। जैसे मनुष्य के शरीर से ब्रह्मण महत होता है, वैसे सृष्टि के प्रारम्भ के वेद ईश्वर से प्रकट होते हैं और वेद ईश्वर अथर्व को जाता है, वैसे ये प्रथम वेद ईश्वर के ज्ञान के अन्दर विद्यमान रहते हैं। यन्मा नाय कमी नहीं होता।

अब कुछ ब्रह्मणों का समाधान कर देता भी उचित है—

(१) निराकार ईश्वर से शब्द रूप वेद कैसे उत्पन्न हुए?

समाधान सब सांनिधान ईश्वर जिना मुक्त प्राण के भी उन्मा काय कर सकता है। जैसे हम विचार के समय मुसुआ की आवाज करना नहीं होनी है। जन्म मायम्य-मान ईश्वर अद्भुत महाज्ञ सृष्टि की रचना

निराकार होते हुए भी करने से पूर्ण समर्थ है वैसे ही वेद ज्ञान प्रदान में भी बृह निराकार होकर भी समर्थ है।  
(२) ससार की उत्पत्ति में जीव समर्थ नहीं है पर व्यकरणमादि की प्राति वेद भी बना सकता है।

समाधान — जैसे मनुष्य मकान, सड़क, पुल, नहर, रेल, जहाज, रोकट आदि ईश्वर की सृष्टि से पदार्थ लेकर ही बना सकता है वैसे ही ईश्वर के लिए वेद ज्ञान के जाह ही भवना ज्ञान विस्तृत कर पुस्तक की बना सका है। प्रणयता नहीं।

आगर किसी बालक को एकान्त में रखकर पाला जाय और उससे बातचीत न किया जाय तो उसे मरण पत्यन्त मनुष्यपने का ज्ञान भी नहीं हो। सभी की बिना शिक्षाये कोई कुछ नहीं जानता जैसे कि बन्धी मनुष्य कुछ भी उन्नति नहीं कर पाता है। बेरोपेय के बिना मनुष्य पयुक्त ही रहता, प्रत्य रचना की बात ही क्या? जैसे भेड़िये के पास का बालक देखा जा सकता है।

(३) स्वाभाविक ज्ञान से मनुष्यों के विकास कर वेद बनये।

समाधान — उपरोक्त बालक और बन्धनारी जैसे स्वाभाविक ज्ञान कुछ भी उन्नति नहीं कर पाते हैं वैसे ही स्वाभाविक ज्ञान, वैसा ही को समझने में मान सहायक होता है उससे ज्ञान बढ़ाकर मनुष्य अपना विकास कर सकता है। जैसे सभी की विद्वानों को शिक्षा बच या विद्वानों के प्रश्नों को पढ़ें बिना कोई भी विद्वान नहीं हो सकता है।

ईश्वर सब विद्यायुक्त है शत वेद भी सब सब विद्याओं के युक्त प्रत्य है।

वेद में प्राति कारण-पुराण, पुराण बाद-जिल, सैन, योद्ध, चारण आदि की बातों का प्रचार ईश्वरीय ज्ञान के रूप में हो जाने तथा एकमा सृष्टि का युक्त प्रमाण तथा विज्ञान से विरोध होने तथा सामान्य राशय, गहीश्वर, उम्बट, स्कन्द स्वामी, वंस मूलर आदि के मत वेद आध्यों से इनका युक्त वेद और सच्चाई से विरोध होने के कारण, सचाचित मन्त्रहो की धर्म मानने तथा वेद, धर्म और ईश्वर के नाम पर एवं परलोक आदि के नाम पर ठगी प्रारम्भ होने के कारण तथा वेद विच्छेद के नाम पर प्रचार जा ज्ञान के कारण, वैज्ञानिक आदि इन बातों को मत मानने को पर, किन्तुने भी सच्चे वेद माध्य को जो कि महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती ने पूर्ण प्रमाण गहित किया है देखा उन्ही की प्राति वेद पर वेद गयी और बही

वेद की प्यठता और महता का पूर्ण कायल हो गया।

जैसा कि महर्षि अरविन्द ने भी लिखा है—स्वामी दयानन्द ने वेद माध्य कुची से भी है।

मैसूर मूलर ने कट्टर ईसाई होने के कारण सन् १८५६ ई० में वेद के सचय में लिखा है—

यात्री वैदिक सुनो की एक बड़ी तस्मा बचकाना कठिन, अथम और साधारण है।

वह तो उसे बरबाहे का गीत तक मानता था। मैसूरमूलर ने १८६६ ई० में भारत के सचिष दूक आफ बारगाइल की पत्र लिखा था—

यात्री भारत का प्राचीन धर्म मत्त प्राय है। और यदि ईसाई धर्म उसका स्थान नहीं लेता तो वह किफका शीघ्र होगा?

वही मैसूर मूलर स्वामी दयानन्द के वेद माध्य और धर्मों की लेकर का "यात्रा" होने क्या सिद्धा साधक है। नामक पुस्तक में लिखा है—

यात्री मानव मस्तिष्क का जैसा भी बाधाभरण अपने स्वाध्याय के लिए उद्यत बनना चाहिए—वह चाहे धर्म हो या

फिक्सीसकी (विमान) साह स हो या कला, कानून हो या व्यवहार परमाच विद्या (ईश्वर) या वेद पुत्रा सुन्दे भारत में ही जाना चाहिए। फ्योकि अत्यन्त मूल्यमान पदार्थों में से कुछ पदार्थ केवल भारत में ही हैं। जागे यह कहता है—

यात्री कठिनता से ही पठन-पाठन का महकमा कही होगा जिसने भारत के प्राचीन साहित्य से नया प्रकाश न लिया है।

इसी प्रकार वर्तमान समय में भी कम से कम एक दर्जन इमान अपने की एष ही तथा जमाइत इस्लाम के प्रधान आदि भी ऋषि दयानन्द सरस्वती के वेद माध्य एवं धर्मों से प्रभावित हा वेद प्रचार में लग गये। जत हुने भी ऋषि दयानन्द के प्रश्नों एवं उनके वेद आध्यों को लेकर वेद शास्त्र की सत्यता और सावभोगिता को स्वयं जानना एवं सब को जमाना चाहिए।

लेखक—विशेषरी कु० सिंह  
आ० स० निषेधक  
५०२, कैप्टी बस आध्याय  
सेना अवन राम कुल उरुम  
नई दिल्ली-५६

## हास्य विनोद

जैसा सचारा जैसा जवान

बपाल के नवाब सिराजुद्दौला ने अपने हिन्दू दरबारियों से प्रत्य किया, "प्राप लोगों के पचार में बहुत कम उद्योगिष सम्बन्धी बातें पहले से बता दी जाती हैं। पर प्रक्रम के पचार में आपका उद्योगिष क्यों चुप रहता है? वे चारे पश्चित कुछ उत्तर न दे सके। कृपया नगर के राजदरबार में एक हलोक दरबारी गोपाल भाव रहता था। वे उसके पास गते और उससे जबाब देने को कहा। वह सिराजुद्दौला के दरबार में हाजिर हुआ। वहा जब वही प्रत्य किया गया तो वह बोला, "हज़ूर हम हिन्दुओं के मुँह बनाये जाते हैं। हम हिन्दुओं की आत्मायें सीधी स्वर्ग तथा आकाश की ओर जाती हैं। वहा से वे प्रत्ये कुटुम्बियों को आकाश तथा नखन आदि की सब बातें बताती रहती हैं। वहा मुन्नाह को सुनयमानों के मुँह जमीन में दफनाये जाते हैं। उनकी सहे जमीन के भीतर जाती हैं और प्रक्रम जमीन के भीतर से होता है। इसलिय यह सच बताव अपनी कोम बासों से मुक्तिये वहा की बातें वही बता सकते हैं।

नवाब साजबाब हो गये।

हेतु इल्लिफ़िकुलस धार्यसमाज को शोक

कार्यसमाज हेतु इल्लिफ़िकुलस की एक सभा में प्रधानमन्त्री भीमती इन्दिरा गांधी के उद्भव निधन पर शोक प्रस्ताव पारित कर इन्दिरा गांधी की हत्या के बाद हो रहे जयन्त कृत्यों को समाप्त कर देय में शांतिपूर्ण स्थिति कायम करने की माग की गयी।

सभा में इन्दिरा आत्मा की प्राति के लिए दो मिनट का मौन धारण कर परम-पिता परमेश्वर से प्रार्थना की।

दिसम्बर के अन्तिम सप्ताह में

## महर्षि दयानन्द निर्वाण शताब्दी

### कार्यक्रम

□ शोभायात्रा

□ वैदिक साहित्य का विवरण

□ विभिन्न क्षेत्रों में सब पञ्चम

□ और वेदोपदेश

□ साधनजिक ब्रह्मज्ञान सभा

# आर्य सन्देश

## हिन्दू सिख एक है ।

विषय में मिलने की सिख है। व सदा से हिन्दू थे, हिन्दू है और हिन्दू रहेंगे भी। श्री गुरु गोविन्दसिंह का जन्म पटना में २२ १२ १६६६ ई० में हुआ था। श्री गुरुगोविन्दसिंह जी महाराज ने केस कृपा, कड़ा कृपाण और कच्छ कच्छ करण करण करते वक़्त बनाया इससे पूर्व के गुरुको ने कहे रहते की अंग्रेज़ा नहीं दी थी। वह किसी से छिपा नहीं है कि भारत में पहले किस देशवासी से हिन्दुओं और गुरुको को विषयी बनाने के लिए विषय किया जाता था। विषयियों के सबने के लिए वरुण गुरु गोविन्दसिंह की महा राज ने दशमेस सेना का समान करने उहे पचाकार से बसिस्तिन किया और कड़ा सिख सदा शासक में एक सहाज तब गोविन्दसिंह कहलाता ' पाप प्यारे भारत के विभिन्न आदिओं के लोग थे। आई दशराज कभी थे बसदास दिल्ली के बाट थे, श्रीकमलचन्द हारका के कोबी थे हिन्दुस्तान अजनामपुरी के कटार थे, और साहबबन्ध बिन्दर के हज्जाम (गार्ड) थे। गुरु जी मुगल बादशाहों के साथ कई बार लड़ाई लड़। सेना को सुसज्जित वापिस के लिए और मुगलों की सारि की दीक्षा करने के लिए वे जीवन पयत्न मुद्रत रहे। गुरुको ने अपना जीवन बपरिहार हिन्दू हिन्दु स्तान से और मोरखा में उत्तम कर दिया। वेहि वेहे बाबा गुरु को भगज मोजन का बुज जग से मिटाज ' सिख तो वह भूज रहे है कि परमात्मा को निरन्तर गीतन बाते माता अपन बाते गुरु महाराज ने जब हिन्दुको पर सकत तथा धनपतन सेना तो कृपाण को माताकपी रक्षा कश्मलमान लिया। ने जीवन पयत्न लककर श्री दिल्ली के विहासन को विषयियों से मुक्त नहीं करा सके। दुस्तर हमारी फूट घोर कमजोरी को जानते थे। फलत उहीने कई राजाओं की प्रमोभन देकर दिया लिया था। अपनी स्वाय को परपोषावस राजाओं ने गुरु को ही हिन्दू बन रक्षाप मायना को दुकरा दिया। फलत हमारा मन्थनकर्मी और सिन्धकर्मी हिन्दू समाज विभाजित हो गया। संकटों की गुलामी के बाव जब हम स्वतन्त्र हुए तो बाज सिख राष्ट्रपति भी भारत के विहासन पर विराजमान हैं। क्या वे हिन्दू सिख सम्प्रदायवादी पाकिस्तान में गज्जर पद पर विराजमान हैं? बाप नकारात्मक उत्तर देत। भारत विभाजन के बाद पाकिस्तान से हिन्दुओं और सिखों को भावक और गैर भाषि से ककब सिटी की तरह निकाल देका गया। बसबस नारियों ने अपनी रक्षा रक्षा के लिए दूककर या भागवदाह करने अपने प्राणी की बलि चढा दी। उन्होंने हिन्दुओं के धन सम्पत्ति, हज्जत, जमान डेटे डेटिडो तथा लोगों के प्राण छीन लिए। प्रथम गुरु की नानकचन्द जी को जन्मभूमि ननकाना साहेब पजा साहेब और पजाब की राजधानी साहोब की। इते विषयियों के हाथ से हम स्वतन्त्र नहीं कराते है। इसके विपरीत आज विषयियों के उकसाने पर उनका साथ देने के लिए भारतीय सिखों ने अपने ही हिन्दू भाइयों पर भाषात करना प्रारम्भ कर दिया। सिख भाइयो! बाप कहते हैं कि स्वयं मदिर की पवित्रता बनाई रखी जाय। बाप चाहते तो गुरुद्वारा की पवित्रता के लिए प्रारम्भ से ही उपराधियों को मदिर में मरण (रजोह) नहीं देते। पजाब में बस रही हिला की बातक करने के बिना सिख एक मुठ होकर भाषाज उठाते। सैनिक प्रवेश के पवित्रता नय नहीं हुई अस्तु स्वयं मदिर की पवित्रता और मदिर सेना मुजसित रह गये। नहीं तो उपराधियों स्वयं सिखों को उठा देते। इविरा जो ने स्वयं मदिर बना लिया पर इविरा जी को नहीं बचने दिया। स्वयं मदिर टूटे घोर बन जो गये। नकिन हमजारी गोप मिल गये। जिस की गोद बाली हो गई। जिस बहन की माय उमड़ गई। जिसके माता पिता मारि बहन रति मुग साम्राज्य हो गये क्या उन्हें बस प्रान्त हा सक्ते हैं? देश के अन्दर ये समानता काय से देश कमजोर होगा। दुस्तर बाप पर हावी होयें और बाप सभी गुलाम हो जायेंगे। वह कुरकी होली बन बाँ बाँरा, प्र म वासि स्थापित करें और देश की एकता अखण्डता को बनाये रखें। तासिस्तान समक उपराधियों के विपद देश के सभी सिख एक होकर भाषाज बुज इ करें। इसी में देश और देशवासियों का गसा है। अब सिख मारि गुरुको की बाणी और कुर्बानी को मुसले जा रहे हैं। हम सब उनकी बाणी पर नहीं चलते। श्रीराम को हिन्दू भी और सिख भी मानते हैं। फिर एक क्या है? गुरु कर्म साहब म तो अनेको अगह राय के मास तथा ब्रह्मा विष्णु महेश भादि के मास प्राये हो हैं। गुरु जी ने भी कहा कि श्रीराम गुण प्रायो ' श्रीराम बोधन वाले सभी गुरु के सिध्य हैं। सिख देश दायी रहने वाले ही सिध्य हैं ऐसी बात नहीं। कही भी हिन्दू सम्मेलन होता है तो गुरुको के नाम पर दार सज्जा दी जाती है। गुरुको के पिता और जीज्जत प्रदक्षि किंये जाते हैं तथा उनके अनुकरण करने की प्रणा दी जाती है ही गुरु गोविन्दसिंह के दोनो पुन रहे हिन्दू बनकर हस्ते-मुहते सरहिन्द की

श्रीधारी ने पुन दिये गये। मगर विषयी नहीं बने। गुरु तेगबहादुर ने दिल्ली में कीछ कटा दिया। लेकिन हिन्दू बस की रक्षा से मुह नहीं मोड़ा और न विषयी बने। ऐस हो अनेको बान कुर्बानिया देकर नर नारियों ने अपनी जीवन माया अमर कर ली। २६ सितम्बर १६८५ और जुलाई १६८५ ने तीन बार भारतीय बायुवाओं का अपहरण कर साहोब ने जाया गया तथा अपहरण कर्त्ताओं को शरह दिये गये। पाकिस्तान के उपराधियों की सैन्य विस्था दी गई। पाकिस्तान के मुसलमान गुरुमुक्ती जानते हैं। उन्होंने अपने कपे बांधी बढाये और पजाब में मुसलमान किया। सिखों से दोली कर उन्हें गुमराह किया।


यही नीति है ' भूट शाही राज करो की। मदिरों गुरुद्वारा ने गा नाट कर फेंकना गुरुधर रामायण गीता भादि की जसना या पवित्र स्वको को विनष्ट करना इत्यादि सन्धे सिख कभी नहीं कर सक्ते। सत्ता की इस कुर मार में सको नर नारियों बच्चे ध्यवसायी अफसर सेना, भादि मारे गये। ऐसा करने से सिखों की बलि हुई? सम्पत्ति लूटे गये दुकानों में बाग भगानी गई। उपराधियों सिखों ने खुद सिखा को मारा। ये सब क्यों हुए? अस्तु पाकिस्तानी सिखों के भेष में पकड़ गये। पाकिस्तानी शास्त्रन बराह गुप्त रक्षा इन सब बावों से भी भारतीय सिखों और अलगाववादियों की बाँस नहीं बुनी जिस दिन पजाब भारत से अलग हो जायेगा। ठीक उसके बाद बह पाकिस्तान का ज ब न बन जाएगा। उसके साथ साथ कमजोर भी। वह भारत तो सिख भाइयो का है। मुसली से फिर उठाकर गुरुको की बाणी का प्रचार कर और अखिख भारत को पुन अखण्ड बनाकर गुरु के सपनों को साकार करें।

लेखक 'कातिकारी सूर बिचमनर बाई' समसलीपुर (बिहार)


मैं बाधुनिक भारत के महान पथ प्रवक्ता स्वामी दयानन्द के प्रति यथाज्ञानिक प्रश्रुत करता हिन्दुओं ने म मयावत और अनुष्ठानों के बीहड़ जगम में से जिसमें देश के पतन के कास में गहरी बास उग बायी थी माग को परिच्छुत किया ताकि हिन्दू लोग परमात्मा के प्रति निष्ठा और मानव सेवा का सादर और बिबेकपूर्ण जीवन व्यतीत कर सकें।

—रवी ह मास ठाडुर

### दर्दों की हर बीमारी का घरेलू इलाज




**दंत मंजन**  
लौंग युक्त




मन्त्रों की अजुन


23 जंकी बुटियों से निर्मित आयुर्वेदिक औषधि




मुठ की दुख



ठंडा गर्म पानी लगाना



आज नये पैकिंग में उपलब्ध



दास का दर्द

महाशियां वी हट्टी (प्रा०) लि०

B/44 इण्डियन स्ट्रीट सीतल नगर नई दिल्ली 15 फोन 538809 537987 537349

**राष्ट्रीय परिप्रेक्ष्य में राष्ट्रीय  
नवजागरण और महर्षि दयानन्द**

—श्री रामगोपाल जी शास्त्रवाले

यह कहने में हमें सकोच नहीं है कि इस समय राजनैतिक बल धर्म निरपेक्षता की छाड़ कर भारत के बहुमत की पग-पग पर ध्वजोल्लास कर रहे हैं। इन सबका मुकाबला करने के लिए धार्मिक समाज को हिन्दू जाति का एक प्रचण्ड पगठन खड़ा करके ईश्वर, मुसलमान और सिक्कों के प्रत्यावाबोध के नारे का देश भर में सक्रिय विरोध करते हुए जन धान्दोलन खसना चाहिए।

संसार के इतिहास में प्रायः देखा जाता है कि समय समय पर मानव-जाति को  
ठठाने के लिए कुछ विशेष आत्माएँ इस धरती पर अवतीर्ण होती हैं। मृत्ति की उत्पत्ति  
एवं अरब सत्तानेव करोड़ वर्ष पुरानी हो चुकी है। महापुरुषों की लम्बी सूची में बनेका  
पराक्रमी व चक्रवर्ती राजा-महाराजा, ऋषि मुनि, बड़े-बड़े योद्धा एवं उच्च कोटि के  
महा-मानव इस धरती पर पैदा हुए और अपना-अपना काम करके उसकी छाप संसार  
पर छोड़ दी।

ससार की राजनीति में सभसे पहले सच्चाई ईबतसत मनु हुए, उन्होंने राज्य-प्रणाली का आबिष्कार किया और वेद के आधार पर उस समय की जनता को अपने-अपने कर्तव्य के पालन की ओर प्रयत्न किया। इसी प्रकार सदिया बीतती गईं और बड़े-छोटे महापुरुष अपना अपना काम करते चले गए, किन्तु इतिहास में उनकी बयर गाथाएं आज भी सुरक्षित हैं।

आर्यभूति भारत में लगभग ५ हजार वर्ष पूर्व महाभारत के युद्ध के पश्चात् बसे-  
 ा बसे राजाओं और महाभारतवासी का ह्रास हुआ और वैदिक यज्ञ का लोगो होने लगा ।  
 महाभारत के पश्चात् भारत में वर्ष का जो ह्रास हुआ, उसका विपश्चिन्न हिस्सा के  
 पृथ्वी में बीरता का स्रवण हो । रान्नीति विराट्ट के राजा-साधु बामिनि विराट्ट  
 की हस्त बसे में आई और वैदिक यज्ञ अनेक स्थानों में बट गया । बामिनि का उरध हुआ  
 और बामगर्ग के कारण जैन और बौद्ध धर्म में अन्ध विद्या । शङ्ख सत्राज्य सम्य तथा  
 शास्त्र शास्त्र अनेक सत्राज्यों में विभक्त हो गया, जिसके परिणाम स्वरूप बनीरसत्राज्य  
 का आरम्भ हुआ ।

जैन और बौद्ध धर्म के प्रचार का सामना करने के लिए सरकारों भारतीय धर्म पर उन्मुख और इन नास्तिक धर्मों का मुकाबला करने लिए उन्होंने बौद्ध ब्रह्म का प्रतिपादन किया। अनास्तिक धर्म प्रवृत्ति की वजह से और ईश्वर की अस्तित्व पर सताये हुए प्रचार करने से, बौद्ध धर्माध्यक्ष परमेश्वर ने प्रकृत का ध्वज का रूप धारण करके और ईश्वर के चरणों में प्रणमन करने के लिए प्रवृत्ति, बौद्ध और प्रकृति के अनादि सिद्धांत का प्रतिपादन किया और धर्म के नाम पर विभूतिपूजा, अवतारवाद, मूर्कभाव, भूल छात्र आदि का भरो और विरोध किया कि धर्म के ब्रह्म के कारण राज्य का भी प्रभाव हो गया। इसविषय उन्होंने खुद शक्ति की राजनीतिक परिस्थितियों को मुआवजा के काम किया। बौद्धिक परिणामस्वरूप हिन्दू जाति में राज-नीतिक और धार्मिक बेतुका पैदा हुई।

सन् १८५७ ई० में महर्षि दयानन्द ने आर्यसमाज की स्थापना की। अपने अमर ग्रन्थ सत्याय प्रकाश' में खुले रूप में अपने देश में अपने राज्य का समयन किया और विदेशी राज्य की बुराईयों पर लले रूप से अपने विचार जनता के सामने रखे।

सन् १९८६ में भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की स्थापना एक प्रवेज वि० ह्यूमेन की, किन्तु उस समय कांग्रेस के सामने पूर्ण स्वतन्त्रता का कोई लक्ष्य नहीं था, बल्कि लक्ष्य यही था कि विभागीय दोर विचार बहिष्कारी भारतीय हो। इसी कारण प्र० ह्यूमेन ने तत्कालीन शासक से मुक्ति-विचार प्रसारित किया। किन्तु इससे १० वर्ष पूर्व ही मजदूर दमनाने के शास्यसमाज की स्थापना करके पूर्ण स्वतन्त्रता की माग कर दी थी, जिसे १६ वर्ष पश्चात् कांग्रेस ने लाहौर-अधिवेशन में प० जवाहरलाल की अध्यक्षता में स्वीकार किया था।

स्वामी दयानन्द ने १८७२ ई० में कलकत्ता के प्रमोद कानन में बैठकर तत्कालीन वायसराय मि० साह नार्थब्रुक के साथ जो भेंट की थी, उसमें वायसराय महोदय ने महर्षि दयानन्द से कहा था—“स्वामी जी ! आप ईसाई असलमान पौराणिक ब्रह्म

सादित बनने का सामर्थ्य करते हैं, प्राणीकी भाँसा को कोई संतप्राप्त हो नहीं है? प्रत्यक्षा प्राणीकी सुखसा का प्रथमचरण का विद्या आध्यात्म। यह अतिव्ययमान-वर्ग का प्रथम विद्या था—  
 सुखी, सुखी, सुखी, सुखी का प्रथम मैं केरे भवितव्य के मण्डितो का प्रथम विद्या है। मुझे  
 सर्वसंनिविष्टमान् ईश्वर पर निविष्टासु, यही मेरा ससकल है। इस पर बायसरायन के गुण  
 गम्भीर भाव से कहा—“सुखीराज। यदि हिसार प्राण इतना व्यक्त है तो बाप जब  
 उपदेश करते हैं तो परमात्मा से प्राणिक का विद्या करे कि धर्मको का विद्या बहुत विलो  
 त कह बलवा रहे।” सुखीराज की यह बात सुनकर महर्षि प्रधानका का रहेता प्राणी की  
 तरह बात हो गया। उन्होंने कहा—“प्रधान का सुखीराज विल दित वक्त है, ऐसी प्राणना  
 मैं नहीं कर सकता। मैं तो मर्यादा से यही प्राणना करता हू कि वह किंदा प्रमाणा दित  
 होना जब धर्म पर शारत शीलकर करे बाये।” इस सुझावको के बाव ही धर्मपं  
 रसका का रक्षेया की दायित्व के प्रति बहुत कोश हो गया और उनके निवेष्टे ही—  
 आई। ही— तथा दिए गए एवम् मर्यादा के पदधनन किए जाने लगे।

जोधपुर में शो ७ बली मदन खा, जिसने महर्षि का इनाज अन्तिम समय में किया था, वही भी प्रयोजन का पिटू था। राष्ट्रीय और धार्मिक चेतना का अग्रदूत महर्षि दयानन्द ने प्रत्येक वर्ष में आज के ठीक १०१ वर्ष पूर्व दीपावली के दिन इस संसार को सर्वत्र के लिए त्याग दिया।

३ नवम्बर से ८ नवम्बर, यहाँ तक हमने युगपुरव मशूफि दयानन्द का निर्वाण  
खताब्दी-समारोह सोल्ह मनाया था लोग पूछते हैं, भावसमाज का जनता को क्या  
कार्यक्रम देना चाहिए। येरा कहना है कि मशूफि दयानन्द ने भावसमाज क दस नियम  
बनाकर धर्म के सिद्धांत का जो स्वरूप हमारे सामने रखा है, वह हृत्ता पुण है कि उससे  
बाहर कोई चिन्तन की चीज ही नहीं रह जाती।

मैं ज्ञान बन्धन को हटाना ही कहना चाहता हूँ कि वे आपसी भ्रम के मग्न सुढाब को दूर करें, यही, आत्मज्ञान की प्रगति में रोड़ा है। हमें एक-दूसरे पर विचार करके समझने का प्रयास करना चाहिए। यशो के माध्यम से हम धार्मिक वर्तुष का प्रचार करें, घर-घर में दैहिक ज्योति जगाए और इसका प्रचार-प्रसार करें।

नया जन आन्दोलन अपेक्षित

२७ वर्ष की राजनीतिक स्वतन्त्रता का विश्वासोक्त करते हुए यह कहने में हमें सकोच नहीं है इस समय राजनीतिक स्वतन्त्र निरपेक्षता की भाङ्गम भारत के बचपन की पन-पन पर अवहेलना कर रहे हैं। हा सच्चा मुक्तवादा के लिए आवश्यक किन्हीं जाति का कथन सत्यतः सदा सच है ईश्वर, मुसलमान की रक्षकों के अत्याचारों के बारे का हल हम से सन्धि विरोध करते हुए अव-आ-दातन पकना चाहिए। आज बुधवार होकर काम करने का अवसर नहीं है, अपितु प्रचार की भी नहीं आवश्यकता है। श्रृंखला हम दिनां भी पूर्ववत् आगे बढ़ेंगे।

### दक्षिण पूर्व एशिया की सांस्कृतिक तीर्थ यात्रा

दक्षिण पूर्व एशिया की जो सांस्कृतिक तीर्थ यात्रा श्रीमती इन्दिरा गांधी की निधन के फलस्वरूप स्थगित कर दी गयी थी उसकी तिथियाँ अब २ फरवरी १९८५ से १६ फरवरी १९८५ कर दी गयी हैं।

विशेष जानकारी हेतु सम्पर्क करें —

श्री बंधोक त्रिखा, टेवल ट्रस्ट, बी-24 निजामुद्दीन इस्ट, नयी दिल्ली-13  
(दूरभाष-980216)

**वार्षिक चुनाव**

वर्षा समाज शान्ति नगर, सोनीपत, (हरियाणा) की प्रबन्धक समिति का गठन निम्न प्रकार हुआ - श्री वैद्य बलकृष्ण दास (सरसक), श्री रामसाधु मदान (प्रधान), श्री हरिचन्द स्नेही (मन्त्री), श्री मेहरचन्द, कोषाध्यक्ष

श्री बाबूदेव भक्तपुरी, 10 माइलबस्ती दिल्ली, 5 ने सुझाव दिया है कि बाबू  
सन्देश साप्ताहिक पत्र में कुछ परिवर्तन किए जायें। जैसे उपर्युक्त की सभी सूची पत्र  
प्रकाशित की जाय साथ ही साथ बाबूने यह भी बताया कि महिलाओं, विधुओं, श्राव  
विशाल, बोरी राजनीति तथा महापुरुषों की जीवन गाथायें नियमित रूप से छपनी  
चाहिए। जिससे कि प्रायः सर्वे पत्रिका का स्तर सुधारा जा सके। बाबू सन्देश के  
प्रकाशक मन्थन ने उनके सुझावों को स्वीकार करके तदनुसार पत्र का सम्पादन कार्य  
शुरू कर दिया है।

# राम जन्म भूमि के मुक्ति हेतु प्रकाशवीर शास्त्री के प्रयास

—स्वामी मेवमुनि परित्राजक

उन दिनों भारत के प्रधानमन्त्री श्री जवाहरलाल नेहरू व भारत सरकार न देश में साम्प्रदायिक तनाव के कारणों को दूर करने तथा हिन्दू मुसलमानों में साम्प्रदायिक सम्बन्धों को सुधारे देने की योजना के नाम पर यह निश्चय किया था कि जो मस्जिदें हिन्दुओं के अधिकार में हैं वह हिन्दुओं से लेकर मुसलमानों को दे दी जाय।

सन १९४७ में पाकिस्तान बन जाने पर जिन स्वामियों के मुसलमान उभर चले गये व बहा की मस्जिद बकार हो गयी थी। पाकिस्तान से बहार होकर लाहौर की सभा में हिन्दू इश्तार भारत में आये थे बहोने जहाँ बहा पाकिस्तान गये हुए मुसलमानों के मकान रिस्त पत्र देवे वह उ ही मकानों में रहने लगे। जिन स्वामियों तथा जिन मकानों के जिन आशों के सभी मुसलमान पाकिस्तान भाग गये थे बहा की मस्जिद बकार पड़ी थी। पाकिस्तान से आने वाले सरणार्थी बन्धुओं ने ऐसी मस्जिदों में भी रहना प्रारम्भ कर दिया था।

भारत सरकार की योजना उन्हीं मस्जिदों को मुसलमानों को देने की जनी थी। मुसलमानों ने वहाँ ऐसी कोई मांग नहीं की थी। न तो सचदे और न सचदे से बाहर ऐसी कोई आवाज सुनाई दी थी। सुनायी देती भी तो कहा से और क्या सुनायी देता जिन मस्जिदों में पाकिस्तान से आये हुए हिन्दू सरणार्थी बसे हुए थे उन आशों में कोई मुसलमान था ही नहीं तो बहा कौन नमाज पढ़ने जाता सभा किस प्रकार उन मस्जिदों के लिए आवाज उठती ?

वास्तव में बात यह है कि स्वतन्त्र भारत में प्रथम बार उन दिनों भारत सरकार के गांधीबाबू ने धर्म निरपेक्षता का उदात्त भाव राहा था और उस समय के भारत सरकार के प्रमुख श्री जवाहरलाल नेहरू ने मुसलमानों की मस्जिदें सोने की योजना बनाकर उस उदात्त को प्रकट किया। यह मस्जिद रिस्त करायी गयी। उन बर्बद होकर बाएँ भारत गस्त हेँ दुबो को एक बार फिर सरणार्थी बना दिया गया और इस प्रकार बाएँ के लार्डों ने अपने पुन्य बाबू के सय बहिष्सा पुन की आने या बनवाने में ह्वा कर ती।

मस्जिद रिस्त करायी गयी और जलमाल सवज्जो की बाह्मण किया

गया कि वह उठे सम्मान। पता नहीं कहा कहा से मुत्ता भोग लाकर उन मस्जिदों में अर्वाज देने और नमाज पढ़ने के लिए बड़ा दिय गया। उनमें से से बहुत ही मस्जिदों को तो बर्बाद तक मुत्ता उपलब्ध नहीं हो सके।

सचदे-केसरी स्व पण्डित प्रकाश बीर की शास्त्री उन दिनों लोक सभा के सदस्य थे। १९६१ की श्री कृष्ण ज म अष्टमी के प्रसन्न पर उन्हीने लोक सभा में यह प्रश्न एक प्रस्ताव के रूप में उठाया उन्हीने अपने प्रस्ताव में कहा था कि मैं भारत सरकार को इस मायना सवहय हूँ कि देश में साम्प्रदायिकता के विषय को समाप्त करने के लिए विभिन्न मठों के नागरिकों में पारस्परिक सम्बन्ध उत्पन्न करना आवश्यक है इस सिलसिले में पाकिस्तान बनने पर बहुत से मुसलमानों के उधर चले जाने के कारण बकार पड़ी जिन मस्जिदों में पाकिस्तान से आये हुए सरणार्थी बसे गये थे भारत सरकार ने उन मस्जिदों को मुसलमानों को सौंपने की योजना बनायी है उसी के सचदे में मेरा यह कहना है कि साम्प्रदायिक तनाव का कोई भी जिह्म शेष नहीं छोड़ा जाना चाहिए। इसीलिए मेरा यह प्रस्ताव है कि श्रीकृष्ण जन्माष्टमी के शुभ अवसर पर योगीराज श्रीकृष्ण के जन्म स्थान मथुरा में श्रीकृष्ण ज म मन्दिर का पुनर्बाध मुगल सम्राट और नजेब द्वारा बनवायी गयी मस्जिद हिन्दुओं को दिला दी ज व तथा साथ ही विदिशा (मध्य प्रदेश) का विजय मन्दिर राम जन्म स्थान कनोया की न बरी मस्जिद विरवाज महादेव काशी के मन्दिर का जो भाग मुसलमानों के अधिकार में है वह और सम्भल जिला गुरदासबाद का हरिद्वार महादेव का मन्दिर का भी मस्जिद बना हुआ है हिन्दुओं को दिला दिया जाय।

उससे ठीक अगले दिन आज समाज दीवाना हाल दिल्ली की उस महती सभा में श्री कृष्ण जन्माष्टमी के उपलक्ष्य में आयोजित की गयी थी श्री शास्त्री जी ने अपने भाषण में लोक सभा के अपने उत्तर प्रस्ताव की चर्चा करते हुए कहा था कि मैं यह जानता था कि लोक सभा में मेरे इस प्रस्ताव पर बिचार भी नहीं होगा कि तु फिर भी मैंने इस प्रस्ताव को रखा था तो इस लिए कि इसकी चर्चा लोक सभा की फ़ाइल में बा जायेगी जो

एक दलानेव के रूप में सुरक्षित रहेगी और भविष्य में भारत की भावी सन्तानों को प्रेरणा का कारण बनेगी तथा उठे यह स्मरण करायी कि यह मायना जतीव से भी कभी बरी नहीं थी।

जब सन १९८४ में ठीक २३ वष बाद हम श्रीकृष्ण मन्दिर राधादिओं से कहना चाहते हैं कि प्रयत्न वष श्रीकृष्ण जन्माष्टमी बनाने वाले क्या आप लोग सचदे केसरी स्वामी श्री पण्डित प्रकाश बीर शास्त्री के उन उदात्तों से सहमत

हैं जो उन्हीने १९६१ की श्री कृष्ण जन्माष्टमी के अवसर लोक सभा में प्रकट किया थे और क्या उन मायनाओं का मुत्ताकन कर आप उनको रक्षा के लिए तयार हैं जो उ हुने उस सभा में स्मर की थी। यदि हा तो सगठित होकर इसके लिए प्रयत्न कीजिए यदि प्रयत्न किया तो सफलता आपके पास होगी आने वाले सचदे के निर्वाचन से पहले ही इस आवाज को उठाइय।

## स्वार्थी पक्ष

ले० स्वामी स्वकृपानन्द सरस्वती प्रधिष्ठिता वेद प्रचार  
[काश्यप ब्रह्मचारी]

कुछ सचदे इकट्ठा हुए जहाँ पर सचन वक्त भी छाया।

मिल करके एक पचायत की जो हुवा फलता ससकता।

बचा काल ये पक्ष बह प्रधान बने पचायत कर।

प्रस्ताव पास यह कर दीना बात व प्रम संहित कर कर।।

बोल गये ये वय। जाति न पु। पुन बाज न आये हस्तक से।

हम ने न मुन्हारी वग बरता है। कोई भाई रहस्य से।।

गुप्त सचदे रहते आपस में बदनाम नाम है स्वामी का

बल सजो नहीं बादर करिये धपने आये मेहुनाओं का।।

एक तो जमाना बहुत दुरा मुन्हिल है नहीट भरता।

महर्षि भी जोरों पर है बब दित भी मीर नहीं बरता।।

बर बर हुकारे जाते हैं कुत्ता कुत्त कह कह बोले।

कुछ भाई बह मायपाली जो बठ कालो ने बोले।

बूढ़ा कौल जाति बन्धुओं अब लभना परस्पर करे बन्ध।

जो करे उल्लभन उसका भी ये दण्ड करो मितकर प्रबन्ध।

हो गया पाद प्रस्ताव सजी ने पक्ष का सारा कहना।

भाई भाई सब लख नहीं आपस में मिल जूल कर रहना।

उस बख के ऊपर एक चोल उभरकर दूरी से भाई भी।

एक म न का टकबा सगा चोच में उठा कहीं सवाई भी।

बा बजन अधिक उस दुकन में बा रखा चाच मे दाब सिर।

गया छूट चोच से प्रकसात पक्षों के बीच में आन गिरा

देखा जो बीच मात पक्षा तो मुह म पानी बर आया।

नष्ट काल पर उठ दृष्टा दूचा भी आगे को भाया।

हो गयी मय पचायत सब होन लागी छीना छपटी।

क्या कर सभासद बचारे जब पक्ष होय अक्षिया कपटी।।

ऐसे ही पक्ष स्वार्थी जो स्वाय हित दूट-दूट पकते।

जपनी ही उधरपुष्टि का मित्रों के साथ लख रहते।।

यह स्वाय सगठन की रस्ती का पल में ठोड़ काष्ठ देत

कहे स्वकृपानन्द स्वार्थी पक्ष में प्रय होख देते।।

## दिल्ली प्राय बीर दल की बैठक

आय बीर दल दिल्ली प्रदेश का एक जयावर्षक बैठक दिनांक २ दिसम्बर १९८४ रविवार को प्रातः ११ बजे आयसमाज नूना मन्त्री पहाड़गज मई दिल्ली ५५ में होगी। सभी आद्य बन्धुओं के विनम्र अनुरोध है कि समय पर पधार कर आय नीरो का उत्साह बनाय। प्रयत्न आयसमाज के प्रधान तथा मन्त्रियों से विश्व प्रायना है कि निश्चित समय पर अवसर पधारें तथा अपनी आयसमाज से कम से कम दो आय बीरों को साथ लाय।

अध्यक्ष वैदिक सन्धान नजीबाबाद उत्तर प्रदेश



हैदराबाद सत्याग्रह

## भारतीय स्वाधीनता सम्मान योजना गृहमन्त्रालय की शिफारिश

—बहुमन्त्रालय स्थापक

सन् १९७२ मे स्वतन्त्रता रतत जपनी के अवसर पर केन्द्रीय सरकार ने स्वतन्त्रता सेनानी पेंशन का आरंभ किया। यह १००० रुपए वार्षिक बाय के कम बायो को ६ मास का कारावास, मुमियत नकरबन्ध (भात की मुमि मे होये पर) वा सम्पत्ति बन्ध होये बाओलन के दौरान बचप होये बायो रोबरनर के सोत समान्य हो जाने पर मिलती थी। बाबादी के दुर्ब की रिवासतो मे प्रवातनो बाधिकारो तथा भारत मे विसय के प्रस पर पीठियो को भी इयेने बामित्त किया गया था। बाद मे १९८० मे ५००० रुपए की सीमा इतारक बन्ध रिवासतो भी दिया जाता हुक करके उसका नाम सेनानी पेंशन की बजाय स्वाधीनता सेनानी योजना १९८० कर दिया गया। इस दिशा मे बायस्वक प्रशासनिक एव विलास कृम केन्द्रीय सरकार ने उठाये। भारत मे विसय के प्रस पर पीठियो को भी इयेने भी बामित्त किया गया था। बाद मे १९८० मे ५००० की सीमा इतारक बन्ध रिवासतो भी दिया जाता भी हुक करके उसका नाम स्वतन्त्रता सेनानी पेंशन की बजाय स्वाधीनता सेनानी सम्मान योजना १९८० कर दिया गया, इस दिशा मे बायस्वक प्रशासनिक एव विलास कृम केन्द्रीय सरकार ने उठाये। भारत सरकार ने इस काम को करने के लिए गृहमन्त्रालय के अन्तर्गत गृहमन्त्री और राज्य के गृहमन्त्रियों के अतिरिक्त बाड सरद सदस्यो की एक समिति पठित की। इससे पहले यह गृही बनी थी। गत वर्ष तक इसकी ६ बैठको मे स्वीकृत बनेक बुझयो को सरकार ने माना है। गुरुवर्ष सरद सदस्यो को यह सम्मान पेंशन अतिरिक्त भी बाती है। सर्वमान मे केन्द्र सरकार इन सम्मानियो को ३०० और इसकी शिखाय पली को २००) वार्षिक देती है।

१९७२ की तावत्रपन देने की योजना १९७६ मे बन्द कर दी गयी। वरन्तु १९८० मे यह पुन जारी कर दी गई और केन्द्रीय सरकार के अनुवीर पर उनको निमुक्त विलिप्त, भाषा बादि की सुविधा भी बहुवी की राज्य सरकारों दे रही है। पेंशन की सीमा मे जो राज्य सरकारो के द्वारा दी जाती है, निम्न-चिन्त है: १००-१५० के बीच। इस सम्बन्ध मे बामित्त कागजोलन मानक धार्यसमाज ने सामुहिक रूप से हैदराबाद बाय्य सत्याग्रह १९३६ के पीठियो के लिए कोई माग नहीं की। गुरुवर्ष निजाम रिवासत के बाधिकार बायसमाजी पीठियो मे व्यक्तित्व रूप मे बाधप्रवेश कलठक नीर महाराष्ट्र राज्यो के काफ़ी नेलायो के प्रमाथ पनी, जेस तथा यातनयो के प्रमाथ स्वरूप १९७२ की योजनायो मे सहज यह माग उठाया है। सेष भारत मे भी कुछ लोगो को बाय्यसमाज नाम के छोडे बर पर पेंशन मिली है। केद यही है कि बाय तक इस सम्बन्ध मे सम्यक् रूप मे कोई प्रयास नहीं हुआ है। सायरेविक बाय्य प्रतिनिधि सभा क बयमान प्रमाण की रामनगोषा शासनाले ने गत वर्ष २० नवम्बर की लकाप्रोम प्रमाणमन्त्री स्वी श्रीमती इन्दिरा गांधी को एक विलुप्त पर विलकक प्यान बीबा। जिस पर गृहमन्त्रालय ने हैदराबाद बाय्यसमाज के १९३६ के सत्याग्रह को इस योजना के अन्तगत धरतीकार कर दिया।

इन पथिनयो के लेखक ने भारत सरकार की सेवा मे श्रियत होये सषय १९५३ मे सत्य रूप मे गय लोकेत्या बायोग को विलक दिया था कि हैदराबाद बाय्यसत्याग्रह मे सगमय ६ माह बहु जेस मे रहा था। जब १९७२ की योजना स्वतन्त्रता सेनानीयो के लिए निमणी सब उतने १९७५ मे तावत्रपन पाये (सेत ५००० वार्षिक के ज्वासा था) और इस र्थ की सरकारी कर्मचारियो के लिए तो जाने वाली रिवासतो के लिए स्याप पूर्वक मान की परन्तु कुछ नहीं बना। सरकार का उत्तर था कि उन्स बाओलन की सरकार ने स्वतन्त्रता बाओलन का प्रस अभी तक नहीं माना है। इस सम्बन्ध मे तत्कालीन मुयमानन्त्री को सग पूर्व की जो बायेवद दिए गये मे और गृहमन्त्रालय से उनका उत्तर नकारात्मक मिला। मेरे इस मायले के बारे मे साबेरिक सभा के गुरु पृ प्रमाण एव गुरु पृ नसद सदस्य और मेरे जेस के सवामी श्री नरेश सलातक ने सबवित सन्विद्यो को पृ निम और आर्यसमाज बाओलन के द्वारा भी राष्ट्रीय प्रमाथ का उन्सक किया परन्तु सरकार ने कुछ नहीं माना। जनाड जगनमेट के गृहमन्त्री भी बरपल्लुह से बायेवद करने पर भी परिमाण सुन्य रहा।

बन्त मे मीने २०-१३-८३ की स्व प्रमाणमन्त्री श्रीमती इन्दिरा गांधी को अन्तिम पत्र डाक द्वारा व्यक्तित्व सवोचन के साथ लिखा जिसमें सरकार के पिछले निर्णयो को अलकलता और पुनर्विचार के लिए लिखा गया। उन्होंने यह पत्र गृह मन्त्रालय को बायस्वक कायांवाही के लिए भेज दिया। सघर मीने बरलिक भारतीय स्वाधीनता सेनानी सगन को विलाद नोट और परिशिधो के साथ भेजने के बजाया इस सम्बन्ध मे दिधी-धरेनी पनी मे बायान उठाई और सगन के सदस्यो के साथ बैठकों की।

धार्यसमाजो जना को यह जानकर इयें होगा कि गृहमन्त्रालय की सम्बन्धित सत्याग्रह समिति ने सर्वसम्पत्ति से हैदराबाद के बाय्यसमाज सत्याग्रह को स्वाधीनता सघास के रूप में स्वीकार कर लिया है और यथोचित रूप की मजदूरी के लिए भेजने का निश्चय किया है।

बाधा है कि स्व इन्दिरा गांधी के बीधनकास मे जो निगम लिया गया है, उसे यथिनयन की भी स्वीकृति बरसय प्राप्त होगी। सम्पन्न कराने के लिए उद्योग कर रहे हैं। एक गुग के बाय उन स्वाधीनता सेनानीयो और उनके बायिको के लिए यह एक सच्ची अदायगी होगी।

## आर्य केन्द्रीय समा दिल्ली राज्य को अन्तरंग समा की बैठक

समा के महामन्त्री श्री सुप्रेमि ने एक विलिप्त द्वारा बताया कि बाय्य केन्द्रीय समा दिल्ली राज्य की अन्तरंग सभा की एक बस्यावसक बैठक स्वाधीनता सघान विलिप्त विलस, केन्द्रीय के बायिक बरिवेयस तथा दिल्ली बाय्य प्रतिनिधि सभा द्वारा धामो-बित महृषि दयानन्द निगमि सगान्ती के सम्बन्ध मे विचार करने हेतु पतिवार १ दिसम्बर १९८४ को साय ५-३० बजे बाय्यसमाज मन्दिर, कटोस बाय, नई दिल्ली मे सभा प्रमाण श्री महर्षिदय बरगलज जी की बाध्यता मे होगी।

निर्वाण विलस के अवसर पर विलेप लेख

## दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा (पंजीकृत)

### को आवश्यक बैठक

सभा के महामन्त्री डा० बरगलज ने एक विलिप्त द्वारा बताया कि दिल्ली प्रेषा समल बाय्यसमाज, सभासभो, विलस तथा बाय्य सगन सदस्यो को बाय्यकारियो एव बाय्यकारियो की एक बस्यावसक बैठक महर्षि दयानन्द निगमि सगान्ती के सम्बन्ध मे बाय्यकम की अन्तिम कपरेशा और पत्र सघर की योजना बनाने हेतु गुरुवर्ष २६ नवम्बर १९८४ को मय्याहोवर ५-३० बजे बाय्यसमाज मन्दिर, १५ हुल्लान रोड नई दिल्ली मे होगी।

कानपुर मे सिखो को मुसलमान होने से बचा लिया गया कानपुर। हास के हिसक रयी मे यहा से काको सिखो की बाय्य सभाजी नेला श्री देवीदास बाय्य ने सग पर मुसलमान होने से बचा लिया। यटना इस प्रकार बतायी जाती है कि हिन्दु सिख के नाय से हुए सषय मे नवाबजड छात्रो भी थे। काको सिख आइयो मे बरने परिवारो के साथ छात्रो मे मुसलमानो के यहा छात्र भी थी। सिखो के मन मे उस सषय हिन्दुयो के बिरुद उतेबना सी थी। उस उतेबना को और यधकाया गया। और उन्हे परामश दिया गया कि यह मुसलमान हो जायें। इसके लिए यह तैयार हो गये। मन्दिर मे यय परिवर्तन का कार्य बन माना गया।

कर्नू के बीच सिखो के केन्द्रीय बाय्य सभा व जिलाबाय्य प्रतिनिधि सभा कानपुर के बाध्यक्ष श्री देवीदास धार्य को फोन द्वारा सूचना दी। इस पर भी बाय्य ने गुरुस ऐसे सिख आइयो से सम्पर्क किया। और उनसे कहा कि मन सोसा बाजी की बलु नहीं है। काको सगनने के बाद उनका जोष शात किया। श्री बाय्य ने उनको बाय्य मन्दिर मे रहने का बासह किया। इन पर इन सिख परिवारो ने मुसलमान होने का विचार बदल दिया और मीके पर पठुषने के लिये भी बाय्य का बयनबाद किया व उनसे कुछ सहजता भी प्राप्त की।

ध्यामप्रकाश साठवी

## एक परिवार की शुद्धि

हिन्दु शुद्धि मन्त्रालयो समिति समालका मयी मे ता० ८-११-८४ को बाय्य के ४ बजे श्री हरिचिह्न प्रमाण बाय्यसमाज बाय्य भोरा रसलूरु जिना सोनीपत के यहा श्री वेदप्रकाश साठवी गुरुहो बाय्यसमाज समालका मयी से परिचारिक यम कराराया गाव के काको रनी और पुरुष सम्पत्ति हुन बाय्यसमाज समालका मयी के भी बाय्य कारो व सरस्य बाए हुए थे। १० व्यक्तियो ने यमोपवीत धारण किए। स्वामी सगनद ने भी हिन्दु शुद्धि मन्त्रालयो समिति समालका के महामन्त्री है वैदिक धर्म की विशेषता और शुद्धि की बाय्यसमाज पर प्रकाश बाता। इस अवसर पर श्री कपरहिह्न पुन श्री नरक मुसा जाट ने स्वेच्छा से परिवार सहित वैदिक धर्म की सेवा की।

## प्रार्थनसमाज बेलामेघ (समस्तीपुर) में देवयज्ञ

(१) आध्यात्मिक बेलामेघ (समस्तीपुर) में २०-१०-८६ को देव यज्ञ तथा मंत्रब्रूण और नाट्यो को जोड़कर करार देव दान कमलेश्वर आय के किया। अपने देवों को वाणिज्य व्यवहार पर इस कार्यक्रम में कागिकारी मूर विवेकम्बर आय के कहा कि असाध्य की सहायता करना ही सच्ची पुजा अत और सबसे बड़ा धर्म है। इस अवसर पर श्री नमस्त्र किछोर शास्त्री श्री ब-देव सत्याश्री न अपने अपने विचार प्रकट किए।

(२) आध्यात्मिक समस्तीपुर में राष्ट्रीय गौरव तथा सच की बैठक कागिकारी मूर विवेकम्बर आय की अध्यक्षता में की गई तथा जिल के सभी प्रमुख म कायक्रम चराने के लिए एक समिति बनाई गई सचीवक श्री मवल किछोर शास्त्री नगरपालिका अध्यक्ष श्री परमेश्वर चौधरी कबीर आश्रम के महुता श्री प्रो० मदन की (मधु) प्रो० अवलेश्वर की अध्यक्षता श्री भातीलास श्री तथा दीनदयाल कालरा श्री। इस बैठक में एक प्रस्ताव पास किया गया कि प्रत्यागियों स गोहत्या पर प्रतिबन्ध लगाये के लिए लिखित आस्थावन ल। लिखित आस्थावन जनता की मही देने पर जनता उ ह काते काय दिक्षाकरों को हथियारे बापस आओ के नारे लगाये।

(३) समस्तीपुर में ११-११-८६ को आध्यात्मिक विवेक हिन्दू परिषद राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ भारतीय जनसच, विधायी परिषद तथा गायत्री परिवार के सदस्यगण के। कागिकारी मूर विवेकम्बर की अध्यक्षता में एक बैठक म गायत्री महायज्ञ करने पर विचार किया गया। इस बैठक में ए० श्री० एम० कई अधिकांसी गण तथा सहूर के कई प्रमुख न्यायिक उपस्थित थे। विवेकम्बर श्री ने कहा कि हमारा देश धर्म सच म है। इसलिए सभी नानैतिक पार्टी न्यायिक मस्याए जो हिन्दू राष्ट्र में आस्था रखत हैं उन्हें एक जुट होकर हिन्दू राष्ट्र मोहवा पर प्रतिबन्ध न बुलवाना को मत नहीं देन का और नहीं छोडने पर प्रतिबन्ध लगाया जाए नुसरेडियों को निकाला जाए अथवा नवादी तत्वों के खिलाफ गिन नुसकर नुसकर आवाज उठावी चाहिए। कोई भी सस्था अपने अपने बैनर में कायक्रम को कर। लेकिन सहयोग सची का होना चाहिए। इससे हम सची मंत्रब्रूण होगे और हमारा जा उद्देश्य ही उनको प्रति हा सकेगी और फिर यह देश आशीन कहलाने लगेगा। पाकिस्तान में हमन नुसत सची समाप्त हो गए। इस देख में इस्लाम कैला तो बहा की सची तरह के हुवन नुसत पाठ समाप्त हो जायेंगे।

### शोक समा

भारत की मूलभूत प्रचलनसची मोसीरी दिवारा गायी के निधन पर देश भर के आध्यात्मिकों में उनके द्वारा आयोजित शोक समाओं के संदेश को हमारे कार्यालय को निरन्तर प्राप्त हो रहे हैं उनमें से कुछ निम्न हैं —  
प्रांतीय आध्यात्मिक समा अधीनगण, कीजवत आय समाज सान्नाकुल बन्ध १ मोसीरीय नदी योनि स इन विश्वेक विहार दिली निर्दोषन कालीनी साहबरा दिल्ली।

## जिला हिसार में वैदिक धर्म प्रचार

दिनांक 10 से 16 नवम्बर 1984 तक हिसार जिले के निम्न ग्रामों में कबाड़ी सातरक कला बनाया गया, मुरा बासाबास में वैदिक धर्म के प्रचार का प्रोत्साहन किया गया। निम्न निम्न विद्वानों में भाग लिया—आय अगत के प्रकाश विद्वान बा सुदशन देव आचार्य महाशयनी वैदिक धर्म महाशयनी स्वामी धेवान्ध बा जो स्वामी आनन्द पुनि स्वामी रामानन्द जो स्वामी कीर्तिदेव जो बा नारायणदेव प तेजपाल भजनीपदेशक (आय प्रतिनिधिसमा हरियाणा) बहा चारुणी बहन कलावती आचार्य कल्या मुकुल गायीवार बहन सावित्री महाशय रिशाल बिहू बादि विद्वान सभासी उप

देशक बादि के महबुब प्रबन्धन एवं प्रजन हुये। उपरान्त विद्वानों ने इन गांव में प्राप्त काय यज्ञ व माय काय ईश्वर वेद पाषाणक अहेश्वर चराच, कौरी, अष्टाचार बन्द करो बादि विषयों पर विस्तार से प्रकाश डाला। गांव के प्रति छित सोमों ने इन आध्यात्मिकों का हृदय

से स्वागत किया। सभा को ब कया मुकुल गायीवार को दिन ज्ञान कर दान दिया।

## सत्यार्थ प्रकाश

—श्री राधेश्याम आय विद्यावाचस्पति मुसाफिरखाना सुल्तानपुर उ प्र

सत्य माय विद्वानों वाला ज्ञान—विषय बढ़ाना बाया।  
मूर पर केंवरी गहन समिन्ध—को निमित्त त मिटाने वाला।  
जितसे दिव्यालोक ग्रहण कर हुवा प्रकाशित भू—आकाश।

दिव्य बहो सत्याप्रकाश।।

प्राति समस्त मिटाने वाला दूर ब्रमाद भगाने वाला।  
सारी बरती पर निमग्न हो—इका सत्य बजाने वाला।  
अवेय वरन्ध है इसके चौहद—मन्य विषय सुचर समुन्धाल।

दिव्य बहो सत्याप्रकाश।।

सन्ध्या इस विद्याया जिमने जीवन माय बताया जितने।  
सारे विषयों की येसो—क्षण में मूल मिलाया जितने।  
कानि प्रपना बन युवको का मा की सहस्र जगाया प्राध।

दिव्य बहो सत्याप्रकाश।।

पाषाणों की सलकारा मानवता का मिला सहारा  
पीन सुखी मन मता तने की—आय उठा भारत सारा।  
जितसे ग्रहण कभी विषय बन किंचित होगे नही हुराश।

दिव्य बहो सत्याप्रकाश।।

## वैदिक कैसेट

प्रसिद्ध फिल्म गायक महेन्द्र कपूर द्वारा महर्षि दयानन्द की अमर कहानी

सन्ध्या—यज्ञ शान्तिप्रकरण स्वस्तिपावन आदि

प्रसिद्ध भजनीपेशक—

सत्यपाल पवित्र ओमप्रकाश वर्मा पन्नालाल पीयूष लोहनलाल

पवित्र शिवरात्रिजी के सर्वोत्तम भजना क केमेटस तथा

प द्रुदेव विद्यालकर के भजनी का संग्रह।

आय ममान के अन्य भी बरत स कैसेटस क सचीपत्र के लिए लिख



कन्वेन्शन इन्फोविकस (प्रिन्टिंग) प्रा लि

14 मकिट 11 फेन 11 अराक विहार देहली 52

फोन 7118326 744170 टैलेक्स 31-4623 AKC IN

— प्राप्ति स्थान —

यह कैसेट बिल्की धर्म प्रतिनिधि सभा

११ हनुमान रोड नई बिल्की पर भी मिलते हैं।

## उत्तमता का एक मात्र विश्वास

Groversons



Pari's Beauty  
पैरिस ब्यूटी

गोवर्ध  
सेल्स

ब्रा, पैन्टी, बनियान, अन्डरवियर, व बेबी पैन्टी आदि



पैरिस ब्यूटी सेल्स कारपोरेशन

2665 ए/2 बीडन पुरा अजमल रवारी  
करोलन बाग मई दिल्ली ११०००४  
दूर भाष ५६२२२४ ५७४२०० ५८२०३६

## श्रीमती इंदिरा गांधी के लिए प्रान्तीय आर्य महिला सभा द्वारा शोक सभा

मुं जो कुमुद बेग जोषी के-डीय स्वास्थ्य राज्यस-मी ने शोक सभा ने श्रीमती ग भी की महामानवी की सभा दी । १७ ११ ८४ धनिवार मा व बहिन सुभी ईस्वर देवी जी की अ-डासा ने स्वर्गीय प्रणाम श्री श्रीमती इन्दिरा गांधी की निमग्न हल्वा पर शोक सभा हुई जिसने दिल्ली की प्रमुख बाय प्रतिनिधि बहिनो ने श्रद्धांजलिया बलिष की ।

इंदिरा जी को भारतीय प्रगति की बासा विश्व शांति की बपुषुत और बहितीय राजनेवी कहा गया । निर्भीकता से राष्ट्रहित जीने सने की अमर प्रेरणा बन गई ।

सबप्रथम सभा प्रचाला श्रीमती सरला महुता ने शोक प्रस्ताव पढा जिसके समयन से बहिनो ने अपनी वेदनाएं अभिव्यक्त की ।

मुख्य बलिषि कुमुद बहिन जोषी बावर बिबा बहिन शाह और कौणल्पा मलिक सभी ने उनके सस्मरण सुनाए ? बहिनो का हृदय भारी था और नेत्र सजल थे ।

सभा ने प्रसिद्धा की कि हम शांति सवसाय राष्ट्र ने स्वापित करके राजीब भाषी को अपना सम्पूण स्नेह समयन प्रदान करणेंगे । वही उस महान बाल्सा के प्रति स-बी श्रद्धांजलिया होगी ।

## ‘शत शत तुम्हें प्रणाम’ (राजेश्याम एडवोकेट)

भारत की हे माय बिबाते मातभता की ज्योति पुनीत ।  
युग युग तक ज्वापी रहेगा तेरा सारा जगत चिनीत ॥

गौरव की मायाएं तेरी बनी बर पर दिख लजाम ।

गत-गत तुम्हें प्रणाम ॥

अपने बीय तथा माहृष से बह ममान बनाया ।

कण-कण ने इस पुष्य भूमि के जापल ज्योति बनाया ।

जब तक सरज ब द रहेगा अमर रहेगा तेरा नाम ।

शत शत तुम्हें प्रणाम ॥

बपुषु की बहु प्रगति राष्ट्र की कहुती अमर कहानी ।

शक्ति पुनः ! हे इंदिरा गांधी और जसी ! बलिबानी ॥

दीन-बलिष की बहु रसिका तुम को युग का बाज प्रणाम ।

शत शत तुम्हें प्रणाम ॥

पहुतबाय ज्वापि प्रकाश का अन्तराष्ट्रीय बिबाह सन्मन्त्र  
नई दिल्ली ४ नवम्बर गुरु हनुमान के दिव्य राष्ट्रीय पहलवान ज्वापि प्रकाश (बाकरन बिल्ली निवासी) गुरु श्री मायेराम बाय का शुभ बिबाह बापुषुती सस्त्री (मिडुकी) गुरु श्री भुता का-सुती टोकिनी (बापल निवासी) के साथ बिना दहेज बैदिक रूप से सम्पन्न हुवा । दिल्ली के प्रमुख मागरीको पत्रकारों पहलवानो ने बर बपु को बाधीर्बाद बिबा । इस अवसर पर बिगिन सस्त्रीको को एक ही एक रुपया दान दिया गया ।

॥ ओ३म ॥

## आर्य जगत की शान २०० बिस्तर वाले निर्माणाधीन नेत्र चिकित्सालय (अनुमानित लागत दो करोड रुपए) के लिए दिल खोलकर दान दीजिए

दान की राशि आयकर अधिनियम जी० ८० के अन्तगत करमुक्त होगी ।

सारा दान बैंक/मनीऑर्डर/बक ड्राफ्ट द्वारा

ग-जी माता जननदेवी बाय बर्मास नेत्र चिकित्सालय सी १ जनकपुरी नई दिल्ली ४८

के पते पर भेजा जाए ।

दानदाताओं के नाम चिकित्सालय की शिला पर प्रकित किए जाएंगे ।

### निवेदक

रामगोपाल शासवाले सरकाय सूरवेक महाबाय बमपाल मोनप्रकाश बाय

चिकित्सालय एव प्रचान िल्ली बाय प्रति प्रचान बाय गमी महाबाय

शा० बा० प्रति० सभा निधि सभा के-डीय सभा बुनीबाल चेरि ट

शौबय से महाशिवा दी ह्दी भा० लिमिटेड ६/४४ कीलनगर औद्योगिक लण

नई दिल्ली ११००१

## उत्तम स्वास्थ्य के लिए गुरुकुल कांगड़ी फार्मेसी, हरिद्वार की औषधियां सेवन करें

आका कार्यालय ६३, गली राणा केदारनाथ

फोन न० २६६८३८

बाबरी बाजार दिल्ली ६

**गुरुकुल कांगड़ी फार्मेसी**

**प्रकृत**  
गुरुकुल कांगड़ी फार्मेसी  
गुरुकुल कांगड़ी फार्मेसी  
गुरुकुल कांगड़ी फार्मेसी

**गुरुकुल योग**  
गुरुकुल योग  
गुरुकुल योग  
गुरुकुल योग

**भीमसेनी सुरमा**  
भीमसेनी सुरमा  
भीमसेनी सुरमा  
भीमसेनी सुरमा

**पापेकिल**  
पापेकिल  
पापेकिल  
पापेकिल

**गुरुकुल कांगड़ी फार्मेसी**  
हरिद्वार

दिल्ली बाय प्रतिनिधि सभा के लिए श्री डा० बमपाल द्वारा सम्पादित एवं प्रकाशित तथा भाटिया प्रस २२७४ रबबगपुर न० २

गौबीनगर दिल्ली ११ के मुकित ११४ हनुमान रोड नई दिल्ली १

फोन ३१०१४०

रबि० न० डी (सी०) ७३६

# आर्य सन्देश

औषम्

कुण्डन्तो विश्वकर्मा

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का साप्ताहिक मुखपत्र

मुख्य एक प्रति १० पैसे

वर्ष ६

पृष्ठ १२

रविवार, १० फरवरी, १९८३

आर्य सप्ताह १६९०८३३०८४

फाल्गुन २०४१

दयानन्दवाच—१९०

## महर्षि दयानन्द शताब्दी दिल्ली का अभूतपूर्व

## श्रद्धाञ्जलि समारोह धूमधाम से सम्पन्न

राष्ट्रपति ज्ञानी जैलसिंह एवं केन्द्रीय शिक्षामन्त्री श्री के० सी० पन्त

मुख्य अतिथि के रूप में सम्मिलित हुए ।

6/11  
45/46, 49, 51, 52, 53  
88, 89, 90, 91, 92

## स्वामी दयानन्द स्वतंत्रता के अग्रदूत एवं

## महान् समाज सुधारक थे—महामहिम राष्ट्रपति ज्ञानी जैलसिंह

महर्षि दयानन्द निर्वाण शताब्दी के समायन समारोह में समायन भाषण करते हुए राष्ट्रपति ज्ञानी जैलसिंह ने कहा—

मुझे महर्षि दयानन्द निर्वाण शताब्दी समारोह का उद्घाटन करते हुए बड़ी प्रसन्नता हो रही है। महर्षि दयानन्द सरस्वती इस देश की उन महान् विभूतियों में से थे जिन्होंने समाज में फैली कुुरीयों को मिटाते, लोगों को धर्मविश्वास से युक्ति दिलाने और स्वयं तथा परबलियों के कल्याण के लिए

निर्भीक होकर धावाज उठाई थी। उन्होंने भारतीय समाज में नई जागृति पैदा करने की कोशिश की। वे सच्चे समाज सुधारक थे।

उन्होंने भारतीय समाज को एक नई रोशनी देकर उसे फिर से अपने पैरों पर खड़ा होने की प्रेरणा दी। उन्होंने शिक्षा का प्रसार, प्रखरों

का उद्धार बाल विवाह का विरोध और विधवा विवाह का प्रचार कर के समाज में एक नई कानि पैदा की। वे स्त्री शिक्षा और नारी स्वतन्त्रता पर बल देते थे ताकि समाज का यह धम किसी भी प्रकार से पीछे न रह जाए।

श्रद्धि दयानन्द सच्चे देश-

भक्त थे और उन्होंने भारत के नव जागरण में बहुत ही महत्वपूर्ण भूमिका निभाई और देश में स्वदेशी आन्दोलन की नींव रखी। सन् १८५७ को धावाजी की पकड़ी सडाई में भारतीयों की जो वरफकता निमी थी उस से हार न मानते हुए उन्होंने जुन कर कहा—

वेध वृष्ठ २ पर

## महर्षि दयानन्द राष्ट्रीय पुनर्जागरण के प्रकाश-स्तम्भ थे-

राजीव गांधी

महर्षि दयानन्द निर्वाण शताब्दी के अवसर पर प्रायः प्रधान मंत्री का सरोज

महर्षि दयानन्द हमारे राष्ट्रीय पुनर्जागरण के प्रकाश स्तम्भों में से एक थे। वे हमारे प्राचीन गौरव के अथक प्रचारक थे, लेकिन साथ ही वे अथक विश्वास के कठुर विरोधी थे। वे विवेक सम्पन्न जीवन दर्शन के समर्थक थे। महर्षि जी जैसी महान् विभूतियों से ही हमारे देश की सांस्कृतिक परम्परा कायम रही है।

महर्षि दयानन्द सरस्वती के निर्वाण शताब्दी के अवसर पर मैं उनको अपनी बधाइयों से धीपत करता हूँ।



महर्षि दयानन्द निर्वाण शताब्दी समायन समारोह शासकटोरा हवेली स्टेडियम में सच पर प्राचीन शायें थे—

राष्ट्रपति जी ज्ञानी जैलसिंह, शिक्षा मंत्री जी कुण्डकन्त पन्त, समाज प्रधान श्री सुदीप श्री स्वामी वैष्णवन्त जी, वेड म्हादय वर्नप्राय जी एवं समाज मंत्री श्री वर्नप्राय जी।



## हे नर ! तू अपने को जान

सुरेन्द्रनाथ वेदासकार

एम० ए० ए० सी० ६ ए० ६ १,  
बीबरा विहार

सुरसॉर्गसि महामन्त्र

०८६ प्रियव्या सीद ।

भासाऽनर्गसमापूर

ज्योतिषा दिवमुत्तमान

तेजमा दिश उदद्द ह ॥

यजु० १७ । ७२

ह मनुष्य (सुख प्राप्त) तू को  
बाना ऊनी उमान लेने वाला है (वह  
मान्य बलि) महान् प्रालम्बा वाला है तू  
(गुणवत्ता गुण वीर्य) तुम्हारे के गुण पर  
बैठ (भाषा) बानी चमक से (मनोरम)  
आनन्द का (आनन्द) घर है (ज्योतिषा)  
ज्योतिष से (विद्युत्) लोक को (उत्तमान)  
ऊपर भाग ले (तेजसा) तेज से (विश)  
विशाल को (उदद्द) बर्षान् हे नर ! तू  
सुख है ॥ उमान लेने वाला है ऊनी  
वह शाक ना न गा है जीव ! तू यह  
लगा है गुण बाना वाला है तुम्हारी  
के विद्यामान पर बैठ वह वैदिक ऐसा  
चमक कि अपनी चमक से धनरिष को  
परिणाम कर दे जाती, जगत्त करती  
ज्योतिष से धनोक्त को यम ले, परते तेज  
से विद्याओं को उन्नत ले ।

मनुष्य के लिए कितना वैराग्यवाक्य है  
यह मन्त्र सफलता न मविष्य के गम से  
विद्या हुई है न वह भवम् है वह तुम्हारे  
निकट है तुम्हारे निकट के भीतर है ।  
सुखमर घने बाधा नहीं वह भा गया है ।  
मन्त्र बाधा न मेरे धिरो तू वीर्य नही  
है वह तुम्हारे धन है । समार की समी  
आध वलन जीवन क सारी सफलताएँ  
तुम्हारे पास था = ३ । अपनी गति  
में विषय स 'मन प्रना प्राणा ' ।  
ऊचा रथ धनु = उस के नि  
अपना मविष्य को 'मन्त्र' नना चाहिए  
वह भाव कला है —

हम रा गरीर चह है गरीर का  
चलान व या जावना चलन है । गति  
के प्रा है यन्त्र जन्म बीरा या  
मनुष्य जान न है तो वह उन्नति की  
चरम मोक्ष न च जाता है धरे  
मनुष्य मन्त्र उन्नति करने वाले  
मुप्रा या युग मन्त्र या बाले म मान  
हो । उसे वह मन्त्र = ३ और जिन मिन  
वह मन्त्र मन्त्र य गया तो उन्न  
सह प्रसन्न हो जाएगा कि वह एक घर  
का एक देश का या एक उन्नति की नहीं  
किन्तु समुद्र तुम्हारी का पुत्र = ३ । तब  
वही जब अपने को विषय का एक  
समन्वय । विषय में एकता का अनुभव  
करेता और अपनी उन्नति की और अपनी  
महानता को और जाने के भाव को जान  
जाएगा तब इस एकत्व भावना का वह  
परिणाम होगा कि पदार्थ ही उस का

स्वभाव हो जाएगा और तब वह अपनी  
व्यक्ति से धनरिष को भर देगा । उस  
विषय 'आनन्द' बीबरा की मानविक  
चमक इस जगत् को चमकीय कर देगा ।  
हे जीव ! तू अपनी धक्ति को बानना  
नहीं समझता नहीं । इस वयत को  
भाव्य विषय के रूप में परिवर्तित करने  
की समता रखने वाले राय कृष्ण  
सकराबाय स्वामी दयानन्द स्वामी  
अद्वयनाथ महामा यात्री की गति तुम  
ने भी है । वस तू अपनी धिरो ज्योतिष  
को प्रकट कर चमका सब तेरा तब विषय  
दिश तो एक ऐसा कैलाश कि विषय के  
सब प्राणा तेज उस के प्रकाश में अपना  
महान और घनाव दूर कर सकने । तब  
तू अपनी उन्नति से न होकर सब की  
उन्नति में अपनी उन्नति समन्वय करने  
को देख । इस धनरिष को अपनी चमक  
समका अपनी ज्योतिष से धनोक्त की  
मन्त्र भी तथा विद्याओं को उन्नत कर ।

ह नर तू साधारण आनन्दियों की  
तच्छ वयो बैठा है तू तो वह धन है जो  
कि अपने प्रीति से सम्यग सत्कार को  
आनन्द करने लाता है । तू उन्नत अपने को  
जान तू सुख है व यमक मू है ।

## राष्ट्रपति का भाषण [पृष्ठ १ का वेप]

स्वामी दयानन्द स्वतन्त्रता के प्रेरक हूत थे

कोई कितना ही करे, परन्तु जो  
स्वदेशी राज्य होता है वह  
सब से उत्तम होता है । विदेशी  
राज्य कभी प्रशंसा नहीं होता ।  
सन १८६३ में इन के गुरु स्वामी  
विरजानन्द ने गुरु दक्षिणा के रूप में  
ऋषि दयानन्द से यह वचन लेकर  
उन्हें विद्या किशा बा कि वह अपना  
सारा जीवन लोक कल्याण के लिए  
लगा दये । इसी की पूर्ति के लिए  
ऋषि दयानन्द अपने २० वर्षों तक  
देश भर में भूम भूम कर जन कल्याण  
स्वदेश प्रेम और सत्य का प्रचार  
करते रहे । बला लाजपत राय  
और स्वामी अद्वयानन्द जैसे महान  
लोक नेता उन्हीं को देन है । उन्हीं  
के संदेश से प्रेरित भारतीय नर  
नारी स्वतन्त्रता सपना में कूब  
पड़ थे ।

वह समाज में सभी वर्गों की  
उन्नति के समर्थक थे । उन्होंने प्रायः  
समाज की स्थापना करते समय जो  
१० नियम बनाए थे उन में से ६ वा  
नियम यह रहा था कि प्रत्येक को  
अपनी ही उन्नति से सन्तुष्ट नहीं  
रहना चाहिए बल्कि सब को उन्नति

में अपनी उन्नति समझनी चाहिए ।  
यह समाज के लिए उन का मूल मन्त्र  
था और इसी के लिए उन्होंने समाज  
के हर कमजोर वर्ग को ऊँचा उठाने  
की कोशिश की थी ।

वे भारतीय संस्कृति भारतीय  
भाषा और भारतीय शासन के हामी  
थे । वे देश के लिए स्वदेशी भाषा  
चाहते थे और इसी के लिए उन्होंने  
अपने शत्रुओं की रचना हिन्दी भाषा  
में की थी । जिसे लगभग १०० साल  
बाद स्वतन्त्र भारत में राज भाषा  
का दर्जा हासिल हुआ । उन्होंने इन  
शत्रुओं की रचना उस समय खड़ी  
हिन्दी में की थी जब कि प्रभो तक  
हिन्दी गद्य का पूरी तरह विकास भी  
नहीं हुआ था । इस प्रकार से उन्होंने  
हिन्दी के विकास में भी महत्वपूर्ण  
योगदान दिया था ।

श्री भरविन्द घोष ने उन के  
विषय में कहा था—

वे परम्परा को इस विचित्र  
गुण के एक धनोक्ते योद्धा और  
मनुष्य तथा मानवीय सत्ताओं  
का संस्कार करने वाले महान्  
चिन्तक थे ।  
महू देश स्वतन्त्रता के अग्रदूत, महान



महान् दयानन्द निधन शताब्दी पर अमेरिका का दयावचन करत । राष्ट्रपति ज्ञान यम ७६  
'आनन्द' की ००० सी० ८०० ए० ६ 'समन्वय' शास्त्राचार्य

समाज सुधारक अथ विद्वांस और  
कविवाद की वैदिकी को कान्ते वाले  
महान यामी महावि दयानन्द  
संस्कृति का सदा श्रेणी है ।  
महावि दयानन्द देशीय देशीय में भी  
उन के प्रति अद्वा व्यक्त करते हुए  
कहा है—  
मैं सादर प्रणाम करता हूँ

उस महान गुरु स्वामी दयानन्द  
को जिन की दूर दूरि ने प्रात  
की प्राणा में सत्य और एकता  
का बीज देता ।

आज देश की एकता और  
अखण्डता के लिए जो चुनौती दी जा  
रही है—स का सामना करने के लिए  
हम सब को ऋषि दयानन्द द्वारा

विद्याएँ ए० ए० प्रम और भारता  
यता के मूल मन्त्र से प्रेरणा लेनी  
चाहिए ।

इन शब्दों के साथ मैं महवि  
दयानन्द सरस्वती को अपनी  
अद्वयविधि अर्पित करता हूँ ।

। जय हिन्द ।



वेदों में समाज शब्द की उद्भावना का मूल स्रोत

—पं० बुद्धदेव विद्यालंकार

बहाइ से लेकर जैमिनि मुनि-परमेश्वर  
 भीमचर्याम ने जिस बेलखन का निर्माण  
 किया था उसके तोरण द्वार पर अग्रभात्  
 मनु का प्रथम वाक्य प्राच भी प्रकृत है—  
 'देवो दक्षितो बर्धमयूतम्'। यहाँ वेद शब्द  
 से ऋक् यजु, साम और अथर्ववेद एव  
 प्रसिद्ध शब्द से कुरुनाथ बोधित होरी है।  
 मनु द्वारा प्रयुक्त यह शब्द प्राच्य  
 कर्त्तव्यों का वाचक है। यहाँ का बर्ध शब्द  
 समाज-निर्माण का और प्राचम शब्द  
 व्यक्ति-निर्माण का वाचक है। किसी भी  
 स्वस्थ राष्ट्र का निर्माण व्यक्ति और  
 समाज के समन्वय में है।

स्थिति पर सब समाज एक ढङ्ग के दो  
 किताबें हैं। जब तक इन्हें दोष न जाये  
 तब तक न राष्ट्रियता ही न विप्लव ही।  
 भूमि से समाज यह जाला है कि स्थिति  
 समाज का; और समाज स्थिति का निर्णायक  
 है। और दोनों ही स्थिति हैं कि इन दोनों  
 तर्कों को आधार बनाकर धर्मिक या  
 का अन्य ढङ्ग है। साथ का युग समाज-  
 वादी है। साम्यवाद का युग माना जाता  
 है। स्थिति के आधार पर ही इन दोनों जगहों  
 की पहचान पूर्व है। कि स्थिति प्राकारान्त  
 प्रमाणात् है। इन दोनों के आधार पर ही  
 रूप और नीति जैसे दोष का निर्णय  
 होता। समाजवादी पर स्थिति सहाय्य  
 निर्माण ही चुका है। विद्यालयों, विप्लव-  
 निर्माण में इन्हें प्रयोग स्थिति का रूप  
 बराबर कर रहा है। इन मूलतत्त्वों के  
 ही सन्तुष्टि के वेक में ही कोई व्यवस्था है  
 या नहीं, पर इन विचार को कदा प्रमाणक  
 है, परन्तु युग के युग के युग में इन  
 पर विचार न करके साक्ष्य वेतों में समाज  
 की उत्पत्ति कागज का मुल लोत लक ही  
 निर्माण लुहे।

पैरों में दुहे जूता पहना कर केथिय प्राण, समिहित, सम्यक्, इत्यादि शब्दों निशे हैं, बहो समाधि गन्ध की उपमावना मिलते हैं— निहितल है उसका प्रयोग बहुत देखने में आता है वह है सत्य उत्पत्ति, इसी की हस्त शक्ति, समाधि आनन्द, एतन्ना प्रादि वस्तु की उपमावना का मूलवर्णन कह सकते हैं। जैवों का प्राण शब्द प्राण प्रवृत्तिवत् समाधि शब्द की उपमावनाओं की विवर्तन मत्को जहाँ है ममपक्ष उतना समाधि शब्द भी वही। प्राण श्रोत्र मनुष्य दोनों वायु शब्द, सत्य श्रोत्र सत्य के समान हैं। सत्यान्तरात् न कदाचित् वृत्ते के सत्य निश्चयितों का मन्त्रोपदेश कहते की प्रावना निहित है, बर्बाद प्राण गन्ध से समुद्र के जलीय व्यक्तियों का पम्पयर समुद्र तूरेको बहलु कलने श्रोत्र उत्पत्ति प्राण का प्रवक् कहते की प्रावना निहित है। मनुष्य को प्राण की भाषा में आना-  
 गन्धत्व (Sach animal) कहा जाता

हैं। बेवो में उसकी लिए शायद-पशु का प्रयोग हुआ है। प्रायः प्रायः पशुओं की लकड़ा एक नही पाया है और शायद-शायद के अनुसार सर्वप्रथम मनुष्य, ध्वज, नील, श्वेत और सफेद के शक्त में प्रकाश है। इन सभी पशुओं की जहाँ एक-दूसरे के साथ मिलकर रहना संभव है, वहाँ प्रायः ही एक-दूसरे के साथ ही मिलकर रहना चाहते हैं। जब तक मिलकर रहने की भावना मनुष्य और पशुओं में है तब तक उस शक्त का नाम शक्ति है। जैसे ही उस भावना की उत्पत्ति मनोवैज्ञानिक मनुष्य में हुई, तो उस समूह का नाम समाज ही गया।

शास्त्र पद्यों के परिचयान्त में हमें यह पद्य पाय है। धन बाध का धर्म मति है, समाज राज्य में भी बहुत धन बाध प्रचलत है। जैसे ही मति में एकटा धार्मिक कि कतिहि समाज बाध निर्मात हुए। उससे धाने ज्यों ही मानी में एकटा धार्मिक समाज में उकागत हुए। उससे उकागत प्रभावत बहुत है कि जब मनुष्य के अस्थितों के मरत भी एक ही बाए। इसी को कहेंगे समज से समाज धन्यता में उकागत हुए। 'धन्यते के अर्थम मूलत में 'दायव दिवता जाता है। 'सम्यक्चर्य' तुम सब मित्रकर बनो, 'धन्यचर्य' तुम सब मित्रकर बाधनीत करो, 'स' को मनाविं जालासु' तुम सब के मन निजे हूत ही। जब तब अस्थितों समाज का पातन उठती है, तब तब वह समज-धन्यता कहजाती है। जैसे ही वह स ब मनाविं ये उकागत हो जाती है, तैसे ही समाज निमित्त हो जाता है। इस प्रकार समाज-निर्मात विवे जहा एक उपाकार, आचार धार एक विचार का होवन धन-व्यय है, बहुत धन तीनों में भी एकटा होनी धान्यवत है।

जरा यह नमः वा विषय है कि वर्तमान सामाजिक शास्त्र-विज्ञान उद्भवानाथों को समुद्रांत विषय है वे उन सभी भावगम्यों को वेदों में ध्वस्त उद्धान जगत् में प्रकट किया गया है वेदों द्वारा जलकट प्रद्वयं होया कि वेदों द्वारा वैदिक मान्यता में समाज शास्त्र का प्रयोग नहीं हुआ है। प्रत्यय विषय चुके हैं कि सामाजिक शास्त्र में ध्वस्त है, जिस को हमें प्राप्त है उस को विद्वत् है, उस कति को किनी ध्वस्त साधन के द्वारा एक कट देने का नाम समज है उषी पाठ को ध्वस्तन के द्वारा एक कट करने का नाम समज है।

वेद और वैदिक साहित्य में भ्रम और भ्रमा शब्द ब्रह्म, जीव और प्रकृति के वाचक हैं। इन की यह सत्ता दो कारणों से है। एक तो निरन्तर वृत्तिशील होने के कारण 'न जायते इति भ्रम'। इन तीनों

में ही तो तत्त्व प्रकट है और प्रकृति जगत् है। प्रकृति को चमत्कार है, उस को चमत्ते वाली संरक्षितायी सत्ता होकर और एकप्रकारियी सत्ता थीनें ही वेदों और धर्मशास्त्रों है। जब यह प्रकृति होकर प्रकृतियी होकर सत्ता वे चमत्कार है। एही ही उस का नाम सम्यक्-अस्यत्ता या सत्य के दर्शन में सम्यक्-अस्यत्ता है। लेकिन जब यह सत्य चीज में प्रकृति जाती है, तो वह प्रकृति को और प्रत्यक्ष का प्रयोग स्वरूपता के करता है, उसे किसी चमत्ते को भी धारणप्रकृतियी ही होती। और प्रकृति सत्ता उत्पन्न होती है। उसे चमत्कार और सामान्यता के सत्य दर्शन है। वेदों को प्रत्यक्ष प्रकृति की प्रत्यक्ष और सामान्यता प्रकृतियी होती, फिर के चमत्ते को चमत्कार ही है, उसे सामान्य प्रकृतियी अस्तित्वों की, वह सामान्य प्रकृतियी अस्तित्वों प्रकृतियी है, जहाँ की अस्तित्वों किसी के द्वारा न चमत्कार प्रकृतियी है। इस का सही प्रकृतियी के अस्तित्व प्रकृतियी है।

नाम नाम्ना ओहवीति पुरा सूर्यापुरोवत् ।  
यवज्ज प्रथमं तद्वृत्तं तत्तत् स्वराज्य-  
मिदं यस्मान्नाम्यत् परमस्ति भूतम् ॥

जिन प्राण नाशनाभी धारण, मिल  
महाना बाजी सारोभी धूध नाश  
उभयार्थ बाजी है पुरा धर्मिणी, प्रज उर  
रुद्र है धार्य्य के होने सौ सूर्य भी  
उग है भी दुर्ब विधानन है, वे सगुण  
गतिविधि, हल है पारय उक्तुष्ट धम्यना  
निष्पन्न हो रहूँ विपारय धम्यना  
भीरु को न धन, हल श्रुता है सुधिर-  
धम्यना की पुरवर्धना है मेकर धम्यना  
स्वराय धम्यना तक का वर्णन है। श्रुति  
हल मून है जिन पारय धम्यना का जनक  
हल कहते हैं। जन-जन मे साराज का  
निर्गल धम्यना जन-जन पारा (श्रुति)  
धम्यना धम्यना है श्रुति, धम्यना  
विपारय राय धम्यना है श्रुति। जैसे-जैसे  
इस धम्यना से उरने का विपारय धम्यना,  
बीर हो बरि प्रजापति धम्यना धम्यना, को  
होते धम्यना धम्यना। (सुगु २३१६)  
इस का हल बौद्ध धम्यना मे धम्यना धम्यना  
धम्यना धम्यना धम्यना मे उरने  
कहते। धम्यना धम्यना रट धम्यना विपारय  
धम्यना है विपारेय राजन हो धम्यना  
कहते। विपारेय राजन हो धम्यना को  
धम्यना धम्यना धम्यना धम्यना धम्यना

विशेषता यह है कि उस संगठन की सभी व्यक्तियाँ स्वयं राजते इति स्वराट् भवन्त्या को प्राप्त हों। यह समिन्नाय है 'स्वराज्य-मिन्नाय' शब्द का ऐसे व्यक्तियों का एक होकर नति करना कि जिस का प्रत्येक व्यक्ति स्वयं राजमान हो, समाज कहलायेगा।

सामाजिक परिवर्तन में 'प्रभावशाली' स्थापित नमों प्रत्यक्षतायामों वृद्धा विकासो' (पृष्ठ ३३, १६) मन्त्रालय में उन दोनों प्रभावशाली का स्पष्ट उल्लेख है। पहली को भ्राम्यामान और दूसरी को विज्ञानमान, पहली का विस्तार राट और दूसरी का विशेषण राजते विराट्, पहली को समग्र और दूसरी को सभा प्रत्यक्ष कहेंगे। भ्राम्यामान से विज्ञानमान और समग्र से सभा में उत्काशित होने के लिए निम्न-निम्न प्रत्यक्षताओं से जाना होगा प्रत्यक्ष कल्पित विकास करना होगा उस का उत्कृष्ट वर्णन प्रत्यक्ष है कि निम्न सूच्य में है—

बिराद् वा इवमथ आसीत्तस्या जाताया  
 सर्वमन्विमेवियमेवेद मविष्यतीति ॥

सौवर्णाजस्ता गार्हपत्ये न्यङ्गामत् ॥  
गृहमेधी गृहपतिर्भवति य एवं वेद ॥

सोऽकाभत्साह्वनीये न्यक्तावत् ॥  
यन्त्यस्य वेषा वेषव्रति प्रियो वेषानां सञ्जति

य एव वेद ॥

यस्य तर्ह्येव बलिणीषो वासते यो मयति य एवं

सोदकामरसा सभायां न्यक्रामत् ॥

सौवक्रामत्सा समितौ ग्यक्रामत् ॥

येनैव ॥

स्यामन्त्रमामन्त्रणीयो नवति य एव वेद ॥

सृष्टि के आरम्भ में सर्वप्रथम विराट्

अवस्था थी, अज अवस्था तो थी, सम्राट्  
अवस्थान थी । अज अवस्था तो थी, परन्तु

समाज व्यवस्था न थी, व्यक्तियाँ थीं, पृथक्-  
पृथक् तो थीं, परन्तु संगठित न थीं, वह भ्रम

भी गतिशील तो थी, परन्तु एक होकर(सं)  
गतिशील (अज) न थे नमाज न थे। सर्व-

प्रथम विराट् अवस्था में उत्क्रांति हुई और दो व्यक्तियों ने परस्पर एक-दूसरे को

(शेष पृष्ठ ५ पर)

## वैदिक कैसेट

पुनः काले सुन्दरकाय द्वाग महर्षि दयानन्द

## का अन्त कहानी

सन्ध्या-यज्ञ, शर्गन्तप्रकरण, स्वस्तिवाचन आदि

प्रसिद्ध भजनोंपदेशकों-

सत्यपाल पायक, आमप्रकाश वमा, पन्नालाल पायूष, साहनसाल  
पण्डित शिवशङ्करजी जी के सर्वोत्तम धन्यवाद के तैयारी तथा

६. ब्रह्मदेव विद्यालङ्कार क भजनो का संग्रह ।

आय नमूना के अन्य भी वस्तु में केसेट्स के सचीपत्र के लिए लिखें।

कन्त्यार्यम इति बटो निस्स (इण्डिया) प्रा लि

14 नार्कट-॥, फम-॥ अश्वर विहार दहली-52

फोन 7118326, 744170 टैलेक्स 31-4623 AKC IN



# महर्षि दयानन्द निर्वान शताब्दी समापन समारोह पर

आर्यसमाज ने आजादी का भव्य महल बनाया है

रामचन्द्र बिाल, ससत् सदस्य



महर्षि दयानन्द धार्मिक सामाजिक एवम् धार्मिक नेता ही नहीं एक महान राजनीतिज्ञ भी थे। उन्होंने कहा था— विदेशी राजा प्रजा के साथ पुनरुत्थ व्यवहार करने वाला भाषा नहीं होता। उनके इन्हीं दो धर्मों ने पराधीन भारत में राज्य प्रतिष्ठित किया। १८५७ की क्रांति की युद्धवासी भी यन्त्र बलानन्द द्वारा ही हुई। १८५७ के प्रथम प्रयासों में। उनका प्रयास ही क्रांतिकारी क्रियामय धर्म ही रूप बना विदेशों में वैठकर क्रांति का सुत्रपात करते रहे। देश के समस्त धर्म बन्धु एवम् धर्म महिमाएँ पुनरुत्थ और ए. ए. की क्रांति एवम् धर्म के धर्म सत्ताएँ धावाही के सत्ता में प्रारम्भित दिन कद १०। एक ही धर्मसत्ता की परिहार ऐसा नहीं है जिसने देश की आजादी के लिए अपना अस्त्र एवम् सत्ताओं में दिया हो। महर्षि दयानन्द के सुयोग्य विषय स्वामी अदानन्द ने स्वतन्त्रता के लिए अस्त्रविषय बड़कर काय किया। जलियावाला बाग के बन्धन काद के बाद कायस समाजस्य प्राय ही गयी थी। स्वामी अदानन्द ने कादिस का पुनर्जीवित किया। अनुसरण कादिस अधिवेशन के स्वागतार्थ्य बनकर एवम् अन्यायपूर्ण कर उन्हांन रोग की बनता म उन्हांन की लहर दोबाई।

विश्वी न बन्ध स्वामी अदानन्द पुनरुत्थ "१००" महर्षि ने कहा उनत मिलने सत्ता प्रेरणा मय प जवाहर लाल नेहरू महात्मा गांधी सत्ता सत्तापन्न बोध बाधा करते थे।

का० लाजपत राय स लकर शहीद ममरसिंह चम्पारन झाडा, रमप्रसाद सिन्धुन खत्री धार्यसमाजी परिवारों की सत्ता भी।

मैं निमकोष होकर कट सकता हूँ यदि महर्षि दयानन्द की उन्हांन प्रस्तावित धार्यसमाज न होता ही देश आजाद न होता। धार्यसमाज के कविगो गायकों ने गीत बना बना कर देश की निराश जनता में आशा का संचार किया।

ऐसादरे हिन्दू यमगो न ही दिन धर्म्य धाने वाले हैं। आजादी का पैसा धर्म्य हम जल्द सुनायें वाले हैं।

महर्षि दयानन्द की कृपा से धर्म समाज ने नवी गिता बानविवाह विधवा विवाह राष्ट्रभाषा हिन्दी का प्रचार स्वदेशी का प्रचार हरिजन उदार सुभाषित निवारण कोई भी ऐसा काय नहीं जो राष्ट्र को मजबूत करने वाला कार्य न हो जो धार्यसमाज ने शुरू न किया हो। बाद में राष्ट्रीय कांग्रेस ने इन्हीं धार्मिक धर्म सामाजिक कार्य को अपनाया।

आजादी मिलने के बाद धार्यसमाज राजनीति से उदासीन हो गया है। धार्य समाज ने आजादी का महल बनाकर दूसरों को सौंर दिया उसमें मान लें न सचे कोई देखने वाला नहीं। धर्म में आह्वान करता हूँ धर्म राजनीति से धर्म। कुछ धार्मिक सत्ताएँ जिन में राजनीतिक चेतना है राष्ट्रीय चेतना नहीं है जिनकी सत्ता देश-देश के धार्यसमाजियों के सुभाषित बन्धु कम है वे धर्मों माय मनवा लेते हैं। और धर्म बुर लगे देखते रहे जाते हैं। जब नभ देश पर धार्मिक बाहरी बन्धु माया धार्यसमाज देश को रक्षा के लिए उन्हांन धाने धावा है। ताजा ज्वलन्त उदाहरण है हमारे धर्मों के मरी इन्दिग की कृपा के बाद देश हिन्दू गया था। धार्यसमाज लक्ष्य की लक्ष्य रामगोपाल गानगवान बघाई के पान हैं उन्हांन राष्ट्रहित न था देश की सत्ता पक्ष के अन्तरे को समर्थन हुए कांग्रेस को धर्मन दिया। यह मनन कांग्रेस की ही नहीं देश की निषट्टकाने सत्ताओं की नभकारने वाली सत्य की आवाज की जो धार्यसमाज की राष्ट्रधर्म की प्रतापी की।

आधुनिक भारत के निर्माता: महर्षि दयानन्द

कृष्णचन्द्र पंत



महामहिम राष्ट्रपति जी धार्य प्रतिनिधि सभा के पदाधिकारी गण, देविगो और सज्जनों। मैं धार्यका धार्यारी हूँ जो मुझे इस अवसर पर पाने कि मैं महर्षि दयानन्द जी को अदाधिनि धर्मित कर सकूँ। धार्य राष्ट्रपति की यह पधार है और सारे भारत की धर्मों में अदाधिनि धर्मित करने का धर्मिकार उन्हीं की है। इसकी मुझे बड़ी प्रमत्ता है कि वे स्वयं पधार है। महर्षि दयानन्द देश के धर्मों के महापुरुषों में से हूँ। हमारा प्राचीन देश है, हमारे धर्म का इसका इतिहास है धर्मिक इतिहास है। इसका हमें गर्व है। इसमें धर्म-धारा दोनों रही हैं। विषय के लक्ष्य ही हम ने देश पराजय का अनुभव भी इस देश की है। जब-जब इतिहास में यह धर्म बक गया, निराश हो गया इन्हीं-धर्मिक धर्म, उस समय में इस के अन्तरे महापुरुष पैदा हुए। इन्हींने हमें नया जीवन दिया है। नई चेतना की है। एन महापुरुषों ने महर्षि दयानन्द जी थे। मैं मनमत्ता हूँ जैसा कि श्री रामगोपाल जी ने कहा कि मैं महर्षि जी के जीवन में बहुत कुछ सबक ले सकते हैं। वे नो सोच दुष्टि और कर्म तीनों के धर्मों में। लेकिन जिन धर्मों का धर्म का धर्म किमना वह धर्म हो है उनको

देखनसि। जैसा कि धर्म उन्हांन १८५७ की धर्मों की यह धर्म सत्य में स्वराज्य की धर्मों और महर्षि जी ने ही की धर्मों इसकी बाद रचना धर्मिक कि १८५७ में जब भारत की जनता निराश हो मुक्ति की उस समय कोई रास्ता दिखाते वाला नहीं था। कई धर्मिक सत्ताओं की हमारी स्वतन्त्रता के लिए एक हुनर है। यह रहे थे। नो जमाना था जिस वक्त स्वामी जी ने एक नया रास्ता दिखाया। मैं धर्ममत्ता हूँ कि बड़ी धर्मिक सत्ता की धर्मिकार रामगोपाल जी ने इसका किया। भारत-धर्मियों के अन्तरे स्वामिनाथ धार्यारी उन्हांन भारत के धर्मिकार का धर्म के भारत धर्मियों पर विचार पैदा किया, उसने धार्यक मिनाथक को धर्म के धर्मों रखा जो धार्य की धर्मियों में धर्म नहीं छाटा उसकी धर्मों का प्रयास करवाया। मैं एक सत्ता सुभाषक थे। नो बनता ऐसा था जब बाल-विवाह अस्त्रिध धर्मों की धर्मों की धर्मिकार धार्यक महर्षि दयानन्द जी ने उठाई। जो धार्य धर्मों से शुरू हुआ और १०० धर्मों में चलता था रहा है, इसमें बहुत ही धर्मों का धार्यक उन्हांन धर्मों जमाने में किया था। बहुत से धर्मों का धर्म धर्म १ पर)



केन्द्रीय शिक्षा मन्त्री श्री कृष्णचन्द्र पंत का स्वागत करते हुए सत्ता प्रदान की धर्मियों की

# आर्य नेताओं के ओजस्वी भाषण एवं श्रद्धाञ्जलियां

## हिमिगिर सा उद्दाम-दयानन्द

श्री स्वामि दयानन्द का शताब्दी पर श्रावहान



फिजी की महापुरुष को कुछ विशा-  
बत् नाम दिया जाता है और उस नाम से  
उसे सम्बोधित करते हैं। जैसे 'कि राम को  
बल्लभ बताओ, कृष्ण को गुरुजीवाला मुझ  
सौमित्र सिद्ध की प्रशंसा में एक नाम दिया  
गया कमल नाम। इसी तरह महर्षि  
दयानन्द को जब कोई नाम दिया जाए  
तो कहा जाएगा 'वेदो वाला'। वेदों पर  
पूरा ज्ञान गई भी, बिस्फी स्थापित हो  
जाती, किन्तु लोग वेदों तक नहीं पहुँच  
सकते हैं। ब्रिटेन महापुरुष धारण, सुभाषित  
वाते हैं वे वेदों। तब मैं भी पहुँच पाये।  
श्रमाज की वशा उल्टी हो गई भी अनेक  
उल्टी उल्टी प्रचारों चरम परी भी। जब  
क्षत्रिय ने वेदों की ओर लौटो का नारा  
दिया तो लोगों की सवा कि कोई उल्टी  
बात कही जा रही है। लेकिन उन्होंने जो  
सुना वह था उसकी उलट दिया, उल्टे  
को उलट बना ही सीमा करना है। समझे  
कोष की क्षत्रिय ने लोका कर दिया, अर्थात्  
के लिए वेद का मार्ग खरक कर दिया।  
इसलिए उन्हें वेदों वाला कहा जाता है।  
जो करा उलटा उलटे ने लिया, जो व्यर्थ  
बना उसे छोड़ दिया।

हिमिगिरि से बना महर्षी है, सारी  
दुनिया महर्षी कहती है। धारा फिजी ने  
हृदिधार में गमा उलट बसी। क्षत्रिय की  
कुटुम्बि बर गयी।

श्री दुनिया के साधने महर्षि दयानन्द  
मनेवा वा और निमेष होकर दुनिया को  
निर्मलता का पाठ पढ़ा गया। उन्होंने कहा  
वा क्षत्रिय न्यायना करती है दो वेदों को  
धाम्यार बनायी। गंवार के समस्त मन्त्र  
खाली हैं दयानन्द धारणी बनके सबैस वेदा  
खाई हैं।

एक बार की बात है एक सज्जन  
धारा-धारा बग रहे वे रात में एक मुला  
की बटे थे। उन्होंने कहा कि क्या बच  
कर रहे हो? उन व्यक्ति ने कहा मैं धरना  
रहू नप रहा। मुला को बोले मैं  
भाषको हूँ के बहिसा नाम बताऊंगा जो  
माम मुझ बप रहे हो वह बहो बाल होता है  
बाद में मेरा बहाना नाम बर होता है।

तुम राम बपते हो राम ने 'म' बाब में है  
म से मुसम्म होना है, तुम मुसम्म बप  
करो। वह व्यक्ति मुला की बात सुन  
बुर हो गया, पर वाब में एक महापुरुष  
वा बोले मैं, मुला जो, मैं भाषको धार  
वाले नाम से भी बहिसा नाम बताऊँ, बहो  
से मुसम्म बप होता है वह नाम बहो  
से शुरू होता है और वही पर बाल  
होता है—दयानन्द। मैं दयानन्द शुरू  
होता है और 'म' पर ही बाल होता है।

दूसरी बात दयानन्द ने देवधर्मित  
दी। धरने को परलमा हो दुस्वरी स्थापना  
महर्षियों को तो राष्ट्रपति से परलमा।  
महर्षियों को परलमा राष्ट्रपति से परलमा।  
सत्पा कोई भी हो, पर वह सत्पा ही  
एकमान हो ही को बर्णिक बाब में,  
पहले राष्ट्रपति है। राष्ट्र पर कही भी  
बोत होती है। तो सीमा इसे ही होती है।  
वेद के विभाजन की बहरीसी बातें जब  
धर्मसमाज सुना है इसका सीमा बर से  
पठता है। हम सब वागित के उराख रहे  
हैं। हम ने जून दिया, मूल किया नहीं।  
हिसा के रास्ते से हम सदा बर रहे हैं, यदि  
धर्म की सत्यता की धारकता पर ही को  
धर्मसमाज दयानन्द का अनेक प्रकट  
कही फिजी से पीछे नहीं रहेगा। कुछ  
होना है यह देखकर कि फिजी सहोने में  
धरने बत से धारावादी के बट दूज को  
सीमा। धारा उन का नाम तक नहीं दिया  
जाता। प० दयानन्द विमिश्र को मुझ  
दिया गया है। मैं नाम करता हूँ, प्रभा-  
नमी को देश को एक रखने के लिए बरि  
कतोर कथम की उलाव रहे तो उलाव  
बाहिर। जनगना के सम्य जाति बनें  
बाहिर को बसल-बसल र रखकर एक स  
से विरोधा बना बाहिर। यी की सीमागति  
धारा राष्ट्रीय पथु बोधित कर बच से  
बनना बाहिर।

दूसरी माग है धार भाषा कोई भी  
पढ़ाये, पर उसकी लिपि बैकनायी होनी  
बाहिर।

धरणी वा उरुं सक्की लिपि देव-  
नायी होनी बाहिर।

## अध्यक्षीय भाषण

समारोह के अध्यक्ष श्री रामगोपाल  
शास्त्रवाल ने धारण भाषण में देश की ख-  
लता प्राप्ति और धरणी राज्य के धरने  
के समर्थ में महर्षि दयानन्द और धर्म-  
समाज की सर्वोपरि भूमिका पर प्रकाश  
झाँसे हुए कहा कि कांग्रेस ने १९४० म  
भारत छोड़ो का नारा दिया था जब कि  
महर्षि ने कांग्रेस के जन-म में १३ वर्ष पूर्व ही  
१९२७ में मान के सर्वजन जनरल ने बेटे  
होने पर मरकारी महापला और सम्पूर्ण  
की रेशकन की की उन्होंने ब्रिटिश राज  
के मुलुख धरने कायों की साम्यता से उप-  
लभ्य मे की भी ठुकराते हुए कहा था कि  
"मैं तो यह चाहता हूँ कि देश धीमे से  
धीरे धिरे धीरे से तुमसे मुझकर स्वाधी-  
नता प्राप्त करे।"

यही शास्त्रवाल ने धरने भाषण में  
हिन्दी की राष्ट्रभाषा का दर्जा दिए जाने  
और भी हूँवा बन्दी के लिए महर्षि की

सर्वोपरि भूमिका की बर्ण करते हुए कहा  
कि महर्षि ने धरने सब धर्म हिंदी में लिखे।  
धरने जीवन काल में हिंदी को राष्ट्रभाषा  
बनाने के लिए कई मेओरेडम भारत ख-  
रकार की भिजवाए। मोहत्या बन्दी के लिए  
हजारों व्यक्तियों के हस्ताक्षरों से मुझ  
महाराजी ब्रिटेनोया की मेरे जान के  
लिए मेओरेडम तैयार कराया। उन्होंने  
नोरडा विषय पर लोकधार्मिक धनुष  
मुलक लिखकर प्रचारित की थी।

श्री शास्त्रवाल ने धर्मसमाज द्वारा  
किए गए कायों एवं प्रयानों पर प्रकाश  
झाँते हुए भारत सरकार में एक बार मुझ  
सम्पूर्ण मोहत्या बन्दी और माय की राष्ट्र  
पथु उद्योगित करने की भी माग की।

उन्होंने महर्षि के धर्मम धरने के  
प्रपत्ति देखा मुर्षि हो का हवाला देते  
हूँ धरणी धर्म धरने सक्की के देसियों  
को उनके छोटे हुए काम को बढाने और  
उन्के बूढ़ कप देने का धाम्यन किया।

## श्री शास्त्रवाल की अपील शक्तिशाली राष्ट्र की कामना थी

धारावी लोकसभा के प्रमुख मे धर्मसमाज के विरोधित सगल मार्बेयिक धर्य  
प्रतिनिधि सभा के प्रभाव को रामगोपाल शास्त्रवाल द्वारा कायेस (धर्य) के समर्थ में  
की सपीन के विरुद्ध मुझ समाचार पत्रों मे धर्मसमाज के कतिपय महापुरुषों के  
विचार प्रकट धारयें गे।

जब कामा मन्त्रित के इमाम बद्रुल्ला बुखारी की धर्मश्रता में धानन्दपुर माहिर  
का प्रस्ताव पारित हुआ, भारत के कई लेखों ने राष्ट्रपति मन्त्रिय सक्किय रूप से  
विरोधी बन के बस पर भारत की एकता की बर्णित करने का काम कर दिया। पार्लि-  
मन्ट द्वारा उदाहरितों को हतने धरम-धरम लिए गए कि स्वर्ण मन्त्रि को पीला  
बन गया, धरम में धरमसम्पन्न हिन्दुओं को बेट्टी में मारा जाता गया। माहोर  
हुवाई धरने पर पार्लियमन्ट द्वारा विमान धरमहोता को पीसली दी गई। मन्त्रियमन्त्र  
के स्वयं राष्ट्रपति जनबोधिबिहारी शास्त्रवाल द्वारा धर्य में भारत को टुकड़-टुकड़े करने  
की धारिय की योग्यता ऐसी रही और मुझ सुकर राष्ट्रिय बर्णिक हस्ताक्षरों की हवा  
की योग्यता बर्णार् गई, उदाहरितों द्वारा विल्ली व प्रभाव मन्त्रियमन्त्र जनता बसा, जन्म  
कायरी ने राष्ट्रिय धरम का धरमना करके पार्लियमन्ट अपना धरमना बसा। जन्म  
कायरी व हो धारमसमाज मन्त्रिय व धारम कया विधायक का उदाहरितों द्वारा जना  
कर बासी बरती की सगति सगता कर दी गई। उस समय उमर म मैं बड़ों को हतने  
बिबद्ध कोनने का महम नहीं हुआ। माता रामगोपाल जी शास्त्रवाल के समर्थ की द्वारा  
पर इन पन्ट विरोधी कारवाइयों के विरुद्ध कोनने पर विरतभासा के समर्थ की द्वारा  
की मालवाले व ही धर्मसमाज स्वामी महापुरुषों साबैवेयिक सभा को जान से मारन का  
बमकी वर किया। उस समय भी मैं धरम मुझ रहे महर्षि राष्ट्रीय एकता व  
धरमश्रता के लिए जियन की साम्यन उठाई की उनसे मे धर्मसमाज को धरने जीवन से  
हाथ धोना पड़ा। धरमसमाज की भीमानी हिन्दुत मायरी नाम की सगतिम लीला  
पडा।

भारत के धरमसमाज राजनीतिक बस जो लोकसभा के मुझ एक बोधार्थी सीटो पर  
धरने दम पर चुनन नहीं बर सके उन दलों की मिनी-मुली मरकर पर धरने देस का  
माय सीपना उर्जित बना। ऐसी स्थिति में कांग्रेस (धर्य) के समर्थ व धरम  
दूसरा विकल्प जनता से सारने नहीं था। मन् ७७ म जनता ने एक बरबर 'रेरोवी  
बत्ती को जनता सरकार बनाने का दिया था जो पुर्नया धरमगत सिद्ध हुआ।

धरम दिन हनुवद लोको के समर्थ में कतिपय धारम बड़ों ने धारमसमाज  
सगल के सर्वोच्च नेता व प्रमुख राष्ट्र प्रमुख की साम्यभास धरमसमाज पर धरम  
धरमोष निकाने का प्रयत्न किया है उनकी बहारी मरगाह है कि वे पठने बच धरम  
धरमर धरमरक देस। महर्षि दयानन्द के विचारों पर जनर करे। सर्वोच्च राष्ट्र व  
धरमसमाज विचार देस। ब्रिक्कान धरमसमाज पर धरमसमाज राजनीतिक दलों की  
स्थिति पर भी विचार करे। यदि भी रामगोपाल शास्त्रवाल की धरमम म देश की  
एकता, धरमश्रता व धरम इस्ते कालियन को बरतार देस हुआ हो या धरम जियन या धर्य  
समाज के धरमोषकारकी विहाहा की सारिया पर धरम धारा हो धरमसमाज के प्रमुख  
करने और धरम के धरम के दिहाहा पर बोट पड़ती हो तो इन दलों के कलन को  
सही माना जा सकता है, धरमसमाज की धरमसमाज द्वारा धरमसमाज राष्ट्र के निर्माण  
का धरम के कायेस के पल में जो सपीन प्रसारित की गई भी उससे देस में धर्मसमाज  
का धरम बर है।

रामजी मेहरा  
रायवी एस्टेटमन्, मोरा, दिल्ली

# श्री महर्षि दयानन्द स्मारक ट्रस्ट टंकारा

३६३६५०

जिला राजकोट (गुजरात)

दिल्ली कार्यालय—आयसमज, मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली-१

रजत जयन्ती विशाल समारोह निमन्त्रण



मान्यवर

सादर नमस्ते

हर वर्ष की भांति इस वर्ष भी १६, १७, १८ फरवरी १९५५, रविवार, रविवार, सोमवार की ऋषि जन्म स्थान टंकारा में ऋषि बोधोत्सव का विशाल समारोह होने जा रहा है। देवदेवान्तर से पचारे धार्मिक विद्वान् तथा कलाकार ऋषिभक्त अपनी श्रद्धाञ्जलि ऋषि के प्रति अर्पित करेंगे। इस बार स्वामी सत्यपति महाराज की अध्यक्षता में महर्षि मेला से पूर्व 'योग शिक्षण परिषद' का भी आयोजन किया गया है, जो कि १० फरवरी में १६ परवरी तक चलेगा। जो महागुरुभाष इस में सम्मिलित होता चाहे। गुरुगुरु उपरोक्त पते पर सूचित करें।

ऋषि मेले पर ध्यास भोजन का पूर्ण प्रबन्ध टंकारा-ट्रस्ट की ओर से होगा।

टंकारा ट्रस्ट के प्राचीन निम्न कार्य चल रहे हैं—

- १ ऋषि जन्म-गृह का प्रबन्ध
- २ अन्तर्राष्ट्रीय उपदेशक विद्यालय
- ३ गो-सर्वधन केन्द्र (विशाल गोशाला)
- ४ दिव्य दयानन्द दर्शन चित्र गृह
- ५ धार्मिक-गृह
- ६ धार्मिक साहित्य प्रचार केन्द्र, पुस्तकालय तथा नार्चनिक वाचनालय।

ऋषि जन्म स्थान टंकारा की कुछ विशेष आवश्यकताएँ भी हैं। पानी की भयकर कमी, ऋषि जन्म गृह के मुख्य भाग का एक सेठ के व्यक्तिगत कब्जे में होना तथा टंकारा की मत्स्याधो का अपेक्षित विकास। ये तीन मुख्य कार्य हैं जो टंकारा स्मारक के पूर्ण विकास में बाधक हैं। टंकारा उत्सव का सफलता, टंकारा की मत्स्याधो का विकास तथा वहाँ के कार्य का कठिनाइयों की दूर करने के लिए टंकारा-ट्रस्ट के अधिकारी तथा ट्रस्टी जनता-जनार्दन के सहयोग से प्रबल प्रयत्न कर रहे हैं।

आप भक्तों की सूचनायें यह भी लिख दें कि टंकारा में वा गोशाला है, उस में ३० गोवं हैं। इस गोशाला से विधायियों को कुछ दूध मिलता है। परन्तु हर वर्ष गोशाला में २५०००/- का घाटा हो जाता है जो कि आप जैसे ऋषिभक्तों और गोभक्तों के दान से ही पूरा होता है।

आप में आग्रह और मनविष्य प्राप्ति है कि इस विषय पर आपका सहयोग का हाथ धरव्य बढ़ाएँ। ऋषि जन्मस्थान ही यदि दशनीय और पूर्णतया विकसित न हुआ तो धार्मिक समाज जसी महान् सत्ता कैसे विश्व में अपना स्थिर ऊँचा कर सकती है।

प्रति वर्ष सहस्रो ऋषिभक्त ऋषि बोधोत्सव पर टंकारा पधारते हैं। उन के आवागमन और भोजन आदि का पूरा प्रबन्ध नि शुल्क टंकारा-ट्रस्ट की ओर से किया जाता है। इस के अतिरिक्त उत्तर भारत के यात्रियों के लिए प्रतिवर्ष ट्रेन तथा स्थान बसों का भी प्रबन्ध किया जाता है। बसों द्वारा आप टंकारा के अतिरिक्त अन्य दर्शनयोग स्थानों को भी देख सकते हैं।

## विनम्र निवेदन

आप में विनम्र निवेदन है कि आप टंकारा धरव्य पचारे और इस सारे कार्य को मुचास रूप से चलाने के लिए अपना धार्मिक सहयोग भी दें। यह राशि आप कास बैंक, कास बैंक ड्राफ्ट अथवा मनीऑर्डर से 'टंकारा सहयोग समिति' के नाम से इस के कार्यालय आयसमाज, मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली-११०००१ के पते पर भिजवा सकते हैं।

आप से साधुरोष प्रार्थना है कि अपनी ओर से अपनी धार्मिक समाज की ओर से, अपनी स्त्री समाज की ओर से, अपनी शिक्षण सत्ताओं की ओर से अधिक से अधिक राशि भेजें।

विशेष सूचना—टंकारा ट्रस्ट को दो जाने वाली राशि कर से मुक्त है।

निवेदक,

श्री स्वामी दयानन्द सरस्वती स्मारक ट्रस्ट-टंकारा  
के अधिकारी तथा ट्रस्टीगण

## आप बधाई के पात्र हैं

२० सारीस को अत्यन्त रूप से दिल्ली नही पृथ पाया, लेकिन टी० बी० पर तथा समाचार पत्रों के धापके समारोह की पूरी जानकारी प्राप्त हो गई। यह धारा कार्य विश्व क्रम और अनुशासन के द्वारा सम्पन्न हुआ, उसका सारा उत्सव शेष केवल अर्पण देना अतिशयोक्ति न होगी, बल्कि आप जैसे कर्मठ, परिश्रमी तथा धार्मिक कार्यकर्ता होने, वहाँ कोई भी बड़े से बड़ा कार्य पूरा किया जा सकता है। टी० बी० के परदे पर मैं विशेष रूप से आपको बूझ रहा हूँ न किन आप ही उस समय भी प्रबन्ध के कार्य में न जाने कहा-कहा भाग-नीब कर रहे होंगे। वास्तव में आप जैसे व्यक्ति जो भवन की नीब के पत्थर की तरह हैं। नीब का पत्थर बनने की पूरी मजदूरी तथा सुरक्षा प्रदान करता है लेकिन हमें वह दिखाई नहीं देता। वास्तव में आपकी यही भावना शुद्ध जैसे साधारण युवक को धारण करने की श्रेयता देता है, इसीलिए मैं समय-समय पर आपसे निम्नकर मार्गदर्शन तथा नवीन योजनाओं के विषय में जानकारी प्राप्त करता हूँ।

आपने शाकटिकीय स्टेडियम में हस्तों वर कार्यक्रम की सहज इत से करा तथा साथ में पुस्तक की प्रकाशित करा वाली, आपकी जो भी प्रसंगा की जाए कम होगी।

—श्री० धर्मिन्द्र शास्त्री

यह पत्र समारोह समिति को एक कार्यकर्ता के लिए नहीं बल्कि उन सभी का प्रतीक पत्र है जिन्होंने नाम की कामना न करके समारोह को सफल बनाने में योग दिया।

## दीप

—रामेश्वर 'हिमाशु'

जग में दयानन्द दीप,  
जो तुमने जला दिया।  
प्रज्ञान-आभिरावित है जला,  
वे दुन्देगा क्या हैं।  
मनो भी भगवान् की भाँति,  
जब को गए वे हूँ।  
विमुक्त प्रपन्ने कब हैं,  
तब ही गए वे हूँ।  
तब बरा पर जान का,  
इक यन्त्र बना दिया।  
उभने फिर 'प्रकाश' का,  
कल्ला बहा दिया।  
शास्त्र में भी बनी हुई,  
मुसामी के पास में।  
स्वच्छी राख बन्धनी—,  
हमें वह पाठ पढा दिया।  
उभने फिर अपने स्वयं का,  
नी राख दिया धाम।

## अमर रहे मणतन हमारा

राजधानी का

हियारि से ये हिंदू बलवि लक  
जा जाए केतना सुधाविह।  
भारत के प्राणन के मारे  
विलसत जो अन्धकार धरित।

पासाणों के मद पर फिर से  
बले समय हो तीव्र बुधारा।  
धरत रहे मणतन हमारा ॥

मानवता के तपस्व विचले—  
हृदय वरा पर हो धारवस्त  
मानवता का धनुषाक्ष सब  
भू का हो पतनी मुख पतल।

वेद ज्ञान की दिव्य मय ने  
धनुत पान करे जग धारा।  
धरत रहे मणतन हमारा ॥

सत्य सनातन धन सुद्विचि  
बेदों का फीले भरती पर।

सम्प सुलक्ष्ण धन सब—

बनुधा के भारी नर नारी  
कुम्भतो विदमयामय का—  
मये भू पर धरितल नारा।  
धरत रहे मणतन हमारा ॥

सुखी तथा समृद्ध भूमी हों  
जुधि मुनिकों के हृदय धनुषाक्षी।  
ज्योतिष्मान करे मानव मन  
विष्णा की कार्य।

बड़ सुख पर नियम होकर  
भारत यह प्राणों से धारा।  
धरत रहे मणतन हमारा ॥

आय विद्यालयों के प्रबन्धकों प्रिंसिपल सहोदयों के नाम

प्रावरयक परिपत्र दूरभाष ३१०१५०

आय विद्या परिपत्र दिल्ली द्वारा प्रत्येक आय विद्यालय कक्षाओं में नैतिक शिक्षा की पुस्तकें लगावाई जाती हैं। उन्हीं के अनुसार पार कक्षाओं की परीक्षाओं का आयोजन भी कराया है।

परिपत्र इस बच नीति प्रवेशिका (कक्षा ५) नीति शिक्षिकाओं (कक्षा ५) नीति ब्राजी (कक्षा १०) नीति विद्यार्थी (कक्षा १२) की परीक्षाएँ सभी विद्यालयों में २५ फरवरी १९८५ सोमवार को आयोजित करनी। परीक्षा काल प्राणकी वेदा से प्रति सत्य निष्ठा का ज्ञान आर्जन। पुस्तकें द्वारा नीति प्रवेशिका में अमर मणतन की सुविधा न हो तो कार्यालय की सुविधा करें। जिनके पास पुस्तक का 'चुकी' है व उनकी सहायता और परिपत्र कार्यालय १५ हनुमान रोड नई दिल्ली में बिजनेस की कृपा कर।

अचलिय

दिल्ली

कानून

आय विद्या परिपत्र दिल्ली

१५ हनुमान रोड नई दिल्ली ११०००१

कुप्याचन्द्र पुन्य  
(१९८५ ई का १०)

विचार है कि वे प्राकृतिक विचारों का  
तिरस्कार करते हैं नही है व  
विज्ञान के औद्योगिकरण प्रादिक पर न  
के। अमर राट की सत्यता को  
"होम" पहले समझा राज सत्यता  
इस बात की है कि हम नव-उत्तरा। प्रा-  
न करें बलिष्ठ देश की एकता धरत त  
स्वाभिमन्यु के लि दे चरित्र है।  
नवयुवकों में धाम एक काय प्रण ला को  
पैदा करें व सारे धारा की जिहें ह—

सामने महिष ने रखा है उनको धाज  
हमने अपने चरित्र म डालकर साधक  
बनाया है। महिष ने सम्पक धारा के रूप  
में हिंदी के महिष को समझकर उसे सीधा  
और धरनाया और बाह में उसे राष्ट्र-  
धारा के रूप में प्रचारित किया महिष  
दयानन्द प्राकृतिक नायक के निमिताओं  
में प्रमुख थे।

आज इस भारत की धराधरता के  
लिए हमें यदि बलिष्ठता का बना पर तो  
हम जीवें न रहे।

## दंतों की हर बीमारी का घरेलू इलाज



23 जड़ी कुटियों से निर्मित  
आयुर्वेदिक औषधि

दाहों का हारकर



अम नये देखिय  
मे उपलब्ध

२१ सुन

महाशिव जी हृन् प्रो. लि.

9.44 बरकटियल टिक कील जग गिरी कास 638009 537867 53734



मसूरी की लाल



की द १



५



दाह का दान

गोतिका

राजनिवास विद्यालय

- परमेश के गुण गाते बसो।
- मदमधारा बहाने बसो ॥
- राहों में धार जो धवरोध बन।
- कठसुख मन से हटाने बसो।
- धामल्य बढता को निमत कर।
- पुष्पाध मे जयमगाते बसो।
- तज धुध धनुषार दुर्गमना।
- सुधुषार निज मन बनाते बसो ॥
- ईश्वर के वत मे ब्रती भक्त बन।
- सुध धाम सब को बनाते बसो ॥

## उत्तमता का एक मात्र विश्वास



Grover's

Paris Beauty

पेरिस न्यूटी

ग्रावर  
सन्स

ब्रा पैंन्टी बनियान अन्डरवियर व बेबी पैंन्टी आदि



पेरिस न्यूटी सेल्स कापेरेशन

2665 ए/२ बीकनपुर अजयल स्यान्स  
करोल बाग नई दिल्ली ११०००५  
दूरभाष 562224 574200 582036





## आर्यसमाज ढाकनेर दिल्ली में बृहद् यज्ञ एवं वैदिक धर्म प्रचार

दिल्ली भाय प्रतिष्ठित सभा के उच्चाधिकारन में भायसमाज मन्दिर ढाकनेर में १३ जनवरी से २० जनवरी तक महर्षि दयानन्द विद्या ढाहरी हस्तेवास के साथ मनाई गद्। प्रतिष्ठित प्रातः ६ बजे से ११ बजे तक बृहद् यज्ञ हुआ। यज्ञ के बड़ा पुण्य स्थान ब्रह्मदान ६ आ व विरसम निनासित यज्ञमार्गे से सैंकड़ो भयभीती बड़ापुण्यो सहित भाय। तथा सबकी गौरवमय भाय जात्रप्रकाश बाजू उदयविह, मेहरसाज पवार ५० मुनीसाल जितविह भाय, रिहासवार ज्योतिह भायप्रकाश गुप्त मुक्याभायक पुस्तिक ह्वाविह बना। यज्ञ के पश्चात महर्षि दयानन्द सरस्वती के जीवन तथा भाय विद्याओं पर कथावाचन भा मेहरसाज पवार द्वारा कथा हुई।

१३ जनवरी को दिल्ली देहात की भायसमाजों के पदाधिकारियों तथा सुप्रसिद्ध मन्त्रा सेना एवं कायकलाभा न भाय लिया। बृहद् यज्ञ के पञ्च न बड़ाजित सभा में मन्त्रा भायानन्द जा सरस्वती का भायत्वा एवं प्रत्याभायक भायन सुने के लिए प्राणीय युक्ता एवं १० भारधीन प्रबुद्ध भायका का भावर उमरपडा। दो हजार से भा भायिक ह्द विद्या जनसुहृ को सम्भाषित करते हुए स्वाभा भायानन्द की महाराज ने ह्दियाभा दोर दिल्ली देहात में भायसमाज के काय का प्रभायकारी यजन क्षेपुष्ट किया। प्रथम बार ऐसे विद्यान सत्यन में भाए गहुर से एम० एम० पाठ सम्भायको की ताचितनवारा हा वजन बद्। प्राणीय बन्धुओं न भी भायन भायनय के मुख स्वरूप को पहचानत हुए सभाय पर यजन की प्रिया भी। प्रयजन के पश्चात् दिल्ली देहात के भायसमाज के कायकलाभा का बैठक दिल्ली देहात के प्रभाय मन्त्र का भायनयन जा की सम्पत्तता न हुई। ह्दम प्रायो में भायसमाजों की स्वाभाय एम्ह हुताभा मन्त्रय विद्या भाय प्रतिष्ठित सभा के साथ कराने जा विरचय किया गया। भा सत्यनय भाय ने सुपुत्र भायसमाजों में नवजीवन लाते के लिए कटिबद्ध होने का भायानत किया। भा मेहरसाज पवारने सभा भायनुक्तों का भायार प्रयजन किया।

## महर्षि दयानन्द निर्वाण शती

एव

मानव जागृनि सप्ताह

दिल्ली भायसमाज भाय गुरा (पायस्वरूप हात) कम्मी नजी, दिल्ली-७ ने १३ जनवरी ८५ से २० जनवरी ८५ तक कमी पुनर्भाय से सभाय गया। विद्य के निरप्रतिष्ठि प्रातः की ५० मन्त्रप्राय शास्त्री की सम्पत्तता में सभायवी यज्ञ, विद्य के वैष्णवी, निरप्रतिष्ठि शास्त्री ने। प्रातः ७-१० बजे से महायज् मुनीसाल जा एम० रामवीर जी के सुपुत्र मन्त्र होते रहे। श्री गैरमन्त्र बीरवी जी द्वारा देवकथा के रूप में भायन भायुनि के लिए देवमन्त्रों की मन्त्राया करते रहे। २० जनवरी को विद्येन उच्चात के साम महायज् की पुर्णविह में सहस्रो भायि भायिगिहत हुए।

कम्मी

आर्यसमाज भायपुरा

कम्मी नजी, दिल्ली-७

## कन्या गुरुकुल हाथरस

भायरा निवासी श्री बी० त्रिलोक सिंह जी, बी० भाय रेवेन्यू के पूर्व सदस्य ने छात्रवृत्ति की स्थानीय निधि के लिए ह्द ह्जार रुपये दान दिये हैं। भायरा निवासी श्री विष्णुदेव पोहार एडवोकेट के कन्या गुरुकुल में प्रतिष्ठित होने वाले यज्ञ के निर १०० रुपये भायिक देने का सुन सङ्कल्प लिया है।

भावश्यकता है—

कन्या गुरुकुल के लिए भायकाय प्राप्त चिकित्सक दोर अनुभावी नर्स की भायश्यकत है। साथ ही भाय निचाहरी की ऐसी महिलाओं की भायश्यकता है जा छात्र कन्याओं की देखभाल कर सकें।

गुप्ताधिष्ठात्री

कन्या गुरुकुल महाविद्यालय

विज्ञापन सूचना

भायसमाज सुधियाना रोड, किराजपुर छावनी के लिए गोष्प पुरोहित पाहुर। अपनी योग्यता अनुभव दोर सत्कारादि कवनि में दस्ता सम्मन्वी विवरण भेजे। पत्र व्यवहार मनी, भायसमाज मन्दिर, सुधियाना रोड, किराजपुर छावनी, (निवास स्थान न बिजली प्रादि की सुविधा नि शुल्क होगी)।

## शास्त्रार्थ संग्रह

भायसमाज के इतिहास में भाय तक जितने भी शास्त्रार्थ हुए हैं, उन सब का एक संग्रह श्री स्वामी भामर स्वामी की प्रकाशित कर रहे हैं। दस्त भाय सब से प्राचीन है, यदि भाय के पाठ शास्त्रार्थ विवरण सामग्री हो तो कुपया रजिस्ट्री द्वारा २५ फरवरी तक बिजाने का कष्ट कर। पुस्तक भाय के भाय पुस्तक के उपहार सहित तथा भाय के सहयोग का उल्लेख करते हुए भाय की सामग्री सादर बिजवा दी जायेगी।

पता—भामर स्वामी प्रकाशय विद्याय

३/३६, दशानन्द नगर,  
गायियाबाद (उ० प्र०)

प्रबन्धक

शास्त्रार्थ संग्रह प्रकाशन समिति

देशान्तर प्रचार के लिए प्रचारको की भायश्यकता

सांख्यिक भाय प्रतिष्ठित सभा ने देशान्तर प्रचार पर विशेष भाय देने का निश्चय किया है। निम्नले सौ करो के दीपय विरच के एतेक देवो में भायसमाज का लक्ष्य पहुँचा। मोरिचर, इटिह भायका दोर निचितर जैसे देवो में यज्ञ एक प्रमुख भायि के रूप में उभरा। विरच के निर देवो में दस्त एक भायसमाज का यजन भायन हो चुका है। उसका येव कुञ्ज भायितो की स्वत मेरवा दोर भायरा से यज्ञ विद्या प्रचारको की कठिन साधना की है। भायसमाज में दस्त देवो में वैदिक यज्ञ के प्रचार के साथ ही सामाजिक कानि के भायोलन दोर रायनसिच मेरवा यज्ञने में भी प्रमुख मुनिका भवा की। पर दस्त देवो अनुभव हो रहा है कि वैदिक प्रचार नर होना का रहा है, स्मोकि विरच स्तर पर पठित प्रचार की कमी रही। प्रवी तक विरच के बहुत सीमित यज्ञ ने ही भायसमाज का प्रचार हो गया है, इसे विरचभायी कानि की भायसफला है ताकि विरच भायवता का काना हो सके। दस्तए ह्द ऐसे महाराजों की जानकारी प्राय करना, पाहले ही बीरसायन प्रचार के काय में भायना समय देने को उत्तर दें।

इच्छुक महाराजों ने निवेदन है कि वे दस्त विरचि के रूप में दस्त में यज्ञ व्यवहार करने का कष्ट करें। यज्ञने यन्त्रोत्तर में वे यज्ञी भायु, वैदिक भायवता, भायका का भाय, भायसमाज से सम्बन्ध, प्रचार काय का अनुभव, प्रकाशनी की सूची एम्ह कान्य भायसक कानकारियों का विवरण देने का कष्ट करें। यज्ञनी भाय का भायका भाय भायवता है। भायत यज्ञना देशान्तर के सीय ऐसे प्रमुख भायों का नाम दोर दस्त की कानि, जो भायके कानि के निरच में कमी-भायि कानि हो। दस्त की सूचित करने का कष्ट करें कि वे बिजना समय दस्त काय में से काने हैं। यज्ञी महाराजों को अपने प्रथम पत्र में ही दस्त विरच के देना योग्य होना। भायरा है कि देशान्तर प्रचार में सहयोग प्रदान करते हेतु दस्त भगना अनुभव लयव भी भाय करे। कन्याय,

पञ्चवी

जा० भायनय कन्याय

उपनी सभा दस्त

एनोचक-विद्य प्रचार उपसमिति

## आर्यसमाज दीवान हाल में यज्ञ और वेद प्रचार



आर्यसमाज दीवान हाल में महर्षि ब्रह्मानंद गिरिधर शास्त्री के उपस्थित में आयोजित यज्ञ एवम् वेदप्रचार समारोह शुभक सम्पन्न हुई। इस अवसर पर प्राप्त काष्ठ ३ बी० ५० राजगड का धार्यसत्ता में बी० ५० यशपाल सुभाष एवम् ५० सुरेंद्र कुमार गुप्ता के द्वारा सम्पन्न हुआ। रात्रि में बी० ५० राजगड के आर्यस्त्री प्रवचन हुए। बिचसे एक धाम नर नारी जीवन का लिताग्रद पिशाचों द्वारा प्रभावित हुए।

१३ जनवरी यज्ञ में भारतीय लोक स न के साक्षर आ जयप्रकाश ब्रह्मचारी ने यज्ञ में भागलित प्रदान का।

मन्त्री

मूलचक्र गुप्त

आर्यसमाज दीवान हाल दिल्ली

### स्मारिका प्राप्त के लिए ध्यान द

जिन धाम लवेध के प्राहकों को स्मारिका नहीं मिली व १७ फरवरी धिच जिन को फिरोजपुराह कोठवा मंदान में खना कार्यालय से या १६ हनुमान रोड से अपनी प्राहक सत्ता बिनाकार कभी भी से सकेते हैं।

—सम्पादक

## आर्यसमाज तीमारपुर, दिल्ली में शताब्दी समारोह पर यज्ञ तथा वेद प्रवचन

१३ जनवरी २० से जनवरी तक प्राप्त यज्ञ एवं साधकात् प्रवचन बी० ५० विवेक चन्द्र पाराशर के द्वारा सम्पन्न हुए। श्री तुलसीराम बी० की नवन मन्त्री द्वारा मधुर प्रवचन हुए। भारी जनसमूह ने इस अवसर पर वरपाय एव मधुर मन्त्री द्वारा धम लाभ उठाया।

राजेश्वर शाह

प्रधान

आर्यसमाज तीमारपुर दिल्ली

### ईसाई युवती की शुद्धि विवाह

६ १२-८४ को आर्यसमाज मन्दिर अटल कैलाश २ में कुमारी उषा श्री की उनकी इच्छानुसार शुद्धि करके वैदिक (हिन्दू) धर्म में लेकर नाम उषा रसकर श्री चेतन सोनी से विवाह कराया गया वर बन्धु दोनों पक्षों ने नव-वन्द्यता का आशीर्वाद दिया।

रघुनन्दन गुप्त

यज्ञी आर्यसमाज

अटल कैलाश II नई दिल्ली ५८

### प्रयाग निकेतन, जवाहर नगर में महायज्ञ

पूर्णहृति रविवार १० जनवरी को ११ ३० बजे होगी

स्व० स्वामी प्रभु धार्षिण्य की महाराज के ६८८० जन्म दिवस के उपलक्ष्य में धार्षिण्य यज्ञ के आयोजन हैं मुख्य महाराज आर्यभट्ट। स्वामी दीक्षानन्द महाराज बलदेव ५० राजप्रसाद बेदानकार श्री यन्त्रीराज शास्त्री श्री नरेश ब्रह्मचारी धार्षिण्य विद्वानों के बीचनीययोगी विचार भी सुनने को मिलेंगे।

आदि सपर—१२ बजे आदि सपर का धार्षिण्य है। भारी सत्ता में पधारकर धम लाभ उठाये।

निबन्धक

प्रतिगोपी परिवार

प्रयाग निकेतन

३१ नू० बी० जवाहर नगर दिल्ली ११०००७

### आर्यसमाज कृष्णनगर में ऋग्वेद परायण यज्ञ एवं स्वागत

आर्यसमाज मन्दिर कृष्ण नगर दिल्ली ५१ में १७ १२-८४ से १२ १२-८४ तक स कीय कर प्रतिनिधि सभा बनानागर के तत्वावधान में ऋग्वेद परायण यज्ञ महर्षि ब्रह्मचारी बलदेव गताम्नी सत्तारोह के रूप में सत्ताय गया। जिनमें श्री प्रोम प्रकाश श्री शास्त्री सतीश शाली के प्रवचन एवं ५० साधक वी सत्तक के प्रवचन हुए। धार्षिण्य दिन २२ १२ ४ को मास्टर धीमदकाश जी धार्य श्रीमती उषा शास्त्री के का प्रवचन हुए। आला रामचोपाध शास्त्र बाने का साधकविश्व धार्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान बने जान पर वि० की प्रतिनिधि सभा के प्रधान भी सूरदेव बी के तत्वावधान में स्वागत किया गया पूर्णहृति प्रवचनों सभने एवम् प्रमिन न क प सात आदि सपर भी किया गया।

जयदीनशाह भाटिया

आर्यसमाज मन्दिर

कृष्ण नगर दिल्ली ५१

बी रामचोपाध शास्त्रबाने का स्वागत करते हुए आर्यसमाज कृष्णनगर के प्रधान भी डा० जगन द।

**केवल 800/- में केवल**

**सत्य के प्रचारार्थ**

**केवल 400/- में केवल**

**मृत्यार्थ प्रकाश**

घर घर पहुँचाये

सफेद कागज सुन्दर छपाई

शुद्ध संस्करण वितरण करने वालों के

आकस (28-30 16 पूछ ४४२ की दर) लिए प्रचारार्थ

आकस (23-36-16 पूछ ४२० की दर)

**आर्यसाहित्य प्रचार ट्रस्ट**

५५५ पंजीय बाजनी, दिल्ली-६ दूरभाष- 23६३६०/233112

30 के संस्करण से उपरोक्त मूल्य देय होगा।







इन्द्र वर्धन्तो अमृतं कृण्वन्तो विश्वमार्यम् । अग्रजान्तो अराक्षणः ।

ॐ ६ । ६२ । ५

पदार्थ—(इन्द्र) परमेश्वर का (वशन्त) पुत्रपान करने हुए (अमृत) कर्मों को करने हुए (विश्वम्) आर्य हज्जन्तो विश्व को भेंट करते हुए (अग्रज्य अग्रजन्त) अग्रजति भावना तथा हज्जर्णों को दूर करने वाले बने।

#### गीतिका

पदार्थ के गुण गाते बने।  
सदमैजारा बहते बने॥  
राहों में आए जो धरोवर बन।  
कणुसपन मन से हटाते बने॥  
धालस्य बज्जता की निर्मूल कर।  
पुष्पाय से जगमगाते बने॥  
तब सुद अमृतदार दुमिका।  
समुदाय निज मन बनाते बने॥  
ईश्वर के वत में पत्नी मत्त बन।  
गुप्त धार्य सब को बनाते बने॥

उपास्य गायता नर पवमानार्यन्दव । अग्निदेवा इयच्छते ।

आम वसराणि ११।१।

पदार्थ—(नर) है उपासक नेता जनों (वस्य) वस परदास्यवेने के लिए (वेदान्) अग्नि हवस्य) दिव्य गुणों के सह करने के लिए अमृत रूप सब (हवसे पवमानाय) आह्लास्य पवनकर्ता प्रवाह रूप प्रायः प्रभु के लिए (उर) उपासना करने (गायत) स्तुति गाता करो ।

#### गीतिका

आग्ने ब्रह्म के अग्निवाणी नर ईश्वर का गुण गायन कर।  
करत मनुष्यपुत्र पावन का नर अमृतकर का गुण गायन कर॥  
पावन करने बाबा हैं जो जगसे जीवन मन कर पावन॥  
पवमान होय रक्ष सागर का आराधन का अनुपासन कर॥  
तु दिव्य गुणों को सत्य किये आसिद्धि अमृत रूप अमृत होकर॥  
आह्लास्य कान्त प्रवासा परम सर्वेश्वर का स्तुति गावन कर॥  
देवी का सगवतर्हो जो बा देवी सम्पत्तिता है॥  
इस परम सतीने प्यारे का गुण गावन का अमृतगावन कर॥  
तु कल्याण मरण से आभावे दे दे दे ईश्वर को आना प्यारे॥  
आनन्द कद अचिन्तानन्द कल्याण का गुण गायन कर॥

अन्वा अग्निना भवत शीर्षाणोऽह्य इव ।

तेषां को अग्निनुत्पन्नाभिन्ने हन्तु वर वरम् ॥

आम उत्तराणि २२ । ६ । १

पदार्थ—(अग्निना) है वस्त्रही जल (अन्वा) अमृत) कर्मों को। (शीर्षाण) शिर उच्छिष्ट, मुर्ध गलितकर्महीन (अह्य) वर) अमृत (मरण) हो। (तेषां को अग्निनुत्पन्नाभिन्ने) हन्तु अमृतानाम्) हन्तु अमृतानाम् द्वारा परे पवन किए जायों। (वर वरम् इव) अमृत को पुन-पुनकर परमेश्वर वरें।

जो प्यार नहीं करते जो हैं मदाना प्राणी॥  
आपों के होते भी आने हैं अग्निना॥  
हैं नहीं दूर अन्ता को स्वार्थ अन्त-देवी॥  
मलिनक होय हैं वे अग्निदेवी अग्निना॥  
शिर फिरे शेष-विष से अग्निपुत्र इतने बाल॥  
बुध भी उस से बलने की करते आधाना॥  
आमानि जन्म पुन पुनकर बाहुर कर देवे॥  
अमामुल रख पी से दुमिका आनी आनी॥  
कर स्नेह सभी पी से वही बुझायी॥  
जन् स्नेह तुम्हारा कर सत्य विवराणी॥

अग्नौ अग्निदेवी अग्निपुत्र आगो भवन्तु पीतये ।

आगो रश्मि जलानु नः ॥

पञ्च १५ । १२

पदार्थ—(देवी आगो) अग्नि प्रकाशक सर्व व्यापक प्रभु (न अग्निपुत्र पीतये) अग्निपुत्र ह्ये अग्निपुत्र आगस्य रश्मि पाव के लिए कल्याणकारी हो। (न अगो रश्मि जलानु) हमारे लिए तुम्हें सब की सर्व वृष्टि करे।

वही अग्नि है तुम से आरम्भार॥  
आग वृष्टि कर तुम्हें वृष्टि कर कल्याण अमृतार॥  
हैं वन की अग्निना आने नवीन वन आने॥  
व्यापक विश्व आने आने आग्नि वृष्टि बरसाने आने॥  
दिव्य व्यापक कल्याणी आग अग्नि अग्नि आ॥  
हैं आगस्य कल्याणकारी मेरे प्रभु है अग्नि-वस्त्राणी॥  
कल्याण वन है विश्व अग्निवाणी हृद जीवन अमृत देव्य अग्निवाणी॥  
कर अग्निदेवी अग्नि आग अग्नि आग्नि अग्नि आ॥  
अग्निवाणी अग्नि आग अग्नि आग्नि अग्नि आ॥  
आग अग्नि अग्नि आग अग्नि आग्नि अग्नि आ॥  
हैं आगस्य अग्नि अग्नि अग्नि अग्नि अग्नि आ॥

आग्निवाणी अग्नि—आग्निवाणी अग्नि  
अग्निवाणी, अग्निवाणी, अग्निवाणी

## आर्य पर्व सूची (१९८५)

साप्ताहिक आर्य प्रतिनिधि सभा आयमनाओं की सूचना के लिए स्वीकृत आर्य पर्वों की सूची प्रकाशित किया करती है ।

अनु १९८५ की सूची इस प्रकार है—

सं०	पर्व	शीर्षाणि	आर्यवर्ष	अग्निपुत्र अग्निदेवी	दिन
१	मकर संक्रांति	१ मार्च २०४१	मार्चवर्ष २०४१	१४-१-१९८५	सोमवार
२	वसन्त पञ्चमी	१२ मार्च २०४१	फाल्गु ५, २०४१	२४-१-१९८५	शनिवार
३	सीताष्टमी	१ फाल्गु २०४१	फाल्गु ५, २०४१	१२-२-१९८५	मंगलवार
४	दशम्या नौमिदादि	६ फाल्गु २०४१	फाल्गु ५, १३, २०४१	१७-२-१९८५	रविवार
५	श्रीर नैमिदादि	११ फाल्गु २०४१	फाल्गु ५, १३, २०४१	२२-२-१९८५	शुक्रवार
६	नवम्याष्टमी (होली)	२४ फाल्गु २०४१	फाल्गु ५, १३, २०४१	६-३-१९८५	शुक्रवार
७	नव अमृतस्य	६ मार्च २०४१	मार्च ५, १३, २०४१	२२-३-१९८५	शुक्रवार
८	आम समाज स्थापना दिवस	१७ मार्च २०४१	मार्च ५, १३, २०४१	३०-३-१९८५	शनिवार
९	हरे पूर्णिमा	३४ मार्च २०४१	आम ५, १३, २०४१	२०-४-१९८५	शनिवार
१०	आर्या उपान्त	१४ अप्रैल २०४१	आम ५, १३, २०४१	३०-४-१९८५	शुक्रवार
११	श्रीर अमृत	२२ अप्रैल २०४१	आम ५, १३, २०४१	७-५-१९८५	शनिवार
१२	गुरु विजयानन्द दिवस	२३ अप्रैल २०४१	आम ५, १३, २०४१	८-५-१९८५	शुक्रवार
१३	निजय रात्री	६ मई २०४१	आम ५, १३, २०४१	२२-५-१९८५	मंगलवार
१४	महर्षि निजय दिवस (सीपावली)	२७ मई २०४१	मई ५, १३, २०४१	१२-६-१९८५	मंगलवार
१५	अमृतानन्द दिवस	८ जून २०४१	अमृतानन्द १२ २०४१	२३-६-१९८५	सोमवार

टीप्पणी—१ इन्द्र पर्व के अग्रज और वैदिक सत्त्विक के अग्रज का महान् शासन बनाया आह्लास्य ।

२ देवी तिथियों के पठन जाने से अग्निदेवी रात्री में परिवर्तन हो सकता है ।

## लघु कथा (अन्व)

### आवश्यकता

आगे की मेज पर पूरे परिवार ने  
आप बैठे टिप्पणी बाजू सटकाया है  
अपने चेहरे से कहा "बेटा, मैं सोचता हूँ  
बड़े के पास लिखी यह बात ।"

"बाजू की पास ठीक ही सोच रहे हैं  
किन्तु आपने बड़े जाने से कहा बड़ी सब  
ठीक ही जायेगी ।"

"मैं, आगे मेरे जाने से ?"

हा बाजू की अपनी नीकर भी तो  
छुड़ी पर गया है, हूँ, राधा, सच्ची, वे  
सब जाने के लिए घर में कोई तो होना  
चाहिए, बड़े ने अपनी दिवसों बिना  
दी ।

"हा बाजू की, मनु ठीक कह रही है,  
देवी और पिछू की परीक्षा ही इसी माह  
में है, मैं वोनी ही हिलाव में कमजोर है,  
आप देख लेंगे तो "

बाजू सटकाया कि बहक का प  
आगे की आया—"मैं एक माह के लिए  
घर से बा रहा हूँ, आप बा बाजी तो घर  
छुड़ीय हो जाने ?" बाजू की का मन  
लिखित उठा और बड़े अचानक ही उठ  
गये ।

मोमप्रकाश लखौ  
कथा मन्त्री

१७/५/२३३ मनीन नगर, कायपुर

## सम्पादकीय

## घटना और बोध

बहु १२३६ की महाशिवरात्रि को जब एक छोटी-सी घटना ने बालक ब्रह्मचर के जीवन में महान् क्रांति कर दी। धीरे-से सच्चे शिव की लोभ में एक दिन घर से निकल पड़े। घटनाएं अपने आप में छोटी या बड़ी नहीं होती। उनके परिणाम से ही उनको छोटा या बड़ा कहा जाता है। हमारे जीवन में इतस्ततः अनेक घटनाएं घटित होती रहती हैं परन्तु उनका प्रभाव हमारे जीवन में क्रांति नहीं कर पाता। इसलिए उनका घटित होना इतना भी महत्वपूर्ण नहीं। प्रत्येक घटना एक शिक्षा है, बही भी होती है। जेम्स वाट को कैतली के डबकन को भाप से उठते गिरते देख चमत्कारिक अनुमान हुआ कि भाप में प्लम्बिक घातित होती है। यही व्यक्ति भाप के डबकन का आविष्कारक महान् वैज्ञानिक बना। न्यूटन की बाग में पेड़ से टूटकर गिरते सेब की देख यह कीर्तुलभ जगत्, फल लीचे ही क्यों गिरा? ऊपर क्यों नहीं गया? वे घटती की मुख्य श्रावण शक्ति के सम्यक् हुए। इसी सिद्धांत पर अनेक विज्ञान के साधकानी चमत्कार उन्हीने जगत् को दिए। समर्थ गुरु रामदास की पवित्र द्वारा "साधनान्" कहने मात्र से वैराग्यविषय की गथा में।

मूलशक्ति एक घटना से ही सच्चे शिव की लोभ में गृहत्याग कर जले धीरे-से महर्षि दयानन्द के नाम से विश्व विख्यात हुए। बहुत धीरे-साचा की मृत्यु उनके वैराग्य का कारण बना। महाराज बुद्ध भी सब को देखकर ही उसारी को चमत्कार से विनम्र होकर महान् त्याग मन को चल पड़े थे। पर महाराज बुद्ध के वैराग्य ने कर्तव्य विमुक्तता अधिक की।

महर्षि दयानन्द को एक ही बार बोध हुआ, ऐसा नहीं कहा जाना चाहिए, अनेक बार जीवन के घटना क्रमों ने उन्हें बोध कराया।

योगी श्वरिण राज समाधि के प्रानन्द मन, एक पीकार से हिल उठते हैं। विषया मा अपने बच्चे को लास की नदी में बहा उस पर लिपटा बोधवा भी अपनी लाज को आपने के लिए उतारकर चली जा रही है। धीरे अपनी गरीबी बतली पर पीकार कर रही है। उस कारणीक रूप से महर्षि को प्रारत की दीन दशा और गुलामी का महसूस करपा। धाको से विहीन बुद्धिब्रजानन्द ने भी स्वामी दयानन्द को ज्ञान, विज्ञान धीरे-से, समाज के प्रति कर्तव्य बोध कराया।

महर्षि दयानन्द ने सच्चे शिव की उपासना का ससार को बोध दिया। महर्षि दयानन्द को एक मनुष्य से लेकर समाज धीरे-से लेकर विश्व तक को मूल मूल समस्या एवं विषयता के विनाफ सशक्त शान्दोलन श्राव्यसमाज कट दिया बोध है। इसीलिए तो इन महापुरुषों ने कहा था— 'सगति कार्य दुवता, उल्लाह धीरे समन्वयताकता की दुष्ट से श्राव्यसमाज की समता कोई समाज नहीं कर सकता।

—सुभाषचन्द्र बोध

जहा जहा श्राव्यसमाज है वहा-जहा जीवन-अपीति है।

—सहायता पायी

श्राव्यसमाज एक वास्तविकता है जिस से जनसाधारण का श्राव्य-जनक उत्पान हुआ है।

इतिहासकार सुभाष सरकार

श्राव्यसमाज दिशाबोध है परन्तु व्यक्ति से ही समाज बनता है मात्र श्राव्यसमाज है व्यक्ति-अभित से वचारिक क्रांति एवं दिशा बोध की। जो प्रत्येक दयानन्द भक्त धीरे वैदिक धर्मों को पूर्ण करना है। जीवन के प्रत्येक पटकामक्रम से हमें बोध ग्रहण कर सकते हैं।

—सहायता सुभाष

## आरक्षण की नीति पक्षपात का योतक

भारत सरकार के द्वारा चलायी गयी भारक्षण नीति बहुत ही अवलोकन है। कुछ वर्ष या बाद विशेष के आधार पर वेदभाव करते हुए कम योग्यता वाले व्यक्ति को अधिक योग्यता वाले व्यक्ति के सामने भीतर की परख लेने वाली तथा-कीवत भारक्षण नीति प्रतिभा के सामने धीरे राष्ट्रीय उन्नति के सामने घाव घाती है। एक इन्वीजिमेंट यदि कम योग्यतावाला, केवल जाति के आधार पर किसी बाध का पुन बनाये, कारखाना निर्माण के कार्य पर बनाया जाने धीरे योग्य व्यक्ति की उपेक्षा की जाने यह देश के साथ विश्वासघात होगा। देश व्यक्ति के द्वारा बनाया गया बाध, यह कितने विनात कर भेजा? कारखाना क्या उन्नति करेगा? कम योग्यता का भारकटिने योग्यता का भाररेखन कर प्राप्त सेवा? इस पर विचार दिया जाना चाहिए। यदि योग्यता अधिक पीछा बन के रूप में विचार की भारक्षण की नीति का समर्थन करते हैं तो यह इस प्रकार होगा चाहिए जो पिछड़ा वर्ग अग्रगण्य वर्ग है उनको सिद्धिक शिक्षा, पुस्तक, विभिन्न सुविधा उपलब्ध करायी जानी चाहिए। योग्यता में किसी प्रकार का वेदभाव नहीं किया जाना चाहिए इस नीति से उचित सुचोचन किया जाये।

समर्पित ज्ञान्ती

श्राव्यसमाज कायकारणी

कुलपति सम्मेलन गुरुकुल कायको विनविद्यालय को सत्सुतिगत

## आरक्षण आवश्यक है—

१६ जनवरी के विविध परिचर्चा सत्रों में यह निश्चय किया गया कि सर्वमान सामाजिक, श्राव्यिक तथा राजनीतिक प्रवस्थाओं के परिश्रेष में भारतीय शिक्षण सस्थाओं में अनुसूचित और जन-जातियों के लिए भारक्षण जारी रखा जाय। युग युग से चले आ रहे शोषण तथा वेदभाव के विरुद्ध एक मुधावर्ष के रूप में, शैक्षिक तथा श्राव्यिक विकास में योगदान के रूप में शक्ति तथा प्रभावशाली स्थान प्राप्त करने के साधन रूप में, अनुसूचित वर्ग में प्रतिभा के प्रोत्साहन तथा उसके मनुष्य विनास के लिए समानता तथा सामाजिक स्तर के उत्थान के लिए सर्विधान में दिए गए आश्वासनों की पूर्ति के लिए मानवात्मक एकता तथा सामाजिक न्याय प्रदान करने के लिए तथा एक जातिविहीन समाज के निर्माण के लिए भारक्षण आवश्यक है।

श्राव्यस्यकता इस बात की भी है कि भारक्षण नीति का पुनर्मल्याकन किया जाय। अनुसूचित वर्ग के विधाविषयों में जागृति के लिए निशुलक शिक्षा, निशुलक भोजन पुस्तक छात्रवृत्तियां चिकित्सा कण्ड तथा शास्त्र-निर्मेरता को प्रेरणा तथा सुविधाएं दी जाय। प्रशिक्षण के लिए कक्षाएं तथा श्रमरिण पाठ्यक्रम शुरू किए जाय। उनकी श्राव्यिक स्थिति सुधारने के लिए रोजगार के श्राव्यिकारिक माधन उपलब्ध कराये जाय। शिक्षा का व्यवसायो-करण करते हुए अनुसूचित वर्ग के विधाविषयों के लिए पोलिटिकलिक श्राव्यिक किये जाय। अनुसूचित वर्ग के विधावी शिक्षा प्रभुओं ने छोड़ इसके लिए उन्हें तथा उनके श्राव्यिभावकों को विशेष प्रोत्साहन दिया जाये। श्राव्यिक शिक्षाप्रदान शुरू करने के लिए—प्रावहारिक स्तर पर उनकी सामाजिक श्राव्यस-कनाओं को पर्याप्त रूप में प्रगोता देने के लिए इन वर्गों के मेधावी छात्रों को विशेष रूप से ऊपर लाने के लिए श्राव्यिक सामाजिक शैक्षिक मनोविज्ञान तथा राजनैतिक रूप से भारक्षण नीति का पुनर्मल्याकन किया जाना चाहिए शिक्षा समानता तथा समान अवसर दिये जाने के सिद्धांत पर आधारित हो भारक्षित विधाविषयों को उनकी मानुभाषाओं में शिक्षा ग्रहण करने तथा सामाजिक प्रशासनिक सेवाओं में उन्का उपयोग करने को छेड़ हो। सब लोग सुखी हो, वे समान रूप से जानि बस वर्ग तथा किसी भी वेद-भाव से मुक्त होकर राष्ट्रीय धारा में ब्रूड सकें। इसके लिए एक मानवात्मक बाता-बरण बनाने के लिए प्रचार तन्त्र का मजबूत होना श्राव्यस्यक है।

## दांती की हर बीमारी का घरेलू इलाज



21 जडी बूटियों से निर्मित  
आयुर्वेदिक औषधि

दाने का डाक्टर



अब नये पैकेट में उपलब्ध

4 ग्राम

महाशियां वी हट्टी (प्रा०) लि०

5/14 इण्डियन स्ट्रीट, कोलकाता नई दिल्ली 15 जम 529808 ७727 537341



मनुष्य की पूजा



मृत की दुःख



उन्का जगती समाज



दान का दर्द

## सत्य के प्रबल समर्थक : स्वामी दयानन्द

—प्रकाशचोर साहू



भावमय न की हारना तो जबर १८५७ में हुई। पर इसमें तूहने भी स्वामी दयानन्द ने ऐसे ही कुछ धीरे सनसनी की भी नीच चालो की। उत्तर प्रदेश में धाय समाज की स्थापना स एक सान पुन नैनी सार में स्वामी की न पसा ही एक सगठन बनाया जिसका नाम सत्य सोधक समाज था। प्रतीत ऐसा होता है—बहादुरसाज प्राधान्यमात्र धादि सत्तारों से लगता विधान माना धाय समाज समस्त स्वामी की भी प्रथिम कहा ही। इसीलिए उन्हीने धाय में उले धरणा लिया। पर धायिक धीरे सामाजिक धीरे में स्वामी दयान द जिस सत्य का प्रचार करता चाहता उ उल्ला धामास सत्य सोधक के नाम से ही धम्का पता लगता है। सत्य का प्रचार करते समय स्वामी जी क मन में न तो कोई पुनर्विचार ही था धीरे न ही दुखे धर्मा धारों की उल्लेख किसी बात को उहीने यह कहा यह ही धर्मन सत्य है कोई विन्दु इस पर लग ही नहीं सकता। बल्कि कही किसी तो उनस लको में यह ही सकेल मिथता है—नो उल्लेख उहीने लिखा है उसमें भाल सधो से यदि परिचयन की मुझाह दिखार है तो यह निःसोच कह लिखा जाय।

सत्य सोधक समाज की ही राह पर चलन हुए ऋषि म्यालन में धायनी प्रसूज कथा का नाम भी सत्याप्रकाश रहा। सत्य की सत में पचाने के लिए स्वामी जी ने इसके बीहड़ सुमुलासी में यो तो प्राथ हर धमनु नियम की ही उठाया है। सत्य का प्रारम्भ को उन्ही दिनी धायि-सत्य की धाय में मिलन मिलन नामो स न्नास रही ईश्वर की साध दुकानो की धय विषयक था है। यही से उन्हीने किया है। यह सत्य माना जब धीरे लोभ धनो की पयवी उल्लासले प धीरे धीरे न उन्ही दुरा भना कहते थे। स्वामी की न सप्रमाण उन सब मानो की आस्था करते हुए कहा यह तो सब ही। नाम उस एक धायिनीय धर्मन के ही फिर प्रकाश किस बाव का है? नीतों के से यो यह तो धारे राते यह

पाते ही एक मजिल पर है। ऐसे ही धीरे भी धनेको सामाजिक प्रत्य सत्याप्रकाश में स्वामी की न उठाये। जम्माना जाति, नियमो की मुझा से बलित रचना बाल-बिवाह, दुर विवाह धीरे पुनर्विवाह का नियम धादि धनेको सामाजिक धर्मिधाय ऐत न जिन्हे देन धीरे धमाज दोनो सुभाह हो रह थे। स्वामी जी ने धाने भाषणो में धीरे धनो में न उले बडे धाने हाथो लिया। भारत में प्रचलित सभी मह-महत्तारो को यह धमना मानते थे। इसी-लिए उनको कमजोरियो का भी इस प्रथ में उन्हीने प्रमन उठाया है। सत्याप्रकाश की इस धूमिका में बडे ही निरपेक्ष भाव से उन्हीने यह लिखा है—

येस इस धम क बनाने का मुख्य प्रयोजन सत्य धर्म का प्रकाश करना है। धायो को सत्य है उसको सत्य धीरे को मिया है उसको मिया ही प्रतिपादन करता सत्य धर्म का प्रकाश समका है। यह सत्य नहीं कहलाया जो सत्य के स्थान में प्रत्यक्ष धीरे प्रत्यक्ष के स्थान में सत्य का प्रकाश किया जाए। किन्तु जो पचाब बैसा है उसको बैसा ही कहना निम्माना धीरे मानना सत्य कहलाता है। जो मनुष्य पक्षपाती होता है वह धाने प्रत्यक्ष को भी सत्य धीरे दुखे विरोधी मतवाले के सत्य को भी प्रत्यक्ष विहट करने में प्रवृत्त होता है। इसीलिए यह सत्य मत को प्रामन नहीं ही सकता, इसीलिए विद्वान् मान्यो का यही मुख्य काम है कि उपदेश का लेख द्वारा सब मनुष्यो के धाने सत्यासत्य का स्वरूप समर्पित कर दे। पचात् स्वाम्य धमना हिताहित समस्त कर सत्याप का सत्य धीरे धायिक का परिष्कार करने स्या मानन में रहे। मनुष्य की धमना सत्यासत्य की जानने वाली है। तमापि धाने प्रयोजन की सिद्धि हेतु हठ दुराधर धायि धर्मिधाय दोनो सत्य को कष्ट धर्मन से जुक्त जाता है। परन्तु इस प्रथ में ऐसी बात नहीं है धीरे न किसी का मन दुकाना या किसी को हाजि पट्ट-पाके का सात्यन है।

इसके धायिक निरविभागीय धीरे क्या किसी की हो सकता है। दूसरा कोई होता तो सत्य कहा इस में धम को सधोचन की मुझाह नही है। पर स्वामी जी का सत्यिक इस विषय में बहुत साध था—सत्य की सोध जारी रही धायि धीरे जब भी कोई नया सत्य धाने धाये हो उसे कुनै हदय से स्वीकार कर लेना चाहिए।

धायसमाज के सत नियमों में एक नियम के तो सत्य ही यह है—'सत्य' के प्रहल करने धीरे धसत्य के स्थान में सदा उचित रहना चाहिए। इन सत नियमों में नो सत से धायिक बस स्वामी जी ने सत्य पर ही दिया है। सत्य में से हीन नियमों में नो सत्य का सत्य उल्लेख भी है। पहले ही नियम में धायता है—'धम सत्य विद्या धीरे पदार्थ विद्या से जाते बाते हैं उन सब का धायि मुन परस्पर है। पाषर्षे में—सब काय धमनुसार सत्य धीरे धसत्य को विचार करके करने चाहिए। इसी तरह तीछरे नियम के प्रारम्भ में लिखा है—'वेद सब सत्य विद्याओं की धूमक है। उसका पठना धीरे पठना सब धायों का परम धर्म है।' वेद का ज्ञान किसी जाति धयका देस विधेय की सत्यि नही है। मनुष्य मात्र के कल्याण के लिए धायि सुविध से विद्या यह ईश्वर ही ज्ञान है। धायिमुद्रा को मित्र की धर्मि से देखने का धायेश की सत से पहले वेद न ही दिया।

स्वामी दयानन्द के सत्य सुधार कायको धीरे सैदासिक सत्याप्रकाशों की उन दिनों देउ दिखे सत्य ही की धम्की धूम मची हुई थी। विधोयोगिक सोसा-यटी के सत्यासत्यन को धायसमाज के विचारो से इतने प्रभावित थे कि एक बार तो उन्हीने सोसायटी को धायसमाज से मिलाने का निराय ही ले लिया। स्वामी जी से बहुत दिनों तक इस सत्यन में उन का पत्र-व्यवहार हो गया। सत्य में उल सोसायटी के सत्यापको ने से दो प्रमुख व्यक्तित्व नरैल धयकात धीरे नैम मेले-नदल्ल की धयई धायर स्वामी जी से निचे। कई दिनों तक यही विचार विनिमय चलता रहा। सत्यन की बातो पर दोनो पक्ष सहमत नही हो गये। पर यह ही बात ऐसी रही जिससे लेन मडे न पड सकी। धायसमाज के उलोरे नियमों में नो यह बाध है—'वेद सब सत्य विद्याओं की धूमक है। उससे से सत्य सत्य को विधो-सिक्तिक सोसायटी वाले हदना चाहते थे। उनका कहना था—सुखे दुखे धर्म-धर्मो का सत्यासत्य सत्य होता है। स्वामी जी ने उनको बात बड़ी गम्भीरता से सुनी धीरे सहमत थे से उत्तर न ही हुए कहा सत्य पर तो धायसमाज की नीज ही मने रही है। यदि सत्य ही सत्य से मिलन गया तो यह क्या जापना। सत्य से सभ-भोले का धर्मिधाय ही सत्य को प्रोत्साहन देना है। इस तरह विधोसिक्तिक सोसा-यटी की वह विषय बादा धीरे से ही टूट गई।

ऐसा ही एक प्रमुख उदयपुर में स्वामी दयानन्द के जीवन में धायता महा-

पना उदयपुर उनकी विद्या पर मुन्य है। स्वामी जी की यहीनो-यहीनो यह कर बहा उपदेश करते रहे धीरे सत्याप्रकाश तथा वेधमय के लिखने का काय भी उनका बहा चलता रहा। महापराय उदयपुर ने एक बार स्वामी जी से कहा—महाराज यह तो आप जानते ही हैं यह मेरी यही एकलिंग महादेव की की गती है। मैं धीरे मेरा परिवार तो उनकी धरोहर का रक्ष-वाला है। पर मेरी बजाय धाय बैसा विद्वान् साधु यदि इस धरोहर को सभाते तो कितना धम्का हो। धर्म प्रचार में भी यह सहायक होनी धीरे दुखे भले काया में भी इसका सुनुयोग हो सकेगा। पर महाराज एक छोटी की सत इसके साथ यह है—धूमिधमा का नो सदन धाय करते हैं वह कर बस करना पडेगा। भले ही धाय सत्य बाहे धूमि न पुजे। स्वामी जी उते भी कर बस धाय में नेकर उदयपुर से नच निचे। कहने मने राखन्। एक बीह में मेरी रिवाजत यह कर सकता हूँ इसका प्रयोग देख कर मुने सत्य से विमाना चाहता है। मैं तो उर राजा की धाजा का पालन करने सवार में धायता हूँ जिसको रिवाजत में जीवन भर दोहना तो भी उले पार नही कर सकता।

कोकेल्ला धीरे विरोधका यह दो प्रसो-भन ऐसे हैं जिनमें साराधन मनुष्य सत्य कर देता है। पर स्वामी जी को यह उलोरे प्रयोजन भी धयने पय से विना न सके। तीछरी निमित्त नच धयनो की धीरे थी। नच उनसे धमनुसर में किसी के कासीर धायता में प्रहोले के सत्य का धय विचारक रोचना कहा तब स्वामी जी ने कहा—सत्य का प्रचार करने में यदि मेरे हाथो की प्रयुधिया की मोमपसी की तरह विल-लित करने बैसा धायों धीरे उनमें प्रत्यक्ष का धायेश हूँ होने में मदद मिलेगी तो मैं धयने प्रयान को सफल समझूँगा। तैह बार तो उनके धीरे पर विष का प्रयोग किया गया। कभी पान में कभी दूध में धीरे कभी भोजन में बहुर मिश्रणक दिया गया। कर्मधाय से तो एक जागीरता में सत्यभार में ही उन पर धार कर दिया। पर स्वामी जी ने तबका रोककर ज्यो ही उसका गदा पकडा तो ऊपर का सन ऊपर धीरे नोके का नीचे बहा हो गया। उसवार ही उसके हाथ से सूकर गिर पडी। इसी तरह हरिद्वार के सने कुम्भ के सेने में उन दिनी पाषर्ष के विषध धायक उठाना कितना कष्टम काम था। यह भी सब नच कि सभी-सामी कोई न हो। पर सत्य पर जागी धारया में उनमें न जाने कहा का सहाय पर दिया। जो यह धयने ही सत्यासत्य सत्यनी पठाका हाथ में नेकर बहा डट गये।

सत्याप्रकाश में स्वामी जी ने कई ऐसी सैदासिक सत्यापको की भी प्रतिपादन किया है जो सत्याप्रार में धाय सब धाय-समाधियों के मने से नीचे भी नही उतर सकी। इतने एक निमित्त का सिद्धांत ही (सच पुढ पर ११)





## यज्ञ का वैज्ञानिक स्वरूप

### तेजस्व शिवाकान्त उपाध्याय

(१) यज्ञकर्म—यज्ञ मानव जीवन का परम धारक कर्तव्य कर्म है। जब तक मनुष्य अपने जीवन को यज्ञमय नहीं बना लेता, उसका मानव जीवन सफल नहीं होता। यज्ञदर्शन के प्रारम्भ में ही यह स्पष्ट है कि यज्ञार्थता है कि 'इहो त्वोन्मत्ता बाध्य स्व देवो ब सविता प्रार्थयन्ते येन्यन्तमाय कर्मन्ते' हे सविता देवता! हम सब को शान्त, बल, शक्ति उर्जा और पराक्रम के लिए येन्यन्तम कर्मों में दीक्षित करो। यही येन्यन्तम कर्म यज्ञ का स्वभाव है। शास्त्र पर यज्ञकर्म का श्रुति स्पष्ट घोषणा करता है 'यज्ञो नै येन्यन्तमम् कर्म' १।३।११५ इस प्रकार स्पष्ट विहित है कि मानव जीवन में यज्ञ-कर्म का बड़ा प्रभाव है और प्रत्यक्ष पूर्वक यज्ञ कर्मों से सभी को विमुक्त नहीं होना चाहिए। मनु हाराज लिखते हैं—'पर्व-वर्षासु महायज्ञान् यथाशक्ति न हास्यते' १।३।०१२। गीता में योगिद्वारा अवगत की गयी है कि यज्ञ घोषणा है यज्ञ ब्रह्मण्य कर्म न तत्पक्ष ध्यायेत् ततः। यज्ञो ब्रह्म तत्पक्षं च सत्वानि मनीषिण्यसु ॥ महावि स्वामी दयानन्द सरस्वती ने भी अपने कुछ स्वार्थप्रकाश और मनुस्मृत्युक्त प्रत्यक्ष स्पष्टावर्तन से यज्ञ की महिमा गाई है और प्रत्यक्ष नर-नारी के लिए यज्ञ करने का विधान किया है। निम्न यज्ञ के मनुष्य धरा है और मनुष्य क्या परलमाणी भी विना यज्ञ पूर्ण नहीं। सृष्टि के प्रारम्भ में उसने ही मनुज यज्ञ किया जब सृष्टि-निर्माण किया। 'सह यज्ञा प्रजा सृष्टव्या पुरोधाया प्रजापतिः' गीता। इस प्रकार यज्ञ एक महान् कर्तव्य है और इस का प्रभाव जनसाधारण के मध्य होना आवश्यक है।

(२) यज्ञ का धर्म—यज्ञ शब्द यज्ञ चातु से बनता है जिसका धर्म है, देवपूजा संघटितकरणी और दान। इन तीनों धर्म के कर्मों की सफल वर्तमान युग के परि-स्थिति से लम्बी पन्नी और देवताओं के नाम पर माना प्रकाश की उलटपट्टि पूजन प्रणालियों को ठीक रूप में जाना पड़ता। संघटितकरणी और दान का धर्म हर एक व्यष्टि को सम्मानना पड़ेगा। यज्ञ केवल मात्र हवनकुण्ड में मोड़ी सवित्रा प्रयत्न-जित करके पोशा घृत और सामग्री मात्र मात्र देते का नाम नहीं है। इसकी उचित विवेचना की आवश्यकता है।

(३) वैज्ञानिक युग विज्ञान का युग है। वैज्ञानिक परिचय में प्रत्येक बात का स्पष्टीकरण आवश्यक है। आज का मानव किसी भी बात को कहने मात्र में मानने के लिए उद्यत नहीं है परन्तु वह प्रत्येक बात को वैज्ञानिक दृष्टिकोण में पर्यटना चाहता है। कोई भी कार्य करने से पहले या किसी भी जातीयक विस्लेषण के लिए विज्ञान उसकी महारथ में सक्तीकृत पड़ने का प्रयास करता है। धर्म यज्ञ कर्म की वैज्ञानिक दृष्टिकोण से वर्णन

समझना पड़ेगा, क्यों कि वैदिक शास्त्रमय ने मनुष्य का बड़ा महत्त्व कहा गया है। वैसा अगर कहा जा चुका है। शास्त्र पर आधारित की स्पष्ट घोषणा है—'यज्ञो नै येन्यन्तमम् कर्म' इस घोषणा को वैज्ञानिक दृष्टिकोण से विश्लेषण करना पड़ेगा। इसका ही मूल शास्त्र बाध्य हो एक कर्म और यज्ञे बहकर उद्घोष कर रहा है कि यज्ञपूर्ण प्रत्यक्ष यज्ञप्रथागत का ही स्वभाव है—एवं नै प्रत्यक्ष यज्ञो यज्ञ प्रथापति। जिस प्रकार सूर्य इस विस्तृत यज्ञ का केन्द्र है। उसी प्रकार यज्ञकुण्ड इस यज्ञ का केन्द्र है—इन्हीं यज्ञ यन्त्रमय मानि। इस प्रकार यदि यज्ञपूर्ण विश्व ब्रह्माण्ड की रचना पर गौरवपूर्ण विचार किया जाय तो इस को यज्ञ का प्रतीक कहा जा सकता है।

(४) यज्ञ धारण समर्पित से व्यष्टि में इस यज्ञ के स्वरूप की देखने का प्रयास करें। जैसे सत्ता के अन्दर माना प्रकार के सुख और विनाश में सूर्य का प्रमुख स्थान है, वैसा यज्ञ शरीर के निर्माण और विनाश में धर्म रूप प्राण की ही प्रधानता है, उसी प्रकार यज्ञ को भी मुख्यतम करने के लिए धर्म की ही प्रधानता है, वह धर्म ही यज्ञ का देवता है, पुरोहित है, श्रवित, होता और रत्न, बाता है। श्रवित के धनुश्वर 'धर्मयोगी' रत्नधनुश्वर यत्नस्य देशमन्त्रिक होतारत्न रत्नधनुश्वरम् ॥ इस प्रकार एक एक बात स्पष्ट उभरकर सामने आ जाती है कि यज्ञपूर्ण विश्व (विश्वद शरीर) के साथ सूर्य, प्राणी मात्र के शरीर के साथ प्राण और यज्ञ के साथ धर्म का एक ही प्रकार का सम्बन्ध है। जैसे सूर्य अपने ताप, प्रकाश से तथा अपनी किरणों के माध्यम से मेरी हुई उर्जा के द्वारा सत्ता में फल-फल, धर्म, वनस्पति, भौतिक धर्म का निर्माण करता है, समुपरी पृथ्वी की रत्न-पद्म बनाता है, जैसे स्वयं प्राण अपने विनिर्माण कर्मों में शरीर के शब्द प्रवेश करके सभी वीरता करता है, सबीनो मज्जित का निर्माण करता है और शरीर के पोषण के लिए आवश्यक पदार्थों के निर्माण में सहयोग करता है, ठीक उसी प्रकार यज्ञकुण्ड में प्रयत्नजित धर्म की यज्ञीय पदार्थों को धारणकर करके उन्हें उनके सूक्ष्मातिवृत्त कर्मों में विभक्त करके उनमें शक्ति प्रकटीकृत हो सक्ति को हमारी मुक्ति प्रकटित करने आ माय के सम्बन्ध के लिए यज्ञमय और उपयुक्त बनाता है। जो कुछ हमारे पूर्वज श्रुति शिष्टां यज्ञ के माध्यम से जन-कल्याण का कर्म करते थे। वहीं सब कुछ धर्म वैज्ञानिक धर्म प्रयोगशाला में पदार्थों का उचित सहायक करके धाम्येय तत्त्वों का निर्माण से कर रहे हैं। निश्चित धर्म की धर्मियों का निर्माण की उरी पदार्थ पर ही हो रहा है। आज का वैज्ञानिक इस बात पर विचार रखता है कि किसी

यज्ञ के निराल में Tablets के ज्वाला धारक Liguide हैं और Liguide के ज्वाला Gaseous form में हो चुके हैं। यज्ञ प्रयोगशाला के लिए Tablets की ज्वाला पर Injections और Injection की ज्वाला से Gaseous form में बहायी जा पट्टिम सर्वमान्य हो चुका है। जिन जड़ी-बूटियों यज्ञा नौतिक पदार्थों की विनिर्माण के रासायनिक प्रयोगों द्वारा Tablets, liquids या Gaseous form में बाय का Chemist दवाओं का रूप दे देता है, उन्हीं तमाम जड़ी-बूटियों और नौतिक पदार्थों की हमारे पूर्वज शिष्टां यज्ञमय की प्रयत्न-जित धर्म में धारण समुपरी विश्व के निराल के लिए युक्त में दिया करते थे। कुछ यज्ञीय मातामय धर्मों की विज्ञा का विज्ञावर्णनक बहु कहने का दुस्ताहत करते हैं कि यज्ञ में यज्ञा पदार्थों को चमक-कर राख हो जाता है और यज्ञार्थों के युक्त में यह सब करना व्यर्थ है इन्हीं यज्ञ निवेदन है कि प्रत्यक्ष तो यज्ञ की प्रक्रिया को समझें और फिर विज्ञान के सिद्धान्त को समझने का प्रयास करें। विज्ञान के आधार पर Matter can neither be created to destroyed (Indestructibility of matter) परमाणु न तो बनाया जाता है और न विनाश जा सकता है केवल धाम्येय तत्त्वों के प्रभाव से रासायनिक परिवर्तन करके उनको बहायी में परिवर्तन किया जा सकता है। बिना यज्ञीय तमाम या दिये कोई रासायनिक विज्ञा सम्भव ही नहीं है। इसी को विज्ञान की भाषा में Indothermal reactions और Exothermal reaction की जगती है। इस प्रकार शिष्टां यज्ञ के माध्यम से पदार्थों का उचित सहायक करके विभिन्न प्रकार के रासायनिक परिवर्तन के द्वारा यज्ञों के लिए उन्हीं युक्तम करता हो सता का प्रयोग है। chemist दवाओं का युक्त सेकर यज्ञों का हिस्सा करता है परन्तु यज्ञमान यज्ञ के द्वारा विज्ञा युक्त तमाम हो सब-साधारण का हिस्सा बनना कर्तव्य कर्म समझता है।

इस प्रयोग में एक बात और निवेदन करना चाहता हूँ। आज के युग में वायु, जल, धर्म धारित हर एक पदार्थ में प्रयुक्त की विनिर्माण का प्रयोग है। शरीर संसार के सामने इस प्रयुक्तों को निवेदन के लिए एक समस्त उपलब्ध हो गई है। मेरा विश्वास है और मैं निवेदन भी है कि यदि यज्ञ-धर्म सब का करता करता प्रायः ही बाय तो यह सब कुछ युक्त सकता है और विश्व युक्त की साथ से सकता है। शिकारों में एक विश्व विज्ञान की स्थापना हुई है, विश्व का नाम ही है Agn-hotra university है। इस विश्वविज्ञान-यज्ञ में माना प्रकाश के प्रयोग किता जा रहे हैं और जन्तु यज्ञ की प्रक्रिया पर विभिन्न यज्ञाधारणों की निवेदन रही है। इस विज्ञा में यज्ञों के वैज्ञानिकों का प्रयास और पट्टि-

सह स्वरूप है।

(५) यज्ञ घोषणा यज्ञ में प्रयुक्त धर्म के स्वरूप की भी यज्ञा करता सचित समझता है। धर्म तीन प्रकार की होती है। (१) पवनाय (२) पायक (३) शुचि।

पूरी पर की धर्म को यज्ञमय कहते हैं। इसी को निर्माण धर्म न कहते हैं। पायक यज्ञीय धर्म न कहते हैं तथा शुचि धर्म की धर्म है। यज्ञा तम इन्हीं स्वरूप का यज्ञ मिलता है, यज्ञमान पायक धर्म का स्वभाव है जो यज्ञ (Solid) है। यज्ञीय धर्म की धर्म 'पायक' धर्म (Liquid) है और धर्म की धर्म निराल (Gaseous form) में है। यज्ञ Solid Liquid Gas धर्मों के तीन स्वरूप हैं, जिनके परिवर्तन में धर्म ही साधक है। आज का विज्ञान बाहे विज्ञान की धर्म हो गया हो पर यज्ञीय की बीच और उनके ज्ञान के धाम्येय धर्मो ही यह विज्ञान धारता है।

यज्ञीय में धर्म तम से मान के उपा-यन और युक्त के सामान्य से प्रायः धर्म के द्वारा हम तमाम धर्मियों को ब्रह्माण्ड से पिण्ड में और सन्धि से व्यष्टि में देखने का प्रयास किया और सर्वोत्कृष्ट वैज्ञानिक इस से इस प्रकार की धर्म को यज्ञमय के धर्म प्रयत्नजित करने का विधान किया है। धाम्येय इस यज्ञ की धर्म का वैज्ञानिक स्वरूप की देखने का प्रयास करें—

यज्ञ यज्ञ में यज्ञक यज्ञ का केन्द्र सूर्य है—

स य विष्णुर्ध्वज स। स य स यज्ञोऽस्ती स धारिण्य।

य ० ४५।१।१५ इसी व्यापक यज्ञ का धर्म हमारे प्राचीन यज्ञीय और विज्ञानों में धर्म तम पर और विज्ञान से इस पृथ्वी पर विहित करने का यज्ञ किया। और यज्ञ-मेरी की रचना उस के मध्य में यज्ञ-कुण्ड बना उस धर्म की स्थापना करने की व्यवस्था की।

यज्ञ संघटित बात है कि शरीर धर्म तम से यज्ञ की धर्म पैदा होती है। पुराने समय में दो कर्मियों के धर्म से धर्म प्रयत्नजित करके यज्ञकुण्ड के लिए प्रयोग करने की व्यवस्था की। धर्मकर्म की कर्मों की साथ इस प्रकार पैदा होता है के यज्ञ करने का यज्ञ करता है न यह धर्मप्रयत्नम किता बाय करके स्पष्ट करता है, इस का वैज्ञानिक पक्ष विचारणीय है—

युक्त शरीर, पृथ्वी शरीर और धर्मप्रति-यज्ञ से तीन कोक है। धर्मोक्त सत्त्व ऊपर धर्मप्रति यज्ञ में और पृथ्वी शरीर से नीचे या बीच में। यह इस धर्मोक्त से पृथ्वी शरीर का सम्बन्ध धर्म के माध्यम से स्थापित करने के लिए धर्म की व्यवस्था की गई। बाय तथा पृथ्वी की धर्म से धर्म पैदा होती है। विज्ञान की भाषा में यही Positive और Negative



## ईशोपनिषत् का अध्ययन— कर्म-महिमा

जगदीश श्राम्य, सि० रत्न  
सासाराम, बिहार

कुर्वन्नेवेह कर्माणि विधीयन्नेच्छते॥ सत्मा ।  
एवं त्वयि मात्परोऽस्ति ।

न कर्म लिप्यते न चेतः ॥

मन्त्र (इह) इस समय में (कर्माणि) कर्मा का (कुर्वन् एव) करते हुए (इ) इस माया) तो क्यों तक (विधी-विधेय) जोन की इच्छा करो। (एव) यही एक माय है (न्ययि नरे) तुम मनुष्य में (न लिप्यते कर्म) कर्म लिपन न होये। (इत श्रमयः) इस में निम्न दूसरा कोई मार्ग (न धर्मिन्) नहीं है।

ध्यायता—यम करता मनुष्यो का स्वभाव है। विना यम किए मनुष्य एक शाय भी नहीं रह सकता। नीता मे ध्यायः—न हि कर्मास्तस्यैवित् जन्तु लिप्यन्तेकमकुन। कायते ध्याय कर्म सभं प्रवृत्तिर्नैवम् ॥' (अ० ३.१५)

ध्यायता कोई पुण्य किसी धरवाया मे भी बिना रूप किए एव पर भी नहीं रह सकता। क्योंकि सन्तुल्य जप प्रवृत्ति जन्म स्वाभिप्राय गमावित् प्रपुगे से पर-रज हो, कम मे प्रवृत्त होते हैं। (तीता)

वेद माता धारम वेदी है कि तुम कर्म करते हुए ही जीन की इच्छा करो। यम जिजीविषम्' का विधि विद्व मे ध्याय है।

जीने की इच्छा तो सभी करते हैं। मरना कोई नहीं चाहता, मरणासन्न अवस्थ में जीना न हवा है। किसी काय मे कहा है—'यजु सतिन पतिन पुत्रं कथनविहीन ज्ञात मुन्यम्'। ब्रह्मो वात्त। एहीराह्यः ॥ नश्यि न पुत्र-प्राणापिण्यम् ॥ धर्म गम वाय है विरहित रह है, दास निर पद है, पति के बिना पत्नी का रहा है, जादे की मोते की धारा नहीं छूटती। जब जीने की इच्छा है, तो धारली जनक क्यों जीया जाय। परन्तु धारली जी तो कुछ न कुछ करता है। जैसे छात्रा-पीता, बलना-किरना धारि। परन्तु यहा कर्म करने का या धारिव है, यह ऐसे कर्मों से है, जिस का सकार सुरुष करण धारि पर पडा है धीरे धीरे ही सकार धारिते जन्म को प्रभावित करते हैं।

जम कर्म करना जीव का स्वभाव है तो प्रथम उठाते कि कैसा कर्म का जाय। बन्धन का कारण कर्म है। इधर या श्रुति कहती है कि तुम कर्म करो, इस से तुम मे कर्म लिपन न होये। यह कैसे? इस के लिए कर्म की पिप्सासनी समकनी होनी। कर्मों की तीन श्रेणियाँ हैं—'हेतु-म-कर्म' जो धर्मवा कर्त्तम्। कर्म करना कर्म न करना धीरे उठा करना। इसे मे कर्म न करना धीरे कर्म का उठा करना ही बन्धन का कारण है। धर्म्य ग्रन्थो मे जहा भी 'कर्म' करने का निर्देश प्राया है। यह वेद विहित कर्म से ही प्रभावित होता है। सत्यप्रकाश मे स्वामी श्यामजी की धर्मे स्व रचित श्लोक मे 'कर्म' का सर्व वेद विहित कर्म ही करते हैं।

न कर्म लिप्यते न चेतः ॥ ईशो० मन्त्र २।  
कर्म करने वाले का विद्वान् सोय प्यार करते हैं। वेद न ध्याय है—'इच्छति वेदा सुकृत न स्वभावाय स्मृ-यन्ति ॥' (वेदा) विद्वान् सोय (सुखस्य) कम करन वान पुण्य की (इच्छति) चाहत है (स्वभावा) धारली प्रसादी को (न स्मृयन्ति) प्रेम नहीं करते।

मन्त्र का धर्मिक पद है। त्वयि नरे न लिप्यते कर्म' कर्म तुम मे लिपन न होये, प्रभात बन्धन के कारण नहीं होये। यह कैसा। धर्मधारी धर्म्य 'हीओज कर्म-बन्धन' लोक मे कम बन्धन के कारण है।

इस मन्त्र के पूर्व जो मन्त्र ध्याया है, उस मे भी पद मध्य के है—तेन त्वयन्तेन पुत्रोऽसीत् धीरे इतरा पर है 'या शुभ'। इन का क्रम धर्म है स्वान् पूर्वक योगो की योगना धर्म्य कर्म इतरा, धीरे इतरा पद का धर्म है धारिक तावच न रहो। इन दा पयो की सपति इस मन्त्र मे लगवै। मन्त्र मे, कैसा कम किया जाय, इस का रहस्य बोध दिया है। यभीय कर्म करना ध्यातु स्वार्थ रहित कम। एक उदाहरण से इसे स्पष्ट करता है। एक मनुष्य धारली है जो धारली का, धनी स्वार्थ-निष्ठ मे धारक समर कर हुवा करता है, ना वह निष्ठा का पात्र होता है, उस दम्भ का निम्नता है। वही मनुष्य जब दादु या समाज का हित ध्यान न रख नर-रक्षण करता है, तो वह उस का पात्र होता है धीरे उस पुत्रका निम्नता है। ऐसा क्यों हुवा? इसलिये कि पहले कर्म मे धर्म की भावना, धर्म्य नि स्वार्थ भावना नहीं है, जब कि इतरा कम मे यभीय भावना, नि स्वार्थ भावना प्रबल है, यही त्वयन्तेन पुत्रोऽसीत् ॥

कर्त्तव्य समर कर भी जो कर्म न किये जाय, धर्मकाम कम किए जाए एही कर्मन के कारण बनते हैं धीरे जन्म-मरण के चक्कर मे लगेते हैं। ईशो० का तीसरा मन्त्र कहता है—

सम्यग् माय मे मोक्षप्राप्तयेन तमसाधुता ।  
तास्ते प्रेक्षाणि गच्छन्ति मे के बाल्यही जना ।

इस मन्त्र मे ध्याय उहा 'ध्यायत्व' पद महत्त्वपूर्ण है। धारत्व वह कम है जो यभीय भाव मे न किया जाए, धर्म्य को धारक पुणे, स्वार्थमय एव सोच की भावना से परिपूर्ण हो। ऐसा ही कर्म बन्धन का कारण है धीरे जिस के चलते जीव धामागमन के चक्कर मे पडा रहता है।

'धर्म्य' शब्द का सामान्य धर्म भावना या भावना है। परन्तु इस-मन्त्र मे एक विशेष धर्म रहता है। म्याय सर्व मे एक दृष्ट है—'धामना-मगण हुम्' धर्म्य बन्धन ही हुस का सत्ताम है, एषाभा है।

नीता मे, मनु० ५०।२ के मन्त्र पर ध्यायित एक श्लोक है—'कर्त्तव्य-धर्मिकारस्ते का कसेतु कषावन्'। दुष्प्राय धर्मिकार कर्म करते ये हैं, पस मे धर्मिकार नहीं है। इस श्लोक को समझने मे एक बड़ी भ्रान्ति पैसी हुई है। धर्म्य फलो की प्राप्तासा न रखे हुए कर्म करते रही। ऐसी विचारधारा धर्मना-धर्मिक ही नवती है। किसान गेहू बोता है तो इती फल स इती विनास एव प्राप्तासा से कि पसल धरणी मिलनी। धर्मर उचे यह विचार ही जाए कि मैं जो गेहू बोने का कर्म कर रहा हूँ वह निष्फल जायता तो वह कम करेगा ही नहीं। कम न करने वाला व्यक्ति धारली एक प्रमादी है। महाभारतकार (नीता) का यह श्लोक सूत्र मे महाभारत के शीघ्य पद मे है। यह मठा नहीं है कि कर्म करने के पुव ही फल की कामना कर भी जाए। महाभारतकार यह कहना चाहता है कि तुम्हारे विन्यन का लेन 'कर्म' नहीं है। प्रथम विन्यन का है। जब यह निष्फल हो गया कि हुनारा यह कर्म कर्त्तव्य के लेन मे धाता है तो उसे निष्ठापूर्वक कुमसता से कर्म करता है। फल तो उसे विनाही ही। केवल फल का विन्यन कर्त्तव्य कम करन मे बना रहेवा तो कर्त्तव्य का पालन ठीक से न होगा। तथा धर्मयित फल न मिता तो दुःख भी होगा। क्योंकि यह कोई धर्म-भायता नहीं है, धर्मका फल मे धर्मिकार तो है नहीं। एक उदाहरण से स्पष्ट करता हूँ।

जो धपने पुत्र को धरना कर्त्तव्य समर कर उस का लालन-पालन-विशा-दीक्षा का प्रबन्ध करते हैं, इस भावना, इस धारतासे ये नहीं करते कि मेरे बृद्ध होने पर या धर्मयत होने पर यह पुत्र मेरी सेवा-सुधुना, इस बात करेगा। महा वह किसी प्रकार के फल की धामा नहीं रखता। धर्म धारण पुत्र धरने कर्त्तव्य का पालन नहीं करता है, तो की पिता को कुछ नही होगा। क्योंकि धारम्य मे उस ने किसी फल की प्रेक्षा नहीं रखी थी। धीरे धारण की पुत्र ने धरने-कर्त्तव्य का पालन किया तो पिता की धर्मिक प्रसन्नता होगी। क्योंकि यह एक सामान्य नियम है। धर्म्य धारणावित रूप से धर्मयित सुखच फल मिता है तो धर्मयित प्रसन्नता होगी। इस उदाहरण से यह साफ हो गया कि फल का विन्यन धर्मर कम पर हुनारी रहे, तो वह दुःख भी बन्धन का कारण होता है। जिस पर धारना धर्मिकार नहीं, उस की विन्यता करना धर्मोचित मार्ग नहीं है।

धर्म कम के इतरा परन्तु धर्म विचार कर, कम ही बन्धन का कारण है। धीरे कर्म से ही बन्धन मुक्त भी होगा है। यह कैसे? जो कर्म बन्धन का कारण है वह बन्धन से मुक्ति कैसे विन्याय। धर्मधार करते से मनुष्य रोमी होता है, दुःखी होता है, बन्धन मे बन्ध जाता है। इतरा तरफ उठी रोम का उपचार करने से रोम छुट भी जाता है। धर्म्य विचार से छुट जाता है। एक धीरे धर्म्यत्व है, एक मनुष्य किसी के भाव धार ही बीस करता है। न्यायाधीश जब धर्मपद के कारण उसे कारागृह मे डाल देता है। धर्म यहा धार ही बीस कर्म है, धीरे जेव मे जाता

उस डा फल है। धर्म्य बन्धन है। धार ही बीस करने मे वह स्वतन्त्र या परन्तु कारागृह मे जाना उस के धर्मिकार की बात नहीं की। जब धर्मर यह जेव मे मनुष्यात्मन से रहता है, जेव के विनय की कैसी के लिए नये है, उन का धर्मार्थ से पालन करता है तो वह निवत धर्मिक से पूर्व ही छुट भी जाता है। क्योंकि जेव का नियम है जो नीके पदार्थानुसार मे रहते हैं, जेव जेव मनुष्य के मनुष्यर सजा की धर्मिक मे पद निमित्त है। यह माय विहित उम मे रहता भी कर्म है धीरे यही कर्म बन्धन से मुक्ति विनय का कारण भी है। धीरे जो कैसी उल के नियम-धर्म का पालन नहीं करते है, जेव तोष कर माग जाने का प्रयास करते हैं, न पक्ष धार पर मुन जेव मे मंत्र किए माते है धीरे जो सजा की धर्मिक बन्ध जाते है। यह बन्धन कडा हो जाता है।

धर्म कर्म के एक धर्म परन्तु पर भी विचार प्रस्तुत करता हूँ। कर्म के जुरे संस्कारों की धर्मयित धर्मन को कम के द्वारा हुनारी की कर सके है धीरे कर्म के जुरे संस्कारों के प्रभाव का रोम की सतह है तथा उचे मध्य संस्कारों मे परिनिर्गम भी कर सकते हैं। यह कैसे? विनयन के एक विचारों को नकल करने के धर्मयित के कारण बीस प्रवृत्त पात्रन हुनारे। काहल भुषणन करने की उसे एक माह की धर्मयित मिली। धर्म यही धार, धर्मिक के बीस मे किसी धर्मयित के कारण से धर्मयित धर्म का प्रभाव है। उच इस मे बीस धरये का एवम माह केव विन्या य। धर्म्ये कर्म के प्रभाव न बुरे कम के प्रभाव को कम कर दिया। इसी प्रकार पुर्व जन्म के किए हुए जुरे कर्मों के संस्कारों की धर्म्ये कर्मों के द्वारा धर्म संस्कारों को प्रभावित कर सकते हैं। धर्म की सिं को हुनारी कर सकते हैं। धर्म कर्म के संस्कार के प्रभाव को रोम सकते हैं। यह इस प्रकार मे होता, धर्म मे रोम की संस्कार से एक धर्मयत मया पिता। धर्मन के मायन मे उस धर्म का संस्कार पडा। उधर मन्त्र मे धर्मयत का जवाब दिया तो उस पर उस के कर्म का संस्कार पडा। विन्या-विन्याविन्या विन्या-प्रतिविन्या से संस्कार का प्रभाव पडा पडा। धर्म धार राग, धर्म के धर्मयत का जवाब मे वे पुत्र ही धार, धार रहे, मन से भी धार रहे तो संस्कार का प्रभाव पडा यम। स्वाम का भी कोष दास ही कम, उस के जुरे संस्कार यही एक धर्म, क्योंकि तोरन सार संस्कार के बीस को कोई भाव नहीं पडा। संस्कार के प्रभाव को बसाये ना रोमन मे तोही स्वतन्त्र है।

इस वेद मन्त्र द्वारा परमार्थगत परमात्मा को यह विनय से रहते है कि वह विहित कर्मों की धर्मयित, यभीय भावना से करते हुए ही जीने की इच्छा करते है। कर्म से धर्मयित धर्मिकार करने का प्रवृत्त पडता है। जेव का भाव है संस्कार, धारणाका का लेन। धार-धार जन्म-मरण का चक्कर चले संस्कारों के कारण होता है।

धर्मसाराधियो मे इस मन्त्र का धर्म विन्य प्रकार न किया है। धार संस्कार-धर्म्य पुण्य ईशोपनिषत् के धर्म्य मे इस मन्त्र का भाव यह बताते है कि धर्मानी ही कर्म करते हैं। जो धर्मयती हैं, जिन्हें धर्म निष्ठा है, उन्हें कर्म करने की धार-बन्धना नहीं है। यह मन्त्रय वेद विद्व है।



## आर्यवीर दल शिविर

समस्त आर्यवीर वन्द्युओं को सुचित किया जाता है कि नई तथा नून १९८५ में मनाया गया हजारों वाग में शिक्षक प्रशिक्षण आर्यवीर दल शिविर का आयोजन किया जा रहा है। इसकी निश्चित तिथि तथा स्थान की घोषणा वीर ही की आजीवी विधि कर आर्यवीर को सुचित करने लिए सभी की छुट्टी में ही शिविर मनाया जा रहा है। शक्ति विद्यालय तथा महाविद्यालय के शक्ति से अधिक छात्र भाग में लगे। तैयार रहें, सूचना की प्रतीक्षा करें। आपकी सारी सुविधाओं का ध्यान रखा जाएगा।

निवेदक

राधाभा बेंगनी

प्रधान सचालक, आर्यवैदिक आर्यवीर दल,  
बिहार

## वार्षिकोत्सव सूचना

आर्यवीर वन्द्युओं को

आर्यसमाज वन्द्युओं का ३३वां वार्षिकोत्सव बिलाक २, ३ मार्च १९८५ धनि तथा रात्रिबार को हार्दिकता से साथ मनाया जा रहा है। इस अवसर पर वैदिक कालदेन को बजने के अनुसार कुली कबड्डी और बुद्ध वेदमन्त्रोच्चारण, आर्यमन्त्रों पर भाषण तथा निवेदक प्रतियोगिताएं आयोजित की जा रही हैं। साथ ही बुद्ध बोधपरदात बालसमाज के नवोदित ५-६ वर्षीय महाश्रद्धाओं के जीवनदायी प्रश्नों की समुचित व्यवस्था है।

मेहर लाल

वन्दी

आर्यसमाज वन्द्युओं

दिल्ली-४०

## वेद प्रवचन

आर्यसमाज शाहीनबाद बाग में उत्सवस्थान में श्री वेदप्रकाश मेहरा के निवास स्थान पर स्वामी दयानन्द जी मरन्गी महाशय का वार्षिक और रात्रिबार की वेद प्रवचन हुआ। इस अवसर पर धनिक वार्षिक जन उत्साहपूर्वक उपस्थित रहे।

रघुवीर वेदालकार

## भाषण प्रतियोगिता सम्पन्न

आर्यसमाज सदर बाजार दिल्ली में २७/१२/८५ को माताहिक मरुजु के हकीकतवादी के बलिदान विचार के उपलब्ध में मातृमित्र स्वर के छात्र-छात्राओं के लिए भाषण प्रतियोगिता का आयोजन किया गया।

प्रतियोगिता में स्वामि प्राप्त करने वाले छात्र-छात्राओं को विशिष्ट पुरस्कारों एवं प्रत्येक प्रतियोगी को प्रोत्साहन से पुरस्कार पुरस्कृत किया गया। पुरस्कार विवरण का प्रवचन श्री बाला किनोरीलाल जी के द्वारा किया गया। सम्पूर्ण कार्यक्रम तथा प्रेरणादायक एवं सफल रहा।

सरोजक

आर्यसमाज वन्द्युओं

आर्यसमाज सदर बाजार दिल्ली ६

## आर्यसमाज भवन निर्माण के लिए धनराशि की अपील

आर्यसमाज किदवई नगर नई दिल्ली की स्थापना १९६० में हुई थी। परन्तु उस समय भवन भवनाती रूप में बनाया गया था। जो इस समय पूर्ण रूप से जीर्ण-दोष हो गया है। इन काम में आप सभी वार्षिक महान-माधवों की सहयोगिता एवं सहयोग की आवश्यकता है। भवन में लगभग २५ हजार की लागत धाने की सम्भावना है। कृपया धनदा बैंक, डाक नम्रीशार्दर, आर्यसमाज ६ २६८ किदवई नगर नई दिल्ली २३ के पत्र पर लिखवायें।

निवेदक

वन्दी

मदनपाल वर्मा

## आर्यसमाज नीलोखेडी में वेद प्रवचन

आर्यसमाज मन्दिर मांको खेडी, कलस में महात्मा वैद्य रामकिशोर की ११ से १० फरवरी तक वेदका हो रही है और की १० बुन्नीमास के मधुर मजन भी होने।

वन्दी

वीरकाय

## आर्यसमाज राजौरी गार्डन में वेद कथा सम्पन्न

४ फरवरी से १० फरवरी तक आर्यसमाज राजौरी गार्डन नई दिल्ली में श्री १० यथाल सुभाषु एम ए द्वारा मनीहर् वेदका कथन में सम्पन्न हुई। कथा के पूर्व श्री विजय मूरख धर्म के मधुर मजन हुए।

वन्दी

मन्त्रिकीशोर मन्त्रिका

## आयकर परिसर (आई० टी० ओ०) में वेदप्रचार

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रचार बाह्यन द्वारा आयकर परिसर (इनकम टैक्स आफिस) में बिलाक ५ फरवरी से ८ फरवरी १९८५ तक मन्त्रालय मोजन के विभाग में समय बडे पुस्तक में सम्पन्न हुआ। यह प्रपत्र प्रकार का एक नया प्रयोग होने पर काफी सफल रहा। भय प्रेमी राज्य कर्मचारियों ने काफी उत्साह दिखाया तथा इस अवसर पर साहित्य वितरण भी हुआ। कार्यक्रम की सफलता का भय स्वामी स्वकृतानन्द, १० वेदव्यास तथा दोलक कलाकार ज्योति प्रसाद की है।

प्रचार वन्दी

आर्य प्रतिनिधि सभा, हुनुमान रोड नई दिल्ली

## पुरस्कार घोषणा

आचार्य मोजन आर्यनी पुरस्कार १९८५ सचिव सभा इन्टर कम्युन की ओर से इस विरद्विद्यालय द्वारा प्रति वर्ष एक ऐसे विद्वान को सम्मानित किया जाता है जिसका कि वेद प्रचार में उत्कृष्टतम योगदान रहा हो।

गत वर्ष में यह पुरस्कार कम्यु आचार्य रामप्रसाद मेवाल का, श्री वन्दी भारतवीर श्री विजयवास विद्यालकार आचार्य श्री ललकाम विद्यालकार को दिया जा चुका है।

सचिव विद्यालया इन्टर कम्युन ने इस वर्ष उत्तम पुरस्कार वैदिक विद्वान् पण्डित मयवदत वेदालकार की प्रधान करने की स्वीकृति दी है।

आवश्यक है कि यह पुरस्कार विरद्विद्यालय के वार्षिकोत्सव के अवसर पर कुशाधिपति होदयन द्वारा नैत किया जाता है। इस पुरस्कार में १००० रुपये की राशि एवम कम्युन नैत किया जाता है।

मन्दी

वीरेश्वर मरीका

कुलसचिव, मुकुन्द कामदी, हरिद्वार

## आर्यमुकुल ऐरवा कटरा, इटावा

### अपील

इस मुकुल में १५ ब्रह्माणी वेदाम्भयन कर रहे हैं। जिनका मोजन छात्र रहन सहन आप सभी वन्दी महाशयों की सहयोगिता पर निर्भर है। यह मुकुल ऐसे निरक्षर क्षेत्र में विद्यमान कार्य रहा है जहाँ ईश्वर मुखमाला वार्षिक वनराशि का अध्ययन करके समस्त बीम जनता को भरपा रहे हैं। यह मुकुल म्भवि दयानन्द द्वारा प्रतिपादित शिक्षण लेनी पर आधारित है। गत आप का सहयोग परमात्मक है।

आचार्य स्वामी रामवेध

## आर्यसमाज मन्दिर शकरपुर का वार्षिकोत्सव सम्पन्न

१० फरवरी रात्रिबार वार्षिकोत्सव के शुभमकर पर इस क्षेत्र के काफी वार्षिक वन्दी ने उत्साहपूर्वक भाग लिया। इस उत्सव की अध्यक्षता श्री रामवीरपाल मालबाने ने की। तथा प्रधान की सुप्रेम तथा युवावर्द्ध, रात्रिबार स्वामी स्वकृतानन्द, मा० श्रीमप्रकाश आर्य प्रावि वीरकार एवं वन्दी ने अपना प्रेरणाप्रद कथना दिया।

प्रचार—

नारायण दास कल्ला

## आर्यसमाज फ़िलमिड, शाहदरा, दिल्ली-११००३२

इस समाज में एक 'सत्य प्रथम' व ब्रह्माला के ऊपर 'मुन्त्र' मनाये का कार्य वन्दी के आचार्य में काफी दिलो में रुका रहा है। वन्दी वन्दी वन्दी वन्दी के वार्षिकों की व दूधरे वन्दी ललकने के प्रार्थना करते हैं कि इस धार्मिक कार्य की पूरा करने में हमारी सहानुता करें। कथनार्थ—

निवेदक—सुवर्णप्रकाश (प्रचार)



## भाषण प्रतियोगिता

श्रद्धि बोधोत्सव के उपसभ्य में प्रायः युवक परिवर्ध (पञ्जीकृत) दिल्ली की ओर से सर्व्व की भाति दिनांक १७ फरवरी १९८५ को श्रद्धि मेले के अवसर पर मुख्य-मन्त्र से प्रातः ११.३० बजे भाषण प्रतियोगिता का आयोजन किया गया है।

विषय— राष्ट्रोत्थान में महर्षि ज्ञानानन्द का योगदान

कायक्रम की अध्यक्षता माननीय डा० धमपाल जी करगे ।

प्रतियोगिता में एक सस्या से एक छात्र/छात्रा चार मिनट तक बोल सकेगी।

प्रथम द्वितीय तृतीय छात्र छात्राओं को दो दो प्रोत्साहन पुरस्कार दिए जायेंगे।

निवेदक —

प० देवव्रत बमन्धु  
प्रधान

मूलबन्द गुप्ता  
संयोजक

श्रीमप्रकाश  
सूत्री

आय युवक परिषद् (पञ्जी०) दिल्ली ।

**आर्य जगत् की शान २०० बिस्तर वाले**

निर्माणाधीन नेत्र चिकित्सालय

(अनुमानित लागत दो करोड रुपये) के लिए दिल  
खोलकर दान दीजिए

दान की राशि आयकर अधिनियम जी० ८० के अन्तर्गत करमुक्त होगी।

सारा डाल चेक/मनीऑर्डर/बैंक ड्राफ्ट द्वारा

मन्त्री माता चन्ननदेवी प्रार्थनार्थक बर्माय नेत्र चिकित्सालय बी-१ जनकपुरी नई दिल्ली २५  
के पते पर भेजा जाए।

दानदाताओं के नाम चिकित्सालय की शिला पर अंकित किए जाएंगे।

**निपेक्ष**

दामोदरालाल शास्त्रिकाले सरकाक सूचयेव महापात्र बर्षपात्र क्षोमत्रकाक धार्य  
 निरुक्तिस्तान एव प्रवान, प्रवान हिल्लो धार्य प्रवान धार्य मयी महापात्र  
 सां धां प्रति० सना प्रणिनिधि सबा केद्रीव उषा पुन्यिधान केरि दू  
 क्षोत्रय्य मे महापात्रा यो हृदी प्रा० लिमिटेड ६/५५ कोटिनगर, धौबीक लेन  
 मयि हिल्लो-११००१

**वार्क सन्देश साप्ताहिक**

पत्रिका के माहक बने, और बनाएँ

क्योंकि यह पत्रिका—

(१) वैदिक मान्यताओं को उजागर करती है।

(२) प्रायों (हिन्दुओं) की महान् परम्पराओं की याद दिलाती है।

(3) महर्षि दयानन्द की वैचारिक क्रांति से आत्म चेतना जागृत करती है।

(४) भारतीय संस्कृति के भूले बिसरे प्रसंगों, महापुरुषों तथा धार्मिक संस्कारों को प्रकाश में लाती है।

(५) ऋषि मुनि तपस्वी आप्तविद्वानों की वाणी का बोध कराती है।

(६) परमेश्वर की पवित्र वाणी वेद का जीवनोपयोगी मधुर सन्देश लाती है।

(७) नय लेखको, कवियों, चिन्तको, प्रतिभाशाली विद्वानो, साहित्य सेवियों को प्रोत्साहन देती है।

(८) धार्मिक, सामाजिक और आध्यात्मिक ज्योति से मन-मन्दिर को प्रकाशित करती है।

(६) वेद उपवेद, दर्शन उपनिषद्, स्मृति, कल्प सूत्र आरम्भक शास्त्राग्रगण्य मीमांसा, रामायण, नीति, ऐतिहासिक, बभ्रुवल्गु मार्ग प्रज्ञो जिन को अधिकार्य लोगो से पढा तो क्या देखा भी नही, समस्त आध्यात्मिक जगत को जिन ग्रन्थो पर सदा धर्म रहेगा उन सभी के बहुमूल्य मोती हर सन्तह बटोर कर आपकी भजनी भर देती है।

(१०) अतएव देर न कीजिए आज ही अपना वार्षिक चन्दा २० रुपये भेजिये वर्ष में अनेक विशेषांक तथा महर्षि दयानन्द निर्वाण शताब्दी पद प्रकाशन ५० रुपये मूल्य की अम्य मनोहारी स्मारिका नि शुल्क दी जायेगी ।

सम्पादक •  
आर्य सन्देश

## उत्तम स्वास्थ्य के लिए

**गुरुकुल कांगड़ी फार्मसी,**

## हरिद्वार की औषधियां

## सेवन करें

शाखा कार्यालय—६३, गली राजा केदारनाथ,  
फोन . २६६८३८ चावडी बाजार

આવડી બાજાર, વિસ્તી-૬



दिल्ली कार्य प्रतिनिधि सभा १५, हनुमान रोड, नई दिल्ली-१ कोन ३१०१५० के लिए श्री डा० वर्षपाल द्वारा सम्पादित एवं प्रकाशित तथा  
 वैदिक प्रेस, गली न० १७, कैलाशनगर, दिल्ली-३१ मे मुद्रित। रजि० न० डी० (सी) ७५९

# आर्य सन्देश

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का साप्ताहिक पत्र

मूल्य एक प्रति २० पैसे

बप ६

सक १४

रविवार, २४ फरवरी १९८६

आय सन्वत् १९६०=५३००४

फाल्गुन २०४१

दशमन्वत्—१६०

## महर्षि दयानन्द बोधोत्सव समारोहपूर्वक सम्पन्न महामना मनीषी स्वामी दयानन्द का जीवन युग-युगों तक संसार को प्रेरणा देता रहेगा

लोकसभा अध्यक्ष-श्री बलराम जाखड़

दिल्ली आर्य केन्द्रीय सभा द्वारा आयोजित ऋषि दयानन्द बोधोत्सव के अवसर पर आयोजित करते हुए श्री बलराम जाखड़ ने कहा—आज का दिवस बोध का, कुछ ज्ञान का, सत्य को जानने का दिवस है। आज उस महामना मनीषी ऋषि की सच्चाई का बोध हुआ था। इ सच्चे शिव की प्राप्ति के लिए गृहत्याग कर चल पड़े। समस्त विश्व को उन्होंने सत्य पथ दिखाया। वे ऐसे उच्चकोटि के आर्यस्य पुत्र थे जिनका जीवन युग-युगों तक संसार को प्रेरणा देता रहेगा।

सम्बोधन करते हुए कहा—आचीन भारत में राजा अश्वपति ने ऋषियों को कहा था मेरे राज्य में कोई चोर व्यक्ति नहीं होना चाहिए। कोई ऐसा व्यक्ति नहीं जो यज्ञ रोपकार न करता हो। आज मेरे राज्य में प्रवेश कर जन्म जल ग्रहण कर। दुर्गम्य से मार्ग ऋषियों के देश में चारित्रिक पतन पराकाष्ठा पर है। तथा भारतीय संसद और विधान सभाएं इससे अछूती नहीं हैं भविष्यवाचन से पूर्ण

विधानसभा और संसद के लिए लड़े हुए प्रत्यासिद्धि को घोषणा करनी चाहिए कि वे किसी प्रकार के मादक द्रव्य का प्रयोग नहीं करते तथा उनका व्यक्तिगत और सामाजिक जीवन निर्दोष एवं स्वच्छ है। ऐसे लोग ही देश का कल्याण कर सकते हैं। इनके साथ देश के प्रत्येक नागरिक को अपने महर्षियों से प्रेरणा लेकर जीवन और चरित्र को सुधारना चाहिए। मैं प्रधानमन्त्री

स्वच्छता लाने के लिए किये जा रहे प्रधानमन्त्री के प्रधान का स्वागत करता हूँ उन्होंने सरकार से मांग करते हुए कहा संस्कृत हमारी देववाणी है जिस पर प्रत्येक भारतीय को गर्व है उसकी रक्षा के लिए शासकीय सेवाओं में प्राथमिकता दी जानी चाहिए। तथा संस्कृत के अध्ययन एवं प्रवर्धन हेतु माध्यमिक विद्यालयों में ही संस्कृत प्रतिभाई घोषित करनी चाहिए।

श्री बलराम जाखड़ ने आह्वान करते हुए कहा—ऋषि दयानन्द ने संस्कृत, संस्कृति को रखा करने के लिए बल दिया था। संस्कृत सभी भाषाओं को जननी है, गाय हमारी माता है उसकी पूरा सुरक्षा की जानी चाहिए। उन्होंने कहा—मैं अनुरोध कर्मा, आज हमें मानव कल्याण के भाष्य न देकर महर्षि दयानन्द द्वारा बताये गये मन्त्रों का अनुसरण करना चाहिए। मैं संसद में यथासंभव जो कुछ हो सका अवश्य करूंगा।

श्री प० राजगुरु शर्मा ने



चित्र में—श्री बलराम जाखड़ भाष्य करते हुए, मंच पर बैठे हुए श्री सचिवालय सभा की मुख्यालय वाली श्री प० राजगुरु शर्मा की अध्यक्षता वाली श्री महाशय कमलानी श्री आशा रामगोपाल शास्त्राचार्य विचार दे रहे हैं।

श्री रामगोपाल शास्त्राचार्य ने कहा श्री की गम्भीर वस्तु घोषित कर श्री की सुरक्षा की जाए तथा संस्कृत के अध्ययन करने वालों को विशेष प्रोत्साहन दिया जाना चाहिए।

श्री पृथ्वीराज शास्त्री ने नामा लेख और उद्देश्य में अपने कार्य की खर्ची करते हुए कहा कि ईसाई पानी के गिलास पर गरीब लोगों का ईमान लुट रहे हैं। भग्न सरकार को बर्मान्तरण रोकने के लिए कानून बनाना चाहिए क्योंकि हमसे राष्ट्रद्रोह उत्पन्न हो रहा है।

इस अवसर पर श्री श्रीमप्रकाश त्यागी एवं श्री सचिवालय शास्त्री ने श्री अपने विचार प्रस्तुत किये।

## यज्ञ पर अनेक स्त्री पुरुषों ने दोष त्याग एवं परोपकारी कार्य करने का संकल्प ग्रहण

किरीयवाह कोटला मैदान में आर्य केन्द्रीय सभा के तत्वावधान में आयोजित यज्ञ प्रातः ८ बजे प्रारम्भ हुआ। इस यज्ञ में श्री महाशय वर्धमान, श्री के० ए० माटिया श्री दीप राम टन्कर एवं श्री योगेश भार्य यजमान रूप में उपस्थित हुए। यज्ञ के ऋषिर्गुरु के रूप में श्री प्रकाश चन्द्र शास्त्री एवं श्री प० यशपाल सुबोधु

ने मन्त्रोच्चारण तथा यज्ञ संचालन किया। श्री प० सुबोधु ने इस अवसर पर उपस्थित जनसमूह को यज्ञ पर व्रत ग्रहण करने का उपदेश दिया। जिससे प्रेरित होकर लगभग ५५ स्त्री एवं पुरुषों ने यज्ञ पर अपने दोष त्याग एवं परोपकारी एवं माध्यमिक किया।

ध्वजारोहण यज्ञ के पश्चात् ध्वजारोहण पर श्री सूर्यदेव ने प्राय जनता को सम्बोधित करते हुए कहा—हमारी संस्कृति और सभ्यता का प्रतीक ये ध्वज हमें राष्ट्र एवं धर्म के प्रति कर्तव्य निभाते रहने का सन्देश देता है। हम अपने आपको और

विश्व को अष्ट आर्य बनाने का संकल्प ल। ध्वजारोहण के पश्चात् श्री मूलचन्द जी के मनोजन मे खेल ज्ञ एवं भाष्य प्रतियोगिता का आयोजन का कार्यक्रम हुआ। जिसमें युवा पीढ़ी ने महर्षि के राष्ट्र-त्वान सम्बन्धी निर्देशों पर प्रकाश डाला।



## वह मृत्यु से नहीं डरेगा

बसपाल सुभाषु

अक्रान्ति धीरो अमृत स्वयम्भू रसेन तृप्ति न कुतश्चनो न ।  
तमेव विद्वान् न बिभाय मृत्योरारम्भान धीरमजर युवानम् ॥

अप्रै० १७/०४/४४

धर्म—परमेश्वर अक्रान्त" कामना रहित, "धीर धीर अचलमान, अमृत" अविनाशी कभी न मरने वाला "स्वयम्भू" स्वय-भू अपने आचार से सदा विद्यमान, रसेन तत्प धान्यरस से तृप्त "कुतश्चन न क्वन कभी भी-मृत नहीं मृत्युतारहित" तमेव धीरम् अजर युवानम्" उर धीर, अजर, सदा नवीन युवा "आत्मनम्" धर्म व्यापक परमात्मा को "विद्वान्" न मृत्यो विनाश" जानकर ही मृत्युधू मृत्यु से नहीं डरता । मृत्यु से निर्भय हो जाता है ।

अर्थ—मृत्युधू अजगत् को जान कर मृत्यु से डर से बचे निर्भय रहेंगे ।

व्याख्या—अप्रापि काल मे जन्म-मरण का चक्र चलता रहा है, धीर चलता रहेगा । क्या विद्वान् क्या मूर्ख करीब-करीब बलवान् निरबल, योगी-योगी सब मृत्यु की पकड़ में हैं । काल बसा काल है 'वे' पैर बाये—एसी मृत्युधू आरि धीर धीर पैर बाये—तृप्ति को आरि सभी पर बल आचर करता है ।

"मृत्युरीते विप्रा मृत्युरीते चतुष्पथाय ।

मृत्यु—मृत" मित्रि यु" निष्कला-निष्कलो मितना धीर बुद्धि शान्ता । वह यम एक परमात्मा इस जीव को 'मृत' अर्थात् चतुष्पथगत सरीर से जोकना धीर (यम के रूप में) धन्य करता है । मृत होती विद्योति 'अ' एक पक्ष में जुबना धीर एक में चलन हो जाता ही मृत्यु है । केवल मात्र इतनी ही प्रक्रिया का ज्ञान न होने से ही समस्त प्राणीमान म मृत्यु का भय व्याप रहा है । मृत्यु से डरना दर्शन की भाषा में धर्म निवेद्य कहना है जिससे प्राणी भ्रमानी समीचीन रहें । सारा ससार भय से जली रहता है । सब से बड़ी सदा मौत सब से बड़ा दुःख मौत इसी से टर डीर डग रहा आसमी ।

वद क कवि करता है—

तमेव विद्वान् न बिभाय मृत्यो ।

उसे जानकर मृत्यु का "रनभी" रखा ।

तमेव विद्वान् निष्कलमृत्युनेति नाथ्य पन्था विद्वेत्प्रमाय ।

यजुर्वेद ३१-१८

उस परमेश्वर का जानकर ही मृत्यु मे पाए जाता था सदा ही धीर कोई गान्त" है ही नहीं ।

"चा डर गया, किसी अनजानी वस्तु का दसकर जीव पना बचने का रास्ता है केवल मा की मोदी । मनी से मोक्षी गैरता क्या धारक मा के दानन

की पकड़ कर सहपा-सहपा हाथ ऊपर उठाता है । धातुओं से बेहूरा मीमा है । मा ने मोह में ले लिया, धर उसे किसी का डर नहीं, जो हाथ काप रहे मे से सब लग गये, मुट्ठीअ कच गयी धीर युवका ठानता है सब उस डरानी मयाह बस्तु पर ।

काल के पक्ष से डरे मनुष्य । पर-मात्मा हम सब की मा है, वह जयधमा है उसकी मोदी, उसकी सारण सभी मनी से मुक्ति विमाने वाली है । उसकी उपासना कर उसकी गोदी मे बैठें । पर पहले उसकी मोदी मे बैठने योग्य बन । बेस वह कैसा है ?

अक्रान्ति धीरो अमृत स्वयम्भू —

वह कामनाओं से रहित है धीर हम कामनाओं से घिरे हैं । ये कामनाएं ही हमारा बन्धन बन गई हैं । जो बन्धन हमने बांध लिये हैं उससे निष्काय होकर ही बसा था सफला है । सवार आदि का वह मासी धीर है, उसके बन्दी कोई शक्ति नहीं जो उसे प्रकमिस्त रह सके वह अनायासमान है धीर सब हर एक कोके पर कापने लगत हैं, पोडा सा भी दुःख हमारे दिन को सड़ना जाता है । पर जो उसका सम्बन्ध लेता है वह धीर हो जाता है । एतत्त से मारी विद्याल दुःख को वह तृण समझकर फेल जाता है । मनुष्य सर्वत्र कहलाता है 'कौण्डिल सरीर मरलु वना' है । आत्मा समर है, इस इन्द्र का योग्य शायी 'इन्द्रस्य गुण्य सत्ता' परमात्मा अजर अमर है, तो 'ो भी अमृत का मृत अर अपने पुत्रों से मृण, बर्न, महान कर्मी से सब प्राप्त कर समर हो जा ।' किन्तु वह तनी सचन है कि जब न उस स्वयम्भू (अपने आचार से विजमान परमात्म-स्वयम्भू) के स्वाभाविक मृण को अपने जीवन न उतारेगा । अनाया आचार स्वयम्भूया दूसरे के सहारे की आकाशा नहीं करेगा ।

अर धान्यरस प्रभु रसेन तत्प धान्यरस से भर-परा है । धान्यर का मोल निरन्तर बढ़ रहा है । तू ईर्ष्या, डप बुणा की प्राय म ममसता, करता रहा है । सपलपण बढ़त दूर तारा मजान खडाती रहती है । धा, मासी की मन्तो न 'न उस धान-रस स्वयम्भू ओ मोदी म बैठें, कुछ पल के लिए अपने धारन । विमस कर दे केवल मा की मोदी का चरम सुख, तुलु दुगु पुषी से प्यारे आतक को धाह्याद से चम-स्त कर देगा । उस मस्ती म कलस्य के उन्माद मे अरकर सवार बासा मे प्रयत्न हो । पर देख । कोई मुटि कोई

कनी जीवन में मत खूने देना । नहीं तो धर्म में हूँ निरगा धीर फिर उठना धीर की कठिग हो जाएगा । तेरा धार्य की पूर्ण कहा है, 'न कुतश्चनो' कही से मृत्यु नहीं है । धीर तुलु मृगपत्नी, चतुष्पाती, हीमताओं से बरे हो । याच रस एक योग ही अमरता के स्वयम्भू आरि को जीवन पद से रिक्त कर देता है । इन चिह्नों के बचना होना, जीवन नैय्या की एक खेद से, एक पक्ष से ही दुःख का सतार हो जाता है । उस अनुकम्पीय के अपनी तुलना करते हुए, अमरपण्य करते हुए अनुभव बना ।

धरा की है इहासल, युवा सा ही आह ।

विद्याला की इस अनुपम सुनिष्ठ मे उस विभिन्न चित्रकार की हार कम मे, हूँ बहुत मे देस । उसकी शक्ति हमारी के देव मे, विपु की मरणाधी सहरो मे विद्याई देवी । उसका तेज प्रभु की किछो मे दुष्टि-योकर होता । उसका मेरे पहाड़ों की प्रच-सता में नजबो के प्रशासन मे विद्याई देगा, उसका सामन्य रस कुली के सौर्य धोर युवाय मे फल निर्दरी मे प्रतीत होगा । यही रस पश्चिमी के स्वरो मे बहक रहा है । हर रचना मे उसकी पूर्णता दिखाई पडती है, कोई भी रचना कही से भी मृत्यु नहीं है । फिर उसी परमात्मस्वयम्भू की हार आत्मा मे, हर प्राणी मे स । सब एक विद्याला की सफाई है सबसे हमारा महारा माता है, सब अपने हैं हमारे अपने । फिर किस को कितना डर, सर्वत्र मन, धान्य के ही दर्शन होने । साधारण बैलना ही बर्न है, अपनी धान्य से विन्य व्याहार करता ही अमर है ।

मृत्यो अ मृत्युमाप्नोति स इह नाथेय पक्षति ।

## ऋषिवर महामना

नाथशरार प्राय

स्वशक्ति से किसी बरव्याप्ति—

उठा विद्या बरखी के मुन्नीय को,

मन्त्र प्रसूता कविताम्बरा मयी—

कछार मे ऐसी पावावगामी—

प्रबुद्ध कपा दुप पावकालना—

प्रबुद्ध की बाहुली पुण्य मगना,

समाय की जैसे रसत अन्धकार—

मस्तकवा सी सुधुपा पवतिनी ।

सतर्क अथा क्षीराम्भु की यिनी—

जहां न को कहेसता कठोरा,

ध्यायाड का वर्यचरीलमेव था

मुपुन था वह लीन्य कपाय ।

मुपरी शुक्रा, नवगन्ध व्याभ्रमा—

असा सखन नव पुष्पी मन्त्रय बा ।

विरल निपा पीडा के कुपुण्य से

स्वधातवी को स्वद्वय दाव है ।

विद्वान् से अमरवाद सा अष्टिम—

अनुप्राणी मे योगिन राय था,

करस्य अयोक्तेत वद को विद्या—

उतार चला शूचिवर महायता ।

स्वरायण का शूचि वंश द्रष्टा—

सोकेत ऊत बर्मा का इतार्थ था,

बडे उसी का हृद धीष्ट विन्य—

अखन चेता स्वरायण के विर ।

## सम्पादकीय

अमर

## आयसन्देश

धर्मवीर पं० लेखराम

## अमर बलिदान

धर्म पर बलिदान होने वाले वीर योद्धा पं० लेखराम का स्मरण आते ही एक दिव्य धाकड़ि मानसगण पर उभरती है। एक ऐसे माँझी की याद घाती है जो उनकी नदी के प्रवल वेग का विपरीत धारा में अपनी नाव खेता चलना है और कभी थकता नहीं निराश भी नहीं होता। ससार ऐसे लोगों को उमसल करता है। धर्म की धून के धनो पं० लेखराम का जीवन महर्षि दयानन्द और वैदिक धर्म के प्रति पूरा समर्पित था। व धरणी धर्म-प्रचार यात्रा में कभी थके नहीं रहे नहीं। विदेशी घडवन्धो के जाल में भारतीय संस्कृति बिगल शाताब्दियों से जकड़ी बली खा रही है। इस देश के भोल भाल नागरिकों का खल वल से धर्म परिवर्तन किया जाता रहा है। १९वीं शती में हिन्दू धर्म उस कच्चे घाटे के दीपक की तरह हो गया था जिते घर में रख तो बड़े ला जाय और बाहर रखते हैं तो कोए उठा ल जाए। किसी के छने नाम से ही धर्म से अलग जाति से अलग कर दिया जाता था। ऐसे कच्चे धाने जसे अम को तोड़ने के लिए धनेक मत्तलमन्धो ईसाई धर्म मुसलमान हिन्दुओं को अपने जाल में अकरो बल जा रहे थे। उस काल में महर्षि दयानन्द द्वारा दिया गुरु सुदान चक पं० लेखराम ने आने हाथ में उठा लिया। और उसका ऐसा कुशासन के साथ संचालन किया धनेक बिछड़ आई फिर हिंदू होकर अपने पुराने घर में लौट आये। उनके जीवन की इस घटना से तो धरणी रोमाञ्चित हो जाता है। जब उन्हे पता चला धर्म का मैं कुछ लोग मुसलमान होने जा रहे हैं। वे उस समय घर बैठे भोजन करने ही जा रहे थे कि पत्र द्वारा उन्होंने सूचना मिली उसी अवस्था में उठकर व रेशमारी द्वारा उस गांव के लिए चल पड़े। उस गांव में कोई देव स्थान नहीं था उन्होंने बलती गाड़ी से छुआग लगा दी। पल्ले से गिरने से उन्हें भी लगी धून से रगे बरबो से ही व उस स्थल पर पहुँचे जहाँ कुछ हिन्दू भडकाव में आकर अपना धर्म परिवर्तन करने जा रहे थे जैसे ही उन्होंने पं० लेखराम को और उनके त्याग को देखा वे भाव बिभोर हो गये। उन्होंने यह कह कर धर्मपरिवर्तन से अपना निश्चय बदल लिया कि जिस धर्म में ऐसे हमारे रक्षक आई हैं जो अपनी जान पर खेल कर हम को बचाने आये हैं हम उस धर्म को कदापि नहीं त्याग सकत।

पं० लेखराम ने अपने जीवनकाल में धनेक पुस्तक लिखी जो लगभग ३१ हैं। ये सभी पुस्तक विद्याथियों के प्रश्नों के उत्तर में लिखी गयी। महर्षि दयानन्द के प्रामाणिक जीवन बराल को लिखने का धर्म भी धर्मवीर लेखराम की ही बाता है। देश के काने काने में जाकर उन्होंने बलमत्त तन्त्र एकत्रित किया। हिन्दू देवी देवता और संस्कृति पर कीच उछालने वाले धनेक मुसला उनकी विषमियों से उन्होंने धनेक बालाया भी किये। उनकी विद्वत्ता से तत्परहारी से विषमार्थ जनों में श्रुतक फल गया। उन पर मिर्जापुर प्रस्ताव लाहौर मेरठ दिल्ली बम्बई की प्रदालनों में मुकदमे भी बाल गए परन्तु प्रदालन द्वारा उनके लवो भाषणों में कोई भी धास्यण की बात न पाकर मुकदमे बालर कर दिए गए। बाजी और से लोहा लने से मुसलमान बलान्ड नुद हो गए। ऐसे ही एक नीच हत्यारे की व बलि चर गये।

उन्होंने धर्ममण्ड के भन्ध भवन की बनाने में नीच का काय किया है। ऐसा उपदेशक ऐसा लयक ऐसा धर्मर लेखक ऐसा क्रांतिकारी पाकर धायसमाज गमित है। उनके बीमे से २००० रुपये मिल। व उन्होंने गुरुकुल कागड़ी में दान कर दिए छात्रवृत्ति के लिए। उसी छात्रवृत्ति से पं० बुद्धदेव विद्यालकार जेसा कोविन्द विद्यान धायसमाज को मिला है। धर्म है और लखराम धर्म है उनको पत्नी श्रीमती लक्ष्मीदेवी। धर्म हैं महर्षि दयानन्द जिन्हें ऐसे बलिदानो शिष्य मिल।

धर्मसमाज का धनीत बलिदानियो से भीषित है परन्तु आज हम उन जो बलिदानो गहरी की शीघ कषाओं को मूलते जा रहे हैं। स्वामी अद्यानन्द और महात्मा हसराम को तो फिर भी स्मरण किया जाता रहा है

शहीद लखराम कुछ उभेखित हो रहे हैं। यदि वीरता को न पूजा न मराहा तो वीरता को जननी बाक हो जायेगी। क्योंकि—

प्रणम गहरी मे यदि हम न लगे  
धारावी बलती हुई साक हो जाएगी।  
यदि वीरो को पूजा हम नहीं करगे  
तो सब मानो वीर। बाक हो जाएगी।

वसपाल सुधासु

## स्मारिका के प्रति

मान्यवर

दिल्ली आय प्रतिनिधि सभा की धोर स प्रकाशित स्मारिका का धवनोक्तन किया। यद्यपि इस स्मारिका का बायोजन सयोजन एवं प्रकाशन सभी कुछ समीचीन है पर इसका सबप्रथम सम्पादकीय लम् महर्षि दयानन्द एक ग्याति स्तम्भ सचमुच इस स्मारिका की भी एक ग्योति है। सन् धनुष्येदीय इस लघु निबन्ध में लयक ने महर्षि के सर्वज्ञाण ण्ड्य गुरु। को मञ्जुल धीय प्राञ्जल भाषा में जिस साहित्यिक विधा स प्रस्तुत किया है वह स्मारिका में अपना एक धनोम्य प्रतिपादित करती है।

तत् तिसम्बर के आयसन्देश के एक धक में स्वामी अद्यानन्द जी की प्रदल लयक की एक धनपम अद्याञ्जलि भी देवन की मिली थी। परन्तु उसमें भी कही धविक बड़ बड़कर महर्षि दयानन्द के प्रति समर्पित यह अद्याञ्जलि है।

स को पन्कर मैं इस विचार में गय गया कि क्या महर्षि के प्रति इससे भी मन्ध कोई अद्याञ्जलि हो सकती है? यद्यपि कान्यो व निरखवि विपुला च पृथ्वी इस उभिन के धनसर किसी क्षमता की धातन कहना कठिन है पर तु मेरा मन यह निश्चित रूप स स्वीकार कर रहा है कि महर्षि के प्रति यह खसोत्तम अद्याञ्जलि है।

परम पिता परमात्मन की प्रतिभन के धनी क्षवितक सुधासु एक नही धनेकानेक समुत्पन्न करे जा धपनी ण्ड्य प्रतिभा की नन्ध रक्षिदी स धाय-साहित्यिक गयन की सदा समालोचन करते रहें। इम मगल कामना के साथ।

मगनमिलाधी

पुरे कुमार लक्ष्मी माहिलाबाय

दिनांक १० २ ८५

## स्मारिका सम्पादन

आप की मेरी हुई स्मारिका प्राप्त हुई बहुत बहुत धायव द। स्मारिका का संपादन बहुत धन्यवाद है लख धन्य भी है प्रणयामयक व शान्तवक था सभी कविताएँ धन्यो सुन्दर हैं। धाय कोनो से इस स्मारिका क सम्पादन में स्वस्थ धन्यकोए धनीदेख और गुरुधाहृत वा नु बर धनियव धनियव णिया है

हादिक ववाई

रिषिलल मायो सिंह

बबो ( मरठ )

## लेखक महानुभावो से—

हम आपके लेख एवं कविता का स्वागत करते हैं किन्तु—

१. अपने लेख वद दगन उपनिषद स्मृति कल्पसूत्र धारण्यक ब्राह्मण्यन्ध गीता रामायण नाति ऐतिहासिक धाय व धी को धायव परम्परा की ध्यान में रखकर भज। किसी एक विषय से सन्धधित लेख भी अपेक्षित है।
२. सतसय बाटिका सतम्भ के लिए वेदायदेश (मन्ध ग्याख्या) जो सरल एवं भाव पूरा हो की नितान्त धायस्यकता है।
३. ईश्वर कवित ऋषि दयानन्द एवं बलिदानो वीरो का शीघ कथा सुमधुल अतिशय प्रशंसित हो प्रकाशित किए जा सकये।
४. जिस लेखक एवं कवि की रचना और लेख प्रकाशित होंगे उन् धायसन्देश में वष तन विशेषाक सजित नि शल्क दिया जाता रहेगा।
५. किसी लेख एवं कवित के धनोक्तन होने की दवा में वापस भेजने के लिए हम बाध्य नहीं है।

—सम्पादक धायसन्देश









गुरुकुल कांगड़ी पुस्तकालय में सन्दर्भ सेवा

जगदीश विद्यालकार

पुस्तकालय ग्रन्थालय, पुस्तकालय कांगडो विश्वविद्यालय, हरिद्वार

पुनः कालावधिं गच्छन्ते ये प्रसन्ताः क्षीण-  
 ध्यानवन् । मुहुःकुतः पुनः कालावधिं को म्या-  
 नसो यो मुहुः क्षणं काशयो को म्यानास के  
 स्यादु यो ही । मुहुः को म्यानासः त्वामि  
 श्रान्ता यो ही । यत् १२०२ ये म्यान्ति द्यामि  
 स्यन्त्यन्ति के शिशा धमन्यो विचारो के  
 स्य रूपं धनं ये म्यान्ति को । म्यान्ति ध्यानन्त  
 स्यन्त्यन्ति ये म्यान्त्यन्ति को म्यानास करते  
 हुतः ध्यानं यत् न स्यो म्यान्ति द्यामि वा वि  
 कि धारयन्त्यान्ति के प्रपञ्चं येन स्येकं ध्या-  
 नं त्वान्यायं ये हन्ति ज्ञानतु कर्तुं न म्या-  
 नसो यो वृद्धि तः प्रथिता का म्यामो  
 वृत्ताः हे । म्यान्ति ध्यानन्ते ये प्रज्ञास ये  
 ज्ञान को यो ध्यायन्त को यो प्रयुज्ज करत  
 हुतः ध्यायन्त्यान्ते के धनियन्त येन स्य  
 ध्ययन्ता को यमीहृदु किम्या त्रिके धनु-  
 श्वा प्रथयन्त्यान्ते के धर्मिकाः को म्यामो  
 ये पुनः कालावधिं का प्रथयन्ति किम ।

प्रायसमाज की इस मरबना ने पुस्त-  
 कालघरायों के वेद का मुजुन जमाना  
 मरब मरबजी ही मुनू हस्य हदित की प्रभा-  
 शित बरना ही जियक प्रमनयें भाय जना  
 की आरि ने य भाज्ञन किवा की प्रसंक  
 प्राय मरबना ने मालूज रह तथा बिबा  
 की मरब का । पुस्तकालयायन के स  
 की अयबस्था के साथ आरि प्रयसक  
 यह एव प्रबुख सव्य का की दसके प्राय  
 समासक प्रबन सव्य को पहुचाने हेतु  
 श्रेष्ठ प्रयो का पारमय निरुतर करता  
 रहा । स्वामी प्रमनयन ने ही मुजुन की  
 स्वापना के साथ ही पुस्तकालय निमार्ण  
 को यो गभीररूप स थायन दिया ।

आर्यसमाज और गुरुकुल पुस्तकालय—

स्वामी दयानन्द सरस्वती को भारत में पुस्तकालय आन्दोलन का पितामह कहा जा सकता है। स्वामी दयानन्द सरस्वती ने उस समय समाजों की स्थापना के साथ ही प्रत्येक समाज में एक पुस्तकालय की कल्पना की तथा उस पुस्तकालय की देख रेल त्रु पुस्तकालय अभ्यास के पद का सजन किया ।

सत्याप्रकाश के रूप में स्वामी  
 दयानन्द ने जिन वृत्ति का जन समुदाय  
 के रूप में सामने रखा, वह वृत्ति भी हजारों  
 सन्दर्भों से सत्यासत्य के तथ्यों को उद्-  
 भाषित करने के महान् सन्दर्भ ग्रन्थ के  
 रूप में प्रावेष्टित है। वैदिक विषयों पर  
 प्रमाण सहित ज्ञान देने वाला ऐसा  
 सुन्दर सन्दर्भ ग्रन्थ दिव्य के पुस्तकालय  
 को स्वामी दयानन्द से प्राप्त हृद्य।

गुरुकुल कांगड़ी पुस्तकालय में श्री  
श्रद्धि दयानन्द के इन विचारों का प्रति-  
बिम्ब बहुत रूप से देखने को मिलता है।

श्रद्धा दयानन्द के समस्त ग्रन्थ तथा उन ग्रन्थों पर लिखी विस्तृत समीक्षाएँ पुस्तकालय में प्रायः सामाजिक सग्रह के रूप में पुष्कल कक्ष में स्याजित हैं। इसके प्रतिरिक्त वैदिक सिद्धांतों एवं प्रायः सामाजिक जीवन मूल्यों पर प्रकाश डालने वाले सहस्रो ग्रन्थ भी इस कक्ष के साथ सम्बद्ध हैं।

गुरुमुख के ज्ञान का तथा गुरुमुख के पुस्तकालय का प्रत्यक्ष गम्यत्व सम्बन्ध है। गुरुमुख में प्रत्येक ज्ञान ज्ञानी जिज्ञासा प्राप्त करने हेतु पुस्तकालय की धारण में जाता है, तथा पुस्तकालय के द्वारा उसकी 'मै' ज्ञान मुष्ठा को विपुल वैदिक साहित्य के माध्यम द्वारा वृत्ति किया जाता है। पुस्तकालय में रखी उपस्थिति पत्रिका के प्रमुख गुरुमुख में पढ़ने वाला हर दूसरा ज्ञान पुस्तकालय का उपयोग करने पुस्तकालय जाता है।

**सन्दर्भ सेवा**

पुस्तकालय की मदद सेवा का प्रति-  
 प्रायः समझते हैं। पहले समझते क्यों  
 अनुसार समझ गये का प्रतिप्रायः धर्म  
 समझ लेना चाहिए। समझ समझ समझ  
 उपाय हम (बाबा या बुना) में 'सक'  
 जान लगे कर बना है। धर्मों  
 माय बापने वाला, सर्वोच्च करने वाला,  
 मिलाने वाला जो कि प्रतिपादित करते हैं।  
 दो या अधिक वस्तुओं का संयोग। पुस्त-  
 कालय के समर्थन में दो बिन्दु हैं पाठक तथा  
 पुस्तक पाठक का भ्रम से लय हो  
 जाना ही सर्वोच्च सेवा की मुख्य लक्ष्य है।

पुस्तकालय के द्वारा पाठकों को दी जाने वाली वैयक्तिक सहायता को ही मन्दिर सेवा कहा जा सकता है। मन्दिर सेवा वा केन्द्र विस्तृत पाठक ही होता है जिसे वास्तव में पुस्तक से कराया जाता है। एक विदेशी विद्वान् जेम्स शार्प वायर ने पुस्तकालय की मन्दिर सेवा की व्याख्या इन शब्दों में की—“प्रध्ययन और शोध काय हेतु पुस्तकालय समूह की व्याख्या करने में प्रथम सहायक विद्यार्थियों और प्रयोग-प्रचारिक वैयक्तिक सहायता को मन्दिर काय कहते हैं।”

उपर्युक्त परिभाषा के सन्दर्भ में मुह-  
मुल पुस्तकालय का सर्वाधिक उपयोग यहाँ  
के छात्र, प्राध्यापक एवं सभीपथ्य रहने  
वाले शोध अध्येता निम्न प्रकार से उठाते  
हैं।

बांझित पाठ्य सामग्री में सहायता—

मुकुल में पढ़ने वाला प्रत्येक छात्र प्राध्यापक एवं शोधकर्ता पुस्तकालय में उपलब्ध पाठ्य सामग्री निम्न प्रकार से

सोजने का कार्य करता है।

१४० प्रतिष्ठान छात्र, प्राध्यापक  
एक कर्मचारी सम्बद्ध सुलुका सम्बन्ध कर्म-  
चारी से मुलुका में नाम या लेखक के  
प्राधार पर सोचिये कर्मचारी से बांझित  
मुलुका प्राप्त करते हैं। इस कार्य में मुलुका  
पात्र में २० वर्षों में यात्रा कर कुलितस्त्री  
गोविन्द एव वनवास का बांझित मुलुका को  
के सम्बन्ध में बांझित वस्तु अनुभव का  
साम गृह के छात्र एव प्राध्यापक लिखित  
कर के उत्तरे हैं। मुलुका का नाम करते  
होय कर्मचारी उत्त मुलुका को पाठक के छा-  
पड्डा देते हैं। इस के बांझितस्त्र मुलुका  
पात्र में २० प्रतिष्ठान पाठक बांझित  
पात्र के सम्बन्ध में हेतु मुलुका प्राप्त में  
उपलब्ध विषयानुसार रिजिस्ट्री की सहा-  
यता लेते हैं। जिसके प्रत्यन्त उत्त मुलुका-  
पात्र के विषयानुसार कर्मचारी जानकारी  
मुलुका हो जाती है। बांझित मुलुका का  
वर्णित सम्बन्ध नगर रिजिस्ट्री के देखने में  
मिल जाता है। जिससे मुलुका प्राप्त कर्म-  
चारी को देखर प्राप्त कर लेते हैं। २०  
प्रतिष्ठान पाठक कार्य के दोलाप की सहायता  
से बांझित नामधारी को लेला करते हैं।

२ नवीनतम विश्व साहित्य की जानकारी निम्न सन्दर्भ ग्रन्थों के माध्यम पर दी जाती है।

१—युक्स इन प्रिन्ट (यू एस ए) १९८३—अमेरिका में १९८३ तक प्रकाशित समस्त पुस्तकों की जानकारी लेखक विषय एवं शीर्षक के अनुसार।

२—ब्रिटिश बुक्स इन प्रिंट १९८४-  
ब्रिटेन में प्रकाशित १९८४ तक की समस्त  
पुस्तकों की जानकारी।

३—ब्रिटिश नेशनल बिब्लोप्राफी  
ब्रिटेन में उपलब्ध मसूदा प्रकार की १६८  
तक की पुस्तकों की सूचना ।

४—इण्डियन बुक्स इन प्रिन्ट  
१९८४—भारत में १९८४ तक प्रका-  
शित समस्त पुस्तकों की जानकारी देने  
वाला सन्दर्भ ग्रन्थ ।

५—पुस्तक समीक्षा पत्रिकाओं द्वारा नवीनतम पुस्तकों की जानकारी पुस्तकालय में निम्न पुस्तक समीक्षा पत्रिकाएँ आती हैं।

१—बुक रिब्यू डाइजेस्ट

२—इनप्रिन्ट

३—इंडियन बुक क्रोनिक्लस

४—इंडियन बुक इन्स्टीट्यूट

### ५—साहित्य परिचय

६—विकास न्यूज इत्यादि

विभिन्न प्रकाशकों के कटेलाप जो  
विषयानुसार व्यवस्थित हैं, प्रयोजक

हेतु पाठकों को उपलब्ध हो सकते हैं।

शोध के क्षेत्र निश्चित करने में  
सम्बन्ध सहायता—

गुरुकुल का कोई छात्र शोध उपाधि हेतु पंजीकरण कराना चाहे तो उसे पुस्तकालय के द्वारा शोध के उसके हवि के विषय की जानकारी दी जा सकती है तथा बहुत से शोध छात्र अपना विषय चुनने में इस सन्दर्भ सेवा का लाभ उठा रहे हैं। शोध छात्रों को सेवाएँ निम्न प्रकार से दी जा रही हैं।

१ पुस्तकालय के मन्दिर विभाग में भारत के सभी विश्वविद्यालयों में १९६३ तक किये शोध कार्यों की जानकारी 'पुस्तक विभाग' ब्रांच इन्डियन यूनिवर्सिटी द्वारा संचालित 'बिब्लियोग्राफी कैंड डॉक्टरल डिपेंडेंस' १९३०-१९६३ नामक सन्दर्भ ग्रन्थों की सहायता से दी जाती है। इन बहुमुखी सन्दर्भ ग्रन्थों से शोध छात्रों को यह जानकारी हो जाती है कि उनके शोध के विषय में शोध का भारतीय विश्व-विद्यालयों में कहाँ हुआ है तथा किसके निबंधों में यह कार्य किया गया है।

२ इसी प्रकार मयात्र विज्ञान, कला तथा विज्ञान के शोध छात्रों को भारत वर्ष के विदेशविद्यालयों के ही शोध कार्य की आवश्यकता नहीं दी जाती बल्कि विश्व के प्रमुख विदेशविद्यालयों से उनके शोध के शोध की भी सहायता करी जाती है इस को जानकारी "विश्वविद्यालय एम्बेस्सी प्रोग्राम ए एन सी" के माध्यम से दी जाती है । यह सम्पूर्ण प्रथम भारतीय पत्रिका के रूप में निर्मित विश्वविद्यालय प्र ए ए ए के लिए सहायता है । इनके द्वारा प्रेषण किये जा सकीय के अनुसार किन्हीं स्थानों का साहस से कर लेती है प्रकृत होता है ।

पुस्तक व्यवस्था में सहायता है

पुस्तकालय में प्रध्यापक

माहिर्य को क्रय करने की सम्मति देने  
 हेतु उन्हें निम्न प्रकार की सन्ध सह-  
 यता पुस्तकालय में उपलब्ध कराई जाती  
 है।

(क) विषयवार पुस्तक विक्रेताओं के नवीनतम केटेगोरी प्रस्तुत करने।

(ख) पुस्तक समीक्षा पत्रिकाएं उपलब्ध कराई जाती हैं।

(ग) नवीनतम पुस्तको की प्रदर्श-  
निया प्रायोजित की जाती है। पुस्तकालय  
द्वारा गत एक वर्ष में विभिन्न पुस्तक  
विक्रेताओं को आमंत्रित कर तीन पुस्तक  
प्रदर्शनियों का आयोजन हुआ। इन प्र-  
दर्शनियों के माध्यम से प्राध्यापकों द्वारा  
पुस्तकालय हेतु रु ५० लाख रुपये मूल्य की  
अनमोल पुस्तको का भयन किया गया।

३. विश्व में प्रकाशित पत्रिका साहित्य की जानकारी—विश्वविद्यालय के प्राध्यापकों को विश्व में प्रकाशित उन के विषय में सम्बद्ध पत्रिकाओं एवं उन में

शेष पृष्ठ ११ पर





## आर्य जगत् के समाचार

### कुष्ठ निवारण धाम का शुभारम्भ

नागदा । धामसमाज द्वारा सञ्चालित धातुवैदिक चर्मण्य धोषवाधन के तत्वावधान में कुष्ठ निवारण धाम का शुभारम्भ महाभारत प्रोग्राम १०० एम० वाणी रात्रिपाल मध्य प्रदेश के कर कमलों द्वारा दिनांक २३ १ ८२ को सम्पन्न हुआ ।

इस अवसर पर राज्यपाल महोदय न उपस्थित बिहास जन समूह की सम्बोधित करने हुए कहा कि धामसमाज के स्थापक महर्षि दयानन्द सरस्वती ने समाज सुधार के लिए महान सफलता काय की है उनके द्वारा स्थापित धामसमाज की भा समाज सुधार एवं राष्ट्र निर्माण के कार्यों में प्रमुख भूमिका रही। धातुवैदिक चर्मिन्सा पद्धति का हजारी वर्षा पूर्व हमारे यहाँ धारिष्कार किया गया था। धातुवैदिक से ह्रा पंचिचमी जन्म ने ऐतिहासिक का धारिष्कार किया। सुधी की बात है कि इसके महत्त्व को हम फिर से महसूस करने लगे हैं। हमें इसमें धातुवैदिक नये तरीके अपना का इसके विकास के पथ पर धामें बढ़ाया है। कायवेनु धोषिचर्मियों के कुष्ठ निवारण में सफलता मिले यही सही सुख कामना है।

समय से पूर्व समारोह स्थल पर राज्याध्यक्ष महोदय के पधारने से जगत का हृदय दग्ध हो गया। स्वागत द्वार से कुष्ठ निवारण धाम तक कठार से लड़ी मन्त्री बालिकाओं ने धामके शुभाभिनमन पर पुष्प तथा करने स्वागत किया। तब प्रथम सत्पत्नीक धारिणें यज्ञ वेदी पर हो रहे यज्ञ में वर से पूर्णहृति दी। इसके बाद दीप प्रज्वलित करने के पद्धति निवारण धम का शुभारम्भ किया। धाम का बड़ा हिन्दू सुल्लिखित तिलक ईसाई समुदाय के प्रतिनिधियों ने मानाओं से स्वागत किया इसके साथ ही धाममान मानवा का धोर से था डा० एम० माधविका धातुवैदिक चर्मण्य धोषवाधन न्नी धार से था वेवाराधम धाम न्यपराधिका नामवा की धोर से श्री बन्धुवी पोरवाल ने पु० मानाओं से स्वागत किया। कायकम की धम्यनवा श्री बी० पी० कगटा उपस्थिता बालिधर देवान नामवा द्वार की गई तथा सनायन की टी० की० सिद्ध ने किया। कायकम की सफलता न श्री बी० के० तिवारी की प्रमुख भूमिका रही समारोह की मन्त्र प्रशंसा की गई।

प्रयक—बोर्बलित राठी

मन्त्री—धामसमाज नामवा

पञ्चाभ केसरी साता साज्जतराय के सत्वरणो का सफल

### एक निवेदन

प्रति स्वर्गीय पञ्चाभ केसरी साता साज्जतराय का परिचय देने की धाम एवमा नहीं है। जैसा स्वर्गिण है वे महान् देवसम हृदयकी राजनेता राष्ट्रहित के मन्त्र प्रवृत्ति मन्त्र तत्ता प्रदानन क धमर सहीध प्रमर विचारक कुशल सम्पादक स्वाति प्रान सलक धात्रिन्वा वक्ता प्रवित्तिगत सम्यक रहा हो—यह स्वर्गक निन्दन के प्रबल उपायक सगठित धम धाराशन के जनक तथा सनाय सुधारक ने। उनके बनेक धामन चरित् उपलब्ध है जिनम उनके जीवन तथा सत्यतोषी काय कताओं का विवर विवरण मिलता है। पर उनकी सत्वरण प्रथान कई पुस्तक नहीं मिलती। सत्वरण व्यक्तिक के व्यक्तित्व तथा चरित्र की मूढ तथा धारण विवेचिताओं की उद्घाटित करने हैं।

मैं साता साज्जतराय के सत्वरण सलकन के काय में वर धनक तथा से सवा हुआ हू तथा इस काय में पर्याप्त सपत्ता भी मिली है। देश विदेश क सपत्तम १३० व्यक्तियों क सम्मरण प्रथान लेख प्राप्त हो चुक है। सत्वरण लिखने क वे हो धारिकारी हो सलक हैं जिनका साता जी से व्यक्तित्वगत सम्यक रहा हो—यह स्वर्गक निन्दन का रहा हो प्रथमा दूर का—जिन्होंने उनके धामिन्म में रहते हुए उन्हें बेला सपत्ता हो बिम महानुभावों से सलक जी का सम्यक रहा हो उनसे मेरा विमर प्राप्त है कि वे धमन सत्वरण प्रथान लेख लेजने का कर्ण कर। उन महानुभावों क नाम तथा पत्त की सूचना के लिए भी निवेदन है जो साता जी क विषय में सम्प्रतिगत धारिकारी रखत हैं।

धारा है पञ्चाभ कसरी की स्मृति में सम्प्रति इस पुनीत कार्य में सब सम्बन्धों का सहव तथा पुष्प सहयोग प्राप्त होगा।

सिद्ध करण

एन १७ कोटरा कुलतामावा भोजन ४६३-००३

### बलवीर हकीकत राय को याद किया गया

धामसमाज मन्दिर न्यू बोटी नगर में बमबीर बाल हकीकत राय का बलिदान विषयक बड समारोहसूचक मानाया गया। धामके स्कूल क छात्र छात्राओं ने साषण कविता नाटक एक सामूहिक मान ने भाव नेकर बलिदायी वीर क कार्यों को स्मरण किया।

इस अवसर पर राजनीय महासुध बमपात्र की ने सभाम १५०० ३० क पारितोषिक सत्वरण वीर्य कष ने तथा बहुत ही आनन्दक पुस्तकें विजयी छात्रछात्राओं की प्रदान की।

तीरराम धाम

सयोजक—बमबीर बाल हकीकत राय बलिदान समिति।

### आर्यसमाज दरियागज का निर्वाचन

धामसमाज दरियागज नई दिल्ली २ का धारिक चुनाव दिनांक १० २ ८२ में

ने विशिष्ट सम्पन्न हुआ जिसमें निम्न धारिकारीयण से धाम सम्प्रति के चुने गये।

१ श्री बी० बी० सिंह—उपधान

२ श्री धमपाल गुप्ता—उपप्रधान

३ श्री एच एम मदनमर

४ श्री श्रीरामपाल स्वामी—मन्त्री

५ श्री देव मादक धाम—उपमन्त्री

धारक मन्त्रो क चुनने का धारिकार धारिकारी वर को सभा ने प्रदान किया।

मन्त्री धामसमाज दरियागज नई दिल्ली २

### सीताष्टमी एवम् ऋषिबोधोत्सव

प्रार्थीय धाम पालिका सभा क सत्वाधमाल में धाम कना मुकुल न्यू रावेज नगर में २७ फरवरी को श्राव ११ ३० बजे में ४ १० तक श्रीमती कातिचमी धामिहोत्री की धम्यज्ज्ञता ने समारोहसूचक मानाया जा रहा है।

इस अवसर पर श्रीमती सुमदा वर्मा श्रीमती पद्मा वर्मा साधिका (मेन्ट), डा बलि प्रभान धोमती सुपमा मन्त्रीया धारि धरने भाग्य एक कविता पत्र करने।

प्रधाना सत्वरण महान् सम्प्रति—प्रकाश धाम

अन्तराष्ट्रीय युवा वय पर कुन्बाल दूर्गमिन्द का अग्रभूतपूर्व भायोजन

नेता जी सुभाष शाखा प्रथम, भगतसिंह शाखा द्वितीयः सर्वोत्तम खिलाडी का पुरस्कार आशे थाऊ ने जीता



केन्द्रीय धाम युवक परिषद् दिल्ली प्रदेश के तत्वाधान में युवा वय के उपसम्य में सल्लुत्तम विजय पर २६ व २७ जनवरी ८२ को छलसा स्टेडियम माडक टाऊन दिल्ली में कुन्बाल युवाकाओं का धामोन्नत किया गया। परिषद् की धामाधी के इस धामोन्नत में १२ टीमों ने भाग लिया जिस में नेता जी सुभाष साखा राणी बाल प्रथम व बिकाल नगर की मयल साखा द्वितीय तथा पुष्प तथा बहुदूर नगर का तीसरा स्थान रहा।

इस के अतिरिक्त यवोच पुरी जहागीर पुरी किलमय ऋषि नगर, मुद्रा, जि नगर सन्धी मन्त्री सलक पुर दावकी की टीमों ने भाग लिया। प्रथम द्वितीय साखा की जीत तथा विजयियों को बँटव दिए गए। सर्वोत्तम विजयियों की धामा बाऊ विजयन नगर की कुन्बाल बेलाता विजयों के प्रतीक चिह्न से विशेष पुष्पक किया गया।

सल्लुत्तम धाम

## गुरुकुल कागड़ी पुस्तकालय

(सेब पृष्ठ नं ८)

प्रकाशित सामग्री की जानकारी निम्न तथ्यों से दी जा रही है।

(क) धार्मिक विषयों में धर्मार्थीय शार सर्वे पत्रिकाएँ मगराई जा रही हैं जो अब उन विषयों से सम्बन्धित सामग्री का शार सर्वे प्रस्तुत करती हैं। जैसे सांस्कृतिक एम्बुलेंस धार्मिक-मनोविज्ञान की १००० पत्रिकाओं का शार सम्बन्ध प्रस्तुत करती हैं। विभीकनीय विष्णु एम्बुलेंस, नौसिक विज्ञान की १००० पत्रिकाओं का शार प्रस्तुत करती हैं। विवेकानन्द एम्बुलेंस कला एवं विज्ञान में विभिन्न विषयविशालों में स्वीकृत प्रत्येक पत्रिका प्रक में १५०० शोध कार्यों के शार सर्वे पत्रिका जाता है। इसी प्रकार कर्नाट कस्टेस के नाम से साप्ताहिक पत्रिका में कला एवं विज्ञान की १०० धर्मार्थीय पत्रिकाओं की विषय सूचिका दी जाती है। मैक्सिमिलियन रिच्यू के शार साहित्य के विषय में प्रकाशित साहित्य साहित्य का शार सर्वे प्रकाशित किया जाता है। ये सब पत्रिका सब समय पुस्तकालय में सर्वत्र हेतु हर समय विद्यमान रहते हैं।

(ख) बहुधा प्राध्यापकों की 'धर्मार्थि हस्तसंस्कृत परिचोदिकाल' निर्देशिका के माध्यम से यह जानकारी भी प्रविष्टि की जाती है कि उन के विषय में पत्रिका 'साहित्य' कहा जाता है किन्तु उक्त का निष्कर्ष होता है। भारतीय पत्रिकाओं की जानकारी प्राध्यापकों की कार्यकारी शासक रिच्यू परिचोदिकाल एवं ग्रंथ एवं एम्बुलेंस पर धार्मिक निर्देशिका के शार भी जाती है।

६ वैदिक सिद्धान्तों की मुख्योपनिषद् करने वाले प्रमाणाओं की प्रविष्टि का प्रमाण लघु गुरुकुल के स्थापना सूचियों से जुड़ा हुआ है। बहुधा यहाँ पढ़ने वाले डॉ. से तथा प्राध्यापकों के वैदिक सिद्धान्तों के सदन जानने की जिज्ञासा रहती है। इस दृष्टि से पुस्तकालय के रूप में हम में बहुत केनन धार्मिक नेमोनिष्ठ का सर्वथा नवीन प्रयोग किया। उस के अन्तर्गत विचारों का लेखक के द्वारा याद किए गए समय १००० वैदिक मन्त्र एवं वर्णन सूची या सचयन किया गया जिसे वर्गीकृत विषयानुसार बांटा गया। बहुधा की भी विज्ञान सार वैदिक सिद्धान्त पर प्रमाण जानना चाहे उस याद किए गए मन्त्रों का उल्लेख नया सदन बिना किसी विषय के दे दिया जाता है। इस प्रकार की सर्वत्र सेवा में सदन कर्ता का वैदिक बाध्यता में गहरी रूढ़ि होना बाध्य है यह एक सर्वथा नवीन प्रयोग है तथा गुरुकुल पुस्तकालय के पुस्तकालय-मन्त्र की हैसियत से लेखक इस का निष्कर्षण सर्वत्र सेवा में कर रहा है। इस

प्रकार की एम्बुलेंस पुस्तकालय नेतृत्व, प्रविष्टि, कर्म कर्म, मोक्ष, मोक्ष सरकार धार्मिक के बारे में गुरुत्वं सर्वत्र किए जाते हैं।

गुरुकुल प्रकाशन सर्वत्र सेवा— गुरुकुल कागड़ी विषयविशाल द्वारा शोध एवं प्रमाण के वेद में सत ८० वर्षों में बना भारी बोझ हुआ है। प्रविष्टि लोगो को इस की जानकारी न होने से उन्हें गुरुकुल साहित्य के क्षेत्र में योगदान नमाने बिना ही रहता है। बाहर के विद्वानों के तथा गुरुकुल के छात्रों एवं प्राध्यापकों की भी बहुत से प्रमाणाओं पर विषय प्रविष्टि की जानकारी अब निम्न प्रकार से उपलब्ध कराई जा रही है।

१ पुस्तकालय के द्वारा गुरुकुल विषय-विशाल के संपन्न शोध एवं प्रमाण कार्यों की एकीकृत कर दिया गया है। जिस का ध्यानपूर्वक निम्न सूचनाएँ पाठकों तथा विज्ञान शोध छात्रों की एक ही प्रकाशन में उपलब्ध हो जायेंगी।

(क) गुरुकुल के स्थापना द्वारा प्रकाशित प्रमुख साहित्य।

(ख) गुरुकुल के द्वारा प्रकाशित सम्पूर्ण साहित्य की जानकारी।

(ग) गुरुकुल के द्वारा प्रकाशित धर्मार्थी साहित्य की जानकारी।

(घ) गुरुकुल द्वारा स्वीकृत वी० एच० बी० शोध प्रश्नों की सूची।

(ङ) शोध कार्य प्रवृत्ति में।

(च) गुरुकुल में स्वीकृत शोध उप-क्रम।

(छ) गुरुकुल के प्राध्यापकों के प्रकाशन।

(ज) गुरुकुल छात्रों की हस्तलिखित पत्रिकाएँ।

पुस्तकालय में उपलब्ध उपयुक्त सम्पूर्ण साहित्य का पुस्तक सर्वत्र गुरुकुल स्थापक प्रकाशन सह के नाम से बनाया गया है।

१ मोविमर विषय-सूचि एम० ए० सल्लु इन्सिडर विज्ञान १८६६ पृ० ११५३।

२ वायर ०० 'रेफरेंस वर्क' १९३० पृ० ४।

३ रमाभाषन एम० धार० रेफरेंस सविस् एम्बुलेंस १९०४, पृ० ३३।

४ विषय की० एम० माइडू रेफरेंस बुक पृ० ३० एडिशन उपलब्ध।

## वैदिक कैसेट

प्रसिद्ध फिल्मों गायक महेंद्र कपूर द्वारा महर्षि दयानन्द की अमर वक्ता

सन्ध्या—पत्र, शान्तिप्रकरभ स्थितवाचन आदि

प्रसिद्ध भजनोपदेशकों—

सत्यनारायण पथक आमप्रकाश वर्मा, पन्नालाल पीपूष सोहनलाल पथक, शिवराजवर्मा जी के सौमित्र भजना के कमेंट्री तथा प बुद्धव्य विद्यालकार के भजनों का संग्रह।

आय समाज के अन्य भी बहुत सकेसट के सूचीपत्र के लिए लिखें



कन्सोर्सेम इन्वैस्टिगेशन (इन्वैस्ट) प्रा लि

14 मेरिट II फ्ल II अशाक विहार दहली 52

फोन 7118326 744170 टैलेक्स ११-4623 AKC IN

वैदिक कैसेट सभा कार्यालय १२ हनुमन् नगर पर की उपलब्ध है।

## दंतों की हर बीमारी का छद्म इलाज

एम डी एच

दंत मंजन  
लौंग युक्त

23 जडी बुटियों से निर्मित  
आधुनिक औषधि

दाँतों के डाक्टर



अब नये पैकिंग  
में उपलब्ध

फैक्टोरी

महाशिव की हट्टी (प्रा०) लि०

9/64 इण्डियन एरिया कीर्ति अमर जी दिल्ली १ फोन 539805 537987 537341



मन्त्रों की युक्ति



गुरु की सुलभता



उमा वर्मा पांडी



दात का दर्द

## उत्तमता का एक मात्र विश्वास

Groversons

Paris Beauty

पेरिस न्यूटी

ग्रावर  
सेल्स

ब्रा.पैन्टी.बनियान अन्डरवियर व बेबी पैन्टी आदि



पेरिस न्यूटी सेल्स कार्पोरेशन

2445-8/2 बीकनपुर अन्डरवियर एन्डरवियर कार्पोरेशन  
करीब नगर नई दिल्ली - ११००४८  
दूर भाषा 569224 574200-582036

## आर्य जगत् की शान २०० बिस्तर वाले

निर्माणाधीन नेत्र चिकित्सालय  
(अनुमानित लागत दो करोड़ रुपये)  
के लिए दिल खोलकर दान दीजिए

दान की राशि आयकर अधिनियम जी० ८० के  
अन्तर्गत कर मुक्त होगी।

सारा बान चैक/मनीऑर्डर/बैंक ड्राफ्ट द्वारा

भग्वती, माता चल्ननदेवी आर्य धर्मार्थ नेत्र चिकित्सालय,  
बी-१ जनकपुरी, नई-दिल्ली-१८ के पते पर भेजा जाए।

दानदाताओं के नाम चिकित्सालय की शिला पर  
पर अंकित किए जाएंगे।

निवेदक

राममोपाल शालवाले सूर्यदेव महाशय धर्मपाल भोमप्रकाश आर्य  
सरलक्ष चिकित्सालय प्रधान दिल्ली मन्त्री  
एच प्रधान, सा० द्वा० आर्य प्रतिनिधि आर्य केन्द्रीय महाशय कुन्तीलाल  
प्रति० सभा सभा सभा बेरिङ्ग  
सौजन्य से महाशयों की हट्टी प्रा० लिमिटेड, ६/४४ कोतिलनगर  
औद्योगिक क्षेत्र, नई दिल्ली-११००१

## आर्य सन्देश साप्ताहिक

पत्रिका के ग्राहक बने, और बनाएं

क्योंकि यह पत्रिका—

- (१) वैदिक मान्यताओं को उजागर करती है।
- (२) आर्यों (हिन्दुओं) की महान् परम्पराओं की याद दिलाती है।
- (३) महर्षि दयानन्द की वैचारिक क्रांति से आरम्भ बेतना जागृत करती है।
- (४) भारतीय संस्कृति के मुझे बिस्वरे प्रसंगों, महापुरुषों तथा आदर्श संस्कारों को प्रकाश में लाती है।
- (५) ऋषि मुनि तपस्वी ध्यातविद्वानों की वाणी का बोध कराती है।
- (६) परमेश्वर की पवित्र वाणी वेद का जीवनोपयोगी मञ्जुर सन्देश लाती है।
- (७) नये लेखकों कवियों चिन्तकों, प्रतिभाशाली विद्वानों, साहित्य लेखियों को प्रोत्साहन देती है।
- (८) धार्मिक, सामाजिक और आध्यात्मिक ज्योति से मन-मन्दिर को प्रकाशित करती है।
- (९) वेद उपवेद, दर्शन उपनिषद, स्मृति, कल्प सूत्र, भारद्वाज, ब्राह्मणग्रन्थ गोता रामायण, तान्त्रिक, ऐतिहासिक, बभ्रुव्य आर्ष ग्रन्थों, जिन को अधिकांश लोगों ने पढ़ा तो क्या देखा भी नहीं समस्त आध्यात्मिक जगत् की जिन ग्रन्थों पर सदा गर्व रहेगा उन के बहुमूल्य मोती हर सम्पादक बटोर कर आपकी धाजली सभी भर देती है।
- (१०) प्रत्येक देरन कीजिए भाग ही घपना बार्कि चन्दा २० रुपये भेजिये वर्ष में धनक विशेषांक तथा महर्षि दयानन्द निर्वाण शताब्दी पर प्रकाशित ५० रुपये मूल्य की ग्रन्थ मनोहारी स्मारिका नि मुक्त दी जायेगी।

सम्पादक आर्य सन्देश

उत्तम स्वास्थ्य के लिए

गुरुकुल कांगड़ी फार्मसी,

हरिद्वार की औषधियां

सेवन करें

The advertisement is a collage of images and text for Gurukul Kangri Pharmacy. It features several medicine bottles and boxes with labels in Hindi. The text highlights the benefits of these medicines, such as improving health, strength, and vitality. The pharmacy's name 'गुरुकुल कांगड़ी फार्मसी' is prominently displayed at the top and bottom. The location 'हरिद्वार' (Haridwar) is also mentioned. The advertisement is designed to attract customers by showcasing a variety of traditional and modern medicines.

शाखा कार्यालय—६३, गली राजा केदारनाथ,  
फोन . २६६८३८ बाबडी बाजार, दिल्ली-६

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा १६, हुनुमान् रोड, नई दिल्ली-१ क्षेत्र ३१०१३० के लिए की सा० धर्मपाल द्वारा सम्पादित एवं प्रकाशित तथा  
वैदिक ज्ञेय, गली नं० १४, ईलाहाबाद, दिल्ली-११ में मुद्रित। रजि० नं० डी (सी०) ७५३

# ओड़म कृष्णन्तो विश्वमर्त्यम् आर्य सन्देश

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का साप्ताहिक पत्र

कुल एक प्रति ५० पैसे

सं ५४

पृष्ठ १५

रविवार, ३ मार्च, १९६३

आर्य सप्ताह १९६०=५३०=५

काल्पुन २०५१

दयाल-दाय—१६०

## देश के कोने कोने में आर्यसमाज मन्दिरों की स्थापना की जाये —रामगोपाल शालवाले

२४ जनवरी रविवार को आर्य समाज मन्दिर नारायणा बिहार, दिल्ली का उद्घाटन करते 'ए' सार्व-देशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री रामगोपाल शालवाले ने कहा— वैदिक धर्म और संस्कृति की रक्षा के लिए तथा धामे वाली पीढ़ी को सम्स्कारित करने के लिए देश के कोने-कोने में आर्यसमाज मन्दिरों का निर्माण आवश्यक है। बिस्व में हम स्वयं बड़ रही हैं, मानवता का ह्रास हो रहा है, भ्रष्टाचि के घरे बड़ रहे

हैं। आज आवश्यकता है ऋषि दयानन्द के संनिको और अनुयायियों की जो ससार में प्रम प्यार और सेवा सहयोग का दीपक जलाये। ऋषि दयानन्द के ग-देश की चर-धर में सुनाने की आज नितान आवश्यकता है। उन्होंने आह्वान करते हुए कहा—आधो हम अपने तुच्छ स्वार्थ और धीर ह्र भाव से ऊपर उठकर आर्य-समाज के मिशन की धीर भी धामे बढाये। श्री शालवाले ने आर्यसमाज नारायणा बिहार के कार्यकर्ताओं एवं

सहयोगियों की भव्य भजन एवं सन्दर यमशाना बनाने पर प्रशंसा की।

इस भव्य यमशाना का उद्घाटन श्रीपाद स्वामी दीक्षानन्द जी ने किया। इस अवसर पर श्री स्वामी विद्यानन्द जी पं. शिवकुमार शास्त्री एवं पं. मन्थिबवानन्द शास्त्री भी उपस्थित थे। आर्यसमाज ना जगना

बिहार के उद्घाटन के भवसर पर एक विशाल शोभा यात्रा भी निकाली गयी। बिनाका नेत्र व दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री सूरदेव ने किया। इस भवसर पर अनेक वक्ता, टेम्पुधो श्री पवन श्री पुरषो तथा सहयाया के छात्र छात्राया ने वड वड क भाग लिया। □

## स्वामी श्रद्धानन्द जन्म-दिवस

दिल्ली नगर निगम द्वार प्रायो विन स्वामी श्रद्धानन्द जन्मदिवस ममारोहुरुक्षक मनाया गया इस अवसर पर महापीर श्री महेंद्रसिंह साधो ने कहा—भारतीय स्वतन्त्रता के इतिहास पर जब हम चिन्तित डारते हैं तो आर्यसमाज हमें हर कोने पर सजा दिवाई देता है। "सर्गो उपेक्षा नहीं की जा सकती। उन्होंने स्वामी श्रद्धानन्द को धरून एवं दलिनोद्वारक तथा भारतीय स्वतन्त्रता सप्राप्त का महान् मोडा बनाया।

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री सुयदेव ने उद्घोषण करत हुए कहा—स्वामी श्रद्धानन्द समय की बुनौती का प्रबल जवाब थे। धर्य श्री साम्राज्य के काल में भारतीय शिक्षा और सम्यता की मजाक उडाई जाती थी। ऐसे बुनौतीपूर्ण वातावरण में उन्होंने पुस्तुल सिद्धा प्रणाली की स्थापना कर ससार की आश्चर्य-चकित कर दिया। उन्होंने इस

प्रणाली में प्राचीन ज्ञान-विज्ञान से लेकर प्राधुनिकतम विज्ञान, तकनीकी तथा भौतिक धर्मोक्तिया विज्ञान की प्रपनांग धर्यज उरकार हिरान की नि र्से एक विज्ञान जगल में जिना किमा मरकनी महायता के इनना बर काय किमा जा रहा है।

उन्होंने कहा—स्वामी श्रद्धानन्द का जीवन एक शिक्षा में नही सर्व-ज्ञेय दिवाई पणना है। ब अनाय रक्षक दलिनोद्वारक व द्रष्टुतोद्वारक, रिन्हु मुस्लिम एकना के प्रनोक, एक नपस्की पत्रकार-बिज्ञक के रूप में भी दिवाई प-ते हैं।

### आर्यसमाज जनकपुरी

आर्यसमाज जनकपुरी की ज्वाक में श्री स्वामी श्रद्धानन्द जन्म दिवस मनाया गया। इस अवसर पर महाशय धर्मप्राय ने ध्वजारोहण किमा तथा अनेक विद्वानो ने स्वामी श्रद्धानन्द को अपनी श्रद्धाजलि अर्पित की।

## गो-हत्या पर पूर्ण प्रतिबन्ध की मांग

२४ फरवरी, रविवार, आर्यसमाज कीतिनगर के वासिकोत्सव पर बोलेत हुए श्री रामगोपाल शालवाले ने गोरक्षा की अपनी मांग को दोहराते हुए कहा—भारत सरकार को गोहत्या पर पूर्ण प्रतिबन्ध लागू करना चाहिए। गौ की राष्ट्रीय पशु कोषित करना चाहिए। उन्होंने उपस्थित जनसमूह को वाद दिलाते हुए कहा

कि गत वर्ष कीर्ति नगर म ही एक मास की कट्टी के विचार से आर्य-समाज ने काय किमा था और हम अपने उद्देश्य में सफल हुए थे। आज हमें अपनी यह मांग और भी जा दार शब्दों में उठानी चाहिए। साथ ही हमें गोपालन के लिए भी हर सम्भव सहयोग देना चाहिए।

## ये आवाज कहां से आई !

बोले बीच फूट के फिलने बैर की ज्वाला ये सज्जाई।  
जहर बोलेने सानो की यह आवाज कहा से आई।।

माई-माई हम सचिको ते ये एक ही मा के बेटे।  
फिलने आकर हम सब की ये सौलस भाव गुलाई।।

हूर मुक्तिन मे सवा सहा हम निम तुल के रहते थे।  
सन्तो की विना तक को, है फिलने प्राय गुलाई।।

क्यो छाया ये सल्लादा क्यो बहनी रातों।  
क्यो सानोस हूर स्वर है कहा बचती की सल्लादा।।

सवा सल्लाज रहा यहाँ पर हुरारी इन माता बहनी का।  
है फिलने कुम्भ में फिले ये, यह फिलने लूट मचाई।।

लुक के बाकिर आपस में हम सब रखें मारिबाई।  
बीचन के हूर बीन ये आर्यों। हम हूर करे कुलाई।।

सब का मन खुलता है हूर बरखाबी के बारन।  
लूट परलतो की रातों ये कब फिल को यहाँ सुलाई।।

—हम रखें नजर एखो पर, को घर मे प्राय सगाते।  
सब कोई भी कम हुआरा ना 'दरिय' हो कुलाई।।

—गोहत्याकार धर्म 'धरिय'—  
कीलैच गब-साहोव।



## सम्पादकीय

# आर्य सन्देश

## प्रकृति का महोत्सव

भारत देश अपनी गरिमामयी परम्पराओं से, प्राध्यात्मिक सम्पदाओं से, संस्कृति सभ्यता की विशेषताओं से सम्पन्न रहा है। इन्हीं विशेषताओं से एक विशेषता है यहाँ के पर्व (पीहार)। मसूर के मयी वर्ष सम्प्रदाय एवं जातियों से घोर देशों में कोई न कोई दिन नियत है जब वे अपने समस्त दुःख बर्ष गुला कर उत्सव मनाते हैं। व्यक्ति विवाद भयसाल से चिरा न रहे एक ही रस में वह खिन्न न हो जाये, वह जीवन के समस्त रंगों रसों का स्वाद ले सके हवी पारणा को ही लेकर सम्भवत हमारे पूर्वजों ने पर्वों की सरचना की थी। समस्त विषय में मय से अधिक पर्व भारत में ही मनाये जाते हैं।

बसन्त ऋतु का आगमन हो गया है। नौ रसों से रसित नव रंगों के परिधानों से विभूषित प्रकृति अपनी नाट्य कला का समस्त युवन मे परिचय दे रही है।

सम्बल की ऊँची-ऊँची बालियों पर खिलते लाल-लाल फूल, सैत मे फूलती पीली-पीली सरसों, बागों में सहकृती धमराई बन की कटीखो झाड़ियों में सजे फूलों के गुच्छे, युक्त वृक्षों की चोटियों से निकलते झरूर पर्वत की उजड़ी भू खना पर उगती हरी-हरी घास धौर ऊँचे शिखर से भरती के सीने पर गिरता गर्जता करता, मचलती इजलाती नदियों की निर्मल वारा, बासों के कुरट्ट से बाती पपीहे के सभुर रागिनी, कोयल धौर बुलबुलों की हूक से गुजते उपवन यह महोत्सव है उस परम पिता की सृष्टि का, जो महोत्सव धिराम चल रहा है। हर ऋतु मोहक उत्सव लेकर धाती है और कह कर जाती है मानव क्यों न निराश है, उठ उत्सव मना गुनगुना खिलखिला मूम मूम कर उस परम ध्यानवदाता के गीत गा। जब प्रकृति मे उत्सव है फिर मानव जीवन मे पर्वों का, उत्सवों का उल्लास क्यों न हो, ऐसा ही एक उल्लास है होती। जी हा, होली जो यज्ञ का प्रपञ्च है। नवीन फनल के धागमन की खुशी का महोत्सव है। समस्त वेद माव खुलाकर गले मिलकर एक हो जाना और भानन्द सिन्धु से दूब जाता इसका सन्देश है। रवीन्द्र नाथ टैगोर ने गाया था—उत्सव धनार जाति धानन्द धमार गीत। उत्सव ही हमारी जाति है और धानन्द ही हमारा गीत है। सब कुछ भूलकर धानन्द-उत्सव मे मस्त हो जाना पर्व है।

वेद मे कहा है—हसा मुद हसा मुत। प्रसन्नता मे मूम धौर हसते-नाचते जीवनयापन कर। जीवन मे सत्य है। कठिनाइयाँ भी है परन्तु उन्हीं से दु लो होते रहने से जीवन कुसुम सुरका जाता है।

इन ऋतु मे गेहूँ बना, मटर, सरसों, जी धादि के पकने की दसा मे यह पर्व मनाया जाता है। रस मे फसल काटने पर किसान अपने सगे सम्बन्धियों एवं मित्रों की दावत देकर उत्सव मनाते हैं। जापान मे पान की फसल कटने पर उत्सव मनाते हैं। चावल की रोटिया एवं भावक द्रव्यों से धानन्द मनाते हैं। इङ्ग्लैण्ड मे पोल (May Pole) का उत्सव मनाया जाता है। वीरीयो (St Valentine's day) सेंट वेल्मटाइन का दिवस मनाया जाता है।

इस प्रकाश की उत्सव परम्परा होली भी है। परन्तु धाव यह पर्व बड़ा विरुक्त रूप मे चुका है। धसस्य धौर धाधिष्ठ बनकर रग फकना, गरीबों के औ मान वस्त्र की रग देकर बेकार कर देना तथा गोबर, कीचड़, तेजान, रेत धादि प्रसत होकर फेंक देना मनुष्यता से नीचे गिरना है। होली के पर्व को भाग, धारा पीकर ऊँचम मचाने वालों ने भी गन्धा कर दिया है।

रग की धाड़ मे धसलीलता भी हेय है। हमारी संस्कृति मे भाभी

धादि को माना की दृष्टि से देवा जाना है उन के माध अवद्रता का व्यवहार होली की धात्र लेकर करना प्रथमता है। सभी सम्म जनो की ये दोष दूर करने का प्रयत्न करना चाहिए। इर नौबदा को धपनी हिंसन धौर धमिन से दीन दु विवा के धासु पोछ ाधियों के फन खिलाने र्हना चाहिए। 'जोष' ने सच कहा है—

नवीन युग के उपामना की धमिनाषा की नुमे कपन हे  
तु धब नये खिचारा के भगवान पंदा कर।  
बहार मे तो जमीन से हो बहार उग धाती है,  
गर तु मर्द है तो खिबा मे बहार पदा कर॥

—वसधापन सुधाधु

## अपने पाठकों से

धाप पाठकों के धनेक पत्र प्रति सप्ताह मिलते रहते हैं। धापकी प्रथसा प्रशस्तिर्लि लिए धम धामारी हैं। स्मारिका के लिए धाप के धनेको प्रनेक पत्र प्रशस्ति मे लिखे मिने हम उन से कुछ हो प्रकाशित कर पाये। सभी को प्रकाशित करने के लिए स्थानाभाव है। केवल मात्र सम्पादकीय के लिए भी बहुत पत्र मिने हैं जो धाप के धारा स्नेह सिक्त थे। पिछले दो मास मे लगभग २०० धाहक तीव्रता के शाय बने है, इस से धाप के प्रम प्रभुध का विशिष्ट प्रभाव मिलता है। हम धापकी धाकाधामों के धनुरुप इस पत्र को सजाने मे सलन हैं।

हमारे कुछ पाठकों की शिकायत थी कि इप के पृष्ठ बड़ाएं जाए, यह शिकायत हम ने उन की दूर कर दी है। पाठकों की माग पर ससग धाटिका स्तम्भ हम ने शुरू किया है जिस मे हर बार ससग मे सुनाया जा सकने वाला वेद व्याख्यान हुपा करेगा। सहर्ष हम यह भी सुचित कर रहे हैं कि एक धमिनव विशेषांक २४ मार्च को भूमधाम से प्रकाशित कर रहे हैं। यह विशेषांक धपने डग का धनोत्सा ही होगा। धाशा है धाप का प्रेम स्नेह, एवम् आशीष इस साप्ताहिक पत्र को अवश्य मिलता रहेगा।

धुभकामनाओं के साथ—

सम्पादक—वसधापन सुधाधु

## शुभकामना

धीनुव सुधाधु जी।

सादर बने धानवध।

धावें सन्धेय के पिछले धकनों को बेर कर पन प्रसन्न हो गया।

धापकी सम्पादन वीनो मेरलादायक धाप संस्कृति धनखिनी है। धाशा है धापके कुशल सम्पादन मे धावसन्धेय धाप नवम् मे अधिष्ठ प्राप्न करेगा।

धावपन सुधन

सपावन धावम देहरादून २४०००

## स्मारिका बेहद अच्छी

'धावें-सन्धेय के विशेषांक के रूप मे छती मधम मनोहारी गाना स्मारिका प्राप्न हुई। स्मारिका वास्तव मे धावयक एवं प्रभावधान थी। इसका सुवपुष्ट धति सुन्दर एवं धोमनीय था। इसने सभी लेख पठनीय एवं गिभाप्रद थे। जिन्हें पठकर काफ़ी प्रेरणा मिली तथा काफी जानकारी प्राप्न हुई। स्मारिका मे सम्पादकीय न्त का तो धवम ही महत्त्व रहा। स्मारिका के इस कुशल सम्पादन के लिए बधाई स्कार करें।

—रामधुराम धाय

धाम० पो०-दुल्लाड बहाना (धोनीपन)

धाप का 'स्मारिका पत्र प्राप्न हुधा धन्यवाद धवधन करन पर पता बसा कि धाप ने हर की सफलता के लिए बहुत प्रयत्न किया है। इस मयलता हेतु धाप सब को बहुत-बहुत बधाई हो।

निवेदक—योगेन्द्रपाल सेठ

प्रधान धावेंसमाव जालन्धर







इसके बाद कवयय (शोर) सावर के तटीय पहाड़ी प्रवेशों को रौंदा हुआ सिक्न्दर भ्रमणानिस्तान की ओर बढ़ गया। अब उसने अपनी जीतों पर प्रशन्न होकर



—वसन्तलाल अशोक बिहार

होना— ७ मार्च १८२१

बीसा

## वैज्ञानिक वैदिक चिन्तन

## नभ के तारे

—डा० रमेशकुमार लो'

सीमा— डा० विभव द्विवेदी

प्रकाशक—धर्मकुमार लाला किन्ने दिवली। प्र० लिपि—सातवा लाखरस  
२०५१ विक्रमी। मूल्य ₹ ५०, पु० स० ५०—प्रो० प्रतापसिंह  
सलीक— डा० विभव द्विवेदीप्रकाशक—धर्मकुमार लाला (रचित), किन्ने दिवली-६  
मूल्य कीर्तिलक्ष १६८५। मूल्य ₹ ७५, पुस्तक ५०

साध का विवर वैदिक विकास के मय से उन्नत होकर वैज्ञानिक मूल्य कर रहा है। सभी जीवों में अपने को सर्वोत्तम मानने वाला मानव वैदिकता के गहन प्रारम्भ में वैदिक जीव जन्तुओं को भी लक्षित कर रहा है। इसका अन्त कहा होगा, जो भी बलाना बन्ना कठिन है। परन्तु इतना निरवयव पूर्वक कहा जा सकता है कि प्राचीन की रसमयारी परिस्थितियाँ कल्याणी वेदवाणी का अनुसरण न करने के कारण ही पैदा हुई हैं। वैदिक चिन्तन का प्रभाव और पश्चिमी विचारधारा का प्रभाव—इन दोनों का सम्मिश्रित स्वरूप साध के मानव समाज को एक ऐसे पंचम पर से बाधा है यहाँ उल्लेख नहीं केवल कहना है। कहा जाति विनाश। इन से बचाना का एक ही उपाय है—वेद का पढ़ना पढ़ना। सुनाना सुनाना, क्योंकि वेद ही सब सत्य विचारों का और मानव जीवन में पैदा होने वाली समस्याओं के समाधान का साधक होता है।

प्रस्तुत पुस्तक में प्रो० प्रतापसिंह ने अपने चार सैकों में वैदिक-चिन्तन को एक, स्पष्ट एवं वैज्ञानिक भाषाओं में निरूपित किया है। 'विभव-वेद' में बताया जा है कि जीवन और जगत् में हुन की वास्तव स्थिति होने के बावजूब भी चिन्तन के स्तर पर एकलक्षण 'सिद्धि' है। 'बहुवचनसिद्धि', बहुवचनसिद्धि की विषय भवना का लक्ष्य व श्रेय है। 'प्रकृति और सृष्टि' अध्याय में विभिन्न वर्गों के जन्म से प्रकृति एवं सृष्टि के रहस्य को समझने के लिए लेखक ने वैज्ञानिक पद्धति का हथौड़ा लिया है। इसी तरह 'आत्मन-परमात्मा', ज—'जीवन ब्रह्म तथा सत्ता' जन्म—काम-विषय' अध्यायों में इन विषयों पर सतप से किन्तु गहराई के साथ प्रकाश किया गया है। लेखक की विवेचना जीवी चिन्ती रोचक है तर्कों की उत्पत्ता ही जलजम्बू है। यह पुस्तिका गहन अध्ययनों के लिए विद्वानों उपयोगी है, उसकी ही सामान्य के लिए भी। केवल पुस्तिका का विरोधना एक सत्य पैदा करता है कि क्या वैदिक चिन्तन ने कुछ ऐसा भी है जो वैज्ञानिक नहीं है?

प्रैक—विभव द्विवेदी

महाराष्ट्र प्रत्येक महाविद्यालय वारीया (७५०००१)  
(उड़ीया)

## अप्राधी अधिकारियों को फांसी हो

जासूची काय के बमिमुस अधिकारियों ने वेद के साथ जो निरवासनात किया है, वह एक अविश्व कलक है। भारत जैसे देश में, जहाँ पर राष्ट्र के लिए सर्वत्र समर्पित करने वाले बहुत पैदा होते रहे हो, इस प्रकार का गिनौना कल्प सम्पूर्ण अहित से सम्पूर्ण है। इस जासूची काय के यह प्रमाणित कर दिया है कि हमारे देश में प्रचलित सब तथा मुद्राचर विचारों किन्ना अत्यन्त व धर्ममय है। इस कारण के खच में किसी भी प्रकार की बिनाई प्रवृत्ति करना, सन्धिष्य ने राष्ट्रवादी हो सकता है। इस काय के विपरीत भी बमिमुस निरस्तार किए गए हैं— उन्हें खुले बाजार फांसी की सजा दी जाये और उन सत्य स्रोतों का साथ बलाना बाधे बिनाके माध्यम से यह 'वृत्ति' बाधे होना रहा है।

राष्ट्रियक आर्य, मुसाफिर लाला, मुस्लामपुर, उ० प्र०

## शुभ विवाह सम्पन्न

दिवली। सार्वेयिक साध ने अपने के बन्नेरी भाय के सम्पन्न एवं लक्ष्मण निवस बहुसाल लताक एवं ६० की सुपुत्री दीपिका भायेय एवं ६० की—का कुच विवाह बन्नु निवसी की रामसिंह लाली के सुपुत्र का २० रवीय स्या एवं बी० २० एवं ६० फरवरी ८२ की दीपिका विधि से सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर सार्वेयिक के अग्रिष्ठ मित्रान् स्थाय एवं प्रीतिभाय के उपस्थित थे। जन्म से सम्पन्न शैल्य के अवसर पर प्रतिनिधि सभा के प्रधान डा० योगेन्द्रलाल शास्त्री ने सब एवं त्य करार है।

निवेदक—

रघुनाथ प्रसाद पाठक

## वायिकोत्सव

महर्षि व्यासमार्ग प्रमुक्त कृष्णपुर मन्ना [कक्षाबार] उ० प्र० के पावन प्राङ्गण में महर्षि व्यासमार्ग बलिदान लक्ष्मी समारोह का आयोजन १६-१७-१८ मार्च ८२ को बड़े ही हार्मोनीय के साथ किया जा रहा है। विद्वाने सार्व जगत् के सुप्रसिद्ध सार्व मित्रान् सन्तानी महर्षिदेवक पचार रहे हैं।

निवेदक

सार्व पन्तदेव शास्त्री कुलपति

## आर्यसमाज किदवई नगर, नई दिल्ली की अपील

इस मन्दिर की स्थापना १९६० में हुई थी उक्त समय एक धर्माधी भवन बना किया गया था। अब इसका सन्त बहुत ही जील सीमा हो गया है। सत्योचन की भवन में ईजने से कजिनाई होती है वर्तमान से छन उपकृति रहती है। इस हय सन्त निर्माण के लिए आपका सहयोग चाहते हैं। इसके साथ हमारी योजना है—

- (१) दलित सग के लिए नि मुक्त प्रीतिविता तथा सन्तकाल से दलित बर्ब के सिद्धांतों की नि मुक्त विषय।
- (२) सार्व महर्षिदेवक विस्लेसरी।
- (३) सार्व मुक्तलाल एवं सार्वलाल सन्तान।

इस सत्य मुक्त के महान् कार्य में आप सह भाई बहने का तन मन धन से सहयोग प्रेषित है। विश्व लोकचर अधिक से अधिक लाभ दें। सन्तान मनीषाईर, वैक, मुष्ट इत पते पर नेवे।

ए-२७५, सार्वसमाज किदवई नगर, नई दिल्ली-२३  
आसार सहित डा० बलनलाल—सन्तान

## वायिकोत्सव

महर्षि व्यासमार्ग प्रमुक्त कृष्णपुर मन्ना [कक्षाबार] उ० प्र० के पावन प्राङ्गण में महर्षि व्यासमार्ग बलिदान लक्ष्मी समारोह का आयोजन १६-१७-१८ मार्च ८२ को बड़े ही हार्मोनीय के साथ किया जा रहा है। विद्वाने सार्व जगत् के सुप्रसिद्ध सार्व मित्रान् सन्तानी महर्षिदेवक पचार रहे हैं।

निवेदक

सार्व पन्तदेव शास्त्री कुलपति

## आर्य जगत् के समाचार

आर्य आदर्श विद्यालय, आदर्श नगर, दिल्ली में  
ऋषि बोधोत्सव तथा भाषण प्रतियोगिता

भाष आदर्श विद्यालय, आदर्श नगर, दिल्ली में 'ऋषिबोधोत्सव तथा भाषण प्रतियोगिता' भाष प्रेम्हीय सभा के तत्वावधान में तथा स्वामी विद्यानन्द की सरस्वती की भाष्यसता में महर्षि दयानन्द सरस्वती के जीवन की तीव्र प्रेरणादायक घटनाएँ विषय पर प्राथमिक कक्षा के छात्रों की भाषण प्रतियोगिता का आयोजन हुआ। कार्यक्रम रोचक, रेरेरणादायक तथा शिक्षाप्रद रहा। स्वामी जी ने बच्चों को भाषी-बोध दिया तथा गुरुस्वर दिए। दीक्षा बड़ा प्रश्न तथा भीत भाऊना ने द्वितीय स्थान प्राप्त किए। स्वामी जी ने कहा कि महर्षि दयानन्द का सारा जीवन यन्त्राओं से बना प्रकाश है। हमें उनके जीवन से प्रेरणा लेनी चाहिए। यह बोधोत्सव हमें भी बोध प्रदान करावे कि हम इस की कुरीतियों बुराईयों, तथा बुरे विचारों से समझीता न करें। सदा वृत्ता से उनका मुकाबला करें।'

संयोजक—महावीर तथा

### दिल्ली सभा द्वारा वेद प्रचार

मैं ११-२५ को हुमात रीजमा किताबें कात से करी १२-३० बने रोपहर गया था। वहाँ से उभ मैं जाने लगा तो उसके सीधे सरकारी कार्यालय में पहुँच पर मार्ब लिखित सभा दिल्ली का प्रचार माहल में रत गया। वहाँ पर भी ५० संस्थेय की स्नातक के प्रश्न न उपवेश तथा श्रद्धेय स्वामी स्वर्णाशानन्दजी के प्रचार का बोधो पर काफी प्रभाव रहा। वहाँ दैनिक प्रचार की कार्यवस्था है। क्योंकि वहाँ पर कई राजकीय कार्यालय हैं जोत सत्र के दक्षिण प्रमाणों प्रचार रहे।

वेदप्रचुकार शास्त्री भाषसमाज मन्दिर, रवेरा नगर

### कृषि अनुसंधान सेवा परीक्षा में हिन्दी माध्यम

कृषि अनुसंधान सेवा परीक्षा में कुछ समय पहले तक अध्येजी भाष्यम ही था। सन् १९८५ में होने वाली परीक्षा में सभी विषयों के प्रश्नपत्रों के उत्तर हिन्दी में देने की वृत्त रहे। यह परिवर्तन सभी अध्येय से स्वागत्य बोधी है। हिन्दी-भाषी लोगों को विचार्यावियों को इस सुविधा का पूरा लाभ उठाना चाहिए। वे हिन्दी में अपने विचार बहुत धृष्ट प्रकार व्यक्त कर पाएँगे तथा उनकी सफलता के अवसर पहले की अपेक्षा दक्षिण बढ़ेंगे।

हिन्दी-भाषी लोगों न कृषि विषयविधान यों की भी चाहिए कि वे अपनी सभी कलाओं में विभिन्न कृषि विषय हिन्दी माध्यम से भी पढ़ाए जाने की व्यवस्था करें। इस समय विद्यालयों का काफी समय अध्येजी भाषा का अन्धका ज्ञान प्राप्त करने से लग जाता है। हिन्दी माध्यम होने से उस समय का काफी भाग बच सकता बिसे ने कृषि विषयों में पारंगत होने से बना संकेत। वहाँ-वहाँ उन्म स्तर की कृषि विद्या हिन्दी माध्यम से देने की व्यवस्था है उनकी मुचना इसका 'महामन्त्री हिन्दी व्यवहार सगन ६-६, २६ वसत बिहार नई दिल्ली ११००५०' को देने का कष्ट करें। किन्तु कृषि शिक्षण संस्थानों में यह सुविधा कभी नहीं है, वहाँ के अधिकांशियों के सम्पर्क करके उसकी व्यवस्था करने के लिए मंत्री को प्रयत्न करना चाहिए।

हरिनाथ कृष्ण

महामन्त्री, हिन्दी व्यवहार सगन,

डी-३५, माध्यम एकस्टेशन, पान एक, नई दिल्ली-११००५६

### आर्यसमाज मन्दिर सैजपुर

आर्यसमाज मन्दिर, सैजपुर बोधा, धर्मप्रचारार्थ के भाषिक पुनाओं ने प्रश्नान की योग्यताम सदोपम उपपधान की मुद्राप्रमथ क्षाराय, मनी की हुरीसात गुरुरासमल उपमनी की नेभाराम मासभुक्त, कोषाध्यक्ष की दोसतराय जी न निरीक्षण की सभामध्यम मोहनसात जी मधुनिधित से पुने वए।

### वार्षिकोत्सव

'धाम कन्धा गुरुकुल नरेला दिल्ली का वार्षिक महोत्सव विनाक ६-१० मार्च १९८५ क्षनिवार, रविवार को कुल भूमि से समारोह पूर्वक मनाया जायेगा। इस भुष अवसर पर अनेक सयाशी, महात्मा विधान उपवेशन मनीक तथा मास्मीय राष्ट्रीय नेता पवार कर उवेशामुक्त पान करावेंगे।'

निवेष्टक—भाषार्या कन्धा गुरुकुल नरेला, दिल्ली

### आवश्यक सूचना

वैदिक बलि मन्त्र की ओर से वैदिक सन्यास प्राथम गाविभावादे में १५ मार्च से ३१ मार्च १९८६ तक स्वाध्याय संस्कृत शिक्षण विधिवर लयाया जायेगा। प्रत सत्र हफ्ता मन्त्र वरितियों (सयाशी, मैथिलक हस्तुपानी तथा मानप्रतिषेधो) से प्रायणा है कि समय पर पहुँच कर अवश्य लाभ उठावें। सयाप्रमकाश, सकारप्रतिषि धाषि पुस्तकों काफी लेखनी तथा वृत्त अनुसार वरन् अपने साथ अवश्य लावें। योजना का प्रबन्ध भाषम की ओर से होगा।

निवेष्टक

धाम्यक्ष स्वामी सदानन्द

वैदिक वरित मन्त्र

### ऋषि बोधोत्सव शिवरात्रि

आर्यसमाज भद्रा होशियारपुर, मदानन्द बाजार, बालनगर भाषसमाज भद्रा होशियारपुर (स्वामी मदानन्द बाजार, बालनगर से १५ फरवरी १९८६, प्रात ८ बजे से १२ बजे तक ऋषिबोधोत्सव शिवरात्रो के ले उपपन्न से बडे समारोह से मनाया गया। सन्ध्या प्रायण के परवात् स्थलित यज्ञ सगन हुआ। स० १० डावा हयार स० स्कूल के तथा डावा माहल मन्त्र हाई स्कूल के ध्यापक तथा छात्र एवं धाम्य धार्मिक विचारपारा के जन सैकडो की सस्या में सगमिलित हुए यज्ञ के परवात् स्कूल के छात्र तथा छात्रावों तथा प्रिथिव्य ध्युसलान की कला, योगेशप्राथ पैठ प्रदान सयाज की ऋषिप्राथ सिद्ध की एम्बोकेट, श्री प्रो० प्रानवहातार जी ने महर्षि दयानन्द सरस्वती की बडी भावनीनी मदानन्दजी मँट की।

## महर्षि दयानन्द वेद वेदाङ्ग गुरुकुल का द्वितीय वार्षिकोत्सव

महर्षि दयानन्द वेद वेदाङ्ग गुरुकुल भीमा का द्वितीय वार्षिकोत्सव प्रारम्भ हुआ। इस अवसर पर प्राशन वर पात्रायण यज्ञ का भाग भुक्ता ११ रविवार, शुक्रि सन्ध १९६०५३८८ दया-दावा ११० की की अवश्य की वनील के बबनामयन से शुभारम्भ हुआ एवं यज्ञ का समापन भाग भुक्ता १५ मङ्गलवार उर-गुहार ता० ५-२-८६ के यज्ञमान की सन्तोभारायण की गोस्वामी सगती के कर-कर्मण द्वारा सग्न्य हुआ। प्रथम विषय के भद्रा और वक्ता सावेसिक सभा के उपमनी एवं मन्त्र भारतीय धार्म प्रतिनिधि सभा के प्रथम श्री ० राजकुम सार्वा ने। भाषने गुरुकुल की भूमि पर से सग्न्यकय हुदने की कार्यवाही कर्ता अधिकांशियों को कम्पनाय दिया। पुन इस भूमि पर किसी की भी नहीं बहाया जाये इस धारेश के साथ तन मन वन के सहयोग वरकर गुरुकुल की सदावीर्य उन्मति की प्रतिज्ञा की। द्वितीय व सग्न्य पित्त के भद्रा गुरुकुल के सग्न्यिस्ता महात्मा धाम्यदेव की वानप्रस्थ कृष्ण वेदवस्ता उन्मैय निरासी ने। उनके सानिध्य से निम्नाकित वर प्रस्ताव पारित किये वने तथा एक महिशा और १२ युवकों ने सजोयकीत पात्र करके कुर्वलन जोखने की प्रतिज्ञा की।

१—महर्षि दयानन्द वेद वेदाङ्ग गुरुकुल चर्चार्थ धागुरैविक बोधपालस बनयाया सत्र सर्वप्रथम पोषा धाम से वरत १४ सासकीय धागुरैविक बोधपालस से वरतमान से बने हुए प्रथम से सहयो। जिया भाषा तत्परवात् धागुरैविक उपकरणों से युक्त बोधपालस बरत हेतु एक सास की रात्रि प्राप्त करने हेतु सग्न्यि धावर कानन बडी-दिवा धागुरैव, सारगपुर, गुजालपुर उर्जन हन्दौर, भोपाल के सार्धकर्ताओं की मीठिल की बाये। धागुरैवमयन एवं की स्वामी मदानन्द द्वार का विनायास करवाने हेतु केन सासम तथा मन्त्र न रत सासम के वरिष्ठ अधिकांश सार्धसैविक सभा के प्रथम एवं किसी पैठ दानदाता स सग्न्य स्थापित किया जाव। इस कार्य हेतु की ५० रागुगु की सार्वा मह की डा० मोहनसात की सभा नवीन प्र० सग्न्यक सासमाटी धागर तथा की मेरुनाम सत्र नम सग्न्यक धागर को नियुक्त किया बाये।

२—इस अक्ष को ५० वर्ष पूर्व धार्यसमाज ने ईसाविक के चगुल से युक्त कारया था। परवात् कार्य सुगुल अवस्था में हो गया था। पुन इस अक्ष न की वरिष्ठ एवं नैतिक धिदाये हेतु धार्मिक शिक्षा का कोर्ष अवभेरे से हुवाक प्रथम क्ष माह में १२५ युवक को ग्रीव शिक्षा में वीसित किया गया। इस कार्य हेतु की कारोपनी की धन्य, की विरविष्ट की धार्म कानन की ररेरमन्त्र की सार्ध हम्मेररा, की सन्तोभारायण की गोस्वामी तथा की बोधुप्रसाद की पैठर विनकारा ब्रह्मविद्या, की ररेरमन्त्र की सग्न्यि का वृत्त करके बीछ ही कार्य का सवावक करें। परवात्, हुरैल्लास के साथ कार्यक्रम समाप्त हुआ।

भाषिपठाता

स्वामी प्राणानन्द सरस्वती



## आर्य जगत् की शान

### २०० बिस्तर वाले

निर्माणाधीन नेत्र चिकित्सालय  
(अनुमानित लागत दो करोड़ रुपये)  
के लिए दिल खोलकर दान दीजिए

दान की राशि आयकर अधिनियम जी० ८० के  
अन्तर्गत कर मुक्त होगी।

सार्वजनिक बैंक/परीषद्/बैंक द्वारा

मन्त्री, माता चन्नबदेवी आर्य वर्मा नेत्र चिकित्सालय,  
बी-१ जनकपुरी नई-दिल्ली-१६ के पते पर भेजा जाए।

दानदाताओं के नाम चिकित्सालय की शिला पर  
पर अंकित किए जाएंगे।

निवेदक

रामगोपाल शोलवाले महाशय बमपाल शोलवाले आर्य  
सरलक चिकित्सालय प्रधान दिल्ली प्रधान मन्त्री  
एच प्रधान सा० आ० आर्य प्रतिनिधि आर्य केन्द्रीय महाशय बुल्लोसाल  
प्रति० सभा सभा सभा बैरि ड  
सौम्य से मराजिवां बी हट्टी प्रा० लिमिटेड २/४४ कोलिनगर  
औद्योगिक क्षेत्र, नई दिल्ली-११००१

## निबन्ध प्रतियोगिता

स्वर्गीय श्री लालमन आर्य की पुण्य स्मृति में एक  
प्रशस्त आस्था निबन्ध प्रतियोगिता का आयोजन किया  
जा रहा है। निबन्ध के विषय निम्नांकित हैं।

१- महर्षि दयानन्द के सपनों का अर्थ

२- वर्तमान चारित्रिक संकट,

अभ्युदयों का समाधान

किसी एक विषय से किसी से २ हजार शब्दों से अधिक एवं विषय की सीमा  
प्रतिधा सेवना प्राप्त होगी। निबन्ध विजेता की धनिय क्षति २० मार्च,  
१९८१ ई।

प्रथम पुरस्कार १००० रुपये, द्वितीय ५०० रुपये,  
तृतीय ३०० रुपये ५ सातवां पुरस्कार प्रत्येक की  
१०० रुपये।

प्रतिष्ठित विद्वानों का एक निष्ठावक समूह निबन्धों का सुपरीक्षण करेगा,  
जिस का निष्पन्न सर्वमान्य होगा।

निबन्ध जेम्स का पता—

श्री निलकराज गुप्त

संयोजक—श्री लालमन आर्य, निबन्ध प्रतियोगिता

प्रधानाचार्य—हमराज साहल स्कूल, पञ्जाबी बाग,  
नई दिल्ली-२६

## उत्तम स्वास्थ्य के लिए

## गुरुकुल कांगड़ी फार्मेसी,

## हरिद्वार की औषधियां

## सेवन करें

The advertisement for Gurukul Kangri Pharmacy is presented in a hexagonal grid layout. At the top, there are two circular logos with the word 'गुरुकुल' (Gurukul) inside. The central part of the ad contains several hexagonal frames, each showcasing a different medicinal product. These include a box of 'गुरुकुल' (Gurukul) medicine, a bottle of 'गुरुकुल' (Gurukul) medicine, and a box of 'गुरुकुल' (Gurukul) medicine. Each product is accompanied by a brief description in Hindi. Below the grid, there are two circular logos with the word 'गुरुकुल' (Gurukul) inside. At the bottom, the text 'गुरुकुल कांगड़ी फार्मेसी' (Gurukul Kangri Pharmacy) is written in a stylized font, followed by 'हरिद्वार' (Haridwar).

माला कार्यालय—६३, माला राजा कैदरबाग,  
फोन २६६८३८ बाबडो बाबाग, दिल्ली-६

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि तथा ११ हनुमान रोड, नई दिल्ली-१ कोम ११-१६ के लिए श्री डा० बर्नबार्ड द्वारा सम्पादित एवं प्रकाशित तथा  
वैदिक ज्ञान मन्त्री डा० १४, औद्योगिक क्षेत्र, दिल्ली-११ में मुद्रित। रजि० नं० डी (सी०) ७१६





## जीवन में तप का महत्त्व

पवित्र ते वितत ब्रह्मणस्पते प्रभुर्गात्राणि पर्येषि विश्वत ।  
अतप्यतनूनं नदामो अश्नुते शतास इद्वहन्तस्तत्समाश्रत ॥



साक्षात् किया धीरे साक्षात्कार की योग्यता रखने वाले निर्मल हृदयों को, धाक रखने वाली को उसका प्रत्यक्ष कराया भी परन्तु अधिकोपहत नेत्रों के लिए तो यहाँ कटना कठिन ही था। काव्य ने रस ही, सहृदयों को उसका अनुभव होता है परन्तु काव्य वासनायुक्त मनो को नहीं। इसी प्रकार पित्र-भ्रातृरस सब ने रस रूप झट्ट (रसो वै रस) समझा हुआ है परन्तु उस को बिना तप के नहीं उपार्जित सा सकता। यही हास वेद भववान् जगत्का सन्तान के बताते हैं—

उपयुक्त मन्त्र न बताते हैं—  
 (१) ३० ३० ३०

(हे) आपका (पवित्र) पवित्र ब्रह्मानन्द (अर्पित) सब जगह फैला हुआ है। (प्रभु) आप सबके स्वामी (नात्राणि) शरीरों में (विश्वत) सब ओर (पर्यंथ) व्यापक हो (अर्थात्) हमारे शरीर में आप सब जगह व्यापक हैं। बट-बट में आपका आनन्द लभ्यमान है। परम—

(धनचक्र) जिसने धनपते खरीद  
को, मन को बुद्धि को योग्यापन ने नही  
उपाया को धर्म (आत्म) कच्चा है, धन्यास  
की धर्मि ने नहीं पाया है (न चरन्तुः)  
मह धापके उस पवित्र रक्त को नहीं चसु  
समाज, (प्रशुभ इन्द्रायुष-स्तवमासा)  
काल ठग को पाते हैं को एक पग हूँ है  
ही उसे बाप को दत्त हुए धन्यही प्रकार  
चलते हैं । धन्यापन धर्मिण है, धर्मचर फेला  
हुआ है, हमारे धर्मिण ने स्वाध्याय में प्र  
हृत उसे विना तप के नहीं पा सकते । उपनिषद्  
कहती है वपला नीचते ब्रह्म (युष्मक)  
ब्रह्म अपन के पुना जाता है । कबीर साहब  
ही कहते हैं—

हृवस करे प्रिय मिसन की  
और सुख चाहे सब ।  
पीर बने बिह पगली

अर्थात् बिना कष्ट उठाए भगवान् से प्रियता नहीं हो सकता। सुफी धर्ममार्ग

उन्ने वायद कि यार प्रायद ब किनार ।  
ई दौलते सरमद हुमा कसरा न दिह्यद ।  
अर्थात् ईश्वरीय सम्पत्ति हर किसी

को नहीं मिल सकती। भगवान् के दर्शन पाने को बहुत समय चाहिए।

यमेकवचनसिद्धस्ततो याति परं  
गतिम् । (गीता)

[illegible]

## आँखों का विशाल निःशुल्क शिविर

माता वीवानचन्द्र चन्द्र लताजी के उपलक्ष्य में वीवानचन्द्र ट्रस्ट द्वारा वीवानचन्द्र नर्सिंग होम मद्रास हौटल २ जैन मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली-१ में निःशुल्क मेज निश्चिन्त भवावा का रहना है। १४, १६, १७ मार्च को प्रातः ८ बजे से दोपहर को जाच होगी। चापरेशन वाले दोपहर को उठी दिन बाहिन कर लिया जाएगा। भोजन खाइएगी, चापरेशन तथा अपने का व्यय साठ वीवानचन्द्र ट्रस्ट द्वारा किया जाएगा। छुपना अपने विस्तर, भोजन के बर्तन साथ लाई।

निदेशक  
हरमाज ४४३५३६ संश्लोक मन्त्रोपा

सहार सागरन में सवार है। ऐसे घोड़े  
ही पहाड़ीलों में घुमावदार बाग़ दिया।  
इस में एक से एक सवार पहाय पर्वत  
हैं। दिखत तब दिख्य घोषधियां घायल  
घनेक धड़धुत घमरकार दिखाने वाली  
कही प्रथम ही वाहुरें इसी सवार में  
हैं। बिजली कीसी सवार से निकली की  
रात को दिख बना रही है और महीनों का  
मास जिनमें से कर सात हैं। ऐसीर  
(यूरोपी की फियलियण्ड) इसी सवार का  
घमरकार है, की वाहुरें के भीतर बहने  
की प्रयत्न दिखता है। सहरम रोमियों  
की सबसे बड़ा पुस्तक है बिजली की  
चिह्नितता से ही रोमियों की सवार मास  
मुद्रा है। रैडियन जैसी वायु जिस गरम  
की ही कृष्ण वायु इसी सवार की  
ही है। रैडियन कम चिह्नता प्रदुत  
है जिसके कारण जल को में डेरे डेरे अनु  
के बल सवार की स्थान-वाहियों से  
बाधित होने लगे। गारे का तब कीजिए।  
एक से के व्याख्याना तब के व्याख्या  
होने दूसरे से तब के अपने कम्परे से डेरे डेरे  
सुनिष्ट। प्रथम बहाने में, प्रथम से तब के  
उत्पत्ति भूमि जाने के बाधितों करते  
होते। यह सब बमकारा इसी सवार में  
से निकल पड़े। यूरोप का सब विज्ञान-  
वैज्णव इसी सवार में सब दिख रहा था।  
का शैलीनों को इस एहरे की कही  
स्वयं स तो मही मास सावे। इसी पिट्टी  
में से जल में से घनिष्ठ मास में है, यह  
दिख्य बमकारा कही मुद्रा। केसक मुद्रा  
का नाम है। मेथुन की, जल सवारों  
पिट्टी की कट्ट दिख्य इतिनों की कही  
कीवर्तों का म्हा दिख्य पहाय में पहायों  
की म्हा, तब यह दिख्य बमकारा हैवने  
की दिखे। जब स फिक्ता तो प्रकृति हैवने  
की दिख्य बिजुलीनों की प्रकृति। बिना  
तब दिख्य पहाय पानी में से प्रथम (विपत्त)  
दिख्य सकृता। तब यह सात सवार  
में पहाती की फि पानी के पिलने में की म्हा  
मुद्रा पिलने से दिखने बिजली पिल सवती  
है। यह सात सवार की म्हा पानी के  
कर्मनों से शान्त हुई बिजली प्रकृता प्रथम  
कर रही है। येमेक कम का सात की म्हा की  
बरीत सवार है। इस पानी में प्रमेक  
सार मुद्रा है। तब करो प्रथम होये।  
जम्हरीयन सारी रहें से सारी पायप। एक  
उत्तम की कहवता है —

हस्ती के शहर में प्रार

स्वादिग है चमक जाप्रो ।

कच्चे न रहो बल्कि  
किसी रङ्ग में एक आगो ।

जिस प्रकार भौतिक ससार में घनेक  
मुज्ज साय य जो प्रकट हो गए और अभी  
हैं, जिनकी प्राप्ति के लिए वैज्ञानिक तप

## ★ दयानन्द वचनामृत ★

मैंने धर्मसमाज का उद्धान लगाया है। इसमें मेरी ध्वस्त्या मालो की हो। पोषो मे बाद भावते समय राख और मिट्टी मालो के खिर पर पड़ हो जाया करती है। मुझ पर राख और हूल बाहे जितना पड़े, मुझे इसका कुछ भी ध्यान नहीं, परन्तु वाटिका हरी भरी बनी रहे, और निश्चिन्त फूलें फले। □

## सम्पादकीय

अनन्त

आर्य सन्देश  
एक भारी षड्यंत्र

"भारत तरह तरह के फलबो से भर गया है, वह हलाक दोन हीन है, उसमें मोत का काला साया महरता नजर आ रहा है। हिन्दू बम ने हिन्दुओं में इस और भ्रम-विश्वास सवा सवा के लिए भर दिया है। हिन्दुओं के लाखों देवता हैं उनको कोई एक समान पूजा पढ़ति नहीं है और वे बम के नाम पर रहता करत है। भारत को ६६ करोड़ जनता को दु सो और ६६ करोड़ स मुक्ति पान के लिए ईसा मसीह का अनुयाया बन जाना चाहिए।" ये शब्द पठकर आपका कसा लगा है? इस स भी कटु उचित शब्द धर्मकार के इर्वाकलक संगठन ने ५ जनवरी को न्यूयार्क के अपने टेली-विजन प्रसारण में कहे। दो घण्टे के प्रसारण में भारत की बहुसंख्यक जनता का जिस बद् रूप में प्रस्तुत किया है, उसके न केवल हिन्दुओं का बालक सारे हिन्दू बम का अपमान हुआ है, अपितु यह सारे भारत देश का अपमान है।

ऐतद्वाक्य धर्म के यदि देखा जाये, दुनिया में युद्ध का उचित रूपपात ईसायत से हो हुआ है। जितना धर्मविश्वास बाइबिल और ईसायत में है इतना धायद कहा हो। ईसायत ने जितना जून अपने हो भाइया (ईसाई) का बहाया है उतना उन्होंने दूसरे का नहीं बहाया। जितन सत्यकथन करने वाले, माटन, दुष्टर या बलात्क गवालयो, ब नो धार्मिक अननित लोगो को सतापित किया और मृत्यु के गाल में पड़वाया उतना पाप कायद हो। इसा मजहब न कमया हो। हमारी धर्म निन्दा करने को नहीं है, हमारा उच्छति ता 'यसुधब कुटुम्बक' की उच्छति है, जहा सारा बरता के दु सो को अपना दुख समझ जाता है। हमारी पावन वेद म्चा कहती हो—

निश्चय यस्या सर्वाभि भूतानि समीतास्यते।

समस्त प्राणिमात्र को हम भिन्न की धर्म से देख। सर्वां भासा मय भिन्न भन्तु। सब अथाए हमारी भिन्न हो जाय। हमारी धर्म उच्छति ने तो ईसाई बम, मुसलमान बम, हिन्दू बम का उपवेश नहीं है, बहा तो कहा गया है—मनुष्य भन, इन्धन भन, इन्धनियत सोख। इससे बडा बम और क्या हो सकता है।

इर्वाकलक संगठन ने अपने प्रसारण में बम की भणील भी की है जो ईसाई मिशन के धर्म परिवर्तन के काम भाये। और बाप जानते ही है यह पैसा भारत में ईसाईकरण के लिए प्रयोग किया हो जा रहा है। इस बद्-धम से नागालैण्ड और मिझोरम, गोवा में ईसाईयत के बहुत मे घा हो गया है। धर्म जनका लख मणियुर, निपुरा, मेघालय तथा कार्बल का क्षेत्र उच्छति है।

भारत सरकार ने तुलत ही कोई विशेष कदम नहीं उठाया तो भारत के अनुजो के नापाक इरादे बकर सफल हो जायमे।

भारत सरकार ने चाहिए, आधियासी, जनवासी, गिरिजन सेवा भाषा बिना के नाम पर भी ईसाई संगठनों को करोड़ रुपया अनुदान दिया जाता है वह तुलत बम कर दिया जाये तथा इस प्रकार के प्रसारणों का विरोध किया जाये। ●

मेरा उद्देश्य इस प्रकार लोगों को मिलाना है, सकल समुदायो को एकता में लाना चाहता हूँ कि कोल भील में लेकर ब्राह्मण पर्यन्त सब मे एक ही जातीय जीवन की जाग्रति हो। चारो वर्ण के लोग एक दूसरे को भ्रम भ्रमी समझे। □

## पब्लिक स्कूलों की संस्कृति

भारतीय परिवेश की उपजाऊ भूमि में पब्लिक स्कूलों का विकराण वृक्ष दिनोदिन बढ़ता आ रहा है। इस पीछे का बीज भ्रमों को डारो बोया गया, भ्रमों के मानसपुत्र तथाकथित उच्चवर्ग द्वारा पोषा गया। आज इस वृक्ष के कुफल भारतीय संस्कृति पर गिरकर सदाश पड़ा कर रहे हैं। कान्वेंट स्कूलों में बच्चों का पठान फंशन नहीं, मजबूरी का होता जा रहा है। मेरे एक परिचित की सुपुत्री का सम्बन्ध एक सम्प्रान्त परिवार से होने की बात चली, लड़के वालों में साफ-साफ कहा—'देखो जो लड़का सान्पट मे पडा है, इतने हजार रुपये पढाई में व्यय हुए हैं लड़को आ पब्लिक स्कूल की पढी होनी चाहिए।' जहा विवाह सम्बन्धों में पब्लिक स्कूल से पढ वर वर को बडाया दिया जाता है वहां नौकरी में तथा समाज में पढ-लिखे व्यक्ति की सम्म कहलाने का भी अधिकार मिलता है।

इसलख मे दरो, हेरो, विन्नेट्टर, रम्बो धार्मिक नयमग एक दर्जन ऐसे स्कूल हैं जो तथाकथित उच्च शिक्षा और सम्मता के जनक मानलते है। ये स्कूल बेहद सजीने तथा भ्रमसरछाहों के लिए सुरक्षित बने हुए हैं।

भारत में भी भ्रमों ने येही मृदु खला प्रारम्भ की। पहले इनमें राज बस के समुत प्रविष्टि हुमा करते थे, उसके बाद वे व्यापारी वर्ग के अधिक भाग वाले व्यक्तियों के लिए सुरक्षित हो गये। आज भारत में व्यापित प्राण ये स्कूल सट बेवियर (कलकत्ता), सेट पावज (शार्जिन) ला मार्टिनेर, (लखनऊ) विश्व काटन (विमना), सारिख स्कूल इन्ने बडे-बडे राजबता, धर्मिनात करोडपतियों के बच्चे शिक्षा पा रहे हैं। इन पब्लिक स्कूलों में बच्चों को प्रवेश दिलाया भी किया जाता है। भारत भर में जितने भी विख्यात पब्लिक स्कूल हैं, अधिकांश ईसाइयों के डारा ही संचालित हैं और इनमें पढने वाले छात्र अपनी संस्कृति अपना बर्ष अपने महापुत्र राम, कृष्ण धार्मिक तथा अपने पर्व त्योहार मूलत आ रहे हैं। घोर एक दिन ऐसा घायेगा जब सँकाले की नीति पूर्णत सिद्ध हो जायेगी। उसके स्वन के अनुसार ये भारतीय तन से भारतीय होने पर मन से पूर्ण ईसाई हो चुकेगे। ईसाइयों ने अपनी प्रचार योजना में मूलत दो लक्ष्य रखे हैं, शिक्षा पर अधिका तथा भस्मतालो का प्रसार। आज उनकी यह योजना मूर्ततय चारण कर चुकी है। भस्मे भस्मताल, भस्मे स्कूल सब ईसाइयों के हाथ में हैं, इनके माध्यम से ही ये ईसाईकरण में लगे हैं। भारत सरकार को इस समस्या को समझते हुए इन सबका राष्ट्रीयकरण कर लेना चाहिए। शिक्षा क्षेत्र में ऊँच नीच का भेद मिटाकर देश के सभी कक्षाओं का अधिक उन्नत करना चाहिए।

धर्मसंघानों की कार्य योजना ईसाई, मुस्लिम तत्त्वों के बढते उत्तरनाक पक्षों से अपनी संस्कृति और सम्मता को बचाना है। देश में भारतीयता तब बढे जा रहे हैं, इसका एक कारण यह भी है कि हम मजग नहीं हैं। स्वामी दयानन्द ने जिस शिक्षा पद्धति को सवार के सामने सलाह नौरक-पूर्ण पद्धति है। उसके अपनाने के लिए हमें भरसक प्रयत्न करना चाहिए। महात्मा मुन्शीराम के सामने जब यह दुनीती धायो, घर में अपनी ही बच्चों को जब यह गाते सुना—ईसा-ईसा बोल, तेरा स्या लगेगा मोन। ईसा मेरा कृष्ण कहूँगा, ईसा मेरा राम रवेगा। उन्ने दिखायो दिया राम कृष्ण की उच्छति गिरती जा रही है बस स्वामी दयानन्द की शिक्षा पद्धति के स्वन का एक धारस नमूना उच्छति हरिद्वार में मुसकुल कागडों के रूप में स्थापित किया। जिसे देखने इन्नेष के भूतपूर्व प्रधानमन्त्री रैन्जे मंडानलक भाये, और देखकर धर्मपक्ष प्रशंसा की।

आज भाष्यकता है इस बात की, जितने स्कूल ईसाई खोनते जा रहे हैं, हम उनके मुकाबले पर उनी स्तर के वैदिक संस्कृति के भद्रकृत स्कूल खोल और वही सुविधार्थ देवान करे।

—सुधापाल सुधाशु









## आर्यसमाज के पुराने साहित्य सेवी पं० बद्रीदत्त शर्मा जोशी

डा० भवानीलाल भारतीय

पत्रकार और लेखक पं० बद्रीदत्त जोशी का जन्म १८६६-६७ ई० (१८२५ वि०) में काशीपुर जिला नैनीताल में हुआ। इनके पिता पं० मुखोत्तम जोशी ब्राह्मण साहित्य एवं ज्योतिष के प्रकाशक विद्वान् थे। संस्कृत की प्रारम्भिक शिक्षा बद्रीदत्त जी को अपने पिता से ही मिली। पर १२ ही उमर का कारखी शिक्षण भी हुआ। १८८१ में वे मुरादाबाद जाते और वहीं की संस्कृत पाठशाला में प्रविष्ट होकर उन्हीं व्याकरण एवं साहित्य का प्राप्ति अध्ययन किया। इस पाठशाला में प्रवेश के समय उनकी आयु मात्र १५ वर्ष की थी। यहाँ उन्हें पं० भवानीलाल जोशी से रचना का प्रयोग प्राप्त हुआ। जो धर्म युग के छात्र बँदाकर गए थे। उनके छात्राध्ययनियों में प्रसिद्ध पत्रकार पं० पद्मसिंह पं० तथा सुप्रसिद्ध सत्तासत्तवर्षी विद्वान् पं० ज्ञानाश्रमसिंह मिश्र भी थे। स्व० साहू ग्यामसुन्दर की प्रेरणा से जोशी जी धर्मसमाज में प्रविष्ट हो गए। जब पं० खडकत शर्मा धर्मसमाज मुख्यालय के उपदेशक पद की त्याग कर कलकत्ते प्रसिद्ध हिन्दी साप्ताहिक भारतमित्र के सम्पादन बन कर चले गए, तो उपदेशक का पद पं० बद्रीदत्त जोशी को मिला। धर्मसमाज मुख्यालय का पालिका मुख पद धर्मसमाज का सम्पादन भी कुछ काल तक उन्होंने किया था। जब धर्म प्रतिनिधि समाज पत्रिकागोत्र प्रवेश (वर्तमान उत्तर प्रदेश) की स्थापना हुई और मुखी नारायण प्रसाद (महात्मा नारायण स्वामी) को इस समाज का मुखी बनाया गया, तो पत्रिका बद्रीदत्त समाज के कार्य में भी मुरादाबाद रहते हुए सहयोग देने लगे। उन दिनों समाज का कार्यालय मुरादाबाद में ही था। यह स्मरणयोग है कि मुखी नारायण प्रसाद के हृदय में धर्मसमाज के प्रति आस्था के बीज का बलन करने का तथा उनका उपनयन उत्कार कराने का भी जोशी जी ही थे।

१८९० से १८९६ तक पं० बद्रीदत्त जोशी ने धर्म प्रतिनिधि समाज के उपदेशक पद पर कार्य किया। इन वर्षों में उन्होंने अनेक भाषणों किए तथा अनेक स्वामीयों पर धर्मसमाज में स्थापित की। मुरादाबाद में सत्तासत्तवर्षी गोकुलचन्द से मिली-पुजा पर उनका प्रसिद्ध भाषण ही था। १८९६ से आरम्भ प्रतिनिधि समाज में त्यागपत्र दे दिया और नेरठ कान्हेय सोसायटी में चले गए तथा संवत्स पत्रिक पद के दोनो वैदिक स्कूल जी० ए० जी० कल-

पुर का (पुराना रूप) में वर्षवारस के धर्मपाठ रहे। जी० ए० जी० कान्हेय बेहुराज के स्थापक मुखी ज्योतिषरूप प्राप्त हुआ था वह रहते थे। १९०१ में जोशी जी नेरठ से धर्मवेर जाते और वैदिक सनातन में सन् सनातन का कार्य करने लगे। तीन वर्षों तक बाबू राम विश्वास के मार्गदर्शन में कार्य करने के उपरान्त वे पुन नेरठ जा गए।

१९०५ में प्रसिद्ध टिहरी वास्पाई हिन्दी महाभाषा बीमान् कीर्तिदाह महा-पुर के निगमण पर हुआ। टिहरी वरस में धर्मसमाज के नेता मुखी ज्योतिषरूप को धर्म विद्वान्पत्र के साथ वास्पाय हेतु आमजित किया। तब पं० खडकत जोशी महाग्रहोपाध्याय धर्म युगि पत्रित सुलसीराम स्वामी धर्मसमाज के प्रबन्ध के रूप में सम्मिलित हुए। १३ दिन तक यह शास्त्रार्थ महापुर के सभापति के सम्मन्ध हुआ सत्तासत्तवर्षी के प्रबन्धता रायबहादुर पत्रित सुलसीर तब तथा बाबू राम विश्वास वरस के पत्रित गाडूराम शास्त्री थे। इस घटना के पश्चात् जोशी जी कागपुर चले जाते और जी० ए० जी० कान्हेय सोसायटी की ओर से धर्मप्रचार करने लगे। प्रचार हेतु अब उन्हें महापुर प्राप्ति तथा बिहार प्राप्ति प्रान्तों के सुदूर स्थानों में भी जाना पड़ता था। कागपुर की जी० ए० जी० कान्हेय सोसायटी के सत्तासत्तवर्षी में प्रकाशित होने जाते धर्म सत्तासत्तवर्षी उर्ध्व मासिक का सम्पादन की आपने संवत्स ८ वर्ष तक किया।

१९१३ में जोशी जी कागपुर से पुन मुरादाबाद चले आए और धर्मसमाज के प्रचार तथा सन्ध लेखन के कार्य में जुटे रहे। १९१६ में धर्मसमाज के जी० ए० जी० कान्हेय की प्रेरणा से यह महापुरात के सत्तासत्तवर्षी का कार्य किया। १९१७ में इसाहाबाद जाते और हिन्दी प्रेरण में कार्य करने लगे। कागपुर में मुद्रित्व स्थित कन्पा पाठशाला में धर्मपाठ बन गए। यहाँ आठुर बबनमाज सिंह की प्रेरणा से आपने विषया विचार के समर्थन में एक पुस्तक लिखी जिस पर आपकी एक सङ्ग्रह अपने पारिपोषिक स्वयम् आठुर साहू ने प्रदान किए और स्वयम् से पुस्तक की तीन हजार प्रतियाँ छपाई। १९२० में जोशी जी मुरादाबाद चले जाते। पं० खडकत शर्मा की सगी नैनी प्रेरण से प्रकाशित होने वाले 'संसार का सनातन करने' १९२५ में मुरादाबाद की सत्तासत्तवर्षी

## आर्यसन्देश विशेषांक

२५ मार्च धर्मसमाज स्थापना दिवस पर धर्मसन्देश का हम स्मरणीय सप्ताहणीय विशेषांक प्रकाशित कर रहे हैं। विद्वान् लेखक अपने लेख निम्नांकित विषयों पर लिखने की कृपा करें।

- १ स्वामी धर्मसन्देश में धार्मिकता का क्या महत्त्व है?
- २ महर्षि धर्मसन्देश धार्मिकता की ओर के प्रेरण एवं वैज्ञानिक है।
- ३ भारतीय समाज के विकास में धर्मसमाज का योगदान।
- ४ धर्मसमाज क्या चाहता है?
- ५ हिन्दी भाषा के उत्थान में धर्मसमाज की भूमिका।
- ६ वैदिक धार्मिकता।
- ७ धर्मसमाज की योग्यता की वैज्ञानिक परम्परा में धर्मसन्देश।

लेख लिखने का पत्र—

सम्पादक—धर्म सन्देश साप्ताहिक  
१५, हनुमान् रोड, नई दिल्ली-११०००१

## कैसे होली आज मनाएं ?

—राधेधाम धर्म विद्याभ्यासप्रति  
मुद्राफिर बाना, मुद्रागमपुर (उ०प्र०)

युव रहा है जहाँ धर्मय हो  
मानवता का क्रन्दन,  
होहा जहाँ निरन्तर नियमित  
दानवता का, पशु प्रवृत्ति का  
कलुषित-कुटिल-कृमय-स्वार्थ का  
स्वागत व धर्मनन्दन,  
होता नहीं मनुजता का  
सुचिता का, समरसता का,  
स्मिता का स्मन्दन,  
जलम जलता हो, जलती हो  
पञ्चनदी की धरती,  
धर्मियों का यह देश जल रहा  
भारत माँ की पुण्य धर्मिता  
जलती हो निधि-वासर,  
होहा हो  
मुनमरी, गरीबी, सहर्षाई का  
टाढव नर्तन  
अष्टाचारो का फँसा हो  
जल धर्मद-निवर्तन,  
जहाँ सरे बाजार  
नारी की अस्मत् लुटती हो  
नव सधुर्षों की जहाँ बलि की  
हृदि चढती हो  
हृदि धाज हम  
कैसे—  
होली का त्योहार मनाएं ?  
देस जल रहा, जलती है मानवता,  
फिर—  
क्या होली धाज जलाएं ?

सकल पाठशाला में धर्मपाठ करने। १२ वर्ष पश्चात् १९२७ में प्रेम विद्यालय लाहौर में सत्तासत्तवर्षी का स्वीकार किया। पश्चात् मुद्रागम महाविद्यालय जवाहरपुर में तीन वर्ष तक यह पद सम्पादन कार्य करते रहे। बीच में वेड बने तब (१९२५ के जल हल) पुनः कार्य के

कर जवाहरपुर का गये। स्वयम् सत्तासत्तवर्षी मुरादाबाद चले गये और वहीं सन्ध लेखन कार्य में संलग्न रहे। १९४६ ई० में ८३ वर्ष की आयु में साधका निधन हुआ।





## आर्य जगत् के समाचार

### दिल्ली की आर्यसमाजों के नाम अत्यावश्यक-परिपत्र

आर्यसमाजों का वित्तीय वर्ष ३१ मार्च १९८३ को समाप्त हो रहा है। आप ३० अप्रैल १९८३ तक निम्नलिखित विवरण तथा वार्षिक सभा काव्यलय में जिव-दान की कृपा करें।

१ १ अप्रैल १९८४ से ३१ मार्च १९८३ तक का वार्षिक विवरण।

(अ) यज्ञ, संस्कार, मुद्रियाँ, प्रत्यक्षीय विवाह, दिन के समय धाराधारण रीति एवं बिना सहज कराये गये विवाहों का तथा समारोहों का विवरण।

(भा) समाज के अधीन चल रही संस्थाओं, विद्यालयों, चिकित्सालय, मुक्त-सच सेवा समिति आदि का विवरण।

२ १ अप्रैल १९८४ से ३१ मार्च १९८३ तक का वार्षिक विवरण।

३ सचस्यता मुक्त का वसति गेद प्रचार मूलन १०१ रुपये और वार्षिकलेख का वार्षिक मुक्त २०/- रुपये।

आशा है कि आप समयवशात् कायवाही करते सक्रिय सहयोग प्रदान करेंगे।

निवेदन— डा० बर्षपाल

महामन्त्री दिल्ली वार्षिक प्रतिनिधि सभा

### आर्य केन्द्रीय मभा दिल्ली की मासिक बैठक

आर्य केन्द्रीय सभा की वार्षिक बैठक आर्यसमाज मन्दिर मार्ग टाउन दिल्ली-६ में १० मार्च १९८३ को अपराह्न ४-०० बजे आर्यसमाज स्थापना विषय (२२-३-८३) के धारोवन के सम्मन्ध में विचार करते हेतु आयोजित की गयी है।

आपने विमर्श प्रयुक्त है कि इस बैठक में पचार कर अपना पुर्ण सहयोग प्रदान करें।

महामन्त्री—बुधदेव

### वार्षिकोत्सव सम्पन्न

आर्यसमाज विरसा साइलस का वार्षिकोत्सव १८ फरवरी से २४ फरवरी तक पूरवाम से सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर श्री व० रामकिशोर वैद्य की वेद कथा हुई।

तथा श्री व० हरिविन्ध, आचार्य गुरुकुल गीतन नगर द्वारा सामवेद पारायण यज्ञ हुआ।

मन्त्री—बलकृष्ण शर्मा

### अनाथ महिला का विवाह

३२-०३ को आर्यसमाज समस्तीपुर के सखाप ने २४ रूखी एक अनाथ कन्या अजमा कनवती का विवाह सरकार की माल बाहु विहू धाम वाली पुत्र बिना समस्तीपुर के साथ बड़ ही भूमधाम से सम्पन्न हुआ। समस्तीपुर की वनवा रा आर्यसमाज के इस रचनात्मक कार्य का बहुत प्रभाव पड़ा है।

मन्त्री—नमल किशोर

### वैवाहिक विज्ञापन

२८ बर्षीय, गुरुकुल लासक, एम० ए० हिन्दी, सहाय, वार्षिक प्रचारक तथा निजी कारोबार में यच्छी धाय (बात आतीय) बर के लिए एक दुयोगा धर्ष कुम्हार कन्या चाहिए। वहेज एवं बाति बनन नही।

पत्र ब्यवहार का पता—

श्रीबाराज साहनी  
आर्यसमाज मार्ग टाउन  
सोनीपत (हरियाणा) १३१००१

### भाषण प्रतियोगिता का पुरस्कार

आर्य मुक्त परिषद (रवि० दिल्ली) के सत्याग्राम ने वृद्धि बोध उत्सव के पुर्ण अवसर पर 'राष्ट्रीयमान ने बहुविध ध्यान का योगदान' विषय पर भाषण प्रतियोगिता का आयोजन कीटा। फिरोजशाह नई दिल्ली ने महात्मन बर्षपाल जी (प्रधान वार्षिक केन्द्रीय सभा, दिल्ली) की अध्यक्षता में प्रतियोगिता से सम्पन्न हुआ। इस प्रतियोगिता में २३ वार्षिक सभाओं ने भाग लिया जिसमें सर्वश्रेष्ठ पाठ्योपेक्षक व 'सत्यप्रिय जन 'विजयोपहार' आर्यसमाज कोषी रोड के छात्र राजू विद्यानिक ने प्राप्त किया।

उसी वनता बर्षको को उत्साहवर्धनार्थ पुरस्कार स्वल्प हीन ही ६० का वैदिक साहित्य परिषद् द्वारा एवं एक हजार रुपये की नगद राशि सभा ने उपस्थित वार्षिक जगता द्वारा विवरण की गई।

—कमल किशोर शर्मा

### आर्यसमाज की कृपा

आर्यसमाज सीताराम बाजार के मन्त्री श्री बाबूराज गुप्त के पास २३ फरवरी ८३ को मोल डाकखाना गई दिल्ली में बैठा था। वे वहा वसिष्ठेय पोस्टमास्टर हैं? अमानक उनके कपरे में उन के पोस्टमास्टर की सेवा विहू धाय बिना स्वा-मास्टर उसी दिन बनवाई में हुआ था। उनके साथ तय पोस्टमास्टर की थे।

मुझे आत्मन्य प्रसन्नता हुई जब दोनों पोस्टमास्टरों ने स्नेह-भक्ति से गुप्त की को सेवा और की सेवा विहू ने मुस्कराते हुए उन्हें एक प्रसन्नता दिया जिस ने डा० पो० मास्टर के तौर पर उन के निष्ठापूर्वक कार्य की सराहना बहुत सुचारु बन्यो में की गई की।

मैंने उस पत्र को पढा और गुप्त की को बधाई दी। उनका केवल यही कह था कि 'यह सब आर्यसमाज की कृपा है, उस मा की ही यह एक बड़ी निगा है कि आपने कर्तव्य का पालन कम समय कर की-जान से करो।

श्रीमप्रकाश, त्रिचिपच

### आर्यसमाज अशोक विहार फेज-२ का वार्षिक निर्वाचन

आर्यसमाज अशोक विहार (गुरुकुल) फेज-२ का वार्षिक निर्वाचन वित्तीय २४ फरवरी ८३ को वार्षिक श्री वीरनाथ जी विद्याभालेकार की अध्यक्षता में सर्व सम्पत्ति से निम्नलिखित प्रकार से सम्पन्न हुआ—

प्रधान—श्री पी० एन० हरीन

मन्त्री—श्री अशोक बचन

कोषाध्यक्ष—श्री बलदेव राज सचदेवा

अन्तराल सदस्यों के पुनर्ने का अधिकार प्रदान की को सभा में प्रदान किया।

मन्त्री, आर्यसमाज अशोक विहार, फेज-२

### वार्षिक यज्ञ, उत्सव

सम्पन्नवाम वरानत्य वैदिक सत्याग्र धामन, वरानत्य नगर, माधिकावाम २८ वार्षिक यज्ञ सत्योत्सव विनाक ७ वार्षिक रविवार से १४ अप्रैल १९८३ रविवार तक अशोकपुरवर्षक धारोविज किया गया है जिसमें उज्जकोटि के मिश्रान्, सन्वारी बः सन्वारीवैदिक वरार रहे हैं।

—श्यामी प्रेमनाथ सरस्वती

### वार्षिक चुनाव

आर्य मुक्त परिषद् (रवि०) दिल्ली का वार्षिक चुनाव १७ मार्च, १९८३ रविवार को वार्षिक वरान वीरान हाव, वावनी पौक, दिल्ली-६ में सम्पन्न हुआ।

—कमल किशोर शर्मा

### आर्यसमाज गंगारज प्रयाग का वार्षिकोत्सव

इस आर्यसमाज का वार्षिकोत्सव १३ मार्च से १७ मार्च तक होने का रहा है। इस अवसर पर अनेक विधाएँ, वार्षिक पचार रहे हैं।

मन्त्री—विमलकुमार सिंह



आर्य जगत् की शान  
२०० बिस्तर वाले निर्माणाधीन

## नेत्र चिकित्सालय

(अनुमानित लागत दो करोड़ रुपये)

के लिए दिल खोलकर दान दीजिए

दान की राशि आचमदेव अधिनियम जी० ८० के  
अनुरोध कर मुक्त होगी।

सारा दान बैंक/मनीऑर्डर/बक ड्राफ्ट द्वारा

मन्त्री, माता चन्ननदेवी आर्य चर्मथ नेत्र चिकित्सालय,  
बी-१ जनकपुरी नई-दिल्ली-५८ के पते पर भेजा जाए।

दानदाताओं के नाम चिकित्सालय की शिला पर  
कृत किए जाएंगे।

निवेदन

१	२	३	४
महाशय वसुधा	श्रीमप्रकाश बाबू		
बन्नी	प्रधान	मन्त्री	
५	६	७	८
लिनिधि	आय केन्द्रीय	महाशय पुष्पिला	
९	१०	११	१२
समा	के० ड०		

टी प्र० लिमिटेड ६/४४ कोतक

१५ मार्च, नई दिल्ली-११००१

## आर्य सन्देश साप्ताहिक

पत्रिका के ग्राहक बनें, और बनाएं

क्योंकि यह पत्रिका—

- (१) वैदिक मान्यताओं को उजागर करती है।
- (२) आर्यों (हिन्दुओं) की महान् परम्पराओं की याद दिलाती है।
- (३) महर्षि दयानन्द की वैचारिक क्रांति से आरम्भ चेतना जागृत करती है।
- (४) भारतीय संस्कृति के मूल बिन्दु, प्रसंगों, महापुरुषों तथा भावार्थ संस्कारों को प्रकाश में लाती है।
- (५) ऋषि, मुनि, तपस्वी आत्माविद्वानों की वाणी का बोध कराती है।
- (६) परम्परा की पवित्र वाणी वेद का प्रौढनीपयोगी मञ्जरु सन्देश लाती है।
- (७) नये लेखकों, कवियों, चिन्तकों, प्रतिभाशाली विद्वानों साहित्य विविधों को प्रोत्साहन देती है।
- (८) धार्मिक, सामाजिक और आध्यात्मिक ज्योति से मन-मनविष को प्रकाशित करती है।
- (९) वेद उपनिषद्, दर्शन उपनिषद्, स्मृति, कल्प सूत्र, आरण्यक ब्राह्मणग्रन्थ, रामायण, नीति, ऐतिहासिक, अमूल्य आर्य ग्रन्थों पश्चिकाक्ष लोगों ने पढ़ा तो क्या देखा तो क बगल को जिन ग्रन्थों पर सदा गर्व होता है सप्ताह बटोर कर आपकी

पत्रिका वार्षिक चन्दा २० रु०

महर्षि दयानन्द निवास

सम्पन्न मनोहारी स्था-

आर्य सन्देश

७. न. ११ स्थ

ग. क. ११ डी फ।

हरिद्वार की औषाधया

सेवन करें

शाखा कार्यालय—६३, गली राजा केदारनाथ,  
फोन २६६८२८

बाबडो बाजार, दिल्ली-६

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि समा १५, हनुमान् रोड, नई दिल्ली-१ ज्ये. ११०१६० के लिए की जा-कर्मपाल द्वारा सम्पादित एक प्रकाशित तथा  
वैदिक वेद, गली नं० १७, केदारनाथ, दिल्ली-११ में मुद्रित। रवि० नं० डी० (सी०) ७५६

# आर्य सन्देश

ओड़म्

कृष्णतो मिश्रमार्गम्

विषय विचर

दिल्ली आर्य प्रतिनधि सभा का साप्ताहिक पत्र

सूचक एक प्रति ५० पैसे

वर्ग ६ पत्र ६७

रविवार, १० मार्च, १९२६

प्रायः सप्तर १९६५=५३०=५४

फाल्गुन २०५१

वर्षाकल्याण—१६०

## पंजाब का उपेक्षित हिन्दू और अकाली नेताओं के तेवर

सत लोंगोपाल के साथ सात धर्म्य अकाली नेताओं की जिद्दों पंजाब समस्या हल करने में सहयोगी कदम है। लगभग सभी राजनैतिक वर्गों द्वारा स्वागत भी किया गया है, परन्तु अकाली नेताओं के तेवर इसी बदले नहीं हैं। हिरो-मरिण प्रबन्धक कमेटी के कार्यवाहक अध्यक्ष श्री प्रेमनिहल लालपुरा ने अपनी मांगें पुन दोहराई हैं। जब तक वे सात मार्गें पूरी नहीं होती, उनका अल्टीमेटम बरकरार है। उन की मांगें हैं—सभी अकाली नेता रिहा किये जायें। अखिल भारतीय सिख

छात्र फेडरेशन पर से प्रतिबन्ध हटे। उन सिख सैनिकों को फिर से गृहस्थ किया जायें, जो स्वर्ण मन्दिर में सैन्य कार्यवाई के दौरान अपनी बंदूकों से गोश में बाहर निकल आए थे। अकाली दल की तदर्थ समिति के सचिवक श्री सुरजन सिंह उकेदार का कहना है—पंजाब और अन्य स्थानों पर गिरफ्तार अकाली नेताओं और सिख युवकों को रिहा किया जाए, विशेष न्यायालयों की समाप्ति हो, पंजाब में काला कानून समाप्त हो।

दूसरी ओर १३ मार्च से २७ मार्च

तक दिल्ली में धाल हथिया सिख कान्फ्रेंस ने “विरोध दिवस” मनाने का निश्चय किया है। वे दिल्ली दलों में मरे लोगों को न्यायिक जांच के लिए २७ मार्च को रोट क्लब पर धरना भी देंगे। विस्मय की बात तो यह है इन अकाली नेताओं का बयान भी झटल नहीं है। लगता यह है कि इनके पीछे उग्रवाद की शक्ति अधिक प्रभावी है। जब तक उग्रवाद को सत्ता से नहीं दबाया जाता और शांतिप्रिय नेताओं को विस्थापन में नहीं लिया जाता समस्या का समाधान सम्भव नहीं।

पंजाब में गैर सिख या हिन्दू ५० प्रतिशत से कम नहीं हैं। सिखों के आश्रय से अधिक नामाचारी, निरकारी, उदासी, रामाध्वानी बंद हैं सिख, राम गडिये और कम्युनिस्ट सिख अपने को धर्म्य कौम नहीं मानते। इन सबको मिला-जुलाकर वे बहुसंख्या हैं। ये सब हिन्दू समाज के प्रथम हैं और सरकार को चाहिए कि अकालियों से बातचीत करते समय पंजाब के हिन्दू प्रतिनिधियों को शामिल किया जायें तभी समस्या का सही हल सामने आ सकता है।

## देश में प्रजातंत्र और उसका हृदय ठीक कार्य कर रहा है

विधानसभा के निर्वाचन में अधिकतर राज्यों में कांग्रेस (बाई) की प्रचल लोकप्रियता, जो इस बात को प्रकट करता है कि देश की सामान्य जनता ने राष्ट्रीय एकता और अलख्यता को ही इस चुनाव का भी मुख्य मुद्दा माना है। परन्तु साथ ही जिन राज्यों में जनता ने यह समझा कि कांग्रेस (बाई) का स्मिर विकल्प है वहा पुन विरोधी दलों को अवसर प्रदान किया। इससे बहु निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि देश में प्रजातन्त्र और उसका हृदय ठीक स्थान पर है। इन चुनावों ने पुन यह दर्शाया कि विषय में सबसे परिपक्व लोकतन्त्र भारत में ही है।

साथ ही यह भी सिद्ध कर दिया कि चुनावों में जनमानस का स्वागत ही सर्वोपरि होता है। चुनावों में प्रयुक्त प्रचार साधन धार्मिक की बात गीए हैं। जनता नये सिरे से देश का पुन-निर्माण चाहती है, यह भी धारित्व है। पिछले लोकसभा निर्वाचन के उपरांत युवा प्रभानमन्त्री माननीय राजीव गांधी ने प्रशासनिक एवं न्याय व्यवस्था का सुधार, कानून बन पर आधारित समानाचार, धर्मव्यवस्था की समाप्ति, पड़ोसी देशों से स्पष्टवाचिता एवं विरोध पक्ष को धार देने सम्बन्धी जो घोषणाएँ की उनका बहुत व्यापक प्रभाव हुआ। प्रपति के धनक कार्यक्रम समग्रदृष्ट

रूप से चलेंगे, ऐसा विश्वास प्रकट किया गया। ३५ वर्षों में दलबन्धन रोकने का प्रभावकर उपाय नहीं हो सका। वह एक मार्ग के अन्तर ही दलबन्धन विरोधी कानून के रूप में सामने आ गया, जिससे लोकतन्त्र की मर्यादा की रक्षा की जा सके। इस विषयक के पारित होने से विरोधी दलों को ही अधिक लाभ होगा, जिनके विचारक सत्ता पक्ष की ओर सरलता से धारित्व हो जाते हैं। पत्रकारों की स्वतन्त्रता से भी लोक-धर्मव्यवस्था को बढ़ावा मिलेगा। पर साथ ही पत्रकारिता के सही विकास के लिए पीठ पत्रकारिता से भी बचना चाहिए।

केन्द्र सरकार को उपरोक्त प्रगतिशील एवं जनहितकारी नीतियों ने जनमानस को प्रभावित किया और उसका परिणाम विधानसभा चुनाव परिणामों के रूप में सामने है। निःसन्देह बहुमत ने पुन भी राज्यों गांधी के नेतृत्व में विश्वास व्यक्त किया है। इस सर्व में एक विचारणीय बात जरूर है। वह यह कि चुनाव इतने सहज हो गए हैं कि ६६ प्रतिशत लोग चुनाव नहीं लड़ सकते। इस प्रश्न पर अवश्य विचार होना चाहिए धर्म्य धाम जनता की चुनाव-प्रक्रिया में दिलचस्पी नहीं रखी, जो जनतन्त्र के लिए घातक होगा। —डा० आनन्द प्रकाश

### दिल्ली विवेक प्रचार मण्डल द्वारा आर्यसमाज स्थापना दिवस

२४ मार्च, १९२६ को आर्यसमाज मन्दिर मालवीय नगर में प्रात ८ बजे से १ बजे तक आर्यसमाज स्थापना दिवस बड़ समारोहपूर्ण बनाया जा रहा है। प्रभु उच्चकोटि के विद्वान् एवं नेता पचार रहे हैं। इस अवसर पर अखिल लखर का भी आयोजन है।

—रामसरन दास धार्य, मंत्री

### स्थापना दिवस पर प्रसाद वितरण

आर्यसमाज छात्रीशाला भाग की ओर से मुंगी मोपदी कालोनी में प्रात ८ बजे से ११ बजे तक प्रचार एवं मिष्ठान वितरण का आयोजन किया गया है।

—डा० रघुवीर “कुमुद”, प्रधान

### आर्य केन्द्रीय सभा दिल्ली के उत्सवाधान में आर्यसमाज स्थापना दिवस का भव्य समारोह

२४ मार्च, रविवार को २ बजे से ५ बजे तक विद्वान् भाई पटेल हाउस रफी मार्ग नई दिल्ली के प्राणल में ब्रजभाष में बनाया जा रहा है। इस अवसर पर अनेक गन्ध-माय्य प्रतिष्ठित विद्वान् एवं देश प्रसिद्ध नेता पचार रहे हैं।

अध्यक्ष—श्री रामगोपाल शालभासे

वक्ता—श्री बंन भुवि सुधील कुमार, श्री सोताराम केसरी, श्री रामचन्द्र ‘विक्रम’, श्री ५० सिधुकुमार शास्त्री, डा० वासुदेव उपाध्याय

अधिक से अधिक सख्या में पचार कर धर्मलाभ उठाया।

महामंत्री—सूर्यदेव

कल्याण—वसन्तल ‘सुभाष’ पृ० २०

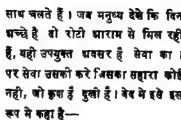
अवस्थापक—डा० गलेखीलाल

प्रधान सत्यारक—डा० सर्वपल

(नास्ते) ते तु प्रेत्यानिगच्छन्ति  
यद्युताम् यन्नवायिनाम् ।



थाय कस हम् देखते हैं कि चर्च का  
 र्क सेकर प्रत्येक वेबवे कपडों मे  
 के के मुह्य चर्ची व्यक्तियो को  
 colonies (काकोनियो मे) जाकर  
 क भूटे चर्चे रहाने से वैया नाते  
 कोई याबा के नाम से, कोई सण्डारे के  
 से तो कोई अद्विर बनवाना है। ५  
 ल जगमे पाप जो वे सॉके हैं। प्राय  
 कस जाते हैं। यह दोष सब दस्तोरों  
 ही रहा हैं सावधानी घरेलित है।  
 दोष विचारहीन होते हैं एकचित्त बन  
 व्यसनों मे समाते हैं। इस से पाप  
 है। ६। भिन्ना वेने मे, सहवास वेने मे  
 विवेक एज सावधानी चाहिए।



ओ३म् पृथीयात् इत् नायमानाय  
तव्यान् प्राचीयात्  
अनुपपद्येत यन्माय ।  
ओ हि धर्तन्ते रभ्ये चक्रा अश्वमन्य  
उपतिष्ठन्ति राय ॥

यह मन मैल है ह्याम का प्राब है  
कल नहीं। सेवा भी उसी की होती है  
जिलने पहले की हो। भाब हम दूसरे का  
ध्यान करते हैं कल हमारा भी दूसरे  
ध्यान करेगे, परवाह करेगे।  
इस सन्धर्म में एक बात विशेष है।

इस क्षणमें मे एक बात विशेष है।  
सतार मे सब से भयावह मृत्यु है। यह  
मृत्यु केवल गरीब को भूखे को ही नहीं  
प्राती। जे हुए—तुल भी मौत के शाठ  
चलते है। ओ दूसरे की, दुखियों की  
सेवा करते हैं। अपनी समताओं के धन-  
सत दूसरे को सामान्य करते हैं।  
अपनी नहीं होंते विचार करी होते। इसके  
अपनी कृपल स्थिति ओ अपनी विषा

अपने अविज्ञित या सञ्चित धन या साधना अम्यास से प्राप्त भक्ष आदि से दूसरों का भला नहीं करते वे समय आने पर सुख से वंचित रहते हैं । कहा है—

श्रीशङ्ख न वा उ देवा अपमिन्त् वय इतु ।  
 उताशितमुपगच्छन्ति मृत्यव ।  
 उतो रति पृथग्यो गोपयस्वति,  
 उताप्रत्यु न मजितार न विरजते ।

किसी भी जन्म-प्राप्त व्यक्ति को मृत्यु अवश्यम्भावी है। अन्तर जीवन-यापन की विविधता में है। एक बात ध्यान देने योग्य है—बहुत से भक्त लोग—बार्मिक जन ऐसा मानते हैं कि जो भी द्वार पर आये दो। इसमें सुष-पता का ध्यान अति आवश्यक कहा है—

अध्याय कृतविद्याय वृत्तिशीलाय नमोस्ते ।  
 ब्रह्मध्वन्यात् मुखा वस्तु न तेन बुभुक् समः ॥

मनुस्मृति में मनु जी ने लिखा है जो  
 समर्थ होकर भी कार्य करने की क्षमति होने  
 पर भी कार्य न करने के गिना माँगे तो उसे  
 ब्रह्मते जन्म ने उन्हीं धरो में पतु है। वनते  
 हैं। तत्कारणविधि में द्यौर उल्थायंत्रकाया  
 में मनुष्य स्वामी दधान्य जी ब्रह्मस्थो ने  
 भी स्वोक्त बेकर स्पष्ट किया है। बहो  
 गान्य —

यद्यपि समझाने की क्षमता क्षीय हो रही है। यह प्रश्न यह है कि—सेवा करता का भ्रष्टाचार क्या वास्तविक है। यह जो एक प्रकार की साधना है। प्रत्यक्ष है। भ्रष्टाचर इतना मुक्त मिथ्याता है। जो ऐसा नहीं करता उसकी पति का इष्ट होना प्रमाण है। कहा है—महिलाचर न भ्रष्टाचर उसे क्षमा नहीं मिथ्याता जो पतिव्रता की सेवा नहीं करता। यही है दुःखकराई है। उसकी पति मसीहों को देखकर सतराई है जो साक्षात् प्रीति हो कर पति धार्य सामान्योन्मुखी दुःखी दुःखी कर के विषय से पुरी कर के कर के सेवा है और सेवक को पतिव्रता उल्लेख सामने सेवन करता है (पतिव्रता करता है)

इस सूक्त मे श्रायें कहा है—मनुष्य को दूरदर्शी बनना चाहिए सच्चा करना बहुत कठिन कार्य है ठीक है। परन्तु सेवा करने वान अपना ही वस्त्राण कर रहे होत है क्योंकि मोहि वस्तुतः रक्षेव चक्रा मनुष्य के सब दिन एक समान नहीं रहते। रथ के चक्र क समान यह जीवन है—सुख-दुःख दोनों जीवन क साथ

इसी भाव को व्यक्त करते हुए दूसरे कवि ने इस बात को इस प्रकार कहा है—

चिन्ताचिन्ताद्वयमध्ये  
चिन्ता एक गरीयसी ।  
चिन्ता दहति निर्जीव

विना दृष्टि धनोक्तम् ॥  
 विना धोर विना को सुतना मे  
 विना धावक यवक मे ॥ विना विनिधि  
 धोर को जवानी मे धोर विना वडील  
 धोर को बसानी मे ॥ विना सुमुख को  
 ऐसे वा जाती मे वीते पुन ऊधरी को बरम  
 वा भा नाना ॥ विना धरा को नाश  
 कर जनी मे ॥ उमर धन को योगीश्वर,  
 एकावध को जाता मे ॥ धन विना को  
 विनाका बाहिर ॥ विना धारि धोर  
 धनमय पर प्रमाण बालरी मे ॥ मुने एक  
 धोर को कथा का मरुछ को माता मे ॥  
 मे पान न कृपा मे ॥ उमर धन लेते  
 उमर मे धावक समर को मया वा विनिधि  
 मे उठोये वास्तविक नीचरी की धी ॥  
 धन को धन को उमर विनय मे बर्चा  
 धनर उठते मे धि मरकर के वरदार मे  
 धन को धन को धन को धन ॥ धन मरने

पायुवे मे भी सदा प्रत्यक्ष शरीर कुछ नजर  
 आता है, एक हवा छूना होता है, जब  
 धारी पैरों के अन्तर्गत मे उठती है, एक ठो  
 के पैरों के अन्तर्गत मे बाजू के हाथ उठती,  
 धाराएँ पड़ती का शायद उठकर उठती  
 पना है, मित नहीं उठती। प्रत्यक्ष मित  
 मन्त्रो मन्त्रो की ली सीतलिया। बाजू की,  
 मुकुर के पद मे पड़े पाया। ऐसी पदना  
 होसी मन्त्रो लयागार हूँ पर उठे हव की  
 मन्त्रो मितना प हूँ। एक पद उठना  
 कायक मित लया। बाजू ने उठने अन्त  
 कायक की शरीर उठने पदना वन लया।  
 के मन्त्रो जोर ले हूँ। मन्त्रो उन्नी हूँ  
 की पादाङ्ग मुकुवर उठने बेमने लया।  
 एक ने उठे हवना का काण्ड उठना। बाजू  
 की योगे भी तो समझना बा कि मेरा  
 कायक का (मन्त्रो) का हूँ। कायक मित  
 मुको लया हूँ पर मन्त्रो के पता लया।  
 मन्त्रो का भी कायक हो करता हूँ। उन्नी  
 पदमन्त्रो मन्त्रो का काण्ड की योगी-  
 का काण्ड मितना न मन्त्रो का  
 सधमन पदना मन्त्रो। उन्नी मे उठने  
 मित पदना

(विषय पृष्ठ १११२)

सुरेशचन्द्र वेदालकार

विश्वदानीं सुमनसं स्थाम पश्येम नु सूर्यमुच्चरन्तम् ।  
तथा कुरुत वसपतिवसना देवा ओहानो अवसामभिष्ठा ॥

हम (विचवानी) सव, सवकाल  
(सुपुसल) न वनिन प्रसन नम (सयम)  
होते (यु) न (अ-न-न-न) सुपुसल होते  
हुन (यु) नून का (प्रवेम) देसल रहे।  
(भूमि) देवयो का (सुपुसल) ऐक्य  
पति (दाल) दया का (भोग) वन  
करने न वा धार (प्रवसाभिरिट) रलय  
करन क सा. धार ललय म थट प्रु  
(नयाकरन) वसा रहे।

इस ससार में दुःख और चिन्ता, ये  
मनुष्य का घन रहस्य हैं। इस दुःख और  
चिन्ता का महाद्वन्द्व अनादिकाल से अन्त-

वस्तु रूप में चल रहा है। ज्यों ज्यों वैज्ञानिक उन्नति हो रही है एक नई मध्यता का विकास हो रहा है। य चिन्ताएँ बढ़ती जा रही हैं। ससार में फैली हुई व्याधियों, रोगों और दुखों का कारण चिन्ता है। चिन्ता ही मनुष्य के सुखमय जीवन के लिए सबसे बड़ी बाधा है। स कृष्ण के एक कवि ने लिखा है—

चिन्ता चितासमा व्युत्पत्ता  
विन्दुमात्रविशेषिता ।  
सजीव दहते चिन्ता,  
निर्जीव दहते चिता ।

## ★ दयानन्द बचनाष्टत ★

हमें लोगों के कठोर हृदयों को कोमल बनाना है, दूर भागंतो को आकर्षित करना है। यदि वे प्रत्याचार भी करते तो अपने उदात्त उद्देश्य को हट्टि में रखकर हमें तो उनमें प्रेम ही करना चाहिए। धर्म के नाम से बदला लेने की भावना सर्वथा भ्रम है। □

## सम्पादकीय

## आर्य सन्देश

## पंजाब समस्या

## उचित वातावरण की प्रतीक्षा

सरकार ने पंजाब समस्या के समाधान के लिए लॉगोबाल एवं तलबंदी के साथ-साथ बल प्रकाली नेता रिहा कर सद्भावपूर्ण कदम उठाया है। यह लोबाला और राजीव गांधी के इस बयान के आधार पर लिया कि सरकार पंजाब समस्या को जल्दी से जल्दी हल करने के लिए सही मंहील बनाएगी।

दुहमन्नी की एंटी-बी० प्रणालि में प्रेक कामेंस में स्पष्ट किया कि सरकार द्वारा तलबंदी की धारा-कवादी प्रतिनिधियों के सली में निपटगी। कानून और धर्मके साथ ही निचन की स्थिर रखने को बर्णन्य सामाजिकता देगी और उपवासिनी, राष्ट्रविरोधी व समाजविरोधी तल्यों के खिलाफ कड़ी कार्रवाई की जाएगी। अन्तर्नि यह भी कहा है धनर संभव हुआ ती हरकार संसद के धनक विधिवेर्न में ही एक निषेधक वेर्न करेगी, जिसमें राष्ट्रविरोधी प्रतिनिधियों को बर्णन्य देते वाले धाराकवादी कार्टीदी की सम्पत्ति बन्ध करके का प्राचन्य होगी।

श्री राजीव गांधी पंजाब समस्या का जल्दी से जल्दी समाधान चाहते हैं। सरकार सही माहौल बनाने का प्रयत्न भी कर रही है परन्तु धकासी जिस प्रकार बानन्यपुर साहब प्रस्ताव को मुख्य मुद्दा बनाकर चल रहे हैं तथा बलगावबाव को बढाना वे रहे हैं, ऐसे वातावरण में समाजोति के धासार नकर नहीं पावे। धकासी बल बर्णने मोर्चों की धीर भी संभवत करके के लिए सभी स्थल दो को एकजुट करके के प्रयत्न में लगे हैं। इस समय विचार किया जा रहा है लोमोबाल धकासी दल, तलबंदी धकासी दल, लो धकासी दल, मास्टर तारासिंह धकासी दल, गुरु विध धकासा दल और धाल धकासी दल सहदेवसु कंरेरेशन को एक प्रम्य पर लाया जाये। सभी धकासी दलों का नाम खल कर एक नाम विरोमणिय धकासी दल रखा जाये। गुरु विध धकासी दल की धगह बाल धकासी दलदेवसु कंरेरेशन धकासी दल के हरीबल दल का नाम करे। सभी स्थल धायिक सगठनों विरोमणिय मुखदारा प्रबन्धक कमेटी के धरे में लाये जायें। इन सगठनों में मिश्रभाषा सम्प्रदाय, धनक कीर्तनी जल्य, निर्मल सम्प्रदाय तथा निहंग सगठन हैं। इस सारे काम को सिधे धवाने के लिए सिंह साहेबान को धधिकार दिधे जाने की सम्भावनाएँ हैं। सिंह साहेबान जो हुम्नानाभा जारी करवे यह सभी को मान्य होगा।

धानन्यपुर साहब प्रस्ताव का प्राप् धज्येदार टोहरा के कहे पर सरकार कपूरसिंह धां०पी०एल० (सिधामुस्त) में लया किया जा। नाद में धामन्यपुर प्रस्ताव को धप्रतिन रूप देने के लिए धकासी नेताओं की कमेटी बनाई गई थी। उसने बहुमत जल्येदार टोहरा की विचारधारा वाले सल्यों का बा। इस प्रस्ताव का सबसे धधिक राजनैतिक बाध जल्येदार गुरबखश टोहरा को हुमा जिसके कारण यह धाल तक पुर्णत विरोमणिय मुखदारा प्रबन्धक कमेटी के प्रधान बले धा रहे हैं। इस प्रस्ताव के प्राप् की वताति हु लिखा है—

हमारे उपदेश ध्राज विरेक ध्राधि की भाति धबराहट धवस्य लाते है। परन्तु है वे जातीय सरीर के सशोधक और ध्रायोग्यप्रद, वर्तमान ध्रायं सन्तान चाहे जो हमें कहे। □

‘मिधा विध पधक ध्राजाद हस्ती दा एहसास कायम रखना है ध्रमे धबेहा वेध, काल धरना जिस विध स्थि पध दे कौमी जजवे तथा कौमियत दा प्रगटावा पूरन तीर में कुदरती तरी के नाल प्रकुलित हो सके।’

इस प्रस्ताव के साथ धलन-धलन धटको धाग धनेक धसम्भव माग उठाई जाती रही। पिछले मालो में पंजाब के हरे धरे प्रदे में जिस प्रकार लून की धारे बहाई जाती रही यह सब धलमावबाव की उन्मादी विचारधारा के कारण ही बहाई गई।

धब देलना यह है कि जिस एकता धीर धलम्बता का नारा देकर धीर राजीव गांधी साराख हुए हैं, जिस धढता धीर धीर लम्बता का उन्नेने जनता जनार्दन को बहालस्थ विलाय है, उस धढता धीर कठोरता को ध्रमे भी धपनाए रख सकने था नहीं। हमारे नीति ध्रमे में साथ, दाम, दण धीर भेद—चारों प्रकार में से जिस से काम निकल सके अपनामै के लिए कहा गया है। सबसे उचित तो सीधी उपली से भी निकल जाये यही धण्डा है धन्यभा ठेडी ती करनी पडती ही है। लोक कहावतो में कहा गया है—राजकारी गलम की, हुकूमशारी गलम की। हुकूमदार धण्डा यह जो ज्यादा धमुर प्रीतिकारक लम्बहार करे। राजा धण्डा यह है जो बपेन कानून के पालन के लिए कठोरता धपना सके। हुहमन्नी में जेते कहा है उपधादी तथा धराध्तीय तल्यों से सल्यी से निपटा जायेगा—यह उनको धोएगा धनि-नन्दनी है।

—यशपाल गुप्ताधु

## प्रतिक्रिया

सम्पादक गुप्ताधु जी।

साधका सम्पादन पठकर हुई धुध। धाय में वलता के कय में तो कदा जगाई ही है देलना यह है कि सम्पादन के लेख में कहा तक पाक बलाते हैं।

कविधर गरीबी के सम्पादन के बाव में धां०सल्येध का लख पिछल दया बा। धब बहुत कुछ धाराएँ जगी हैं। मेरी धीर से धुनकामधारे।

—बनबेध बलरानी १९ मार्च सली स्थिनी

धां०सल्येध के धाय द्वारा सम्पादित सगल्य सली धक पठे। पठ कर मन बहुत प्रमन हुआ। धां०सली के लेख जेराधावक एवं विचारप्रव थे। ये माध का सम्पादकीय ‘प्रकृति का यहेलख’ को होनी धीर बलन दोनो के ललन एवं कालिख को उवावर कर रहा था, जेह पलन धाला। ऐतिहासिक धिकारक सम्पन्नी लेख नवीन बोध प्रस्तुत करता है। पल की प्रबधि पर हासिक बधाई।

—सुशील कुमार

धां० १८९९ न्यू राजेधर गवर कर्वि स्थिनी धां०सल्येध की प्रति निरलख मिल रही है। इस कृप के लिए धाकाका हृदय से धाकारी हैं।

१० फरवरी १९८६ के धक में सुरेखनन वेवालकर द्वारा स्थिनी गई उचित साराधनी है। सम्पादकीय, महवि धवानन धां०सली साराधोह सम्पन एवं धय सभाधार बहुत ही वलन व उपयोगी बानकालो देने वाले हैं।

पत्रकारिता के लेख में धायका बहुत ही धीरधासली स्थान है। धाय निरलख प्रबधि के पध पर बढते रहे, यही नीति हासिक मलकामना है।

जयपी कृपा सल्योय व सद्भावना निरलख बनाने रल्येधना।

—धामन्यपुर धर्मा  
सम्पादक धायिका सभाधार

धाय जैसे सुयोग्य गरीबी विधारक धुध विधान के द्वारा धय धाय सल्येध में स्थिन्ना धाली हैं। धायकी धयन कर्मज्ठा एवं सुस्थित सम्पादन कला से ‘धां० सल्येध’ निरलख निबलता रहे यही धुनकामधारे है।

—धां०सली रलीख धां०स



पाठक्रम । बोड़े का क्या तीर निकल सकता है पण्डु बाणी का नाम जीवन भर कवचका रहता है । प्रसाध और मानसिंह पुष्पोराज और जयकन्त के इतिहास सभी पुराने नहीं पढ़े हैं । परिष्कारित मानसिंह और जयकन्त परावो से मिलकर एक नया सत्यागाथा करा बैठ । पानीपत की तीसरी लड़ाई में मोक्षदा बस के मराठों ने धरतपुर के राजा बुरजमल और इन्दौर के महाराज होकर की बाणी के बाणों से घायल न किया होता तो ब कबो बापस रातो रात पर होता जाते ? इन महा भयकर परिणामों की रेतकण ही मानस पुकार कर कहता है कि—

‘जिह्वाभूषे मनुजकम्

प्रभो ! मेरी बाणी में मनु भर दो । इसे मनुज्य कर दो । मनुजयी बाणी ही सब और की की जननी है । इस सतपथ श्राद्धाय से बाणी का कामयेतु महा है ।

बाण्यं कामयेतु

बाणी इत्यल कामनाओं की प्रीति की छाविका है । कोई भी काय तसार में ऐसा नहीं जो मीठी बाणी से पूरा न हो सके । कहा है कि—

प्राण बाणी बन हरे

कीबल बाणी देव ।

एक जिह्वा के कारसे,

काम बाणुनी कर लेव ।

महान्या बाण्यै प्रवर बाणकम महाराज ने अपने सात्व से राबहुत का निषेध लक्षण मुद्रभाषी होना माना है । पायबोने में योगेश्वर की कृष्णकृष्ण महाराज को सम्मन है इसीलिए प्रस्ताव अति-निष्ठ बनाया हो । निष माना ने कहे गये बाणम विरोधी पर भी क्षणप्रान्त निष निष नहीं रहते । धर्मिय सत्य भी होता हो गये से नीचे नहीं उतर पायेगा । इस मत व्यास की ने कहा—

सत्य भूषात् पित्र भूषात्

न भूषात् सत्यम प्रियत् ।

मित्राणां से कहा गया योग नी बाणम भुषयता से स्वीकार कर लेता है महाकवि हनुनी ने मीठी बाणी की ही बलीकण्य मज कहा है—

बलीकण्य एक मज है

सत्य है कवच कवोर

हाथ ही रहीम ने जुते जाने का सस्ता मुस्ता लिखा—

जिह्वा कह नीतर मैं जुते बात कपल ।

ससार ने हम बेसते हैं कि धनेक मनुज्य भवत ही कटुभाषी होते हैं । उनकी कर्मका बाणी के कारण बात की बात में नाराई हो जाती है । ऐसे कठोर-श्रावी भोगों के लिए वेद के भाषुयों की एक कवि ने प्रकट किया—

कुपय को नापयन है सली बयान ने ।

इससे नहीं लगाई है हृदयी बयान में ॥

यह बाणी को धारन सत्य और मनुष्य एकता बाये । कुछ से विमुक्त

के निम्न सन्दर्भों में मैदान से साकर लड़ा कर दिया—

सुनिम बाधिया पायं ।

सम्पते पुत्रनीहसम् ।

ये की प्राप्ता म पु कदा वा सम्पत्ता है—

मैत सम्पत्तमुभा नीम ल्प ।

एक साधारण से सम्पत्तहारे की बाणी की बात ने महाकवि कावित्वा बना दिया । जिस का सफुल साहित्य ने एक ही स्थान है । बाणी के एक हा बाण ने जेय से प्रसन्न मनसुब को सत्य तुलसीदास बनाकर छोड़ा । बात हा तो भी लभ नहीं । वेग भारत की दो भाषाओं के होते निम गये दो महाकवियों के रूप ने ।

वीरसुनि राजस्थान के तो रूप कण ने वे ६ कारों और ललकारों छात्र की सुगई होती है कि—

उद्यम ने पुष्प । नावचानम्

सब धूरवीर बजावत पलों के जेय-पास में कहे कह उठे कि—नाह मुझे निषध्यायि युद्ध कि प्रवीकनम् । इस निषध धौरकार युद्धों जैसी बाणी को सुनकर लक्ष्मी मज्जम उठी और अपने पति को सब की माया में बोली—

छत ने बसिसे हस्ते कबो ने लम्प बाहिल ।

बोली राबहुल्ल नाव ।

बाण तो बसि लक्ष्मी रस बाहिल ।

ललकार बसातो हू बाणु नै

बुकि पहिल तो बर नाहिल ॥

लक्ष्मी की इस स्वनिमान बरी भावा न बजावत को किन्कोर बा दिया और हाथ ही सीधा हाथ लक्ष्मी की मुठ पर बा पडा । बस फिर क्या बा कुपित लक्ष्मी कुमार सखी की नील बनकर टूट पडा । बाणी का प्रभाव सत्य बनकर बसता । बयपुर के महाराज जवहिर को महाकवि बिहारी की मीठी बात—

कली कली ने ही बिन्को

रास्ते पर ने धाई । जिससे बयवह

की कनान सीधी हो गई । नृपस और

बनबनराई न लिखा की और पुष्पोराज

को कली की दुर्बल नहीं होने दिया । ★

पता — वेद सत ककर बेडा नेट ।

## वार्षिक निवाचन

धर्मसभा पुरपुर का वार्षिक निवाचन दिनांक २७ २८ से विभिन्न सम्पन्न हुआ । बिबदे निम्न वार्षिककारी सबे सम्पति से चुने गये ।

प्रधान — श्री तुलसीराम धार्य

उप प्रधान — श्री बय बयराज धार्य

श्री महा — हिमाराज धार्य

श्रीजी — श्री सुलतान धार्य

उपमन्त्री — श्री विरग कुमार धार्य

श्री केसवचर धार्य

कोषाध्यक्ष — श्री विरग कुमार धार्य

तुलकाध्यक्ष — श्री डाकिराजधार्य धार्य

सूचना एवं प्रसार मन्त्री—

डा० चमवान सिंह धार्य

## हिन्दी बोली 'आई' से

रचयिता—मुरेन्द्रकुमार शास्त्री

हिन्दी बोली आई म नू आई मैं खली नई ।  
मेरे कारण नू आई की नू आई मैं खली नई ।  
मैंने तुम को मोट विलास तुने मरी बानी बोली ।  
जब पाई बारी ससद मे, तुने निज बोली बसली ।

मू पली स्वदेवी बोली म, पर सायप विदवा ने कबो ली ।  
उपकार मेरे धव भूष गई क्या हृषा तुने वतला पगली ?  
नहि ऐसा गतिविधि रही तेरी क्या बस्थनी बनता धमला ?  
मेरे ही ठुको पर वलत मेरा ही बार हरण करतो ।

मैं बनी राधु की जब साया मेरा धवमानन बरता  
लकर के धपप बिदेही म सम्मान तुने मिस पायगा ?  
कोई रैवा होगा कधी जा तुम को सक्त सिखायगा ?  
विषयसम्पती पवित का जो तुम को याद दिनायगा ।

मो धाई । इस कसब मे देखो नहि दोष बरसा तेरा है ।  
बन्के धन्धले बिहो को भी इसी धान न तेरा है ।  
रखते हैं नाम दमकिया को, न भी तो तुम को मुक्त मुक्त है ।  
टी० बी० पर राट्ट प्रसारण मे पदकों के भी बोस गय ।

हिन्दी हिल साया करते जो हिन्दी पर धावा बोस गये ।  
राजी पर साय यह 'आनन्द' न सस्कृत मे जितको सायप हुई ।  
श्री नारायण की कृपा हुई, स-कृत म यह ध सायप हुई ।  
बलराम नारायण निम करके हिन्दी की नैया पाय कर ।

‘राजीब बिदेही नैया के उनसे मिलकर सुविचार करें ।  
धव समय है क्या विचारों का, उनसे हिन्दी मे पाय बने ।  
बययें धव भी धपने पच को, धव लक को यह मुह पचन ।

फार्म ४ नियम ८ के अंतर्गत

## आर्यमन्देश साप्ताहिक की घोषणा

प्रकाशन स्थान	नई दिल्ली
प्रकाशन धनवि	साप्ताहिक
मुद्रक का नाम	डा० चर्मपाल
(क्या भारत का नागरिक है ?)	भारतीय
(यदि बिदेसी है तो भूत देस)	
पता	दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, १५ हनुमान रोड नई दिल्ली ।
प्रकाशक का नाम	डा० चर्मपाल
(क्या भारत का नागरिक है ?)	भारतीय
(यदि बिदेसी है तो भूत देस)	
पता	दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, १५-हनुमान रोड, नई दिल्ली ।
सम्पादक का नाम	यशपाल सुभाष
(क्या भारत का नागरिक है ?)	भारतीय
(यदि बिदेसी है तो भूत देस)	
पता	दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, १५-हनुमान रोड नई दिल्ली ।

उन व्यक्तियों के नाम न पते जो समाचार पत्र के स्वामी हो तथा जो समस्त पूजा के एक प्रतिष्ठान से धार्मिक के सम्बन्धित या विस्तार हो ।

मैं डा० चर्मपाल एतद्वारा घोषित करता हूँ कि मेरी अधिकतम जानकारी एवं विश्वास के अनुसार ऊपर दिए गए विवरण सत्य हैं ।

डा० चर्मपाल

प्रकाशक के हस्ताक्षर

दिनांक १७ मार्च १९६३





# द्रौपदी चीर-हरण एक कोरी कल्पना : महाभारत की अन्तः साक्षी

लखनऊ महावीर नौर विद्यालयाकार गुरुकुल कागड़ी विद्यालय विभाग हरिद्वार

प्राचीन पुरातात्विक सर्वेक्षण के न० १०० महाविशेषक श्री प्रो० बबनराय शास्त्री का कथन है कि रामायण और महाभारत कोई काल्पनिक इतिहास नहीं है किन्तु उसके मूल में सत्यता है। भले ही जलसे बाढ़ में डूबी की कलवा की 'जान' और सबद्वन के कारण बड़ बड़ कर बात बियाव्य बनी हो। भी भाव में महाभारत नाम की सगता जानने के लिए हेलिवापुर इ 'अस्य बरतावा कुनन मधुरा, श्रान्तिस्त धारि का उ ब्रजन व सर्वेक करके उपरोक्त बिचार परिष्कृत किने हैं। इसमें कोई शक नहीं कि मूल रूप में ब्रह्मना में सत्य है। महाविशेषक वल्लभजी ने भा अपने प्राच्य सत्यप्रकाश में महाभारत की लोक कल्पना में विरुद्ध शक्ति की चर्चा की है। स्वामी जी के बिचार परनीय और मननीय हैं।

हम की महाभारत की मूल ज्ञाना के आधार पर उस कथ्य का निष्कर्ष करने से हमारे हृदयों में शक भया की बहस वाद धाव की उबकात नहीं है। महाभारत की विधिष्ट पटना है— द्रौपदी की सती सभा में अग्रमान कीर वल के ईशनाथ में सब पटना का महान् महान् न. न जुवा (पुत्र) होता और न यह पृथिवि का प्रजापति। विनाशकालीन विरोध बुद्धि। ज्ञानी ज्ञानी सुदोरी परस्पर कट कट कर मर गए। वेद के ज्ञाता होने पर भी विरोध में जुवा केला। वेद कहता है— धर्मनो दीव्य कृतिमिदं कृतवन् कथे है। सुकुमि की चामाकी के हार मर। को भी। स्वयं हारने पर धर्मो को धाव पर अग्रमान का क्या धर्मकार वा ? वा ?

द्रौपदी का मरी सभा में अग्रमान जुवा। उने कटुवचन कहे गए पुत्रालन में उसकी केव रक्ति पकड़ कर बबरहस्ती सभा में लाकर और अग्रमान किया। किन्तु द्रौपदी विद्रुपी भी उने पत्न्य रूप से समारोहों के पुत्रा किने— महाप्राच्य मुनिभिर्न में अपने बाप हार जाने के बाद शक्ति मुने बाव पर अमाकर हार है तो ही केव हाकर बासी व व को प्राप्य हो गयी। इस बात को सुनकर जहाँ दुर्वेद नीम मूह सदाकर्म का केव कर देते रहे वह कहें सभा के मध्य विद्रुपी न स वगैरिष्य कलयाणी का अग्रमान कर द्रौपदी के सभा में लाए जाने और उसके अग्रमान को महान् कुकृत्य और समीह कृत्य ज्ञानाकर कोरों के विनाश की बाधका प्रविष्टता की। समस्त दुष्ट मन्त्रकी की विनाश की है कथे है—

न हि शस्त्रीव्यापनाया कृत्वा अभिपुन्यते ।  
अभीष्टेन हि शस्त्रीवा वले मल्लेति मे मति ।  
सभा पव ९१।८

अग्रमान विष्णु ने मरी मरी को

साहस का परिचय दिया वह इतिहास की महान् पटना है। विष्णु ने सब समारोहों के प्रभु किने तो किसी ने उसे उत्तर न दिया। तब किष्ण बोला—

साधारणी क सर्वथा पाण्डवानानिर्मिता  
चित्तेन पुत्रं ज्ञानेन पाण्डवेन कृतं पत्य ।  
इयं क कीर्तिता कृत्वा लोकैरेव पराजिता  
एतत् सर्वं बिचारहि मय्ये न बिभ्रानिमाप्य ।

यव यह बात किष्ण ने कही तो सभा में हल्ला मचा हो गया। महाभारत

महाभारत की अन्त साक्षी के आधार पर—जब जुवा केला गया और द्रौपदी को सभा मध्य अग्रमानित किया उस समय श्री कृष्ण की मही राज अग्रनी द्वारिकापुरी से श्री और हस्तिनापुर से भी शक्ति दूर थे। इस लिए एक महान् पुत्र को मरी हरण जैसी वीरस्य पटना में बिभित करना विष्णुमानों की प्रजा का श्रेष्ठ उदाहरण नहीं।

मे पड़िये—

एतत्त्वं त्वा महान् वरं लभामासुर्नित्यम् ।  
तत्पत्नं त्विदृजो ने कथा—

द्रौपदी प्रत्यन्तस्य रोरणीति ह्यामवत् ।  
न व बिभुतं तं प्रभु सत्यं बर्णितं दीक्षते ॥

हाथ ही किष्ण की बात को पुत्र कथे हुए विद्रुपी की कथे है—

विष्णोर्न यथा प्रभुत्वम् प्रभो नराधिप ।  
नमोऽस्तेति हितं प्रभो निश्चयनं मया मति ।

इस प्रकार किष्ण और विद्रुपी को ने द्रौपदी के सभा मध्य बाव जाने का विरोध होने लगा। इस सभा में को बाव उफकाया। तब कुछ मन्त्रकी का विरोध होने लगा। मरी सभा में अग्रमान विष्णो होता देख। यथा—

त ई यव विद्रुस्तत्त्वमेवो  
जुवायं पुत्रा लभामा व ।  
भीमो श्रान्ती मोदमय वि विहाय  
स्वचित् स्वस्तीर्यपि वराहवृष्य ॥  
ततो गाम्पादी विरुपक्ष वि विद्रुपा  
जुवायं कोरम सत्य राज ।  
निर्बन्धनास्य पुरातनविदं सदान्तो  
राजा नावर्जित ब्रजाने ॥

पाठक मन्त्रकी ने स्वयं रूप से उष्ट मन्त्रकी के विरोध के एक कालि का उपरोक्त है निर्दोष द्रौपदी के अग्रमान को क्या पाण्डव द्वितीय अत्रा पुत्रप्राप्त रहे स्वामी की। सत्यमान दुष्टराष्ट्र की धाव कुली से बोले—

होतेति दुर्गोचन मन्त्रकुल सत्य  
समानी कुपुत्रजुवायम् ।  
निश्चय लभामासति कुनिर्जित  
विष्णोर्नो द्रौपदी वल्लभसी ॥

महाप्राच्य दुष्टराष्ट्र ने महान् विरघ

धर्मो वमम नौपदी का रनिमान ने मेवा एव पाण्डवों को दासभाव से मुक्त कर दिया यहा बाकर एक धर्माग्र समाज हो जाता है। न यहाँ तक की हरण की बात है न कुछ यह प्रसंग यही समाज हो जाता है कि पुत्र प्रत्येक बात में शस्त्रीककथा का पुत्र देने वाली ने प्रत्येक की बहु मरमार की है कि अग्रना धर्माग्र पुरा द्रौपदी के और हरण का देकर वा कृत्य की का उरका वरत बढ़ाते बिभित कर दिया है। जब कि और हरण मरी पटना महा हुई

बन गए है।

हरी मकार की कृत्य मरप्राच्य जब शक्ति के लिए हस्तिनापुर जाते है तब नौपदी को उने बचन कथे है। मे प्रत्येक नासा का वचका रूप ही है। यह कहती है व 'तामन मे जा मरी सभा में उस बात को वर कर अग्रमानित किया वा उनेसे वह सब तक बल गयी है। मेरे उस अग्रमान की मत मूलन। प्रभुन की कृत्य की म वरु है कि पाप बुद्धि हुआ जाने ने जेते द्रौपदी को सभा मध्य बोला वा उस अग्रमान को केते जुवाया वा कथना है।

मकाराष्ट्र ने हेव बाव महाकर्म भात के दुष्टप्राच्य नाटक के की जुव उवा हरण मे रहे है। यथा—द्रौपदी केव मन्त्रकर्मनामिभित्त । सभा—एव जुवा सनी द्रौपदी के महाकर्म मूलन। सत्ये साह होता है कि बाव के सम्ये तक और हरण मरी पटना अग्रमान की शक्ति पुत्रालन द्वारा द्रौपदी के केव मन्त्रकर्म सभा मध्य लाकर उसे अग्रमानित करने की पटना का हो महत्त्व वा।

हरी सदन म हम यह भी लय महाभारत की अन्त साक्षी के आधार पर रसना मारीने कि जब जुवा केला गया और द्रौपदी को सभा मध्य अग्रमान किया गया उस समय श्री कृष्ण को महाप्राच्य अग्रनी द्वारिकापुरी से श्री और हस्तिनापुर से भी शक्ति दूर थे। इसलिए एक महान् पुत्र को और-हरण जसो बुद्धिमान पटना में बिभित करना बुद्धिमानों की प्रजा का श्रेष्ठ उदाहरण नहीं। परिष्ट उद्योग पव का वह लोक—

वलेपेत प्रभु ने हुक्म नापसति ।  
यव मोर्षिभिर्न कृत्यं कृत्य  
वा हुक्मनिर्जितं वा ॥

धर्मादि विर सत्य कीर व सभा में द्रौपदी का अग्रमान हो रहा था (भी कृष्ण) हस्तिनापुर से बहुत दूर वा उस समय कृष्ण ने अग्रमान से मोर्षि कहकर जो युद्ध पुत्रा वा उरका मेरे ऊपर श्रेष्ठ बरका ही का रहा है मेरे हृदय से दूर नहीं होता। अग्रपदी कोरों का सहार किने बिया उरका मार दूर नहीं होता। वस्तुतः यह अग्रमान के समय कृष्ण कहाँ होते वा यह वरु कहते हो महाभारत नहीं हो गया होता। कर्माणि कृत्य उस समय के महान् वमम मन्त्र पुराश्री की महान् नाराधित व नृदोषिणी और राष्ट्रीय नेतृ वे।

(विष्ट पुष्ट ८ पृ)

मही भी। महा तो द्रौपदी को सभा मध्य लाकर सभा कर दिया गया वा महा उसका और अग्रमान वा। शस्त्रीक कृत्य सत्य कहती है— सभा में हल्ले पुत्र रकी जाति को इस प्रकार कनी अग्रमानित नहीं किया गया यथा कर्माणि कृत्य सभा पुत्र न नवमोर्षि न वमम । स नम्य कोरकेपु पुत्रों वम सतमान है।

हो इत्यं मन्त्रको उरका महान् वर मान कर कहती की यदि विद्रुपी और विष्णु मन्त्रकी ने और विरोध न किया होता। उनके विरोध करने का ही यह फल हुआ कि सभा में और वर के नीचे भी इनके साथ ही गए और हर उष्ट धाव रण के विरोध में बोस गये।

हरी मकार उद्योग पव में कुली की भी कृष्ण को उरके देते हुए और हरण की बात कही गयी कथी शक्ति वह सत्य ही द्रौपदी के अग्रमान और दुष्टाग्रत तथा दुर्गोचन द्वारा कहे गए कटु भाव्य वचनों की बात ही कहती है कुली को सब से अधिक दुष्ट हरी बात का है कि—

न राजह्वर उष्ट वृत्त बापि पराजय ।  
प्रजावन जुवाया वा न मे वदुक्काराणम् ॥  
यव का नृहरी सभाया सभाया शस्त्री सवा ।  
शस्त्रीधीयं पुराया मन्त्रकर्म न सतर महत् ।  
स्त्रीवर्माणि वराहोद्य सत्यवराया सवा ।  
नाम्यमन्त्रसत्ता नाम कृष्णनामपथो सती ॥

यह कहती है—भी कृष्ण पुत्रो राज्य के कित्त जाने का इतना दुष्ट नहीं हुए थे हारने और बरका होने का भी मेरे सत्य में सतना महान् दुष्ट नहीं है। पराष्ट्र जरी सभा में मेरी सुपरी चुपती पुत्रकर्म नौपदी ने रोते हुए को दुर्गोचन के कटु वचन मुने ने मरी मेरे लिए महान् दुष्ट का कारण

सत् चित् कौन है ? और यह ध्यानन् यात्रा क्या है ? यहाँ हम इसकी चर्चा करते । जीवान्मा का स्वरूप सत्य और चैतन्य है उसने ध्यानन् का (सुख का) प्रभाव है । इस ध्यानन् प्रथमा भूत की प्राप्ति में ही जीवान्मा मग्न रहता है । उसकी यही मग्नता उसकी ध्यानन् के लिए यात्रा है जिसमें प्रमादि काया से लगा हुआ है । जीवान्मा का सत् चित्त स्वरूप जिस क्षण ध्यानन् स्वरूप (सुखमय) हो जाएगा । उसी पल उसकी यह यात्रा समाप्त हो जाएगी । इसी उद्देश्य की पूर्ति के लिए समय-मय पर धनैकानेक सम्प्रदायों ने अन्य विधा । धनैक भव मुच वैदा धृष्ट, विमर्श ध्यान-ध्याने तरीके से इस ध्यानन् (सुख) की प्राप्ति का मार्ग जोना प्रारंभ करने लगे । समय रखा, अनता में उसे कितना समझा कितना साध, बहु लो कहना कठिन है किन्तु समय के साथ इन मार्गों में सँकीर्णता ध्या बई और मनुष्य मनुष्य के बीच दीवारें खड़ी होती गई ।

प्रथम यह है कि मनुष्य ध्यानन् (सुख) तक पहुँच नहीं पाता है ? इस को न उसमें बहुत बड़ा जोख भी हो उसका पालन भी किया किन्तु क्षात्रात्तर से प्रत्येक मनुष्य को सत्य से दूरतमन बनाने का प्रयास ने उसमें विकृति उत्पन्न की, ५, ४ मनुष्य भाग से भटक गए । इसका कारण यह है कि मनुष्य सत्ता से कुछ इस प्रकार स रहता है कि वह शरीर और

## सत् चित् की आनन्द यात्रा

श्रीमती सुभाषिणी वर्मा, बिलासपुर

आत्मा को एक में बिना लेता है, इस ध्यानन् की ओर जाने वाली यात्रा को भी सघटीर पूर्ण करना चाहता है । शारीरिक सुख की पूर्ति के लिए प्राथमिकिक सुख सुविधा के सामान एकत्र कर ध्यानन् का एक कल्पित भवन बना लेता है । ये सुख सुविधा के सामान साधन ही सत्य है सत्य नहीं, साध्य तो कुछ और ही है । किन्तु हमें इस साध्य को समझा है उसीने पूजा-पाठ या उपासना को प्रथमा है । ध्यान पूजा-पाठ उपासना के नाम पर जो सुख करते हैं वह भी केवल कर्मकाण्ड होता है । चाहे वह इतना हो सच्चा सुखि पूजा हो, चाहे भजन कीर्तन हो । उसका किन्ति मात की प्रभाव हमारे ध्यानन् पर नहीं पड़ता है और यही कारण है कि हम अपने ध्यानन् की धनुषि नहीं कर पाते हैं । पूजा-पाठ प्रथमा उपासना वह प्रक्रिया है जो मनुष्य के ध्यानन् को प्रतीक कर रखे, उसका ध्यानन् कर ने, मनुष्य का ध्यानन् निष्कार कर सामने का जाए । ऐसा हो नहीं पाता है । इसका कारण यह भी है कि पूजा-पाठ-उपासना मोक्ष समय के लिए होती है । अधिक समय

मनुष्य बाह्य भवत् में कियाशील रहता है और बाह्य भवत् का दूषित मातामय मनुष्य पर दूषित प्रभाव डालता रहता है ।

हमें भीने की कुछ ऐसी कमा चाहिए कि हम अपने में ही भी सत् । यह बात निश्चया सत्य है कि मनुष्य बिना कुछ किए नहीं रह सकता है । मनुष्य समुत्पन्न विष किन्ती न किन्ती कार्य में भ्रस्त रहता है । इसलिए ध्यानन् प्राप्ति का बीजा-रस एव जन सामान्य के लिए एक ही उपाय है कि वह अपनी एक र्ण बना ले, उसके धनुष्य कार्य केकर उसमें रस बाए, रस रस जाने को ही साधना कह सकते हैं । साधना मनुष्य को हवा ध्यानन् वेदी है, वह साधना चाहे धनीत की हो, चाहे कमा की हो, चाहे धारिष्य की हो, या सवाय लेता की हो । साधना का रूप कुछ ऐसा होना चाहिए कि मनुष्य स्वयं की पूजा जाए, उसी में कोन हो जाए । एक बार ऐसी साधना से नीन हो जाए से प्रथम-नीय ध्यानन् की प्राप्ति होती है । साधना करके बेहिए, ऐसी साधना, जिसने साधक और साध्य का भेद मिट जाता है । जिस क्षण, जिस पल ऐसी साधना में नीन हो

जाएँ, सत् धारिष्य नीन का वह क्षण, वह पल बन्य होगा । उस क्षण उस पल ही उल परल ध्यानन् का क्षात्रात्तर हो जाएगा । और ध्यानन् नीन बन्य बन्य जाएगा ।

साधना से सत् कुछ विष बाता है साधना कभी धनुरी नहीं रहती है । अपने ही किन्ती को ध्यानन् की धनुषि में कम समय बनेगा । किन्ती को अधिक सत्ता सत्ता मिलेगी । सत्ता से रहस्य के सम्बन्ध में किन्ती मनुष्य के रूपी लेखक टास्टरा से पूजा, धारिष्य सत्ता का रहस्य क्या है ?

“वेदो—एक रहस्य का नाम है वेदों ।” टास्टरा में मुस्कुराते हुए कहा—“सत्ता में पूजा कोई काम नहीं किन्ती पूरा न किना जा सकता हो सत्ता के करने वाले में वेदों ही ।”

मनुष्य के कहा—“किन्तु एक काम ऐसा है जो बहुत वेद रखने पर भी नहीं किना जा सकता ।”

“कह क्या ?”

“भलनी से वाणी जलता ।”

“कौह । इतने कम बड़ी बात है ।”

टास्टरा में मुस्कुराते हुए कहा—“वेदो की किना का सत्ता है सत्ता के विपरीत के जने तक कोई वेद रख सके ।”

अस परमात्मन् की प्राप्ति की ही सत्ता है सत्ता के किन्ती में उपाय वेदो ही ।

□

पृष्ठ ७ का लेख

### द्रोपदी चीर हरण एक कोरी कल्पना

म धाए महाभारत के न-पर्व का एक उदाहरण देखिये । जिस समय पाण्डव वनवानी हो जाते हैं नव भी कृष्ण की उनके कुल न-मग्न पृष्ठने बहो दन-वज सहित पहुँचे । बाते होने लगी । बागो हा बातो में भी कृष्ण की ने बड़े कष्ट से कहा—

एव निहस्य समरे सोम क्षात्र निपातय ।  
धातन्ति मुनुरागम्य सुहृदो श्रीमान्महम् ॥

४० पं ५० ४०

तबलेतु कारख राजन् बहव मागसाहस्यम् ।  
मास्य परवीर्यम् न हि बोधित सुवीर्यम् ॥

४० पं ५० ४१

मय्यभातेऽप्यत्रा गोर सुत न मरिषा तथा ।  
प्रक्षाल्य किं करिष्यामि मित्तोत्तुरिबोवकम् ॥

४० पं ५० ४२

धर्मत् राजन् बोधकि मैं सोम और हास्य को मुझ से कहकर करने के निमित्त हास्य करने से शुरू बा । (हास्य से शुरू-भयवर विरोधों परावों से युक्त एक बाल निमित्त किया बा विमना नाम लोम बा, इसमें भयवर भारक शक्ति भी, जिसे नष्ट करने से कृष्ण जी को बड़ा परिरक्ष और पराक्रम करना पडा) इतीएए, सुत

धना में उपस्थित न हो सका । यदि मैं यहाँ पहुँच गया होता तो दुर्वाच्य भीषित नहीं रह सकता था सच्चा मेरे बहो पहुँचने पर जुझा होता ही नहीं । किन्तु राजन् । भय पर से पुन टूटे हुए के समान धन मुझे बतावों मैं धापाका नहीं प्रिय कृष्ण ।

पाठक । यह एक कवी की 'भीर-हरण' की वैचता को कुतीती केकर उसे धर्म्य बोधित कर देता है, उसकी मायशा के प्रम को बोधित कर देता है । भीर-हरण बीसी पटना महाभारतीय इतिहास से हुई नहीं, इसे हमें सत्य परिचय में लेकर देखना चाहिए । किन्तु और बिकरों मय्यती के साहसिक एवं ऐतिहासिक बनवों का भी निहस्य है, द्रोपदी के कोर धनपासित करने के लिए दुर्वाच्य की धात्रा से दुःशासन के बडे कथम और दुर्वाच्य करने को उषत हाथ भिक्षाई मय्यती के विमुक्ति होने और ब्रजावर्णी के विरोध एवं उपास के कारण बड़ी क बा । समस्त क्षात्रसभ और कुलराज तथा माय्यादी एव सगोत्रीय पटना की महा-भारतीय इतिहास में उल्लेख क्या बा । ●

### सास्य के लिए लाभप्रद दोहे

—स्वामी स्वस्मानन्द सरस्वती

अस काम को निवय से, बाए धूनने रोच ।  
बस किन्ती बोने बड़ें, मिटे कम्प का रोच ॥

प्रथम पूज बोधन करे, ठेस बने स्वाम ।  
एव स्वयं नीरोच तन, सुकी हरे क्षात्रात्तर ॥

मावर, बनुषा, धावना, जो काये मनसाय ।  
पुन बड़े कम्पी मिटे, धून हाक हो बाय ॥

असर कम्प है उवर में, नूच बिहा हो बाय ।  
रस जाने का नीविधि, नीह अवरक बाय ॥

गर कमबोरे विषय है, रोक कर हतमा काम ।  
हाय हाय के बाधे, नीने हुए बाधाम ॥

हरण, बहेडा, धावना, भीनी नीय निषोव ।  
जो हनका लेख करे, सुवरक काया होय ॥

बाय, उपाय नूचबा, जो नहीं करे प्रयोग ।  
उषते अवरक बाधे, नीविधि के रोच ॥

हरण, बहेडा, धावना, बस में रको निषोव ।  
छीटे बाए बाधे से, निर्वय्य ज्योति होय ॥



मन्त्री पार्यसमाप्त एतसीत्

**अजिल्द १०० सैंकड़ा**

**मृत्यार्थ प्रकाश**

**अजिल्द ५०० सैंकड़ा**

**मृत्यार्थ प्रकाश**

**मर्फेद कागज मुद्रित छपाई**

**मुद्रित प्रकाश वितरण करनेवालों के लिए**

**अजिल्द २३५३६-१६ मुद्रित ४२० की दर**

**अजिल्द २३५३६-१६ मुद्रित ४२० की दर**

**आप साहित्य प्रचार ट्रस्ट**

**४५५, भारी बावली, दिल्ली ६ दूरभाष: २३८३६०-२३३११२**

**वैदिक कैसेट**

प्रसिद्ध एक मी गायक महेंद्र कपूर द्वारा महर्षि दयानन्द की अमर कहानी

सन्ध्या-यज्ञ शान्तिप्रकरण, स्वस्तिसवाचन आदि

प्रसिद्ध भजनों पर शब्द-सत्यवादी पं. डॉ. ओमप्रकाश वर्मा, पन्नालाल पीयूष, सोहनलाल चौधरी, शिखरजबली जी व सर्वोत्तम भजनों के कैसेट्स तथा प. ब्रह्मदेव विद्यालयाचार्य के भजनों का संग्रह।

आप मण्डल व अन्य मी वॉन स कैसेट्स के मूवीपत्र के लिए लिखें

कन्सुलेशन इन्फोर्मेशन (इन्फोर्मेशन) का नि

१४ मार्च-११, पत्र-११ अशाक विहार, देहली-५२

फोन ७११८३६, ७४४१७० टेलीफोन ३१-४६२३ AKC IN

वैदिक कैसेट तथा कागज, १५ हनुमान रोड पर भी उपलब्ध है।

**प्रसन्न रहें**  
(पृष्ठ २ का योग)

कहा कि मैं अपने पुत्र, पौत्रों को प्रपौत्रों के बेलता हूँ, पिता मैं नहीं रहता। यही मेरे जीवनचक्र का रहस्य है। वेद में कहा है, स्वर्ग की ओर नहीं हट पाऊँगे पर ही है। जन्म १०-१२-४१ मय कहता है—

जन्म लता का विरोध विरचपायुर्धनसुखम्।

कीलनी पुनर्जन्मविरोधमानी स्वे पृष्ठे ॥

मो मोनो, हल बहार में रहो, मलय मत होओ हलवा पुनो की ओर पौत्रों के साथ बेलते हुए अपने पापों का विनाश।

विद्या की ब्रह्मलता से मनुष्य का आत्मिक विकास होता है। उल्लाह, सुख, शांति और धर्मिक नष्ट हो जाती है। विद्या, बुद्धि और उच्च के संघर्ष का व्यवस्था है। यह टीवी केवल स्वर्ग ही है जो भी रहता अपने पक्षियों, ख-पिण्डों और विविधताओं को भी अपना नुच देता चलाता है। इसलिए यह मैं प्रार्थना की गई है—'हे प्रभो, हल बहार प्रसन्न रहें, आनन्द रहें, 'सुख' रहें। ऐश्वर्य के स्वामी बनूँ से केवल यही मांग है कि हे आनन्द के सागर आनन्द का एक कण हूँ जो की ओर उसके लिए हूँ 'सुख' बनाओ। हल आनन्द रहें।

यह जीवन केवल फूलों की भाँसा नहीं, हल के फूल हैं। इन फूलों को हल के माँ में 'सुख' होकर धारण करने हैं। प्रसन्नता तुम्हारा वरण करेगी।

२ ए ई-१, मोहरा मिर्जापुर

**प्रवृत्ति समस्या**  
(पृष्ठ ६ का योग)

संसार के विषय को हल में सफलता प्राप्त होगी। महर्षि का कथन है कि—'जब बालु और बूँद जल को बिनाबने वाला सब दुर्गन्ध मनुष्यों के ही निमित्त से उत्पन्न होता है तो उसका निवारण करना भी उनको योग्य है।' और निवारण का उपाय है हल-नम। महर्षि का सुस्पष्ट कथन है कि 'यह कार्य योग्य किसी प्रकार से सिद्ध नहीं हो सकता।' यह कथन है धर्मसमाज हल-नम के प्रचार और प्रचार द्वारा विश्व का विष हल के लिए धारण बाँधे। यह धारण-समाज ऐसा कर सका तो फिर विश्व पर मेरे कर्म में उसे बेर नहीं लगेगी। पर यह कार्य कहीं से नहीं करने के होता।

धार्मिक निवारण, चन्द्र नगर,  
मुद्राबाजार-२४४०३२

**तुम भारत के भाग्य विधाता थे**  
रक्षिता !  
समुद्रबन्ध तुम, विद्यावाचस्पति

तुम स्वराज के आवागमन से आधुनिक राष्ट्र के निर्माता थे भारत के भाग्य विधाता थे आधुनिक समाज के निर्माता थे वेदव्यस के प्रवर्धक थे गणतन्त्र के मार्गदर्शक थे आहमद के विरोधी थे अन्धकार के प्रतिरोधी थे

तुमने मुकाम को राष्ट्रभाषा की सीढ़ियों को नई प्राप्ति की वर्य को नई परिचाया की हर सच की निराशा को नये भारत की सुधि की सर्वत्र ज्ञान की सुधि की करे करे तुम्हारा मुकाम वषट्क समान्य रूप के समान

**दंतों की हर बीमारी का घरेलू इलाज**

**एम डी एच**

**दंत मंजन**  
लौंग युक्त

२३ जड़ी बूटियों से निर्मित आयुर्वेदिक औषधि

घरेलू का इस्तेमाल

आज नये पैकेज में उपलब्ध

महाशिव की हट्टी (प्रा०) लि०

८/१४ इण्डियन एजिड सील नगर - आई विपरीत १५ फीट : ६३८००६, ६३७९८ ६३७९४

**उत्तमता का एक मात्र विश्वास**

**Grover'sons**

*Paris Beauty*

**पेरिस ब्यूटी**

**ग्रावर सन्स**

**ब्रा पेंटी, बनिचान, अन्डरवियर व बेबी पेंटी आदि**

अकाल टाईम  
११००००  
२२२२२२







# आध्यात्म सुधा

ओ३म विश्वानि देव सवितदूरितानि तयासुव ।

तन्म

यजु० ३०।३



हमारी आत्मा ही भावनाएं हमारे मुख से निकलकर हमारे बुद्धि मन का निर्माण करता है। (कल्याण प्राधानाक पृष्ठ ३८३)

श्री भाषा लखन बहू हनु सत मन पर  
 विचार करते हैं तो बाह्य भाषा की बात  
 होनी या पुष्ट हो जाती है। क्योंकि इस  
 मन में कोई गुण क बहू करने की प्रथा  
 को ही है अपने अपने हनु स्वयं तुम्हारा  
 त्याग के का कोई प्रयत्न ही न कर तो फिर  
 यह हमारी भाषा कि प्रकृति काम की ? अब  
 प्रथम इसको तो त्यागने से कहें। दूसरा  
 तो बाह्य करने के लिए प्रत्यक्ष ही होते  
 हैं दो प्रकार के एक प्रत्यक्ष ही होते  
 हैं प्रथम होता ऐसे भाषा पर वे होते हैं सब  
 भाषाओं को उठना लाया करते हैं। और  
 व्यावसायिक मान लीजिए कि हमारे सब  
 करण न को बिना पुकार उठनी श्री  
 वास्तविक प्रथा होती है। और बिना ही  
 ही उठता तो फिर भाषाएं एक भाषाक  
 भाषाएं बनकर ही उठ जाती हैं। और  
 दूसरे होते प्रकार जो हैं दुर्गुणी और प्रत्यक्ष  
 को नद करने की प्रथाएं करते हैं दो  
 प्रकार की उसक प्रकृति कम कुछ  
 बनाया होती है। लक्षित ही प्रथा को  
 बाह्यता कहते हैं। यदि हमारी भाषा होती  
 तो फिर हम ही दुर्गुणी और दुर्गुण्यो  
 को नद करने और सद्गुण्यो को बाह्य  
 करने के लिए बहवर्षों प्रयत्न करते हैं।  
 फिर अपने प्रथाओं और ईश्वर की सहा  
 याता में हमारा भाषाओं प्रथमसे सिद्ध  
 होता हमने कि प्रथाओं में सबसे ही

यह सब एम. एम. वादवाहिरिका को बर्दा  
संतेक कर रहा है। यह मह है कि प्रथम  
हमें सुनुवाओ प्रभु की आज्ञा को त्यागना है।  
फिर सबकुछ को बात करना। यह  
प्रधान व्याख्याकार है। प्रथम वह  
कल्पे मयिष पात्रों को स्व छ कर ले।  
फिर उसने स्वाधिकार प्रदान जाते हैं।  
यह उनसे प्रत्यक्ष स्वच्छ भी है। यह  
उत्तमो ब्रह्मा प्रजा प्राण एव य मी मयिष  
हो जायेगा। धन व्यावहारिका मी ने  
है कि प्रथम धन धरुवने क्षत कर को  
पश्चि कर को अथवा मयिषता को हूर कर  
फिर सदगुणों को बात करे। यदि मयिष  
प्रधान न हो करने केवल दुष्टता को  
ही हूर करने में बलवान हो गये तो यह  
हूर करने की उपययिष होगी। कि मुज  
प्रभु की आज्ञा को बात करने पुरवाम से दुष्टता  
की हूर हो गये और यह भी प्राण हो  
जाये तो फिर कहना ही क्या? य मी मयिष  
प्रधान दुष्टता को हूर करने की बात कहता  
है पश्चात यह प्राणिक की है।

इस मंत्र की एक विशेषता यह भी है। यह एक ही मंत्र बार-बार प्रयोग में है। एक एकसाथ घुरिया मंत्री व्याप्य हम सभी धर्मिक को त्याग कर सदगुणों को प्राप्त कर। एक भक्तीसा उन्नति को प्राप्त हो धीरे धीरे शेर शान्त प्रभाव प्रभवति को ती कभी नहीं भगवा। एक भक्त धीरे धीरे भगवत को प्राप्त हो। इसीलिए हमने ये श्रवण का प्रयोग होकर यह कहा गया है कि एक मंत्र उन्नति दुःखको धीरे धीरे ही छूट कर सदगुण सुख को प्राप्त हो। त्याग तथा पराधीन को प्राप्त हो। ध्यानात्मक का निष्कर्ष भी है कि प्रत्येक को अपनी ही उन्नति में सहज ही प्रोत्साहित चाहिए। यह हम सब मिलकर दुःखों बुद्धिमान को त्यागने धीरे धीरे ही प्राप्त करने के लिए दुःखात्मक धीरे धीरे सबिधा जो कि मंत्र प्रकट देख है। सहज साधना की अन्तर्गत प्रवेश में हमारा उत्साह है।

—छाय निवास चम्पनगर  
मुरादाबाद ५४४०३२

अथ हे सक्क जणू क उत्तति  
कना समय एवमुक्त, "इदस्वस्व सव  
मुलो क द ता परमन्वर प्राप कृपा करके  
हमारे सम्पण दग्ग २० मन धीर दसो  
का ढर कर गजिय जा कल्याणकारक  
गुण कम स्वभाय धार पदाथ ३ वह सब  
हम को प्राप्त न बिज

[illegible]

रहिमन याचकता गहे  
ब छोटे हूँ जात ।

अथ न मानन से बड़ा व्यक्ति भी छोटा हो जाना है। प्रायना—मानव गाथा न प्रायना को याचना के अर्थ में कभी स्वीकार नहीं किया उनका कथन है कि प्रायन करना याचना करना नहीं। वह

## हरिप्रकाश न कार्यभार

(पृष्ठ १ का शेष)

रामगोपाल जी शालवान ने वाघए  
की कि आज से २० हज़ारका  
गुरुक कागनी के मन्त्राधिप  
पर कर प्रायनी होगे । हाते सभी  
कमचायों और अत्रिकाओं से  
श्री बरदेव जी को भी पूजा मन्त्रो  
देने की श्रणील का । इसी मास दिली  
में श्री मोमनाथ जी मरवाह गुरु  
कल कागनी विश्वविद्यालय के कल  
पतिथ वाचभद्र कुमार हजा तथा  
मन्त्रपत्र मिष्टानालकार भी वहाँ  
पदच पए ।

फामसी से श्री सत्ता प्रधान जी के साथ उपरोक्त सभी गाए गुरुकुल कागी के कायानव गए वनी पर श्री बलभद्र कुमाय हूवा ने मरकुल कागनी के मुख्याधिष्ण्या के पद से श्रपना (यागपत्र दे दिया शौर उनके मुख्या पत्र डा० हरिप्रकाश को ग कुल कागनी का मुख्याधिष्ण्या नियुक्त किया गया। डॉ० हरिप्रकाश ने श्रपने पद का चार्ज ग्रहण कर लिया है।

इस अवसर पर सभी महानुभावों ने डा० हृदिप्रकाश के मुख्याधिष्ठाता पद ग्रहण करने पर अपनी

शुभकामनाएं प्रकट की।

प्रचार विभाग

सावदेशिक सभा दिल्ली

## पजाब समस्या

(पृष्ठ १ क शेष)

पञ्चमस्था के सम्बन्ध में पञ्जाब के विशिष्ट हिन्दुओं से भी प्रधान मन्त्री जी का विचार विमर्श करना आवश्यक है।

श्री शा-वाले ने बीद में एक प्रसव य में कहा कि प्रधानमन्त्री जाने उ न् आश्वासन दिया है कि सरकार पजाब के नजरबन्द हिंदुओं

को रिहा करने पर विचार कर रही है।

श्री शालवाल ने यह भी कहा कि प्रधानमंत्री जी ने ब्यावसायन दिया है कि चुनाव के समय जिन नीतियों की घोषणा की थी सरकार उससे पाछे नहीं हटेगी। उन्होंने यह भी बताया कि पञ्जाब के हिन्दुओं की कृषिप्रमुख व्यवस्था ही प्रधानमन्त्री जी स मिलकर धरणी स्थिति स्पष्ट करेगा। प्रधानमन्त्री जी ने शिष्टमण्डल से मिलने की स्वीकृति दे दी है। प्रचार विभाग

सार्वदेशिक समा, दिल्ली

## ★ वक्तावृत्त ★

“ईसाइयत और पश्चिमी सभ्यता के मुख्य हमले से हिन्दुस्तानियों को सावधान करने का सेह्रा यदि किसी व्यक्ति के सिंग बाईने का स्वीकार किया जा सकता है। १६वीं सदी में स्वामी दयानन्द जी ने भारत के लिए जो प्रभूत्व काय किया है उनमें हिन्दू जाति को साथ-साथ मुसलमानों तथा अन्य धर्मावलम्बियों को भी साथ पहुँचा है।”

—पीर मोहम्मद यूनुस

## सम्पादकीय

## भिड़रावाले के उत्तराधिकारी बनने की होड़

पंजाब की समस्या अब केवल भ्रष्टाचार और सरकार की समस्या नहीं रह गई है, सारे देश का हित इसके साथ जुड़ा हुआ है। अब कुछ समय पूर्व उपवासियों और पृथक्तावादियों ने देश की एकता और अखंडता को चुनौती दी तो अब साथ राष्ट्र चिंतित हो उठा था। पंजाब भारत का सीमावर्ती राज्य है और अगर यहाँ कोई बदबज होती है इसका असर अन्य राज्यों पर भी अवश्य पड़ता है। प्रधानमन्त्री का यह कथन बर्बाद है। भ्रष्टाचारी नेताओं का ग्ल प्रारम्भ से ही ऐसा रहा है कि यदि उनकी एक मांग स्वीकार की जाती है तो वे अनेक अपनी दूसरी मांग सामने रख देते हैं। उनकी धाम धारणा बल गई है सरकार ध्यानहीन की बमकियों से डरकर मुक जायेगी। उनके दबाव में आकर सरकार का मुकना समस्या की बढ़ावा देता है। वेते भी समझते का माग दिखाई पड़ते से पूर्व ही उपवादी कोई भी धमका करके नातावरण बिगाड़ कर देते हैं।

साबने और बिचार करने पर दिखाया यह देता है पंजाब सरकार की अब ये राजनैतिक प्रविष्टिवादी है। इसी से राजनैतिक नातावरण में अहद पुन रहा है, जोभी-सच्ची बात नहीं कहें जाते। नित नयी मांग वार्ते समझते के लए पेश की जाती रही हैं। पंजाब की जनता की समस्या देश के अन्य राज्यों की जनता की समस्या जसी ही है। परन्तु साम्प्रदायिक आधार पर राजनीति चलाके का परिणाम यह हुआ पंजाब दो बेमो के बट गया है। जहाँ मुटुनन्दी हो, साम्प्रदायिकता का बोलबाला है। वहाँ पर धार्मिक और स्थिरता को कल्पना नहीं की जा सकती।

जेल से छूटने के बाद हरबन्दाह लोभोवाल अपने घर की पुष्ट करने में लगे हैं। उनका यह कहना है कि जब तक केन्द्र सरकार उनके सामने घुटने न टेक दे, वे बातचीत नहीं करेंगे। सरकार (उनकी भाव के अनुसार) पीछे के बागियों की खोड है, सिव्ल सुडट फन्देशन से प्रतिक्रिया देता तो भ्रष्टाचारी नेता कहते हैं हम प्रयत्न होंगे। भ्रष्टाचारी नेताओं का बुल करने के लिए ही यदि सरकार कायम है तो वह धानन्दपुर प्रस्ताव को भी मान लेगी। फिर बातचीत को जरूरत ही कहें दे बागियों? इस समय भ्रष्टाचारी नेता एक दूसरे से बड़ बड़ कर उल्लेख भाषण दे रहे हैं। खी सही कसर थिरोपल मुहारा कनेटी ने पूरी कर दी है जिसने एक प्रस्ताव में सेना से विग्रोह करने वालों की प्रती कर दी है। कुछ भ्रष्टाचारी नेता जिनमें डेकेदार सुरजन सिंह और उनके साथी शामिल हैं श्रीमती इन्दिरा गांधी की हत्या को उचित ठहरा रहे हैं।

अब बनरस सिंह भिड़रावाले से इन मुख्य मुद्दों से प्रत्यक्ष अपना मुटु बड़ा कर लिखा था, तब तबबकी ने उसका समर्थन किया था और श्री लॉरोबाल ने उसका विरोध करने के बजाय उससे भी

‘महर्षि दयानन्द भारतमाता का उन प्रसिद्ध और उच्च ध्यानधर्मों में से थे, जिनका नाम समार का इतिहास में सर्वत्र चमकते हुए सितारों की तरह प्रकाशित रहा। वे भारतमाता के उन सुपुत्रों में से हैं जिनके व्यक्तित्व पर जिनना भी अभिमान किया जाए वोडा है। नपोलिऑन और सिकन्दर जैसे अनेक सम्राट एव बिजेता समार में हो चुक है, परन्तु स्वामी जी उन सब से बडकर थे।’

—खदोजा बेगम एम.ए.ए.

बड़ बडकर उस जक भाषण देने शुरू कर दिये थे। परन्तु अब बनरस सिंह भिड़रावाले तो नहीं हैं पर अब वे नेता उनके उत्तराधिकारी बनने की होड़ में शामिल हैं। भिड़रावाले को खीद करार दे रहे हैं। कुछ ऐसे सिर फिरे हैं जो भिड़रावाला जीवित है कहकर सिलकर पंजाब की धामीण बनता को बराला रहे हैं। इसर लम्बवो कह रहे हैं सरकार पहले धानन्दपुर साहिब प्रस्ताव स्वीकार करे तब बातचीत की जायेगी। लन्दन ‘भावजर्वर’ में उन्होंने एक बन्धव्य प्रकाशित कराया है। जिसमें बहु सिलों के लिए प्रत्यक्ष विधान प्रत्यक्ष भन्दा प्रत्यक्ष सरकार की मांग करते हैं। उनके एक साथी ने कहा कि २५ वर्ष के लिए पंजाब का वासन सिलों के हवाले कर दिया जाए और दो कमी के आधार पर चुनाव कराए जाय। मतलब यह है कि भ्रष्टाचारी दल का ही शासन होगा बाहिण। मास्टर तारासिंह ने एक बार कहा था कि मोर्चा लगाते पर जो कुछ मिल जाए उसे स्वीकार कर लो परन्तु अपने लक्ष्य को कभी निहाडो से धोमल मत होने दो।

## उपवादी फिर अपने विलों से बाहर निकलने लगे हैं

अब शुरू से ही भ्रष्टाचारी नेता पंजाब की जनता को उस जित करत में लगे हैं। भ्रष्टाचारी व कियों भने की प्राडा नहीं करनी बाहिण। वह समझता करता नहीं बाहते क्योकि वह जानते हैं कि कोई भी समझता किया तो जिन लोगों को तरह तरह के सब बाय दिखाकर उन्हीने उस जित कर रखा है वह उनकी जान के दुस्सन बनकर सामने धा जायेंगे। वेते भी भ्रष्टाचारी ऊट की नकेल उपवासियों के हाथ में है। अब तक उपवाद का इलाक कठोरता से नहीं होगा समस्या मुह बाये मामने खडी हो रहेगी। शुधमन्त्री की चन्हाए ने राज्य सभा में कहा कि पंजाब में उपवासियों की मदद ब प्रोत्साहन देने वाले स्थलमन्त्रिर ब अन्ध धमसुवो में शरज तकरा करने वाले ब उपवासियों को प्रसिद्धए देने वाले विवेदी तत्त्वों को पगताल का काय जारी है।

हाल ही में कुछ पकरे गये सिव्ल उपवासियों से दिल्ली में पुल-ताख की गयी तो उन्हीने स्वीकार किया कि पाकिस्तान में जिनसि सिमिरी में प्रसिद्धए प्राय ३०० उपवादी भारत में प्रविष्ट हो गए हैं। पंजाब से जो ल्वरों धा रही हैं उनसे उता चलता है कि पंजाब के तीन सीमा से लगे जिनो—मुद्रासपुर अमृतसर और फिरोजपुर के साथ जाने वाली सीमा से मुद्राह नौबतगो की पाकिस्तान केजने का भन्दा जोर-जोर स बल पड़ रहा है। कहा जाना है सैनिक कारबाईस पहले लगभग १५०० उपवादी भागने में सफल हो गये थे। समन्वय से अपने विलों से निकलने की प्रतीक्षा कर रहे हैं। जैस-जैस पंजाब से लेना हटनी शुरू हुई है, उपवासियों की गतिविधि फिर बढ़ती जा रही है।

भारत का माय सबक योग्य युवा हाथों में है पर वह समय ही बना पायेगा कि हमारे कर्त्तव्यर इस मबर से नैया से पान में फितने कुशल सिद्ध हो पायेंगे?

—यसराज सुधांशु







# सरस्वती ने सक्रिय भाग लिया था

ने भारत के हुए क्षेत्र में हलचल मच गई। पुराने आधार दृष्टि वाले, और पक्षे को सोचने वाला या एक ही जगह बसा-बसा भारत सदियों की नींव खोकर धागे को कचम बढाने लगा।

(क) धार्मिक क्षेत्र में कड़िबाद पर प्रहार—माता का धर्म वेदा से क्या हुआ था। जो कुछ है वेदों के आधार पर है। हिन्दुओं को गौरी पहाड़ बाहिए बयबयबसा जग्य से होनी चाहिए मुझे को वेद पढ़ने का अधिकार नहीं रहित क्यों को समाज के निम्न स्तर में ही वासता के रूप में पड़ रहनी चाहिए वेदांगों को पूजा करनी चाहिए। यह धृष्ट क्यों होना चाहिए क्योंकि वेदों में ऐसा लिखा है। ऋषि दयानन्द ने कड़िबाद पर प्रहार करने के लिए सत्र से पहला प्रहार वेदों के धर्म पर किया। उनका कहना था कि वेदों में यह सब कुछ नहीं लिखा, परंपरा सौध वेदों के धर्म की नहीं समझते वेदों के ज जो धर्म करते हैं ने धर्म छोड़ दिया, वसत है। हिन्दु धर्म को ईश्वरीय ज्ञान मानता है इसलिए वेदों में जो कुछ लिखा था उन्हीं को ईश्वरीय ज्ञान मानता था। ऋषि दयानन्द ने वेदों के प्रचलित धर्म पर प्रहार किया। कड़िबाद के ने इतने धर्म के कि वेदों के लिखे हैं की धर्म-धर्मों को मानने से उन्होंने हटकर कर दिया। ने सत्यत्व के आधार पर धर्म है। निम्नलिखित के आधार पर उन्होंने लिख दिया कि वेदों में जो सत्य प्रकृत हुए हैं उनका कोई स धर्म नहीं है। एक ही सत्य को धर्मक धर्मों में प्रकृत किया जाता है। धर्म का धर्म परिपक्वता धर्म नहीं है जो निमित्त के अनुसार को की एकात्मता ही सब धर्म कहता है। परंपराधर्म की धर्म है, राजा की धर्म है धर्मो माननी व्यक्तित्व की धर्म है। अपने धर्म को मुष्टि से उन्हीं प्रतीक प्रमाणिक धर्मों का सहारा लिया। ऋषि दयानन्द ने बंदों के कड़िबादी धर्मों पर प्रहार कर सारे धर्मिकों को बल दिया। जिन मन्त्रों से हिन्दुओं का पचना अभिहित कहा जाता था, उन्हीं से उन्होंने लिख दिया कि हिन्दुओं को सत्के समाज पढ़ने का अधिकार है। जिन मन्त्रों से कर्ण बयबयसा सत्य पर कड़ी जातों की उन्हीं से उन्होंने बल बयबयसा को कम पर कड़ि कर दिया जिन मन्त्रों से देवी-देवताओं की पूजा की जाती थी उन्हीं मन्त्रों से उन्होंने देवी-देवताओं के स्थान पर एक ईश्वर को उपासना का विधान लिख दिया। इस युग में धर्म जो की सामाजिक विचारक हुए उन्होंने बा तो प स्वाभाविक सत्कृति के प्रभाव से

बाहर भारतीय-सत्कृति को विनाशित ने दी था कड़िबाद से धर्मों को कुल न कर सकें। ऋषि दयानन्द ही एक ऐसे विचारक ने जिन्होंने भारतीय सत्कृति को खोसा भी नहीं। परंपराध्य सत्कृति को विनाशोपर उस ने दब भी नहीं।

(ख) सामाजिक क्षेत्र में कड़िबाद पर प्रहार—ऋषि दयानन्द के विचार का इष्टिकोण सर्वथा नीतिगत इष्टिकोण था। ने मूल नतमान तथा बयबय को पिछले तथा धर्म से विचारक बनना चाहते थे। यही कारण है कि विभिन्न युग के साथ निरन्तर रहते बाले कड़िबाद का सामाजिक सत्र में भी उन्होंने बहिराग किया। समाज में से स्थिरता के पक्ष पातों नहीं ने प्रतिनीलता क पक्षपाती ने।

उनके समय का समाज नवीनता से ऋता था जो कुछ बना था रहा था सामाजिक-क्षेत्र में उन्हीं को बनाता थाता था। रकी विला का इस देश में लातना हो चुका था। बाल विवाह विधवा-विवाह नियम सहज की प्रथा—ने सब प्रमाण परम्पराएँ इस देश में सब ही खो चुकी थी। इनके विरुद्ध सोचने का किसी को साहस नहीं होता था। ऋषि दयानन्द ने इस सब कड़िबाद को जहा धार्मिक क्षेत्र से उखाड़ फेंका जहा सामाजिक क्षेत्र में से तो उन्हीं ने विनाश गहर किया। उन्होंने एक विशुद्ध नवीन इष्टिकोण समाज के समुमुख रखा ऐसा इष्टिकोण जो पहले से कले था रहे इष्टिकोण से सत्यता जिन था उससे उगा था। इस काल में जो समाज सुधारक हुए ने बीरे बीरे समाज का सुधार कर रहे थे। ऋषि दयानन्द ने एक ही प्रहार से समाज की सब कड़ियों को उखाड़ फेंका। उन्होंने समाज के सुधार का नारा नहीं लगाया, सामाजिक कति का नारा लगाया। ऋषि दयानन्द के उद्योग का परिणाम था कि हिन्दुओं के प्रति समाज का दृष्ट बल गया। जहाँ पहले रूढ़िवादी रूढ़िवादीमाता का राय ब्रह्माता जाता था जहा कम्पावियों को पढ़ाने के लिए पाठशाळाएँ खोली जाने लगी। ऋषि दयानन्द समाज को सामाजिक सुधारकों ने धामाचलूत ने यह है कि जहा दूसरों ने हिन्दु धर्म को समाप्त करने का प्रयत्न किया जहा ऋषि दयानन्द ने हिन्दुओं का हिन्दु रहते हुए उन्हें नवीनता के रंग में रच दिया।

उन्होंने हिन्दु धर्म को हिन्दु धर्म रखते हुए उसकी धर्मर से काल प टने का यत्न किया। यही कारण है कि १९ वीं शताब्दी के समाजालीन समाज सुधारकों ने जितनी

सफलता उन्हें मिली उतनी सफलता सत्य किसी को नहीं मिली। ऋषि दयानन्द ने समाज सुधार की जो स्फुरेखा बना दी उस को लेकर २० वीं शताब्दी के सामाजिक तथा राजनीतिक नेताओं ने कार्य किया। महात्मा गांधी के २० वीं शताब्दी के धार्मिकता को समझने के लिए ऋषि दयानन्द के १९ वीं शताब्दी के धार्मिकता को समझना आवश्यक है।

(ग) राजनीतिक क्षेत्र में कड़िबाद पर प्रहार—ऋषि दयानन्द के विचारधारा का आधार कड़िबाद का उन्मुखन करता था। राजनीतिक क्षेत्र में विस्का राज नसा था रहा हो नहीं गिरा है—यह कड़िबादी विचार बला था रहा था। उ हीन धार्मिक तथा सामाजिक नेता होत हुए थे जो इस विचार पर प्रहार किया। सत्याग्रहकाश ने उन्होंने लिखा—'धर्माधीन्य से बीरे धर्मों के धामस्य प्रभाव परंपर के विरोध से धर्म वेदों पर नकार करने की कथा ही क्या कहना हिन्दु धर्माधीन्य ने भी धर्मों का सत्यत्व, स्वतंत्र स्वामीन्य निम्न राज्य इन सत्य में है। जो मुझ है को भी विदेशियों ने पदाक्रान्त हो रहा है। कुछ धीरे राजा स्वतंत्र है। हुदित जब जाता है तब वेदांगानियों को धर्मक प्रकार के रंग मोगने पड़ते हैं।

धर्मों के प्रति धामस्य Good government is no substitute for self government तथा ऋषि दयानन्द के उक्त मन्त्रों ने कौन से देश में है। दादा धर्म नारीको धर्मक धर्म ने इवी विचार को धामे ब्रह्मा। धर्मसमाज के बाहर यह कम मोगों को पता है कि जिस स्वतंत्र धर्म का प्रभाव काश्ते के मच से दादा धर्म नारीको ने १८०९ में किया था उसका प्रयोग 'नवि दयानन्द ने १८५७ में किया था। ऋषि दयानन्द १८५७ के समय ३३ ३४ वर्ष के नवयुवक ने धीरे धर्मर उस समय उनके वीर विचार थे, जो उन्होंने स्वाध्यायकाश ने पठित किए जो कोई समझे नहीं कि ने सब काश के सत्य धर्मने इन न किताबी न रहे होंगे। जो है वह ठीक है उसके प्रति बहिष्कृत नहीं करना—यह भावना कड़िबादी मानना है धीरे धीरे 'नविदा' मानना पर नवि प नाश ने धार्मिक सामाजिक तथा राजनीतिक ऋषि न सीधी कति की।

## पंजाब समस्या के समाधान के लिए पंजाब के सभी धार्मिक संगठनों तथा राजनीतिक पार्टियों को विश्वास में लेकर ही सरकार निर्णय करे

दिल्ली १२ मार्च। पंजाब समस्या के समाधान का विचार ने केने सरकार के धारित पर विरोधित धर्माधीन सत्य धर्मिणीय मुद्दाका प्रत्यक्ष कमेटी के सत्यय नवरत्नने नेताओं की छिद्री का स्वागत करते हुए धार्मिकता धर्मों प्रतिनिधि समा के प्रभाव भी रासायनिक साक्षराल ने एक बयबयन में कहा कि सत्यय सत्यता का उचित समाधान करने के लिए पंजाब में रहने वाले ५३ प्रतिनिध हिन्दुओं को भी विचार से लिया जाना चाहिए।

की साक्षराल ने कहा कि धर्माधीन हा सत्यय नवरत्न विचारक का उक्त बयबयन है। जगत पक्षा की सत्यय

सभी धर्म धर्माधीन विधेय रूप से धार्मिकता सत्यय बर्त, जैन, नाथवादी, राक्षसवादी धर्मि छनी वनों धीरे धर्माधीनतासि पाठियों को विश्वास में लेकर हल की जाती चाहिए। धर्माधीनतासि को सत्यय करने वाली नीति स उक्त धर्म से सब से सर्वेध धर्माधीन की स्थिति रहेगी। रिहा किने ये नेताओं की स्थिति पर से हिसक कारंदाधर्मों की निम्नता एवं प्रभावता से धर्माधीन हल विचारक प्रकट करना बकरी है।

समाचार पत्र में प्रकाशित धर्माधीनता वी सुवर्णनर विहू द्वारा प्रकट भारतीय सत्ययन के धर्मर से धार्मिकतासमान धर्माने की नवि पट्ट दिखनी करे

हूँ की साक्षराल ने सरकार को धामाह किया कि धर्माधीनता की नविदा कार धर्मर से बयबयनधर्माधीनता का स्वतंत्र सत्य सत्य सत्य हो गया है। धर्माधीनता की नीति का सत्यन सिक्को का केवल एक सीमित धर्म कर रहा है नाल स धर्मों मोग हो कारे सिक्को के निम्न तथा पंजाब में रहते बाले सत्य धर्मों ने नास पर खड़ा कर रहे हैं। जो सत्यय सत्ययनधर्माधीन एवं धर्मिणीय है। रिहा एकाध धीरे धर्माधीनता के धर्मर से सत्यय पक्ष की धार्माधीन रह सति से ही सरकार पंजाब समस्या का हल करे धीरे धर्माधीनता की किसी भी धर्मिणीय नीति के सामने न मुड़े।

इस सत्यय में सत्य प्रभाव जो ने कहा कि धर्माधीनतासि वनों को हल सिक्को की सत्य तथा विरोधों ने बल रहे सतिविधियों पर कड़ी नजर रखनी चाहिए।

प्रचार विभाग धार्मिकतासमान, दिल्ली

## दक्षिण दिल्ली वेद प्रसार मण्डल द्वारा आर्यसमाज स्थापना दिवस

धार्मिकतासमान नाथवादी नगर ने दक्षिण दिल्ली वेद प्रसार मण्डल द्वारा धार्मिकतासमान स्थापना दिवस धूमधाम से सम्पन्न हुआ। इस धर्मर पर मुख्य प्रतिनिधि की स्थिति मानन साक्षर नौ० सुरेन्द्र सिंह चरनरत्न दक्षिण दिल्ली जोग (नगरनिम्न) की वेदाधर्माधीनतासमान नगर निम्न ने धार्मिकतासमान धीरे धर्मिणीय धर्मानन्द के उपकारों को सत्यय किया। धामाधर्म के सत्ययक भी सत्यय कुशाग्र, विचाररत्न ०० यदवीनदित्त शास्त्री ने धर्मर काश्तेकी धार्मिकता से बलता को नमस्कार किया तथा धार्मिक धर्म की निम्नतासमान के सत्यय कहाया।

महानगर नाथवादी नाथ

इतिहास विषयक वे धारणाएँ बढभूल  
होती जाती हैं जो महर्षि के मन्तव्यों के  
विरुद्ध हैं।

गत वर्षों में विश्व के विविध देशों में पुरातत्त्व सम्बन्धी जो खोज हुई है, और

[illegible]

भारत के स्कूलों, कालिओ घोर युनि-  
वर्सिटियों में भारत का जो इतिहास पढ़ाया  
जाता है वह महर्षि के मन्त्रव्यो के अनु-  
रूप नही है। आयसमाज की जिज्ञासु  
सत्वाग्रो में भी ऐसा हा। इतिहास पढ़ाया  
जाता है। इसका परिणाम यह ह कि  
संस्कृत उन्मत्त शिक्षा प्राप्त लोगो में ही  
मही, अग्रिपु। विज्ञा के व्यापक क्षेत्रों के  
कारण) सर्वसाधारण जनता में भी

[illegible]

## आर्यसमाज हजूरिबाग श्रीनगर (कश्मीर) का पुनर्निर्माण

—नेत्रपाल शास्त्री

सिंहविदारक्ष्य मे पदावनीं पत्र प्रेषित  
 विद्या। किंवा वा, नेत्रपात्र शास्त्री ध्या-  
 नमगनी हीदृक् ह, उरुके र्हने मे प्रा-  
 पास के र्हने बावे लोकी को जलत जल  
 हो यवा ह इतिवत् २५ पद्ये के अन्तर  
 उपास को प्रपने पर से निकाल दें धन्यवा  
 हास का जर की बना विद्या जावेवा ह के  
 कारण प्राथम्यवाताको को कष्ट न पडुंवे,  
 ऐसा विचार कर ये पत्रिका के साथ पुन  
 सहक पर धा यमा। दूसरे प्राथम्यवासा  
 के यद्वा जाने पर की एसा ही हुआ। तीसरी  
 याद करविचार गमिचर के गहलू मे बने  
 ही साधक के साथ अपने मने मे मुझे  
 धायय सिवा। धन्य होय मठ मे ही रह  
 रहे ह।

प्राय तो यह बात स्पष्ट हो चुकी है कि पञ्जाब और बम्बू कस्मीर में जो देश-वासी उपद्रव हुए उनके पीछे विदेशी शक्ति का हाथ था। प्राय ही देशद्रोही उत्पन्न रहित हैं। वे भारत को उन्नत होने देखा नहीं चाहते। प्राय देश सब धोरत विरुद्ध है। देश के भीतर भी जन-जन की सेवा नहीं हो गई है।

आर्यसमाज अपने जन्मकाल से ही

(शेष पृष्ठ ११ पर)









## आर्य जगत् की शान

२०० बिस्तर वाले निर्माणधीन

## नेत्र चिकित्सालय

(अनुमानित लागत दो करोड़ रुपये)

के लिए दिल खोलकर दान दीजिए

दान की राशि आयकर अधिनियम जी० ८० के अंतर्गत कर मुक्त होगी।

सारा दान बैंक/मनीऑर्डर/बक ड्राफ्ट द्वारा

मन्त्री, माता चल्नदेवी आर्य चर्मार्थ नेत्र चिकित्सालय,  
बी-१ जनकपुरी, नई-दिल्ली-१८ क पते पर भेजा जाए।

दानदाताओं के नाम चिकित्सालय की शिला पर  
अंकित किए जाएंगे।

### निवेदक

राजगोपाल बालाचारी	सुर्यदेव	महाशय वर्मापात्र	योगप्रकाश शर्मा
वररत्न चिकित्सालय	प्रधान, दिल्ली	प्रधान	मन्त्री
पूर्व प्रधान डा०आ०	आर्य प्रतिनिधि	दास केजरीब	महाशय कुन्नीपात्र
प्रति० बन्ना	समा	समा	देरि० कु०

लौक्य से महाशिया वी हट्टी प्रा० लिमिटेड ६/४४ कोलिनगर,  
औद्योगिक क्षेत्र, नई दिल्ली-११००१

## आर्य सन्देश साप्ताहिक

पत्रिका के ग्राहक बने, और बनाएँ

क्योंकि यह पत्रिका—

- (१) वैदिक मान्यताओं को उजागर करती है।
- (२) आर्यों (हिन्दुओं) की महान् परम्पराओं को याद दिलाती है।
- (३) महर्षि दयानन्द की वैचारिक क्रांति से आरम्भ चेतना जागृत करती है।
- (४) भारतीय संस्कृति के भूले बिसरे प्रयोग, महामुण्डों तथा धार्षिक मस्कारों को प्रकाश में लाती है।
- (५) ऋषि मुनि नपसों प्रातःविद्वानों को बाणी का बोध कराती है।
- (६) परमेश्वर की पवित्र बाणी वेद का बोधनोपयोगी मधुर स्वरूप लाती है।
- (७) नव नेलकों कवियों, चिन्तकों, प्रतिभाशाली विद्वानों साहित्य लेखियों को प्रेरणाह्वन देती है।
- (८) धार्मिक, सामाजिक और प्राकृतिक ज्योति से मन मग्न कर प्रकाशित करती है।
- (९) वेद उपवेद, दर्शन उपनिषद, स्मृति, कल्प सूत्र, भारव्यक ब्राह्मणग्रन्थ गीता रामायण नीति, ऐतिहासिक अमृत्य आर्य ग्रन्थों जिन को अधिकांश लोगों ने पढ़ा तो क्या देखा की नहीं समस्त प्राच्यवैदिक ज्ञान को जिन ग्रन्थों पर सदा गर्व रहेगा उन के बहुमूल्य ज्ञान ने आपत्त मार्गदर्शन करती है।
- (१०) जनएव देरन काजिए आज हो अपना धार्मिक चन्दा २० रुपये भेजिये वर्ष में अनेक विशेषांक तथा महर्षि दयानन्द निर्वाण सताब्दी पर प्रकाशित ५० रुपये मूल्य की ग्रन्थ मनोहारी स्मारिका नि शुल्क की जायेगी। स्मारिका और विशेषांक का स्टैंडक कम है। भन यह सुविधा भ्रमल तक ही है।

सम्पादक आर्य सन्देश

उत्तम स्वास्थ्य के लिए

गुरुकुल कांगड़ी फार्मसी,

हरिद्वार की औषधियां

सेवन करें

**देकड़**  
गुरुकुल चाय  
भूमिसेनी सुरम  
फायरिल  
गुरुकुल कांगड़ी फार्मसी  
हरिद्वार

धाका कार्यालय—६१, गली राजा केदारनाथ,  
कोल. २१६८३८  
बागडो बाजार, दिल्ली-६

**सुसंस्कृत**  
**ओम् गुरुकुल कॉम्प्यूटो विश्वमार्ग**  
**आर्य सन्देश**

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का साप्ताहिक पत्र

मुख्य एक प्रति ५० पैसे

बर्ग ६ भाग २१

रविवार, १४ अगस्त, १९६५

आर्य संस्कार १९६०-५१-६५

वैशाख २०४२

संस्कारनाम - १९१

**अकालियों से तब तक कोई बात न की जाये जब तक गैर-**

**अकाली सिख और पंजाब के हिन्दू नेता उनके साथ न हों**

**श्री रामगोपाल शालवाले ने शिष्टमण्डल के साथ प्रधानमन्त्री को ज्ञापन दिया**

८ अगस्त, नई दिल्ली। श्री राम-गोपाल शालवाले ने नेतृत्व में एक शिष्टमण्डल प्रधानमन्त्री श्री राजीव गांधी से मिला। शिष्टमण्डल ने प्रधानमन्त्री को राष्ट्रीय अलखला की रक्षा के लिए किए जा रहे प्रत्येक प्रयत्न में पूर्ण सहयोग का आग्रह करने का पत्र एक ज्ञापन भी दिया। इस शिष्टमण्डल में अनेक आर्य संस्थाओं के प्रतिनिधि शामिल थे। सावधानीपूर्वक सभा के उपप्रधान श्री रामचन्द्राव बन्दे साहब, महात्मजी श्री श्रीमदप्रकाश त्यागो, कोषाध्यक्ष श्री श्रीमदनाथ मराहा, श्री ५० राज गुरु शर्मा, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री हृदयदेव, महात्मजी श्री डा० धर्मपाल, श्री महादेव धनपाल श्री वेदप्रताप वैदिक, आ शितीस वेदानकार आदि थे।

प्रसन्न ज्ञापन इस प्रकार था—  
भारत में अस्थिरता पैदा करने की साजिश से इसकी चारों ओर से घेरने और सामाजिक विघटनकारी शक्तियों को प्रोत्साहन देने की जो प्रवृत्ति चल रही है। उससे राष्ट्र के सामने काफी भयंकर संकट पैदा हो गया है। राष्ट्र को एक और अलखला के लिए तथा एक राष्ट्रपिता का निर्माण करने के लिए हमारे निम्न सुझाव हैं—

१ भारत के सिक्खों में सम्प्रदाय निर्दोषता को स्वीकार करने के कारण किसी साम्प्रदायिक पार्टी को राजनीतिक मायना नहीं मिलनी चाहिए। न ही किसी बग विरोध के लिए अलग से बिल कोड हो और न ही अनुचित धारणा का प्राथम्य दिया जाये।

२ अकाली दल की एक साम्प्रदायिक दल है वह सिक्खों का केवल एक सीमित वर्ग का ही प्रतिनिधित्व करता है। इसलिए उसका राज-

नीतिक मायना देना सविधान की दृष्टि से अनुचित है।

३ राजनीतिक पार्टी के रूप में उसकी मायना यह नहीं की जाती तो तब तक उस दल से कोई बातचीत न की जाय, जब तक वे अकाल दल से स्व० माननीय प्रधानमन्त्री श्रीमती इन्दिरा गांधी की हत्या की निन्धा न करें, उसके लिए पब्लिसिटी प्रकट न करें और भारत की एकता और अलखला के लिए तथा भारतीय सिक्खों के पालन के लिए प्रतिज्ञा न करें।

४ अकालियों के किसी ऐसे शिष्टमण्डल से बातचीत न की जाये जिसमें उसकी ही संस्था में गैर अकालियों के और पंजाब हिन्दुओं के भी प्रतिनिधि न हों।

५ धानलपुर महाब्रह्म प्रस्ताव देश के विघटन का दस्तावेज है। उसी के विरोध में आपने धाम जनता से कोट गांधी से और जनता ने आपकी अपूर्व बहुमत से जिनारा था। उस धानलपुर प्रस्ताव पर किसी भी तरह की बात करना जनता के उत्सवध होगा।

६ हिन्दू नेताओं को जेलों से बिना रिहा किये केवल अकाली नेताओं को छोड़ना पक्षपात पूर्ण कार्रवाई है।

७ अकाली नेता श्री लोमोवाल के जेल से छूटने के बाद दिये गये वक्तव्यों से यह स्पष्ट हो गया है कि वे भारत सरकार की सत्ता को स्वीकार नहीं करते और उससे बातचीत के सदाभावना अर्थव्यो को उसकी कमजोरी समझते हैं। मुख्तारों ने हथियार रखने पर उनके कोई आपत्ति नहीं है। श्रीमती गांधी की हत्या की निन्धा करने की भी तयार नहीं है और उनके वक्तव्यों में से यह भी प्थनि निकलती है कि आपकी इन्दिरा

गांधी से बड़ा दुश्मन समझते हैं और राष्ट्रपति की को अपशब्द कहते से बाज नहीं आते हैं।

मुख्तारों एक को पंजाब के बाहर के मुख्तारों पर लागू न किया जाये। और अखिल भारतीय मुख्तारों एक न बनाया जाये।

८ विदेशों में जो सिक्ख भारत विरोधी कार्रवाई को निर्यात हैं और वाकिस्तान के लिए कार्यरत हैं। एक अन्वेषण बनाकर उनकी भारत में विद्यमान सारी सम्पत्ति ज्वन की जाये।

९ जो उपजादी गिरफ्तार किये गये हैं उनके ऊपर पंजाब के बाहर विशेष अदालत में मुकदमे चलाये जायें और उनसे कोई रिश्वत न की जाये।

११ अकाली नेताओं ने छूटने के बाद जो वक्तव्य दिये हैं उनसे पंजाब के हिन्दुओं में अतृप्तता की भावना पुनः व्याप्त हो गयी है। उन्हें लगना है कि फिर जून १९६५ से पूर्व की स्थिति धारा रही है। अकाली नेताओं को छोड़ने की एम्पक्षीय कार्रवाई से

यह अनुमान की भावना और बढ़ गई है।

१२ अमोहर काजिला हरियाणा को देने की और लिक नहर को बनाने की व्यवस्था तुरन्त की जाये। चूकि ऐसा न करने से जहाँ हरियाणा की जनता में ज्यादा असन्तोष बढ़ रहा है, वहाँ श्रीमती इन्दिरा गांधी के दिये हुए वचन की भी भंग किया जा रहा है। इससे देश की सीमा पर भी सतर्क की समावना बढ़ती है।

१३ विभाजन से पूर्व और उसके बाद भी पंजाब के सामाजिक जीवन में धायपमाल का बहुत बड़ा योगदान रहा है और धायसमाज ने गाज तक बिना किसी राजनीतिक स्वार्थ के निष्कार्ण भाव से देश सेवा के ध में प्रयाग की निष्पत्ति है। इसलिए पंजाब की किन्हीं भी समस्या के समाधान में धाय नताओं के परामर्श पर विचार करना रहा सरकार के हित में होगा। बड़ा राष्ट्रीय हित में भी होगा।

□

## महात्मा हंसराज दिवस समारोह

२१ अगस्त, रविवार ६ बजे प्रात से १२ बजे तक

स्थान—तालकटोरा इण्डोर स्टेडियम, नई दिल्ली

अध्यक्ष—आमो सत्यप्रकाशनाम

मुख्य अतिथि—श्री ० सी० पन्त (क.जीय विधानमन्त्री)

वक्ता—श्री० रामगोपाल शालवाले (प्रधान सावधानीक सभा)

५० सिखकुमार आल्लो, श्री० रत्नसिंह

श्री० कुलसिंह आर्य श्री शितीस वेदानकार

सत्योक्त श्री रामनाथ सहगल

अभी आर्यसमाजों एक आर्य संस्थाओं से निवेदन है कि सारी संस्था में बहुचक्र कार्यक्रम को सफल बनाय।

निवेदक डा० धर्मपाल  
महामन्त्री—दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा

## सत्संग वाटिका

धन स्वाट्ट ह—हम लाभ मूल्य और  
पन्धमा की तरह कदाएँ के पथ पर  
समयावर चल । न चार्थ धनकाई याव  
के पथ पर धर्मिय रहे ।

ध्यात्वा—धन हन आ विचार कर  
के बेश्च सुख क्या करता है ?

धन एकाकी रहति । (सुखेव)  
धन धनका चलता है ।

महा ई २ एमे स वेग व रहे है है  
मानव अर्थ कस-अ-याय परीणकार  
सब्य माम मे धनपर कीर्त ता लाभ न भी  
देता हो वो भी परकाह मर कर धनका  
ही धनने स य वर धाने बढते रहो ।  
एकना पनो रे (रवि रवीन्द्र) यही बात  
ब्रह्मण्य व न भी कहता है—

भक्तु ई विन्दते मनु  
धन रक्षाड उज्जुवन्तम् ।  
धनस्य पथ्य भयान्तरम्

यो न तद्वत्तेत भर्तु । चरैरेति चरैरेति ।

हे मनुष्या चलने वाला काम करने  
वाला यानि पुण्यार्थी व्यक्ति ही सफलता  
प्राप्त है । बही कम धन काम और  
मोक्ष को सिद्ध कर सकता है । धारणी  
नही । जरा धन को धोर देको जो चलने  
के प्रभाव कभी नहीं करता है । धन चलते  
रहो । प्रगल्भीय रहो । उद्यम करने रहो ।  
कामों वा साधनाधि शरीर वा पातकानि ।  
अत गात्र न मा ह न यही सही बात है—

उद्यमेन हि सिध्यति  
कार्याणि न मनोरथैः ।  
न हि कुलस्य सिद्धयः  
प्रतिपत्तिर मुने भूया ॥

धर्मात् प्रत्यक्ष करने से हो होने  
कार्यों मे सफलता मिलती है । मान मनो  
रथ करने = कथा नहीं । जैसे गुण को  
विह के मुख मे धाने धा प्रवेश नहीं  
करते सिध को मुखय कर हा होने प्रत्यक्ष  
करना पड़ता है ।

देव देव आलसी पुकारा ।

जैसा कि वाल्मीकिय रामायण मे  
रामच जलमे सीत हरण क पन्थात्  
कहते = नाय न मुन्य यह तारा दुख  
सिखाना मैं पुण्य मे श्रेय का जलन  
दूषा और उहो न उलम भा दिया भाग्य  
कृष्ण भी नहीं है । हमारा म न रिझना  
कम ही नहीं है । धन और न गरी-  
दासता हाकर ईश्वर जल का सम बचन  
सिझा नना चाहिए ।

महावि दवानन्द धर्मन स्वमन-या  
मन्त्रस्य न पोषणा करते हैं—मैं पुण्याय  
को भाग्य म ब = मानना ह । विमने  
सहायन से मब मुचरता और विमनने से  
सब बिगड़ता है । गान ही के कहते हैं ।  
यम का पत सबय इहलोकर परलोकर

## आदर्श जीवन का वैदिक सन्देश

व्याख्याकार—विन्देश्वरी प्रसाद सिंह

स्वस्ति पन्थामनुचरेम स्याधिन्दमसाविन ।  
पुनदवताघ्नना जानता समनमहि ॥



मोमो मे मिसता है

पुन जब हम मूल्य पर धर्मागत  
करते हैं तो राते हैं कि मूल्य विषय मे  
धनना काम करता है । धानस्य प्रमाद मे  
धन धन की समय नष्ट नहीं करता है ।  
यहा इस मन मे परस्पर हमें यह सचेत  
के रह है—मानव धानस्य प्रमाद मे  
समय नष्ट मत करो । समय बहुत ही  
मूल्यवान है ।

ईश्वर न सवार के महान् अस्मिता  
को भी बोधोत पड़े का समय ही दिया है  
और हमें भी उठना ही चिया है संकल्प  
भर का भी धारण नहीं है । पर मे उन्ही  
समय का सदुपयोग करके सवार मे धन  
तय बन गये । कानीयव वाल्मीकि धर्म  
मे जब तम धनने समय के मूल्य को नहीं  
समझा था सवार मे सक्ते पिछली पक्ति  
के ही तो मे पर बैठे हो उन्हीने समय का  
मूल्य समका सवार के धनभी पक्ति मे  
धा गये ।

जिसने भी समय के मूल्य को समझा  
वही विद्वान् बन गया धनवान लेख  
महान् बन गया । जिसने भी समय के  
मूल्य को नहीं समझा वही पिछल गया ।

धनर भरते समय हमारे पास धरने  
भी स नि हो और हम उनके बढते मे  
कम निमनो का समय प्राप्त करना भी  
बाहें हो पण्य नहीं कर सकते हैं ।

अत गात्र न पोषणा करता है—

धामुष्य सत एकोपित न  
पन्थ स्वानुकोटिनि ।  
स लेखिन्मक नेति  
का नो नानिस्तोत्रिका ॥

यानि धरने नाल सुयोग मे भी  
एक क्षण की भी धानु न प्राप्त होने वाली  
है । ऐसे जो बकार कर नष्ट कर देता है  
उसमे बही और का हा नि हो सक्ती  
है । धन समय का मूल्य सबभने हुए  
इकठा मूल्य मनुष्याय करन

महावि दवानन्द धर्मन स्वमन-या  
मन्त्रस्य न पोषणा करते हैं—मैं पुण्याय  
को भाग्य म ब = मानना ह । विमने  
सहायन से मब मुचरता और विमनने से  
सब बिगड़ता है । गान ही के कहते हैं ।  
यम का पत सबय इहलोकर परलोकर

सब्य जान के प्रकाश से प्रकाशित  
होकर सब को ज्ञान दिया करो जिससे  
मनुष्य धनान के पथरे मे न पड़े । हम  
की धाहुति का मय

सुनो नवों ज्योतिष्य स्वाहा धोर  
प्रतिनवों ज्योतिष्य स्वाहा म भी  
ईश्वर हम वही उपदेश कर रहे हैं कि जो  
परस्पर हमें धनना जान देने जाता है ।  
उसकी प्रश-नाते के लिए हम यज्ञ करते हैं  
धाहुति ज्ञानन है ।

यानी हमें स्वयं ज्ञानवान होकर  
धनान धनर निदान मे धनय्य ही सच  
प्राप्त चाहिए । साथ ही हमें दान धनय्य  
देते रहना चाहिए और सर्ववैभवं नाम  
मा बहु दान विधिपते । (सुनु)

ज्ञान विद्या जब हमारे पास होती तनी  
तो हम उसका दान कर सकते हैं । धन  
पूरा ज्ञानवान विद्वान् होकर सब वचनु  
सुखन की भावना से उभा ज्ञान दान  
करते हुए ही अपना जीवन विद्वाना  
चाहिए ।

पुन इस काल मे ईश्वर यह उपदेश  
दे रहे हैं कि जैसे मूल्य सब लोगों को  
नियम मे बसाता धाकणए से सब को  
धारण करता वही ताप फलन दिन  
राति नारायि का कारण होता है वैसे  
ही हमें भी वैधव्य बनकर सवार के  
कार्यों मे निष्काम भाव से योगदान देते  
रहना चाहिए इत्यर्थ धरने को उपदेश हमें  
ईश्वर सब के माध्यम से दे रहे हैं ।

पुन जब हम धनका की धोर देखते  
हैं तो राते हैं कि धनका धाना प्रकाश न  
होते ट ीय से प्रकाश से जनसमान  
होकर सबको प्रकाश देने रहता है । धन  
हम भी इय ज्ञानन स ज्ञानवान होकर  
ज्ञान का सदान दीवना चाहिए ।

धन का जलन पथ मे धोरों की  
जलन धारण करता है और दुख पथ  
मे धोरों धारे पड़ता । पृथ्वी धरन्वा मे  
यह मूल्य बन जाता है और दूसरी धरन्वा  
मे उसका नामोनिशान भी मिल जाता  
है । धन धोरों की धरनी धरन्वा सुचार  
कर हम भ ८५ बन सकते हैं और धनर  
धरनी धरन्वा के प्रति हम सतकृत  
रहें धोर = धे धोरों की विनाश की धोर  
जाने दिया तो एक दिन हमारा मानो

विनाश एक मित्र जयिषा । अत सावधान  
बनुर्चन मे ईश्वर एक अवह हमें उपदेश  
देते हैं कि एक धरन्वा मे इस सवार में  
कोई भी नहीं रह सकता है । वह वा तो  
नीचे जायगा धरन्वा ऊपर । वहा हमने  
धरनी धरन्वा सुचारने के लिए प्रयत्न न  
किया तो नाम मान के विनाश से भी  
हम एक दिन सननाश को वृद्ध जायेंगे ।  
धोर धरन्वा सुचारने के लिए प्रयत्नशील  
होकर हम सब कुछ ही प्राप्त कर सकते  
हैं ।

पुन धनमा धन धरि जानने पर  
हम पाते हैं कि धनमा का उठना मान  
ही प्रकाशित हो जाता है जितना कि वह  
प्रकाश के नीचे के सामने होता है पत  
हम उठना ही प्रकाशित हो पायेंगे जितना  
हम प्रकाश ज्ञान के नीचे के सामने रहेंगे ।  
जितना भी हम प्रकाशित हो उठना  
प्रकाश हमें प्र जमा की तरह ही देते रहना  
चाहिए ।

जब वरुण के समय जब मूल्य और  
धनमा के बीच प्रविष्टी धा जाती है तब  
जितना मान उस मूल्य प्रकाश के बलित  
होता है उनमे पर प धरना उा जाता है ।  
धन हा भी जब कभी ज्ञान के ज्ञान मे  
धनन हो जायेंगे धनमानमानन मे उन्ही  
धननन मे दृष्टते चले जायेंगे । धन  
धनन कहता है—स्वाभावना प्रमद ।  
स्वाभावन से प्रभाव पत करो ।

इसी कारण धन जान ननु मनुष्यात्  
पोषणा करते हैं—

यो हिमो धनकोष्य  
नैवममन्नं कृते भवन्न ।  
स कोष नैव दुःखस्य दारा  
पथति सामग्य ॥

यानि नैव ज्ञान से रहित धन उरुषा  
पुन पौन सति धनन को ज्ञान ही  
जाता है । की कारण उन्हीने धन के  
कर्मों मे हलन सनना और स्वाध्याय को  
धनियव स्थान दिया है । नियम कन मे  
धनन प्रकाश को तरह ही की भी  
धनन प्रकाश धनमा को वृद्धि स्थान नहीं  
दिया । इसी कारण मनु मे पोषणा की-  
नैवेद्य धननन नियम यथा धनमान-  
नित । त हि धादु धनमानन उपनर्त  
धननन धननन । यानी नियमय होकर  
धनियव धनमानन हो सब धरने से  
धननन धन है । परम कथन है ।  
नहिय धनानन धनमानन के धोरसे  
नियम मे पोषणा करते हैं—धन सब सत्य  
विचारों का पुनरुक्त है ।

धन का पतना पतना धोर धनना  
समान सब धरनों का परम धन है । इसी  
न रहए धन धनमानन धारा समय धेवाधि  
के धनमानन प्रचार धोर योगमाध्य मे ही  
मगाते हैं ।

धनमा धन जब धन हम सति जानते  
हैं तो पते कि धन धनमा धनमानन की  
(केतु पृष्ठ ११ पृष्ठ)

## ★ वचन-सन्देश ★

## नवीन क्रांति का बीजारोपण

"स्वामी दयानन्द युग प्रज्ञा, युग निर्माता थे। मेरे सत्कारों पर ऋषि दयानन्द का पर्याप्त प्रभाव है। स्त्रियों की वैवाहिकार दिनाकर महिलाओं में नवीन क्रांति का बीजारोपण किया। नारी की स्थिति में सुधार की अनवरत चेष्टा करते रहे। नारियों की बेवना देखकर वह कहा करते थे, माई! इससे अधिक हृदय विदारक दुःख क्या हो सकता है। विधवाओं की दुःख भरी आँहों से इस देश का सर्वनाश हो रहा है।

दयानन्द ने वदों की वैज्ञानिक व्याख्या प्रस्तुत कर, वैदिक धर्मग्रन्थ प्रणाली में एक नूतन युग का सूत्रपात किया है। इन्हीं सब कार्यों के लिए हम सब उनके ऋणी हैं।

—श्रीमती महादेवी वर्मा

## दयानन्द और आर्यसमाज

"आर्यसमाज एक जीता जागना सघ है। वह प्रास खुली रखकर दुनिया की ओर देखने वाली एक सगठित संस्था है। दयानन्द सरस्वती जैसा तेजस्वी ब्रह्मचारी और समाज हितवी ही निर्णयता से किसी राजा से भी कह सकता था कि 'तू कुत्ता मत बन।'

जिस समाज में स्वामी दयानन्द ने लेकर स्वामी श्रद्धानन्द तक बलिदान देने वाले वीर उत्पन्न हो जाते हैं, उस समाज का तेज सदा उज्ज्वल ही रहने वाला है।

—काका साहब कालेकर

## सम्पादकीय

## राष्ट्र की प्रतिष्ठा का सवाल है—पंजाब

पंजाब की हुरी भरी बरती, बीरता, बलम्य उसाह और आजन जाग्रति का प्रताक रही है। गीत गानों, नाच रंग की अपनी एक भव्य पहचान है। बीन ताशों की गमक पर उछलते नाचते मगक करते भलमस्त युवक, ऊँची टांग छेलेते बेतों में हल चलाते हलवाहे, बागों में फूले बालकर पातों लुछा मनवाते युवतियाँ, ऊँची कद काठों के बिधाल सने वाले डड दुल्हा का प्रवेश है पंजाब। यहाँ बीर बहादुर हुए हैं आकाश बीरता के प्रताक, तो शान्ति सन्तोष के प्रतीक सन जा कम नहीं हुए। बिदेसी आक्रान्ता जब पहली बार पंजाब के रास्ते भारत में आये पंजाब की हुरी भरी बरती की देख उन्होंने कहा था बुधा। हम चा जन्मत क स्वाभ ही देखते हैं। ये लाभ ता सबसुज जन्मत में हो रहते हैं।

प्रारम्भ सहाँ यह प्रदेस भारत का हृदय रहा है। सता भक्तों, बीर बिरताक क इस प्रदेस का शान्ति रागन और बालदान से सबा हुमा है। हलवा, गीत, नाचते लुछी मनात इस पंजाब में धन लुन और भाव, आकाश और भनवाक का अनावह बिन बिदाद देता है। युव ता यह है सत कहलान बाल तयाकावत धाँमका दारा हो यह बिन बानाया गया है। जनम भक्ता, सता, शानिया का उपदेशाभूत मिलना या अहंता के दारा हलाल अहुर बाँटा जा रहा है।

बहुर उगलत, भक्तावत म सत

अब तक जो लाभावाल का शान्त और समताता का समर्थक माना जाता रहा है। नाकन में जिस रास्ते पर कदम बढ़ा रहे हैं उसका मानवल बालदान ही था कि स बननाश। हल करतार गुच्छारे में एक दीवान का सम्भावत करत हुए उन्होंने कहा—युग पर यह कहने के लिए दबाव डाला जा रहा है कि सत भिरावावल से हमारा काह मानता नहा है। उन्होंने कहा, हमारे शारीरिक सम्बन्ध दूट सकते हैं लेकिन धार्मिक सम्बन्ध कभी नहीं टूट सकते। उन्होंने नेतावनी दी— यदि सरकार पंजाब सम्बन्ध शोध हल नहीं करती ता सिख युवकों के अन्ध शक्कता लाता सत कुछ बलाकर ताल कर देगा।

श्रीमान्त गाव कलानौर के गुच्छारा बन्दा बहादुर ने सत लोगोवाल की उपस्थिति में एक दीवान म श्रीमती इन्दिरा गांधी के कथित हत्यार सतवल सिंह को मा त्थार कोर का करेसी नाटो की माना पहनाकर सम्मानित किया गया। बलाताओं में अपने भावण में सतवल सिंह को बिन्दा बहुर बाँधल किया। हरचन्दहिल लोभावाल में भावण में कहा—समझौता होने का तब तक सवाल नहीं उठता जब तक आनन्दपुर प्रस्ताव सभेउ बकाली दल की माँग स्वीकार नहीं कर ली जाती। बटाला में उन्होंने यह सत कह दिया—(इन्दिरा गांधी की हत्या के बारे में) सतवल सिंह और बेधमसिंह ने बहो काम किया है जो बहल कम सिंह ने जनल शानर की हत्या करके किया था। दीवान में तासिल्लान बिन्दावाल, और शिरावाले बिन्दावाल के

नारे लगाने गये।

फिर टकराव की स्थिति

पंजाब के हायात दिन पर दिन बिगडते ही जा रहे हैं। भड कती भाग की सरकार जितना शान्त करने के प्रयत्न करती है उतने ही उपबादी और बकाली नेता उसे और बडका देते हैं। २३ मार्च को हुँवनी बाला सीमा की यात्रा पर प्रधानमन्त्री श्री राजीव गांधी गये। यह उनका साहसिक यात्रा थी। उन्होंने सदाबानाम यातावरण बनाने के लिए पंजाब के लोगों के लिए उम्मीत हृदय में कुछ घोषणाएँ की हैं। पंजाब में बीन बौध बनाया जायेगा। जिससे बिजली और पानी की किसानों की किल्लत न हो। दूसरी घोषणा पंजाब में रेल के डिब्बे बनाने का बडा कारखाना सगाया जायेगा जिससे रोजगार की भारी सम्भावनाएँ बडे और बेरोजगारी हटे। जब कि अन्य प्रांतों के युवाबले पंजाब में बेरोजगारी बहुत ही कम हैं। किसानों की जिनस की मूल्यवृद्धि तथा गेहूँ पर बीनस, भारतीय सक्कतियों का कन्ट भी पंजाब में स्थापित करने की घोषणाएँ की। इन घोषणाओं से बाला की आसकनी की कि सम्भवत बकाली नेताओं का तब कुछ नम्र होगा। परन्तु उनका शक्ति तो कही और लगी है वे बिना बाला रान्तानी परचम सहारा बटना नहीं चाहते। बकाली नेताओं की रिलाई श्री इसीलिए की गई कि सम्भवत बाला की मेज पर बनर कुछ समझौते की स्थिति बढ होगी। किन्तु बकाली दल टकराव के रास्ते पर खुलकर भावा बिखाई दे रहा है। उपबादी धानकविद्यो के हाथ में पूरी शक्ति प्राती जा रही है।

सरकार का दायित्व

अधगर की तरह लम्बी होती जा रही इस मयस्या का समाधान जल्दी से जल्दी सोजा जाना चाहिए। देशभक्त सिन्ध और हिन्दुओं को बिश्वास में लेकर जनता के हित को ध्यान में रखकर उन्हें एकस पाटी मानकर एकतरफा निर्णय कर देना चाहिए। उपबादियों से निपटने के लिए सरकार को अपनी शक्ति का प्रयोग करना चाहिए। जिस प्रकार सिन्ध लोचिस्तान (पाकिस्तान) में जिया ने अपने दमन चक्र से स्थिति शान्त की है उस तरह का दमन चक्र भी सम्भव हो परन्तु उपबादियों को शान्त करने का रास्ता तो अपना ही होना चाहिए।

बिरोधी दलों की भूमिका

राष्ट्र की बिगडती मयस्या किसी पार्टी की नाक का सवाल नहीं है, सचमुच यह देश की नाक उज्ज्वल का सवाल है। इसे हट प्रकार से हल करने के लिए समस्त दलों की भिनकर हल करना चाहिए। अब समय आ गया है कि देश की प्रतिष्ठा दाव पर है, हलके लिए सभी राजनैतिक नेताओं के योगदान का समय आ चुका है हमें अपने समस्त अवसेव युवाकर भारत मा के फटे भावव को सीना चाहिए, यह समय ही युवाकर है।

—बलपाल सुभाष







लोकायत दर्शन भी इसी का है।



न मया लक्षितं कश्चित्  
स्वाध्यायप्रवृत्तिम् ॥

राज्यारोहण के लिए ब्रूसाये जाने

वस्तुतः राम ने अपने मुण्ड कम एव  
स्वभाव से मानव की परिपूर्ण छवि हमारे  
सामने प्रस्तुत की है। लोककल्याण के लिए

बन्धु है ही कठोर तथा भुष्य है भी  
 कीयात् राधा का भीरोरपर बरिच समकला  
 साधाम्ना मुद्रि है व्यभिचि के लिए सम्यक्  
 नृपति है । कीर्ण के आरम्भिक काय है  
 ह्रम भण्डे माता, पिता, भुष्य भावि पूनीय  
 व्यभिचि को ही आशावाचन है उत्तर देखते हैं ।  
 कर्णव्यय है जनकी धनया पित्रो  
 धन्य है गही ही वा बखतो । जमकपुर  
 है पित्रव्यय नय के वन्य जनकी शक्तिमता  
 वीर्य वाता धाम्नीय का परिचय प्रसिद्धा है ।  
 माता-पिता की दास्ता का एकान्त  
 पालन बन्धु सम्पन्न प्रिय है । हसविण है  
 भावने राज्याभिषेक के आशावन्धन लभो  
 की ही उपमा कर वन्यवर्ग के लिए प्रबलान  
 करते हैं । कवि के मनसे है —

राधाप्रीतल्ल के लिए मुनाये जाने पर हाथ धोकर बैठे परमार-पद के लिए जाने के बावशि मिलने पर भी राधा की मुनाइकाल ने बोझ की विकार नहीं छोड़ा। कुछ-कुछ हीन हाथ आज्ञा आज्ञा स्तुति में समग्र बुद्धि रहने वाले देशी ही महापुरुषों को विचार प्रवृत्त जाता है। भारतीयों को पितर के भाव्यों की राधा-पद के पुराणों में कीर्तन रूप देखा जा सकता है। महा भी राधा की स्वयं पात्रों ने भार्य में यशस्वता प्राप्त पावन का भाव वाच्य करने में सक्षमति दिखाई है। अपने भाव्यों के लिए उन्मत्त होकर भी राधास्वयं स्वयं समक प्रपन्न होता है। होता के प्रति उनका भ्रमस्वयं नहीं बदलता। पात्र भाव्यों प्रति भी यशस्वता वाच्य कर एक पलीकड की गरिमा प्रतिष्ठित करता है। इसी प्रकार मुग़ल पितर-कर्म, स्वाधीन स्वयं कर्मचर, मित्रों का पारस्परिक बोझ वाच्य, तथाक कि अनु के प्रति भी स्वाभयुक्त वाच्य-पद का शब्दार्थ जाने के लिए ने हीन-प्रेमक होता है। मनुष्य वाच्यमित्री के पद के इसी सर्वप्राप्तियत्न चरित्र की ध्यान के लक्ष्य उक्त वर्ग का विवर्तन प्रवृत्त करता है।

## साँस्कृतिक विरासत

भारतीय संस्कृति विषय की प्रथम प्राचीनतम संस्कृतियों में अपना अद्वितीय स्थान रखती है। विषय की अनेक प्राचीन कला संस्कृतियों का जोष हो गया है, परन्तु भारतीय संस्कृति का प्रवाह जरी बतित हो गया है। भारतीय संस्कृति कई संस्कृतियों का अपने ने समन्वय करने के माध्यम से मुक्त हो गई। अतः यह कहा जा सकता है कि यह एक ही धारणा अत्यन्त उच्च है। इसके पीछे बहुत से कारण हैं।

भारत बर्न प्रमान केर ह। भारतीय  
सम्प्रदाय बर्न प्रमान ह। बर्न वे हमारा  
सात्वर्न करण्य वे ह। हमारी सम्प्रदाय  
का भारतीय-सम्प्रदाय सिद्धान्त यह रहा ह कि  
बो बर्न का भास करेवा सम्प्रदाय बिनास  
हो आगया। इसकी पुष्टि के लिए इति-  
हास के पन्ने भरे वेरे ह। हमारा सारी  
की, जिस किस्ती वे हमारे सम्प्रदाय  
प्राप्तता बिना कसका करिस्वा ही प्रर  
नया। यही कारण ह कि भारतीय बीजन  
की सम्प्रदाय बार्नो में बर्न की भावना  
प्रधान ह। व्यापक रूप में बर्न का बर्न  
भावना बर्न वे ह।

हमारी संस्कृति विषय की प्राचीनतम संस्कृतियों में से एक है। प्रायः से पचास वर्ष पूर्व तक भारतीय संस्कृति को ही हमारी प्राचीन संस्कृति माना जाता था परन्तु १९२२ ई० में हुई सिन्धुघाटी की खोज से हमारे समक्ष एक नई संस्कृति आयी। इस संस्कृति को हम भारतीय संस्कृति की प्रथम आधी कह सकते हैं।

भारतीय सस्कृति में अपने विचारों का अपने से सम्बन्ध कर लेने की एक बड़ी प्रवृत्ति पावित है ।

इसने धार्य, यूनानी, सिथियन, लक, हून, मुसलमान, ईसाई सभी जातियों के प्रत्येक युद्धों का ग्रहण कर लिया। विश्व युद्ध विवेकानन्द ने भारतीय संस्कृति की पावन शक्ति की बड़ी अग्रहणा की है।

प्रत्येक व्यक्ति को अपना देश प्यारा होता है, वह अपने प्रतीक की उपस्थितियों के प्रति स्वाभाविक रूप का अनुभव करता है। और भारत तो वह महान् देश है जिसने न सिर्फ दुनिया को बहुत कुछ दिया है बल्कि दुनिया के विभिन्न

कभीसे बाहे व आश्रय व नगर बाए  
प्रवा सीदावर उनकी सांस्कृतिक उप-  
लब्धियों को निरुद्ध ग्रहण कर, उन्हें  
प्रत्यक्ष कर, अपने महान् सस्कृति के  
सावर में उन्हें विनीत कर हमारों बनों  
पुरानी इस सस्कृति का सवातार विकास  
किया। इस सांस्कृतिक बरोहर पर नये  
होना स्वाभाविक है।

हमारी महान् सस्कृति की एक महान् शरोहर है। सृष्टिमें खोर खतो का तुका-  
राग, कभीर तथा बैतय का वह मुक्त  
क्षिप्तमें मानव-मानव की समानता को  
स्वीकार किया गया। पशुओं की लक्ष्मे-  
वार टिप्पणियों से पूछ परन्तु हाथका  
द्विज में हीमारी लक्ष्मे, निजमात्रा को  
द्विज बाहे नम्रत के रूप में ही क्यों न  
हो—बात-बात को लोकमें भाषा मारा

अपनाया गया, जात-पात पूर्ण नहीं कोई ।  
हरि को नहीं से हरि के होई ।

इस सङ्कल्प में वहिष्मत्या एतद् उवा-  
च। की मायना विधिष्ये क्व मे पानी  
पाही है। बिना हीराहास पर हुमें नबोर  
दीबाजे के आगे होला। कि जूतरीने मेहर  
में ब्रह्मविष्णु के कायन सवेक मुद्र हुए,  
बिषये बल घोर बन की बापार सति  
हूँ। लेकिन बारमे तब अकार के मुद्र  
करी नही हुए। घनेकटा में एकाद  
हमारी विधिष्यता रही है। कर बनो का  
एक सम्प्रदायो का यही पत्यन हूबा,  
पर किनी की अकार के बारपुत्र बह-  
नही हुए। विधिष्यता में बारपुत्र पय-  
अवा हमारी सङ्कल्प की एक बनी विधि-  
पाही है। यह है बिदासन बिदे हुमें सप-  
नसो हुमें। यहो भाये बरसा।

यह नव वर्ष सभी को सुखद शांति मंगलमय हो

—स्वामो स्वरूपानन्द सरस्वती

यज्ञाग्नि से दिव-विनाश हो, दुरन्ति व्याधि विषय भव क्षय हो  
वैदिक विचार कारागुह्य, शिव जग-जग का परिपूर्ण हृदय हो

क्रोम पताका बर-बर फूटते, जड़बिबर बरामान की तरह हो

नित्यक वेद परामर्श हों, वैदिक धर्म की अभिवृद्धि हो  
प्रज्ञान तत्व का विकास हो, हमसो मा स्वोत्तिर्नमय हो

एवम् एतत्तु नान्यथा प्रसक्तमिति विप्रो युवा यत्तु नान्यथा प्रसक्तमिति विप्रो युवा यत्तु नान्यथा प्रसक्तमिति विप्रो युवा



## समाचार-सन्देश

**मावुंदेशिक सभा के अधिकाऱियों द्वारा  
जन सेवा के निमित्त नया पग—**

## अन्तर्जातीय विवाह केन्द्र की स्थापना

आख वेश की वर्तमान स्थिति को देखते हुए देख प्रथा को समाप्त करने तथा गुण कर्म के आधार पर विवाह करने के लिए धर्मशास्त्रों विवाह केन्द्र महर्षि दयानन्द यशवन नई दिल्ली में अपने विवाह योग्य बच्चों-बर्षियों के नाम प्रकीर्ण कराए। यह कार्य निरुत्क होता। प्रातः अपने परिचय पत्र में मित्र विच्छिन्न हातो का जानकारी देना न पुरों। नाम—पिता का नाम धारा कद

शिक्षा वगैरे व्यवसाय (फोटो ग्रहण मेज । अपनी इच्छा क्या बाहर मेजने के पक्ष में हैं परिवार के सदस्यों का परिचय शाकाहारी भ्रमवा क्या कोई रोग तो नहीं है ।

प्राप्त संयोजक अन्तर्जातीय विवाह  
केन्द्र सांख्यिकीय सभा नई दिल्ली के  
पते पर भेजें ।

**अवधीय**

चन्द्रप्रकाश सय्योषक

**‘पूर्ण मद्य निषेध’ पर पुनर्विचार हो**

[illegible][illegible]

राधेश्याम ध्याय

## वार्षिकोत्सव

आयसमाच कुम्हणुनगर का बायको  
तख २२ अग्रीन से २८ अग्रीन तक  
समारोह पूर्वक हो रहा है। इस अवसर  
पर अचवदेव पारायण यज्ञ तथा अनेक  
प्रसिद्ध विद्वानों एव सभ्यताओं के प्रवचन  
एव मननोपदेश होंगे।

मन्त्री—जयदीप्त नाथ  
भाटिया

### सत्संग भवन का निर्माण

भायसभाय मन्दिर योनिवपुरी  
कासका जी के सत्सव भवन का निर्मास  
काय प्रारम्भ हो चुका है । समस्त वारिक  
जनो स प्रापना है इस पवित्र काय हेतु  
अधिक से अधिक धन के द्वारा सहयोग  
कर पथ के आनी बनें । मन्त्री

आयसमाज, गोविन्दपुरी  
नई दिल्ली—१६

श्री मुख्यतार स्नान के  
परिवार द्वारा वैदिक धर्म  
में प्रवेश

हिन्दू सुविधि समिति के मंत्री स्वामी  
सेवानंद जी के प्रयत्न से ग्राम कतसपुर  
जिला सोनीपत के वासी श्री मुख्तार  
खान सुपुत्र श्री शोभा खान ने अपने परि  
वार सहित यत्न सप्ताह यत्न करने के  
पश्चात् स्थेच्छा से वैदिक ऋषि ने प्रवेश  
कर दिया। ग्राम उनका नाम बूढ़ करने  
के पश्चात् मुख्तार सिंह रखा गया है।

किवार सिंह आर्य  
कार्यनिर्वाहक

### आर्यवीर दल के मुख्य कार्यकर्ताओं का शिविर

भागीरथीर दस दिल्लीमेंसे के मुख्य कार्यवाहों एवम् भागीरथियों की दस कार्यवाह बैठे ३० ३०-३० साथ कार बसे भागीरथमाह हुनुमा १ रोड पर दसमाह हुई। इस सभा में लखनमति ने निरुद्ध किया तथा कि भागीरथीर दस के कार्यवाहों का एक विधिर २० भागीरथीर बार साथ कार बसे से रात्री ७ बजे तक भागीरथमाह कमिटर हुनुमा १ रोड पर दसमाह भागीरथीर। भागीरथीर के विधिर बस पाय एव भागीरथीर की भागीरथीर की रोड़ी।

सभी कार्यकर्ताओं से प्राप्त है कि वह इस प्रस्तावित सिबिर में भाग लेकर आयनीय वस को सशक्त दल बनाने में सहयोग करेंगे।

नोट (शीष्मावकाश में धार्यवीर  
दल के श्रम्य बारशिबिर लयाये जायेये।  
इन शिबिरों का विस्तृत कार्यक्रम शीष्म  
ही प्रकाशित करा दिया जायेगा।

प्रियवत्तमवास्त रत्नवत् स्वामिसुन्दर बिरमानी  
अभिष्ठाता मन्त्री

## शुद्धि

आर्यसमाज नीमनामा जिज्ञा मुकुन्द  
बहुर (उ०प्र०) ने ता० १७ के १९८६  
को मुकुन्दनाम परिवारों की सूचि बनाई  
थी। सभी परिवारों के सम्बन्धों को बताने  
परीष्ट विषय बना और स्वामी स्वयम्भूव  
देवप्रचार सिन्हाल्ला—बिल्की ब्राय प्रसि  
निधि सभा द्वारा मन्थन नाम परिवर्तन  
जिज्ञा गया। साक्षात् आर्यसमाज बनाये गये  
उनकी बचपली-बालीदा देवम से भीमरी  
सम्बन्धी बनी और प्रेम्णा से प्रेमका  
बने। प्रम का की पत्नी मुकुन्द देवम को  
भीमरी गावकी देवी बनाया गया देवम को

न पुत्री के नाम की बचने लगे। कुं-मुली से अनीसी नाम रखा गया। छुपी खा का नाम बचपौर रखा गया। इस सबके पर होने मुस्लिम परिवारों को उपस्थित सभी पुत्रों ने आशीर्वाद दिया। साथ ही माता अमरगन्ध धाय विवेक विहार (शिल्पी) बाकी ने दोनों परिवारों की उचित सलाह का बचन दिया और वस्त्र न पहना दीं विवेक वृद्धों प्रमत्त भाव-नाम के हाथों से प्रसाद वितरण कराया गया शान्त पाठ के बाद कायस्थ समाज हवा।

## आर्य सन्देश साप्ताहिक

पत्रिका के ग्राहक बने, और बनाएँ

क्योंकि यह पत्रिका—

- (१) वैदिक भाषाभाषी को उजागर करती है।  
(२) भार्यो (हिंदुयों) की मज्जा पर पश्यराभी को याव दिखाली है।  
(३) माथिय स्यान्तनी के चैचारिक क्राति से धारम वेतना जाबुल करली है।  
(४) भारतीनी को प्रकृति के भुले बिन्दे प्रसयो, महाभूम्यो तथा धार्ध स्फकारो को संश्लेषित करली है।  
(५) ऋषि भुनि तपस्वी धार्धाविर्भावो की वारी का बोध कराती है।  
(६) परमेस्वर की पवित्र वारी वेद का जीनोनानयेमी मञ्जुर सन्वेष्ट लाती है।  
(७) नयी तेम्को कथियो चिन्तोको प्रतिभाशाली विद्धानो धार्हिय सेवियो को प्रोत्साहन देती है।  
(८) धार्मिक, सामाजिक धौर धार्थात्मिक गौलि से दण-अर्थिन को प्रकाशित कराती है।  
(९) वेद उपवेद, दर्शन उपनिषद, स्मृति, कल्प सूत्र धाराध्यक, ब्राह्मण्यक सीता रामायण नीति, सिद्धांतिक, अमूल्य धार्ध ज्ञानो जिन को परिष्कार लोभो मे पडा तो क्या देखा भी नहीं समस्त धार्थात्मिक जगत् को जिन कर्मो पर खवा वर्क रहूँगा उन के बहुमुख मान से धार्पाका मार्गदर्शन करती है।  
(१०) अवश्य डर के नीजिए धान ही अपना धार्मिक चल्ना २० रुपये बेचिये, धर्म में ध्वजेक विवेकात्मक तथा अध्विय स्थानम निर्धारण कालानी पर प्राक़ाशित, १० रुपये मुख्य की श्रम्य मनोहारि स्वा- रिक कि नि शुल्क हो जायेगी। स्वामिका धोर विवेकात्मक का स्टोक कम है। धर यह सुविधा फ़रवेंत कर दी है।

सम्पादक भार्य-सन्देश

## आदर्श जीवन

(एक २ का चित्र)

आपनी निष्कलम धर्मता को बसा जाता है हम की वह पुन आनी धर्मता आ राते के लिए प्रयत्न करता हुआ एक दिन को प्रयत्न धर्मता को प्राप्त कर लेता है। इस धर्म को विराग नहीं होता। बाह्य और आनी धर्मता का गुनाहते हुए हम वरम सफल हो सकते हैं।

पुन जब धर्मता के बाद धर्मता प्रभाव बग ऐसा नहीं करता तो विनाश प्रारम्भ हो जाता है। धर्म विनाश और आनन्दवाही प्रभाव में प्रयत्न विविध कभी

नहीं करता है। इत्यादि धर्मको धिमाए धर्म धर्मता से मिलती है।

पुन जब हम धर्म की तरफ देखते हैं तो पाते हैं कि सुख को जब बाधाएँ (बाधन) पैदा होता है तो सुख धर्मता नहीं उसके मुक्त करता है और विचारी होता है। यहाँ धर्मता हम यह लक्ष्य देते हैं कि बाधाओं से बचा भी विचरित मत होओ। उनम मुक्तते बल बाधो। ऊना उठो धर्मता को तुम धर्म व विचारी होगे। विरतिता धर्मव्ययम दूर होकर रहेगी।

इस सहाय के विरतिता भी हमें धर्म-तम बनाने के लिए ही आनी है। वह ईश्वर की तरफ से हमारे घरीना है।

उपर्यें मुक्तकर हम विचारी होते हैं। सफल होते हैं निश्चय बने जाते हैं। सहाय के विरतिताये मे भी व्यक्ति को महान बनाने में कम योगदान नहीं दिया है।

इस प्रकार हम देखते हैं कि एक एक वेद मन्त्र मे कैसे कैसे धर्मपुत्र ज्ञान विज्ञान प्रये पड़ हैं। सब भी वेद मन्त्र एक न एक बरकर आते हैं। जितना ही उनमे हम धर्मप्राप्त करके उतना ही धान्यम और ज्ञान विज्ञान हम प्राप्त करत चय जायेंगे।

इसी लिए वेदो के परम मन्त्र दय दधान्यम उपदेश मन्त्रारी के उपदेश मे बताते हैं कि ज्ञान योग एक एक वेद मन्त्र

को लेकर गहन मनन चित्तन समाधि मे ईश्वर से धर्मप्राप्त प्राप्त करत के और धर्मपुत्र बाते सहाय को देने प। इस धर्म की धर्मप्राप्तानुसार सब मन्त्रो का गहन मनन करत हुए नई-नई बाते सहाय को देते रहे जिससे सहाय का उत्तरोत्तर हित होता रहे। क्योंकि सहाय का उपकार करना सबका मुख्य उद्देश्य होता बाह्य। ओम् नमः

विश्वेश्वरी प्रसाद सिंह

४० सहायक निदेशक

५०२ के पीय जल धर्मोप

रेवा मवन रामा कुच्छ गुप्तम

नं० दिल्ली ६६

## दांतों की हर बीमारी का धर्मो इलाज



23 जली बट्टियों में निर्मित आयुर्वेदिक औषधि

लाले बाबू धर्मपुत्र



उस नये पैकेज में उपलब्ध

गैरमिण्ड

महाशिया की हड्डी (पा०) लि०

B-64 कल्याणपुराण पुरीम कोरी सार १०६ दिल्ली ११००४ 539009 537957 537341



मसुहो की मुक्त



मुक्त की मुक्त



उठा नई पाली लज्जा



दात का दर्द

## घरेलू उपयोगी बातें

- ऊनी कपड़ों को कौनों और बरसाती हवा से बचाने के लिए उस पर सूब बारीक चिबी हुड फिटकरी छिड़क।
- घर के धान्दर उन चीजों में विन्य प्रकाश नहीं मिलता। गुरुता निमित्त पानी डाल। हमसा साथे बने रहेंगे।
- एक घर पानी में एक धम्मक निशरीन मिमाकर रेसमी कपड कोर्न इनसे न तो व सिद्धमे और न ही क-होये।
- नये रेसमी पोचो को पहनने से पहले खुब घरम पानी में कोर्न बोले डीले नहीं होये।
- ऊनी व रेसमी कपड़ों से यदि रस छुटने का डर हो तो उन्हें बरसात का नमक रोते के पानी में कोर्न रस नहीं छुटोया और कपड को साफ व चमकदार मुनें।
- नये रेसमी सूती कपड़ों को धोने से पहले यदि उन्हें कुछ देर बोड नमक मिले पानी में चिबी दिया जाए तो उसका रस बहुत दिनों तक धम्मका बना रहेगा। स्परम रहे पानी घरम करने की धावयकता नहीं है।
- रेसमी कपड़ों में चमक लाते के लिए

जुके हुए कपड़ों को कौनों की रिशत मिले साफ पानी में बोली डेर के लिए डुबोये नई।

बा या तीन रण का स्वेटर पोले समय बोडा सा नमक डालने में कभी भी नरान नही होता।

बचे हुए घाटे का लमीरा हात से चपलते के लिए उसे पोलीमिन की दीपियों में नासकर डिज म रचना बाहिए। जब घाटे की धावयकता हो तो १५ मिन्ट पहले ही बोली को पानी में रस दीपिए। बाडा १५ दिन भी नरान नही होता।

यदि लकड़ी का फर्नीचर घुसका सा लकरी लगा है तो लकरी के रस से पानी मिमाकर साफ करिए फर्नीचर में पहले बोली चमक का बोयेगी।

नैस पाकिम साफ जाय तो उसके कुछ नुई में रिशत भाग दीपिए, उसके पानी की जायेगी।

यदि कोन नमक जात हो उसके बोली की मिमाकर साफ करिए फर्नीचर की तरफ गुमायन हो जायेगी।

बादी के कागुल धम्मका बोली को उस पानी में साफ करिए जिसमें धालू उबाने में हो या उन घर पने का लेप कर दें। धुलके घर पुनन कपडे से रसकर साफ कर दें।

## उत्तमता का एक मात्र विश्वास

Groversons

Pari's Beauty  
पैरिस ब्यूटीगोवर  
संस्

ब्रा. पैन्टी. बनिथान अन्डरवियर व बेबी पैन्टी आदि

पैरिस ब्यूटीसेल्स कॉर्पोरेशन

2465 ए/२ बीकानेर पुरा अजमेर राजस्थान  
कडोडा बाग नई दिल्ली-१५०००८-८  
दूर भाष 569234 574200-582036

## वैवाहिक-विज्ञापन

एक १३०४०० मासिक धाम जाव विपुल धामाउपेस्ट के लिए नि स न न, स न र स्वस्थ सवा लम्बा विधवा या -17 लयता की धाम यकता है। सम्पक कः—

श्री अमरनाथ सन्ना

मरान न० ३०३ सेक्टर न० १० ए०

परीदागद (प्रतिष्ठापन)

## पुरोहित की आवश्यकता

धर्मधामज दीन पार्क में एक मनोव्य विज्ञान पुरोहित की धावयकता है। जित्त बेतन दक्षिणा प्रदान की जायेगी। इच्छुक महानुभाव मोत्र धम्मकी कर।

प्रधान, लाला इन्द्र मारवाय

ए १६ बीन पार्क नई दिल्ली

## आर्य जगत् की शान

२०० बिस्तर वाले निर्माणाधीन

## नेत्र चिकित्सालय

(अनुमानित लागत दो करोड़ रुपये)

के लिए दिल खोलकर दान दीजिए

दान की रकम आर्केनर प्रविनिपत्य पी० व० के  
अंतर्गत कर मुक्त होगी।

सात दान : बेंगलूरि/आर्केनर/बेक मुल्क द्वारा

मन्त्री, माता चन्ननदेवी आर्य धर्माध्य नेत्र चिकित्सालय,  
बी-१ जनकपुरी, नई-दिल्ली-१८ के पते पर भेजा जाए।

दानदाताओं के नाम चिकित्सालय की शिला पर  
अंकित किए जाएंगे।

## निवेदक

रामगोपाल दानदाता	सुमन	महेश्वर धर्मपाल	योगेश्वर आर्य
संस्कृत चिकित्सालय	प्रधान, दिल्ली	प्रधान	समी
एन० प्रधान, हा० बा०	आर्य प्रतिनिधि	आर्य केजीव	प्लासिड कुलीसाल
प्रति० सभा	सभा	सभा	बेरि० दु०

सौम्य से महासिंघा जी हूँ मैं। लिमिटेड, ६/४४ सीतलपुर,  
प्रौद्योगिक क्षेत्र, नई दिल्ली-११००१

## "आर्य जगत्" साप्ताहिक

- १ यह किन्हीं दिनों का सबसे प्रस्ताव और राष्ट्रवाद का प्रवेश योग्य है।
  - २ राष्ट्रीय समस्याओं पर इसकी सुविचारित दिशा-दिशा राष्ट्रीयता के लोको को भी प्रभावित करती है।
  - ३ यह धर्म के नाम पर पाखण्डों और कल्पितवातों का कट्टर विरोधी है। और वैदिक धर्म के उन्मूलन स्वयं का प्रयत्न है।
  - ४ यह समाज में फैली कुीसियों का निवारण कर सामाजिक न्याय के लिए प्रेरित करता है।
  - ५ यह मनुष्य मात्र की शारीरिक और दार्शनिक उत्पत्ति का मार्ग सुझाता है।
  - ६ किशोरी के बलि का और उनके स्वास्थ्य का निर्माण इसका विशेष ध्यान है।
  - ७ लोकल गरीबों से बचाकर गरीब उत्थान की सही दिशा का समर्थन देता है।
  - ८ वैदिक संस्कृति पर अपनी या पेशवा द्वारा किए गए धातमलों का सदैव मुक्त उत्तर देता है।
  - ९ आर्य समाजों और धातमलों की गतिविधियों का परिचय देता है।
  - १० व्यक्ति समाज और राष्ट्र ने शान्ति के लिए जो सब कुछ किया है, उसके बारे में चर्चा करता है।
- यदि इनमें से एक भी सच बात को ग्रहण है तो आर्य जो इसके बाविक वह आश्विन राहक बनिये।
- बाविक शुक्र २५/- ८० और आश्विन सवत्स २५१/- ८०।
- प्राप्ति स्थान—आर्य प्रबोधक प्रतिनिधि सभा  
आर्य समाज मन्दिर मार्ग नई दिल्ली-११००१

## अर्द्ध श्री रामगोपाल सातवले का अभिनन्दन

आर्यसिंह आर्य प्रतिनिधि सभा के सचिवी प्रधान अर्द्ध श्री रामगोपाल जी सातवले के सम्मान में आश्विनी १२ शुक्ल, १९८५ को दिल्ली में एक अभिनन्दन समारोह का आयोजन किया गया है। साभा जी ने अपने जीवन का समय वैदिक धर्म के प्रचार आर्य जाति के उत्थान, धर्मधारा के संचरण को सुदृढ़ बनाने एवं राष्ट्रीय धारा के संचरण में गौरवशाली भूमिका निभाई है। उनका जीवन और उनके कार्य अनुकरणीय हैं।

इस अवसर पर उन्हें एक अभिनन्दन धर्म की समर्पित किया जायेगा। प्रमुख कार्यकर्ता का एक कार्यक्रमी एवं इस समारोह की सम्पन्ना के लिए कार्यरत है। अर्द्ध साभा जी के सम्मान में आर्य प्रबोधक-सामक सचिव, सचिव एवं सुभाष हर्ष साभाकारी होंगे।

कुछ शो धातम प्रकाश  
उपमर्श—आर्यसिंह सभा, दिल्ली  
एव

समयक : अभिनन्दन समारोह

उत्तम स्वास्थ्य के लिए

गुरुकुल कांगड़ी फार्मसी,

हरिद्वार की औषधियां

सेवन करें

गुरुकुल कांगड़ी फार्मसी  
हरिद्वार

शाखा कार्यालय—६३, गली राधा केदारनाथ,  
फोन : २६६८३८ आषाढी बाजार, दिल्ली-६

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा १५ हनुमान रोड, नई दिल्ली-१ कोष ३१०१३० के लिए जी डा० धर्मपाल द्वारा सम्पादित एवं प्रकाशित तथा  
संपिच नेत्र, गली न० १४, सीतलपुर, दिल्ली-११ में मद्रि। उच्च न० डी० (सी०) ७५६

साप्ताहिक

ओइम्

गुणवत्ता विश्वमार्ग

# आर्य सन्देश

पुस्तकालय

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का साप्ताहिक पत्र

264  
Re

24.4.85

मूल्य एक प्रति ५० पैसे    वर्ष ६ रुpees २२    प्रतिवार २१ प्रतिपत्र १६०६    कार्य संकलनर १६६००५३००५३    वित्त २०५२    दयानन्दानन्द—१६१

सम्पादकीय

महात्मा हमराज दिवस अंक

## मानवता के चमकते ध्रुवतारक महात्मा हंसराज

भगवत्काल से सृष्टि का चक्र घूमरत गति से चल रहा है। अवस्थित जन इस घटती घाम पर जन्मे बीर मूल्य को प्राप्त हो गये। भगवत् आकाश में उभरते चमकते अनेक विस्तारे दिखते दिखते आसों से झोकल हो जाते हैं किन्तु युग-युगों से ध्रुवतारा अपने स्थान पर गमिमान् है। अवि-यारों में भूले अटक पथिकों का वह सदा दिव्यरसक रहा है। ऐसा ही मान-वता का मूलरूप ध्रुवतारक है महात्मा हंसराज। पञ्जाब की घटती का वह साल अपने समय में प्रान्त घर में बो० ए० की परीक्षा में द्वितीय भाग्य था। बाहुला तो उस समय में अशुभ सदकारों नौकरों प्राण्य कर समृद्धि लक्ष्मी के कूलों से सुवासित पत्र पर चल पड़ता। परन्तु उन्होंने स्वीकार किया शिक्षा सरस्वती का माय जो काटो की चुनन से बहक रहा था। यह सहज ही सीखा सरल माय नहीं था। कबूत-बाबक कटाली कलियों, हितक जान-बूको को बयकर गजना के बीच स गुजरने वाला एक लम्बा माय, जिसको मजिल बहुत दूर थी। सचमुच त्याग, तपस्या और बलिदान का मार्ग दुस्तर ही होता है। और इसे कोई माई का लाल हो अपनाता है। महर्षि दयानन्द को शिक्षा नीति के प्रसार का महान् सकुन-न बारण्य किया, महात्मा हंसराज ने। हो० ए० को० स्कूल एवं कालिजा के महान् गट बूज के रोपण का काय किया इस महायाना ने। देश-देशान्तरो प्रदेय, प्रान्तों में दयानन्द एगो बरिदक स्कूल एवं कालिज का कलाव उस महान् व्यापक व की याद दिलाता है। उन्होंने कहा था बरिदक वम एवं धायसमाज के प्रचार का एक माय गुर है उक्त बलिदानों और एवं समर्पित त्यागों सेवक। वे इसी एक विचार पर समूर्ण जीवन चलाते रहे। बिना वेतन मिले, भूखे पेट चढ़कर भारत की गुलाब घटती पर देख के आनी कचुआर को शिक्षित करते रहे।

महात्मा हंसराज ने यह पत्र उस समय रखा था जब समस्त भारत के जन-जन को अग्रविजय और ईसा मजोह की सेवो में शामिल करने का वरयवज लाई मकाले को शिक्षा नीति के अनुवाचनवाया जा रहा था। शिक्षा नीति एवं पद्धति तब केवल माय भयभर सासकों के द्वारा अपनी योजना के अनुसार दी जा रही थी। ऐसे विकशल काल को महान् चुनौती बरकर रख हुए महात्मा हंसराज। महर्षि दयानन्द के इस बीर वार विषय ने सेवा दिया और त्याग का भी महान् गुण था। भयम मैं यह कहूँ कि सेवा और त्याग का यह देवता था तो अविश्वामित न होगी।

महर्षि दयानन्द के मिसन के लिए बहो उन्होंने अपना जीवन दान दिया, साथ ही अकाल नोडित जनता के लिए उनका सेवा कार्य एक देवत्व-पूर्ण कार्य था। उन्होंने १८६५ से १९२१ तक मोकानेर, राजपुलाना, धूरत, गज्यायैक बरौदा, बयच गज्याय, वरौडा, लुलीसवड पञ्जाब आदि के भयकर अकाल में तथा कविता के दुरुम्प के अग्रविजय के समय



उनके द्वारा किया गया सेवा कार्य तथा राहन कार्य उस महात्मा के मान-वता के चरमोर्क का परिचायक है। युग-युगों तक मानव भाषा के लिए महात्मा हंसराज का पवित्र जीवन दिया प्रदान करता रहेगा। सचमुच आज उस महान् नाविक की स्मृति कप लहरे रह-रहकर उनके प्रति अग्राय अर्पण जगा रही है—

लहरो ते लख लहकर पतवार हाथ में बाधे।  
जो बस बीर सागर का उस तुफानी बेला में ॥  
जब अमर के अंकी ये उन्माद भरा था सागर ॥  
मूह फाड़े तकते ये जब लहरो के भूखे अग्रगर ॥  
जिसके श्रद्धम साहस ने डर कर मूह जरा न मोडा ॥  
जिसने अपनी नौका का पल भर सी साथ न छोडा ॥  
उस नाविक को तकती हैं, मेरो यह भाव निगाहें ॥  
"ओ" अन्त स्थल से बरबस निकली पड़ती है बाहें ॥

—बलराम सुबुडु



## सत्संग वादिका

(सत्संग) जीवन बन के (शिखे) गुप्त प्रभु तब न सुप्रापन मे (सतिष्ठन्) बसित हो जा सग नमः ।

सम्पूर्ण सत्तार की नाभि यह यज्ञ है ।  
मेरी सति और प्रसति यज्ञ से सामर्थ्य  
माझी होवे ।

(यज्ञ सत्तार यज्ञ धातु से बना है ।  
यज्ञ का धर्म है देव पूजा सगतिरस  
और दान । इन मन्त्र वातों का एक नाम  
न कहना हो तो यज्ञ का धर्म है श्रेष्ठ  
तब या प्रसन्नतन कर्म । सब से श्रेष्ठ,  
सबसे प्रसन्न या सर्वोपरि/प्रिय/मोक्ष होता  
है, यही प्रसन्नतन कर्म कहलाता है । जिस  
कर्म से श्रेष्ठो का सम्मान सबसे शीघ्र  
प्राप्त होता और परीकार होता है वह  
प्रसन्नतन कर्म है । इस प्रकार के कर्मों से  
छापने धातु को मर्मस्थि करने से अपना मन  
प्राप्तिवासी और सम्यक् होता है । उत्पन्न  
यज्ञ है कि अपने धार को ऐसे कर्मों से  
समाना चाहिए जिससे सत्तार शिख हो  
सकता कहाला हो । ऐसा करने से मन  
की शांति बढ़ती है उससे सामर्थ्य जाता  
" )

"क बार की गल है कि अपनी  
किशोरकन्या न सत्संग चित्तजनन  
मे अपने पिता स सन्तुष्ट किया पिताजी  
मुझे कुछ रुपये चाहिए ।"

पिता ने कहा "क्यों बाल हो तो मैंने  
मुझे पात्र करने दिए प पिता कुछ नाराज  
हूँ ।"

देवामुने ने कहा "हा पिता जी कम  
आपने मुझे स्वयं श्राव्य दिने के पर से  
सबके सब सब क्यों दिये ।"

पिता न उठे हीन रुपये दिये और  
कहा कि अपने सत्तार कर कर्म किया  
करो । तुल बच जाने सत्तार तो अपने  
किशोरकन्या को और को युवाकर प्रभुओं  
उस सबके के वैसे धारा दिया और कहा  
कि तुम युवाकर अपने और देवों कि वह  
दण्ड का क्या करता है ।

नौ. १८५ । "नने बालक को जाते  
हुए देवों और भी देवा कि शान्ति मे  
उत्ते एक लडका मिला । जो देवने मे  
प्रत्यक्ष गरीब और सामान्य कम रहा  
था । नौकर ने लंठकर अपने क पन्ना  
का इस प्रकार का न किता छोटे मालिक  
नन लडके के स प किनाव की एक कुटान  
पर मग । कहा उ होन उन लडके को  
किनाव लगी कर दी िर से जुवो की  
कुटान पर मग रहा नन कपण लगी  
क ई पुत्रा पर जाकर पता सगाया  
काम सगाया कि से तनी पुत्रों की  
मे पडाई जाने वाली पुत्रों की । नौकर  
से नन सत्तार पिता ई धातु के देव के

# जीवन यज्ञ है : श्रेष्ठ कार्यों के लिए है

सुरेशचन्द्र वेदालकार

यज्ञस्य शिवे सतिष्ठन्व । यजुर्वेद २१.६

श्रय यज्ञो भुवनस्य नाभि । ऋक् ११.६५।३५

मर्मिष्ठ के सुप्रतिष्ठ के यज्ञेन कल्पन्ताम् । यजु. १८।११



धाम्ना यह धर्म और पुत्र के पर धाम्ने  
पुत्रोंमे उते छाती से बसाकर कहा, देता ।  
जीवन मे गरीबी की सहायता दही तरह  
करते रहता । यही सत्तार कर्म है । "पिता  
की इसी शिक्षा का मानन करते हुए नामक  
चित्रकलादा देवभुज चित्रकलादा के  
नाम से भारतीय इतिहास में बमर है ।  
सहायता के अभिवादी दीने, पुत्रियों की  
सहा दीनमनु परसेवर की प्रसिद्धि है ।  
यही यज्ञ है ।

मर्मिष्ठ यज्ञ के जीवन की एक  
पटना है । क्या मे शिखर छाती को  
इतिहास कितावा रहे है । छात्र लिख तो  
रहे है पर उनका मन बाहर लगा था ।  
एक छात्र बैठ पाठ सुन रहा था लिख  
नही रहा था । उसके पास न तो कागजी की  
छात्र न कम । उन इस प्रकार बैठ बैठा  
कर लिख को जोष था सत्तार और मे  
क्यों बामन यह क्या ? पाठ क्यों नही  
लिख रहे ? गुप्त की आपने को कुछ  
नी बतागा है मुझे प्रत्यक्ष बात ही मया  
है । फिर की लिख ?

शिखर मुझ हुए और बोले 'तो फिर  
सुनावेगा यदि न सुना पावे तो दंतों से  
बमरी उभेक दना । नमस्त मे सारा पाठ  
सुना दिया ।

एक दिन दन्ती शिखर मे कहा के  
ऊपर पर मुष्मली के शिखर कर्म पर पड़  
हुए मेम कर कोष मे छात्र कड़ी मेकर  
सबको को पीडा लुप्त कर दिया । सब से  
बलवत के पास धाम्ने तो उत्तरे कहा  
"पुत्र की सब गनती नही की तब मैं  
सजा क्यों मुष्म ?" उसकी इस निर्ममता  
से प्रभावित हुए और उते बच नही  
दिया । सत्य और निष्कलता और कर्म  
मे है । यही बलवत धाम्ने चलकर लोक  
मान्य शिखर के नाम स शिखर हुए और  
स्वयंजु हमारा कर्म शिखर प्रधिकार है  
का बोधगुप्त नारा बैल को दिया ।

हमारी धाम्ने एक वा जीधपुत्र  
जाने सने ता शीर्षों मे वहाँ जाने से रोक्ना  
पादा और कहा कि वहाँ न बाधे वह  
बाध कर है । वहाँ के और सारा तो  
वरन सत्तार की से काय की-कर्म कर्म की

धाम्नीको को नहीं बसाकर जला में तो  
ही परकाह नही हूय जनाता को सत्तार  
मार्ग बसाकर रहे है । यदि वह शरीर की  
नी रहा तो की चिन्ता नही । "जब स्वामी  
की को बहा करने की उत्तर देता तो एक  
बचत बोधा बहाकर । वही जरा नली  
बखना वह कर देवे है । स्वामी की  
मुष्मरसे और बोले 'मैं प्रत्यक्ष और  
धाम्ने के बमरी पुत्रों की बच को करने  
के लिये मुष्मरसे के काम लूँगा, न कि  
नापिकों की मेहुरी से तरासुंगा । मुझे  
किसी बात का मन नही है । यह है प्र-  
त्यक्ष मार्ग बिध पर वही मुष्मर बसा  
कर रहे है ।

सत्तार मे नमः काम करने के लिए  
मुष्मर करने के लिये या कामि कर के  
लिए जीवन की बमरय बनना होता है ।  
सत्तार मे एक मन हो रहा है । सर्व वातु  
भन्त पुत्री और धाम्ने यज्ञ कर रहे  
है । बसते नही शीघ्र की बनी अपने को  
बसाकर पास कर देती है और लडकों  
को मार्ग विजला जाती है । क्या देखते ही  
बीज अपने को मिट्टी में गिरा देता है और  
अपने स्थान पर अपने को कर्म से देता  
है । बीज बहुत मे जब पुत्रों लगे की  
उरह मन होकर तप रही होती तब यही  
पानी की नली नही बूँद एक के बाव  
पुत्री धाम्ने बमरय कर पुत्रों को  
जीवन कर देती है । वह सब ब्रह्म ही तो  
है । पुत्र को देता है न ? वह सारे सत्तार  
का हुन हुए करता है । परन्तु यदि हम  
उत्तरे कहें मुष्मर है । धाम्ना हम पर  
किता उठाकर है कि धाम्ने सत्तार का  
अधेरा डर भर दिया है तो पूर्व कहेगा  
मैंन कहा से पड़ेरा डर किया है ? बापों  
मुष्मर बोधा सा विचारों लो ? मैंने तो  
पड़ेरा देमा ही नही है तो डर कहाँ से  
कहना ? मैं तो केवल प्रकाश करवा ही  
जानता हूँ । रात लिय बसते रहना ही  
मुझे ज्ञात है । मुझे मे अपने बीज का ब्रह्म  
कुछ सत्तार प्रतीय दिया है । वही करत  
है कि उसकी गर्मी से प्राणि मान जीवित  
रहते है पुन कर्म उत्पन्न होते है कर्म-  
सत्तारों का ब्रह्म है । यह सत्तार पात्र का ब्रह्म  
का ब्रह्म है इसी लिए तो ब्रह्म करते प्रकाश

की जाता है । 'सर्व दाता कर्म-  
सुपत्तार ।

सत्तार पुत्र, बचन, स्वामी स्थल  
स्वामी सदायक और महात्मा सुपत्तार  
का जीवन ब्रह्म है । यह ही जीवन है  
हम यज्ञ की लडकों की बाधत शरीरों  
बाहिर । पूर्व बमना मानता है । कर्म  
बखला जाते है । ब्रह्म ब्रह्मा ब्रह्मही  
है । सत्य पुत्रियों के बापु पोछा जाते है ।  
बीजमे न लडकों मुष्मर करते है । ब्रह्मही  
सत्तार करता निश्चित कर सिखा है  
जीवन से प्रकाश से बाधे है ।

ही ईश्वरचन्द्र विद्यासागर का नाम  
सम्मान एवं सदायक के लिए सारे  
मार्ग से जाना पहचाना है । उसकी  
पिता दीदा उनकी स्वाति उनकी सागा-  
जिक प्रसिद्धि का नाम सम्पति बाधि सब  
उत्तरे जीवन मे निज निम्न मार्गों के लिये  
पत्तु उनके चरित्र की पूर्णता उनकी  
माता की वन की । उनकी माता का नाम  
ममवती देवी था । एक सत्तार को ममवती  
देवी पर के काम मे जुटी थी । पत्रों के  
एक बाव से करीब तनी छाती से अपने  
छोटे से बच्चे को पिपकाए हुए आती ।  
यह और उसका बच्चा दोनों वहीं से काम  
रहे है । बर्तीही हुआ बच लुकी थी । अपने  
ममवती देवी से कहा । माताजी सत्तार की  
पुत्रा सुरमा कन्या परा हो तो वे ही  
बहुत उब पत्र रही है । बच्चे को बाप  
सूती । ममवती देवी का हृदय पत्तार सत्तार  
के बर में बर्तीही बच्चे लिखते है तो ही  
एक नई पत्रा लोकर सत्तार को वह पत्र  
पुत्रने कपडे के अधिक नये देती, मम-  
वती के पैर के पास केवल नयी पत्राई थी ।  
उन्होंने धाम्ने कर्म की पत्री की परकाह  
न की वह लोकर कि पत्री उस मा और  
बच्चे को भी तो जात मे बच्चे के लिये  
कुछ चाहिए था । इसी माता के पुत्र से  
ईश्वरचन्द्र विद्यासागर लिखते यज्ञ मम  
जीवन की कथाजिन सत्तार सत्तार मुष्मर देती  
है । और जिनको जन्म देकर भारत माता  
नौरत्ना-निष्ठ हुई है ।

मार्मिक सत्तार सत्तार ब्रह्म ब्रह्म के  
साहित्य को मैं बहुत प्रसिद्ध है । मैं जिनके  
प्रसिद्धिवाले वे उत्तरे ही उत्तार भी । ऐसे  
ही एक धाम्ने बमारी लेखन से राजकुम-  
राज्या के विषय मे कहा जाता है कि  
वे कर्म से नाटककार है, मुष्मरक के,  
निम्नमार्ग के । ममवती यह कि साहित्य  
के सत्तार भी न उनको शृण्व थी । कहा  
जाता है कि एक नाटक मे उन्होंने धमरी  
सारी सत्तार लिखा थी । कहा जाता है  
माता और उनके पुत्र ममर के दिन धा  
पये । वे एक प्रकाश के पास सने । यह  
उन्होंने अपने देते को राखी हो सत्तार । उन्होंने  
अपना लेखन उते धमरी सत्तार की नही  
नी सिखा था कि एक कर्मयन नही उनके  
पाठ था सने । उन्होंने कहा कि उनकी  
पत्री ममर मे बीज पर ही एक कर्मयन  
पत्री में देखी है । यह सत्तार पात्र का ब्रह्म  
का ब्रह्म है इसी लिए तो ब्रह्म करते प्रकाश

(सुरेशचन्द्र वेदालकार)

## तनिक और रुक जाते !

बीज रहा था निकट किनारा मिटता जाता था या अधिनारा ।  
 -बमक रहा था भाग्य विचार अरु बर कपको पलकें धीरे धुम  
 छोड़ गए सब गले 'अधिनार' ! तनिक धीरे रुक जाते ।  
 धुम धुम को बरखान मिले थे मानव की अधिनार मिले  
 भारत को अधिनार मिले थे मानवता पुनित होता बरि  
 हम धुम को धरनाते स्वामी तनिक धीरे रुक जाते ।  
 धुमको कोकर बन रोता है पर रोने से सब क्या होता है  
 जो बीना है वो ही होता है कोई मानवता को जीवन भर,  
 धुम तो रते बगले स्वामी तनिक धीरे रुक जाते ।  
 सब घर को बा बावना बने वेद का धावन गीत बुजाना  
 बम ध्वजा को फहराना धक्ककर मिट जाता गरि धुम  
 धीरे अधिनार रुक जाते स्वामी तनिक धीरे रुक जाते ।

सोमबल विद्यालयाकर

एच १११ मया रोड रावेन्द्र नगर दिल्ली ६०

**दंतों की हर बीमारी का घरेलू इलाज**

**एम डी एच**

**दंत मंजन**  
लोग युक्त

23 जड़ी बूटियों से निर्मित  
आयुर्वेदिक औषधि

कलेब शकर

**दंत मंजन**  
लोग युक्त

अब नये पैकिंग में उपलब्ध

महाशियां ही हट्टी (प्रा०) लि०

६६४ ब्रह्मचरियन एडवा सीटी भवन, २४ दिल्ली ११००१६ ८३९००९ ८३७९८ ८३७२४१

**मृत्यु के प्रचारार्थ**

केवल 800/- में केवल 400/- में केवल

**मृत्यु प्रकाश**

घर घर पहुंचाएँ  
सफेद कागज सुन्दर छपाई  
सुदृढ़ संस्करण वितरण करनेवालों के लिए प्रचारार्थ

आकृति (29x30 16 पृष्ठ ४४२ की दर) 23x36 16 पृष्ठ ४२० की दर

**आर्ष साहित्य प्रचार ट्रस्ट**  
455, रानी बाग, दिल्ली-6 टेलीफोन: 238360/238112

११ वें संस्करण से उपरोक्त दे दे

## जीवन यज्ञ है

(पृष्ठ २ का नमूना)

बाह्य है पर यज्ञ के लिए वैसे नहीं ।

इस पर दास बाजू का हाथ घुसत जब  
 मे गया धीरे सब जन बं । ब विवा  
 उ होन यह भी नहीं सोचा कि इसी बग  
 से वे धर्म की धाज की धनिवास धाज्य  
 कला गुरी करने वाले य उस व्यक्ति ने  
 उन्हें बन्धन विवा पर वह क्या जानता  
 था कि दास बाजू ने किताब बजा त्याग  
 किया है ।

बन्धी मानव जय या पराभव  
 सिद्धि वा बहिर्दि यय या धाज्य सुख  
 वा दुःख की धोर ध्यान नहीं वनी । सद्रूप  
 के ज्ञान धावा है धीरे माटा की लेकिन  
 उसकी धीरे बन्धी बजना कभी नहीं  
 रुकती । बन्धी व्यक्ति विषय के उनत  
 धीरे पराभव से निराश नहीं होता । यज्ञ  
 करने वाले को चाहे फाली मिल या फल  
 की माता चाहे यह चिन्ते या धाज्य यह  
 तो अवलत बन की धोर ही बहता है ।  
 है । जीवन के विषय के नडाव मत नचावी  
 धीरे पर जय का रोना मत रोमो । बज  
 ही महान् बय है ।

## महामा हसराज

(पृष्ठ ५ का नमूना)

कर सके ।

निर्द्धर साहज धायम मे रहते के  
 का य महापा की का वेद धायी कय से  
 र ब हो गया धीरे अही उनकी मुकु का  
 मूल कारण बना । हरिदास से नीले पर  
 महात्मा हसराज की सोचन यह । यज्ञ की  
 बलवानु से उनका स्वात्म तो सुख बना  
 किन्तु वेद का रोम रुक नहीं हुआ ।  
 शिवम्बर नास में लाहीर का मर धीरे कुछ  
 विन ठीक करता रहा । परन्तु २५ अक्टूबर  
 १९१६ को उनके वेद ने उस समय बना  
 मर बर बहसुत हुआ धीरे धाय तक तेज  
 बुझार भी हो गया । डा० विनयम का  
 हलाक थाक हुआ । हल विनयमनक होते  
 हुए भी धारोग नाम की सम्भावना व्यक्त  
 की गई ।

धारा धाय बगन् महात्मा की की  
 नीमारी के चित्त हो वेद । ध्वारा की  
 लब्धा मे धार पज धायि से पुष्तास होती  
 रही । ५ नवम्बर को कुछ हालत सुपरी  
 की धीरे उल्लेख बाध ५ की की प-नु  
 ६ नवम्बर को हासल निर धराक हो गई ।  
 वेद की पीका अवलत बहसुत हो गई  
 धीरे न की धनिर्मित हो गई । धाय  
 की उल्लेख लगा १५ नवम्बर के विन  
 स्वात्म धीरे की बिना गई । महात्मा  
 की के न-१ सम्बन्धी यह उपस्थित हो  
 बग गल के धायरु बने उ होने धनिम  
 धाय विवा ।

१९ नवम्बर १९८१ का यह धमावी  
 रात्रि नि जिस मे महा मा की ने धरने  
 प्राणी का उत्सव कर विम ।

महात्मा हसराज की का वेदात हो  
 गया मर एक सन्धर देकर कि वैदिक  
 बय बा प्रचार त्याग धीरे तपका सवा  
 बनिवानी से हो लकता है । यही माध  
 उन्हीने अपने सम्पूर्ण जीवन के चिह्न की ।

## उत्तमता का एक मात्र विश्वास

**Grover'sons**

*Paris Beauty*

पेरिस ब्यूटी

गोवर  
सन्स

ब्रा पैंटी बनियान अन्डरवियर व बेबी पैंटी आदि

**आर्य जगत् की शान**  
**२०० बिस्तर वाले निर्माणाधीन**  
**नेत्र चिकित्सालय**  
**(अनुमानित लागत दो करोड़ रुपये)**  
**के लिए दिल खोलकर दान दीजिए**

दान की राशि आयकर अधिनियम जी० ८० के  
 अंतर्गत कर मुक्त होगी।

सारा दान बैंक/पनीप्राबैर/बैंक ड्राफ्ट द्वारा

मन्त्री, माता चन्ननदेवी आर्य घर्माघं नेत्र चिकित्सालय,  
 बी-१ जनकपुरी, नई-दिल्ली-५८ के पते पर भेजा जाए।

दानदाताओं के नाम चिकित्सालय की शिला पर  
 अंकित किए जाएंगे।

निवेदक

राज्योपासक शासनाधीन	सूच्यवेध	महाशय धर्मपाल	धोमप्रकाश आर्य
संरक्षक चिकित्सालय	प्रधान, दिल्ली	प्रधान	जम्बी
सर्व प्रधान, डा० डा०	आर्य प्रतिनिधि	आर्य केन्द्रीय	महाशय कुन्नीसाल
प्रति० सभा	सभा	सभा	केरि० डू०

सौजन्य से महाशयों ी हट्टी प्रा० लिमिटेड ६/४४ कौतिलपर,  
 औद्योगिक क्षेत्र, नई दिल्ली-११००१

**केवल ५० रुपये में तीन वर्ष तक**  
**हर सप्ताह पढ़ते रहिए**

- ☐ क्या आप ऋषि, मुनि तपस्वी, योगियों की धमृत वाली पढना चाहते हैं ?
- ☐ क्या आप वेद के पवित्र ज्ञान को सरल एवं मधुर शब्दों में जानना चाहते हैं ?
- ☐ क्या आप उपनिषद्, गीता रामायण, ब्राह्मणग्रन्थ का भाष्यारिक्त सन्देश स्वयं सुनना और अपने परिवार को सुनाना चाहते हैं ?
- ☐ क्या आप अपने छात्रों एवं महापुरुषों की शीर्ष गाथाएं जानना चाहते हैं ?
- ☐ क्या आप महर्षि दयानन्द की वैचारिक क्रांति से प्रभावित होना चाहते हैं ?

यदि हाँ तो आइये आर्यसन्देश परिवार में शामिल हो जाएँ।

केवल ५० रुपये में तीन वर्ष तक हर सप्ताह पढ़ते रहिए। साथ ही वर्ष में चार अनुपम मन्त्र विधेयाक भी प्राप्त कीजिए।

एक वर्ष केवल २० रुपये प्राप्ति २०० रुपये।

प्राप्ति स्थान—

**आर्यसन्देश साप्ताहिक**  
 १५, हनुमान रोड नई दिल्ली-११०००१

**उत्तम स्वास्थ्य के लिए**  
**गुरुकुल कांगड़ी फार्मसी,**  
**हरिद्वार की औषधियां**  
**सेवन करें**

काका कार्यालय—६३, नवी राजा केदारनाथ,  
 फोन : २९६८३८ कावडी बाजार, दिल्ली-६

**गुरुकुल** **उषध**

**गुरुकुल च्याय**  
 इसी दुर्लभ चमत्कारी दवा सेवन से स्वास्थ्य, शक्ति बढ़ती है।

**भीमसेनी सुरम**  
 इसी की सहायता से शरीर में शक्ति उत्पन्न होती है।

**फर्पेकिल**  
 • इसी से शरीर में शक्ति उत्पन्न होती है।  
 • इसी से शरीर में शक्ति उत्पन्न होती है।  
 • इसी से शरीर में शक्ति उत्पन्न होती है।

**गुरुकुल कांगड़ी फार्मसी**  
**हरिद्वार**

पिपरी आर्य प्रतिनिधि द्वारा १५, हनुमान रोड, नई दिल्ली-१ फोन : २९६८३८ के लिए की जा- सर्वप्रथम द्वारा सम्पादित एवं प्रकाशित तथा  
 रचित रहे, नवी १०, केदारनाथ, दिल्ली-११ में प्रेषित। एच० नं० डी० (सी०) ७५६

# महात्मा हंसराज महान् शिक्षाशास्त्री थे

—के० सी० पन्त

महात्मा हंसराज ने वैदिक शिक्षाओं के अनुरूप मानव भूत्यों को स्थापित करने वाली शिक्षा पद्धति को अपनाकर देश के शिक्षा जगत में एक अनूतभूत क्रांति का सिंहासन किया था। इन शब्दों में धार्य प्रादेक्षिक सभा द्वारा तालकटोरा इन्डोय स्टैडियम नई दिल्ली में आयोजित महात्मा हंसराज जन्म दिवस समारोह के अवसर पर मुख्य अतिथि केन्द्रीय शिक्षा मन्त्री श्री कृष्णचन्द्र

पन्त ने धार्य अष्टा सुमन अर्पित किये। सार्वदेशिक धार्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री रामगोपाल खाल्वाले ने कहा, यदि महात्मा हंसराज ने अपना जीवन शिक्षा के लिए समर्पित न किया होता तो भारत देश में आज की धार्य कही धार्यिक नैकाले के मानसपुत्र होते और इनके प्रभाव को समान करना असम्भव हो गया होता।

धार्य प्रादेक्षिक सभा के प्रधान

प्रो० वेदव्यास ने महात्मा हंसराज के पूर्ण व्यक्तित्व और कृतित्व का परिचय दिया। उन्होंने सी०ए०बी० सस्थाओं के इतिहास तथा भावी योजनाओं के स्वरूप पर भी प्रकाश डाला। उन्होंने बताया प्रागामी वर्षों में सी०ए०बी० सताब्दी के अवसर पर हम केवल भारत में ही नहीं बल्कि विश्वो में भी धार्यसमाज के संस्थापकों के लिए सी०ए०बी० सस्थाओं को चारों ओर फैलाने का

सकल्प लेते हैं। इस अवसर पर डा० भक्तसुख पाराशर द्वारा तिलिखित महात्मा हंसराज पुस्तिका का भी विमोचन किया गया। प० शिवकुमार खारसी तथा प्रि० कृष्णसिंह धार्य ने भी अपने अष्टा सुमन अर्पित किये। इस अवसर पर सी०ए०बी० सताब्दी के महत्त्व के अनुरूप कार्य करने वाले धार्यसमाजों एवं कार्यकर्तियों को भी सम्मानित किया गया।

## केन्द्रीय शिक्षा मन्त्री को ज्ञापन पत्र दिया

आयसमाज का एक प्रतिनिधि मण्डल केन्द्रीय शिक्षामन्त्री श्री के० सी० पन्त से उनके खास्ती अवन कार्यालय में मिला और उन्हें पञ्चायत समस्था के सम्बन्ध में धार्यजनों की भावनाओं से अवगत कराया। धार्य-समाज एक राष्ट्रीय सस्था है तथा राष्ट्र के हितों के कार्य करने के लिए पूर्णतः समर्पित है। श्री पन्त ने सा० रामगोपाल खाल्वाले से कुछ दिन पहले हुई बातचीत का सन्दर्भ देते हुए कहा कि पञ्चायत समस्था का समान-मान करते समय अन्य सभी धर्म-संस्थानों की भावनाओं का पूर्णतः ध्यान रखा जाएगा।

प्रतिनिधि मण्डल में धार्य केन्द्रीय सभा के प्रधान श्री महाशय धर्मपाल, दिल्ली धार्य प्रतिनिधि सभा के महा-महामन्त्री डा० वसुपाल, महाशय कुम्भीपाल दूरत के बहुमन्त्री श्री धर्मप्रकाश धार्य, दिल्ली दिल्ली वेद-अचार मण्डल के महामन्त्री श्री राम-चन्द्रसदा अर्वा और धार्यसमाज के प्रतिनिधि श्री सुरेन्द्रकुमार द्विवेदी थे। दिल्ली धार्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री हनुमन्ति की ओर से एक

ज्ञापन पत्र श्री आननीय शिक्षामन्त्री महोदय को दिया गया। इस ज्ञापन में मांग की गयी कि—

(१) भारतीय इतिहास की पुस्तकों में धार्यों की विवेची प्राकान्ता होने के सन्दर्भ को पूर्णतः निकाल देना चाहिए। क्योंकि इससे राष्ट्रीय एकता की भावना को ठेस पहुँचती है।

(२) संस्कृत भाषा को पाठ्य क्रम में समुचित और प्रतिष्ठा पूर्ण स्थान दिया जाये।

(३) स्कूली शिक्षा मातृ भाषा से और विश्वविद्यालयी शिक्षा राष्ट्र भाषा हिन्दी में दी जाए।

(४) केन्द्रीय विद्यालयों के पाठ्यक्रमों पर आधारित स्कूल धार्यिक से धार्यिक लोने कार्य और धार्यिक स्कूलों पर प्रतिबन्ध लगाया जाये।

(५) धार्यिक शिक्षा का पूर्ण प्रावधान किया जाये।

(६) धार्यसमाज के अनुयायियों द्वारा बनाये जा रहे विद्यालयों को मिलते-जुलते सुविधा सभी को दी जाये।

डा० धर्मपाल ने ज्ञापनपत्र की

उन पक्तियों को शिक्षामन्त्री महोदय को पत्रक सुलाया जो धर्मपाल हिन्दू धार्यो के एक धार्य से उद्धृत की गई हैं तथा जिनमें धार्यिक शिक्षा को धार्यसम बनाया गया है। शिक्षामन्त्री ने इन विचारों से सह-मति प्रकट की और धार्यसाधन दिया

कि वे इस दिशा में ठोस कदम उठा लेंगे।

महाशय धर्मपाल जी ने कहा कि कुलीनालय धर्मपाल दूरत राष्ट्रीय विचारधारा के अनुरूप स्कूल और कालेज लोने के लिए स्कूल-भरत है।

### वह भी क्या जीवन है ?

जिस में उसका उम्र नहीं वह भी क्या कोई जीवन है ?

जो भरा हुआ है रोगों से जर्जर है शीतल योगों से जिसमें न कर्म की धारित शेष तप तेज साधना का न देश धरि विधिल कीए निर्बल तन है वह भी क्या कोई जीवन है ?

जिसमें धुविता सदभाव नहीं अनुराग त्याग सुप्रभाव नहीं जिसको साया मध-मधुर है धरि रीत हीन पर-निमर है दुःखि दम्भभूषित मन है, वह भी क्या कोई जीवन है ?

जिस से होता निज शोध नहीं परहित में ही उपयोग नहीं जो ह्रर कर्म का साधक है, प्रभुता प्रभाव धारधक है एकध किया कुशित धन है वह भी क्या कोई जीवन है ?

जिस्के तन मन बन बुद्ध नहीं, जो स्वल्प-नवित्र अशुद्ध नहीं, जो स्वाध-स्थापि का पातक है मानसता का अम पातक है, पशुता का प्रबल प्रदर्शक है वह भी क्या कोई जीवन है ?











व्यासपीठ—

उपनिषत् कथा-माला-१

## आओ आध्यात्मिक जगत् में चलें !

प्रवचनकर्ता—वीतराग स्वामी सर्वदानन्द महाराज

हम किसी ने मुक्त आपके सामने जो पचा करती है उसका सात्विक एक बात से यह होगा कि पचाते बेवोले के सिद्धांतों को जो पचाते उपनिषदों के। जिन नियमों का ने वगुन करते हैं वे लोक परलोक के नियम मान्य रूप से उपयोक्त हैं। ईश्वर की प्राप्ति हो पचाते सत्तायुक्त को दोनो के लिए नियम एक ही हैं। आप कहेंगे कि लोक और परलोक एक कैसे हो सके ? इन में तो बड़ा भेद है। भेद है कि केवल बेकले नाम का। जैसे मृत्यु और ६ की संख्या में वे दोनो एक ही हैं। किसी संख्या के साथे मृत्यु [०] सत्ता को ६ कह जायेंगे। जैसे १+६ १०। किसी विनियम के साथे वे मृत्यु [०] सत्ता को ६ कह जायेंगे। इसलिए ईश्वर प्राप्ति मुनिमा ने तुल्य का एक भाषण है। यदि कुछ भेद है तो केवल बेकले नाम का सत्ता में कोई नहीं है दोनो साथ साथ चलते हैं। परन्तु मनुष्य इसका विचार नहीं करता। उपनिषदों ने ईश्वर प्राप्ति और साक्षात्कार सुक्त को एक ही बताया है जो ईश्वर की प्राप्ति कर लेता है वह ही साक्षात्कार सुक्त का मान्य की पाता है।

बेवोले ने बिना है कि ईश्वर को अपने हृदय में ही लेना जाता है। हृदय में ही ईश्वर का ज्ञान होता है। किन्तु एक बात है यह कि ईश्वर को यदि बेकले सकता है। बात यह है तो सब प्रत्यक्ष पैदा होता है कि हम तो यदि नहीं परन्तु हम तो सकते हैं। यदि कोई मान्य पाठ्याभास का साथ तो वह ज्ञान कैसे प्राप्त कर सकता है ? जो पचा जाता है ज्ञान तो नहीं पा सकता है। इसी प्रकार को मनुष्य यदि अपने का मान्य करता है वह यदि क्यों न जान सकेगा ?

यदि का सब यह है कि को मनुष्य इन्द्रियों को जीव मान पर पचाते का सत्त करता है नहीं वह है। उसी का नाम देता है। उसी को जोड़कर समस्त पच प्रवचन की कहते हैं।

वह पुत्र को इन्द्रियों को नियम ने रहे उन्हें जीव मान पर पचाते उसी को सुक्त मिलता है। वही सत्ता ने सुक्त प्राप्त करता है। को इन्द्रियों को विषयो की ओर न जाने ओर उन्हें नियम के अधीन न रहे वह तो सर्वत्र सुक्त की ही रहता है।

मनु मन्वान ने बताया है कि

इन्द्रिया क्या हैं ? वे दूर तरक मागती हैं। भाँसे बिचर ने आओ बेकले हैं माक महा सम्पन्न हो सपत्नी हैं काग प्रत्येक सत्त को पचाते वह कही हो सुक्त हैं। हाथ बाही नी कोई मनुष्य सुत्ती का पकनकी हो वही पठन करते हैं। पठु मन्वान कहते हैं कि इन इन्द्रियों को सम्य से पचाओ अर्थात् नियम ने पकनो जैसे एक मोले का सत्ता मोला तेकर सत्ता में जाता है मोला सब जाता है। सत्ता उसकी पीठ पर एक पादिक लगाता है। मोला मान जाता है कि मेरी पीठ पर काई सत्ता देता है वह जीवता हो जाता है। यदि सत्ता नियम ने पकनो है सत्ता ने मोला तेकर जाता है मोला सब जाता है अन्तर देता सत्ता सत्ता मन्वो की ही जाता है मोला सम्य जाता है कि सत्ता पुत्र है। वह ओर सत्तिक करता है और सब ने नहीं रहता। पुत्र सत्ता सत्ता सत्ता करती ?

वक्त से वकी मोटियाँ, दूर तक बावियों ने गुप्तता प्रकृति का मनुष्य सत्ता सत्ता मुनिमा के ओर सत्ता से प्रत्यक्ष वह पर्वत की गुफा माह-माया से दूर मोनी ओर मुनिमा को पुकारती रही है। परम मान्य की प्राप्ति के लिए तत्पक्षी जन सत्ता पर जाते रहे थे। लेकिन असीम शान्ति परम सत्तायुक्त मान्य का सत्त क्या योगियों को ही मिल सकता है। नहों नहीं यदि तुम प्राप्ता चाहते हो तो तुम्हीं की धन्य मितेया जगत को छोड़कर मान्य को धन्ययकता नहीं। इसी जीवन के सत्ता में तुम यह सब पा सकते हो। इस युग के परम योगी धन्ययक ने यही तो कहा था सत्ता नहीं मान्यना छोड़ो तो तुम प्राप्ता चाहते वह सब तुम्हारे पास है। तुमने उसे सोया नहीं था न ही उसे तुम सो सकते बस तुम उसे भूष गये थे। उसे बाद कर्म का रास्ता बता रहे हैं वीतराग स्वामी सर्वदानन्द जी। वे महान् योगी तत्पक्षी मोह माया से दूर थे। उनके प्रवचन हजारी अज्ञात मनुष्य होकर सुनते थे। प्रायः सन्देश के माध्यम से हम यह बात तक पहुँचा रहे हैं। दूर सत्तायुक्त उसे पचाता न भूलिये।

इसी प्रकार हमारी इन्द्रियों को जोड़े हैं। उनके लिए भी हम मान्य सत्ता की धन्ययकता है। मनु मन्वान कहते हैं कि यदि कोई मनुष्य नियम के विपरित जायगी इन्द्रियों को पचाते का सत्तायुक्त जगत् पच मोल करता है तो उसने मोल पैदा हो जाते हैं। मान्य प्रकाश की सुक्त प्राप्त पा जाता है। इस इन्द्रियों को पच में करते को तुल्य जीव मान पर पचाते वही सत्ता ने सुक्त पाता है। वही इन्द्रियों को प्राप्ति होता है और जो बिचरी के प्रयोग होकर इन्द्रियों को जीव मान पर नहीं पाता सकता वह सत्ता कभी सुक्त पा सकता है ? एक इतिवृत्ति पुत्र जिस इन्द्रियों को प्राप्ति करता है। विषयो का सत्त उसे जीव पा सकता है ? अर्थात्

नहीं।

उपनिषद कहते हैं नियम ने पचाओ ? प्रत्यक्ष वह है कि जब तक मोल दूर न ही नियम ने जैसे जैसे मोल क्या है ? सत्ता सत्ता के प्राप्ति से पुत्रो। वह सत्तायुक्त ने मोल मोल मोह राम और डों है। ने मोल कही सत्ता ने नहीं मोल सत्ता ने वे पैसी ने नहीं सत्ता ने जाते। अन्तर से ही पैसा होते हैं। इन पैसों से ही बुद्धि मन्त्रिण हो जाती है इसलिए राम देव और मोल मोह को को मनुष्य मोल देता है वही गति है।

जब मनुष्य में राम का मोल बड़ा जाता है तो उसको छोड़ने के लिए कितने सब की धन्ययकता पकती है। मान्य ने वकी वही है किने नमान में राम देव और मोल मोह को जीव बिना है। पुत्र मनुष्य उन्हें कैसे जीव करता है ? इसके

लिए सत्तिक वही सत्तायुक्त ने वे पराक्रम से जीव जाते हैं। परन्तु कैसे ? बिहारा प्रायः वे हथियार जेब का पैसा जगता है। उसमें हाथी बिचने पाते हैं। वे हाथी बहुत मोल पचाते हैं। यदि किसी हाथी को बुल से मोल जाने तो वह टकराते मारकर बुल को बिना देता है। यदि बुले से मोल जाने तो बुला जगता देता है। वे मोल सत्ता सत्ता वह करते हैं कि एक हाथी को दूतरी की टंक से मोल लेते हैं। इस प्रकार वे एक-दुसरे के प्रायः सब करते हैं। इसी प्रकार इन्द्रियों को सब में रहने के लिए बिहारी और बावियों की धन्ययकता नहीं। राम देव और मोल-मोह को छोड़ने के लिए केवल सात्विक सब की धन्ययकता है। केवल सत्तायुक्त सत्ता सत्ता सत्ता है, केवल वे किने के कहते

वीतराग है और मोह ने कितने मनुष्यों को बेचैन बनाया है ?

एक मन्वान मनुष्य को किसी ने पाकी ही उसने पकनो मारा। एक ने पुत्रा, बाईं। तुम कितना मोल उठा सकते हो ? उसने उत्तर दिया, दो काई मन ! एतने मनुष्य ने कहा 'तुम तो एक पाकी का मोल की नहीं उठा सकते, इतना मोल कैसे उठाओगे ? वही है मोल। इन पैसों का सुधार करोने तो धन्यता सुधार होता सभी तुम अपने पैस और नाति का भी सुधार कर सकते। यदि स्वयं मोल सुकने तो सुक्त की नहीं मन सकेगा। जो आप ही सुधार हजारी नहीं वह किसी पुत्रों का सुधार क्या करेगा ?

इसलिए प्रायः वे कि कितने राम डों को जीव बिना उठी ने पुत्र पर नियम पाती। वह सब पाह राम को दया करता है बिचर पाते राम को सत्ता सत्ता सब को पाते वही मोल मोह का प्रयोग कर सकता है। यदि उसे धन्ययकता प्राप्ति की धन्ययकता है तो धन्यता हाथ धन्यता कर देता उसके अन्तर सत्तायुक्त होती। यदि मनुष्य इन्द्रियों को अपने अधीन कर ने तो उसने सत्ता पा जाती है। यदि वह उनके अधीन हो जाते ही फिर उसमें सत्तायुक्त ? अधीन हो जाने पर वे मोल मनुष्य के सब ने सब सत्ता ही जाते हैं।

मन में प्रायः वे पुत्रा हाथी को दम में ने पचा पकनो करता है ? मुक्त से पुत्रो तो इन्द्रियों के कोई भी पकनो नहीं। का प कहते कैसे ? मुनिमा। धन्यता पुत्रो कहते हैं किने नमान में। प्रायः मान्यका पा रहे हैं। माई कहता है कि पर ने पुत्र पैसा है जाते पाओ स्तेयम पर पकनो पुत्रो नहीं मिर्कनो ! किन्तु प्रायः कहते हैं 'पाकी का सम्य हो गया। धन्यता पुत्रो की जाती है प्रायः कभी सत्ता जाते हैं। प्रायको मान्य नहीं जाता। रामो तो स्तेयम की ओर है मान्यक कैसे पाते ? उस सत्ता प्रायः राम के अधीन है इसलिए सुक्त नहीं।

प्रायः प्रतिनिध बेकले हैं कर्म के करती हैं। जब पकनो हुआ होता है तो पकती पर मोल जाता है। जानते हो क्यों ? वह क्या दूतरी की धन्यता मोल पकनो कर सकता है। पर नहीं पकनो जाता है कि जो प्राप्ति पकनो रहती है वे मोल ही रहती हैं। उनमें क्या होता है ? वही कि राम डों और मोल वह जाता है। सत्ता ने वही प्राप्ति अन्तर कर पकनो है नियमो राम देव और मोह पर सत्तायुक्त है।

एक बात और समस्त बु। सत्ता की धन्ययकता विन-प्रतिनिध कर्तों पुत्रा होनी जाती है ? ज्ञान सिद्धाता में, मोह में पाईं इन्द्रियों को सत्तायुक्त उठाते हैं। सत्ता प्रायः वह कि सत्ता की धन्ययकता को सत्तायुक्त



## स्व० श्री लालमन आर्य जयन्ती समारोह

प्रसिद्ध धारणी स्वतन्त्रता सेनानी कमठ भाय परब महर्षि ब्रह्मचर्य एवं वैदिक ऋषि के धारण्य उपरांत श्री स्वामी लालमन भाय के ७४ वें जन्म दिवस पर १० अप्रैल १९८६ को एक विशाल समारोह हरद्वार मार्गल स्तूप पर आयोजित किया गया। इस अवसर पर श्री लालमन भाय की पुण्य स्मृति में एक समग्र की शपथ बसोला। जिसमें वैदिक ऋषि का अग्रणी किया गया है उनके सुपुत्र श्री गज नंद भाय की प्रकाशनात्मक भाय की सत्यता भाय में यह भाग धार्मिक पत्रिका का है। हरद्वार मार्गल स्तूप की शपथ पर की। इसका उद्घाटन भाय सभा की स्वामी सत्यप्रकाश जी ने किया।



श्री लालमन भाय धारणी हरद्वार परब एक एव ही उनके वसति स्थल में उनके शिवा का एक फोटो चित्रों का गुलाबगिरी रावत ने स्वर किया उसका विशेषण किया गया।

श्री० मेरुभाय की धारणा में एक बड़ा-बड़ा बना श्री की गद्दी चित्रों चित्र प्रयत्नवा श्री रामचरण भायवाले तथा भाय भाय चित्रानों ने श्री भाय के तबल जीवन पर प्रकाश डाला।

श्री लालमन भाय भाय प्रतियोगिता के प्रतियोगियों को भी पुरस्कृत किया गया।

## श्री लालमन आर्य निबन्ध प्रतियोगिता के परिणाम

इस प्रतियोगिता में दो विषय थे - महर्षि ब्रह्मचर्य के कर्णों का भावना तथा श्री लालमन आर्य के वक्तव्य का भावना। जिसमें देश भर से २०५ प्रतियोगियों ने भाग लिया। इन निबन्धों का मूल्यांकन भायसभा के तीन प्रतिष्ठित व्यक्तियों द्वारा किया गया। जिनके नाम इस प्रकार हैं:-

- |                              |                          |
|------------------------------|--------------------------|
| १ श्री लालमन आर्य की सेवाकार | समादर भाय भाय            |
| २ श्री डा० भायलाल जी उपस्थित | विश्वी विषय विभागाध्यक्ष |
| ३ श्री डा० बलराम जी          | प्रधान सभाध्यक्ष भायसभा  |

इस निबन्ध प्रतियोगिता में निम्नलिखित व्यक्तियों को पुरस्कृत किया गया।

प्रथम भाय निम्नलिखित हैं:-

प्रथम पुरस्कार अनुष्ठान विभागाध्यक्ष

श्री कल्याण भायली पारमि महाविद्यालय ब्रह्मचर्य बोधोपस्थ १००/- रु०

श्री महेश कुमार लालमन ८-बीच प्रथम वैदिक भायसभा हरद्वार १००/- रु०

द्वितीय पुरस्कार अनुष्ठान विभागाध्यक्ष

श्री डा० ब्रह्मचर्य विभागाध्यक्ष के०एम० १५० कविगर्भ भा०भाय २५०/- रु०

श्री निधीलाल लालमन भाय सत्यवा भाय विभागाध्यक्ष बनपुर २५०/- रु०

तृतीय पुरस्कार अनुष्ठान विभागाध्यक्ष

श्री लालमन आर्य की सेवाकार बहादुर ७६६/११/१११ टाउनशिप १२०/- रु०

श्री०एम०१०एम० हरद्वार

## स्व० श्री लालमन जी आर्य एक प्रेरक जीवन



श्री लालमन भाय का जन्म रायस्थान के लेखरा गांव में वि०स० १८९८ की वैशाख शुक्ला द्वितीया को हुआ। भाय काय भाय के गरीब किसानों में सीता लेकिन सीता के शांतता क्षेत्र बने-उत्तरी बगल तथा कलकत्ता जैसे नगर। समय में एक साधु की सेवागुरुता तथा भाय सीता एवं मानवीय मूल्यों के प्रति बड़े भावना का योग बहादुर कल्याणमार्ग के पथिक बन गए।

श्रद्धा ब्रह्मचर्य एवं महात्मा गांधी उनके भायक महापुरुष थे। अतिरिक्त तथा गन्ध के उत्तरीयों से प्रख्यात प्रहल कर मुक्त भाय ब्रह्मचर्य का प्रवर्तन विरोध किया तथा विषय विभागाध्यक्ष का उत्तम उत्तम किया। स्वदेशी भावनाओं के प्रति भायक हर महात्मा गांधी के कारखाने। अग्रणी एवं भाय के विरोधों की तब मन और मन से सहायता की।

प्रसन्नचित्त निरभिलास भायसभा की भाय भाय की हर एक कल्याण एवं स्फूर्ति की हर एक पारदर्शी का। वि०स० २०४० की स्फूर्ति ब्रह्मचर्य की दिव्य उत्तरीय की हर एक उत्तम हुई।

स्व० भाय की वे धारणी जीवन में लौकिक कल्याणों की तब मन भाय लिये। उन्होंने वे कुछ अनुष्ठान एवं भायलाल भाय के स्फूर्ति लौकिक का भाय श्री भाय की

की स्मृति में उनके कल्याणकारी भायसभा, स्वामी ब्रह्मचर्य की भाय श्री प्रकाशनात्मक की भाय एवं की स्वामी भाय की भाय वे स्फूर्ति बनता की सेवा में समर्पित किया।

श्री लालमन भाय की वे एक कर्मठ लौकिक की हर एक भाय गुणार एवं कर्मठ भाय के क्षेत्र में धार्मिक कार्य किए। उनका स्फूर्ति विवरण नीचे दिया गया है:-

- ☐ लौकिक भायसभा परब प्रथा भाय विभागाध्यक्ष मुक्त बोध भाय मुक्तभाय का सहायक प्रवर्तन विरोध
- ☐ विषय विभागाध्यक्ष स्वदेशी भायसभा के प्रयोग का सहायक उत्तम
- ☐ हरद्वार लौकिक बोधभायसभा ब्रह्मचर्य भाय का विभागाध्यक्ष
- ☐ भाय सुपुत्र ब्रह्मचर्य की वैदिक भायसभा में बन सहायक
- ☐ उत्तम एवं के भायसभा में प्राप्त गुणार व विभागाध्यक्ष के धार्मिक भाय
- ☐ धार्मिक लिये हर एक लौकिक भायसभा व लौकिक भायसभा के भायसभा का प्रचार व पुनर्जागरण तथा भायविभागाध्यक्ष का स्फूर्ति
- ☐ गरीब विभागाध्यक्ष विभागाध्यक्ष व प्रचार लौकिक भायसभा

उन्हीं भारतीय स्फूर्ति के भायसभा के धार्मिक ही सेवा सह की धार्मिक भायसभा धार्मिक भायसभा के धार्मिक भायसभा के धार्मिक रूप में स्फूर्ति रहे। उनमें से कुछ स्फूर्ति का उत्तम इस प्रकार है:-

- ☐ ब्रह्मचर्य भायसभा भायसभा विभागाध्यक्ष
- ☐ भायसभा भायसभा भायसभा विभागाध्यक्ष
- ☐ विभागाध्यक्ष वैदिक भायसभा भायसभा

- ☐ विषय विभागाध्यक्ष भायसभा
- ☐ पुनर्जागरण भायसभा
- ☐ पुनर्जागरण भायसभा
- ☐ भायसभा भायसभा भायसभा

- ☐ भायसभा भायसभा भायसभा
- ☐ भायसभा भायसभा भायसभा
- ☐ भायसभा भायसभा भायसभा
- ☐ भायसभा भायसभा भायसभा

मुक्तिक के दिवस से १० प्रतियोगिता के भायसभा पुरस्कार लिये गए।

- |                          |            |       |
|--------------------------|------------|-------|
| १ श्री लालमन आर्य लालमन  | लालमन आर्य | १०/५० |
| २ श्री लालमन आर्य लालमन  | लालमन आर्य | १०/५० |
| ३ श्री लालमन आर्य लालमन  | लालमन आर्य | १०/५० |
| ४ श्री लालमन आर्य लालमन  | लालमन आर्य | १०/५० |
| ५ श्री लालमन आर्य लालमन  | लालमन आर्य | १०/५० |
| ६ श्री लालमन आर्य लालमन  | लालमन आर्य | १०/५० |
| ७ श्री लालमन आर्य लालमन  | लालमन आर्य | १०/५० |
| ८ श्री लालमन आर्य लालमन  | लालमन आर्य | १०/५० |
| ९ श्री लालमन आर्य लालमन  | लालमन आर्य | १०/५० |
| १० श्री लालमन आर्य लालमन | लालमन आर्य | १०/५० |







**आर्य जगत् की शान**  
**२०० बिस्तर वाले निर्माणाधीन**  
**नेत्र चिकित्सालय**  
 (अनुमानित लागत दो करोड़ रुपये)  
**के लिए दिल खोलकर दान दीजिए**

दान की राशि आयकर अधिनियम जी० ८० के  
 अंतर्गत कर मुक्त होगी।

सारा दान बैंक/मनीऑर्डर/बक ड्राफ्ट द्वारा

ममी, माता जन्ननदेवी आर्य धर्मार्थ नेत्र चिकित्सालय,  
 बी-१ जनकपुरी, नई-दिल्ली-५८ के पते पर भेजा जाए।

दानदाताओं के नाम चिकित्सालय की सिला पर  
 अंकित किए जाएंगे।

निवेदक

राज्यसेवालय आलमगढ़	सुपरी	महात्म्य सन्धान	सोपानकाश काम
संरक्षक चिकित्सालय	प्रधान	विस्ती	प्रधान
एवं प्रधान डा० बा०	आर्य प्रतिनिधि	आर्य केन्द्रीय	महात्म्य कुलीमाल
प्रति० सभा	सभा	सभा	केरि० डू०

सोपान से महात्म्यां दी हुई प्रा० लिमिटेड ८/४४ कीलिंगर,  
 औद्योगिक क्षेत्र, नई दिल्ली-११००१

**केवल ५० रुपये में तीन वर्ष तक**  
**हर सप्ताह पढ़ते रहिए**

- ☐ क्या आप यह मुनि तपस्वी, योगियों की अमृत वारणी पकड़ना चाहते हैं?
- ☐ क्या आप वेद के पवित्र ज्ञान की सरल एवं मधुर छवियों में जानना चाहते हैं?
- ☐ क्या आप उपनिषद् मोक्ष रासायनिक साक्षात्कार के आध्यात्मिक सन्देश स्वयं सुनना और अपने परिवार को सुनाना चाहते हैं?
- ☐ क्या आप अपने सूरवीर एवं महायुद्धों की वीर्य गाथाएं जानना चाहते हैं?
- ☐ क्या आप महर्षि दयानन्द की वैचारिक क्रांति से प्रभावित हो जागृत करना चाहते हैं?

यदि हाँ तो आइये आर्यसन्देश परिवार में शामिल हो जाएँ।

केवल ५० रुपये में तीन वर्ष तक हर सप्ताह पढ़ते रहिए। साथ ही वृष में बार अनुपम मध्य विवेकाक की प्राप्ति कीजिए।

एक वर्ष केवल २० रुपये प्राचीनक २०० रुपये।

प्राप्ति स्थान—

**आर्यसन्देश साप्ताहिक**

१९ हनुमान रोड नई दिल्ली-११०००१

**उत्तम स्वास्थ्य के लिए**  
**गुरुकुल कांगड़ी फार्मसी,**  
**हरिद्वार की औषधियां**  
**सेवन करें**

शाखा कार्यालय—६३, नयी राजा कैदारनाथ,  
 जेज: २१६८२८ फायदी बाजार, दिल्ली-६

**गुरुकुल कांगड़ी फार्मसी**  
**हरिद्वार**

**प्रेमक**  
 एक छोटी सी गोली जो आपके दिल को ठीक कर देगी।

**प्रधान आय**  
 सभी प्रकार के रक्तचाप को नियंत्रित करने के लिए।

**भूमिसेनी सुरक्षा**  
 सभी प्रकार के रक्तचाप को नियंत्रित करने के लिए।

**कफपित्त**  
 कफ और पित्त को हटाने के लिए।

**गुरुकुल कांगड़ी फार्मसी**  
**हरिद्वार**

विस्ती आर्य प्रतिनिधि सभा १९ हनुमान रोड, नई दिल्ली-१ जेज: २१०११० के लिए डा० परमेश्वर द्वारा संपादित एवं प्रकाशित सप्ताहिक सप्ताहिक, नयी नं० १०, सैफाबाद, दिल्ली-११ में प्रकाशित। एडि० नं० डी० (सी०) ७५६

# आर्य समाज सन्देश

साप्ताहिक ओ३म क्रमागतो विंशतमार्थम्

पूर्ण एक प्रति १० पैसे

वर्ष ६ अंक २४

प्रतिवार, ६ अर्थ, १९०३

आर्य समाज १९६०-०३१०-०३

संख्या २०२

प्रकाशकाल-१९०३

## आर्यसमाज दीवानहाल का शताब्दी समारोह वैद-प्रचार, ग्राम-प्रचार (ग्रामोत्थान) तथा गो-संवर्धन एवं मन्दिर निर्माण के लिए इक्कीस लाख रुपये की अपील

आर्यसमाज दीवान हाल की उत्तरग सभा ने निश्चय किया है कि आगामी दिसम्बर १९०३ में आर्य समाज की शताब्दी मनाई जाये।  
वैद प्रचार, ग्राम प्रचार, ग्रामोत्थान तथा गो-संवर्धन के-प्र की सहायता के लिए १ लाख रुपये की तीन निरनिधिया स्थापित की जाए।

इन अवसर पर एक विशाल-समारोह का आयोजन किया जायेगा।  
आर्यसमाज दीवानहाल के मन्त्री श्री मूलचन्द गुप्त ने एक बीषणा में कहा-आशाओं स्मारोह की तैयारी जोर-जोर से प्रारम्भ हो चुकी है। इस अवसर पर कुछ धन्य योजनाएँ

इस प्रकार हैं।

- आर्यसमाज दीवान हाल के विषय एक सी बर्ष का इतिहास प्रकाशन
- नैतिक शिक्षा के लिए विद्यालयों में विशेष प्रचार योजना
- सामाजिक कुरीति दहेज उन्मूलन
- मुषको एव मुचतियों में मादक

द्रव्यों के बढते हुए प्रयोग के साहित्य प्रचार से रोकना  
□ नैतिक आर्य साहित्य प्रकाशन  
इस समाज तथा राष्ट्रहित के पुनीन कार्य के साफल्य के लिए श्री गुप्त जी ने आर्य भद्र पुरुषों से सन मन-बन्धन सहयोग करने की भी अपील की है।

### दक्षिण अफ्रीका नैटाल में

१४, १५, १६ दिसम्बर १९०३ को

आर्य सम्मेलन की तैयारी

दिल्ली सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के कार्यालय से प्रसारित एक सूचना के अनुसार दिनांक १४ से १६ दिसम्बर १९०३ को नैटाल दक्षिण अफ्रीका में अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन की घोषणा की गई है। इस सम्मेलन पर नैतिक सार्वभौमिकता के महान विद्वानों के विचार सुनने एवं गोपितियों का आयोजन किया जा रहा है। इसके प्रतिरिप्त

विषय के विभिन्न वेधों में रहने वाले हिन्दुओं के साथ सांस्कृतिक एवं धार्मिक सम्बन्धों की प्रगाढ़ करने की योजनाओं पर वहा विचार किया जायेगा। सार्वदेशिक सभा इस आयोजन में अपना विशेष सहयोग देकर विषय के धर्मों के सम्मुख एक ठोस सन्धि एवं व्यावहारिक योजना रखेगी।

### राष्ट्र निर्माण में आर्यसमाज का

महत्त्वपूर्ण योगदान - श्री शालवाले

दिल्ली दिल्ली वैदप्रचार मण्डल का वाषिर्किक आर्यसमाज बार० के पुस्तक सेंटर ३ में सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर ला० रामगोपाल शालवाले, श्री ब्रह्मवत् रत्नाकर, श्री कुर्वेच, आचार्य वैवेक, श्री चौ० विष्णुदास आचार्य अनुवैच आत्मी आदि आर्य वेत्ता एवं शिक्षार्थी ने जन-मान सम्पर्क में आर्यसमाज के साहित्य पर प्रकाश डाला। श्री आभा राम-

गोपाल शालवाले ने कहा-राष्ट्र के निर्माण में सदा से आर्यसमाज का महत्त्वपूर्ण योगदान रहा है। जाहे वह स्वतन्त्रता सशान हो, अथवा दलितोद्धारकारी उत्थान, या समाज सुधार। आर्यकी राष्ट्रीय एकता व सलक्ष्यता की रक्षा के लिए आर्य-समाज पूरी शक्ति के साथ जुटा हुआ है। कार्यक्रम के परवात् श्रीविमोच का आयोजन किया गया।

### नये सवरे की तलाश

आशा की नया सवरे नव चीजन देगा  
कब बैलन सब के मन का धनतापन देगा।  
मूँचे पैदों की रोटी के दो टुक धार  
मैंने बनाए सन की दो हाव कफन देगा।

पर आशा के बिचरीत मीत में प्राप्त हुआ  
मैं के सोने पर धावक अत्यन्त हुआ।  
बस्ती की दिव्य विभूति गुन में लीन हुई  
हुआई बैल की आशा पर आशात हुआ।

इन्सान दरिन्दों के हाथों बारा जाये  
इन्ने घर भी हिरा का मुचकारा जाय।  
कैसा बीमल जवानक है उन्धिरा है  
की डार डार धमिबारी के डार जाय।

कैसा है यह सन्ध्य धरे। कैसा प्रथ है ?  
या युव मरोचिका सा विम्या धाकणक है।  
सता की बीमल सपटी में ये हवाएँ  
सब महाकाव के तापक की धामन्धल है।

सीपाचो पर सका के तापक महराते  
कबि विचरर खाने घर में बाते आते।  
विस्वासपात्र हिस्सा प्रतिहिस्सा गुटकात  
आतकपात्र बढते नाते।

अन्धवील सम्मार्थी निर्वैक सजाती है  
बन्धे बन्धे दुर्दी म्हुएँ बक जाती है।  
ऐसा बीमल विनाश बैलकर भरती पर  
सुख की किरणें धाने में सजुवाती है।

बधि बलकार में बचता है मो-बाद रको,  
मालव हावक के मण्य न बैल विचार रको।  
इन विमर्शों की आशान में न बनाने की,  
सचाचों में निर्माण का अनुवाव रको।

- कवि कृष्णदास

सी-२१ सन्ध्यपुष्पा-२१





## ★ वक्ता-सन्देश ★

## आर्य कौन हैं ?

जो शान्त बैर को उजागर नहीं करता, गवँ नहीं करता, हीन भावना से ग्रसित नहीं होता, मैं सकट में हूँ, ऐसा सोचकर अशुचित कार्य नहीं करता, श्रेष्ठ आचरण वाला ही आर्य कहलाता है।

‘महाभारत’

## सत्पुरुषों की वाणी

सत्पुरुषों की उत्तम वाणी दूसरों को जगाने के लिए, सत्यासत्य के विवेक के लिए, लोक कल्याण के लिए, जगत् में शान्ति के लिए और जीवन में वास्तविक तत्त्व के उपदेश के लिए प्रवृत्त हुमा करती है।

‘जानार्णव’

## बड़े आदमी

संसार को ऐसे व्यक्तियों की आवश्यकता है, जो धन के लिए अपनी आत्मा का बलिदान सौदा नहीं करते जिनके रोम-रोम में ईमानदारी हो जो सत्य प्रकट करने में बड़ी क्षमति के सामने नहीं झुकते, कठिन कार्यों को देवकर हिचकते नहीं जो अपने नाम का हिडोरा न पीटकर साहसी कार्य करते जाते हैं। मेरी दृष्टि में वही बड़े आदमी है। —स्वेन मार्डेन

जिसने अपने स्वरूप को नहीं जान लिया है वह परमात्मा को नहीं जान सकता। इसलिए परमपुरुष परमात्मा को जानने के लिए पहले अपने को ही निश्चय पूर्वक जानना चाहिए।

‘जानार्णव’

## सम्पादकीय

## आरक्षण विरोधी आन्दोलन में जलता गुजरात

गुजरात में दिन प्रतिदिन आरक्षण विरोधी आन्दोलन हिसक होता जा रहा है। गुजरात सरकार ने जब कि घटितरित आरक्षण के निर्णय पर धमक रोक दिया है और हाईकोर्ट ने छात्रों को अपनी आन्दोलन समाप्त कर देने के लिए कहा है। इस आन्दोलन ने पहले साम्प्रदायिक मोड़ लिया तो अब जाति युद्ध में परिवर्तित होना जा रहा है। हिंसा की आग फैलती जा रही है और मानवता कराह रही है। हिंसा बाढ़े सम्प्रदाय के नाम पर हो या जाति के नाम पर उसे उचित नहीं ठहरा जा सकता। आन्दोलनकारियों का कहना है, ‘यह आन्दोलन योग्यतावाद और कुशलता प्राप्त करने के अधिकार की रक्षा के लिए अन्तिम लड़ाई है। उनके अनुसार आरक्षण से सामाजिक और शैक्षणिक तौर पर पिछड़े वर्गों का ऊपर उठाने और उन्हें मध्यम वर्ग की मुख्यधारा का साथ एकाकार करने का सिद्धान्त बेतुका है।

वास्तविकता ता यह है कि योग्यता और कुशलता की न कोई जाति होती है और न कोई सम्प्रदाय। आरक्षण को यह लड़ाई एक लम्बे दूरते से चल रहा है। फरवरी, मार्च, १९८१ को भी गुजराती छात्रों के हस्तो दिमाग ने आक्रोश उभरा था। तब गुजरात के चार मेडिकल कॉलेजों में ३३०० छात्र पड़ते थे। एम० बी० बी० एस० में अनुसूचित जाति और अनुसूचित जनजाति के लिए २५ प्रतिशत स्थान आरक्षित थे। १९८० में की को फारवर्ड पद्धति लागू की गयी। स्नातक कोर्सों में वास्तविकता, प्रवृत्ति विज्ञान, रेडियोलॉजी और पब्लिसिटी विभाग में ६५ स्थान थे, जिनमें से २५ प्रतिशत आरक्षित थे। आरक्षित स्थानों पर ५५ प्रतिशत के बजाय ५० प्रतिशत पर दासता देने का प्रावधान किया। इसका परिणाम यह हुआ कि पैनो-लोबी और रेडियो-लोबी को ५० सीटों पर आरक्षित स्थान प्राप्त छात्रों का कब्जा हो गया और शत प्रतिशत स्थान आरक्षितों के हो गये।

छात्रों ने इस और सरकार का ध्यान बाढ़क दिया और इसके बाद की फारवर्ड पद्धति वापस ले ली गयी। लेकिन छात्र उच्च शिक्षा में वायदा आवश्यकता का मांग को लेकर अब रहे।

गुजरात की जनसंख्या तीनों लोक कोड है जिनमें २८ लाख ५० हजार हारजन, ३६ लाख जनजात हैं। कोटे भागों में बंटे हरिजन ३२ प्रतिशत से तो के काम में जुड़े हैं। महानगर और नगरों में ३ लाख ५० हजार हरिजनों में से कुछ आरक्षण पद्धति का साथ उठा पाये हैं।

१९८१ में गुजरात सरकार द्वारा नियुक्त बन्धों आयोग की रपट के अंतर्गत ४२ पिछड़ी जातियों के लिए ५ प्रतिशत आरक्षण स्वीकार किया था। इसके बाद फिर आन्दोलन चला और हिंसा होती रही। छात्र नैतिकता को छोड़ उद्बुध होते रहे। छात्रों के मन में भाग की, सभी छात्रों को परीक्षाओं में उत्तीर्ण किया जाये। विश्वविद्यालय में परीक्षा न लेने की मांग स्वीकार कर ली। बाद में उच्च न्यायालय ने मामला दायर किया गया। न्यायालय ने अपने निर्णय में विना परीक्षा उत्तीर्ण करने की कड़ी धावोचना का। इसके बाद सरकार ने नया आयोग जिसमें न्यायमूर्ति श्री राण के अलावा तीन सदस्य और थे नियुक्त किया। इस आयोग की सिफारिश पर गुजरात सरकार ने उच्च शिक्षा के सभी स्तरों पर आरक्षण की सीटों में ४६ प्रतिशत बढ़ोतरी का निर्णय ले लिया। इसी कारण फिर धमक उठी। एक के बाद एक बनेक मोड़ इस आन्दोलन में घाते रहे हिंसा नगन नगन चल रहा। इसी बीच पुलिस भी ‘नरकुल हुई। कुछ असाधारण तत्वों को भी खुला बेतन के का प्रवसर मिला कानून व्यवस्था के परखते उड़ते रहे। छात्रों का उद्बुध होना और राज्य सरकार का उपेक्षित व्यवहार दोनों ही निन्दनीय हैं। आन्दोलन से समस्या का हल तो नहीं निकल सका किन्तु हमारे गण्ट के कर्मचारियों की बुद्धिजीवियों के विचार इस विषय में लेते बाहिए। इस विषय को वैचारिक बहान न। विषय तो बनाया जाना बाहिए किन्तु आन्दोलन और हिंसा का नहीं। महादेवी बर्मा ने दु सौ ही ठोकर कहा है ‘आस्थाहीन छात्रों के सामने कोई सम्पन नहीं है। इसके साथ यह भी दुख का विषय है कि कुछ तथाकथित राजनेता भी लोकतन्त्र के बोस में ऐसे आन्दोलनों को पीठ धपकाते लगे हैं।

सरकार को जनमत का ध्यान रखकर शीघ्र उचित कदम उठाने बाहिए अन्यथा देश की सुख दीवारें हिलने लगगी।

योग्यता और कुशलता को प्रथम देना वास्तव में राष्ट्र के हित में है। जाति या वर्ग की दीवार आरक्षण के नाम पर खड़ी करना भी उचित नहीं है। वैदिक वर्ण व्यवस्था ही इसका एकमात्र उचित समाधान है। जिसमें कोई ऊँचा नीचा नहीं। जो जिस काय के योग्य है उसे वही कार्य दिया जाये। अच्छा ही महर्षि ध्यान्मन द्वारा प्रतिपादित वर्ण व्यवस्था पर हमारे राजनेता और बुद्धिजीवी वर्ग विचार कर जिससे मजिध में इस तरह के प्रश्न ही न उठें।

—यशपाल सुर्वाड





## सुख का मार्ग—मनुष्यों का कर्तव्य और संसार की वास्तविकता

नेत्रों ने ग्राम को देखा नाक ने सूंघा  
घोर आशा तक उसका नाम पहुँचा  
दिया। जबका काम वह देखना है कि वह  
रस स भरा हुआ है कि नहीं धनुषियों के  
हवाले किया। सब वह कट्टा है या पीर,  
वह मित्र है देखा। कार्य कर्म के किन्तु-













## आर्य जगत् की शान

२०० बिस्तर वाले निर्माणाधीन

## नेत्र चिकित्सालय

(अनुमानित लागत दो करोड़ रुपये)

के लिए दिल खोलकर दान दीजिए

दान की राशि आर्य ऋषि अधिनियम जी० ६० के अंतर्गत कर मुक्त होगी।

सारा दान बैंक/बनोबार्डर/बैंक ड्राफ्ट द्वारा

मनी माना चन्तनदेवी आर्य धर्मार्थ नेत्र चिकित्सालय, बी०-१ जनकपुरी, नई-दिल्ली-१८ के पते पर भेजा जाए।

दानदाताओं के नाम चिकित्सालय की शिला पर अंकित किए जाएंगे।

## निवेष्टक

राजगोपाल शालग्राम	सुबोध	महाशय वर्मण	श्रीमन्महाल आर्य
सरस्वती चिकित्सालय	प्रधान दिल्ली	प्रधान	कनौ
पूर्व प्रधान डा० डा०	आर्य प्रतिनिधि	आर्य केजी	महाशय कुलीन
प्रति० बसा	सजा	सजा	बेरि० डू

सौजन्य से महाशयों की हृदी प्रा० लिमिटेड ६/४४ कोलिनगर, औद्योगिक क्षेत्र, नई दिल्ली-११००१

केवल ५० रुपये में तीन वर्ष तक  
हर सप्ताह पढ़ते रहिए

- ☐ क्या आप ऋषि, मुनि तपस्वी, योगी, साधु, यात्री पढ़ना चाहते हैं ?
- ☐ क्या आप वेद के पवित्र ज्ञान को सरल एवं मधुर शब्दों में जानना चाहते हैं ?
- ☐ क्या आप उपनिषद, वाता रम्यादयः ब्राह्मणग्रन्थ का आध्यात्मिक सन्देश स्वयं सुनना और अपने परिवार को सुनाना चाहते हैं ?
- ☐ क्या आप अपने सूरवीर एवं महापुरुषों की शौर्य गाथाएं जानना चाहते हैं ?
- ☐ क्या आप महर्षि दयानन्द की वैचारिक क्रांति से आत्मचेतन जागृत करना चाहते हैं ?

यदि हाँ तो आर्य आर्यसन्देश परिवार में शामिल हो जाएँ।

केवल ५० रुपये में तीन वर्ष तक हर सप्ताह पढ़ते रहिए। साथ ही वर्ष में चार अनुपम भण्ड विविधाक को प्राप्त कीजिए।

एक वर्ष केवल २० रुपये प्राचीन २०० रुपये।

प्रति स्थान—

आर्यसन्देश साप्ताहिक

१५ हनुमान रोड नई दिल्ली-११०००१

उत्तम स्वास्थ्य के लिए

गुरुकुल कांगड़ी फार्मसी,

हरिद्वार की औषधियां

सेवन करें

गुरुकुल कांगड़ी फार्मसी

अभिषेक

गुरुकुल चामय

अभिषेक

प्रायिक

गुरुकुल कांगड़ी फार्मसी

हरिद्वार

शाखा कार्यालय—६३, गली राधा कैथारनाथ,  
फोन। २६६८३०

आपकी सामान, दिल्ली-६

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा १६, हनुमान रोड, नई दिल्ली-१ जून ३१-१३० के वि० डा० वर्मण आर्य सन्देश एवं अंकित तथा  
वैयक्तिक वकील न० १०, कैलाशपुर, दिल्ली-११ में मुद्रित। दफ्तर बी० बी० (सी०) ७५६





## ★ वक्तव्य-सन्देश ★

## शिक्षा

जिससे विद्या, सम्पत्ता, धनसम्पत्ता, जितेन्द्रियतादि की बढ़ती होवे और अधिकादि लोग कुछ उसको शिक्षा कहते हैं।

—स्वामी दयानन्द

विद्या का मतलब है व्यक्ति का समाजोपयोगी विकास।

—जैनेन्द्र

तमाम शिक्षा का सब से कीमती फल है प्रत्येक कार्य को दक्षता एवं कुशलता के साथ कर सकने का सामर्थ्य

—हन्सले

वास्तविक शिक्षा का यह एक आवश्यक अंग होना चाहिए कि बालक इस बात का ज्ञान प्राप्त करे कि जीवन सन्ध्या में वह प्रेम द्वारा वृक्षा पर, सत्य द्वारा भ्रष्टाचार पर और सहनशीलता द्वारा बल प्रयोग पर बहुत सहज ही विजय प्राप्त कर सकता है।

शिक्षा का अर्थ है मनुष्य और बच्चों के शरीर, भस्तिष्क तथा भावना का सर्वांगीण विकास।

—महात्मा गांधी

## सम्पादकीय

## सावधान ! शिक्षा-नीति में परिवर्तन हो रहा है

भारत सरकार शिक्षा नीति में परिवर्तन करने पर विचार कर रही है। शिक्षा के ढांचे में आमूल रूप परिवर्तन करने की सलाह-माधों पर विचार किया जा रहा है। इस नीति में संस्कृति और नैतिक मूल्यों का कोई स्थान न रहे भारतीयता की प्रवर्धन की जा रही है। शिक्षा की संस्कृति निरपेक्ष रखने का मतलब बुने रूप में अधो-निक हितों के हानि में बन्द कर देना।

ला० लाजपत राय के अनुसार अर्थों के भारत माने से पूर्व हमारी शिक्षा खोली एक व्यवस्थित रूप में प्रचलित थी। ग्राम ग्राम में पाठशालाएँ स्थापित थी। छात्र व्यवस्थित रूप में अनेक छात्रों और शिक्षा का धन्यता करते थे। शिक्षा साम्राज्य की स्थापना के बाद लार्ड मंकासे शिक्षा पद्धति में एक योजनाबद्ध व्यवस्था रखकर परिवर्तन किया। उसने १९३५ में अपने विचारों के नाम एक पत्र लिखा। "जो भी हिन्दु धर्म की शिक्षा देखेगा वह कहेंगे कि वह अपने धर्म के प्रति सच्ची श्रद्धा व विश्वास को देता है।" यही शिक्षा पद्धति भारत की भावी पीढ़ी को केवल बलक के व्यक्तित्व तक ही ले गयी। छात्र हम अर्थ-विवेक के रूप में ऐसे रम गये हैं कि पत्र लिखा होने की परिभाषा हमारे शिक्षा का भाषाज्ञान होना ही मान लिया गया। भारत की शिक्षा पद्धति अभी तक अर्थों की पूर्वकालिक योजनानुसार चल रही है। इसमें सुधार के प्रयास न करने, भारतीय शिक्षा खोली को उपेक्षित करने केवल मात्र पाठशालाओं की उधार की गई तकनीकी की शिक्षा का भग बनाया जा रहा है। हमारी भारतीय पद्धति के प्रवर्धन पर जो वैश्विक शिक्षा है उसमें फिर भी अर्थ के अस्तित्व को विकसित करने का, आत्मनिर्भर होने का प्रविष्टा है। विकसित देशों में प्रा-निक शिक्षा के समय ही बच्चे उपकरणों पर निर्भर हो जाते हैं। बोझ सा छा लेन देन करने का गणित बोझों की भी उनकी समझा नहीं रहती। उन्हीं कंप्यूटर का सहारा लेना पड़ता है। सरकार द्वारा कंप्यूटर क्रांति लाने के प्रयास जारी हैं। नये युग में प्रवेश करने के अधिकार से हमें वंचित भी नहीं होना चाहिए परन्तु देखना यह भी है क्या बच्चों की नैतिक प्रतिभा को उत्कर्ष तक पहुँचाने में वे सहा-यक सहायक हो पाएँ या प्रतिभा को सकावा कर देने में अधिपापक होंगे।

विश्व में अनेक शिक्षाविद हुए जिनमें भी हार्वर्ड, मा० मोरिया मास्टररी, भी हार्वर्ड स्टीवर, भी क्लो, वेल्सली और लार्ड मंकासे। मा० मेरिया मास्टररी ने बच्चों की शक्तों पर ध्यान रखकर प्रोत्सा-हित करने पर बड़ा बल दिया। उनके अनुसार बच्चों की बन्द पैसा-कारिरीक रूप से संतुष्टि करना अनुचित है। भी हार्वर्ड की विचार-

धारा की शिक्षा में नैतिक और चारित्रिक विकास प्राथमिक है। लार्ड मंकासे ने भारत में ७ मार्च १८३५ में अपनी रिपोर्ट देकर लार्ड विलि-यम बेंटिक के द्वारा शिक्षा नीति की घोषणा करा दी जिसका उद्देश्य विदेश सरकार द्वारा भारतीयों में यूरोपीय साहित्य और ज्ञान शिक्षा का तथा ईसाई धर्म का प्रचार करना था। लार्ड मंकासे को भारत के अर्थिक को प्रवर्धन करने का पूर्ण दोष जाता है। दुर्भाग्य है कि वही दोष अब भी शिक्षातन्त्र में विद्यमान है। भारतीय मनोभाव अपने अपने में इतनी बनी है, इससे उच्चकोटि के शिक्षाविद मोहव है। यदि उनकी भारतीय पद्धति को अपनाया जाये। हमारा अपना स्वरूप और भी उज्ज्वल हो सकेगा। यो तो हमारी प्राचीन शिक्षा में गीत की शिक्षा, नारदीय शिक्षा, याज्ञवल्क्य शिक्षा, व्यास शिक्षा, पणिनीय शिक्षा अन्य विद्यमान हैं। वेद विज्ञान की एक महान् शुक्ल। हमें विरासत में मिली है। ब्रह्मा से लेकर जैमिनी ऋषि और महर्षि दयानन्द पर्यन्त भारत पुराणों ने महान् शिक्षा नीति दी है। फिर इस युग के महर्षि दया-नन्द की कुछ नीतियाँ में प्रस्तुत कर रहा हूँ—

१ शिक्षाविधियों में शिक्षा के साथ चरित्र निर्माण प्रति प्रा-थमिक है। इसके लिए पुरुषकुल शिक्षा प्रणाली अपनायी जाए।

२ शिक्षाविधियों के विकास, अर्थों शिक्षा और शिक्षा के लिए शिक्षाविधियों के अर्थों के द्वारा ही बढ़ाया जाना चाहिए।

३ ईश्वरीय ज्ञान वेद का स्थान शिक्षा में सर्वोपरि होना चाहिए।

४. राष्ट्र के साथ जीवनयापन के लिए प्राथमिक कला कोशल की शिक्षा भी दी जाये। इसमें कला, चित्र, आयुर्वेद, इतिहास, अनुबेद, गान्धर्व, योगतन्त्र, नाट्यकला, तथा प्रशासनिक विद्या प्रादि दी जानी चाहिए।

५. बालक बालिकाओं का सहशिक्षण बन्द कर देना चाहिए।

६. शिक्षा, शरीर शरीर सब के लिए अनिवार्य और संतुलित, विना व्यय के कर देनी चाहिए।

७. शिक्षा में स्वदेशप्रेम, स्वसंस्कृति गौरव, ईश्वर भक्ति और आत्मनिर्भरता प्रादि गुण प्रेषित हों।

—यसपाल दुर्गा

एक सर्वथा उपेक्षित परन्तु समर्पित जीवन

मुनिवर पं० गुरुदत्त विद्यार्थी एम०ए०

ओमप्रकाश आर्य



ममिषा दानान्नं के वेदं प्रतिपादित  
सकलान्नं नृपस्य मन्थयो  
विद्वदो विज्ञासो ह्यो विचारो लोको  
जिह्वामयी के साय मुनिवर मुद्रयते न  
सकामा जीवते वे दाना ह्यो प्रमादित  
वैदिकानां पुरा विचार करके मनुष्य  
कथित एव स्मरित्यहो वास्तव है। जीवन  
मे केवल सुख के लोभ ही इहलोक  
समरपण करते हुए ईश के सन्ने उपासक  
योगी नहीं तात्पर्य ध्यानको लोभही  
मोहा है। भाग्यनिष्ठ एते या काका सत्ता  
दान करते धनवा मर्दों के सख्य सम्यक  
मे स्मरण करते सख्यवर्गों मे लाभ उठाने  
को लोभयुक्त ही को समझ ही मजाना  
परन्तु कर्मात्मा यह है कि १२ वग का मह  
नमकुच महर्षि के प्रशान्तान्ते के परदुःख  
वैदिको मन्थे माय से ही सुख प्राप्त कर  
पाया महर्षि की तुलने को प्रथम न हो  
सकता। श्राव्यमन्त्र के प्रकाश विद्या की  
पश्चित्त मनुष्यति ही एवमर्षो मे इस वाक्य  
स्फूर्ति प्राप्त न का मित्र प्रकाश से वदय  
विचार है —

—नवीन वेदात का सिद्धान्त सृष्टि सृष्टि बाव के नाम से प्रसिद्ध है। पण्डित गुरुवत् नवे गुरुवत् की सृष्टि

[illegible]

पाठक वन्दे । संस्कृत हिन्दी प्रज्ञापी

[illegible]

एक बार किसी ने उनसे कहा वक़्त जो आपकी स्वामी जी के सोनी होने के बारे में सोनेक मातो का ज्ञान है। आप उनका जीवन चरित्र क्यों नहीं लिखते? अत्यन्त गम्भीर होकर उत्तर दिया कि मैं प्रयास कर रहा हूँ। प्रश्नकर्ता ने पुन पुन्ना—जीवन चरित्र कब ख़त जायेगा? बोले—आप कायब पर लिखा जीवन चरित्र समक रहे हैं। मेरे बिचार मे महर्षि का जीवन चरित्र अपनी पूल ब्राम्ह ने लिखना चाहिए अपनी इसी के लिए मैं प्रयत्न कर रहा हूँ।

इस सच्चे भारतीय वैद्य और महर्षि दयानन्द के अनन्यभक्त प्रतिभासाधनी बिचारक सत्य और सदाचार की खोजी एव साकार प्रतिभा गुणग्राही मुद्दस का जन्म २६ अप्रैल १८६४ ई० को मुजत न निवासी माता रामकृष्ण सरवाना के घर

हुआ था। इनके बसब बिद्या तथा कुछ  
दोनों में पारबत एव स्थाति प्राप्त कर चुके  
थे।

जन्म, नाम तथा प्रारम्भिक शिक्षा—

भी मुव्वल का धुप करने के आधार पर  
 नाम सही रखा गया। कुछ दिनों में दोनो  
 नाम सही उपलब्ध होकर पल्लु २२  
 वष का धातु में साफ मुव्वल बर धारने  
 साधा पिता के लोकाधार गया बर  
 बड़ा के बोलाया रोकाया में दोनो  
 नाम बरकर बुराया रखा गया की सा  
 ने धारने धारने बर मुव्वल में परजित  
 होकर गायबज्ज बर प्रजित हो। मुव्वल  
 के पिता का नाम रत्न बर के रत्न में  
 धारयापन में। धार मुव्वल बर नाम की  
 घर पर पढ़ाने के परचायु धारने बल्लु में  
 ही प्रजित बर गया। उस समय नाम  
 की धातु - बर की। धार नाम की  
 ही होभाहार नाम में परचयी बोलाया  
 बर बीजान हारिक धारि धार की  
 मुव्वल में पर दाही। धारिद्रुप नाम  
 से निष्कप होकर उलाय नाम के प्रजित  
 होकर मुनताय के हारि बरने के बरसा  
 करा गया गया। मुनताय में नाया  
 वेनायनाय होकर बरक रैयदाय धारने  
 धारिद्रुप निय में।

### तत्कालीन परिस्थितिया और उनका प्रभाव

श्री सुखदेव शर्मा द्विवेदी सम्पादक  
नवजीवन ने तत्कालीन अवस्था का बखान  
निम्न प्रकार किया है—

धोखेजी ज्ञान और स्कूनों में पड़ने  
 वाले प्रायः सम्पूर्ण विचारों में समग्र अन्त  
 एव भ्रम के यन्त्रों पर सुदृढ़ और पवित्र हो  
 जाते हैं। हिन्दू विचारों में अपने विचारों  
 सर्व के निम्न और लचर होने के कारण  
 तथा प्राचीन सनातन धर्म के अन्तर्गत से  
 प्रत्येक धर्म विरोधी लोभमय और ईर्ष्या  
 भासित से पद पद और शब्द शब्द से  
 यद्यपि एक ही और ईर्ष्या और सुख  
 समानों के वैभवों से सुश्रुति के लिए  
 प्राणाकार करते हुए पवित्र बत हो रहे हैं और  
 हिन्दू समाज के प्रायः समस्त सम्पन्न वर्गों  
 की विचारधारा में अनेक प्रकार के लिए

प्रायःमा कर रहे थे कि ऐसे क्षणकार के समय में भारत के दक्षिण और पश्चिम के कोने में देखीयमान अग्नि उत्पन्न हुआ—  
“यका नाम धारासमायाह है। इस पवित्र अग्नि में खमरर बिरोधी स्रोत के नवीन सिद्धांतों को प्रीतीभूत कर फिर से पवित्र समागत सप्त के प्राकृतिक सिद्धांतों को जो धाराताम्यकार ने प्रच्छन्न हो रहे थे प्रकाशित कर प्रायः जाति के होनहार प्रमुखों को वासिक प्रवर्तन से सुरक्षित कर दिया।

### आर्यसमाज मे

मुद्रकृष्ण जी के मासिकाले के वर्ष के प्रति विचारें बरि और अर्या जी वरुण अर्या जी सिवा तथा पावरावो के कलियत्र अर्यों को पदने के कारण यह मासिक (पूनी) को नित्यत न पड़ती। यम के पद अर्यों को मासिकका जी बोर मुद्रक जी बरि प्रचार कोरने के लुगियान के स्थानत मुद्रक मुनी कर्मावसान अर्य कर्मा के केक जी के। मुद्रकाल कोरने के शाव आपराक उपबन्ध कोरने के मल उपबन्ध तथा बरि उपबन्धन जी का बडा शाव है। सोनी मुद्रके हर सोपीय नमुद्रक कार्यवसान के प्रति पद सिवा वार् के और बरि के लिये से बरवाक का और करी के। मुद्रक जी के प्राय विधिष सिक्को को मुद्रक मय मुद्रक मासिक जी होवा रहता था। अर्यात इन दोनों जी विषयत हर दोर मर्हण का लयावपन सिक्का तथा अर्येवोपरायप्रोफिका के लयावपन के मुद्रक जी मासिकका होवा बहाना मासिक मर किता हवा २ मुन (२००) को यह विनयस सिक्कापानी मुद्रक धारावसान मुद्रकमा का स्पेन्डा से लयावपन मर गया।

### लाहौर में आगमन—

नवम्बर १८८० ई० में इ टुन्स की परीक्षा पास करके जनवरी १८८१ ई० में बर्नमिण्ट कालेज लाहौर की फल्टईयर कक्षा में प्रविष्ट हो गए। वहा सासा ह्मराज दीवान नरेन्द्रनाथ सासा सिव नाथ सासा भवतराय सासा मेतनामन्ध, सासा इचिराम तथा सासा साजपतराय थापके मित्र एवं सहपाठी थे।

प्रास्तिक गुरुदत्त—

कावेज में पहले हुए ही भाषने १८८६ ई. के घात को १८८७ के प्रारम्भ में ही विर्दिष्ट नग्न (Free Debating-Club) की स्थापना की तथा स्वयं इस नग्न के मंत्री नियुक्त हुए । इस नग्न में सभी सभी पर्वों की प्रत्यक्ष प्रदर्शनों के व्यक्ति भागिधारी होते तथा नियुक्त अवगना-प्रधान तथा प्रत्यक्ष किया करते थे । वर्ष १८८७ ई. तक रहित नियुक्त की कावेज की ईश्वर के धर्मस्थल विषय में भाषा-प्रधान करते थे जो भाषा का एक ईश्वर के धर्मस्थल का विरोधी ही हुआ करता था परन्तु वर्ष १८८७ ई. में भाषा प्र







अभिषि हो जाता है। मनुष्य-अभिषि की वो व्यवस्था है, एक उठने की और दूसरी बिगने की। उसने की व्यवस्था में यह पर-कास्ता में सब को बैसता है और बिगने की व्यवस्था में यह परलेखर को सब में बैसता है।

बस यही वो नियम दुनिया में काम करते हैं। यदि आपकी जक्ति में यह सब था चाहे कि परमात्मा सब में विद्यमान है और हम सब परलेखर हैं तो फिर आपसे कोई भी बुरा काम न होगा। परन्तु यहाँ तो बात ही उलटी है। जो ईश्वर-प्राप्ति का समय होता है, उसमें हम सबेक प्रकार की बुराईयों से ढके रहते हैं। फिर आप कहते हैं हमारा में विश्व नहीं जाता।

भारत में दान की प्रणाली ही निराली है। दान बहुत धन्य है, कीन-सा सुख है जो दान से मनुष्य को नहीं मिलता। किन्तु क्या भारतवासी दान करते हैं? वे तो भी पर जाना, गंगा में स्नान करना, बस इसी को दान-मुष्य समझ बैठे हैं। भाइयो! बाये दिन कुम्भ होते हैं, हरिद्वार का तथा प्रयाग का कुम्भ आदि। क्या कभी यह सोचा कि इस प्रकार पर देव वालों की तुल्य में किन्तु सत्या किरिये में दे दिया। धनुमान से डाई-सीन कटीर सत्या हर एक मनुष्य में देखने को किरिये का विद्या जाता है। यह किसलिए? इससे क्या लाभ हुआ? गंगा में स्नान किया बस इसी को प्राय मुष्य समझ बैठे। यह कहाँ की बुद्धिमत्ता है किन्तु दम्भी की डिपटीर-अभिषि में बेरा हुआ है।

बिच तो सगला है तुम मयाभी की ?  
बिचर तो बिच को मयाभी तुम मया सके हो। उधका स्वभाव तो क्या सोचा है। धन्यता नहीं को बताओ। प्राय विनया करते हैं, यहाँ भी बिच सगला है या नहीं? या जब कोई बुरा काम करते हो तो कितनी जल्दी धारका मन उसमें बस जाता है? उस समय धारका मन कीन सगला है? मन को सीधे पास पर न आता धारका काम है। पर यहाँ तो मुष्यक फैल रहा है। मया की मुष्यक करने वाले रोनी की धन्यता है? धन्य गहाइरा से भी नहीं प्रसन्न हुआ कि मन बाहु से धारिक चपल है। बाहु को रोकना हो सुपम है, किन्तु मन को रोकना कठिन है। उन्हीने उत्तर दिया, "यह दान नहीं। गुलाब के फूल को मयसना कठिन है, किन्तु मन को सीधे मार्ग पर लगाना सुपम है। केवल धन्यास को प्रतिपन्न बनाने की धारकयकता है।" मानक पाठशाळा में पढ़ता है, भी ए० पास करता है। वह मन को कयाशा हो सी० ए० पास कैसे करता? कयाशा होर को। परलमन गहाइरे में कुसीर सगला है, उस समय वह मन सगला है कि नहीं? यह निशुंनि मन सगला उमका ही बेरा पर हो जाता है। मेरे बाई! धन्यास करने की धारकयकता है। बिचारों के समान, प्रलमन के समान मन सगलायें। उधकायों की आशिये में मेरे बाई! मन को सगला बड़ा सुपम है। तुम को अपने मन से सहाइ करते हो। उस समय मन की तुमसे कहता है उसका बेसता करो। यदि वह कह कि विनया मया, तो तुम न देखो। कीम जानने में भी इसी प्रकार सिद्धि प्राय की है। उन्हीने कहा है कि यदि मन उधेरा पर पर यह किन्तु वहने सिद्ध मनो।

बापका को देख लो। क्या उन्हीने विनया नहीं देखे। उन्हीने की देखे परन्तु कोर और जने विनया बहुत की और फिर धन्यास मार्ग पकड़ लिये। तुम मन को अपने मन में कर लो, फिर बाई विनया की देख लो, परन्तु तुम जने कुष बाव ही उठाओगे। एक कवि ने ठीक कहा है—

तुमसे कवर मोचनारों की हस्ततः।  
तो यह ठीक है उन्हीने की वस्ततः ॥  
कहीं नुहूँ मैं विपरित  
कहीं वा की ज्याली।  
क्यों मुहूँ मैं डीरे  
रहेको नूँ बाणी ॥  
हो सब मोचनारों की

कैसन मे बेरा।  
सवे पर विश्व जति  
मरत का बेरा ?

प्रत्येक बात कठिन जी है धाराणी की।  
बस मनुष्य का मन धारने सब में हो। उस तो सुपम है, यदि वह से बाहर हो तो कठिन है। इसीलिए कहो है—

मुम मया बिच मे राखे विमलानी।  
हैष में उसको ताखे हुलसानी ॥

बैसा तुम चाहते हो कि दूसरा धारसी तुम से गहाइरा करे तुम को दूसरी के साथ बैसा ही गहाइरा करे। उसी कठि पर तुम की धारने धारको दोलो, बिच पर दूसरों को तोलना चाहते हो। किसी की निम्नता न करो। धन्यो गुलसी को पड़ो। बिच पड़ने से सगल दूर हो जाते हैं। तुरे बिचार बस मन में पैदा होते हैं तो मनुष्य मट्ट हो जाता है। ऐसे मनुष्य की कनी कुछ ज्ञान नहीं होता। सधका खरीर दुर्बल हो जाता है। कनी बाहु को कया करता है। कनी बेसुध हो जाता है। विहालो तथा बुद्धिमत्ता में अपने मन को बस में रक्का, फिर उनको किसी प्रकार का मन न रहा। एक कवि ने कहा है—

कमल से तुमस बावने,  
बस मोचनार नूँ अपने पर।  
कम तलक फिलता रूखे,  
मार मार कर बबर ॥  
का कवर होकर मन नूँ,  
कनी हुमा है मे कवर ?  
रस्तता बेरा इपर है,  
वा रहा है नूँ बिचर ॥

परन्तु किन्तु बावित दुर्बल है, इसके मन में दुर्बल गड-दुर्बल रही है। यहाँ

तो बिचनारों का कयाशा ही बन नहीं लेते देता। एक कारीरी मानने न कहा है—

इका ईं इलमन, बिचनार कयं नुहूँ।  
कि मुरा रकी-बलमन साहूँ दूख ॥

धारमुनि ने यह रोग बीरप ही दूर करना चाहिए बिचने बेरा नूँ खरं सब बिट बाये। बिचनारों का नूँ सब बावने हैं, सब समकते हैं कि यह नका भारी दुःख है। परन्तु इसे मिटाने का कोई साहस नहीं करता। धारसमाज नगर की बात है, यहाँ एक मनुष्य बाबा। उसके साथ एक धारिका भी। उसने मन्त्री से मिन्नने को कहा। उसने प्रस्ता, "बाई क्या काम है।" उसने कहा मनुष्य बाबा। उसने कहा। बस मन्त्री को बुलाया गया। बस मन्त्री की धारने, तो उसने कहा यदि तुम्हें इस सक्की को सगलाना हो तो सगला को, नहीं तो जहाँ इधका को बाई चली जाए, वहाँ सुलमन हो जाते बा बिस्तान। उस धारिका ने पूछा गया तो यह बड़े कोर से रो रही। उसने कहा, "रोनी नहीं।" उसने कहा कि 'तुम्हें बिचनार कैसे बाये कि तुम मेरी सहायता करो।' जब माता-पिता ही सहायक नहीं हुए, तो तुम कैसे सहायक हो सकते हो।" उस कया को बीरक दिया गया तो उसने बताया कि "बस मैं धातु नौ बर्ष की ली सब मेरा बिगहाइ रहा। इस समय मेरी धातु पण्डु होसक बर्ष की है। यह तो मेरे साथ तुम्हें यहाँ कोरने बाया है, मेरा बाबा है। मैंने मेरा बिगहाइ सगला किया। सब इधका बिगहाइ तो रहा है। मैं कहाँ जाऊँ? मेरा सर्वजन मुट मन। इस बावित का कयास कैसे होगा? यह ठीक है कि मैं दूरी हूँ, किन्तु बिचने तुम्हें बुरा करना, इस पाप में नैसा, यह भी तो बुरा है। पाप तो नोने ने ही किया है। एक का तो बिगहाइ हो रहा है और दूसरे को पर से बाहर निकाला जा रहा है। दोनों को ही निकाला जाना चाहिए वा।"

भाइयो! ऐसी सक्की पटवारों प्रति-विम होती है। बिचर देखो उपर यही दता है। इस प्रमाणे बेस का कम कुछ मनोवा? यह कैसे उठ सकेगा? जो बैसता है कि धारने बिच ऐसी पटवारों होती है, परन्तु नन बस में नहीं। धारसमाज भी दुर्बल है। इसमें धनुष्य धारिक धारणी हो उठ सगला होता नहीं तो दाना जास में पका हुआ है। पकी जाता है दाने को सगला है, नोच में धा जाता है, सीके उपर जाता है, दाने पर चौंच बावने है, किन्तु सब उस नहीं सफला। धारने में पकड़ बिचारी पिन्ने में धारकयक बस बिचा। यह हुआ क्यों, उसके मन में दाने का सोच धारिक था।

भाइयो! कोक कर करो। मन से कुछ करो। स्थायें कोइ हो। यदि अपने जगको कुछ बावने चाहते हो तो बिहालों के पास बैठो। बुद्धिमत्ता की संवसि करो। बुद्धि का बायेनी, मुकुंज दूर हो बायेनी। बिच बाव का ज्ञान के साथ धन्यत्व नती

होता यह कयापि सिद्ध नहीं होता। बिचर सब संभव दूर हो, उसी बिचा के बाये कोनों में सिच कुफला है और उमका देस पर हो जाता है।

हमना पर नुहूँ में कुनी मे दे सारा नै।  
हमना नूँ मेरे बिचर नुहूँ हस्ता नै ॥

धारमुनि ने मुझे नूँ धारने उपर स्वय ही धारमन कर रहा है उस बिच के समान बिचने धारने ऊपर ही धारमन किया वा। बुद्धिमान होकर मुझ में बनी। तुमो! एक बल में एक सिद्धि रहता वा। जब उठे पूछ सगली तो सीके तुमसे उमके भाता उसे मार देता। इस प्रकार यह प्राय सात षाट षट्ट रोज मार दासता वा, परन्तु साता वा केवल एक ही। बस के बस कनवर कुनी ही वा। उन्हीने सोचा कि कौन धारमन निगलाना चाहिए। इस प्रकार तो सीके ही बिचों में हम सब भार दिखे बायेने। तब एक धार होकर सिद्ध के साथ प्राय बीर कहते, ननरका। तुम बावकया करते हो तो सब ननरकों को मार जाते हो किन्तु बावने केवल एक को ही हो। सातव तुम बावकया करने का कष्ट न किता करो हम प्रतिविम एक पण्डु होकर की तुम्हारे मोचन के लिए भेज दिया करे। सिंह बड़ा मयन हुआ। उसने कहा, 'बहुत धन्य'। कुछ दिवत तो पण्डु धारने रहे, धार में एक बिच सब बावने में न एक होकर एक सक्की की पुरी कहा 'बाई! तब प्रकार तो हम सब सगला हो बायेने।' सगलीय में कहा, 'धन्यता मन में बावना।' दूसरे दिवत कोर होर को बाया, १२ बस मने परन्तु कोई पण्डु सिद्ध के पास न बाया। १ बस बाया, २ बस मने परन्तु फिर की कोई पण्डु न पण्डु। सिंह बड़ा पयराया उसे पूछ सब रही थी। सगले में मे सगलीय राम पण्डु। उसे देखकर सिंहदास ने कहा, 'धरे! एक तो तुम पर नही बाया। फिर मुझ से मेरा क्या बनेना? मैं सब पण्डु को घनी सगलप सिद्ध देता हूँ। सगलीय में कह', 'मैं यहा तुम्हारे मोचन के लिए तो नहीं बाया। मैं तो तुम्हें तुम्हारे बेरी की सगला केने बाया हूँ। यह सगल होर को बाया है। यह कहता है कि यदि तुम दूसरे सिद्ध के पास जाओगे, तो मैं तुम सब को मार टाऊँगा। मैं तुम्हें इधका सगला-बाव केने बाया हूँ। यह सुनकर सिंह को बड़ा कोर बाया। उसने कहा, 'धरे पण्डु! बसा यह सिद्ध कहा है? पहले मैं उसी को मार बावने हूँ।' उसने कहा, 'धन्यो!' सगलीय देर को एक कुर के पास से बाया, जिसकी मुँह से बहुत जैनी बनी हुई थी। सगलीय कहते सग, 'सिद्ध कह कुँ मैं वा। पता नहीं मन कया फिल नै। मैं बेईर दस कोने मे तो नहीं।' सगलीय ने मुँह पर बड़कर देखा। सोसा 'हसी बाव मे है।' बेर की मुँह पर बड़ मन। उसका प्रतिविमन हो पड़ा। उसने धन्यता कि सधुष्य दूधरा देर सीकी में है। मेरे मन के बाये बिच मया है।

(विच पद ११ वर)





## समाचार-सन्देश

### राष्ट्र निर्माण सम्मेलन

हिराचर १५ मई, १९८१। गुज-  
रान्त कृषी विविधिकासय के मासिक  
समारोह के संस्कार पर राष्ट्र-निर्माण  
सम्मेलन का आयोजन किया गया।

इस सम्मेलन ने विभिन्नलिखित प्रस्तावों  
को प्रस्तुत किया—

(१) राष्ट्र की एकता को सुरक्षित  
रखने के लिए जातिवाद, वर्णवाद  
एवं जातीयता के नाम पर उठेबना  
झिंझाते आरोपों को कठोर रूप से  
बाहिर।

(२) राष्ट्र की सुरक्षा बँधित उपाय माग-

सामों के अनुसार ही सम्भव है।

(३) इस सभी भारतीयों को देश के  
अनेक भाग में भाने-बाने, युधि कम  
करते का अधिकार होना चाहिए।

(४) राष्ट्र-निर्माण के लक्ष्य की पूर्णिका  
महत्त्वपूर्ण हो सकती है। सभी  
राष्ट्रीय सरकारों से यह शोचनी निवे-  
दन करनी है कि उत्कृष्ट-सागर के  
उत्थान को सर्वाधिक महत्त्व।

(आ) जयदेव वेदाचार्य। बसोबस  
राष्ट्र-निर्माण सम्मेलन

### गऊओं की तस्करी का गड़

नवभारत टाइम्स १८ मई के प्रका-  
शित समाचार के आधार पर दिल्ली  
धार्मिक प्रतिनिधि तथा का एक प्रतिनिधि-  
मण्डल घसीपुर ज्वाक स्थित हिराचरी  
नाम के मुन्गी के निवा। जिन्होंने घसीपी  
बाप पर बैलकर बैलकों आरोपों को मोक्ष  
के मुह में जाने से बचाने का प्रयास  
किया। ये गऊँ दिल्ली के रास्ते ७००  
के बायो का रही थी। स्थानीय मुन्गी ने  
इस को पुलिस के हवाले कर दिया। हिरा  
छुकी गांव के मुन्गी मण्डल के अधिन भी  
बसोबस सिंह ने बताया कि पुलिस ने  
इस गऊँ को का रखने में धरमसंज्ञा व्यक्त  
की। वरतु न के साथ कहना उरता है।

### सिंधा आर्य सम्मेलन

अधिन भारतीय विधी धार्मिक समा  
के द्वारा धार्मिकसमाज विम्वरी काकोनी  
मुना में १७ १८ १९ मई १९८५ को  
बह समाप्राहुरक मनाया जा रहा है।  
सम्मेलन का उद्देश्य (१) धार्मिक ने निम्न,  
(२) एकीकरण, (३) विचारों का प्रदान  
प्रदान (४) कुरीतियों से छुटकारा, (५)  
बैधिक बर्न की सामकरी और सामक्य  
का विचार प्रादि हैं इस सम्मेलन ने भारत  
भर के अनेक नेता आनी विद्वान् पचार  
रहे हैं।

नेचाराध धाय

### आर्यसमाज मंदिर गाँधीनगर दिल्ली का वार्षिकोत्सव

आर्यसमाज गाँधीनगर का वार्षिको-  
त्सव बड़ी धूमधाम से ५ मई से १२ मई  
तक मनाया जा रहा है। इस अवसर पर  
अनेक विभिन्न समारोहों धार्मिक सेवा  
पचार रहे हैं।

१२ मई को "राष्ट्रीय एकता समे-  
कन" होस विधायी सम्मेलन की रास-  
नीयता कायमकी करे।

रामानुजचर विरानी

### सार्वदेशिक कार्य कीर देश समिति का कार्यकर्ता सम्मेलन

आर्यवीर इस दिल्ली प्रवेश का कार्य-  
कर्ता सम्मेलन २७-४-८१ को रास तीक  
५ बजे धार्मिकसमाज हनुमान् रोड नई  
दिल्ली में सार्वदेशिक कार्यवीर देश के  
उपप्रधान संघोषक का-० देवराज की की  
अध्यक्षता में प्रारम्भ हुआ। तीक तीक ७  
बजे समाप्त हुआ। डॉ० की तथा दिल्ली  
देश के संघोषक की अध्यक्षता की नेरणा  
वाक्य वाक्य हुए। १७० धार्मिक मुन्गी ने  
इस को सक्रिय करते तथा तीक विधियों  
को सक्रिय बनाने का कथन किया। की  
अन की ने समा का बड़े ही उत्साह इत के  
उपस्थित किया।

संघोषक कर्माचर नवी

### निर्वाचन

आर्यसमाज नवभारी बाघ की संघोषक  
तथा की तीक २४-४-८१ को उम्मान  
हुई विधियों निर्वाचन संघोषक की १९८५  
८६ के लिए निर्वाचित हुए।

प्रधान की विचारनीयता मुनाटी  
उपप्रधान की उत्तरावध पावली  
" की ईश्वरकर्म धार्मिक  
नवी की वेदाचार्य कर्माचर  
कोषाध्यक्ष की नवीनी  
उपमन्त्री की विधीक नव उद्याना  
की विचारनीयता नवाटी  
मुन्गीकाध्यक्ष की विचारनीयता नवाक  
समयकाय।  
वेदाचार्य कर्माचर नवी

### आर्यसमाज सरस्वती विहार (पंजी) दिल्ली का आठवां वार्षिकोत्सव

अधिन ८ मई सोमवार से रविवार  
१२ मई ८१ तक

स्वाग—आयसमाज अधिन, की-  
ज्वाक, उत्तरवती विहार।

कार्यक्रम—आठ प्रतिनिधि बह ५ बजे  
से ७ १० बजे तक मुन्गीसिंह १२ मई ८१  
को १० बजे समा

बहाना—स्वाकी स्वकामाध्य की एवं  
स्वाकी नवीनीस्वाकाम्य की  
राजि—रोम ८ बजे से ४१ तक  
अन। स्वाकी स्वकामाध्य की एवं कीमाग्न  
आयसमाज की।

वेदोपदेश—प्रतिनिधि रास की ४३  
से ६ १० बजे तक महाग्न विद्यानी द्वारा।

आर्य स्त्री समाज उत्सव—११ ५-८१  
अधिनार की सोहृद ९ बजे से १ बजे तक  
आय मुना सम्मेलन—१२ ५-८१  
रविवार की रास १० १० बजे से ११  
बजे तक।

प्रतिनिधी—११ बजे से १ बजे तक  
रविवार की।

नवी  
देवराज नवीनी  
आर्यवीरक वेदाचार्य

### आर्यसमाज होली भौहस्ता, करनाल की तदर्थ समिति का गठन

१ प्रधान की नवीरक धावनी  
१०१ धार्मिकसिंह काकोनी, करनाल  
२ उपप्रधान की नवीसिंह  
दिल्ली नवीसिंह की-०टी रोड, करनाल  
३ नवी ईश्वरीय  
भौहस्ता कोट, करनाल  
४ कोषाध्यक्ष की विचारनीय एवंविधि  
वार रूप, करनाल  
५ सत्य की हरीश्वर मुनाटी  
नवाक कला, करनाल रोड, करनाल  
६ " की नवीसिंह कृष्ण पोखरा  
भौहस्ता मुन्गीसिंह, दिल्ली नवीसिंह,  
की ० टी रोड, करनाल  
७ " ना० संघोषक सिंह  
डी०ए०पी० उत्तरावध विचारक करनाल  
८ " की ० उत्तरावध  
भौहस्ता नवाक, करनाल  
९ " ना० कुन्गीसिंह  
न०० १४४ भौहस्ता नवाक, करनाल  
केदारसिंह ना० (की वेदविधि)  
प्रधान, धार्मिक प्रतिनिधि नवा, हरियाणा  
सारस्वत मोहन "मनीषी"  
का अभिनन्दन



सह २ वसुधर की अधिन भारतीय  
समय तक का वार्षिक समारोह होस  
विद्यानी विद्यालय के सभाकार ने अधिनार  
सारासम पाय वेदक की धार्मिकता  
पौरना। धार्मिकता धार्मिक धार्मिक के  
आयसमाज के बड़ी संख्या के साथ सम्मेलन  
हुआ। इस अवसर पर डी०ए० की ०  
अनेक वसुधर के विधी आयाचार्य, आर्य  
के आर्य, धार्मिक कला नवीन नवीना  
बैठे अवसर कायम संस्कारों के पञ्चसिंह  
विधी कायम नव के मुना मुना कवि  
की सारस्वत कवि "मनीषी" के "समक्य  
की १९८४" की उत्साह से विभिन्न करके  
आयसमाज, स्थिति सिद्ध, आर्य और नवीन  
गुरुकार के विभिन्न सम्मानित किया  
नवा। स्थानीय स्तुति के वसुधरों की की  
गुरुकार किया नवा। मुख्य अधिन ने  
प्रतिनिधि आर०पी० निम्न।

वेदाचार्यक नवीनी  
अधिन "आर्य कार्यवीर", काकोनी



**आर्य जगत् की शान**  
**२०० बिस्तर वाले निर्माणाधीन**

**नेत्र चिकित्सालय**

(अनुमानित लागत दो करोड़ रुपये)

**के लिए दिल खोलकर दान दीजिए**

दान की राशि आयकर अधिनियम जी० ८० के  
अंतर्गत कर मुक्त होगी।

सारा दान बैंक/मनीऑर्डर/बैंक ड्रफ्ट द्वारा

मन्त्री, माता चल्नदेवी आर्य धर्मार्थ नेत्र चिकित्सालय,  
सी-१ जनकपुरी, नई-दिल्ली-१५ के पते पर भेजा जाए।

दानदाताओं के नाम चिकित्सालय की शिला पर  
अंकित किए जाएंगे।

निवेदक

राज्यसेवालय आलमगाने	सुर्यसेव	महात्म्य वर्धमान	मोहनलाल आर्य
केरल चिकित्सालय	प्रधान, दिल्ली	प्रधान	लक्ष्मी
सर्व प्रधान, हा० बा०	आर्य प्रतिनिधि	आर्य केन्द्रीय	महात्म्य बुद्धीमान
प्रति० अना	सना	सना	देवि० हु०

सौजन्य से महास्वियां वी ह्यूरी प्रा० लिमिटेड, ६/४४ कॉलिनगर,  
सोवोमिक रोड, नई दिल्ली-११००१

**केवल ५० रुपये में तीन वर्ष तक**  
**हर सप्ताह पढ़ते रहिए**

- ☐ क्या आप 'रूढ़ि', मुनि तपस्वी, ऋषिओं की अमृत वाली पढ़ना चाहते हैं ?
- ☐ क्या आप वेद के पवित्र ज्ञान को सरल एवं मधुर स्वरूप में जानना चाहते हैं ?
- ☐ क्या आप उपनिषद्, गीता, रामायण, बाह्यरात्र्यन्त्र का आध्यात्मिक सन्देश स्वयं बुनियादी रूप से परिवार की बुझाना चाहते हैं ?
- ☐ क्या आप अपने सूरवीर एवं महापुरुषों की शीर्ष गाथाएं जानना चाहते हैं ?
- ☐ क्या आप महर्षि व्यासजी की वैचारिक क्रांति से आत्मचेतना जागृत करना चाहते हैं ?

यदि हाँ तो आइये आर्यसन्देश परिवार में शामिल हो जाएँ।

केवल ५० रुपये में तीन वर्ष तक हर सप्ताह पढ़ते रहिए। साथ ही वर्ष में बार अनुपम मध्य विवेकाक को प्राप्त कीजिए।

एक वर्ष केवल २० रुपये आजीवन २०० रुपये।

प्राप्ति स्थान—

**आर्यसन्देश साप्ताहिक**

१५, हनुमान रोड नई दिल्ली-११०००१

**उत्तम स्वास्थ्य के लिए**

**गुरुकुल कांगड़ी फार्मसी,**

**हरिद्वार की औषधियां**

**सेवन करें**

The advertisement for Gurukul Kangri Pharmacy is presented in a hexagonal grid layout. At the top, the name 'गुरुकुल' (Gurukul) is written in a stylized font. The grid contains several hexagons, each featuring a different medicine:

- गुरुकुल चय** (Gurukul Chay): A box of tea or medicine.
- भीमसेनी सुर्य** (Bhimseeni Sury): A bottle of medicine.
- प्रायोक्तिक** (Priyoktik): A bottle of medicine.
- ओम** (Om): A circular logo with the word 'Om' inside.
- ओम** (Om): Another circular logo with the word 'Om' inside.

At the bottom of the grid, the text 'गुरुकुल कांगड़ी फार्मसी' (Gurukul Kangri Pharmacy) is written in a bold, stylized font, followed by 'हरिद्वार' (Haridwar) in a smaller font.

शाखा कार्यालय—६२ गली रस्ता कैथारमण्य,  
कोम : २६६८३८ **कांगड़ी बाबाएँ, दिल्ली-६**

साप्ताहिक

ओइम्

कृष्णचन्द्र  
कांगड़ी विस्वविद्यालय  
हरिद्वार

कृष्णचन्द्र विस्वविद्यालय

# आर्य सन्देश

पुरुष एक प्रति १० पैसे

वर्ष ६ अंक २६

रविवार, १६ मई, १९०३

आर्य सन्देश १९०३-०४-२५

पृष्ठ २-४२

द्वयानन्दार्थ-१९१

## देशद्रोहियों को सखती से कुचलना आवश्यक है

—रामगोपाल शालवाले

पंजाब तथा दिल्ली में हिंसा एव विद्रोह की जो प्रवृत्ति उभर रही है उस पर टिप्पणी करते हुए सार्वत्रिक आर्यप्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री रामगोपाल शालवाले ने कहा है—“उचित है कि सरकार इसे श्वेता-पूर्वक कुचल दे। विदेशी लोगों पर काम करने वाले देशद्रोही लोगों ने हत्या तथा विस्फोट के अपने दुरादों की श्वेतापूर्वक प्रभाव दिया है। प्रधानमंत्री इन्दिरा गांधी की हत्या के पूर्व पंजाब में जो स्थिति थी उसे इन्होंने फिर से कायम कर दिया है। देश के सम्मुख एक गम्भीर समस्या खड़ी कर दी है।”

श्री शालवाले ने कहा—“देश की श्वेतापूर्वक एव एकता की भंग करने

वाली राजनीति फिर से शुरू कर दी गयी है। श्री रघुनन्दन लाल भाटिया तथा बीबरी बलवीर सिंह की हत्याएँ सत्तासत्तादी क्रियाकलापों की गम्भीरता की घोर इंगित करती हैं। श्री शालवाले ने अपना क्रम बालू रखते हुए कहा—“जब से रघुनन्दन पंजाब के राज्यपाल हुए हैं, तब से सत्तासत्तादी कार्यों में वृद्धि हुई है। वस्तुतः श्री सिंह के परामर्श से ही भारत सरकार ने कुछ नम्रत कदम उठाये भारतीय विरोधी पक्ष में सरकार की श्वेतापूर्वक नीति की आप लिया और स्थिति की दृष्टिपर बनाने की मांग शुरू हो गई। सरकार को तुष्टीकरण नीति ही वर्तमान चरणपथी कार्यों की नींव है।

लोगों से भ्रातृत्व की भावना को कायम रखने की अपील करते हुए श्री शालवाले ने श्री रघुनन्दन सिंह को पंजाब के राज्यपाल के पद से हटा देने तथा वहाँ कोई संयोग प्रशासक भेजने की माँग की। माथ ही यह भी कहा कि चरणपथियों के घरो की तपाशी लेकर सभी विस्फोटक पदार्थों की सरकार अपने कब्जे में ले ले।

जनता का आह्वान करते हुए श्री शालवाले ने कहा कि सत्तासत्तादी कार्यों की श्वेतापूर्वक बनाने में सभी लोग सरकार की उमीदगम्य मद करें जैसी कि पिछली राष्ट्रीय विपत्ति में की थी। श्री शालवाले आर्यसमाज तिनकनगर के वाधिकोत्सव के ध्वजार पर बोल रहे थे। उन्होंने आर्य-

समाज तिनकनगर के द्वारा संचालित स्कूल तथा धार्मिक सामाजिक कार्यक्रमों की प्रशंसा की। तथा आर्य समाज के देश देशान्तरीय द्रौपदी गोपाल तनक फौले प्रभाव का भी सन्मान किया।

यह वाधिकोत्सव ५ मई से १२ मई तक बड़े समारोहपूर्वक मनाया गया। इस ध्वजार पर एक वेद कथा हुई जिसमें ५० जुनीलाल के मधुर प्रेरक भजन हुए और ५० यशपाल प्रकाश के वेद प्रवचन हुए कथा में मन्दिर, राज छोटा पड़ जाने से मरि के समागम में श्रोताओं के बैठने का प्रवचन कर पड़ा। इस शत्रु के धार्मिक श्रोताओं ने कहा में ध्वज-चक्र व-चक्र भाग दिया।

## देश के नभ पर समस्याओं के बादल मंडरा रहे हैं

आर्यसमाज गांधीनगर में सभा प्रधान का ओजस्वी भाषण

आर्यसमाज गांधीनगर दिल्ली का वाधिक उत्सव बड़ी प्रभाव के साथ सम्पन्न हुआ। १ मई से लेकर १२ मई तक के इस समारोह में शोभायात्रा, यजुर्वेद पराम्य यज्ञ, वेद-कथा, आर्य महिला सम्मेलन तथा राष्ट्रीय एकता सम्मेलन का आयोजन किया गया। शोभायात्रा में यजुनाथार की समस्त आर्य सत्ताओं के धार्मिक जनो, बालक-बालिकाओं तथा आचार्य ने बड़ी श्रद्धा से भाग लिया। इस शोभायात्रा का भीषण और कुष्ठनगर के नाथ-

रिक्तों में श्रव्य स्वागत किया।

रविवार को राष्ट्रीय एकता सम्मेलन में श्री वेदप्रकाश श्रीनिधि, श्री विश्वविजय मेघावी, तथा दिल्ली प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री सूर्यदेव ने अपने भाषण दिये। सभा प्रधान ने कहा आर्यसमाज में अपने बालकाल से देश धर्म और समाज में फौजी समस्याओं की दूर करने के लिए सचर्य करता रहा है। इस समय राष्ट्र में चहुँ ओर समस्याओं के बादल मंडराये लगे हैं। विघटनकारी

सत्त्व देश के नीव में पसीता लगाने में बख्तर है। सरकार इन उपवादियों के नामने दण्डनीति अपना रही है। आर्यसमाज ने मदा राष्ट्र की एकता के लिए कार्य किया है राष्ट्रीय एकता की ध्यान में रखते हुए मैं दिल्ली की समस्त आर्यसत्ताओं को और सरकार से निवेदन करना हूँ इस समय ध्वजार सखती से इन जुनी हत्यारों की नहीं कुचला गया तो देश की एकता सखती में दृढ़ सकती है। हस्तांग बहिष्कार आलोचनात्मक नहीं है जनहित और राष्ट्रहित के

लिए यदि सरकार सक्षम कदम उठावे तो हम सहयोग की नगार है। किन्तु साम्प्रदायिक ताकतों के सामने सरकार का झुकने का आर्य-मयाज विरोध करता है।

समारोह में वैदिक धर्म के गारों को मु जानी जनता में कराल ध्वनि से उनके वचन्य को समर्थन दिया। इसका आयोजन प्रधान श्री यजुनन्दन भवस्वी और मन्त्री स्वाम्यमुखर विरमानो ने किया।



## सत्संग वाटिका

विजय के पीछे से लेकर हाथी परस  
 सिम्रित होकर चला । उनके हाथी परस  
 पल्लव, पुष्प-पुष्प स्वभाव होय सिम-विभल  
 मान्य है । बहुत से लोग इनके कान  
 किण्ठक को मारते, न खाते, केवल  
 प्रदुष्ट प्रसव आहार से काम बसाते हैं ।  
 जैसे हाथी, गाय, घोड़ा धारि । धीरे-  
 धीरे काह का दुरोग कोय क प्रभाव सिम  
 काय नहीं बस खराब, जैसे—छिछाई  
 होय । परसुत इन दोनों से न आहू किण्ठ  
 काह का धारितल सिमि जीव का धरप-  
 रित हो, बाहे बन्धन-क जगदधर विचार-  
 हो का सम्यक का जगदधरल का  
 धारलसलन न माहो, बाहे विचार-  
 कारी इन्को केवल जान राखत विचार  
 हो का परिणाम सम्यक हो, परसुत नव  
 का धारितल न किसी रूप प्रदुष्ट को  
 धरत हो । उनको धारितल कायलस  
 नही । प्रदुष्ट को जगदधर भ्रमर हो । मोर  
 ह्रस्वधारि को विचारलसुधार को जगु-  
 ये कब हो विचारल तल न विचार  
 दिया है ।

[illegible]

श्रुति-सुधा-

## जीवन की सार्थकता

लेखक—प० बिहारी लाल शास्त्री काव्यतीर्थ

मोक्षमग्नं विन्दते अग्रप्रेता सख्यं वदामि वष इत्स तस्य ।  
नार्यमणं पुष्यनि नो सखायं केवलाधो भवति केवलादी ।

—३० १०१११७१३



योग है तो सब जीवों में शिरोमणि मनुष्य  
महागज का तो स्वर्ण पराब कुछ उपयोग  
होना ही चाहिए। यह प्रकृति कौशल का  
सब से उत्कृष्ट नमूना मनुष्य केवल इस  
लिए तो नहीं हो सकता कि उसके लिए  
कवि को कहना पड़े—

क्या कहूँ महाराज क्या  
कारे नुमाया कर गये ।

बी०ए० किया, नौकर हुए,  
पेन्शन मिली और मर बये ॥”

सबसे दिन गए विषय के हेतु'

नहो नही मनुष्य जीवन का अन्तर्द्वार  
काहें उद्गम है। जिससे यह शरीर लक्ष्मण  
हो सकता है बस इस (तपस्वी) शरीर का  
पहला उद्गम ज्ञान का अन्तर्द्वार करना है।  
बाह्य ज्ञान हाँ नहो! आन्तरिक ज्योति का  
जगत्-शाल-तपस्वी का साक्षात् करना,  
अन्तर्द्वार तपस्वी का ज्ञान, कथम ज्ञान, ब्रह्म-  
ज्ञान, बुद्धि काह्य, यह तपस्वि कि जिससे  
लक्ष्मण कहना है—

'तस्मिन् ह विज्ञात सर्वामिद  
विज्ञात भवति'

[illegible]

**“मोक्षमस्तु विन्दते सप्रचेताः”**

कृपे नाल से रक्षित बनव्य न्यार्थ प्रण

साक्षात् है, प्रकृति के दाग को स्वयं उजाड़ा है। उसे कमनीय कुसुम धीरे धुमधुर फलों के उपयोग का कोई भी धातुकार नहीं है। जिसने अपने जीवन को प्रकृत्यज्ञान को खोज में नहीं लगाया उसे प्रकृति की विभूतियों के भोग का कोई धातुकार नहीं।

'सत्यं वदामि वध इत्सु तस्य'

सत्य कहता हूँ कि वह उसकी मृत्यु है। वास्तव में उसका जीवन, जीवन नहीं है, वह मर चुका है।

‘नार्यमण पुष्यति, नो सखायम्’  
न तो वह बड़ू को पुष्ट करता है  
अर्थात् अपने आध्यात्मिक ज्ञान को बढ़ाता  
है और न मित्रों, पड़ोसियों, का उपकार  
करता है।

‘केवलाघो भवति केवलादी’

यह केवल साक्षात् है, जाने के लिए ही  
 बीता है यह केवल पाप है यह केवल  
 है। यह केवल पाप समान बीता का  
 मरणा केवल जाने के लिए यस जियो,  
 किन्तु जीवन के लिए साक्षात् और जीवन  
 यह जीवन है जिससे वे बहुमानना को  
 पुष्ट किया जाए। किन्तु वे बहुमानना को  
 मरमत्ती मरणा जाने और क्योंकि सब  
 बहुमाननी ही मरती हो सकते और मरने को  
 बहुमानना का बहुमान है। शास्त्रिक मुक्ति  
 मरणा जाने का बहुमान का बहुमान है।  
 यह यह मरती हो अपने शास्त्रिक को,  
 हिंस्र करो, सदा का उपकार करो,  
 हिंस्र करो का बहुमान करो। मरना, मरना

कुरीतियां

ले० स्वामी स्वरूपानन्द सरस्वती—प्रविष्टाता वेद प्रचार

नदा चाव का प्रसार, बुझपान की भरमार,  
क्या गरीब बरखार, साधु क्या न पुजारी है  
स्नान-स्निग्धा के माने, कसे बहकिया मनीषा  
शोर मारा अनेक खान, बेसो की गति मारी है  
रखे देवदा अनेक, बाके मरिचक रखे टेक,  
गरी मुक्ति न चिकेक पूजा ईश की विचारी है  
तो भी जाला नहीं खन, बनी नुस्खगानी की कन,  
रहे कलमे नहीं कबर खबर पूजा अभी जारी है

पराधी लख्खी है। बाप, माया, लिलचर  
 माया को चिखला को बाप की माँ मरने  
 पर लख्खी के काग म जोखना, लख्खी के  
 मुँह में बगलाने, लीन लख्खी के लिए प  
 लख्खी को मराने। रोहिणी को रोहिणी,  
 प्यारों को पानी, मुन्नी को शीजन, सीताओं  
 को बगल को बगल को बगलबनन लख्खी  
 मे मुन्नुके लख्खी का उखोले। हँइ-  
 हँइ लख्खी बाबिलि कल्ले के जन्तु क  
 शनि कल्ले के, उखल पक-पक लख्खी-  
 प्रखल पक लुते पर पणिन प्रखल वीवा  
 कल्ले है। हल्ल लख्खी लख्खी के मुल्ल  
 मे हल्ल पणिन कल्ले प्रखल्लि हल्लो है।  
 जीव पानी के लिए प्रल्लो को बगल-  
 बगलानी बगलानी। प्रल्ल हल्लो हल्ल  
 पिठल्ला वीवा है हल्ल वीवा वीवा सुकन  
 पल्ल मे काल कल्ले सुकन पल्ल पल्ल  
 हल्ल है। वी प्रखल पक लख्खी है।

**‘रहे जहाँ दीपक तहाँ निश्चय करे उद्योत’**

[illegible]

## ★ वक्त्र-सन्देश ★

## दण्ड और शासक

दण्ड विधान ही प्रजा पर शासन करता है दण्ड ही प्रजा का रक्षक है सोते हुओं को जगाने वाला दण्ड ही है। इसीलिए जानी लोग दण्ड की धमकी करते हैं। जब दण्ड विचार पूर्णक लागू किया जाए तो प्रजा को भ्रान्तित कर देता है और जो बिना विचारों दण्ड चलाया जाए तो सब और से राजा का विनाश कर देता है। —महर्षि मनु

किसी शासन की श्रेष्ठता जाचने के लिए उसकी न्याय व्यवस्था की निपुणता से बढकर और कोई धृच्छी कसौटी नहीं। —ब्राह्म

जिसके कंधों पर शासन का भार हो, उसे व्यक्तिगत पाप और दोष का विचार त्याग कर, जिस प्रकार भी हो सके सदा प्रजा का हित करना हो चाहिए, यही पुरातन राजधर्म है। —रामायण

ज्यों-ज्यों अपराध ऋक्ते जाये, न्याय को उभ होते जाना चाहिए। —बैन जानसन

पहले अपराध तो उनके हैं जो उन्हें करते हैं, दूसरे अपराध उनके हैं जो उन्हें होने देते हैं। —यामस फुलर

## सम्पादकीय

## जनता वजूहस्त को तलाश रही है

दिल्ली, हरियाणा, राजस्थान और उत्तर प्रदेश में एक साथ हुए बम के बमकों ने सारा उत्तर भारत हिला दिया है। बुन और भास के लोभने मासूम लोगों की कटी लाशें, बीसते बिचाइते शय से बरबराते नागरिक स्तम्भ धाकोश में तनी मानवता की मुकुटिया धातकभाव की बुद्धिगत क्लेशनी कह रही है। ४२ जगहों पर विस्फोट हुए और ८० लोगों के बीचते उड़। लैकनों लोगों की धामल होला पड़ा है। धातकबावियों ने इन बम विस्फोटों की एक समय में ही धनेक प्रान्तों में विस्फोटित कर भारत सरकार के सामने चुकी चुनौती दी है लेकिन उनके इरादे कुछ और भी हैं, वे चाहते हैं सारा उत्तर भारत हिन्दू सिल मुहसुद की धाम में कुलसने लगे। लाखों लोग इधर उधर जाते बाने तब जायें भासी ताराय में एकाएक धमाका का तबाबाला शुरू हो जाये। इस बढभमके में निपट दिखेसी ताकतों भी इस दिन का बेवकी से इतनाहार कर रही थी किन्तु उनके इराबों पर तो पानी फिर ही गया। उधवायो भपना हर हुपला पहले से और भी अधिक झूटा के साथ करते था रहे हैं। सरकार के सामने दो बातें बाकर खड़ी हो गयी हैं। पहली प्राथमिक बात यह है इस समय सिल हिन्दू दगों से बचा जाये, अन्यथा पुनःकलावाधियों के मनसूने बमवस् पूरे हो जायेंगे।

दूसरी—धातकबावियों के साथ झूट मुठभेद मोल लेनी ही पड़ेगी, क्योंकि इसके सिवा कोई चारा है नहीं। पञ्जाब उधवाय की खुनी होली में तबक रहा है परन्तु वहा हिन्दू सिल दगे नहीं हो रहे। न हो सकने की परिस्थितियाँ हैं। उसका स्पष्ट कारख हिन्दू सिलों के धावसी रिस्ते नाते, भारी दोस्ती, भासल का लेन देन है, जो उन्हें सामाजिक अनुभवता में बाधे हुए हैं। इन रिस्तों को परखते उभाने में लगे हैं उधवायो।

लोगोवाल और बाबल के इस्तीफा देने के बाद धकाली दल पर स्पष्टरूप से उधवायियों का कम्हा हो गया है। इस समय दो व्यक्ति उधवायियों की कम्हा के केन्द्र बने हुए हैं। एक मिडगवाने के पिता बाबा ओमिनरविह और दूसरे भरमुनर जेल में बंटे सिमरनजीत सिंह मान। उधवायो विषधर बावने जिल से पुरलतया बाहर का चुका है। वे बताया बाह्यते हैं इन बमकों ने कि अब सिल मेतुल हमारे हाथ में है और हम सरकार से बमों के जरिये बात करना पसन्द करते। ये सचमुच सरकार और गुप्तधर विभाग की पोस बोलने में पूर्ण सफल रहे हैं। जबकि सरकार को उधवायियों के दिल्ली तथा बुरे राज्यों में मुस धाने की निवस्तल बाबर मिल चुकी थी। धातकबाव के धातुकुतमल और तरीकों से निपटने के लिए हमारी पुलिस और गुप्तधर धर्मसिवा सफल नहीं, इससे स्पष्ट हो रही गया है। इन धातकबावियों के झूट प्रहार से भयभीती जनता उल बखहस्त की डूड रही है जिसका चिक छ सही को प्रभान भन्नी भी राजीब गांधी ने राजनीला सदान में किया था। उस गम्भीर गबना की सुनना बाह्यती है

जो निर्वाचन के दिनों में हमारे बुवा प्रभान भन्नी ने गुजाया था।

देश को धराकम्हा से बचाने के लिए सरकार को उनी भाषा में बात करनी पड़ेगी जिसमें उधवायो बोलते रहे हैं। वह भाषा धन्क की नाम से और बाबल के जवब से निकलती है। हमारी पुलिस, और सुरक्षावाहिनी की कम्हके जग साथी हुई नहीं हैं हमारे जवानों में बीरता तो नहीं गयी है, कभी बीरता बाक नही हुई है। कभी धगर है तो हमारे नेताओं के पलत होसलों की है। चम् मुठुटी भर विरिधियों की धमाक से डर जाने से काम नहीं चल पायेगा। सरकार में सभक से हो लिया है। नरम रस भपनाकर भी क्या मिल पाया, पञ्जाब समस्या पहले से भी और अधिक कलतलाक हो गयी। बैसे भी लोहे के जब तक दोनों तिरगे गम न हों उनको जोडा नहीं जा सकता। सरकार का लोह विरा ठका रहा और धकालियों का गम है वे छुट चुकने की बजाय और भी धलग हो गये। पञ्जाब की समस्या में उग धाये कोड़े का धाररेसन म्बु स्टार के रूप से सकार से किया। लेकिन सरकार तब भी समक नही पायो इन कोड़े का विष कहा तक फैल गया है। पूरी बाह में और धनेक कोड़े फिर ने निकल धाये। सरकार केवल सरहम लगाती रह गयी। और अब जब ४२ बम दो दिन से फूट गये, देश के बीच भरे स्थानों में बाशों का व्यापार हुआ। सुरक्षाकर्म नेताओं की बौकसी में लेने रहे धाम जनता बाबल मिलती रही। विरोधी नेता भी बावयेयो ने सारा इतनाय सरकार पर लनाकर राजनीतिक लाभ उठाने की कोसिख करनी शारम्भ कर दी। इस समय तो उन्हें भी चाहिए कि देश व्यक्तिगत दलगत स्वाबों से बही ऊचक है। हमें केवल प्रशासन की मजक उठाने का हक नहीं है, बल्कि धपनी योग्यता और भुनभुन कुशलता से राष्ट्र में उठी धमकर समस्या के निदान में सहयोग देना भी कर्तव्य है। हरियाणा उत्तर प्रदेश, राजस्थान और दिल्ली के इतने स्थानों पर बम फूटने का मतलब है कम से कम पांच तो धावमी इस बढभमके में शामिल हैं। जाहिर है वे उत्तर भारत में फले पड़े हैं, उनका कोई न कोई मुख्यालय जरूर रहा होगा जिसके धावये से उन्होंने १० और ११ मई के दिन चुने। इस धन्की उधवायियों की सहर बाहर में फंसी कोब ने भारत की नीच से जो पलीता लगाने में सलगन है, जरूर कोई न कोई सुराम छोडे होंगे। जासूसी विभाग की धपनी दलता का परिचय देना चाहिए। काल का धबक बीडला हुआ धबक जन के प्रथम सपाहल की तरफ था रहा है, उधवायियों को बह बयें गांठ धबकत तबकहाएगी, उनके कोर डर होनी से पुर्ब सरकार को विष दन्त तोड देने चाहिए। जो इन्के हुक्मे निर क्रिरे रह्यें उनसे निपटना फिर और भी प्रभान हो जायेगा। इसलिए प्रजा के हित में धब प्रभानभन्नी को राबदण्ड हाथ में लेना ही होगा, अन्यथा हालत और भी गरीन होती बायेगी।

—बसबाब सुबायु

## “नव जागरण के पुरोधे” पुस्तक पर मेरी आपत्ति

स्वामी रामेश्वरानन्द



श्री डा० भवानीलाल भारतीय ने नव जगत्‌रत्न के पुरोधा ग्रन्थ की बड़ी प्रशंसा की है। प० लेखराम से लेकर जो भी श्रद्धि के जीवन छपे हैं—से उन सबसे उत्तम माना है। यह लिखने इस सज्जन को लज्जा नहीं प्रायी जब कि वह—न जीवन शरित्रो के प्राधार पर ही है। इसमें उत्तमता कहाँ से प्रा गई। अस्तु

(१) इससे प्रथम न्यूनता तो यह है कि इस पुस्तक का नाम नहीं लिखा यह है क्या यदि ऋषि का जीवन भरित्र है तो जीवन भरित्र लिखना चाहिए था

( ) इसमें ऋषि का स्व लिखित जीवन  
परिच नही छापा जो कि सब से प्रामा  
णिक है ।

स्वायत्त की कहते हैं मैं तो तब तक स्वयं  
 देवमाना ही मानता हूँ कि आप स्वयं ही  
 ही देवता हैं। दूसरे को मुझ की रीति को सिखा  
 भी मैं मठा सिखा सिखा सिखा करके  
 कहते हैं स्वयं स्वयं ही के लोको को  
 मुझा भी बचने के लोको कहते हैं। फिर  
 भाई मैं क्या मैं मेरा स्वयंभीन करके  
 य मभी मैं क्या को नको सिखा भी  
 सिखा दे य मैं। मुझ को यमुझ को  
 कहते का आशय काशय कहते हैं प्रथम  
 कहते का प्रथम य य का भाव है। सिखा बापि  
 य भी कहा करके य मुझ सिखा प्रथम  
 फिर का मैं। भावो सिखा भी सिखाते हैं,  
 मठा भी यो दाता बाबा की सपरिभाष्ये  
 मठा की दाता हो गए। सिखा सिखा  
 सिखा प्रथमभावा भाव सिखा को के पने  
 को इन्ना का प्रथम का प्रथम देता रहा  
 को प्रथमभावा का सिखा की पदाहा रहा

श्रीर भवार्न लाल कहते हैं मूलशर  
ने निरुष्टु निरुक्त और पृव भीमासा प्रादि  
प्राप्तो की पढने की इच्छा व्यक्त की । पृ०  
१६ । ये स्वामी दयानन्द जी के विपरीत  
निसते हैं कि इच्छा व्यक्त की और  
स्वामी जी कहते हैं कि मैं पत्ता रखा ।

धामे स्वामी जी लिखते हैं 'उस समय मैंने निश्चय किया कि अब विवाह किए ज़िन्दा य कोश न छोड़ेंगे। न किशोर बच्चे का शाजा मिलेगी और न माना जाता मरे ब्रह्मचारी रहने पर प्रसन्न होंगे। तब मैंने यह मन नें सोच विचार कर यह निश्चय ठाढ़ा कि अब वह काम करना

जब घर के लिए बच्चों, वह निरवध मैंने किसी घर प्रवेश नहीं किया एक मास में विवाह की तैयारी ही हो गयी। फिर मुने पुत्र स० १९०० के वर्ष मे शीघ्र के बहाने एक कोठी बाय मे लकर घर छोड़ कर शाम के समय भाग उठा। सिपाही से कहला भ्रजा कि एक मित्र के घर बसा हूँ। बाढ़ कोश एक एक प्राम बा। बहा जाकर रात्री को टहरकर दूसरे दिन गहर रात्री स उत्तरकर १५ कोष बसा।

शौर मर्यानीलास जी मिलते हैं कि स्व कथित आर्य बलात्कृत मे दवानन्द जी मिलते हैं कि 'बार कोण चम के के एक ग्राम मे पड़े थे और वहा के हनुमान मन्दिर मे रात्री निवास किया वह ग्राम बडा रामपुर था। इसी ग्राम के आश्रित मन्दिर मे निवास आदि की पूरा सुविधा है। दूसरे दिन प्रहर रात्री उठकर पण्डित कोश चले।

श्रीर स्वामी जी कहते हैं, चार कोश पर एक गांव था। वहाँ ठहरा श्रीर भवानी नाम की कहते हैं कि स्वामी जी एक गांव के हनुमान् मन्दिर में ठहरे श्रीर वह गांव बड़ा रामपुर था। बताओ किस की बात सच माने स्वामी जी की या डा० साहब की।

यह सामान्य नमर ठट्ठारा में पड़ने-  
 ठट्ठारा कोस दूर है। स्वामी जी स्वयं कनन  
 जी रामपुर कीसे लुंते। जब कि रामपुर  
 ठट्ठारा में प'उ' गीह कोस दूर है। सोचने  
 पर लगे हमारे माइदेविन कोस के तिलों के  
 विपरीत लगे गीह दानमन्द की की कन्य  
 तिलि कीसे विपरी। इसका तो कही पण  
 है कि कानो में परहार करिब बड़ा  
 हो जाए। और यही कनन कथानामुनार  
 समर स्वामी दानमन्द की की कन्य तिलि  
 बाढ़ो माल की कनन जो बाजे दस स्वामी  
 की काहू कनन कीसे दस्य होना कि  
 बिबाह हो गइवन हो। कही की बिबाह  
 हो गइवन कि पणन की बिबाह होना,  
 समर बा जोर स्वामी की बिबाह हो कि  
 माल के भिन्नमते है। और बिबुन  
 माल के मेले पर कही बा कछने है।  
 जसकि पाविन के परमत्त कनन माल  
 होना है। कनन कथ माल स्वामी की  
 बायस दाय में रहते है, और जी कनन  
 कोट बायस में रहते है। फिर कनन कथ  
 माल सिद्धु बायस, और के बाजे के पिय  
 के लगे कोस में के कोस। कनने के

१८८ के अन्तिम दिन मरते हैं। म-प्राण  
पर से बैशाख के अन्तिम दिनों में निकलते  
हैं। एक मास सायले प्राण में रहते हैं।  
फिर वर्षा ऋतु के दिनों में कोट कागडा  
घोर अन्त में सिद्धपुर के कार्तिकी मेले पर  
चले जाते हैं।

स्वामी ब्रह्मानन्द जी तो बिलकुल हैं कि  
१५ वर्ष की अवस्था के भारनम तक सम्पूर्ण  
यशुदेव कुछ-कुछ लम्बे वेदी के भाग और  
गर्द कपासी की भाँति व्याकरल के रूप  
में ही नये के धर्माश्रय लिये थे। और  
आलोच्य की कहते हैं कि यशुदेव का वही  
एक मुसलमान की देवाय बना। जिसने  
मैनाहा वाली आलोच्य जनमा लकर का  
मुसलमान ही। और पिता की प्रवृत्ति अपने  
पुत्र को सम्पूर्ण निष्ठ कर जीव दान  
आपसी आग्रह ब्रह्मने की थी। हैं मुसल  
माहता है कि यशुदेव के किन अध्याय में

का वर्णन है। क्या आप ने इसा खोजने  
धरम केन स्वामी जी ने समस्तुं सुखेन  
आय केने के कुम भाव पर धरम स्वता-  
मनी नाति भावराज के केन वरु हित  
मने। आप केने कोना हित करि मने  
पहवाय मग चित्तने। कैमक वासी भागु-  
तुणी भवमनुज सुख को खोजे है। ध्या-  
मक स्वामी सुख कोना हित करि मने  
ने मना वासी है। धरम वरु तुणी मने  
वसुतु करर कहै तहा है। बासी कोने  
तो कुसु तहा हो। स्वामी जी को वरु  
की कहुरा तहा स्वामी जी का वरु  
धरामन कहै फिगत। तहा पुं है।  
धरामे स्वासी दयानन्द जी को नर जाय-  
र के पुगेवा होत सासतु कुसुतु  
है। पुगेवा पुं होतु को बहते है। मी-  
ताका पुगेवा कारने के वरीतो को बहते  
है। ने मने वरु कहै, स्वामी जी को  
पुगेवापुगेवाये नचि ने। उनको  
पुगेवा पुगेवा कर वसातु पुगेव कहत।  
मान है। तना वरु मने वरु मने  
कहते पोरारी को नहते है। धीर स्वासी  
भारतम जी को मधुविमिदधुतु विमरक  
य स्वी फिगत। तहा हुकर मने  
विमरक वासुतु का राजकुमार धिदुं की  
कुनी लली मयेपरा। वरु कुमुम  
धरम कुमुम की सोरु कु सो। तना  
तहा वरु पुगेव राजकुमार को नचि  
कर, तहा वरुका स्वासी वरु के विमर-  
क मने वरु है। मधुविमरक

[illegible]

होस गवार झूठ कपट मारी ।

[illegible]







**डा० प्रबलत बेदाशकार का क्या**  
 प्रायस्समाज को राजनीति में भ्रम सेना  
 बाहिए ? जिस को कितने में भरा है । क्या  
 राजभासे जो प्रायस्समाज को सर्वत्र राज-  
 नीति से ऊपर रखकर हिन्दु समाज के  
 लिए वन्दनार्थ काय कर रहे हैं । क्या  
 प्रायस्समाज क्या साम्प्रदायिक हये वा क्या  
 प्रायस्समाज के सावर्जनिक प्रजा के  
 गलती प्रथम के रूप में ईमानदारी से  
 हिन्दु समाज को सुदृष्टता क लिए दनका  
 प्रकाश कर रहे हैं । इसी लिए के  
 करीको प्रायस्समाजियों द्वारा हिन्दुओं के  
 लिए बलिबन बनोय है

मेरा सुविचारित मत है कि १९८० के ससयी निर्वाचनों में राष्ट्रीय एकता और प्रत्यक्षता के लिए शासनाधीन जी में कांग्रेस (इ) को कार्यसमाज का समर्थन देकर एक महत्त्वपूर्ण सामयिक कार्य किया है। १९८७ में भारतीय जनसभा के बादगी लोक से स्वयं प्रत्याधी के रूप में लोक निर्वाचित हुए थे। उस समय उन्होंने कार्यसमाज का समर्थन जनसभा और भारतीय फ्रंटि दल को दिलाया था। १९७७ में जी की शासनाधीन में जनसभा पार्टी का समर्थन किया था।

किन्तु जनता पार्टी और उसके वरमान भाजपा घटक ने ३ वर्ष में राष्ट्र विरोधी और मुस्लिम-वफादी ईसाई पुष्टीकरण के भी कार्य किए उससे श्री भाजपेयी का भाजपा वन काहेल (६) की कार्यन काफी था श्री दीय वन गया। क्या अल्लसयक धायोन के निर्माण ने श्री भाजपेयी और उनके घटक दल के ९९

## रामगोपाल शालवाले और इन्दिरा कांग्रेस



सातवें शताब्दी की मूर्ती के क्या विवरण  
मार्गों के रूप में मी बाबादेवी १७०० मी  
मार्ग के बीचों बीच बन गए थे? सात  
पत्थरीय मूर्तियाँ हैं, १००० की सातवें शताब्दी  
सिक्किम विभाग के सिक्किम राजका  
हारा विवेक लोकदमा में पत्थर मूर्ती  
विस्थापना था? १७०० में जो प्रम  
कनास का कार में सातवां पत्थर के  
सबम (१५ मी) का उपकरणों में? फि  
का बाबादेवी १७०० का १०० मी की  
बाबादेवी में पत्थर का मंदिर के शांत मी  
मूर्ती सुनाया? पत्थर विवेक मार्गों के रूप  
में मी बाबादेवी का मी बाबादेवी पाठ-  
का सातवां लोकदमा था, फिक्किम वि  
स्थापना मी में पत्थर के कार बाबादे  
विस्थापना पर बने कर रहे। उत इस  
१७०० पर १०० मी बाबादेवी के बाबादे  
सातवें शताब्दी में पत्थर बाबादेवी का  
मंदिर के शांत मी बाबादेवी का मी  
मंदिर में फिक्किम की मी मंदिर के शांत  
मार्ग की फिक्किम मी बाबादेवी का बाबादेवी  
के मंदिरों में फिक्किम के १००० मी  
मंदिरों के प्रतिनिधित्व के बाबादेवी  
मंदिर की बाबादेवी मी बाबादेवी मंदिर बाबादेवी  
हृदय पर पर सातवें शताब्दी के कारों की

इन प्रतिनिधिमण्डलों का नेतृत्व मैंने ही  
 प्रायः किया था ।

१९८० के निर्वाचनों में बिजयी होने के पश्चात् भीमती दीवरा सायी को बाध्य होकर बर्खास्त मुसिय विध्वंसिवाद्यम को अल्पसंख्यक स्वरूप देना पडा तो साधवा के एक गी सासद ने इसका बिरोध भीती किया। भीमती सायी से १९७६ में श्री बाटवी की थी। से दस विध्वंसिवाद्यम को अल्पसंख्यक स्वरूप दिये जाये की ओर बिरोधी थी।

भीमती मायी की हत्या से एक माया  
पुत्र के भी बाजपेयी मायी रामसे  
मगनाली प्रहलानाथसेवी सिकन्दर बल  
प्राप्ति मायना के नेताओं के वक्तव्य बल  
स्तान प्रकाशो बल और फाक्स धनुष्वा  
के सम्बन्ध न दिए हुए हैं। भीमती और  
मायी की हत्या के साथ किसी ने सिद्ध  
की हत्या होने पर भी बाजपेयी ने कहा  
कि १९७० के सम्बन्ध सिद्ध किसी ने  
नारे बये हैं। किन्तु तो बये मन्त्रि  
एव गुजराती की हत्या के बारे में कभी  
जानने न दो एकाई ही बनाया और  
मायना काफ़ीतों हरस माया कम्पा

हस्ता से पूर्व न आपने पञ्चाव जाना है  
उचित समझा ।

यत भाषणा बंसी हिन्दू विरोधी पार्टी को सबक सिगाने के लिए शासनाभि की द्वारा कार्यसमाप्त का इका को सन- र्गता के श्रोमो की रहा। की शास- नाभि ने श्रोमो बखराब मजदूर का सबैव की मॉडि रह बार की सन-नयन के समयन बिना था हिन्दू हिन्दू राष्ट्र एव हिन्दू राष्ट्र के सवर्गक इव म्हाल नेता का हिन्दू राष्ट्र का कथास समाज भाग एव एव की पूरी सविन स विरोध करता है।

गुरुकुल महाविद्यालय ततारपुर  
(गाजियाबाद) उ०प्र० का  
विद्यालय भवन ध्वस्त

हायपुत्र के १ मीय मूय नडायन पर  
सिखल गुरुमन महाविद्यालयन ठाकपुत्र कावे  
विद्यालयन मूयन भङ्गपुत्र लुआन कावे हे  
नडठ होवा है। तिस के छात्रो की परवाई  
हे छात्रा लम्बो होई है। बच्चे मूय पे  
वैठकर होई बयन परवाई का। काय लुआन  
करा है। बरीआआ आनठ है। होर छात्रा  
सब के सिखिलन परवाई गुरुमन हो। सबे। बयन  
बाणी महापुत्रपुत्र सङ्गको के निवेदन हे कि  
सबिक के सबिक लुआनको सेवर गुरुमन के  
नयन निवासी हे। सबिक लुआन के  
गुरुमन के की कपटी का। निवासी लुआनसत  
बयनया पलख सयनबाकर कर सङ्गहे है।  
बासा है। बासा लम्बोयेये लम्बोयेये ।

**वसुधैवकुटुम्बकम् का पता—**

वर्षपाल आभार  
आचार्य गुरुकुल महाविद्यालय वलारपुर  
बाबूल (नाबियाबाद) उ०प्र०

(पृष्ठ ४ का लेख)

[illegible]

पर विह्वल होकर विचार किया। धर्मात्मा प्रशंसा की है। रामचारी सिंह हिनकर का उत्तेजक किया। हिनकर ने स्वाधीन दशानन्द जी के काम की आलोचना की है। फिर ब्रह्मसमाज के प्रमुख कुमर दत्त के सम्पादन में पत्रिका का गठन किया है। राम कृष्ण परमहंस विवेकानन्द की आपने श्रुति प्रशंसा की है—

रामकृष्ण मिशन तथा उसके छात्रा-  
यक स्वामी विवेकानन्द के कार्यों का  
उल्लेख किया जाना आवश्यक है। वस्तुतः  
परमहंस रामकृष्ण ने जिस आध्यात्मिक  
साधना को अपने अनुभव में लाकर अपने  
श्रोतों में स्फुट किया।

यह ठीक एव मुनिस्वभाव के सर्वत्र  
पुनक आस्तिक्य तथा आध्यात्मिकता का  
एक ऐसा आधौकिक भाव था। जिसे धनु-  
मुनि का विषय तो बताया जा सकता है।  
परन्तु किश पर बाद-विचार की निष्प-  
त्ति का, परमहंस केव नवमि लौकिक  
दृष्टि से विस्तित नहीं है। किन्तु आध्या-  
त्मिक दृष्टि से उनकी आत्म केतना अपने  
अपनी योग्य पर उदा ही प्रतिबिम्बित  
रखती है। अतः धनुर्मुनि के आध्यात्मिक

नरेन्द्रनाथ हल ने ईश्वर अनुभूति का साक्षात्कार किया था। तथा यह अनुभव किया कि उनके गुरु वर्ग के साक्षात् विग्रह हैं। विवेकानन्द के रूप में प्रकटवा लेकन नरेन्द्रनाथ हल ने दिन-दिनमें में हिन्दु धर्म और सम्प्रदायी विचार वैचल्यपूर्ण फलदायी इस की कथा ही पुनर्क है। पृष्ठ २२, २३ कथना ने बताया था।

[illegible]

भाषने लैकों प० धीर बहावे हैं । जिसका कोई मतलब ही नहीं जब प्रापण इतने पृष्ठ ब्यर्थ थिये । स्वामी दयानन्द जी का जीवन परिचय जो सब लेखकों से प्रामाणिक है उसे न सिध्दा और दुनिया भर के लोगों का जीवन परिच सिध्दा ने कदा एक मुक्ति मुक्त है । जिसका जीवन परिच सिध्दा का रहा है इसके साथ उम्मीद कोई कमलान नहीं है ।

बीर नहीं वह मुलुक स्वामी ब्यागम  
 का बीषम बरिह है। तो हइ मुलुक  
 का मुख बानीत करये कोनो रखा है।  
 कर्नौक हइ मुलुक का प्रकाम परी-  
 कारिणी ब्याम नै किहा है। बीर पर-  
 कारिणी ब्याम नहि ब्यागम की अपनी  
 कर्नौक के बनी है। फिर हइना मुख का ?  
 ईसाई कर्नौक बार्निबि को बोर है मुख  
 पर ब्यागम गिनुकम निस्तिरि कर रहे है।  
 एका हइ मुलुक की नि ब्याम का बीषम है  
 पणन नै निस्तिरि करि बार्निबि । बीर  
 नहि ब्यागम के बीषम को इतने बंधु  
 ब्याम नै केने ब्याम ब्याम ब्याम बरीदकार  
 करती है। केन फिर—

X X X

**मन्त्री जी राधाकृष्ण धार्य**  
 उपसन्धी —, मा० भूषणन्त्र जी  
 " , मनोज कुमार धाय  
 कोपाध्यक्ष —, राजाराम वशीव  
 मेळा निरीक्षक — धामन्त्र स्वस्वन्त्र सिंह  
 जी बरिमात्र  
 पुस्तकाध्यक्ष —, सुन्दरदास जी धार्य  
 द्विवेक







**आर्य जगत् की शान**  
**२०० बिस्तर वाले निर्माणाधीन**  
**नेत्र चिकित्सालय**  
 (अनुमानित लागत दो करोड़ रुपये)  
**के लिए दिल खोलकर दान दीजिए**

दान की राशि आयुक्त अधिनियम जी० ८० के  
 अन्तर्गत कर मुक्त होगी।

सारा हान बैंक/मनीऑर्डर/बैंक ड्राफ्ट द्वारा

मश्री, माना चन्दनदेवी आर्य धर्मार्थ नेत्र चिकित्सालय,  
 सी०-१ जनकपुरी, नई-दिल्ली-१८ के पते पर भेजा जाए।

दानदाताओं के नाम चिकित्सालय की शिला पर  
 अंकित किए जाएंगे।

निचे एक

राजगोपाल आलवानी	सूर्यदेव	महाशय सर्वपान	योगप्रकाश आर्य
सरल चिकित्सालय	प्रधान दिल्ली	प्रधान	मन्त्री
एक प्रधान डा० डा०	आर्य प्रतिनिधि	आर्य केन्द्रीय	महाशय कुन्तीलाल
प्रति० सभा	सभा	सभा	केरि० हु०

सौजन्य से महाशियाँ नी हट्टी प्रा० लिमिटेड ६/४४ भोतिनगर,  
 औद्योगिक क्षेत्र नई दिल्ली-११००१

**केवल ५० रुपये में तीन वर्ष तक**  
**हर सप्ताह पढ़ते रहिए**

- ☐ क्या आप ज्ञान, धुनि, तपस्वी, योगियों की धर्मत वासी पढ़ना चाहते हैं ?
- ☐ क्या आप वेद के पवित्र ज्ञान की सरल एवं मधुर शब्दों में जानकारी चाहते हैं ?
- ☐ क्या आप उपनिषद्, गीता, रामायण, बाह्याष्टकम् का आध्यात्मिक सन्देश स्वयं सुनना और अपने परिवार को सुनाना चाहते हैं ?
- ☐ क्या आप अपने शूरवीर एवं महापुरुषों की शौर्य गाथाएँ जानना चाहते हैं ?
- ☐ क्या आप महर्षि व्यासजी की वैचारिक क्रांति से आत्मचेतन जागृत करना चाहते हैं ?

यदि हाँ तो आइये आर्यसन्देश परिवार में शामिल हो जाएँ।

केवल ५० रुपये में तीन वर्ष तक हर सप्ताह पढ़ते रहिए। साथ ही वर्ष में चार अनुपम भव्य विशेषांक भी प्राप्त कीजिए।

एक वर्ष केवल २० रुपये, आजीवन २०० रुपये।

प्राप्ति स्थान—

**आर्यसन्देश साप्ताहिक**

१५, हनुमान रोड नई दिल्ली-११०००१

**उत्तम स्वास्थ्य के लिए**

**गुरुकुल कांगड़ी फार्मसी,**

**हरिद्वार की औषधियाँ**

**सेवन करें**

The advertisement is a hexagonal grid containing images and names of various medicines:

- ट्रिफल** (Trifala)
- गुरुकुल चाय** (Gurukul Chai)
- भीमसेनी सुरमा** (Bhimseeni Surma)
- पायोकिम** (Payo Kim)
- ओ३एम** (O3M)
- ओ३एम** (O3M)

At the bottom, it says **गुरुकुल कांगड़ी फार्मसी हरिद्वार**.

खाला कार्यालय—६३, माली राजा केदारनाथ,  
 फोन : २६६८३८

बाबडो बाजार, दिल्ली-६

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा १५ हनुमान रोड नई दिल्ली ११००१५ के विरूद्ध डा० सर्वपान द्वारा सम्पादित एवं प्रकाशित तथा  
 दैनिक प्रेस, माली नं० १७, कौलाचलनगर, दिल्ली-११ ने मुद्रित रवि० नं० डी० (सी०) ७५६

साप्ताहिक

ओरम्

पुस्तकालय  
६, म. गांधी विचारवाचा  
हजिद्वार

कृष्णजी विश्वमार्गम्

# आर्य सन्देश

मूल्य एक अक्षि १० पैस

सर्ग ६ अक्ष २०

रविवार, २६ मई, १९६६

आय सप्ताह १९६०=१३०५३

अंक २०४२

वर्षान्तमात्र—१९६१

## पंजाब के हिन्दू नेता प्रधानमंत्री श्री गांधी से मिले श्री शालवाले ने पंजाब की स्थिति पर जापन प्रस्तुत किया

पंजाब के हिन्दू नेताओं ने आर्य सार्वभौमिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री रामगोपाल शालवाले के नेतृत्व में प्रधानमंत्री श्री राजीव गांधी से भेंट की और उन्हें पंजाब की परिस्थितियों के संबंध में एक जापन दिया। प्रधानमंत्री जी ने शिष्टमण्डल के साथ अपनी लम्बी बातचीत में आस्थावान दिया कि पंजाब में समस्या के समाधान में पंजाब के श्रमसम्पत्तियों के हितों और देश के बहुमत की भावनाओं का पूरा ध्यान और सम्मान किया जायेगा। उन्होंने यह भी प्रकट किया कि पंजाब में उपवासियों के साथ कोई से लोभ है सभी विपक्ष उनके साथ नहीं है।

शिष्टमण्डल ने निम्न जापन प्रधानमंत्री जी को प्रस्तुत किया—

१. पंजाब के किसानों नेताओं की शिष्टमण्डल खाद्य फंडेशन से आन्वेषण हटाने की घोषणा दिल्ली में हुई जिसका घटनाओं की जाच के बाद के उपरान्त उपवासियों के हितों के काफी बड़ है। उन्होंने इसे अपनी विषय सूचना है जिससे वातावरण खराब हो गया है।

२. श्री प्रमोदसिंह की पंजाब में केने के उपरान्त उनकी की जाने के अनुसार जो कुछ हुआ, वह केवल उपवासियों और किसानों की सुख करने का राह है। जिसका परिणाम श्रमसम्पत्तियों के लिए शांतिपूर्ण विवाद हुआ।

३. दिल्ली में हाल ही में उपवासियों ने जो हिंसात्मक विरोध किए हैं, इसके पीछे किसी विशेषी भावना का हाथ हो सकता है। इसके लिए

सरकार को विशेष नीति निर्धारित करनी चाहिए।

४. पंजाब में पुलिस तथा प्रशासन के विषयों का बहुत है, इसलिए वहाँ के हिन्दुओं के साथ कोई न्याय नहीं हो सकता है। इसलिए पंजाब के राज्य सभामंडल के लोगों को भी प्रशासन तथा पुलिस में पूरा प्रतिनिधित्व मिलना चाहिए।

५. लोभोग्रास सहित सभी प्रकार की नेता प्रधान श्री श्रीमती इन्दिरा गांधी की श्रद्धा की निन्दा करने की भी चेतावनी नहीं है इसलिए लोभोग्रास से सतृप्तसिंह और नेपथ्यसिंह के घर जाकर उन्हें भद्रावलि देते हुए सहीपों की सजा दी है।

६. भूलपूर्व विवेक सभी सरकार स्वस्थसिंह ने लखन से प्रकाशित एक कथन से शोक कहा है कि बिहरा-बासा तुम आर्य नहीं आ। उसने

५ व्यक्ति मरवाए तो पुलिस ने ६५ मार दिये। उनका यह कहना है कि धानपुर प्रस्ताव पुष्कलाबादी नहीं है तथा प्रधानमंत्री और राष्ट्रपति में गहरे मतभेद हैं जो राष्ट्र के लिए बाधाक है।

७. चण्डीगढ़ फाजिल्का और बबोहर के विषय में वहाँ की जनता की राय लेकर निर्णय किया जाये। किसानों का निर्णय वहाँ की जनता पर न बोपा जाये।

८. उपवासियों के विरुद्ध सख्ती से नियन्त्रण के लिए सरकार कोई ठोस कानून बनाये ताकि देश के जन-जीवन और सम्पत्ति की रक्षा हो सके।

९. यदि सरकार ने कमजोर नीति अपनाकर किसानों को प्रखन करने की नीति का परित्याग न किया तो देश का बहुमत सरकार को

मर्मण न देगा बल्कि कुलकर विरोध करेगा।

१०. वर्तमान नीति में परिवर्तन करके पंजाब के राज्यपाल श्री अर्जुन सिंह के स्थान पर किसी योग्य व्यक्ति को आसीन किया जाये।

११. पंजाब के आसने में जो भी बातचीत हो, उसमें पंजाब के सभी भागिक व राजनैतिक समुदायों व समाजों के प्रतिनिधियों की भी सम्मिलित किया जाये।

शिष्टमण्डल के सदस्यों के नाम—

१ श्री रामगोपाल शालवाले, प्रधान सार्वभौमिक आर्य प्रतिनिधि सभा, दिल्ली

२ श्री गोपीचंद भाटिया, प्रधान मुखिया मंदिर, अमृतसर

३ श्री रामलुभावा प्रभाकर, मनी मुखिया मंदिर, अमृतसर

४. श्री जगदीश तामरी, प्रधान हिन्दू विवेचना पंजाब

५. श्री सत्यनन्द मुख्तार, उप-प्रधान सार्वभौमिक सभा, लुधियाना

६. श्री किशन कुमार, आर्य-समाज अटिन्दा

७. श्री प्रकाशचन्द मेहरा, प्रधान फास्की मण्डित अमृतसर

८. श्री मोलानाज विलाकरी, आर्यसमाज सभिनन्दन अमृतसर

९. श्री नन्दकिशोर, मनी आर्य केन्द्रीय सभा अमृतसर

१०. श्री एस० के० सप्रवाल एन-वोकेट, जालन्धर

११. श्री तुलसीदास बैनानी, प्रधान व्यापार मण्डल, लुधियाना

(विष पृष्ठ १२ पर)

## पंजाब के आर्य नेता की

### दुःखद मृत्यु : शोक संवेदना

आर्यसमाज आचार अज्ञानद भ्रमत्वर के पूर्व प्रधान सार्वभौमिक आर्य नेता श्री योगप्रकाश देव की आर्य-समाज मृत्यु पर आर्यसमाज हीमान हस्त में बहु श्रद्धा की सभा गहुरा दुःख और शोक व्यक्त करती है।

श्री योगप्रकाश जी पंजाब के उच्च और समुचित से से जो बड़े विद्वान् और वैद्य तथा समाज के लिए बड़ा से बड़ा बलिदान करने के लिए देवारा द्यु कर रहे थे।

यह सभा पंजाब सरकार से उन

की संविभ मृत्यु को क्षम्यता जांच करने की मांग करती है। वह सभा अनुभव करती है कि योगप्रकाश देव के विफल होने से जो स्थान खाली हो गया है उसका भरना नितांत परममहत्त्व है।

वह सभा परम-मिता परमात्मा से उम्मीद आत्मा की शांति तथा दुःखी-आधिकारिक जनो की सौख्य प्रदान करने की आशा करती है।

सभी

सूचक मृत्यु

## सतसंग वादिका

(समने) बाह्य तथा आन्तरिक सप्रभ में (बह्मा द्वाणि) बहुतेको को संगम बास (विष्णु) विविध कर्म सुखसाधनपूर्वक करने वाले (सुप्रभम्) सुभ कर्मों से भेस करने वाल तथा सुप्रभ कर्मों का त्याग करने वाले को भी (पवित्र जगद्गुरु) सब का पालन करने वालो बुद्धकास ध्यान वाले से रख लेता है। (देव-य) दिव्य चमत्कारां प्रभु क (कायम्) इस काय का (पदम्) है। यमक द्वारा सुख कर भयन जीवन व्यवहार को बदल। जो ध्याति (महिम्ना ह्य समान) कम मह-भण्ड विष्ठात के कारण बड़ी धन्य है जो रहा था, सम्मान प्राप्त कर रहा था। (स) वह (ध्याता) ध्यात्र (समाप्त) मरा पडा है।

मृत्यु क विषय में धनक विद्वानों ने धनक बातें कही हैं। परन्तु मृत्यु जैसी धार्मिकीयक बहुतों का वि-बाह्य न सभी मनुष्यों के लिए बनाया है—हम निश्चित हैं। क्या यह मृत्यु मृत्युप के लिए अभि-वाह है? बिचारी कीविष्ट तो लगेगा कि बाह्य प्रणीत के लिए बरतान है, अभि-वाह प्रणीत—

मृत्यु न एक ध्यान-व है, परन्तु मृत्यु का एक ध्यान-व है। इसीलिए ध्यान-व रखा गया है, ताकि वह जीवन का कठिनाइयो को खड़े करे।

वैदिक सङ्ग्रह में मृत्यु की भी-वना गयी है। मृत्यु तो मानो जीवन वृक्ष में लगा हुआ सुन्दर फल है। जीवन और मृत्यु दोनों ही स्वस्थ समान कारणों से प्रेरणादायक माय हैं। रात्रि स ही तो धरणादायक होता है और धरणादायक न ही रात्रि किसी होती है। जीवन मृत्यु रूपी रात्रि का प्रथमोदय है।

प्रश्न कभी-कभी मन में छटता है, यह मृत्यु क्या है? हम मृत्यु को जानते नहीं हैं, क्योंकि हम मरे नहीं हैं। जो मर चुका है। यह मृत्यु का स्वरूप बतलाने धारणा नहीं है। यह मृत्यु प्रत्येक के पास धारणी। ध्यात्र जिसका चन्म हुआ है, कल मह धन्य है। परन्तु कोई नहीं बलागा कि मृत्यु क्या है?

वैदिक विचारधारा क अनुसार मृत्यु का अर्थव्यक्ति ही नहीं। मृत्यु क वास्तविक स्वरूप को समझने से यह विद-वाती है। गणितज्ञाःवर्षको को समझने के लिए इसे यह ध्यान रखना है, कि धारणा और शरीर व-वस्तु है। हमने म शरीर की मृत्यु होती है—धारणा की नहीं। धारणा में मृत्यु एक निश है हम प्रति दिन सोते हैं रात्रि रात्रि सोना छोटी छोटी मृत्यु है। डा-व्यवस्था की सिद्धांताकार लिखते हैं 'शरीर जब बस जाया है, तब धारणा हमें सुना देती है ताकि हमें शक्ति का संचार हो जाय। नैटरी-वार्थ है।

## मृत्यु एक मधुर कविता है

सुरेणचन्द्र वेदालकार

विष्णु दद्राण समने बहूना, युवान सन्त पवितो जभार ।  
देवस्य पश्य काव्य महित्वा, ध्याता ममार स ह्य समान ॥

॥ १०१५५५५५



जाय। नैटरी जब बहूना काय जायक नहीं रहती तब धारणा इसे छोड़ देती है और यह धारणा के लिए सुप्रभ नैटरी से लेता है।

कायनिष्ठ में बहूना में बसपा के सुखा सुखे हैं। जब धारणा वर जाता है तब कई कहते हैं, यह मरा गया और कई कहते हैं, यह नहीं मरा। तुम तो साक्षात् मृत्यु रूप हो सत तुम बहूनाओं कि तुम ही क्या?

धारणा का संचार है दो तरह के मनुष्य हैं। एक है जो शरीर को धारणा मानने हैं और दूसरे है जो शरीर को धारणा नहीं मानते। शरीर की धारणा मानने वाले साक्षात्कार को-विष्ठातों से विष्ठा रहते हैं। वे 'प्रिय मार्ग' के पथिक मन होते हैं। परन्तु शरीर को धारणा न माने वाला, वे निष्ठा की समझ करते हैं, दुनिया का टी टायर के समान तुष्ट नहीं, होती, भौतिक चीज-विचारों से उनका भी नहीं भरता। उनका मार्ग 'मैव का होता है। बाय रको, मृत्यु का धर्म है निर्वान अर्थात् धन्य जीवन प्राप्त कर लेना। अपने वैदिकीयक सुखा, धारणा धारणा को सुखना ही सभी मृत्यु है। इसलिए सन्त तुम्हारा कष्ट करते हैं -

धारणी धारणी ही मैंने तो धारणी मृत्यु देख की है।

धारणा का मेरा सुख सुखा।

जो एक बार हय मृत्यु का अनुभव कर लेते हैं उनकी मृत्यु नहीं होती मृत्यु मानो ना का समझना है जो मेव मार्ग से सत जीवन को मोड़कर स्वस्थ कर दे—

वृत्ति वृत्ति है यह तब मन  
नैव अमृत कर दे को वे समवन् ।

सुखा मुक्त शरीरों स विधिवन प्रभवत किं कष्ट? अब क्या कष्ट? समुत्थ से धारणाध्यान पचारा कृता उगी। लेकिन ईश्वर मृत्यु के डार उठे उठा देता है। वस्तुतः मेरा यह धारणा, मा! मैंने जिना कीज तो कष्टा है?

ध्यात्र वैदिक विचारधारा बहूनी है 'ध्याता' है मृत्यु मृत्यु माय है। मृत्यु का वस्तुतः धारणा धारणा धारणा है उसे सुन्दर और सुन्दर बना दिया है। मृत्यु मानो मेव है। मृत्यु मानो धारणा है।

मरा कि उसकी मृत्यु की मनास सभी दुनिया में ध्यान के धन्यता को बुर करेगी।

तुम (१५५-१५००) कहता था कि तुम पुष्पी के तिरंगे गहने हुए रहा, पुष्पी उसके भारी भार प्रवृत्ति कर रही है। उसके विरोधियों ने इस ध्यान से क्या किया—पर उसने अपना सिद्धांत नहीं छोड़ा। यह मृत्यु भी वा धन्यता?

सुप्रभ मरते समय धमस्य का स्वाभ से रहा था। मरते समय बेटे से कहा 'धन्य प्रकाश, धन्य प्रकाश'। सुप्रभ मरता 'राम, कृष्ण हरे' गते गते उठते-उठते बस दिह। समय में कहा 'क्यों रोते हो? मेरा 'हाथ बौध' तो है। भौतिकीयक यदा यदा हि धर्मस्य धामा स्वर्ग को लोते लोते बस है।' मानो की सोने सोने हुए 'हे राम' कहकर सवार से बिता हुए।

इसलिए मृत्यु कविता है। मृत्यु रव है। मृत्यु प्रलय है मृत्यु नवजीवन का भाव है, मृत्यु धारणा का संचार है। मृत्यु मानो धारणा धारणा के विष्ठा क संचार है। मरते धन्य विष्ठात के पथिक माना है। किसी ने कहा है —

करते मृत्यु मरते धन्यवती ।  
साधन के कर माना है।  
माटी बोधान, माटी विष्ठात ।  
माटी में निष्ठा माना होता ।  
मरते को, को न, लोभ मुखा है ।  
किर बहा से नहीं माना होता ।।

## निर्वाचन

धार्य महिमा मरक सुदीनवाम की क का निर्वाचन भीति सुदीनवाम की धारणा की धन्यता से होता।

निर्वाचन धारणा धारणा की धन्यता से होता।

नीति सुदीनवाम मरता

डा-कन्यता उपनयना

नीति सुदीनवाम मरता

प्रकाश धारणा उपनयना

नीति सुदीनवाम मरता

नीति सुदीनवाम मरता

नीति सुदीनवाम मरता

नीति सुदीनवाम मरता

नीति सुदीनवाम मरता

नीति सुदीनवाम मरता

नीति सुदीनवाम मरता

नीति सुदीनवाम मरता

नीति सुदीनवाम मरता

नीति सुदीनवाम मरता

नीति सुदीनवाम मरता

नीति सुदीनवाम मरता

नीति सुदीनवाम मरता

नीति सुदीनवाम मरता

नीति सुदीनवाम मरता

नीति सुदीनवाम मरता

नीति सुदीनवाम मरता

# सिखों के अपमान का कारण अकाली दल

सरदार सत्येन्द्रपाल सिंह



पंजाब के अकाली नेता श्रीर लन्दन में रह रहे बहबोले प्रसन्नारी शेर जगजीत सिंह चौहान तो सारी ये कहते चले आ रहे हैं कि भारत में सिख द्वितीय श्रेणी के नागरिक की हैसियत रखते हैं, किन्तु अब सुखसन्तुष्टि उन्हें पंजाब और महोपसिंह जैसे बुद्धिजीवी भी यह प्रश्न कर रहे हैं कि भारत में सिख आत्यसम्मान से कैसे रहें। पर क्या सचमुच सिखों के साथ भेदभाव करता जा रहा है।

अकाली दल ने मुस्लिम लीग की तरह हुंशियां ही धर्म का राजनीतिक चतुरे के रूप में इस्तेमाल किया है और वह जो पंजाब के राजनीतिक परिदृश्य में। पंजाब के बाहर अकालियों ने न तो कभी आक्रा, न ही कहीं उन भी जड़ रही है। इसके बावजूद ऐसे प्रसन्नारी बहुत कम धार्य, जब वे पंजाब में सत्ता में रह रहे हों। पंजाब में गांवों का बेतहर जाट तबका ही अकाली दल से जुड़ा रहा है और दल की बागडोर भी सम्पन्न जाट प्रपतियों के हाथ में रही है। सहरी पंकेलिके, मेर जाट सिकों का सहनुपुति अकाली दल नहीं प्राप्त कर सका। पंजाब के बाहर विभिन्न प्रान्तों में बसे बांले सिल आमतौर पर काश्त के समर्थक रहे हैं। धायर वहा बजह है कि हिमाया, हिमाबल के प्रवासा उत्तर प्रदेश, राजस्थान, मध्यप्रदेश, बिहार, पश्चिम बंगाल तक की विधानसभाओं में काश्त टिकत पर चुने गये सिल विधायक दिखाई पड़ जाते हैं। धाय का कई प्रान्तों में सिल मत्रा है।

इससे साफ तौर पर जो कांड उभर कर सामने आता है, वह यह है कि अकाली दल कभी सिकों का प्रतिनिधित्व करने वाली संस्था नहीं रही। काश्त पंजाब के बाहर के सिकों ने तो इसे कभी गम्भीरता से नहीं लिया।

स्वर्ण मन्दिर में आप्रवेशन ग्नु स्टार के पहले तक अकाली नेता साफ तौर पर करते थे कि वे पंजाब के हका की सवाई लड़ रहे हैं। हाँ पर के पोखे सिल राज्य का नियक जकर तयार किया गया था। पर स्वर्ण मन्दिर में सेना के प्रवेश के बाद से अकालियों की यह कहने का सुनहरा प्रसन्नार मिल गया कि सिल कौम पर हमला किया गया है, सिल भारत में प्रसुस्थित हैं, धार्मिक-आदि। एक आतनात्मक उध्वेस सा उठा और वह सिल भी अकालियों की बाता की सवाई की परलने लया, जिसने धपनो सारी जिन्यवी में कभी स्वर्ण मन्दिर के दर्शन तक नहीं किये। पंजाब का माहौल काफी हद तक अकालियों के पक्ष में हो गया। पंजाब के बाहर भासिकों में सुगुगा-हट की। श्रीमती गांधी की नृच हत्या के पश्चात् स्थिति में श्रीर फर्क मया।

इस सम्पन्न में महोपसिंह से एक सवाल पुछा जा सकता है। कि मेरे बंसा सिल, जो उत्तर प्रदेश में पदा हुषा, पदा-लिखा, बदा हुषा और जो कहीं भी पंजाब के कियों भी शहर, कले, गाँव में गया तक नहीं, वह कैसे गान से कि पंजाब की जमीन पर उसके हित प्रकभूत रहे हैं? सवाल यह ही कि सिल धर्म के नाम पर अकाली पंजाब को बन्तु कौ नोक पर लम्क बनाए हुए हैं, बहु पंजाब में किस दौर से गुजर रहा है? पंजाब के सखों ने बाल कटाने, नशा कर, गुछारे न जाने, यहाँ तक कि पंजाब से लायन कर धन्य प्रदेशों व बिजों में बसे की प्रवृत्तियों तेजी से बढ़ती जा रही है। पंजाब में ऐसे सखों की कमी नहीं जो न तो बाने इतिहास पर सखों को दिखाओ के बारे में जाते हैं, और न धपनो काया लिल-पड सकते हैं। पंजाब के बाहर रहने वाले सिल अकालियों को किस आधार पर सम-न-पें? सियाह पंजाब धाने का आमन्नल देने के श्रीर क्या वर सकते हैं। पंजाब से बाहर के सिकों का। फिर यदि कभी धरसन्न बात सिल उज्य के रूप में सम्पन्न ही की गईता क्या माच्छी कि पंजाब जाने वाले सखों का यही हृय नहीं होगा, जो पाकिस्तान जाने वाले मुसलमानों का था है?

इस बात की वास्तविकता जो वाच करना भी जरूर हो गया है कि

क्या भारत में सिकों के साथ भेदभाव करता जाता रहा है। इन देश में सिकों को एक महान् देशभक्त कौम का दर्जा दिया गया था और हर जगह उन्हें सम्मान की निगाह से देखा जाता था। पंजाब के बाहर सिल जहाँ भी जाकर बसे, वहाँ के स्थानीय समाज में उन्हें हृदयमग्न कर लिया। इसी बजह से उनके उद्योग और व्यापार भी चल निकले तथा सामाजिक प्रतिष्ठा भी मिली। लोग एक दूसरे के गुल-गुल, धन्यसरो-खोहारों में लगे रहते। यदि इन सब बातों की एक तरफ रल दिया जाये तो भी महोपसिंह, स्वामी विवेकानन्द, डा० राधाकृष्णन, हुमायुप्रसाद द्विवेदी जैसे धनिक विद्वानों, दार्शनिकों की कही व लिखी बातों को कैसे फुलता सकते हैं, जिनमें सिकों की सखी प्रशंसा के भरने पूट पड़ते हैं। स्वयं महोपसिंह ही तो सिकों कि हिन्दी कयाकार के रूप में उन्हें इतनी प्रतिष्ठा क्या धनयास ही मिल गई।

मिषो की बैयमिक्तक व सामाजिक प्रतिष्ठा व मान्यता का इससे बड़ा प्रमाण और क्या हो सकता है कि नियमों व कानूनों का सखों से पालन कगने हेतु प्रवेश सरकारों सिल भाई ए एच व भाई पी एल अकालियों को धपने यहाँ बुलाते हेतु लातामिन रहते हैं। युने. याद था रहा है कि धपेरी में जब पहली बार राजीव गांधी सखीय उपकुमान लकने भाए तो उनके साथ पुलिस के प्रगरलको के बजाय पाँच-छह छुट्ट-कट्टे सिल, जिनमें कुछ रिटायर्ड कौमी भी थे, साथ की तरह लगे हुए थे। मेरे प्रुक्ष पर उन्होंने बताया कि उन लोगों ने १९७७ में सत्ता से हटने के बाद श्रीमती गांधी को धपनी नि शुक् स्वीच्छक सेवाएँ प्रमित की थीं, तथा १९८० तक उनके साथ रहे। अब जब राजीव गांधी राजनीति में भाए तो उन्होंने हमें ही साथ रलना पसन्न किया।

राजनीतिक तौर पर भी सिकों को सर्वे महत्त्व दिया जाता रहा है। सरदार बलदेव सिंह, मरार मजोटिया, हुकुमांसह, उज्जवलसिंह, स्वर्ण-सिंह, मुसद्पाल सिंह विल्लों से लेकर आनी जलसिंह तक धनिक नाम सिलन जा सकते हैं। विभिन्न प्रदेशों में भी राज्य स्तर पर धनिक सिल राजनीतिक रूप से सक्रिय व पदाहीन हैं। यदि इसे ही सिकों के साथ राजनीतिक स्तर पर धन्याय माना जा सकता है कि अकाली दल कभी उभर कर सामने न आ सका, तो निष्पक्ष हो हमें चुप रहना होगा।

यदि धन्युत्तर हरमन्दिर साहब में सेना की कार्यवाई की हो सम्पूर्ण सिल कौम का धपमान करने व चुनौती देने वाली घटना मान लिया जाए तो जो धपमान, जो धम, धाज देल के काने-काने में बंठा सिल महत्सुल रह रहा है, उसके लिए जिम्मेदार कौन है? वह अकालियों और उनकी चलत नीतियों को क्यों न कसे? वह सिकों की सामाजिक, राजनीतिक व बैय-सिक्त स्थिति के इस अवमुल्यन के लिए जिम्मेदार है।

इसी आधार पर धाय बहुतेरे सिल आनन्सुर साहब प्रस्ताव को मूल रूप से धन्योकार करने में तनिक भी हिचकिचाहट क्यों दिसाएँ, जिसकी शुक्मात ही इस फलने से होती है कि अकाली दल सिकों की सर्वोच्च प्रति-निधि संस्था है।

महोपसिंह जैसे बुद्धिजीवीयों से मेरा प्रानुरोध है कि पंजाब समस्या को पंजाब समस्या ही रहने दे, सिल समस्या में न बलें। पंजाब समस्या जो पंजाब समस्या नहीं, अकाली समस्या है। आन्येलन अकालियों का, मधि अकाली राजनीति के धनुष्य, कमी नर्म, कमी गमं उपलब्ध धनुष्य-लखि अकालियों की, सधर्म सत्ता का। जाम सिल को चाहे वह पंजाब में हो या पंजाब से बाहर, इन सब बातों से कोई सरोकार नहीं है।

अकाली नेता धाम सिकों के हितों के रलकतो कमी की नहीं रहे, इतना धन्यव हुषा कि वे सिल कौम के धपमान के कारण न बन गए। किन्तु धनं के नाम पर कौसी गई उनकी राजनीति का डुकान धधिक दिन तक चलने वाली नहीं।

(नवम्बर टाइम्स से साभार)

पर महति स्वराज्यता के प्रेमी धाम  
 चरगो के प्राकण्य सहसा दखी स्वासी  
 विरामनाथ क बिना मे पण्डित  
 उन्होने बहा दाघ ग्रन्थो एव व्याकृत  
 का धयन निया बहा भारत की साक्षात  
 का मेथिनी को काठने पर की विन नय  
 मनन बिना । व्यसनरत मुख से रिदाई  
 अर्ग नृचि दयालय धामिरक  
 लहरी से बहा पाणीय सदाय मे व्याप  
 परननता के मूल कारखो अर्वाचिता,  
 कारखो धर्मबिहास एव पकटा धासि  
 कुीरिघो का दूर करे का इह उन्होने  
 प्रेर प्रया इति मे उत्तर दह । जयमे  
 धामकित के नीर सहर के सुधुगो की  
 धासक डिरी धार सामयिक उवाच  
 प्रायन किये । त्याग त्याग पर व्याख्यान

महावीर 'नीर' विद्यालकार

अधि के निर्वन्धन के उपरान्त बाबसाहब एक बार विद्वत्पुत्र के हस्तगत हा रह गये। किन्तु कुछ जगहों की दृष्टि से बाबसाहब को वे कुछ दृढ़ता प्रतिपादित करने की क्षम्ये बढ़ाया। जैव का अध्ययन कराना शिक्षा एक सफल का प्रकार होये लगा। १८ की एकमात्र छात्र 'बाबसाहब' शिरी-सोया देवनागरी लिपि की रूढ़ि बच गये। अनेक पाठन साथी, कानेको मुक्त जगो ह काम मुकुण्डो की स्थापना हो गयी। शेको शीरो कल्या-बुद्ध का नवनि परत बर्ष होये बग। समाज के नम हो गये। शीरेख का प्रयास प्रचार हुआ। स्वदेशी बस्त्रो के प्रसार घासवना के प्रसार बढ़ किया। मोनों को नमिस्तान के सार्वजनिक की ओर जोड़ा। बड़ हुआ। वे विमुक्त कर निराधार पर प्रभु की जगहानी को शीरो उन्मुख किया। बास्वतः प्रती लोक कर विहाय होये गये। बाबसाहब का प्रचार हुआ। शरी बलि को 'गदाया जगज एक जगज समाजो बनाया। सत्य सत्यपन सत्य दुरीतिशोक का निवारक हो गया। चावि-शान्ति की दशाओं के दार पर चरने लगा। बाब का सून प्रचार बड़ हो कर फैले लगा। बास्वतः निम्न की बड़ होकर राष्ट्र होने की विचारणी सुरत गये गये। राष्ट्र को पुनः पुनः। राष्मन्ति के नौ वीरन बनाया। लिखि बहू कार्यसमाज के पात्रिक का स्थापिक हो गये। बास्वतः कल विषय

[illegible][illegible][illegible]

भातस्य ये प्राण इहे ह्ये वात पर  
कम्पनीरा से विचार कसना होया कि हुन  
प्राणीया समाज के अस्तित्व के केसर हिये  
समाज को ही केते है यद्यपि इतने के यन्त्र  
सह—जैन समाज बीड समाज सिन्धी  
समाज हिन्दू समाज मुसलमान समाज  
ईसाई समाज आदि विभिन्न सन को का  
ही समाजस्य कारते है क्योंकि राष्ट्र के ये  
विभिन्न धर्मका परिचय विपरीत प्राणीयो  
के प्राण का सहे है । इसलिये प्राणसमाज  
के इस को नियम को व्याख्यायिका का  
मुसलमान समाज के मुसलमान के  
कोहा तह लेही हिये हो कसना है विचार  
होय है कि सदा का उपकार करना  
इस समाज का मुख्य उद्देश्य है अर्थात्  
जातीयक धार्मिक और सामाजिक  
उन्नति करना ।”

धरत उपर्युक्त विवेचन के आधार  
 पर कहा जा सकता है कि भारतीय  
 समाज के ही नहीं अपितु मानव समाज  
 के जगत् भर में धर्म-समाज का महान  
 योगदान रहा है। धर्म के बलसे परि-  
 ष्कार मनु उलकी धीर भी महती शान-  
 त्यवर्धि है धर्म-प्राप्त मानव समाज की  
 यह वृत्ति के बामें ये सवा ही उच्चत रहा  
 है—'मनुष्यस्य उत्तिष्ठत आद्यत प्राणः  
 ब्रह्मणि प्रविश्यत क्षणतः मनुष्य बनो लक्ष्मी  
 कथं ये मनुष्य बनो, पुत्र्य बनो—कठो, जाको धीर नेष्ट्या को प्राण्य करो ।' यह  
 उलके आर्यमं हवाय के सिर्फ दिव्य  
 कर्मके लक्ष्मी है





## महर्षि दयानन्द के सपनों का भारत

विनोद कुमार

### श्री लालमन आर्य निबन्ध प्रतियोगिता में पुरस्कृत निबन्ध

भारत बहुमुखी रास्य गगमला भी है चीन् चीन्-कीर प्रसविनी भी । जन्म-जन्म भारत लम्पान को किसी सन्दूक का सामन करना पड़ा धरातलम्पार की भगवत् श्रीर गहन छाया में भटकना पड़ा, विदेशी प्रशासकों के धत्ताचार की पीडा सहनी पड़ी स्वभावा धारणिक द्वेय की धर्म में कुचकता पड़ा सही सही भारत मा ने गयी लम्पान को जन्म दिया जिसका लक्ष्य—“हुंदो का दमन, धर्म का उधावन और साधुओं का परिपालन रहा ।”

लुप्तिक यह विर घटल नियम है कि रात बिजली धमकावण हो रही है, प्रभु त उठना ही प्रकाशमय । पराधीनता गज प्रभाव के औपचारिकता पर भारतीयों के परिपक्वार्थ को ज्योति पुत्र व्यक्तित्व सबूत १८८१ (१२ जनवरी १८९२ ई०) को वेदवेदवेदों में भारत के सुवर्णरत्न प्रभु में श्रीरती जिने के टकावा प्राय में कलम लाल की निषेदी के घर में भेजा वह स्वामी दयानन्द था । दयानन्द के बचन का नाम ‘सूक्तसकर बा । भारतीय परम्परा ने सन्दर्भ का ‘सिंह का धर्म होता है—‘कर्मणाकारि । जीवन के प्रारम्भ से ही इस महापुरुष का कार्य ‘बहुजन-हितम्’, ‘बहुजनसुखम्’ हो गया । धत उनका कर्म भी नाम को सार्थक कर गया । स्वप्न २ दयानन्द का जीवन भ्रमप्रति के दम २ बत को सारक करता है —

बन्धनार्थि कजोरालि  
सुहृदि सुदुःखार्थि ।  
सोकोरालां भोगति  
को विहायमुहलि ॥

स्वामी दयानन्द का जीवन एक ऐसी कथाकल्पिता का कनी है, कहा वह वेदों का प्रकाश पवित है, भारत का उद्धारता है, महा बड़े वेद की निर्मलता को देखकर तो पड़ना है । दयानन्द के हृदय में विश्व-धर्म के लिए जो वत्सलात्मक पुरोयुक्त की सन्ताना निवर्तनी है । जैसा कि स्वामी भी ने स्वयं कहा है—“सर्वसत्त्व का प्रसार कर सकी एकमत में कराके, देव दुष्टावर परस्पर में बड़ श्रौतियुक्त कराके, सब को सुख लाभ पहुँचाने के लिए मेरा उल्लस ही बनिया है ।” अपने दिवंग को तो साकार रूप देने के लिए स्वामी दयानन्द ने १८७५ में धर्मसंग्रह की स्थापना की । स्वामी जी का विचार था—“One God, One religion and One world” यहाँ पर एक ईश्वर के तत्त्वों “One distinction and

One God” से है । एक धर्म से धर्मिभाव एक आधार सहित” से है । एक विश्व का धर्म ‘एक परिवार’ से है ।

महाभारत के स्वप्न-दृष्टा के रूप में महर्षि दयानन्द ने एक सतासी पूर्व ही एक ऐसे मन्त्र भारत का चित्र उपस्थित किया जो लोकतांत्रिक होने के साथ-साथ समाज में जैसी विश्वास कुरीतियों से रहित था । उन्होंने युव की चारा की बचतने का प्रयत्न किया । स्वामी जी भारत की एक धार्य वेद के रूप में देखना चाहते हैं । उनके भारत में कुरीतियों का कोई स्थान नहीं था । सर्वत्र गैर, सद्गुणिय और अनुपम था । स्वामी जी के अनुवाद—“प्रत्येक व्यक्ति को अपने गुणों के अनुसार ही कार्य करना चाहिये । ऐसा होने से वेद उन्नति के पथ पर अग्रसर होगा और देश का सामन सफलता पूर्वक चलेगा ।” स्वामी जी चाहते थे कि भारत विश्व के समस्त गज नमूना रहे, वे भारत को दम रूप का चाहते हैं । जैसा कि ‘विश्व’ पुराल २/३ में कहा गया है—

साधनित देशा किल जीवजायि  
बन्धनल्लो वेद नित्यपुनर्निमित्तम् ।  
स्वर्णधर्मार्थल्लोकधर्मसुखी  
नित्यसिद्ध सुखं पुराल्लान् ॥  
जगति नित्यं न्यत्र न्यत्र स्थितौ  
स्वर्णधर्मं कर्षति देशधर्मसम् ॥  
प्रत्यस्मिन् यथा न्यत्र से न्युन्य  
वे भारते नेत्रिया विहोला ॥

स्वामी दयानन्द का विश्वास था कि यदि देश में बड़ रही नास्तिकता, धर्मविरोध, अनुमानधर्मिता, अस्मितता में परस्पर ईर्ष्या-द्वेष की भावना द्वाचित्त बुद्धि द्वारा भारतीय समाज से विहीन हो जाये तो सब एक कुहासा देख बन सकता है । अपने पिछन की प्रति हेतु स्वामी जी ने लोक धार्मिक पुस्तकें लिखी, जिन्होंने ‘सत्यार्थप्रकाश’ सब से महत्त्वपूर्ण है । स्व गो भी ने विचार पर बहुत जोर दिया । स्वामी जी कहा करते थे—“गैर, स्वामीन और मातुल्य की भावना जब तक हम भारतीयों में विकसित नहीं होती तब तक हम उन्नति के विचार पर नहीं पहुँच सकते हैं ।”

दयानन्द सरस्वती व्यक्ति व्यक्ति के बीच की बाँट को खेनना नहीं चाहते थे । उन्होंने सही सही साधनिक धाम्यताओं के विचार ऐसे समय में सामाज्य उठाई बनाई उस समय धर्म का दिव्य सपु दाय भी निरुत भाव्यता की का समर्थन

करता था । जाति बाँट व्यवस्था में भारत में ऐसी कुट का बीजारोपण किया जिससे भारतवासी एक दूसरे को बिदेय की धर्म से देखने लगे । मानव मूल्यों की कसौटी जन्म जाति वल व्यवस्था की सखुह से हटकर विशुद्ध मानवीय स्तर पर व्यक्ति दयानन्द की वैचारिक क्रांति से उभरकर सामने आयी ।

भारतीय समाज में प्रचलित के दाब किए जाने वाले कुम्हारचक्र से ताकित होकर प्रकृत और बुद्धिचक्रमुक्त होने लगे । वह उस समय की दाह से बच बर्न के मान्यने से बुद्धिजीवी की सर्व एक नीतिवर्ण से प्रत्यक्ष हटकर धारण्य करने लगे । सामाजिक व्यवस्था के इस रंकीले धार्य से न्युन होकर महर्षि दयानन्द ने मानवता होकर एक स्वयं पर कहा था—

“यह व्यवहार तो धार्यों के लिए मरख व्यवस्था बन गई है । वेदों इस शक्ति से इसका कज पीछा खूटा है ।”

स्वामी दयानन्द जाति-धर्म के वेद से प्रत्यक्ष लज्य में । जाति पालि के इस व्यापार को हटाने हेतु धर्मजगतिप विहाह का बीका देने वाला धार्य सहाय दया नन्द ने पराधीन भारत में रुचित भारतीय समाज के मान्य उपस्थित किया । धार्यसमाज में इस ओर विभासक कदम उठाया जेकिन धर्मी धर्मोपाकृत परिपालन के लिए और धर्मिक कर्मशा से काय करन की धार्यवकता है ।

दयानन्द सरस्वती न सन्देश दिया कि शिक्षा मनुष्य की जीवनधर्मिता है । जब तक सभी भारत के नर-नारी शिक्षित नहीं होते तब तक हम एक कुहासा भारत का सना नहीं बल सकते हैं । बास्वय वे शिक्षा हो वह खुद हम को किसी वेद या राष्ट्र को जल्पना या प्रगति की ओर ले जाता है । स्वामी जी ने नारी शिक्षा पर बहुत जोर दिया । स्वामी जी से पूर्व स्त्री और मूत्रों को घिया नहीं थी । जहाँ भी स्त्री की बहुरी जो हुए और उन्होंने स्त्रियों और बूढ़ों को शिक्षा देने वाले का धर्मिजन बनाया । जहाँ सकारार्थ में कन्याओं को शिक्षित करने का विशेष किया, वही दूसरी ओर स्वामी दयानन्द ने स्त्री-शिक्षा का धर्मिजन बनाया ।

किन्ती को समाज धर्मना राष्ट्र के लिए नारी को आधार किया के रूप में कहा जाए तो सत्युक्ति में होती, क्योंकि नारी ही देश को न्योय विहास कर

सुखदर्शी भारिक प्रदान करती है । “भारिक ही मनुष्य की प्राथमिक पाठ-शाळा है ।” इस कथन की पूर्ण रूप से उचित मानते हुए कहा जा सकता है कि जिस वेद की नारी सुशिक्षित होना/जाना तथा स्वतन्त्र विचारों की होनी, उस वेद के भारिक की सुशिक्षित होना तथा स्वतन्त्र विचारों वाले होने को शिक्षा बन्धों को माता से प्राप्त होती है तथा सत्कार स्वाधी रहते हैं । वह शिक्षा १४ सकारों का स्वायत्त किसी धर्म व्यक्ति द्वारा नहीं दिया जा सकता धर्म्य माता को सत्कार करने पुन में कीरी के प्राथम्य से सन्तुष्टि करती है । वे सत्कार धर्म विधी प्राथम्य से सन्तुष्टि होने पर भी स्वायत्त को प्राप्त नहीं कर सकते । इस तथ्य की मुद्रित “महाभारत” धाम्यन में प्रत्यक्ष के कथानक से सभी को हो जाती है ।

स्वामी दयानन्द का विचार था कि “नारी का स्वातन्त्र्य मानव के प्रत्यक्षिक मरुत्यपूर्ण है । यदि उसकी प्रत्यक्षा उन्नत न हो तो सपुने मानव जाति को सत्कार करने का भय है । नारी घर की साक्षरणी है तथा घर एक व्यक्ति है । उसकी उन्नति कर समाज तथा प्रत्येक समाज की उन्नति कर सपुने देश की उन्नति समाज है । देश का धाम्यर कनी नारी माता बनकर पुत्र का निर्माण करती है । उसके गर्भमें ही प्रति धार्य सन्तान को बननी बनकर सपुने साक्षरिण सपुने को सन्तानकार कर्म लेने में सहाय करने के लिए तैयार करेगा बाहर नेत्रने में निहित है । मातृ-मूल्य विहीन बास्वय प्राय धाम्यरा, निष्कर्मिण और असमर्थ ही रहितवर्ण होते हैं । सभी के विना पुत्र्य की प्रविष्टा नगण्य है । नारी जैसा घर का निर्माण करेगी वैसा ही सपुने मनाज का धाम्य बनत जायेगा ।”

जिस वेद में नारी की शिक्षा का बड़ा के वेदधारिणी है रा ब्यान नहीं दिया जाता उस वेद का प्रत्यक्ष धर्मकारण्य कहा जा सकता है । सम्भवतः इसीलिए मरुत्युक्तिकार ने कहा, “कुत्र नार्यन्तु पुत्र्यते सन्तते तत्र वेदता ।” दूसरा पूर्वज वैदिक धर्मिण इससे धर्मनित नहीं थे । उन उन्होंने वैदिक धर्मिण नै नारी-शिक्षा के प्रति विशेष बल दिया ।

बल स्वामी दयानन्द ने इस तथ्य पर सूक्ष्म धर्म से विचार किया कि ‘किसी की वेद की प्रगति का आधार उस वेद की नारियों का शिक्षित होना है ।’ तो स्वामी जी ने नारी शिक्षा का धर्मिजन बनाया । जबकि वेदों के लिए धर्मिक सूक्ष्म कोने बने । स्वामी जी ने अपने प्रविष्ट एक वैदिक ग्रन्थ ‘सत्यार्थप्रकाश’ में कहा है कि— १. जन्म से मरणे बरतक के बास्वको को माता तथा छ से ८ वर्ष के बास्वय ने शिक्ष करने सन्तानों का उपलक्षण करने वहाँ पुत्र्य निहाउं तथा पुत्र्य विधुकी शिक्षा और शिक्षा करने लगे, वहाँ सपुने न्यत्र धर्मिणों को न्यत्र हैं ।” शिक्षा का



व्यासपीठ—

उपनिषत् कथा-माला-४

## सच्ची पूजा

प्रवचनकर्ता—वीतराग स्वामी सर्वदानन्त महाराज

(पाठक से श्रान्ति)

सहस्रो मीनो तक धामकार छा जाता है। यह किसकी माया है? फिर कौन इस धामने को दूर कर देता है? रात को प्रब राग सोते हुए हैं वेधुष पड़ हुए हैं सोते हुए सब का जहाँ बराबर है। क्या मनी क्या निर्मल? सब एक ही स्थान है। यह किसकी महिमा है जो जोशिल मण्डे में एक बार सबको समान कर देती है? यह कसोतीकाय किसने सुनाया था? यह किस बतुए शब्दर का काम है? जब कोई बाधाराग शब्दर कसोतीकाय सुनाता है तो उसकी बुझारी का प्रभाव सीत विल त रहता है किन्तु इसका प्रभाव ऐसा नहीं। बाध राग उठते ही धरने धामकी प्रभुलित्त वले हैं। यदि लोकर न उठें तो वनेने रोत सोने में बर तर की क्या है? परन्तु सब वाग धामिक तो यह है धर्मिय मे ऐसा हा होना धार मोलने पर तु उठ न सकेने।

मनुष्य नि सन्तुष्ट है परन्तु ज्वर होना धामकच नहीं। बाग तनिक वने तो सही। महाराज गमनद अँ हुए हैं। मनवास में बीठा जा धीर सखल उलके साज मे। 'मैचन' बर्न वने मे रहे। धारी राधाचम पड़ जाऊल सही एक स्थान पर भी यह नहीं मिलता कि प्रभुका स्थान पर भी राग इसलिये उठे कि उठने ज्वर का मया था धमया राग मे धा बसाया था। पापज्वर भी बाह्य बर्न तक वने में घटनके रहे। जब काम बर्नक कच उठाकर चिन्ता। उठाक महामात्र पड़ धामो परन्तु यह सही नहीं मिलेगा कि प्रभुका स्थान पर भीने मे को पेधिका हो बर्न की इसलिये उठने उठा रहू-पेरा पड़े। कभी वन मे किसी बीक लेखते, बज्जी बाध धामि की भी बीमार होते मुन ह? क्या वन मे कभी बनेने पधुने मे निर धरकारी हसपान कुने है? कही नहीं। बज्जी बाधर उल कच बर्न सही भाते जब तक उलका पड़ न सके। मे प्रभुलित के धमीन होकर रहते हैं। परन्तु दुन को क्या, दुम्हारे बाधर नाग, यह जोध धामि की बीमार हो जाते हैं। क्योंकि उलका मनुष्य के हाथ सम्पन्न हो जाता है। बाध की धर्मियमि हो के धीर उठने की धर्मियमि वना विधा।

प्रभुलित मे मनुष्य को रोमी होने के लिए नहीं बनाया। प्रभुलित मे पहले धम्य न बनाये। पधु, दुम्हारे सब पहले बनाए

धीर सब से पीछे मनुष्य को बनाया। प्रभुलित का परीक्षण मनुष्य पर बाकर समाय हो गया। मनुष्य को प्रभुलित ने बजा सुखर बनाया यह बजा ही कनवान बना था। दूर दूर से बनकर इसके पास आते थे। तभीवन मे महामाया रहते थे, धामनक वने के पास ही हिरणु का बन्धा निर्मल होकर पानी पीता था। प्रभुलित ने मनुष्य को ध्यात दुष्काने के लिए सब धीर दुष्क मिलने के लिए धामन मेह धामि बनलसित प्रयाग की। धामन नेने के लिए पवन मे की। ज्वर को तो प्रभुलित ने नहीं देना। ज्वर को तो तुम स्वय बनाते हो। प्रभुलित ने न कुलिन बनाई न ज्वर।

धाकनक विम्वो का स्वास्थ्य प्राप विरवा रहता है। पहली लिप्यों को ज्मोनेने बेनाह है, मे जानते हैं कि पचास मास बर्न की धामु मे की मे फिलने काम करती थी। पान्थु धाकनक की बजान जिवा तनिक सा काम किया नहीं सब नोमार हो बर्न। एक स्त्री की शाह्वरे से माधवधुपु का रही थी। बासी रण सघारी थी। लोचन पर बुझरी के लवकों में देखा। उनका काम था कि बासी में बुझर धामिरी को लुट लेते थे। उस बासी में यह धरकी डेठी हुई थी। एव सबका उलमे बजने लगा। उसने कहा 'गोले हुट बा। यह न हुटा धीर धामि था गग। फिर उसने कहा, 'उल बा। यह न उल बा। उस स्त्री न पड़बनर उले बासी में बीच लिवा धीर तो बन्धक बनाये। धमने स्तेहन पर उले पुलिख के हुवाले कर धामि धीर बाध ही यह भी यह विधा कि मीने उले गपॉल तक है विधा है। धम दत सोध थी।

बाध तो यह है। बाध बाध्मी होमी तो साराग की बाध्मी होमी। उसे कोई भी बीमारी न होमी। यह क्यों हुआ? क्या सब दुष्क दुष्क से हो क्या है? नहीं। यह धाम उन पहली भलों को फिर साजा बाहले ही तो पहले धामधिक स्वास्थ्य धा मन की तनुपल्ली धामी बाहिल। न भुज्जी को बाहिल कि दुरी बाजों का धिशन न करे। ननुपकु गिल दुरी-दुरी किमा करते हैं। ननुपकवा (नोपिक) के रोम बन जाते हैं। मे क्यों विन राग पिशा ने न रहे रहते हैं? विमपूरक न काते हैं, न पीते हैं। ईश्वर को उपासना की जोह केते हैं। फिर रोमी न हों तो क्या हों?

किमा धीर पिशा ने बहुत धम बहर

है। परन्तु पिशा बडी ही कठोर है। पिशा तो सब मनुष्य बर जाता है सभी उसकी बसाती है परन्तु पिशा की धमि मोसे की ही बसा देती है। इसलिये धामिक बल उलम करने के लिए धामन-सिक धामि प्राप्य करने की धामनकवा है धीर विभाव परालाया की उपासना के किसी दुम्हरे उपाय से यह श्रमि प्राप्य नहीं हो सकती। धात कास उठकर स्थान धामि से निमटकर प्रभु का ध्यान करो। 'अमी तुम्हारी माया धरपल्लार है। धामकार को दूर करने के लिए तुम के धारा बजान किया। बस तुमसे हन दुम्हरे ही मागने हैं। यह सही कि उपासना के लिए बंटे धीर धामने लगे बग, दोसद गुण धामि। इन मुठे पिशारी को धामने वन मे स्थान न हो। बहारी यह धाम ही देना। उसकी उपासना करो और उससे उसी को मीनो। उससे मापी कि हे प्रभो! मुझे बस तो विम्वे में जगदित के काम कर। दुम्हारे विम्वो से हन दुष्क पाते हैं। दुम्हारे धमोप से हन योशर को प्राप्य करते हैं। धमएन देरी हुना करी कि तुम से हमारा विम्वो कमी न हो।

मन्दिरों में धर्मिबाध बने हैं बतिया बसती हैं, क्या धाम? दुम्हरी न इन धर्मिबाधों धीर धर्मियो से फिलने काम लिये? स्तेहनो बर पने बासी मादी बन बनेवी तन बरि बाध-बेबा। धमने मे धम्पन गुाधर को बली पिचाई बाएरी कि बली। गुमिया तो मेरे माई! इस प्रकार धुलि से काम करती है। परन्तु दुष्क धुलि को विम्वोपलित से डेती हो।

धाकनक परालाया एक है। एक के धामने मुकने के मनुष्य धमन मे एका

महर्षि के सपनों का भारत

(मुठ क का पेज)

के दुष्क के धर्मिपिक रागा का कोई धम्य तुल्य नहीं। स्वामी की का सब है कि रागा को कभी भी स्वस्थ नहीं रहने देना बाहिल। 'धमपनक प्रभुधम' में कहा गया है कि—

'धमि रागा प्रवा से स्वस्थ होना तो यह क्या को गपट कर देना, कर्मिक धामि-धमिक रागा प्रवा का मासक होता है। सब किसी एक को रागमें मे स्वस्थ नहीं रहना बाहिल। केके बाधधारी ननु किसी मुट कवू को, का काते हैं। उसी प्रकार स्वस्थ रागा की प्रवा को का बास

बासी है। कैसा किया कैसा पका? हमने कौनों नहीं ठावाता, मनुष्य बासी बुहुदि से धमने धाम ही सताया बासा है। एक मनुष्य का उसके घर के धामने एक धामन था। धामने में उसकी दुम्हारी फिर नहीं। बाही धमनेरा बा, दुम्हारे पिचाई नहीं विधा। बाहुर सबक पर कासदेन बर रही थी यहाँ बाकर दुम्हरे क्या। किसी ने मुका 'माई क्या दुम्हरे हो?' उत्तर दिया 'धुमकी फिर नहीं है।' फिर मुका, कहा मिरि की? यह बोधा, बर के धामन में। उसने कहा तो बाही बाकर दुम्हो।' इतने उत्तर दिया, 'बाही तो धमनेरा है यहाँ माई निम बसती। इसी-तो में प्रकाश मे दूक रहा हूँ।' तुम की देते ही मुँसे हुए ही। पहले धमन धम मे इस धुम को निमको धीर धमने विम्व मे दुम्हरी के लिए बर्न पैरा करो फिर सब दुष्क हो जायेगा।

स्वामी धामनय जो एक बार कलकल गए। यहाँ प्राप्य ज्मारे मे रात के १२ बजे उठकर दुम्हने मने। एक बड़ा बासी मे मुका स्वामी की धाम एव बर्न ६. 'रहे है?' 'हामी ने कहा 'बर्न है।' बहद-बासी बोधा 'पानी मे नमक जाल देता हूँ, मी कीजिय बर धम्या हो बापिया।' स्वामी की ने कहा 'यह सब प्रभाव दूर होने बाधा नहीं। केरे तो विम्व में बर्न हो रहा है।' धमएन मेरे बापारी। गुमिया की रहते।' जानी का बासी तो यह है—

धामने धामने लसधर से समकलाता हूँ तुमसे दुरमी ननुवीक निमलसली है इन्सा रा का ॥

जब तक मेरे न हैं। धामयि प्राप्य को सही मुका को मुँसे हन है जब तक धमिपन फिर धमनेवर के पास नहीं जाती तक तक इसकी नहीं धुलि रहती। इसलिये धमने उठो धीर उसके धामने हाथ बाधरक प्रामया, उपासना करो। यदि दुम्हारे विम्व में बर्न पैरा हो बाये धीर एव परलेखर को धामनकर केके धुलि फिर मुका दो तो दुम्हारा उल के केकलाह हो बा। परालाया दुम्हरे धुलि धमन करे।

उपनिषद विवरण मे स्पष्ट है कि स्वामी धामन के धरनों के धामन में धोकाधमिक धामन प्रयाग को स्वामन की बर्न है। उसमें एक धमया एक बर्न पका एक पधु है। धमने के स्थान पर एका है। स्वामी की के धामन में धर्मिपरी धुलिपरी तथा धमियमिपरी का कोई स्थान नहीं है। सर्वम मेन, सर्वमएन एका-धमि प्रभुधम का धामनकर है। परस्पर केमने-धमि नहीं है। स्वामी की के धामन में धमकी धमिपरी में ही धमकी धमिपरी है। स्वामी को धामन को मुठे धामनक बनाया बाहिल है। उनका धामन बाधरक-मुठे कवा धमिपरी है।







## आर्य जगत् की शान

२०० बिस्तर वाले निर्माणाधीन

## नेत्र चिकित्सालय

(अनुमानित लागत दो करोड़ रुपये)

के लिए दिल खोलकर दान दीजिए

दान की राशि आयकर अधिनियम जी० ८० के  
अंतर्गत कर मुक्त होगी।

सारा दान - बैंक/मनीऑर्डर/बैंक ड्राफ्ट द्वारा

मन्त्री, माता चन्ननदेवी आर्य बर्माई नेत्र चिकित्सालय,  
सी-१ जनकपुरी, नई-दिल्ली-१८ के पते पर भेजा जाए।दानदाताओं के नाम चिकित्सालय की शिला पर  
अंकित किए जाएंगे।

## निवेदक

रामचोपान दानदाता	सूर्यदेव	महादेव वर्मादान	योगप्रकाश धार्य
सर्वज्ञ चिकित्सालय	प्रधान, दिल्ली	प्रधान	मन्त्री
ए० प्रधान, डा० डा०	आर्य प्रतिनिधि	आर्य केन्द्रों	महादेव पुष्पोत्तम
प्रति० सभा	सभा	सभा	केरि० हु०

सौजन्य से महाशियाँ १ हट्टी प्रो० लिमिटेड, ६/४४ कोलिनगर,  
ब्रीडिंग्स क्षेत्र, नई दिल्ली-११००१आर्य पुरोहित सभा  
का निर्वाचनआर्य पुरोहित सभा दिल्ली का  
निर्वाचन आर्यसमाज बीकानेर हाब, पार्कबी  
लोक, दिल्ली में १ जून कागिबार को साय  
५ बजे होगा। निश्चित हुआ है। बनस  
खसबखर्चों के आर्पण है कि अपना वार्षिक  
मुल्क साब सेते धार्य।मन्त्री  
बेवकुमारआर्यसमाज विवेक विहार  
का वार्षिकोत्सवआर्यसमाज विवेक विहार का वार्षिकोत्सव  
बड़े भूमाध्य में सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर  
नृदेव मन्त्री तथा वेद प्रचार का विद्यालय  
आयोजन किया गया। १६ मई रविवाकरीय  
मक में प्रसिद्ध साहित्यकार श्री अंमचन्द  
मुनन तथा सभा प्रधान श्री सूर्यदेव ने अपने  
विचार प्रकट किये। वक्तव्यों ने विद्या में हो  
रहे परिवर्तन के विषय में प्रकाश डालते  
हुए कहा— हमारी विद्या के महामुक्तों  
का गौरवमय परिचय तथा वैयक्तिक वार्षिक  
विद्या का त्याग अवसर होना चाहिए।  
आर्यसमाज सदा चरित्र और नैतिकता तथा  
व्यवस्थित और सदाय के विकास पर बल देता  
है। सरकार को चाहिए कि वार्षिक औरनैतिक मूल्यों तथा अपने गौरवमय इतिहास  
को अक्षिप्त स्थापन है।मन्त्री आर्यसमाज  
विवेक विहारपंजाब के हिन्दू नेता  
प्रधानमन्त्री से मिले

(पृष्ठ १ का लेख)

१२ श्री चतुर्वर्ग मित्तल, प्रधान  
व्यापार मण्डल, जालन्धर१३ श्री कौलाश शर्मा प्रधान  
मन्त्रि कैमेट्री, लुधियाना१४ श्री योगप्रकाश दगनी—  
महामन्त्री सार्वदेशिक मन्त्रा, दिल्ली१५ श्री जगन्नाथ मिश्रा, दुय्यती  
प्रभुतसर१६ श्री सोमनाथ मरवाह सीनियर  
एडमोकेट एवं कोषाध्यक्ष, सार्वदेशिक  
सभा, दिल्ली१७ सहाराज कृष्ण लन्ना,  
जालन्धर१८ प्रो० शेरसिंह, प्रधान आर्य  
प्रतिनिधि सभा हरियाणा, रोहतक१९ प्रो० वेदमन्त्र, प्रधान आर्य  
प्रतिनिधि प्रतिनिधि सभा, नई दिल्ली२० श्री सूर्यदेव, प्रधान आर्य  
प्रतिनिधि सभा, दिल्ली२१ श्री कुरुक्षेत्र एडमोकेट,  
लुधियाना२२ श्री लक्ष्मीचन्द, दिल्ली  
—प्रचार विभाग

उत्तम स्वास्थ्य के लिए

गुरुकुल कांगड़ी फार्मसी,

हरिद्वार की औषधियां

सेवन करें

**गुरुकुल ज्ञाय**  
आर्य १००  
गुरुकुल ज्ञाय  
आर्य १००  
गुरुकुल ज्ञाय  
आर्य १००

**भूमिसेनी मुरमा**  
आर्य १००  
भूमिसेनी मुरमा  
आर्य १००

**पुष्पकित**  
आर्य १००  
पुष्पकित  
आर्य १००

**गुरुकुल कांगड़ी फार्मसी**  
हरिद्वार

शाखा कार्यालय—६३, गली राजा केदारनाथ,  
फोन—२९६८३८

बाबडी बाजार, दिल्ली-८

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा १५, हनुमान रोड, नई दिल्ली-१ फोन ३१०१५० के लिए डा० वर्मादान द्वारा सम्पादित एवं प्रकाशित तथा  
वैयक्तिक लेख, गली नं० १०, ईलाहाबाद, दिल्ली-११ में मुद्रित रजि० नं० डी० (सी०) ७५६

मुख्य एक प्रति २० पैके      वर्ष १ अंक २८      रविवार, २ जून १८८३      धर्म्य सभास्थर १२६०८३३०८३      ज्येष्ठ ३०४२      दयानन्दाय—१६१

पंजाब केसरी लाला लाजपतराय

[illegible]

करता है। वह जरूर ही बर्मात्मा नहीं बन जाता। बर्मे का सम्बन्ध बहुत कुछ कर्म और धाचरण से है न केवल लक्ष्य ज्ञान से। बर्मात्मा बनने के लिए एक व्यास तरह का व्रत बनाना होना है जिसमें विश्वासता, ब्याजुता, न्याय और भक्ति से भिन्नि हुई हो।





## सत्संग वाटिका

अन्वयः बृहद सत्य उच्यते  
 वाक्सा तप इह यज (एते सर्वे) पृथिवी  
 धारयन्ति । न पृथिवी न भूतस्य अन्वयस्य  
 पत्नी (अस्ति) । पृथिवी न लोक उच्यते  
 कृणोत ।

अथ पृथिवी को इतनी ओषध पालती है। (बृहद मत्स्य) ब्रह्मा सब (उग्रम् ऋतम्) तीव्र ऋतु शैला तप ब्रह्म धीर यज्ञ। यह पृथिवी (न) हमारे (भूतस्य) भूत-काल (भव्यस्य) धीर अभिष्यत् काल की (पत्नी) पालन वाली है। यह पृथिवी हमारे (लोक) जीवन को (उष कृषोत्तु) लक्षा बनावे।

[illegible]

परन्तु नमो नमो मे कुछ ऐसे धर्मीजन  
 तथा मरिचिक बुजुर्ग का यशुन किया गया है  
 है जा उन्पर दिव्य नीलमानी स भी  
 किन्तु धोला-ए है जिनके सम्बन्ध में  
 हो नीलिक शायन पर्वतों सवने है धीरे  
 जिनके मयाने मे बहु नीलिक शायन  
 शायन पर्वत हो है। ऊँच धीरे नीलिक  
 मयाने मयाने के कथयाने के सिद्ध न है कि  
 मयाने उन् शायनो के सिद्ध। हो  
 मयाने मे भाव पर्वतों के लिए। होर भाव  
 भावने निजमो हो उन् पदावो का उपयोग  
 मयाने मयाने। कथयाने पर्वतों के लिए  
 मयाने मयाने। है मयाने मयाने के  
 के लिए मुकुन मयाने पर्वतन के लिए  
 परन्तु नीलमो के मयाने धारा। स्वाधी  
 होर मयाने है जा धरा का गान्त का  
 सन मयाने धारा मयाने होर धर्न न  
 का समुद्री नी चलायमान हो जयपी  
 धारा मयाने का धरा लखने मे। राम जोपी  
 उन्नी उन्ध मयाने मयाने होर धर्न  
 उन्ध उन्ध मयाने मयाने होर धर्न  
 मयाने मे बहु मयाने के राज्य को विस्तृत  
 होर समुद्री मयाने उन्ध मे। मयाने  
 धारा मयाने मयाने धारा मयाने मयाने  
 मयाने मयाने मयाने मयाने मयाने

## ये महान गुण

प० गंगाप्रसाद उपाध्याय

मत्स्य बृहद् ऋतुमुग्र दीक्षा तपो ब्रह्म यज्ञ पृथिवी धारयन्ति ।  
सा नो भूतस्य भव्यस्य पत्न्युरु लोक पृथिवी न कृणोत् ॥

(अथर्ववेद काण्ड १२ । सूक्त १ । मंत्र १)



की कमी थी परंतु सुसमृद्ध मृगसत राज्या  
भीघ्न हूँ छिन्न भिन्न हो गया।

इन्हीं गुणों का बेधमल्ल मे बरान है ।  
एक एक करके देखिये पहला है— सत्य  
बुद्ध । अत्यन्त सत्यप्रियता अर्थात्  
असत्य से घोर अप्रीति । श्रृंगार मे आया  
है सत्यनोतभिता भूमि (श्रृंगार १०  
= ५१) अर्थात् सत्य भूमि को ऊपर उठाये  
हय है उसे बिरने नहीं न्त ।

यह सत्य कोई मोहों का सम्पा-  
नही है। न शेषनाश का फल है। न कोई  
सम्पन्न बैला कोई श्रेय है जो युधि की  
कल्पे पर उठाया गया हो। यहाँ तो भूमि  
पर रहने वाल मनुष्यों के मासिक मुण्ड  
के धर्माज्ञा है। स्वर्गनिष्ठ लोग रहस्य  
को भी ही सम्पन्न बाल सेठ ही शोर ब्रह्म  
स्वर्गनिष्ठ लोग ब्रह्म शेष को सम्पा-  
नी नष्ट कर देते हैं। सत्य का एक  
विरोधक दुष्ट ही हो ही सत्य को  
ब्रह्मा समझते हैं यन्त्रु व्यवहार में सत्य  
को कम न भरा ही जाती है। हूर ब्या-  
पारी का विपरीत है कि सत्य स व्यापार

कि कहातें बलवान् स मीन बल बढती है  
हृत् बलवान् प्रकट कहता है कि बल बढ़ता है  
तो लाल को मारता है। लाल प्रकट कहता है  
तो मीनो को मारकर बल को बल बनाता है।  
राजनीति में लाल का क्या स्वाद ?  
लाल का विरोध तो पीठों पर ही। कुत्ते को  
लाल से घबराव भयानक है। लिए बलवान् को  
कहते हैं। मजदूरों मजदूरों में लाल की  
मजिदगी बहुतवान् से नाह है। परन्तु  
मजदूर के लाल बाज सुनने से जगजगत् बलवान्  
बलवान् बल बुझाकरो लाल घनी घबराव  
को समुद्र का सागर समझते हैं। इन्होंने  
राजधानी को मजदूरों तो नहीं बलवान्  
कहता है कि मुजिदगी का बाज लाल से बलवान्  
मुजिदगी में मुजिदगी मुजदूर लाल है नबलवान्  
मुजिदगी में मुजिदगी लाल से भय है।  
बलवान् बलवान् की लाल नहीं है। लाल की  
मजिदगी को स्वास्ति लाल के लिए फिरो  
है। मुजिदगी लाल स लाल लाल लाल  
मिनाही दी। बलवान् मुजिदगी लाल के  
लिए लाल की मी मजिदगी लाल के लिए  
लाल का मिजल लाल बिना लालक  
लाल नहीं होता। लाल की मिजदगी  
कहते हैं लाल प्रकट कहता है कि लाल को

करते हैं। परन्तु इन बातों ने सखार के प्रत्यक्ष व्यवहार में कमी तो नहीं की। केवल बच्चों द्वारा कम प्रार्षि ही तो नाटक की सफलता नहीं है। इसी प्रकार वैज्ञानिक उद्योगों के साथ साथ यदि सत्य का प्रचार नहीं होता तो देश के सम्पन्न और कल्याण समृद्ध होने में सन्देह ही

इसका मुँह है खुलता ज़रा । खूब का  
मुँह है फुटि के निचोरो का सहयोगी ।  
पुष्टि की प्रतीति को प्रमाण समझो । अष्ट  
योग करने लखी सीखी । जो ऐसा करती है  
प्राप्त हो सब विमलता है । आप रीति के  
तुलना को मुख के बजाय नास के लागे  
लगे । तुलना हो बस विमलता । फिर के  
बस बताना आरम्भ सीखिये । जिस में  
होदे दाँत में आगिये । बस हब चरचर  
के आगे ही और चरचरके निमित्त बहिये  
आगे प्रत्यक्षनीय है । आरम्भ आरंभ  
का मुँह है । खूब को विस्तारपूर्वक का  
का यत्न किया जाता है । फुटि के पञ्च  
की निमित्त प्रमाण को रही है । निमित्त  
आगे की नीति में उलटा उपयोग नहीं करते  
आरम्भ होकर है के आरम्भ का उलटा  
आरम्भ होकर है कि विमल के आरम्भ  
विपरीत है । इस देश और जाति को इस  
जाति होती है । कोई खूब यह सीखी  
होना फुटि कि विमल नीति उपयोगी हो  
'खूब बस जाता नहीं रोता कि निमित्त'  
होती को रत्ना करे या कमर को इस  
प्रकार का करे कि उनसे पते को इस  
निमित्त हो जाय या ऊनी पड़ी के मुँह  
जाता कर । विमल-चमकलाने के लोको  
के आरम्भ व्यवहार के कि विमल बानी  
सेतो में खूब का प्रालन नहीं किया हो  
होना के प्रालन के कारण बा । बस  
मुँहय य ज्ञान का हुँह हा जाए फिर की  
आरम्भ-प्रारम्भ हो प्रत्यक्ष विमल बानी  
तो बहिये होना ही पवना ।

तीसरा गुण है शीघ्रता । यजुर्वेद में  
कहा है—

कतेन वीक्षमाणापोति  
वीक्षमाणापोति वक्षितान्  
वक्षितान् वक्षितान्  
वक्षितान् वक्षितान् ।

(वसुधैव कुटुम्बकम् १६ यत्र ३०)

पुत्र का प्रतिकार किया है। जब मनुष्य  
 पुत्र का मरण के लिए पैदा कराया गया  
 तो उसको जन्म के क्षण के क्षण का प्रति-  
 कार करना ही बताया है। जब कम किसी  
 देश के कुछ प्राणों के जन्म मनुष्य उत्पन्न  
 नहीं होते तो नि त्यागवाने के बेल बाद के  
 लिए कम कल्पों के लिए जन्म उत्पन्न कम  
 की कम कल्पों के लिए उत्पत्ति है। तो  
 देश के कराओ मनुष्य रहते हैं साते हैं  
 पाते हैं जो जन्म रहते हैं परतु वह जा  
 पाते जन्म के समय नहीं हैं। जैसे जा  
 काओ पशु पक्षी भीत सुख रहते हैं उन्ही  
 प्रकार वह रहते हैं। कोऊ मनुष्य  
 कोहा हा हूँ। बाह्य को रहें हा  
 प्रभाविक वेहा उन्हा मनुष्य कोहा वेहे  
 मजान में बिछिनी कोहा रकनो है नूरी  
 किताब रहें मजानो बाह्यो है पशु  
 रमनु उन्हे के किता को मजान को किता  
 नहीं। मर फिदा जा ने फिदा हुए मजान  
 का लवहर है रहें। जा धमन मजान  
 बाह्यो है मजान के मजान का बाह्ये  
 वष पक्षी नहीं। सा प्रकाश वेहा

रखा था मगर वो बात हीना चौर सीता हीना मनुष्यो ने जान लिया है। जोध बाबू कोसकपाया की उपस्थिति मध्य के सदस्य मुनू बाते हैं तो उनको पच येनी होती है कि हनु को पच करेने केबल देखित की ओरफ के करणे पारने-अस्थित बाबाकप दल वा सन्सकपाय की मायादानी को भीय मे घाने येने । बहू बत अना ही मनुष्यो सीता है । बहू के पचपाय ही मे पायिबन्धन की सन्सकपाय मे परिधित होती है । प्रम कृत उन्हेनी सीता भी मे की और बाबाकप की प्रालन हीय पलुन मल स्थाप वा सन्सकपाय उन्ही मे कलने विहावा भीय येने सीता ही नन्ध को बाज्या । क्योकि मत वा पापक का मुह के येने। धमना पचप पर हुसकक कन देने तो साधान है पचपुन यव स्वाध को देखित मे निरोध बाज्या है तो निरोध पचने के निरप हीय को गुणो की दायककता है मगर की बहू की बोर वरन की । तप का प्रम है कथप पचप कन मे की ओरिफासक बाते उनको कलन लेना । पचने न मे कयुनून बात होने पर तो समी यव मोनने है पचपुन यव सच कोसकपाय के स्वाध मे बाधा देखित । उत समय सच कोसकपाय कहितो जाता है । स्वाध उन्हे हुन नास तो समी कन सकने है पचपुन यव नास तो समी कन मे सकने नच बहू देख क उदाह कन सकने । काम कोसकपाय कोसकपाय का बसायुन मुषम को सीय वा जाति की रसा करने मे पचप हीय हो सकने । कथप यव कन सकने है को बहू सन्सकपाय उन्ही मे पचप हीय हो सकने । अस्थित बाबाकप वा ध्याम सन्सकपाय मे विवर्तन रसातल होने । धमनाय को मुषम को केसल ओरिफासकी है ये पचप हीय मे सीता कन बाते है । मनुष्योने मे सन्सकपाय की सन्सकपाय निमाले होय पचपुन सन्सकपाय वही को निमाल है कि पचपुने मे धारित नच हो । येने वा

## ★ वक्तव्य-सन्देश ★

## उपासना

उपासना शब्द का अर्थ समीपस्थ होना है। अष्टाङ्ग योग से परमात्मा के समीपस्थ होने और उसको सर्वव्यापी, सर्वनिर्गमि रूप से प्रत्यक्ष करने के लिए जो जो काम करना होता है, वह सब करना चाहिए।

जो उपासना का आरम्भ करना चाहे उसके लिए यही आरम्भ है कि वह किसी में वैर न रखे, सर्वदा सबसे प्रीति करे, सत्य बोले, मिथ्या कभी न बोले, चोरी न करे सत्य व्यवहार करे, जितेन्द्रिय हो, लम्पट न हो और निरभिमानी हो, प्रथमान कभी न करे।

राग द्वेष छोट भीतर और जलादि से बाहर पबित रहे, धर्म से पुण्यार्थ करने से लाभ में न प्रसन्नता और हानि में न प्रसन्नता करे, प्रसन्न होकर आलस्य छोड़ सदा पुण्यार्थ

किया करे, सदा दुःख सुखो का सहन और धर्म ही का अनुष्ठान करे धर्मार्थ का नहीं। सर्वदा सत्य शास्त्रों को पढ़े पढ़ावे, सत्युक्तों का सङ्ग करे और श्री ३५ इस एक परमात्मा के नाम का अर्थ विचार कर नित्य प्रति जप किया करे। अपने आत्मा को परमेश्वर की आज्ञानुसार समर्पित कर देवे।

जो परमेश्वर की स्तुति, प्रार्थना और उपासना नहीं करता वह कृतघ्न और महामूर्ख भी होता है, क्योंकि जिस परमात्मा ने इस जगत् के सब पदार्थ जीवों को सुख के लिए दे रखे है उसका गुण भूल जाना, ईश्वर हो को न मानना कृतघ्नता और मूर्खता है।

—महावि दयानन्द

## सम्पादकीय

## पहले धूँएँ और धमाकों का इलाज कीजिए

पञ्जाब की धरती के वे गीत जिनमें गाया जाता था कि सोने की धरती है चारो सा पानी, घर-घर में गुब्बती है धूम्रों की बाणी। अब वहाँ आम है, धूँआ है, चारो तरफ स्वच्छता है। गीत तो गए हैं, उनके गाने खानों के होठ कड़वाहट से लिपट हैं। हर कोई एक दूसरे को सम्बेहू की नजर से देखता है। घटनाचक्र बड़ा तेजो से घूम रहा है कल के विषय में सब कोई आशात और आतंकित है। जिन्होंने धूँएँ और धमाकों का धूम्र और लाठी का व्यापार वित्त कई वर्षों से शुरू किया है, वे बुना दारुदे चाहते हैं चारो तरफ आतंक हो आतंक हो हिन्दू तबकबात छूटपाटते पञ्जाब से बाहर और बाहर क सिल अपने को भ्रष्ट-रक्षित समझ पञ्जाब जाने के लिए एकाएक तयार हो जाय। यह आतंकवाद प्रयत्न जब पताल तक पहुँचा चुका है। एक हा समय एक ही दिन अनेक प्रांतों में बिस्कोट तथा सर्वदनाशाल, महत्त्वपूर्ण स्थानों पर भी बमों का पाया जाना उपवाधियों के द्वारा और उनके होसवा का तथा उनके सबक गिरोह का जोता जागत प्रमाण है।

उपवाधियों पर सैनिक कायबाहा को एक वर्ष होने जा रहा है, उपवाधों को लालाय हुए हैं उनका प्रशासक मानसिकता निर्दोष मायूम लोगों के धून को हल्ला बेलना चाहता है। पन्तु धारा करने को उनको तयारया पूरा है उनक सतलोक सकत भासिल है। हिन्दुत्वान के एक सबाधता क अनुसार धूम्र एक, धूम्र दो दोरी धूम्र तीन। वे हैं कुछ उपवाधियों के कुछ गुप्त सकत जिनका प्रमाण उपवाधों प्रयत्नो हिसात्मक कार्रवाइयो को सवालित करने में करेये। इनका प्रयोग आसन्न वल्लुबारा सप्ताह के दौरान होगा। धून हुए इन्का की और लक्ष्यों पर सकत मिलते हैं उपवाधों सक्रिय हो जायेंगे और धूम्र-खाना भवायने। धूम्र एक का धम है एक समुदाय के (हिन्दुओं) लोगों की हत्या। धूम्र दो का धम है देश पटरियों पर बम रखना और धूम्र तीन का धम है धूम्रों में जहूर डालना-धन गुप्त सकेतों से उनके धर्मार्थक सतलोक इन्कारों का सन्दाध लाना हा जा सकता है। वे इससे भी कहीं बड़-बड़कर लोच रहे हैं। धाम नागरिक इस हालत को साक्षी भाव से देख रहा है लेकिन बीरे-बीरे साधारण नागरिकों के मन में जो लावा बहने लगा है। लोग अपने धामों को भ्रष्टरक्षित समझने लगे हैं। उनकी मुकुटिता तनने लगी है और मुकुटिता कसने लगी है। अब समय आ गया है, सरकार इन हथारों को इन देश शोधियों को कठोर पदक देकर धाम नागरिक के मन में सुरक्षा की भावना जगावे अन्यथा देश सुखद के कनार पर आ पतन्या।

सैनिक कार्रवाई के दौरान जो फैली जोश में आकर अपनी छावणियों से निकल पड़ के उनमें से ५०० सैनिक पकड़े गये जा सके उन प्रथित सैनिकों का सतरा भी कम नहीं है। उनका पकड़ा न जाना भी प्रशासन के निकम्बेपन का सूचक है। शूहमनी ने रहस्योद्घाटन किया है कि बहुत बड़ी मस्या में ऐसे पाकिस्तानियों को गिर-पार किया गया है जो जिम्मा का नेव बारण्य कर भारत में घुस आये थे। सरकार ने निम्न आण सध और धमाकी देन के सिरफिरे सत्यो को धमकी बड़ी सस्या में पुन गिरपार कर लिया है और आतक विरोधी वातून भी पारित कर दिया है। भाषा है इससे उपवाद पर काबू पाने में सफलता मिलेगी। शूहमनी की भाषाओं के प्रति हमारी सहानुभूति भी है परन्तु राबदण्ड जैसा कठोर होना चाहिए वह दिखाई नहीं पड़ रहा है। भी चल्हाए कहते हैं हम वातचित के द्वारा समस्या का समाधान चाहते हैं वास्तविकता तो यह है कि प्रकालियों की प्रमुख माय मानी जा चुकी है लेकिन फिर भी समस्या मुह बाये ज्यों की त्यों और ज्यादा बड़-बड़कर सामने लगी है। यह सुविचारित मत है कि पञ्जाब में अगर कोई समस्या है तो वह उपवाधियों के कारण है और आतकवाद से ही पदा हुई है। इनलिए समस्या है उपवाद और गुण्ड-गर्दी, इसका हल राजनितिक बातों से सम्भव नहीं है समाज विरोधी तत्त्वों से निपटने के लिए दण्ड की आवश्यकता है। आतकवादी पञ्जाब और निकटवर्ती राज्यों में व्यापक िसा भटका कर देश को एकता और प्रसन्नता को तण करण चाहते हैं। ऐसे तत्त्वों से वातचित करने से कोई लाभ नहीं निकल सकता।

सैनिक कार्रवाई की वर्षगांठ पर उनकी योजना बड़ी खतरनाक है परन्तु प्रशासन यदि सतर्क रहे तो आतकवादी कुछ भी नहीं कर पायेंगे। अब तक दिल्ली में जो भी आतकवादी गिरफार हुए हैं वे धाम नागरिकों की सतर्कता और सराहनीय प्रयत्नों से हा सबब हुआ है। पुलिस तो केवल महत्वपूर्ण सुराह हाय लगे हैं इसी को विचारित करती रही है। वे महत्वपूर्ण सुराह पुलिस को छोटकर अन्य सब की समझ के तूटे से बाहर हैं। अत सरकार को ध्यान रखना चाहिए कुछ मुद्री बर सिरफिरे प्रसमाज को आतकित कर सकते हैं। साम्रदायिक विद्वध की धाग भटका सकते हैं। इसलिए उपवाद का इलाज पहले करना होगा।

तिर क्षमा चा कटाक्षे पर वध न मारिये ।  
 बंजित हथार दूर हो, हिंमत् न हारिये ॥

की विनायक शायोवर सावरकर का परिचय प्रसार राष्ट्रपति के बचकट ज्वालायुधी, कानिन्कारियों के हृष्य स्रष्टा के रूप में, धर्ममान की कास-कोठरी में नाचपी वाद्यवाय सहते हुए भी साक्षिय सुभन मे २७ रहते थाने, हिन्दुत्व के मर्मभष्टा के रूप में तो देशवासियों को श्राव ही है पर भी और भी स्वातन्त्र्यवीर उपराधि से विप्रुधित सावरकर की दृष्ट युग के महान साहित्यकार भी थे। हिन्दुत्व, हिन्दु पाषाणही १८२७ का भारतीय स्वातन्त्र्य समर, भोक्षेक मैजिनी, तिरकों का स्मृतिव्यक्त इतिहास, माधवी जन्मवेध, रा-कुने, मोमा-नक उल्हाा सन्यस्त स्रक्त नेपास मराठी भाषा की सुदृष्टि, शरणप्रिया, काना गानो धादि धार-रुन्धुनी स्वाति धर्मिक धर्मों के रम्यता है। और सावरकर केवल भारत के २७ ही नहीं तो विश्वभरर ले थे।

भारत के ही नहीं विश्व के इस धर्मो क्रांतिकारी प्रियने अपने महान् त्याग से स्वराज्य एवं स्वधर्म को सञ्जाला प्रदान की भारत के युगनिर्धारण में ठोस चिन्तन प्रदान करने वाले इस युग युग की जीवन के दूर क्षेप में धर्मकी पाले है। (१) और सावरकर भारत का पहला ज्ञान का पिडे देशभक्ति के धारिण के कालेक स निष्का शित विद्या सया। (२) और सावरकर प्रथम युवक का जिसने सर्वप्रथम विदेशो भ्रमण की होनी कोषाजने का प्रवृत्त किया। (३) और सावरकर जिस का पहला मैरिटेडर का जिने परोक्षा पाठ होते हुए भी

सत समय दिल्ली की गद्दी पर धरा-उहान जिलको बाधवाहू होकर बैठा था। यह बहुत दूर तत्ता पान्दुर बाधवाहू था। राजपूताने मे चित्तोज के सिहास पर उस समय राणा भीमसिंह विराजमान थे। धराउहान मे मुना कि राणा की महाराणी पधिनी बहुत ही सुन्दर है। यह पधिनः को किसी की प्रकाश पाने के लिए बड़ी भारी सेना लेकर राजपूताने सया कीलि लोख के मोड़ी दूरी पर उलने बानी सेना का पथस बना। उस युग मे राणा के लय सस सेना—यै पधिनी का प्रतिनिध होके मे देखकर लोट जाऊन 'महाराणा मोम सह मे इतनी बात के लिए उभर उल्लास करना पन्ना मुहो सया। उनके दुवान पर पलाउजल गरी मे धारा। हरिय मे राना पधिनी का प्रतिनिध उल दिना दिया सया। नोलेक समय राना उस युग स बाहर एक प् न् सने धाये। युग मे सहाइ धराउजल के पृष्ठके से धान दौलक क्षिा रखने थे। उन्हीमे राना पर धाऊनक सके उन्हे पक्ष दिना और बन्दी बनाकर धाने मिशिर मे से थाने।

राणा के बड़ी हो जाने मे पिताल मे

## विश्वरत्न

# स्वातन्त्र्य-वीर सावरकर

नरेश्वर धर्मस्थी—संचालक धार्यवीर दल, दिल्ली प्रदेश

प्रमाण-पत्र मही दिया सया, (४) और सावरकर पहला भारतीय युवक था जिस ने सनम के धर्मर १८२७ के तपाकपित गवर को भारतीय स्वातन्त्र्य स्रवाय का

मुक्तक १८२७ का स्वातन्त्र्य समर' को प्रकाशन स मुर्ख ही बन्य कर दिया सया। जिसकी केवल एक प्रति उन दिनी दो ही श्रव्य मे श्राविक के एक पाठक मे लगीही

२८ मई १८२७ को कानिन्कारियों के प्रेरणास्रोत स्वातन्त्र्यवीर सावरकर का जन्म दिवस था। और सावरकर युगप्रस्था महर्षि दयानन्द जी के चिन्तन से धर्मयिक प्रभावित थे। मराठा धर्मजी दानिक मे उन्हीने महर्षि दयानन्द पर एक लेखमाला भी लिखी। महान कानिन्कारियों देशभक्त दयान जी कृष्ण वर्मा के परम शिष्य और सावरकर ने १९०६ मे हिन्दी को राष्ट्र-भाषा बनाने की घोषणा की और उन् को मान मुसलमानो तक सीमित रखने की बात कही। उन्हीने वण्डयान की जेल मे ही बर्नदियों को हिन्दी पठाना धारम्भ किया। वे बन्दी साधियों को सत्याग्रहका मुनाते थे। उनका जेल मे हिन्दी प्रचार बहुत सफल रहा। जहा पहुँचे जेल के कायालय का काम २० प्रतिघात उन् मे होता था उनके प्रयासो से नागरी लिपि मे जान लगा। उन्हीने भाषावी के बाद परमाणु बम बनाने की माग रखी। उनने तीन नारे राजनीति का हिन्दूकरण, 'हिन्दुधो का सैनिकीकरण' व देश का उद्योगीकरण यदि हिन्दु धर्मन मे लाए होते तो धात्र राष्ट्र की प्रसवता को चोट न घाती भारत तीसरी धारिन बनकर विश्व के मानचित्र मे उतरता।

नाम दिया सया १० मई १९०७ को १८२७ का धर्म स्रवण समारोह स्वस्वता दिवस के रूप में मनाया। (४) और सावरकर जिस क प्रवक्तृकेक है जिनकी

भी धोर श्रिते कामालर है। कानिन्कार चन्द्रसेक, कहीर-धाराय सनमसिंह व नेताकी धर्मप्रवक्तृक मोर मे प्रकाशित कर प्रचार किया। (५) और सावरकर प्रथम

भारतीय है जिनका धर्मवीर्य हय न सन्-रुन्धुन्य त्यागमय मे सता (७) और सावरकर प्रथम क्रांतिकारी के श्रिन्धे दो धारम्य कायावर्ती (२० वर्ष की जेल) के स्रष्ट विदे नये (८) और सावरकर प्रथम देशभक्त है जिन्हे २७ वर्ष पर्वसत बन्दी जीवन दिशाना पठा और जेल मे ही धपना सन्मर्ष जीवन मनाया सया। कील्ल मे बैस की बगहू जुलना पठा, जुने की बन्दी बचानी पड़ी राम सास नूनना पठा और को की मार भी सङ्गी पठा। (६) और सावरकर पहला कही था जिसने धारम्य (मालेपानी) मे बैस की दीवारी पर कीन की लकनी मे (कायज कमन के धमाये मे) ही साहित्य सुभन किया। (१०) और सावरकर प्रथम मेधावी है जिन्हीने कान गाना 'म' सया काठो हए, दस सङ्घस विनया को कल्पन करके यह स्रष्ट कर दिया कि सृष्टि के धादिदाल मे धार्यो स बानी द्वारा सरो को निम प्रकाश कील्ल सया। (११) राष्ट्र मे पुनर्मर्षि मे भारत का उद्योगीकरण राष्ट्र का सैनिकीकरण व राजनीति का हिन्दूकरण का ठोस कायम सन्मुत्त दिया। (१२) और सावरकर भारत का प्रथम दूरदर्शी राजनीतिज्ञ है जिन्हा १९३७ मे सन्तु पक्ष को केसावा को उन्गीकर नसिधमर्षि कर्म्य की कहीरी पर बरी सरी।

महात्मा कानिन्कारी को प्रेरक जीवनो, उन द्वारा लिखित धन्य मुक्तके प्राप्ति हेतु व उनके चिन्तन की गौरवो के माधम से प्रवृत्त करने हेतु विनये का पत्र सन्महार करें।

## क्रियोरमञ्च—

# वीर बालक बादल

सुर्गे मे हाहाकार मय सया। बाधवाहू की सेना स्रवती बड़ी भी कि ससते सीने सलास करके विजय पाने की कोई धारा नहीं थी। स्रव मे रानी पधिनी क माया और मे एक योजना बनानी। धराउहान को सलेन सेना सया—रानी पधिनी बादवाहू के सल धाने को उंगार है, बधि उनके बा जाने पर बादवाहू राणा को छोड दें। रानी के स सल सी ससियौ भी धार्यो। सा। सैनिक उन्हे रोके नहीं सया। बादवाहू मे इस बात को बड उल्लाह से स्वीकार कर लिया। सायकाय प्रथकार होने पर सुर्गे स सात सी ससियौ निकसी। बाधवाहू के सैनिक विजय के उन्माय मे उल्लस मग रहते थे। सारी सेना मे बहुत कर रानी मे पहेले राणा के गेट करनी बाही और यह माय भी स्वाकार हो सयी। धाराय सोचते हैं कि रानी पधिनी पालकी मे बैठकर धार्यो की ?

पालकी मे रानी सया स्त्री सेव मे धियः धार्य धार्य से सुगुनविजय रानी का बाहू स्रव का मुन्दर माया बालक बादल सहा धारा था। हूरी पालकियो मे भा राब-पुत मो ही बैठ ब धोर प सका। उलान बाले सहारो के सेव मे भी र बपूत बाधा ही थे। राणा को मुत्त करके था पर बैठ बर कुल सैनिको के साथ युग का धार उन्हीने देस दिया धी' स्वयं लाउजान की सया पर सलस लेकर टूट पड। मोर। इस सेना का मनापचित लेव से था। बासल मे इस युद्ध मे धरपुन्य बासला सिलालयी। सविन मुट्टीकर राजपुत्र सगुट के सयाय विमान ग्राही सेना स कब तक स्रवते। मोर राजपुत्र मे सेत रहा। सोनो हाथो के सलवार बलाकर सलन सैनिको को नाकर युगी की माति कराता हुवा बासल बादन युग मे पड़ैव सया। धराउहान बाहता का कि इस युद्ध

का सा' था युग मे न पृथक्। धरायनक धारम्य करके यह पधिनी को परबकर दिल्ली ले जाना बाहता था किन्तु उस बाहू सल के बासक मे उसकी एक भी बास बलने नहीं था। युग मे सयावार पड़ैव ही राजपुत्र सीरो मे केसरिया सया पहना और निमन २७ धम ७७ धारपुत्रि पर सलसक बढाने। बड़ी कठि नाई मे धराउहान को विजय प्राप्त हुई। धरानी धर्मधारा सेना की सैनिक देव जव यह चित्तोज के पधिन युग मे युवा तन सहा बहुत बड़ी चित्त बाध सध करके जल रही थी। राजपुत्रानो की देसिया पपय युवक के स्रस से बचन के लिए धारिम म प्रवेन करके स्वय पड़ैव चुकी थी। धरा उहान मे सपना स्रिष्ट पीट दिया। भारत की यह गौरवमयी दिव्य युनि सतिव मे सेव के हाथ की बासल बादल को नूनना एवं सतिदयान से निम उन्जल है। बन्धो हये ऐसे सीरो स सिला वकर धरनी माधपुत्रि सल ससकति को २७ स सया मेकर दुरासा करनी है। धराना धरियव उन्जलस बनाना और दाम्या के माधमे धपना स्रवतक उवा सलता है।

—प्रस्तोता सान्नी

१ वेद विद्या एवं विज्ञान का भंडार है-

यह विज्ञान यज्ञों के माध्यम से हमारा बचन है प्रकृति का धार उलका ग्रहणों की न सिसी रूप से प्रोत्त जयी प्रकृति है । महर्षि व मा ग्यानद जौ सरस्वती ने स्पष्ट घोषणा की कि वे न से सब ज्ञान विज्ञान बीज रूप से है धीर यज्ञ की लडीशती गत स विज्ञान कर विज्ञान के सप्तम पर ब दिया । धा न के समय मे यज्ञ की वैज्ञानिक उपयोगिता का अनुभव ज्ञान योरोप धीर उपरिष्ठा म होने ब्या है धीर उलके सुष रिणाम धनक ब्या मे प्रतीत होने लगे है ।

२ यज्ञ काय वैज्ञानिक है—

येद यं यज्ञ को विप्रसिद्धमन्त्रा हो ।  
 धर्मस्यैव इहा समस्त विद्या को स्वल्प  
 यज्ञ यज्ञ नाम प्रथम होता है प्रौर समस्त  
 यज्ञ यज्ञा येनो न कार्पस होतो का  
 प्रसूतो का विप्रस्य हो सता है । प्रत  
 किस परिधिपिनम न कोन सता यम विप्र  
 प्रकाश कर इसका विप्रार करन से ही  
 यम विज्ञान का विप्रार करन से समस्त  
 प्रथम होता यम के ३ प्रथम यम है ।  
 १ सत्य २ मनः प्रो ३ धातुवि  
 सत्य के विना यज्ञ नहीं हो सकता  
 सत्य के विना हो यम नहीं हो सकता  
 प्रो धर्म के हो यम प्रथमो को धातुवि  
 विज्ञान विना ही यम नहीं हो सकता । मन  
 दन हीना का समस्त यम हो सता है ।  
 सत्य होने पर हा यम सम्यक् है । यही  
 यम का आधार सत्य है । यम कहलाता है  
 —यानो धानो यमो यमो यमविज्ञान । यम  
 यम २५११ । यमस्य कृपायाः प्रीतिः । यम  
 को विप्रार करन से प्राप्त हो सता है ।  
 यम विचारो मे निमग्न बित्त यमे करने  
 के फिर उत्तम हो जाता है को वह सत्य  
 हो सता है ।

### ३. यज्ञ काय में मन्त्र की प्रधानता—

द्विचक्रा यत्र बज्र के ही मैं मो प्रथमा रूप से ग्रहण किया जात है। मैं ३१ यात्रक हूँ। मैं अथवा का प्रयात्र ब्रत जतन प्रत्यक्ष हूँ। ध्वनिय हो ३१ नाक मे प्रत्यक्ष ब्रह्म के कि विज्ञान बंशियो के उच्चारण एव प्रारासु स म नमिक विकृतिवा यत्नन होत है। बीरस का ध्वनियो मे भीरता का सवार प्रपन्न की ध्वनियो मे प्रस गान्न रस की ध्वनियो से गानि शोकमोहात्त ध्वनियो के "क का प्रसा रत होत है प्रीति वह प्रस्थायो के मेन मन्थन पर आश्रय करता है। मैं क प्रसा नित है दोन परावृत्तव्य दृष्टियो की उत्पत्ति होनी है प्रीति दृष्टियो के अनुवृत्त हो कमो की प्रवृत्ति वास्तव्य होनी है। प्रत व

## यज्ञ - विज्ञान

लेखक श्री प० वीरसेन वेदश्रमी वद विज्ञानाचार्य

विचार पूरा म जो से शिब कस्याणकार  
कर्मों की विश्व मे वृद्धि समृद्धि बाहु  
ल्यता और व्य पक ता अवस्थम्भावी है ।

४ मत्र छन्दोमय है-

[illegible]

५ छन्दात्मक मण्डलो का निर्माण-

छत्रं यद्यपि प्रधानं रूपं ते ऽहं परब्रह्म  
 इति कस्योक्तौ कस्य ते भुवःसुवा ये तीर्ण  
 विनागो मे विमलम विष्णोः । ये तीर्ण  
 विनागो मी भुवः स्वः ॥ छन्दः पञ्च  
 भोगे ये मया मया मयसि शिष्टेषु मयसि  
 धीरः प्रापत मयसि ॥ इन्द्रो मयसात्मक  
 प्रजातो की वरिष्ठे के लिपुः प्रापत क्षन्दा  
 यो वैदुः प्रजातोऽहो प्रापत क्षन्दा  
 रोः प्रथमा प्रापत त्वा क्षन्दा सावयव  
 प्रापत त्वा क्षन्दा सावयव प्रथमा  
 मया मया त्वा क्षन्दा मया मया वैदुः  
 भोग त्वा क्षन्दा मया मया प्रापत त्वा  
 क्षन्दा मया मया प्रजातो का यजुषो  
 मे दानक मया मया प्रजातो ॥ इह  
 प्रक्रिया के द्वारा पृथ्वी क्षन्दाक्षि धीर  
 बुनोक्त म सपने मनोवाक्क्षि विनागो की  
 व्याप्ति की जाती है ॥

६ मण्डनो । देवतत्त्वो एव  
प्राणो का क्रियाशाल एव शक्ति  
सम्पन्न करना—

० न म डलो के धग्नि बायु एव भूय  
देवन्तस्व है। इनको भी सतेज करने क  
लिए धग्नि का दूत बना कर धग्नि दूत  
पुरोद्वे। यजुर्व २२ १७। यथाय धग्नि  
की स्थापना अपने सम्मुख भुम्ब स्व  
मन्त्र से त्रिलोको की प्रभावित करने क

लिए करनी पड़ती है। पुनः उक्त प्रश्न का  
 जवाब देने कीने महाभाष्यद्वितीयोऽंश उपलब्ध  
 वैयत तत्त्वो के ज्ञान उत्पन्न सर्वप्रथम  
 प्रधान तत्त्वो का ज्ञान विषय प्राप्ति के  
 लिए प्राप्तिद्वितीयोऽंश की जाती है। चर्चार्थ ज्ञान  
 प्राप्त समस्त ब्रह्माण्ड या जिनोकी के  
 प्राप्ति को किंवा प्रीति 'जड एव पुष्ट  
 किंवा वायु' है। इसलिए ये वे यज्ञ को  
 विषयवा वा यति। यद्युपेय शतः। कहा है  
 यद्यपि यज्ञ सत्त्वा का प्रधान पोषकत्व  
 है। यही यज्ञ का प्रधान लक्ष्य है। बिना  
 यज्ञ के महाभाष्यद्वितीयोऽंश उपलब्ध तत्त्वो  
 शीघ्र उत्पन्न नहीं हो पायेगा। किंवा प्राप्ति  
 नहीं वह यज्ञ प्रधान ही है।

### ७ यज्ञ का त्रिलाकी में गमन—

[illegible]

८ यज्ञ से सुख की प्राप्ति—

यज्ञ किय जाने पर यक्षणि बह तीनों  
 सीकों में ब्याप्त हो जाता है परन्तु वह  
 इन स्वभाव तत्तु पुन वित्तधानी होकर  
 हमें सुख प्रदान करता है। एषा वेद में  
 सत्य बताया है। जैसा कि—यज्ञो देवानाम्  
 प्रत्येति मुन्यम्। यजुर्वेद प्रभाषा ८ मन्त्र  
 ४। यक्षणि पिधानी द्वारा भाषीकित वह  
 सुख को वात है भाषाशालिनी को भवता  
 मूढवत—यक्षणि वह सुखीकोक एवं  
 सुखप्रदाय के स्विच होकर हम सब को सुख  
 प्रदान करता है। इसी प्रकार—यूनाद्वि  
 यक्षणि मुन्यम् नृवरराष्ट्र। यजुः १०।४४  
 भाषाति वह में यक्षणि सुखी देने के  
 कारण है।

श्रीर ब्रह्मचर्य पूरा होकर प्राप्ति हो जाती है। किस प्रकार से प्राप्ति हो जाती है उससे बिना मन्त्र क दीर्घायु करने में उपाहार यह प्रस्तुत किया है कि जैसे बाजार में खरीदते हैं वैसे ही ब्रह्मचर्य के द्वारा ही सुको को खरीदते हैं। यद्यपि कम से सुको को प्राप्ति ब्रह्मचर्य केवल में होती है। शत प्रत्येक कार्य के प्रारम्भ में यज्ञ का अनुष्ठान धन्यकर करना चाहिए।

६ यज्ञ का महान् फल विश्व  
मे माधुर्यता का प्रसार—

[illegible]

१० यज्ञ से फल प्राप्ति का  
एक अद्भुत प्रकार—

मनुष्यं प्रत्याय २। म न २५ हे  
 मसाया । कि जगदी श्रुत के म नो हे  
 ब्रह्म कर्मे पर यशो कर्मे हे पृथुक्षा हे ।  
 विष्णु कर्म के म-नो हे ब्रह्म धर्मात्मा हे  
 हे पृथुक्षा हे श्री मनुष्यो कर्म के म-नो  
 हे यशः पृथ्वी हे कैलास हे । पुनः व ही  
 श्वाको हे ब्रह्म श्री सुमुख एवं विभक्त  
 होकर सके को पंच भस्म हे पृथुक्षा हे  
 शरीर कर्म के म-नो स किया यशः सुको  
 पर पृथुक्षा हे को प्राप्ति होकर जगत को  
 पंच कर्ता हे । म निति हे पृथुक्षा हे  
 महा से जल विभाग को प्राप्ति होकर हे  
 ही मातृ श्री रर्षा र्षा को शुद्धि करता  
 हे श्री पृथुक्षा पर पृथक् पृथक् विभिन्न प्रकार  
 के सुसु को शुद्धि करता है । धर्मात्मा यशः  
 जय पृथुक्षा हे । पृथुक्षा जाता है को उत्तरो  
 त्रय धारोप्य क्रम से सुक्ष्म हो को भाग्य



व्यामपीठ—

उपनिषत् कथा-माला-५

## ईश्वर दर्शन

प्रवचनकर्ता—जीत गंग स्वामी सर्वदानन्द महाराज

को विद्यानि हेव सविनर्दिशति  
पराशुषु । यजुश्च तन्म पाशुषु ॥

—यजुर्वेद

उपनिषद् म परम त्मा को इस व्याख्या को ध्यान में लाना चाहता है। 'एक ब्रह्मी' अर्थात् वह परमात्मा है। एक ब्रह्मी सब को ब्रह्म में लयन करता है। इस मन्त्र की 'या-त' में ब्रह्म भी ब्रह्मकृता है। इस में पहले 'यजुश्च' का अर्थ है। वह एक वा 'यजुश्च' अर्थात् तत् कि परमात्मा न तो ध्यान स्वयं में विद्यमान होता है न परमात्मा में जाता है। इसीलिए वह एक है। उसमें ब्रह्म मर्त्य एक ही भवत्वा देखते हैं।

हुदिमानो के लोको का भी कुछ न कुछ ब्रह्म होता है। इस निवेदानी को यदि कोई हुदिमान् मनुष्य देखे तो उसमें भी कोई न कोई शिवा निहाल सकता है। उपनिषद् में परमात्मा को ब्रह्मत्वा के लिए यह शिवा दिया है कि वह एक है। गणित में जो दो को समक होमी है, उसमें भी एक समकित है। इसी प्रकार तीन में भी, चार में भी एक निहा है। एक मा एक फिर मन है किन्तु दो का एक परिवर्तन नहीं। कायब पर एक निहा है। ब्रह्म स्वामी और शब्द दोनों में एक ही है। प्रत्यक्ष परमात्मा एक ही है।

ब्रह्मा ब्राह्मी, ब्रह्मा ब्राह्मी, ब्रह्मा ब्रह्मीन शरास को भी कोई है। वह ब्रह्मकार एक ही परमात्मा को उपासना करते हैं। कोई दो की या तीन की दो नहीं करते। कोई उसे ही 'वीर' (God) कहता है, कोई 'परमात्मा', कोई 'ब्रह्मा'। किन्तु वह ही एक ही।

ब्रह्म देखो। सभी कहते हैं कि ब्रह्मों का ब्रह्म पिता की भांति गानन करनी चाहिए। ब्रह्म सोचें कि कभी माता तथा पिता के लोको में मेरा कोई ऐसा शब्द न करे जिनमें मैं दुःखित हो। इसी प्रकार माता पिता की ध्यान ब्रह्मों का विचार रखें। सेवक स्वामी की भांति-गानन करता है तो स्वामी भी सेवक बन सकता है। राजा प्रजा की तथा प्रजा राजा की बात सुनवी और मानवी है। इसी प्रकार इस भाव को अपने मन में स्थापन देकर कि परमात्मा हमारा स्वभाव करता है हमें भी केवल परमात्मा के धामने ही अपना मन्त्र कुलना चाहिए। यही 'यसो' अर्थात् वस में करने वाला

है? या नवा वसी मन सकते हैं? जब भाव ब्रह्मी हो जायेंगे तब प्रकृति का शास्त्र भाव पर न होगा। जब बीच निराण हो जाता है जब यह स्थिर हो जाता है, जब यह प्रकृति के प्रभाव में नहीं रहता, तब यह एक नियम है कि सभी उस पर प्रभु को कृपा होती है तब ही जाकर वह वसी बन सकता है अर्थात् मुक्त हो सकता है। परन्तु यह मन होता है जब वह उन प्रभु की शक्ति करे।

अब प्रश्न यह उत्पन्न होता कि हम सभी कब हमें 'एकत्व' करे। मुक्त शब्द होता। शरीर मनुष्य ही हमारे में सर्वेषु न पाता है। किन्तु हम सभी को नहीं? ब्रह्मा? एकात्मिक नहीं। जब तुम्हारी होमा तब ही तुम्हारे हो जायेंगे। आई। सारा तुम के लिए है।

इसमें भी ब्रह्मकार परमेश्वर की शक्ति के लिए प्रस्थापना होना चाहिए। ईश्वर को सब का पिता है। एक तुम के दो ब्रह्मों के पिता से वे दोनों अपने भावों हैं। पिता कहता है 'आई तुमों।' जब तुम ब्रह्म हो यह सब कुछ तुम्हारा ही है परन्तु धामी भावना ठीक नहीं। कार व्यवहार करो, कर्माधी और भागी। एक शब्दका ब्रह्म ब्रह्म किन्तु है पर दूसरा ईश्वर निर्दिष्ट है। ब्रह्मत्वं मे सोचा, 'पितामी की भांति है कि ब्रह्माणा चाहिए।' तुम्हारे के लिये ही पर ध्यान देने लगे। प्रातःकाल तुम्हारे पर धाता तुम्हारे को शास्त्रानी से ठीक और शास्त्रा रखा। उस प्रकार शास्त्रान रहता। प्रातःकाल के प्रेम-प्रातःकाल भावना भावना का भाव ठीक-ठीक करता। वह तुम को भाव निहा लगे निहा। एक भाव पर भावना के साथ ब्रह्मत्वा। साथ कम रहता, स्वभाव-समस्त लता करके पर जाता। सब प्रातःकाल, 'ब्रह्मा आई। ब्रह्मत्वं की तुम्हारे पर ब्रह्म'। प्रातःकाल उठते पाश्वर ब्रह्मी प्रकृत से बैठते। प्रातःकाल में ब्रह्म की भांति, तुम्हारे से कर्माणा मुक्त। साथ ही भावने में शक्ति ब्रह्म, पांच सात की अपने भी ब्रह्म कर पिते। शोच भी ब्रह्म प्रत्यक्ष, पिता भी यही शास्त्रान्त और भाव भी परम तुमों।

जब दूसरे शब्दों के लिये की तुमों। उनमें विचार, 'पिता में क्या पिता है सब मीन करे'। उसकी वैद्यकी वैद्य-

कर नुरे लोच पाशवायें ब्रह्मे। प्रभ, शराब, पीनी शारम्भ कर दी। प्रकृति विवेका भाता, तुम्हारे पर प्रातःकाल, उनमें ब्रह्मी प्रकार ध्यानुयुक्त ब्रह्म भी नहीं करता। बैठता ब्रह्म ब्रह्मा रहता। उसी में मेम का प्रातःकाल दूसरी तुम्हारे पर ब्रह्मा भाता। एक वस में ही शारा स्वयं ब्रह्मा हो गया। प्रभ मीनो। पिता के लोको तुम हैं। एक पर पिता की प्रत्यक्षा है दूसरे पर ध्यानुयुक्त। 'को प्रकार पर-मात्मा हम सब का पिता है और हम सब सारा में रहते ब्रह्मे उसमें तुम हैं। जो उसकी भांति पर ब्रह्मा उस पर तो पर भावना को कृपा दिवाई देती है जिससे उसकी भांति ब्रह्म नया जिया उसी पर उसका कोप है।

यह तुम्हारा कार्य है कोहें को तो तुमने नहीं बनाया परन्तु इन्द्रजन्म को तो तुमने ही बनाया है। इसी प्रकार पर-मात्मा में सब को कृपा है दिया है, उसकी ठीक ब्रह्माती और भाव में भाता ब्रह्म नामा तो तुम्हारे धामने शक्तिधार में है। यदि योश की शक्ति करता चाहते हो, तो यह को ब्रह्मी परमात्मा है, उसकी शक्ति धामना करो। पहलवान बना चाहते हो तो किसी पहलवान के शिष्य बनो। यदि धामनी लोकाई हो तो किसी जोषेकर से ही लोकाई पवनी, भाता लोकाई हो तो किसी रागी के पास ही जाता होना। धाम में सब कुछ विद्यामान है, पहलवानों की है, धामनी की, रागी की। परन्तु इनके लिए किसी की सहायता की आवश्यकता है। यदि तुम ब्रह्मी ब्रह्मा चाहते हो, तो परमात्मा को उपासना करो।

अब प्रश्न होता है, कैसे कर? सर्व-ज्ञ परमात्मा परमात्मा तुम्हारे समक्ष है। प्रभु को बाहर कहीं दूसरे हो? न वह ध्यानुयुक्त पर है, न विद्यालय पर, न समुद्र में, वह तो तुम्हारे समक्ष है। परमात्मा कहता है 'न मैं ध्यानुयुक्त पर हूँ, न समुद्र में, बाहर कहीं नहीं हूँ। केवल 'ब्रह्म'ों के मनो में ही मेरा स्वामी है।' 'ब्रह्म कहते हैं योगी को, वेदा स्वामी हैं।' उष्णा स्वाध चित्त मनुष्य के पास है। प्रकृत स्वयं भुक्ति की और भाता है। श्रावक जो स्वाम-स्वाम पर रहत सब हुए हैं। पहले कुशी पर रहत हो रहे हैं। कुशी से बाता लोकाई बना ब्रह्म पर रहत हो रहे हैं। या तो उसे पर्व शराब, इतिहास कि शराब ऊपर कुशी की नुरे के साथ ठण्ठकर

न भावे और का भावे। इसी प्रकार जो स्वाध करते हैं न कहते हैं 'हृदायी? हृदायी? सब हृदायी।

एक स्वामी साधु था। ब्रह्मत्वं और विद्यात्वं का उस पर कोई अभाव न था। वह एक मनुष्य के ब्रह्मत्वं, यही एकत्व पिता है। दूसरे विद्य ब्रह्मे के ब्रह्म पदा। उसमें कहा, 'महात्मा की ब्रह्म परमात्मा के पार जाना चाहते हैं परन्तु पात चाहते हैं भिने बिना पार न जाने देंगे।' साधु ने कहा, 'आई। हब ब्रह्म देने कि हब साधु हैं। हब फकीरों के पार देने कहा?' उसने कहा, 'के न भावने में।' उसने ब्रह्म-तेरा कहा परन्तु साधु ने उससे एक वंश र पिता। उस धामनी में तुम्हारे के धामनी साधु के पर न भाव की। महात्मा की भावनी न तुम्हारे और ब्रह्म पिता की और ब्रह्म पदा। वह तुम भी लोकाई-लोकाई हो गिया। साधु शक्ति पर ठण्ठका। मन्त्राह सब कहा, पार करता। उसने कहा कि 'पर्व शक्ति। साधु न कहा। हब फकीरों के, हमार पास सब कहा?' उसने कहा कि ब्रह्म भागी। कोहें भाता तुम को पदाओ तो उनमें मायका ब्रह्मा हब तो पर्व विद्य बिना न जाने देंगे।' साधु ने कहा, 'सभी सही। कोहें ब्रह्म पदा। प्रकृत्या परमात्मा की शक्ति पर रह गई। उसने कहा कि 'भाव तुम का ब्रह्मे हो मेरे पास तुम ही। परन्तु यह ब्रह्म ब्रह्मा है?' उसने कहा, 'आई। कोहें तुम ही कोहें को। मन्त्राह ने ब्रह्मा तो धामनी निहाली। उसने कहा 'ब्रह्मा तुम नुठ लोकाई है।' साधु ने कहा, 'मैं नुठ लोकाई।' जब मन्त्राह किसी पर बाह्य पर रहने लगे तब ऊपर से वह पहलवी की था पाया। उसने कहा—'महा-राव'। ब्रह्मा यह धामनी की भिने भावी की, उसी ने पार किया। ब्रह्म न होतो ही धाम पर किसे भाते?' साधु ने कहा, 'ब्रह्मा।' वह कमल कमल तक ब्रह्मी की, सभी तक में पार नहीं था ब्रह्म, जब कुछ ब्रह्म तो पार हो गया।

इसीलिए 'ब्रह्म' स्वयं स्वामी को कहते हैं। सारा में ब्रह्मत्वं के भाव सब विद्यमान है। परन्तु परमात्मा के भाव को नहीं विचारते। उसकी को स्वयं भाव के ब्रह्मे। जैसा कहा है कि 'परमात्मा ब्रह्म के भाव में है।' तुम ब्रह्म पिता बन जाओ। वह स्वयं तुम्हारे भाव में का जायेंगे। एक मनुष्य धार में बैठता हुआ भी स्वयं ब्रह्म पिता बन सकता है। कारण, परमात्मा सर्वव्यापक है। सभी ब्रह्म है, कहीं लोकाई की ब्रह्म भी उससे लोकाई नहीं। उसे प्राण करने का स्वभाव तुम्हारा भवत कहा है। सब स्वामी को तो तुमने कभी स्वयं ही नहीं किया। जब तक धाम कर स्वयं ही हो सता। जब तक परमात्मा की शक्ति पर हो कुशी। न को पर्व शराबों। न को पर्व शराबों। न को पर्व शराबों में ही तो यह है। परमेश्वर को पाता तुमसे है। (समस्त)





## समाचार-सन्देश

### आर्यसमाज जनकपुरी का वार्षिकोत्सव एवं

### समाज भवन का उद्घाटन समारोह

आर्यसमाज पत्तारोही सी तारक जनकपुरी का वार्षिकोत्सव दि० ४ व १२ मई १९८४ तक समाग्रह गुरुक मनाया गया। इस उत्सव पर ५ से १२ मई १९८४ तक धर्मवेद के मंत्रों के जुहव यज्ञ हुआ—जिनके लक्षा—सैक रात्रिकोरी की महोपस्थिति के। रात्रि में प्रथम कर्त्तव्यों में प्रमुख रूप से वीर रात्रिकोरी की धाराय ४०० वाचस्पति उपस्थाय धाराय सिक्का त उपस्थाय थे। इसके साथ ही १० पनामात्र की पीतुष रमिता धाय के भजन—उपवेष्टपुत्र होते रहे इन प्रथमों द्वारा धाय जनता की धाराय त्मिक सामाजिक बहुमुख विचार सन्ने को मिले।

आने प्रथम मासैतिक धार्मिक प्रतिनिधि समा ने का। इस सम्येक के प्रमुख ५४० में श्री रामचन्द्र विक्रम-राष्ट्रपति, धाराय वाचस्पति वर ५४०० धर्मिक दान व शास्त्री तथा श्री मुखदेव की प्रथम दिल्ली धाय प्रतिनिधि समा ने प्रथम को ने कहा धायकम जमने के कोई जाति पालि की व्यवस्था को नहीं मानता है परंतु युग के धारा पर वय व्यवस्था को स्वीकार करता है—आय सवाय सत्य राष्ट्रीय एकताय धाराय को स्वीकारा है पर तु वह वैदिक सत्कृति के धाय पर हो। भारत सर काय को धायसमाज समय समय पर सह योग देना रहा है। और देता रहेगा धाय

५५



उद्घाटनकर्त्ता—श्री कीरतन श्री रायचम—श्री भारत सरकार। कार्य में डा० एस० पी० शुक्ला व्याख्येय नेहता मेजर व मद्रकाय धाय बालक माननेत्र विद्यासागर मयाय

५ मई १९८४ को मयनिमित्त धाय सम्राज यवन पर धोरेय पत्तारोहक धायकम डा० लक्ष्मण भारद्वाज द्वारा किया गया। उत्सवाय उत्तमा धर्मिक जन की किया गया। ११ मई को महिला सम्येकन श्री शकुन्तला धाय की कर्म लता ने मयल हुआ जिसने कुपति निवारण ने महिलाओं का मोहम न विषय पर से विचार भरतु कि यय।

१२ मई १९८४ रविवार को धाय सम्राज भवन उद्घाटन की शेरदेव की कैमोय राज्य मन्त्र ने किया। उद्घाटन समारोह को धायकता श्री सरदारलाल बर्मा ने की। मंत्री डा का परिषद की धोय पात की (मुद्रुय श्री रघुवीरसिंह धारकी—पुण्यय मंत्री भावैतिक धाय प्रतिनिधि समा व्यवस्थापक मयूर प्रभ) न दिया। मंत्री की ने उपस्थित वनमुह को अपने नाम न जाति धायक गय निवास देने की प्राथम्य की। उद्घाटन समारोह के पश्चात रात्रिकीय एकता सम्येकन सत्य हुआ—विश्व की धायकता की श्रद्धांगन धाय

धाय विद्यमनकारी ताकती को सरकार ने राजनैतिक लाभ की धर्मि से लुट दी किन्तु धायसमाज गुरु रूप से मोन नहीं देता रहेगा। धायसमाज के विद्याल छात्र धोयिक हैं और वेव की बाकी स्वेया मय कर्मयोगी धायकम के लिए है। धाय बसायो ने विकस की ने धायसमाज के कार्य की सराजान की और इस प्रकार के सम्येकन को समय समय पर धायो जित करने के लिए धायसमाज का धाय वाय किया। धायय उपस्थाय की ने वैदिक उद्धार की ने उपस्थित वन मुद्रुयय को धायसमाज के राष्ट्रीय गुरुक की बताया। श्री शास्त्री की ने धोर मुखदेव की ने धायिक परिस्थितियों में धाय समाज को समय रहे की प्रकाश की। धाय ने धाययय समाज भवन मेजर रायप्रकाश धाय ने किया। धायि पाठ के बाव समय उपस्थित वर्गों ने शीति जोय में धाय किया।

वचरीन,

## वीरांगना प्रशिक्षण शिविर तपोवनाश्रम, नालापानी, देहरादून

१० जून १९८४ से २५ जून १९८४ तक

तपोवनाश्रम नालापानी देहरादून में धायन के वनायक की धाययय धायरस्त्री की की प्रकाश व धायवर्धन में एक वीरांगना प्रशिक्षण शिविर लगाया जा रहा है। जिसमें हरिपाशा पनाय हिमाचल व उत्तर प्रदेश के केवल ५० महिला धाय लेनी। यह शिविर निष्पन्न होगा। धायि जाने का विचारय वय का धायमा धायता होगा।

इस शिविर ने निम्नलिखित महा गुमाय प्रशिक्षण एव प्रभम होने १ स्वामी धायरिती की महाराज २ की वनायक की धायरस्त्री तथा नयक तपोवनाश्रम देहरादून।

३ त्रिनिपत कुमारी विमला धायका

### धुआ जगति के लिए देश भ्रमण

विस्वी २६ धर्म (स मवार मोवा गुजरात महाराष्ट्र राजधान हरिय बा के १५० विद्यालयों द्वारा नगरी उत्तमपरी ने कैमोय धाय युवक परिषद् के नेता लक्ष्मणारी धाय नरेय ने विहित साय धर्मिक धायो धोयिती में धाये प्रय वनी के दौरान लक्ष्मणारी मोनवानी को धाय महाय—वधाय न त्यागने बिना लहेय विवाह करने सिनेमा क्लबों का बहिष्कार करने देश व समाज गुजार के रात्री ने महत्त्वपुन्य युमिका निजाने की प्रियाय किया।

मर १६ विद्यमर ने धनतराष्ट्रीय गुमा वय के दौरान गुमा बाणुति धायि

धाय महिला कलेय बदलाता

५ कुमारी गुमा मेहता पुनर्धर्ष पुन्यधायिका धाय मय हार्द स्मृण, कैपतिगुट।

उत्त शिविर के वनायक की धाययय की धायरस्त्री तथा प्रशिक्षक संयोगिका त्रिनिपत कुमारी विमला धायका होगी। इस शिविर में धायि नेने के लिए महिला को संक्षेप निजमण है। इसमें शिक्षिका महिला की प्राथमिकता दी जायगी। धाय की धायि इसने माय मेना बाई ने कृपाय २० मई १९८५ तक अपने श्रान्ता पय धायक महोदय को मेजरकर स्वीकृति प्राय करने का कष्ट करे।

त्रिनिपत कुमारी विमला धायका संयोगिका

धाय के धायपत वैद्यमर में गुमायो ने राष्ट्रीयता तथा देश के दुःख करने वाली ताकती के विरुद्ध लक्ष्मणारी धायनरेय वनमन तैयार कर रहे हैं।

धायसमाज धायी महार ने एक मठवार्ता ने लक्ष्मणी बसाया कि वे देश के वय धायी सिद्ध तथा उपस्थित धायी में भी शौरा करे। वे धायन वेव प्रचार बाहुल के माध्यम में गुजर धायनी के कैमोय बसाते हैं तथा धायय प्रकाश व वैदिक श्रान्त्य करे का प्रचार करते हैं।

बजमोहन धाय मयावता गुमा उत्तमपरी (कायिक)

## निर्वाचन

मर रविवार को धायसमाज स्वामी प्रदामयन बाकार शाहुन बाकार धुमि माया का १९८४ १९८५ के लिए साका एयु सना का धायिकयय डा० रायलकय की की प्रथमता ने हुआ।

धायकमति से डा० रायलकय को प्रथम चुना गया और धायिकायि धायरय धायरिती के नयन का धायिकारी प्रथम की को दिया गया। प्रथम की ने इस प्रकार धायका की—

धायक—श्री राधाराम धारीन

प्रथम—डा० रायलकय

धायि प्रतिनिधि तथा हरिपाशा के धायिकारी एव धायिकायि—

प्रथम श्री० वैरेशिध पुर्न रका राय मंत्री

उपधायन धायरिधि धायरस्त्री

वनायक मर, रौयक

धायि धुमियायि वेदी

कृपा पुन्यय साधुय, जि० धोयिगय

की कैमोयधाय की महाय

करीधायन

मन्त्री श्री श्री० लक्ष्मीर डास्की

धायकयय धायि धायिकायि

धायि उत्तमपरी—श्री ययाय धायिया

उपधायन—जि० श्री रौयन

श्री धायपाय धायनय की धायरमाय धायी

महायनी—डा एय की धायिया

मन्त्री—श्री धायराम मनीय की वनयय रा

धोयधायन—श्री रायमय की

उपधोयधायन—धायरय धुमियायन की

पुन्यकाययन—श्री लक्ष्मण धाय

धुमियायययन—श्री वैद्यरय देवी

स्टोर धोयय ना० धोयप्रकाश धायन

उय स्टोरधोयय—श्री विजय कुमारी वय

धायरययय मन्त्री

धायि धायिकायि रौयक धायक

वययय धायय रायकीय महाविद्या-

यय नयन जि० धायरय

उपधायन श्री० धायधोय धायिकायन

धायि जि० लोनीयय (धायरयय

धायक कलेय धायरय

धोयधायन ना० रायधायन

प्रथम धायरयय महत्त्वपुन्यय मन्त्री

धि०—रौयक

पुन्यकायय धायरय धायियाय धायी

धायी महाविद्यायन धायी धायरी



**आर्य जगत् की शान**  
**२०० बिस्तर वाले निर्माणाधीन**  
**नेत्र चिकित्सालय**  
**(अनुमानित लागत दो करोड़ रुपये)**  
**के लिए दिल खोलकर दान दीजिए**

दान की राशि प्रायःकर अधिनियम जी० ८० के  
 अन्तर्गत कर मुक्त होगी।

सारा शान बैंक/मनीऑर्डर/बैंक ड्राफ्ट द्वारा

मन्त्री, माता चन्ननदेवी आर्य धर्मार्थ नेत्र चिकित्सालय,  
 सी-१ जनकपुरी, नई-दिल्ली-१८ के पते पर भेजा जाए।

दानदाताओं के नाम चिकित्सालय की शिला पर  
 अंकित किए जाएंगे।

निचे टंक

रामगोपाल शालग्राम	सुर्यदेव	महाशय धर्मपाल	योगप्रकाश धार्य
सरलाच चिकित्सालय	प्रभात, दिल्ली	प्रभात	मन्त्री
एच प्रभात डा० का०	धार्य प्रतिनिधि	धार्य केन्द्रीय	महाशय कुन्तीलाल
प्रति० लता	लता	लता	पेरि० डू०
लीजन्स से	महाशिवरां दी हट्टी प्रा०	लिमिटेड ६/४४	कीर्तिलाल, ब्रिजोदयिका अत्र, नई दिल्ली-११००१

**लाला रामगोपाल शालग्राम अभिनन्दन समिति**

महर्षि दयानन्द आश्रम, रामलीला मैदान, नई दिल्ली-११०००२

यद्यपि श्री लाला रामगोपाल शालग्राम के धर्मसन्तान स्वामीजी के अन्तर्गत न  
 निम्नलिखित प्रमुख धार्मिक-संघों का एक कार्यक्रमही नहीं करवाया है :-

१ श्री लोचनचरण चरणचरण एडमोड	सुप्रभा
२ महाशय धर्मपाल की	प्रकाश
३ श्रीमन्तु लाला शालग्राम की	मोनामल
४ डा० योगप्रकाश	सरोजक एच मन्त्री
५ श्री लोचनचरण चरणचरण	लक्ष्मणदेव

सदस्य

६ श्री योगप्रकाश श्यामी	श्री श्री लोचनचरण चरणचरण, दिल्ली।
७ डा० लोचनचरण श्यामी	उपमन्त्री लोचनचरण चरणचरण, दिल्ली।
८ श्री जयनारायण चरणचरण	उपमन्त्री लोचनचरण चरणचरण, दिल्ली।
९ श्री सुर्यदेव	प्रधान धार्मिक प्रतिनिधि लता दिल्ली।
१० डा० धर्मपाल	मन्त्री धार्मिक प्रतिनिधि लता दिल्ली।
११ डा० नेदरलैंड	प्रधान धार्मिक प्रतिनिधि लता दिल्ली।
१२ श्री रामनाथ चरणचरण	मन्त्री धार्मिक प्रतिनिधि लता दिल्ली।
१३ डा० नेदरलैंड जी	प्रधान धार्मिक प्रतिनिधि लता, हरिद्वार।
१४ श्री इन्दरराज जी	प्रधान धार्मिक प्रतिनिधि लता उत्तर प्रदेश।
१५ राजगुरु धर्म	प्रधान धार्मिक प्रतिनिधि लता प्रतिनिधि लता।

श्री धार्मिक धर्मोक्त का सहायक हस्त कार्य के अन्तर्गत एक प्राचीन है।

(डा० धर्मपाल प्रकाश)

सरोजक एच मन्त्री

**उत्तम स्वास्थ्य के लिए**

**गुरुकुल कांगड़ी फार्मसी,**

**हरिद्वार की औषधियां**

**सेवन करें**

The advertisement features a central hexagonal grid containing images of various medicines and their names in Hindi. The products include:

- गुरुकुल चामय** (Gurukul Chamay)
- श्रीमन्मन्त्री सुर्यदेव** (Shrimanmantri Suryadev)
- फार्मसिन** (Pharmacin)
- गुरुकुल चामय** (Gurukul Chamay)
- श्रीमन्मन्त्री सुर्यदेव** (Shrimanmantri Suryadev)
- फार्मसिन** (Pharmacin)

Below the grid, the text reads: **गुरुकुल कांगड़ी फार्मसी हरिद्वार** (Gurukul Kangri Pharmacy Haridwar).

शाखा कार्यालय-६३, गली राजा कैशरनाथ,  
 कोन. २६६८३८

बाबडो बाजार, दिल्ली-६

दिल्ली धार्मिक प्रतिनिधि लता १३ हनुमान रोड, नई दिल्ली-१ फोन ११०१५० के लिए डा० धर्मपाल द्वारा सम्पादित, एक प्रकाशित लता  
 सेंट्रल प्रेस, लता नं० १४, कैलाशनगर, दिल्ली-११ नं० मुक्ति २४० नं० डी० (सी०) ७५६

# कल्याणमार्ग के पथिक स्वामी श्रद्धानन्द

प्रसिद्ध साहित्यकार काका कालेलकर

स्वामी श्रद्धानन्द जी मे प्रायः जाति का मनोन्मत्त स्वभाव प्रकट होता प्रतिबिम्बित था। मे अपने जमाने के कर्तव्यपूर्ण प्रतिनिधि थे। सामान्य परिस्थिति मे रहते हुए भी प्रायः पुण्य भवने पुण्याय से कैसे उच्च और असाधारण कोटि तक पहुँच सकता है इसका उदाहरण स्वामी जी के जीवन मे हम पाते हैं। स्वामी श्रद्धानन्द सरस्वती ने जो जीवन वेष्ट मे प्रकट किया उसका बहुत पथिक से किसी ने किया था तो वे स्वामी श्रद्धानन्द ही थे। धर्म प्रचार शिक्षा प्रचार और लोकसेवा दोनों बातों में अपना जीवन व्यतीत करते उन्होंने बलिवान के जब में जीवन बस का धन्युत् स्नान किया। गुप्त और विषय दोनों पुरुषसिंहों ने अपने निर्मम जीवन मे मृत्यु को परास्त किया।

धर्मार्थ हत्यारे का बदला न लेकर उनके अलस धनुषायियों ने अपना धायत्व हा सिद्ध किया है। निर्मम पुरुष का रक्त नास्तिक खन का उत्सव स्वाद है। स्वामी श्रद्धानन्द जी ने जीवन भर अपने पत्नी से सेवा की और धर्म मे अपने खून से। इसलिए वे धर्मपथ प्राप्त कर सके। सत्यता कोला और बलाना आचकन सामान्य ही चीज हो गई है क्योंकि जानता देख चुकी है कि लोग जीवन मे सम्बन्धित सत्याग्रही का महत्त्व कितना है। लेकिन जब श्रद्धा विधान सरस्वती ने कार्य संपूर्ण के धारणा को आशुत करने के लिए सत्याग्रहकार ने नई शिक्षा प्रशासनी का प्रारम्भ किया तब आशुत ने अपने संस्कार बहुत



कम थी। ऐसे समय पर सत्य त्याग कर अपने पुत्रों को साथ लेकर गया के तट पर जगल में आकर बसना केवल श्रद्धानन्द पुरुष का ही काम था। मानो वह एक का विरजित यह ही था। श्रीराम जी चाहते तो वे किसी भी क्षण मे अपनी कार्य क्षमता का परिचय दे सकते थे। फीज में दक्षिण होते तो नामांकित सेवानी हो जाते। किसी रिवाजत की सेवा मे प्रवेश करते तो प्रजाहिनी प्रथम बन जाते। राजनैतिक क्षेत्र मे प्रवेश करते तो महाशय की घुरा का बहुत करते। केवल धर्मपथिक बन बैठते तो हजारों क्षणक्षय हासिल करते।

साहित्य क्षेत्र का प्रवेश पसन्द करत तो साहित्य सन्नटो से कर भार बसूल करने की योग्यता प्राप्त करत। परन्तु उन्होंने सब छोड़ कर शिक्षा का ही काम अपना जीवन काम बनाया इसीलिए मेरा सिर उनके सामने झुकता है शिक्षा का क्षेत्र जगल मे धरती उलना प्रतिष्ठित नहीं है कि जितना उनका प्रविष्टा है। तो भी अनुव्य जगल की उत्तम सेवा शिक्षा द्वारा ही होने की है

भारीक सक्ति। द्रव्यसक्ति राक्षसकित सयसक्ति इत्यादि सब सक्तिपूर्ण शिक्षा सक्ति के मुकाबले मे गीत है। धार्मिकता सेवा ज्ञानो

वासना और बलिवान यदा जीवन का सत्य है। और इन जीवन तर्क का पोषण केवल शिक्षाप्रसार से ही हो सकता है। दीर्घवर्षी समाज पुरुष ही इस बात को समझ कर शिक्षा के क्षेत्र मे अपना प्रदान कर सकता है। वे अपने बाह्य से और बाह्य होने के कारण ही वे हरिजन सेवा की विशेष जिम्मेदारी अपने सिर पर ही ऐसा समझते थे। स्वामी श्रद्धानन्द जी की इसीलिए मैं जातिगुप्त कहता हूँ।

कल्याण मार्ग के पथिक स्वामी श्रद्धानन्द जी की सेवा अपनी दृष्टि से प्रमुख है। राष्ट्रीय शिक्षण वर्ग जाग्रति समाज सेवा धादि धर्मिक क्षेत्रों मे उन्होंने भारतवर्ष को एक नया ही रास्ता दिनाया है। श्रद्धानन्द के बल से ही वे यह तब कर सके। जिस दिन उन्होंने अपने प्रिय पुत्रों की लेकर गुरुकुल की स्थापना के सत्य से गया के तट पर निवास किया वह दिन भारतवर्ष के नानमान इतिहास मे महत्वपूर्ण का था उस दिन उन्होंने हिन्दू जाति के उद्धार की नीज ज्ञाना ऐसा कहा जा सकता है। जिस दिन उन्होंने पञ्च बायको की धनपाया उसी दिन हिन्दू जाति को उन्होंने सगठित किया। और जिस समय उन्होंने पञ्च गोत्री धर्म सफ़र की तरफ तु ता की नजर से देखा उसी दिन भारतवर्ष को उन्होंने निमय किया अपनी प्रमुख नीज श्रद्धानन्द ने उन्होंने अपना ईश्वर नाम इनाथ किया। सत्यम् श्रद्धानन्द राष्ट्रपूजित थे। ऐसा समय जकर आयेगा कि जब उनके द्वी और (विषय ६ पर)

## सत्सम वाटिका

श्रुति कुटुम्बको धारयते ।  
देवता इति । श्रद्धा निष्पृष्टिमुप ।

अथर्व — युवान सन्तु विष्णु समने  
बहुना ददाए पतिव्रत जगार । देवस्य महित्वा  
काव्य पद्य ह्य समान व शब्द ममार ।

अवस्था — (युवान सन्तु) एक ऐसे  
नवयुवक को (विष्णु) विविध कामना  
करने वाले को (समान) युव ने (बहुनाम्)  
बहुतो को (ददाए) मार भवान वाला  
है (पतिव्रत) (पतिव्रत) एक युव (जगार)  
निगल जाता है । (देवस्य) प्रभु के  
(महित्वा) बड़ महान्त वाले (काव्य)  
काव्य को (पद्य) बसा (क) (ह्य) शब्द  
प्राप्त को हल की रहा बा (ह) वह  
(शब्द) शब्द (ममार) मरा पडा है ।

अवस्था — इस मन ने बड़ काव्यमय  
इस व सवार की कलुंगयुता विचारकर  
परोक्षरूप में यह प्ररक्षा की क्या है कि  
इस सवार के कुछ कुछ, मय-मोक्षवि  
हृन् की चक्की में घिसन से तू उठी की  
धाम्य ने बाहर भाग पा सकता है ।

सवार में बड़ बड़ बिहान् हुए बिहाने  
कलुंगयु वैरिष और बौद्धिक माधम्य धान  
मा । जिन्हें अपनी बहुतायत पर बड़ा  
प्रतिमान था । वे सदाहारा और विषय  
इस सवार से कम्बे बने राम के वैष्णव का  
मखन करता हुए बालीक भक्ति ने  
मिठा —

सप्तविंशत्यस्तस्यो मयावत् साङ्गैरेवमित् ।  
इत्यन्त्ये व पितु ज्येष्ठो बहुभूतभरतप्रियम् ॥  
भा० राम प्रभो १।२०

राम सब विधाओं को पठकर तथा

## बुढ़ा जवान को निगल गया

लेखक—प० शिवकुमार शास्त्री

विध ददाए समने बहुना युवान सन्त पतिवो जगार ।  
देवस्य पद्य काव्य महित्वाऽऽ ममार स ह्य समान ॥  
श्रद्धा—१०।२५।५।



पुल बहुभूतय प्रत्य सत्ताप कर विविधत  
स्वातक हुए । पदङ्क संहित वेद की भी  
पडा । भाए धीर सत्त सत्त सत्तापन ने  
धर्मात्त धनुष ने धरने पिता से भी बड़  
कर हो गये ।

ममकामाप्तस्य सन्तुतिमाय  
प्रतितापमाय ।  
लौकिके सत्यापारे कृतकतो विहारव ॥

राम ने धम धम धीर काम के रहस्यो  
की समझ लिया । उनकी धनमुल सत्त-  
पत्ति थी । धारणीय बड़ उरवो की धीर  
हुरो के बिचारी को वे बहुत धीर समझ  
लेते थे । बौद्धिक मय तथा सत्योचित  
आधार-अवधार को वे अभी प्रकारमानते  
वे धीर मयाधुनार करने बाहरल में  
भाते थे । राम की धीरता कोकोतरजवा  
ता न्यति के लवाभ धीर अवधार  
की परतने की बाधयोजना सताता धीर  
सत्तापन को बैरकर उस धमय वह  
प्रतिष्ठ का कि—

विचारमयित्तपत्ते  
विचारमयित्तपत्ते  
विचारमयित्तपत्ते  
विचारमयित्तपत्ते  
विचारमयित्तपत्ते  
विचारमयित्तपत्ते  
विचारमयित्तपत्ते  
विचारमयित्तपत्ते  
विचारमयित्तपत्ते  
विचारमयित्तपत्ते

राम सन्तु का सहार करने के लिए  
दो बाएँ मही चढते धर्मात्त एक बाएँ से  
हो धरने सन्तु की सहाय्य कर देते हैं ।  
राम अपनी सत्ताप ने धरने की योग्यता की  
देखकर एक बार ही उचित स्थान पर  
उठकी विमुक्ति कर देने हैं । धर्मात्त  
व्यक्तियों को परतने की नये धनमुल  
समता है । राम बाएँ को एक बार ने  
निहास कर देते हैं । वह फिर निजसमता  
नही रहता और राम को एक बार कह  
देते हैं उससे परितप्तन मही होता ।

राम इतने प्रतापी थे कि उन्हें सोचो  
ने ममान तक बना दिया । किन्तु वेय  
कहता है उस निगलने के नियम की देखो  
महा सब निगल और नयसत्तक है । धारा  
ममार स ह्य समान तक उस की सीवित्त  
बाधत वा निगली योग्यता धीर परित्तम  
का सिक्का उक्त मयन का सवार मानता  
या भाव वह मरा पडा है । बुढ़ता सके  
मालो बाला कामरपी परतापता मजानो  
की निगले का रहा है ।

ममकामाप्तस्य सन्तुतिमाय  
प्रतितापमाय ।  
लौकिके सत्यापारे कृतकतो विहारव ॥

पराक्रम की कलौती है—  
वेन की रकुपन कि सत्तापता  
सत्तापित्तपत्ते—  
मैत्रीविधि धनरूपन सत्ताप  
कील्ल निगल कियात् ।  
सत्तापित्तपत्ते सत्त सत्त व सत्त  
सत्ताप सत्त कील्लपत्त  
सत्ताप प्रतापित्तपत्ते प्रतापित्तपत्ते  
सत्ताप सत्त ।

हे राम ! मैं धर्मिक भाग का देखक  
हूँ । धर्मिक बड़ा के लो बड़ा बड़ा कलु ।  
मैं मेध धार्मिक पत्तों की भी कुछ मही  
धमपत्ता, फिर इस पुरान धीर-धीर  
धनुष की बात हो क्या है । मैं इसे उठ  
सकता हूँ, झुका झकडा हूँ मैकदं पृथ  
किर सकता हूँ और इसक हूँक टुडक  
कर सकता हूँ ।

राम ने बाकि के वरने पर किमिमम  
का राज्य गार कीता की कोम ने युवोय  
का प्रभाव देखा तो धनमय को युवाय की  
मत्तना करने को मवा । धनमय वा ऐसे  
धनमयों के लिए गमार बड़ा रहता था ।  
बाहि हो एक धनमी ने युवाय की प्रक-  
तिव्रत कर दिया—

म स सत्तापित्तपत्ते म-म वेन भावि  
पुरा मय युवोय । जित माय से कुछ को  
धनमय पदम हयने भाव का मेवा है, वह  
माय मय मय मही हो क्या है । ऐसे  
वीरों को भी मही बूडा कामरवतिष्ठ कर  
मारा ।

कृष्ण जैसे प्रतापी प्राकृतिक सत्ता  
महापुष्प—विचने निगल विह्वल बाएँ  
के लिए की सत्ता-सत्तापित्तपत्ते विचार  
धत में ममान से सेटे हुए एक कहीवैय की  
धीर से धामय होकर धनमी कीवकता  
समायती है ।

सार वह निगला कि सवार से सचको  
बाना है । धनम का एक एक धन बहुत  
मृत्युमाय है उसका सत्तापित्तपत्ते धीर  
प्रत्याप के धार्मिक पर प्रत्यापता वे उसे  
कियापित्तपत्ते करो ।

## वेद में विज्ञान

धमवीर विद्यालयकार

१ ओषधजन और उदजन  
से त्रल की उत्पत्ति—

उत्पत्ति सत्तापित्तपत्ते सत्तापित्तपत्ते  
उत्पत्ति सत्तापित्तपत्ते सत्तापित्तपत्ते  
उत्पत्ति सत्तापित्तपत्ते सत्तापित्तपत्ते  
उत्पत्ति सत्तापित्तपत्ते सत्तापित्तपत्ते  
उत्पत्ति सत्तापित्तपत्ते सत्तापित्तपत्ते  
उत्पत्ति सत्तापित्तपत्ते सत्तापित्तपत्ते  
उत्पत्ति सत्तापित्तपत्ते सत्तापित्तपत्ते  
उत्पत्ति सत्तापित्तपत्ते सत्तापित्तपत्ते  
उत्पत्ति सत्तापित्तपत्ते सत्तापित्तपत्ते  
उत्पत्ति सत्तापित्तपत्ते सत्तापित्तपत्ते

धर्म—  
मसित्त उन मैनावरय सति—हे  
मसित्त । तू निग धीरवमका सत्ताप है ।  
बहुना उत्पत्ता ममत धर्मिमाय—  
हे बहुना तू उरवो की मनाकामना ने  
उत्पत्त हुआ है ।

देवयन बहुला विष्णु नियम के  
समुसार ।

उत्त सत्ताप त्वा—बूद के रूप ने मिरे  
हए तुमको  
विष्णु देवा पुंकरे धनरूप—उत्त  
देवो ने पुंकर (तापित्त) ने पदुता दिया ।  
भावार्थ—

मधुपु की उत्पत्ति में निग  
धीर मरुत धीरवम धीर उत्पत्त  
के निगल से प्राकृतिक निगली के धनु  
सार बूद-बूद रूप में बस बना । उत्त बस  
को देवो ने पुंकर में एकत्रिष्ठ किया ।

२ आयुमपद्धत में जस-

करो को उत्पत्ति ।

मने ह कात्तापित्तपत्ते मयोनि,  
कुन्ने रेह विविधपु सत्तापित्तपत्ते ।  
ततो ह माय उविवाय मन्माय,  
त-ने कात्तापित्तपत्ते सत्तापित्तपत्ते ॥  
श्रद्धा—१०।३१।११

धर्म—  
मने ह कात्तापित्तपत्ते मयोनि,  
कुन्ने रेह विविधपु सत्तापित्तपत्ते ।  
ततो ह माय उविवाय मन्माय,  
त-ने कात्तापित्तपत्ते सत्तापित्तपत्ते ॥  
श्रद्धा—१०।३१।११

उत्त सत्ताप त्वा—बूद के रूप ने मिरे  
हए तुमको  
विष्णु देवा पुंकरे धनरूप—उत्त  
देवो ने पुंकर (तापित्त) ने पदुता दिया ।  
भावार्थ—

तत्त सत्तापित्तपत्ते सत्तापित्तपत्ते  
उत्त सत्तापित्तपत्ते सत्तापित्तपत्ते  
उत्त सत्तापित्तपत्ते सत्तापित्तपत्ते  
उत्त सत्तापित्तपत्ते सत्तापित्तपत्ते  
उत्त सत्तापित्तपत्ते सत्तापित्तपत्ते  
उत्त सत्तापित्तपत्ते सत्तापित्तपत्ते  
उत्त सत्तापित्तपत्ते सत्तापित्तपत्ते  
उत्त सत्तापित्तपत्ते सत्तापित्तपत्ते  
उत्त सत्तापित्तपत्ते सत्तापित्तपत्ते  
उत्त सत्तापित्तपत्ते सत्तापित्तपत्ते

भावार्थ—  
कात्तापित्तपत्ते सत्तापित्तपत्ते  
उत्त सत्तापित्तपत्ते सत्तापित्तपत्ते  
उत्त सत्तापित्तपत्ते सत्तापित्तपत्ते  
उत्त सत्तापित्तपत्ते सत्तापित्तपत्ते  
उत्त सत्तापित्तपत्ते सत्तापित्तपत्ते  
उत्त सत्तापित्तपत्ते सत्तापित्तपत्ते  
उत्त सत्तापित्तपत्ते सत्तापित्तपत्ते  
उत्त सत्तापित्तपत्ते सत्तापित्तपत्ते  
उत्त सत्तापित्तपत्ते सत्तापित्तपत्ते  
उत्त सत्तापित्तपत्ते सत्तापित्तपत्ते

३ विभिन्न माधम्यो से  
गुजलौती प्रकाश को किरणें डेकी  
हो जाती हैं—

(लेख १२ पृष्ठ)



भार्यसमाज की प्रवृत्तियो मे वासी  
राम जी की प्रारम्भ से ही रुचि थी। वे  
मेरठ राज्यसमाज के वर्षों तक प्रधान  
हूँ। कार्य प्रतिनिधि सभा सचिव प्रा.

४ बासीराम का सर्वाधिक महत्वपूर्ण कार्य स्वामी दयानन्द के यशस्वी बगला जीवन से एक ५० बेल्गेन्याय मुक्तोपाध्याय लिखित मनु जीवन चरित तथा वृद्ध जीवन चरित के प्रारम्भिक लिखित भाग का हिन्दी अनुवाद करवा तथा उनके द्वारा मण्डीत सामग्री के आशय पर अन्वेषित ग्रन्थ को पुरा करना है।

“गियक जंक्शन बमबा भाषा मे लिखी  
 बी। इसे धनुदित कर प० बासीराम ने  
 श्रीरघवीर शरण डबलित के भास्कर  
 प्रेस मेरठ द्वारा १९१२ मे प्रथम बार  
 प्रकाशित कराया। गोविन्दराय हास नन्दा  
 कलकत्ता न इसका द्वितीय संस्करण प्रका-  
 शित किया। छायादेव साप्ताहिक ने इसी  
 का प्रथम विवेकाधिक के रूप में प्रकाशित  
 किया।

३. मूर्धनि स्थानान्तरण करणारी का जीवन  
 धारित—देहेन्द्रनाथ मुन्शीजीवाजी ल्हा-  
 श्यानाथ व भूदूर जीवना भरित की उमा-  
 श्यानाथ जीवाजी का समय कर चुके  
 कापी में उलटकर इस नामों के आधार  
 पर उन्होंने बूझ कर जीवन भरित का लिखा  
 था कि? हमें क्या कि प्रमाणों व जका  
 धारणों के से १९१९ में देखना पडा  
 उनकी प्रकृति में इस जीवनी की सहज-  
 पूर्ण प्रकृति का भार समझा ही निते  
 था। १० वासीयों में १९१९-२० में  
 केवारी के तत्कालीन हिन्दी कर्करन्द की  
 मालाप्रकाश की सहजता से देहेन्द्रनाथ  
 द्वारा रचवित नामापी धारित का  
 की उमाश्यानाथ लिखापत्र सार्वजनिक  
 से तथा १० [वासीयों के सहजता व  
 चुके से। इसलिये इस कार्य में उनका  
 सहायक काम सार्वजनिक ही था। देहेन्द्र  
 नाथ द्वारा लिखित इस नामापी धारित

कालप्रवृत्त बला में थी। काफ़ीसे कैंडीजों  
 को मरे, होठें उन्को और जल पर पीछीसिंह  
 बगैर, मरे, नुकीलें वगैर पीछीसिंह सगा-  
 वार यमों की कतारों हूइ उलटल सायक  
 की पकन, उहे हिली में भूतसिंह बर  
 ब्यवस्थित बर हलका तथा बगैर में बग-  
 प्रसन्न हलका कपनको कलन। ब्यवस्थ  
 प्रसन्न हलका काय व। पकन। वाहीरकी यम  
 में प्रचने परसिख बर हलका बर हलका  
 समुहों सायक का ब्यवस्थित सायकल  
 एव कायों बर लाम्नी श्रान्तके के बर  
 परिक की पुरुषों प्रसन्न की व। वाही-  
 रक रलित हलकी जीवनी लाम्नी की का  
 सायिक प्रमाणीजीवनी प्रसन्न माता  
 काय। व। मनुष्योंसे बरक का बरक  
 प्रसन्न हलका। के सायक व। १९३३  
 में शायें सायिक मयल बगैरने नै दो  
 मागी में सायिक बरक। बर हलका हलके  
 बर सायकल बरक बरक।

६ वषठी बिरजानन्व का जीवन  
चरित—वेवेर नाथ मुखोपाध्याय ने वषठी  
बिरजानन्व की एक शोधपूर्ण जीवनी  
रचना आपा ने निबद्ध की थी। यह प्र-  
काशित रही। प. ४० सीरीसम् जी ने इसका  
हिंदी अनुवाद किया, जो भार्य प्रतिनिधि  
सभा समुक्त प्रात द्वारा प्रथम बार १९१६  
में तथा हिंदी बार २०११ वि० में  
प्रकाशित हुआ।

७ वेदसुभा — ईश्वर ह्युत्ति श्रावणा  
विषयक १०० वेद मन्त्रों का भाष्यार्थ ५०  
पाठीराम ने तैयार किया जिससे सुगुप्त  
प्राणीय शार्ङ्ग प्रतिनिधि सभा के ईश्वर  
विभाग के श्रावणादायक ने स्वयं उन्होंने  
१६०१ में प्रकाशित किया।

८ जयित सोपान — पदार्थ  
पुस्तकालय, केरल।

प्राथम्य देव प्रकाश धर्म प्रचार समिति, केन्द्रीय धर्मसभा अमृतसर का एक उपविभाग है, के द्वारा सस्ती बुसन्धानों को शुद्ध—पूरा विवरण नीचे दिया जा रहा है ।

ग्राम तन्वबडी कुमन (जिला समृत्तर) दिनांक १७-४-८३

१	विलासत	आसु ६० वर्ष	बृद्ध माय	ब-पराय	कुलवर्षा	७
२	गुणित	२६		योनिप्र वय	११	४
३	वैद्य	२४		देवराज	१	४
४	अविनय	२२		महिमः कुमार	११	२
५	कुलीन	२०		कुलीन	११	७
६	गुरदीत	२४		गुरदीत बाब	११	४
७	अजीवा	२५		मोहन बाब		८
८	जवा	३०		बापतराज	१	८
९	मेहुनी	२५		जान बेदी	११	५
					कुल =	६५

(मन्त्र किसोत्र आर्च) ह० ए०  
मन्त्राग्नी केन्नीव आर्चस्य आर्चस्य





प्रस्तावना —

जब ईश्वर ने उन सप्ताह का निर्माण किया था उसी समय से इस पृथ्वी पर मिलाई जा रही मजदूरी को बुनने के बीच अन्धश्रम प्रारम्भ हो गया था और सप्ताह में उसी समय से ऐसे महापुरुष प्रेरित हुए हैं, जिन्होंने मजदूरी का प्रत्येक पल को सम्यक्त रूप से हर समय प्रयत्न किया है। जो व्यर्थता को समाज की बुनियाद से हटाने में सक्षम रहते हैं। जो ही अन्धश्रम परित्याग बहाना और उसी के कारण धाक में सप्ताह टिका हुआ है। निरन्तर प्रगति की ओर प्रयत्न है, यह ऐसे परिवर्तन महापुरुषों द्वारा ही प्रयत्न में हुए होते तो यह वर्तमान सप्ताह व्यर्थता में ही कभी का समाप्त हो जाता।

चग्नि क्या है—

परित्रय-वश मोलने कीर समझने में  
 केवल ३ घण्टी की होश राखें हैं, परन्तु  
 भविष्य-काल अत्यन्त साधारण है। इसके विनिर्दि-  
 शन लगाये जते हैं। विद्वान् भी वेष्टन-  
 मिलने से दृष्टा शक्ति के प्रभाव को ही  
 चित्रण कहा है। भी काट-मोक्ष की पुन-  
 की श्लाघनार्थित प्राणी मानने हैं। इसका  
 दृष्टा शक्ति का विकास ही परित्रय के  
 विषय शोधन-काल में प्राप्त है। विद्वान् के  
 कथनानुसार दृष्टा शक्ति का प्रमाण ही  
 उल्लेख द्वारा निमित्त है, इसलिये ही  
 उल्लेख परित्रय ही बात पर इन्द्रिय-  
 कलश है कि प्रत्यक्ष दृष्टा शक्ति  
 है? यदि प्रमाण ही दृष्टा शक्ति प्रतीति  
 के प्रतीति ही है तो ही दृष्टा शक्ति  
 प्राणी प्रमाण ही है।

भी कीमतबल महोदय स्वानीय नाथ के सन्तान को चरित्र कहते हैं। भारतीय साक्ष्य अभिनय की शारा ५५ के अनु-  
सार "चरित्राय मे शतमर्थं स्वाति तदा स्वभावा योनी प्राते हैं। स्वाति से हनारा अभिप्राय दूसरे के द्वारा किसी व्यक्ति के बारे मे सोची समझी जाने वा सी शारा है, भीरु बहु शास्त्रमिक शाराह, द्वारा बनती है प्रयात् किसी प्रयुक्त व्यक्ति के विषय मे धन्य लोगों की कवा शारा है। जबकि स्वभावा का अभिप्राय किसी व्यक्ति के चरित्र के बारे मे सोची सी शानी किसी शारा है।

प्रायः चरित्र में दो बातों पर ज्यादा ध्यान दिया जाता है ।

१ मनुष्यों का दूसरों के प्रति  
आचरण—

प्रश्नार्त् किसी भी व्यक्ति का समाज के धन्य व्यक्तियों के प्रति किस प्रकार का व्यवहार है, यदि उसका व्यवहार समाज सम्मत है तो वह व्यक्ति चरित्रवान् है।

## वर्तमान चारित्रिक संकट, समस्या और समाधान

मोहम्मद असलम

## २ मनुष्य के सिद्धान्त—

धरणा किसी व्यक्ति के अपने जीवन के बचा-पगा सिद्धान्त है। कुछ व्यक्ति अपने जीवन के सिद्धान्त समाज सम्मत नहीं बनाते तो उनको चरित्रशून्य नहीं कहा जा सकता। जैसे बोर दकैत प्रादि। इनके जीवन के सिद्धान्त समाज सम्मत नहीं हैं इसलिए वे चरित्रशून्य नहीं हैं। पहले ही मैं बोरी दकैतों के बाहरी बो की मेवा ही नगोन करते हो।

उपयुक्त दो बातों से हमारा ये निष्कर्ष निकलता है कि वो ही व्यक्ति चरित्रवान् हैं जो समाज के अन्य व्यक्तियों के साथ प्रश्ला व्यवहार करने हों और उनके सिद्धान्त समाज सम्मत हों।

वर्तमान चारित्रिक संकट-समस्या  
का कारण—

प्रायः वेत्ता बाढा है कि इस सत्कार में कुछ ऐसे व्यक्ति भी जन्म लेते हैं जो स्वार्थी होते हैं और ये स्वार्थी व्यक्ति दूसरे स्वाभाव बला स्वाभाव की कोई भी परवाह नहीं करते। ऐसे स्वार्थी व्यक्ति चरित्रहीन कहलेंगे हैं, और ये चरित्रहीन व्यक्ति इस सत्कार में तो कभी भास्वरीय नहीं हो पाते, परन्तु समाज के ऐसे व्यक्ति जब इन चरित्रहीन व्यक्तिगतों के समुच्चय परास्त हो जाते हैं तो ये समाज का नवीनीकरण करते हैं। समाजान् समाज ये चारित्रिक सफ़ट उपलब्ध होने के कारण निम्न प्रकार है—

**सामाजिक कारण—**

सर्वतमान समाज के धाय ब चरो ओर  
 साहित्यिक नृसंलता बा गये है । धाय का  
 समाज प्रगतिशील समाज नई का दावा  
 करता है परन्तु इस समाज में प्रगति का  
 धाय ने सामान्यिक नृसंलता धायों सङ्कलित  
 एव सम्यता की तनिक भी परवाहा नही  
 की जाती है । धाय सर्वत्र नृड सङ्कोट  
 अष्टाकार देवज ह्मणार, धायकार  
 कलौती कलम धायि हो रहे हैं । इस सब को  
 करने वालो का सामान्य नाम है के लिए  
 हमारे समाज ने क्या नही है, बलिक धाय-  
 राशी का साथ देते हैं । उमे साथ ने मुक्त  
 धाय देते हैं जो कि किसी धायीय व्यक्तिक को  
 नृसंलता फकाकर समा देते हैं । क्या बहो  
 धायों है हमारे समाज का ? विज्ञान  
 धायस्य व्यक्तिक का समाज के लिए Man is

a social animal सघर्षी सन्तुल्य को जीवित पद्धति के लिए समाज के अग्र-व्य-सिधियों पर निर्भर रहता है। प्रत्येक व्यक्ति को हीरोहोम विचारों के लिए "अन्धकार" उत्पन्न होता है जो वह समाज होता है और समाज की कक्षा व्यवस्था के कारण विचार होता है। ऐसा क्यों है? इसका कारण यह है, जिस समाज का हम सदस्य होते हैं, जब उस समाज का जो कर्तित्व-पदान होता है, जब वही मे होर-अविश्व-मान्यकारी, दूसरे समाज करने को, कभी-कभी प्रत्येक ही विचक्षणता को उस समाज पर हम पर वही निगो रहे। इस समाज के साथ हम उसी प्रकार जाते हैं, जो हमें को भी करिष्मिता हो जाये। एक प्रत्येक विद्वान् ने पिछा है कि दुःख-प्रतिष्ठा की सफलता और हीरो हीरो प्रत्येक प्रत्येक वादा है। सबसे हीरो है, A man is Knowing the Company he Keeps

इसी प्रकार प्रमुख रहीम खानखाना  
ने सिखा है।

जैसी सगति बैठिये, तैसीई फल दीन ।  
कदली सीप, भुजंग मूल

स्वाति एक, पुष्य तीन ॥  
 रहिमान नीचन सब बधि,  
 सबत कलक न काहि ।  
 दूख कसारिण हाथ छवि,  
 मय समुझहि सब ताहि ॥

इस पर जी कुछ अगति तक बेत है कि हम पर कुरी सवति का बतर पडने वाला नही है इस पर एक विद्वान् ने लिखा है कि—

घान के पास मन बैठो जाकर ।  
एक दिन उठोने दामन बलाकर ।  
ये माना कि तुम दामन बचाते रहोगे ।  
पर घाय की सेक तो काते रहोगे ।

इस प्रकार हम देखते हैं कि चरित्रिक पतन में समाज का बहुत बड़ा हाथ है क्योंकि जो समाज सामाजिक धार्मिक से गिर जाएगा उस समाज में जाने वाली सन्तानें भी चरित्रहीन होती हैं।

**समाधान—**

हमें अपने समाज की कुराहियों को दूर करने के लिए सामाजिक आंदोलन करने होंगे। अष्टावार, बोरी उईती, आदि के विरुद्ध एक होकर जाबाब उठनी होगी। उन्हें सबसे सामाजिक धाखें।

[illegible]

“जो रहीम उत्तम प्रकृति  
ता करि सकत कुसव ।  
बन्धन बिच व्यापत मही,  
सपटे रहत भुजव ।”

**आर्थिक कारण-**

वर्तमान पारिवारिक षडयंत्र के कारकी  
ये धार्मिक काण्ड भी एक है। बाबू हमने  
बनाने बेरो पराधीन का मन्त्रालय कर उठाया  
क्यों? ऐसा क्यों? ऐसा सब किए। कि  
हम ऐसे का सही मूल्यांकन नहीं करते,  
सकल बदलायी सही प्रकार नहीं है। एक  
तरफ़ को एक मजदूर को कुछ सूर्य सेवका  
के वसंत होते ही मेहनत करने लग जाता  
है और सूर्य सेवका के जास्त होने पर अपने  
घर को लाटवा है उसे हम मजदूर भी थे-  
४ जनम का भी तो सुझाव नहीं आता



व्यामपीठ—

उपनिषत् कथा माला—५

## ईश्वर दर्शन

प्रवचनकर्ता—वीनराग स्वामी सर्वदान र महाराज

(मठाक से प्राप्ते)

परमेश्वर का पाना सुगन्ध है, परन्तु पहले काम पूरा कर ला ब्रह्मात् इसक लिए वह ब्राह्मण्यक है कि पहले परिश्रम कर फिर मजदूरी मिलेगी। ब्रह्मण्य परमात्मा का पान के लिए ब्रह्मात् सुगन्ध बन कर लाए पहले मन का पवित्र बनाओ। मनुष्य पहलु पर बढता है, परन्तु ऊपर बढान में जितना समय लगता है, उतर्नम उसना नही लगता। कष्टोना जान में बितना समय लगना वहा से जान में गहा। उतर्नाम सुगन्ध है, उतर्नम न बकाबूट हू है। जाता है। भवण्य पहला काम ब्रह्मात् मन को पावन बनाना कठिन है, परमात्मा को पाना सुगन्ध है। इनक लिए भजन करना की ब्राह्मण्यकता गही। सुश्रवण में सुश्रवण की श्रावणपरमात्मा को पा सकत है। येथ ठा जाक को मिताता है, रक्त रोग को रू करवा है। येथर कष्ट मय कम होत है, इसीलिए सत्यासो पणते हैं। येथर कष्ट परमात्मा को गही जिन्ना देते। इसके लिए तो मनुष्य को क्षयना मन सत्य बनाना चाहिए। महात्मा वह है कि वो सकल मन में करता है, वही जिन्ना वे कहता है, और वही पूरा कर मिताता है। जब बाकर कही महात्मा होता है। जिसके मन में कुछ है, जिन्ना पर कुछ और, जिन्ना में कुछ और, वह महात्मा नहीं। इसीलिए कहा है कि परमात्मा सबके भजन करत है। मन बना गो कठोरी में मज्जा।

क्षण होत माराधन के, न गोपी मन बचारे हैं।  
ज्योति से ज्योति मिलती है  
जय मे मन को मारे से ॥

देखा। मन को मारे से कैसे पर मेहराव प्राप्त होता है? इसके तीन नियम हैं—

पहला कथि तो तराव पर पूरा लोल-कर लेना। मर मुक्त विनना बेसत है, बसोषी भी ओर दुरे भी। यदि मन में करे कोषो भी ब्रह्मण्य है तो मेक मुक्त को बेसकर पीछे हट जाता है, परन्तु तुम प्राप्ते बढना है। जो बढता है, वह प्राकृति रूप में प ला ही है। शायरें मह कि भारतवासियो को सत्य गही मिताता, तुमम की माया बढ गई है, भवण्य सत्य होना भाषण्यक है।

पूरे जहा तुम उपवास पढ़ते पढ़ते

शास्त्र को पुरस्क पड़ो। अपने बिद्यापी-जीवन को पवित्र बनाओ। यदि मन नहीं मानता तो उपवास के साथ साथ दर्शन की ब तें भी पड़ो। यदि ब्रह्मण्य का जीवन-परिण पड़ सो सत्याप्रकाश पड़ सो हितोपदेश पड़ सो, जिससे तरावू क दोनो सत्य बमान रहे।

तोहरे धयना चल करत पवित्र करो। दिन रात में जोभीन पण्टे होत है। सवा हेरत पण्टे कर कामकाज से लगओ पीन पण। गौंठर सव काम भवहार स बसम होकर, उसस १४वा प्रकार का कोई सम्मन न रखकर, परम पिता परमात्मा के चरणों में मन बसाओ। जीवन का सम्मन क पण्टे है, कल का सम्मन क महीने या बर मर, पिछो बस्तु का सम्मन क महीना तक नहीं, केवल परमात्मा का सम्मन क सम्मन तक है। जब की बानाया निष्कला है तब की परमात्मा उसके साथ पड़ता है। भवण्य इस समय को धयना करत, मन लगाकर परमात्मा का भवान करो। उस समय दूसरो से बात न करो। ऐसा न हो कि इकर प्राप्त सम्पा कर लेते हैं, बर बन्ने से बाँवें भी हवा पड़ो है। इन पीनोषीय विगत में तो न सवार उपहारे लिए हो, न तुम सवार के लिए। यह ठीक है, कि मन को बचस ब्रह्मण्य है, परन्तु तुमने देखा है कि मनुष्य कठिन से कठिन काम की कर लेता है। एक समय जाता है कि मनुष्य शास्त्र-ह्वा तक भी कर लेता है। जितना कठिन काम है परन्तु इसके लिए जो मन तैयार हो जाता है। इसी लिए कहा है कि—

मन के जोसे भीत है  
मन के हारे हार।

बदानी कहते हैं कि वह एक रूप जाता है और समेक रूप जाता हो जाता है। परन्तु कार्यसमवाय का वह सिद्धांत है कि परमात्मा प्रत्येक रूप का गही होता। जो एक है वह एक ही रूप का रहता है। जैसे मोहो से तुम्हार बनेक पचावें बना लेता है परन्तु मोहो तुम्हार गही बना सकता। इसी प्रकार मिट्टी और कुम्हार की बात समक भी, जब परमात्मा ने प्रकृति को लेकर सवार बना दिया तो प्रकृति परमात्मा केन बन सकती है? मिट्टी से पचा बनाता है, इसके लिए किसी मिट्टी चाहिए, यह किसी मिट्टी किसी बनीक के सकके को भी और कही कि

नहीं। फिर कहा 'साई'—पहले-जिसे हो, इस मिट्टी से बना सो। परन्तु वह नहीं बना सकेगा। पचा मिट्टी से तो बिघमान है, परन्तु उसके मलिन्यक से नहीं। जब कुम्हार के पास रेत में बायो और उससे कही कि 'बना बना दे।' वह कहेगा कि 'पचा रेत से नहीं बनता बसाले पचा रेत में नहीं, मिट्टी में है। इसी प्रकार सवार प्रकृति में और परमात्मा क ज्ञान में बिघमान है। जिसके ज्ञान ब्रह्मण्य मलिन्यक में कोई बस्तु हा गही उस बना भी सकता है। कोट का पचा ब्रह्मण्य बिगा है मैं उसे काज हू, तो ब्राह्मण बनेम। मैं कहू लखते क्यो हो? दरकी वा तो इसे काज हो जातना। जान कहेम, मुन पावना हा गही किन्तु किसी रीति से किसी नियम से।' उसत ह्राय में नीची ओर मुई है और उसक मलिन्यक से कोट है। बस गही तो नियम है। एक वह बस्तु को बनानी है, दूसरे वह पचावें जिसमें वह बनानी है, तीसरे वह मलिन्यक जिससे वह बनानी है जब तक ये सब कीजें न हो कोई पचाव नहीं बन सकता। इसीलिए तो परमात्मा को प्रभावित कहा है।

बाजकन कई की गांठे बांधने की कम प्राय एक बात कये में छाती है। प्राय मन कई की गांठ मन सवा बान्नी पीछी बांध पी जाती है। क्या उसका बचन कम कर दिया? गही। बचन को कम गही हुना, केवल बवा और सिफोड की गई। परन्तु परमात्मा का चिकना तो देवो। बस का भी क्या कितना बढा है और उसका मोक चिकना छोटा है? जब और बीच से बस कचन जाता है, तो वह कितना बढा हो जाता है।

एक बार मैं गुरी बवा, मिचरों को तो मैं मानता हू। गही। परन्तु मैं कम दिया कि क्यो रीयक की देवो। गविर मे गया तो क्या देखा। एक बासमी मुक्ता है कि 'मूल कहते हैं? मुझे तो हॉटोबोर नहीं होता।' जयते मुक्ता, 'बा' और मैं मुक्त बिचारी देता है।' उसने कहा, 'हू और तो बस मुक्त बिचारी देता है। फिर जल्मी कहा कि 'वह बासा कीते हो बवा?' उसने मुक्ता, बुरे तुम कोई पाप तो नहीं किया।' वह मोना, 'बच मैं गविर की ओर बचा था। तो वह बिचारा हो बचक बाबा बा कि वह मुक्ति का है?' तो कने कट बह दिया, 'बच वह इसी का परिणाम है।' मैं भी यह ही

बाबों को मानता ही नहीं फिर मुझे क्यों नबर छाती है? मैं तो मुक्ति को जानतू बेस रहा हू।' बालय मे मुनारिचों ने ऐसे मनुष्य रके हुए हैं, जो पूरे ही मूट-मूट कह केते हैं। गवि ने देखा न कर, ठो मनुष्यो ने गनी मे उस मुक्ति के लिए म्मा केते हो? रामेश्वर बायो, मोने-नामो मनुष्य बढकेते फिरते हैं। बस तो गही परन्तु पहले जब कोई बिनासक जाना भावता था, तो गही बीज कहा करते थे कि 'बिनायत न बायो, बम प्रम्ट हो बायेगा।' वेच बिचैय जाने को इस प्रकार रोक दिया। बम को जो एकाग्रता का प्रत समक रखा का, कि बासम मुन मे जाना ओर दूट गया। बनें तो प्रत्येक बिचारे मे पचा कपने से रूक सकता है। यदि प्रम्ट करना बाहो तो गही प्रम्ट हो सकता है। बिचर से जलाय होती देवी, उकर से ही रोक दिया और कहा, बायो, रामेश्वर बायो। बस इसी लीपो ने मातर को मातर किया है।

बीर तुम उपरमात्मा को बेसके है। मुने बापको वह दिखाई नहीं देता, मरधि वह बावर ही बिघमान है। बीर तुम पहलमान को गही कहेते को पक्ष-बाना होता है। नवर कहा हुवा, ज्ञाती मेसी गोवं मोटी मुन प्रम्ट, बाय मे लोनी, तुमि मोटी, खरी प्रम्ट। जब कोई बसाल् पाया हो उसको की कहे कर बुझना कही। 'साई' तुम पी बने बन्ने बासमी हो। 'बुनबं बासमी तो बिचारे को माने लमे। ये बहलमान के लखत है। यह की गही।' बहलमान की महाराज करते— बरे। बसो बाये बाहे रहे, बाच हो मरना हो बाहे गुन गुनार तक बीर रहे, गोवं मान कर बाहे क्षयना, बीर तुम पिनि बीर बनें के बाये से एक वन की बिचपित गही होत है। ये बहलमान के बस जा। प्राय प्राय इसी का बा, परन्तु अपने छोटे साई बिघमानिक को बेकर मन को बने बर। बहलमान को ने राय से मुन मोक जिना और कहा, प्रमो। मुने राय की बन्ना गही।

गज्जालीरे दिनपरिचक्षा

ब्रह्मपदानामनन,

ब्रह्मपदानामनन,

ब्रह्मपदानामनन,

ब्रह्मपदानामनन,

ब्रह्मपदानामनन,

ब्रह्मपदानामनन,

ब्रह्मपदानामनन,

ब्रह्मपदानामनन,

ब्रह्मपदानामनन,

ब्रह्मपदानामनन,

ब्रह्मपदानामनन,

ब्रह्मपदानामनन,

ब्रह्मपदानामनन,

ब्रह्मपदानामनन,

ब्रह्मपदानामनन,

ब्रह्मपदानामनन,

ब्रह्मपदानामनन,

ब्रह्मपदानामनन,

ब्रह्मपदानामनन,

ब्रह्मपदानामनन,









साप्ताहिक ओ३म् कृष्णवर्ण विस्वमार्म

# आर्य सन्देश

सूचना एक पृष्ठ २० पैसे वर्ष ६ मूल २० प्रतिवार, १६ पृष्ठ १८०६ आर्य सप्ताह १८९०-९१ १०५६ अंक २०४२ दशमवर्ष—१६१

## अमर बलिदानी पं० लेखराम

बर्म चर बलिदान होने वाले वीर को३म् पं० लेखराम का स्वरूप आते ही एक विषय आकृति नामधरतम पर उभरती है। एक ऐसे माफी की बात होती है जो उफानती गदी के प्रथम वेग को विपरीत भार में अपनी नाव सेता बसता है और कभी कभीता गद्दी निराप की नहीं होता। कक्षर ऐसे लोगों को उन्मत्त कहा करता है। बर्म की कुल के बनी पं० लेखराम का जोधन गुरु, दशमवर्ष और कृष्ण बर्म के अति पुरा वरपति था। वे अपनी बर्म-अपार भाषा से कभी बर्मे नहीं, रके नहीं। विपरीत बर्मे के जाल से भारतीय संस्कृति विमल कलात्मिकों से बकरी चली जा रही है। इस देश के नीले नाम धर्म पिता का सब बल से बर्म-परिचरित किया जाता रहा है। १९वीं घड़ी ने हिन्दू बर्म सब कर्मे आटे के दीपक की तरह हो गया था जिते घर में र्म की पुष्टि था आर्य धर्म साहचर रखते हैं तो कोई उठा ने जाए। किसी के छुने भाव से ही बर्म से भाव भाति से बलन कर दिया जाता था। ऐसे कर्मे भागे जैसे बर्म को लोभने के लिए धनेक मतात्मकी ईश्वरी और सुखमगम हिन्दुओं की बर्मे-आप से बकते बने जा रहे हैं। उक्त काल से महर्षि दशमवर्ष द्वारा विना सुद्धि सुदर्शन चक्र पं० लेखराम ने अपने हाथ में उठा लिया। और उसका ऐसा कुशलता के साथ आधान किया कि धनेक विमुक्त भार्य ईश्वर हीकर भाषने पुरातन चर से बर्मे भाषी। उनमें जोधन की इस बलम के की क्षीर रोमाञ्चित हो जाता है। सब कर्मे जाता जाता बलम लक्ष्य में कुल होने सुखमगम होने जा रही है। वे उस समय चर बर्मे बोधन करने ही जा रहे हैं कि पक्ष क्षुर



उन्हीं बुधभाषी, उन्हीं बलम के उठकर ने देखाओं द्वारा सब भाष के लिए सब पक्ष। उस भाष में कर्मे देखने स्वेकम बर्मी था उन्हीं कर्मे गारी के बर्माप लया थी। देश से गिरने से उन्हीं कीर की लगी कु के रके बर्मे से ही ने उठ स्वत पर पक्षे नहीं कुल हिन्दू नकलने में आकर अपना बर्म परिचरित करने जा रहे हैं। जैसे ही उन्हीं पं० लेखराम की धीर बर्मे-भाषा को देखा ने भाव विचर हो गये। उन्हीं यह कक्षर बर्म परिचरित के बर्मा निचरय कर्म विवा कि जित बर्मे में ऐसे हमार स्वीक भार्य हैं जो अपनी भाव पर लेलकर इसकी बर्मा भाषी हैं, इस बलम बर्मी कर्मापि नहीं लयन सके।

पं० लेखराम ने अपने जीवनकाल में कर्मे कुल की बर्मा को कुल ३१ हैं। वे अपनी कुल के विचारों के अर्मा के लक्ष्य में विचरि गयी। महर्षि दशमवर्ष के आधुनिक जीवन चरि के विचारों का, बर्मे की धर्मवीर लेख-

गुरुद्वारे चरिचर कर दिए गए। बर्मा कीर से लोहा लेने के सुखमगम नमगम कर्मे हो गए। ऐसे ही एक नीच हर्मा के नीचे बर्मा बर्मे गये। उन्हीं आर्यसमाज के बर्मे मगम की बर्मा ने नीच का कर्मे किया है। ऐसा उपदेवक, ऐसा लेकम केला बर्मे लेकम देश कर्मापि प्रथम आर्यसमाज गमिद है। उन्हीं बलिदान के पक्षे उन्हीं कर्मे का कर्मा की कुल है। उन्हीं कीर ने २००० बर्मे-भाषी के उन्हीं कुल कर्मा कीर का कर्मे कर्मा बर्मे के लिए। उन्हीं कीर के पं० गुरुद्वारे विचारकार केला कर्मा स्वी विचार आर्यसमाज को गमिद है। बर्मे ही वीर लेखराम कुल है। उन्हीं कीर कीर कीर लक्ष्मी केनी। बर्मे हैं महर्षि दशमवर्ष जिते ऐसे बलिदानी विष्णु विष्णु।

आर्यसमाज का धनीत बलिदा-निचो के कीरम कर्मा बर्मे इन उन बर्मे बलिदानी कीर की कीर कर्मा की कुलने का रहे हैं। बर्मा अधमवर्ष और महात्मा हजरा की तो फिर भी स्वरुप किया जाता रहा है। बर्मी लक्षराम कुल उपेति हो रहे हैं। बर्मे कीर को पं० गुरु न सराहा तो बीरता की जननी न हो पायेगी। बर्मा—

प्ररणा पाहोदे से यदि हम न लेंगे भाजारी लक्ष्मी हुई लक्ष्मी हो जायेगी। यदि बीर की पुत्रा हम नहीं करने तो सब मानो बीरता बर्मे हो जायेगी।

—महात्मा सुभाष





## आर्य जगत् की शान

२०० बिस्तर वाले निर्माणाधीन

## क्षेत्र चिकित्सालय

(अनुमानित लागत दो करोड़ रुपये)

के लिए दिल खोलकर दान दीजिए

दान की राशि आयकर अधिनियम जी० ८० के  
अंतर्गत कर मुक्त होगी।

सारा दान बैंक/कनोबाईर/बैंक ड्राफ्ट द्वारा

ममी, माता चन्ननदेवी आर्य धर्माध्यक्ष क्षेत्र चिकित्सालय,  
सी-१ जनकपुरी, नई-दिल्ली-१८ के पते पर भेजा जाए।

दानदाताओं के नाम चिकित्सालय की शिला पर  
अंकित किए जाएंगे।

निवेष्टक

राजनीपाल बालबाले	सुबेब	महात्म्य वर्धमान	श्रीधरप्रसाद शर्मा
संरक्षक चिकित्सालय	प्रधान, दिल्ली	प्रधान	कनौजी
सर्व प्रधान, डा० डा०	आर्य प्रतिनिधि	आर्य केन्द्रीय	महात्म्य कुलीशाल
प्रति० सभा	सभा	सभा	के० ८०

सौजन्य से महासिपाही जी हूदी प्रा० लिमिटेड, ८/४४ कौटिल्यनगर,  
प्रौद्योगिक क्षेत्र, नई दिल्ली-११००१

(पृष्ठ ८ का लेख)

जान मे ईसा, मोहम्मद, बुद्ध, महा-  
वीर, कृष्णवृषियव आदि महात्माओं  
की धार्मिक शिक्षाएँ रही हैं।

य उच्च साम्यिक (११-१२ कक्षा)  
विज्ञान उद्योग परक और ऐच्छिक विषयों  
के साथ होगी। हिन्दी, संस्कृत,  
प्रादेशिक भाषाएँ उच्च साहित्य व व्या-  
करण सहित अनिवार्य रहें और अंग्रेजी  
का सामान्य ज्ञान, रचना, बोधनात्मक का  
धर्मशास्त्र तथा तकनीकी छात्रावली का  
ज्ञान प्रायोगिक पाठों के साथ रहे।

ऐच्छिक विषयों के समूह—

(१) विज्ञान तीन छात्रावली व विषय

(२) भाषिक विषय तीन,

(३) व्यापक विज्ञान—राजनीति, समाज-  
शास्त्र, इतिहास-सूचना (विषय)  
और पर्यावरणशास्त्र

(४) व्यापक विषय—कोई दो विषयों यापार्य  
व्याकरण सहित वा कोई दो नार-  
तीय यापार्य।

पर्यावरण नैतिक विज्ञान के पाठ  
अनिवार्य विषयों में सम्मिलित रहें।

महवीर—नगरपालिका समिति

(पृष्ठ ६ का लेख)

व्यापक धर्म, धार्मिक धर्मों के विचारों का  
व्यापक होने पर ही प्रतिपादन करता  
है। इन समस्त धर्मों के परभाव हम  
इस निष्कर्ष पर पहुँचे कि वेद में समस्त  
ज्ञान विज्ञान की कल्प में निहित है तथा  
बाद के वैदिक धर्मों में अधि महर्षियों ने  
उसी का विकास किया।

स्वामी व्यासजी के इस महान् वैदिक  
प्रभाव के फलस्वरूप वेद को धर्म तथा  
साधन के रूप में केवल धर्मशास्त्र की

गुलक की तथा वाच्यता विज्ञानों के मत  
में इनमें (विषयों) प्रकृति की धर्मियों की  
पूजा और धर्मों के धार्मिक विकास  
का गुलान्त एव महर्षियों के नीति में। धर्म  
एक व्यापक विषय है। इसमें एक वैज्ञानिक  
धर्म है जो समस्त धर्मों के लिए है जिसमें  
अनुभव मात्र की व्यापक विषय एव साध-  
नता उन्माद का सही धर्म महर्षियों  
व्यापक है।

# उत्तम स्वास्थ्य के लिए

# गुरुकुल कांगड़ी फार्मसी,

# हरिद्वार की औषधियाँ

# सेवन करें

**गुरुकुल कांगड़ी फार्मसी**

**अमृत**

**मूलक आयुर्वेद**

**अमृत**

**फार्मसी**

**गुरुकुल कांगड़ी फार्मसी**

**हरिद्वार**

शाखा कार्यालय—६६, पल्लो राजा कैलाशपुर,  
फोन : २६६८३८ काण्डी बाजार, दिल्ली-६

## ★ वक्त-सन्देश ★

सत्यार्थप्रकाश एक महान् सन्देश

सत्याथप्रकाश ने न जाने कितने अश्रुय व्यक्तियों को काया पट की होगी।

—स्वामी श्रद्धानन्द

‘युग निर्माण तथा चतुर्थी प्रगति की भावना से एरण यह दिव्य ग्रन्थ (सत्यार्थप्रकाश) एक महान् प्रकाश-रत्नम् है जिसका निर्माण महर्षि दयानन्द ने सर्वप्रथम सम्पूर्ण मानव समाज की उन्नति के लिए किया।

—डा० श्यामप्रसाद मुखर्जी

यदि सत्यार्थप्रकाश की एक प्रति का मूल्य एक हजार रुपया होता तो भी उसे सारी सम्पत्ति बेचकर खरीदता।

—गुरुदत्त विद्यार्षी एम० १०

मैंने सत्यार्थप्रकाश पढ़ा। इससे तबका पलट गया। सत्यार्थप्रकाश के अध्ययन ने मेरे जीवन के दृष्टिहास में एक नवीन पृष्ठ जोड़ दिया।

—रामप्रसाद बिस्मिल

## सम्पादकीय

## साइचिन पर पाकिस्तान की गिद्ध दृष्टि।

लद्दाख में भाग्य पाक भीमा देखा पर साइचिन ग्लेशियर घाटी पर इन दिनों लघु युद्ध छिड़ा हुआ है। मई १९६४ में प्रथम बार पाकिस्तानी फौजों ने अफगान साइचिन ग्लेशियर पर स्थित भारतीय सैनिकों पर जबरदस्त हमला कर दिया था जो भारतीय सैनिकों ने बड़ी कुशलता के साथ विफल कर दिया था। तब से लेकर अब तक कितने ही पाक तथा भारतीय सैनिकों की ऊर्ध्व पर स्थित है। यह स्थान विश्व का सब से उच्च श्वर है। यहाँ की जलवायु आर्कटिक की तरह माइनस ४० डिग्री रहती है। घोर गर्मियों में भी जमा देने वाली बर्फों को हवाई चपत्ती है। यहाँ पर सदा ही हिमबर्फों की ढाँचें बने वाली ठंडक रहती है। हवा अत्यधिक हल्की और आसानी से हलकी कम होती है कि कुछ भी काम नहीं किया जा सकता। ग्लेशियर १८ हजार फुट ऊँचा है और चारों तरफ बर्फों से ढके पहाड़ २२ हजार फुट तक ऊँचे हैं। साइचिन ग्लेशियर युद्ध श्वर के लिए बलवत्त जमा है। हिमबर्फ पर नवीन उगनी रहते ही वह जल जाती है और बरफ उखल जाती है। इनकी ऊर्ध्व पर नवीन और मनुष्य २५ प्रतिशत क्षमता तक ही कार्य कर सकते हैं। यही कारण है १९४६ के युद्ध विमान समन्वित में १९५३ के विमान समन्वितों ने इस श्वर का रेखांकन नहीं किया गया था। अब पाकिस्तान इसी का लाभ उठाना चाहता है। बमरोकी व चीनी नक्शों ने साइचिन को पाकिस्तान का हिस्सा बताया जा रहा है। चीन चीन सी० ने भी कहा है यह श्वर चीन सीमांकन नहीं रहा। इस साइचिन के प्रति भारत ने कड़ा प्रतिरोध किया है। एक समाचार के अनुसार भारतीय जासूसी उपग्रहों से बहुत समय से साइचिन ग्लेशियर बेल्ड पर निरन्तर जासूसी नजर रखी जा रही थी। इससे प्राप्त आँकड़ों के आधार पर ही गत वर्ष २३ जून १९६४ की अफगान पाकिस्तान ने आक्रमण किया था। ३ भारतीय सैनिकों ने अपनी घोर घाते हुए मरते ज्यों की देखा। यद्यपि वे समूचे कि पश्तारोही हैं पर फिर देखा कि वे सभी सफल हैं व पाक लाइट इन्फैंट्री का स्पेशल सर्विस ग्रुप के लोग रगते हैं। उन्होंने चीन से भारतीय दस्ते की सबर करने की कोशिश की परन्तु चीन डंडा था तब वे अपने सामियों की सूचना देने के लिए स्कीइंग के लिए बर्फ कि पाक सेना ने मोलों बर्षा शुरू कर दी। एक सैनिक मर गया दूसरा घायल हुआ। तीसरे दिनों तरह पड़व कर भारतीय सैनिकों पर सूचना थी। भारतीय अबें तत्काल घाबे व लम्बी लम्बी के बाद पाक सेना पीछे हट गया। इन वर्ष २६ मई को पाकिस्तानी वायुसेना के ६ जेट लड़ाकू विमान कुल्लुमखल्ला भारतीय सीमाओं पर घुस घाबे बिजुल्ले खदेड़ दिया गया। कि जो दार आक्र मण किया पर भारतीय सेना ने उसे फिर विफल कर दिया। भारत सरकार ने पाकिस्तान सरकार से इस सब पर बड़ा प्रतिरोध किया है। गजकतल परबेशको का कहना है आज जब सम्बन्धों के सामान्यीकरण के लिए प्रयत्न किए जा रहे हैं पाकिस्तान का चतुर्ता-पूर्ण कार्यवाहियों ने लिप्त रहना अत्यन्त दुर्भाग्यपूर्ण है। भारत सरकार ने प्रत्युत आक्रमण के पूर्ण विवरण अभी सर्वजनिक नहीं किये

हैं पर साइचिन घाटी के छीनने के लिए किए गये पाक आक्रमणों के बारे में भारत की उत्तरी कमान के जनरल एम० एल० खिन्नर के घनु सार एक साल के आक्रमणों में १००० से अधिक पाक सैनिक मारे गये और हजारों घायल हुए। इन कारगरियों ने केवल तीन व तीन सैनिक मारे गये जब कि २५ दिनगणों के लिसकने से दबकर मर गये। सभी पक हमलावर बर्कों लोका में लगे थे प्रशिक्षण ग्रान्त छापामार व कानो सैनिक व जो शायिक रथिथारों से लस व और उन्होंने दोनों घोर से एक साथ हमला बोना था।

५० मील लम्बे इस ग्लेशियर पर जो कि काश्मीर काराकोरम के विस्तृत पास तथा रूस अफगानिस्तान और चीन की सीमाओं के काफी करीब है। सुरक्षा की दृष्टि से अत्यन्त महत्वपूर्ण है। इसलिए पाकिस्तान चीन के हाथ चले पर इस श्वर पर अपना कब्जा जमाने की हरसम्भव कोशिश कर रहा है। निश्चित दिनों इस ग्लेशियर पर कब्जा जमाने के लिए पाकिस्तान ने बी ५० बमवक्त्र व १६ हवाई जहाजों का भी इस्तेमाल भी किया। निजहाल यह ग्लेशियर भारत के कब्जे में है। १८ हजार फीट ऊर्ध्व पर स्थित भारतीय सैनिक चौको का कार्य अत्यन्त दुष्कर है। इनकी ऊर्ध्व पर चौको का होना एक विशद रिक्काह है भूमि से किसी भी संचार का ० से ५० दिन लगते हैं। भारत व पाकिस्तान दोनों अपनी संचार हवाई जहाजों में करते हैं। पाकिस्तान को इन व से बेहतर स्थिति है। क्योंकि फास के पूना ३५ की हैनोकाटर उसके पास है। भारत को समय बी ५० प्रकार के हैनोकाटर प्राप्त कने ने की। विशद कर रहा है। भाग्य यहां पाक मनुष्य नाकाम करने में पूरा खसकल है।

पाकिस्तान के पास काश्मीर का भारतीय ७६००० किलोमीटर श्वर है जो अपने ४५५५ रहा है जबकि चीन ने लद्दाख में अफगानिस्तान का ३०००० वर्ग किलोमीटर श्वर चीन रहा है। साथ ही पाक ने चीन को भाग्य की नाशीर अधिकृत भूमि में से ४४०० किलोमीटर श्वर और दे दिया है। इस सब में चीन-पाक सद्गुण रूप से बनी व १८ जून १९६६ से नवी ५०० मील लम्बी काराकोरम स कने हो माद चिन ने पाकिस्तानी हमले की सुविधा प्रदान की है। यह सच इम्ता माबाद को चीन के निम्नयोग प्राप्त से जोड़ती है।

पाकिस्तान ने भारत की सीमा के साथ साथ १८ डिग्रीज सेना रखी हुई है और उस बात में कोई तयदे नहीं रहा कि प किन्त न पचाव में गन्ध करने के लिए आक्रमणवादियों को किन्धन कार बाहरी के लिए प्रशिक्षण दे रहा है। साथव जनरल जिवा निम सीमा प्रान्त गोर वल्लुविस्तान में बिगनो हुई स्थिति पर से जन्मा का ध्यान हटाने के लिए सैनिक कारबाही का खेल खेलना चाहते हैं। लेकिन उन्हें यह निश्चित समझ लेना चाहिए भारत किसी से निमी रूप में कम जोर नहीं है। हर रूप में शूह नोड जानव देने में हमारे सैनिक सक्षम हैं।

—धनराज सुधाशु



विन्दो के मुख्य बावसाहू धीरवन्देब के महा उसके सिकारी जयल से पकड़कर कर एन बडा भा । धीर लाय ने । धीर कोहे क विन्दे ने न-हा धीर बाबर बाबर सहाय नहा बा । बावसाहू कहता बा— इतने बडा धीर मरानक धीर हूराय नहीं मिल सकत ।

बावसाहू के दरबारियों ने उसकी हा ने हा बिनासी लकन महाराज यमसह सिंह की ने कह—उससे भी धर्मिक धर्मिक शास्त्री धार ने पत है । बावसाहू को बहुत क बधाया । उसने कहा—तुम अपने ने को इतने लकने के लिए छोडा । यह धन्यवाद गेग हार गया तो तुम्हारा धर्म का सिवा बायबा । यमसहसिंह ने बावसाहू की कह बात स्वीकार कर ली ।

हूसे दिन दिल्ली के किले क सामने के मरान ने मोहे के मोटे लकी का बाह

## क्रिशीरमज्ज-

# वीर बालक पृथ्वीसिंह

मारी पिबारा की सेरो का सडाई के लिए रखा गया । सेरो का मुह देखने वहाँ बडी मारी मोड इकट्ठी हो गयी । धीरवन्देब बावसाहू की ठीक समय पर भाकर अपने सिहायन पर बैठ गया । राजा यमसह सिंह अपने दश बच्चे के पुत्र पृथ्वीसिंह के साथ प्राये । उन्हें देखकर बावसाहू ने गुस्सा—छाप का सेरा कहा है ?

यमसहसिंह बोले— मैं अपना धीर अपने साथ लाया हूँ । पाप लडाई आरम्भ होने की धाया दीजिये ।

बावसाहू की धाया से बह बगसी धीर अपने पिबारे ल सडाई के पिबारे ने छोड दिया गया । यमसहसिंह ने अपने पुत्र को उस पिबारे ने पुत्र जाने को कहा । बावसाहू धीर बहा के खब लोग हलके बच्चे रह गये । किन्तु दश बच्चा का बासक पृथ्वीसिंह पिता का प्रणाम करते हमने हलते धीर के पिबारे ने बस गया ।

धीर ने पृथ्वीसिंह की धीर देखा । उस तेजस्वी बासक ने नेत्रों को देखते ही एक बार बह पुष्ट बसाकर पीछ हट गया लेकिन सिपाहियों ने बाहर से जाने

की नौक ने ठल पर के उसे उरसाया । बह सेर हाँके ने भाकर के पृथ्वीसिंह के ऊपर कूट पडा । बासक पुत्री सिंह का के से एक धीर बह गया धीर उसन अपनी तलवार खिच ली ।

पुत्र की तलवार निकालते देखकर यमसहसिंह ने पुकारा बडा ! तु बह बडा करता है ? धीर के पास तो तलवार है नहीं फिर तु उस पर क्या तलवार भला-येगा ? यह तो बम मुह नहीं है ।

पिता की बात सुनकर पृथ्वीसिंह ने तलवार छुडी धीर बह गर पर टूट पडा । उस छोटे बासक ने सर का जबडा पकड़कर फाड़ दिया धीर फिर धीर के भूरे शरीर के दो टुकड़े करने केक दिया ।

बहा का सारी पीछ पृथ्वीसिंह की जय बयकार करने लगी । गर के जून से छना पृथ्वीसिंह जब पिबारे ने निकसा तो यमसहसिंह ने उसे छाती से लगा लिया ।

ही धर्म बमसाहू के प्रम या प्रम को फोटि ने बाते है मित्र भी नही मा । मरवी लनी प्रथा के लिए भी—

मत भगदि द बा नारी

मरारोहेपुत्रागम ।

त रु बती समभारा

नयनोंके महीये ॥

जसे सहाय के स्वकलि त्र प्रमाह है तो क्या हम प्रम को ही इस युग ने लो कार कीबिबया ।

धर्म के युग ने ऐसी बिग्नमार्ग सहाय नहीं की को सती घत हमे इससे ऊपर उठक ही बिच र करना होता ।

## गुरुकुल विश्वविद्यालय वृन्दावन में प्रवेश

१ जुलाई ८३म प्रारम्भ नि चक्र की ए स्तर तह गिला सारा भोजन नियमित बिबया सहाय उत्तम देवबास के लिए प्रारम्भिक भोजन सुक १०/ मास ने ७ से १२ मय तक के बासको का भवेत गुरुकुल विश्वविद्यालय वृन्दावन में दिवारा । शास्त्र लक्षण बासको की श्रुत ह्दयर उनीग पीछा छात्र पाठ्यपुत्र महाविद्यालय में प्रवेश के सते है ।

(स्वामी रमनन्द)

मुख्य विग्न

गुरुकुल विश्वविद्यालय वृन्दावन

जगत प्रभु कल्या के पास धर्मिक धर्मियन धर्मय प्रथम घट घट बासी पुरख एक रवित्र निज भवन की ठेक भिन्न भाव मरपुर कट्टा निबिबामर तरे गुरु भाये ज्ञान मानु बा । होये प्रकाश, केवल लो दुष्टी से धारा ।

स्वामी केवलाचन्द्र

## “वाह री पाण्डित्य परम्परा”

प्रज्ञा देवी

समय बाला की बात बिबबाको के कथन कल्पने से बरनी फटी बा रहो की एब बालाभाब बड रहे ने सब समाज सुधारको ने बिबबा बिबाह का न्यायोचित पल लेकर इसे प्रभावित कर हिन्दू समाज का कल्याण बिबा बा वा बिरोध करने बाल तत्कालित सामाजिक परिस्थितो ने ?

२ यह कि १९२६ मे मारवा एस्ट के पास होने पर काशी के पण्डितो ने इसे ब्यावस्थायी नीतिगत इस्का प्रपञ्च बिरोध किया बा । काशी की पण्डित मण्डली द्वारा हिन्दू समाज के कल्याण के लिए किए गये एतासत कायों के रहते उनको कीन मारीनी समाज के उदारीन बनाने का साहस कर सकत है ।

गु १४१ १४२

काशी के पण्डितो की सामाजिकता की यह सुसरी शक्ति ने समझती हू प्रत्येक मन को बमस्य कपोन बायेनी । यमा बाल बिबाहात्मिक का समयन हो । नही उये अपनी स माजिकता का हेतु बगाना ब्या देस को मध्यकालीन बधेरे युग मे ही बमके देना नही है । किच प्रकार मध्य युग मे भी ऐसे बरे समयत कलोलनियत बमनों को प्रमाह मान पण्डित जब भी समाज के एक बग के रदन का परवाह न करे हू एकाग्र की दियानुसी बातो का समयन करता है यह इस बात का उदाहरण है । इसी युस्तक मे पू ३०२ ३०३ ने लेखक ने बहाना बापी एब भी बीकास की ने माग उद्भूत करते हू उनके हृदयनिवाह (हृदयनो) के मन्दिर

प्रवेश प्रविहार धार्मिक सम्म की कायों की बमों के प्रसव मे बडी पुरस्ता से पू देवनायकाचार्य की की शारिमिश्र एक उमके जन साम्नीय बातो की (किन्ते हृदयनो के मन्दिर प्रवेश का धर्मिक नही है का समयन होता है । ) प्रथमा की है जो धाम के युग के लिए धार्यवर्माह है ।

इस युस्तक के १४२ से ५० मे धर्मकी सकारा द्वारा पण्डितो का सकारा धीरक देकर प्रकाश पर से बिग्न सासन की स्तुति भी की गई है । युस्तक मे बनेकों स्वामी मे धर्मिकविज्ञान पुनरुत्थित बमबा बाँधित का धार्यवर्माह किया गया है जो बिस्तार से पुनक नक मे ही बाँधित हो सकता है । इसका धर्मय है कि इस सुम्नो युस्तक को १३ जाने १८ किशो की पठक के मन मे यह भाव अग्रम धर्मित हो जायेये कि इस युस्तक का लेखन किन्ही सम्प्रदायगत बिचारो के बाधह से धाबड होकर हो किना गया है तथा युस्तक मत पण्डित मामावनी की डडी बाधार पर कुतो गई है ।

हिन्दू समाज को गिबारा एब बा बिबासो बिचने बियेय रूप से मारी जाति पिय रही को म गह्रा बिमाने क लिए देग के मध्यमाय नेमोभा एब गुषी प्रम बह सबा धार्यवर्माह जैसे थप्ट साहित्य कारो द्वारा जो प्रस प्रमाह किने जा रहे मे उन्ही का समयनय एब तेजस्वी बिचार के लिए किना उरथ है यह विस्तार नीयक बात है । वेब से प्रभावित होने पर

२५ बनेन १९८३ के माणवी मे 'लोते ने लो की मोर ने धीर केरे लय लके धीरक को लेखकर सभा स समा बार को पठकर कि रत्नाम्नान ने एक बार पुन सा बा एस्ट का बमिबया उडाई गई' गुने बडा धार्यवर्माह दुस हूरा धीर कुत्र बाते ब्यान ने धायी कि ५० हजर र पुनपुत्र बनों के बिबाह कर सारा हमर की मजिबया धाय उन्ही धानीय धर्मबान में बने बाले धर्मिक निखार मोयो द्वारा उडाई गई है । किन्ते सारा एक माजिकी सकारा कानून धार्मिक का पता ही नहीं है किन्तु इस युग न ऐसे लोगो के बिबया कहा बा बिरोध को पुन सुडित हो है धीर बावसा एक का बिरोध करत सामाजिक कल्याण के लिए उरथि नी मानते है ।

सन् १९८३ मे निवर्तबिबालनीय प्रभावत धारायुकी द्वारा प्रकाशित काशी के पण्डित परम्परा नामक एक ऐसी ही बमपुत्र युस्तक है जिसके लेखक द्वारा काशी के पण्डितो की महत्ता एब उनकी सामाजिकता बिन्न उदाहरणों द्वारा धार्यवर्माह है—

१ यह कि बाला का बहासबाब महाराष्ट्र का प्रथमासनाम, प्रथम सभा उदघाटन का धार्यवर्माह बिब सहाय बिबया बिबाह का हिन्दू समाज के कल्याण हेतु समयन कर रहा बा उस समय उस युग के महान् बमधारियों ने बिबया बिबाह के नि से अपना सम्पनि एब बमस्य बाब बाबसाब का धार्मिक सडक से उडारा । काशीय पण्डितो का यह सहायन प्रमाह नितान प्रसवनीय बा ।

गु १३८ १३९

सहाय महाराष्ट्र में लेखक काशी के पण्डितो की सामाजिकता बिबयक इस उभित पर स्वम बिचार कर ने कि विम

## वेदभाष्य की पृष्ठभूमि पर सिंहावलोकन

वेद सब सत्य विद्याओं का पुस्तक है। वेद का पढ़ना-पढ़ाना और सुनना-सुनाना सब आर्यों का परम धर्म है।

पार्श्वों के जीवन में बेदो की का स्वागत  
 भव्यतम महत्त्वपूर्ण है। प्रतीकान्ताल से  
 वेद ईश्वरीय ज्ञान के स्वयं प्रकाश में आकर  
 की भावना से स्वीकार किये जाते रहे हैं।  
 परन्तु अब हम यह स्पष्ट रहस्यमय है।  
 इसकी कीमति विविध छवियों में है जो  
 सामान्य जन की ध्यान में संजोय रहती  
 हैं। वे प्रभो की ही सभी मीरला तब  
 विविध छवियों के कारण सामान्य  
 हो जाय मनुष्य आत्मा में पारस्परिक विज्ञानों  
 के मध्यस्थ की इनके रहस्यों की नवी  
 समक पाते हैं। इसी कारण प्रतीकान्ताल  
 से ही बेदों के भाव्य करने की रहस्य  
 पार्श्वों जाती हैं। परन्तु यह के अत्युत्तम  
 रावण हृदयारे सामने बेदों के सत्यप्रभ  
 आध्यात्मिक के के भावों में परन्तु इनका  
 वेद भाव्य प्रतीक से प्राप्त नवी रहती है।

[illegible]

धर्मेन्द्रपाल शास्त्री

एक कल्पना क्षणित अवसमर्थ रही। इसका मुख्य कारण ये बेव की भाषा क्लृप्त रहना व धर्म काव्य की नही लयक पाये।  
उन्कोने धरने वाष्मो ये बंदो मैं बलिष्ठ  
सकल का ब्राह्मणो उपनिषद्, पुराणों में प्राप्त वाचाओं व ऐतिहासिक तत्त्वों से सम्बन्ध बतारक वैदिक वाचा शास्त्र वैदिक कल्पना का नवीन मत कहा कर दिया। इस निष्कर्ष पर पहुँचने के तीन कारण थे—

(१) उन्हें वैदिक परम्परा व साहित्य का ठीक ठीक ज्ञान नहीं था तथा उन्होंने प्राचीन ऋषियों की नैतिक प्रणाली को खोला बिगाड़ दिया।

(२) साधन का भाव्य इन का मार्ग दर्शक था।

(३) पश्चिमी विद्वानों की वेद से कोई सहानुभूति नहीं थी।

[illegible][illegible]

मीन एव प्राणिमात्र के उपकार की भावना से बहुमुख लम्बैय मानव को विये । वे दे के विषय में एक हीसी विचारभावा का सुखन किन्ना । वे दे को न हो केवळ कर्मकाँति । वे दे के विषय में न, न धार्य बाति के गीत । वे दे के विषय में प्रमुख रूप से दो भावनाएँ ही—(१) दे को के ज्ञान का प्रकाश ईश्वर ने सृष्टि के शारम्भ में अग्नि बाधु बाधित्य अक्षरुणा नामक बाधि ज्दियो के अवन करणों से मानव बाधि के ज्ञान व कल्याण के लिए किया ।

सनातन सर्वज्ञ परमात्मा का ज्ञान होने से वेद में सारा ज्ञान विज्ञान बीज-रूप में वर्तमान है इसी में वेद स्वतः प्रमाण है। उनकी ये भाष्यकारों वैदिक साहित्य के गम्भीर अध्ययन पर आधारीत हैं।

देव ईश्वरीय ज्ञान है। दयात्मक की  
 इस मायाका का विवेचन हम दो प्रकार  
 से करते हैं— (१) वैश्विक साक्षात्  
 ज्ञात्राय, उपनिषद् सर्वानो (सबन जन्म)  
 में प्राण प्रत्यक्ष के माया पर (२)  
 तब की कष्टीय पर। वैश्विक साक्षात्  
 का कर्तुं प्रत्यक्ष है सारा वैश्विक साक्षात्  
 दयात्मक का। इस मायात्मक की सुवि-  
 क्षित है। वेद का प्रमाण ईश्वर के प्रति  
 के शक्ति में प्रमाणों के बुद्धि सत्यता में  
 ने किया। उपनिषद् ज्ञात्राय कहा—  
 'येमस्तस्मै नमस्कृत्य नाम्नाः'।  
 'हृदये' वाच्योक्तुम्। सुतरात्प्रमाण-  
 '१५४२२' बभूवुः। ज्ञात्राय का प्रमाण  
 प्रमाण पर प्रमाण का साधु पर साधने-  
 का सर्व मायात्मक प्रमाण पर साधने-  
 प्राकृत्य नाम्नाः ज्ञात्राय सर्वानो यमुनिषद्  
 प्राणि सभी एक स्वर में वेदो की ईश्वर  
 से उत्पन्न हुआ मायात्मक है। इसी से वेद की  
 स्वतः प्रमाण प्राणत्व है।

यहविषयमानन्द का नेद के सम्बन्ध में दूसरा दावा है कि नेदों में समस्त ज्ञान विज्ञान है। इसी सन्दर्भ में स्वामीजी का कहन है कि सर्वप्रथम नेद ईश्वरीय या ईश्वर का ज्ञान होते से धारण धारण में पूर्ण है। और ईश्वर ने यह ज्ञान मनुष्यों के ज्ञान व कल्याण के लिए दिया। धरत उसमें मनुष्याध्ययोंगी समस्त ज्ञान विज्ञान होना चाहिए। स्वामीजी ने नेद में निहित ज्ञान राशि को प्रमुख रूप से चर बिषयों में विभक्त किया है — (१) विज्ञान (२) — सब पदार्थों को यथायथा जानना। (३) पालना। (४) कर्म (५) ज्ञान।

महर्षि दयानन्द का विद्यालय से सा.परी

ज्ञान की उस प्रभावी हो है, जिससे ज्ञान, कर्म, उपासना इन तीनों के समुचित उपयोग से केवल तुल्य-मर्त्य स्वस्थता पदावी का साक्षात् स्वरूप होता है। और ज्ञान प्राप्ति के श्रममुक्त विवेक की प्राप्ति से यथावत् उनका उपयोग होता ही। स्वामीजी ने विज्ञान को यही रूप में व्याख्या की है — (१) ईश्वर का यथावत् ज्ञान व उसकी साक्षात् का पान। (२) प्रमाणों बिना का ज्ञान यथावत् पदावी के यथोक्त उपयोग की जानना।

उगासना—घबराहट परमेश्वर की प्राप्ति के उपाय करना ।

कर्म = कम मे कर्मकाण्ड को मेने  
हैं जिससे जीवन मे परमाय व लोक  
व्यवहार की सिद्धि होती है। स्वामी जी  
का कमकाण्ड से तात् य केवल यज्ञ याव  
से नही धरन् उसमे जीवन की समस्त  
क्रियाओं को सम्मिलित कर लेते हैं।

ज्ञान—ज्ञान का अर्थ पृथ्वी से नभ तक  
 नभ से प्रकृति पर्यंत पदार्थों के गुणों के  
 ज्ञान से ठीक ठीक काय सिद्ध करना।  
 इसे हम आधुनिक विज्ञान के रूप में  
 प्रयुक्त कर सकते हैं। वेद भी भाषा में  
 विज्ञान—विज्ञेय ज्ञान ईश्वर आत्मा  
 प्राणि के ज्ञान को जबकि ज्ञान प्राकृतिक  
 प्राणि के अर्थ में प्रयुक्त होता है।  
 (आध्यात्मिकाध्यात्मिका)

श्रेय मे पवार्न बिचार ह्या मही न  
 यह मन्त्री कोर धनुस्मान का विषय मे  
 पायी तक वेदी मे से वैज्ञानिक सुनो की  
 कही का नियम पूर्वक मन्त्री प्रयास  
 नही हुया। धत ह्वारे खानमे कोई ठोसतक  
 प्रमाण नही है। वतम न मे कुछ प्रयास  
 किया बा रहा है। तथापि महर्षि वयानम्  
 बरार मे से दानी ज्येष्ठ गायत्रिका  
 मे वैदिक मनो से ज्येष्ठ, तुरिका,  
 पितान बिबा। मनी न बिबा, भूनी न बिबा।  
 धादि का प्रतिपादन बिबा। जम्नीवी  
 धातानी के मध्य मे यूरोपी इनमे से  
 कही बिबायो का बिकास मही हुया

ऐसी व्यवस्था में ज्ञानी लोग दायज-दार-रखी का धारणी श्रेष्ठोदासीन-सुप्रभुषिका में विधान बिंदु को का प्रतिपादन करना इस बात का स्पष्ट संकेत करता है कि वेदों में परा- (अन्य) गेयक के मेरिगुहों है। परन्तु पुनः पन का को किचित् विचार के लिए यन्मोर-पन-येर को धार-रक्षा है। यथानियम पुन के यन्म-विन्नु मनुष्य-धर्म-विशेष को धारणी को धार को हुक-धारित हुए कहन है कि मैं तो यहा तब कहना कि वेदो में सुकु बैत निग-सव-वेद है जिन्हें प्राणुचित विज्ञान अ तथा तब जहा। यहा धरिन्-न का संकेत मनो विधान से है। वीरक मनोविज्ञान वालर के धारने प्राप में यन्म-धर्म है तथा धरिन्-वेदो के धारने में धारणी का की-अ है।

वेद वास्तव में अपने आप में पद  
विद्या ही नहीं अपितु नीति धर्म राजधर्म  
(शेष पृष्ठ १२ पर)



अनुस्मृति के अक्षर दिये जायें। राज  
नीति सम्बन्धी अक्षर भी। अन्तिम  
(शेष पृष्ठ ११ पर)







## आर्यसमाज तिमारपुर का वार्षिक चुनाव संपन्न

आर्यसमाज तिमारपुर दिल्ली-७ के १२ वर्य ८५ को हुए वार्षिक चुनाव में निम्नलिखित पदाधिकारी सर्वसम्मति से निर्वाचित हुए —

प्रधान श्री जी.मंडल  
उप-प्रधान श्री जयवीरदास गुप्ता  
— श्री हाराकम भावे

मंत्री— श्री कृष्ण देव  
उप-मंत्री— श्री विमल कामल शर्मा  
— श्री जयवंत सिंह  
कोषाध्यक्ष— श्री देव शर्मा  
उत्सवाध्यक्ष— श्री बलराम शर्मा

(विमल कामल शर्मा)  
उप-मंत्री

## दंतों की हर बीमारी का धरुल इलाज

एम डी एच

दंत मंजन  
लौंग युक्त

23 जड़ी बूटियों से निर्मित  
आयुर्वेदिक औषधि

दंतों का डाक्टर



अब नये पैकेज में उपलब्ध

महाशियां वी हट्टी (प्रा०) लि०

94A, इण्डियन एजेंट, सीटी रोड, आई दिल्ली 15 जंम 638609 57 987 53 3



मसूरी की सुख



उर की सुख



छात्राजी की सुख



सात का सुख

## सात वर

(पृष्ठ २ का रोच)

लोपान है। बहुरिष्ट बहुरिष्ट एव बहुरिष्ट । बहुरिष्टता होना ही निवेद्य साध्य है, इसी का नाम मोक्ष है इसी का 'पर-वर्ति' । धर्मपुत्र निवेद्य के विवे ही होता है। धर्मपुत्र यथा है। और निवेद्य सत्य है। साध्य न ही तो साधन के र है। शौचिक जीवन तो साधन का पक्ष भाग है एक पक्ष भागता है दूसरा भागता है। यह क्रम बराबर जारी रहता है जब तक कि प्रसन्न स्थान न जायता, वहाँ पहुँचना हमारा ध्येय है। इसविषे 'बहुरिष्टपत्र' सब से उत्कृष्ट ध्येय है।

बौद्धी बात यह है वह बहुरिष्ट बहुरिष्ट है विद्वान् बहुरिष्ट को प्राप्ति से पहले तुम मरे सिव इस सात वर की प्राप्ति के लक्षण बुझाओ ध्यान तुम को बहुरिष्ट की प्राप्ति न होनी । सब से बड़ा बहुरिष्ट है जो योग वाता चाहता है। धर्मपुत्र यह है जो दूसरों को मार्ग दिखाना चाहता है। महा धन्य बहुरिष्ट बहुरिष्ट । मेरा मार्ग मुने दख बहुरिष्ट सो को जाये ।

कहते हैं कि स्वामी ब्रह्मन् को किसी ने कहा था कि स्वर्ग मेघ प्रचार के पक्ष में । परे ही, योग करो और मोक्ष हो जायगी । स्वामी ब्रह्मन् ने उत्तर दिया कि जब सारा प्रविष्टा की दासता में पड़ा सब पक्ष है तो मुने मोक्ष कीस मिल सकता है । बहुरिष्टता वाणी के विवे यह कति न था कि मे बहुरिष्ट साधन की दासता से स्वयं मुक्त हो जाते । इन्त्येय का नागरिक बन जाने से यह ध्येय पूरा हो सकता था । परन्तु इससे भारतीय लोगो का दासत्व का प्रस ली न हो सकता था । पर बहुरिष्टता वाणी ने स्वयं कि जब तक वैशाखी गुणान हैं मरी स्वयंभवाता का कोई धर्म नहीं । जगता पुकार कर कहती हैं कि मेरा धन पुकारा ही तुम बहुरिष्ट को को का खरते हो गोपना था । विस्ते रेल का साबा नहीं चुकाया वह तो रेल से उत्तर कर पर नहीं था वरता । आप के सात वरों में एक यह भी है कि जगता द्वारा इन सात वरों की प्राप्ति क को साधन आप खुदा सपते हैं । उनम आप कमो न करें । कर भला, ईश्वर तेरा भला करेगा । □

श्री हरवंस सिंह खेर प्रधान,  
श्री रामसरण दास आर्य  
महामंत्री सर्वसम्मति से  
निर्वाचित

दक्षिण दिल्ली मेघ प्रचार मंडल का वार्षिक चुनाव २६-८-८५ को आर्यसमाज वासवीय नगर में हुआ । जिसमें निम्न-लिखित अधिकारी चुन गए ।

प्रधान	श्री हरवंस सिंह खेर
उप-प्रधान	श्री हरवंस सात कोहली
" "	श्री कृष्ण सात सूरी
" "	श्रीमती सरला पावल
महासचिव	श्री र मरुवा दास धर्म
मंत्री	श्री प्रोम प्रकाश भावल
मंत्री	श्री चन्द्र प्रकाश
कोषाध्यक्ष	श्री सावित्र राम शोचक
वैशाखीराल	[क] वैशाखीराल
	रामसरण दास धर्म
	महामंत्री

## उत्तमता का एक मात्र विश्वास

Groversons

Paris Beauty

पेरिस ब्यूटी

गोटर  
सन्स

ब्रा.पैन्टी.बनियान अन्डरवियर व बेबी पैन्टी आदि

पेरिस ब्यूटीसेल्स कारपोरेशन

26/5 १/2 बीकान पुर्वा.अमरकान सबांन  
कोलकाता नगर आई दिल्ली ११००१४  
दूरभाष - 567224 574200-582036



उत्कल  
इन्द्रक शक्ति विद्यापीठ  
द्वितीय  
जन्म से प्राप्त संस्कार  
आदि विद्या

साप्ताहिक

ओडम

कृष्णजी विद्यामार्ग

# आर्य सन्देश

मुख्य एक प्रति १० पैसे वर्ष ६ प्रक ३१ रविवार २३ जुन १० १ आय सन्देश ११६०६३१००५ आगत १०५१ दयानन्दार्थ - १६१

## अलौकिक प्रतिभा के धनी गुरु विरजानन्द दण्डी

ज्ञान के प्रसार कर्त्त परम तपस्वी, त्याग के उच्च धारक महानयोगी प्रभावशाली पुरुष श्री स्वामी विरजानन्द की शिक्षा का ही चमत्कार था कि मुगपक्ष महर्षि दयानन्द भारत की मिर पाया। स्वामी विरजानन्द का जन्म १७७६ ईस्वी में पंजाब करतारपुर उपनगर के समीप गंगापुर ग्राम में हुआ था। चैक रोग के कारण पांच वर्ष से भी छल था। वे ने नैतियोग ही गए। वे बादशाह गोहा धारदशाही, सारस्वत ब्राह्मण थे। भूत बाल्यकाल में ही ब्रह्मोपनिषद् का संस्कार के साथ वेदाध्ययन के लिए व्याकरण धारि की उनको शिक्षा दोषा प्रारम्भ कर दी गई थी। नेत्रों की शरीर का दूसरा प्राण कहा जाता है उनके नेत्र बने गये कुछ कम नहीं था कि स्नेह के सागर में तिता भी बच गया। वे ही प्रसार ससार से उठ गये। इस बड़ भाई भावों ने विरजानन्द को साहस्यार न देख सताता हुक्म-राना शुरू कर दिया। इस प्रकार की दुःख स्थिति में धन्य बालपन की लेकर ने केवल १० वर्ष की आयु में घर से निकल पड़े। तीन वर्ष तक मटके हुए श्चोकेस पढ़े। यहाँ पर उन्होंने जगल में गंगा के तीर पर एक कुटिया बना ली। गायत्री उपासना में रत रहते हुए कष्ट तक गंगा के जल में स्नान होकर स्नाना कर लेते रहे। उनकी स्मरण शक्ति धनितीर ही गई। १८ वर्ष की आयु में उन्होंने कनकल हरिद्वार में दम्भी स्वामी पूर्णानन्द से (जिनसे स्वामी ब्रह्मचर्य ने भी सम्पाद लिया था। उपास्य ग्रहण किया। इनसे ही शिक्षा व्याक-

रण धारि की भी शिक्षा प्राप्त की। इनके पश्चात् वे काशी पहुँचे काशा में उन्होंने पडा भी धीर पडाया की। काशी से गया गये। वहाँ से कनकल इस प्रकार पुन लौटकर एटा जिला के गंगातीर स्थित सोरो नगर आ गये। यहाँ पर अल्पकाल में ही उनकी यश कीर्ति चहुँ ओर फैलने लगी। एक दिन जब वे गंगा में स्नान पाठ कर रहे थे। अलवर नरेश महा राज विनयसिंह ने इस प्रभावशाली विद्वान की मुक्त मधुर लोनी में पाठ करते देखा वे मुग्य हुए बिना न रह सके। उनका योग साधना शीर त्याग से वे ऐसे प्रभावित हुए कि उनकी कुटिया में पहुँच कर उनसे अपने राज्य अलवर चलने की प्रार्थना करते लगे। स्वामी जी ने कहा इस वरगी तुम रागवश की दुनिया के भनमस्त राभी। हमारा मुहारा सग कसे सभ्य है? राजा ने जब बहुत अनुनय विनय की तो वे एक क्षण पर साध जाने के लिए तैयार हुए। यदि तुम प्रतिदिन हम से कुछ ही काल तक सही पठना स्वीकार कर लो तो हम धन्य साथ चल सकने। राजा ने उनकी शर्त स्वीकार कर ली लेकिन साथ ही उन्होंने यह भी कह दिया यदि एक दिन भी पढ़ने में व्यथना हुआ तो हम पास लौटकर आ जायेंगे। अलवर पहुँचकर उन्होंने राजा को पठाना शुरू कर दिया। महाराज विनयसिंह के हृदय में दम्भी जी के लिए दिन-प्रतिदिन भक्तिभाव बढ़ता गया। किन्तु एक दिन राजा नाच-ने में व्यस्त हो गए और पढ़ने नहीं पढ़न पया, राजा के प्रतिभा मय

करने पर स्वामी जी राजनगरी का परित्याग कर चल पड़े। कहा तो उस समय के ज्ञानी ध्यानी सत जी मोक्षानन्द जी प्राप्ति से भी अधिक राजदरबार में प्रवेश के लिए उत्सुक रहते थे और कहीं वे नैतियोगीन साधु जी राजमय राजगुरु के सम्मान पद पर ठीकर मारकर चल पय। इसके पश्चात् वे पुन सोरो धाये यहा पर भरतपुर के राजा महाराज बन्तसिंह ने उन्हें भरतपुर पधारने की प्रार्थना की किन्तु उन्होंने जाने से साफ इन्कार कर दिया। वे मधुरा चले गये और यही पर उन्होंने अपनी पाठशाला प्रारम्भ कर दी। इसका ध्यय प्रार अलवर नरेश भरतपुर के महाराजा तथा जयपुर के धर्मपति रहन करते थे। स्वामी जी इन राजाओं को नवा धाने छात्रों को १११ समय देश को गुलामी की सहन न करने के लिए उषा हेरसिंह ने तन मन धन धन्य करने की सदा प्रेरणा देते रहे। १८९० मधुरा में ही उन्हें स्वामी दयानन्द जैसा सुयोग्य शिष्य मिला। शिष्य को पढाये वे उन्होंने चमरदार जैसा काम किया। स्वामी विरजानन्द पढाये ने कोर रहे। उन्होंने दयानन्द को धनार्थन त्याग करने का प्रथम भादेश दिया। मधुसिंह प्रभो की पढने की पढी दी। जिसके कारण राजा भी दयानन्द का जीवन ही बदल गया। वेसे तो स्वामी विरजानन्द की पाठशाला से हज़ारों विद्यार्थी जानाजिन कर निकले, किन्तु स्वामी दयानन्द जैसा श्रद्धालु शिष्य एकमात्र ही था। धनार्थन की पढने वाले उस समय के विरजानन्द के शिष्य गोपाल

ब्रह्मचारी मुगलकिशोर सोहनबाब, नन्दन जी चौधे पाण्डव त्यागसाध, गुरुध्वज दीनच बुध माली चौधे और उदयप्रकाश धारि भी प्रसिद्ध रहे। स्वामी विरजानन्द ने उद्भट विद्वानों से अनेक शास्त्राध्यय किये। वे धनार्थन को प्राप्तिप्राप्त और धनार्थन को का खण्डन बनी कठोरता से किया करते थे यही धनार्थन गुरु स्वामी दयानन्द ने भी अवर्जित हुआ। समानतन (विद्यानमार्ग) के समय जब दयानन्द अपने गम से बिदा लेने लगे एक बाली लोग भरकर सन्ध्या शिष्य ने गुरु वरणा में धर्पित करनी बाणी किन्तु विरजानन्द बोले - दयानन्द। हम मन बाही प्रहारा चाहिए। इतिहास में इसी प्रकार महर्षि वरतन ने अपने शिष्य कीस से चौदह करोड़ स्वरूपमुद्रा मांगी थी। किन्तु दयानन्द ने इससे भी बढकर दक्षिणा भ्राना जीवन ही का खण्डन करे। जीवन भर दयानन्द ने इस भादेश का पालन किया, एक बार जब स्वामी दयानन्द मेरठ में थे। इस का सन्देश मिला - दयानन्द धनो तक तुम्हारी धन्य कीर्ति हमारे कामो तक नहीं पड़नी। वे चाहते थे धरे शिष्य की कीर्ति दिव्य दिगन्त में व्याप जाये। सोमवार १८८८ सितम्बर में दक्ष महर्षि का निधन हुआ। उनके मृत्यु समाचार की सुनकर स्वामी दयानन्द ने कहा था - आज व्याकरण का सूर्य अस्त हो गया। - यशपाल बुधार्थ

## समर्पण रात्रिक

गान्धार—(हृदय) परमात्मनः प्रथमा  
रात्रम् । (यम्) त्रिमयस्य की (प्रथ-  
म) महात्मा (वयम्) बरणीय (मित्र)  
मुद्रम् (यस्याम्) स्वायत्तरी (रक्षणम्)  
रक्षा करते हैं । (न) वह (यम्) मनुष्य  
(न किं) नहीं (दम्भम्) मारा जाता ।

व्याख्या—इस मन्त्र में एक व्यक्ति  
की मरणाश्रया का रहस्य बताते हुए कहा है  
कि वह मनुष्य जिसके वरुण मित्र और  
अर्धमा राक्षस हैं, कभी मारा नहीं जा  
सकता क्योंकि धार्मिक और बाह्य कष्ट  
उसे प्रसन्न नहीं कर सकते, दया नहीं  
करते। दूसरे मन्त्रों में बाह्य कष्ट दुष्टा  
मनुष्य को प्रथमा स्वायत्तरी रक्षा  
वाहिए कि ममार के बरणीय मुद्रं मुद्रं  
उमके उवात बरिण से प्रभावित होकर  
उसकी रक्षा करे। प्रेमी और मित्र भी  
धर्म में से बचने की प्रेरणा करने रक्षा  
ही करने वाले हों। व्यापारिक व्यावाचीक  
की मरणाश्रयन करने वाले ऐसे व्यक्ति  
के रक्षक मन्त्र ।

अब एक एक बात पर ध्यान बिलार  
के विचार कीजिये। सत्तार के प्रथम पुष्पों  
की यह स्वाभाविक गूँथि होती है कि  
वेरा, मार, कष्ट या वि की सामान्य  
सीमाओं को छोड़कर मरुत व्यक्ति का  
हित काये और सत्तार के समय कभी  
का मनुष्य को करते हैं। अथवा विरुद्ध करने  
होने उनके किस्म के सम्बन्धी ही क्यों न  
हो उनका न बने कदापि नहीं देते।

रात्रायण में, राम और सुग्रीव राम  
तथा विभीषण, महाभारत में विदुर  
की न डोया-काय और हृषीकाश्रय धर्म के  
उदाहरण विरामबहारक तथा प्रेरणामय हैं।  
जहाँ वे लोग वादीरिक्त हर्मि ग सुग्रीव के  
परम में से नहीं हृदय में पाठ्य-पन की  
ही हित कामना करते हैं।

सुग्रीव को दिये वचनायाम न ब्रह्म  
राम ने बाण न रक्षर वाली को धायन कर  
दिया तो बानी न रोग प्रकट करन हुए  
राम से कहा—

इति मे दुःखित्यस्याम्  
बन्धुभारान् तव ।  
न त्वा विनिनतात्मानं  
वर्ण्यमप्रधानमिव ॥  
जाने पायममाचारम्  
सर्वा कृपयिष्याम्यसम् ।  
सता वैधर्य पाप  
प्रक्षलन्तिव पापकम् ॥

हे राम तुम मेरी दृष्टि में एक भार-  
वती को धर्म की कोरी डींग हाकन  
बाधे पायवारी और तिनको से डके हुए  
दूर के समान सोचने हो। सत्पुरुषों का  
मेघ छोटे पापकर्म डकी हुई धर्म के समान

जिसे बचावें वरुण, मित्र और  
अर्धमा उसे मारे कौन ?

लेखक—प० शिवकुमार साहू

य रक्षन्ति प्रचेतसो वरुणो मित्रो अर्धमा ।

न कि स दम्यते जन ॥ साम० १८५



वाक्य हो ।

हस्ता बासेन काकुत्स्थ  
साहिगुणपरानिधम् ।  
किं कथयति तस्मां मन्त्रे  
कर्म कृत्वा कुतुम्भिकम् ॥  
सा० रामा० ४ १७, २०, १४

हे राम बिना अर्धमा के ही बासे के  
महार से तुम मारने जैसे निम्नोय कर्म  
को करके तुम सत्पुरुषों के बीच में क्या  
उत्तर दोगे ?

सुग्रीवोऽपि सन कुर्वं  
कर्म कर्मवत् सारम् ।  
किमहं न कर्म कर्मवत्-  
पराम बिना हतः ॥

हे राम ! तुम्हारी सहायता का को  
काम सुग्रीव कर सकता है क्या वह मैं  
नहीं कर सकता ? फिर तुमने निष्का-  
रण मुझे क्यों मारा ?

रात्रायणम् कुरापमानं  
कष्टे वरुणा वरुणाये  
निहन्त रात्रय रक्षे ॥ १८६ ॥

तुम्हारी पत्नी का अपहरण करने  
वाले दुष्ट वरुण रात्रय को मुझ में न मार-  
कर और उसकी मुझें बांधकर तुम्हारे  
सामने उपस्थित न कर सता, इसका मुझे  
बधा देव रहेगा ।

बासी का यह कथन कितामा मुक्ति  
मुक्त और गीतनिधयमुक्त है। राम ने  
बासी के प्रत्येक का निम्न उत्तर दिया—

तस्मत् कारलं पक्ष  
मयम् त्वं मया हतम् ।  
आनुमर्तसि मायाम्  
प्रत्यक्ष कर्म स्वामनम् ॥

—देखा मैंने तुम्हें जित कारल के  
मार है वह यह है कि तुमने मर्यादा का  
उत्सव कर के धारने छोड़े मार की पत्नी  
को धयन अधिकार से किया हुआ है।

अस्य त्वं परमात्मानम्  
सुग्रीवस्य महात्मनः ।  
वयमा बतसे कामात्-  
तुम्हारी शरणकर्म ॥ ४१८ ॥ १८

इस महात्मा सुग्रीव की पत्नी को बन्ध  
पूर्वक धारने अधिकार मैं करके कामात्

होकर न इस प्रकार पापकर्म कर रहा है  
को धारणी सुग्रीव के साथ कुरापमान के  
समान है। इस उत्तर से स्पष्ट है कि  
बासी के पक्षग्रस्त होने के कारण राम  
उसके बन्धु कर्म। सुग्रीव के ऊपर राम के  
प्रतिपक्ष में का कारण सुग्रीव के गोपित  
पीडित होने के साथ-साथ उसकी स्वा-  
शयता भी है। राम का सुग्रीव पर कितामा  
धनुराय का संकेत किए बन्धु के मुझ के  
समक का एक उदाहरण देखिये—

येतु से मानर लेना के समुद्र पार  
उतने पर तुमको लना की देखने की  
हस्ता से सुनेम गयेत पर बड़ यसा। बहा  
सुनेम के एक निवार से बहा से सुनेम  
हुए रात्रय को देखा। रात्रय की देखते  
हुए सुग्रीव धारणबन्धना ही गया और धारने  
धारण को समान न सता। यह क्षमाय का  
कर रात्रय के पास पहुँच गया और उसके  
साथ कुछ देर तक युद्ध करके और धारणी  
बीरता की कर्म जमाकर वापस आ  
गया।

राम बलिष्ठ होकर इस सारे कथ  
को देखते हैं और सुग्रीव के वापस धारने  
पर भावना में कहते गये—

असम्भन्धनं मया सार्धं  
तस्मिन् साहयं कृतम् ।  
एव साहसकर्मनिष्ठं  
न कुर्वन्ति कर्मवत् ॥ १८७ ॥ १८

मेरे साथ बिना परामर्श किए ही मैं  
जो तुमने साहसिक कार्य किया, इस  
प्रकार का साहस राम लोगों को नहीं  
करना चाहिये।

इदानीं मा कृत्वा भीर  
एव किमर्थमस्मिन् ।  
त्वयि किञ्चित्कम् सत्पुरुषे  
किं कार्यं सीतया मय ॥ ४१८ ॥

हे भीर इस प्रकार बिना विचार किए  
भासे से तुम साहस मत करना। यदि तुम्हें  
कुछ ही जाता हो फिर सीता से तुम्हें क्या  
मतसब का।

मत्तेन महाबाहो  
सम्भलोऽनं धर्मोदया ।  
सन्मतेन च सान्मतेन  
स्वसारीरेण सा मुन ॥ ४१९ ॥

हे महाबाहु सुग्रीव ! फिर धर्म में,  
फिर सम्भल के भीर छोटे मार धनुष्य के  
भीर धारने खरीर से भी क्या प्रयोग यह

चाता ।

त्वयि कामागते पुनर्मित  
से निमित्ताय प्रति ।  
कामतस्मापि से वीर्यं  
महीश्वरपदोपमम् ॥ ४१९ ॥

मैंने यह निश्चय कर लिया था कि  
तुम सम्भल वापस न था संके तो—अर्थात्  
महीश्वर और वरुण के समान मैं तुम्हारे  
परामर्श से परिचित हूँ, फिर भी—

हृत्वाह  
तुम्हें सम्भलवापस।  
निमित्ताय च सन्मतेन  
विभीषणमपि च ॥

मत्ते रात्रयवापस  
त्वयि हेतु महात्मन ॥ ४०, ४१ ॥

मैंने निश्चय किया था कि मेना और  
तुमो सहित रात्रय को मुझ में मारकर  
भीर लना में विभीषण का रात्रयसमक  
करके तथा अर्धमा का रात्रय भरत की  
देखना मैं धारने और का परित्याग कर  
हु था।

ये राम के उपचार तिलने स्पष्ट से  
सराबोर हैं। जिस व्यक्ति के धारणर से  
प्रभावित होकर उसे ऐसे साधुकी विम  
चार्यें वह तुम्हारे से मार कैंन का सकता  
है ?

राम विभीषण के पक्षर की उसके  
वापस धारणी के कारण ही मने। रात्रय  
में अथवागित होकर मय विभीषण राम  
के दल में राम से मिलने धारवा को राम  
को छोड़कर रोक सब की मर्यादा बड़ा  
की कि यह धारु का मार है, अर्थात् क्षमा-  
यमा यह है—कि यह हमारे लिए जानने  
धारा होता। किन्तु राम हम विचारों के  
सहमत नहीं हैं। यह कहते हैं कि बिना  
मिले यह कैसे जाना जा सकता है कि  
उसके मन में क्या बात है ? अब धारियों  
के सह पर भी प्रश्न किया कि जिसकर  
भी मन के धारर की बात कैसे जानी जा  
सकती है उत्तर-उत्तर में विचारों की  
बातें करना रहेगा, और मन में बात  
जानाये रहेगा, अब राम ने को उत्तर कि—  
यह कम महापुरुष की योग्यता को बताता  
है कि वे मनुष्य के बिना पक्षी हैं। राम  
ने कहा—

साधारणसाधारणोऽपि न  
यः विनिर्मुहियम् ।  
बलादि बिन्दुल्लेखे  
साधवागत्यं नृपतम् ॥

४१७/१४४

मनुष्य धारने धारकर को धियाने की  
कोषित करने पर भी नहीं बिना सकता  
क्योंकि धारर के विचार बलपूर्वक धारकर  
धारित पर प्रकट होते रहते हैं। यह  
महीश्वरानिक्त बात उन्हें के धारर बिबर  
में भी नहीं है—

विचरं मे निधियामा माय  
धरमा यदो धनं मेविम ।  
यदां कर्मवीरं मे तु त मे  
को कर्मवीरं विम की ॥  
(विम पृष्ठ ११ पृष्ठ)

## ★ वचन-सन्देश ★

### सफलता का चमत्कार

गाजी मुहम्मद कमालपाशा जिस समय तुर्की से भागे थे उस समय केवल इक्कीस युवक उनके साथ थे। कोई माजी-सामान न था भीत का बारण्ड पीछे-पीछे ब्रूम रहा था। पर समय ने ऐसा पलटा छाया कि उसी कमाल ने अपने कमाल से ससार को आश्चर्यान्वित कर दिया। वही कालिल कमालपाशा टर्की का भाग्य निर्माता बन गया। महात्मा लेनिन को एक दिन शराब के पीपी में छिपकर भागना पड़ा था, नहीं तो मृत्यु में कुछ देर न थी। वही महात्मा लेनिन रूस के भाग्य विधाता बने। श्री शिवाजी झाकू और लुटेरे समझे जाते थे, पर समय प्राया जब कि हिन्दू जाति ने उन्हें अपना सिरमौर बनाया, गौ ब्राह्मण-रक्षक छत्रपति शिवाजी बना दिया। भारत सरकार को भी अपने स्वार्थ के लिए छत्रपति के स्मारक निर्माण कराने

पड़। क्लाइव एक उद्भ्रष्ट विचार्षी था, जो अपने जीवन से निराश हो चुका था। समय के फेर ने उसी उद्भ्रष्ट विचार्षी को अग्रज जाति का राज्य स्थापन कर्ता लार्ड क्लाइव बना दिया। श्री मुनयान सेन चीन के अराजकवादी पलायक (भागे हुए) थे। समय ने ही उसी पलायक को चीनी प्रजातन्त्र का सभापति बना दिया। सफलता ही मनुष्य के भाग्य का निर्माण करती है। असफल होने पर उसी को बबर, डाकू, अराजक राजद्रोही तथा हत्यारे के नामों में विभूषित किया जाता है। मफलता उन्हीं सब नामों को बदलकर दयालु प्रजापालक, न्यायकारी, प्रजा-तन्त्रवादी तथा महात्मा बना देती है।

—अमर सहीद रामप्रसाद बिस्मिल

### सम्पादकीय

## अकाल के पंजे में तड़पता इथियोपिया

प्राज का मानव विज्ञान और तकनीक से चाद सितारों की ऊर्जा तक पहुंच चुका है। बरती का भार सागर की सहराई ऊकी से ऊकी पवत की चोट तक, हवा के वेग से लेकर सूख के २ करोड़ गुने ताप तक भी मनुष्य ने जान लिया है। समस्त विश्व की कुछ पत्तों में समान्य कर सकने की शायरी मनुष्य ने ईसाई कर ली है। लेकिन इसके साथ मनुष्य से लेकर क्षुद्रजातियों तक के अबाधक रोगों तक की बिकल्पा का भी प्राविष्कार निरन्तर चल रहा है। फलतः जनकन की उपज का श्रावणजनक बुद्ध कर सकने का विद्या मनुष्य जान चुका है। किन्तु मानव विज्ञान के चरम को छूने के बाद भी मनुष्य में मानवता का ह्रास होता जा रहा है। मनुष्य में विज्ञान के साथ राक्षस प्रवृत्ति भी बढ़ती जा रहा है। प्राविष्कार तथा उत्सव प्राज में लाखों मन अनाज की डाँ-कट के रूप में हूब में छड़ दिया जाता है। दूसरी ओर इस समय मनुष्यता के नाम कलक बनकर अकाल की छाया मनुष्यों का जगमग रहा है। इथियोपिया तथा २५ अफ्रीका देश इस समय अकाल ग्रस्त हैं। इथियोपिया का अनाज ४ करोड़ २० लाख के लगभग है। तीन साल से यह देश अकाल के जबड़ में फसा है। मनुष्य ही तोस लाख लोग भूख और श्वासाश्वी से मर चुके हैं। पूरे अफ्रीका में सिक १६८४ म १६८४ २० लाख लोग मरे हैं। साथ ही १५ करोड़ लोग प्रभावित हुए हैं। इस तरह के अकालों का कोई अन्त नहीं है।

वर्तमान कहेते हैं इसका कारण अभाव्युध जगलों का काटा जाना, कई जगहों पर १०० वर्षों से वर्षा पान होना पानी का दुर्लभपण नगरों का विकास करत जाना, बेटी कृषि का उपेक्षा प्रादि कारणों से सहारा क्रो रेगिस्तान का फलाव संजहा गया है। इसी कारण १० लाख बग किनोपेक्टर तथा मायक जानान सहारा में समा गयी और अमर सुरत कदन नहा उठाये गये तो अगले ५० वर्षों में अफ्रीका का ४५% हरेहा रेगिस्तान में समा जाने का खतरा है। पिछले २० वर्षों में पशुधन का चरागाह का तान चौराई सहारा का हरेहा बन गया।

अफ्रीका में जनसंख्या बुद्ध दर बुनिया में सबसे ज्यादा है। २० वर्ष पहले अफ्रीका अनाज में आत्मनिर्भर था और अनाज उत्पादन की दर जनसंख्या बुद्ध की दर के बराबर थी। और अब वह २३% से कटकर १-३ प्रतिशत रह गई है। विदेशी मल्टी नेशनल और अफ्रीकी कम्पनियों ने तो जंगल काटने की होड़ शुरू कर दी है। जिससे

जलवायु में बहुत परिवर्तन हो गया है सहारा का फलाव तेज हो गया है। लेकिन सब से बड़ा कारण सामाजिक आर्थिक राजनितिक है। कई देशों में बिदेसी गुलामी से विगसन में मिला औपनिवेशिक ढांचा अब भी बरकरार है। यह प्राज भी एक वस्तु के उत्पादन पर धारारित है। वे कोकी वाफी केले प्रादि वैचक अनाज सपेदेते हैं। मल्टीनेशनल संस्थाओं ने बड़ पैमाने पर पूँजी लगा रखी है। १५० अनाज वालर का कर्ज अब तक उन पर लद चुका है।

रूस दुनिया का सबसे बड़ा शिकार इथियोपिया है। इस देश की लगभग ७० लाख जनता इसमें प्राभावित है। पिछड़ापन भी यहा इतना है कि गावों से जंगलों में मरक तक पहुंचने में दो या तीन दिन तक लग जाते हैं। सारे देश में लगभग ५ हजार टुक हैं जो राहण कार्यों में जुटे हैं। इस समय पश्चिमी देशों की जनता में आर्थिक मदद देने की रुक है इसका अर्थ बी०बी०बी० की जाना है। क्योंकि इस अकाल पर उसने अपनी १० मिनट की एक फिल्म प्रसारित की और अकाल के छाया चित्र से जब लोगों का धामना सामना कराया तो सबसुब लोगों की आँख खुल गयी। देखते ही देखते लाखों पीछे जमा हो गए। फिल्म में दिखाया गया था। मृत बच्चों के डर मचिबो दोर कीशो से भरे सब इन स्थलों में लोगों के दिलों को दहना दिया।

मार्च में अफ्रीका में वर्षा हुई थी जो बहुत थोड़ी था। लेकिन वह भी अफ्रीका मध्य दक्षिणी अफ्रीका में। बुलार्ई अगस्त वर्षा की कोई प्राशा नहीं। अकाल अगले के लोगों को नये सत्रों में बसाया जा रहा है। १ लाख लोग बसाये जा चुके हैं ५ लाख लोग और बसाये जायेंगे। अगली भी इथियोपिया में लाखों न्न अनाज और ओजन की आवश्यकता है। अफ्रीका के एक नेता गेनीहाल में अकाल ग्रस्त सब से लौट कर कहा था कि बड़ सन की बात है कि एक नरक अकाल और भूख से लोग मर रहे हैं जबकि हमारे अशरशुद्धों में अनाज के पहाड़ जमा हैं।

अब मनुष्यता के नाते प्रत्येक मनुष्य का कर्तव्य है प्रत्येक देश भूख बढ़वाही का फज है अकालपीडितों को सहयोग के लिए तन मन बल, वस्त्र, धन, दवाई प्रादि से सहयोग कर।

—यापाल सुबसु

## सामयिक प्रश्न

## आरक्षण नीति पर पुनर्विचार जरूरी है

—प्रो० जलराज मध

मुम्बर न घोर मध्यरात्रि मे विधान मध कुन रो के समय प्राज्ञापन की पर वम अनुचित जानियो घोर जन जानियो क धर्मिरिख दि हु सदास की घम बहुत जो राजाजिरी का सान का नीति क विरोध मे मु हुवा घा येनन मुम्बर मान मे बिकरान मय धारण कर चुका है। इहा इहे दिनक घोर साम्प्रदायिक रूप भे दे दिया गया है घोर उसके कारण सेकरो लोग हुताहुन हुए है तथा कराडो का सम्पत्ति मान् हो चुकी है पर इक कारण स देता का ध्यान इस समस्या का घोर विचार गया है घोर धारण नीति पर न वरजित विवाद मुम्बर हा गया है। घा घा य रा नीति पर मत ५ वनो के धनुषय का धार व पर पुनर्विचार की धनुषय का सदा सदा महसूस का जाने सगी है।

भारत के सविधान मे हि हु समाज के कुछ प्रति निष्ठ वन के लोगो के लिए कि हे यात्री को मे हरिजन मान दिया बा वस वन के लिए विधान सभाओ समग्र घोर नोकरी स्थापि मे धारण की समस्या की गई थी। इसका उत्तर मे वन वनो को धार्मिक घोर साम्प्रदायिक दृष्टि मे उपर उठने के लिए विधान सुविचार देना बा। स्मरण करार के पहले विचार मेनी घोर सविधान सभा की प्र का (डाफिन) कमेटी के धारण मे नित डा० भीमराव अम्बेडकर का भी इस नीति के बनाने मे हाय बा। डा० अम्बेडकर स्वयं हरिजन घोर मुम्बर गोत्री मे। उनके हृदय मे हरि जनो के लिए विचार ठापर घोर अवेकन बा। मे धार्मिक हरिजन बनुओ के साम्प्रदायिक धार्मिक घोर नीतिगत उत्थान मे कार्यरत रहे। नलिए इस सम्बन्ध मे व का निम्नन विचार महसूस रस्ता है।

मुने डा० अम्बेडकर को बहुत निष्ठ मे बाते का बोधना विना बा। हमारो धारण मे अनिष्ट नैतिक विमता थी। उहोंने मुम्बर उठ कहा बा कि जस मे मे हरिजन वन्म वस तक धारण की डेनामी पर निम्नन रहेते तब तक मे अपने पाव पर नह नही हो सकन इस लिए मे धारण को हरिजन उत्थान का धारण उठाव नही मानत मे। इसीलिए — होंने अपने द्वारा स्थापित रिजर्वेशन वर्दी काफ इच्छिया के घोषणा पत्र म धारणन मय करन की बात उठे क मे निती की।

सन वर्षों क अनुभव मे डा० अम्बेड कर के मत को वन दिख दिया है। धार धार के वारण हरिजन वन के कुछ परि

वारो को धनय सान हुवा है। व धार्मिक घोर साम्प्रदायिक दृष्टि मे ऊव उठ मय है। धर धारण का मान मुम्बर उठकी को सनानो को मिल रहा है वगोकि विज्ञा टीमा के मानन मे घम हरिजनो के से धारो निकल चुके हैं। स्वाभाविक रूप म उनका धारण नीति के बने रहने मे निश्चिन् स्वान उत्पन हो गया है।

कुछ राजनैतिक वगो विचार रूप मे सनाप कायेत मय का भी धारणन नीति मे निश्चिन् स्वाध पैदा हो चुका है। वनके नाप मय हैं कि धारणन के वन पर के हरिजन मतवतारो को अपना उद्युगित बोट बैंक बना पए है घोर रखना उनके मनाने मे बने रहने के लिए धारणन है। इस प्रकार हरिजनो मे मे धारणन न नि म साधारणित हुए मुम्बर मोनो मीर सन रूप कायत वन के निष्ठि स्वाधो का मत हो गया है। इसके कारण धारणन की संवधि १९११ १९७१ घोर १८८१ मे दस दस वन के लिए बड़ाई जाता रही।

धारणन नीति द्वारा बोट बैंक बनने के अनुभव मे कुछ राजनैतिक नेताओ के मन मे इस प्रकार के बोट बैंक के बनने का विचार पैदा हुआ। उधोंने हिन्दुत्ववाज की कुछ धम उपजातियो की नी पिछे पन के मान पर धारणन की परिधि मे बाते को मान ली। कई प्रयोतो मे सो उनकी जनसभा का धर्मिडा मान निष्ठेपन के नाम पर धारणन की परिधि मे बा गया है। वनवरकष घोषणा के धाधार पर नोकरी घोर विधान सभाओ मे प्रवेश के अवसर मनातार नीतिगत हो रहे हैं। इसके कारण उका कथित उम्मेदवो के लोग अपने बा को बन्धित करी उपेयित महसूस करते सगे हैं।

धारन की परिधि के मनातार विमता बा सन व धार्मिक प्रभाव तथा कथित उठकी जातियो के मुम्बो पर वन रहा है। मे इसे अपने प्रति अवेकन घोर अपनी योग्यता पर धारणन मानने सगे हैं। धनुषय सहीलिए मुम्बराता का वर मान धारणन विरोधी धार्मिक विज्ञा विमो वनी उनके धर्मिदावो में कुछ किता बा।

मुम्बरात के बाहर भी इस धार्मिक

की प्रति नगी है। एक भारनाय गोत्री मोघ मय इस विचार — एक राटनी मय व धार्मिक कोट क धाने नि

धारणन के वो मुख्य पहलू हैं। जहा तक हरिजनो धरबा अनुचित जातियो के लिए धारणन का प्रश्न है उसके उत्तर ममान करने क प्र न नही उठता। उन पर उ न व धारणन की ममान १० वनो की धरबि ममान कोटी रजोना मय न मान कि १० वनो के लिए धारणन केवल नीक रियो के वनेत मे हो घोर परो नति के मानने मे केवल धारणन घोर कोयता का ही ध्यान रखा जाना चाहिए घोर पोस्टर प्रभावी सत्य होनी चाहिए दशापी नही जा सकनी। इसका विरोध करनी की कजि है दस मान पर उठन विचार होना चाहिए।

अनुभव के यह भी स्पष्ट हो चुका है कि हरिजनो में धी धारणन का धर्म केवल कुछ उपजातियो घोर उनमे की कुछ परिवारो की विज्ञा है। धर्मिदाव विमंन घोर पिछे हरिजन वन्मो की इसके सान व धर्मिदाव रहे हैं एगोकि इसका सान मुम्बर उन मुने हुए परिवारो की सनानों की ही मिल रहा है। इसपर हरिजनो में भी बहुजन के दिन मे हरिजनो वनकी धारणन नीति पर पुनर्विचार करने की धारणनकता महसूस हा रहा है। पिछे हरिजनो के दिन में धारणन क दस पर बाते वर मुम्बर परिवारो की सनो परिधि मे निमानने की कुछ वरकष करनी होनी। जन के सान धारणन के लिए धार्मिक धाधार भी जोकना इसका एक जवाब है।

जहा तक हरिजनो के धर्मिरिख तथाकथित धर्म पिछकी जातियो को धारणन की परिधि मे प्राने का प्रश्न है उसके विषय मे धनी ठक कोई धान सह नति नही है। वन के धाधार पर चुकी पूरी जाति या उपजाति को पिछका नीतिगत करन न होन सगन है घोर न सवैधानिक। इस मान का धाधार केवल बोट की राजनीति है। अपने स्वाध विमंन होना घोर पिछेपन की कथन रखने मे निष्ठि दशापी पैदा होने। इस लिए इस मानने में उलूख पुनर्विचार

होना चाहिए। भारत सरकार ने भी यह स्वीकार किया है कि इस विषय पर धर्मो वक कोई धाम सहमति नहा है घोर उनमे प्रवेश सरकारो की समझ भा हो कि वे मनमाने उग ने पिछी जातियो को परिधि की न बढाये।

धारणन नीति एक क बाधा नीति है। सविधान ने इसे केवल दस वन क निम स्वीकार किया बा। वने मनातार धारि बढाते जाने का को धर्मिदाव नही है।

समय का घना है कि धारणन नीति के सभा पहलुओ की न मुम्बर समीमा की जाय। समाज क पिउड लोगो को उठने का धर्मिदाव समाज का भी है घोर सरकार का भी। इस निम्ना मे सोच ममान कर पय उठाये जाने चाहिए। पर उ कोई पूरी जाति सारी की सारी पिछकी नही मानी सकनी। वास्तविकता तो यह है कि हर परिवार मे जो कुछ धार्मि धाने वन घोर घोर कुछ पिछे बाते हैं। को किसी की कारण से पिछे नए को उन्ने उठाना वन परिवार का नीतिक कर्तव्य माना जाता है। नही बात जाति बा उपजाति कनी वने परिवारो पर तो बाधा होती है। उनमें को अनुष्ठ घोर बट्टे हुए हैं उन्ने किसी प्रकार के धारणन की वेताशी का धारणनकता नही। जो पिछे हुए हैं वे सन के लिए पिछे न रहे इसका उगाव करने की धारणनकता है। नही कारण है कि नव विचार घोर पकड़ा रहा है कि यदि धारणन नीति जारी रखनी है तो उसका धाधार नरीकी घोर धार्मिक पिछेपन होना चाहिए केवल जस घोर जाति नही।

धर इस प्रश्न को टावा नही बा सकता। बेहतर तो यह होनी कि धारणन स्वयं महसूस परके सरकारिया धा हो की सदा का एक उग गयी धारणन वन पैदाव वगो के अनुभव क धाधार पर धारणन नीति के सभा पहलुओ पर विचार करने क लिए मठिठ घर घोर सनो रजो के धर्मिदाव करे के धाधार—ममान पन स धाधोन के साने रजो घोर उसकी रजो धाने कन कने धार्मिक वन्य कर दें। यह एक धार्मिक मुम्बरा है। जिस पर डडे दिवस मे विचार होना चाहिए।

(मध देवा)



# अपनी स्वर्ण सदृश मातृभूमि के प्रति हमारा कर्तव्य

लेखक म मन् न विद्यालकार

कमने १ १०११ तथा १०  
१०१२ ने पाये हो मनी द्वारा हुये  
वपनी मातृभूमि के प्रति कर्तव्य का बोध  
कराया गया है । मय इस प्रकार है—

१ उदयुध्यध समन सभाय सम  
निमि ५५ अथ सनीछा दधिकायनि  
मुनय म श्रेणी गततोन्मे निह्वये म ॥  
१-१०१

२ मन्ना कुलप्य विष मातृभूमि  
मायभरपरपणी कुलप्य । उदयुध्यध  
मायभार कुलप्य प्रत्यक्ष मय प्रणया  
सभाय ॥ १० १०१२

१ मयनाय हुये कहते हैं कि—  
(इन्द्राय) एवम्य की कायमा करने  
वाले माया की को (अपने) रत्ना के  
लिए मैं (निह्वये) उपवेश करता हूँ कि हे  
(सनीछा) एक ही देश के निवासियों  
(महान सभाय समनस) बहुत धार्मिकी  
वाले समान विचार युक्त तथा परस्पर  
निमि भाव बाँध कर रहे हुए । सब एक  
विचार के युक्त होकर परस्पर सहयोग से  
(उदयुध्यध) होल मे धार्मिक—जागो ।  
(शनि हविभ्य) अपने अपने की रत्ना को  
प्रतीय करो । (विचिकाम्य धर्मि) धार्य  
धर्मि के साथ प्रवर्ति के करने वाले  
(उपवेश देवी च) धीर धीरकी की वृक्ष  
विभ्य धर्मि को प्रतीय करो ।

२ (मन्ना कुलप्य) वृष धीर म ह  
प्रवर्ति करने वाले वृषय वचे  
मातर्य वचह— धार्मिक भाव जागो ।  
(विष मातृभूमि) होय ज्ञान पुण्याय  
साधरता प्रसार धार्मिक का विस्तार करो ।  
(मायभ्य धार्य रत्नी कुलप्य) म  
रत्ना करने वाली माता को क  
करो । (इधह्युध्यध) धर्मि म म  
भायो (Grow more food) (म मु  
वार कुलप्य) धार्य धीर धर्मि को प्रभु  
माया म निर्माय करो (सभाय) पर  
स्वर्णिम माय की धार्य करते हुए  
(शान्य वस प्रमथय) देश की प्रवर्ति का  
यय का सम्यग्य करो ।

इस प्रकार वेद मे इन दो मनी द्वारा  
मातृभूमि के निर्वासियों धर्मधर्मियों तथा  
नेताओं के माया कर्तव्य हैं इन्हें वही  
कुलपता के प्रतिपादित किया है ।

देश की जनता का कर्तव्य

१ परस्पर भेद भय मुझकर एक  
साथ निमि कर कये से कया विस्तार देश  
की वसतय मे की हुई गांधी की निका  
वने का बल करो । धीर इसके विषे  
धार्मिक वेद के नेताओं की माया का पालन  
कर उनकी धर्मि को बढ़ाओ उन्हें सह  
योग प्रदान करो ।

देश को सरकार का कर्तव्य

१ जनता मे उ साह धीर बोध की  
वर्द्धि करो ।  
२ जनता मे विद्या वृद्धि का प्रसार  
एक जोक के साथ देश की कायम रद  
ऐसा प्रयत्न करो  
३ जनता मे ज्ञान का विस्तार एवं  
विज्ञान की उन्नति करो ।  
४ देश की रम्या उन्नयन मातृ  
याय धार्मिक निर्माय करो ।  
५ प्रभु माया म धर्म का उत्सा  
धन करो ।

६ वसन्ताय का प्रभु माया मे  
निमि कर । इस प्रकार जनता की साथ  
मे कर देश का प्रवर्ति रूप यय का सम्या  
धन करो

उदयुध्यध समन सभाय ।  
इस वेद मय का रचना म  
प्रनुवाद

उठी मधुर निद्र त्यागो  
मातृभूमि का ध्यान करो ।  
इसकी उन्नत करने के लिए  
तन मन धन बलिदान करो ॥  
तुम सब निमि कर सब माया मे  
एक साथ उद्योग करो ।  
नीला के जो कलुषार है

उम मे तुम सहयोग करो ॥

मातृभूमि पर सकट धार्य  
उन्हें कीर्ष तुम हूँ करो ।  
तन इमे धनधाय युक्त कर  
वैमय मे भरपूर करो ॥  
मय कीयन सकार करो तम  
जिन जनता मे जोय भरो ।  
आति धमर हो जब भारत की  
जय धर मे जयधो करो ॥  
पाकर तुम के विभ्य अत्रया  
जनता मे उपाह्व नहें ।  
ज्ञान बढ विज्ञान बढ  
धनधाय बढ सम्मान बढ ॥

विश्व की भाषाओं के सब  
हम समुद्र की पार करें ।  
हम जल मय धन नय मे  
वसन्ते माय माया का निर्माय करें ॥  
रिपु का दण्ड दलन करने को  
धर्मन धर्मन तय्यार करें ।  
विश्वी उन्नति पय मे  
धार्मिक वने का नकार करें ॥  
निरव्य मन मे करो सफलता  
वरण हमारे चुनेगी ।  
धिर भारत की धर्मि विमय  
मे निमय र्दुकी मुझेगी ॥  
एष ० ३११ नू रास्त्रि नवर

राष्ट्र के धार धर्मधर्मि अपनी तेज  
विल्ला के लिए प्रवर्द्ध हैं । वे वाह्याह्व  
वाह्याह्व के दरबार मे एक उभे पय पर  
ये । एक दिन वाह्याह्व के सत्ते समाय  
बा मे उनका धनमान कर दिया । मरे  
दरबार मे धर्मधर्मि मे समायत का का  
धिर काट काटा । किसी की धर्मि नही  
हुई कि धर्मधर्मि को रोके या उनके मुँह  
कह सके । युवसमान दरबारी बाल नेकर  
धर्म उभर सागन लये । धर्मधर्मि अपने  
धर बैठे बाया ।

मरे दरबार मे इस तरह वाह्याह्व के  
सत्ते का धिर काट देना युवसमान दरबारी  
की भारी लीहनी थी । हृद होकर वसना  
भेदे के लिए धर्मधर्मि के बोधा धीर  
मील स्वभाव के सत्ते धर्मधर्मि की काय  
वाह मे सोम दिया धर्मधर्मि का धिर  
काटने मे लिए । उनसे धर्मधर्मि की  
धर्मका मुझकर युवसमान दरबार मे धार्मिक  
को राजी कर दिया । जोका केकर बाय  
काह के महल मे ल गया । वहाँ जब  
धर्मधर्मि पहुँचे दोरक के मे होकर  
धीर धर्म मे धनु नौब मे पीछे से  
बार किया धीर धर्मधर्मि का धिर काट  
दिया । वाह्याह्व वाह्याह्व सह समायार

किशोरमञ्च—

## वीर बालक रामसिंह

मे बहुत प्रसन्न हुआ । उनसे धर्मधर्मि की  
भावा को फिरे की मुख पर धर्मका दिया ।  
एक विष्णवात धीर की साथ इस प्रकार  
धीर की को के सत्ते के लिए दाज दिया  
गया । धर्मधर्मि की रानी मे समायार  
कुता तो उनसे धार्मिक की साथ गया  
उसका धर्मिण सकार करने की बात  
उनी पर साग माय भेदे ? महल मे की  
योर बहुत राखयुक्त सैनिक मे उनको उनसे  
धार्मिक की की साथ वने नेत्रा किन्तु बाय  
साह की सेना के धार्मिक मे बोट से धीर  
क्या कर सकते थे । रानी मे बहुत से सर  
दारो मे प्राणमा की परन्तु कोई की साथ  
साह के मनुष्य केने का वाह्य नही कर  
उठवाया । धर्म मे रानी मे उसवार  
मरने की को विष्णवात की खल लाने  
की हीनार हो गयी ।

इसी समय धर्मधर्मि का जोडीया

रामसिंह नही उसवार विषे वनी धारा ।  
उसने कहा बाकी तुम धर्म की करो । मैं  
बाता हूँ या तो बाधा की साथ मे धर्मका  
या मेरी साथ भी वही गिरेगी

रामसिंह धर्मधर्मि के मे धर्म जस  
बल सिंह का पुत्र था । वह धर्मो नवयुवक  
ही था । उसी रानी मे उसे धार्मिक  
दिया । पन्थ मय का वह राखयु धीर  
धीर पर सवार होकर पोषा दोबाडा  
कीये वाह्याह्व के महल मे प च गया ।  
महल का धर्म मय था । धारपाय  
रामसिंह की वृष्णमयी नही पाये कि वह  
भीतर चला गया मणि मुज के नीचे  
पहुँचते पहुँचते सैनिको युवसमान सैनिको  
मे उसे धर दिया । रामसिंह को धर्म  
मरने की को विष्णवात नही थी । उन  
युव मे धीर की सभाय पकड़ रक्सा थी ।  
धीरो हाथो के तय्यार चला रहा था ।

उसका पूरा शरीर रक्त मे लथपथ हो  
रहा था । सैनिको नहीं हथारो युवसमान  
सैनिक थे । उनको माथे गिरी की धीर  
धीर उभर ल को पर मे रामसिंह धार्मिक  
बढता का रहा था वह मुँहो को छाती  
पर होला वज पर चढ गया । धर्मधर्मि  
की माया उठाकर उसने केने पर रक्सा धीर  
एक हाथ से सवार चलाता न के उभर  
धाया । धीर पर साय का रक्तकर बैठ  
गया । वज के नीचे युवको की सेना धार्मिक  
से पहुँचे रामसिंह का पोषा धर्म के काटक  
के बाहर पहुँच चुका था ।

रानी धर्म मे प्रतीय के का रास्ता देख  
रही थी । पति की माया पानर उसका  
धर्मिण सकार कराया धीर स्वय भी  
पति की साथ के साथ विष्णवा पर बैठ गया ।  
रामसिंह को धार्मिक दिया—देग्यो गो  
धार्मिक धर्म धीर रत्नी को रक्षा करना  
तेरा नाम सभा मे धर्म रक्षेगा । ऐसे नर  
एव नारी अष्टो से उभे प्रयाय विमती है ।  
देख जाति धर्म के धर्मिणिक की रक्षा  
का तो हम भी उभे ही वनेमे धर्मिक धार्मिक  
की धार्मिकयता है धीर के दोर को देखिगी  
की विषे हम पूरी करने का सफल लये ।

प्रस्तोता—प० वल्लभ शर्मा



व्यामरीठ —

उपनिषत् कथा माला—६

## गायत्री मन्त्र की महिमा

प्रवचनकर्ता—वीरातर स्वामी सर्वदानन्त महाराज

एक बार मैं गागपुर गया, उन समय बाइबादा नेत्रक था प्रायःन था। पवननेट धारमिया को एकद-नकडकर लाया थी। उभर क येमी रोकते थे वीर कहते थे कि उभर जाओ। मेरे माय मन्थामिहू मन्त्र-मीक नीला। इहे उभरन म धाते बेबकर कावेनी कहते नते, 'उभर कहा गये थे ? मनेके का ? पनिह हुए हन माधुषी हो। ते हो हमारो जाति का बेडा क कर रहा है।' धीर की बहुत तुम कहते रहे। मन्थामिहू ने बहुतैरा कहा कि 'हम की प्रस-प्रमन करके था रहे है।' पन्तु के मत मानते थे। कुछ समयमें ही न थे।

मैं जूना ओ जाना हू धार्मिकमाल हो मे उहलाता हू। पदमेग में मेरा धर धावे-समाज हो है। धुंठाईन धर्ष पदमेग का मयन है, मैं एक मतर मे गया। ममाज मे ओ धामकी बड़े हवन कर रहे थे। मैं बाहर सन पर बैठ गया, कनकन धीर होये मेरे हाथ मे थी। मैंने मुझ, यह क्या हो रहा है ? एक मुकन मे कहा, 'तु मुझ केा हुआ की है ?' हुबरे मे कहा, 'पडा हुआ होला तो मुझा हो यश ? ऐसे हो साधुओं मे तो जाति का मयन कर रिला है। जा। यहा रोटी बोटी कुड नही मिलेगी।' कुछ हेर पीछे एक नम पुन्य का गया। उसने कहा, 'महात्मा जी। रोटी कापोमे मे मैंने कहा, 'हू काज्या।' यह रोटी मे धान, दाल की मयन थी। मैं वही बैठकर खाने लगा। फिर मे मुकन बोने, 'बस ? धम की प्रमन हो ? तुम तो इसीलिए धावे थे। वेदु हो।' वेदु हो।' इसने हो मे स्वामी वधानमन की धा पृथु है। मेरी प्रमलाता मे मिले। तब तो मयन की धाके भूनी। कहने लगे, 'स्वामी जी। हम से बड़ी मुन हुई। क्या मुनायो।' मैंने कहा, 'हाथ मुन मे पदुन, पदुन होला तो धाने-धाने बान का मयन से बाहर साकार कर दिया करो।

धामो। बंदो। पीयो पीयो। तोनों बांते मोल न सामो। तमने मे खारासी बाहो कर मेती यह बटल बुटी बान है। यही वीर है ओ हमार तनुयो को बीना कर रहा है, इसलिए मेरे बाई। बो बांते खारासी की हैं उन्हें खोड दो।

ममथ का धर्ष है कि परमात्मा के नाम का निरमन करना रहे। यदि नही बदला तो उप दित का मपराम उसके फिर चड जाता है। यदि एक दिन रोटी

न सामो तो दुर्बलता धा जाती है। ऐसे ही प्रभु का नाम न लेने से मनुष्य का धार्मिक बल लीज चड जाता है। धार्मिक धर्मित दुर्बल हो जाती है। धतएव मनुष्य माय का बल है कि उपानता करे। यदि उपानता कर की तो एक परम कतय कर मिया, नही की तो धरने तिर पाय चडा मिया।

मटाने में एक मुसमनन लड का था। यह एक-ए० का पिछाची था। एक हीन मे नहा रहा था। मैं भी वहा पृथुष गया। महाकर उसने कपडे पहन सिले धीर फिर बैठकर पाथ बोले मया। मैं बान तो मया कि यह पाथ को रहा है, मया पडेगा। पन्तु मैंने पूछा, 'मिया। तुम मया हो तुजे को, फिर हाथ पाथ क्यों बोले हो ?' उसने कहा, 'स्वामी बाहल। यह तो बयू है। मयाता तो बाटरी की सपाई के लिए है, धीर यह मयन के लिए।' मैंने कहा, 'अब तुम मयाज पडे हो, तो तुम्हारा मन तो इबर-उबर नही जाता ?' उसने कहा, 'यह लिए मया, मैं मया कर् ? यदि हम ममाज न पडे तो धाज के मुनहारा का मयन हो जाये। धिर्न इस मुनह के बकने के लिए ममाज पडे है।' इसी प्रकार मेरे माइयो। तुम्हारा जो कर्न है कि ईश्वर का मयन करे। पन्तु तुम हो कि किसी प्रकार मानने में नही धाते।

धुधित के धाते से लेकर धाज तक धायी ने, धायी ने के जानेवाले धायो ने वेदों के जानेवाले सोने को मे, ईश्वर की उपानता बिल्क कर में की ? यधियो मे नही निज करती प्रकाश मायमी मन्त्र के उच्चारण से—

ओ३म् भू, ओ३म् भुव, ओ३म् इह। ओ तत् सवितुर्वरेण्यम् भर्गो देवस्य धिम्हि। धियो यो न प्रचोदयात्॥ ओ३म्। गायत्री मन्त्र का धर्ष मैं पहने कह चुका हूँ। इसका मायर्ष यह है कि यह वर्यवत्त रितका निज नाम 'ओ३म्' है, ओ प्राणी का भी प्राण है, यत्र तुओं से उद्भूति बनाया है, स्वय मुकनकप होने के कारण धरने उपलब्ध की भी सब मुओं की प्राप्ति करता है, उस सब मयत् की उपति करने वाले तथा धुर्ष धाति प्रकाश धायी के भी प्रकाशक, सब प्रकाश के ऐवर्ष के माता, बाहने मयन विजय कराने वाले, सब से उत्तम, ध्यान करने योग्य सब मुओं को दूर करने वाले,

परम पवित्र तेज स्वकप परमात्मा का हो हुन लीज धरने मय में ध्यान करे। यह परमात्मा हमारी बुधियों को उसम मुण धीर स्वमय की धीर प्रेरणा करे धीर हमें दुरे धायी से बचाए।

सकून माया लीजने पर कोई धार्मिक सपा सब नही करना होला। यह हो बडी सरल तथा मधुर मया है। जो इस मय का प्रेम के माय मायन करता है, यह मायमी मन्त्र उन्ने धरने करण की लुड कर देता है धीर इस धाति के द्वारा यह मय-मयन से पर हो जाता है। यह मायमी मन्त्र तो ईश्वर प्राप्ति के लिए एक तीर के समान है। इसीलिए धाति है कि मनुष्य मयाज में एकाग्र प्रकट हो। ईश्वर के भूज में कोई एक मयन धीर की प्रसन्न मयन न बताये। हर एक इस मायमी मन्त्र से ही ईश्वर का भूजन करे धीर सब में एकाग्र बनी रहे। मायमी मन्त्र को धामन के माय उच्चारण करो। एक ही मयन का मय करने में मयाता से मयाता २१ मिनट मय जाते हैं। न इसमें कुछ मयाज मे न मयाजट।

कण्ठा का नम विचार होता है। यह मयन के माय विरा होता है। मयनो मयन धायी है। सब के धायु का जाते हैं। इसी प्रकार ईश्वर के प्रेम में मान हो जायी। तथा धायनी में यह मयन कडो कि 'हम तेरे धियोने में जो कन-मयल के मयनो में पडे हैं। इसलिये तुम्हारे तेरा ही स्वकप बाहते हैं।' यह सयककर कि यह मयन धीर किसी काय के लिए साकार नही सपा परमात्मा से उती की धायीना किया करो।

यह मयन कोटा मा है, यह सयककर इसे तुम्ह न सयमी। इसका महत्त्व बहुत बडा है। धायीन दसके परमात्मा से लुड बुधि की प्राप्ति की गई है। हीरा कोटा धा ही होता है। पन्तु मयन में बहुत होता है। इसलिये इस बोले से मयन का ही सार प्रविधित उच्चारण करो। यह तुम्हारे बीजम को पवित्रता की ओर ले जायेगा।

देको 'ओ३म्' खर लीन धलयो से मयकन बनता है। 'म-उ-उ-म्' एक मकार, दूसरा उभार धीर लीज्या सकार। धकार से विराट, धानि धीर विजय, परमात्मा से लीन धायी की धारामना होता है। कितने सब मयन प्रवेक कर रहा है।

धीर जो सब में प्रविष्ट है, उकार से हियणमन प्रिवके मय में प्रकाश करने वाले पूर्व धाति, सब लोक है। जो पूर्व धाति प्रकाश करने वाले सब लोकों का उत्पन्न करने वाला है। जो धनन्त बल वाला है धीर सब मयत् का कर्ता है।

राम-कृष्ण धाति नाम परमात्मा के लिए कहीं ओ वेदों में नही धाते। वेदों में विरममर्ष, धानि धाति सब योगिक नाम धाते हैं। धाधित्य नाम पूर्व का भी है। परमात्मा का नाम यह क्यो हुया ? कारण, उसी ले तो समस्त मय में प्रकाश लीज्या है। इसीलिए परमात्मा का नाम मय की है क्योंकि परमात्मा समय मयत् में उज्जाना लीजता है। इस प्रकार एक ओ३म् नाम का उच्चारण करने से परमात्मा के २ नाम मयन का मय है। एक मय मायमी का उच्चारण करने से उसमें ३ मय ओ३म् धा जाता है, मयो ४५ मय परमात्मा का नाम मिया मया। यदि इस प्रकार ४५ मिनट कर मे प्रेम में मायमी मयन का मय करे, तो भी मय मयन सयन धार्मिक मय इस मयन का उच्चारण कर सकोगे। ४५ मिनट के धान-नन लुन लीजने से धीर सब मायन तकते हो।

केवल 'ओ३म्' 'ओ३म्' मयना की हो मयाता पन्तु मयाता लीजो का मयन है कि मायमी के माय ही 'ओ३म्' का उच्चारण करना धार्मिक। यह उसने बहुत कहा है। 'ओ३म्' कहते हैं इसके धायो हो जाते हैं कि यह 'ओ३म्' धायी की भी मया है। 'ओ३म् मुन' के धायो हैं कि यह 'ओ३म्' सब मुओं के मयने माता है। 'ओ३म् म' के सब हैं कि यह 'ओ३म्' स्वय मुकनकप है धीर सबको मुन की प्राप्ति करने वाला है। 'म' धायीत बड ओ३म् 'सवित्रम्' धायीत मय मयत् की उपति करने वाला धीर सयति प्रकाशकों में यह प्रकाशक है। यही सब का ऐवर्षदाता है, वर्यवत्त धायीत, ली सयने कर्मिया तथा मयन करने योग है। 'मो' वही सब मुओं के दूर करने वाला तथा पर पवित्र है। 'वेवर्ष' वही मायना म करने योग है। 'ओ३म्' उती मय मया का सब ध्यान करने है। 'मो न' वही हमारो 'धियो' बुधियो को उरम मुल, सब मया स्वमय की धो। 'प्रचोदयात्' प्रेरणा करे।

सारांश यह है यह मायमी मन्त्र हुये यह मयनकप है कि सब से उत्तम धीर सबसे पवित्र प्राप्तिना मया है। धीर मयन मयन के लिए हमें परमात्मा की उपति तथा स्तुति करनी चाहिए। यही परमात्मा म मयनकप तथा मयनकप है। मेरा धीर धाय सब जीवन धायन से विरा मया है। हुये उर मयनकप परमात्मा के ध्यान से ही मयन प्राप्त हो सकता है। इसीलिए हमें उससे बड़े मयन तथा मयनकारी बुधि के लिए मायमी

## गायत्री मंत्र की महिमा

मन्त्र द्वारा प्राप्ति करनी चाहिए

मनुकप्रातः मे एक लडका था।  
उसका नाम था प्राणनाथ। वह बड़ा  
सुन्दर तथा रूपवान् लडका था। प्रायः  
१६ वर्ष प्रायः ४-५ तका ही-०-१० पास  
उसे ब्रह्मचर्य जबर पाने लगा। कीर्ती की  
जबर प्रशंसा पढ जाने लगी। वह राम मे  
ही वह बहुत दबल ही गयो उसे हिमालय  
व्यक्त पर ले गये। मैं भी भ्रमण करता  
हुया वहा जा प-। वन- वही सफा  
।। कपटी तो इस इतनी रकत है पर-  
कुदा धर्मत ईश्वर पूजा का नाम नहीं  
-आर्य यह कि -

प्रध्वंस लुटाई बजाए होयस सफाई ।

अथति प्रथम ईश्वर पूजा का ध्यान  
अनन्य हो फिर सखाई सुखदाई का। उस  
युग के मुझे पहचान लिया परन्तु मैं  
उसे नहीं पहचान सका। उसने मुझे  
नमस्ते कहा। मैंने उसका नाम पूछा  
उसने कही प्राणनाथ मैं बलिष्ठ  
सया। मैंने कहा जाई। तुम तो बं  
प्रसन्न रह जाऊने दे। प्रश्न बताया प्र  
हास है? कहने लगा सदा से सख दु  
ही पुत्र है। यहुने तो मैं साहस हार बैठा  
का। परन्तु महा बन्ना बाबा तो कुछ विन  
के उपरास्य दयाका ही गया।

एक फारसी कवि का कथन है कि  
 "यूनां नर शिवा ब्रह्म करने वाली प्रशिखं  
 शोल और राधाजी महापरायणी की बधा  
 है। तू तो किस गिनती में है। इस चुनने  
 होने हुआ फल में फलकरी को बधा  
 नहीं हुआ" कैसर (रोम के सम्राट) के  
 बहनों में तो यकजियों ने जाये ताम ताम  
 कर परदे डाल दिये हैं और ईरान के राजा  
 अफरासियाब के मुखब वर उन्को नककारे  
 बन्धे रहे हैं।

कितों का समय सर्वत्र एक था नहीं होता। शिवा अधिमान करता है कि मेरा प्राणपुत्र ऐसा होगा वैसा होगा। वह महती कामना की कि परमात्मा से होकर ही तोड़ कर रहा हूँ। उसने बड़े बड़ों की हठ तोड़ दी अधिमान बुर-बुर कर दिया। कैसर रोम का एक बहुत बड़ा इज्जत था। अपने समय में उसके महलों में बड़ी पूज्य भाव रहा करती थी किन्तु प्रभु उसमें कोस रहे हैं। प्रत्येक को पुत्रवत् महान के थे अधिमान से रहित होना

एक और फारसी कवि कहता है कि मुझे अपने शत्रु की मृत्यु से प्रसन्न होने का कोई कारण दिखाई नहीं देता क्योंकि मेरा अपना जीवन भी तो क्षायी नहीं।

सुनो ! वो बनी पुरुष थे । इनकी पर  
स्मर बड़ी सगती थी । सर्वत्र लड़ते भगड़ते  
फूटते थे । खाने पीने वाले थार दीस्त

उनके पास धाते । एक दूसरे की बड़ी लीन हो करती । वनी लोको के पीछे ऐसे  
 कभी बहुत लम्बा धाते हैं । वो उन्हें  
 लडा लडा कर ही अपना उल्लू सीधा करते हैं ।  
 है । एक दिन उन्हें है एक कभी नर गया ।  
 धार लोय न प्रले न हुए । कुछ गुन गुन दूसरे  
 के पास पल पल कहे गये  
 किलाइए । धाव बाबा मुदर समानार  
 गुनाये । उनके कहा गुन गुन बात  
 तो करी । फिर का की नेना । है बोले  
 बाबाका समुक्त नृ नर गया है । वह  
 कभी निरा बुद्ध ही था । लवार नवा  
 की नातावा वा रुद्ध है कहे गये  
 धरे मुर्खी । दुसे धनवा की नात  
 क्या है । दुसे करते हो कि मुमुरावा समु  
 नर गया परलु गुन कभी नहीं करते ।

इसलिए हे भाइयो ! तुम यह मनुष्य  
जीवन पाकर कुछ शुभ काम कर जाओ।  
सबसे मुख्य काम प्रभु की उपासना करना  
है। परमेश्वर मंगलस्वरूप है। त्रिसुखे  
श्रममग्न वा लेभा भी नहीं। उसी का ध्यान  
करो तभी सब सफल प्राप्त हो जायेंगे।

एक था साधु। उसके कपड़े में पूजा महाराज। कुछ बड़े की हवाही। उसने कहा, और बाबाये। भाग्यो मे और था बड़े। ब' प्रथम होकर जाने गये। पूछ तो फिर बड़े परचुनो गीत नही था। उसने पूछा, और बाबाये? उसर दिखा मे बाबाये। सुदरी का लीसी बाबा द्वाला तनो नो नही की। फिर बाबाये बाबा द्वाला नमस्कीन ले थायो। नम कीसी बाबा मे लूक बाबा। फिर बाबायो हो गया। बाबा द्वाला। कले बाबा। यह कीसी बाबाये? मे बाबाये बाबाये। फिर बाबाये। दुनिया मे लूक बाबाये ऐसी हो बाबाये बाबाये। बाबाये बाबाये तो परचालो हो हो दुनिया मे ऊमनो हो तो रियाजो परचालो मे एकास परा कले। यह एक बाबायो तो मानोतो तो बेरा परा हो बाबाये।

मन्दिरों में बैठे हैं। एक दूसरे से लोग  
कहते हैं— मेरे मन्दिर का परवेश्वर ब्रह्मा  
है। मेरे मन्दिर का ईश्वर शम्भु नहीं।  
मुझों परवेश्वर तो एक है। बस तो एक  
है। यमकों में नहीं बैठते हैं। सुन्दे का  
नाम बस ही नाक से मनेते हैं। शाना मुस  
से साते हैं। इन सबका सामन तो एक  
है फिर बस प्रथम प्रथम कैसे? सब का बस  
ही एक ही है। जिससे मेघ बा गया  
एक ही प्रथम यम नहीं रहा। जोसे  
बहुना की शायिसे यमुना की शायि  
कहेगे। 'यमा की ब्राह्म नगा की की बय  
कहेगे। कोई कहता है 'मयवा ब्रह्मी है  
कोई कहता है गोमती। बस बरार्ही ही  
तराई है। कोई कहना मयका का वर  
ब्रह्मा है। कोई कहना, वृक का वर

अच्छा है। कोई कहेगा शनिवार का व्रत  
अच्छा है वा एकादशी अच्छी है।

ऊट की गवन टेडी होती है। किसी ने ऊट से पूछा भाई! तुम्हारी गरदन टेडी क्या है? ऊट ने उत्तर दिया तो कौन सा प्रश्न मेरा साधा है? टाँगें सीधी हैं जबवा पीठ सभी कुछ तो टेडा है। इसी प्रकार तुम्हारा भी सभी कुछ टेडा ही है। इस यमी ज्ञेयन का उत्तर फेंको। तुम तो मनुष्य हो ऊट तो नहीं हो।

कैला ला। उसका खिलका उतार दो घट्टर से गुदा निकल धायेबा। पोस्त ली। ऊपर का खिलका उभार दो। पोस्त के दाने निकल धाये। परत व्याज (गड) में से क्या निकलता है? उसमें तो खिलके ही खिलके हैं। तम धाने जेन्गम क खिलके दूर कर जे धीर मनूष्य बन जाये।

हाकर धम्बदकर ने जो प्रश्नों के एक प्रसिद्ध मेला है विनायक ने कहा था महाराज बचपन भी उस समय वही थे कि जब तक यह बड़ा व्यवस्था नहीं हुई है तब तक इस कपूर नहीं उठ सकन। पर तभी कहता है बय-व्यवस्था है कहा? धाप ने तो जातियों का भेद इतना है जिसकी कोई गिनती ही नहीं। कोई खाना है कोई मल्लोभा है कोई चट्टा है तो कोई भुरी डव्यादि। बस इन्हें मिटाओ कम से कम व्यवस्था स्थापित करो। सब कुछ दूर हो जाये।

[illegible]

यूरोप में ही बेल लो यदि किसी से कभी तुम पछो कि तुम कौन हो ? तो उत्तर मिलेगा सौदागर बलक या कोई और। परन्तु तुम्हारी वह शृंखला तो समाप्त हो नहीं होती। यह तो उसी दिन खत्म होती जब तुम्हारा क्रम हो जायेगा। परन्तु परमात्मा पर विश्वास रखो तो एकदा पैदा हो जायेगी।

भावकस के पद लिखे कहते हैं कि  
'सम को सौंद ईश्वर को सोह हो ।'

मैंने कहा सा ध-ध्रा छाड़ देते हैं अब  
कौन सा माग पकड़ें? क्या धम को छोड़  
कर धर्म का माग पकड़ें? उसने कहा  
नहीं। तो मैंने कहा धम को भी छोड़  
= धधध को भी छोड़ = तो क्या कर?  
मेरे भाई कोई धधध की बात तो करो।

तत् सवित्रं विम परमार्थमा का  
नुम स्मरणं करते हो वह सारे ससार का  
उपादक है। यह बना हुआ ससार अपने  
बनाने वाले की तस्वीर दिखाता है। एक  
सर्व कवि का कथन है—

बेहरा तस्वीर से  
शबले नुस्तबिर देखना ।

परमात्मा ने कैसा ससार बनाया ?  
जगत का बिना तो देखो कितना अद्भुत  
है ? अतएव अद्भुत ससार को बनाने  
वाला स्वामी भी अद्भुत ही है ।

बरेयम परमात्मा का अवेष्टा है  
 कि तब तो बहुत भारी पर तु उठको  
 घना करने को बुद्धि होने पर उठको  
 तब से उठकी रना करो गुन काय  
 नै मगने को बुद्धि होना चाहिए  
 मगने मग कुछ यदि होना पड़ना  
 विस्मय के ताप मने मने महिनी  
 दीनत भी उठो नै मगने को घना  
 मुग मानने है अने से महन कुछ  
 सीसा है उठो मग मने ना हो  
 उठने घना भी मेरे मने के बाद  
 काल है। विस्मय दीनत यही मोह  
 तपादि है सब मेरी घरी के साथ  
 एक बार न दीनत यह भी दूसरी  
 घना है उठको यही काल से  
 बाहर रहे। उठका साया वा कि सब  
 सिता प्रलय कर कि सब काल यही  
 जाता है मने साथ सब भी साथ  
 नही

एक उद् कवि ने कहा है कि

बेरी का गिला न कर माफिल ।  
 रक्त तसल्ली कि बू मुकद्दर था ॥  
 इतने मीडियन जहा मे गुबारे  
 कबले रहलत किसी कने जग था ।  
 मे मया लम्ब कुछ न तिकम्बर  
 हाथ साली कपन मे बाहर था ॥

धर्मात् ह मूल । धनं निधनं होने की शक्ति धन कर यह सोचकर धार्मिक ने किने नये भाग्य ये यही बड़ा था । केवल सत्कार म दिखने बनपति हा चुके हैं । उनमें से किसी के पास भी उसके सम्य समग्र कुछ धन सम्पत्ति देखी है । शिकंदर वैशा धन प्राप्ताली महा राजा भी अपने साथ कुछ नहीं ले गया । जब वह मरा तो उसके हाथ केन से बाहर निकने ये प्रीर लाती है ।

सुंदर मकान बनाओ धन सम्पत्ति  
जमा करो किन्तु यदि तुम उन्हें धपने  
साब भी ले जाओ तो नहीं ले जा सकते ।  
(खेप पृष्ठ ६ पर)







## जिसे बचावे, वरुण, मित्र और अय्याम उमे मारे कौन ?

(चूट २ का चेष)

राम बि...पल्लु से मिल। धर्मिबावन के पश्चात् हाथ पकड़कर कहा—आधी लक्ष्मी ! बेगो ! जब सावित्री ने कहा कि वे लक्ष्मी नहीं उमरे बाई है तो राम ने उत्तर दिया—मैंने सोच समझकर ही लक्ष्मी सम्पत्ति का प्रयोग किया है। धर्म बाबिल और धर्मिबावन अन्वित को राज्य करने का कोई अधिकार नहीं होता, धर्म बाबल है हमारी सीट में नका के सिद्धासन का अधिकारी राज्य नहीं, बल्कि

विनय है।

राम का यह कथन राजा होन-य का प्रकाश नहीं था प्रसिद्ध नृति का एक कुल प्रयोग था राम विनयपुत्र पर धर्मने कथन की प्रतिक्रिया देना चाहते थे और इसी पर 'सकी वास्तविक मान्यता' जानी जा सकती थी। विनयपुत्र के ऊपर उस नीति प्रयोग का प्रभाव हुआ और कहन गया कि मैं अपने भाई राज्य के दुराचरणों से तप ध्या गया हूँ। उसे किसी

भये काम का परामर्श शिवकर नहीं होता। धर्म इस प्रस्ताव पर सत्रा का बचाने के लिए और राज्य का विनाश के लिए मैं अपने सहयोग में पूरी शक्ति और योग्यता व्यय कर रहा हूँ।

राम इस प्रतिक्रिया से बहुत सन्तुष्ट हुए और दोनों ओर से ही बचनों का पालन बड़ी ईमानदारी से किया गया।

युद्ध में लक्ष्य के मूखित होने पर राम ने दुखी होकर जो उदगार व्यक्त किए उनसे विनय का राजसिंह भी सम्मिलित था।

राज्य के मरने पर विनयपुत्र जब दुखी हुआ तब भी राम ने बड़ी सहानुभूति व्यक्त करते हुए कहा—

मरणागन्तम नै रि  
निवृत्त न प्रयोजनम्।  
क्रियामस्य स्वकारो  
मयाप्येव यथा त्वम् ॥

रामा ६११२१२६

ये धर्म विनयपुत्र। मृत्यु के साथ वर का भत हो जाता है। हमारा उद्देश्य भी पूरा हो गया। आधी धर्म भिनकर मरणागन्तम स्वकारो करे। यह जैसा तुम्हारा भाई है वैसा मेरा भी है।

राज्य धर्म और मेना धर्मित से सम्पन्न होते हुए भी राज्य का पराजय और हीन अवस्था होते हुए पाण्डवों की विजय तथा स्वतन्त्रता का रहस्य भी पाण्डवों की धार्मिकता और सदाचार ही है।

महाप्राज्ञ विदुर रहते थे औरों के साथ। रात दिन धर्मपुत्र उनसे मया-पण्डो करते रहते थे। विनयपुत्र भी दुर्वासन कर्त्त और पाण्डवों का पक्ष धारता था जो सर्वथा सही सरी वना सेते थे और पाण्डवों का 'अ' लेते थे। दुर्वासन के बिषय में इससे अधिक कष्ट तत्त्व क्या हो सकता है कि—

एव दुर्वासनो राजा।

मध्याह्निकलोचन ।

न कश्च कुलस्थान

सावित्रात् करिष्यति ॥

धर्मत्त यह कभी धासो वाला राजा दुर्वासन अपने कुलस्थानों से केवल धर्म परिवार की ही नहीं धर्मियों का भी नाम करेगा। इसी प्रकार भीम भी पाण्डवों के गुणों पर मुग्ध है। कुलोचन के जब धर्मिबावन अपने सब सम्पत्ति छोड़ कर राज्य के प्रथम सेनापति के रूप में युद्ध के लिए उद्यत भीम के पास जाकर तत्पश्चात् होकर बोले—

'हम अपने कर्त्तव्य का पालन करने के लिए उद्यत हो रहे हैं आप हमारे युद्ध पितामह हैं धर्म आपकी धर्मनिरपेक्ष और धार्मिकता के लिए मैं आपकी सेवा के उपस्थित रहा हूँ।'

भीम उस पित्र और विद्वान् धर्म्य हार को देखकर मुग्ध हो गया और युद्ध-कृत होकर कहने लगे—

भीमोर्ध्वं युद्धं युष्मत्स्य  
नवमानुषि वाचसम् ।

महा ६११२१२६

हे धर्मिबावन मैं तुम्हारे इन धर्म्यपुत्र के बहुत प्रशंसक हूँ। मैं तुम्हें धार्मिकता सेता हूँ। ईश्वर तुम्हें विजयी बनावे।

किन्तु धर्मोत्तम बुद्धता की भी सहाई देते हुए बोले—

धर्मस्य युष्मत्स्य दासो  
दासत्त्वमर्थो न कर्त्तव्यम् ।  
इति सत्यं महाप्राज्ञ  
बलौज्ज्वल्येन होरते ॥

महा ६११२१२६

—ह धर्मिबावन। मनुष्य धर्म का दास है धर्म किसी का दास नहीं। इसलिए तुम्हें भीम समझते हुए भी मैं दुर्वासन का पत्र लेकर लड़ रहा हूँ क्योंकि मुझे मेरी सब धर्म्यपुत्रताएँ पूरी करके औरों ने धर्म से बाध लिया है। धर्म इस सरीर पर दुर्वासन का अधिकार है, किन्तु धर्म सत्य और धर्म्य की ओर है इसलिए मैं तुम्हारी विजय की कामना करता हूँ।

इसके बाद धर्मिबावन होलाचन के पास गये। उन्होंने भी हृदय कोलमर विजय का पत्र सौंप दिया। किन्तु दुर्वासन के पास गये। उन्होंने वहीं धार्मिकता दी।

पाण्डवों को विनये धार्मिकता के धर्म व विजयी बने।

इसीलिए मया ने कहा यथा कि जिस धर्मित के उदात्त धर्मित से प्रभावित होकर प्रबुद्धता की धार्मिकता विजय और धर्म्य विजय समाज क प्रमुख कल्याण रक्षक बाध बनकर उसकी धार्मिकता से बचाते हैं, उसे कभी कोई हानि नहीं पहुँचा सकता।

(युधिष्ठिर से साधना)

**दांतों की हर बीमारी का धरुई इलाज**

**एम डी एच**

**दंत मंजन**

**लोम युक्त**

23 जरी बट्टियों में निर्मित आयुर्वेदिक औषधि

एन का हावटर

आज नये-नये उपकरण

महा. गं. वी. हटी (प्रा.) लि.

9-44 बट्टी, नए दुर्वासन, बीमारी नगर, नई दिल्ली 15 जे. 539009 537987 537241

मयूकी की युज्य

मुह की दुर्गन्ध

तला गर्म पानी लगाना

दात का दर्द

**उत्तमता का एक मात्र विश्वास**

**Groversons**

*Pure Beauty*

**पैरिस ब्यूटी**

**ब्रा पैन्टी, बॅनियान अन्डरविश्रु व बेबी पैन्टी आदि**

**पैरिस ब्यूटी सेल्स कार्पोरेशन**

2665 ई/2 बीकम पुट अजमल रस्ता-करोल बाग नई दिल्ली-११०००५ दूर भाष 569224 574200-582036

आर्य जगत् की शान  
२०० विस्तर वाले निर्माणाधीन

## नेत्र चिकित्सालय

(अनुमानित लागत दो करोड़ रुपये)  
के लिए दिल खोलकर दान दीजिए

दान की राशि आयुर्वेद अधिनियम १० ८० के  
अनुगर्त कर चुकित होगा।

सारा दान बैंक/मनीऑर्डर/बक ड्राफ्ट द्वारा

मनी, माता चन्ननदेवी आर्य धर्माथ नेत्र चिकित्सालय,  
सी-१ जनकपुरी, नई-दिल्ली-१८ के पत पर भेजा जाए।

दानदाताओं के नाम चिकित्सालय की शिला पर  
अंकित किए जाएंगे।

### निवेदक

राजगोपाल शालावाले	सुयश्व	महाशय बसवान	कोमप्रकाश बाबू
वरसक चिकित्सालय	प्रधान दिल्ली	प्रधान	बम्बई
एच प्रधान हा०आ०	आय प्रतिनिधि	आय केन्द्रों	महालय बुनोला
प्रति० लमा	लमा	लमा	केरि० ड०

सौजन्य से महाशिवजी एल्टी प्रो० लिमिटेड ६/६४ कोलिनगर,  
झोलागिरी लख, नई दिल्ली-११००१

दक्षिण दिल्ली वेदप्रचार मण्डल के प्रधान  
तथा महामंत्री



परोपकारी ब्रह्मचरियों प्रविष्ट उद्योग  
पति तथा वैद्यकेय एनोतिगान लखर  
जय एक्सेल के धर्मज्ञ श्री हरकृष्ण सिंह  
खेर दक्षिण दिल्ली वेदप्रचार मण्डल के  
प्रधान पुन निर्वाचित हुए। हार्दिक शुभ  
कामना।

रामचन्द्र ब न धर्म्य धर्म्य बसड  
कायकल धर्मज्ञ ब्रह्मचरियों महर्षि

ब्रह्मचर्य के धर्मज्ञ ब्रह्मचरियों श्री रामचन्द्र  
बसड १५ वर्षों में दक्षिण दिल्ली वेदप्रचार  
मण्डल के महामंत्री हैं। इस मण्डल में  
५५ धर्मज्ञों का नाम है। इसके महाम-  
न्त्री ब्रह्मचरियों में निर्वाचित होने पर  
श्री बाबू को हार्दिक बधाई। इन वर्षों  
दक्षिण दिल्ली में ६० सम्मेलन हुए जिसमें  
श्री बाबू का हार्दिक प्रशंसा है।



उत्तम स्वास्थ्य के लिए

गुरुकुल काँगड़ी फार्मसी,

हरिद्वार की औषधियां

सेवन करें

**गुरुकुल काँगड़ी फार्मसी**

**पित्त प्रण**  
पित्त प्रण का उपयोग  
पित्त प्रण का उपयोग  
पित्त प्रण का उपयोग

**गुरुकुल चूर्ण**  
गुरुकुल चूर्ण का उपयोग  
गुरुकुल चूर्ण का उपयोग  
गुरुकुल चूर्ण का उपयोग

**भीमसेनी सुरमा**  
भीमसेनी सुरमा का उपयोग  
भीमसेनी सुरमा का उपयोग  
भीमसेनी सुरमा का उपयोग

**पारोकिन**  
पारोकिन का उपयोग  
पारोकिन का उपयोग  
पारोकिन का उपयोग

**गुरुकुल काँगड़ी फार्मसी**  
हरिद्वार

घासा कार्यालय-६३, मनी राधा केदारनाथ,  
कोन। २६६८३८

बाबाजी बाबा, दिल्ली-६

लिखी धर्म्य प्रतिनिधि बसा १५, हनुमान रोड, नई दिल्ली-१ कोड ११०१६० के लिए डा० कर्णस द्वारा ब्रह्मचरियों एवं प्रकाशित तथा  
दक्षिण वेद प्रकाश १० १० कोडप्रचार दिल्ली-१३ के अधिन। १३६० ई० डी (मी०) ७५६

# साप्ताहिक ओझ कृष्णजी विस्मय आर्य सन्देश

मूल्य एक प्रणि ५० पैसे वर्ष ६ मक ३२ रविवार, २० जून, १९८६ भाग्य सप्तम्वर १६६०=३३०=३ भाग्य २०५२ श्यामान्त्र-१६१

विरोधी भी मोहित मतिमान

## तार्किक शिरोमणि श्री पं० रामचन्द्र जी देहलवी

—प्रो० राजेन्द्र 'जिज्ञासु'

धर्मसमाज के इतिहास में पुन्य पं० रामचन्द्र जी देहलवी का नाम वा कार्य सदा स्मर्य प्रसारी में लिखा जायेगा। पं० जी एक स्फूर्ती जाव थे। उनकी धर्मोक्ति प्रतिभा, विद्या, धार्मिक्य उनकी एक जन्म की सामना का फल नहीं था। वह एक ऐसी पुन्य धारा थे जो जन्म जन्मान्तरी के पुन्य स्फूर्ति लकर जन्मे थे। अधुनि ध्यानन्द जी जीवनदायिनी निवारणारा की पाकर धर्मसमाज के सत्संग से उनके पुन्य जन्मों के पुन्य स्फूर्ति जाग उठे।

वह बाल्यकाल से ही बड़ मेधावी थे। वह स्वयं अपने बाल्यकाल की एक घटना सुनाया करते थे। उनके पिता जी देहलवीने धर्मसमाज के सत्संग में भी भाग्य करते थे और घर पर गणेश बाबा की पूजा किया करते थे। उन दिनों बाजार से एक भाना के बा एक पैसा के दो गणेश मिला करते थे। एक दिन जब पं० जी के पिता जी गणेश पूजा करते रहे तो पं० जी को भलभासी से गणेश जी की प्रत्मा लाने की कहा। पं० जी से वह प्रत्मा गिर गयी। मिट्टी की वह प्रत्मा टूट गई। पिता जी ने पुन घर पर एक कट किया तो सुभद्रा के धारा बालक कट से बोला, कि क्या हुआ वो पैसे का गणेश बाजार से शीर है धागे में। साथ ही कहा, 'पिता जी आप धर्मसमाज में भी जाते हैं और घर पर गणेश पूजा

करते हैं।' विधिनि विचार के विना जी ने कहा, यदि तो मुनि पूजा से कुछ मिलता है तो मुन भी मिल जायेगा धर्मवा धर्मसमाज में तो मैं ज ता ही हूँ।

इस घटना से पता चलता है कि पं० जी धारम से प्रत्युत्पन्न मति वाले और ज्हा पोह करने वाले मनीषी थे।

पं० जी बहुत सुलेख लिखा करते थे। धारने सुन्दर हैंडराइटिंग के कारण वह किसी भी सरकारी कार्यलय में ऊंचे से ऊंचे पद की पा सकते थे परन्तु ईश्वर की बाणी वेद के प्रचार के धर्ममालो ने उन्हें जैन सेने दिया और वह सुख सुविधा पर सात मारकर कष्टकारी धर्म के पथिक बन गये। उन्होंने १९५३ ई० में इन पथिकों के लेखक की यह लिखकर दिया कि पं० लेखराम की धार्य भागकर वह जाति-रक्षा व धर्म-प्रचार में उतरे।

धर्मसमाज के इतिहास में वह एक ऐसे व्यक्ति हुए हैं जिन्होंने लगातार १९ वर्ष तक Street Preaching गली कूचों में प्रचार वा कम्परा पर व्याख्यान व धार्यार्य करके वैदिक सिद्धान्तों की सच्चाई की झूम मचा दी।

कैसे-कैसे कष्ट रहे, हसका एक उदाहरण पं० जी में स्वयं एक बार

हमें सुनाया। कही धार्यार्य के लिए उन्हें बुनाया गया। वह रेल पर गये। रेल उस छोटे से गांव तक न जाती थी। वह स्थान वा रेलवे स्टेशन पर। धार्यार्य का समय नियम था। पं० जी उस स्थान के पास वाले स्टेशन पर उतरे। वही पता चला कि वहा धार्यार्य सुनने के लिए भारी भीड़ जमा है। मौलवियों के दल पहुंच चुके हैं। इधर से धकेले देहलवी जी की बोसना था। पं० जी ने जूता उतारा। रेलवे स्टेशन के साथ-साथ दीड़ लगाते उस स्थान पर पहुंच गये और धर्मसमाज का बका बजा दिया।

पठानकोट में एक धार्यार्य में मौलवी सन्ना उल्ला साहब ने कहा, 'पं० जी सब जानते हैं कि हार धार्यके गले में पड़ चुकी है।' एकदम पं० जी बोले, 'सब देख रहे हैं कि मेरे सामने खड़े होते ही हार धार्यके गले में पड़ गई।' तथ्य यही था कि जब मौलाना मन्थ पर खड़े हुए तो उनके मुसलमान भाइयों ने उनके गले में हार डाक दिये थे। जो मौलाना ने गले में रहने दिये। पं० जी के इस वाक्य पर करतल ज्वनि से पकड़ा गू उठा।

उनका हिन्दी, उर्दू, अरबी फारसी, धरती का उन्धारण प्रति उत्तम था। मुसलमान भी उनकी तलावते कुरान पर मुग्ध थे।

उनकी हाजर जमाती पर मौलाना सनाउल्ला साहब जैसे मौलवी

वा बड़े बड़ पादरी भी मुग्ध थे। एक घटना देकर इस लेख को हम विराम देते हैं। हैदराबाद में एक मौलाना ने पूछा यदि वेद ईश्वर की बाणी है तो बताएं कि यह किस रात की नाजिल हुआ? पं० जी ने कहा, जानते हो रात की कौन प्राता है? सभा में से एक व्यक्ति बोला 'बोर'। लोग ठहाका मारकर हंस पड़े। परन्तु पं० जी ने कहा, मही रात की धर्मसमाज का उपदेशक भी आ सकता है। पं० जी ने धागे कहा रात की चांद निकलता है। वेद तो ज्ञान का सूर्य है धन रात की नाजिल होने का प्रथम ही नहीं उठता।

उस महान् मनीषी उस धर्मीय वक्ता देवमवत की इमूनि सदा ताजा रहेगी।

### इस अक में

सत्संग वादिका	२
सन्नादकीय	३
धर्मसमाज का इतिहास और उसके उपादान	५
परपोषण, किशोरमन्थ	५
सत्य की महिमा	६
परीची व बेकारी कैसे दूर हो	८

सदा धर्म्य रोचक सामग्री।



हल क ने ते हल  
होते हैं पेचीदा नसायल ।  
बर्ना तो कोई काम  
भी आसान नहीं होता ॥

येक के इत म ज ने भारत के मान  
सिक नभोमण्डल ने छापी हत निराशा  
की काली बस्तियों को छाटते के ही  
सहस्रपूज उपाय हैं । इनमे वहुधा उपाय  
(केक पृष्ठ ६ पर)

## ★ वचन-सन्देश ★ आत्मविश्वास

मनुष्य को प्राप्ति में एक प्रयत्न प्रतीक शक्ति नहीं है जिसका वह विवेचन नहीं कर सकता, किन्तु समय-समय पर वह उसका अनुभव प्रदर्शित करता है। उस शक्ति में प्रयत्न बल है। वह शक्ति मनुष्य को प्राप्ति बढने का प्रोत्साहन देती है। वह शक्ति मनुष्य को बड़ों से बड़ी कठिनाइयों में सफलता प्राप्त करती है। वह शक्ति है आत्मविश्वास। हमारे प्रत्येक कार्य की नींव आत्मविश्वास पर ही जमी हुई है। आत्मविश्वास के बिना किसी भी कार्य में सफलता पाना आकाश के ज्योतिष्मान् नक्षत्र को ताड़ने के समान है।

आत्मविश्वास का दूसरा नाम है इच्छाशक्ति। आपका प्रविष्य कब चमकेगा? आपका भाग कब जायेगा? इन प्रश्नों के समाधान को खोज में कभी आप देवों की शरण

सम्पादकीय

## पाकिस्तान के जुल्मों से अहमदियों में बढ़ता हुआ आक्रोश

—वार्ता—

पञ्जाब के जिला मुख्यासपुर का छोटा सा कस्बा काविया इन दिनों आक्रोश से छतपटा रहा है। काविया दुनियाभर के दो करोड़ अधिक आदिमियों का साम्यात्मिक केन्द्र है और इस आक्रोश की वजह है पाकिस्तान में रहने वाले अहमदियों पर जुल्म का डायना जाना।

काविया में अहमदिया फिरके के धर्मगुरु मिर्जाबासिम अहमद का कहना है कि यह उत्पीड़न राजनैतिक है न कि धार्मिक। अहमद साहिब जनाब मिर्जा गुलाम अहमद के पोते हैं जिन्होंने १८८६ में अहमदिया आन्दोलन की शुरुआत यह कहकर की थी कि जिस मसीहा ने इसान को रजो गम से निजात दिलाने की बात कही है, वह मसीहा मैं ही हूँ।

मिर्जा बासिम साहिब का कहना है कि हमने इस जुल्म के बारे में मानवाधिकार आयोग की भी लिखा लेकिन तेल के बनी धरब देघों के प्रभावहीन होने के कारण वह हमारा मददगार नहीं बन सका। हम ने प्रधानमन्त्री राजीव गांधी की भी इस बात लिखा है लेकिन सरकार का कहना है कि यह पाकिस्तान का धरमनी मामला है लेकिन वे अपनी तरफ से उनको मदद करने में उन्हीने पाकिस्तान सरकार को भी कई पत्र लिखे लेकिन अभी तक कोई जवाब नहीं मिला है।

मिर्जा बासिम का कहना है कि पाकिस्तान में पिछले तीन महिनों में पांच अहमदियों की हत्या कर दी गई। इनमें से एक जनाब बासिम के चचेरे भाई ६० साल के आली के डाक्टर अबुल बिन अब्दुल कादिर थे। इस मामले में अभी तक कोई गिरफ्तारी नहीं हो पाई है। मिर्जा बासिम का कहना है कि पाकिस्तान में जब भी किसी सरकार को अपना तत्त्वा ब्यवस्था नबद दाता है तो वह अहमदियों के खिलाफ नफरत फैलाने का प्रयत्न करता है। १९५३ में यही हुआ था १९५३ तथा १९५४ में भी यही कहानी दोहरायी गई। १९५४ में हनु लोगो का धर्म मुस्लिम अल्पसंख्यक घोषित कर दिया गया। इसलिए उत्पीड़न की वजह राजनैतिक है न कि धार्मिक। उन्होंने बताया कि उत्पीड़न का नया दौर १९५३ में शुरू हुआ जबकि लोकनब बहाली के लिए सिविल नाफरतानी आन्दोलन शुरू किया गया।

उस समय पाकिस्तान में एक प्रभावशाली यह उड़ी कि जिया साहिब खुद कादियानी हैं। बस फिर क्या था जरनल जिया तिलमिला उठे। उन्होंने ऐलान कर दिया कि उनकी नबरे में अहमदिया काफ़िरी थे भी नबे मुबरे हैं। धर्मल १९५४ में उन्होंने एक अध्यादेश जारी किया जिसमें अहमदियों पर अमान देने अपने धर्मस्वकी को सर्वस्व कहने का दुसलमानों की तरफ से व्यवहार करने पर प्रतिबन्ध लगा

मे जाते हैं, हस्तरेखा विशेषज्ञों का पत्र बैठते हैं परन्तु यह नहीं जानते कि इन प्रश्नों का निराकरण आपने ही पास किया हुआ है। यह सब आपके आत्मविश्वास या दृढ़ इच्छा-शक्ति पर निर्भर करता है। यह एक ऐसा वैज्ञानिक तथ्य है जो आपके मूर्खता जीवन में अमन की वर्षा कर सकता है, जो आपकी निराशा को आशा में परिवर्तित कर सकता है, जो आपकी विपत्तियों के बावलों को तिरिहतर कर सकता है, जो आपके हृदयरूपी मरुस्थल में आशा और उसाह को लहलहाती लेती उत्पन्न कर सकता है। इसके लिए बस आप अपने हृदय में दृढ़ विश्वास पैदा कीजिए। जब आप अपनी आत्मशक्ति पर विश्वास करेंगे तब आपकी उन्नति का मार्ग स्पष्ट होता जाएगा।

प्राप्तवान रखा गया। मिर्जा बासिम ने बताया कि अहमदिया धर्म गुरु मिर्जा ताहिर अहमद को इस अध्यादेश के जारी होने के एक दिन बाद ही लन्दन भागना पड़ा। क्योंकि तैमिक सरकार ने उन्हें भी गिरफ्तार करने की ठान ली थी।

पाकिस्तान के कट्टर मुस्लिम चाहते हैं कि अहमदियों की जमीन जयदाद जन्त कर ली जाये तथा उन्हें सरकारी नौकरियों से हटा दिया जाए। कावियों में अहमदियों के आत्मिकारिक पत्र बदर के अनुसार पाकिस्तान में मुस्लिमों ने अहमदियों को सनाने का एक नया तरीका खोजा है। कोई एक मुस्लिम एकाएक गायब हो जाता है और अहमदियों पर उसके गायब होने का इन्जाम मदकर जमना को धीर-मादी बना दिया जाता है। ऐसे ही एक नोबाना धर्मन कुरंगी इन दिनों गायब है और धर्म मुस्लिम लोग यह माग कर रहे हैं कि इस मामले की तहकीकात करने के लिए मिर्जा ताहिर को लन्दन से यहा लाया जाए।

‘बदर’ के सम्पादक लुथी अहमद अनवर का कहना है कि उत्पीड़न के इन नये दौर में हमारी नहीं तो सैकड़ों अहमदिया लोग हर पाकिस्तान में भाग गए हैं। लेकिन इसका एक फायदा यह भी हुआ कि पाकिस्तान में अहमदिया धर्म प्रसार में बहुत नुति हुई है।

पाकिस्तान में इस समय ५० लाख अहमदिया हैं। पश्चिम आफ्रीका में ३५ लाख भा न से एक लाख। इनमें से १५०० काविया में रहते हैं। अहमदिया अपने धार्मिक साहित्य के अलावा सिक्क ममदाय के लिए भी धार्मिक साहित्य छापते हैं। अहमदिया गुरुमुखी विद्यान अपने नाम के धारण जानी बिताब लगाते हैं। काविया में अहमदिया फिरके के लिए सब से पवित्र स्थान मिर्जा गुलाम अहमद की कब्र है। १० एकड़ में फैना यह कब्रिस्तान बहिद्वी माधोवारा कहलाता है। लेकिन यहा उन्ही मुर्तों का मिट्टी दी जाती है जो कि अपनी वसीयत के एक तिहाई हिस्से से एक दमने हिस्से को जमानत के नाम करते हैं।

बहिद्वी मा कोशारा तकरीबन पूरा भर चुका है। बदर के सम्पादक का कहना है कि जब पाकिस्तान में हाजात ठीक हो जायेंगे तो वहा हान में मारे गये अहमदियों की माशों को यहा नाकर दफनाया जाएगा। सम्पादक द्वारा यह हील्के अन्दाज में कनी गई यह बात चौकाने वाली है। लेकिन ठीकनी यह है कि इत अहमदिया आखिरी मिट्टी यही पाना चाहता है। काविया में अहमदिया नेता खलिस्तान आन्दोलन को मदद देने के आरोपों से साफ इ-कारा कते हैं। उनका कहना है हम पूरी तरह से मजहबी लोग हैं मियानत से हमारा कोई सरोकार नहीं है।

(शेष पृष्ठ ११ पर)

दृष्ट कष्ट नहीं फन मही,  
नदी न लड़े नीर।  
परमात्म के कारे  
साधुन बरा बरीर ॥

पिबित नक्ष तन्मयेय नाम्म  
स्वयं न भागित कमित दुःखा।

मादन्ति तस्य बाधु बाधिराहा  
परमेश्वराय वना विभूतयः॥

यह सत्य है, तुम कभी पल नहीं  
जाते, यद्यपि पल उन्हीं से बनते हैं, निम्नता  
जल गहरी पीही मेघ की महती भी धन्य  
की हूरमाओ के देव है, पर वह धन्य  
नहीं जाता। लोक इसी प्रकार सत्य  
पुत्रों का जीवन परमात्म या परमेश्वर  
के लिए होता है। तुमों से माग्य परमेश्वर  
के 'भाव' में यही सोचना सदा  
करना चाहता है। परमात्मियों में कभी  
भी यह नहीं सोचा है कि परमेश्वर  
के पश्चात् उन्हीं किस फल का प्राप्ति होगी।  
के तो निष्काम भाव स जो कष्ट हित से बने  
रहते हैं। अतः ही तुमों में महाभारत-  
कार महाकवि व्यास के दो ही दो बार  
मन्त्र हैं—परमात्म से पुत्र होता है  
और परमात्म स पाप।

परमात्र, पुत्राय पापम पराश्रयम्  
वधपुत्र, पुत्राय मे वधन बह ही पुत्र-  
मात्र ही निमित्तसह है। परमात्म परमात्र  
दुखों के दुःख से प्रति होकर उनको  
छाड़ता, कल्याण। यही तो परमात्म है।  
स्वयं भूयः प्राण भाग्यकर देखें तो प्राप्ति  
के लिये कभी परमात्म के अनन्त  
प्राप्तिकर्म कदापि या प्रकृत पानिये।

परमात्म बहुत बल है, जो सर्वो का  
बल महत्वाता है। धन्य बल प्रथम ही  
सकते हैं पिबितो पंच मे अने-पुत्र का  
ज्ञान होता सत्य नहीं, किन्तु परमात्म  
बल अनन्त है, जो बीच मात को पुत्र  
मनोय तथा धान्यन सचित से शीत-शीत  
कर देता है। परमात्म की व्यक्ति स्वयं  
स्वयं ही होता है। किन्तु उसका परमा-  
त्म ही उसकी सार निधि बन जाती है।  
ऐसे में ही भाटने बाल के हाथों में मेहरी

एक बार दिल्ली का मुगल बाघाह  
अकबर बहुत बली सेना लेकर पितो  
कोलने धाया। पितोह के राहण उदय  
सिंह बल अकबर डर के मारे पितोह  
कोकर दूरी बल भाव बने और उनका  
सेनापति वनमल गह्वर की रक्षा करने  
लगा। पर एक रात की दूर से अकबर  
पितोह के उले मोती-के-मारा गया। पितोह  
निवासी धन उदयन बलवा डटे, पर  
उले में ही एक पितोह का गहवार  
सकल स्वयं की रक्षा के लिए मीतने से  
दा बना।

यह वीर बालक का नाम बा पुत।  
उसकी उम्र केवल दोसह बर की थी।  
पुत का ही बालक पर बडे-बडे गहवार  
सकलियों के अन्तर्ग बल गहवारों की

स्वयं लय जाती है। पितोह तथा दु-  
मात्र को जो अन्तर्ग विषय में नहीं विषया  
बल परमात्म की निमित्त है क्योंकि  
पितोह की मल की परि-के देखा व अन्तर्ग  
किता जाता है। दुःखिता व्यक्ति मारी  
सत्यन की बाधना पर बा जाता है।  
किन्तु केवल परमात्म ही उसे (हमारे  
स्नेह की) जीत पाता है। हरि धन्य,  
हरि कथा धनता की माति परमात्म की  
कथा भी धन्य होनी है। यह दोषों का  
वीर है जिसका कोई नहीं।

यह कि वनमल का जीवन परमा-  
त्म की जीवन रहा। उनकी एक धन्य  
मुनिसे—

एक बार की बात है कि स्वामी की  
मुनिसाय गगन से उठे हुए थे। वे बीच  
बा लेंगे थे। एक बैनमा की एक माने से  
कले हुई थी। माधोबाय बैनो को गीत  
रहा था। स्वामी जी वे बैनक बहा पर  
पुत्रों से ही माधोबाय से बैनो को वाणी से  
कोलकर धन्य करने को बहा और स्वयं  
माओ की कले धन्यकर बहुरि निमित्त  
विवा। स्वामी की के परमात्म के साव  
साव उनकी वास्तव की परिचय मिलता  
है। बैनारे देश में बने परमात्म ही हुए  
हैं—ऐसे विधि पाता। उन्हीं एक पक्षी  
की रानां बधना मात ही गहरी बरीर  
तक बना विवा। बैनोह के विषय से  
नहीं जानता किन्तु जीते भी परचित से  
प्रतिपादन कर विधि। इन महात्मा परमा-  
त्मों की गाथा कविता की भाषी में  
सदा धन्य रही है, केवल परमात्म के  
कारण—

रहितन पर उपाकर के,  
कल न पारे कीच।  
मोह विषो तिथि भूय मे,  
दीन्यो हाड लचील ॥

## परमेश्वर

अमिंत प्रनाप नारायण सिंह

निरामा की का जीवन पर बा का एक  
अनुत्त उदाहरण है—

एक समय की बात है कि निरामा  
की पुण्य नया शाक प्रोड कर दमाहा  
भाव में भूय रह थे। उस समय सभी का  
जीवन था। एक निरामा की वही के ठिठुर  
रहा था। निरामा जी न उठके दुःख से  
अचित होकर उस धनना मया साव उवार  
कर उसे बोका दिया। यही तो परमात्म है।  
ऐसी पन्ना निरामा की जीवन  
में कई बार पड़ी है। महात्मा गांधी की  
का अनुभूति जीवन परमात्म का ही उदा-  
हरण है। उन्हीं हरिण्य पक्षियों में  
भूय भूय कर दमित हरिण्यो को स्नेह  
तथा परमात्म का विवा। कुछ क रोगियों  
की सेवा कर उन्हें डाख दिया। परमा-  
त्म की महती का बल कहना। यह  
बल मातु की उला है जिसके अन्तर्गत न  
कलह, राव स्वाय विवा नय नातय  
पुत्रा हीर्ष्या प्राणि सभी रूतियों का बल  
ही जाता है। परमात्म से पुण बायाग्य  
से साधारण भावना भी गौरवपूर्ण हो  
जाती है। तुमकीबाध की न कहा है।

परचित सचित नय नही माई  
पर पीडा सय नही धन्यमा ॥

मे पितोह है कोलमा की तुमकीबाध  
की के रागचित मान्य की। बासय  
मे परमात्म स बाकर दस सवार से  
कोई बल नहीं है। सवार मे सत-सकल,  
नले-भूये दोनों रहते हैं। एक व्यक्ति  
दुखों की मलाई के लिए धनना बा उल  
न्योक्षार कर देता है। और पुत्रा। धन  
सर की ताक से रहता है कि कर मोहा  
मिने कि दुखों के धानने की पक्षी हुई  
बाभी पर हाथ साफ कर ले। ऐसे मोय

दुखों की मलाई करने को कौन कहे,  
दुखों की प्रथा सुनने तक को भी नवार  
नहीं होते।

महावीर की मान्य बरीर की माय  
कला परमात्म में ही वनमल है—  
परमात्म का पक्षि दुःखा।  
परमात्म का वृद्धि नक्ष।  
परमात्म का वृद्धि नक्ष  
परमात्म का वृद्धि नक्ष

बा तय से मानवता का धनितर  
ही परमात्म की साधारण विवा पर दिका  
हता है। धन्य इस दस सवार से जो भी  
धन्य हुआ है परमात्म के ही कारण  
हता है। परमात्म का व्यक्ति जन-जन के  
दुख की बिना किसी प्रथा से जीत जाता  
है। मोय तय से इस पुत्र से बनाता सना-  
दीन को प्रथम मोय बल से करके सल  
जनता जन दन बन सकता है। यह कभी  
कभी कल के पक्षे में नहीं था सकता।  
बा भी रीति से यह बल अन्तर ही जाता  
है। परमात्म की व्यक्ति किसी सेवा और  
सीमा के अन्तर्गत बाता नहीं था सनवा  
है। यह तुमों का सुखी बनाकर स्वयं की  
सुखी होता है पापकार के भी महात्मा  
के स्वीकार न से हुए रातु र वि निधि-  
धन्य गुण मे टीक ही कहा है—यही  
मनुष्य है कि का मनुष्य के लिए मरे।

धन प्रयत्न मान्य का कलम है कि  
अह परमात्म के लि सवैय न्योक्षार  
कर दे। ही सलता है इसके लिए काटो  
की रात पर जनता प। किन्तु बराने की  
धन्यकला नहीं है। धन माय नया-प्रति-  
धन नैमल और पुत्र साति प्राण  
धन्य बाहरी है ही तो का के माय पर  
पलना धनता परम बल मनेमो। कहा  
है—

परमात्म गवा जार्जित दुख सलाय।  
नवनि विपसतेषा सम्यकर पुदे पदे।  
धन्य— (विन सत्यने) के दुख मे  
परमात्म निवास करता है। उनकी  
विचिता नय होनी है तथा पय पर  
सम्यक्पति प्राणी है।

माता, पो, नदीसी बैवदिया

किशोरमन्त्र—

## वीर बालक पुत

बलमात्र था। उसकी माता और बहिन  
और सभी ने पुत्र से बाले के लिए उसे  
कुछी से कहा है। यही नहीं है जी  
उस समय पर वे न बैठकर हलिया  
लेकर धन्य से की रक्षा करने के लिए  
बले पलाह के साव पुत्र भूमि में बा  
पड़नी।

अकबर की सेना को पानी में डेटी  
की। एक भाग पुत्र के धानने बलता

बा और पुत्रा भाग दुखी और पुत्र को  
रुने के लिए पा रहा था। यह दुखों  
माय की सेना पुत्र की मा, पली और  
बहिन का पराक्रम देखकर बलित हो  
गयी। सोकर देख की बलते-नले पुत्र उठके  
पाव पुत्रा, सेना का है कि बहिन  
सलाई में मर चुकी है, माता और सभी  
बहुत की मोती हाकर सभीन पर ल-  
पका रही है। पुत्र को पाव बैनकर माता

मे कहा— बेडा हम स्वयं बा गही है नू  
सलाई करने जा। सहरज न भूमि की  
रक्षा का मा मरकर स्वयं मे जा रह दे  
मिना। इतना कहकर पुत्र की माता ने  
प्रणमो विव। पुत्र को पली न भी  
स्वामी की और और माय से बैनत हुए प्राण  
स्वाय किता। पुत्र पर विषय उसाह और  
वीरता से फिर शानु सेना का मुनय-  
करने सला। माता की सलत समय की  
प्राता पालन करने में उतने तमिक भी  
रैर पीडे नहीं किता और न भूमि के  
लिये सलते-सलते प्राण स्वाय विव। इस  
प्रकार दस एक ही बार के पाव पर  
माता स्वयं पकार और उसकी कीति सदा  
के लिए दस सवार मे कायम रह गयी।

व्यासपीठ -

उपनिषत् कथा माला-७

## सत्य की महिमा

प्रवचनकर्ता—वीतराग स्वामी सर्वदानन्द महाराज

बबो ब्रयबा उपनिषदो के समय मे  
छद्मी के पठन पाठन का विधान था।  
आचार्य विष्णो को यज्ञी पढाते थे। सर्व  
भाषारण इन्ही का उपदेश सुनत थे।  
इसमे सत्य की बड़ी महिमा गायन की गई  
है।

सत्यमेव विजयते मानुषम् ।

[illegible]

सत्य का प्रभाव से शास्त्र धार्मिक समाज स्थिर होता जाता है। मनुष्य का जीवन बढ़ता है। परन्तु कब ? जब वह सत्य को प्यारा है और सत्य का पालन भी करता है। य सब बतें साथ से और फिर देखे कि चरन दो क सिद्धान्त का तात्पर्य क्या है।

सत्य वा एक लक्षण और भी है, जो  
 तीनों बातों में एक जैसा रहे वही सत्य है।  
 सत्य वह है जिसका प्राप्ति है न भ्रान्त। जो  
 पदार्थ 'अनन्य' समय पर बदल जाय  
 उसको 'अनन्य' कहते हैं। परमात्मा सदैव  
 एक जैसा रहने वाला है। देखिय एक  
 मनुष्य मर्य 'दानत' है और धर्म का  
 पालन भी करता है। परन्तु वह मूर्ति-पूजा

भी करता है। अज्ञान और ध्विधा न उसे पतित कर दिया है। बोधो मे विद्या है।  
'सत्य को पूर्ति क्रिया प्रीत जान के विना नही हो सकती। परन्तु जाग्रत सत्य क्या है? वक्ष्ये यही कि मूढ बोधो परन्तु उसे मूढ सिद्ध न होने दो। व्यापारस्य मे क्या होता है? गवाह बनादिता है कि परन्तु उसमे किन्दा सत्य होता है प्रीत किता मूढ? जब जिस बात को दृष्टि सन्ध मिल कर उठी है। ध्वन्या निरूप स्या पतित कर जाता है। इसीविषय कहा है कि 'सत्य-भाषणो मे हो मनस्य कर्मावधि'।

परमात्मा तीनों बाल मध्य है परन्तु प्रकृति नहीं। प्रकृति, ५४ कारण-मूल” कहते हैं, उसका नाश तो नहीं होता परन्तु वह बदलती रहती है। कभी ससार के रूप में छा जाती है और कभी फिर प्रकृति बन जाती है। यह सत्य ही परमात्मा का विशेष लक्षण है।

प्रकृति ही सत्य है परन्तु उसका परि  
साय हमारे ही। पहले तुम जन्म ही जाने  
होगे दूसरे पुनः मरण ही जाने को ही परि  
साय कहते हैं। जब प्रकृति ने ही परि-  
साय है तो उसकी वीची हुई हर एक वस्तु  
भी परिसाय बनस्य होता। किसी एक  
कोशर का बच्चा है उसमें दादा नहीं, क्योंकि  
वह नून नहीं जोगता। परन्तु जब वह कुशा-  
बन्धना में आ गया तो उसका बासल का  
परिसाय हुआ, फिर बुढ़ाई में आया तो  
पुनः बन्धना का परिसाय हुआ। इसलिए  
तुम प्रकृति ने काम ने सबके ही परन्तु  
किन्नर भीने के कारण वे ही वह तीन  
कालों ने सत्य भी नहीं।

१२७ हो साथ ही जीते हैं। यहाँ  
 तीन से यात्री कभी नहीं। उन्होंने अपनी  
 यात्राएँ सब यात्रा का उद्देश्य लिखा है।  
 इस सब लिखने पर सब यात्री भाते  
 थे, कुछ भिन्न था। सब यात्री इति-  
 वेदा विद्या करते थे। कोई अपने घर से  
 दान नहीं लगता था। यदि वह यात्री  
 लेखक मिश्रभास्कर आचार्य का हो  
 तो वह मिश्रभास्कर की यात्रा का इति-  
 हास ही लिखा था, वह लिखकर कोई  
 चीज ही था। सब तो यही दान बड़ा  
 योग्य होता है। उन्होंने घर पर पत्थरों  
 विन्मल फिरत हैं कि अपने साम्राज्य  
 से सब घर रचना। यन्त्रों की भी जिस  
 लेखक का इतिहास लिखा था, वह भी यात्री

कोई धीर ही है ।

का-का क्या है ? हमारे उम्बकीटि के सब गुणों का जो प्रभाव ही उम्बकीटि है। सब गुणों यदि मैं प्रतिष्ठा करता हूँ, ईश्वर के प्रतिनिधित्व बिंदी और के सामने कुछ बोझता हूँ तो मैं उम्बकीटि के सत्य से फिर जाता हूँ। क्या जोशानामा सत्य है निराश बह सत्य है, किन्तु उम्बे धम्याप्रांता जाता है। वह गरीब के विकसित होकर गरीब के दुख की घणना दुख समझ लेता है। यदि मैं रस्ती को खालि समझ लूँ तो क्या रस्ती काते की छवि प्रा जायेगी ? नहीं परन्तु फिर मैं समझूँ रस्ती की बात समझ पर समझ ही नहीं है। धम्याप्रांते मैं नहीं जा रहा हूँ, इस लिए वह सत्य नहीं है। प्रकृति के परिणाम है और जीवनात्मा में धम्याप्रां, इसलिए दोनों ही सत्य नहीं है।

एक कवि कहला है—

बुरा को जिसने बिछाया,  
मिल गया उसको बुरा

परमेश्वर के सिवा किसी और के  
 धारो वरि मुकाना खुदी है। इसलिये  
 ईश्वर का ही पूजन करो। ईश्वर जगन  
 ने दूर होते ही इसके हाथ साब सख-  
 भायक का ब्रम्हास ही जाता रहता है।  
 बाहे कोई बनी हो या निमित्त स्त्री हो वा  
 पुरुष, सब का एक ही परमात्मा है। बही  
 एकरस रहने वाली बस्तु है। परन्तु मांस-  
 बर्ष ने उस भुजा दिया। जो मूल जाये उसे  
 भटका ही रहता है। इसीलिये भाइयो !  
 एक सत्य को मानो। सारे भयद प्राण ही  
 विन जाते हैं।

उपरिनिबद्ध वृत्तों में कि ऋषि सत्य के  
प्रत्यक्ष होते हैं। ऋषि नाम किसका है ?  
आश्वकच की विष्णु, एम०एम०, एम०एस० की  
वापि की विष्णु विष्णवी है। पश्चिम  
विद्वानों को ऋषि, बुद्धि की विविधियाँ विष्णु  
विष्णवी हैं। ऋषि वह वा जिसमें वाक्या  
के साथ सन्ध्या का सम्बन्ध हो जाता वा  
को सन्ध्या की सम्बन्ध वा जो उर उर ऐसे  
बैस सकता वा जैसे मैं तुम्हें कह रहा हूँ।  
पहलवानों का एक नाम होता है।  
उत्सवों का जो दो को रोजे बाँधते। प्रायः  
दशमों के रोजे में ही जगह मिल सकती है।  
है। पुरुषों की रोनें पहलवानों वहाँ मिल  
ते दो कोई न रोयेगा। कायक वह कि  
बड़ जलका सम्बन्धी है। पुरुषों का

है, उसके साथ उसी का येन होना जो सत्यकारी, सत्यमानी तथा सत्यकारी हो। सत्यमानी धर्मात् सत्य के मानने वाले तो प्रायः भी होंगे परन्तु सत्यकारी होना कठिन है। अब ये तीनों बातें जिस जाति सभी ज्ञान की पूर्ति होती है।

उपनिषदों में यह भी लिखा है कि  
 "विद्य यह है जो वेद और सत्त्वोक्तों का  
 ज्ञानी हो, जो दूसरों को धीरे धीरे मार्ग प-  
 चसाते बनाता हो, जो स्वयं ज्ञानी हो और  
 ज्ञान का अनुकम्प्य करीब हो ज्ञान पर  
 आधारित रहता हो।" मैं पूछना ही बिड़ान्ना  
 कीजिए ? क्या उपन्यस देते जो पढ़ा-लिखा  
 ही और जन उपार्जन कर छूटें। परन्तु ऐसे  
 धनपय की वृत्त विना सकते हैं जो जन  
 सब क मरालें वे ही बिड़ान्ना नहीं कहला  
 सकते। इसलिए कहना है कि—

विद्या ददाति विनयम् ।'

[illegible]

महत्मा बुद्ध बन में थे। एक सिकाारी  
बन्धी को बांध मारा। वह मिर गया,  
महत्मा बुद्ध ने उसे शोककर उठा लिया  
उसका हाथ निकाल दिया। सिकाारी  
कहा, 'तुम मरा है। यह मेरे शीर से  
रा है।' महत्मा बुद्ध ने कहा, 'वह  
रा है, मैं उसे काटा है।' अन्तिम  
क्षण यह हुआ कि मारने वाले से बचने  
का प्रयास प्रयत्न है।

यदि आग का धन्त करण पवित्र हो  
 मग ये धन्त धन्त हो रह जायें ? मैंने  
 मुकुनपति ने देखा। बहुत लोग कहते थे  
 मैं वही आशा का नाम का मग है। वे  
 मुझे ये बुल रहे थे बु को ही। उनकी आशा  
 कि उनके लिए मगिर्न लोग हो। मगिर्न  
 को ही दिखे नगे। परन्तु जो ही धन्त  
 धन्तों से निकले, वहा यज्ञ-पत्र लिख  
 र जहाँ बुद्ध किया गया। धरे सारको।  
 तो लो हो। जो मगवा-पत्रों को  
 क कर सकना है मग वह नुन नत्रों को  
 र नही कर सकना ? उसे ही रन धन्तों  
 लिख को। सारा भया ही निव  
 गिया। किसना धन्तों जगय है ? पर  
 मैं समझे तब ना।

आर्योक्तसाध मे दुर्बलता है । इसमें

## सत्य की महिमा

धरती बल नहीं पाया। परन्तु जो समाज मनुष्यों का उपकार करे वह दुःख नहीं रह सकता। इसलिए धरती भीरे इसकी कुलमात धारण कर लेगी। मैं बरती बना वह प्रसूतोद्धार पर स्वास्थान हुए। एक सन्तान मे प्रभु का 'महाप्राण' प्रसूत वीर की सुती है उन्हें फिर के साथ कैसे विना मिया जाये? फिर पर तो पवनी झी रहेगी। मैंने उत्तर दिया 'हाँ'। कभी कभी ऐसा समय भी आ जाता है कि 'ममरी पैंते'—'निरती है और जू' फिर बार पवती है।

यह बर्बाद का समय भूत है। बर्बाद वह है जो बर्बाद का काम करे और धरने मुक्त हो बर्बाद में रहे। बर्बाद से बर्बाद मनुष्य भी जब धरती बर्बाद धार कर लेता है तो छोटा हो जाता है। सेवा से ही प्रसन्न होती है। सन्धी खसला यह है जिसमें धारिणी की महिमा है मनुष्य खसाल की बर्बाद है। धारा मोहरे रहते है बर्बाद धरती है परन्तु जब यह कहा जाता है कि 'प्राण' देव दसता की प्रसन्नता को मे बर्बाद है तो सभे नदी की निरा होती है। धारा की भी। धार उस निरा ब बच तो नहीं सकते।

अति सब को एक समान मानता है अति की शक्ति मे सब लोग समानता रखते हैं। उस स्थान पर सब ही एक हो जाते हैं परन्तु यह सेवा मायहीन है। बर्बाद धरती के साथ रिक्तता है परन्तु वह उनके पीछे नहीं चलता। समस्त सेवा समझानो मे आ गया है। शरीर का ठीक प्रयोग नहीं होता। युरोपी धोर धरती का ये ऐसा नहीं बहा विजयता अपना है धारि के उन कार पर न्यय दिया जाता है। परन्तु इस देश मे समझावो बर्बाद पये हैं और बर्बाद बर्बाद है। इसीलिए काम नहीं चलता।

समुद्रमात त मे सुखमान भी द्विती आर्त्त है। जिना सावर मे एक सुखमान बल्लभतर हो। उसने बुद्ध का विवाह नाम को एक बड़ा प्रच्छेद द्विती कविता लिखी है। एक बाह्य न प्रयास लकर श्रेष्ठ की धारो कराई। इसमे उन्नी की पुत्रता का बर्चन है। परन्तु सुखमान द्विती की द्वय स्थान दंडा विजय बल्लभ बर्बाद बर्बाद है धोर एक मातु भावो होकर देश का विजयता उन्कार हो? परन्तु सही सम्भावना का सम्भावना महा भी है।

इन देश के विज्ञान सार को सिखा दिया करते हैं। इतिहास के नेत्र पात्र हवार वष के नीचे नहीं जाते। परन्तु इस देश का विकास छात्र पात्र हवार से भी अधिक बल हो करे हैं। यह देश महाप्राण के एक हवार साय रहते है ही विनको बना भी बर्बाद के मुक्त पर भी इन्ध जो मे कभी भी कि मुक्त समय स लोग

देको का प्रसूतवा अनुसरण नहीं करते इसीलिए दुःख पा रहे हैं।

उत्तरिणी के समय मे सचाई की प्रसन्नता हुआ करती की। उत्तरिण्ड पात्र हवार वष के पहले के हैं। इसन इन्धे की धारिण्य पुरा है। इनमे कोई सम्भावना नहीं सारस्वत पीछे कोई ही सब एक समान है।

जिया से ही कर्म का विधान है। न तो बाह्य ही सम्भावना है धोर न शून्य ही पुरा है। जब से यह सम्भावना का सम्भावना उठा है इसने भारतवर्ष की कुलमात ररर दिया धामसमाज को उस सम्भावनाकर सव माय परलाना का परन्तु धामसमाज स्वयमेव न सम्भव सका। इसमे सम्भवे की क्षति धरने है। यदि यह खसल जाये तो सेवा पार है। ससार मातो की मातो के ही रूप मे मानता है। काम सबै धारकाल से चलना है श्रोकि सवा सत्य की जय होनी है धोर सत्य की पराजय।

धारा कहिये कि धोर सत्य मनु का स्थान है इसमे सचाई कहा है ईश्वर सत्य है यही नियम है। परन्तु यदि धार किया जाय तो बर्बाद प्राण नहीं हो सकता? देको भाव विवाह भूत है। पहले लोग भाव विवाह किया करते थे। इसकी प्रसन्नता भी होता की। परन्तु जब सत्य किया गया तो यह ही सत्य था। सब यही पात्र सम्भावना जाता है। इसमे धारता कलम्ब को विद्या तो सुन्दर सेवा न सम्भावना किया। महा भूतन भूतवर्षावीर मे भारतवर्ष पर धारक मल करते थे पहले बर्बाद को धारपी नेत्रे कि विदुस्तान का हाल मान्य कर। मे से सब तक महा रह यह धारन का परन्तु सचाई से फिसला हुआ। वो सब तक उ होये महा का हाल देखा धोर धार मे यह पत्र सिखा कि हर कई दुस्तो के हाथो रोता है परन्तु द्विती को द्विती ही बरबाद कर रहे हैं। यह बात धार ही सत्य रहने का धार है। जो सम्भावना है उन्नीने धरती को सचाई से जाना है। उन्नी सचाई का सहारा लेकर ससार मे सुख पा सय धोर सत्य स्वकय परमा मा से मिल सके।

आधो। याद रहको भूत मीमारी है धोर सचाई तनुष्ठता। सचाई से ही मनुष्य की बाध बनती है। जो सत्यमानी सत्यवादी धोर सत्यका है उसकी क्षति धोर बम को कोई भी नहीं रोक सकता। इस बात को सत्य मान को धोर सब धरने पार हो जायेगा। उस काम सचाई न चलते है। परमात्मा को स्वीधिया ज्योति कहा गया है। विज्ञान मन मे वह है उन्नी के मन मे सचाई है। परन्तु इस तो धरपी पुत्रा धोर प्राधना मे धो क्षम करते हैं। ईश्वर को न भोग लगता है। न उसके लिए वैसे ही चाहिए। दुर्गि को हल उन्नी का भोग लगता है जो

हने धार जानी हो। यदि पूर्ण ईश्वर का रूप हो तो उसके पुत्रारी क्यामान् हो। परन्तु महा क्या है? बाह्य लोग कहते हैं मनुष्य से क्या नहीं करनी चाहिए। मान बाते भी नहीं कहते हैं। परन्तु जो माय माय ईश्वर का भूजन करने वाले हैं वही कठोर हैं वही मनुष्य को धारत समझ कर उसके मुक्त करते हैं।

नौदो का राज्य था। सकाराधाम भवभाज उन्नीने पूर्वे महा ईश्वर का प्रचार किया। कई धारिणी मे रोका न गये। धारत ससार मे पहुँचे महा पात्री की धारा हुई यह नियम का कि पात्री देने के पहले धारिणी पक्षा पुत्री जाती थी। अन्तर्न सकार मे बर्बा

विजय मुने फामो का धारा वो है उससे विजयता बागता है। तेजस्वी सकार राजा के सामने पत्र हुए पत्र कहा कि हे राजन्! मैं ईश्वर को मानता हूँ। यदि वह न भी हो तो कोई हन नहीं परन्तु यदि देवा ईश्वर हवा तो तन्हारा क्या शरा होनी? राजा की सम्मर्ष मे यह बात प्रा मैं धोर से छोड़ दिया गये।

अति दवान्द ईश्वर की मानने वाले मे धार ५८ उन्नीकर ससार को सत्य न स विज्ञान मय। यदि उस भी यह ब हले तो कि परमात्मा तुम पर सवा कर तो परमात्मा की सुष्ठि से प्रम करे। यही सचाई यही बम है।

भयमान बम बर का प्रचार किए जा।

हे भूत धरती का सरोकार किए जा।

मनुष्य हा है देक एक दम भाव मे।

मानव की गति का ही सिगार किए जा।

महमा प्रमाण पार नहीं पा सका की।

ससार सार सार का विचार किए जा।

हिम्मत न हार पार पार हो कर रहेगी।

भयमान भरोसे वी नू सवार किए जा।

विजयता सही का रण ना के रहवा।

धर्या व हार हार बार बार किए जा।

सब कह रहे हैं धार धरकधार धा रहा।

उजियार दीप धार धार किए जा।

हरेन कोई धरने कारोबार मे बना।

उत्पादियों के कार्यों से धार किए जा।

धाकार निराकार का पता तो सबे तक।

धम्यत धम्य धम्य धार किए जा।

कैला धमोय धरम धर धारम भूत मज।

अविशो की सम्पन्न का धमकार लिए जा।

धोरो को नदी धोरो को धरपी हो तरफ देख।

धरमान को ही एक तरफार लिए जा।

बन पन्नी रूप इस का चिते नहीं गया।

धामकुल धुगान्द धर के धुधधार किए जा।

रत्नायना—प्रकाशवीर व्याकुल

## अमृतकलश

भुज बम नदी है बरम धारके मज्जिल।

धार बमने बासा हिम्मत न हारे।

यहा यह धार धर भी पत्थरी हिम्मत से रस्ती मे।

रहा तो तेरी व नाक के मुक्ते भुग तर है।

धुनुध धरम जगह? तेने तो ठस नाय।

धियालय बाज की टोकर मे भी फिलस जाये।

धरम व भिल भी भुग की हल स जम जाये।

धोर धारका भी कबन उरक धम जाये।

कभी न सार्हि मज्जिल का होसना दूटे।

कभी न भूत से उरका बनी वी बल जाये।

उरसाही बलवान् नास्युताहालर बलम्।

सीताहृत्य हि लोकेषु न किञ्चिदपि द्रवम्।



## राष्ट्र को द्रुति, दूर्गति से बचाने का उपाय (तृष्ठ २ का लेख)

है—देश के वायुमण्डल को दूध करने के लिए उन्मत्तवाणी पक्षपात रहित और विश्व निर्लुप्त करने वाली हवा चाहिए। आज देश में भारती को बाइर की बा रही है। चाँके, बलाकार, हूया और चोरी के समानादी के प्रचारार चने पर रहते हैं बाइको में पडित और गरीबी से पीडित लोग मही हैं। बी००० और ए००० हैं। नई दिल्ली में बैंक खजाने को लूटने वाले सन्तान चरो के और उन्मत्तवाणी प्राप्त मुक्त ही है। उन्मत्तवाणी मध्यप्रदेश के बहुत बने बाइको की मजदरा बहा की सचकारी के लिए बहुत बहा सरवरे हैं। दून बाइको के बचने में कतिपय समय कारणी के प्राय खरते कुछ कारण न्याय-प्रवासी की विधिबला, न्याय की प्रति-प्रवासीप्रवासा, धराधिकी को मुक्त करने के लिए राजनीतिक नेताओं के दाना धर्म कुछ ऐसे कारण हैं कि जिनके धरा-राधिकी को दण्ड का मय नहीं रहा।

हमने जो घरेलू का डाखा उन्मत्तवा-कार में हैं कि प्राय बहु विचार का लेख है और प्राय-प्रायम है हम उन्हें उन्मत्तवा प्रसीते का बा रहे हैं। इस विचार की धूमि को लूटे हैं यह विचारने और करने का किसी को प्राप्त समय नहीं है। प्रमाण अन्वी और मुक्तमयी जब पढ़नी बार पर सम्प्राप्त है, बही बही योजनाएं बनाता के सम्प्राप्त रहते हैं। किन्तु कुछ ही समय पश्चात् गरीबी का प्रसंग्य रहनी को धुक्कुर बनाने में, बही विरोधी पाठियों की योजनाएं जलत करने में सक्षम ब का जाये तो सारा समय और शक्ति बचने धर्मकार की रक्षा में ही निष्कष जाता है। सामाजिक जीवन के परिष्कार के लिए कुछ रचनात्मक काम मही हो पाते।

हमारी न्याय पद्धति ईसायी की भावना से प्रभावित है। जिसके फलत का मुक्त केज युद्ध यह है कि पाप के फल दुःख से तलार को छुड़ाने के लिए जलोई पूनी पर बच मने। किसी के मन को दुःख मही होना चाहिए। किसी को दुःख भावर के तलने में उनकी भावना को इस प्रकार प्रकट दिया जा सकता है—

बच मुक्तवादी ने देखा  
रहते नरकविचार।  
हे मुक्तवादी ने मुक्तार  
हम मुक्तवादी ने हैं।

बच धराधिकी पर प्रभु का विशेष कृपाभाव देखा तो दूधधर्मिक धर्मिक कोचने मने कि हमने तो ये ही धर्मों रहे और ये निर्दोष होते हुए भी प्रभु के कृपा-प्राप्त करने के लिए चिन्ताने मने। हम नी पानी हैं, हमारा जो उदार कीर्तिवर्ण।

चोरी और पावनी कोकसवा की वृत्तवा के रक्षकों के नेरे निर्वाचन लेख में १५ से कुछ धर्मिक कृष्ण के क्षेत्र हुए।

मैं उन कैसी का सावधानी से धर्मयन करता हूँ। कर्ह-कर्म सब एक हार्दिकी तक केवत मने। किन्तु परिभाषा यह निष्कर्ष कि किसी भी केवत में किसी की मुक्तुवक मही विना। जो धर्मधर्मोर्मि दुःख को प्राचीन कारावास बचाने हूँ। प्राचीन कारावास धर्म मुक्तने में ही भयकर मयता है, उनकी धर्माधिकी बच ले ही और बहु कट-कटकर १२ या १५ बने ही रह जाते हैं। जहा केवत में चोरी की नी सदिग्ध विधि प्राची है कि बस न्याया-धीन सब छोडकर उसे योग्यपुन कर लेते हैं।

होना यह चाहिए कि प्राय के कानन में कुछ धर्मनी प्राचीन दण्डप्रक्रिया के उन्मत्त के को का समावेश करने इसका स्वयं सेवको बना जा चाहिए जिससे धारावी धारणित हो। उन्मत्तवा के लिए मैं चाहूँ कि केचित् धर्मप्रवासी की एक बात का उपनय महा करता हूँ।

चाहकर मैं लिखा है कि यदि चोरी की घटना घटे पर जाने तो उस क्षेत्र के पुलिस अधिपति रा प्रायेण होना चाहिए कि तीन मास के धरार चोरी का पता लगाकर मये दूध मान को उर्वक माता को दिखाने और धरावी को उचित दण्ड की व्यवस्था कराये। यदि पुलिस धर्मकार के निम्न धर्मों में चोरी का पता न लाय सके तो चोरे पर दूध मान की सति-युक्त उस धर्मधारी के लेन स करानी चाहिए। यह मान किसी उरम है। सतिमय का महना नाम तो यह होना कि पुनिस जलता के जामना की घूरी चोरीब से रक्षा करेगी और यदि कही घुईटना होनी तो घूरी सतर्कता से मास का पता लगायेगी और चोरी को दण्ड दिखानेगी। दूसरा नाम यह होना कि जलता का वरकार में विनाश बडेना और बहु धर्मने को सुरक्षित कर दूध जलता से उन्मत्त कने बचायेगी।

इस समय भारत में धर्मर मया हूया है। धर्मकार धारावी धर्मनी कर्माई से पुलिस को भावीरर जकार निर्मयता से मुक्त करने हैं। उन्मत्तवा है बाने म पाल तो रिपोंरे की दण्ड मही होती। यदि ते देकर रिपोंरे लिखी भी मई तो उस पर कर्माई को दण्ड मही होती। पुलिस की इस मयता पर पत्रकार के एक धर्म प्रवा रक मही अनुरोध कर्माई मुनाया करते हैं— "एक मीरासी के घर में चोरी होने पर जलते बाने में रिपोंरे दवे कर दी और जहा में सफरती के लिए पुलिस धावी। मीरासी हूडका नी रहा बा। पुलिस के धर्मधारी ने मीके का मुनायमा किया और मीरासी के प्रवृत्ता करते हुए को मने धामना का न्याय नी करना प्रारम्भ किया। बचकी, बर्तन-धामे, कपड लिखा दिने। पुलिस बाइडर ने

मुक्त और कोई बहाना तो लिखनी लेन मही रही। मीरासी ने कीहा सब लिखत मुने एक बार मुना कीवने। पुलिस बाने ने सब कीवने पड की। मीरासी ने कहा इनमे एक हूडका और नोट कर दीवने। पुलिस बाने ने धारमय से मीरासी को देखते हुए कहा हूडका तो मुन मी रहे हो यह कहा मया है। मीरासी ने कहा इन देखकर धारकी नोट एवा ककया मरी धार स तो मया ही। इस बाने में कोई धर्मन शीवित नही है। बाने में रिपोंरे सब लिखी प्राची है बच कुछ पडाया बडा दिया जाता है। लेन देन और परिवय मनाय का क्रम कही-कही तो हार्दिकी तक भी पोछा मही छोडता।

देश की धाराधिकी मुन में सुधार के लिए इसम परिवयन करना होना। कुलियो को यह विचारत होना चाहिए कि हम राजकीय व्यवस्था में सुरक्षित हैं। तो मन्त्र ने गहरी बात यह कही मई कि न्याय कीर्ण मुन म और निम्न होना चाहिए।

मन्त्र की दूसरी बात है कि म सक बने प्रजा को धर्मना सतल के समान धर्म समने। जैसा कि कावितार ने दण के राज्य का बगान करते हुए लिखा है 'स विधा विनर त मा केन प्रमथेय'। समस्त प्रजा का वास्तविक विचार रद्द ही बा उनके मता विना को केन जम देने बाने है। ऐन धर्मनीयता के बाता-

वरय ने प्रजावन राष्ट्र की रक्षा के लिए बड से बडा त्याग करने को उचन ही करते हैं।

रामायण और महाभारत में हम पढ़ने हैं कि जब राम और पाण्डव मन को मन तो पीछे पीछे प्रजा के लोग भी साथ बच दिने। यह धार्मिकता का सत्यम वास्तविकी के सहायमुत्पत्ति व्यवहार का ही प्रमाण बा। तो मन्त्र ने परामर्श दिया कि न्यायक धर्म परिवार के मयान धार्मिकता से जलता के स ब वरते।

म न की तीवरी बाय है धासक बातामना और बाइको से राष्ट्र की रक्षा करने बाता ही। राष्ट्रिय सेवा बहा को न केन सत्यन ही को मनु को महीतोड जमन के मने। यह शक्ति तभी धासका बह सचकी और शीर्षक गच्छ की रक्षा-पक्षि तो सम्पावने विनासी और धर्मना राष्ट्र की रक्षा मही कर सकते। मुक्तनी के शासन के विनय विनो में इसी तरह के हुकुमों से राष्ट्र दुर्जन हा गया और विविधी बातामना यहा की प्रजा को धर्मनिम करके यहा की धर्मर सतिम शीर्षक और सत्यमजम तक को यहा म ने पाया प। तो इन सहा के दुर्जन राष्ट्र में धर्मयय दीप भी बा जाते हैं। धर्म देश के प्रहरी सचकी देशभक्त और भी हो तो ऐसे राष्ट्र में बाय धर्म गतिम मही होती।

## धर्म प्रतिनिधि समा उ० प्र० के सत्संगधान में गाँव उत्तरी गोंडवा ११ मुसलमान राजपूत शुद्ध हुए

विनाश १६.५.८५ को १२ वें धर्मसंग उन्मत्तवा में मुक्ति कार्य सम्पन्न हूया। उनमें ११ मुसलमान ने दण्डवा से योयोपित धारण दिया और सतिमार्ह धर्मिक बने की दोषा भी। धर्मनी के शासन महाकमी किन्तु मुक्ति सत्यमयी सतिम हूँ विनाश और सत्यमार्ग धर्म लिखा मुक्तपुन नाम प्रवृत्तवा धा के प्रमयों से सत्यन हूँ। इस कार्य में धर्मसंग उन्मत्तवा के प्रवा की ज्ञानमय प्रसव और मनी भी बचकी प्रवा की उन्मत्तवा बा० बचपा धर्म, कोषधर्म थ योगीप्रधान महानय क्षेत्र-बाय की उन्मत्तवा हूँ।

	पुराना नाम	नया नाम	पिना का नाम
१	लाल मोहम्मद	बन्धु बहादुर सिंह	सतिम धर्मो
		राम सतारी	पति बहादुर सिंह
			मुनी—
		बन्धवा	" "
		पता	" "
		बैरकी	" "
७	नूर मोहम्मद	धर्मो धर्मक धार	मलक धर्मर म पा
८	नूरबहा	सरो बहरी	पनी धर्मो किरम थारा
९	हकीमा	कुं धारा	मुनी धर्मो विमय धारा
१०	फरीदा	कुं धारा	" "
११	सरो बहरी	को एक बन्धवा को तीन दिन में होने बाता है।	
	प्रधान धर्मसंग उन्मत्तवा (मोधा)	मन्त्री धर्मसंग उन्मत्तवा (मोधा)	

हे धर्म! उन्मत्तवा हो बचवाना होता है, उन्मत्तवा से बचकर सुखर कोई बच मही है। उन्मत्तवा मुक्तप के लिए सत्यन में कोई भी बलु दुर्जन मही है।

निश्चया सतिम निर्वाचनमन्त्रित्व म। मा सत् सतिमनिर्वाचन निर्वाचनमुन्मत्तवा। कोई भी सत्यन ऐस मुन को जमन न के तो उन्मत्तवा तथा धर्मन से हीन हो, को निर्वन धर्म सत्यम को धर्मन करने बाता हो। सत्यन से बचने धर्मक विचारिता बहु है जिससे धर्मना उन्मत्तवा को दिया है।



न	
उपमनो—भी	सहीसही माटिया
उपमनो—भी	विषय की पाठ्यपु
प्रचार मन्त्री—भी	देवराज की राजपाल
कोपाभ्यक्त—भी	विरोधीत लाल की दुम
मुक्तकाभ्यक्त—भी	चरित्रप्रकाश कपूर
मेला निरीक्षक—भी	प्रबन्धकुमार कपूर
बलिष्ठाता सार्य	
बीररत्न—सही	की माटिया
सहायक—भी	विषयकुमार पाठ्यपु
	स्वामिदास की सपनेबद
	मंजी



**आर्य जगत् की शान**  
**२०० बिस्तर वाले निर्माणाधीन**  
**नेत्र चिकित्सालय**  
 (अनुमानित लागत दो करोड़ रुपये)  
 के लिए दिल खोलकर दान दीजिए

दान की राशि आयकर अधिनियम जी० ८० के अंतर्गत कर मुक्त होगी ।

सारा हान . बैंक/मनीग्रार्डर/बैंक ड्राफ्ट द्वारा

मन्त्री, माता चन्ननदेवी आर्य धर्मार्थ नेत्र चिकित्सालय,  
सी-१ जनकपुरी, नई-दिल्ली-५८ के पते पर भेजा जाए।

दानदाताओं के नाम चिकित्सालय की शिला पर अंकित किए जाएंगे।

निवेदक

राधोपाल शास्त्रालय संस्कृत विश्वविद्यालय पूर्व प्रधान, सा०धा० प्रति० सभा	सूर्यदेव प्रधान, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा	महाशय बर्मवाल प्रधान आर्य केन्द्रीय सभा	श्रीप्रकाश आर्य सन्धी महाशय कुन्तीशाला केरि० इ०
---	---	--	--

सौजन्य से महाशियां दी हट्टी प्रा० लिमिटेड, ६/४४ कोतिनगर,  
औद्योगिक क्षेत्र, नई दिल्ली-११००१

## “आर्य सन्देश”

नैतिक सङ्कलित के अनुपम उपदेश को,  
 पढ़ना खा है अपनी उपकार लेक कर ।  
 नैतिक-छिद्रात्मक प्रतिपादित पुनीत प्रिय,  
 विद्वानों की मेधानी, सुलोभित हृदय पर ॥  
 तर्क का कुठार विवेक विद्या का पुष्पाक्षर,  
 देता है सचमुचों की हृदय में देव कर ।  
 विस्तार भाव्य प्रतिनिधि वक्ता का है मुख पत्र,  
 क्षीप्र सङ्कलित बनिवे विर्ग लोक वं मेघकर ॥

11

—स्वामी स्वल्पानन्द सरस्वती  
(अभिष्ठाता वेदप्रचार)

## वेद प्रवचन

भारतसमाज सुदर्शन पार्क के तत्वाव-  
धान में सामवेद पारायण यज्ञ(परिवा-  
रिका)२८ मई ८५ से प्रारम्भ हुआ जिसकी  
पूर्णाहुति ३० जून को सम्पन्न होगी।  
प्रख्यात विद्वान् विद्यामन्त्र जी लक्ष्मरी  
जी पधारोने। भार्य जगत् के क्षीर नी बल-  
वान्त्र विद्वान् नेता पधारोने।

कार्यक्रम प्रातः ८.०० स ११-३०  
वैसे तक रहेगा यत्र पुरोहित विद्वान् श्री  
भारत मित्र व गारुडी हैं। सभी धर्म-प्रेमी  
छज्जनों से प्रार्थना है कि समय से पधार  
कर कार्यक्रम की सीमा बढ़ाएँ एवं धर्म-  
लाभ करें।  
धन्यवाद।

**अन्यथादि ।**

निवेदक  
सुबोध चन्द खीगरा, मंत्री

**प्रवेश आरम्भ**

दिल्ली धार्य प्रतिनिधि समिति से संबद्ध मातृ मंदिर कन्या मुक्तक ही ४४/१२२, रई बस्ती, रामपुरा बाजारकी मे विद्यु से प्राणाय तक मे प्रवेश आरम्भ है। वैदिक लोच छात्राश्रमों को प्राबलिकता। उन्नत पी-पीछित परिवार तथा हरिजन की पुत्रियों को नि मुक्तता मे बरीयता।

सम्पर्क सूत्र

डा० बमपाल थापा  
मन्त्री

सूर्यदेव  
प्रधान

**निवेदन**

डा० पुष्पावती  
मूल्याधिष्ठात्री

## उत्तम स्वास्थ्य के लिए

**गुरुकुल काँगड़ी फार्मसी,**

## हरिद्वार की औषधियां

## सेवन करें

शाखा कार्यालय—६३, गसी राजा कैदारनाथ,  
फोन : २६६८३८ शाबडी बाजार, दिल्ली-६



बिल्डी धार्य प्रतिनिधि तथा १३, मुमुवास रोड, नई दिल्ली-१ प्रेष. ३१-१३ के लिए डा. कर्मवास द्वारा सम्पादित एवं प्रकाशित तथा  
वैदिक प्रेष, नवी नं० १३, कैलाशनगर, दिल्ली-११ में प्रकाशित। एचि-३० डी० (डी०) ७३६





## ★ वचन-सन्देश ★

## राजनीति और धर्म

मेरी सत्यनिष्ठा मुझे राजनीति के मैदान में लीज लाई है; और मैं जरा भी सकोच किये बिना और फिर भी पूरी नम्रता के साथ कह सकता हूँ कि जो लोग यह कहते हैं कि राजनीति में धर्म का कोई वास्ता नहीं, वे नहीं जानते कि धर्म का धर्म क्या है ?

आत्मकथा (अग्रेजी) १९४८, पृष्ठ ६१५

मेरे लिए धर्म रहित राजनीति विल्कुल गन्दी चीज है, जिससे हमेशा दूर रहना चाहिए। राजनीति का राष्ट्रो के हित से सम्बन्ध है। और जिस चीज का सम्बन्ध राष्ट्रो

के हित से है, उसके साथ उस मनुष्य का सम्बन्ध होना ही चाहिए, जिसकी धार्मिक वृत्ति हो या दूसरे शब्दों में जो ईश्वर और सत्य का शोधक हो। मेरे लिए ईश्वर और सत्य समानार्थक शब्द हैं। और अगर कोई मुझ से कहे कि ईश्वर असत्य या धर्त्याचार का ईश्वर है, तो मैं उसकी पूजा करने से इन्कार कर दूँगा। इसलिए राजनीति में भी हमें स्वर्ग का राज्य स्थापित करना होगा।

—महात्मा गांधी यगहड़िया, १८-६-२५

## सम्पादकीय

## मौसम पर वनों का प्रकोप

प्राचीन काल से ही भारतवर्ष अपनी शान विद्या की समृद्धि, धन वैभव की समृद्धि के कारण विख्यात रहा है। यहाँ की बर्फ से ढकी पर्वत की चोटियाँ, उनकी कील से चूटते भरने, धटभेलियाँ करती हैं। गाय, मीलों दूर तक फैले ऊँचे ऊँचे पेड़ों से भरे जंगल, फसलों फलों से लदे सागर तक फैले नूतन आदिशियों तक की आकर्षित करते रहे हैं। गाय, गान, सहर-सहर, गली-गली, फलदार पेड़ों के कारण सब कुछ हरितिया से भरा-भरा हृदयोत्तम होता था किन्तु जैसे-जैसे वनों की पेड़ों की घनदायक कटाई होने लगी बरती नग्न होती रहने लगी चली गयी। बाबल रहने लगे और रेगिस्तान के बबड़े फैलने लगे। रेगिस्तान के बबड़े काले साये से बचने के लिए सरकार पेड़ों को लगाने में व्यस्त है। किन्तु जितनी तेजी से जंगलों की कटाई हो रही है उससे भारतीय मौसम पर भी काफी असर पड़ा है। १८६४ से लेकर अब तक हुए अनु-सन्धान से पता चलता है जगलों के कम होने से किसी भी जल की वर्षा निश्चित रूप से कम हो जाती है। और जंगलों के बढ़ने से छ प्रतिशत तक की बढ़ोतरी होती है। १९०६ में मौसम वैज्ञानिक डा० ब्लाड ने यह बताया था कि वर्षा जंगलों के कारण १० प्रतिशत अधिक होती है। भारत में प्राचीन काल से यह माना जाता है कि वनों पर ही वर्षा निर्भर है। इम्पेक्मेट आर्क इंडियन एपीकलचर नामक रिपोर्ट में डा० बिलकर ने नीलगिरि की पहाड़ियों में ऊँटकमंड तथा उसके आसपास के क्षेत्रों में आकड़े एकत्र कर लगभग सिद्ध कर दिया है कि जगलों से वर्षा का सीधा सम्बन्ध है। नीलगिरि की पहाड़ियाँ १८७० के पहले वृक्षहीन थी। जून जिलाई तथा अगस्त के वर्षा के महानो की छोड़कर यह प्राकृतिक गवां कि १८७० से ७४ तक वर्षा के दिनों की संख्या ३७५ थी। इसके बाद वहाँ वृक्ष लगाये गये और जंगल बढ़ने लगे। १८८६ से ९० तक जब काफी जंगल लगे गये उस समय वर्षा के दिनों की संख्या ४१६ आकी गयी। कहने का अर्थिभाव यह है ज्यों-ज्यों जंगल फैलते गये वर्षा के दिन भी बढ़ते चले गये। छोटा नागपुर का उदाहरण देकर मौसम वैज्ञानिक डा० रमनाथन ने इस बात की पुष्टि की है जगनों का होना वर्षा के लिए आवश्यक है। उन्होंने कहा प्रायः से २० या ६० वर्ष पूर्व छोटा नगपुर में जब काफी जंगल थे उस समय वहाँ गर्म मौसम में भी दोपहर के बाद बौछार आ जाता करता थी। इस कारण वहाँ का मौसम रहता ठंडा रहता था कि यहाँ चाय की बेटी आसानी से हो जाया करती थी। जैसे-जैसे जंगल कटने लगे

वर्षा की बौछारों का आना बन्द हो गया मौसम और तातावरण पर प्रतिकूल असर पड़ने से चाय की बेटी भी बन्द हो गयी।

जगलों से वर्षा के सम्बन्ध का अध्ययन इन्स्टीट्यूट ऑफ साइंस बेंगलूर की डा० सुनीता गाडगिल ने किया तो उन्होंने कहा—जगलों के कारण वायु का तापमान घट जाता है तथा पत्तियों से वाष्पोत्सर्जन के कारण वायु घनत्व बढ़ जाता है जिससे वर्षा होती है। वृक्षों का भूमि पर घनत्व तथा पत्तियों की धारण करने की क्षमता भी वर्षा के वितरण तथा मात्रा को नियमित करती है। उन्होंने यह भी देखा कि पतझड़ वाले वर्षों की प्रजातियाँ सदाबहार जल प्रजातियों की तुलना में कम आर्द्रता बनाए रखती हैं। अतः यदि सदाबहार वनों की जगह पतझड़ वाली प्रजातियाँ लगाई जायें तो वर्षा कम हो जाती है। लखनऊ के पीलवो बोटेनिकस रिसर्च इन्स्टीट्यूट के वैज्ञानिकों ने राजस्थान की खारे पानी की भूमियों के नीचे दबे जीवा-स्तो का अध्ययन कर यह पाया है कि पहले इस क्षेत्र में सघन जंगल थे। धीरे-धीरे जंगल कटते गये वर्षा कम होती गयी और रेगिस्तान फैलने लगा। अण्डमान निकोबार द्वीपसमूह, बिहार के राँची क्षेत्र, आसाम के डिब्रूगढ़ तथा बम्बई के साताराकून क्षेत्र में भी वर्षा की कमी का कारण जंगलों और पेड़ों का घटना ही बताया गया है। इथोपिया में तथा अफ्रीका के २५ देशों में अकाल के प्रकोप के कारणों में एक बात यह भी कही जाती है कि वर्षा के न होने में जंगलों की कटाई का महत्वपूर्ण योगदान रहा है।

अतः इस विषय पर मनुष्यमान को विचारना चाहिए तथा नगरी सहरों में फैलते सीमेंट के जंगलों में पेड़ों की हरियाली भी बसायी जानी चाहिए।

—यशपाल सुधांशु



धर्म्यमन्त्रोक्तं च समुत्पन्नं मोक्षरामां बुद्धि-  
न्यायाः । हाव बुद्धीनोक्तं च निष्कर्षा-  
त्तरदत्तं । हाव यथा यथा न विद्या तो  
इहमीहं समाप्तिं निपद्यते । यत्तु दृष्ट-  
व्यं न । ॥ १८ ॥ योऽपि ततोऽपि तद्वत्  
प्रेम हीनं हि चादिगं प्रयया । कीर्तं हीं समाप्तं  
जब कर्मणां पदं तव मयं संसेत कर-  
वत्तु दृष्टनां पदं तव कर्मवृत्तं न पश्यति  
से ध्यान्मन्त्रि नृताः हे श्रीर जब उल्लेख-  
वत्तु विपश्चिन्तनं चकं ध्यान्म-  
ध्यान्मन्त्रोक्तं हि मुनिं तव मुखा-  
ह्वरे समुत्पद्ये वा मुक्त नास्ते न तव  
या इतरे समुत्पद्यो वा भङ्ग नृतेन । सते  
मममया भव हिहि तव उपायं मे रोग-  
भा नृहाः हे उल्लेखी ध्यान्मन्त्रि मुनि-  
तोऽपि हे उल्लेखी ध्यान्मन्त्रि मुनि-  
तोऽपि । अ भेलावनी देते परं यो उल्लेख-  
मुनिना वा ध्यान्मन्त्रं न ज्ञेते ता सममया  
मुनिना हि राम स्यात्तव ।

कायसमाज ने राजनीतिक महत्वा-  
काण्डों की पूर्ति के लिए तो अपने  
सदस्यों को दूसरे दलों में जाने की बुद्धि  
छाटे थे ही रबरी भी घर घर सहज रहता  
रहा - राष्ट्रीय समर्थ के समय भी  
उसके मजिद घटक कायसमाज में काय-  
रह न पाकर निराश होकर दूसरे समर्थ  
की ओर जा रहे हैं तो कायसमाज की  
विधि क्या है इसका अनुमान सहज हो  
लगाया जा सकता है।

धरती ने भी धार्य जाति के पवन  
 व क्षिय न का बाँध ली था। पानन  
 कागिर की बमो, तब तो धरितिक के  
 कानिए सड़ि घटन समाज ने घना  
 निमाना किया था। धरत तो धरितिक वयामन  
 ने विवेक एक का शीतल देकर पीरव  
 क्षोज व तैक था। नमनल थाया दिवा है  
 ये सम्बल हमारे तेनुव यं मे कुटिल हो  
 है। तेनुव धरित प्रकाश लोगो का यह क्षि-  
 धार्य कर्तव्य व उमरदायित्व होता है कि  
 के मयाज ने मये धरितकोतो का धरित्वय  
 करे नू-न-न-न धरितभाओ के हसे युवत के  
 धर्याधारी पीओ के लिये मये प्रकाश-  
 ननन नयाय करे।

दूसरे शब्दों में जीवनधारा के प्रवाह को सर्वदा यतिग्न ल रहें ।

पर यहाँ उल्टी बात हो रही है। जो भी नया साहित्य-क्षेत्र नूतन प्रतिभा मार्ग खोजती है, उसे निस्साहित्य करक या ठोस बना दिया जाता है, या पीछे धकेल दिया जाता है अथवा उसके लिए कोई भूल-भूलैया का जाल रच दिया जाता है जिसमें उलट कर या ठोस कार्य करने से पीछे हट जाना है या अन्ध समुदायी में डूब जाना है।

सगुण अथवा आगुण नेतृत्व में चुम्बकीय शक्ति होती है। उसमें उदारता, विचारशीलता एवं समन्वयकारिता का गुण होता है। यथायोग्य व्यवहार का

## चुनौतियाँ और उत्तर

डा० पुष्पाततो आचार्या  
मातृ मन्दिर कन्या गुरुकुल वाराणसी

साथ यही है कि जा जिस काम की समता  
 रहता है उसका उसी कार्य में लगा  
 देना। धार्मिक काम में धार्यमात्र के  
 नेताओं ने ये गुण से जोड़-जोड़ कर  
 व्यक्तियों को साते थे। उन्हें प्रेरणाहित  
 करते थे और कार्योत्थ में लगते थे।  
 स्वामी श्रद्धानन्द, म० हनुवर, लेखराम,  
 भर्तृहरि के धार्य व्यक्त धार्यमात्र की  
 इसी गण के धार्य मिल सकेंगे।

वास्तव मनुष्य कुलीन व धन को  
 मूल्यता के लक्षण पर रहा है। वह उन से  
 भला बढकर भी उन्हें उनका पद नहीं उठाने  
 चाहता है। इसलिए वे ही शक्तिवश के प्रयोगों  
 द्वारा उन्हें अपने प्राप्ति की सीढ़ी पेश कर  
 देता तो वे क्या कोशिशें? यदि कोई  
 प्रतिभावाली भी कदम चालित स्वतन्त्र हो  
 सके तो तदुपयोग की गाय कहे, तो प्रत्येक  
 मनुष्य बना कर दान दिया जायत है।  
 यदि वास्तविकता के कर्णधार वास्तव-  
 शक्त (Inferiority Complex) के  
 कारण उदभूत न माननी की सम्भावना हो  
 प्रभाव को हृदयगत करने सम्भव है न  
 प्रभाव को उत्प्रेषक विचारकोश में एवं  
 प्रत्यक्ष शक्तिवाली व्यक्ति को उनकी शक्ति व  
 क्षमता के प्रदर्शना के लिये बना दे।  
 तो उनके पास प्रभाव शक्ति समूह सम्भव हो  
 पाये। उनके इस मनुषी, कोमुरी प्रतिष्ठा  
 बर जगत्

इसके साथ ही धार्यसमाज की गौरव  
बूटि होकर खुदिसि इसका यशोमान  
कैल जाए।

पात्र राष्ट्र की संस्कृति को, भारतीय जीवन की सह शोख से सम्यक रूप से निर्णयों। सह शोख राष्ट्र-निर्माण करने हैं। क्या पात्रों को सामान्य व्यक्तियों की तरह रोटी की भी चिन्ता करना चाहे देश। क्या यह सामान्यता के शास्त्रों को स्वयं व्यक्तित्व के प्रवृत्ति के सह सम्यक तो सभी प्राणियों के भावों को तब कर मसीह से उठ जाना चाहिए। क्या कुमारी के काशीर तब महापुत्री से सिद्ध नहीं एक एक पुकार उठनी चाहिए की कि दूसरे (यह तक नहीं) लोग एक कदम नहीं बढ़ सकते। यह देश पात्रों का देश है। समाजों के हृदय में पात्रों की पथ समष्टि।

क्या समाशा है आज हमारे देश की प्रिय प्रबन्धनी के हत्यारो का यहा सार्वजनिक अभिनन्दन होता है । देश को विच्छिन्न करने वालो की यहा पूजा

होती है और देश की जनता व सरकार  
टुकर टुकर देख रही है। और आर्यसमाज  
रूपी शेर की गर्जना भी मौन है।

पर धर्म्यसमाज को सर्वस्य समर्पित करने वाले इसे सच्चे दिल से प्यार करने वाले, मूक रूप से श्रद्धा कार्य की प्रति वे अपने की होम देने वाले धाज मर्महित होकर पुछ रहे हैं कि धर्म्यसमाज मीन क्यों है ? उनका हृदय चरकार कर रहा है ।

भूल गया। धार्यसमाज धनप्रेम धनीत  
को उस धनीत को जिसमे वह सली अरे  
केसरी की तरह पलेक सकट मे, निषवा  
मे धारत मा की धरण धनदा करता  
हुया धाततायि को नुभूता वा। वह सदा  
धनप्रेम धनप्रेम धनप्रेम धनप्रेम धनप्रेम  
प्रतिरोध करता रहा है। धनप्रेम धनप्रेम की  
सर्कार की धनप्रेम धनप्रेम की धनप्रेम  
मे है। धार्यसमाज तो धनप्रेम धनप्रेम ही  
है। धनप्रेम धनप्रेम धनप्रेम धनप्रेम धनप्रेम  
समय है। फिर वह धनप्रेम धनप्रेम धनप्रेम  
धनप्रेम धनप्रेम धनप्रेम धनप्रेम धनप्रेम

[illegible]

आर्य जनता फिर भी सरल हृदय है  
 तया तप से पीछे हटने वाली नहीं। वह  
 रणक्षेत्र में जूम सकेगी पर नेतृत्व उसको  
 सही दिशा दिखाए तभी न वह अपने  
 प्राणों की बचत आर्य नेतृत्व चाहेगा। □

सुख नहीं मिलता कभी विषयों के झमेलों में

नीम की मिश्री में है घमूर का स्वाद बड़ा,  
दूध की खुशबू कहीं छोटी के तबेजों में ।  
माटी के डेलों में है मिश्री का मिठास कहीं,  
खट्ट की का स्वाद कहीं बनस्पती तेलों में ॥

दुर्बलों के लय होता प्राप्य सद्विज्ञान कहा,  
बुद्धि का विकास कहा तास जुगल लेलो मैं ।  
सच्चा सुख "स्वरूपानन्द" है ब्रह्मचर्य पालन मे,  
सुख नहीं मिलता कभी विषयो के क्रमेणों में ॥

ले०—स्वामी स्वरूपानन्द सरस्वती  
(अधिष्ठाता बड़ प्रचार)

## दो कुण्डली

- शर्मसार के शर्म से स्वयं शर्म के जित ।  
 तभी श्रुति दयानन्द का नहीं लगाया चित ॥  
 नहीं लगाया चित नचाई कप्या नचारी ॥  
 ये सत्यार्थ प्रकाश सुखिता अन्धी बारी ॥  
 इसलिये फौजान डी०ए०वी० कैसे खुमार है ।  
 श्रुति दयानन्द के अनुयायी शर्मसार के ॥

- तास कटोरा मे बबी प्रबी धर्म की तास ।  
जिमे देखने को गए कितने बूढ़े बास ॥  
कितने बूढ़े बास गिरिका व ध्रुवायक ॥  
पाश्चात्य का रूप प्रकट नस नस में व्यापक ॥  
कमी रह गई एक जास की, कूके मोरा ।  
'व्याकुल' श्रुति वर का सपना था तास कटोरा

रचयिता— प्रकाशबोर शर्मा 'व्याकुल'

धाम धार्यसमाज के प्रधान हैं—  
बात बीच बीच बर्ष पुरानी होगी। बाबर  
(महाराष्ट्र) ने कहा है वो मुझे ने कोई  
विचार बड़ बड़ा। इस मुझे भी रिपोर्ट  
हासल के पास गई। दोनों पक्ष अपने  
धाम की निर्वाण बताते थे और दूसरे उस  
की दोषी ठहराते थे। सरकार ने इस  
विचार में कुछ बाबर के लिए एक उच्च  
अधिकारी को बाबर भेजा।

बहु अधिकारी बहा पड़ना। बाबर  
के अधिकार लोग उसे जानते थे कि वह  
एक उच्च अधिकारी है परन्तु वह किस  
दरजे के बहा होगा। उसे कहे जात  
न था। उस समय ने अपनी आज पूरी  
कर की विचार की जाय पड़तास करके  
उसे पता चल गया कि उस मामले में किस  
किस का विचार हो है। दोनों दोनों  
बन थे।

जब का कार्य पूरा करके बहु अधिकारी  
बहा के धार्यसमाज के प्रधान व०  
धार्यमान को के पत्र गया। उन्हें कहा  
धार्यमान पता है कि मैं बहा व० धार्य  
हूँ। उन्होंने कहा कि धाम कहिए कीन  
धाम हूँ। तब उस उच्च राधा  
जिन्हा के ने कहा, मैं धाम के नगर के दो  
पक्षों के बीच के पास रहे तबने विचार की  
गुप्त जाय के लिए कहा गया गया।  
दोष धार्यमान काय कर विचार है।

धाम धार्यसमाज के प्रधान हैं। धाम  
की एक पक्ष के साथ बहा हुए। मैं  
भी धार्यसमाज का एक केस हूँ। धाम  
धार्यसमाज के पुराने अधिकारी हैं। धाम

## नक्षत्रमन्त्र—

आर्यसमाज के इतिहास के लुप्त-मुप्त पृष्ठों का अनावरण

## आर्यों की वीरगाथा-३

प्राध्यापक राजेन्द्र 'जिन्हा'

के प्रबन्धोंपेछ मुनकर मैं क्या प्रत्या  
लेता रहा हूँ। जब धाम कहिए कि एक  
धाम के रूप में मुझे इस विचार के बारे में  
कोई रिपोर्ट सरकार को देनी चाहिए ?  
मैं क्या बल मुचना वास्तव को प्रकाश  
नहीं रिपोर्ट जेठ हूँ ?

धार्यसमाज के प्रधान भी व० धार्य  
मानु की यह मुनकर कुछ पक्ष पर परन्तु  
प्रधान भी हुए। धार्यसमाज की गौरव  
मरिना, धार्यसमाज के प्रधान जब की  
प्रतिष्ठा का अपनी समाज सेवा का उन्हें  
जाना था। धार्यने उस राज्य-धिकारी  
से कहा कि एक धाम को साथ हो कहां  
बाहुल्य और सत्य यही है कि हमारे पास  
का भी कुछ रीति है। धाम मेरे कारण रज-  
पात न करिए।

प्रधान की यह धार्यसिंह बात  
मुनकर धार्यने उन्हें कहा, अच्छा यही है  
कि जिसपर बहु विचार अपनी निष्ठा तें  
राष्ट्र की रिपोर्ट जेठ नक्षत्र। बाबर  
का यह विचार निष्ठ गया। कलह निष्ठ

गई। प्रेम ने दोनों पक्ष रहते लगे। धाम  
जानना चाहते थे कि यह उच्च अधिकारी  
कीन था। यह धार्य पुराने धार्यसमाज  
के जाने माने विद्वानों प्रदत्त व्याख्या  
निष्कर्ष कीन जाने धीमात्र बाहु साहब  
बाबूमांरे जो। धाम पास इस संसार ने  
नहीं रहे। अनु मास न धाम चल बसे।  
धाम पुनः प्रवेश का बाबूमांरे के छोटे  
भाई थे।

### जब व० बुद्धदेव भी लूट पिये

वही पुरानी बात है कि उत्तर प्रवेश  
के विचार मधुरा का नौगव वैदिक बर्ष  
प्रहलू एकता बनाया। राजपूतों के इस  
नाम ने भी व० बुद्धदेव की विचारकार  
मुलाए गये। धार्यपास के मोलियों ने  
पूरा जोर लगा दिया कि राजपूत धार्य  
न बनें। राजपूतों क कुछ लोगों को धार्यो  
के विषय उच्छाया गया। वे मुसलमान  
रहते जो तैयार हो गए। निष्पक्ष  
का जब कोई कार्य रचित धाम तो उसकी  
परिच्छा विचारों की जाने। अधिकार राज-  
पूत मुद्र होने को तैयार बंटे थे।

जिसे हिन्दू धर्म का संरक्षित कहा  
जाता था वहीं बालक धाम हमारा धार्य  
है। कतिनाथो म उच्छा कीन निमित्त  
जिना था। विचार की का वास्तव्य बहा  
वही कतिनाथो ने भीता। धामने के  
जिने से १६३० ई० में उनका जन्म  
हुआ था। उनके पिता साहू की बीजापुर  
दरबार में नौकर थे। बीजापुर के मन्त्र  
की बोले, जब कि साहू की प्रहस्यनगर  
की नकाई ने पते थे, मासवार जान ने  
दिम्भी क शास्त्राह की प्रशन करने के  
लिए बालक जिना की उमा उच्छा की दाता  
कै बाबाई को सिद्धपर ने बिल ने गयी  
करने का प्रयत्न किया, लेकिन उसका बहु  
मुद्र प्रयत्न उच्छा नहीं हो सका। जिना की  
के बचपन के तीन वर्ष अपने जन्म स्थान  
विद्यने के किने हो ने बोले। इसके बाद  
बीजाबाई का साहूको के बस के अपने  
नामक के साथ एक किले ने दूसरे किले ने  
अपने रहता रहा। किन्तु इस पंथन परि-  
स्थिति ने भी उस बीर मान ने अपने पुत्र  
की वैदिक शिक्षा में रुचि नहीं माने हो।

माता बीजा बाई जिना की को  
राजाधिर महाराजल तथा उद्वालो की  
कोर मायाई मुनाय करती थी। नारो,  
वीरगा, मुद्रमय तथा माया की नामक  
शिवा भी के विश्वक के बीर उच्छा थे।  
प्रथम बीर दासा की एक देव। इस  
शिवा का परिचय बहु हूँ कि बाबर

## किशोरमन्त्र—

## वीर बालक शिवा जी

शिवा की बहुत छोटी घरमा ने हो निर्भीक  
एक प्रथम को गये। जन्म जात पुरमाव की  
बालको की दोरी बनाकर ने उनका नेतृत्व  
करते थे और पुत्र के बेल बैसा करते थे।

उन्होंने वास्तव को ही विधायिते से हिन्दू  
बन बेल मन्दिर तथा मोक्ष की रक्षा  
करने का इस लक्ष्य कर लिया।

साहू की बाते ने कि उनका पुत्र भी  
बीजापुर दरबार का ऊर्जावान नै।  
शिवा की जब पाठ बर्ष के थे तभी उनके  
पिता उनको बाही दरबार ने ले गए।  
पिता ने कहा कि दरबार की राज-  
सम्पा, रोक-बाध हाथी-घोड धार्य देव  
कर बालक रोब ने का जानेमा और दर-  
बार की बीर धार्यसिंह होमा किन्तु जिना  
को तो जिना किसी और देवे बिना  
किसी और पुत्र ध्यानि पिता  
के साथ ऐसे बनते बने बसे किसी  
साक्षात्पन मार्ग पर आ रहे हो। मन्त्रा  
के सामने बाबरपिता ने शिवा की पीठ  
पर हाथ रखे हुए कहा—'वेदा' बाबासाहू  
को हासल करते।

साक्षात्पन ने मुनकर पिता की बीर

देखा और बोला—'बाबासाहू मेरे राजा  
नहीं हैं। मैं इनके धार्य हूँ। मुझे मुका  
बतना।'

दरबार में सनकी कीन गयी। नवान  
बाबर की और दूर कर देखने लगे।  
किन्तु जिना की ने नेत्र नहीं मुलाए।  
माहू की ने लक्ष्य हुए धार्यमा को—  
'बाबासाहू' जन्मा कर। बहु धरनी बहुत  
मासान हैं। पुत्र को उसने घर जाने की  
छाता दे दी। बाबर ने पीठ फेरी और  
निर्भीकतापूर्वक दरबार ने चला गया।  
घर लौटकर साहू की ने पुत्र को  
पुच्छता के लिए बहुत कंठ पर पुत्र ने  
उत्तर दिया—'पिता की। धाम मुझे बहा  
क्यों न गये थे। धाम तो आरंभ हो कि  
मेरा मसक मुसका मरानी को बाय को  
छोडकर और किसी के सामने मुक नहीं  
सकता।' साहू की मुग हो गये।

इस घटना के बार बच 'पिछे की  
एक घटना है। उस समय शिवा की पीठ  
बनमा बाहू बर्ष की थी। एक दिन  
शिवा की बीजापुर के कुछ भाग पर पुत्र  
रहे थे। उन्होंने देखा की एक कसाई एक

बी व० बुद्धदेव उस काज आ रहे  
थे। नाथ के पास एक मुसक हूँ का ने  
उन्हे घर लानेवा। बाव लोग और पीठ  
पीठकर मुका 'बता मुझे क्या पड़ा?'  
'आप का दीवाना बुद्धदेव बाबा', 'बाहे  
जान ते भाव है परन्तु एक बार मुझे मेरे  
उन राजपूत भाइयो के पास पना है।'

यह उत्तर सुनकर हूँ का की रंगो  
मे महाराजा। उलाफ का बमा हुआ रख  
मर्ग हो गया। उसे यह विचार धार्य  
इस हल न इनता प्रम है। बहु व० की  
के पास गया। और उन्हें भाव न गया। बहु  
गुप्त हुआ। उसे यह विचार नाम दिया  
गया।

वही धार्यसमाज मन्दिर बना। मन्दिर  
राजपूत आज बन गया। धार्यसमाज मन्दिर  
की नींव उसी इतिहास ने रखी। मुद्र व०  
बहादुर की जिनापु इस बहादुर पर बहा  
परा ने इतिहास मुद्र कर रोया कि  
इन हाथो ने उत्तर व० बुद्धदेव की की  
मुकाई विचार की थी। व० बहादुर की  
जिनापु और भी व० हारिश्च की (धम  
प्रतिष्ठित बना हैलो ने है।) उसे कहा  
कि तेरा प्रायश्चित्त हो गया। इन्ही हाथों  
ने धार्यने धार्यसमाज के मन्दिर की नींव  
रखा है। इतिहास के कुछ का एक  
अन्तिम धार्यसमाज का पुत्र कान्हावी बन-  
कर धार्य बर्ष का कान्हासा रहा।

धार्य बहु राजपूतों के धार्यमाथियों  
ने बहा प्रतिष्ठित परिवार माना जाता  
है। यह घटना हैवी की व० हरिश्च की ने  
मुनाई। □

धाम की रस्सी से बांधे लिये या रहा है।  
धाम धार्य माना नहीं। बाहूरी, कपराती  
है और इतर-उत्तर कावर नेमो ने बेकसी  
है। कसाई उसे दाने से बार बार पीठ  
रहा है। इतर उच्छा पुरानो को ही हिन्दू  
है। वे मसक मुकुरे यह बेल रहते हैं।  
उसने इनका साहस कि कि कुछ बहा  
है। मुसलमानी दाय्य ने रक्षक के कुछ कोरों  
तो पता नहीं क्या हो। लेकिन लोगों की  
बिच्छ धार्यवर्ष ने खुनी की खुनी रह गई।  
नामक शिवा की की सनकी जन्म ने  
निष्कर्ष कर लगे। व मुसक कसाई के  
पास पहुँचि और भाव की रस्नी उन्होंने  
काट दी। धाम भाव की एक और।  
कसाई कुछ बोले—दरभे पहले उसका विर  
बल के केन्दर मुद्रि पर मुनके कर का।

साधारणदरबार ने पना। नवान ने  
कोय के साथ होकर कहा—'मुसलमा  
पुत्र बहा उसकी जान पछा है साहू की।  
उस उसे बीजापुर के बाहर बही नेत्र हो।'

साहू की ने दाता लीक कर का।  
शिवा को अपनी दाता के पास भेज दिने  
बसे, लेकिन धरम ने एक दिन बहु की  
धारा कि बीजापुर-नवान ने स्वल्प  
हिन्दू सन्ध ने ने सिवा की की धार्य  
राज्य ने धर्मनिष्ठ किया और जब  
शिवा की हाथो पर वरार होकर बीजापुर  
के मार्गो ने होने हुए दरबार ने पहुँचे,  
तब तबाने पथ में धार्य उनका स्वागत  
किया और उनके सामने मसक मुकुरा।



व्यामपीठ —

उपनिषत् कथा माला—८

## महत्त्व की प्राप्ति

प्रवचनकर्ता—जीतराग स्वामी सर्वदानन्त महाराज

—पनिषदों का मन-मो परम स्वा का मह व गलन किया गया है और यह बत साया है कि सब लोग उसी की उपलब्धा करत हैं पर नु फिर भी प्राण क्या नहीं होता?

महन् का धन है बड़ा सब स बड़ा शान्ता। सब से एक वेद है जैसे यहा पचास साठ मनुष्य हैं हैं। उनमें एक पदमन्त्र भी है। इस कहते हैं कि यह सब से अधिक बलवान् है। परन्तु यदि पञ्च म आदमी मिलकर उसमें सब तो यह उन पचासों के सामने निबल हो जाएगा। परम स्वा को सब से बड़ा इस लिए बन गया है कि वह मन्त्र को सब सम्पत्ति मिलकर ही उसका सामना करे ता न यह सब से बड़ा ही रहेगा। यह सारे ब्रह्माण्ड की बड़ा है। सारी सृष्टि की मिल जाय सब भी यह कहते बड़ा है। उस में कोई बड़ा नहीं हो सकता।

मनुष्य में यह महान् का धन है? जब ४८ उमर महान् की पूजा करे। मनुष्य यदि छोटे से बड़ा बनना चाहता है तो उसकी सरल गता है जो —सबे बड़ा हो। यही सत्कार में स्वीकृत होता है। दुर्लभ धन की इन्तरे के लिए किसी म स्तर की धारण नहीं प नी। छूटे पहलवान को ब पदमन्त्र के पाय साग होगा। विज्ञान सामाजिक समाज लोग कोई भी नहीं। पणि मुन ज म और मरुण के ब धन में उन्ना चाहते हो तो नम्रें उस परमेश्वर की उप मना करनी होगी जो सब ज्ञान और मरुण के सम्म से पूरे है।

सत्कार के पचासों को देवों को छोटे है कोई बड़ा। जब प्राण छोटे-छोटे होतो तो उनकी उपलब्धा घुमे बनतु बट दिखाई देते हैं। जानवरी से कुल बट है कुनो से पलत पलतो में हिमा सब, हिमासक से मुनि। कुनसल को देला तो हुनै उस से बड़ा दिखाई दिया। सत्कार को देला तो छोट प्राकाश पर नई हुनै से प्राकाश बड़ा है। प्राकाश में प्रकृति बट है जो सब से व्याप्य है। प्रकृति से बड़ा परमेश्वर। इसीलिए योगी गुरु बिन होकर प्रकाश में उसी मरुण से महान् परम र की पूजा करते हैं।

धृति साधनसमेत में धरणी रत्नी मैत्री से कहा कि मैं सब सत्कार का सब धन में तोड़ने मगा हू तुम्हारे लिए सब परम विद्यमान है जो बाहे ल लो। सब

मैत्री को पूछने लगी — प्राण सत्कार को छोड़ते हैं क्या प्राण यह बता सकते हैं कि इस सत्कार को छोड़कर कहीं जायेंगे? बता वे प्राण इस बात को, इस धर को, इस परिवार को सब छोड़ते हैं। उन्होंने उत्तर दिया समुद्र प्राणि के लिए मैत्री की योगी प्राण मनुष्य प्राणि के लिए इन बन्धनों को छोड़ जाते हैं फिर मुझे इन बन्धनों में बंधो कसते हैं? प्राण यदि मुझे सब कुछ दे जाये तो क्या मैं उस पर को प्राण हो जाऊंगी? उन्होंने कहा जैसा की पुरुषों को जीवन का सुख होता है उसी प्रकार तुम भी हो सकती है पर ध धन से उस धमत्त पद की प्राप्ति नहीं होनी। मैत्री की योगी तो मुझे इस धन की आवश्यकता न होगी।

मादमी। त्याग से ही समुद्र पद प्राण होता है उलू बन से नहीं मिलता। जो सम्पत्ति त्यागी होता है उसी सब कुछ छोड़ कर समाधि में बैठता है। एकचित होकर उस परमात्मा का ध्यान करता है। फिर जब वह उठता है तो उसकी गता का किसी कर्म में व गलन किया है—

समाधि से उठकर यह उसी पुकार, परमात्मा में देखा है सत्कार सारा। परमात्मा में सत्कार सारा समया है पूजा उभर ही विचार की पुन्याः॥

—ये महत्त्व ब्रह्माय नई के शिष्ट से समान दिखाई देते हैं।

सत्कार में छोटी को सुख देख ही बट बनते हैं। एक धारणी गुरु है। धर के परम लोग उन्ना मान करते हैं क्योंकि यह बाजार में उनके लिए सोई साता है। पहले बन्धों को दिखाता है फिर प्राण प्राण प्राण प्राण को प्रोत्साहन व हर प्राण ही का धाने बन्धों के लिए न लाये या बन्धों को न से प्राी उनके सामने बैठकर प्राण ही का न से तो सेवा उन्ना मान होता।

प्रभु ने तो हुनै इतना कुल सुख और धान द दिया परन्तु हम हैं जो उसका ध्यान भी नहीं करते। लोगों तो सही मिल नेरी प्राणों को मोहा सा कक बा जाये तो मैं बाजार से एक लेकर लताता हूँ। यदि वह दुट जाये तो दुखरी हो जा। परन्तु सब मनुष्यों के एक सेवे नेत्र है इन्हें किस ने बताया? यह तो सब प्रभु की ही कृपा का पद है। विचार भी धान वेले उस प्रभु की ही कृपा दिखाई देती है। सपस

सत्कार में उसी का प्रवचन है।

समिक जिज्ञा की देवों। एक तो यह रस की अनुभव करती है। दूसरा काम इसका इतने की मारी है। जब प्राण कुल जीवन करते हैं तो उसमें जो पचास पलने और कुलसने योग होता है उसे यह जिज्ञा सम्य करती है और सारों में पहुँचाती है। शब्ध भी यही है। यद्यपि प्राण धर पर से निकलता है परन्तु जिज्ञा ही बाहु की नियम पुनक विकासकर सम्य का रूप देती है। हारमोनियम को ही लो। उसके पर्व को हवा देकर बसायो, उसमें व वा का सम्य निरमा। इस सम्य को तुम्हारी उलसी में ही बनाया है। जिज्ञा के समिक सा विकास का जाये तो सारा ही काम रक जाये।

ये हाथ भी परमात्मा में दिये हैं। इन हाथों से किसने काम होते हैं। सक्की पीरने से लिए हाथ में कुम्हारों सेते हैं। गहरी से सत्से गगने के लिए धारा और सक्की धारा करने के लिए रखा उसमें सेर करने के लिए करता। कुम्हार के हाथ मिलकर यही हाथ कुम्हारा बन जाते हैं और धारे के हाथ मिलकर धारा, रदे से मिलकर रदे का काम देते हैं और बरने से मिलकर बरने का। प्रभु ने तुम्हें एक जीवार दिया है तुम्हारे बनाये हुए जीवार तो कर्म जाते हैं परन्तु यह नहीं बचना जाता। प्रभु की महिमा तो वातावात में दिखाई देती है। इसीलिए उपनिषदों में कहा है कि उस प्रभु की पूजा करने में ही महत्ता प्राण होती है।

सत्तरी लीये मार्ग रन मनो स्वयमेव निबल हो बाकोने। परन्तु धारने तो परमात्मा से कुछ मोकर वुनो नदियों पुनिमा धारि को पूना धारम कर दिया है। इनकी पूजा से तुम्हारा सुख बरिड बढता हो गया है और बढता ही जायेगा।

बहो बलवान् होये बहा निबल की प्रवचन होये। सत्कार में सब एक ही जैसे बलवान् धनमा धनमा की हो सकते हैं परन्तु यह कर्माग्नी होना चाहिए कि जिस को लोग बा बा। दुख सम्य उने ही मारते लये। जब बंधों के विचार छोटे हो जाते हैं तो वह छोटी को मारने लोग बहो सत्तरी बलवानों में धनमा धनमा धारा के सामने भी नवन प्रभुने सम्ये हैं। यह सत्तरी बहो? मेरे माई। यह सब परमेश्वर की पुन्या का पद है। इसी से

यह दुर्लभा हुनै है।

देवों। पूष का धारने पिता के लिए क्या कर्तव्य है? धारने पिता का सम्मान करना। पिता को धारा दे उसका पालन करना। जीवन बने तो पहले पिता को खिलाए, पीछे से धाय काए। धायकल तो बनी पुनो के मोकर ही सब कुछ हैं। न पुन ही की प्राण गता है और न माता पिता ही को, कि किसने मोकरा किया है और किसने नहीं? मैंने एक सुक को देला। यह भी ९० पाव बा दुकाण करता बा एक बार उसका पिता उसके पाल लाया, उसने जम मगा। सक्का कुल निबल रहा बा गुरत उठा सब काम छोडकर मर ने पानी लाया और पिता की को खिलाये। रात को मर जाकर पिता के बरुण बोये, उनमें जीवन काया। मैत्री का मोकर ही है उनसे काम बने हो। कयाते? यह मोला, मोकर पानी तो बरुण बा होने परन्तु पिता की के बन्धों को मोकर ही धायक मुने होता है उसे मैं ही जानता हूँ। धायक मुने मोकरों से काम कर के कीये प्राण होता? पिता की कीया पालन करना मेरा कर्तव्य है। उनकी धारा पालन करने में मेरा कर्तव्य है।

एक दूसरा सुक बा। उसने माता से रकी भी। पिता पिता का नाम उन्ना रहता बा। जब पिता ने पानी लाया तो कह दिया कि 'बड़े मे हाथ हुआ है पी लो।' यह कहने पिता की धारा का पालन नहीं करता बा। पिता का नाम तो उन्ना बा परन्तु पिता की सत्तरी कोई भी नहीं मानता बा। मादमी। पिता की प्रस मगा उनी पर होनी है जो उसकी धारा का पालन करता है। इसी प्रकार परमात्मा भी उसी पर प्रमन होता है जो उसकी धारा का पालन करता है। परन्तु रना सब के सक्की को सब की प्राण, नाथो को जानता है, परन्तु किसी को कुछ करता नहीं। यदि कताता भी है तो उस सम्य बह बह कोई हूना काम करे लता है मैत्री में तुम्हारे सेवे मिलनामा पाहता है। तुमने समिक दुखी को देला और मैत्री हाथ बढाया। परमात्मा ने तुम्हें तो सत्से नही किया। उसने मेरे धन में कहा, कि ऐसा मत कर यह काम दरा है। यह मेरे माई। मैत्री कर दक्षिणा मे लास। यह सब से उतम निबल है। धरणा स्वयम ऐसा का कि तुम परमात्मा की धायक सुनकर उसका अनुकरण कर सको। ऐसा कर। सत्कार में जो किसी के दुर्गुण दिखाता है, यह सक्का है और जो किसी के दुर्गुण प्रकट करता है यह दुख है। धरगुरु रहित तो सत्कार में कोई भी नहीं। यदि तुम किसी का सुनार करना चाहते हो तो उ एकात्म मे पचासो हैं। उसके मनुष्यों का विडोरा न पीतो।

पुनवी के लिए दुख महाराज है, परन्तु सत्य को किसका बहारा है? उम परमात्म का, जिसने उसे बनाया है। इसी से

प्रश्न होता है कि परमेश्वर किसके ध्याहार पर है? उपनिषद् उत्तर देते हैं "बहु धर्मयो महताः ते धर्मना ध्याहार ध्यायन्ती हि । तुम भी अपने जीवन के दूसरों को छुड़ाना हो, पर परमत्मा के विचारण और किशोरा का सहायता न दुष्टो । परन्तु तुम ही किशोरा गये तो बहुत दिनों लम्ब कर दिये, पर कभी किसी मित्राग्री को बार-बार भी नहीं दिये जाते । जो फिर आये, उसका कोई ठिकाना है । बहु तो विन प्रस्थितन सत्य को ही ध्याता जाता है । परमात्मा ही उठाये तो उसे । इस प्रकार ज्ञान नहीं बनता । तुम अपनी ओर से सब को सहायता दो, साथ ही परमात्मा से उस के लिए प्रार्थना भी करो ।

तुम हिन्दू हो, धर्मज्ञो से पूछा क्यों करते हो ? तुम्हें मैं तो उन्हें धर्मज्ञ बनाया है । क्यों कभी किसी मुसलमान ने भी पूछा को है ? एतलिक के महीने मे पुनः मे एक उत्तरक था । हम लोगों ने कहा बेसा नगोस धीरा गाँवों को छलपन हजार मूर्तिवासी । उन मन्दिर के धर्मज्ञ भी वर्जित करने गये । महा प्रवास हजार काहाल मे । क्या हुआ उन्होंने सब धर्मज्ञों को बन्धक देकर बाहर निकाल दिया । क्या हमने दर्शन कर ने मे मन्दिर धर्मज्ञ को जाता था उन्हें बैसकर पतिव धर्मज्ञ प्रभु पतिव हो जते ? दूसरे दिन मूर्तिवासी पूरा भी गये । मैंने कहा कि यह क्या बुझा । मन्त्रवासी को भी कोई चुरा मे गया ?

एक दिन हम महादेव को बेसने के लिए गये । एक दूसरे मे पूछा— "ध्याय हाय क्यों नहीं जोखते ?" मैंने कहा, "ध्याय को जोखे ?" मन्त्रयो को देखो । पतिव पत्नी दोनों का रहे हो, यदि कोई पुत्र उसकी पत्नी को इशारा भी कर ने भी मरने मारने को तैयार हो जाये । यदि हाय मे मन्त्र कर ने सब को उसे मार दी है । परन्तु इन महादेव की भी पत्नी तथा पुत्र दोनों को ही ओर उठाकर ले गये और मे महादेव की बोले भी नहीं । इसकी पुत्रा गया ध्याय को कपटी काहिए ?" इस प्रकार जब ध्याय भी सोचिये तो सहाय पर परमेश्वर के मुण्डो को मानक उनका ही धनुकर ध्याय को करणा होता और उन्हें ही पूजा करने के योग मानना पड़ता । उनके सिवाय और किसी को भी नहीं ।

कैसे, धर्मज्ञों को जब तुम सहाते हो अपना मतानस्यकी उनसे कहत है कि हमारी धर्म या माना । मुद्रिमान बैस रहे हैं कि ऐसी धर्मना मे उनके दूसरे मतानस्यको मे वा सिम्मा कुछ कहिन नहीं । इसलिये मे तुमसे कहते हैं कि धर्मज्ञो के साथ न्याय करो । प्रेम करो । कभीकि मुद्रिमानो प्रेम को बैसती है । कभी तुमने अपनी इस दुर्लसता को बैसा है ?

एक कारकी कवि ने कहा कि "अपनी मर्यादें ही धन धन था, अपनी दुर्गाई को भी बैस और उसे हुए करने का प्रत्यक्ष ।"

मही कोका, इसीलिये शब्दाई भी हूँ कोकर कर भी बई, क्योंकि दुर्गाई और शब्दाई दोनों एक जगह नहीं रह सकते । धर्म मुद्रिमाना तो इसमे है कि मुद्रिमान अपनी दुर्गाया बैस और दूसरों को शब्दाई बैस । अपनी दुर्गाई छोदे और दूसरों की शब्दाई इष्टम करने धर्मना ध्याय को बसा बनाये । तुम्हारे साथ रहते हुए उन्हें कोई धर्मज्ञ रहे ही क्यों ? परन्तु यहाँ तो धार्यसमाज वाले भी कहिये तो मही कहिये कि "ध्याय पतिवोद्वार की मोटिय है ।" जब बहु मुद्रिमानमा बा ईसाई हो जाता है तो क्या धर्मज्ञ रह जाता है परन्तु तुमने रहते हुए तो यह धर्मज्ञ सत्य की उत्तरका मीक्षा कभी नहीं छोडता ।

एक मुद्रिमान मे बैसा तो रहा था, एक साथ मुद्रिमा था निम्मा । साथ मे पूछा, "काई ?" तोसे क्यों हो ?" उसने कहा, "पतिव ?" विचारो तो बडे-बडे हैं । धन है मही । ध्यायको साथ ध्याय कर रोया हूँ । कोई विधि बता दो तो सत्यम पाकर ध्यायन करूँ ।" साथ मे कहा, यह पूछा है इस विलय (बन) करते हैं । ताम्बा लेकर उसे जल गरम करो । जब वह गरम हो जाये, तो इस पूछ के पते उससे लगा दो, वह सोना हो जायेगा । परन्तु उस समय मन्त्र का विचार मन मे ना था, यदि ब-दर का विचार मन मे था यग तो सोना नहीं बनता । धर्म वह सोना बनाता है तो नहीं बनता, यह ब-दर का विचार मन मे था जाता है । इसीलिये तो तुम ध्याय नहीं रह सकते क्योंकि तुम्हारे मन मे दूसरों को धर्मज्ञ समझने का विचार पुनः हुआ है । यह तुम्हें उनमे प्रेम नहीं करने देता । फिर तुम्हारी उल्लाहो भी तो कैसे ? ईश्वर के मानन के पास यदि बैसा न भी रहे तो उसे ललोक रहेगा । उसके हृदय मे आमुल्लास नहीं पायेगी । कारण, यह दूसरे के धर्ममुण्डो को क्षिराता और उन्हें अपने मे सहामता देता है । यहाँ तब उसकी सक्ति है दूसरी का बैसा कर कता है ।

उसी का नाम पवित्र कहा है । जैसे एक मुद्रिमान मानक को बैसने के हृदय मे प्रेम उमड़ जाता है । ध्याय बन के निमन-किमारे बन रहे हैं । जब बसा निमन-को सुख है । ध्याय मन सत्य बहाई बैठ जाने को करेगा । एक तुम बसा ही सुख है । दूसरे एक उसकी लाजार्ई लीकी रहे । ध्याय मन उसे बैसकर बसा ध्यायनित होता । ऐसे ही परमात्मा का पवित्र मान भी सिम्मा पर जाते से सिम्मा पवित्र हो जानी चाहिए और मन मे उमका ध्याय पाते ही मन बरपा हो जाता चाहिए ।

माधवो ! ध्याय रखो । जो पदायं पदाय है, बहु मन को पवित्र कता है । परमात्मा पवित्र है, उसके ध्याय ले, उसके चिन्तन के धर्म मे पवित्रता जाती है । निराल प्रति अपने मन को उसके ध्याय ले ।

दर्शन होने लगे हैं क्योंकि यह पवित्र मन मैं जाता है, मैंने मन मे नहीं जाता ।

ध्याय को के लिए जाते हैं, मोटा से जाते हैं, फिर उसे मिट्टी से मासते हैं । कपडा बैसा हो जाते तो साधन से कोते हैं । सीधा बैसा हुआ जाए तो मासिका मिट्टी से साफ करते हैं । तोने के ध्यायपुत्र को ध्याय मे तपते हैं, शब्दाई लगाते हैं । प्रत्येक वस्तु के पवित्र करने के लिए कोई न कोई ध्यायन करता जाता है । परन्तु जब मन बैसा हो जाय, तो उसके लिये पर भूत कोसने, पर लो को बेसने का भूत सवार हो, तो क्या करीगे ? मैं बताऊँ, इन बातों को छोड दोमे तो मन स्वयमेव पवित्र हो जायेगा । परन्तु कोस कोस ।

उपनिषदों मे सिखा है कि जब पदाने मे मन शुद्ध हो जाता के सब धारी शुद्ध होता है । यदि हमारी दुर्बला ही रही है तो इसका समाप्त हृद अपने ध्याय हो है । किसी ने हमें भी मही किया, हम ध्याय हायो ध्याय ही बुझी हो रहे हैं ।

बाणी से परमात्मा के पुत्र बनम नहीं हो सकते । मन से उसका सत्यम करो । उपनिषदों ने कहा है कि ध्याय पर ध्याय बाणी का ज्ञान नहीं कर सकते । कारण, कोई भी काई जिते तुम बाणी से कर सकते हो, ध्याय मे नहीं किया जा सकता, पर से ध्याय बाणी को किसी पय मे नहीं किया जा सकता । नीचू ना स्वाय यदि कोई तुमने प्रुले कि "कहा होता है ?" तो तुम प्रुलेमे कभी शब्दाई बाई है ? वह कहे 'हा, ध्यामी तो लाई है, मन्त्री भी लाई है परन्तु नीचू नहीं जाना ।" तुम कहिये, 'मही बैसा नहीं ।' 'ध्यायना भी जाना है । तुम फिर कहिये, बैसा भी नहीं । नीचू तो नीचू ही है उसका स्वाय किसी से नहीं मिलता ।' इस प्रकार जब परमात्मा के बनाने हुए पदाय ही ठीक ठीक चित्त में नहीं था सक्ते तो वह ध्याय कैसे था सकता है ? जब तुम किसी को छोड सोते ठीकी उसका ज्ञान हो जायेगा । ध्याय कहिये, 'किन्ता को छोड दिये', परन्तु ध्याय को मन को पवित्र का ज्ञान नहीं । उसका पता तो जानी बलना जब तुम उठे रोकने का प्रयत्न कराने । धर्मो तो तुम मन के पीछे पीछे जाते हो । ध्याय को सनिक मन को दृष्टान्त के लिए सन्मया करो । उस समय नहोने कि मन नहीं बनता । बुरे विचार पैदा करने हो तो उठ मन लग जाता है । परन्तु उठे रोकने बजोने तब मन की ध्याय का पदा बरपेगा जब उठे रोकने के लिए पदाते, तब बागोने कि मन को रोकने की बिधि तो छोड रहे हैं ।

मन रोकने की ठीक बिधि का ध्याय करण करो । उठते, बैठते, सोते सर्वत्र अपने काई व्यवहार मे परमात्मा का ध्याय करो । परन्तु जब परमात्मा की उपमाता करो तो अपने काई व्यवहार से ध्यान हो जाओ । उस कभरे मे कोई ध्याय

एक ध्यायन । हाय तुम्हें धीकर स्वस्थ होकर, ध्यायने जीवने ? यह निम्नता का बहु समय जब तुम दूरे प्रेम और विनियता के साथ परमात्मा के पास बैठकर दृष्टान्तों में तब ध्यायका मन ध्यायने शब्दा ठहरेगा और कोई भी ध्यायने वय मे जाता नही जाता । जिस ज्ञान मे विनियता और प्रेम नहीं होता वह कभी सत्य नहीं होता । जो समय उसके लिए सबसे ध्याय है, उसे तो तुम बन्ध को देते हो । एक निम्न समय हो जाने पर सन्मया का समय होता ही, समय स्वयं तुम्हें बुलाये करे । तब मनको कि तुमने पट्टी मजिब पूरी कर की । तुम मन के गद पर नर करने के लिए जाते हो । पानी मे पैर नहीं डालते और फिर तुम कहते हो कि तुमने तो जल कुछ नहीं डाला । जल तो सब कुछ कहे, जब तुम उसके शब्द प्रवेश करो ।

सांग भी जब अपनी बाँधी मे जाने लगता है तो मीठा हो जाता है । इसी प्रकार मनुष्य जब ध्यायने परमात्मा के सामन जाता है उसके धर्मको मैं मन सहाता है तो उसे मृदु और पवित्र होकर जाना चाहिए ।

जब बाणक ध्यायने पर मे जाता पिला को "भी ब्रह्मका सत्यम करारा है तब बाहर जाकर भी बैस ही 'भी' कोला । धर्मनामायिक बात सभा पदल ही पतिव कहें कहे ? जिस को कभी लगना नहीं करी कहते हो, 'जिस नहीं जाता ।' दुर्गाया मे कहते हा, 'बुडे होने तब कहना करीगे ।' परन्तु एक उर्दू कवि कहता है कि—

है तबका बही,  
जो कि जवानो में धाया हो ।  
है जोस बही  
जिसका कि पीरी मे बर्बा हो ॥

पदायि पवित्रता बही है जो दुर्गायात्मा मे प्रकट हो कर पाये बही है जो दुर्गायात्मा मे भी क्षिा न रहे । है बाई ! परमात्मा है दूर से दूर परन्तु ध्यामी के लिए । जो मुद्रिमान् ? उसे ध्यायमनुकर दू बडे हैं उनके तो वह किन्ता है—

एक माता एक सरोवर मे स्नान करने गई । बहा एक पुन था । माता ने अपना ध्यायपण उतारकर पूज के साथ बटव । पिता और स्नान करके पर बैस गई अपना ध्यायपण बहा से उतारना पूज गई । एक पुत्र काया, उसने सरोवर में बैसा कि एक ध्यायपण बस मे पडा है । वह जब मे दूक की लगता है परन्तु ध्याय-उपदेश हाय नहीं धाता । फिर बाहर धाता है फिर जब मे देखा हा, फिर दूककी लगता है । कबीरा साहब का उपर से पुनः हुआ उन्होंने पूछा, 'बाई ! तुम इस ध्याय पर बार बसो दूककी लगते हो ?' उसने उत्तर दिया, 'हा ! दूँसा हा महाराज !' उन्होंने कहा, तुम ध्याय और बहुत का ज्ञान नहीं । जिसकी धोर तु

दिखते दिने बाय की ध्यानी मे एक तृफन उठा जा जो बीमाग से कुछ बँठ गया है। यह तृफन बा कलकत्ता हाईकोर्ट ने कुरान पर प्रतिबन्ध लगाने की याचिका के सम्बन्ध मे। बम्बईर पाठी जहाँ मुसलमान अधिक है और बगला बेग जो अब इस्लामी देश बन चुका है, में इस तृफन ने हिंसक रूप की बाण किया और कई लोग मारे भी गए।

इस्लाम और प्रतिबन्ध का गहरा सम्बन्ध है। सदार के लगभग सभी इस्लामी देशो मे मुक्ति युद्ध पर, गमिन्द बनान पर, पुरान मन्दिर को मरमत्त पर और खुले रूप मे कला-कोठम करण पर प्रतिबन्ध है। बहुत से इस्लामी देशो मे बाह सत्कार पर भी प्रतिबन्ध है। इनमे अफेक एस देश है। जिनम माता, उपनिषद् धार्मिक पुस्तक ज्ञान पर भी प्रतिबन्ध है। तुर्की और इरान मे माता और उपनिषद् पर भी प्रतिबन्ध लगाया है। बाय की विचारन कायेदी जिसमे हुबलत मुहम्मद और हुबलत मसीहा का नरक मे पीठा हुवा दिखाया गया है, पर बा सभी इस्लामी देशो मे प्रतिबन्ध है।

काश्मिर और अजिगर का ह्रास मे प्रकाशित पुस्तक 'फोबम एड इन्फान्ट बिमन विमनाह के कुभर का मास जाने का उल्लेख है, पर पाकिस्तान मे प्रतिबन्ध है। जैसे की बात यह है कि हिन्दुस्तान जैसे बर्धनिरपक्ष राज्य मे भी मुसलमानो के इबाय के कारण भी ०० लोगों की प्रमरीका मे प्रकाशित पुस्तक 'कुरान एड कालिगर' धा विधानसभा गायक की विलो से प्रकाशित पुस्तक काय बाया का मे कुरान पडा होला। और डा रमेल प्राय की पुस्तिका सैने इन्फान्त मयो छाया ' पर प्रतिबन्ध लगा हुवा है। जिस मजहब क अनुयायी प्रतिबन्ध के इतन संशयी है, वह कुरान पर प्रतिबन्ध लगाने सम्बन्धी याचिका से तत्तन उठिन हो गय, वह प्राधन्य की बात है।

याचिका की कहानी भी बड़ी राबक है। जो सी० एम० पोषडा नामक एक सज्जन को कई कर्मों क कानूनी सहायकता है, ने अग्रेल १९८४ मे कलकत्ता हाईकोर्ट मे एक याचिका पेश की जिसमे माग की गई थी कि धरती मे लिखे कुरान को उसके अनुयायी १२ प्रासन्नक लगाया जाय मसीह के उठने - हुस मी एसी बाते विली हुई है कि भारतीय संविधान की धारा १५३ ए का सन्ध उल्लंघन कर रही है और मीर मुसलमानो के प्रति विभेद और हिंसा का प्रतिपादन कर रही है। याचिका मे कुरान के ऐसे सभी उल्लेख भी लिखे गये थे। न्यायमूर्ति श्रीमती पद्मा लाला और ने इमे विचारण स्वीकार कर लिखा और पवित्रकी बगल की सरकार को ओडिस, दिवा कि है, एड सज्जन के सज्जन

## 'कुरान' कानून और प्रतिबन्ध

डा० रामप्रसाद मिश्र  
एम० ए०, बी० एम० डी०, बी० लिट

अनेक पुस्तको से लेलक डा० रामप्रसाद मिश्र सप्रति डा० ए० बी० कालेज मे हिन्दो के विभागाध्यक्ष है। दिल्ली विश्वविद्यालय मे स्नातकोत्तर कलाओं की पढाते हैं। देश के प्राय सभी प्रतिष्ठित पत्र-पत्रिकाओं मे प्राय के लेख छपते हैं। समस्याओं के गहन अध्ययन और विश्लेषण के लिए रचित डा० मिश्र ने इस लेख मे कुरान पर प्रतिबन्ध लगाने सम्बन्धी याचिका पर देश भर मे चली गइल के सम्बन्ध मे एक विचारपरक चिन्तन प्रस्तुत किया है। —संपादक।

पथ छोड़ें और याचिका पर विचार करने के लिए २७ मई की तिथि तय कर दी।

इस चीज मुसलम बकीओ और सबायो के विरोध के कारण यह याचिका किता ग्रन्थ जन को देने की बात कही गई। मुख्य-मार्गाधीन ने इस न्यायमूर्ति बासक का हैरिया। न्यायमूर्ति बासक ने मुसबाई की तिथि २७ मई के इबाय पर २९ मई कर दी। भी बायबा को इस बयल का मुपमा १९ सारास रात की बी गरी जो ने १९ मई को बयालत मे पेश हुए और उन्होंने याचिका के पथ मे बका तक चलत और तथ्यपुल सक्कम दिया। न्यायमूर्ति बासक ने उनके विली कर्ष का बज्जत दिया बिना केबल यह कहकर याचिका रद्द कर दी कि कुरान एक पवित्र पुस्तक है इसलिए वह कानून बाय न्याय-पालिका का पारान्त मे नहीं बाता। समा-धार पना मे छोटी पारान्त क अनुसार कदाय विधि मना की ०० के नेन और बदायी जनरल भी उस दिन कलकत्ता मे म बाय सम्बन्ध कृष्ण के कृष्णे पर पहले तिथि बबती हुई और याचिका को सक्क मुन-सीधो पर विचार किने बिना रद्द कर दिया गया।

इस प्रकार सचाई की परल किये विना उत बहा दिया गया। भारत मे सब को इस प्रकार दबाय जाना जिरका लेख नानथ सत्यमेव जयते है, हर हरि के भियनमना है।

परन्तु इस याचिका के पेश होने से एक भास बनल हुवा है। बहुत से लोगों को सक्की बाय पना क्या कि कुरान मे कुछ सेवी बातें विली है जो कानून और मागका सगत नहीं है। इस्लाम के प्रबन्धों की बगल मे पथ गये है। ने याचिका के उठाई गई बातों का मे बज्जत कर गये है। परल मे माग्य कर सकते है। बाय के सारकसि प्रगतिशील और बर्धनिरपेक्ष लेखको और बुद्धिजीवियों की भी इच्छे बाकी है डेही हुई है। उनमे से बहुतो ने कुरान को पडा नहीं है, इसलिए मे कर्मो के आधार पर तो इस याचिका का विरोध कर नहीं सकते है। परन्तु उन्होंने इस

याचिका के विरोध मे लिखकर बिज मनोमुक्ति का परिचय दिया है, वह न प्रगतिवाद की परिचायक है और न सेकुलरिज्म की।

सवार का इतिहास इस बात का साक्षी है कि इस्लाम और कुरान के नाम पर गत १४०० वर्षो मे बहुत मारकाट हुई

### निर्वाचन

धर्मसन्देश पवित्र विहार नहीं चिली ६९ का बर्ष १९८४-८५ के लिए निर्वाचन इस प्रकार हुवा है—

प्रधान श्री बी० एम० बीबीर  
उपप्रधान श्री राबबेर मल्लिक  
उपप्रधान श्रीमती पद्मा लाला  
मन्त्री बर्धनोर लाला  
उपमन्त्री श्री राबबेर मल्लिक  
प्रचारमन्त्री श्री रामचन्द्र वासनी  
सबजनमन्त्री श्री मनोहरलाल बदाय  
कोषाध्यक्ष श्री हरिचन्द्र बज्जत  
धर्म्य, पुस्तकालय  
व नगधार श्री बोडभूयकास सेलिया  
मधयो बर्धनोर लाला, मन्त्री

धर्मसन्देश कोलकत्ता का बायिक युवाय विनाक १६ मई ८५ को सनाय हुवा। और सर्वसम्मति से निम्नलिखित परिचायको चुने गये।

प्रधान—श्री शिवप्रसाद मल्ल  
उपप्रधान—श्री सुशील कुमाराजी बायिका श्री हेमचिंद की

(पृष्ठ ७ का पथ)

जुकरा है वह जो बाया है, प्रतिबन्ध है। बास्तविक पदार्थ नहीं। बास्तविक पदार्थ ही ऊपर बुझ पर है उल्लेख है।

इसी प्रकार सेवकक मनुष्य जून मे फलकर परमात्मा बायिक के उल्लेख बायको का प्रयोग करता है और उसको नहीं पाता, परन्तु ज्ञानी एक ही बल मे अपना काम बना लेता है।

मुल को बल बाय मुल को बल हुरी एही।  
मुली के मुल मे कर्मो की बात को हुरी एही।

बल बा जून के मुपमा

है। हिन्दुस्तान को भी यह हुजार बर्षो से हलका कटु अनुभव है। बास्तविकता है कि हिन्दुस्तान के लेखक और विचारक इस मारकाट को परेशा देने बाये मूल कारको को समझने के लिए खुले विचार के कुरान बा। सम्भवन करे और स्वाह को स्वाह कहने को हिम्मत नहीं। हिन्दु-स्तान और हिन्दुओं की परम्परा विचार-स्तरनता की परम्परा है। बाहू हारकाट की मुका, विचार और मीरमिन्ता की पूरी छूट रही है और है। हिन्दु विमता को बा विमता रहा है कि सब बिज नहीं सकला। इसलिए उन्होंने हर विषय पर खुल बिज मे विचार और खुसी बहल का प्रतिपादन किया है। इस बाट्ट के कुरान पर प्रतिबन्ध लगाने की माग हिन्दू परम्परा के प्रतिकूल है। परन्तु कुरान मे क्या लिखा गया है और इन्मे कीन की बातें कानून और मागका विरुद्ध है, उनको जानना और उसके सम्बन्ध मे बड़ी तथ्यो को पेश करना एक स्वयं लोकसाक्षिक परम्परा है।

ने १६५, एकर रोक  
नई दिल्ली-११००६०

मन्त्री—श्री प्रेमसावरजी मुल  
उपमन्त्री—श्री माताप्रसाद की धार्म  
श्री नारायणलाल को मिलल  
कोषाध्यक्ष—श्री नृपति राय  
पुस्तकालय—श्री कीर्तिलाल शिवप्रसाद मुल प्रधान

### शोक-प्रस्ताव

दिल्ली धार्म प्रतिष्ठित सभा के सनल परिचायको एम बमारी धार्म-समाज भासक बरलो के मन्त्री तथा सभा के अन्तरज सदस्य श्री बमारी लाल बाबाई के धर्मसन्देश देहालान पर गहरा दुःख एक लोक व्यक्त करते है तथा न-निता परमात्मा से प्रार्थना करते है कि वह विगत पालना को धार्मिक प्रदान करे तथा उनके विधियों मे सतन हुकी परि-वार को इस महान् दुःख की सहेरी को सामर्थ्य प्रदान करे।

डा० बर्धनलाल धार्म  
महागमनी

बह बायका लिज सगा।  
जिसकी बायिक से मज्जका  
या वह मुल को मिल गया।

बरे बायल। वह तो  
बायिक से बायिक हो  
पर तु गही बायिक की।  
श्री हैसला मुल को सगा  
नू सेला उसको गही।

वह परमात्मा पवित्र मन मे ही था  
कामाई है अपवित्र मन मे गही। पर-  
मात्मा-पवित्र की परमात्मा पाव करने से  
सवार विमता नहीं, बनता है। इसलिए  
हैसल वासला से सेवा पर होला इही  
का बहारी की।



## समाचार-सन्देश

### ला० रामगोपाल शाल्वाले द्वारा आर्यवीर दल प्रशिक्षण व्यायामशाला का शिलान्यास

गुरुकुल अम्बर मे १३.६-८५ के बस रहे धार्यवीरदल के बीडावल नमा रोह मे भ ग नने के लिए सार्वेधिक धार्य प्रतिनिधि सभा दिल्ली के प्रधान श्री ला० रामगोपाल जी शाल्वाले व उनके मन्त्री जी भोमप्रकाश जी त्यागी ने धार्यवीरों के व्यायाम शाली बसनाग, सत्य-सत्य बसनाग के प्रशिक्षण की बड़ ही संचिपक इन से बेसा तथा उसे बेसकर मे अत्यन्त प्रसन्न हुए और उन्होंने यह कौशल किया कि धार्यवीर दल का मुख्य केंद्र गुरुकुल अम्बर मे ही होना चाहिए । इसी कार्य की दृष्टि हेतु सार्वेधिक धार्य प्रतिनिधि सभा, दिल्ली के प्रधान जी ला० रामगोपाल जी शाल्वाले तथा इसके मन्त्री व

धार्यवीर दल के सहायक जी भोमप्रकाश जी त्यागी एवं धार्यविचार इव हस्ताक्षर नेताओं ने यह फैसला किया कि धार्य बीरों के नियमपूर्वक प्रशिक्षणार्थ व्यायामशाला का होना अनिवार्य है । प्रत्यक्ष विचार विमर्श के पश्चात् इन विचारों ने फैसला किया कि धार्यवीर दल प्रशिक्षण व्यायामशाला की स्थापना यहाँ गुरुकुल अम्बर मे ही की जाए तथा इसके पीछे निर्माण की कामना करते हुए ला० रामगोपाल जी एवं जी भोमप्रकाश जी ने इस व्यायामशाला का शिलान्यास किया ।

केदारसिंह धार्य  
धर्मसन्देश  
धार्य प्रतिनिधि सभा हरियाणा

### अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन डर्वन (दक्षिण अफ्रीका) संबंधी सूचनाएँ

वेद निमेलन डर्वन के प्रधान प० गरीब, विद्यालकार ने दक्षिण अफ्रीका में होने वाले अन्तर्राष्ट्रीय धार्य महासम्मेलन के सम्बन्ध मे निम्न सूचनाएँ हमें प्रकाशनाएँ मेनी हैं । सन्धुकार वहा पहुँचने वाले सप्ताहों के लिए ३० दिवस की बजाय ६० दिवस ठहरने की अनुमति आरक्ष करवाओ की देने की विद्या मे सार्वेधिक धार्य प्रतिनिधि मन्त्रा कायबाहो करगे । वीस विश्व ज्ञान बाको की पाठोपनी मे सामान्य दक्षिण अफ्रीका ज्ञान की अनुमति मही हा बासी । फिर जी सरकाज ने पत्र व्यवहार हा रहा है ।

२— बीसा क प्रान्त पत्र का कार्य ठीक सत्र मे भरन पर, उनके कना मुसार िस्य कठिन ई की मजबूती मही है । (धार्य पत्र के इच्छुक बीसा पत्र की कार्य इस सत्र मे प्राप्त कर सकते हैं ।) प्रतिनिधि सभाएँ इस सम्बन्ध मे अपने सुझाव म मा य सूचनाएँ प्रकाशित कराव ।

३— (१) बीसा कार्य के साथ पासपोर्ट के पहर सत्र पुछो की फोटो स्टैट करपी जिसमे पासपोर्ट नम्बर व्यक्त की पहचान सार्वेधिक मन्त्रा मे प्रवेश करने का अनुमति प्राप्त हा, वह जेम्मा जखरी है । पासपोर्ट नम्बर की धार्यवचना मही है । हर एक व्यक्तिक के दो पाठोपना होने चाहिए जिसके पीछे उसके हस्ताक्षर स्पष्ट

धराती मे (परेजी मे पुरा माय तथा जम्ब गारोक्ष विली हो ।)

(२) ट्रेवल् एजेंट के जॉब करने को पोजर तथा कौशरी के टैट सर्टिफिकेट बीसा के कार्य के साथ करपी भेजे जायँ ।

(५) पासपोर्ट मे प्रवेश के वेधो के साथव धरपी प्रवेश पर निषेध लिखा रहता है । इसकी रद्द करना धार्यवक के लिए ख-री है । प्रवासी के लिए धार्य वन पहुँचने पर पासपोर्ट प्लेस करपी होगी ता उनको धोर से धार्य प्रतिनिधि सभा साथव धरपी इस पीछ की भर सेपी ।

जाव हुआ है कि कम्पई धोर मुकरात से दर्बो का एक धम्मा समूह इस धरवसर पर वहा पहुँचेगा ।

आरक्ष सकारा के दक्षिण अफ्रीका मे प्रवेश की अनुमति दिवने मे सहायिक निम्नवक के बेसकर की नम्बर की का मुद्राफ है कि साफपोर्ट के पहले चार पुछो की फोटो धार्य एक बीसा पास प्लेस भेजे देना चाहिए । दक्षिण अफ्रीकी सरकार बीसा कार्य पर यह मानकर स्वीकृति दे देती है कि बहो उपस्थित रहने के साथव एक चार सकार की अनुमति पत्र पोर्ट पर दिस जावेगी ।

(भोमप्रकाश त्यागी)

मन्त्री

प्रधान—जी राबन्धन निगोषा  
मन्त्री—जी सतीश धार्य  
कीर्त्तिका—जी ज्ञानचन्द

सतीश धार्य

मन्त्री

### आर्यसमाज राजौरी गार्डन का निर्वाचन

प्रधान—जी हरिबाबू गुप्त

उपप्रधान—सर्वश्री गनसत राव बर्मा,  
बकाबाबर मध, नागपत्र व  
देवराज सेठी

मन्त्री—जी नन्दकिशोर गोटिया  
उपमन्त्री—सर्वश्री तिलकराज पुरी, कृष्ण  
बाबू धार्य व बिनोद कुमार  
सिवल

कीर्त्तिका—जी केवलकृष्ण कोहली  
पुस्तकाध्यक्ष—जी इन्द्रकुमार कपूर  
सेवानिरीक्षक—जी मोहनभास बकर  
सुरेन्द्र हिन्दी

धार्यसमाज (राजलक्ष्मण बाग) धार्य-  
पुरा मन्त्री मन्त्री, दिल्ली का २२ वीं  
बाकिओलस एव साधारण सभा का  
वार्षिक अधिवेशन २३ जून १९८५ रवि-  
वार को प्रातः १०-० बजे सम्पन्न हुआ ।

विद्यमान नवीन सत्र के लिए निम्न पदाधिकारियों का निर्वाचन हुआ ।

सर्वश्री सत्यवीर	प्रधान
„ राबन्धनप्रसाद	उपप्रधान
„ भोमप्रकाश बर्मा	„
„ मुखोपनिषास	„
„ रणवीरसिंह	मन्त्री
„ स्वामिबहादुर सेठी	उपमन्त्री
कीर्त्तिका व राजकुमार	उपमन्त्री
जी पुनराज	कीर्त्तिका
„ कीर्त्तिका	पुस्तकाध्यक्ष
„ भोमप्रकाश बर्मा	सेवानिरीक्षक

प्रधान  
धार्यसमाज धार्यपुरा  
मन्त्री सन्धी, दिल्ली-७७

धार्यसमाज बाजार सीताराम  
दिल्ली के वार्षिक साधारण अधिवेशन मे  
निम्नलिखित पदाधिकारी व धन्तर  
हस्त्य सर्वसम्मति से निर्वाचित हुए—

प्रधान—जी राबाराजी जी सारो  
उपप्रधान—जी दुर्वासिंह जी एव श्री

नैच बरन्धनाम जी सारो  
मन्त्री—जी बरान्धनाम धार्य

उपमन्त्री—जी किलानसाल जी सारबाते,  
जी राबोरी खलसाल जी  
कीर्त्तिका—जी नरेन्द्रनाथ गुप्ता

पुस्तकाध्यक्ष—जी कृष्ण मातवीर जी  
सेवानिरीक्षक—जी राबाराजीसिंह जी  
कम्परा सत्यव—बासा न्यायजन  
मुष्ट, जी दोषाजय्य पसदा जी सुरक्ष  
नान बसल, जी सत्यप्रकाश महेस्वरी, जी  
बसवनाथ गुप्ता, जी राबोरीकुमार, जी  
किर्त्तिकाबास बरान्धना, जी राबन्धन सिन्धी,  
जी राबन्धन, जी प्रकाशचन्द्र बरान्धना, जी  
राबन्धनस बाट, कीर्त्तिका सीता महेस्वरी,  
कीर्त्तिका कर्षाणी, जी बन्धनप्रकाश, जी  
नीरीनाथ मोटेबाते, जी बुद्धिप्रकाश ।

विधेय धार्यनिष्ठ—जीमती दासा  
बसल, जी बरान्धन गुप्ता, जी बरान्धन  
चन्द्र गुप्ता, जी सुधील कुमारी ।

बाबूराज धार्य, मन्त्री

### सम्पादक के नाम पत्र—

#### हार्दिक वार्धाई

मैं व्यक्तिगत रूप से धार्यको 'धार्य सन्देश' साप्ताहिक पत्र के सम्पादक होने की बहुत बहुत मुबारक देता हूँ । धार्यके सम्पादक होने से मुझे ऐसा भावना होती है कि धार्यवक मे धर्म वही पत्र स्वामी दयानन्द के धाराओं की मुल्ल बव से प्रसरित कर रहा है । धर्म इस पत्र को पढ़ कर ऐसा भवता है कि इस पत्र का सन्धान किसी योग्य तथा पूर्ण विद्वान् के हाथो मे है । मैं मुन धार्यको बधाई देता हूँ ।

हरजान भवान  
धार्यसमाज अयोध्या गिहार पुरीस

### भारतीय जागरण में आर्यसमाज का योगदान

महोदय,

मैं महावीर विद्यालकार लिखित उपर्युक्त शीर्षक लेख २६ मई के बक मे प्रकाशित हुआ है । क्या लेखक महोदय अपने इस कथन की पुष्टि इतिहास के आधार पर करे कि स्वामी दयानन्द ने साधुओं की टोनी बनाई और हाथो मे नमन का झुन धोर टोनी का टुकड़ा लेकर कसीर से कम्पाकुमारी तक प्रलय किया और स्वर्णमहा युग का सन्देश पहुँचाया । धार्यव ही कभी किसी साधु टोनी ने दयानन्द का साथ दिया । वे ठी धरने जीवन के प्रारम्भिक माय मे एनकीही निषेध करते रहे । यदि ने की महावीर का के अनुसार नाम साहब धोर प्रभोमुखा का की सौराष्ट्र जाने की समाधि दी थी । परन्तु इतिहास इस सम्बन्ध मे कुछ नहीं कहता ।

हा० भवानीलाल भारतीय  
पञ्जाब विद्यापीठाय बम्बई मह

### प्रवेश प्रारम्भ

धनुषमयी विशालापी के नेतृत्व एवं विपुल नवीन प्रशासनिक व्यवस्था मे सुवर्णमय धार्यके प्रिय धाय महाशिया बल किरतन (मेरठ) मे एक जोशाल से छात्रों का नवीन प्रवेश प्रारम्भ हो रहा है । महाश्रीगुरुनिष्ठ सत्कृत विद्याविद्यालय बाराणसी की प्रथमा से धार्यव पर्यन्त कक्षाओं के धार्यगत की पूर्व ७ बरवा है । शिक्षा एवं धारात की व्यवस्था नि सुष्ठु है । धारणी एवं धार्यव के छात्रों की जीवन व्यवस्था भी नि सुष्ठु है । धार्य धारने कम्पों के बहुमुनी विद्यार्थ के लिए विद्यालय मे प्रवेश कराये । प्रवेश हेतु गुरुक्षेत्र सम्पर्क करें ।

धर्म-निर्वाह—देवी से सहारनपुर जाने वाले सत्र धार्य के दरवासा स्टैंड से दाखा जाने वाले सत्र धार्य मे किरतन है ।

धारायें  
सन्धरानु धारायें

### निर्वाचन

धार्यसमाज पर्वधमपुरी नई दिल्ली का नया निर्वाचन १९-२०-८५ को हुआ जिसमे निम्न प्रतिनिधि मुख्य रूप से चुने गए हैं—

## गुरुदत्त विद्यार्थी

(पृष्ठ १ का चेष)

को धार्यसमाज मन्दिर साहोदर मे गुरुदत्त ने एक सभा बुलाई, जिसमे स्कूल की धार्यकता और उद्देश्यो पर प्रकाश डाला गया। तथा जनता मे इस पवित्र काय के लिए उत्साह भरा। धाविर प्रतीक्षा को चडिया सभात हुइ और १ जुन को धाय समाज मन्दिर गली बच्छो बालो मे एक सार्वजनिक सभा करके डी० ए० की स्कूल की स्थापना कर दी।

पडित जी ने १८८८ मे इतना

काय किया जितना साधारण व्यक्ति एक वर्ष मे भी नही कर सकता। वे कुल-नती विस्वमायम की पुन के दीवाने हो गये। जो व्यक्ति मयपन मे धा धाना उसे नौ धाय बनाने के लिए जुट जाते। न जाने किनने व्यक्तियों को इस प्रकार नव जीवन बिरा।

जुलाई १९८८ मे वरिद मग जीन के नाम मे धायन भाषा मे एक मासिक पत्रिका का सपादन धारम्भ किया। पडित जी इस पत्रिका मे बैदिक सिद्धांतो पर खोजपूज लेख लिखा करते थे। लेख इतने विद्वत्ता

पूर्ण होते थे कि देश विदेश मे सब पत्रिका का मान हुआ। पत्रिका चलती फिरती धार्यसमाज थी।

ईश्वरीय नियम खपना करना निर्र विना नही छोडते। जो वरता मयस मे पन्ने धा जाना है वह शीघ्र ही मयान्न हो जाती है। पडित गुरुदत्त जा मे प्रतिभा मयन मे एव नौ बगम पन्ने थी। जिन उग्र मन्त्र मे वन्दे गिन्नी इन्ड सेते है उसमे गुरुदत्त जो मे प्राणायाम करना धारम्भ कर दिया था। १८ वष की अवस्था का विद्यार्थी पञ्जाब को धाय समाज का प्रतिनिधि बनाकर अमेरि भजा गया। २४ वा वष पूरा होता कि नौबवान एम० ए० को पढाने के लिए गवर्नमेन्ट कालेज से साइस का बन्ग ध्यापक नियुक्त कर दिया ग।

फिर पडित जा ने नियमो को तोन्ने मे कमर न डोना। जिन काम मे लगे उनके मिबा मय कुछ मुसा दिया। जिन लोग का उस पानी धात्मा के मन्वास का धवनर मिया है वे क्मा क ले थे कि जब वे बन्कि मगजीन को निखन वन्ते थे नव कई दिनो नक घर म बाहू नहा निकलत थे। जब पन्ने नगत नव ८ वण्टे नक एक मिन्त भर हो निर्र विना पड चल जात थे। जब सोने की पुन सवार नोती थी तब २४ वण्टे की कन्टनी समाधि लगती थी।

म प्रकार के धातकमणो से नोहे का सागर भा धरन व्यन्म हो सकता है। जवानो मे पडित जा का धारा सनौन वमजवत था। पर तु ईश्वरीय नियमो के उल्लंघन न उमे सिनिल कर दिया। प्रतीन नोता है कि मर के बिना प्राणायाम क परि श्रम मे भा मारा पर कुछ वरा प्रभाव उ पन्न क निा। इन कारणो से धायसमाज की धाधाधो के इ उस होनहार नवयुवक को धय रोग ने

धा धरा। फलस्वरूप १९ मच को प्रभात के ७ बजे स्वामी दयान २ के सन्ने शिष्य मे २६ वर्ष की धर्यापु मे ही इन लोक से प्रयाण कर दिव। पडित गुरुदत्त विद्यार्थी जो उस कनी की भावि थे जो सिलने से पूर्व हो मुरमा गयी। नू नौक है कि प० जी के पश्चात धायसमाज को गोदी मे धनेकर न जिले जिन्ताने धार्य समाज का गौरव बढ़ाया। पर कोई गुरुदत्त निर्र न मिल सका। उनका ध्याव तो धन्यना रहेगा। उनके बिना वह धोभा नौ नौ हो भी कमे।

जिले रोजक तरे कदमो ने देकर छीन नौ रोजक वह नाए धावाद नौ उस धर की जिना नही धाह। प्रनु करे हुन पडित जी के चरख चित्तो पर चलकर विद्वे मे बन्कि मा यनाजा का प्रचार कर सक। यहा उनके प्रति पन्ने अध्यात्मि होमी

## गोक प्रस्ताव

गुरुदत्त कायों विचविधावय की यह का सभा एकादिक सभु के एयर इरिया जवाजट धायातन इष्टना मे २९६ भाषियो के धारे जाने पर गहरा गोक प्रकट करती है। विचविधावय यह धावुम करता है कि यह भीषण एह हवय विचारक इष्टना एक राट्टीव सलि क रूप मे हुन सब के समुम्भ है। इष्टना मे धारे वाए इन भाषियो मे पर राट्ट को एक मयम र सति दू है। लोक के स सत्य भासावसय मे विचविधावय की यह सभा धरम म भाषना करती है कि मय व्यक्तियो के परिमरो का इस महत दख को सहन करने क ममता प्रदान करे। यह सभा मरकार म भाव करती है कि इस भीषण इष्टना क काररु को सममता से जाच की ज ग तथा यह सति निचत किया जाय कि कही इष्टना मे विचमनकारी गतिवरो १। ठा हाव नही है।

— विचविधावय क ससल धाँक र गव मयभारी

**दान की हर बीमारी का धरलू इलाज**

**एम डी एच**

**दंत मंजन**

**लोग युक्त**

23 जडी बूटियो का निर्मित आयुर्वेदिक औषधि

दान का धावटर

अब नये पैके में उपलब्ध

महाशिया की हट्टी (प्रा०) लि०

9 इन्फेन्टियस रोड, जी० टी० नगर, नई दिल्ली-500030

## उत्तमता का एक मात्र विश्वास

**Groversons**

*Paris Beauty*

**पैरिस ब्यूटी**

**गोवर सन्स**

**ब्रा. पैन्टी. बनियान अन्डरवियर वे बैबी पैन्टी**

पैरिस ब्यूटी सैन्स कार्पोरेशन

65 ग ब्रीज नगर नई दिल्ली-110004  
दूरभाष 569229 574200 582836

## ग्राम प्रचार श्रवला

मि मो धय प्रतिनिधि सभा द्वारा वद प्रचार व्यन्म का धायक्रम बडे न माह पुवक चल रहा है। सभा के वद प्रचार धाँकना म्व की वरक न के द्वारा एक मयाह तप पू किलीपुर कालोनी मे नौ सा० धामाग प्रसा जो धाय के निवास म्यान पर २२ वन की बहधमन व सम रोह पुवक मन् न हुआ। इस धावसर मय क बहा म्व की वरणा नाच मे पव मगो के मह व धम राट्ट धर समाज के र्गन हमार क्या कतय है विषयो पर प्रकाश डाला सभा के जवनो पवसक की धा राय प्रदी और की सय मवीर के मयिन र मे धोतप्रैत पनो न सको मर न रिषो की भाषाविमो कर दिया। सवादाता धायसन्देश

## आर्य जगत् की शान

२०० बिस्तर वाले निर्माणाधीन

## नेत्र चिकित्सालय

(अनुमानित लागत दो करोड रुपये)

के लिए दिल खोलकर दान दीजिए

दान की राशि आयकर अधिनियम जी० ८० के अंतर्गत कर मुक्त होगी।

सारा बान चेक/मनीआर्डर/बैंक ड्राफ्ट द्वारा

मन्त्रो, माना चन्ननदेवो आर्यं धर्मार्थं नेत्र चिकित्सालय,  
मो-१ जनकपुरी, नई-दिल्ली-५८ के पते पर भेजा जाए।

दानदाताओं के नाम चिकित्सालय की शिला पर अंकित किए जाएंगे।

निवेदक

रामगोपाल शालाबाते	सूर्यदेव	महाशय धर्मपाल	ओमप्रकाश शाय
सरलाक बिजिलालय	प्रधान, दिल्ली	प्रधान	मन्त्री
एन० प्रधान, सा० धा०	आय० प्रतिनिधि	आय० केन्द्रीय	महाशय चुन्नीलाल
प्रति० सभा	सभा	सभा	के० र०

सौजन्य से महाशियाँ "ी हट्टी प्रा० लिमिटेड ६/४४ कोतनगर,  
प्रौद्योगिक क्षेत्र, नई दिल्ली-११००१

### खिचड़ीपुर क्षेत्र में ग्राम-प्रचार

[illegible]

खानी उपवेश धीर हास्य कविताओं द्वारा  
 सभी को उत्साहित किया—मोलाभाएँ  
 एक हूँ की सल्लू रही—धीर सभी ने  
 भाग की कि यहा पर १ सल्लू तक  
 प्रचार कार्य रहा रत्ता जाये। महा  
 प्रामोद जनता ने दोड़ बंद का प्रचार  
 धमिक है। हम चाहते है कि यहा वैदिक  
 वाचनाओं की प्रथम गंगा बहती रहे हाकि  
 सभी की कालोनी के निवासियों को बेदा-  
 मुल पाग का प्रसाध मिलता रहे। जनता  
 को माग पर यह प्रचार कार्य १७ से २२  
 जन तक का बड़ा दिया गया।

ग्राम प्रसार के लिए बहुत परि-  
श्रम करना पड़ता है जहाँकि १० अक्षर तक  
कार्यक्रम चलना है। यदि १२ व १३  
१० व ११ व १२ होता है और १२ व १३  
तक प्रोग्राम बनाया जाता है। हम सभी  
को वैदिक ग्राम प्रसार प्रसार के पूर्ण  
लक्ष्य को देखे का इच्छा रखना है। तर्क  
हम सभी संगठित होकर वैदिक ग्राम  
प्रसार के प्रयत्न करने में। तब एक स्वर  
के बहुतेरे कि कृपया को विनम्रम्। जो  
बोने को शायद - वैदिक ग्राम को जय।



## उत्तम स्वास्थ्य के लिए

**गुरुकुल काँगड़ी फार्मसी,**

## हरिद्वार की औषधियां

## सेवन करें

सा. का. कार्यालय—५३, गली राजा केदारनाथ,  
पो. २५६८२८ चावडी बाजार, जिला :



दिल्ली प्राय प्रतिनिधि सभा १५ हनुमान रोड, नई दिल्ली १ फोन २१०१५० के लिए डा० चम्पान द्वारा सम्पादित एवं प्रकाशित तथा  
वैदिक प्रेम गली न० १७, कैलाशनगर, लखनौ-२१ में मुद्रित। १० न० ३० (सी०) ७५६

सुखदाम  
पिबेन नील कमलविद्यालय  
२०६२

ओडम्

कृष्णवर्ते विश्वमार्गम्

# साप्ताहिक आर्य सन्देश

मूल्य एक प्रति ५० पैसे      बय ६ मस ३४      रविवार, १४ जुलाई, १९६३      आर्य सन्देश १९६०-६३ नं० २५      साप्ताह २०५२      दशमसंख्या—१९१

## महान् साहित्यकार, शास्त्रार्थ महारथी स्वामी दर्शनानन्द सरस्वती

—डा० भवानीलाल भारतीय

आर्यसंवाक के द्वाितीय विद्याल्लेखक  
कार्तार्य महारथी धीर वक्ता  
स्वामी दर्शनानन्द बा० उन्म माध कुम्हा  
वसानी १९१८ वि० को मुधियावा जिले के  
अमरावा नामक ग्राम में हुआ। इनके पिता  
का नाम प० रामप्रताप शर्मा बा० जो  
श्रीसत्य योग के सारस्वत ब्राह्मण थे।  
माता का नाम हीरा देवी बा०। पुरानी ग्राम  
के अनुहार इनका नाम नैतराम रखा गया।  
किन्तु बौद्ध हो इसे बदल कर इन्हें कुपा  
राम के नाम से पुकारा जाने लगा।  
कुपाराम की शारिरीक दिग्गता पिता के  
निकट ही हुई तथा उन्होंने फारसी ग्रन्थ  
मुलिस्ता तथा बोस्ता पढ़े। साथ ही  
उत्कल व्याकरण के ज्ञान के लिए विद्यान  
बौधुदी पढ़ना आरम्भ किया। तत्पश्चात्  
ग्राम के अनुहार इन का विवाह वैशाख  
कृष्ण पक्षी १९२६ वि० को मात्र ११  
वर्ष की आयु में सार्वती देवी नामक  
कन्या से कर दिया गया।

कुपाराम के पिता अपने ग्राम के एक  
श्रेष्ठ व्यवसायी धीर बनाद्वय स्थापित थे।  
उनकी हस्तिक इच्छा थी कि कुपाराम जी  
लक निपुण व्यापारी बन कर कर्पोपार्जन  
करे परन्तु कुपाराम की व्यापार व्यवस्था  
से बहुत विरक्ति थी। स्वतन्त्र प्रकृति  
के होने के कारण एक दिन अचानक वे  
सुहृद्गम कर लयासी ग्राम गये। श्यासी  
बन कर वे पञ्जाब के बिनिमन नगरी में  
बस्य रहें। इन्हीं अवधि में उन्हें स्वामी  
दर्शनानन्द के ३० व्याख्यान सुनने का अव-  
सर मिला। श्रवण तत्काल परमवीर्यवान्  
की विचारधारा का प्रबल प्रभाव था।

इस समय उन्होंने अपने प्राचादी नामक २८  
तुम्हों की एक पुस्तक लिखी जो उन्हें पञ्च  
मे बी०। जब बीना नगर (पञ्जाब) में वे  
एक पादरी के कहूँ कर रहे थे, उनके  
बाबा जयराम ने उन्हें जा पकडा धीर  
वर बनने के लिए विवश किया। कुपाराम  
पञ्च बदन के लिए तैयार हो हुए, परन्तु  
तीन माँ के साथ—(१) मेम्मे बहन गही  
जलारि। (२) घर में मरू कर बैठक-  
जाने में रहते। (३) स्वामी इयानन्द के  
समस्त ग्रन्थ अध्ययन करने। तब स्वीधर  
होते घर में कुपाराम लौट आये।

प० कुपाराम के पिता प० दोलतराम  
अपने जीवन के अन्तिम भय में काशी  
जाने लगे थे। वहा उन्होंने एक लेख  
पञ्जाबा जिसके माध्यम से उत्कल पढ़ने  
के प्रमुख छात्रों के जीवन धारि की  
व्यवस्था होती थी। पितामह के दिवस  
होते वर प० कुपाराम को काशी रह कर  
उनकी सम्पत्ति धारि की व्यवस्था करने  
के लिए कहा गया। वहा उन्होंने निरि-  
नासक प्रेम की स्थापना १० दिवस  
१८८६ को की तथा इस प्रेम के माध्यम  
से वे उत्कल शास्त्र प्रभों का प्रकाशन कर  
उन्हीं लक्ष्य पर छात्रों को लेने लगे।  
बहा रह कर ही उन्होंने स्वामी भनीयानन्द  
नामक विवाक विद्याल्लेख का नियन्त्रण ग्रहण  
किया तथा उनसे दर्शन शास्त्र का निवड  
अध्ययन किया। श्रवण वे ६६ आर्यमहाजी  
विचारों के बन चुके थे। काशी में रह कर  
विचारधारा के अनुसार आर्यसंवाकियों ज्ञानों  
को अनेक कठिनायों का सामना करना  
पड़ता था। प० कुपाराम ने इसे अनुभव

किया धीर उन्होंने एक पाठ्याभा स्थापित  
की जिसने आर्यसंवाकी विचारधारा के  
छात्रों के पढ़ने की सुवाय व्यवस्था की।  
प० काशीपण्डित इस पाठ्याभा के  
अध्यक्षक थे तथा प० बनावड शास्त्री  
एव प० भीमसेन शर्मा (आगरा) धारि  
उन दिनों विचारार्थ थे।

धीरे धीरे प० कुपाराम का अर्थ  
धार्मिक व्यापक होता गया। श्रवण वे वैदिक  
ग्रन्थ के प्रचारक बनकर पञ्जाब तथा सुवुख  
ग्राम में प्रवास करने लगे। १८९३ से  
१८९६ तक का काल उन्म दोनो श्रान्तों  
में व्यतीत किया। १८९७ से १९०० तक  
मेरठ मुरादाबाद, दिल्ली आगरा धारि  
नगरी में रहे। निरन्तर रूप से आर्यसंवाक्य  
करना व्याख्यान देना एक दृष्टि रोज  
लिखना सका समाधान करना धारि  
कार्य—उनकी दिनचर्या के धारा थे। स०  
१९०१ में प० कुपाराम ने सत्याक की  
दीक्षा स्वामी अनुभवानन्द ने जी धीर  
दर्शनानन्द नाम स्वीकार किया। श्रवण वे  
सबसे स्वतन्त्र परित्राजक होकर निडर  
प्रायश्चित्त विचारण करने लगे। स्वामी दर्शनान-  
न्द की प्रकृतिवा निम्न प्रकार से वर्णित  
की जा सकती है—

१ प्रसिद्धी प्रमत्तिविशेषों के  
लाक्षाव—उन्होंने पौर्णसिक जैन,  
मार्तण्ड तथा इस्लाम ग्रन्थों के प्राचादी से  
संबन्धों स्थापना में किये।

२ मुकुन्दजी की स्थापना—विष्णु-  
नारायण (उत्तर प्रदेश) बदायूँ तथा  
अलाहाबाद में मुकुन्दजी की स्थापना का श्रेय

उन्हीं ही है।

३ बिनिमन पञ्च पत्रिकाओं का संपा-  
दन एव प्रकाशन—अपने जीवन काल में  
उन्होंने कोई एक दर्शन पत्र प्रकाशित  
किये।

४ लेखन कार्य—स्वामी जी ने  
१८९६ से एक दृष्टि प्रतिदिन लिखने का  
नियम बना लिया था। इस प्रकार उनकी  
लेखनी से सैकड़ों दृष्टि लिखत। उन्होंने  
अनेक दर्शनो का भाष्य किया, उपनिषदों  
पर टीका लिखी। कथा कहानियों के  
माध्यम से धार्मिक विद्यार्थी का विचेष्टन  
करना उनके साहित्य लेखन की एक अत्यन्त  
विशिष्ट विधा थी। ११ वर्ष १९१३ की  
हायमम में उनका निधन हुआ।

स्वामी दर्शनानन्द का साहित्य प्रसूत  
उन्ने से सिद्धा प्रवाह है। शास्त्रानुरूप उग्रता  
हिन्दी अनुवाद की द्वारा। महा उनके  
द्वारा लिखित एव प्रकाशित सभी कृतिवो  
का अयोग्यलक्ष्य विचारण किया जा रहा है—

अपने काशी निवासकाल में प०  
कुपाराम ने जिन शास्त्र ग्रन्थों को स्वयम्  
मे प्रकाशित किया उनका विवरण इस  
प्रकार है—

१ सामवेद मद्रिधा—विष्णोपनिषा  
पञ्चाशत काशी में मुद्रित।

२ अष्टाध्यायी काशिका वृत्ति  
३ धा० १५२, यो महाभाष्य। उनके  
समस्त ग्रन्थों की संपादना सैकड़ों तक पहुँच  
चुकी है। □



दुष्टि को दूर करने का उपाय है  
अण्ड, बोट, धाधात। अर्थात् जब तक  
हम दुर्गा को दूर तक न रख सकें तब तक  
अण्ड, बोट, धाधात से नहीं निकालते तब  
तक वह दूर नहीं होती।  
(लेखक पृष्ठ ३ पर)

## ★ वचन-सन्देश ★

जिह्वाया धम्रे मधु मे  
जिह्वाभूते मूलकम् ।  
मेमदह कृतावसो,  
ममद्विस्तमुपासि ॥१३/३४/२॥  
मधुमन् मे निष्कमस  
मधुमन्-मे पराधस्य ।  
वाचा वदामि मधुमद  
भूयामि मधु मया ॥३॥  
म गोरामि मधुनरो  
मधुघाम-मधुमत्तर ॥४॥ (प्रथमवेद)

मधु-पूरित हो मेरी बाणी ।  
मधु-पूरित हो धर धाम मेरी जिह्वा का  
धोर मूल भी इसका हो मधुरिम कल्याणी  
मधु पूरित हो मेरी बाणी ॥  
मधु पूरित हो यात्रा मेरी  
निकट-पूर्व का गमन-धामगमन ।  
सब को प्रमन्नता पट्टाकार  
वृत्तियों से भर दू सब का मन ।

मैं सबका प्रियवर बन जाऊँ  
मधुरिम प्रवृत्तियों का उद्गम ।  
मैं मधु से भी अधिक मधुर हो  
बन मधुस्तर धोर मधुस्तर ।  
जग के हर पदार्थ से मोडी हो मेरी बाणी कल्याणी ।  
मधु-पूरित हो मेरी बाणी ॥  
कवि बशीर अहमद मयूस

सम्पादकोय—

## सिख आतंकवाद का भयंकर जाल

विश्व भर इस समय आतंकवाद की चपेट में है और यह आतंकवाद बढ़ता जा रहा है। भारत में यह और भी अधिक विकराल रूप से अपने जन्म को ले रहा है। आतंकवाद का यह स्वरूप केवल आतंकवादियों से ही नहीं है बल्कि कारमौर भुक्ति मोक्षी, मित्रो सगठन जिन्दा बावटियस तथा माया भुक्ति मोक्षी जैसे अनेक उग्रपथी संगठनों से है। इस आतंकवाद का सामना करना आसान काम नहीं। विश्वो में उग्रपथियों की संख्या कम नहीं घीर न हो। माधनों की कमा। साथ ही इनका पाठ पथपथमा बालो लाकत भा कम नहीं है। इस समय आतंकवादियों उग्रवादियों के क्रूर कारनामों से सारा विश्व दहक उठा है। भारत से बाहर सिल भारो सख्यो में है। यूरोप और पश्चिमी देशों में यह सब जगह पहुँच चुका है। मय से अधिक यह अमेरिका और कनाडा से आता है। ब्रिटेन में भी इनको सख्यो काफ़ी है किन्तु इनमें उग्रवादियों सिल बहुत कम हैं। अधिकतर सिल तटस्थ अपने व्यापार पथो में सलग हैं। यह भी स्पष्ट है अनेक व्यापारी सिलों का इन उग्रवादियों को बंद चक्कर सहयोग मिल रहा है। अमेरिका में कई ऐसे स्कूल चल रहे हैं जहाँ दुनिया भर की सरकारों के विदाहियों को आतंकवाद का प्रशिक्षण दिया जाता है। 'यूयाम पोस्ट' में अलबामा के एक स्कूल का व्योरा देते हुए बताया कि एयर इण्डिया के जिस बायण विमान को बुकटना हुई है उसके लिए जिन दो व्यक्तियों अलबामा सिल और लानिह पर सर्वहू किया जा रहा है वे इसी स्कूल में प्रशिक्षित हुए थे। इसका के डायरेक्टर एक कर्मचारी के अनुवाक उन्हीं किशो प्रनोटीयों सिल सक्रिय सगठन न दस लाख डालर दिये थे। इसमें छ सिल आतंकवादियों को प्रशिक्षित किया गया था। इस प्रशिक्षण में विस्फोटक बनाने पातो में जहर मिलाते तथा उच्च सुरक्षा के रहते हुए किंवा उच्च व्यक्तित्वक पहुंच पाना आदि का प्रशिक्षण भी शामिल था। विश्वो में भारतीय सम्पत्ति को हानि पहुंचाकर आतंक मचाने की योजना भी इसके अन्तर्गत थी। इस योजना की बनाने वाले स्कूल के निदेशक और अमरीकी गुप्तचर संस्था एफ० बी० आई० के जेम्स आर्चर हैं। कहते हैं इस तरह के अमेरिकी में दो दर्जन स्कूल हैं। सेना या गुप्तचर सेवा स अलबामा प्रायण अमेरिकियों को भाड के सजिन सलाह करने से लेकर आतंकवादियों का प्रशिक्षण देने तक की दुकान पश्चिम के अन्य लोकनगरीय देशों में भी है परन्तु अमरीका और अन्य देशों का ध्यान इस तरफ नहीं जाना। कह दिया जाना है कि लोकों को कुछ सजसजिया हैं। प्रत्येक पश्चिमा सरकार सिलों को गतिविधियों को नजर भन्नाच करता रहो है। यही हाल कनाडा का भी है।

कनाडा में बसे आईलाल भारतीयों में ४० प्रतिशत सिल हैं। आतंकवादियों सम्पर्क तो इससे भी कम है परन्तु इन लोगों को कनाडा सरकार का निरन्तर सम्पर्क मिलता रहो है। इससे बड़ा हिन्दू सिलों में सदा दारार चौड़ी होनी जा रही है। कहा जाता है कनाडा सरकार गुप्त रूप से उग्रवादियों को आतंक सहयोग भी देती रहो है। ब्रिटेन में भी उग्रवादी बंद चक्कर अलबामा काम करते रहे हैं। वहाँ की सरकार ने उन्हीं रोकने के बजाय मोसाहल दिया। सायबल में जगजीत सिंह चौहान अपना आवास बनाने में सफल हो गया। उसने खुले आम बी० बी० सी० से यह प्रोत्साहनी कि जो कोई भी प्रधानमन्त्री श्रीमती इन्दिरा गांधी या उनके परिवार के किसी सदस्य की हत्या करेगा

उसे लाखों पौण्ड का इनाम मिलेगा। जगजीत सिंह चौहान को कई मा यमा से आतंक सहयोग तो मिलती रहो है। जिन्होने गने आम भारतीयों के प्रति हिंसक व्यवहार किया उनके विरुद्ध भी कोई कारवाई नहीं की गयी।

अमेरिका, ब्रिटेन कनाडा के बाद नाथों भी सिल आतंकवादियों का केन्द्र बन गया। इससे बड़ा संर सिल भारतीय परेशान हो उठे हैं। इस तरह की गतिविधियों के मरनाम वहाँ हरिन्दर निह मे। यह जो व्यक्तित्व है जिसने पञ्जाब में मैनिक कारंबाई के विरुद्ध विरोध प्रकट करते हुए मोसलो के भारतीय दूतावास के प्रथम मन्त्रि के पद से त्यागपत्र दिया था और इसी देश में उन्होंने राजनैतिक शरण प्राप्त करने का प्रयास किया था। शरण मिल जाने के बाद वे वहाँ के उग्रवादियों के नेता बन गये। अनेक प्रवासी भारतीयों के शिष्टमण्डलों ने नाथ सरकार से अपील की कि इस व्यक्ति को राजनैतिक शरण वापस ले ली जाये परन्तु नाथ सरकार ने एक ही सुनो और उसे रेमीड परमिट देकर अपने देश में रहने दिया।

पिछले दिनों भारत सरकार ने पाकिस्तान से लगी भारत की सोमा को सीन कर्म दिया तो सिल उग्रवादी पाकिस्तान में आकर शरण लेने में लोक खनरा सहयोग करने लग गए। उन्होंने अलबामा के नेपाण की तरफ कर दिया। वे नेपाण को अलबामा केज बनाने के प्रयास में लग गए। नेपाण और भारत की सोमा १५०० कि०मी० तक लम्बी है। भारत ने इन लम्बी सोमा पर अपनी २०० बेक पोस्ट स्थापित की हैं। लोग बंध तरीकों से भी नेपाण धा जा सकते हैं मगर यह सारी सोमा लुली है। कई एक ऐसे स्थान हैं जहाँ वे नीचे नेपाण आते जाते हैं। नेपाण में सरदार प्रीतम सिंह उग्रवादियों का सरसक बना हुआ है। कहते हैं पहले लगभग ३० वर्ष उग्र यंत्र मावाण मकेनिक बनकर नेपाण धाया था और अब वह समुद्र हो चुका है कि नेपाण में परिवर्तन सेवा की ३० प्रतिशत माधिया उसकी है। नेपाण के अधिकारी पेड़ोले पथ को उन्नी के हैं। उसने अपने निवाण चोरा को नदरा बन मा दिया है। उसमें अनेक प्राणुनिष्ठ गन्ध स्थापित किए जिन से पनभर में अमेरिका कनाडा और ब्रिटेन से स्पेस जा सकता है। गत वर्ष अलग न नदर चौहान को उन्ने पाम कुछ दिन गमा कर गया था। कुछ समय पूर्व एक आतंकवाण पञ्जाब पुनिस का अग्रवर्ष ३० आई० जी० एस० एस० माना अलग कद साधियों के साथ ओम बालो के रास्ते नेपाण जाता हुआ गि-फांश कर्म लिया गया था। समझा जाता है यह इसी प्रीतम सिंह के पाम शरण लेने जा रहा था। भारत सरकार के दबाव डालने पर वह प्रीतम सिंह आतंक कर्मी जा चुका है। कहा जाना है उसने इस मन्त्र में ध ज भी हजारी गयादी को कनाडा और अमेरिका से धाए हुए है शरण लिए हुए है। इस प्रीतम सिंह के राज परिवार के साथ चनिष्ठ सम्बन्ध होने के कारण पुनिस भी हाथ डालने में सकोच करनी है।

विदेशों में सिलों को गुमराह करने के लिए अरार भी कम नहीं किया जा रहा है इसीलिए आवश्यकता है इस समय नेपाण गुप्तचर एजेंसियों को मजबूत करने की। साथ ही इन उग्रवादी तत्वों से निपटने के लिए हर हथियार को धार देने की आवश्यकता है। इस आतंकवादी विकराल जंगल को साफ करने की हर सम्भव कोशिश करनी होगी।

—सम्पादक अशोक

[illegible]

कोष मनुष्य का एक बहुत ही भयकर रोष है। कोष का सम्बन्ध हिंसा से है। जो मनुष्य क्रोध करते हैं, वे स्वयं ही अपनी बुद्धि को मट्ट कर देते हैं। कोष मनुष्य के शरीर में एक बहुत बारीक बस-मुण्ड है। कोष कोशर्ष को मट्ट कर देता है। बुद्धि को भ्रष्ट कर देता है। शरीर को दुर्बल बना देता है तथा मनुष्य को दुष्टता की दृष्टि में प्रिय देता है। इस मन्-कर रोष से मनुष्य की धार्मिक, साम-सिक, घातक हार प्रकाश से प्रकटित होती है। कोष के विषय में किसी लक्ष्य के कवि ने कहा है—

कोषो माघवते पर्यम्,  
कोषो माघवते ध्रुवम्।  
कोषो माघवते स्वप्नम्,  
मास्ति कोषस्यो विपु ॥

कोष, पर्यं, विद्या और शास्त्रज्ञान सबको मट्ट कर जाता है। कोष के समान ध्रुव शत्रु है।

कोष किसी भी कारण से कभी न पैदा हो—कारण कितना भी बड़ा क्यों न हो, प्रायः जिसकी बार कोषित होते हैं, उसीका बार अपनी हानि करते हैं। कोष शरीर से हल्के उदर का काम करता है। इसे महापाप्मन कहा गया है।

किसी व्यक्ति की यात्रा है। एक छात्रागालाव के किनारे अपनी कुटिता बनाकर रहता था। वह निराल स्नान कर अपनी कुटी लाताव के किनारे पड़ावता था। बहुत पर एक पाषाणक शोकर लाताव से स्नान करने लगा, जिसके कारण छात्रागाल की बीवी घर पानी का बीड़ा पक गया। उसने दुर्गन्ध अपनी कुटी से निकालकर छात्रागाल की पीठला गुप्त कर दिया। जिससे छात्रागाल का शरीर पर्यन्त से मन्-पक हो गया वह गर्मी से परेशान होकर नदी में स्नान कर रहा था। स्वयंसेवक

यन्मा नरेष्ठ महापाप चम्परायन बने ही बर्नसिण एव स्वाध्यायी ने। ७-ही के महा श्रेष्ठ गुप्ता सुतीया चिन्मठ १७०५ को बालक छत्रसाल का मोर पहाड़ी के जंगल में जन्म हुआ। मुगल सम्राट् बाह-बाही की सेवा में रा शास्त्र के प्रयत्न में थे। कितने प्रमुख शास्त्रयक समकाल पुत्र के फल पर भी महापाप ने कोई उत्पन्न नहीं भगवान् था। एक बार तो धनु उठाने निकट था मने कि कोने को प्राप्त करने के लिए पश्च-पश्च दिक्ते के लिए जागना पड़ा। इस माय दौध में शिशु छत्रसाल अकेले ही जीवन में छूट गये। किन्तु—

बाकी रातें साधना  
मार सके गहि कीव।  
बाध न बाका करि सके  
को बान पैरी होय ॥

बालक छत्रसाल पर शत्रुओं की दृष्टि नहीं रही। नवपात्र में शिशु की रक्षा कर की। बार वष की धमका उठ इन्हें निराशा के रक्षा पक्ष और फिर केवल रात्र बर्ष की धमका उठ पिता के धाम एव सके। रात्र बर्ष की धमका में भी

## क्रोध मत कीजिए

राजेश प्रताप सिंह

छात्रागाल की मयी के किनारे पहुँच गया। छात्रागाल को दया वा गर्। तब उसने छात्रागाल से पूछा "तुम इसी गर्मी से क्यों स्नान कर रह हो?" तुम्हें चुपचाप हो जायेगा। छात्रागाल ने कहा—छात्रागाल क्यों स्नान किया है? छात्रागाल ने कहा, तुम्हें छात्रागाल ने छु दिया। इसलिये मैंने स्नान किया है। इस पर छात्रागाल ने कहा कि तुम्हें तो महापापान (कोष) ने छु दिया। इसलिये मैं स्नान कर रहा हूँ।

कोष से स्वाध्याय दुष्टित हो जाता है। मूर्ति स्थापित पक जाती है और छात्रागाल दूर हो जाता है। कोष से स्वाध्याय चिन्मठ हो जाता है और स्वाध्याय-जीवन में मट्ट हो जाता है। समाज में दूध मनुष्य बना मूठ की भांति है और चिन्मठ तथा शास्त्र मनुष्य की बला विनाश होती है। ध्रुव रात्र में हो और धाम बर्नसिण है तो धाम धमका बारी मार ले जायेगे।

'म'कोषिय जनेय कोषम्।  
म'कोष से कोष को जाता है।

कोष एक ऐसा मनोभाव है जिसमें मनुष्य बीवी के लिए अपने को मूठ बना कर छोड़ देता है। कोष से स्वाध्याय चिन्मठ हो जाता है। कोष उठने है और उठने अपना जाता है। सब उठने अपने होते हैं। कोष के उत्पन्न होने का तरीका नीला में बताया गया है—

भयानको विषयापवृत्त,  
सज्जत्वेनप्रायते काम  
कामकोपोऽभिप्रायते ॥

कोषावबर्तित मनोह  
समोहास्तमृतिप्रय।  
स्मृतिप्रय वादु दुष्टिनाम।  
मुद्रातिनामप्रायस्यति ॥

मन लक्षित इन्द्रियो को बल में करने मन के द्वारा विषयो का चिन्मठ होता है और विषयो को चिन्मठ करने वाले पुरुषों की उन विषयो में छात्रागाल हो जाती है और छात्रागाल से उन विषयो की कामना उत्पन्न होती है और कामना में चिन्मठ पड़ने से कोष उत्पन्न होता है।

और कोष से धर्मिक धर्मार्थ मूठ-बला उत्पन्न होता है और धर्मिक से स्मरणधर्मिक प्रयति हो जाती है और स्मृति के प्रयति हो जाने में दुष्टि धर्मार्थ ज्ञानधर्मिक का नाश हो जाता है और दुष्टि के नाश होने से यह वह पुरुष अपने स्वयंसाधन से निर जाता है।

युवाक म महापुत्र दुष्टराज की स्त्री बड़ी कमलकाशीपी की। एक दिन उसने कोष में मरकर पति पर भूते पानी को उसका पिता। इस पर दुष्टराज ने उसे निभावा से हँसकर कहा, मरने के बाद पानी बरसा ही करता है। एक दिन बहुत से बन्धु-भायव्यों के सामने उसने दुष्टराज के मूठ पर समावा दिया। बन्धु-भायव्यों ने स्त्री को उत्पन्न देने के लिए दुष्टराज को बहुत उछावाया, परन्तु उनकी कोष नहीं पानी पर उल्टी कह—मैं तुम लोगों के सामने समावा नहीं करना बाह्मा कि तुम लोग दूर सब देखते रहो और मरियो के मुक्तो को

सबसे देखकर जैसे बन्ने छापी पीटा करते हैं, वैसे ही छापीपी पीटो।

कोष एक बहुत बड़ा धर्मिभाव है। यह धर्मिभाव ही नहीं बल्कि मनुष्य की उम्र को भी नम कर देता है। सबसे मनुष्य को हार प्रकरने से हानि "आनी पकती है। कोष प्रकरने से शरीर का विकास रुक जाता है। कोष मनुष्य का एक स्वाभाविक मूण है। कोष के कारण ही मनुष्य एक दूसरे में भगवा कर अपने सवा दूसरे के जीवन को मट्ट कर देता है। बहुत से लोग तो किसी भी बात की पर-पानी के कारण धमन घर बातो रर काचित हाकर बाना पीना छोड देता है। इस भयकर रोग से मनुष्यक कही भी भावर नहीं होता है और मनुष्य सस्त्री की दुष्टियो में पिर जाता है। कोष नवभाष का ब्यक्ति कभी स्वजन ब्यक्ति से प्रेम नहीं कर सकता है। वह अपना जीवन को भी ही उठाल कर देता है। काशी मरित के चेहरे पर कम मुकाना भी नहीं रहती है। कोष जीवन को मट्ट कर जाता है। यह मनुष्य के जीवन का महा-पापानक वस्तु है। जो मनुष्य इस वस्तु में प्रयत्न हो जाता है तो उनकी न सुख मिलता है, न शांति। वह अपने जीवन में छात्रागाली प्राप्त नहीं कर सकता है। उसका तो जीवन तुम ही मर जाता है। वह छात्रागाली के बहुत से मनुष्य मरता है। कोष अपने जीवन को मट्ट कर देता है। इसलिये कोष को महापापानक कहा गया है। इसकी कोई भावित नहीं होती है। यह केवल भगवा होता है। कोष को कोई वैश्व मनुष्ययक चिन्मठ मनुष्य के अन्तर में मनुष्ययक चिन्मठ बना रहता है, अन्तर अपनी परिकल्पित के प्रयत्नर जगह हो जाता है। छात्रागाली के बर्नसिण के कोष में मनुष्य है। वह अपने जीवन-काल के कोई उत्पन्न नहीं कर देता है, बल्कि वह अपने को मरकर कर देता है। इतिवृत्त हम कोष नहीं करना चाहिए।

### किशोरस्य—

## वीर बालक छत्रसाल

राज जी के मन्दिर में पहुँचने मन्वाय राय (छत्रागाल) लक्ष्मण की दृष्टि को अपने जैसा बालक समकाल उनके शास्त्र सेनावा छात्रा और कहते हैं मन्वाय सज्जत्वेनप्रायते काम को। पिता की मनुष्य के पश्चात् देख बर्ष की मरनावा। तब छत्रसाल को मन्वाय के रक्षा पक्षा। इसके बाद वे पक्षी बने और पक्षा पक्षा सुभाय राय ने इन्हें बर्षी शास्त्रागाली से उल्टी वैश्विक विद्या दी। अपने पिता का कोई छात्रसाल को वैश्विक सत्यरि के रूप में प्राप्त हुआ था। अपने जीवन में उन्होंने पिता के लक्ष्मणों की पूर्ण किया। अपना राज्य छत्र-साल को प्राप्त कर दिया।

बैश्वी के विद्यागाल पर और पक्षेक वीर युवाक के उल्टे मन्वाय का और हारे देख को छात्रागाल कर रहा था। छात्रसाल की धमका उठ समय समयक १३-१४

बर्ष की थी। विन्मयवाशिनी वैश्वी के मन्दिर में सेवा था, बारो और मन्वाय पक्षु ही। दूर-दूर से लोग मन्वाय के वर्यन करने था रहे। मन्वाय का सुभायराय बुद्धिसे सरस्वती के साथ बातालाव करने से लगे थे। सुभाय छत्रसाल में बूते उत्तार, हाथ पर वयो और एक दृष्टिसे केकर वैश्वी की पुत्रा करने के लिए पुत्र पुत्रने वे बाहिका में पहुँचे। उनके शास्त्र उसी धमका के दूसरे शास्त्र बालक की थे। पुत्र पुत्रने हुए वे कुछ दूर निकल गये। हतने में कुछ सुभायम वैश्विक वहाँ पोछो पर बड़े हुए गये। पाछ धाकर वे पोछ में उतर पड़ और पुत्रने बर्षी विन्मयवाशिनी वैश्वी का मन्दिर फिर है ?

छत्रसाल में पूछा क्यों तुम्हें भी क्या वैश्वी की पुत्रा करनी है ?  
मुनमयाय तवहार में कहा—वि ।

हम तो मन्दिर को लोभने धार है।

छत्रसाल न कुनो की दृष्टिवा दूसरे बालक को पक्षायो पोछ वर्य उठ मुह समाल कर बोले। फिर एसी बात कही तो जीवन बीच नूना ।

छत्रसाल हुआ और बोला—तू क्या बला कर सकता है। तेरी वैश्वी की । वैश्विक वैश्वी का वाक्य पूरा नहीं रहा। छात्रसाल की तवहार उसकी छात्री में होकर पीछ न निकल गये। एक कुछ छिद्र गया उस पुत्र व पिता ने। विन्म बालको के पास तवहार नहीं पोछ वे तव-बार लेने पीछ पड़।

मन्दिर में इस कुछ का समाचार पहुँचा। राजपुत्रों ने कन्ध पक्षु और तवहार सम्प्राप्ति, विन्तु उल्टो देखा कि मुनयाय छत्रसाल क हाव में रहल से पीछी तवहार तथा दूसरे के रक्त से दिलवा लिम्ब हल्लते बले था रहे। उनके बलन कन्ध से ल हो रहे। धमले सुभायराज न शत्रु सैनिकों की मूम पर मुखा दिया था। महापात्र सुभायराज ने छत्र-साल को हल्ले से लगा लिया। मन्वाय वैश्विकवाशिनी धमके अपने पुत्रारी के हाव के लोभ-पुत्र पाकर प्रयत्न हो गईं । □

व्यासपीठ—

उपनिषत् कथा माला-६

## धर्म क्या है ?

लेखक—महेन्द्रदेव शास्त्री विद्याभूषण

मधुकर, स्रग्धराय, मधु, पद्म, मार्ग  
हल सगरी को लोभो मैं धर्म सम्पन्न लियो  
है किन्तु ये लोभ नहीं ही। इन सब को  
बनाने वाले और बनाने वाले मनुष्य हैं।  
और ये सभी किसी विधिपुत्र व्यक्तियों की  
माय्यावसे के लिये हुए जनमरुद्द्वय द्वारा  
ब्रह्मायन-है, जो प्रायः उन सभी के  
पहले उन-उन स्रग्धराय के संधारकों के  
साथ जुड़े हुए हैं। जैसे कबीर पत्नी, बाहू  
पत्नी, नानक पत्नी, शैलचर स्रग्धराय,  
रामानुज स्रग्धराय, अल्बर स्रग्धराय  
औरत, जोहल, राधा, राधा पत्नी, मुकुन्द  
मधुकर, ईशान मधुकर, धानस्य मधुकर,  
मैं ही हूँ। मैं ही हूँ है जिसकी भावसं-  
कटा सधाम रूप से समस्त भावस्य वांति  
होती है। इसीलिए सबसे अच्छा और  
वास्तविक रूप का बलन।

“यतोऽभ्युदयनिश्चयससिद्धिः स धर्मः ।”

[illegible]

दूध में मिला पानी सत्य रूप का प्राथम्य लेकर के ही दूध की जगह बिक जाता है। झूठा मनुष्य भी सत्य की कसम खाकर ही असत्य को सत्य बनाने की कोशिश करता है। जहाँ व्यक्तियों में से, जातियों में से, देश से और राष्ट्र से सत्य उठ जाता है, वे व्यक्ति, जाति, देश और

नष्ट ही हो जाते हैं । इस ही लिए  
कहा —

“नहि सत्यात्परो धर्मः  
नाऽनृतात्पातकं परम् ।

सराप से बढकर कोई धर्म नहीं घोर  
 झूठ से बढकर ससारा मे कोई पाप नहीं  
 है। झूठ का व्यापय लेकर यक्षि लोग  
 फसले फूलते नजर आते हैं, धौर ससारा मे  
 बडे ठाढ-ठाढ के साथ रहते दिखाई भी  
 देते हैं, किन्तु वह बहारा बोडे समय ही  
 रहती है। मनु कहते हैं—

अथर्मेणैव ते तावततो  
अद्राणि पश्यति ।  
ततः सपत्नान् जयति  
समुलस्तु विनश्यति ॥

प्रथम करने वाला आदमी पहले खूब बढ़ता है फिर उस सम्पत्ति से अनेक प्रकार के लोगों को भोगता है। उसके बाद धन की शक्ति से अनेक शत्रुओं पर भी विजय प्राप्त कर लेता है, किन्तु फिर समूल नष्ट हो जाता है।

सत्सार मे इस प्रकार के बहुत उदाहरण हैं जिनहोने भूत बोलकर, बेईमानी से, बड़ा धन कमाया, लोगों को मार करके जी धनी बन गये किन्तु फिर वे सत्सार से ऐसे भिटे कि उन्हें कोई पानी देने वाला भी न रहा, वस के बच समाप्त हो गये।

‘अभ्यस्योपाजितं वित्तं  
दशवर्षाणि तिष्ठति ।’

पाप धीरे धन्याय से कमाया हुआ  
वन दस वर्ष ही टिकता है। कुछ इससे  
अधिक भी टिक जाता हो तो धारक  
नहीं किन्तु इसका धन्य मे परिणाम कभी  
अच्छा नहीं निकलता। धन्य मे तो—

‘सत्यमेव जयते नाङ्गुत्तम् ।’

सत्य ही जय होती है । राख  
समय भारतीय प्रजा में असत्य का बाधा  
नोखावा है । हमारे अस्थियों में  
शापको कोई कोई ही सत्यवादी नजर  
आयेगा और वे बार बेईमानी का नज्म  
का बाता है । बेईमानी करने के लिए ही  
आमों और का आशय देता है । राजा  
में आपको भीजों में प्राय मिलावट हाजि-  
मिलने । स्वास्थ के लिए आशय हाजि-  
कर बनुरों ही आश पात्र में मिश्रा ही  
वाती है । अथ, जी, तेरा पात्र पुत्र भिन्नने

[illegible]

‘अहिंसा सत्वास्तेय-  
ब्रह्मचर्यापिरिग्रहा यमः’

मास्तव ये जिससे धपना तथा  
परों का कल्याण हो वही धर्म है और  
मं पर चलना ही कल्याण का मार्ग है।

**ब्रह्मचर्यं**

इसके महत्त्व को लोगों में विस्तृत  
ही भुना दिया है। ईश्वर के अतिरिक्त  
ब्रह्म राज्य का सर्व वैश्व ही ही ईश्वर वैशाख  
मन के लिए सब को ही ब्रह्म राज्य है।  
“ब्रह्म वैश्वस्तद्व्ययमन्यत्र” इति मणि ब्रह्म  
उसका पूर्ण रूप के प्राप्त करना ही ब्रह्म-  
प्राप्ति है। वास्तव में ब्रह्मप्राप्ति के मनुष्य को  
महासाक्षि प्राप्त होनी है। इश्वरी, मन,  
बुद्धि तथा आत्मा सभी निर्मल तथा  
अत्यन्त शक्ति अत्यन्त हो जाते हैं।

देवा मृत्युमपाप्नत ।”

ब्रह्मचर्य के प्रताप से ही देवी ने मनुष्य  
 १०२ विजय प्राप्त की। समस्त अथवा शत्रु  
 पर विजयिणी हैं। वसु धृति हृषीकेश की अस्त्र  
 से दूर हो चढ़ना पड़ता है। सहविषा—  
 सघात स्तूनीयों ने, कालेयों में अङ्कुर बद्ध-  
 कियों का एक साथ बधना प्रसन्न  
 होकर है। मनुके सङ्घर्षों के पार-  
 स्परिक सङ्घर्ष से ब्रह्मचर्य व्रत का पालन  
 कभी नहीं हो सकता। पापवश धिक्का  
 प्रहासी की अपनारक्त हृमरा। वेस उलकी  
 ही नवत कर रहा है। किन्तु सबके सब  
 कियो के बोधन नष्ट हो रहे हैं। जीवना-  
 वस्था में अयोग्य की स्थापना परमवश  
 कद्रिज हो जाता है। ऐसी स्थिति में  
 एक को साथ लेकर दूर बाँहें कि यात्रा

न जाने तो यह कैसा डंजन है। यत ब्रह्मचर्य का पुरुषोत्तम उत्तराश्व ही कल्याण का मार्ग है। निर्व्यथ वनाग्रे के विश्व ध्वज-ध्वज के साथ क्षात्र क्षात्राधी तो पुरुष-पुरुष स्कूल तथा कालेजी के क्षात्राधी ही जैसे कि निम्नस्थ के साथ वसिष्ठों के हुए अथवा वाला स्वामीों ने रचना ही प्रारम्भ कर दिया। पञ्चमयि की भी प्रारम्भ के बाद तक समस्त क्षात्र तथा क्षात्राधी की निम्नस्थ पिछा जाने का पुरुष-पुरुष करना चाहिए। इस स्थिति के स्वातन्त्र्य होने वाले स्वातन्त्र्य क्षात्र क्षात्राधी की १ वर्ष के लिए विना वेतन के कालेजी में ध्वजध्वज का निम्नस्थ की होना चाहिए। इससे क्षात्र क्षात्राधी की ट्रेनिंग की पिछा निम्नस्थ जायेगी तथा स्कूलों, कांठों के कार्य भी यत जाएगी। जब जन्मने मुक्त पिछा प्रायः की है, तो उन क्षात्र क्षात्राधी का स्वातन्त्र्य तो करना ही चाहिए। केवल भोजन वर्षों के बीर क्षात्राधी निम्नस्थ स्वातन्त्र्य के ही के बिना-बिना ही बड़ी निम्नस्थ का मार्ग है।

तप

जीवन मनुष्य को जन्मित करने के लिए किया है। यन्त्र पथियों की शक्ति वह कैसा ज्ञान प्राप्त कर जीवन को समान रूप से बाधा प्रदान नहीं है। प्रकृता जीवन हाथमर्वा प्रारा ही बनाया जा सकता है। प्रयत्न तो जीवन के प्रत्येक क्षण में शास्त्री की आज्ञा का ही प्रसार है। हमारा ज्ञान प्राप्त और विकास तथा रहस्य रहस्य सभी छात्रों के साथ-पवित्रता के बारे में ही चाहिए, और जीवन प्रत्यक्ष विज्ञान के माध्यम से सुधार जाता है। इस समय हमारे देश में इन सभी बातों को सर्वथा प्रभाव है, और हमने केवल शास्त्र-मार्ग की प्रशंसा किया है। इस धर्म, धर्म, महाविद्यालय के सेवन करते हैं किन्तु वह सब समझने की कोशिश है, नहीं करते हैं ये क्यों किन्तु यन्त्रों है, तथा करीर, मूर्ति, आत्मा पर इनके सेवन के क्या प्रभाव पड़ते हैं। किम विपश्यना योनों को साक्षात् और मास्टर बन हमें प्रभाव करते हैं, यह हमारे साथ की कोई ऐसा ही सम्बन्ध है जो हमें सब महसूस होता। विचारों पर जो हमें से चुनाव है, और कर्मधार है। इसीलिए मनुष्य अपनी इच्छा का प्रयोग कर सभी वस्तुओं के इनके प्राप्त होता है। परमात्मा की ही ही हमको बुद्धि को ही, हम सभी और हीर के समस्त प्रकार के ही, जैसे बुद्धता, भाव, चरक, धर्म-धर्म-धर्म, धर्म, कोशिक धर्म को अपना कर और इनके व्यवहार में लिख और नष्ट कर सकते हैं। विपश्य, योगी, योग्य, हमका धर्म को फिर जीवन में स्वेच्छा की जाने वाली आज्ञा प्रतीते हैं। इस ही लिए मनुष्य बुद्धि को प्रतीति की बातों को समझने की लगन को बैठा है। यन्त्र हमारी और ही की समझते हैं। यन्त्रों का करने से हम



[illegible]

कोई चिराग जलाओ बहुत  
अन्धेरा है

उत्तमचन्द्र क्षरर

एक धीरान्त ही, यशसाधना, स्कूल के प्रातः के मूक भाव से जवना की उडासी मिला का परिचय दे रही था। मुझे लगता ही 1क वहाँ कोई परिचित व्यक्ति मिले, वह साधु की तो नहीं था। एक काश परचाय कुदरत महीषा (मन्त्राणुपहक) क दर्शन हुए मन शांत हुआ कि कोई परिचित तो मिला। इतने में एक मत्त सन्त स्वामी सत्यानन्द की ओर मुझे शाय् की ध्वनि सुनाई दी वह फिर तो ही अपने साथियों में ही था।

पचा पचा ग्राम में ठाकुरो का झालक फेला हुआ है। हरिजनो को यश करने, यशायीय लेने का अधिकार तो क्या, इज्जा भी दण्डीयों में है, ठाकुर साहब के सम्मुख हरिजन बन्धु बारासाई पर नहीं बैठ सकता, और वह उज्ज्वल समुदाय का का चिह्नो कर रहा है। हरिजन बाण्य यदि यश में सम्मिलित हुए तो न केवल वे पीढ़ दिए जाएंगे, अपितु यश करने वाले भी न बच सकते, और इस बलि के लिए हम तो जा ही गये थे।

राजों का प्रचार कार्य प्रारम्भ हुआ, स्वा० सत्यानन्द जी क भाषण में एक उद्बुद्ध व्यक्ति शराब के गंध में डुबत तथा मनोवशनाप बकन में उसे समझने को उठा तो कुछ साधियो ने रोका, इधर स्वामी जी ने हवा का दम बैसकर 'राम-धुन प्रारम्भ कर दी। (उन्हे यह ध्यान ही आता था।) सभा शांत हो गई, भाषण

तम की यत्निमा पर हो गया और इस प्रकार स्वामी की विशेषाज्ञा का प्रत्यक्ष प्रमाण पड़े। अन्ततः २० महीनापके के, ये हो उठे। यही है। इस अभिहितत प्रत्यक्षमात्र का प्रमाण कहते हुए, अठार बन्धुओं के स्वाभिमान को सबलकरा रहे। जातीय बन्धुओं के कारण, उन्हीं जिनके ने नहीं करा। यह मेरी नारी की मैं जिन्दगी की दुखस्वप्ना से कुछ उठा तो था ही, वालि के पते के कारणों पर प्रभाव शक्ति का। भाषण के मतलब, विशेषीय के प्रत्यक्षमात्र पर मोक्ष विच्छेद जगता मेरे स्वीय दा पड़े। सभा समाप्त हुई, हो जीवन को बसे, हरिजन बना तथा और हीके मोक्ष करने ही यह एक उपाय को अनुभव हुआ। काह ! हरिजनो के उपाय तथा बीरो के ठेकेदार की हस्ता अनुभव का पाते।

दूधरे पिन प्रातः यम हुआ, सब नर-  
नापिको को धातुपि ने के लो संस्कार ने  
दिया हमने । कुछ शरीरों की पित्त वने,  
होय हय को ज्ञात हुआ कि मँवात नार सिवा,  
परन्तु नह हमारी कोरी कल्पना की ।  
होयहूर को ज्ञात हुआ कि हरिजनो को  
सिने यमोपवीत ऊठुरो ने सोझ सिय ह्य  
कुछ को पिटाराई अठुरो ह्य, और कल के  
यने को राक्षसपत्र विषयक कल रंज्यो ।  
यसी का बवार काय धातुपि ने चत नवा  
स्वोक्ति हय की कृष्ण की पयिदा यमना  
पि । शरीर की ने स्थानय और उस की  
विचार को का पुट की ने जात, परन्तु

हस अम्दाज से कि जोड़ा सवार से बिदक  
न आए ।

प्रमाण दिने के लिये के केवल बयानान  
 को ही धातुकि का अधिकार दिया बाकी ।  
 मीने बहुत भी कि ऐसा क्यों ? परन्तु स्वाधीनी  
 के के बलिष्ठ कर्मजान के बल के मुझे कुछ  
 बल दिया । यह हमारी मीने अधिक  
 नीलासे निमित्त लगाया हुआ । रात्री के  
 प्रकाश को ही । श्राव मीनेमानी को ही  
 श्राव धारासंगमानी को विचारधाराना का  
 सुनकर प्रकाश हुआ सोनासे के श्राव के  
 कटोरी के चरैयसी धारा के फलिते  
 उने के धारासे के उदकासी कुछ बल ये ।  
 पुनर्निमित्त के बल बयानमने ( ओ सुखरुद्र  
 ) धारा कि दिवा कि दिवा के मय के  
 धातुकि म दिवा कि दिवा के उने लखसी  
 य उने बल बयानमने के के परमात्मा  
 के बलान पर चरैयसी धारा को दिवा  
 को बल पर धाराकायने के धातुकि दिवा  
 गई । इस कथनमयान के धातुकि सुखरुद्र  
 के उदकासी कायैयसी मुखाय के येने,  
 को मीनेमानी को मुखाय के श्राव ही  
 के ये । यन्न समाज हुआ को ही धारा  
 श्राव । मीनेमानी के उने धारा के दिवा  
 के के परमात्मा बल धातुकि दिवा के ऊपर  
 के श्राव के भाग मय । हे मीनेमानी  
 के दिवा दिया । धारा बलैयसी मय  
 के बलैयसी धारा को धातुको की दिवा  
 की गई ।

पाठक अनुमान लगायें कि आध्र जी फिदिना अन्धकार में थीर इस परिस्थिति को वे हिन्दू बाहिर के जीने के किसमें दिखे तो वे ? अन्धकार में आध्र मानसक का जिसके स्वप्नवास के आर्यसमाज कदी भीषक इस अन्धकार को दूर करने का प्रयास कर रहा है परन्तु मनुष्य यह श्रोत सा भीषक इतने बड़ अन्धकार को भीर सेवना ? यह प्रश्न है कि होर अध्रमस को निम्नतम कर देता है ।



लाला रामगोपाल शालवाले अभिनन्दन समारोह समिति

महर्षि दयानन्द भवन, रामलीला मैदान, नई दिल्ली-२

सार्वदेशिक धर्म्य प्रतिनिधि सभा के यत्नसे प्राप्त होयेथ की राशियोंवाला शासकाल का सार्वजनिक प्रतिनिधन करने वाला एक अवसर पर लहौ ११ लाख १० की सम्मान राशि में करने सम्बन्धी कार्यक्रम की हैदारी निम्नरूप प्रसिध पर है। इस विषय में धर्म्य प्रतिनिधि सभाओं के प्रतिनिधित्व के नाम सेमेक पर मेजे का चुके है। विशेष कर द ग्रेशन २१ लाख १० जून २० की मेजे पर परीक्षों में हुनने प्रतिनिधन समिति के निरवरोध एव सम्मान राशि हेतु इन सबह में सम्पति विशेष जासकरी से प्राप्ती अवसर किंवा है। यह बात सुनने की प्राशयस्यता नही है कि सम्मान राशि के अर्थ को पूरा करने में धर्म्य प्रतिनिधि सभाओं से विशेष सहयोग

सत्वाश्रोत्रोक्त सत्वालोका एव महानुभावो का  
भी सद्योग्य इत्यत्र श्रुत्या बाह्यि विमर्शो  
मानवीय भाषा भी प्रेति ज्ञात है। और  
को हनके विषय बाबाओं के समयमें एव सव-  
योगी रह है। उपरोक्त हूतरे प्रत्यक्ष का  
प्रकाशन सांवेदिक प्रक के ६ बूत के प्रक  
के मुख पृष्ठ पर ही हुया है। वन बाबाए  
प्राप्तना है कि श्रोत्रातिश्रीय प्रपनी प्रति-  
निधि सदा में निरपेक्ष कर सत्मान राशि  
के लिए वन सवह करने का कार्य शारंग-  
करणे को प्राप्त करें।

इस अभिनन्दन समारोह की तैयारी के लिए प्रमुख धार्य जनों का एक १५ सदस्यीय कार्यकारी बल पिछले ६ मास के कार्य कर रहा है। इस कार्यकारी बल के सदस्य नव श्रव तक बनेक बार दिल्ली में

[illegible]

है।  
 साथ से साक्ष्य प्रार्थना है कि प्रवि-  
 मन्त्र समिति की समस्तता के लिए आप  
 अपने प्रान्त के कुछ अग्रगण्यों से स्वी-

नाम के साथ ही उनका पूरा पता और जिस प्रमुख संस्था से उनका मुख्य कर्म से सम्बन्ध रहा है उस संस्था का नाम भी लिखने की कृपा करें। इस अभिनन्दन समिति का गठन राष्ट्रीय स्तर पर किया जा रहा है। अतः देश के सभी प्रांतों एवं श्रद्धेय सामाजी के त्रिष सामाजिक कर्मों का प्रतिनिधित्व उस समिति से हो सके, इसका ध्यान रखना उचित होगा।

आवर सहित ।

जयदीय

डा० आनन्दप्रकाश  
सबोजक एवं मंत्री  
अभिनन्दन समिति







## समाचार-सन्देश

### पं० युधिष्ठिर मीमांसक का अभिनन्दन एक सराहनीय प्रयत्न

वैदिक वाङमय के लघु प्रसिद्ध विद्वान् मानवता क पुजारी धार्यविद्या के उपरवी प्रचारक पं० युधिष्ठिर मीमांसक का धार्यसमाज सान् कृज बम्बई में मध्य धर्मित दम चिय गया। टनो ज्मो क 'र' स ट द त्रय मय सत्राया गया। विविष्ट मयमात्र न्यसितया ध यशैरन के सैनीको ह सादर धर्मिवादन क साथ धार्यय मीमांसक जा को मय पर न जाया गया। मय पर मु-य पक्ति म श्री पं० युधिष्ठिर मीमांसक की बलराम जय वर ए श्री श्रो० बय ब्यास थे। मय पर उय स्थित थे धार्य प्रतिनिधि समा जुबरात महाराष्ट्र और बम्बई के प्रथम क्रमश मय मयसरीय कोषया की दोलनराम बह्दा और की प्रोफाया धार्य धार्यया कोषये की धार्यनी धार्य धार्यधुभाय थे। धार्यसमाज सान्ता कुज के प्रथम श्री देवेन्द्र कटूर ने श्री बलराम जाखर की धार्ययात ने धर्मिनन्दन समारोह के प्रारम्भ होने की घोषणा की। इस समार के यवलाय महामंत्री कैटन बलराम जय नवनमुद्राय का धार्य सारवा के द्वारा किये जा रत कायों का सभा प्रतिनिधियों का परिचय दिया। उन्मोय जा बलराम जाखर की नरुन म कहां द्यार लोक सभा धार्य नारक का एकुति और सनवा की अनतो नय धार्या सकुल के महान पुजारी है एम धर दल्ल ब्यति द्वारा इस समारोह की अध्यक्षता करान गैरय का विषय है। धार्याय साम देव श्री पं० युधिष्ठिर मीमांसक की उपरवी प्रकाश पाणिपत्य का धाराप्रवाह भाषण के बल पर प्रथम विद्या समाराग रोमांचित होकर कलतर धर्मित कर उठा। श्री बय राम जाखर ने पय पण्डित श्री की

धर्मिनन्दन पय नैट किया। इस धरधर पर एक न्यसिम ट्रापी भी पण्डित जी की मं न की गयी। इस पर लिखा या— जीवन पयन्त वैदिक धनुस्त्रयान धोर धार्य पयत् की सेवाय समर्पित जीवन के प्रनि कुनता के प्रनीक न्यवरु पण्डित युधिष्ठिर मीमांसक को उनके धर्मिनन्दन समारोह पर ५,५०० रुपये की वैली सहित सादर भेंट—१९५८।'

७५००० रुपय की वैली भट करने के पचात् पुष्य पण्डित जी की धर्मपत्नी भीमती यशोदा को भी धार्य एउ पुष्यमाधो के सम्मानित किया गया।

श्री बलराम जाखर ने धार्ये धार्य-धीय भाषण में कहा— श्री कैटन धार्य न मेरा परिचय देते हुए मुझे एकुल का पुजारी कहा। एकुल तो पूरे नारतीय की मा है। मा का पुजारी होना हवारी एकुलि है जो धरनी मा की सेवा नही करता यह कुनल है। मैं एकुल की सेवा नही कर रहा धरनी मा की सेवा करता हू। उन्मोय धार्ये कहा मैंने प्रथमयश्री की राखीय वाणी को लिखा है—कि इस वस की धरयवता को बनाये रखने के लिए मकलुट नाय के पदम को समस्त नार-नीय विद्यायियों के लिए धरिवायय पोषित कर दिया जाय। यति धरिवायय म किय जा सके तो एकुल पदने वाल विद्यायियों को उ-न विद्या म धार्यजन के लिए प्रयेन ऋडु १० अक प्रतिफल चिय जाय। श्री जाखर ने धार्यसमाज सान्ताकुज के धार्यकारियों का इस प्रकार का नमरोह धार्योषित करने पर तथा सकुल के प्रचारक परिचियों के सम्मान करने की मुकुल-कट ने प्रसगा की।

सम्पादक धार्यधनेश

### धार्य केन्द्रीय सभा दिल्ली का निर्वाचन

१८ अगस्त १९८३ को

धार्य के ीन सभा दिल्ली राज्य की धनतरय सभा की एक बैठक धरिवाय ६ जुलाई को सभा सभालय अनुमान रोड में हुई। इस बैठक में निराय निराय गया कि धार्यामी पय १८८५-८६ के लिए सङ्-युक्त सदस्यों का निर्वाचन २८ जुलाई १९८५ को तथा वार्षिक धर्मिवेशन एवं निर्वाचन १८ अगस्त १९८५ को किया जाये। दिल्ली की सभी सम्बन्धित धार्य-

सभाओं क धार्यकारियों ने निवेदन है कि वे सम्बन्धा शुल्क ३० रुपये तथा वो प्रतिनिधियों का सल्लयश शुल्क सभा कार्यालय में प्रतिनिधियों के नाम सहित दोद्य निजवाय।

अरवीय  
सुवेदक  
महामंत्री

### भजनोपदेशक संगीत प्रशिक्षण शिविर १४ से २८ जुलाई, १९८३ तक

धार्यजयत् के सुविख्यात संगीताधार्य पं० यन्ताहाल की वीपुष' तथा पं० धर्मि-बिनय जी भार्गवी द्वारा एक 'सम्बन्ध-देसक संगीत प्रशिक्षण शिविर' का धार्यो-जन हो रहा है। इसय धार्यनीय संगीत के साथ स्वंसत् पं० बल्लरीयाम जी, जी० तेजविह्व जी कुशर सुखवाल जी धार्य युसाकिर एवं किरियन पं० प्रकाशचन्द्र जी वीसियो व धार्युक्ति सरल संगीतो का भी प्रशिक्षण दिया जायेगा। निवास व भोजन नि शुल्क ररगा।

ऐसा धार्योवन प्रथम बार दिल्ली में हो रहा है। धार्यसमाज के भजनोपदेशक

### धार्यसमाज सान्ताकृज द्वारा चिकित्सा कैम्प का आयोजन

सचार का उपकार करना इस समाज का मुख्य उद्देश्य है। कर्हिण धरालन्य के इस धार्यश का पानन करने के लिए धार्य समाज सान्ताकृज न रविबार दिनांक २८ अगस्त १९८३ धार्य मेडिकल रिलीफ मिशन के सल्लयधान में नि शुल्क नेत्र चिकित्सा एवं धार्योवन कैम्प का धार्यो-जन किया।

शिविर का उद्घाटन महाराष्ट्र के स्वास्थ्य एवं ररिबार कल्याण राज्य मंत्री श्रो० धर्मिन लखन्य जी ने किया। धार्य समाज के योग के-ड को बातायुक्कित धार्योवन स्पेक्टर ने परिचित किया जिनका उद्घाटन धार्य महीराय ने किया।

कार्यवैशेषिक धार्य प्रतिनिधि सभा के उपप्रधान श्री सवानन्य जी धार्य मुख्य धार्यिक के रूप में उपस्थित थे।

इस धरधर पर श्री सल्लयकाजी धार्य ने धरने धर्यसायिक प्रतिपादन इक-नायिक डान्सचट्टे धार्योना-धरयान की धोर से धार्य मेडिकल रिलीफ मिशन को कय-यय पीने दो लाख की एक नवीन सल्लय-द्विका हाल स्वास्थ्य भेंट की।

राष्ट्रय भारी श्री श्रो० धर्मिन वरहारे ने सल्लयवाहिका का पीरा काटकर जुते उतारे और रिलीफ मिशन के सल्लयका स्यामी रामानन्य जी वाखरी के कलज कुकर धरसो वाखी नुई होरी।

इस कैम्प में लगभग ४०० रोगियों के नेत्रो का ररीलक्ष किया गया एवं लगभग ५० रोगियों की दाखो का धार्योवन किया गया। एउ नवीन ब्यसितयो की दाखों का धार्योवन हुषा को इलाय का ब्यय दो दूर दो सयम साराप टाट श्री नही भर सकते थे।

धार्योवन के सल्लयत् रोगी एक सल्लय धार्यसल्लय अवन में ही रहे, जहां उनकी सेवायात की गई। उनके भोजन व धरारी की ब्यवस्था एवं सल्लय होने पर उन्मोय धरया धार्य का निवायन नि शुल्क किया गया जुंभा बरहारे ने कहा मैं धार्यसमाज के इस कार्य के बहुत प्रगाथि हू। धार्य समाज वरि इह काटकर के ररीलक्षका का

तथा धर्यधरार में ररि रखने वाले सल्लयक करें। सल्लयक व यन्मयबहारा का १० वीयवृधालन्य नेव विवालय १२९ वीयमनगर नई दिल्ली-४९

धानी सज्जतो व सभाओ से निवेदन है, कि धार्यिक सहयोग सभा साध सारमी (धारा पायल, धान, दूध, भी धार्य धरयान कर पुष्य के धामी बने।

निवेदक

स्वामी सोनारन्य सरलस्यो

धार्याय ररिदेव

स्वान श्रीमद्भगवन् नेव विवालय

गीतमनगर-नई दिल्ली।

धार्य जन साधारण के लिए करता है वो मैं सत्कार की धोर से पूर्ण सहायता करने को तैयार हूँ। श्री सल्लयकाजी के धार्यह पर उन्मोय कहा मैं धर्यसल्लय भोजन के लिए बम्बई उपनगर न सत्कार की धोर से भजीन श्री देव को तैयार हूँ।

मुकुल धरिवाय की यवानन्य जी धार्य ने कहा इस शिविर को सेवाकर मुने धार्य समाज के प्रारम्भिक इतिहास की याद बा रही है। अब हमने जन साधारण की नि स्वाय धार्यना से सेवा कर धार्य नमाज को बिबधित किया बा। धार्यममाज साताकृज ने हमे धार्य नवीन विद्या का वरु करवाया।

श्री सल्लयकाजी धार्य ने कहा यदि सत्कार हमे यजीन देतो है तो हम को रोरोर की लायन से धर्यसल्लय के निरायि ऋि विजुल तैयार है।

धार्य मेडिकल रिलीफ मिशन के सल्लय-पक स्यामी रामानन्य जी ने धरके बल्लयन्य ने कहा कैटन बेवर न धार्य के धरयक प्रयास ने इस मिशन की स्वापना हुई धोर धोर हमने निरक्ष एक बरै में पूरे महाराष्ट्र में लगभग ५०० धार्यरेशन धोर ३००० रोगियों का नि शुल्क ररीलक्ष किया।

समारोह का सरोजन महामंत्री कैटन बेवरल्लय धार्य ने किया। प्रथम श्री देवेन्द्र जी कटूर ने नक्करी एवं ररवीं जिनकी नि शुल्क सेवा धार्य हुई एवं कार्यकर्ताओं का, धरिवायों का सल्लयवा किया।

अरवीय

बेवरल्लय सभा महामंत्री

### धार्यसमाज हनुमान रोड द्वारा वेदप्रवचन

धार्यसमाज हनुमान रोड नई दिल्ली द्वारा १ जोलाई से ६ जोलाई तक श्री पं० ययमकुन्दर सल्लय की सेवाया सल्लय हुई। इस धरधर ४२ श्री पं० गुणाधिष्ठ रायच के मधुर मयन भी हुए। यह धार्यो-वन बाया सल्लयविह्व रोड पर कुने स्याय पर बा साधारण की वैदिक सल्लय देने के लिए किया गया बा, जो सल्लय रहा।

नमनी, जैरतीलायक नायिक

## ग्राम प्रचार

स्वामी स्वस्मानन्द सरस्वती ग्राम-छात्रा वेद प्रचार द्वारा १६ जून रविवार को शाम ५ बजे से १० बजे तक राम महीनद (रामगढ़) में श्री कर्णेश्वरनाथ धर्म के विनाश स्थान पर एक नया मठ के पश्चात् ५० छात्राचार प्रेमी और स्वामीजी रायच द्वारा प्रबोधिनेश्वर रहा। जिसमें ग्राम के मर-मारियों में भारी संख्या में आए किया। और निवेदन किया कि हमारे यहाँ कम से कम एक सप्ताह का कार्यक्रम रखने का कष्ट करें। हमारे यहाँ पर ईश्वरों का अधिक प्रचार रहा है जो कि वेनों के प्रयोगन देकर ईश्वरसंत

का प्रचार करते रहते हैं। और बर्न र्नि-वर्तन कर रहे हैं। इस बाहते हैं कि हमारे घर-घर में यज्ञाधि वेदक बर्न द्वारा वैदिक बर्न का प्रचार-प्रसार जारी रहे। इस कार्यक्रम के बनाने के लिए श्री रामप्रताप जी का प्रयत्न रहा। श्री रामप्रताप जी अपने साथ हनुमन्, गायत्री, नदी, श्री इत्यादि साथ रख कर ले जाते हैं और हनुमन् बर्तियों में कार्यक्रम निश्चित करके वया का पूर्ण सहाय्य बाहते हैं। श्री रामप्रताप जी का यह सहाय्यी कार्य है। ईश्वर हमका प्रत्येक क्षण से कल्याण करें ताकि सत्सत्ता प्राप्त करते हैं।

स्वरूपानन्द

सजिल्द सत्य के प्रचारार्थ

**900/-**

सेकंड

अजिल्द

**400/-**

सेकंड

मृत्यार्थ प्रकांक्ष

घर घर पहुँचाये •

सफेद कागज सुन्दर छपाई

शुद्ध मस्करण वितरण करने वालों के

आम्र 23x36-16 पृष्ठ 820 की दर लिए प्रचारार्थ

अजिल्द 9/- अजिल्द 4/-

**आर्थ साहित्य प्रचार ट्रस्ट**

4-55 बारी जवाली, दिल्ली-6 दूरभाष: 238360-233312

## दंतों की हर बीमारी का घरेलू इलाज



23 जड़ी बट्टियों से निर्मित  
आयुर्वेदिक औषधि

दंतों का इलाज



आज नये वैदिक  
नये उपकरण

विदेशीय

महाशिया वी हट्टी (प्रा०) लि०  
9/44 इण्डियन एरिया, सील कटर, नई दिल्ली-15

फोन 539608, 537987, 537341



मसूनों की सुख



मुँह की दुर्गंध



लंबा नास पानी लगना



दात का दर्द

## गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय, हरिद्वार

प्रवेश सूचना

निम्न विभागों में जुलाई १९८३ के

प्रवेश प्रारम्भ है—

(१) विद्याविनोद (इन्टरमीडिएट)

प्रवेशार्थ योग्यता—

१ विद्याविनोद (गुरुकुल कांगड़ी)

२ हाईस्कूल पर्यन्त सहित ३ पूर्व मध्यमा

धरो की सहित (बारगणकी) ४ विद्यालय

(रवाच मुनिबटि) धरो की में वैदिक

सहित ५ विद्यालय (गुरुकुल महाविद्या-

लय ब्यागपुर)।

(२) धर्मकार (बी०ए०)

प्रवेशार्थ योग्यता—

१ विद्याविनोद (गुरुकुल कांगड़ी)

२ इन्टरमीडिएट पर्यन्त सहित ३ उत्तर

मध्यमा धरो की सहित (बारगणकी) ४

विद्यालय (रवाच मुनिबटि) धरो की में

इन्टरमीडिएट सहित।

(३) बी०ए०-बी० (प्रथम एवं द्वितीय वर्ष)

गुप १ कैम्ब्रिज, मोटनी, जूनीवी।

गुप २ कैम्ब्रिज, फिनिश, गणित।

प्रवेशार्थ योग्यता—

इन्टरमीडिएट या समकक्ष विज्ञान

सहित।

(४) ए० ए०

१ वैदिक साहित्य २ मन्त्रगु साहित्य

३ दर्शन शास्त्र ४ प्राचीन भारतीय इति-

हास संस्कृति तथा पुरातन ५ द्वितीय

साहित्य ६ मनोविज्ञान ७ धरो की ८

गणित।

प्रवेशार्थ योग्यता—

१ धर्मकार (गुरुकुल कांगड़ी) २.

बी०ए०-बी० ३ बी०ए० ४ बी० काम०

५ विद्याभारत ६ शास्त्री ७ ब्यागार्थ

८ साहित्यसत्त।

नोट—गणित तथा मनोविज्ञान विषय

में बी०ए०-बी० परीक्षा उत्तीर्ण छात्रों

को ए०ए०-बी० की उपाधि प्रदान की

जाती है।

(५) ए० ए०-बी० (भारतवासीबी०)

प्रवेशार्थ योग्यता—

बी०ए०-बी० वाचकी बी० गुप (बी०

ए०-बी० में ग्यूलतन १० प्रतिशत प्रक में

उत्तीर्ण।

(६) बी० ए०-बी०

वेद, संस्कृत, द्वितीय, प्राचीन भार-

तीय इतिहास संस्कृति तथा पुरातन,

भारतीय दर्शन, मनोविज्ञान एवं धरोकी

विषयों में पी०ए०-बी० की व्यवस्था है।

रजिस्ट्रेशन फीस ३० रुपये है। प्रवेश कार्य

तथा नियमावली गुरुकुल डाक ब्यस सहित

६ रुपये है।

अथ विनियमार्थ—

१ सुदीर्घ गणित तथा सुसज्जित

प्रयोगशालाएँ पुस्तकालय, एवं बी० सी०,

ए०ए०ए०ए०, बी० शास्त्र का उत्तम

प्रबंध।

(२) निर्वचन एवं योग्य छात्रों को गुरुकुल

मुनित तथा छात्रवृत्ति भी दी जाती है।

विद्यार्थी—

विश्वविद्यालय अनुदान धायों की

धारा ३ के अन्तर्गत गुरुकुल कांगड़ी विश्व-

विद्यालय भारत सरकार के माध्यमता प्राप्त

है तथा उपाधिका सरकार के प्राय सभी

विश्वविद्यालयों द्वारा मान्य है।

प्रवेश पत्र तथा माटर्नलि कार्यालय

से प्राप्त करें। प्रवेश की दानियस तिथि

७-८-१९८३ है।

(रामप्रसाद बेदालकार)

(सुरेशचन्द्र स्थानी)

## अतमता का एक मात्र विश्वास

# Groversons



Paris Beauty

पेरिस न्यूटी



ब्रा. पैन्टी. बनियान अन्डरवियर व बेबी पैन्टी आदि

पेरिस न्यूटी सेल्स कापेरेशन

2665-B/2 बीकम गुरु, अजन्तल दुर्गा-नैव  
कठिन बाग नई दिल्ली-११०००५  
दूरभाष-589214-574200-582036



पुस्तकालय  
पुस्तक कानूनी विधिविचारालय  
हरिद्वार  
29/7/85

# ओडम्

# साप्ताहिक

# आर्य सन्देश

कृष्णवर्तो विश्वमार्गम्

मूल्य एक प्रति १० पैसे    वर्ष ६ रुपये    प्रतिवार, २१ जुलाई १९८६    मुद्रित सन्ध्या १९७२६४८०-८६    आगम १०/४२    दयाप्रकाशक—१६१

## त्यागमूर्ति आचार्य नरदेव शास्त्री वेदतीर्थ

### —सच्चिदानन्द शास्त्री

सीधे सादे, मोटे कुर्ता पहोती थे, देरी में चप्पल, नंगे पिर से जीवन-भाषण करने वाले व्यक्ति को देख कर कोई यह नहीं जान सकता था कि यह कोई विद्वान् व्यक्ति है। परन्तु ऊपर की आचरण के नीचे विद्याल पात्रित्व बरा हुआ था। स्वर्ण, नर्महृदय, महाभारत अतिरूप पर धारि हुए थे।

महाराष्ट्रियन ब्राह्मण बचपन में माता पिता की छत्रछाया से दूर पञ्जाब के लाहौर में सस्कृत का गहन अध्ययन कर शास्त्री परीक्षा पास की, अग्रेजी में भी वे निष्णात थे।

आर्यसमाज और -भाभी दयानन्द का व्यापक प्रभाव उनके मन में अस्तिष्ठ पर छा चुका था। अतः लाहौर से शिक्षा पाकर उत्तर भारत हरिद्वार आ गये। आर्यसमाज की शिक्षणव्यवस्था हरिद्वार क्षेत्र में जम चुकी थी। आप भी उसी में सम्मिलित हो गए। स्वामी श्रद्धानन्द ने गुरुकुल कान्ही की स्थापना गंगा के पार कान्ही में की यह सब विद्वान् की वही कृपा है।

परन्तु कुछ सैद्धांतिक तथा व्यावहारिक मतभेदों के कारण स्वामी दर्शनानन्द जी के साथ आचार्य जी भी प्रायः प्रौर ज्वालापुर में गुरुकुल की स्थापना की गई। १० नरदेव शास्त्री भी म० वि० आ गये और जीवन वर्ष न गुरुकुल ज्वालापुर महाविद्यालय की निष्पन्न सेवा की। परिणामस्वरूप गुरुकुल के आचार्य जी पर्याय १० न के थे। १० जवा-हर्लाल नेहरू प्राण के व्यक्तित्व से प्रभावित थे कि आप सुनक

ही स्वर्ण जयन्ती पर महाविद्यालय धरारे।

त्यागमूर्ति-आपने पास कुछ की है वह सब दूसरों का है। एक बार एक किसान बाढ़ में ठिठरता बाया। आपने रखाई, गद्दा सभी कुछ दे दिया। आपने आप प्राण तापकर रात काटते थे। कोई व्यक्ति कुटिया पर से साली हाथ नो जा ही नहीं सकता था।

सामाजिक जीवन में धार्यसमाज से बच हुए थे। लेख लिखने के घनी थे। सकेने लेख धार्यसमाज व विभिन्न पत्रिकाओं में सुरक्षित हैं।

गीता - विमर्श आत्मानोचन, श्रद्धावोध नीच पति धनेक पुस्तकें भी लिखी। लेकिन 'वास गरकुल ही रहता था। संकट 'वर्षा' सदा ही उनसे प्रेरणा प्राप्त रहा उनसे एक भी लेखक भी है। जीवन में न जाने कितनी घटनाएं उत्ती हैं पर कुछ स्मरणीय होगी है। हैदराबाद का धार्य मत्याम रहा था। अन्ध्र अन्ध्र काश्मीर का नृप से त्याग-पत्र देकर सत्याग्रह में भाग ले रहे थे। काश्मिर से निकाले जागने इसकी उन्हें चिन्ता न थी। १९४१ जी भी सत्याग्रह में जाना तो ४ नूते थे पर काश्मिर की प्रश्रुति पर। अतः आपने म० गांधी की स्वीकृति के लिए पत्र भेजा। यह सूचना जब समाचार पत्रों में छपी तो बड़ी ते से गयी। परन्तु आपने इसकी परवाह नहीं की। बाद में आप हैदराबाद की जेलों का निरोधक करने गये।

राजनीति के परिप्रेक्ष्य में आचार्य जी का राजनैतिक

जीवन हैदराबाद क्षेत्र ही रहा। वहीं से सदा कारा के बन्दी बनते रहे। हैदराबाद में बनस्पति पवन के अर्धे स्व० १० अमरनाथ बैरा का सामाजिक योगों में अन्तर्लक्ष्य संक प्राप्त रहा।

स्वतन्त्रता प्राप्ति के बाद सिन्धु जनों में आचार्य जी की १० प्र० विद्यालयों के लिए प्रयाची बनाया और वे विद्यालय ही गये। पर विद्यालय निवास में न रहकर आप प्रतिदिन सभा १० प्र० अवन के एक कम में पाँच वर्ष बिता दिये। साथ ही योजना धारि का प्रबन्ध उनके सिन्धु १० गेणालदत जी शास्त्री सम्पादक धार्यसमाज के ही रहता था। जो पेंसा मिला उसे जिसने उनके लिए व्यय किया था उसे वापस कर दिया। लोग हैरान थे।

एक बार गो रस पर एक माया छापकर सभा में विनरित कर दिया बनी कानाफूसी हुई। परन्तु राजपट्टन तथा प पत की सूत्र सूत्र ने सब को शांत करके कोई खवात तलब नहीं किया। यह उनके व्यक्तित्व की निशानी थी। अन्त काय के लिए या किसी काम से लिए कार्य भी किसी अधिकारी के पास कभी नहीं गये।

अग्रेने जुनाव के समय पुन प्राय से १० महावीर त्यागी धारि से लड़े होते हेतु प्रार्थना की। आपने -पट्ट कट दिया। क्या मुझे कलकत्ता से कानून गो बनाते हैं। अन्त में ऊंचे पर बैठकर सब को डाँटता हूँ। तब सब मुझे डाँटते हैं। बस अब बाज धारा और वह प्रत्याची नहीं बने।

साधारण सा व्यक्ति पत्र लिखे,

उसका उत्तर अवश्य मिलेगा। एक बार बीमार हो गये। अमरनाथ में अग्र गया कि वह कुछ हड़ताल पर हैं। बड़ा सकाराती स्तर पर हड़ताल मचा। दिल्ली से मनीषा और भी महा विद्यालय पहुँचे। जब वस्तुस्थिति का ज्ञान हुआ कि कुछ हड़ताल नहीं दस्त वेचिस से बीमार हैं तब वातावरण शान्त हुआ।

इस प्रकार दिल्ली के ब्राह्मण ने उत्तर भारत को कार्य क्षेत्र बनाकर जीवन का पटाक्षर किया।

बुद्धावस्था प्राई शरीर को चिता हुई। एक दिन वह अपने आर्यसमाज प० नन्दकिशोर शास्त्री से बोले - देखो स्वामी धानन्द प्रकाश की प्रयाण वेला पर एक वृद्ध बाबा था। मेरी विदाई वेला पर दो वृद्ध कर्न। आखिर वह नमय भी धारा। सारे जीवन का निर्माही त्यागी नयस्वी सन्त भी चलने को तयार। जैसे ही पूरे पंचपुरी में तयार हुई स्कूल कालिब नन्द कर प्रिय आचार्य को चले अन्तिम विदा देने चिता की लपटों में पाथिब सारांर को धमिल कर प्रयाण किया। □ □

#### योगेश्वर की कृष्ण विरोधक

आचार्य पत्र पर ८ सितम्बर को धार्यसमाज का योगेश्वर नवीन सामग्री से भरपूर एक धार्यसमाज प्रकाशित किया जा रहा है। जिसमें की कृष्ण के जीवन दशन मतभेद पर विविध सम्प्रदाय लेखक महापुरुषों से धार्यसमाज हैं। विद्वान लेखक कुशा धार्यने लेख निम्न पत्र पर प्रकाशित किया।

सम्पादक

१९ हनुमान् पत्र

## सत्संग साप्ताहिक

## परम पद की प्राप्ति

वेदाचार्या सावित्री देवी मर्मा

उपरिनिष्ठित वेदमन्त्र ने परमप्रतिता परमेश्वर के विष्णु गुण कार्य तथा प्रभु-मन्त्रो को परमपद-प्राप्ति के विषय में बर्णन है।

स तो बन्धु — जब वेतन सवार का एकमात्र अधिपति हम सबों का सर्वप्रथम बन्धु है। 'स' सङ्कलन भाषा का एकलव्य-व्यक्त पुलिङ्ग सर्वनाम-पद है, जिससे स्पष्ट है कि ईश्वर एक ही है। 'न' पर बहुवचनान्त है, जो जीवार्थवाच्य के लिए प्रयोग होता है यहाँ उस एक सर्वाधार पिता की वृत्ति ब्रह्म के समूल सत्ताओं है। 'हम सब एक पिता के पुत्र' यह मन्त्र बहुवचनप्रधाना प्रथम पदवाच्य में फिरोजे कोषाक्ष के धर्मसम्पन्न को गृह है। पार-स्परिक राग-द्वेषानि में जलता हुआ यह आत्म-सुखदायक विद्या इस सर्वोच्च धर्म के मर्म को समक पाता तो क्या गुरुकलह, बुरा राष्ट्र-कोटिध्वंस एवं विस्फोट-सम्पन्न की बर्षाभाषिणी विभीषिका हमें सन्तप्त कर पाती? समस्त कथापि नहीं?

महाभारतीय कौरव पाण्डवों की भीषण सज्ज-राशि में जब एक दिन एकलव्य ने धर्मसम्पन्न को कुछ धनुष पराजयी प्रतिस्पर्धक रूप में कर्ण को यह गुण 'रक्ष्यन्तु' कि महावीर पाण्डव तथा बहू-राज कर्ण एक ही माता के पुत्र हैं तो उस पाण्डवहीर की, कौरवसत्ताप्रीति महावीर कर्ण का हृदय सहसा परिवर्तित हो गया। पुर-प्रतिष्ठा के कारण दुर्गोचन के पक्ष में युद्ध करता हुआ भी वह पाण्डवों का वास्तविक अधिपति न कर सका। यही व्यास-कल्पित 'स' मो बन्धु ' समस्त सत्तार के लिए रक्षा है।

बन्धु—द्वितीय धर्मवत् सर्वसर्वाधिपति बाबू सब मन्त्र-भाग में निहित है कि वह बन्धु पिता सब से पहले हमारे समस्त भाग्य कल्याणकर वस्तु स्वल्प ही प्रकट करता है, जिससे हम उस गम्भीर प्रेम-धारण में आत्म-अभिरुचि कर उन मन्त्र-पुत्रि के निराश्रय को सर्वत्र कर सकें। कोई भी बन्धु वन धारण प्रेमधारण के सभी भवभरी नहीं होता। वह निरन्तरता के लिए प्रीति-भाग का प्रयोजन धर्मवत् आनन्द है। सत्यपति के कल-कथ में उलझी स्निग्ध भावसम्पन्नी छाया प्रतिनिधित्व हो रही है। असल नहीं बन्धु प्रभुभावात् भाग्य सङ्ग-वीर्य सुदान के लिए व्याकुल हो पड़ते हैं। अन्य-सम की विफलता प्र-म-विपादा के आत्मवत् बहु स्वाति का प्रत्यक्ष भावपुत्रपिणी धर्मवत् बाराही बहा रहा है। जलन ही नहीं, सब प्रकृति की उसकी ही अनन्त प्यार से भाव विभिन्न मोक्ष को घसकत होती हुई उसी की प्रीति हो रही है। उसका प्रथम सुख

स न बन्धुर्जनिता स विधाता धामानि वेद भुवनानि विस्तार ।  
यत्र देवा भ्रमृमानशानस्तुतीये सामन्तधर्म्यस्त ॥



स्वतः है निष्कल बन्धुना की धेतुकी कृपा।

प्रभु के उपासकों में भी जनिन के परस्परविषय विस्मय के रूप में (यही गुण) प्रकट होता है। सत्तो का मातृहृदय जैन मानव-सीमाओं का धर्मिजनस्य कर भाव-विह्वल हो पुनार उठता है—'विनयवाह बलदा सार्वाधि भूतानि समोले'। 'रघु-वध के चरणम धरने में कवि-कुल-कमल-विहार विभक्तक कालिदास ने महाराज रघु के भावमय हृदय में विनयवाहक का कैला प्रभुपद स्वीन किया है। ब्रह्म-चारी कौरव महर्षि वररुचि के धायन में भुवनि रघु की राजधानी साकेत में प्यारी। सुमुनि सत्कार के अनन्तर 'रघुराज ने धायनभाषिणी की कुलज पुत्री'। शान्त्या गुमनरा सुखदाया धायनमयि बन्ध-पुण्ड्र धायनभाषिणु निष्कल बहूवचन संवाचित पाण्डवराजवर्ष विष्णुभास्तुन, धायनस्य आनन्दय का उलटत बारिपुण्ड्र ' समस्त सत्तार के प्रति ऐसा कीर्तित उपासक भावपुत्र होता ही प्रभु-धावित मतो का प्रथम लक्षण है।

'जनिता' वह व्यास प्रभु बकार-बन्धु धर्मिधायकभा-प्रेम के प्रेरण होकर इस सृष्टि का 'जनिता' ह यहाँ उल्लासक या रक्षापति के रूप में प्रकट होता है। स्पष्ट है कि किसी भी रचनात्मक कार्य तथा व्यवहार के लिए प्रीतिपुरस्सरता प्रथमतः अपेक्षित है। यदि बन्धुता हुए बिना भी कोई 'जनिता' होने का निष्कर्ष प्रयास करता तो व्यवहार में ही निपुण हो सकेगा, सुखर निर्माण में नहीं। उसने उसका किसी प्रकार का सहयोग न होता। हमारे महर्षि ध्वजानन्द स्वस्त्यो की ने साकेत सत्यन में लौकिक व्यवहारों का ज्ञान करते हुए लिखा—'सब से प्रीतिपूर्वक वर्तनस्य वर्तनायोग्य व्यवहार करता चाहिए'।

कोई भी निर्माता बहुवचनप्राप्त एवं विभक्तकल्याण भावभाषी के प्रेरित हुए बिना जीवन धर्म में सफल न हो सकेगा।

सत्तार में 'जनिता' रूप में धर्मोत्कृष्ट उपासक मर्यादाओं मातृधर्मिता का है जो निष्काम भाव से धर्मोत्कृष्ट साधनस्य हृदय में साधक कर्तवी हुई धर्मोत्कृष्ट संरक्षि का निर्माता ही अपना सत्य बचकती है।

विषयवस्तुस्य गुण एवं धार्यावक ही विधित एवं शान्तीपति की भाति राम-कृष्ण जैसे भुवनायक विवेचित्रिय धार्मिक महाभागों के 'जनिता' या निर्माता बन सकते हैं। एक व्यावहारिक-प्रवृत्ति रोमी की सफल शिक्षिका कल्याणमान लोक-बन्धु वैद्य ही कर सकता है—जब पर प्रथम इति रत्नने वाले कोभी बहकन हृदय चिकित्सक नहीं।

यहाँ ऐसी निष्काम विवेचरिति न होगी, यहाँ उत्तम सतति, सत्ताचार, तैत्तिकी ध्यान, चरित्रमय नागरिकी का निर्माण न हो सकेगा। ऐसा समाज चरित्र संपत्ति के हीन होकर विनाश को प्राप्त होगा जैसा कि धात्र धर्मोन्मी को राज-व्यवस्था में व्यवहार परिवर्ताने में स्पष्ट है। इस वैदिक वर्तनी यही है कि प्रभु के सत्य धार्य में पथ पर चलते हुए हम 'बहु-प्रेम कुटुम्बमय' का उलटत भाव प्रथमतः बारसूक, परचात्त धामानि 'जनिता' बनकर इस लोक का निर्माण करें।

'विधाता' सर्वविधकारी प्रभु बगद-बन्धु होकर अपनी जनिनी शक्ति प्रकट करता है, फिर स्वर्धरित पदार्थों का व्यापार विधान करने के हमारा 'विधाता' कहलाता है। बहुविध विधान ही ज्येष्ठ बन्धु की स्यादिति करता है। धर्मया सत्यवस्था एवं धर्मोचित पदार्थ का विनाश कर देता है। किन्तु वैधानिक मूलन है। जो जनिता है वही योग विधाता ही कहलाता है। सब जनिता (निर्माता) को विधान हेतु पूर्ण स्वतन्त्रता होगी चाहिए। उदाहरण के लिए बासको के जनिता माता-पिता ही तथा निरम विधाता श्रमिधारी (पशुपती) ही तो परि-स्विति सत्यन में नहीं समझेगी। धर्मो के 'जनिता' या ज्ञान-कर्मवशात धार्याओं की ओर उनके धर्मवत्, विचार्य, धार्या धारि की सृष्टि बनाते वाले 'विधाता' कोई दूरस्थ शिष्टा निर्माणीय धर्मिकारी ही तो फिर वर्तमान दुर्गुणित सत्यवस्था धाय से किसी नहीं है। विषय विचारण की धाय-व्यवस्था की गयी है। सभी विधानों में जनिता विधाता की निर्माण में ही दुर्गुणितव्यवस्था रक्षणीय है इसमें 'जनिता स विधाता' किन्तु छोटी बड़ा प्रतीति होगी है किन्तु इसके प्रसिद्ध भाववत्त में हमारी विभिन्न-विधियों को धायु परितरित कर दोर

ध्यानि उत्पन्न कर दो है।

"धामानि वेद भुवनानि विस्तार"—बहु कृपापु पदार्थ सकल पदार्थ-विधानों का जनिता या विधाता है धात्र (विष्णु) समस्त (धामानि) तेजोवत् (भुवनानि) भुवनी को (वेद), सभी प्रकार बनाता है। इस भगवान् के तीन धर्म विवेक रूप के स्मृति होते हैं—१ बहु ईश्वर सर्वज्ञ है, २ उसकी सृष्टि ज्ञान-विज्ञान में परि-पूर्ण है, तेजस्वी विधाता के तेजोवत् धर्मवत् भुवन है, ३ धर्मवत् लोक-लोका-नरी का सर्वज्ञता होने से वही हमारा ऐहिक-नारलौकिक पथों का सत्ता निर्माण ही कहलाता है, प्रभु उसी की उपासना करी चाहिए।

'जनिता' भूतमानवार्थानास्तुतीये धामन्तधर्म्यस्त ॥

(यम) यहाँ (वेदा) विष्णु-गुण-सम्पन्न जितेन्द्रिय योगीश्वर (भगवद्-धामानाति) - विवेक धामानाम में मुक्त हो भगवत्त को योगते हुए (सुखे) धामत् धर्म्यरत्नस्य) मोक्ष पद में रक्षण करते हैं।

स्पष्ट है कि भुवन मानव-जीवन को प्रायः कर जो मनुष्य विष्णु गुणों का स्वयं करते हैं, मरणात्त काया कल्याण सत्य-सत-पाशन एवं सहाचर्य के सेवन से परमेस्वरोपासना की योग्यता को बाधन करते हैं ने ही जन्म-मरण के दुःख पार्श्वों के भुवन हो धायन-पद के धर्मिकारी होते हैं। प्रतीति धर्मवत्त विधाता की क्षात्रि-धर्मा मनुष्य धर्मिधायन में 'भुवनवत्तस्य' बन्धो वर्तनी' भुवन पद कहा है। प्रभु-पद-प्राप्ति का पथ धुने की दीप्त धारा के समान बताया है यह धनुष, मानव तथा वेद-कोटिध्वंस में से यह पद वेदों के ही प्रायः है।

ऐसे वेदमय जीवमन्त्र होकर करीर त्याग के अनन्तर उस विष्णु लोक में रक्षण करते हैं, जिसे वेद की भाषा में सुनिष्ठ पद कहा गया है।

यद्यपि विभिन्न मत-मन्त्राचारों में भुवन के धर्मवत् प्रायः धर्मो का धर्मक प्रकार के बर्णन किया गया है किन्तु उनके बर्णित लोक धर्मिकी भोगों के ही परिपूर्ण है, सब उनमें कोई विवेचना प्रतीति नहीं होगी। धर्मार्थ-काय को बाधकभोजन दुष्प्राप्त विद करने के बाव मोक्ष पद की प्राप्ति वेदों द्वारा प्रतिपादित है। यही हृदयभास वैधानिक पदति है।



## सम्पादकीय—

## पाकिस्तान का परमाणु बम—भारत चिन्तित

जुलिकार बली खुट्टो ने १९६५ में कहा था 'भगर भारत म्यूकलीय बम बनाता है तो हम पास बाकर भूबे रहकर भी अपना बम बनायेगे।' भारत ने तो परमाणु बम बनाया नहीं और न ही इस प्रकार का घटिकोण हो रहा किन्तु पाकिस्तान अभी से परमाणु ऊर्जा के विषयक उपयोग में निरन्तर धागे बहा है। इन बात को सारी दुनिया जान चुका है। विशेषकर इस समयना से इन्कार नहीं करते कि पाकिस्तान परमाणु बम बनाने की तकनीक जान चुका है और शायद बम भी बना चुका है। गत वर्ष अमेरिकी प्राधिकारियों ने पाक व्यापारी को टेक्सास से इसलिये रवाना किया था कि वह अश्वेत रूप से ५० हलैकट्रॉनिक लटको [या थोडा] पाकिस्तान भिजवाने के प्रयत्न में सलग्न था। सम्प्रति ये लटके किसी भी प्रकार से पाकिस्तान को प्राप्त हो गये हैं जो परमाणु बम के विस्फोट में प्रयोग किये जाते हैं। सारा विश्व हैरान है कि यह लटके अमेरिका से पाकिस्तान कैसे पहुँच गये? जब कि अमेरिका पाकिस्तान के मधुरों से बाकिह है और यह सापत्ताही कितना बड़ा कहुर आ सकता है। ये सेलुज भी अनुमान-मय है। इन हलैकट्रॉनिक लटको के सफल परीक्षण कर लेने से यह भी स्पष्ट है कि पाकिस्तान बिना विस्फोट के बम बना रहा है। हर बीज का प्रजनन-प्रजन परीक्षण कम बम बनाना इस साजिश को भी उजागर करता है कि पाक बिना बमाके बम के दुनिया को पता न चल सके और काम हो जाये।

अमेरिकी राजनीतिज्ञ जो खोलने में कहा था—'मैं किसी को फूटा तो नहीं फूटगा पर पाकिस्तान जो कह रहा है उससे कही ज्यादा उसके काम बोल रहे हैं। अमेरिकी प्रतिष्ठा म्यूकलीय प्राधिकरण को प्रस्तुत की गई विवेचनाओं को रिपोर्ट के अनुसार समुदाय है कि पाकिस्तान इस दशक के उत्तरार्ध में प्रतिष्ठित म्यूकलीय बम बनाने की क्षमता प्राप्त कर चुका है और १९६० तक तीस यूरेनियम बम बना चुकेगा। भूबे रहकर और पास बाकर बम बनाने की योजना और खुट्टो ने १९७२ के युद्ध हार जाने के बाद प्रारम्भ कर दी थी। राष्ट्रपति के तुरन्त बाद इन्होंने अपने वैज्ञानिक कुलाकर प्रोजेक्ट ७०६ का कार्य प्रारम्भ कर दिया था। इस प्रोजेक्ट के अन्तगत १९७३ तक पाकिस्तान ने प्राकृतिक यूरेनियम के हथनवाला अथवासायिक हथनवाला म्यूकलीय रिफेक्टर स्थापित कर लिया था इसमें कनाडा का भी सहायता ली गई थी खुट्टो ने फ्रांस से भी सौदा किया एक ऐसे प्लूटोनियम पुन सत्ता बन सयत का जिसमें प्रतिशत ३०० पौड प्लूटोनियम सञ्चित हो सकता था। इतने प्लूटोनियम से ३० परमाणु बम तयार हो सकते हैं। १९७६ के समझौते के बाद फ्रांस ने इस सयत का काम बन्द कर दिया था परन्तु कुछ फ्रांसीसी कर्मचारी गुप्तपुत्र इस कार्यक्रम को सहयोग देती रही। पाकालान ने इस सयत के ६५ प्रतिशत का नक्सा बहुत ही गोपनीयता से प्राप्त कर लिया। इसी काल में पाकिस्तानी बम के निर्माण करने में जो जान से जुटे था ७० अणुल कबीर सा हालैण्ड की फिजिकल डायरेक्टिव रिपब्लिकेनरीटरी से म्यूकलीय रिफेक्टर के उपयुक्त यूरेनियम को तयार करने का जानकारी लेकर पाकिस्तान लौट चुके थे। पाकिस्तान ने ७० अणुल को इस चारी की महानता की उपाधि दी गयी और इन सम्मान का और अधिक चिरस्थायी बनाने के लिए काहूटा परीक्षण सयत का नाम बंद कर डा० अणुल कबीर सा रिजिब लेबोरेट्रील रख दिया गया। डा० अणुल कबीर ने ऐसी १०० यूरोपीय, कर्मायोज और अमेरिकी फर्मों को सूची भी प्राप्त कर ली थी। ये फर्म पाकिस्तान को प्राथमिक उपकरण उपलब्ध करा सकती थी। नकली बमों की माह में पाकिस्तान ने उपकरण प्राप्त भी किये।

१९७८ में लीबिया की सहायता से पाकिस्तान ने नाइजर से ५०० टन यूरेनियम अक्साइड लिया। फरवरी १९७८ में डा० कबीर सा ने कोयला कर दी कि पाकिस्तान ने यूरेनियम सर्वश्रेष्ठ प्रक्रिया की तकनीक प्राप्त कर ली है। परन्तु पाकिस्तानी राजतन्त्र हमेशा इस बात का साधन करते रहे। खुट्टो ने अपने सम्मरणों में लिखा था—'हम

जानते हैं कि इसाइन और दसिए अफीको के पास पूरी म्यूकलीय क्षमता है। ईर्गाई यहूदों और हिन्दू सभ्यताओं के पास भी यह क्षमता है। साम्बावादी ताकतों के पास भी है परन्तु इसाई ताकत ही इनसे बचित है। परन्तु खोष ही यह स्थिति बदनने वाली है। राष्ट्रपति जियाउल हक ने भी इसी बात को दोहराया चीन भारत सह और इसाइन के पास परमाणु हथियार हैं भगर पाकिस्तान के पास भी ऐसा हथियार हो सकता है तो इससे इस्लाम की ताकत बढ़ सकती है।

अमेरिकी सीनेट एलन कस्टन ने पिछले साल जून में सीनेट में प्रस्तुत एक रिपोर्ट में पाकिस्तान द्वारा परमाणु बनाने की दिशा में की गयी प्रगति के अन्तरी से आगाह करते हुए कहा था कि इस बात के बहुत से सुत्र हैं कि पाकिस्तान ने परमाणु बम बनाने की पूर्ण क्षमता विकसित कर ली है। एलन कस्टन ने पांच मुद्द अफानी रिपोर्ट में उठाये थे।

१ पाकिस्तान के पास काफी म्यूकलीय वैज्ञानिक हैं और म्यूकलीय बम बनाने में पाकिस्तान ने सभी उपकरण जुटा लिये हैं। दुले बाजार में उपकरण खरीदने के अलावा हालैण्ड से यह मोसल सामग्री चुराने में सफल हो गया है। पवित्र जर्मनी और फ्रांस की कर्मचारियों का मात तुर्की के जरिए चोरी किये पाकिस्तान पहुँचाया गया रहा है।

२ पाकिस्तान अरबों डॉलर म्यूकलीय क्षमता पर लक्ष्य कर चुका है। लीबिया और सऊदी अरब ने भी पाकिस्तान को प्राथमिक मदद दी है। १९६१ से अब तक अमेरिका भी ३२ अरब डॉलर पाकिस्तान को मदद दे चुका है।

३ हालैण्ड से चुराये गये नक्शों के आधार पर काहूटा में स्थापित परमाणु सयत जिसकी तैयारी सन् २००० से ३००० ऐनरेटिक वर्ष मुनिट है। इसका मतलब तीन म्यूकलीय बम बनाने की क्षमता।

४ पाकिस्तान को चीन की मदद मिलने से वलुविलान के पहाड़ी क्षेत्र में म्यूकलीय परीक्षण स्थल विकसित कर लिया है।

५ पाकिस्तान को अमेरिका ने ए० १६ नडाङ्ग नवबक मिल चुके हैं।

साथ ही यह भी कहा गया कि हम तीसरी दुनिया को म्यूकलीय क्षमता को ऊँची होड़ के कपार पर सहे हैं। जो दुनिया के बिना से सहायक है निर्माणे में नहीं।

अनरल जिया ने लन्दन से प्रकाशित एक घरवी पत्रिका के माध्यम साक्षात्कार में कहा— पाकिस्तान को परमाणु बम बनाने का प्राधिकार है और हम बारे में कोई बल उस पर दबाव नहीं डाल सकता। उन्होंने कहा पाकिस्तान अमेरिका के इस दबाव के मादने घटने नहीं देकेगा कि वह परमाणु बम न बनाए। हम इस बारे में अमेरिकी आग्रह मानने के लिए इयलिये भी बाध्य नहीं हैं क्योंकि अमेरिका ने परमाणु प्रसार परिमोशन सॉर पर हस्ताक्षर करने के लिए भारत इसाइन और दसिए घकोन पर दब नही डाला।

प्रधानमन्त्री श्री राजीव गांधी ने अफानी चिन्ता प्रकट करते हुए कहा है, 'पाकिस्तान द्वारा परमाणु बम के बनाने प्रयत्नों से भारत बहुत चिन्तित इसलिये है क्योंकि पाकिस्तान भारत पर कई बार हमले कर चुका है। बात इससे स्पष्ट है कि पाकिस्तान का बम किसके खिलाफ हस्तेमाल होगा। भारत की पाकिस्तान पर शोभाविशेष प्राथमिक स प्राथमिक अन्तर्राष्ट्रीय बला बलवाना राष्ट्र और पाकिस्तान को हतोत्साहित करने की हरसम्भव कोशिश करने चाहिए। समस्त प्रयत्नों के निष्फल होने पर यदि विश्वेक्षणा दे तो मैं कहूँगा, इसाइन ने जैसे इराक को रोकने के लिए जबरदस्त कार्य किया था वह प्रयोग भी आभयमान गलत नहीं होगा क्योंकि परमाणु क्षातक को प्रथवी दोड़ को पहले ही रोक देना अनुभूता पर उपकार होता।

—यशपाल सुभाष



## पहले प्रचार करवाओ—

भोमान् बाबुराम जी बाबुनारे धन हमारे मध्य नहीं रहे। १९६४ ई० में वह किसी छत्रपाटी काम के लिए सोलापुर पधारे। मुझे मिलने के लिए नगर के बाहुर ही००० बी० कालेज पधारे। सोलापुर का समय था। मैंने भोजन करने के लिए प्राथमा की। बाबुराम जी ने कहा, पहले मेरा स्वास्थान करवाये फिर भोजन करूँगा। मैंने बहुत कहा कि भोजन का समय है आप पहले भोजन तो करें परन्तु वह न माने। मेरी पत्नी ने भी बहुत कहा पर आपने एक न सुनी।

सब हारकर मैंने कालेज के धर्म भुक्त खाना के एक ठो युवको को लिया और कालेज में एक थो प्राध्यापको के सहयोग से एक खाना की। मराठवाका के खान उन्हें मानत थे। उन्होंने धर्म-विज्ञानो पर एक बड़ा मुक्तिपुत्र का रोचक व्याख्यान दिया। वह एक प्रभावशाली बन्धु थे। बोलने की शैली बहुत ही थी। प्रचार करते फिर आपने भोजन किया। वह एक बार धर्मोत्सव पधारे। यहाँ भी यही कुछ किया। छत्रपाटी काम करते फिर वैदिक एवं प्रचार का धर्मसमाज की सेवा करने जाने व गीते की लोचने वाले देश धर्मवीरो पर वह खाना बिलना भी नमं करे बोधा है।

भूलो मत ! भूलो मत !

धर्मसमाज बाबुरा कीवारा में १९५२ ई० में बाबुराम पधारे पर बार व्याख्यान देते हुए भी व० रामचन्द्र जी हेतुकी ने एक घटना सुनाई थी। धर्म भोक्तु खान देहकी ने धर्मि बोध पर मनवा। भारत के स-कालीन मुख्य व्या-भाषी श्री पाठकजी बाबुरा की को

## तस्मामन्त्र—

आर्यसमाज के इतिहास के लुप्त-गुप्त पृष्ठों का अनावरण

## आर्यों की वीरगाथा—४

प्राध्यापक राजेन्द्र 'जिज्ञासु'

धर्मसिंह किया गया उन्होंने अपने व्या-स्थान में कहा धर्मि दयानन्द की सब बातें ठीक व हितकर हैं परन्तु एक बात उनकी ठीक नहीं। धर्मि दयानन्द ने मुक्तिपुत्र का कथन किया है। जब मुक्ति ने भी भगवान् है तो मुक्ति पूजा में क्या दोष है। इस विषय में स्वामी विवेकानन्द का मत ठीक है।

वह बात सब ने सुनी। धर्मसमाज के सिद्धान्त में भी सज्जनों की यह भगवान्साहिक बात चुपी। श्री व० रामचन्द्र जी हेतुकी मन्त्र पर विराजमान थे। आप उठे और अपनी सुन्दर शैली में बोले—इस्वर सब व्यापक है। यह ठीक है। वह मुक्ति में भी है, यह सब है परन्तु परमात्मा का धारणा में मुक्ति में निमाण प्रसम्भ है। कारण परमात्मा तो बड़ा है, माना मेरा या धारणा तो मुक्ति में कुछ नहीं सकता, धर्म मुक्ति पूजा निरर्थक है। कहा धारणा व पर-मात्मा दोनों ही बड़ी दोनों का मिलाप होना, और यह स्थान है हृदय मन्दिर। व० श्री की इस निर्भीकता व सिद्धान्त रखा का सब पर धारणा प्रभाव पड़ा। धर्मसमाज का यह सैलाने के लिए हमें ऐसे विद्वानों का अनुकूल करना होगा। राजकीयधर्मो की बाटुकारिता से तो हम नुनये, उन्नये नहीं।

## कर्तव्य की पुकार विवाह पर नार

धार्मानर् महारथी श्री व० शान्ति-प्रकाश का विवाह था। श्री व० कुन्ददेव की विद्यालङ्कार विद्याह संस्कार के लिए गए। धर्मि प्रतिनिधि खान पखा को विवाह के बारे कायकम का पता था।

विवाह संस्कारों को खूदा था कि श्री स्वामी स्वतन्त्रानन्द की का तार पठुंभ गया। श्री व० कुन्ददेव जी ने तार खोलकर पखा व सुनाया। तार में लिखा था कि साहोदर मे धार्मानर् है श्रीधर पठुंभे। व० शान्तिप्रकाश की पत्नी को घर पहुँचा कर बड़ा सनिक न रहे। एक बन्ध साहोदर को प्रस्थान किया। धार्मानर् बड़ी धार्मानर् की वैदिक धर्म की विषय का डका बढाया।

पाठकमन्त्र ! क्या इस घटना पर किसी टिप्पणी की धारणयका है। धाज के जौधवादी युग में Honey moon (विवाहसमाज) के फौरन में इस दृष्ट घटना का मुल्यांकन करना। धर्मसमाज का यथो-मान ऐसे तर्कसिद्ध सुनो के कारण हुआ और धाने की होना।

“मैं विकास माल नहीं”—

महर्षि दयानन्द जी के व्यक्तित्व व

धार्माधिक प्रभाव से राजस्थान के एक तपस्वी महात्मा काजूराम जी योगी धर्म-समाजी बने। धान ने धर्मसमाज की बो सेवाई की है वह सदा धर्मव्यग्रीव रहे। कोचपुर के महाराजा सर प्रताप सिंह व० धर्मि भक्त थे। धर्मि की उन पर ऐसी हुषा रधि—की कि योगी ने बिलने Tillas (बिलान) इन्ने दिये, उतने किसी भी और राजा, महाराजा, नबाब व निजाम को न दिये। इसका रहस्य ता प्रतापसिंह का गुणगान करने वाल जानने ही होगे। यही महाराजा सर प्रतापसिंह अपने की धर्मसमाजी भी कहूँ न थे।

इन महाराजा साहब के प्रेमी भक्त थे स्वामी प्रकाशानन्द जी। उन्होंने महाराजा साहब की धोर से महान्ता काजू-राम जी की एक पत्र लिखा कि धार जौध-पुर महाराजा साहब के साथ जुग जौधे, धार्माकी बहुत धार्मिक सहायता दी जावेगी। प्रभावित ५० ६० रुपये निमा करे। महाराजा काजूराम जी ने धर्मिस्व उत्तर दिया कि मैं विकास माल नहीं। मुझे धर्म और ऐश्वर्य नहीं चाहिए। मुझे तो वेद का, भुक्त का और धर्मि का न पला है। मुझे कुछ सहकर धार्मिक धर्मसमाज की सेवा करने वाले, प्रलोभनों की दुष्-राने वाले मुक्त-साज पर लात मारने वाले पूज्य महान्ता काजूराम जी का वह उदा-हरण धर्मसमाज के प्रत्येक सेवक को कर्तव्य धर्म पर चलने की प्रेरणा देता रहेगा। ईस्वर की हृदय मुष्ण स्वामी के लिए वेद धर्म से धुल न हो। धर्म के रास न बने का से न बचवाये। वेद पत्र पर कुछ कष्ट सहन करना भी पड़ तो विवर्तित न हो। यह घटना तत्कालीन धर्म में शरी थी। महाराजी का यह पत्र हमारे रिक्तों में है।

## किशोरमन्त्र—

## धीर बालक दुर्गादास राठौर

कोचपुर नरेश महाराज सनवत सिंह जी के पास उनकी साक्षिणी (ऊर्जिनी) के रखकी ने यह सुना यह बार्द कि एक सोभारण किसान के लड़के ने एक धारिणी को मार डाला है। महाराज ने उस किसान की पकड़कर माने को कहा। किसान का नाम था धारसिंह, वह राठौर राजपुत्र था। महाराज के सामने जाने पर उसने धर्मि बालक की धारि करके कहा—।मान्ता का प्रपरापी यही है।

महाराज ने कोच के डॉक्टर दुर्गा—‘तुमने धारिणी मारी?’ बालक ने निर्ज-मया धर्मि स्वीकार कर दिया। दुर्गा पर पर उलने कहा—मैं अपने वेद की रखा

कर रहा था। साक्षिणी को मारने बेस-कर मैंने धारि कीचकर बरवाही को मना किया, परन्तु उसने मेरी बात पर ध्यान ही नहीं दिया। इसारी फलन नष्ट हो जायेगी तो हम धारिने क्या? अब इस धारिणी ने मेरे वेद में कुछ डाला, तब मैंने उसे मार दिया। दुर्गा की साक्षिणी और बर-बाहू भी मान गये।

एक छोटा सा बालक एक नवभूत ऊँट की मार डालता है, वह मास सन में बसती नहीं थी। महाराज ने दुर्गा—‘तुमने साक्षिणी मारी कहे?’

बालक ने इन्वर-उत्तर देना। एक पक्षाधिन ऊँट मारने से का रहा था। वह उस ऊँट के पास था और कपर से उस-

बार कीचकर उसने ऐसा ह्राप मारा कि ऊँट की गर्दन टक गई। उसका धिर धिर पड़ा। महाराज उस बालक की बारा पर बहुत प्रत्यन हुए। उसे उन्होंने धारने पाख रखा। यही बालक इतिहास प्रसिद्ध धीर दुर्गादास हुए। धीरपतेव जैते

कूर बाबासाहू से इन्होंने सनवतसिंह की रातो सवा राजकुमार धर्मोसिंह की रखा की। मारबाब रायप काय यवतो के पजे से इन्होंने ही उदार किया।

—प्रलोधा बलजी धारमी

## अमृत कलश

उपकार

मैं रहमि तुल होत है उपकारी के धनू ।

बाटव धारे के सन ज्यो मेहदी का रङ्ग ॥

धीर सो बलभर मे उपकार बन्धुधो ।

को सनुद से लिहा हम पै ही बरसा गया ॥

तुलसी या संसार मे, पाख रतन है धार ।

सखज्जति धीर हरि नचन, दया, धर्म उपकार ॥

मिना कथ्य उत्तम तुम, कर से कुछ उपकार ।

समान न बहु किमि सके, जीता धाय न हार ॥

धार्मानर्ध धर्म नोपकार करोति य ।

धकारी बीधमार्थ ककारिहस्ता प्रवृत्त ॥

को धार्मानर्ध पर की प्राय करके की उपकार नहीं करता उसके जीवन की विपकार है।



व्यासपीठ--

उपनिषत् कथा माला-१०

## परमात्मा विचार

लेखक—स्वामी सर्वदानन्द सरस्वती

इस पदचुनू प्यार सवार को देख कर यमना को भी महान महीना का ज्ञान मल से स्वयं जलजुगल हो गया । वह खुस होकर प्रसाद का ध्याहार हो । उसके ही मन्त्राव से हृदय पवनु से प्यार हो कर उसको भुवकर मनुज हृद प्रकाश से दु को हीता । जोवन क प्रसाद से सासरी को जलरती थी । उसके पयनी सुभा से एक को उसका बान पिपा खीर साय हो गये थी बान पिपा कि मन्त्राव को भुवकर प्रसाद जलन को कि मन्त्राव । मन्त्राव भुव करं हो कि पार पार का कोई हो । साय हदिक मन्त्राव की कर मन्त्राव । साय हदिक मन्त्राव की देखने से को लभ प्रसाद होता हो उसका सम्जन सवार से साय ही हो । बहु यमना देखत सारी रहता, बहु नासामन हो और को पयसाया को बाय से पय मन्त्राव हो बहु देखने स्थिर हो और देखने बाबर का कोई नही हो, पयसु मन्त्राव उसको भुव जात हो । पयसे स्वर की पय मन्त्राव को प्रमन कर हो हो और सासरी को कर करने से पिये भागे बबारी और दुर्ग से पीछा खुवासी हो । उतरत मन्त्राव देखने भागे का सवार से नास मन्त्राव हो बहु हदसे सय नासाया जात हो और प्रत्य से पयसाया करता हो । पयसु पय की दुख बन नही पाया । हो मन्त्राव पिय को उपर कर हो हो और को पिय हो साय सवन्तुन करता हो को किसी को जलरत से सम्य बरताव हो पयसाया हो और को पिये हृद को हृद का सहार देख उठाता हो । किसी ने पयसाया हो सहायाया थी और किसी ने दूसरे को मेक राया थी । देखने देखने से जात हो और पयसा का मन्त्राव हरी से सम्जन बरता हो । कोई पयसाया सम्जन से सहायाया थी ही धकता हो और न कोन भी को सहायाया हो ही धकता हो । यहूता मन्त्राव हो पय न मन्त्राव मन्त्राव न सहायाया न सवने से और न देखी सवने हो । पयसु मन्त्राव से सवार बन रहा हो ।

पर तु एक पन्मात्मा सबका द्रव्य  
वात्मा प्रणी मात्र का सबारा मय मे  
रागपक शरीर मय मे न्याय है। को भी  
बीज एसी नो है जो नि ना इसकी सहा  
यता व अपनी इच्छा (व्यक्तिरत्व) को  
स्तिर रत्न मय फिर एसे दता के दान  
को भुल जाना एते दुःख को ह्य न मे न

माना स्वयं ही अपने को प्रभाव में फलाना है। यह बुद्धिमानों का काम नहीं, यह विद्वानों का सम्बन्ध नहीं। यह काम तो सहज या पर गलती से अपने विचार को दहर में हटा लिया, जिससे बुद्धि काम में सुगुनी धोर ुदे काम में बुस्ती होना बहरी या। समय हाथ से जाता रहा धोर इस प्रकार मित्रों को बठाकर बैरियों को हवाता रहा।

सत्य है मुझ से जो कार्य किया जाता है उसका फल सब सामने जाता है यह मनुष्य नहीं जानता। यही सत्य है कि साक्षात्कारि कोम सब को इस सत्कारणी सत्य से फासा है। अपनी लज्जापूर्ण से सब को लक्ष्य रूप से देखकर कुमारा पर ले जाता है। यह साक्षात्कारि कोम हर क्षण मनुष्य को अपनी जोर धास्ति करके रखते हैं। मनुष्य जाता हुआ भी इनके नेत्र से रहा करता है। यह कोम हर समय मनुष्य को बोझा देते हैं यह मनुष्य के लिए मिल के मेघ से सातु हैं। जब पहले मनुष्य - नेत्र चककर से जाता है तो दाहिना-बायाँ को चककर मासिकता भी धोर बढता है पाप पुण्य से बेध भी कर सकता। पल्ला देवता से अमृत, पल्लु सदाबद्ध से शिव से भी बुरी है।

विधान पुरुष कथ बोली है । उनको  
सत्य है हमारे । प्रभु का कथ स मेम  
है हमारे । मे परमात्मा के समीप है ।  
उनका कथ है कि सब साक्षात्  
सोमी को मानना बादी रहती है, जो  
मनुष्य के बीरत नाकी बुद्धि हो। बादी  
है । फिर उनको हर वस्तु अपने वास्तविक  
रूप में पहिचोना पडती है, धनरावा  
की बुद्धिवा शाला को परमात्मा के वा  
नमोराती है । मनुष्य का वास्तविक रूप  
यही था । शहर पार ही मनुष्य का कार्य  
समय हो जाता है । पशुसुह क नायं  
है फिर किनाना परित्यक्त बाजिरे । यह  
समझा इतना मही । वादिते बाहू से  
मम को ब्रह्मा नाहिये । यह कहते हैं  
लौकिक नही । इह समझने का रूप करते  
के निरूपक कथ नाकी बुद्धि बाजिरे,  
इसके नि न हर परिपक्व निरूपक है । यह  
मनुष्य को यम नही रहने बहती पोखना  
मही । जो मनुष्य के परमात्मा को  
प्राप्ता है । जो मनुष्य मनुष्य बनाती है ।  
"रत्न नायक के नि नि न तो कहते  
के यना है । जो न नासको है तो यह

कर कही जाता है। वह तो सर्वव्यापक है, हर स्थान पर हर समय उपस्थित है। मनुष्य ? तुम उसको पाने के लिए कहीं ढूँढ रहा है ? बास्तव में वह तो तेरे भीतर रहा है, परन्तु तुं उससे घसाघसा जाना है, वह तो तेरे घर में है परन्तु तुं उसे ढूँढने के लिए बाहर घूम रहा है, वह वो हर वनमय स्थान है परन्तु तुं उससे धन्य है, तू उसको खोजा है परन्तु वह बिचा में प्रकट हो के दिखाए है परन्तु वह बिचा में प्रकट हो के दिखाए है परन्तु तुं अपने भूते के विचारों के कारण उसको नहीं पा सका।

गूह हनु मुरखन उठी ये जलमना  
 गुरी उसी मे बसना हो। बाता है पतुख  
 यह इन सोई कथनो को ये निरख है।  
 यह एह है मोहि कस हुरी को उठ जैसा  
 नही। यह हुर है दूर की ओर को ये  
 समीर है। यह हनु है बडा जोर सोते  
 है सोई। यही बाण है की की तुल्य  
 कीट ना है ये सखी को हनु बनेने को  
 जो लुप्त भटि जाये है इनसे यह हुर  
 भागता है। जो इसका पतुख है, यह  
 ग्राह्य बाता है, बर्णी बाण पयसाया  
 को भागयन है बिबा, हाथी को  
 नम्रता ग्राह्य को बतते है। इन्ही, डेव  
 भागि बाह्य को पतेते है। इसविषय मय्य  
 को बुझना है मन लगाना गुरी दुख  
 ये मन हटाना चाहिये। मय्य को दुख  
 मन मुक्त सगति सोने हुर पयसाया  
 को मय्यावा होना चाहिये गुरी दुख  
 प्रखनन को हो सोने को करी हाथ  
 मेही सोचना चाहिये। इस प्रकार रहने से  
 होकर बंध मुक्त होय मन सदा रहते है।  
 हडधरी की ओरी मुख यह सुने हो  
 बतते है। मोक्ष एव प्रकार का मय्यन है।  
 जिससे मोक्ष प्राप्त मय्यन भी मय्यनी  
 होकर उठते नाये पयस पतता है। यह  
 सती मुक्त की तुल्य बहुत न है।  
 यह हुरा को मुख मे बेखर हो गीयस  
 होकर उठता है। जैन विष्णु का प्राण  
 की ओरी मुख, ऐसे ही मुक्त को  
 कभी उठनी नहीं होता। ऐसे मय्यन से  
 परमाना का मियाप कहा? तुल्य, मोक्ष  
 एव प्रकार का मय्यन है, जिससे एव  
 मोक्ष प्राप्त होय। इसविषय एव मय्यनी  
 सतोरी मुक्त को सुझाना न है। प्रय  
 सोने को लिए यह हुर स्वाय नर है। यह  
 एनेत्री की भी परग ह हनु हनु हनु  
 मे हट सयन स रहते है। परमाना सत  
 है, जम जम है, मनी इत्येते सत

समयको का समय है समयको बीर अपना  
उठार करी। वह एक रात रहने वाला  
है, कभी नहीं बदलता। इधर-उधर बिचर  
बाढ़ी हुई, यमसुत जब तक बमराला  
की बुद्धि नहीं होती तब तक उससे निवाच  
नहीं हो सकता। जो बिचारु उसको  
प्रियतम तब तथा सच्चे मन से बाहरी है,  
विश्वास हृदय बुद्ध तथा मन धन्यताया  
इन सांसारिक प्रलोभनों से दूर हैं जो  
मनुष्य उससे प्रेम से दूर समय मग्न हैं,  
वह कुछ नहीं अपने अमराला की भीतर  
ही देख लेता है।

[illegible]

दुःखता, साहस तथा स्फूर्ति ज्ञान का परिणाम हैं। दुष्कर्म, कायरता, धीर भ्राता अज्ञान से उत्पन्न होते हैं। इसी कारण ज्ञान से प्रेम धीर अज्ञान से घृणा पैदा होती है।

भारतवर्ष वेदों का ज्ञान रखता हुआ भी सत्य मार्ग को ऐसा सूझा कि धनान्न में जो कुछ भी सूझा उड़ी को पूरा करना ही कर्तव्य समझ बैठ। इसमें चरै धीरे भेष बढ़ने लगा। किसी न एक प्रकार की मूर्ख बनाई तो दूसरे ने उसको दूसरे ही ढंग में बना लिया। इस धन्य परम्परा ने बहु-कर देव को बतलाना जाना पड़ा। देश











दिल्ली ग्राम्य प्रतिनिधि सभा १३, हनुमान रोड, नई दिल्ली-१ कोट ३१०१३० के लिए डा० कर्णपाल द्वारा सम्पादित एवं प्रकाशित तथा  
बैदिक प्रेस, पत्ती न० १७, कैलाशनगर, सदस्यता ३१ म मद्रिद। राब० न० डी० (बी०) ७३६

# आय सन्देश

गुरु १० वैशाख १९८१

पृष्ठ संख्या १६

विवरण २० जुलाई १९८१

मुद्रित संख्या १६०२८४६००६

आय १०४२

व्यापकता—१११

## क्रान्तिदूत स्वामी अभेदानन्द जी महाराज—

—ब्राचार्य देवेन्द्रदत्त द्विवेदी

कल्याण की जीवित प्रतिया लोक-कल्याण के निमित्त निरंतर चिन्ता-शील त्यागपूजि धर्म्य अपरिग्रही, लोपोन्मत्त एवं कतिपय घनासक्त तथा सार्वभौमिक धार्म्य प्रतिनिधि सभा के विषयतः प्रधान स्वा० भवेदानन्द जी हरस्वामी के जीवन से सम्बद्ध अनेक प्रसंग विस्तृति के बहुरूप से क्रमशः नीचे होते जा रहे हैं। उनके विराम से बहुत ही शीघ्र मृत्यु है। उन पर अत्यन्त प्रकाश डालना धर्म्य नितात अभेदित है। उनका द्वायस्थिक जीवन वस्तु कार्यसमाज के इतिहास की अनेक विभिन्न कठिनी को जो नये समय होगा। सार्वभौमिक धार्म्य प्रतिनिधि सभा के अन्तर्गत नये एव पुराने क्रान्तिकारियों के हस्तान्तरण संपन्न रहा ही।

मैं स्वामी जी के जीवन की कतिपय उन घटनाओं की निरिच्छा करने ला रहा हूँ जो मेरी उपस्थिति में नहीं।

विभिन्न दानोद्योग—

एक बार मैं पटना धार्म्य प्रतिनिधि सभा के प्राणय में बैठे स्वामी जी से बात कर रहा था। स्वामी जी पञ्जाब से नहीं थे। वे अपने साथ 'बाबू मोक्ष' और 'जिन्ने' ले गये थे। उस समय प्रतिनिधि सभा के सभी उपस्थित बाहर गये थे। पीछे से लोग उपस्थित थे। घल स्वामी जी की चिन्ता थी कि वे जो लोग पञ्जाब से लेकर आये हैं उनका क्या किया जाये। उनमें से मैंने भी कुछ मिला और बार-बार सन्दर्भ लेने की वृत्ति व्यक्तित्व के उनही स्वामी जी ने दिखाया। स्वामी जी के लिए वह भाग

व्यक्त नहीं था कि उनसे कुछ पाये जाये लोग परिचित हो। उनके दरबार में सभी तरह के लोग उपस्थित रहते थे।

इसी बीच पटना कासेज का एक विचारणीय था। उसने स्वामी जी के चरित्र स्थापित किया। स्वामी जी ने उस से पूछा— किन्तु चले ही? उसने आश्वी में पाठ्य अनेक कहा— मुझे एम०ए० की परीक्षा देनी है। मेरे पास रुपये नहीं हैं कि परीक्षा शुल्क दूँ। मेरे सर्वप्रथम श्रेणी में ही उत्तीर्ण होता हूँ। पिछले वर्ष मेरी माँ ससारा से चली गयी। और इसी वर्ष बार-बार बहुतने पहले मेरे पिता जी। वायम पूरा करने के पूर्व ही वह फूट फूटकर तो पड़ा। स्वामी जी की ओर धार्म्य जग जायाँ और उनके धर्मोन्मत्त ने हाथ डाला— को कुछ बाँट दिया गया नहीं। रुपये दैते समय स्वामी जी ने उनकी धीमे से यह फल लिया था। इसी बीच टैनीशन की घटी बजी स्वामी जी मुनने चले गये। बाहर से वक्ता ने धार्म्य लोगो के आती में जलक मगने। मैंने उस विचारणीय से कहा— जिन्ने ने स्वामी जी से पूछा— किन्ते रुपये? मैंने 'वह बरता हुआ गिन्ने ला' वह हस्त-लिखित दस्तावेज कि इन्हीं धार्मिक रुपये होने पर मैं लौटाने के लिए न कहूँ। उसे माधुम नहीं था कि यदि मैं ऐसा कहूँ तो स्वामी जी की शक्ति में मुझ से दुरा की शक्ति नहीं होगी। स्वामी जी ने उसे पत्रही सी रुपये दिये थे। उस लम्बे का नाम मैंने जाना नहीं। वह भाग एक बहुत बड़े सस्कारी पत्र पर है। स्वामी जी दफ्तर से बाहर आये। उसे कहा— 'भोजन करके जाना।' उस सड़के

के जाने के बाद मैंने पूछा 'उसे २० रुपये समय धारण नई क्यों मोड़ लिया?' उत्तर मिला यदि मैं उसकी ओर देखता तो उसमें हीनता की भावना होती और मुझ में विध्याभिमान की। वह सड़का जब भोजन करके जाने लगा तो मैंने उस से जानना चाहा कि वह स्वामी जी से कब से परिचित था। उसने कहा मैं स्वामी जी को नहीं जानता था मुझे पटना विश्वविद्यालय के हिन्दी विभाग के अध्यक्ष डा० ईश्वरचरण ने इसके विषय में मुझ से कहा कि बिना किसी की सिफारिश के स्वामी जी से मिलो। वह या तो स्वयं सहायता कर दोगे या किसी से करा दोगे।

स्वामी जी अपने पड़े कपड़े पहने रहते थे। उनके फटे कम्बल होते थे। पर नये कपड़े नये साल नये कम्बल दूसरों की वे देते थे। उनके पास २० तथा सामान धारण नहीं कि बटोरे की उनमें बैचनी पैदा हो जाती थी।

राजनैतिक जीवन—

कासेज के धातुनोमें मैं स्वामी जी धनेक बार बैठे गये। वह उनका बानसपत्नी जीवन था। उस समय उनका नाम बेवतत था। भारत के प्रथम राष्ट्रीय दिवस पर डा० राजेन्द्रप्रसाद जी ने स्वामी जी से धनेक बार विहार धार्म्य प्रतिनिधि सभा के कार्यों से विरत होकर विहार प्रवेश कासेज कमेटी के कार्यों से रुचि लेने के लिए कहा था। दो बार तो विहार के धार्म्यधाराधारी ने यह चर्चा चली कि स्वामी जी का विहार बाधक का प्रचण्ड होना निश्चित है। पर तुलसी द्वीय भाव साधन धार्मिक स्वामी जी न राजेन्द्र बाबू के

प्रस्ताव को प्रत्योकार कर दिया। यदि स्वामी जी चाहते तो धार्मिक भारतीय कासेज कमेटी की कार्यकारिणी तथा विहार प्रवेश के अधिकारों के सर्वप्रथम सरलता पूर्वक तैयार हो जाते। उनकी शक्ति में धार्म्यसत्ता उनका नहीं थी। वे उसे खोज नहीं सकते थे।

क्रान्तिकारियों से स्वामी जी के सम्बन्ध—

स्वामी जी बड़ी छोटी उम्र के पुराने एव नये क्रान्तिकारियों को अनिष्ट रिपब्लिकन पार्टी तथा-कमल के धार्म्यधाराधारी सब के सम्बन्ध में धा चुके थे। सर्वोच्च इस्पाक उल्लासान रामप्रसाद चित्तिल चण्डेश्वर ध्यावाद म नये नये नाथ राय, सुरसेन को नोकाय वल योगेश पटवर्दी, वैकुण्ठ शुक्ल कमलनाथ तिवारी, केदाराम मुकुल धार्मिक सभी स्वामी जी को किसी न किसी रूप में जानते थे। इस विषाल परिचय का 'हृदय' तथा था, यह धर्मी तन ध्यावते हैं।

दो धर्मिस्मरणीय घटनाएँ—

१९४६ की बात है। उस समय मैं भारत के सर्वप्रथम हिन्दी दैनिक विश्वधर्म का संपादक था। उस साल बड़े दिन की छुट्टियों में कनकाला आयसमाज का धार्मिकोत्सव हो रहा था। स्वामी जी नियमित थे। वे कलकत्ता से बैठ धानदी प्रवेश पोहार की सटल एवेन्सुवा की कोठी से ठहरे थे। उनके साथ ५० रामानन्द धार्मिकी सार्वभौमिक सभा के ५०० धर्मोपस्थित भी थे। धार्मिकी की धर्मो धर्मो जवान हो रहे थे मुझे स्वामी जी तथा धार्मिकी धर्मो के साथ भोजन करना था। नौबतनोरात नालेज स्ट्रीट में काफी हाउस के (पृष्ठ क्रम ११४२)



इस सत्य पर मैं बच्य मुझ सुख-मुक्त  
 कीजु इन्द्र के चक्कर में मान पर प्रिया  
 रहूँगा । तब, गोर, नमकी की किछा  
 में परधान रहूँगा । बर, बनींग तथा  
 बर के मङ्गल में पका रहूँगा । कम्ब  
 व कामिनी की किछा में मुझा हाथी रहूँगा ।  
 इस परधान रहूँगे विषय मासमा  
 मुनेवधरा, विरोधना, कोरना के चक्कर  
 म राधा किछा आम्बुज रहूँगा ।  
 सुख काल में सत्य समाधान किछा कि  
 जो बन्ने के की राधा रहूँगा । वह सत्य  
 बन्ने में गही होते, म पिछे में रहूँगा  
 की में पास सुरासि रहूँगा ।  
 इस साधारण उच्छ्वास में एक मज्जु आम्बु-  
 न्दिक उपदेश किछा । वह सत्य कि  
 कि को बन्नि सत्य के विषयमा में विषय  
 रहूँगा । वह सत्य काल के चक्कर में  
 पका मुक्त बर में पका रहूँगा । जो पर-  
 मान्ना के पाह है वह कम मुक्त के चक्कर  
 में मुक्त हो पाती है । जब सत्य की नेही  
 रहूँगा है कि वह बनी की पास को गही  
 होतो पाहो तो दीप में साधक पिछे ले  
 कम बाते हैं । परधान सत्यबन्ने का म  
 'सत्य तत्त्व न आदित्य कोरु कछा' है  
 कि जो सत्य परमान्ना की कीने में पास  
 है सत्य परमान्ना की कीने में तो वह  
 (विषय पृष्ठ ७५)

[illegible]



कृष्णवर्ण विष्णुमाधवम् ॥ हे स्वर को  
 निपादित करने के लिये बुद्धिमान एक  
 पुरुष-पन्था है । उन्होंने ठीक-ठीक को स्वी-  
 कृष्ण धरने को हीना प्रमाण की है ।  
 उसका दोषान्ता व्योमिद्विपद्म है तथा  
 वह न केवल के विज्ञानी जीवन-व्योमिद्विपद्म  
 नानान् व्योमिद्विपद्म रहा है । उनको  
 जीवन का ध्येय व्योमिद्विपद्म भी, प्रसिद्ध  
 पन्था है । उन्होंने हे स्वर को भी प्रसिद्ध  
 पन्था को हीना प्रमाण एक साक्ष्य बनाया ।  
 जीवन न जीवन को एक सच प्रहरी के  
 रूप में कहा । वे निहाद एक सत्तो से  
 "तुम माधव प्रहरी है ।" प्रमाण्यन  
 प नहा प्रसिद्ध पन्था को वे विस्वकर्ष  
 करने वाला एक सच्य बोद्धा था । कवेत्त  
 का एक वाक्य हीना है यत्तन भी । यत्त  
 ह्यत एक ही प्रहरी कहते हैं कि माधवि दान-  
 न के बाधों का माधवि ।

विषय को धारा बनाने का संस्कार  
 श्रुति धारणा राहा। धारण से शब्दार्थ  
 ही किसी एक पक्ष से नहीं धारण  
 संस्कार के निर्माण हो। धारणोपर  
 एकपक्ष की संरचना ही धारण के राहा।  
 मानवोपर अक्षरार्थ का निर्माण मानव की  
 केंद्रधार मानने के ही संस्कार राहा। धारण  
 कोपक्ष से मानवोपर मूल्यो की स्थापना  
 मूल की मूल्यो धारणस्वर राहा। म नवीय  
 धारण को हस्त होना आ हाहा राहा, को  
 मानव की धर्मो को प्रोत्साहन कर रहा। राहा।  
 श्रुति का जोन, चिन्तन प्रोत्साहन एवं सं-  
 स्कार मानव की मूल्यार्थ धारणा के लिए  
 सही भी सिद्ध होना। धर्मिक धारण का  
 धारा विचार एवं मन मानवोपर से उत्पन्न  
 धारण का अर्थ धारण स्वर राहा एवं।  
 धारणकार से धारण स्व धारणाध का उत्पन्न  
 धारण की क्षितिज के रूप से प्रस्तुति  
 होना।

[illegible]

८. स. वा के प्रति सजगता के भाव  
का प्रथम श. रूपि दयानन्द से ही

श्री लालमन आर्य निबन्ध प्रतियोगिता मे द्वितीय पुरस्कार प्राप्त—

## “महर्षि दयानन्द के सपनों का भारत”

—डा० सूर्यप्रकाश विद्यालकार  
के० एच० १५७ कविनगर, गाजियाबाद

होता है। उन्होंने स्पष्ट रूप से सर्वप्रथम उच्चोपेक्षित किया कि भारत की स्वतन्त्रता प्राप्ति प्राथमिक है। उनका यह कथन बीज मान्य विद्युद्वायु कि विदेशी राज्य घण्टे से घण्टा तक तथा स्वदेशी राज्य तुरी से तुरी कथो न हो? पर तुरी स्वदेशी राज्य की श्रेष्ठ है। देश प्रेम का उच्चतम भाव दयानन्द के द्वारा प्रकाशित किया गया। स्वतन्त्र भारत का मयना ही दयानन्द का महत्त्व प्राप्त सारा बा।

जननी व जन्म भूमि के प्रति गौरव-  
भाव पैदा करने वाले प्रधानमन्त्री ने निम्नो-  
क्त भाषापूर्ण कवि से बह्मिष्ठार किया है। ये  
राष्ट्रपति एवं हिन्दी के प्रेमी थे। उन्होंने  
प्रत्येक प्रश्नोक्त का प्रत्यय सहकृत सव्या-  
हिन्दी ही हो किया है। ये हैं इस समय म  
‘सत्याग्रहका’ श्री भूमिका ने लिखे हैं।  
६।३ समय मैंने यह मर्यादा प्रकाश  
बनाया। उस समय उससे पूरा सहकृत  
म वक्क कवि जन्म पांडित्य ने सहकृत।  
कोशने श्री जन्मपति श्री भाग गुजराती  
हैं के कारण मुक्त को सह भाषा का विशेष  
प्रकाश न था। सह भाषा निम्नने श्री  
कोशने का सहायता हो गया है।

ऋषि दयानन्द की ध्येयता भारत को  
 उज्ज्वल एवं प्रगति रूप में देखने की  
 थी। बहु भारतीयों के उज्ज्वल चरित्र का  
 द्वारा ही संभव थी। चरित्र निर्माण ही  
 ऋषि का उद्देश्य था। चरित्र का पतन  
 निम्नतम कि न कष्ट उस समय पड़ता था  
 था। 'सत्य-वैदिकता' के पतनवा द्वारा  
 ऋषि ने १४ वर्षों भारतीय चरित्र का  
 स्थापना । उ होने भारतीयों के चरित्र-  
 विक्रम न ब मित सत्य एवं ज्ञान को  
 पाम न मय ।

२. अतिथि का प्रयत्न स्वामी  
जा के प्रथम मत्वाचक्राश्रय से  
स्वतः प्राप्त है। सत्यमेव जयते  
न नृत्तम् सत्यं सत्यं विजितो देववान्।  
अथर्व वेदों का सत्य की विश्व शाखा अथर्व  
की पायाज्य होती है तथा सत्य से विद्वानों  
की माया प्राप्त होता है। इस वृद्ध सकलत्व  
की भावना को ग्रहण कर के सत्यमात्र  
सम्भव पहले विषय सत्य सा सत्य, परन्तु  
परिणाम उसका सदैव परिणामोत्पन्न रहता है—  
यत्नरूप विनिमित्त प्रयत्नोत्पन्नोत्पन्नम्  
आनीय आश्रय वक्ष्य सत्यमेव जयते।

श्रुति दयानन्द से प्रेरित तथा उनके आदर्शों का ही मूर्तिकरण है।

ज्ञान एव मिष्टा से जीवन एक भावार्थ को प्राप्त करता है। उन्नी दसवीं की स्थापना के हित ध्वजिन जो आज को प्राप्त से ही सत्पाने का प्रयास किया। ज्ञान के क्षेत्र में दयानन्द ने इस विचार ने का विचार प्रवर्तित किया कि "धैर्य सत्य विद्याकोष का पुस्तक है।" वे जो गुरुवर्ग के भीत सहाय्य मने वे आज की ही नहीं, ग्रन्थिपुत्र सद्मान का भी शक्ति को बल मने। वे न-विचारजन के प्रयास भण्डार बन गये। वेदो की धारण करीफ की बारा को धन प्रवाहित किया गये। वेदो की धनधर्मि कल-कल निगमिनी बनकर विज्ञानमुक्त के जीवन को सगीतमय बनाते सन्। वेदो की पुन स्थापना ही ध्वजिन स्थापना का भावार्थ है।

[illegible]

वैदिक वर्णायाम व्यवस्था की स्वी-  
कृति वैयक्तिक एवं सामाजिक जीवन को  
उत्प्रेषणपूर्ण बनाना था। यहाँ अहं व्यक्ति-  
का सामाजिक प्रतिष्ठान है वहाँ सामाजिक  
संस्केत समाज का वैदिककरण है। यहाँ  
विभाजित कमानसार हो, यह व्यक्ति का  
समता था। यहाँ वैदिक व्यवस्था है। ज्ञान  
का परिष्कार काष्ठ, पोषक प्रदान  
कान्ति, कर्मठ वैश्य एवं सेवा-भाष का

स्वीकार करने वाला दूर था। यद्युक्त  
यह बहुत गहरा कष्ट ले प्रहृष्ट विषय  
माने लगा। माहलू का चेता कान्हा ही  
रुका, बाहे यह कर्ण ले दूर हो। ऐसी  
प्रतिपक्ष पर परिचितिवा में श्रुति दशानन्द  
ले सर्वहीन साधकों की स्वीकृति दी।  
सन्तोषी जातिगत मनोकृति का नाश करके  
साधकों की धार्यावाच में ही समाहित किया।  
उनकी स्थिति में दश नीति का कर्ण लेने  
नहीं था। उन्मोहे द्वाष्ट्य- वैदिक छत्रजो  
वपन ले स्वर्ग की ही ताकत-स विद्या।  
“आत्मनः प्रतिक्रान्तिमपि परेषां न समारब्धे”  
तथा “आत्मनस्तु सर्वत्रोत्पत्तेरु च द्वारा ह्यमस्त  
प्राणि यथाः प्रसि विद्या का भाव दशान-  
न्द ले प्रत्यन किया।

जीवन की चार लोभोनी, ब्रह्मचर्य, मुग्धत्व, वायव्यत्व एवं भ्रमत्व आश्रय में प्रवृत्ति किया गया है। ब्रह्मचर्य आश्रय नाम एक निर्मिणिक का आश्रय है। एहकर्म आश्रय कर्म का आश्रय है। वायव्यत्व सामाजिक कल्याण का आश्रय है तो लब्ध हो उसका एक आश्रय का आश्रय है। जन्म लेने के एक पितृ ब्रह्मचर्य आश्रय से प्रवृत्ति हो जाता है। माता पिता एक आश्रय में उनके क्रमशः पुत्र हैं तो उसकी आजाय से वे सहायता करते हैं—'आप्त-पुत्रं पित्र्युक्तं प्राचायवर्त्तुं पुत्रो वेद'। आचार्य का स्वयं माता-पिता के आश्रय है। आचार्य का तालार्य ज्येष्ठ आश्रयक है। आचार्य के पास मुमुक्षु से तालक भूषण से अनन्य भय जाये। नहीं तब एकदम विद्या एक बीजा की भाँव करे। विद्या जहा पक्ष का विलास करती है वहा बीजा उमरो वसकर लेती है। प्राण शिखा का तो व्यापक पदारथ है परन्तु बीजा का नहीं। बीजा शीत के शिखा दीधम का ध्यामहादिक भय नहीं बन सकती। शिखा से बहल प्रवृत्त करे की आशाना है वहा शीत के स्थाय एक कर्मज की मानव है। प्राण बीजा प्राणक कि विद्या बीजाश्रय सवासीय भावो-जित हो जाते हैं। किमिनी बीजा विवर्तनक है यह बीजा की आशाना को पूर्ण रूप से उद्धर करण हो पूर्ण शिखा है।

श्रुति दायमान मुकुटमयी शिखा  
 पङ्क्ति के सवर्णक से। मुकुटमयी शिखा  
 को पुरुष सत्त्वसे शिष्य का भावना होता है।  
 उस कुरूप अशुभानुसंग से रहित  
 जीवन का निर्माण करना होता है। शिष्य  
 कहा मुकु को अग्रणी है। एवं सचित से  
 जीतता है, कहा मुकु को शिष्य का भावना  
 पुरुष ध्यानी सत्त्व की सहा करता है।  
 वेद में मूत्र शिष्य का गालन योग्य ध्यानी  
 सत्त्वाने के सम्मान करता है। वेद से मूत्र  
 शिष्य के शिष्यापन को श्रुत करके शिष्य  
 गया है कि किस प्रमाण यत्ना-मुक्त को मूर्ख  
 से धारण कर गालन योग्य शिष्य है,  
 उसी प्रकार मूत्र शिष्य का गालन योग्य  
 करे। गालन पुरुष पति अनुभावाने के  
 (वेद पठन = पुरु)



भीकृष्ण भी ने गीता से कह दिया  
 है कि प्राण, कीमती और सोम दस व्यर्थों को  
 को त्याग देने से मनुष्य दुखी हो सकता है,  
 है, परन्तु प्राण हर एक हस्ती में सोम  
 बड़ पया है। पैसा होता को मोटर से लूना,  
 बिना देस धातना-धान-धेनू, दहश,  
 सोम कल्ला प्राण-प्राण है। प्राण पैसी की  
 हस्ती काकर कह पाई है। पैसी के हस्ते बुक  
 बड़े हुए है और परमेस्वर को सारा पैसी  
 काण रहा है, हस्तिप्रेत जान ही को खर से  
 पहना बर्दा है। पैसा मनुष्य के लिए  
 लक्ष्मी पाया है। पैसा सेव-सेव के व्यर्थार  
 के लिए बांधा है। प्राण देस देस के से,



(पृष्ठ ४ से आगे)

## महर्षि दयानन्द के सपनों का भारत

सम्भव नहीं है। अनुशासन बिना दण्ड के सुचारु क्रिये स्वार्थी नहीं हो सकता। दण्ड के लिए वेद में व्यवस्था की गई है। इसे एक रूपक द्वारा स्पष्ट किया गया है। इस प्रकार एक कुम्हार बड़े का निर्माण करते समय कुम्हरे बड़े को धपकी मारकर मजबूत बनाता है। साथ ही वह धपकी मारते समय इस बात का पूर्ण ध्यान रखता है कि कहीं बड़ा टूट न जाये। इसी प्रकार दण्ड देते समय यह धृष्ट भी गिना के निर्माण में स्नेह का पुर्ण ध्यान रखे।

[illegible]

श्रद्धा विमानन सह शिला के पक्षर  
 नहीं है। इनकी दृष्टि में बालक एव  
 बालिकाओं के लिए पुष्प पुष्प सहजुओं  
 की व्यवस्था होती बाहिए। यह-शिला  
 नैतिकता पर सर्वप्रथम कुतराधात है।  
 बालक के निर्माण की यह व्यवस्था  
 होती है इस समय कहीं वह बाह्य भाष-  
 न में सोकर अपने जीवन को मष्ट प्रष्ट  
 न करे है। इसकी दासता कहीं धमिक  
 की। समय एव अक्षय्य का ही निर्माण

धम है। योग तो जीवन का ह्रासकारी  
पथ है योग की भावना चाहे मासिक  
हो क्यों न हो उसको पथ की धम  
प्रधारण करती है। उसको जीवन से खान  
नहीं धर्मिण धर्म से बृत्त के समान और  
धर्मिक प्रणवित हो जाते हैं। मस्तुत  
“Prevention is better than  
cure” प्रवृत्ति उत्पन्न है तो योग की  
पहले ही होकरनाय बेवहार है। जीवन के  
उत्पन्न विकास के लिए बहु-विधा विविध  
रूप से किशोरवय के युवक-युवतियों के  
लिए युग नदीक्षा का ही है। जिससे प्रायः  
तो कुछ नहीं होती धर्मिण तो युवक अपना  
होना है उसे भी सहज नहीं देना है।

मृत्यु-धाम्यम मृत्युधाम्यम धाम्यम  
के उपरान्त धाम्यम । श्रद्धापूर्व की नीध पर  
ही मृत्युधाम का प्राप्ताव धाम्यम होना ।  
मृत्युधाम धाम्यम कथं प्राप्ताव धाम्यम होने के  
कारण जेष्ठ धाम्यम है । मृत्युधाम धाम्यम  
के द्वारा जेष्ठ धाम्यम की धाम्यम का प्राप्ताव  
धाम्यम करता है । इसमें 'विश्वानु' द्वारा  
विशेष प्राप्ताव का मृत्युधाम करती है । धर्मिष्ठ  
है । विश्वानु उसी धाम्यम के द्वारा वाहिए जिसमें  
वह प्राप्ताव मृत्युधाम का धाम्यम हो । धर्मिष्ठ  
मृत्युधाम के द्वारा विश्वानु का धाम्यम बड़ा  
विशेष किया बड़ा धाम्यम के लिए मृत्युधाम  
विश्वानु की धाम्यम २५ वर्ष धाम्यम स्वी की  
लिए १५ वर्ष धाम्यम है । धाम्यम की धाम्यम  
की धर्मिष्ठ है विष्णु की धर्मिष्ठ का विश्वानु प्राप्ताव  
है । मृत्युधाम धाम्यम का विश्वानु १५ वर्ष  
के धाम्यम प्राप्ताव २० वर्ष की स्वी तथा जेष्ठ  
धाम्यम का विश्वानु २५ वर्ष धाम्यम प्राप्ताव  
धाम्यम स्वी की धाम्यम का स्वीकार किया धाम्यम ।  
धर्मिष्ठ धाम्यम के प्राप्ताव को धर्मिष्ठ धाम्यम  
के धाम्यम प्राप्ताव को धाम्यम का धर्मिष्ठ  
विश्वानु धाम्यम करती धाम्यम हो । धर्मिष्ठ  
धाम्यम की धाम्यम धाम्यम के धाम्यम के  
धाम्यम धाम्यम धाम्यम धाम्यम धाम्यम  
धाम्यम धाम्यम धाम्यम धाम्यम धाम्यम

[illegible]

एब मेरी पुत्रियां भी मेरे समान बिराट्  
मुलावती हों ।

भावप्रत्यक्ष तथा सत्यास की स्थिति  
 गृहस्थ जीवन के धनपथ है। शीघ्रतः  
 तृतीय उम्र के कारण गृहस्थ की आयु को  
 १०० वर्ष तक स्वीकार नहीं किया जा  
 सकता। केवल 'जीवन शरर सत्यम्' की  
 प्रार्थना ही वायु हकुरी है। छायापथ  
 यात्रा समझना चाहिये कि सेवा-विशुद्ध होने  
 के अनन्तर अपने जीवन की अपनी गृहस्थी  
 से ही नहीं अपना चाहिये सम्युक्त उपाय  
 विस्तार। लोक कल्याण से करना चाहिये।  
 'सर्वभूतं कुरु कल्याणं' की भावना का  
 विस्तार ही इस भावना का मूल उद्देश्य  
 है। प्रथम स्व को युक्त करण उपकरण  
 की भावना से गृहीत ही जीवन-यापन  
 करना है।

श्रुति के अनुसार ब्राम्हण्य की स्थिति ५० वर्ष की आयु के पूरा होने पर है। ऐसी स्थिति के यदि श्रमण प्रपणे को शोक कल्याण से समता है तो इससे वेदा को भी कल्याण होगा। सेवा विवृति की आयु यदि ५०-६० वर्ष कम से कम करके ५० वर्ष कर दी जाये तो इससे वेदा में क्षाण क्षमता का विकास होगा। अथ ही नवयुवकों को रोज़गार के बाधिए एवं सुलग साधन उपलब्ध होये। परिणामतः जीवन के अन्तिम क्षण तक शोक की विविधता से मनुष्य मुक्ति प्राप्त कर सकेगा।

महर्षि इयामन्त्र वे राबर्नैतिक इष्टि को भी क्षामाधिकार देते के समान ही सर्वजन-हित-सर्वे रक्षा । इष्टा एव प्रीति के इत्यन्त को पिता-पुत्र के स्वयं में स्वीकार किया गया है । अहिंसावादिन राव प्रयासी के कथनार्थ वे । वे राधा पर पुनः सन्तुष्ट के प्रयासी वे । वे शत्रु-पक्ष आक्षेप के इस कथन से पूर्ववत्ता खटवें वे कि जो राधा स्वतन्त्र एक स्वामीन होता है, वह अन्ध का नाशक होता है । वह कण्ठरा को हटाकर अन्ध को पीछी करवा

है। जैसे सिंह आदि अन्य पशु को मार कर खा जाते हैं, उसी प्रकार स्वतन्त्र राजा प्रजा का नाश करता है।

कर व्यवस्था के विषय में स्वामी जी का यह मत है कि जो भी कर राजा के द्वारा ग्रहण किया जाये, उसका उपयोग केवल सेवक से बन सम्मान में ही हो। जिस प्रकार सूर्य पृथ्वी से जल ग्रहण करता है, परन्तु उसे पुन पृथ्वी पर समान रूप के समुत्पन्न करने के प्रयासवित्त कर देता है। जहाँ प्रकार राजा को भी कर का सदुपयोग करना चाहिए। धनि लोग से यह दूसरी के मुक्त को नष्ट करने का प्रयास न करे। इससे राजा प्रजा के प्रेम एवं सम्मान को जो देना है।

राजा के लिए वण्ड व्यवस्था सद्बु-  
द्धि विचार एवं कृष्ण करने चाहिए।  
क्योंकि वण्ड ही समस्त प्रजा का पालन  
एक उसकी रक्षा करता है। "वण्ड नास्ति  
प्रजा सर्वा वण्ड एवाभिरक्षति।"  
परिणामतः राजा को परम वण्डाधिकारी  
की सभा ही यह है। वण्ड-व्यवस्था से ही  
सबजनों की रक्षा एवं सुखों का विनाश  
हो सकता है। इस सर्वमं से राजा का  
व्यक्तित्व ही राजा पर प्राप्त करे।

ऋषि ब्रह्मन् एकं बुधं सत्त्वं ते ।  
 सङ्गो नास्ति का निर्माणा ध्यायात्तैः के  
 ये न कर्ते का प्रयासः किम् । भारत  
 को एक बुध ने ऋषिने का उन्होंने धनवर  
 प्रयास किया । भरत को सर्वप्रथम  
 महर्ष देकर भरतनाम्न को ही 'भारत'  
 ऋषि ने माना । धार्य सङ्कति का निर्माण  
 करने वाले दमयन्त एक को सामा-  
 यिक राजनैतिक एक प्राकृतिक ऋषि ने  
 एक विशद सत्य ने देखा चाहना ।  
 भारत ने भारत को उच्चतम मनो-  
 नैतिक का निर्माण ही ब्रह्मन् का साक्षात्  
 प्रकाश संपन्न ।

(पृष्ठ ५ का शेष)

बोध दो। इससे आत्मा पवित्र बनती है  
 और उसको उन्मत्त होती है। सभी  
 मनुष्य मुक्त होला है। मैंने यों को याद  
 की। अन्धकी बनो। उसने सारी वन धरणी  
 आत्मायों को दे दी। उसने कहा—'मुझे  
 लालच दे। मुझे नदी। चण्ड। मैं आर्य  
 शास्त्र स्तुति तपस्या करूँ। मैं ऐसा जान  
 चाहती हूँ जिससे आत्मा की उन्मत्त हो।  
 ब्रह्मचर्य को मैंने यों से के प्रत्यक्ष दे।  
 उन्मत्तों मैंने यों की अन्धकी-धरणी जान  
 की। मैंने जाना। उसे मैंने जाना। दोनों  
 ने सदाशिव में सुखी जीवन बिताया। यों  
 बोधो हय भी जानी बनकर मुक्त की जीवन  
 बिता रहे। ऐसा प्रयास करूँ। □

(पृष्ठ ७ का शेष)

शान्ति, विश्ववन्द्यत्व, विश्व एतत्ता, एक मानव समाज, एक मानव राष्ट्र का स्वप्न पुरा होना तभी 'कुण्वन्तो विश्वमार्यम्' का मार्ग सफल होगा। तभी मानव को आधिनीतिक, आधि दैविक तथा आध्यात्मिक शान्ति मिल सकेगी।

ॐ ह्रीं क्लीं ॥ ह्रीं क्लीं ॥ ह्रीं क्लीं ॥

## गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय हरिद्वार में राष्ट्रीय पुस्तकालयाध्यक्ष संगोष्ठी

राष्ट्रीय पुस्तकालयाध्यक्ष संघ के सत्रावधान में गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय हरिद्वार में पावन राष्ट्रीय पुस्तकालय संगोष्ठी का प्रारम्भ २३ मई १९६५ को हुआ। सम्मेलन में देश के विभिन्न पुस्तकालयों में लगभग ६० पुस्तकालयाध्यक्षों ने भाग लिया। गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय के कुलाति, श्री बसन्त कुमार त्रिवा ने सम्मेलन में प्राथमिक प्रतिनिधियों का स्वागत करते हुए कहा कि 'आज गुरुकुल को देश के अधिक भागों के प्राथमिक पुस्तकालयाध्यक्षों के सम्मेलन के प्राथमिक का गौरव प्राप्त हो रहा है। श्री हुजा जी ने वाद दिलाया कि स्वामी ब्रह्मचर्य सत्सती इस युग के सर्वप्रथम जननमय के जिन्होंने राष्ट्रीय जीवनधारा में पुस्तकालय के महत्त्व की समझ दया प्राथमिक के सहिष्णुता में उन्होंने जिन कष्ट पथों का पटल किया उनमें एक एक पुस्तकालयाध्यक्ष का भी था। स्वामी जी की भाग्यशाली के धनुष्म एक प्राथमिक सत्रावध के लिए पुस्तकालय का उदगा ही महत्त्व है जिसका कि नीचे के विषये ध्येय काव्यारण्य की भावप्रवृत्ता होती है। गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय एक ऐसा ऐतिहासिक स्थान है जिसके प्राथमिक स्थापना के लक्ष्य में ही लोगों ने स्थापना की बहुत विचारता उन्होंने महत्त्व के द्वारा स्थापना की परम्परा को जारी रखने के लिए पुस्तकालय की मरता को स्मरित किया। जिसके परिणाम स्वरूप गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय पुस्तकालय का भारत के पात्र विश्वविद्यालय पुस्तकालयों में से एक प्रमुख स्थान है। श्री हुजा जी ने वर्णित जल सत्रावध की सम्पत्ति प्रकट करते हुए कहा कि मुझे प्रायः भी अपने जलजल के पुस्तकालयाध्यक्ष की याद है, जिसके वर्णन होने पर उनके पैर खुलेंगे मेरे कुछ भी सकोच नहीं होगा। एक कथा पुस्तकालयाध्यक्ष विश्वविद्यालय के आधार की सुदृढ़ कला है। जिसी विश्वविद्यालय के स्तर की जागरणी प्रायः उस विश्वविद्यालय के पुस्तकालय से छात्राणी के बना सकते हैं।

राष्ट्रीय पुस्तकालय सम्मेलन के इस अवसर पर गुरुकुल कांगड़ी में २२ पुस्तकालय के प्रतिनिधियों प्राथमिक श्री डी० आर० कालिया की भारत सरकार पुस्तकालयाध्यक्ष संघ की ओर से एक मान-पत्र की भेंट किया गया। इनकी यह मान-पत्र जीवन पर्वत पुस्तकालय की डेव को के समर्थन दिया गया।

सम्मेलन के मुख्य प्रतिनिधि श्री डी० पी० गुप्ता कुपतिव नवी विश्वविद्यालय के हुजा विश्वविद्यालय मान का एक प्राथमिक है वहाँ ओष एव शिक्षा का उन्नयन निरन्तर होता रहता है। एक प्रमुख

पुस्तकालय ओष एव शिक्षा की जारी रखने में नये के अधिक मोहना होता है। पुस्तकालय की भूमिका पूर्ण वैज्ञानिक काव्यारण्य के जारी रखने के सत्रावध प्रत्यक्ष होती है।

इस सम्मेलन का उद्घाटन श्री टी० आर० ब्रह्मचर्य महाराष्ट्र, मेर राणीपुर, हरिद्वार द्वारा किया गया। उन्होंने प्रतिनिधियों की सहोचित करते हुए कहा कि 'पुस्तकालय की भूमिका जीवन के हर क्षेत्र में व्यक्त समाज एक राष्ट्र की उन्नति निर्माण करने में सहायता करती है। ज्ञान सत्त्वता के इस काव्यारण्य से हर व्यक्ति समाज एक राष्ट्र की निर्माण सामग्री प्राप्त होती है। भाग प्राथमिक इस बात की है कि पुस्तकालय वैज्ञानिक को कार्यरत साक्षी वैज्ञानिकों को उनके विचार में सम्मिलित नवीनतम सूचना सामग्री उनके प्रयोगशाला तक

पहुँचाए।

भारत सरकार पुस्तकालयाध्यक्ष संघ के अध्यक्ष श्री एच००००० ने प्रतिनिधियों को कहा कि यह सी०सी०सी० वैज्ञानिक काव्यारण्य में तो पुस्तकालय वैज्ञानिकों की उपयोगिता महत्त्व की जाने लगी है। ज्ञान का विस्तार हमनी तेजी से हो रहा है कि पुस्तकालयों पर उसे विश्वसित करने की जिम्मेदारी का गई है। पुस्तकालय राष्ट्रीय ज्ञान सत्त्वता के प्रतीक हैं। प्राथमिकता इस बात की है कि राष्ट्रीय ज्ञान सत्त्वता को पुस्तकालय सर्वत्र सेवा के मानव्य के एकीकृत करने राष्ट्रीय सूचना सेवाओं की सुविधावित प्रशाली धपनाई जाए। पुस्तकालयाध्यक्ष का प्राथमिकता दायित्व पुस्तकालय वैज्ञानिकों द्वारा सम्पत्ति साक्षिण की सुवच जलकारा सत्त्वता व्यक्तियों तक पहुँचाने का ही गया है।

इस सत्रावध के उद्घाटन के अवसर पर गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय के पुस्तकालयाध्यक्ष की जगदीश विद्याकार ने विश्वविद्यालय के कुलपति श्री बलभद्र

कुमार हुजा जी को यह विश्वास दिलाया कि भविष्य अव्यय सत्त्वता में पुस्तकालयों के महत्त्व को स्मरित करने का जो जनमत बनता या उस मानवा की कायम रखा जाएगा।

उक्त सम्मेलन में अनेक गोष्ठियाँ हुईं। जिनकी अध्यक्षता, श्री टी० एच० राज-नारायण निर्देशक राष्ट्रीय ज्ञान प्रवेलन सत्रावध, श्री एच० एच० मृति निरक्षण राष्ट्रीय रचना प्रवेलन सत्रावध एवं श्री पी० पी० ममता डीव कला सत्त्वता दिल्ली विश्वविद्यालय में किया।

सम्मेलन में सब से अधिक जोर इस बात पर दिया गया कि विश्वविद्यालय एवं शोध संस्थानों में पुस्तकालय की नवी भूमिकाओं को स्वीकार किया जाना चाहिए। पुस्तकालय वैज्ञानिकों की प्रभाव शोध प्रयोगशाला में कार्यरत वैज्ञानिकों को उनके विचार से सम्मिलित सूचनाएँ पट्टन में की है। टमीएर प्रत्येक शोध संस्थानों में कम्प्यूटरी द्वारा सूचना सेवाओं की प्रारम्भ किया जाना चाहिए।

८

## सम्पादक के नाम पत्र

सत्यर नमस्ते ! मैं १० मई से १९ जून तक बाहर गया था। मेरी धनुष-स्थिति में प्रायः धर्मसन्देश के घट मिले। इन साप्ताहिक पात्र का निरन्तर रहा है और सामाजिक तथा उपयोगी सामग्री प्राप्त करने में बहुत लगे हैं। २३ जून के तब प्रायः मेरे घर पर शहीद रामसाय विश्वसिल के उद्गार पत्रक बड़ी प्रसन्नता हुई। श्री बनराज शर्मा का लेख का जल नीति पर पुनर्निर्धार जल्दी 'साधक' एक राष्ट्रीय सम्मेलन पर सभी को पुनर्निर्धार करने का प्रेरणा देता है। भारत की नीति पश्चिमा राजनेताओं की भाव की कारण ही हमारे देश में जारी है। नीति के २३ नीति के कारण योग्यता और वरिष्ठता को टाटकर छोड़ रही है। कर्मचारियों में इस कारण प्रायः मनमुट्ठा और वैयक्तिक 'संशय की प्रतिक्रिया' को किसी भी प्रतिक्रिया देने के लिए कठोरता के आ सकते हैं। ऐसा राष्ट्रीय सम्मेलन और एकता का नारा देने वाले से कोई देश सुरक्षित नहीं हो जाता। राजनेताओं की समय रहते सतत नीतियों के पत्रव्यव नुसार न ही रहे सत्त्वता के सत्रों की समझ सेवा चाहिए और पूरे देश में कर्मचारी पहले इस भाव को बुझाने की चेष्टा करनी चाहिए। राष्ट्र के हित में भूख गुहार के लिए किसी भी सकोच काव्यारण्य नहीं होती, तभी तो, बहुजन हितार्थ, बहुजन सुखा का उद्देश्य पूरा हो सकता है।

—ब्रजभूषण ठुगे

३ गोपबन्धन कलकत्ता ७०००१४  
प्रायः प्रमुख व कलकत्ता स्थित धर्मसन्देश का रचना विनोद निरन्तरता का रहा है। पत्रिका का ध्वनि व सत्त्वता अवश्य कलकत्ता के भाग

केन्द्र है। 'पात्र' जैसे विद्वान् सत्त्वता की कर्मता एव न की सत्त्वता का ही परिणाम है या प्रत्यक्ष की गुरु गुरु एक केनती का रहा है। जिसके लिए प्रायः बहादुर पात्र है।

मैं बड़ी से धर्मसन्देश पत्र पत्रिका की क स व धर्मसन्देश भी मालता रहा है पर धर्मो के सत्त्वता इसकी सत्त्वता ही कुछ और है। हर धर्म की प्रती सत्त्वता रहती है।

भवदीय

मोहनलाल शर्मा पत्रिका

प्रायः के द्वारा प्रकाशित 'प्रायसम्मेलन' का सर्व धर्म ३ मेरे मानने है। वस्तुतः यह पत्रिका मानव जीवन की नया धारोक्त देने में प्रकाशित के समाज है। इस पत्रिका में 'उपनिषद् कथा माना ७०' 'संशय की प्रतिक्रिया' एवं 'पत्रिका' व 'वकीली' के गुरु होती हैं। श्री योगप्रकाश शर्मा द्वारा लिखित लेख बहुत ही धर्म्य लगे।

प्रायः जिस सुवृत्त, सत्त्वता, मोक्ष व वैयक्तिक से इस पत्रिका का आवाज कर रहे है उसके लिए मैं ध्यानों दृष्टव्य से बना देता हूँ। धर्मसन्देश पत्रिका राष्ट्र विनाश को गतिशील बनाने में धनवी धर्म भूमिका निभाती रहे। इसके उन्नयन अधिक से लि मेरी हार्दिक मनमकाय माए स्वीकार कीजिये।

भवदीय

श्यामसुन्दर शर्मा  
(सम्पादक—पत्रिका सत्त्वता)

प्रायः नई विना नीति बनान की चर्चा चल रहा है। धर्मसन्देश में भी प्रायः एक सम्मेलन द्वारा इस विचार पर प्रकट किया गए है। एक उचित

स्वरूप स्थान है। धर्मसत्त्वता क पास शिक्षा का वर्गीत धनुष्म है और नई राष्ट्रीय विना नीति बनान न यह महत्त्वपूर्ण योगदान का करता है। प्रायः सत्त्वता सत्त्वता प्रभाव दिक्ता प्रायः प्रतिनिधियों प्रायः शिक्षा राष्ट्रीय का प्राथमिकता करे जिसमें शिक्षा नीति के सत्त्वता रहे। पर शिक्षा विभाग का एक सम्मेलन विना नीति का महोदया सरकार को दिया जाय और उसे धर्मसन्देश का धनुष्म किया जाये। धर्मसन्देश की इस विचार पर एक प्राथमिकता के एक विवेदांक की योजना बनाय ता उचित है। इस समय सही विना नीति के निर्धारण करने सत्त्वता की कई समस्याओं का समाधान होगा और राष्ट्र की सत्त्वता सत्त्वता के अधिक धर्मसत्त्वता एवं धर्म गौरव लक्ष्य प्रेषण करेगा।

गोष्ठी में विना नीति के सम्मिलित निम्न बातों पर विचार किया जा सकता है—

- १ शिक्षा का नूतन उद्देश्य।
- २ शिक्षा का विभाग एवं अनेक विभाग की धर्म्य।
- ३ शिक्षा का माध्यम।
- ४ पत्रक जल।
- ५ शिक्षा सत्त्वता का स्वरूप।
- ६ धर्मसत्त्वता का धर्म।
- ७ धर्मसत्त्वता को स्मरण करने की योजना।

व्यापारिक के कायम यहा विस्तृत रूप से उपररत विषयों पर विचार प्रकट करना सम्भव नहीं है। सब समय से अपने विचार दे रहा हूँ।

विना का नूतन उद्देश्य धर्म के धर्म का निर्माण एवं मानव्य का चाहिए। शिक्षा का प्रभाव न जिसे नूतन कदा रहने है, धर्म निर्माण के





- (पृष्ठ २ से घाने)
- सुप्रसिद्ध के नाम पत्र
- मिए ही होनी चाहिए। बासकी-बास-  
कासी मे निम्न स्कोको का भाव उनके  
परिचय का भव बन बाव—
- (१) छत्रपती धननिष्ठा एते व  
अतरो बावपु सीधगाय।
- (२) धन निव पते वेति  
मनसा मनुवेतसा।  
अशारिखालागु  
मनुष्य कुटुम्बम् ॥
- (३) ईसा शास्त्रिय सर्व  
परिचय अगत्या अवयु।  
तेन स्वस्वमे मूचीया मा  
गृह कस्य निबन्धनम् ॥
- (४) निम्नपु नीतिनिष्ठा  
यदि वा सुकुम्बु,  
सकरी सनाथिवायु  
मनुष्य वा मनेष्टम्।  
धर्मिक वा मन्थवन्तु  
सुगान्धरे वा  
धर्मशास्त्र प्रतिकल्पित  
वच न कीरा ॥
- विद्या का हृदया भाग जिसे द्वैतिय  
की सजा ही जा सककी है या नोनिमा  
धर्मन से सम्बन्ध रखते। पाव वष की  
धानु से कन्दर्ब वर्ष की धानु तक सामान्य  
विद्या (मूल विद्या) ही जाये जिसके  
धर्मन से परिचय निर्माण पर बन देते हुए  
पाषाणों का ज्ञान मणित, दृष्टिहास, धूर्तता,

वर्ष के मूल विद्या, आरम्भिक विद्या  
इत्यादि की विद्या का प्रत्यक्ष हो तथा  
परीक्षा का मरीचक आशङ्कित हो न कि  
मुक्तक ज्ञान। इसके पश्चात् इसकी वष की  
धानु एक एक विशेष व्यवस्था की  
विद्या की जाये और स्वभाव से कि  
उत्पन्न की जाये। इसकी वष की धानु के  
पश्चात् किसी विषय में विशेष योग्यता  
प्राप्त करने का प्रत्यक्ष हो। बासकी की  
धामन एव धामन्याम तथा हृदयन की  
विद्या धर्मन है। निम्न निम्न धर्म-  
धर्मियों के लिए ऐसा पाठ्यक्रम निर्धारित  
किया जाये जिससे कर्मों की शोच न  
मास्य हो। विद्याय उत्साह वहीरे के दूर

होनी चाहिए एव उनके विद्याधियों के  
रहने का प्रत्यक्ष हो। धर्मनको के चयन  
से उनके चरित्र पर स्थिर बन देना  
चाहिए तथा धानु की कोई शोभा नहीं  
होनी चाहिए।

नई विद्या नीति की सफल करने  
का दायित्व धर्मनको का होता। इस  
सम्बन्धित एव योग्य धर्मनको उधार करने  
के लिए भी एक योजना की आवश्यकता  
है। मही हो विद्या नीति बनाने का कोई  
भाव नहीं होता।

हर्षदेव सिन्हा

मनो, धारमशास्त्र

टी-२२२२, जनकपुरी, नई दिल्ली-५८

(पृष्ठ १ से घाने)

कान्तिदूत स्वामी अर्पेदानन्द

**दंतों की हर बीमारी का धरदू इलाज**

**एम डी एच**

**दंत संजन**  
लोगा युक्त

23 जड़ी बुटियों से निर्मित  
आयुर्वेदिक औषधि

उत्तम का डायरि

**दंत संजन**  
लोगा युक्त

अब नये पैकेज  
में उपलब्ध

विन्हीमण्डल  
महाशिया की हड्डी (मा०) लि०  
9/44, कान्तिदूत पुरिया भीम अमर, नई दिल्ली 15  
फोन 539809, 537987, 537341

उपरी तन्त्र पर स्थित रैटिबल "मैक्रोटिक  
पार्टी" के दलपर से गया। पार्टी के कासा  
पानी से लीट बहताय दासगार-दूध काज  
के धर्मियुक्त भी लोकनाय बन के स्वागत  
का धारोजन था। द्वितीय महायुद्ध के बाद  
दक्षिण में कासा पानी की सजा भाग वर  
धर्मिक धर्मियुक्तों को मुक्त कर दिया गया  
था। धाने समाचार पत्र की धार २० की  
बल से साक्षात्कार के निमित्त मैं धा  
गया था। जब मैं रैटिबल पार्टी के दलपर  
में पहुँचा तो वहाँ मुझे पुराने काविकारी  
सर्व श्री मन्मोहि सेन, रजनी मुखर्जी,  
अधिक नेत्री तथा नेता मन्मोहि कारा  
ग्य लुई ० सी० कायिक, धर्मियुक्त लुई  
० एम० शास्त्रदेवेंद्रिय से। श्री बासवन्द  
नाथ भी उपस्थित थे जो धारण किसी से  
बार्न कर रहे थे। श्री नलिनी सेन धारि  
के मध्य में ही एक मोरा एव मदीने नयन  
का कल्पित डेठा था। मैंने श्री सेन से कहा,  
'धामी की मनेत्र लगे साक्षात्कार  
बाई।' लोग कल्पित जोडा— धामी  
नम। फिर श्री बज ने मुझ से परिचय  
पूछा। मेरे जन्म स्थान के बारे में जानना  
चाहा। मैंने धारण की बिहारीधामी  
बतलाया। तत्काल श्री ल से स्वामी  
धर्मन, नयन की विषय में पूछा। मैंने,  
स्वामी की के कलकत्ता निवास के विषय में  
बतलाया। तत्काल से स्वामी जी के  
पास साध बनने के लिए धारण किया।  
वह वीरवार हो गया। रास्ते में मैंने श्री बज  
से पूछा— 'धाम ने जब स्वामी जी का  
परिचय पहचाना हुआ होगा, उस समय  
तो वह "राम समुद्र पाण्डेय" थे। जन्मिन,  
धारणने स्वा० अर्पेदानन्द जी को इस से  
जाना? उत्तर मिठा— 'धामावेर निरन्तर  
सम्पर्क छिलो।' मैं धमाक रह गया।  
मैं स्वयं लहं करने लगा, 'धर्मों के  
धारणन से धर्मन से निरन्तर सम्पर्क कैसे  
सम्भव हुआ?' वह रहस्य धाम की बना हुआ  
है। जब श्री बज पोहारा भवन पहुँचे तो  
राम धरत निवास का दृश्य उपस्थित  
हो गया। धामी की धामों से धामन्य के  
धारि थे।

श्री मानमोहन नाथ रा० १९४८ के  
परवर्ती से पटना धामे थे। मैं पटनाकारों के  
बीच भी राम की 'राष्ट्रीय धार्मिक योजना'  
(National Planning) तथा 'राष्ट्रीय  
सर्वजन नियाम' (Formulation of  
National Constitution) के मुलर  
सम्पर्क था। धर्म श्री राम के मरा  
पनिष्ठ सम्पर्क स्थापित हुआ था। श्री  
राम पटना के बुद्धिवादी वय से निवास  
चाहते थे। उसी दिन उनका लुईर  
सिनेट हाल में धार्मिक-योजना एव धर्मि-  
यान-निर्माण पर भाषण होने वाला था।  
उसके पूर्व वह पटना के बुद्धिवादी सदुपाय  
शक्तिसे बाव थे। निमग्न मिठा और  
मैं स्वामी जी तथा श्री रामानन्द गारुकी के  
साथ श्री राम की गौरी से धार्मिक होने  
गया। स्वामी जी की देखभाल श्री राम ने  
उन्हें धान पत्र बिठा लिया। धीरे धार  
की सुल्लेख हुए स्वामी जी से पूछा—  
'धाम रामसमुद्र पाण्डेय तो नहीं हैं?'  
स्वामी जी ने कहा— हाँ मैं साधका  
रहा, जा दामी धामियुक्त कल के पिता  
नलिन का की दहिना हाथ था, उससे  
स्वामी जी का पुराना परिचय कैसे?  
स्वामी जी से प्रश्न पर पता चला कि  
धार्मिक धर्मोका बाज के बाद किशोर  
वय-क नरेन्द्र भट्टाचार्य (श्री मानमोहन  
नाथ का पदनाम) जब पटना में एक  
मेन कम्पोजीटर के रूप में मुद्रण जीवन बिता  
रहे थे, तो स्वामी जी का काज उन दिनों  
हालिकारियों के मुलर पत्रों को निर्माण  
के दास में पुराना था पुरुष बना था।  
मुद्रादेव प्रेस (मुद्रादेव) नाम की स्वामी  
जी वर नहीं है, की पटना शाखा क  
प्रकारी दिवसत श्री पत्नीबाई श्री राम के  
साथ उत्तम अम म पुत्र पीटर का क  
करते थे। पत्नीबाई क माधम से स्वामी  
जी का भी नरेन्द्र भट्टाचार्य से परिचय  
हुआ था।

अजीव दरवार—

स्वामी जी के दरबार म विभिन्न  
राजनैतिक, सामाजिक, एव धार्मिक  
(पृष्ठ १२ पर)

**सजिलद 900**  
सेकंडा

**सत्य के प्रचारार्थ**

**अजिलद 500**  
सेकंडा

**मृत्यार्थ प्रकाश**

घर पर पहुँचाये

**सफेद कागज सुन्दर छपाई**

**शुद्ध शरकरण वितरण करने वालों के**

**अमर** सजिलद ९०० अजिलद ५०० लिए प्रचारार्थ

**आव साहित्य प्रचार दस्ते**

२३५३६-१६ मुद्रा ४२० की दर लिए प्रचारार्थ

२३५३६-१६ मुद्रा ४२० की दर लिए प्रचारार्थ

२३५३६-१६ मुद्रा ४२० की दर लिए प्रचारार्थ



एच डी एच शिकार्या पाकडर बालो की लोचनी पर  
काम है। "ह" प्रभावक बनाता सर्जिकल व स्वस्थ  
बनाता है।

शिकार्या रोटा बालना हट्टा बड़ेका कल्प व कल्प  
सर्जिकल हट्टा "ह" दिवस से बालना गया एच डी हट्टा  
शिकार्या पाकडर एक प्रभावक सामग्री को आकृषित कर  
है इससे कोई रसायनिक प्रभाव नहीं है।

एच डी एच शिकार्या पाकडर का कार्य है ही  
निर्वाणित अवयव को बचाने।

निर्वाणित  
महाशिया की हड्डी (ग्रा०) लि०  
३६६ बुकमिडल पत्रिका फोर्मा क्लर  
नई दिल्ली ११००१६  
फोन ६३९६०९ ६३७९८७, ६३७३४१

एम डी एच  
शिकार्या  
पाकडर

(पृष्ठ ११ के साथे)

विचारों के बीच बसलियत रहते है।  
स्वामी जी की वक्ते ब्रति समर्थित रहती  
थी। वह कहा करते थे, बैक का फलाना  
अनेक विधिसे के किया जा सकता है।  
मेरी सीट में कोई कार्य है न गी है न  
बेग है। बाबे की कोमलिट कामुनित  
सभी स्वामी जी के शान्तिमे मे बाकर  
उनका अनुग्रह प्राप्त करते है। काशापायी  
या काशग्रह की वक्ता जाने बाके अनेक  
परिचारे की बाधिक सहायता स्वामी जी  
करते है। न निचारी बेहुल पुनन बिहू  
पायी की सवा विमो की की विचरा  
पली की सहायता स्वामी जी किया करते  
है। वह मेने धपनी बाको के देखा था।  
स्वामी जी का समना का व्यवहार वह  
कहने के लिए बाध्य करता है कि वह  
सबकुछ समैदान्य है।

विहार की आर्यसमाज-

विहार मे धार्मिक कार्यसमाजों की  
स्थापना क कब हो विमो एक सहकर्मियों  
की प्रत्य है। उन दोनों विमो के नाम मे  
भी वेदवध धीर की सत्यवत्। दोनों ही  
करीब करीब समवयस्क है। पीछे बसकर  
दोनी बाकी भी स्वा० अनेवाग व तथा की  
स्वा० ईश्वरानुव वने। दोनों ही "नरि  
समान रूप स उदार अपरिहृी तथा  
कर्मव्यनित है। स्वामी जी अपने विचार  
मे बहुत कम बलसावा करते है। बहुत  
बाध्य करने पर कुछ कह दिया करते है।

वही कारण है कि उनके विचार मे बहुत

की बातें बाकी की बलात है।  
सुचना सुन्यासी-

स्वामी जी अपने कार्य में सुन्यासी है।  
जो तो वागवत्सी कीमन विताते समय ही  
वह सुनें सुन्यासी का वागवत् करने लगे  
है। वह नहीं चाहते है कि उनके एक-  
मात्र पुत्र "छपन" भी उनसे मिले।  
बन, वीथिक गरिया लोक कालि बादि  
किरी के ब्रति उनकी सुन्यासी प्रवृत्ति की  
मोरिख बने समय उनके उनके किरी  
प्रियतम व्यक्तित्व मे भी गति वह कहा कि  
बापकी धारीरिक बलसा विवेक बाबा  
के अनुकूल गी है तो उन्होंने यह कह  
कर ठाक दिया कि नचारी भारत में  
मरे वा बाहर गमने लगे पातर गी  
पडता। मोरिया बाते समय वह अनेक  
लोक तिक रोमो के ब्रत्य है। गी नके  
इहलीसी समाप्त कर दी। ऐसे मे स्वा०  
अनेवाग भी।

(बाकी इतना ही फिर करी)



उत्तम स्वास्थ्य के लिए

गुरुकुल कांगड़ी फार्मेसी,

हरिद्वार की औषधियां

सेवन करें

**गुरुकुल कांगड़ी फार्मेसी**  
हरिद्वार

**अमृत**  
अमृत शिला  
अमृत शिला का उपयोग  
अमृत शिला का उपयोग  
अमृत शिला का उपयोग

**अमृत**  
अमृत शिला  
अमृत शिला का उपयोग  
अमृत शिला का उपयोग  
अमृत शिला का उपयोग

**अमृत**  
अमृत शिला  
अमृत शिला का उपयोग  
अमृत शिला का उपयोग  
अमृत शिला का उपयोग

**अमृत**  
अमृत शिला  
अमृत शिला का उपयोग  
अमृत शिला का उपयोग  
अमृत शिला का उपयोग

शाखा कार्यालय-६३, पली दाबा कैदारनाथ,  
फोन: २६६८३८  
शाखों बाजार, दिल्ली-६

दिल्ली कार्यलय बसा १५, हनुमान रोड, नई दिल्ली-१ फोन ३१०१२० के लिए डा० कल्याण डार सुमारीय एच प्रकाशित तथा  
दैनिक सेव नवी न० १० कैलाशपुर, दिल्ली-११ में मुद्रित। रजि० नं० डी० (सी०) ७५६

12/10/85

साप्ताहिक

ओडम्

कृष्णतो विधमार्गम्

# आर्य सन्देश

अप ६ घण्टा ३० रविवार, ४ अगस्त १९८६ सृष्टि सप्त १८०२८४ ०८६ बाबल २०४२ दयानन्द—१९१  
आपक प्रसि ४० देते आधिक २० २५५ आजीवन २०० २५५ विदेश में ४० बाबर ३० १०६

## प्रभात की प्रतीक्षा में पंजाब की धरती



८ जोलाई को मथुरा देवा में पंजाब के समभोते क समाचार से हृष को लन्द फैन गयी। बार म न

के बाद पंजाब में पी फूटी है। हिन्दू धीर मित्रों के बीच उगती कंगोनी झड़िया सुलती दिवाली दी। पंजाब समस्था के समाधान के लिए ऊंची राजनीयकता धीर बड़ साहसिक कदम की जरूरत थी बुधा प्रधान-मन्त्री श्री राजीव गांधी ने निजी प्रशासनिक धीर राजनैतिक बाधाओं को एक छलम में पार कर सफलता प्राप्त की है। विघटन धीर धलनाव के कगार पर पहुंचे देश को सामने में एक कारगर कदम उठाया है। प्रधान-मन्त्री श्री राजीव गांधी बचई के पात्र है।

समभोते के साथ मूढ़े इन प्रकार

है—

- मगस्थ सेनाओं को विशेष अधिकार देने वाला कानून रद्द।
- बर्नीमड पंजाब को २६ जनवरी १८८६ को दिया जायेगा।
- आनन्दपुर माहब प्रलाव के केन्द्र राज्य सम्बन्धों के बारे में सर-कारिया आयोग विचार करमा।
- बर्नीमड के बदले हिन्दी इलाके हरियाणा को ३१ दिसम्बर १९८६ तक।
- मदी जल विवाद सर्वोच्च न्यायालय के न्यायाधीश की अध्यक्षता में गठित एक न्यायाधिकरण को सोपा जायेगा।

- दिल्ली में हुए मन्त्रिमंडल के दशे की जांच करने वाले रमनाथ प्रायोग कोकरो धीर कानपुर दमो की भी जांच करेगा।
- प्रखिल भारतीय मुहडा। कानून बनाना बायेगा।
- कीज में प्रती घोषता के आधार पर।
- फौजी मुकदमों में कोई हस्त-क्षेप नहीं बलस्ति लोगों को बसाया जायेगा।
- विशेष सामग्री प्रतिक्रिया तथा बलस्ति पत्र एक दृष्टि सम्पाद-कोय लेख दसिये।

## गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय के कुलाधिपति

## प्रसिद्ध इतिहासकार डा० सत्यकेतु विद्यालंकार



हिन्दी लेखकों में डा० सत्यकेतु विद्यालंकार का अपना विशिष्ट स्थान है। १९ सितम्बर १९०३ को मिला साह्यारमपुर में जन्मे धीर १९१०

में गुरुकुल कांगड़ी में प्रवेश धीर १९२४ में स्नातक हुए।

उच्च शिक्षा के लिए ध्राप योक्ष मये धीर बेरिंग यूनिवर्सिटी से इति-हास विषय में डी० लिट की सर्वोच्च उपाधि प्राप्ति की।

१३ वर्ष तक मरुकुल में इतिहास के प्रोफसर भी है। जीवन का अधिकांश समय माटिय लेखन में व्यतीत किया धीर भारत क विभिन्न विश्वविद्यालयों में व्याख्यान देने हेतु बुलाये जाते रहे।

अनेक राजनैतिक बाधिक साठू-तिक साहित्यिक सस्थाओं के साथ सम्बन्ध रहा। १९६२-७०-७१ विधान

परिषद के बहलखण्ड मन्तव्य क्षय से सदस्य बन। नागरी प्रचारिणी सभा हिन्दी साहित्य सम्मेलन प्रयाग सभ कुन वि० वि० की सीनियर के सदस्य भी हैं।

विदेश भ्रमण में चीन इन्वी-विटजरलेंस फ्रांस इन् विटन आदि देशों की यात्रा भी कर चुके हैं। डा० सत्यकेतु जी का कार्यक्षेत्र साहित्य मृचन-ही है।

महत्त्वपूर्ण ग्रन्थों में

१ प्राचीन भारतीय इतिहास पर धनको ग्रन्थ लिखे हैं।

२ आधुनिक इतिहास पर भी आपने धनको ग्रन्थ लिखे हैं।

३ राजनीतिज्ञ सत्त्व पर अन्त-रीक्षीय स्तर पर ग्रन्थ रचे हैं।

४ उपन्यास यह ध्राप ती एक पृथक विधा है इसमें ध्रापने धनको पुस्तकें विचो हैं।

सावदेशिक ध्रावप्रतिनिधि सभा के माननीय प्रधान श्री ला० राम-गोपाल जी शालग्राम की प्रार्थना पर ध्रापने ध्रावसमान का ध्रादि से ध्राव तक का इतिहास निवा है। ग्रिमके बार भाग हजार हजार पुष्प के लगभग द्रुपक जनता के हाथों में पहुंच चुके हैं धीर ध्रापने कार्य लेखन प्रगति पर है।

(विष पृष्ठ २ पर)

## सत्संग वाटिका

हे (सम स) एक विचार से युक्त  
घोर (सहाय) एक प्रकार के ज्ञान से  
युक्त लोगो । (उदुन्ध्याधम्) उठा । बागो  
घोर जालो । (सतीत) एक घर से बागो  
वाले (बहव) सब लोग जिसकर (अग्नि)  
हैबर को ज्ञानी को धन्यता ज्ञान को  
(इध्रधम्) उत्पन्न रीति से प्रतीय करी ।  
(रक्षित) धन्यता शक्ति के साथ शक्ति  
(अविश) धन्यता हैतसी घोर (उत्स  
वेदी) बाँकयो को सुखक चिह्न शक्ति इन  
को (इष्टतत्त्व) प्रमुख चिह्न वाले (ब)  
भाग सबको (बहव) रक्षा के लिए  
(निपुण) प्रमुख करता है ।

बड़ा ही प्रख्यात एक मन्त्र है। भाव  
यह है कि उठो जागो हे भाइयो। मनो  
बल से अनुमानित हो जाओ। एक रात  
के शांति सुप्त मन घटने पर उन्माद ही  
प्रतिन को प्रदीप्त करो। तुम्हारी रम्य  
मैं उस प्रतिन का प्राज्ञान करता हूँ जिसे  
धारण करते ही मनुष्य क्रियाशील हो  
उत्था है। तुम्हारी रम्य मैं प्रकाश से  
कमनवाती हूँ उस उषा का प्राज्ञान  
करना हूँ जिससे जीवन योग्य मय हो उठे  
हैं। अपने जीवनों को प्रतिनमय बनाओ  
प्रत्येक जीवनों को योग्यमय बनाओ।

[illegible]

# उठो ! जागो और ! जानो !

सुरेशचन्द्र वेदाकार एम ए एल टी

उदबुध्यध्व समनस सराय समग्निमिध्व बहव सनीडा ।  
दधिक्राममग्निमूषस च देवी मिन्द्रावतोऽवसे निह्वये व ॥

क्र० १०-१०१-१



हो जाती है। मत बच कहना है। एक घर में दोहरे बाले सब साथ मिलकर हैं और को नानी को बा ज्ञान को उत्तर भी रीति से प्रदीया करो धेर धाम रहित को उन प्रथमा ने देवों। ऐ नानाभिषय को ते ज्वित रिषित जेने हुए माना। तू क्यों हुए समन पूछ लाए ने धनिष्ठाका से सम्पत्ति ज्ञान करता है एक भार उठकर क्यों नहीं लेते लेता है कि सब धन्य हो। धन्या ते यहाँ को पराना नहीं खची उरी प्र की वनाना है जिसकी उपासना को हुन सबके प्रा एकत्र हुए हैं। यहाँ धन्य हो। यहाँ धन्य हो को किसी का प्रन्यास कैसे हो सकता है ? फिर तू जिस होकर धन्यास

वेद भग्न कहता है जागो धीर धर्मि  
को प्रार्थना करो। धर्मि कौन है? धर्मि  
नाम परमेश्वर को है। वेद में स्वयं कहा है  
तमेऽभिनिस्तथा धित्य (यजुः ३२.१)  
का अर्थ करते हुए याज्ञिकनाथ लिखते हैं  
(धर्मि कस्मान्) अर्थात् अवर्ति निस्तथा  
(३.१४) परमात्मा धर्मि है क्योंकि वह  
अपराधी है। सबसे धार्मिक रहने से लोग  
के धार्मिक चल्ते से परमात्मा का नाम  
धर्मि है। परमात्मा परमा धर्मि है। वह  
अपराधी न अपराधी है।

निन ते सख होलाह । मानव के  
 गरीब के प्राण धन से बज्र हो रहा है ।  
 धौल्य सख कर रही है कान्य का प्राण  
 है प्राण सख कर रही है स्वास प्राण  
 से ले गेलें हैं । और सख सख होलाह  
 प्रभु - नता होलाह । है खिन हारा  
 पुरी पर सखे बसमान बनकर धायी  
 छपरी छ हुतु नि ननि से ओह रहे हैं  
 सन प्रति को प्रदीप जलाह न मन क  
 दृश्य है । हसिएए सन धनि क  
 तन तन करणे को प्राणम जलाह प्रभु  
 कहलाह है हेर हदय के तिनके से उठ  
 बस को प्राण । प्रदीप हो । प्रदीप हो  
 होने पाया । आभासही अपनी उल्लास  
 आलाप से मुक्त से बेरे रो रोने से सख  
 सख सहे पावने है । अपनी विषय मुक्त  
 से बेरे सन रोम को सख को पाप क  
 कलिका नग हो । ये मुक्ति प्रदीप से बेनी  
 किन सखने से बस बेरे को बसवती ।

चिनगारिया बन जायें ।

आधा बख की धाम आधो मेरा  
 भातिव्य स्वीकार करो । मैं गल जीय ते नही  
 हजारी जोनसे तुम्हारा अभिपन्न करता  
 हूँ । केवल एक मुझ की जीय ते नही  
 प्रथ की लस लस नाडी नाडी की  
 जीय ते तुम्हारा अधिनत्न करता हूँ ।  
 आश जीवन मे प्राप्ते बनने के लिए प्रभुत्व  
 की प्र पित के लिए तुम्हारा स्वागत करता  
 हूँ । मेरा स्वागत स्वीकार करो । स्वीकार  
 करइ रही स्वीकृति है तुम्हारी कमी और  
 दोषा बहुत ।

यह प्रमाण पाये बिना ही कायना के भीषण धर्मिणों को युलुकारा है वहाँ भीषण की दृष्टि कल्पित स्थिति क्या का भी आश्रय करता है। विन के उच्च होने ही क्या का नामन होता है। उस समय जब धर्म्यन कल्पित कर्माहारी कायना का नावी है। जो कर्मा के दृष्टे हुए जो नाश कायना के विरुद्ध होते है। पानी के तेल पर एक बम भीषण नाश वावर की स्थिति कायना है। धर्म्यन में मरगोती होकर पायन की बर्लियाँ का हुका का मुना ही शासन होता लगी है। और उच्च होने की नीली कर्मा के वही कायना है। हम हीषण के वेताही है वही उच्च की नीली कर्मा का महापुनः प्रथम बार का दृष्ट कर्मा के और घाती को कायना के ना मुय जय वेता है। उनका धर्म्यन वलु विनिगमन में प्रशासनिक प्रमाण के वलु प्रगत कम घाती की प्रमाती देता है। इस पुन्य प्रगत में उच्च प्रगत हीषण है। वा प्रगत के राजा कम यह सत्य है। जो आश्रयस्थित वलु सोमावर्धन २० को धर्म्यन है हुका प्रमता का सदा है। यह पुन यह प्रमता प्रमता है —

ऐ प्रसन्नचित्त धी के भार से व्याकुल मनुष्य उठ । जाग श्रीरूपने उक्त सार्वज्ञिक मवर्षितक सवधारक के कर्म पर रहे परमश्रद्धा से श्रुति कर निश्चिन्त कथो गयी हो जाता । इसलिए वेदमहाकथा है—

हे कर्मबीर ! उठो ! जागो ! तुम्हारे  
सिए ससार का कायक्षेत्र खुला पड़ा है ।

तुम जिस भी कम को हाथ में लोते  
तुम्हारे स्पर्श से बड़ी महत्त्वपूर्ण बन  
जाएगा। तुम मानव सेवा के लिए आए  
हो। तुम में अद्भुत शक्ति निहित है। तुम  
अपनी शक्ति को पहचानो। उठो। धाव  
विश्व को तुम्हारी प्र वच्यकता है। समस्त  
ससार तुमसे ज्योति प्राप्त करने की  
प्रतीक्षा में है। तुम ससार का कल्याण  
करो।

इस प्रकार यह वेद मंत्र कहता है  
उठो ! जागो ! शीघ्र अग्नि को अपने हृदय  
में जाबूत कर समाज को जागृत करो।  
राष्ट्र का उद्धार करो। निराशा को दूर  
कर आशा का प्रसार करो।

इस ऋषि में एक सत्य है—

मनुष्य धाज क ह ज्ञ है सकी  
बन मे कर ले तो प्रस्तुत हीरो का  
ताज है सखे धाज के इस प्रभात  
ने धाज की सड्ड योजना फिर कल  
तुमको खोजे तुम्हें पडगा कसू न  
तना स्वर ऊपा के सुनो सुनाओ । धाज  
तुम लुखी मनाओ ।

## हमारे कार्य ही मानवमात्र के लिए

प्राप्ति कर कुछ ऐसे कम  
 जिससे हो सबत्र हम रा नाम ।  
 हम हो सनी प्रतिष्ठा के पात्र  
 न हो किसी की दृष्टि के रात्र ।  
 हो सभी दुग्धों से मस्त  
 शब्द शब्द हमारे लिए न्यस्त ।  
 हम बनें राष्ट्र के निर्माण सहायक,  
 हमारे कार्य ही मानव के लिए आनन्दक,

साहित्य वह है जिसस

हो सबका कल्याण

जिससे हो नतिकत का प्रार  
सच वेष्टन का ह सना  
उपन हो सदज्ञान सविवि  
छिन भिन हो कुसकार  
मिट जाये ऊव नीच की भावना  
छा जाय र पकि सबभावना।  
जो करे सतयुग का नियम  
गहि य वह है जिससे हो सबका कल्याण

— गकुलचन्द गुप्त विद्यार्थी  
भाष्यगज वि० राय ११ (३०)

(पष्ठ १ से अगे)

आयसमाज का यह विस्। त  
इतिहास यथार्थ मे नारा के पुन-  
जागरण और उसमे महर्षि दयानन्द  
सरस्वती तथा आयसमाज के जन-  
जन का योगदान सजीव बना है।

पंजाब दिल्ली और हरियाणा को आय प्रतिनिधि सभाओं के तीनों अध्यक्षों के आगामी वर्षों के लिए उन्हें कुलाधिपति चुना है। डॉ० सत्यकेतु विशालकर सक्षम विद्वान व्यक्ति हैं जो इस पवीत गुरुतर भार को बहनकर गुरुकुल का नवनिर्माण करेंगे।

## सप्ताहिक—

## धरम जुद्ध मोर्चा वापिस, नये सवेरे की तलाश

पञ्चम में चार साल से खून की होली निरन्तर बेली जाती रही। हर रोज सवेरा नये खून की नाहिमा बेगुनाही की चीख लेकर उगता। दहशत और आतंक से दिवाये सन्न होती रही। डोल डवाकी और मगलों के स्वर सो गये, सद्भावना एवं प्यार प्रीति के भीतो के बोल नफरत के जबडों में सोते गये। दिन प्रतिदिन स्थिति बिगड़ती रही। सत और भाग के दरिया को पारकर २४ जौलाई को प्रधान-मन्त्री समझोते के किनारे पर पहुँचने में सफल हुए। सारे देश ने एक स्वर से समझोते पर प्रसन्नता व्यक्त की। किन्तु सद्भावना एवं सदास्पता से हुए समझोते से कुछ काले दिलों के कोने में अगारे सुलग रहे हैं। इस को हवा से बिगारगिया फूटने लगी है। यद्यपि थो लोभो-बाल ने तीन वर्ष गुना घरम जुद्ध (बर्मजुद्ध) वास से लिया है परन्तु जल्दबाज़ टोहरा और सरदार बाबल ने समझोते पर तीथ अस्तोष ज़ाहिर किया है और यह भाग निरन्तर धक्क रही है। जल्दबाज़ टोहरा ने आनन्दपुर साहब से हुई सभा में समझोते को पञ्जाब के सिल्लों के हिताँ के विरुद्ध बताया। उन्होंने कहा मैं समझोते से कनई सहमत नहीं हूँ पर धक्का कुछ नहीं कहाँ कही ऐसा न हो कि समझोते से हमें जो कुछ मिलने का आशा है वह भी न मिले। हमने तो माग की थी ब्लु स्टार आन्दोलन में गिरफ्तार लोगों को क्षमा माफी दी जाये और उन्हें रिहा किया जाये (जो की दुष्प्र हो नहीं) सरदार बाबल ने कहा कि मगई सेमिकी और छात्रों का हथ रिहा नहीं करा सके हालाँकि इन लोगों ने हमारे लिए कुर्बानियाँ दी हैं। इस सम्मेलन में प्राये २०० प्रतिनिधियों ने सत लोभोबाल के साथ तथा समझोते पर विश्वास प्रकट करते हुए हाथ उठाकर सहमत प्रकट की, केवल टोहरा और बाबल ही सिर झुकाये बंटे रहे।

सत लोभोबाल साहसी नेता एवं सुमनस्क वाले नेता के रूप में उभरे हैं। प्रकानी दल में जो नेता सत हरचर सिंह के समर्थक हैं उन्होंने इस ऐतिहासिक समझोते पर फूल चढाये हैं। ऐसे नेताओं में पूर्व मन्त्री सुलदेव सिंह ठो डवा दल के कानूनी सलाहकार डा० गुरलाम सिंह तीरों दो पूर्व विधायक ज्ञानी बख्तु नि सिंह और एस एम खुनी ने कहा है इस समझोते से पञ्जाब में व्याप्त सभी समी सक्त दूर होगी और विकास का एक नया अध्याय शुरू होगा।

समझोते की देश व्यापी समर्थन मिलने से उपवादी शीक से भर गये हैं। इधर बाबा जोगेन्द्र सिंह इस ताल में है कि कब बाबल और टोहरा उभर से बौलला कर उनको और मुल मोहे। अमृतसर स्वर्ण मन्दिर से इन दिनों दोनों युवाँ ने गाने बाजी और तीलों मछपं होने से तनाव बना हुआ है और बाहर पुलिस सुरक्षा बल चौकसी के लिए तैनात है।

हरियाणा और राजस्थान, चण्डीगढ़ तथा पानी के बटवारे को लेकर प्रकानी से मत पड़ा है। राजस्थान विधान सभा में चरना दिये बटे नो सिंह सेलागत का कहना है हमें ऐसा प्रतीत है प्रकालियों को समुद्ध करने के चक्कर में राजस्थान के हिताँ की बलि हो रही है। राजस्थान का विपक्ष प्रधानमन्त्री से हो आस्थापन चाहता है। इधर हरियाणा ने पञ्चम दाल के प्रायस्वत होने पर भी विपक्ष के मन ने रावी व्यास के राजनीति और चण्डीगढ़ के बन्दे ने मिनने बाने इपाकों को लेकर शका बंटी हुई है। इसलिए विपक्ष के २६ विधायकों ने अपने हस्तोप अपने अध्यायों की सीप दिये हैं। ३१ जुनाई को हरियाणा दल का भी फैलाक किया जा चुका है। इधर भाजपा ने समझोते के स्वरूप पर आपत्ति प्रकट की है। प्रमुख आपत्ति इस प्रकार है लाहाड़ आयोग ने चण्डीगढ़ हरियाणा का दिशा बा लेकिन हरिद्वार गांधी ने इसे पञ्जाब की दिशा बा हरियाणा का। इस के बन्दे ने अमोहर

और फाजिल्का मिला था। लेकिन नए समझोते में चण्डीगढ़ पञ्जाब को दे दिया गया। पर अमोहर और फाजिल्का हरियाणा को नहीं दिया गया। (२) ब्रह्मिन भारतीय गुज्जारा कानून बनाने से भारतीय राजनीति में साम्प्रदायिता बढेगी। (३) सरकार ने प्रकालियों से हिंसा प्रकट या गुज्जारा के दुस्वयोग के सिलसिले में कोई लिखित आस्थापन नहीं लिया।

(४) नये समझोते के तहत दिल्ली दाने की जाँच की दायरा बनाकर कानपुर और बोकारो करा दिया गया है लेकिन इसका दायरा पञ्जाब में हुई हिंसा तक नहीं बढाया गया।

(५) विपक्षीय वार्ता ३ जनवरी १६३३ में पानी विवाद पर लम्बी बातचीत हुई थी इसमें प्रकालियों ने कहा था कि निर्णय समस्या हरियाणा के साथ ही नहीं राजस्थान के साथ भी है। उस समय मर-कार और मभी विपक्षी पार्टियों का कहना था कि १६५५ के समझोते के तहत व्याप्त और सतलज से राजस्थान को पानी मिलता है फिर से लागू नहीं किया जाए, लेकिन नए समझोते ने इस मुद्दे को फिर उभार दिया है।

इस प्रकार इस समझोते की धजिया उधेड़ देने की हर तरफ से कोशिश हो रही है जबकि आम जनता शांति हो जाने की सभावना से हो प्रसन्न है। प्रकालियों बाबल और गुज बरखा सिंह टोहरा ने भागानी राखनीति निर्धारित करने के लिए आपस में बातचीत कर बकीलो और बुद्धिजीवियों की एक बैठक बुलाई है। बाबा जोगेन्द्र सिंह जो समुक्त प्रकानी दल की तदर्थ समिति के समर्थक हैं ने कहा है— जब तक मेरी पार्टी से सरकार बातचीत नहीं करेगी तब तक पञ्जाब में शांति नहीं होगी। वे कहते हैं मल लोभोबाल धन दल के प्रयत्न नहीं हैं जैन से छूटने के बाद उन्होंने दल से इस्तीफा दे दिया था। इसलिए धन ने मोर्चे के रिक्टेडर नहीं हैं और न ही दल की तदर्थ समिति के सदस्य। उन्होंने कहा, अभी हमारा लक्ष्य दूर नहीं हुआ हम उस की प्राप्ति के लिए जो ठीक समझते करेंगे। आल इण्डिया सिल स्टूडेंट फेडरेशन के छात्र भी इस समझोते की नीव में पलीना लगाने के लिए कमर कसे हुए हैं।

इन समस्त परिस्थितियों को मद्दे नजर रखते हुए समस्या की प्रयकरता और गहरी जवो का एकासा होता है लेकिन ठंडे विभाग से विचार करे तो समझोता कभी भी बिना लिये दिये नहीं हुआ करता। समझोते से कभी भी कोई पूर्णतः समुद्ध नहीं हुआ करता इस तथ्य के अनुसार इस समझोते से समस्या के अग्रारो पर पानी जलने की प्रवृत्ति कोशिश हुई है। हालाँकि स्थिति यह है प्रकानी घडा नहना है हमें नया कुछ नहीं मिला और विपक्षी राजनीतिक दल का कहना है सरकार ने काफी हद तक मुक्त कर अधिक उदारना के साथ समझोता किया है। इधर पञ्जाब ने शीघ्र ही चुनाव को घोषणा किये जाने की सभावना है, जबकि शीघ्र चुनाव करायें जाने से पञ्जाब का माहौल बिगड़ जाने की भी सभावना है। समस्त स्थितियों की ध्यान में रखकर पञ्जाब के तपसे लोहे को शान्त करने का प्रयत्न किया जाना चाहिए। साथ ही पञ्जाब को शान्त करते करते दूसरे प्रदेशों में भी जाये यह भी सरकार को ध्यान रखना चाहिए। सद्भावना और सदास्पता से जो ममकोना एकमुक्त हैं ही कर बन्दे का साहसिक कदम श्री राजीव गांधी ने उठाया है, देशहित में सभी को उस पर फूल गिराने चाहिए न कि बूल।

—यासराज सुषण्डु

## धर्म-प्रचार के नाम पर राजनीतिक षड्यन्त्र

लेखक-रामगोपाल शलवाले

[गुलाब से घाबे]

सेवा और प्रेम का एक नमूना

मोवा का दार्मिक स्वायत्तत्व बड़ा बदनम स्वाभाविक था। वह स्वाभाविक उन दिनों की भी जेब जेबने के लिए बदनम था जो ईसाई बनने से इनकार करती थी। जेब में उनके साथ बलाकार किया जाता था और पापकवि नृपियों की सम्पुष्टि के साथ वे बर्ष बिरोधिनी बड़ी बाकर जीवित जसा ही जाती थी।

(बीजुन पारिल की पुस्तक पृष्ठ २१-२२)

सन् १९५० में मोवा के समस्त शाहनों और स्वयंकारों की जाला थी गई कि ईसाई धर्म को स्वीकार कर लें धर्मका मोवा छोड़ कर चले जायें। १९५७ ई० में हिन्दुओं के धार्मिक एज कज नर लिए मये और उपवनम विवाह और समुदाय संस्कार करने से गेक दिया गया। १९५७ की धातु के समन गैर ईसाईयों की ईसाई मत के धार्मिक स्वतंत्रों ने माय जेने के लिए विवत किया गया। हिन्दुओं के धर्मनर गिराये जाकर उनके स्थान पर गिरजाघर बनाने भये। १९८४ ई० में एक राजकीय शाखा के द्वारा मोवा के मोनों के लिए उनकी मातृ-भाषा का उपयोग निर्दिष्ट करवाया गया। उन्हें १० वर्ष की धर्मनर भी कि बिने पुर्तुगाली इत की भाषा सीक लें, धर्मका उनके विरुद्ध कानूनी कार्यवाही की जाती है। इस प्रकार उन पर बलात पुर्तुगाली भाषा सीकी गई। इन सब कानूनों का प्रभाव क्या था? यही कि या तो के ईसाई धर्म स्वीकार करें धर्मका राज्य की छोड़कर चले जायें। (जिनो की कमेटी की रिपोर्ट, धर्मका १५, पृष्ठ १५)

रोम का ईसाई (शाहगुल)

मातृकीय प्रतिष्ठा का नाटक रचने के लिये ईसाई मत किननी लुट देता है, इस बात को दाखल की। मोनीयों ने निन्द कर विचारता था, जो १० वीं शती के प्रचार के साथ से धारा था। इसका बन्धन इतनी के उन्ध धराने से हुआ था। यह बड़ा बुद्धिमत्त और समर्थ था कि बड़ा भारी प्रेमी था।

उन्ने देखा कि राज्यपाल के साथ पर धार्मिकतायों को छोटी श्रावियों के मोनों के साहसिक धर्म परिवर्तन की नीति प्राप्त है, जिसका प्रभाव काफी की और धर्म नैतिकता के लिये नये गये है। इससे स्पष्ट अनुभव हुआ कि अब तक उन्ध धर्म के हिन्दू ईसाई न बनये तब तक भारत की भूमि में ईसाइयत की जड़ें गहरी न बन सकीं।

अतः उसने मोनों की नीति का परिचय करके अपनी नीति प्रचारित। यह रोजन नैतिकता का पुर्तुगाल से हुआ। इसने धर्मनर प्रचार किया। माये पर धर्मनर लगाया, यन्ने में धर्मोपवीत भाषा, जिससे आज बटका हुआ था। यह प्रचार के श्राव्यों के मुद्रण से प्रभावित करने लगा। उसने कहा—मैं रोम का शाहगुल हूँ। धार्मिकता के एक प्राचीन हनु से सम्बन्ध है। उसने हमिस नैतिक और साहस पड़ी, साक्षात्कारी आग और शाहगुल के उन्ने से रहने लगा। उसने शाहगुल से बने ईसाइयों के लिये ईसाई धर्मप्रचारनामक एक प्राधना पुस्तक लिखी। इसकी ही मही उसने पुर्तुगाल मायक एक हनु रच बना। १८५० तक यह सब प्रचार था। मातृ भाषा का प्रचार। इसने ईसाई का जीवन तथा उनकी धारणा का बर्न था। अब प्रोटेस्टेन्ट पादरियों ने इस रहस्य का भासाओर किया तभी इस हनु की मातृभाषा कल हुई।

१९०३ से १९११ तक ४ वर्ष में ८७ शाहगुल की ईसाई बनाया। यह मोनों की बहुत बड़ी सफलता थी, जिससे उसकी प्रसिद्धि बढ़ी। उस शाहगुल ने ४ बर तक कार्य किया जो अपना नाम रोमन बताया करता था। अपने छुल-प्रभाव और धर्मनर ने १ लाख मोनों को ईसाई बनाया। सन् १९५६ ई० में ८८ लाख की धातु ने उसका वेलाहण हो गया।

इस प्रकार तलवार और हनु से विदेशी मिलनरी प्रारत से अपने धर्म का प्रचार करने में सफल हुए।

धर्मोरी राज्य में इन मोनों ने सेवा, धर्म प्राथि धर्मक प्रकार के हनुक्यों से अपनी सखा बनाने का प्रयत्न किया।

धर्मोरी सरकार मनी प्रकार जालती की कि अपने राज्य की जड़ मद्रुल नरन के लिए ईसाइयों की सखा बनानी चाहिये। यह सरकार कीय स कगो इन्ने धर्म करके हुबारों स्कूल, कासिब, गिरजाघर, हनुक्या, धनामाय, महिस हनु धार्मि सखाए देस के कोने-कोने में बोली गई। इन सब का एक ही उद्देश्य था—देस के माय पर धर्म परिवर्तन। पादरियों का धर्मनर धर्मनरों के म धर्मनर धर्मनर रखा जाता था। इसी-कही को प्रभाव पादरी के अधिकार लुटो कमिलनर के बाबर को देते हैं। इस प्रकार सन् १९२३ की राज्य-

पालिक के परभाव सेवा, मिठा और सरकारी मोनीयों के मायन से भारत की हिन्दु जनता को ईसा की जेथों में सम्मिलित किया जाता था।

भारत में ईसाइयों की संख्या

सन् १९६१ में केवल १०० हिन्दू ईसाई मने और सन् १९५१ तक ८१ लाख ५७ हजार १५ की ६५ लोग ईसाई बनाने का कुके थे।

यह सब भारत छोड़कर चले गये। उनके साथ-साथ विदेशी मिलनरी की

विस्तार मोवा करने के दुरीय की और जाने की तैयारी करने लगे। कई गिरजाघर बने गये। इस समय उनकी संख्या २०६७ थी। किन्तु हमारा राष्ट्रीय सरकार की धर्मनिरपेक्ष नीतिवाही होने लगी पादरियों ने भारत छोड़कर जाने का निश्चय बदल दिया और इतना ने तैयार किया किने। मिलनरी कीय मनी प्रकार जालने हैं कि हिन्दु का धर्म परिवर्तन होने के प्रभावत पुर्तुगाल तथा पादरीयता बलव जाली है।

इसी धर्म परिवर्तन की नीति का संलग्न परिणाम पाकिस्तान था। मद्रास विन कासिब के साथ कुछ हुबार मुसलमान भारत में गये थे। जन्में से कम मने लुट का माय निकर बने मने और कुछ नहीं बन मने। किन्तु इन इतनी इतनी तथा मोनीयों द्वारा प्रचार एक किन्तुओं में कीने हुए धर्मनिरपेक्ष धार्मिक धर्मनरों में मुसलमानों की संख्या कमया ८ करोड़ हो गई और गैर गैर के मुसलमान राष्ट्रीय में सब से बड़ा और बन से परिणामानी मुसलमान राष्ट्र पाकिस्तान बलवर बहा हो गया जो सब के लिए भारत के लिए भारी लक्ष्य बना ही रहेगा।

पाकिस्तान बनने का प्रभाव भारत हिन्दु का धर्म परिवर्तन करने हुआ-समान बन जाला ही था। विदेशी मिलनरी तथा भारत विदेशी विदेशी श्रावियों-विश्व इस बात को अपनी प्रकार जालने है और भारी परभाव की मायन सम्बन्धित का साथ उठाकर जहाँ पाकिस्तानी लुटेरे विन बहादेरी मोनीयों अंग्रेजों मोनों में पुनःकर लुकी लुट मचाकर धर्मनिरपेक्ष नीति गये हैं। वेहा संभावित मिलने पर हुबार प्रभावमयी एक रैत मोल भारी कर लेते हैं, अपना पाकिस्तान सरकार की मोवासा कायसी प्रोटेस्टेन्ट निकर करने पादरीयता का प्रभाव करने के निश्चलन हो जाले हैं।

इन विरल नीति को विदेशी मिलनरी धर्मो प्रकार जालने हैं और कहां मन् १९४७ में धर्मो की राज्याधिकारियों के साथ साथ भारत छोड़कर जाने की तैयारी कर रहे थे, वहां बाध अपने तैयार प्रकार कई मातृभाषा जीनों को ईसाई स्थान बनाने की तैयारी कर रहे हैं।

अगर की पकिश्यों में बसता ज्ञा मुका है कि वेस का बटवारा होने के समय सन् १९४७ में विदेशी पादरियों की संख्या २०६७ थी, किन्तु नेहरू राज्य के इन १७ वर्षों में धर्म के माय पर राज्यपाला हनुक्या माने विदेशी प्रचारकों की मका सरकारों धर्मनरों के अनुसार १९६६ में ४८७०० गई। छोटे बड़े ईसाई संलग्नानों ने प्रकार का काम करने लाने पादरियों की संख्या यह निश्च हो गये तो ८ हजार से अधिक मोरी धर्मनर माने मिलनरी भारत के कोने-कोने में कीं हुन हैं।

इन मोरे प्रचारकों को ईसाई संलग्नानों को पकिश के २० विदेशों से भारी तलवार भारत की तैयार जनता को ईसाई बनाने के लिए भेजी जाती है।

रिचर्ड बैंक याह हनुक्या के द्वारा कमवरी सन् १९५० से नुब मन् १९५४ तक २८ करोड़ २० लाख ३६ हजार सखा विदेशी मिलनरीयों को बाहर ले प्रचार।

किम देश से किनना सखा आया

अमेरिका	२०,६८,६३,०००
कनाडा	१,७७,३५,०००
जर्मनी	१,५७,००,०००
डेनमार्क	२३,६१,०००
फ्रांस	७,६१,०००
जर्मनी	१,१६,०००
नार्वे	२७,६७,०००
स्वीडन	४,५४,०००
स्विटजरलैण्ड	१,७७,०००
इंग्लैंड	४,६८,८०,०००
अन्य देशों से	१,७७,०००
मिश्रित	३९,९६,०००
मूल मोल	२६,२७,१८,०००





व्यासपीठ—

उपनिषत् कथा माला-१२

## पवित्रता

लेखक—स्वामी सर्वदानन्द सरस्वती

वो चीजो के साथ मे दो चीजें अभी हूँ है, जब मुम उन चीजो को हृदय मे लोने हो स्वयमेव भी घबराती दो चीजें प्रान्त हो। जयिंकी सफाई और सादगी। जिस समय यह दोनो तुम्हारे कब्जे मे हूयि उस समय इसका पारितोषिक क्या मित्रता? तन्मुखी और सादगी, तो उनके साथ धारने साथ था प्रायेनी। सफाई क्या है? एक तो सफाई है स्वयं की बात बपडा कीमती न भी हो पर साथ होना चाहिये। च= वह दो धारने गज का हो म्मी न जा। यहा तो सफाई चाहिये। समे मे कुछ दो दल हो चाहिये। पर हाल पच्छी और रोटी पच्छी हो, सिमो हो। प्राचीन नमस्कार माताएं इस कायदे से प्रोजन न बन गयी थी। उनको पना था जि एरुन और चीन मे किस चीज का उपयोग करना चाहिये। उपेउ-प्रायद में किन चीज का और प्रायद मे किस चीज का? यह भी टूट गयी थी। वह सब प्रकन की नद धारमो से यहू की गयी पछीनी के धाम माना। बनाउ? यह वह स्वयमेव हो जानती थी। प्रकृति मे दुर्गम चीं यचना। तनी पच्छी की है कि मनुष्य बीम र नही हो सकता। जिस मोक्ष मे धाम होना है, उस वां जाने मे धार लो जो त त है। धाम के साथ यदि हम पांच भागन ला लो तो धाम का योग दूर हो गिया। 'तलमुन न कोउ मुखा हो' जयि है। 'स-सो के सच बेर हूँ है' जो पोटि पृथ्वी की दूर करते हैं। भावनी को तन गनी को आनना चाहिये। इस प्रकार यदि वरं वरं व्यक्तार मे लार्ड जाये तो रोज नम प्रकाश गये मे १० भागें बम हो जाये। सफाई क्या है? साफ रहने को सफाई कहते हैं।

मे एक बार पत्रा मे भाइहोन सप्टी रया उस जगह सफाई नहीं थी। वहा स हासो मे राठी लान है, साथ मे साथ भी होता है। 'हा कोई एरा पत्र-र-जीवाना नहीं जहा सास न हो, साथ के पाए न उवान' य वहा एक नोवान सफाई में हूँ। साथ था रहा था उसके लक्ष्मी के एक धारमी जुनी पत्र बन-तन मान पत्रा 'न पीर जने मेने हए पात्रो मे सन' य मे 'मम नोब्रान मे पत्रा धार' मा 'जु बानी पत्रा है' कहते पत्रो मिल को मे जेने जने स' है। तन मे एक दूसरा धारमी 'म नोब्रान मे नोब्रान-

बमडा है, इसको सिक सवता है पर जो तु सा रहा है वह तो भीतर का है इसमे उनमे बहावुनी हो बनी, फिर तो बहो बल वय, नो बात क्या है? बुनिया का निवम है कि लामे मे सफाई होये। य मे सफाई होनी चाहिये। यह तो हुई सफाई बाहर की। पर वम भी की सफाई होनी चाहिये। दिस के दोनो को साफ करो। फिर पत्रासा का सासाकार हो जायेगा। दिस चिमका मनीन है, उसका क्या निष्काम। दिस की सफाई होना चाहिये। तेन-तेन मे सफाई होनी चाहिये। यहू भी मे सफाई और दूसरी हावनी के साथ मत-ज= को ह-सास तन्मिय का साथ होना है वह गुणवाही होना है यह निवम है। दिस भी साहा होना चाहिये, कपडा भी साहा होना चाहिये, जैसे जैसे नामक पर का निवमे है वह पद लिया जाता है। पर यदि दिस नामक पर फिर सिद्ध दिया जान तो पहले का सिद्धा दुवा भा मया और दूसरा भी मया। तो जिसको सफाई मे सादगी होनी है। वह गुणवाही होता है। हम गुणवाही है। यह, दूसरी दिस मे सिस तरह के कपड बनते हैं जैसे हम भी बनने लगे। ये हैट सगाते मे हमने भी हैट लगा लिया। वे डाई सगाते मे, हमने भी लगा भी। सब कुछ किबा, पर क्या उनके गुण भी हमारे मे धामे?

जैम मे टाइन के पावक हैं जैसे हम नही हैं। जैसे उनको देस का प्रेम है बिसा हम मे नही। जिस प्रकार मे कपडे धारि से साफ रहते हैं क्या हम जैसे है? नही। य नही हम गुणो को प्रहण करते। हमारे मे सादगी नही, धार सादगी होनी तो मे गुण था जाये है। गुण प्रहण करना तो बहुत पच्छी बात है। माई। कोई परने-स्वर मे उनमे गुण नही सास दिये हैं। उनमे सित ३ जे। हम है जैसे हो उनको वनावा है। परन्तु देखो धाम हम कैसे हैं

नो गुण करेवा नही हम करते। जिसर मे उनमे गुण उभर हम चलेंगे। यह मा हम भी पडेंगे। यह साधनेम, हम सबेने।

यह बात है। यह बाबित्सिह भी मे सिमो को कच्छा (चाँचर), कडा, जेहा को कच्छा मे पात्र की चीं दी थी, पर सिमो मे मही पत्राया। जेहिन जब यही किबर गुण व न पहनते है तो ह्य

रिका मे लवाई हुई, यह पत्राव नहने मे। इससे उन्ने मे बही मुक्तिन होती थी। जब सिपाही सफाई मे फिर जाते तो पत्राव के कारल उनसे बली नही उठा जाता था। एक बार कछान मे एक सिपाही के फिर जाने पर उसने पत्राव को बुन्दे के नीचे नीचे के बाट डाला। तब वह उठा। सब से नीचे तक का तो हो गया मौजा और ऊपर का हो गया नेकर। जब इसको सब पहनने लग पडे। हम साथी तन्मिय मे नही हैं। धारमिक गुण को हमारे हैं, के कुछ जैसे हैं। इनको साफ करने बकी सादगी है सब जैसे यह गुण है।

'साफ कर दिस को नु धारने विकार हो जायेगा का।'

समयमान धारमी बनने के भी सचने उपदेश को बहुत कर लेता है। हमे गुण-प्राप्ती होना चाहिये। जिस समय सफाई और सादगी हमारे पास होनी, उस समय हम मे तन्मुखी और सादगी धारने साथ धा जायेगी। यही धाम का सफाई है। तम सचे मत दूँ सफाई से मत रहूँ तो तुम्हारी तन्मुखी धारम बिना जायेगी। सादगी नही धाती है। इस भावने मेने जाई

(पृष्ठ ३ से धामे)

कोई मनुष्य मरे नही तो उसके दुःख भी नही दूर हो सकते।

यमराज मेने प्रसन्न हुए। उन्होंने नर्षिकेता से कहा— तुम मुझ से तीन घर मागो। 'नर्षिकेता ने कहा मेने पिता केरे से प्रसन्न हो जायें। यमराज ने कहा, ठीक है ऐसा हो होता।

फिर उसने कहा कृपा करके मुझे स्वर्ग प्राप्ति के मार्ग बता दीजिए। यह बिधा भी उसका दे दी। इसके बाद नर्षिकेता ने कहा मुझे धार्या के रथक के बदे मे सहाय्यते घरने के बाद मनुष्य का क्या होना है?

यह नु-कर यमराज को बडा धारम्य हुए। उन्होंने कोई दूसरा बरदान मागन के बात की। नर्षिकेता न कहा, सब कुछ मष्ट हो जाये गिया। धार मुझे कृपा करके बही बताये। यमराज ने उसे प्रशो-वन दिये। रथ, हाथी घोड़े, बाग-बगीचे, महल, बाग, सारी, रानी, राज्य यही वर

जाग का मकाजा है कि जिसके पास सादगी है उसको धार्यानी तेने में बडा कोर नही बनना पडेगा। नौकी हो हिम्यत से था सादगी।

प्राण के पीछे साकस, बस है। बस नहीं फिसल का है। एक है विस्मानी ताकत। जिस इच्छान की विस्मानी ताकत ठीक है, वह इच्छान बीमारियों से बचता है। जिसकी विस्मानी ताकत ठीक नही है वह बार बार बीमार होता।

दूसरी है धारमिक धार्मिक धार लीकरी है सामाजिक साकस। नृपति दयानन्द की मे कहा था कि धारमसाधन का मुख्य उद्देश्य साकस के प्राप्तिमात्र का उपकार करना है। ये धारो। इस बात को जान ली कि साकस का उपकार करना तुम्हारा उद्देश्य है। किताब भोग धारों के कथा पर रख दिया है। इससे जय कीर्ति उद्देश्य, इच्छान नही बना सकता। कीर्ति धारने मुक्त की प्रसाई करेता, कीर्ति मनुष्य धारि का। पर साकस का उपकार करना धारों का मुख्य उद्देश्य साधना। इस उद्देश्य मे हम जान-बाध तब होये जब पहले हम धारमी धारी-रिक्त उन्मति कर लें। फिर धारमिक उन्मति करो। पीछे से सामाजिक उन्मति करना। कीर्ति मुक्त व समस्त साकस का उपकार करने मे समर्थ होना। यही मुख्य धार साकस का धारमी विस्मानी ताकत को पैदा करेगा। जिसकी विस्मानी ताकत ठीक होगी, उसकी धारमिक बलवर्धनी ठीक होगी। पीछे से धारमिय बल और विस्मानी ताकत मिलकर उससे जो समाज बनेगा, वही समाज नर काम करेगा। जो धार से ही सबके हैं वे क्या समाज का परवर करेगे, इसलि हम तब की हमें सग-ठित करना चाहिये। □

नर्षिकेता ने यह बात सुकर कहा— 'यमराज! सारा का बस वसुधे माता को प्रत हो जाये न ली है। मने इस भीषण को जरूरत नही। मैं तो नही जानता काहना हू कि मरने के बाद मनुष्य का क्या होता है।' यमराज यह सुकर बडे प्रसन्न हुए। उन्होंने कह मगर मे मनुष्य के सामने दो गलत है, एक हितकर दूसरा सुखकर। एक धारमिक कर्मसाधन का दूसरा जो विमान का। मनुष्य साकस की बलवर्धनी से प्रेम करते हैं और धार्या की उन्मति को रो पधान मने वेते हैं, वे सुखी रहते हैं।

नर्षिकेता को यह सुकर बडी प्रस-लना हुई। उसने साधारण सुको के धार्य मे धार्या की उन्मति की हो पच्छा सभसा। यमराज ने उसे धार्या के सत्य का ज्ञान कराया वह उसे पाकर बडा सुखी हो गया। इस भी ऐत बिनाहू नही धार साकस से प्रपने को धारम धारो।



आर्य प्रतिनिधि सभा, दक्षिण अफ्रीका  
द्वारा विश्व आर्य सम्मेलन

प्राप्त की यह जानकारी प्रसन्नता होगी कि उसी रकम का तरीका १४, १५, १६, १८५ की धन हुरएक महो-समा धीर विषय प्रायः सम्पन्न का प्रायोजन कर रही है। जिसके लिए सार्वजनिक प्रायः प्रतिनिधि समा नहीं किसी की अनुपमति मिल चुकी है। हम प्राणा करन है कि भारत से धीर धन देशों से प्रायः से प्रतिक्रिया यह प्रश्न कर इस सदन बनाये। इसके लिए निम्नलिखित संवार्थों हस्तुक बायी धर्मो से कर ले।

- [illegible]

बी एस० राममरोसे,  
प्रधान—आयं प्रतिनिधि सभा सादर अफ्रीका  
३४ कास स्टीट इरवन (माउण्ट एफ्रीका)

प० नरदेव बेबासकार  
सभापति, बेब निकेतन  
समाज, रायचूर

## वन हमारे अस्तित्व के लिए आवश्यक

प्रार्थनसे के ७ जुलाई, १९८५ के प्रक में "दोसम पर वर्तों का प्रकीर्ण" शीर्षक से लिखित सम्पादकीय के अन्तर्गत विचार महत्त्वपूर्ण तथः पूर्ण एव प्रेरणादायक रहे।

[illegible]

रही थी। उपरोक्त वन हमार  
 प्रभुओं, मुनिगों योगिगों एक विष्णुकी  
 के लिए बावत, तथा तथा जगत्  
 प्राप्ति के मुख्य स्थल रही। कोन भी  
 ब्रह्मांड के विष्णु की ब्रह्मराजा की  
 वेनो वा प्रकाश इन्ही बनो मे हुआ  
 समझना- राजा मे घरेने होईह वन रहने  
 को मे वितायेने मे । परन्तु मे नाराज  
 लगान के १२ बड़ी इन्ही वने मे विताये  
 नाराज कण्ठ की सुख वने एक बुद्ध  
 के नीचे विष्णु की वने एक ब्रह्मिणी  
 के तीर मे हुई की । राजमहाराज विष्णु  
 की वनेने मे एक बुद्ध के नीचे ब्राह्म  
 कर भयमान बुद्ध वने मे । हमारो देख मे  
 एतद्ब्रह्मविष्णु ब्रह्माकर ब्राह्मण ब्रह्म  
 कर वनो मे मे नीलजो विजितो की बर-  
 पतरा की । वही बारहवा कवि बहो नारा-  
 जगत्, ब्रह्म समजाना तथा ब्रह्म का  
 विष्णुगत् बुद्ध का समझा बावत रहा ।  
 इसी के वने मे कोनो, मुनि तथा राज-  
 पुत्र भावित बनी ब्रह्मवत् व राजे नाराज-  
 गत् को बुद्ध कायं ब्रह्मकर वन-कल्याण  
 की कष्ट मे रहने विष्णु के वने मे  
 उपरोक्त ब्रह्मण इस भाव के स्थल मे  
 है कि ब्रह्मण के उर्वर वने प्रदो को  
 बाधवन्त के उर्वर वन हमारो देख मे वनो  
 एक कल्याण का विष्णु ब्रह्मण रहा ।  
 धर्मविष्णु बुद्ध के वने को ब्रह्मराजा  
 रही । विष्णु ब्रह्मण के वन मे ब्रह्मण  
 ब्रह्माको के विष्णु, वैष्णवा, दत्त तथा  
 ब्रह्माको के विष्णु बाधवन्त कल्याण मे  
 ब्रह्मण के विष्णु बुद्ध बाधा मे कल्याण के

उपरोक्त स्थिति के विपरीत बनो की उपेक्षा वि.ब. की अन्य प्राचीन सभ्यताओं के लिए पतक सिद्ध हुआ। जिस प्रकार कि जहाँ बनो के बसाने व सरक्षण की क्षार भूमिगत ध्यान नहीं दिया गया मिस्र मेमोपोलिस तथा दज्जाम्फारा की अन्य सभ्यताएँ विनष्ट होकर इतिहास की सामग्री बन गई।

[illegible]

प्रसंगगत का नियम है कि वैज्ञानिकों ने वन सबको रिपोर्टों तथा सुन्कर मारने बहुतोपना ऐसे महानुभावों द्वारा बनाये गये थिपको प्राप्तीनिक के कमलरकप सरकार का ध्यान इस धोर नियम क्ये से धाक-पित्त दाहता यह सु विद्या से थिये छुट्टि हुई। प्रतिबन्ध बनाये जाने वन-सहीसाय, वृक्षों के कटने पर प्रतिषेध तथा वनप्रविषय पर थिये धोर इसके प्रभाव है। धायवयकता है कि उन स्वयम्भ मे (१) मुकामियों की धोर धयन विद्या जाय-

(१७) मनुष्य के अन्तर्गत चतुर्भुज नामक  
 आध्यात्मिक शक्तों के बचाने की प्रवृत्ति  
 को रक्षावा दित्वा ज्ञाते । यह वाक्य केवल  
 सरकारी तन्त्र पर न कर आध्यात्मिक  
 बनता जो इसमें मान लेने के लिए प्रोत्सा-  
 हित किया जाये । (१) एक युवक का-  
 नाले के लिए उन्नी पीन के सवे वृत्त  
 बनाने का कामानुसंगत उन्का पालन  
 करीरता के द्वारा बताया जाये । योको को  
 बनाने वाले ही बुद्धी के मानिक एजीकुल  
 किते जाये । उन्की रक्षा का उत्तरदायित्व  
 की उन्की एवम् । (२) सरकार द्वारा  
 सबको रक्षा केले तादर्थी के किनारे सवि-  
 कृत वृत्त सवगाने जाये तदा उन्की  
 रक्षा के विषये उत्तरदायित्व जाये । (५)  
 दूसरे निमित्त सवकी के प्रयास को हीरिङ  
 कृत के लिए सरकारी प्रशासिणीय और  
 रक्षा के विकास को और विषये ध्यान  
 दे । (३) दूरवृत्त तथा आकाशवाणी  
 द्वारा आश्रितोप तथा कोके के दूरवृत्त  
 के लवके के विविध कार्यक्रम एवं वातर्त  
 प्रशासिणीय कार्य ।

सरकार को चाहिए कि वह उपरोक्त सुझावों की धोर ध्यान दें।

**सकलपत्र मध्य विभाग विमानतळ**

(पृष्ठ ४ से आये)

इस प्रकार बनसरी स्तूप १९३० से कुछ सन् १९५५ तक २६ करोड़, २७ लाख रुपया भारत में विदेशों में आया। इस क्षराधि से सर्वपरिवर्तन वेग के प्रत्येक भागों में बड़े वेग से होने लगा। आर्यवर्णनक कलकत्ता की लेखकर जब विदेशी इलाहाबाद चला आया तबों में २६ करोड़ २७ लाख की बड़ा क्षराधार पनो से सरकारी व्ययों में वे सारा खर्च कुकी के धराधार मत २५। वर्षों में ३५ करोड़ हो गई। १९७५-७६ में ६५ करोड़ ५० लाख ३३ हजार १५ व १० विदेशों के मिशनरियों को प्रत्यक्ष हूय।

घरेबी राज्य के १९० वर्षों में हजारी तीज बतिस से ईसावस्य नहीं बड़ी की जितनी नेहरू राज्य की वर्षपरिवर्तला की नीति के कारण स्वतन्त्रता के हम १७ वर्षों में बड़ी है।

पुराने कासेली नेता पञ्जाब के पू० पू० राज्यवास माननीय बी बाबुलिन महोदय ने २ कारखरी १९५६ को अगवरी में प्रेस वायटेरियन वर्ष की स्वर्ण जयन्ती के धवसर पर विदेशी वायटरी को प्रथम शान देते हुए कहा था कि ईसाई मिशनरियों ने जितना काम स्वतन्त्रता के हम १० वर्षों में किया है उसका काम पराधीन भारत के ५० वर्षों में भी नहीं किया था।

### प्रविष्ट कठमान तथा औद्योगिक

प्रविष्ट कठमान के नामा वसिष्ठ ने बाह्यार विरोधी योजना की बाबू ने खुलकर हिन्दुत्व का सर्वनाम कर रहे हैं। मयवान राम के चित्र जताये जा रहे हैं। इसके प्रतिस्तर उत्तर भारत के हरिजनको को सलाह दी जा रही है कि वे सिन्धु बंध कोटक बौद्ध बन जायें। धर्मी धर्मी कल्पन में राज्य की ऐतिहासिक पार्टी की लामा में जायज बने हुए प्रविष्ट नेता की ५० की० दासत्वानी नायकर ने कहा कि आपन को बाह्यार देवनाथो में पुष्करा प्रकाश करना होगा तबना प्राय इस प्रिन्स परसे ऊपर उठकर देवी या प्रान्त न कर सगेंगे। इस पिछड़ी जातियों को हिन्दु मजदूर कोटकर बौद्ध बन घनना लेना चाहिए।

स्वतन्त्रता मिलने के परमात्त सरकारी लजाने में करोड़ रुपये खर्च करके बौद्ध बंध का प्रचार किया जा रहा है। इन १० वर्षों में सरकारी तथा गैर सरकारी सत्ताओं के बिना साहित्य प्रकाशन किया गया, उनमें बाह्य हिन्दू मान्यताओं पर भारी ओट की गई है। 'मयवान बुद्ध' नामक पुस्तक में जो साहित्य प्रकाशनी द्वारा प्रकाशित की गई है, जगत की प्रसिद्ध नामवां की बहलकर माताहार का प्रचार करने के निमित्त लिखा गया है। मयवान बुद्ध, महावीर तन्त्री मास लाने में तथा प्राचीनकाल के बाह्यार योगवास यशो से। इस प्रकार का साहित्य बहुत बड़ी क्षमतामि खय करके प्रकाशित किया जा रहा है। 'अधुनिक' ए० ए० मुन्ना द्वारा प्रिन्स वैदिक प्र० तथा प्रथम पुस्तकें इसी मनोवृत्ति का एक मनुष्य है।

### कम्युनिस्ट पार्टी

हिन्दू जाति की सधमा की भारी लक्षि पहुंचाने वाली उपपुंजन सधमाओं का बोधा बोधा उल्लेख हम ने ऊपर की पंक्तियों में करने का यत्न किया है। किन्तु बोटी और धर्म के नाम पर एक और बहुत बड़ी जोक पुराने भारतीय धार्मिक हिन्दू विचारों में लागी हुई है और बड़ी तीव्र बतिस के नयकुचको में परिवर्तन करके आई मासई तथा लेनिन और स्टालिन के कसी विचारों का प्रचार कर भारतीय परम्परा को कोलना कर रही है। उसका नाम है—कम्युनिस्ट पार्टी। इस के कारनामों में हस्ताने करवाना, मित साधिक और मजदूरों में कनसे वैन करवाना 'विश्वीय के मजदूरों एण्ड ओ जादों' का नामा लयगधर काली युनिवन, ठेका युनिवन, बनसीवी खन नाई युनिवन, बोटी युनिवन धार्मिक घनेक प्रकार की युनिवर्स बनाकर और बतलने काय तथा लगी नौकरियों को हटवाकर हर भासने में हस्तान करवाकर स्वयं बोषरी बन जाना इस पार्टी के नेताओं का प्रथान काय है। जो सोवियत पार्टी के कववर में खय जाले हैं उनका धर्म कर्म ईश्वरिष्ठ, सम्यता धार्मिक सब काटकर ही जाता है। कम्युनिस्ट पार्टी के बहस्य भारतीय सधमा, सधकित लवारी रसि रिनाओं के पूर्युओं से बिबरल नहीं रखते। होमी, दीपावली बराहुरा रामनवमी कुलम अमावस्यी धार्मिक त्यौहार भगना ठीक नहीं समझते। हा, यदि कोई त्यौहार भगना हो तो मैं बिबर लयना देनिन, स्टालिन धार्मिक कसी नेगाओं का खय 'मयम' बड़ी बुधभाव स भगना बाता है। बहुत निकान जाले हैं, जमने किने जाय है। इस पार्टी का प्रहृष है—अन जाना भारत का और भीत मागे रुक के। ईसाई मिशनरियों की परतय यह पार्टी बड़ी हिन्दू विचारों तथा परम्परा को नष्ट अष्ट न करने बड़ी साम्यवाद के प्रचार में पूरी क्षमि लया रही है। कोई नहीं जानता इस पार्टी के नेता राजकीयक क्षमि हथिया नेने पर नया रत बनयें।

हिन्दू जाति के लिए यह पार्टी भी एक भारी खतरा है।

ऊपर की पंक्तियों में आने वाली अलकर विपत्तियों की घोर सूचकप से कुछ संकेत किए गए हैं।

धार्मिक धर्म तथा भारतीयता-विरोधी धमरीक इस्वीय धार्मिक यूरोपीय वेपों से बर्णनित ईसाई मिशनरी धार्मिकधार्मिक योजना, धार्मिकता के सहायता प्राय सुनिश्चम तबनीय तथा बनी हजारी पर नाचने वाली कम्युनिस्ट पार्टी का धार्मिक समतोलना इन सब का हल क्या है? धार्मिक जाति और भारतीयता कसे सुरक्षित हो सकती है?

### भयानक सर्वनाश की समस्या का समाधान

आज से ८० वर्ष पूर्व महर्षि दय नन्द सरस्वती ने जब अपना प्रचार कार्य धार्मिक किया और धार्मिकता की स्थापना कर दी तो जब कुछ लोगों ने महर्षि दयानन्द से प्रश्न किया कि क्या आप भी एक नये मत की स्थापना कर रहे हैं? महर्षि ने जब धार्मिकता के उत्तर दिया कि—बहुता से लेकर वैदिकी मुनि पर्वत जिह्न पुनीत वैदिक धर्म का हम २ पूर्व का पानने कले माये हैं उसी के सधार्मिक स्वकप के विरुध्द और रक्षण के लिए धार्मिकता की स्थापना की जा रही है। कोई नया मत प्रचलित करने का मेरा उन्मत्त नहीं है वैदिक सधर्मिन्नी धर्मि मुनियों की परम्परा सुरक्षित रहे यही धार्मिक उन्मा है।

महर्षि की उपर्युक्त धाराणा की पूर्ण करने के निमित्त घरेबी राज्य की लयल्लया से बहने वाले विदेशी 'मिशनरियों' ने बड़ी कीरता के साथ धार्मिकता में टक्कर दी। ईसाई मिशन का म्यु नुकासन करने के लिए करोड़ों रुपय खर्च करके समूचे देश में हजारों कुलम कागिज गण्डन धन बाजार बनिता धार्मिक घोषणासय कोल दिव। सुते मैदान में 'गन्तव्य' करके धार्मिक विद्वानों ने पुरानियों के सुकके टुट्टा टिप। धार्मिकता को विनाश। कि घरेबी के घने जाते के बाद ईसाई पादरियों की गन्तिविधिया स्वयं गण्डन हो जायेंगी। किन्तु नागत सरकार की नैय्य पर नीति और घरेबीक इन्नेय धार्मिक को मुदनीलिया ख मानने पाई जब 'गगरी गोरे पागरी' को सुन पाये तो सहायता के देना ही पित्रु जातियों को प्रतापित ने ईसाई बनाने लगे। नागत प्रवेश ने पादरियों की गन्तिविधि से 'गन्तव्य' प्रकार पर्वतियने ने अहा मकान प प्रति पवननकारी लखीरू किया जा रहा है। इसके साथ ही हिन्दुओं की मरणा पदकार रिस करार विदेशी तन्त्रों को प्रोत्साहन मिल रहा है। यह हम उर बता चुके हैं। एसी स्थिति में हिन्दू नाश का परभावक है कि उन्म पर्वतियन का ये सधार्मिकता को योवहाल है। प्रत्येक प्राय और कल्पे में धार्मिकताम स्थापित हो। समाजकी पुष्टिष बोटी की स्थापना के पश्चात कोई विदेशी मिशनरी भारतीय परम्परा की बोटी नहीं कर सगना। इनमि धार्मिकताओं को स्थाना मर्वन होनी चाहिए।

प्र० क हिन्दू धर्पनी धाय का बम से कय ठाया स पवित्र कार्य के निग धार्मिकताम को गम दे जिसने विदेशीयन रा मुकाविल किया जा सके।

हाब नाय म लकून और हिन्दू की रागमाकाओं की स्थापना की बाय जिनमें धार्मिक कलाओं में जालको की धार्मिक विज्ञा का प्रभाव हो।

देश में ३० लाख नामधारी लागू हैं यदि जमने से कुछ हजार की इस पवित्र काम में लयने का प्रयत्न करे तो गन्तव्य धर्म का धनिवासी अलकर धाराणित म कयथा का सगना है।

सक क विनिन प्राप्ती। एन एवं जिसे विद्याविशो को दुनिम हैकर प्रथम धर्पने में के जावों पर विमुक्त करने की योजना पर प्रविष्टम रा धार्मिक होना सधार्मिक है।

देश की समस्त धार्मिकतामिजन सनातनधर्मि जैन एवं हिन्दू सधमाओं की ओर से सामुहिक सन्मोलन प्राथम्य कर देना चाहिए, जिसके द्वारा सरकार से बसपुर्वक भाग की जाज कि जिन्को पादरियों की मरणापदीय प्रवृत्तियों को रोकने के लिए उन्म प्राथम सधिविषय निक लवर देश और धर्म क प्रति दोन वाले भयानक पदरन्को से गरीब प्रजा की रक्षा करे।

पिछड़ी जातियों के निवास स्थानों पर जाकर उनमें पुगना धार्मिक प्रवृत्तियों को जाउल कर प वरिष्ठों की गन्तिविधियों से उन्ने मतक कला और जमने धार्मिक विचारों का प्रचार करना सधर्म्य धार्मिकताम है।

हम जानते हैं कि इस सधारा कार्य के सधार्मिक के भारत सरकार धमनी बन्नी नीति के कारण साधर कुछ न कर सने किन्तु महर्षि दयानन्द का धार्मिकताम धार्मिकों के कल-रख को लेकर इस महान् कार्य में उठ जाने के लिए सम्यक है। इस कार्य की सधमना के लिए देश के वेद, शास्त्राकर, व्यपाठी और साधारण बनता बनी की विवरक धार्मिकताम की सहायता करनी चाहिए। धार्मिकी सधमा का इस ओर ध्यान नहीं।

## समाचार-सन्देश

### दिल्ली आर्यसमाजों के साप्ताहिक संसर्ग कार्यक्रम ४ अगस्त १९५४ रविवार

प्रतापनगर—१० बाधाराय प्रेमी।  
धर्मोत्थान—१० देवराज वैदिक विज्ञान-  
नरी। धर्मपुरा—१० नवमीर शास्त्री।  
धान्य विहार—१० अमरप्रताप भवन  
मण्डली। विवेक विहार—स्वामी जग-  
दीश्वरदास सरस्वती परिवारिक। किरण  
घर—१० भोमप्रकाश शास्त्री। कासका  
घर—१० नवनाथ दास। किरण के केंद्र—  
इन्द्राचारी मनुजेश शास्त्री। बापीनगर—  
१० बाधाराय भवनीजी। गीता कालीनी  
धर्मवीर रघुबीर दासा। गोविन्दपुरी—१०  
गुरुवीराम दास। गोविन्द भवन—१०  
भवनराम काल धर्मोत्थान। जनकपुरी  
की—१—महात्मा बुनी शर्मा। जनकपुरी  
की ३—० सुखदास दुडानी। टीनोर  
वाहन—१० बुनीनाथ दास। तिमार-  
पुर—१० सोमदेव शास्त्री। तिलहरनगर—  
महात्मा रामविश्वरूप शर्मा। देवरनगर—  
१० रघुनाथ देवाचार्य। न्यू मोडिनगर—  
१० नवप्रकाश शास्त्री। नारायण विहार—

३० रामचारी। भीमपुरा—१० सत्यदेव  
लालक रैदिय कलाकार। पचावी बाग—  
१० उपदेशक धर्मोत्थान। पचावी बाग  
एम्प्लेन्स—डा० रघुनन्दन। नहर बारा-  
पुर—मा० मोहनदास गांधी। बहुरीनी-  
लाली ज्ञानानन्द सरस्वती। महावीरनगर—  
१० धर्मोत्थान भवनाथ। मोहनवस्ता—  
महात्मा वैष्णवसिंह। मोतीबाग—इन्द्रा-  
चारा नरेश शास्त्री। राधाप्रताप नगर—  
१० नवनाथ दास। रघुनरपुरा—१०  
देवदास धर्म। रघुनाथनगर—मोहनप्रता-  
पशास्त्री। छाबनगर—१० नवमीर शास्त्री  
विद्यावाचस्पति। लक्ष्मीपाटी—भीमछा-  
त्राप्रकाश शास्त्री। विनयनगर—धर्मार्थ  
स्वामिदास जी। भीमनगर—१० मनोहर  
लाल शर्मा। हीनकास—१० हरिप्रताप  
दास।

व्यवस्थापक  
स्वामी रघुनाथन सरस्वती  
अधिष्ठाता देवप्रताप

### आर्यसमाज की गतिविधियां

प्रांतीय आर्य महिला समाज दिल्ली का शिष्टमण्डल  
प्रधानमन्त्री से मिला

महिलाओं का परिहार व राष्ट्र में  
शान्ति तथा एकता रखने में बड़ा योगदान  
रहा है। जो राष्ट्र का रक्षक और देश के  
जनको सुख-निर्वाण है। व सत्य प्रमाण  
मन्त्री की राज व मन्त्री प्रान्तीय आर्य  
महिला समाज का विराट् भाग्य से है।  
उन्होंने प्रांतीय मन्त्रि के प्राधान्यम  
व धाराय श्रुत मन्त्री का सुखी को विम-

### प्रचार वाहन द्वारा प्रचार

दि० १ जुलाई सोमवार १० जे से २  
बजे एक सेक्रेटरी कार्यालय मन्त्री हाउस  
में प्रचार रखा गया। उहा क इकाई श्री  
प्र० रघुनाथन मन्त्री को निमन्त्रण पर गृह  
प्रचार काय रखा गया था। जिसमें १०  
बाधाराय प्रेमी, स्वामि राधक १० बुनी-  
काश, १० बाधोप्रसाद द्वारा समीत इन  
कार्यक्रम प्रस्तुत हुआ। यह कार्यक्रम वि-  
श्वविद्यालय के प्राण्य में सत्य बुनी की छाया  
में सम्पन्न हुआ। स्वामी रघुनाथन सर-  
स्वती देव प्रचार अधिष्ठाता १० आर्य-  
समाज द्वारा महीन व्यापन सरस्वती के  
जीवन पर प्रकाश डाला और हाउस अधि-  
ष्ठाता द्वारा मनोरंजन किया। कायानन्द के  
सभी कमचारियों ने विशेष भाग प्रकट की  
कि अपने बुद्धिमान को भी धन्यवाद धार्य।  
श्री रघुनाथन की सर्वा में ५११ दान  
दिया और भीमछात्र प्रमाणदेव ने १० दान  
दिया और उल्लास के साथ सभी ने भाव  
भीनी विचारों के स्वरूप दिया।

धारी की महिलाओं को बाराई और उनके  
कार्य की लक्षक के रूप में महिलाओं की  
विश्वविद्यालय को बाराईक महत्त्वपूर्ण ब-  
जाया। प्रांतीय आर्य महिला समाज की ओर  
से प्रचार मन्त्री की राज व मन्त्री को देव  
तथा वैदिक सहिष्णु की देव किया गया।

वराचारा

### सत्यार्थप्रकाश की परीक्षाएँ

सत्यार्थ प्रकाश, सत्यार्थप्रकाश व सत्यार्थ-  
प्रकाश की परीक्षा निर्वाह के कार्य में  
अध्यक्ष उपयोगी, महान् दयावान् मूल  
पवित्र प्रमाण सत्यार्थप्रकाश की बार प्रकाश  
की परीक्षाएँ, १० को बराको से पूरे बाह्य  
देव में धर्म मुक्त परिवर्तन दिल्ली, (रजि०)  
द्वारा कक्षा बांटी है। जिसके लालो परि-  
वारों को साथ पहुंचा है।

हल बर्ष में परीक्षाएँ २२ सितम्बर  
को होगी। यह सब धर्मोत्थान प्रमाण  
है। धर्म अधिष्ठाता के स्वामी को  
साधार करने हेतु इस बार अधिष्ठाता  
अधिक बुद्धिमान मूल, मन्त्री-मुक्त इन  
पर बाधों में बैठ कर अपने कर्तव्य का  
पालन करें।

पूरी जानकारी के लिए परीक्षा मन्त्री  
व्यवस्थापक एम्-०/एम्-०/६५६, अधिष्ठा-  
ता विहार केज, दिल्ली-५२ से सम्पर्क करें।

व्यवस्थापक (परीक्षा-मन्त्री)

### दिल्ली आर्य प्रतिनिधि समा का प्रचार कार्य

दिल्ली समा के आर्य जनोपदेशक  
१० बाधाराय प्रेमी तथा राधक द्वारा  
आर्यसमाज सारा रोहता की आर्यसमाजों के  
निमन्त्रण पर २० जुलाई को आर्यनगर में  
प्रचार रखा गया जिसके फलस्वरूप ५११  
समा को दान प्राप्त हुआ।

२० जुलाई रविवार को श्री गोवि-  
न्दारिह को द्वारा हर छोदराम सरत  
हम्टीद्वारा एम्प्लेन्स के लालो को कक्षाया,  
दिल्ली ११०००१ में देवप्रचार रखा गया।  
जिसमें १० बाधाराय प्रेमी की भजन  
मन्त्री की साथका ३ बजे से ३ बजे तक  
मन्त्री उपदेश रहा। उद्घाटन बोलाओं  
में प्रचार के बर्ष साथ उद्घाटन और १०१  
समा के लिए दान प्राप्त हुआ।

स्वामी रघुनाथन सरस्वती देव  
प्रचार अधिष्ठाता द्वारा २० जुलाई प्रात-  
पन आर्य विद्यालय सत्यार्थ प्रमाण में ब-  
जे के सत्यार्थ आचार्यों के सत्य में विद्यालय

### अमदान और सेवा का आदर्श रूप

२० बीबी, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि  
समा दिल्ली के महात्माजी की डा० नर-  
नाथ के बाह्य पर समा के अधिकांश एम्प-  
लस कार्यकर्ताओं ने समा कार्यालय की सुव-  
वस्था एवं सुव्यवस्था के लिए व्ययदान एवं  
सेवा का आदर्श उदाहरण प्रस्तुत किया।

इस समय पर महात्माजी डा० नर-  
नाथ, श्री देवप्रमाण, श्री रघुनाथ दुर्गा,  
श्री सुरेश द्विवेदी, श्री विरमदा दास र-  
नव, श्री नवमीर, श्री रामविश्वरूप, श्री  
धर्मोत्थान शास्त्री आदि अधिकारी एम्प-  
लसों में भाग लिया।

इस समय में विशेष बाध यह थी  
हम अधिकांश काष्ठ, बर्ष-आदि लेकर  
सर्प-आदि और रिकार्ड भी व्यवस्था के लिए  
मूल में गन कार्य कर रहे थे। बिना किसी  
व्ययदान के मित्तमुक्त सेवा कार्य करत  
का यह उदाहरण स्वाधीन है।

—अध्यक्ष

### पं० रघुनाथ प्रसाद पाठक की स्मृति में स्थिर-निधि

आर्यसमाज बीमानहास की मण्डली मन्त्री में १० पाठक जो को लोक अर्थशास्त्र  
की गई। छात्र ने भी पाठक की की स्मृति में एक स्थायी निधि कोसने का प्रस्ताव ज-  
र किया गया जिसके द्वारा उनकी विधि हुई मुक्तों एम्प-लसों आदि का प्रकाशन किया  
ये आदि का जाता रहा। प्रमाण पत्रित होने पर निर्माणागत महात्माजी ने अपनी  
श्री को सत्य देव का आराधन दिया है। आर्य जनता से निवेदन है कि निधि को स्वा-  
धिन्य देने हेतु बाध अधिष्ठाता के अधिक दान सार्वभौमिक समा कार्यालय दिल्ली को देने  
की कृपा करें।

- १ दयालु सेवाधन सच श्री धोर से ५०००)
- २ श्री राधोनाथ की शासनायें प्रमाण सार्ध १०००)
- ३ श्री मूई नारायण सार्ध १०००)
- ४ श्री देवप्रमाण पाठक १०००)
- ५ आर्यसमाज बीमानहास प्राण्य (अनारवि) २००१)
- ६ श्री देवप्रमाण पाठक २०१)
- ७ श्री राधोनाथ सार्ध C/O डा० डा० बीमानहास २०१)
- ८ श्री कर्मदेव कुमार C/O डा० डा० बीमानहास १०१)

उपदेशक हुआ। २० समा को दान प्राप्त  
हुआ।

२० जुलाई को नव बाधारी ने  
स्वामी की द्वारा यह व उपदेश हुआ  
जिसमें कई व्यक्तियों को व्यक्तियों द्वारा  
कराया और मन्त्री-आदि का सेवा नन्द  
कराया। सभी ने बहुत उत्साह के साथ  
कर्मों पर कार्य का भजन नहीं करे। साथ  
साथ ही एक विद्वत् नामकरण स्वरूप  
भी कराया गया।

सतिन मोहन नाम रखा गया। इस  
समय पर आर्य के प्रतिष्ठित अन्वित  
और अधिष्ठाता श्री सत्यार्थ के उपस्थित  
रहे। महात्मा भजननाथ जी ने कार्यक्रम  
के सत्यार्थ सत्य निवेदन का उपदेश दिया  
और समा को ११० दान दिया। सभी  
महात्माजी ने भावभीनी विचारों के हेतु  
भजन मन्त्री द्वारा कार्यक्रम रखने की  
माग करी।

### श्रीमती नेमवती धर्मार्थ ट्रस्ट १९१६ कमलानगर दिल्ली-७ द्वारा प्रचलित त्रि-सूत्री संक्षिप्त योजना

१ देव और आदि उल्लास हेतु  
अनारवि अपनी और बाध की निगुण्य  
सेवा प्रमाण करता।

२ वैदिक विचारों निगुण्य केन्द्र  
मन्त्री में, मुक्त एम्प-लसों कीन बाध  
व्यक्तियों को निगुण्य अधिष्ठाता करार  
सत्यार्थ उपमुक्त कार्य-वर्ष और सत्यार्थ  
व्यक्ति की व्यवस्था करता।

३ बुद्ध साहिब एम्प-लसों धर्म  
आदि मन्त्री आदि अधिक निगुण्य  
पत्रिकाओं को उप व्यक्तियों का प्रमाण  
का, बुद्ध देव की विधि में नहीं हो,  
उन्हें निगुण्य प्रमाण धर्म मूल पर प्राण  
कराना।

सम्पर्क करें—रामानन्दन आर्य  
६१६ कमलानगर, देहली ७

## आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश लखनऊ का ११वां अधिवेशन तथा वार्षिक निर्वाचन

आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश का ११ वा वार्षिक अधिवेशन २०-२८ जुलाई १९८३ को ३००-३०० कानून लखनऊ में हुआ। सावधैतिक आर्य प्रतिनिधि सभा के अध्यक्ष नारायण रामगोपाल जी शास्त्रिणाथ का प्रमुख निवेदन इस अवसर पर रहा। समस्त उत्तर प्रदेश में आर्य समाजियों ने ११-१०० के समस्त प्रतिनिधि उपस्थित थे। भूतपुर लखनऊ ५० विद्यार्थी आर्यजी की वर अवसर पर तबारे धीरे आर्य जगत के अष्ट विद्वान् की सम्मति से हुए।

सावधैतिक सभा के प्रधान श्री गान्धारी जी ने अपने अध्यक्षीय भाषण में प्रदेश के आर्य समाजियों में नवीन प्रगति और जागृति उत्पन्न की। नया धर्मावलम्बी के विरुद्ध सर्वांगीण होकर कार्य करने की प्रेरणा दी।

### वार्षिक निर्वाचन

१८-८ के लिए सर्वसम्मति से निम्न लिखित ११ अधिकारियों का चयन किया गया—

प्रधान १० इ. राज जी मरठ  
उपप्रधान १ श्री शैलीगान्धारी कानपुर  
२ श्री प्रमथ १० गार्गी ह. वरख  
३ श्रीमती सुतोष कपूर (एच०एच०सी०) विजयपुर  
४ ५० सचिवगान्धारी गान्धी दिल्ली  
५ श्री चमकडिह

सचिव श्री मनमोहन तिवारा लखनऊ  
उपसचिव १ श्री अमरनाथन आर्य विजयपुर  
२ श्री हनुमान् आर्य मुजफ्फरनगर  
३ श्री बाबूलाल दल्ल नवीताल  
४ श्री विनय प्रताप भा. सपुर  
५ श्री जित कुमार बजानी प्रमोद  
कोषाध्यक्ष श्री कृष्ण बनर्जी लखनऊ  
सहायक कोषाध्यक्ष श्री वीरे आर्य धर्मपुर  
पुरातनवाचन श्री विजयलक्ष्मी रत्ना कानपुर  
उप पुरातनवाचन श्री सुरेश रत्न मनमोहन विजयपुर  
सचिव श्री

आ० प्र० सभा उत्तर प्रदेश लखनऊ

### श्री श्रीमप्रकाश गुप्त का निधन

आर्य समाज बहापुरी (गो.) दिल्ली के प्रधान श्री श्रीमप्रकाश गुप्त का १८ जून ई. को प्राकृतिक निधन हो गया। निधन प्रा. मा. के प्रति आर्य समाज के सम्मान में प्रधान आर्य-जति धर्मिक की २१ जून ई. को उनकी स्मृति में यज्ञ तथा गोकुल समाजोचित की विधिओं से गुप्त के आर्य समाज में किये सेवा कार्य की शराहना की गयी।

म. श्री  
विजयलक्ष्मी आर्य



सावधैतिक आर्य वर समान समारोह की प्रसंगी सम्मेलन शर्मा श्री सा० इ० नारायण श्री बाबूलाल बरानी श्री सुबोध भा. डा० चमपान श्री बाबू तिवारा हल



विजय के प्रधान करते हुए आर्य वर



एन सी एच निगराई पाकडर बालों को लोकर रूढ़ करता है तथा उच्च वैज्ञानिक कार्य सम्पन्न व लक्षण बनाता है।  
निगराई गैर आमतौर पर कठिन कष्टमय व लक्षण सम्पन्न नहीं करती बल्कि ये बनाया गया एन सी एच निगराई पाकडर एक कल्पित लाभकारी प्राकृतिक वैज्ञानिक है। इतने कोड़े रसायनिक पदार्थ नहीं है।  
एन सी एच निगराई पाकडर का कार्य है ही नियमित प्रयोग कीजिए।

निगरा  
महाशिया वी हरी (प्रा०) लि०  
३०६ इण्डियान एरिया कोलकाता  
आई दिल्ली ११००१६  
फोन ६३९६०९ ६३७९८७ ६३७३४६

### दन्तों की हर बीमारी का घरेलू इलाज



23 जडी बूटियों से निर्मित आयुर्वेदिक औषधि

दन्तों का पाकडर



अब नये पैकेज में उपलब्ध

बिन्दीबाबू  
महाशिया वी हरी (प्रा०) लि०  
३०६ इण्डियान एरिया कोलकाता, आई दिल्ली ११००१६  
फोन ६३९६०९ ६३७९८७ ६३७३४६



मधुर्जी की मुजब



सुख की सुनिधि



ठंडा गर्म पानी लगना



बात का बर्त



# साप्ताहिक आर्य सन्देश

ओडिस

प्रकाशक  
इन्द्रचन्द्र कश्यप विद्याभिरु  
मुम्बई

कृष्णवर्मा विश्वमार्गम्

वर्ग १ भाग ३६  
मूल्य एक प्रशि १० पैसे

रविवार, १८ अगस्त, १९८६  
वार्षिक २० रुपये

मुद्रित सन् १९७२/७३/७४  
आजीवन २०० रुपये

मासिक १०४२

द्वमासिक १६१  
विदेश में १० डाक, १० पैसे

## स्वाधीनता की यज्ञवेदी पर सर्वस्व अर्पण करने वाले 'होता'

लेखक—यशपाल सुधांशु

कई सताब्दियों की गुलामी की जर्जरों को तोड़कर अनेक अण्ड चुकाने का मुह मोड़कर भारत देश में स्वाधीनता प्राप्त की। इस स्वाधीनता के लिए कितने क्षत्रि-कारी वीरों, शहीदों ने प्राणी जान कुर्बान करी, कितनी बड़ती बचानियों ने अपने जिवर के खून से सींच तर भारत के मन्त्र बन की सज किया। ये स्वाधीनता दिवस अमर शहीदों की स्मृति का, उनके नगने गुनगुनाने का, बलिदानियों की दरा-मिन भावनाओं का सत्कार करने का दिन है। सर्वप्रथम स्वराज्य और स्वाधीनता की चिन्तारी को देने वाले महर्षि दयानन्द स्तुत्य हैं जिनके सर्कल एव प्रेरणा पर १८५७ के वीरों ने आजादी की प्राप्ति के लिए अग-डाई ली, देश के कुष्ठित मानस को झकझोरा। अपने श्रिय शिष्य स्वामी जी कृष्ण वर्मा की विदेश भेजा जो क्रान्तिकारियों का प्रबल उन्मादक बना। और औरंगना आसी की



रानी लक्ष्मीबाई, भूखीर तात्या टोपे मगत पाण्डे, चन्द्रशेखर बाबाद, वीर भगतसिंह, राजगुरु सुपदेव, रामप्रसाद बिस्मिल, रोशन सिंह, अफगाण उल्हा, मदनलाल बीगडा,

उषमसिंह, कर्तारसिंह सरावा आदि अनेक महान् क्रांतिकारी जिन्होंने अपने सरकार को प्रकल्पित किया। भूत नाता के ये दुलारे स्तुत्य हैं। अज्ञानत है मस्तक उस बगाली बोध

मुभाषन-द पर जिसने अपने की नजरबन्दी तोड़कर, छिपते छिपते अफगानिस्तान से जर्मनी और फिर जापान पहुँचकर दुनिया की हैरत में डाला और सिगापुर पहुँच आजाद हिन्द फौज बनायी। एक पुरी फौज लेकर अपने फौजों से मुकाबला करने निकल पड़ा और बहादुर। उस केहरी वीर की बहादुर से भारत का बच्चा जाग पड़ा, अंग्रेजी साम्राज्य की नींव हिल गयी। सम्मान का अर्घ्य है उन नर केहरीयों की जिन्होंने अपने तप बलिदान यातना, त्याग और खून के छोटी से भारत माँ के गौरवपूर्ण मस्तक पर कुकुम लगाया। वे तप-पूत जननायक स्वामी अज्ञानन्द, लोकमान्य तिलक, महात्मा गांधी, सरदार पटेल, कबीर-रवीन्द्रनाथ ठोसर, लाला लाजपतनाथ लखीन्द्रनाथ, जवाहरलाल नेहरू तथा देश के तमाम प्रभुद जन जो स्वाधीनता आन्दोलन के लिए जेलों में गये। धन्य (शेष पृष्ठ ११ पर)

## अपने उपदेशक विद्वानों का सम्मान अवश्य करें

—सूर्यदेव

४ अगस्त १९८५ को दिल्ली पार्षद प्रतिनिधि सभा के अगस्त वैद्योत्सव कार्य में सहयोग देने वाले आर्य विद्वानों की एक बैठक आर्यसमाज अमर शीख ह्रास दिल्ली में सां ४ बजे संपन्न हुई। सर्वप्रथम उद्घाटन महात्मियों का

स्वागत करते हुए महात्म्य डा० धर्म-पास ने इस बैठक के उद्देश्यों पर प्रकाश डालते हुए कहा कि आज की बैठक में निम्नलिखित चार विषयों पर मान्य उपस्थित बन्धुओं के सुभाष आश्रित किये जायेंगे तथा विचार विमर्श के कक्षात्

भावी कार्यक्रम की रूपरेखा निर्धारित की जायेगी—

१ वैद्योत्सव कार्यक्रम—आर्यसमाज मन्दिरों में, आर्यबलिक स्थानों पर, विद्यालयों में तथा साहित्य प्रकाशन, विक्रय कक्षा नि सुख वितरण द्वारा।

२ तथा का वैद्योत्सव विद्यालय-माध्यमिकार्ष तथा समाजमार्ग।

३ आर्य विद्वानों तथा उपदेशकों के प्रस्ताव।

४ विद्यालय-प्रकाश। (शेष पृष्ठ ११ पर)

सम्पादक—महाराज सुधांशु एम० ए०

व्यवस्थापक—डा० गणेशीनाथ

प्रधान सम्पादक—डा० धर्मपाल



## सत्संग वाटिक्य

वेद से कई स्थानों पर धार्मिक  
तत्त्वों का विवेचन करते हुए ध्या-  
नीमात्रा की प्रेरणा दी जाती है। जो  
सर्व धार्मिकविज्ञान की कुछ भी महत्त्व न  
देकर इन्क-उपर की शक्तों में हीन  
समावेष्टे हैं ही परम पुष्पाब्ध का बीज  
है। उनकी प्राप्ति माया की दूर करने  
तथा सुख युगांतर से प्रभुत्व जिज्ञासा की  
जासुक्त करने के लिए प्रभाव-  
मन्त्रों के द्वारा उपवेष्टे होते हैं। उपमन्त्र मन्त्र  
के कृतिविज्ञान बन्धनों पर ध्यान दीर्घत्व।

(१) क प्रथम बर्ष— फिन्नेन शरीर की उत्पत्ति से जी पूर्व विद्यमान रहने वाले आत्मा को देखा जाता। वह निश्चय-पूर्वक जान लिया कि वह जीवात्मा पहले ही वर्तमान या और शरीर की रचना का उपक्रम बहुत पीछे की घटना है। इस आत्मा की विभिन्न और आवश्यकताएँ शक्ति को देखो कि वह अनादि और अनिष्ठाणी आत्मा—

(२) अन् धर्मत्वात् धर्मत्वान् धर्म-  
त्वान् धर्मत्वान्—एवम् तौ धर्मत्वे च गच्छेत्  
है परन्तु उत्पन्नं नैव तेषां शरीरौ को  
धर्मियो है अथुपर कर देता है शरीर किं  
प्रतिष्ठित शरीर का धर्मत्व-धर्मत्व करके  
अस्मिन् शरीर शरीर ब्रह्मत्वात् नाना देता है,  
जैसे कोई धर्म धर्मो धर्म धर्म होता  
है, जैसे ही धर्मता शरीर धर्मत्वधर्मत्व  
धर्म देता है। उत्पत्ति के समय से लेकर  
परिचयों का धर्मत्व भी उत्पन्न होता है।  
है शरीर शरीर के धर्मत्व-धर्मत्व भी उत्पन्न  
होता रहते हैं। यह धर्म धर्मता भी ही  
महिमा है, परन्तु धर्मत्वधर्मत्व धर्म यह  
है कि धर्मत्वत्व धर्म तौ धर्मता धर्मत्व है  
कि उत्पत्ति के समय से धर्मत्व धर्मत्व भी  
वही शरीर शरीर धर्मत्व है अथुपर ।

मन व संकेल किया है कि सरीर को अल्पमन्त्रम् अर्थात् धर्मवशो से बलिष्ठ बनाने वाला सरीर से सर्वथा पृथक् है जो सरीर को विभक्ति पाषाण-पोषक द्वारा हृष्ट पुष्ट करता है, 'विभक्ति' का कर्ता कोई और ही तत्त्व है जो सरीर की वृद्धि का मुख्य कारक है। यदि सरीर से पृथक् कोई वेद्यन प्राप्ता न होता तो सरीर की उत्तरोत्तर वृद्धि कदापि न हो पाती परन्तु होती है। वही कारण है कि प्राप्ता के न रहने पर मृत्यु सरीर की किसी प्रकार की वृद्धि नहीं होती क्योंकि वृद्धि करने वाला वहा से क्या जाता है।

कई लोग विचार किया करते हैं कि-

(३) असु असृक् भूम्वा—‘प्राण क्षीर रत्न’ ये तो भूमि अर्थात् वनस्पतों के उपादान से बनते हैं और ये ही क्षीर में जीवन के कारण हैं। इन से पुनश्च आत्मा त्रिधाह बकर स्वागत किया।

# वैदिक आध्यात्म विज्ञान

लेखक—इन्द्रराज

को ददर्श प्रथम जायमानमस्थन्वन्त मदनस्या विवर्तित ।  
भूम्या असुरसुगात्मा क्वस्वित् को बिद्धासमृपगात् प्रष्टमेतत् ॥

क्र० ११६४१४



ने निर्वाह के प्राण और रक्त का अत्यन्त  
 महत्त्वपूर्ण स्थान है और बाह्य बन्धन  
 नहीं होकर शरीर की अभिवृद्धि और  
 विकास के प्राण कारण की प्रतीति होते  
 हैं, परन्तु ये दो कार्यों हैं और इन के कारण  
 पृथक् कारिण प्राणमयुक्त हैं। बात यह तो  
 समझ में आ सकती है कि पञ्चभूतों के  
 कार्य अलग बसावि के प्राण और रक्त की  
 क्षति होकर शरीर की रचना, वृद्धि  
 और पुष्टि होती है उसी हेतु शरीर अन्त-  
 मय, रक्तमय है।

परम्पु खरीर केवल प्रायः, रक्त, नास और अस्थि अथवि पांच भौतिक तत्त्वों के संघात ही का नाम गह्वी है, खरीर में कोई भीविश वास्तुतः उत्पन्न भी है। जब खरीर एक जीवा जायता मांस का पुत्रता है तो जीवन कहां के प्राया? इस प्रश्न का उत्पन्न होना भी स्वाभाविक है। अतः मम कहता है कि वह भी विचार करो कि—

[illegible][illegible]

आत्मन् शब्द का अर्थ भी बड़ा विचित्र है। ऐसा प्रतीत होता है कि परमेश्वर ने इस शब्द को जैसा पावा वैसा ही इस का नाम रखा है। निम्नताचार्य महर्षि बास्के ने आत्मन् का निर्वचन करते हुए लिखा है कि—

आत्मा अततेर्वा आप्तेर्वा  
व्याधिकरण । निरुक्त

[illegible]

बहु जीवन व्योधि का प्रकाश करने वाला, शरीर के कोने-कोने को बाहुल रखने वाला और निरंतर बलि कर रहे खुले वाला धर्मोपदेशक वाला कहां है बाबा है और क्यों बाबा है तथा कब है बाबा है और कब तक शरीरों में आवासलय कर रहा है? इस प्रश्न के अनेकों प्रश्न हैं जिन पर विचार करना परमात्मन है परन्तु कुछ और आशयों की बात है कि-

एतत् प्रष्टव्यं क विज्ञानम् उपगत्—  
 इयं वार्ता की पुस्तक के लिए कौन विज्ञान  
 है जो वास्तविकता विज्ञान के पास पहुँचा  
 है। प्रश्नात्मक विज्ञान के प्रश्न वास्तविकता  
 विज्ञान के पास जाकर ही करने चाहिए  
 और वही इस प्रकार की कठिन समस्याओं  
 का हलतया समाधान कर सकता है  
 परन्तु यह विज्ञान सर्वज्ञात विज्ञान के  
 मतिवक्तव्य के नहीं उपबन्धी और न ही  
 प्रत्येक विज्ञान इन मुद्दों की कोश सकता  
 है। इसके लिए तो पुस्तक की रचना वाले  
 लोगों असाधारण होना चाहिए। क -  
 निवार के लिये मैं—

आवयवोऽस्य वक्ता कृत्तलोऽस्य लब्धा  
आवयवो ज्ञाना कृत्तलानुशिष्ट ।

कठो० द्वितीय बल्सी ६

अर्थस्य इह धात्वन्नाम का (व्यक्ताः)  
 वक्ता (धात्वर्थः) कोई विरहा ही होता है। (अर्थ) इसका (वक्ता) पाने बाबा (कृषक) कोई प्रवीण ही होता है। (कृषकानुविष्ट) प्रवीण मुख्य से उपदेश पत्रा हुआ (आता) जानने बाबा (धात्वर्थः) कोई विशेष ही होता है।

जबवही श्रुति इस आत्मा को सदगुरु से जानने के लिए उत्तेजित कर रही है। है। यह आध्यात्मिक विज्ञान कोई आध्यात्म में दूबा हुआ मर्मज्ञ ही बता सकता है परन्तु पूछने वाला तो होना चाहिए। ये कहता है इस आत्म उत्पन्न को पूछने के लिए कौन किसी धा गामी के पास जाने का उपक्रम करता है।

पुनः कठं मुनि यमाचार्यैः के मुक्तः से  
नषिकेता को समझाते हुए सारे सवार के  
ध्यात्मविज्ञानसुभी को सम्बोधित करते हैं—  
उत्तिष्ठत ब्रह्मत प्राप्य ब्रह्मनिबोधत ।  
अस्म्यकारा मिथिता दुस्स्थया दुर्ग  
पञ्चतन्त्रवयो बन्धितः ॥

કઠો. તૃતીય વલ્લી ૧૪

ऐ बाम्ना-बाम्नालों से मोह पिदा मैं  
 सोये हुए बिनासुखनो । "वीरचर" उठो  
 केवल छठी ही नहीं अपितु "बाहल"  
 नामक छठी ही बहुत को बामना वाले योग्य  
 पिढालों के पास बाहर उठे बाहलरूप  
 को बामनो । निरपच ही यह आध्यात्मिक  
 मार्ग छुट्टी की बार के समान कतिन है ।  
 केवल सुखदर्शी कवि, नगीनी सोय ही  
 यह कतिन के प्राप्ति होने वाले आत्म-  
 रूप को बता सकते हैं ।

आइए, वैदिक आध्यात्म के इस रहस्य की किसी आत्मदर्शी से पूछ कर और उसे जानकर आपका हृदय सत्य का कल्याण



## फांसी का फंद चूमनेवाली हंसी

१३ अप्रैल यानी भारत की आजादी का दिन आज से ३८ साल पहले मुजरा की बजरी के काटकर भारत ने आजादी की धाक ली थी। प्रत्येक भारतीय का प्रत्येक ८५ दिन वर्ष से ऊंचा उठ गया था। हरेक वहीरे पर मुस्कान थी। लेकिन इस खुशी के प्रसरण पर देख के उन हजारों आसो सोचों को भी हमने याद किया था, जिन्होंने आजादी की लड़ाई लड़ते हुए अपने प्राणों की बलि चढा दी थी और अपने मृत्यु से आजादी के बीज को लीला था। जाने ऐसे कितने किराए धोर मुक के जिन्होंने कुछ सुविधाओं से भरी बिजली के मुकामे काटो भरी राह को गुना, प्रसेवी के दिक हलाने वाले प्रत्याचार लहे लो हलते हलते पछी के फंदे को भुज किया। मणवसिंह बजरीधर भागवत रायबहादुर विमल, बघफक उल्ला, राजबहादुर, लखनदेव कटार सिंह, बसंत सिंह हेतु कालाजी, जयसिंह और न जाने कितने ऐसे नाम हैं, जो अपने वतन की आजादी के लिए गए जिंटे। १३ अप्रैल का दिन उसी के सगनों उम्मी के प्रकटनों और उम्मी के बलिदानों का प्रतिफल है।

ऐसे कुछ नाम हैं एक था खुदीराम सोड जिन्हें १३ अप्रैल १९०८ को प्रसेवी ने पछी पर बहा दिया था। उस समय

खुदीराम की उम्र थी कुछ १८ साल। लेकिन खुदीराम बच १३ साल का ही था तभी यह आजादी की इस बजरी में कुछ मुक था। एक प्रसेवी रात को जब बजब के बीच फांसी की लिकराह मृति के सामने उसे फांसी की लीला थी थी। प्रजिता की भी देख की आजादी के लिए प्राची की बाजी सगने से भी वह नहीं हथिकेगा।

उसकी प्रजिता पूरी हुई पांच साल बाद बहारा मुकभरपुर की है। बहा का बिचा मसिहट का फिज पोर्से नाम का एक निर्दोष प्रसेव बेधकलों और फांसी की हथ करके से कठोर सजाए दिया करता था। बासबाह देते हैं उसे कुछ मिसला था। बेधकल उसकी बचर ने सबसे बहा प्रपराय था। बासिरकार फांसीकारियों ने इस बाकी की फिरीकरी की हूर करने का निर्णय किया। उसे भीष के पाट उतार देते की बिम्बेराही सीपी लरी खुदीराम सोड को।

खुदीराम सोड अपने एक साथी के साथ मुकभरपुर पहुँचा। फिले तीर पर फिज पोर्से की बिलकरी का पठा बहाया। मालूम हुआ कि फिज पोर्से रोब बाय को मोबा बाकी ने बैकडर जमोरजम और प्रामोह-प्रमोह के लिए बीरे लीमिकों के

मन में बाता है। सोचों फांसीकारियों ने एक फिज कि मकब से बीटोले समय उसे बच के बहा दिया बाये। ३० अप्रैल १९०८ को उन्होंने बचर फिज बाय और उन्होंने मोकभरपुर मक मक फंड कर देते हुए-पूर कर जया। पर एक बचरी हो गई। बेठी बाकी फिज पोर्से के बाय की उली तरफ की बाकी एक बचर बजरी केनेरी की थी की। हुकीले के खुदीराम ने केनेरी की बाकी की ही फिज पोर्से की बाजी समय किया। इस बचर फिज पोर्से को बच बना पर केनेरी की लरी की मटनात्मक पर मुकु ही लरी

बच फंडेकी ही खुदीराम नाम निकला था। बचक-बचक काट फंडा बरा २३ मीच का रास्ता बीकते हुए उसने तब किया पर बचक पकडा था। बहालस में उसने गिरर होकर बयाल दिया कि वह प्रत्यापारी फिज पोर्से की हला करना चाहता था। बैकडर बीमरी केनेरी की बाये का बहा इरासा नहीं था। बीमरी केनेरी की मीर पर उसे बफलोस है।

फांसीकारियों के सम्मान में मुकभर और बच के बचलों तथा नेताओं के नाम बायने के लिए बच ने खुदीराम को कठोर बलनाए दी लरी। लेकिन भारत के उस उम्मे वजुज ने हलते हलते सारे प्रत्याचार उह बिने। न तो उसके मुक से उक

निकली, न फांसी हल के बारे में कोई जानकारी। बेल के फांसीकारियों ने उसे मुकमाने की कोशिश ली की, फिर भी उम्मे सफला न मिली।

बासिरकार खुदीराम सोड को फासी की सजा सुना दी लरी। उह समय की खुदीराम के होंटो पर मुस्कान बिरक रही थी। अपने लीलेने ने बच ने कहा कि बगर वह बाहे तो एक सफाह के भीतर हाई कोर्ट में प्रसीन कर सकता है।

'वही इसकी कोई बकरत नहीं है। खुदीराम ने कहा। प्रसेव नेरे देस के मुसम है मुसम की प्रयासत कभी इ-बाफ नहीं कर सकली। फासी मेरे लिए सजा नहीं है, बल्कि सनस उका उगाह है और इसे मैं खुदी से स्वीकार करता हू। हा प्रगर बाप इबाजल में तो मैं प्रयास ने जप-सिधक अपने प्रेषासिधो को बच बनाने की तरफक बहाना बाहुना, गफि बासल मा का कोई बाय उह काम को पूरा न सके जो मैं नहीं कर पाया।

बाजीम स्वतन्त्रता के बसिहाल ने फकिट ई दे बचर का दिन बाय की मूरक की तरफ बमकडा है। बसले स्वाम और बलिल का जीवत प्रतीक बाय की इन बजरी के बीषे फांसी का बहा मनेत समय खुदीराम सोड के होंटो पर बाजी मुस्कान फिजमिलाली है। १३ अप्रैल बहरी बिलक नहीं, एक प्रेषा बिलक है।

## ओ छत्र उजालो !

—बैनेज मुखार 'बैव'

ओ छत्र उजालो ! हूँ बाय मल बिचपाणी।  
हम स्वयं विमिरी को बसने के धमती है ॥

तिरकली हवाओं के बच पर उठकर तुमने,  
पू लिया व्योम को, इसमें कोई बात नहीं।  
मत समय को तुम पर ही विमने है विमल स्त्रीकि  
इस खली पर हूर पन खली की नहीं ॥

बहकाओ मत अपनी जगमगर क्षुतिमा से।  
हम अपनी प्रह्वानो के बह बिचपाणी है ॥

हमने देहे है धमखित बुध के परिवर्तन  
गनीमत बैमन देहे है उल्ले-विस्ले।  
हम महाह्वी है, महाकाय के धामबच,  
जो डाक दिया करते हैं बी बसते किरते ॥

मल बच बचाने की बीहबडा का तो हमको।  
हम नहीं बने हैं, उनके दासि बिचपाणी है ॥

जो कभी समय का लुने स्वयं को कलते ने,  
बजोत बने बाय में ही बकरर मान बने।  
धमसाये मोकम, बासिर कले मगरावी के,  
देरी ही हुंकारों की लुकरर मान बने ॥

तुम बिमने बफकडा, मुक-मुविना कले ली, ने।  
मेरे बीमड के रायबहादुर की बाजी है ॥

## मनुर्भव

प्रमान को बनी धरे प्रमान बन के देख।  
बलरी की बाय नेजुमान की बाय बन के देख ॥

ईमान तेरा नेजुमान को सजा रहा  
मानन बाय रोज का नेजुमान बन के देख ॥

तुम ऐसी बनी बनी की दखन को बहा रहा।  
कुछ तुम सके तो तुम ने ठक कान बन के देख ॥

मगमान और मौन है मगमान के मुखने।  
प्रमान है तू ही धरे मगमान बन के देख ॥

समान वा प्रमान व बिमान बाय कर्म।  
तू बर्मे का है सने सार्म पाय बन के देख ॥

प्रमासिधो के मान मरे कुछ महान मैं।  
औरकुबैन की तरह लीमान बन के देख ॥

जीवन की प्रहमियल को बिस्वकी नहीं समय।  
दिल ने किली के बंद का तुमान बन के देख ॥

मया मोया और माया रमिस्टर को तो डटोय।  
मत मोल करे मोल की कुमान बन के देख ॥

'आमुक' कवि के गीत लुके धनसुने न कर।  
कविने के कलम तीर की कमान बन के देख ॥

रचयिता प्रकाशवीर अग्रवाल

चक्रवर्ती (रचयिता)

हम वीर हैं डरना क्या जानें ?

वैद्य की इस ध्वज की ध्वजे से बनी  
मीन यह है कि वैद्य की वीर विभवाहिम् ।  
यह मान्य कौन दूरी करेगा ? धार्यसमाज  
की ही यह कथा कहला है । राधुदोही  
नूर हवासे बँध नूत नै, युक्त सुकर भोनों  
की स्टेनबनी से हवा कर दें, बस कँवर-  
रियाँ बना लें, यो इन में से किसी को  
फाँसी नहीं दी जाती । धर्याभवा का  
एकटा के नाम पर ऐसे लोगों को खोडा  
जाता है । इस प्रकार वैद्य क्या बनेगा ?  
धाराय्यकथा है वैद्य को यद्वात्मन, मायपत,  
गुणम, वातरक्त, स्वतन्त्रान्त, नरेन्द्र  
(सोमानन्द) जैसे प्रपत्तीरों की । बहूतों  
के सामने छाती ठामकर हुकाये जाने  
की बातों की लमकाये जाने इन  
वैद्यकी दुर्गों का स्वरूप करने धार्य-  
जाति कायरी की 'महिमा' से मुक्ति  
पाए ।

हैदराबाद सत्ताग्रह के दिनों की बात  
है, प्रथम की महात्मा नारायण स्वामी की  
महाराष्ट्र रेल में यात्रा कर रहे थे। महु-  
आज एक पेल्लेनर गाड़ी से गुना का रहे  
थे । बाप बड़े बलाह के दिग्धे में बिलारा  
बिष्ठाकर बैठ गये । धामी गाड़ी थोडागुदर  
से गही चली थी । धाराय्यन को बिना करने  
प्राए, गही जाने से कि एक व्यक्त महा-  
राज के पास धायी धीर कहा कि जिस  
दिग्ध में यह है, उसमें धीर कोई नहीं  
हसिएए बाप बड़े बलाह के दिग्धे । महात्मा  
की उत्तर में ही । एक धार्य को जेना,  
धामी हसका बिष्ठा केवलकर धामी, क्या  
इससे प्रम्था है धीर बाहू धीर कोई की  
है । उसने मोटरकर सत्ताभवा की खोडा  
वा बिष्ठा है । बाहू वारा, पाँच हैदराबादी  
मुक्तमाला हैं । ऊँची के बिताये पर यह  
पानी महात्मा की को उस दिग्ध में  
बिगाने के लिए धायी वा । ऐसी घटनाएँ  
सब घटती रहती थीं परन्तु हमारे नेता ब  
धार्यबन सीध इन्हीं पर बर कर धार्य  
बड़े । बाबू भी हाप बालसे हुए धीरघा  
बड़े । धार्य बिष्ठावत्यन की से केवलर ऊण्य-  
वत इन्कर का उनकी रली माता गावा-  
बरी बेनी तक न जाने बिताये धार्यों ने  
धीर गति पाई । फिर भी वैद्य जाति के

## तत्त्वमस्य—

धार्यसमाज के इतिहास के लुप्त-गुप्त पृष्ठों का अनावरण

## आर्यों की वीरगाथा—७

प्राध्यापक राजेन्द्र 'जिज्ञासु'

सबु धार्यसमाज से गयनीत है । धार्य-  
समाज धातकित न हुआ ।

महात्मा नारायण स्वामी जी के  
धाम्य हैं—

‘धोलागुदर निवासियों में से धनेक  
हमारे सुप्रभिलक धमारे धार्य धाते धीर  
कहते थे कि मैं कभी कहीं बनेना न जावा  
करू क्योंकि यह वात कहते थे जाती  
नहीं ।’

फिर धामे बिष्ठा है कि मैं धीर  
स्वामी स्वतन्त्रान्त की गित्त प्राप्त 'X' बने  
ऊठकर बोलने जाते थे । डाई तीन  
मील दूर जाकर गीध स्वाय धाकि से  
निगुदु होकर प्राय सात बने के नयनन  
कटा करते थे ।

घट्यों नगर के बाहर धार्यनगर में से  
महात्मा काय करते थे । जब नारायण  
स्वामी की बनेले बाहर प्रथम को जाते ।  
धोलागुदर निवासियों ने मुझे स्वयं बताया  
कि हमने कई बार भी धाराय्यन को रोका  
परन्तु धीरु स्वतन्त्रान्त का एक ही  
उत्तर था कि ‘‘बरेना किस बात से ? उस  
बीध के लिए तो फिर मैं बनेना ही पर्याप्त  
हूँ ।’’ बने बिस्तार से ये बातें धीरुधुस  
पत्र में लिखी हैं ।

महात्मा नारायण स्वामी जब वैद्य  
बने तो वह अपना मुण्ड पत्र DEATH  
WILL लिख कर गये । इससे स्पष्ट है  
कि धाराय्य इस बने मुण्ड में जीवन बाहुल  
कले की दूरी लँदाई करके गये थे । धार्य  
धार्यसमाज को ऐसे महान् उत्पत्ती, निर्भीक

मुकुञ्जय महाबलि नेता बाहिए । राज-  
नेवाओं का धासन की परिक्रमा करने  
वाले समाज का मुक्त न संवार सकेने ।  
उसी को धार्यसमाज के बड़े बने कार्यक्रमों  
में रीनक के लिए धासक चुनाये पड़ते हैं ।  
धोमी दुर्गों की भीड़ कितनी हो जाती है ।  
ऐसा क्यों ? बाबू प० लेलवान, धार्यमुनि,  
रामा बाई बालो धायक गित्त वाते  
व्यक्तियों के हाप में हमारी बागडोर  
नहीं ।

धामी धार्यवीर दस, धार्यमुक्त  
सयालें, धार्यकुमार सयाएँ धीर ध्यायक-  
धालाएँ स्वाय स्वाय पर कौनों की हम  
धायन बन कहेंगे ।

एक वे दिन ये—

धीरु धुस रत्नार पटेल को धमकी  
अरे वध बिनासे गये । धुसिम लीमी मुण्डे  
ऊँठे जाते थे धार्य बाहले थे । धुसकुल  
काँकरी के मुक्त बाधारीयों ने उन्हें वध  
लिखकर उनकी रखा के लिए धमकी  
हेवाएँ मँट की । हसारा पटेल ने ध्येय के  
सन्धों को उच्छ्रुत धुस एव धार्यवीरों  
का कथनवा किया । उन्होंने बह्वारियों  
को बिष्ठा, ‘प्रभु की इच्छा ही पूरें होगी,  
मुण्ड से मैं ब्रजता नहीं ।’

धाए दिन धार्य जाति के गिर्वाण धास  
भारे बा रहे । धुसकुल के बह्वारों,  
धी०ए०बी० कालेजों के धार्य प्रब बने  
हैं । वे दिन फिर होत सक्ते हैं । धोला  
तप तेक फिर बाला धोला ।

‘धार्यों को निकाल दो—

धाया लाकतत रात के निष्कासन के

दिनों की बात है । स्वामी यद्वात्मन की ने  
(सब महात्मा मुनीराम से) एक ऐति-  
हासिक भाषण दिया था । उसकी बर्णों  
उनके कई जीवन चरितों में है परन्तु धारा  
भाषण सम्भवतः किसी ने नहीं दिया ।  
सीमाय से मुझे यह ऐतिहासिक भाषण  
मिल गया है । भाषण क्या है यह की  
बह्वार वा हुंकार है ।

उसी ऐतिहासिक भाषण में स्वामी  
जी ने एक घटना सरकार के दमन बाध  
की दी है । हरियाणा के एक ग्राम में  
विष्टी कमिशनर साहब बने । धाराय्यन के  
नम्बरदारों, जैनधारी को मुक्तमा गया ।  
धमन साहब के मुनाये पर सब भा गये ।  
साहब ने विशेष बात यह कही कि देखो  
धमने धामने धामों में धार्यसमाज को बसने  
न देना । यदि कहीं कौनों धार्यसमाजी हैं  
तो उसे प्र म से निकालो । साहब को  
यह पता न था कि जिन धीरवीरों ने यह  
बात कर रहा था उनमें धातकित धार्य-  
समाजी थे ।

सुसुक्त गाये एक धीरवीर ने कहीं  
नीतिमता कहा कि यह हम किसी को  
ग्राम से निकालेंगे तो धायरी सरकार  
हमें ही बलायेंगे । इसलिये साहब बह्वारु  
धाप ही इन धामों को हवाएँ बने  
निकालें । इस पर साहब बोले, ‘मही हस  
तो इन्हें गही निकाल सकते । धाय निकालें  
हम धायको मुक्त न कहेंगे ।’

इस पर वह धार्य धीरवीर बोला—  
‘साहब जिन धार्यसमाजियों पर धार्य  
धाकते हुए धाय की सरकार बरती है, हम  
ऊँठे कैसे निकाल देंगे ।’ यह वा धार्य-  
समाज का तेक । वैद्य है कि स्वामी यद्वा-  
त्मन की ने उन धीरवीरों का नाम बाहू  
नहीं दिया । स्वामी स्वतन्त्रान्त की उनके  
नाम बताया करते थे, हमें उनमें से केवल  
धीरवीर चुनना का नाम ही याद है । वैद्य  
नाम स्वामी स्वतन्त्रान्त की के नेलों में  
कोकने पड़ेंगे । धार्यों । धामी प्रभु की  
बाहुली धाय की विमल रचनाओं को सुनें  
व सुनाएँ धीर । उस प्रतीत को फिर सत-  
मान कर दें ।

## किशोरमञ्च—

## अंगिरा ऋषि का उपदेश

प्रस्तोता—बलभीरु बाली

कीलक नामक विद्वान् अंगिरा ऋषि  
के साथ गया धीर बोला धुस की मुझे ससार  
के विनिस्त हैं, मैं बर-बार धीरु कर  
लगाती बनान बाह्ला है । धुस की बोले—  
‘बहू एहसी में रहते हुए भी नयमान का  
नयन बिष्ठा का सफटा है ।’

धुसकी का उत्प्रेष धुसकर कीलक  
धुसकर जीवन व्यतीत करने लगा । यह

सारा धामने धायी की उन्नति के बारे में  
धोषता था । उसके बाब बहुत बन था,  
किन्तु वह उस वारी सुल को मूडा सुल  
बनमथता था ।

एक दिन उसके घर धयिरा ऋषि  
धामे । कीलक ने प्रथम होकर उनका स्वा-  
गत किया । धायी की उन्नति के विषय  
में पूछा । धायी की यह वातने की इच्छा

की । धयिरा ऋषि ने कहा—‘पहले एक  
बर्ष तक बह्वारें सब धायन करो । तत्पश्चात्  
करो । धाय में मुण्डें धाय भियेगा ।’

धयिरा ऋषि बने गये । बाद में  
कीलक ने उत्तरया की । एक वर्ष बाद वह  
धयिरा ऋषि के धायय में गये । ऋषि ने  
ऊँठे बहलु की ज्ञान की बातें बितायीं ।  
उन्होंने कहा—‘बिधा को प्रकार की होती  
है । एक बिधा से हम ससार के सुख भाष्य  
करते हैं, परन्तु सच्चा मुक्त नहीं मिलता ।  
इसरी बिधा हमें समाज के उन्नति की  
धोर से जाती है । उसी के द्वारा हमें  
सच्चा सुख मिल सफटा है ।’

कीलक की धायक में ये बातें गही

धायी । उसने इनके बारे में फिर पूछा ।  
ऋषि ने कहा—‘धाती वेदों के पढ़ने का  
यज्ञ करने से मनुष्य धायी की उन्नति  
नहीं कर सफटा ।’ इन सब को धामने कीलक  
में उठारे धीर उसी प्रकार धायना जीवन  
भगवते । कथनी धीर करनी में धायन न  
हो ।

कीलक ने फिर धायी की उन्नति  
का उपाय पूछा । धयिरा ऋषि ने कहा—  
‘ईश्वर का कोई रू नहीं है, फिर भी वह  
सब बाहल, सब चीजों में मौजूद है । उसी  
ने सारा बनाव बनाया है । वह सब को  
बिखार नहीं पडता । यह सब बहलुओं में  
समाया हुआ है । उसे तो गही बिखारा है को

(सित पुष्ठ ६ र ८)

स्तुतिभक्ति है। ये सब तो सामान्य ब्रह्म है। उसके बाहर कि प्रभु, स्वामी श्री परमर्षि ने सारा विवेचन करते हुए हैं। मनु जो है वह स्तुतिभक्ति है। जब कोई धन्यमान धारणी ब्रह्म वह पहले परमेश्वर की बनाई हुई चीजों की शारीक भजना। मुखिया की इतने बना लिया और वह विद्या कि वह परमेश्वर है, भक्ति वह परमेश्वर की शारीक करणे तो कहे कि परमेश्वर सर्वव्यापक है, सर्वोत्पत्ति है, सर्वज्ञ है, सर्वभ व्यापक है। इन विवेचणों से हम यह परमानु की स्तुति करणे तो सारा भक्ति कि मुखी ही ईश्वर है ना ही मुखी ही परमानु। यह जो ज्ञान है मनु है। अब इस संसारिक प्रयास, यी यो हो पने वाते हैं। एक भावानी ने प्रजापति के मुखी को बताया उसने ब्रह्म की मुखी गुणभ है, रं नी बहुत प्रमाण है। इसे सब कह बाध धारणी कहता है कि यह ज्ञान का प्रमाण है। पहले तो उसने मुखी की शारीक की। इसके बाहे में जे विचार कि यह विद्याम को सारी करने वाला है, मनुहो है, मुखर है। कि मनुगी पर ये पतिहो कि जति जति ये सब भावनी की मिथी मुखीम को जाती है। यह प्रमाण 'मनु' का स्वभाव होता। हुवरों है 'बहु', उसने यह विचार होता है कि यह मुखीम ही तो ब्रह्मी, परन्तु यह सब ज्ञान से सबन रहते हुवे मुखी पबिचर रह सकती है ना वहीं। यमुना का काग यह है कि वह जिनम बसुतोर्षी के पीय से कोही उपयोनी पयाने वाला है। सारी को केक 'मनु', हो के ज्ञान से बन से उरख उरख के इस विद्या बनीर उरार किजि जाते हैं। ये संभव की मुखी पर मुखी है। इस को









संयोजक आदर्श आर्य विवाह केन्द्र  
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा  
१३ हनुमान रोड, नई दिल्ली





# साप्ताहिक ओ३म् कृष्णता विश्वमायम्

## आर्य सन्देश

वर्ष १८५० रविवार १५ अगत १९८१ सृष्टि सन् १९७९६४८०८६ भाषण २०५२ श्यामानन्द—१९१  
मूल्यांक प्रति ५० पैसे वारिक २० रुपये आश्विन २००५ वर्ष विदेश में ४० बाहर १० बाहर

## निराशा वादी शल्य मत बनो, आशा और कर्मठता के प्रतीक कृष्ण बनो —रामगोपाल शालवाले

नई दिल्ली १८ अगत १९८१।  
आर्य केन्द्रीय सभा दिल्ली राज्य के निर्वाचन से युव सामयिक प्रधान का प्राशन बहुए करते हुए सांकेतिक आर्य प्रतिनिधि सभा के मान्य प्रधान शाला रामगोपाल शालवाले ने कहा कि आर्य केन्द्रीय सभा दिल्ली की स्थापना उस समय हुई थी जब देश भर में कड़ी भी ऐसी सभा नहीं थी। कामपुर में काफी समय बाद केन्द्रीय सभा की स्थापना हुई। आर्य केन्द्रीय सभा दिल्ली का अपना महत्वपूर्ण स्थान है। इसी सभा के तत्वावधान

में चीन के हमले के समय नरकानीन गृहमन्त्री श्री ज़्हांग को रामगोपाल नवान में आयोजित विद्याल सभा रोह में ५१ हजार रुपये और एक तलवार भेंट की गयी थी। समूचे देश में इन सभा की छाए है। मुझे दुःख होता है जब मेरे कुछ निराश साथी सब कुछ करते हुए भी कहते हैं कि हम प्रगच्छी तरह नहीं कर पाये। सब तरह सम्पन्न होते हुए भी कहते हैं कि हम भूखे हैं नगे हैं। मैं मानता हूँ कि हमें और अधिक कार्य करना चाहिए। सगठन के अन्तर्गत कार्य

करना चाहिए। करते हुए लोगों के मार्ग में अवरोध नहीं पैदा करने चाहिए। हो सके तो उनको सहारा देना चाहिए। मुझे यह प्रसन्न याद आता है जब महाभारत के युद्ध में कर्ण के सारथी धृष्ट के ओर से उस बार योद्धा कर्ण को बार-बार सुतगुप्त धर्मयोग कहकर हतोत्साहित कर रहे थे। जब सारथी ही हतोत्साहित करे तो कार्यकर्ता कैसे कार्य को सुचारु रूप से सम्पन्न कर सकता है। दूसरी ओर कृष्ण हर प्रकार धर्जन को प्रेरित कर रहे थे उसका उत्साह-

वर्षन कर रहे थे उसका मोह भग कर रहे थे। द्रोपदी बोद्धरए और धर्मियमयु की मृत्यु का बदला लेने के लिए उसका रहे थे। परिरामत विजयवी भी पाण्डवों को ही मिली जिसमें कृष्ण का बहुत बड़ा हाथ था। इसलिये मेरे प्यारे भाइयों, उत्साह से काम करा। साथियों का उत्साह बचन करो, उन्हें सहयोग दो। जीत तुम्हारी होगी। उन्होंने पञ्जाब की समस्या मोनाखीपुरम में किये जा रहे कार्यो पर मतोष व्यक्त (विष पृष्ठ ६ पर)

## आर्य केन्द्रीय सभा के निर्वाचित प्रधान श्री महाशय धर्मपाल



श्री महाशय धर्मपाल  
दानवीर, धर्मिय, अर्थनिष्ठ,  
निष्कल सत्य प्रकृति के स्वामी,  
एन० बी० एन० भा० लि० के स्वर-  
त्वाधिकारी, सुप्रसिद्ध उद्योगपति  
महाशय धर्मपाल आर्य केन्द्रीय सभा

दिल्ली राज्य के प्रधान सर्वसम्मति से हृषी ओर उल्लास के वातावरण से निर्वाचित हुए।

श्री महाशय धर्मपाल अपने पुण्य पिता श्री स्व० महाशय कुन्नीलाल के तत्वाधिष्ठ ईमानदार, परिपक्व, दानी स्वभाव की भाव्य मानकर समाज सेवा में लगन हैं। उन्होंने अपनी पुण्या माता चन्ननदेवी की मधुर स्मृति को जीवन्त रूप देने के लिए माता चन्ननदेवी धर्म धर्मार्थ नेत्र चिकित्सालय सुभाष नगर में बनवाया जो हजारों रोगियों को नेत्र ज्योति प्रदान कर रहा है। जनक पुरी में भी दो बड़े बस्पाल दुःखियों के दुःखहरण का कार्य महाशय की शुच सकल्प के कारण कर रहे हैं। श्री महाशय कुन्नीलाल चैंटिबल ट्रस्ट के अध्यक्ष एक बसता किता (विष पृष्ठ ११ पर)

## महामन्त्री श्री अशोक कुमार सहगल



श्री अशोक कुमार सहगल

कर्मठ कार्यकर्ता धुन के धनी, हृषमुख, धर्म स्वभाव जनसेवा के लिए कुनसकल्प शरीरकन एक प्रव नेक के उच्च अधिकारी, महवि दयानन्द और धर्मियमात्र के अभाव

अदालतु श्री अशोक सहगल के आर्य केन्द्रीय सभा दिल्ली के महामन्त्री चुने जाने पर हार्दिक बधाई।  
श्री अशोक सहगल धर्मियमात्र राजेन्द्र नगर के १२ वर्षों से लगातार रहे हैं। उनके कारण उस क्षेत्र के जन जन तक धर्मयमात्र का संवेष्टा पड़ता है। आर्य केन्द्रीय सभा दिल्ली के से १९७५ से लेकर १९७८ तक महामन्त्री रहे। उनके द्वारा उस काल में किये गये नार्थों को धर्म जगत अब तक स्मरण करता रहा है। १९७५ की अन्तराष्ट्रीय धर्मियमात्र स्थापना शताब्दी के से संयोजक थे। दूर दराज तथा देश-देशान्तर से पधारें लाखों आर्यों के स्वागत सम्मान और आवास व्यवस्था के लिए श्री अशोक कुमार की सेवा की काफी प्रशंसा की गई थी।



卐 वचन-सन्देश 卐

## शरीर और आत्मा दोनों बलवान

जो केवल आत्मा का बल धर्मार्थ विद्या ज्ञान बढ़ाये जाये और शरीर का बल न बढ़ाये तो एक ही बलवान् संकटों, ज्ञानों और विद्वानों को प्राप्त सकता है। और जो केवल शरीर ही का बल बढ़ाता जाये आत्मा का नहीं तो भी राज्य पानन की उत्तम व्यवस्था बिना विद्वत् को नहीं हो सकता। बिना व्यवस्था के सब पापानों ही दुष्ट-कृत विरोध लड़ाई-झगडा करके नष्ट-वृष्ट हो जायें। इसलिए सर्वदा शरीर

और आत्मा के बल को बढ़ाते रहना चाहिए ।

जैसा बल और बुद्धि का नाशक व्यक्तिचार और अति विषया-  
सक्ति है वैसे और कोई नहीं है। विशेषतः क्षत्रियो को दबाऊँ और  
बलयुक्त होना चाहिए। क्योंकि जब वे ही, विषयासक्त होंगे तो राज्य-  
धर्म ही नष्ट हो जायेगा। —महर्षि व्यासजी

—महर्षि वयानन्व

सम्पादकीय--

## व्योम को छूता व्यक्तित्व

कई सदियों की गुलामी के बाद जैसे ही भारतवर्ष स्वामीय हुआ तभी उसमें, नरेश उत्साह, नवीन काव्य की लहरों को लेकर उत्पन्न होता बना गया। जिस देश में स्वदेशी युद्ध नहीं बनती हो सकती उस देश में स्वदेशी उपग्रह, स्वदेशी परमायु, ऊर्जा केन्द्र, बड़े-बड़े धातुय काल कारखाने प्रभाव उत्पन्न करने में भागचिनमरता, थातयाय भार परिवर्तन में सलन, समूचे गाँविया भारतीय हो, के, तोष, देशगाँव, गाँवधान, जलवायु स्वनर्मित हो, कई बार जो भारत सीमा पर मरता है अत्यन्त-आक्रमणों का मूँह ठोस बनाव देकर समस्त विश्व को नोका नुका हो, उस युवा भारतवर्ष की बानसी भीरु सलन होतो बेस दूसरों ईर्ष्यायु सन्तिया युवा नुप बैठ सकेगें ? जी नहीं। वे ईर्ष्या में दण्य शक्तिया भारतवर्ष के स्वनिल महल को बारागीतों सलन के जुदो भी भीर जुदोई। ११ अगस्त १९८४ को प्रेसदोहिर्गों की गाँवयो स भारत माँ का ललन विश्व की नेत्रो प्रियदर्शनी छलनी कब हो गयी। ईश्वरयो ने लुन के साथ भारत कन गया। लता भारी के स्वनिल महल को नील लज्जका गयी। हर दिल बीलता-कराहुन दिखलई। ऐसा जान पड़ जैसे भारत से उसकी गीतयो छीन हो गई और सारे दुनिया में कहीं दूहरो गगनयो नो हो। जो कही से हलकर स्वरार्थित को जा सके। दुर्धन-धनिय सलन लोहो को पावों में कोप का जिंगाहुया फूटने लया। हुँसा का जंगलायुधुलौ फूट पडा। दिलनो के साथ हुनरे धनिय-प्रातो में मा हिसक प्रतिक्रियाएँ हुँई जे हुनरे हल दुर्धनपूषण पो। बाब को बीलभादुर बेर तावतवर्ष में जो राजाव गवा। भारत के प्रथनमनमो नरेश। दिवनी में युधु राहुत जा। बर न माँ का प्रणय पा, बाहु पाकास से भारो बीध पो। हुँदे में उन जगन कवो में एक से प्रणी उठाई दूहरे से देश को गिमेवारी। उसका होसल, उसकी हिम्मत कजवोरी नही पड़ी। देश की प्रावों से प्रकट प्रका पोछे। प्रणी-बेस की उलकनो साथ जलिय हो गयी। एकाएक निवर्तन की बोधना हुँई। भारत की एकातो भार प्रलम्बता की प्रणी कल दूध युवा प्रथनमनमो की शरत की जलना में हुतने बहुमत से जुन जो एक एहिर्गारक भाष्यय बन गया।

[illegible]

सप्तम के भानसुन सत्र के शुरू होने वाले दिन पञ्जाब पर सम-  
झौता अज्ञात सत्र लॉगोवाल के साथ कर लिया गया जिस पर उन्हीं  
देशव्यापी समर्थन मिला। १५ अगस्त को लालकिले के प्राचीर से  
ध्वज देने से चार घण्टे पूर्व असम समस्या का समझौता हो कर लिया  
गया। उस रात प्रधानमंत्री सोये नहीं। सुबह पीने तीन बजे ब्रह्मपुत्र

की बाटी के लोगों के लिए उन्होंने गये प्रभात की तथा स्वाधीनता दिवस की जयपथ में दे दी। १५ प्रभात को जब पञ्जाब में हुल्लूमुर में देखे कोच फंटेरी का प्रधानमन्त्री ने शिलायास किया तो पञ्जाब में चुनाव काच की घोषणा कर दी गयी। इसके साथ चुनाव का मार्ग प्रयास करने में भी उन्होंने कई एक कदम उठाये। निरपराध और विभिन्न अपराधों के पकड़े गये लोगों को रिहाई भी प्रयास करने की गई थीर जब तक लगभग २०० लोग रिहा किए जा चुके हैं।

जिन किसानों ने बिजली के बिल भ्रष्टा नहीं किये थे उनके कनेक्शन न काटे जाने का फैसला किया गया। महाराजा रणजीत सिंह की बरसो भी सरकारी स्तर पर भनाई गई। सैनिक भगोडों की बहाली के आदेश किये गये। लगभग ६०० ऐसे भगोडों को काम पर लगा दिया गया।

कहने का मतलब यह है कि काफ़ी हद तक उधार होकर भी उधेड़ोने समस्याओं की चुनौतियाँ। प्रगतिमानों इसके लिए बेचारी के पात्र हैं। उधेड़ोने वाले उधेड़ने के श्रावनों से राष्ट्र को क्षमताएँ प्राप्त होइए, कहा जा कि सिकंदर महापुत्र विश्वो को पृथ्वी वा रूढ़ा कि क्या भारत की एकता और प्रगतिश्लक मानना रहेगा ? उधेड़ोने कहा बा— भारत को श्रावने उद्वरक विश्वास है और हम किंतो भी दबाव के सामने बूटने नहीं डेठेने वाले हैं। श्री श्रावना माधो की वाणी है नये भारत की प्राप्ताएँ, घससाएँ और शास्त्रविश्वास मुनरित हो रहा है। पञ्चाब और घससाओ की समस्याओं के हल और गुजरात में भारलण विरोधी प्रगतिश्लक को ध्याव नुमये जाने के बाव श्रावना और विश्वास की नई निरूपणे विश्वास है रही।

केकिन इहका यह मतलब नही है कि अब देस के सामने कोई समस्या नहीं रह गई है जो लोग साम्राज्यशासन, जातिवाद, क्षेत्रवाद जैसी ज़रूरी बातें भावनाओं को उभार कर देस में गड़बड़ फैला रहे हैं। उन्हीं इह जाहू के ख़टे से भाकास में मिलीन नही विस्था जा सकना है भास भी मौजूद है। कम तो फिर फिर उठा सकते हैं। पचास बीस से पचास विधानसभाओं के चुनाव का आयोजन बीस वर्ष से अन धाहूत हो गयीं राज्यो में यह ले कोअरिय सरकारो की स्थापना हो गई हो यह भारतीय लोकतन्त्र की बड़ी भास लेती सानी जाएगी। देश को एकता और ब्रह्मचर्या को ज़ुतती देने वाली सलतो के गाल पर यह एक करारा दोबारा पूरा होमा और इसकी इव समय आयोजनसला मां है। शीलका में मिलीनो को भासनी भी भारत के प्रधानमन्त्री के लिए चुनोती है। हमें भासा भी है इतो इवसलान के साथ इव समस्या की भी बरबस मुहममस है। ब्रह्मक के तप्यो से प्रसप्त मिलास है हमारे युवा प्रशानमन्त्री में दूबरे को समजने की भासत उन्हीं प्रांन बात समजने की बरदुख जमत है। प्रधानस्यक मीनासवकी भावना की बातना में सिपसा रल्ले की बजाय शांति को सीढ़ाई के बातावरण में सम-स्थाप्यो का सामना मिलानले में सिपसाव रल्ले है। इसके लिए उनकी मिलती भी प्रसास की जाये मोदी है।

—यशपाल सुधांशु

आज अधिकांश की बार बिना ही सर्वस्वी हुना है हमारे बीकाने को इसका बिनाश और विपन्न कर दिया है कि प्रथम तो सम्भवतः कोई भी व्यक्ति ऐसा नहीं सोच सकता, जो इससे प्रभावित न हुआ हो। दूसरे इससे प्रभावित व्यक्ति कुछ ऐसे नास्तिक और स्वार्थी हो गए हैं कि मानो जैसे उन्होंने अपनी सम्पत्तिपूर्ण स्वार्थ सिद्धि हेतु देश, राष्ट्र और समाज के बहुमुखी हितों की होरी ही कर दी हो। ऐसे ही दुराचारी, दुष्टवृत्तिपूर्ण पापाचारी लोग कामन के कुछ टुकड़ों के बदले देश और राष्ट्र के बहुमुखी हितों को विदेशियों के हाथों बेचने में तैयार मान भी नहीं बनाते। बह बने सरकारी और वैर सरकारी अधिकारी लोग परीको के लिए शिर फिलाने के लिए प्रकाश निर्माण कार्य में लगे बिना सुविधाएँ प्रदान करके अन्धविराट् नुसिबाव वाले मजदूरों उनके निर्माण में निम्न श्रेणी की निर्माण सामग्री का प्रयोग करके लोगों के जान सेवा नुकान बनाते हैं। बड़ा भी उस नीची श्रेणी वाले क्षत्रियतापी नरकावत से नहीं बरते।

भाषणमो में जैनाधिकारियों में, बसों में कारों और अन्य सार्वजनिक स्थानों पर जान सेवा नरकावत बर्ष के न स पर सहस्रो के तुलाहल साक्षात् बूझ बन्धे अमान स्त्री दुष्टों की बाज तेने में जरा भी नहीं छोड़कर करते। दलित, अस्तित्वक लोगों की आर्थिक तथा सामाजिक वसा सुधारने के नाम पर उनसे निराश्रय के समय मत प्राप्त करने हेतु धाराधन की नीति का सहारा लेकर प्रयोग लोगों को पसी पर स्थापित करने में केवल योग्य व्यक्तियों का माला मोटा जा रहा है। बलिक सरकारी सेवाओं में प्रयोग प्रदान कर प्रयोग व्यक्तियों को नियुक्त करने के बर और राष्ट्र का बहुत प्रहित कर रहे हैं। और एम जाति पाणि पर आचारित धाराधन के नाम पर प्रयोगों की पदोन्नति करती और भी प्रयोगपूर्ण व्यवहार है। इसी दृष्टिगत नीति के फलस्वरूप जो नर-सहस्रो का बड़ा महर्षि प्रमाण और राष्ट्र विना मरणात्मा माफी की अन्तर्मुखी मुद्रावत में हो रहा है, वह किसी न छुपा नहीं है। इसी दृष्टिगत वातावरण के प्रभावित सभी वर्गों के लोगों में आचार के मूल्यों को अपने जीवन में से इसे तुच्छ और साहजिक बनतु समझकर ऐसे बाहर फेंक दिया है। मानो जैसे कोई बूझ में से मक्की निकाल कर फेंक दे। देखने में प्रार्थना है कि बीकान का कोई भी लोग ऐसा नहीं रहा, चाहे वह सामाजिक हो या राजनीतिक, आर्थिक हो या अन्य कोई और जा... न दृष्टिगत वृत्ति से प्रभावित न हुआ हो। वह एक महान विपदा का विषय है राष्ट्र और समाज के लिए। सब ऐसी स्थिति में सुधार लाने के लिए और लोगों के विचारों में परिवर्तन लाने के हेतु महा किन्हीं पुष्टों शारंगी और स्मृतियों के आधार सभ-नी कुछ बहुमुख्य अमृत बचन दिये

## देश की वर्तमान पतनोन्मुखी स्थिति में आचार पालन अत्यन्त आवश्यक

—चमनलाल

जा रहे हैं जिनको जीवन में आरह करने से लोग न केवल अपना सुधार कर पावेंगे, अपितु वह राष्ट्र, देश और समाज के नैतिक जीवन में सुधार लाने के योगी बनेंगे। ऐसे ही सुधार की आज अत्यन्त आवश्यकता।

आचारालम्बने आधुना-  
आचारालम्बने विषयम्,  
आचारालम्बने कीर्ति  
मुद्रा प्रत्येक नै।  
सर्वलक्षणहीनप्रति य  
समाचार न्म अमृत,  
अधुनाअत्यन्तसुख सत  
वर्षाणि जीवति ॥

अर्थात् समाचार पालन करने वाले को आनु तथा कालि की प्राप्ति होती है। समाचारी इहलोक एव परलोक में कीर्ति की प्राप्ति करता है। यदि कोई विशेष मूल्य न हो तो परन्तु अमृतारहित अमृत-वीर्य विधान पर पूर्ण अज्ञाता है, समाचारी तो ऐसा व्यक्ति सत वष जीवी होता है।

न स्वे सुखे नै दुःखत प्रहर्ष,  
नाम्यन्व दुःखे नै मर्षति प्रहृष्ट।  
वत्सा न पत्न्यान् मुन्यतेऽनुप्राय,  
न कल्पते सन्तुष्ट्यापरीय ॥

अर्थात् जो अपने सुख में प्रसन्न नहीं होता, दूसरे के दुःख के समय हर्ष नहीं करता तथा जो बान केर पक्षपात नहीं, वह सन्तुष्ट्यापरीय अर्थात् समाचारी कहा जाता है।

पात्राल ह्येव हन्ति नो मर्षते।

अर्थात् यत्र करने वाला पात्र का नाश करता है।

सर्वस्वमात् पात्रानो निमुञ्चते।  
य एवं विद्यामनिहोय नुहोति ॥

अर्थात् प्रतिगहन यत्र करने वाला व्यक्ति पात्रों से मुक्त हो जाता है।

आचारान् सदा पुत्रो  
नदीशपात्रान् पुत्रो।  
आचारान् सदा वन्य  
सत्य सत्य च नारद ॥

अर्थात् आचारान् अनुपम सदा

पवित्र रहता है, पुत्री रहता है। और वन भी प्राप्त कर लेता है और अनुपम वह वन वन्य हो जाता है।

इह वैश्वेदीयस्य सत्यमस्ति।  
न वैश्वेदीयस्योन्मत्तौ विमर्षः ॥

अर्थात् यदि इस अनुपम जीवन में परब्रह्म को जान लिया तब तो कुल्लभ है, किन्तु यदि इस जीवन के रहते रहते अत्यन्त प्रयास के कारण उसे नहीं जाना तो महान विपदा है।

अनेक्यो नै पुष्टो वयन्तु वदति।

अर्थात् नूत जो लोग वाला व्यक्ति अपवित्र कहा जाता है।

नित्य सत्य रतिर्यस्य  
पुण्यात्मा मुमुक्षुः स  
अतो प्राप्ते अनेकान्नी  
स्वीयां शोचति विमर्षः ॥  
स्वकुलस्य समाचार  
कदापि नो विमुमुक्षुः स  
एतस्ते हि सत्ताम्यात  
सुहृत्स्यस्व द्विजोत्तम ॥  
ब्रह्मार्थं ब्रह्म प्रोक्त  
शुद्धिर्नो मुक्तिव क्षित।

(मुमना अपने पति से कहती है) —

ब्राह्मण भोक्त। सदा सत्य कर्मों में विश्वास भगुरान है, जो पुण्यात्मा होकर साधु-जीवता का धाम्य करता है, अमुकात्म के अपनी ही स्त्री के साथ समत होता है, वह स्वयं शोचने में इतर रहता है और अपने

### धर्म की महिमा

जो मुनीवत में नहीं पब्रह्मते के सपत्ताता के विचार पर बह जाते मुष्टो का सितार कर दम लेते राम कृष्ण माफी कहूँगाते काति के बीज कोते बदानम् ब्रह्म माफीर बम जाते देश को महान् बनाते बिक्रमास्तिव इतिरा सत अमर हो जाते नैव से महान् कार्य होते उद्यते रहित व्यक्ति बकार होते

जुस के समाचार का कभी त्याग नहीं करता, समुपम नहीं सम्पाद समाचारी है। यही पुष्टस का महामय है। और यही ब्रह्मार्थ ब्रह्मणो को सदा मुक्ति प्रदान करने वाला है।

दुराचारलो कोके  
महर्षीय मुद्रान् अनेत।  
आचारिद्विषाणि नृपते  
सत्ताम्या सुख समाच ॥

अर्थात् समाचार के पालन न करने से मानव विषयानी, रोगी दुष्टो और सत्ताम्या हो जाता है।

समाचारमे सिद्धयेव  
ऐहिकामुक्तिम् सुखम्।

अर्थात् समाचार के इस लोक तथा परलोक के समस्त सुख सिद्ध हो जाते हैं।

समाचारमे वैश्वमूल्य  
च तथा जनेत।

अर्थात् समाचार के अनुपम वैश्वम और ब्रह्मण को प्राप्त करके महान् वन जाता है।

क्रोध माफी लोभनोही  
अस्त्योय विविधासा,  
अप्राप्तये मानोको  
सुहृदा च  
ईश्यां मुमुक्षा च।  
मनुष्य दोषा,  
वर्षा सदा  
आरहीते मरामान ॥  
एकैक पुष्टोपस्ते ह  
मनुष्यान् मनुजर्षन।  
विश्वमानोत्तर तथा  
मुद्रामात्रिम् सुखम् ॥

अर्थात् क्रोध, क्रोध, लोभ मोह अस्त्योय विविधता अमुता परिमाण शोक, सुहृदा, ईश्यां और निम्न। मनुष्यों के पापे जाने वाले में ब्राह्मण सदा ही स्वात्मने योग्य है। नरभेद जैसे अभाव मूर्खों को मारने का अवसर देता हुआ उनकी राह में लगा रहता है। उसी प्रकार इन में से एक एक लोक मनुष्य का सिद्ध वैश्वम उद्य पर आकाशम् कर देता है।

### वे उठा रहे हैं कदम आत्मघाती

जो रात दिन केवल सेवा करता है जैसे के बम पर अपनी अक्षय विचारते हैं जैसे को अपना देवता ठहराते हैं उससे लिए पाप करने में न उद्युक्त होते ऐसे अनपत्तिनो को न सम्पाद सुख मिलता है उद्यते बिना वे उनका क्षीर पुत्रता है सर्वे न कभी उद्यकी नीव प्राणी है जोवन पत्ताने में मुनीवत बड़ी हो जाती है जो ऐसे जीवन के हैं परिणामी के उठा रहे हैं कदम आत्मघाती

—शकुनचन्द्र गुप्त विशाख







**भारत की शिक्षा-प्रणाली  
दोषपूर्ण है ।**

**भाग-१**

श्रीमप्रकाश त्यागी

[illegible]

भारत विभाजन के पदार्थ मुसलमानों ने अपने देश (पाकिस्तान) को स्वतंत्रिक देश बना दिया और हिन्दुओं के अधिकारों को समाप्त कर दिया। भारत की अपने देश को हिन्दू राष्ट्र धारित कर अकलता, परन्तु कुर्बानियवत इसने ऐसा नहीं किया। इसने जलानों ने अपने देश को 'वेनलूट' घोषित किया और यहाँ के सभी निवासियों को सभी लोगों ने अधिकारों और पूजा की छूट दी।

भारत का वैयव्युह होगा लोगों को  
बख्शा गया। भारत के सभी लोगों के  
प्रतिकार व कर्तव्य एक होगा। इसका  
कमिनी ने भी विचार एक ही किया। सभी  
के लिए एक समान कानून बनाये जायेंगे।  
परन्तु जानता को उस दिन धात्री का क्या  
कि जब सरकार ने शेरव धात्री देश में  
मुस्लिम सीध पर क्रियस्त्र न सवाकर  
उसके साथ मिलकर बहा सरकार बनाई।  
यह सत्यमा लोगों के अस्तित्व के नही  
धार्म।

भारत ने संवसुर वाद के विरुद्ध वेस  
मे हिंमुद्रो के लिए अनेको कानून "हिंनु  
कोड बिल बनाये" तब जानता अतर्क हो  
नई और उसको कह लवा कि संवसुर  
नाम दिखाने के विरुद्ध है। परन्तु कांग्रेस

सरकार की नीति पुरानी ही है। जमता ने बगल बगल भीषण की, और सरकार का ध्यान आकषिप्त किया कि उसे देश के लिए एक कानून बनाना चाहिए दो वही। परन्तु भी अबाहुराजान भी ने अपने मन की बात की और कानून बनाने चले गये। अब कानून मुसलमान और काश्मीर को देकर बनते है।

देश को सब से बड़ा प्राणार्थ उस दिन हुआ जब कि देश में शिक्षा प्रणाली चालू हुई। बाहिए तो यह था कि साठे मकाले की पढ़ाई समाप्त कर भारत की शिक्षा पद्धति चालू की जाय परन्तु सोच कि साठे मकाले को स्वीकार किया और कानून बनते गये।

कानून का सबसे बड़ा दोष उस दिन हुआ जब कि भारत में अल्पसंख्यक और बहुसंख्यक वर्गों में गणराज्य का कानून बनाया गया। अल्पसंख्यक वर्ग ने मुसलमान और ईसाई थे और देश की ८० प्रतिशत धार्य (हिन्दू) जनता बहुसंख्यक वर्ग में गयी। सरकार ने अल्पसंख्यकों की अपने मुलुकी की रक्षा करने, शिखा नियुक्त करने या निकालने, शिक्षा में नामिक शिक्षा देने की जुट दी और बहुसंख्यक वर्ग को यह अधिकार नहीं दिया गया।

कानून का दुष्परिणाम यह हुआ कि बहुसंख्यक वर्ग हिन्दू शिक्षा का दृष्टि से भले भागे हो परन्तु उसको विधार्थी सदाचार भारतीय सस्कृति तथा देशभक्ति से शून्य हो गए। जब कि अल्पसंख्यक वर्ग के स्कुलो में घोर साम्प्रदायिक बन्धे बनन लगे हैं।

[illegible]

सैन्यूसर स्टेट होने के नाते सरकार को एक ही कानून बनाना चाहिए था। शिक्षा के लिए अक्षरसम्यक वर्ष और बहु-सम्यक वर्ष क्या सैन्यूसर की देन है। समस्त मुख्य तथा अग्ररीका में एक ही

कानून है परन्तु आपने वैश्व को संकलित  
नियमित करने वाले स्वयं प्राचरण से  
साम्प्रदायिक हैं। जब सरकार ही प्राचरण  
प्राचरण से साम्प्रदायिक है तो फिर वे  
के विचारों उसकी बात क्यों मानें। नव-  
युग को ये ही साम्प्रदायिकता हिंसा, प्रत्य-  
याचार के बारे में हैं। फिर सरकार इनसे  
कैसे पीछा छुड़ायेगी। जो हमने कार्य  
किया है उसका परिणाम हमें मुक्तता ही  
पसना।

जब ८० प्रतिशत जनता के बच्चे

## दुःख और सुख

(पृष्ठ ६ का शेष)

भलाई के लिए कार्य करता है। उसके लिए तो कोई दूसरा काम ही नहीं। वह बाद में भी ऐसा ही स्वभाव होता है।

महात्मा गांधी धारहे थे। किसी ने  
कह दिया भरे। इस बोरे को उठा कर  
हजर रक्ख। इस जगह यविका का दुख  
बाधमा होला तो कहुला कि यवामि नी  
बाप का तीकरहू यो उठा कर रक्खू  
भाप नी यही जवाब देले परन्तु महात्मा  
नी से छेले उठा कर तीक जगह पर रक्ख  
दिया। जब से उठा कर जग जग नी ती  
यो नातुन हुझा कि ये तो महात्मा गांधी  
हैं। तब तो उसकी बड़ा गणगणान हुझा  
पणगणान ते के कहुल ते पणगणान ते

लेने की दो कोटों बाण नहीं है। तुम ने  
 बचन को ठगने की विधि नहीं मैने  
 को ठग कर उसे पाया तो उस प्रकार  
 सुन्दरी को मरब देना धावनी का  
 नैर्लज्य है। वहाँ को काम मनुष्या की ने  
 का पैरों के लिए नहीं किया।  
 का धावने को भी किसी को मरब के  
 कुछ ठग न रहना चाहिए। किनि  
 काम लहने के हिल के लिए है, अपने  
 के लिए नहीं। मरुति धवामन न  
 ननेनवा सुख इया? कुछ नहीं।  
 नेने सारे सवार के सुखों को छोड  
 की हलमत ने सारे काम को छो  
 वर स्वी यर्ष प्रचार किया / उनकी वि  
 है कामन नहीं। यदि कोई काम  
 को सवार के कण्याए ओर मरुति की  
 चाहते है कि सवार सुखमय हो जाये  
 का है कि "अन्तिमपुत्रा सु  
 का" भा।

अपने मनमाते ढंग से पढ़ रहे हैं और अल्प-संख्यक वगैरे के बच्चे घोर साम्प्रदायिक बन रहे हैं तब सरकार स्वयं माने कि यह देश मे एकता और सुरक्षा कैसे लायेगी उसकी भीलो का कोई अर्थ नहीं है। सरकार को यह बात समझ लेनी चाहिए कि उसकी भूल के कारण भारत के प्रत्येक प्रान्त मे अशांति है।

भारत की शिक्षा दोषपूर्ण है। इसे सैक्यूलर के अनुकूल होना चाहिए। ऐसे होने पर ही वैश्व एकता सुरक्षा तथा सरकार की नीति का पालन करेगा अन्यथा कुछ नहीं होगा। सरकार की उक्त दोषपूर्ण नीति का कुपरिस्राम यह हुआ कि—  
१ वैश्व की = प्रतिष्ठत जनता के बच्चे ऊँ पढाए गए रहे हैं।

२ मुसलमान ईसाई के बच्चे धोर  
साम्प्रदायिक बन रहे हैं ।

३ प्रधानमंत्री की घोषणा देश की एकता व सुरक्षा कैसे चलेगी।

४ समूचा देश अलग-अलग के चक्कर में है और नवयुवक ही हिमक बन रहे हैं।

जावगा धोर फिर उसके धाप धरर भी पड़ सीजिए। धाप उनको पड़ सकन हैं। लेकिन इस कागज की पुष्टिया भी धाप बाध सनन है? नही जरू हवा की सहर धाई कि वह उठ जाएगा। उरह यदि रस्मी को ख्या दो सी नू न जावेगी, जल जाने पर भी उसके बट बैस ही नजर धावेगे। पर उससे किसी चीज को नही बाध सकने।

इसलिए मुझ भीरु दुःख से भ्रमण हो गये। गरीर पर कुछ उसका धर्म नजर आता है। यह भी होगा कोई परवाह नहीं। यह भी प्रारंभ की वस्तु है। पर अन्त में—

गरुडस्त्यमूढा पदमभ्यय तत् ।

अमृता = मोह रहित । जो मोह से रहित हो गये और जिन्होंने निज स्वरूप को जाना व 'मच्छन्ति अमृता पशुं सव्य तत्' उस पद का जो 'सव्य' है प्राप्त हो जाते हैं ।

दोनों ही मार्ग ध्वज हैं कोई किसी मार्ग में जाता है, कोई किसी मार्ग से जाता है। उसके विषय में—

कर्मजं बुद्धियुक्ता हि  
फलं त्यक्त्वा मनीषिणः ।  
अन्धबन्धविनिर्मुक्ता  
पदं गच्छन्त्यनामयम् ।

निर्माणोद्वा बित्तसम्बन्धो,  
अध्यात्मनित्या विनिवृत्तकामा ।  
द्वन्द्वविमुक्ता सुखदुःखसङ्ग-  
गोष्ठ्यन्तर्गता पदमव्यय तत् ॥

कामुक को प्राप यथा हो । अस

## सम्पादक के नाम पत्र

## “मुस्लिम पर्सनल लॉ : विरोध क्यों”

भारतवास के सर्वोच्च न्यायालय ने जब से सलाह दी है मुस्लिम महिलाओं के अधिकारों के सम्बन्ध में निलुप्त विधा है तब से इस देश के कट्टर मुस्लिमों द्वारा हम के नाम पर उसका प्रतिपादक करवाने में परितन्त्र की भाग की आ रही है। उन्होंने निरुद्ध ईश्वर को शरीरवाचकता हीस के रूप में बिरोध स्वरूप मनाया। कई-बाना पर २ सके विधि मुस्लिम जनमत को दमिस्त कर मिहाना क समानता के अधिकारों को क्षीनने का प्रयास किया है। है तब उसका यह प्रयास कडिाविला धर्मविषयत एव धर्मचरता कोषक है।

वास्तव में इस्लाम ने नारी को वासता का प्रतीक बताया है, जिसका स्पष्ट उल्लेख नबाव खतारी के पाँच डा० आनन्द सुमन (पूर्व डा० रफत अल्लाक) ने वैदिक यम में कीलित होने के पद्य में "मैंने इस्लाम क्यों छोड़ा तथा इस्लाम के नारी में इस प्रकार किया है ---

“रत्नवला (मासिक बर्ष में २५०)  
को कहु नो अप्रविष्ट है दुष्कर रको । मरुतु  
खय मे उलझे पास मत जाओ, जब तक  
कि वह पं न हो ५ । तुम्हारी  
बीविया दुष्कर लिए छेतिया है । बस  
जाओ जिस तरह चाहो ५ न सेन २  
मुम को मल्लाह लगव (अथ) हाथ मे  
लेही पकड़ो । सिरार २ सूत्र २ प्रायत  
२२२, २२५ । २२५ ।

इस प्रकार यद्यपि राजस्वला काल में कृषी स्पष्ट वजित है तथापि धोरत की बेती समझकर इच्छानुसार प्रयोग करना स्पष्ट मात्र काम वासना पूर्ति की प्रवृत्ति का चोतक है।

पुन कुरआन मे घोरत को जो इर्जा दिया गया है वह आयात १८७ सूरत २ सिफारा २ मे इस प्रकार है— जरारोजे (उपवास) की रात तुम्हारे लिए हलाल की गई। मदनीन्सब करना अपनी पत्नियो से।

इतना ही नहीं भारत के साथ मित्र  
प्रकार के व्यवहार का भी आदेश इस्लाम  
ने दिया है

“तुम रहो सिर्फ घर में,  
बाहर न निकलो घर से”

कुर्रआन— २२ ३६ ३८

उपयुक्त उदाहरण ही स्त्री जाति के स्थान का पर्याप्त विवरण प्रदर्शित करता है। स्त्री— माता, बहन, पत्नी, पुत्री सब कुछ है। प्राचीन काल में हमारे देश में भार्या, मैत्रेयी विद्योत्तमा, सीता सावित्री दमयन्ती आदि नारियाँ हुई हैं। वह

हमारे लिए धार्य हैं। इसीलिए अनुस्मृति में कहा गया कि 'यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रजन्ते तत्र देवता। परन्तु इस्लाम में नारी का जो स्वरूप प्रस्तुत किया है उसके कारण धात्र मुस्लिम महिलाओं में जाग्रति धार्य है तथा सर्वोच्च न्यायालय के निषय न उसमें द्विमुष्टि उत्साह का सचार किया है।

हम रे मुस्लिम बहुधो को इस सज्जा रे से इ-कार नही करना चाहिए और बतमान वैज्ञानिक युग रे सामाजिक, व धार्मिक स्थिति क परित्रेख रे धपने बुद्धिकोश तथा व्यवहार रे परिवर्तन करना चाहिए। यदि सर्वोच्च न्यायालय का निराय धार्मिक हस्तक्षेप के रूप मे माना जाता है तो मुस्लिम कानून की बर संहिता को भी तारे मुस्लिम बहुधो को स्वीकार करनी चाहिए।

भारत सरकार को भी इस दृष्टि से  
चिन्ता पर ऐसे कामों का आयोजन  
करना चाहिए। भारतवर्ष में ऐसे  
उत्सव प्रत्येक नागरिक भारतीय है और  
उनके ऊपर एक समान काम लागू होना  
चाहिए। इस देश में गरीबी का  
है, परन्तु इसका यह धर्म नहीं कि गरीब  
के स्थिति स्थान रूप से धर्म सुविधाजनक  
कामों का निर्माण एवं पालन करे।  
प्रत्येक धर्म का ऐश्वर्य भाग्यवीर्य कल्याण  
है। अतः यदि भाग्यवीर्य की दशा, विश्व-  
प्रियता, शांति प्राप्त की है कि कोई  
निमित्त प्राप्त दशा नष्ट न होवे तो वह कि  
अन्य-भी लब्ध महान् प्राप्ति का मे-  
धावान् कराने वाला धार्मिक वास्तव न अन्य-  
विचारका भाग्य प्राप्त।

जस्टिस एम० एच० बेग ने सर्वोच्च न्यायालय के साहू बानो के केस में स्पष्ट तथ्य व्यक्त किया है कि सुप्रीम कोर्ट के फैसले के विरुद्ध प्रान्शोलन पूर्णतः अनुचित है गुमराह करने वाला है। यह निश्चित रूप से हमारे सविधान की सामाजिक, धार्मिक व राजनैतिक मूल्य को नुकसान करने की सैनैधानिक योजना के फल में नहीं बैठता। सच्चा प्राक्कश ऐसी बातों को नहीं बल्कि पालड़, प्रज्ञा तथा व संतानों के विरोध के केन्द्रित होना चाहिए।

भाषा है न्यायपालिका की गरिमा नारी-सम्मान की भावना को दृष्टि में लेकर हमारे देश के नागरिक विचार रहे तथा भारत सरकार भी सारे देश समस्त भारतीय नागरिकों हेतु एक-मान संहिता का निर्माण करेगी।

अवधी  
(सुरेन्द्र "शास्त्री")  
५८७, मुठ्ठीमन, इलाहाबाद

श्रीमान जी,

भारत में मुसलमानों की संख्या खोरा  
जुलूस से जबरदस्ती करने से बढ़ी वरना  
जब कासिम ने सिन्ध पर हमला किया।  
उस समय उसके साथ ४००० मुसलमान  
थे। लेकिन धाक कम ज्यादा करके मुस-  
लमानों की संख्या १२ करोड़ के लगभग  
है। जब कोई पूछे कि मुसलमानों की  
संख्या कैसे बढ़ी।

१ यह कि कासिम, गौरी, कुतुबुद्दीन एक, अन्तमस, अलाउद्दीन खिलजी, लोधी, अहि ने जब भी मौका मिला हिन्दुओं को जबरबस्ती मुसलमान बनाया।

२ यह कि उन्होंने हथियार लेकर लोगो को डरा धमकाकर बबरदस्ती मुसलमान बनाया जो कि तलवार के जोर से मुसलमान बने ।

३ कई बावसाहो मे एक सरकुलर  
निकास, वा तो नौकरी मे लगे हिन्नु  
मुख्तमान बन जाए। वरना उन्हें कत्त  
कर दिया जायेगा।

५ बहुत से बादशाह जाना तब  
साते थे जब किसी विशेष सस्या में हिन्दुओं  
को मुसलमान बना लेते थे । इस प्रकार से  
बाबर, हुमायूँ, अकबर, जहांगीर और  
शाहजहाँ आदि ने भारत में गुरु हत्या

मिनिस्टर का आदेश नहीं चाहिए,  
कुछ सेवा पानी करो

सादर नमस्ते ।

थापको स्मरण होगा कि इस थापको  
 २६-७-५० को ह्व-० बी सहित माफक  
 की के साथ मिले थे। थापको महासच  
 नुनीमान बैरिटेन ट्रस्ट के लिए दूजाय  
 के सम्बन्ध में थापसे प्रार्थना की थी।  
 थापसे प्रादेश के अनुसार की के-० बी-०  
 वसल, उपनिदेशों में अपने पत्र सत्या  
 १/१/५१ पी-एच-० एं-० बि-० २६/७/५१  
 अनुसार प्रादेश की जारी कर दिये थे।

मैं श्री मिनल जी का भावेष प्राप्त होने पर ७-८-८५ को कमसियस आफि-  
र (प्रबन्ध) सं प्रिमा था। उन्होंने हमारा  
च लेकर बेमूढ में आपको बुरा बला  
होते हुए उस पर भावेष जारी किए थे।  
इसी कारणवश मे दिल्ली से बाहर चला  
था।

बहा से लौटने पर कस १६-८-८३  
जब मैं उनसे पुन मिला तो उन्होंने  
मिनिस्टर साहब के कहलवाने से  
उनके आदेश जारी करवाने से टैनी-  
म बोले ही मिस जाते हैं जब तक सेवा  
न की जाए। मैंने आपकी फाइल  
इंस्टैंट जनरल मैनेजर की ए० के०  
को भेज दी है। की ज़रूरी की है

बद की। परन्तु औरगजेब के समय गऊ हत्या व अजिया दोमारा लगा दिये गए।

५ हिन्दू बच्चों, धीरतो ब लोगों को पकड़कर अपने बैग में ले गये जहाँ पर उनका मुख्य टका बग़ाया गया। इस प्रकार से हिन्दुओं की धाबादी कम से कम होती गई और ज्यादा धाबादी मुसलमानों की होती गई।

१ यह कोई विचार नहीं कि, कोई हिन्दू तर्क विचार करके मुसलमान बन जाए। इसलिए एक पाकिस्तान बनने के बावजूद हिन्दुओं को डर है कि मुसलमानों के लिए दूसरा पाकिस्तान न बन जाए। क्योंकि धरम देवों न धरमा बु-ब मैंसा था रहा है। जिसके सामने वे धाकर हिन्दू मुसलमान बन रहे हैं। इसके धमामा हिन्दुओं पर परिवार नियोजन लागू करके सरकार न ठीक ही नहीं किया। बल्कि परिवार नियोजन का मसला हिन्दुओं को मुसलमानों पर एकसा मांग होना चाहिए।

भत प्रार्थना है कि सारे मामले की जांच रबताल की जाए। और हिन्दुओं के साथ न्याय किया जाए।

जयदेव गोयल  
पत्रकार जीव्य

पास जब मैं गया तो उन्होंने मुझे धकेले  
मे कहा कि आपका कर मुक्ति प्रमाणपत्र  
३१ मार्च १९८३ तक का है। या तो  
आप घागे का प्रमाणपत्र ले आइये या  
हमारी सेवा कर बीजिए।

मैंने भी गुप्ता से कहा कि यह तो विशेष सेवा है इसे टेलीफोन विच खा है, यदि सामान्य सेवा में भी यदि लिनि-स्टर साहब टेलीफोन दिखाना चाहें तो वे सकते हैं। इससे बाब भी मैंने उनसे निवेदन किया कि मैं आपकी लिखित देने को तैयार हूँ कि हमने घरे के लिए कर मुक्ति के लिए प्रार्थना पत्र दिया हुआ है, घारे पत्र आपको दे दिया जायेगा। परन्तु जब बिना सेवा के कार्य करने को तैयार नहीं हुए।

उसके साथ मे जपमहाप्रभम्भक की  
मुहुरी सफेता की से मिलने गया तो उनके  
निजी सचिव की जैन ने कहा कि सायब  
का नाम १५-६-५६ मिलने को मिलने है।  
सायब का नाम २-६-५५ को धारणा।  
उस दिन सायब मिल ले, क्योंकि मुझे  
पता चला है कि कमणियल प्राप्तिवर तथा  
मालिस्टण्ट मेनेवर के साथी ने सायब  
उन्हें धुपित कर दिया बा कि इन्हें मिलने  
दिया जाये।

(सोप प्रष्ट ३ वर)

## स्वामी दयानन्द—एक सत्याशी योद्धा

(पृष्ठ ३ के आगे)

समाजियो ने बगल में मुलाबा दी। वह सितम्बर १८७३ में मृत्यु कलकत्ता में। तब वह बेवेनगन टीगेरी और कैलाशपुर में थे। कैलाशपुर सेन दयानन्द ने बहुत पसन्द किया। हुन्ना और हुन्ना प्रकट की कि यह दयानन्द अपने ही जाते ही यह उद्देश्य विदित ने ले जाते। दयानन्द ने कहा कि कैलाशपुर सेन संस्कृत जानते और वह दयानन्द का ध्यानानुकरण करते। दयानन्द ने सेन की सहाय्य मानकर अपना सारा कार्य संस्कृत की बगल दिगो में करना शुरू कर दिया था।

बाद में यहाँ में दयानन्द और ब्रह्म-समाज में नेह दिने अधिक वह गये कि ब्रह्मसमाजियों ने दयानन्द की सहाय्य में हुन्ना पर उनके भाषणों का व्यापक किया और दयानन्द ने रहने की व्यवस्था की एक मुस्लिम सर्वशेष के घर करीबी की। यह उद्देश्य उपाय बड़े कि बाहरी में ब्रह्मसमाज के सत्याशी की दयावशिव मजोरिया ने लिखा है कि दयानन्द के सहाय्य की उनके दृष्ट नया अन्य सत्याशी ने निकाल बाहर किया गये।

किरी की दयानन्द के बहुत से बगली प्रसक्त ने और यह उल्लेखनीय है कि दयानन्द की जीवनी लिखने वालों में बेवेनगन मुन्नीरामयने, जिन्होंने सदा, मृत्यु परितः (१८६९) धारणें सुधारक दयानन्द और सिरजानन्द परितः लिखे। मुन्नीरामयने ने विभिन्न स्वामी की यात्रा करने ऐसी सामग्री इकट्ठी की थी जो कहा कि जीवनी केक की पासीराम के लिए बहुत उपयोगी छिड़ हुई। श्री पासीराम ने दयानन्द की जीवनी बेवेनगन मुन्नीरामयन और प० सेलराम की उद्देश्य पर आधारित की है। दीनबन्धु के इस गये कि दयानन्द के बगली प्रसक्तों ने कुछ महत्वपूर्ण टिप्पणियाँ लिखी थी, इसकी व्यवस्था नहीं माना जा सकता। उन्होंने बगली में की इन्टर-चर टिप्पणियाँ उल्लेख की, जो उद्देश्य के आधार पर दयानन्द की जीवनी लिख दी। १८५८ से १८६० तक के सबंध में दीनबन्धु का

कहना है कि स्वामी की बगली, फरवरी १८५७ में बगल और मुन्नीरामयने ने और बगलकोषकर में मार्च १८५७ में थे। वह कानपुर युद्ध की पहली। मसकर बाद मृत्यु २२ की और कानपुर और दयानन्द के बीच मृत्यु २३। मृत्यु, मृत्यु जीवनी १८५० में वह बिरवापुर में थे। मुन्नीरामयने में और सितम्बर में किम्प्रायण में थे। मसकर में वह मसकरवद और बगल में थे। उनका कहना है कि इसके बाद भी यह रोवा विने में मसकर के अंत तक पहुँचे थे। रोवा में उस समय बगल सर-बार का राज्य था। रोवा की जीवनी ने मसकर, सितम्बर १८५७ में विद्विह किया।

दयानन्द ने सत्याश्रमकाल में मुनि मुन्ना के संबंध में लिखा है कि १८५७ में वह बगल सितुर के आसपास रहते थे, उन्होंने यहाँ का विचार किया और बगल में उनके परिवारों पर बन बरखाये। 'मुन्नीराम प्रतियोगी बगल को बगल के लिए उस समय क्या कर रही थी। वह मसकी तक भी नहीं सार सकी।' दीनबन्धु का कहना है कि दयानन्द द्वारा वह विवरण ऐसा बताया है जैसे उनकी स्वयं की छाती में। उन्होंने यह ही कहा है कि दयानन्द लगभग उन्नीरामयन पर चले गये। पर उस समय वा कुछ बाद में भीषण युद्ध हुआ। यह विचार था कि बगल रहा है कि महर्षि दयानन्द ने स्वतन्त्रता प्राप्त के प्रथम और ने भाग लिया था। बगल में, इस क्षेत्र में अजर विने गये ऐतिहासिक समय यह कहते हैं कि दयानन्द ने इस पहली बगल में सक्रिय भीषण दिया, उन्होंने लोगों की प्रेरणा दी तथा गले ही भारतीय इस पहली बगल में हार गये हों पर उनके धन्य एक ऐसा विचार जागत हो गया था कि वह गयेजों की व्यवस्था उकाह संकेते। दयानन्द ने सर्वन स्वराज्य की ही भग्नता बताया और बाद में हुने स्वराज्य विना भी। महात्मा गांधी को मार्ग दिखाने वाले वस्तुक दयानन्द ही थे।

स्टेटसमैन ने साधार

## मिनस्त्रि का आदेश

(पृष्ठ ६ के आगे)

अब धार ही बगल कि इस प्रस्ताव का की कैल गये हो सकता है। क्या दयानन्द के कार्यकर्ताओं को भी ऐसे प्रष्ट तरीके अपनाने चाहिए। यदि इसके विचार में ही इसके आधार की इस प्रकार से व्यवस्था की जाती है, और अधिकतर उकाह जाती है, तो धार को क्या होगा होगा, इसका आदेश बगल गये।

अतः नेत्र धारके अनुपेक्ष है कि धार इस मामले की जीव कथन और ऐसे

प्रष्ट लोगों के विचारक कड़ी कार्यवाही करें, जिससे नीचे वाले अधिकारियों को भी सबक हासिल हो सके।

ई धारा करता है कि प्रस्तावकार मिनस्त्रि में धारसमाज के उलाही कार्य-कर्ताओं, विधुनि विचार रिषल के काम करने की कथन उकाह रही है, का उकाह बगल के लिए उपायुक्त अधिकारियों के द्वारा की कार्यवाही करें।

जयवीर

भीमप्रकाश धार, मंत्री

## निराशावादी सत्य

(प्रथम पृष्ठ का लेख)

किवा और बहारादच, गोण्डा वाराणसी के धर्मोत्तरण की समस्या की और ध्यान धारकित किया। उन्होंने बताया कि केन्द्रीय सभा पर्व का दूधमास से धारोत्तरण करनी है। इस इस वर्ष दिल्ली में धार्यसमाज दीवान हाल की स्थापना शास्त्रीजी मयावी जायेगी। हमारा विश्वास है कि धार्य वीरों के शिखिरी तथा प्रसिद्ध के माध्यम से ही धार्यसमाज के धार्योत्तरण को गति प्रदान की जा सकती है। सार्वदेशिक धार्य प्रतिनिधि सभा की अन्तरम मभा की बैठक में भी महत्वपूर्ण नियमकथावीर दल को ऊर्जा प्रदान करने का ही हुना है। दीवानहाल की ओर से एक हजारा धार्य वीरों का शिखि इस वर्ष दिल्ली में लगाया जायेगा।

अब हम इनके महत्वपूर्ण कार्य कर रहे हैं। हमें निर्वाचनों के समय शास्त्रि, सद्गुह्य और एकता से काम लेना चाहिए।

धार्यसमाज मन्त्रि हनुमान् रोड नई दिल्ली में धार्य केन्द्रीय सभा का वार्षिक धार्योत्तरण सभा प्रधान महा-शय धर्मपाल जी की अध्यक्षता में हुआ। गांधीजी मन्त्र के परवात् महा-मन्त्री श्री सूर्यदेव ने सप्त सदस्य थे सन्नि-मानक, श्रीमती गीताञ्जली माकन, श्री बालकृष्ण खन्ना, श्री पाठक, श्री प्रतापसिंह (करनाल), आदि के नियम पर शोक प्रस्ताव रखा। सभी ने सबसे होकर दो मिनट मीन रहकर उन्नी अश्रावलि दी। तत्पश्चात् श्री सूर्यदेव ने मभा के वार्षिक धार्योत्तरण को कार्यवाही की प्रस्तुत किया। प्रिंसिपल श्री भीमप्रकाश ने कहा कि श्री मेरे साथी कुछ समय से मसुदा कर रहे हैं कि कार्य में स्थितिस्था आई है। इस बात का उपस्थित सदस्यों ने विरोध किया और कहा कि कार्य बड़ा है और धार भी बढ़ना चाहिए। श्री रामनाथ सहाय, श्री मामचद रिवाजिया, श्री राज सिंह भल्ला, श्री विजय गुप्ता ने कहा कि धार्य केन्द्रीय सभा का गत वर्ष का कार्य प्रशंसनीय है। सभी ने तालियो से इस बात का अनुमोदन किया। सभा को वार्षिक रिपोर्ट सर्वसम्मति से सपुष्ट हुई। इसके बाद धार्य-अध्यय विवरण और बजट प्रस्तुत करते हुए महामन्त्री ने बताया कि जब हमने सभा सभा की उस समय इनके पास ६,००० रुपये का फिक्स डिपोजिट और लगभग ८०० रुपये का कर्ज था। आज इसके पास ११,००० रुपये का फिक्स डिपोजिट तथा सात हजार रुपये कोष में है। धार्य सत्य विवरण तथा बजट सर्वसम्मति से पारित हुआ।

डा० धर्मपाल मन्त्री ने प्रस्ताव रखा कि धार्य भी दिल्ली की सभाओं की सभा को देखते हुए हमें अन्तरम मभा के सदस्यों को-सभा ३१ से बढ़ाकर ४० कर देनी चाहिए। इस प्रस्ताव पर श्री रामनाथ सहाय ने कहा कि वार्षिक बैठक से सविधान सभाधन का कार्य नैसर्गिक सभा में किया जाना चाहिए, यदि कोई वैधानिक प्राप्ति न हो तो सभाधन इसी साधारण सभा की बैठक में पारित कर लिया जाये। उन्नी बताया गया कि वार्षिक साधारण सभा सर्वोच्च है और आज धार्य-समाज कोरम भी पूरा है। तीन वर्ष पहले सविधान में सभाधन किया गया था। अतः यह सर्वोच्च प्रस्ताव स्वीकृत कर लिया जाये। श्री राज-सिंह भल्ला श्री मामचद रिवाजिया श्री रामनाथ सहाय, श्री राजपत राय आदि मान्य सदस्यों ने इस प्रस्ताव का मर्मन किया। यह प्रस्ताव सर्वसम्मति से स्वीकृत हुआ।

इसके पश्चात् सभा प्रधान महा-शय धर्मपाल ने सर्वनाम कायकारिणी के कार्यकाल की समाप्ति की घोषणा की। सामयिक प्रधान के लिए श्री भीमप्रकाश श्री रामनाथ ने लावा रामगोपाल धारनाम का नाम प्रस्तावित किया। श्री राजपत राय तथा धार्य अनेक सदस्यों ने उनके नाम का अनुमोदन किया।

लावा रामगोपाल धारनाम ने सामयिक प्रधान का पद ग्रहण किया। सारा सभाधार तालियो की सहाय-हट से गुज हुई। उन्होंने मान्य सदस्यों की सगतिन रहने की प्रेरणा दी और प्रधान पद के लिए नाम आमन्त्रित किए। श्री हरबसिंह खेर ने महाशय धर्मपाल जी का नाम प्रस्तावित किया। श्री रामशरणदास धार्य और श्री राजपत राय ने इस प्रस्ताव का अनुमोदन किया। लावा जी ने दूसरा नाम आमन्त्रित किया। कोई नाम न धाने पर उन्होंने सर्व-सम्मति से महाशय धर्मपाल को सभा का प्रधान निर्वाचित घोषित किया। सभी सदस्यों ने ताली बजाकर अपनी प्रसन्नता व्यक्त की। श्री राजपत राय, श्री राजसिंह भल्ला आदि ने प्रस्ताव रखा कि कार्यकर्ताओं के गठन का कार्य महाशय धर्मपाल जी को ही सौंप दिया जाये। लावा जी ने कहा कि महाशय का चुनाव भी धार्य धारी कर लें। श्री ईश्वरचद धार्य, श्री रामशरण दास धार्य ने भी यशोकि कुमार सहाय का नाम प्रस्तावित किया। अनुमोदित किया। सभी ने कतल अर्जिन से इस प्रस्ताव (विष पृष्ठ ११ पर)

महर्षीय  
(श्यामसुन्दर बिरजानी)  
मन्त्री





पुस्तकालय  
प्रगल्भ कान्ही विश्वविद्यालय  
दुर्गापुर

२८/१/८१

साप्ताहिक

ओडम

कृष्णवर्ती दिवसमार्गम्

# आर्यसन्देश

वर्ष १ प्रकाश ४१

दिवस, १ सितम्बर, १९८१

सृष्टि संवत् १९७२६४८०५६

मासवत् २०४२

वर्षागमात् १६१

पृष्ठ एक प्रति १० पैसे

वार्षिक २० रुपये

मासिक २०० रुपये

विषय से ४० हजार, १० लीट

## प्रधानमन्त्री द्वारा माता चन्नन देवी धर्मार्थ नेत्र चिकित्सालय के कार्यों की सराहना

गर्भ १ विली, २६ अगस्त १९८१

आज भारत के प्रधानमन्त्री श्री राजीव गांधी जी ने माता चन्नन देवी का गर्भार्थ नेत्र चिकित्सालय, जनकपुरी, गैर विजयी द्वारा कीमती दवाओं की की १०००० रुपये के उपकरणों में भारत १९ अगस्त १९८१ तक प्राप्त किए गए 'नेत्र ज्योति बचानो' अभियान का शुभारम्भ करते हुए चिकित्सालय की टीम को धन्यवाद दिया तथा प्रदान किया।

हृद टीम ने चिकित्सालय के ६ डॉक्टर, ७ नर्सों के प्रतिष्ठित सांख्यिकीय कार्य प्रवर्तिवि सभा के मान्य प्रधान माना रामचरण साहू, कृष्ण केन्द्रीय स्वास्थ उपमन्त्री सुधी कुमुद बैंन कोठी, कृष्ण सख सत्य की हुरदास की केपल, विजयी कार्य प्रवर्तिवि सभा के प्रधान की सुदीप, महापत्नी डा० बर्षा, धर्म केन्द्रीय सभा के प्रधान महापति बर्षा तथा अन्य कई मान्यमान्य व्यक्ति सम्मिलित थे।

चिकित्सालय के सचिव श्री प्रोम

प्रकाश धर्म ने श्री राजीव गांधी जी को पिछले पांच वर्षों में कीमती दवाओं के अन्य दिनों के अन्तर्गत पर किए गए कार्यों की रिपोर्ट तथा अन्तर्गत चिकित्सालय द्वारा किए गए कार्य का सविस्तर विवरण दिया। धर्म ने श्री सहायता दिए इस वर्ष कीमती दवाओं की के अन्तर्गत पर दिल्ली के १६ ग्रामों में जा डॉक्टर नेत्र परीक्षा किये जायेगे। १६ हजार लुकी बचों के लुकी ने जा डॉक्टर नेत्र परीक्षा किये जायेगे १६ हजार नेत्र सुरक्षा सम्मेली निवस प्रधानमन्त्री जी के पिता एम सन्देश सहित

प्रकाशित काराकर विवरित किये जायेगे तथा इस अवसर पर बचन १०० नि-लुकी नेत्र आयेस्तन किये जायेगे।

प्रधानमन्त्री श्री राजीव गांधी जी ने चिकित्सालय के कार्यों की सुविधा-सुविधा प्रदान करते हुए चिकित्सालय के अधिकारियों तथा डॉक्टरों का कल्याण किया।

प्रोमप्रकाश धर्म  
चिकित्सालय सचिव

## आर्यसमाज दीवान हाल का वार्षिक अधिवेशन सम्पन्न १६ द५-८६ के लिए पूर्वाधिकारी पुनर्निर्वाचित

आर्यसमाज दीवान हाल का १००वां वार्षिक अधिवेशन २५ अगस्त को श्री पूर्णेश प्रधान की अध्यक्षता में सौहार्दपूर्ण वातावरण में सम्पन्न हुआ। गते वर्ष के प्राय-अध्यक्ष की लक्ष्मि ने वर्षा-प्रधानी विस्मय के अन्तर्गत आने वाली शताब्दी के कार्यक्रम को अंतिम कर दिया तथा गत वर्ष के अधिकारियों एवं अध्यक्ष वरिष्ठों की अध्यक्षीय वर्ष १९८१-८६ के लिए निर्वाचित कोषित किया गया।

## आर्यसमाज दीवान हाल शताब्दी समारोह की तैयारियां प्रारम्भ

आर्यसमाज दीवान हाल दिल्ली के मन्त्री श्री सुलचन्द्र मुल की बोसला के अनुसर आर्यसमाज दीवान हाल शताब्दी समारोह के कार्यक्रम १६ सितम्बर के ३१ सितम्बर तक प्रगताप से सम्पन्न होंगे। जिनमें सुदीप, पारायण बस रायण, लेखन सविधियाँ, श्री क विज्ञानों की संवेष्टिया तथा विविध समेष्टियों का आयोजन होगा। समारोहस्थल पर अनेक

प्रदर्शनीय भी आयोजित हो जायेगी। जिनमें आर्यसमाज दीवान हाल के कार्य एवं आयोजनों को स्वरूप कराती अर्थिया होगी। इस अवसर पर अर्द्ध अन्तर्-स्थापिका, अनेकों युवकों, कृष्ण और कोषस्थ का अन्तर्गत किया जायेगा। बहा पुरातन धर्म-साहित्य प्रदर्शनी का भी आयोजन होगा।

पाठक वृन्द ध्यान दें  
आर्यसमाज दीवान हाल का ८ सितम्बर का प्रकाशित दिनांक के रूप में प्रकाशित होगा। अन्त इस बार का प्रकाशित समाचारों के लिए श्री-१२ पेज का प्रकाशित किया जा रहा है। १५ सितम्बर का प्रकाशित समाचार प्रकाशित किया जा रहा है। १५ सितम्बर के आर्यसमाज हृद सहाय नवीन लेखों और कोषस्थ धर्मों के साथ अन्तर्गत समाचारों के साथ प्रकाशित होता रहेगा। सम्पादक, आर्यसमाज





युवा वर्ष को उपलक्ष्य म

६.४५ से रात्रि ८ बजे तक

भाषण-पत्रियोगिता

विषय श्रीकृष्ण क्यो महान् थे ?

श्री कृष्ण जन्माष्टमी पर ८ से १० बजे तक  
मुख्यकार विद्यारण्य श्री प्रसन्न नरेन्द्र प्रभात सम्पादक दलिक वीर धवन साध्य  
सार्वजनिक सभा ८.३० से रात्रि १० बजे तक

मुख्य वक्तागण

डा० बलराम धाय महाम श्री दिल्ली प्राय प्रतिनिधि सभा  
श्री प्रेमचन्द गोवाल धाम्यल सा० रामचन्द्र प्रभात नान बर्माज ट्रस्ट तथा बाजार  
साक्षा किशोरी लाल प्रसिद्ध सभाय लकी धामसमाज शहर बाजार  
श्रीमती प्रकाश य र्वा महाशिवि प्रतीय प्राय महिला तथा दिल्ली र य  
श्री केचनकृष्ण ठेठो शविष्य प्रायसमाज प्रताप नगर  
श्री धर्मल कुमार धाय महाम श्री के टीय प्राय मुख परियद दि० श्री प्रवेय  
प्रायय वैयवस्य साक्षी उपयवासाधाय सा० मोक्षिदराम पुत्रुय कीर्तिलाल लैकण्यरी  
स्कूल राम बाग रोड  
श्री सुमल किशोर सवासक वैदिक मुद्राणायक धामसमाज पुन बग  
श्री बमवीर प्रभात के टीय प्राय मुख परियद दि० श्री प्रवेय  
य० सुशी राम खर्वा अधिपत्या महासम पुनीलाल नेत्र प्रचार बर्माज ट्रस्ट

नोट— श्रीमती प्रकाश धाय प्रायय वैयवस्य साक्षी श्री बमवीर श्री वासल प्रति  
योगिता के निधायिक होये।  
२. सायप्रकाश पदीसा मे बैठ २०० साय साधायो मे प्रयम १० पुरस्कृत  
होये।  
३. मोक्षलालयक श्री कृष्ण ट्रेडर ३००० खदाने मे सहयोग देने वाले प्राय  
सञ्जन श्री महा सम्मानित होये।

चन्द्रमोहन आर्य  
संयोजक



एम डी एम  
चक्रवर्ती  
शिकोचोई  
पाठक

एय की एय सिलकाई पाठक साक्षी की शोषरी दूर  
कला है तथा उन्हें प्रशिक्षित साक्षा पुष्पायक व सत्य  
काता है।  
सिलकाई रीय साक्षी दूर साक्षी कल्पन व सत्य  
साक्षी बरी साक्षी मे कला तथा एय की सत्य  
सिलकाई साक्षी एय कल्पन साक्षी साक्षी सत्य  
है। सत्य को साक्षी साक्षी साक्षी है।  
एय की एय सिलकाई पाठक साक्षी साक्षी है  
सिलकाई साक्षी साक्षी है।

निर्माता  
महाशिवि श्री हरी (प्र०) लि०  
४६६ इण्डियान एरिया कोल का  
मो दिल्ली-११००१८  
फोन ६३९६०९ ६३९६९७ ६३९७४१

योग एव संस्कृत प्रशिक्षण शिविर सम्पन्न

आनपुर (बाराणसी) विश्वनाथरी  
आनपुर प्रायय एय आनपुर द्वारा साक्षी  
विषय शिविर संस्कृत प्रशिक्षण शिविर  
का समापन करते हुए सम्पूर्ण व सत्य  
विषयविषयय बाराणसी के मुखविषय  
डा० रामचन्द्र धाय ने कहा कि योग  
विषयको साक्षयक संस्कृतिय कहा जाता  
है ऐसी कोई वस्तु नहीं है। योग यह  
वस्तु है जो हमारे शरीर इन्द्रिय साक्षी  
मन और बुद्धि को बल प्रदान करता है।  
महर्षि पतंजलि के मत को उद्घृत करते  
हुए साक्षीने कहा कि जीवन धाम्यी तरह  
जोने के चार गुण मात्र हैं—यंभी कर्मका  
मुष्टि और उपेक्षा इनकी व्याख्या करते  
हुए साक्षीने ६-६६ ब मन मे धाम्यीने पर  
बोरे विषय। संस्कृत भाषा की वर्षा करते  
हुए साक्षीने कहा कि संस्कृत भाषा एक  
महाभाषा है। जो वैदिक की सभी भाषाओं  
की सभी भाषा धाम्यीको की एक दुस्तर के  
साय जोकर ने साक्षीने महर्षिपूज सुमिका  
निभा रही है। साक्षीने के साक्षीने मे  
परियद के निवेदक डा० कर्पण देव विविदी

ने मुख्य धाम्यिक का स्वागत करते हुए योग  
के विभिन्न पक्षों पर प्रकाश डाला  
श्री शिविर में छ को डाटा हरिवायु  
प्राय सने पर उन्हें बर्माई है। परियद  
के अध्यक्ष डा भारतेन्दु द्विवेदी ने परियद  
की उपस्थितियों का निवेदन प्रस्तुत किया।  
समापरीह की धाम्यलका डा० साययय  
वीरसत्य, गु० गु० उषय विद्यानिवेदक  
२०६० ने की। साक्षीने इस प्रकार के  
शिविर प्रत्यक्ष लगने की अपील की। इस  
प्रसंग पर साक्षीने तथा प्रायवीर वल  
के प्रसिद्ध की कीर्तिलाल साक्षी डाटा  
प्राय के २० से हरिदा मोक्षना काय  
वीरना कायक की तरह सभी कायना  
साक्षी की प्रत्यक्ष दुष्मा समापरीह के  
बाय ने प्रो० विद्यालाल प्रविदी ने बय  
बाय साक्षीने किया।

आनपुर धाय  
प्रचार मंत्री  
विषय साक्षी प्रमुखम परियद  
आनपुर बाराणसी

आर्य वीर दल हरियाणा का १वा प्रातीय महासम्मेलन  
२०, २१, २२ सितम्बर को कैथल में होना निश्चित

पञ्चम। साक्षीयक साक्षीवीर दल  
हरियाणा का मोक्षी प्रातीय महासम्मेलन  
इस वष २० से २२ सितम्बर तक श्रीमती  
इन्द्रिया साक्षी कल्या साक्षीयक कैथल  
मे बरी धूमधाम मे यनाया जाना निश्चित  
हुआ है। सम्मेलन के अध्यक्ष साक्षी राय  
गोपाल नानप्रथम प्रभात साक्षीयक  
प्राय प्रतिनिधि सभा नई दिल्ली होये।  
सुक्रवार २० सितम्बर की रात्रि को  
प्राय वीर मोक्षी तथा विद्याल कवि सत्य  
सम होये। गनिवार २१ ६.४५ को प्रात  
यत्र मे श्री राय विचार की का प्रवचन  
होया। साय ३ बजे प्राय वीरों को अध्यक्ष  
रती नगर के मुखय म गी से मुखरीये इस  
मे १००० प्राय वीर पुण यत्नय मे भाग  
लये। रात्रि को राष्ट्रीय समस्यय वीर  
प्रायसमाज सम्मेलन होया जिसमे प्रो०  
लेरियद की (प्रायय प्राय प्रतिनिधि सभा  
हरियाणा) य० प्राय विचार की इस  
(प्रायय सभापति साक्षीयक यय वीर  
दल) साक्षीयक सत्ययि की (हरिदा)  
डा० रामचन्द्र की (कण्ठक) प्रायय  
हये।

रविवार २२ ६.४५ को प्रात य०  
शिवकुमार की सा भी प्रवचन सञ्चय  
राल्य होया। प्राय वीर दल वीर प्राय  
समाज सम्मेलन इस भी धोमानय  
सरस्वती की धाम्यलसे होया मुख्य  
वक्ता श्री वीर राय की प्रसिद्ध सब  
धाम्यय की भी य० प्रकाश सत्ययि  
प्रायय सत्ययि की होये।

समाधी जीवनलाल की सरस्वती यत्र  
मे बर्मा होये। साक्षा तथा मोक्षी यत्र

सञ्चयन प्रायय वैयवस्य की (उपप्रभात  
सभापति साक्षीयक प्राय वीर दल)  
काले। धाम्यक सत्ययय का सभायोजन  
डा० रायु प्रायय विद्य नानरी करने।  
सम्मेलन के स्वागतसत्यय श्री साक्षीयक की  
मुष्टि ए मोक्षी होये। सम्मेलन के सञ्चय  
वक्ता श्री हरिदा की प्राय यत्नययय  
रह्ये।

प्राय य० इस महर्षिपूज सम्मेलन म  
सरस्वती ८ मिने सति प्राय सत्य  
मे साक्षी निमजित है। कृपया इस सत्य  
सन म भाग नकर प्राय गति एय एकता  
का परिचय द। दल की सन सन सने से  
सहायता भी कर।

धमती कुमार प्राय  
सञ्चय प्राय वीर दल हरियाणा

आवश्यक सूचना

वि०ला य य प्रतिनिधि सभा के काय  
काले मजमय व यवयक यत्रोपयवेयक  
स ० ४ य० बर्माय एय सभापति की सभा  
काययय यवयय यत्नय का यमय रह्ये।  
वेयययय यवयययय से सन क करये  
यत्रोपययय की साक्षीयक कर वीर  
वेयययय अधिपत्या की सभायुययय  
कायकयो पर सत्यय य यत्नय र य सम्पन्न  
कायय। प्राया है यवयय सत्यय रला  
कायय।

यययय।

यवयययय  
यवयययय यवयययय  
६३९६०९ ६३९६९७ ६३९७४१





## आर्यसमाज सफदरजंग के वार्षिकोत्सव पर विशाल सम्मेलन

आर्यसमाज सफदर जंग इन्-वेन्स नई दिल्ली में वेद सप्ताह के प्रथम र पर वाचिकोत्सव का आयोजन किया गया। इस अवसर पर प्रातः काल बृहद यज्ञ श्री डा० वाचस्पति के प्रशासक ने सम्पन्न हुआ। रात्रि में १० यज्ञपान सुधाशु (सम्पादक आर्य स्वच्छ) डांग प्रत्यन्त रोचक एवं प्राध्यात्मिक ज्ञान से भरपूर वेदव्याख्या हुई, तथा श्री वेदव्यास के सचर अजन हुए। रविवार ८ सितम्बर को विशाल सम्मेलन का समायोजन हुआ। इन अवसर पर गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय हरिद्वार के कुलाधिपति श्री डा० सयकेतु तथा कुलपति श्री डा० सत्यकाम वर्मा का

भव्य स्वागत हुआ। इस समारोह की आयोजना श्री डा० मत्यकेतु ने की। सम्मेलन में डा० सत्यकाम वर्मा १० जैमिनी शास्त्री, श्री डा० वाचस्पति श्री उपाध्याय श्री प्रमचन्द्र श्रीधर श्री सूर्यदेव जी आदि वक्ताओं ने अपने विचार व्यक्त किये।

डा० मत्यकाम वर्मा ने कहा— गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय के प्रति जो धार्मिक जगन ने एक आस्था बनी हुई थी। स्वामी अद्वानन्द ने जो इस गुरुकुल के माध्यम से स्वयं देखा था मैं उसी स्वप्न को पूर्ण करने का, गुरुकुल विश्वविद्यालय गौरव को पुन स्थापित करने का हरमम्भव प्रयत्न करता हूँ।

१० जैमिनी शास्त्री ने जो कृष्ण के मोह गहिर मयद रहित स्वरूप का मनोरम व्याख्या से चित्रण किया। डा० वाचस्पति ने श्री कृष्ण के दार्शनिक, नीतिमान योद्धा आदि गुणों का भरपूर व्याख्यान किया। श्री प्रमचन्द्र श्रीधर ने श्री प्रपना प्रोजेक्टरी भाषण देते हुए कहा आर्यसमाज के प्रगर्हाई लेने का समय आ गया है।

दिल्ली धार्मिक प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री सूर्यदेव ने कहा— श्रीकृष्ण का वास्तविक स्वरूप हिन्दू समाज से खो गया है। केवल वास्तविकता को सीलाधो को पीरागिक जगत् याद करता है। उनका हृदिभागे से सजा भातताधियो को तलकारता स्वरूप

कीन बाव करेगा? उनका धर्माध्वत भारत को एक बारस करने का महान् कौशल कीन याद करेगा? सारथी बनकर धर्मुन को धन्याय से जमने की महान् प्रेरणा देने वाले दार्शनिक को कीन बाव करेगा? यह मही स्वस्थ स्मरण करने वाला तो धार्मिक सभा है और महर्षि दयानन्द के अनुयायी ही हैं।

आर्यसमाज मन्दिर के प्रधान श्री हनुमन्त बाल बेर ने मन्दिर द्वारा चलायी जा रही गतिविधियों का उत्साहवर्द्धक परिचय दिया।

## राजधानी में वेदप्रचार सप्ताह की धूमधाम

आर्यसमाज खालीमार बाग ने दिल्ली में वेद सप्ताह के प्रथम र पर अनेक विद्वानों को आमन्त्रित किया। १० प्रकाशचन्द्र वाल्मीके के द्वारा एक सप्ताह वेदप्रकाश हुई। श्री ब्रह्मप्रकाश वागीश यज्ञ के सप्ताह में श्री कृष्ण जन्माष्टमी पर श्री १० सच्चिदानन्द शास्त्री डा० महेश विद्यालाल डा० चर्मपान महामन्त्री दिल्ली प्रा० प्र० मन्त्र तथा डा० रघवीर वेदानन्द आदि वक्ताओं के प्रवचन हुए।

### भव्य जुलूम

आर्यसमाज गंगा प्रताप बाग दिल्ली की धो से श्री कृष्ण जन्माष्टमी पर एक भव्य जुलूम का आयोजन किया गया जिसमें अनेक आर्यसम्पादों ने भाग लिया। दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा भी नेतृत्व एवं सहयोग दिया गया।

### नवीन आर्यसमाज दयानन्द विहार का वेदमन्त्राह

आर्यसमाज दयानन्द विहार दिल्ली में २० अगस्त से १ सितम्बर तक वेदप्रकाश का आयोजन किया गया। इस अवसर पर १० यज्ञपान सुधाशु के डांग वेदप्रवचन हुए। क्षेत्र की धार्मिक जनता ने प्रगाथ श्रद्धा से अह-चदकर भाग लिया।

### आर्यसमाज कृष्णनगर में श्रीकृष्ण जन्माष्टमी

आर्यसमाज कृष्णनगर में जन्माष्टमी के प्रथम र पर अनेक वक्ताओं ने अपने विचार व्यक्त किये। मन्त्रा प्रधान श्री सूर्यदेव ने श्री कृष्ण के उज्ज्वल चरित्र का अद्भुत जगत को स्मरण कराया। दिल्ली धार्मिक प्रतिनिधि सभा द्वारा किये जा रहे उत्साह वर्द्धक कार्यक्रमों का भी परिचय दिया।

### आर्यसमाज सीताराम बाजार दिल्ली

इस धार्मिक सभा में डा० वाचस्पति उपाध्याय की मनोरम वेदप्रकाश हुई वेद सप्ताह के हो धर्मगत प्रातः काल यज्ञ का श्री आयोजन किया गया।

### आर्यसमाज सदर बाजार दिल्ली

महात्मा रामकिशोर वैद्य की गीता एवं वेद की पुनीत सिद्धांशों पर आधारीत मधुर सीरी में प्रारक कथा हुई। देवराज्य सत्साधक के बलिदान होने वाले वीरो का भी स्मृति दिवस मनाया गया।

आर्यसंदेश की व्यवस्था तथा लेखों के स्तर में सुधार के लिए तथा वितरण सख्या में वृद्धि करने हेतु एक बैठक जुलाई २१ अगस्त १९८५ को दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा १५ हनुमान रोड में सम्पन्न हुई। इस बैठक में डा० वर्षपाल डा० गणेशीनाथ श्री निमलकान्त वर्मा श्री राखेन्द्र दुर्गा श्री विजय भल्ला श्री अद्वानन्द १० यज्ञपान श्री सुधाशु श्री रामचरण दास आर्य, श्री आचार्य रामकिशोर वैद्य श्री वेदव्यास श्री आसाराम आदि कार्यक्रमी धर्म विद्वानों ने भाग लिया।

आर्यसंदेश ही वस्तुतः दिल्ली धार्मिक प्रतिनिधि सभा द्वारा वेद प्रचार के लिए किये जा रहे कार्यों तथा अन्य मन्त्रा कल्याण के लिए किये जा रहे कार्यों का यथातथ्य चित्र प्रस्तुत कर सकता है। यह इस सत्स्था का बियुन है। यह इस सत्स्था का सक्ष है जो नोनों का ध्यान धार्मिक करता है कार्यक्रमी को का विवरण प्रस्तुत करता तथा अधिकांश एव कार्यक्रमी को प्रवक्त पथ पर प्रसरण होने की प्रेरणा देता है। आर्य संदेश में सुधार की बात प्रारम्भ करने से पूर्व महामन्त्री डा० वर्षपाल ने सम्पादक श्री यज्ञपाल जी सुधाशु का निष्ठापूर्वक कार्य करने की ओर धार्मिक संदेश के स्तर को ऊँचा उठाने के लिए सत्यपात करने के लिए बन्धनवाद दिया और बताया कि यह बैठक कहा इस बात पर विचार

करने के लिए है कि धार्मिक संदेश किस प्रकार मुख्य के धारोत्तरिक धार्मिक धीर साप्ताहिक कल्याण के लिए कार्य करे। इस बात पर भी विचार करने के लिए है कि किस प्रकार इसकी धार्मिक निर्धार बनाया जाये। बड़े-बड़े लक्ष्य रखने की आवश्यकता तो है पर धार्मिक भूमि की दुकानों की ध्यान में रखना आवश्यक है। हम सभी हृदय मन्त्र है जब हमारे पंर मजबूत जमीन पर टिके हैं।

हम बातों पर विचार विमर्श के पश्चात निम्नलिखित निर्णय सर्व-सम्मति से लिये गये।

१ इसकी पृष्ठ संख्या १२ ही होनी चाहिए।

२ समय समय पर विशेषांक निकाले जाने चाहिए। विशेषांक ऐसे आकार में हो कि लोग उसे सजाल कर रख सकें। साथ ही उनकी सामग्री भी सरल होनी हो।

३ धार्मिक संदेश में विभिन्न स्तर प्रारम्भ किए गये हैं। यह प्रणाली प्रयास है। स्वास्थ्य संबंधी परिचर्या भी प्रारम्भ की जाये। इसके लिए डा० विवेकपाल, वैद्य भोकार वल, वैद्य प्रहलाद दात, वैद्य निराला आदि की सेवाएं प्राप्त की जा सकती हैं।

४ इसकी धार्मिक स्थिति में सुधार आवश्यक है। आर्यसंदेश के व्यवस्थापक, सभा के सभी अधिकारी श्री राखेन्द्र दुर्गा, श्री जयच भल्ला, (बैच पृष्ठ ६ पर)

## समाचार सन्देश

### जैन ममाज भी आर्य प्रचारक से प्रभावित हुए बिना न रह सका

निजामा (सनबर) स्थानीय आर्यसमाज के वेदप्रचार मन्दाह का सुभारम्भ वैदिक प्रवक्ता डाक्टर आनन्द मुन (पूर्व नवाब खतारी) ने किया। डा० मुन ने वेद के सन्देश से स्थानीय जनता का मन मोह लिया, वेदकथा के सुन्दर प्रवचनों से डा० मुन ने स्थानीय स्तर पर आर्य-प्रचार की योगिता को प्रखरित किया आर्यवंत तो यह कि आर्यसमाज के विरोधी विचारधारा के जैन सन्मुदाय ने भी डा० मुन को अपने

प्रसिद्ध तीर्थस्थल देहरा मन्दिर पर आमन्त्रित किया व उनके विचार सुने, डा० मुन ने अपने उद्बोधन में कहा कि वेद दो धरत वष से सनातन संस्कृति का सन्देश मनुष्य नाम को प्रदक्षित कर रहा है। वेद न नर-बलि के वाद आर्यसंदेश निमित्त स्थायी कोष में परिवर्तित कर दिया जाये। वेदों के मोह से निकलकर वेद की विचारधारा को रंजना है।

दिल्ली १४ प्रतिनिधि सभा  
१५ हनुमान रोड,

### श्रीकृष्ण जन्माष्टमी समारोह

बिनाक ७ सितम्बर ८२ को साय ७.०० बजे से ११.०० बजे शनिवार को आर्यसमाज आर्यपुरा सञ्जी मंडी दिल्ली-८ के प्राङ्गण में बड़ी हूमनाय के साथ मनाया गया। जिसमें वैदिक विद्वानों के प्राचार पर योगीराज कृष्ण जी का आशीर्वादित धर्म प्रेमी सज्जनों के सम्मुख प्रस्तुत किया गया। साह्य के श्रीकृष्ण जी की जीवन पर भक्तिगी भी आयोजित की गई। योगीराज के चरित से सम्बन्धित प्रभजनों का धनोपा कार्यक्रम हुआ।

जनेक भजन मन्त्रालियों ने कई उच्च-कोटि के विद्वानों ने बिनाक सत्य जनता के मध्य योगीराज का सच्चा आदर्श चरित मनुष्याना है पचार कर उसका आश्रय किया। इस कार्यक्रम से पूर्व एक बृहद् यज्ञ का आयोजन किया गया। जिसका सरसकत् पुरोहित धर्मज शास्त्री विद्यानरस्यति जी ने किया।

राजकीर धाय मंत्री  
आर्यसमाज आर्यपुरा  
सञ्जी मंडी, दिल्ली-७

### प्रांतीय आर्य महिला सभा द्वारा हरितृतीया पर्व हर्ष उल्लास से सम्पन्न

हरितृतीया पर्व हर्षोल्लास और बड़ी हूमनाय से बड़ा गाउँन के बिनाकलन प्राणय में माय-बहिन सत्यवती जी वि चकता की धाम्य लता ने सम्पन्न हुआ।

प्राय के पर्व के मुख्य आकर्षण थे बकचो धीर नवयुवतियों द्वारा धर्मिक से धर्मिक दौड़ में माय लेना धीर पुरस्कार प्राप्त करना।

बहिनो ने बहुसंख्या में यथा समय पहुँचकर अपने सगठन का परिचय दिया। किसकारियाँ भरती बरचो की टोलिया झुली नही समाती थीं। ऐसा लग रहा था जैसे कोई मेला लगा हो। परस्पर प्रीतिमोक्ष की धपनी हो बिचा थी।

सभा धर्मकारियों ने बड़ उल्लाह से भाग लेकर पुरस्कार प्रदान किये। जिसमें सभा प्रभाना सरला जी भवता मान्य बहिन सुशीला जी आनन्द, तारा वैद्य, बाद रानी प्रदीप ह्यादि।

१०० से भी अधिक प्रतियोगिता में बहिनो ने भाग लिया। प्रत्येक कार्यक्रम यथासमय सम्पन्न हो गया इन्द्रदेव ने मधुरी कुमा की। यज्ञ के समय नही-नही बू दो से प्राचीर्वाद देकर फिर विद्यानर करते रहे।

सभा समिती  
प्रकाश आर्या

### आर्यसमाज शकरपुर दिल्ली में बृहद् यज्ञ

शकरपुर शहर के धार्मिक जनो द्वारा आर्यसमाज के प्राणय में विराट यज्ञ का आयोजन हुआ, जिसमें १० बर्षवीर शास्त्री ब्रह्मा एवं प्रवचन-कर्ता के। ८ सितम्बर को जन्माष्टमी का पर्व भी मनाया गया जिसमें स्वामी स्वर्णानन्द ने श्रीजन्मो कतिताभी द्वारा कृष्ण चरित का बखान किया।

### (पृष्ठ २ का शेष) आर्यसन्देश का सकल्प

श्री सुरेन्द्र हिन्दी श्री सुशोभ महा-जन श्री विमल कान्त शर्मा श्री श्रीमप्रकाश सुनेका धर्मद बाजीवन सदस्य बनाकर तथा विज्ञापन मह-योग देकर दिनवारक आर्यसंदेश के कोष कीवृद्धि में विशेष सहयोग द। सभा के सभी उपदेशक प्रतिनिधि तथा आर्यसमाजों के सभी स्वयं बा-जीवन सदस्य बन धीर सितम्बर ८२ तक कम से कम दस सदस्य अवश्य बनायें।

५ बाजीवन सदस्यों से प्राप्ति धन भक्षण साते में रखा जाये जिसे वर्ष के बाद आर्यसंदेश निमित्त स्थायी कोष में परिवर्तित कर दिया जाये। कक्षा आयाज केवल लक्ष किया जाये।

६ समाचार पत्र के लिए कागज के कोटा हेतु धावेदन पत्र दे दिया जाये। इस कार्य को श्री राजेन्द्र दुर्गा (सयोजक) श्री विमल कान्त शर्मा धीर श्री सुरेन्द्र हिन्दी के सहयोग से करेंगे।

७ जी. ए. जी. पी. के विज्ञापन प्राप्त करने की सारी धीपचारिक-तायें पूरी की जा चुकी हैं। श्री विमल कान्त शर्मा (सयोजक) इस कार्य को धीप्र पूरा करेंगे।

८ बिना पुत्र सुगतान के श्राय सदस्य को पोस्ट करने को धनमति

मिल चुका है इसके लिए सभी ने प्रसन्ता यकन की

६ आर्यसंदेश का सदस्यता शुल्क ममान्य होने पर शाहको को बा पत्र भेजा जाये उसका भाषा सिष्ट होनी चाहिए

१० धाय प्रतिनिधि सभा की सभी बैठकों में आर्यसंदेश का विषय अवश्य रखा जाये

११ आर्यसंदेश के श्री कृष्ण जन्माष्टमी विशेषांक के लिए श्री सुरेन्द्र हिन्दी (सयोजक) श्री राजेन्द्र दुर्गा श्री सुशील महाजन, श्री श्रद्धानन्द, श्री रामशरण दास आर्य डा० गगोशीलाल तथा सभी सभी धीर उपदेशक, विज्ञापन प्राप्त करने में सहयोग करेंगे।

१२ आर्यसंदेश में वंशाधिक विज्ञापन भी विदे जाय। इसके लिए पूरा प्राप्ति श्री राजेन्द्र दुर्गा उपलब्ध करायेंगे। सभी आर्यसमाजों को एक परिचय भेजा जाये कि उनके यहाँ जो भी शायी हो उन्हें आर्यसंदेश का धार्मिक धार्मिक प्रवक्ता बनाया जाये।

१३ आर्यसंदेश दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का गज है। अत इसमें आर्यसमाज के धर्म नेताओं द्वारा सभी की सूचना विशेष सञ्ख्या के साथ प्रकाशित की जानी चाहिये।

शान्ति पाठ धीर सभा प्रधान एवं अन्य उपस्थित सज्जनों के धन्यवाद के पत्रदान बैठक ममान्य हुई। □

### निर्वाचन

धाय उपप्रतिनिधि ६ भा कानपुर महानगर की सत्यर ममा बा धार्मिक निर्वाचन निर्वाक ११ प्राणय १८-२५ को धायसमाज कीसमाज में आ चुकीसास सायब की धर्मशता म सम्पन्न हुआ, जिसने निम्नलिखित धायकारियों निर्वा-चित हुए।

प्राधान १० विभवमान सात्ता उपप्रधान धीरकी सत्यरा धीरधी  
" श्री धायकीन शर्मा  
" श्री योगेशनाथ गुप्ता  
मन्त्री डा० हृदयविहृ १०-एच०-की  
उपमन्त्री धीरकी डा० भाषा रानी राय १०-एच०-की  
" श्री हरिचक्रन्त साहू  
" श्री राजेन्द्र शर्मा रज्जवा

कोषाध्यक्ष श्री सुरेन्द्र शर्माधाय सह० डा० धायप्राप्त विहृ १०-एच०-की

देखानिरीलक श्री पुतीलाल दाद

हरनाथ विहृ  
सञ्जी  
आर्य उपप्रतिनिधि सभा  
कानपुर महानगर

### स्वतन्त्रता दिवस समारोह

बिडला आर्य गर्लर्स सीनियर मैकेण्डरी विद्यालय का स्वतन्त्रता दिवस समारोह माननीय वेदप्रकाश मुल्लर की धायखता में दिनक १४-८-८२ बुधवार को आर्यसमाज बिन्ना लाइ स के प्राणय में बड़ी हूमनाय से मनाया गया। ध्वजारो-हण कार्यकारिणी पावध श्री मुल्लर द्वारा सम्पन्न हुआ। विद्यालय की छात्राओं ने देशभक्ति पूर्ण मार्स-लिक कायकन प्रस्तुत किया। एक छात्रा ने स्वामी दयानन्द की श्रुट देशभक्ति एवं राष्ट्र प्रेम पर धन्य विचार व्यक्त किए। मुख्य अतिथि एवं आगन्तुको द्वारा कार्यक्रम को श्रुति-भरि प्रशंसा की गई।

प्रतिपल

बिडला आर्य गर्लर्स सीनियर सेंके० स्कूल बिडला लाइन्स दिल्ली ७



**दंतों की हर बीमारी का घरेलू इलाज**

**एम डी एच**

**दंत मंजन**  
लोग यूवत

23 जड़ी बूटियों से निर्मित  
आयुर्वेदिक औषधि

कौन सा दवाकर

**दंत मंजन**  
औषधि युवत

अब नये पैकेज  
में उपलब्ध

किरीण्डुर्ब  
महाशिया की हड्डी (प्रा०) लि०  
9/94 इण्डियन स्ट्रीट, सीटी बजार, नई दिल्ली 15  
फोन 539608 537987 537941

मसूहों की सूखक  
गुह की दुर्गन्ध  
ठंडा गर्म पानी  
राजमा  
बात का बर्त

**एम डी एच**  
**चकण**  
**शिकाकाई**  
**पाउडर**

एच की एच शिकाकाई पाउडर दांतों की बीमारी दूर  
करता है तथा उन्हें आरामिक बनाता सुनिश्चित व स्वस्थ  
करता है।  
शिकाकाई पैदा करनेवाला दूरत कोला पाउडर व अन्य  
सर्वोत्तम दंत बूटियों के कारण बना एच की एच  
शिकाकाई पाउडर एक वास्तविक मानवारी आरामिक है  
है। इसके कोई रासायनिक पदार्थ नहीं है।  
एच की एच शिकाकाई पाउडर का दांत के  
निश्चित उपयोग कीजिये।  
निर्देश  
महाशिया की हड्डी (प्रा०) लि०  
9/94, इण्डियन स्ट्रीट, सीटी बजार,  
नई दिल्ली-110015  
फोन 539608, 537987, 537941

उत्तम स्वास्थ्य के लिए  
गुरुकुल कांगड़ी फार्मसी,  
हरिद्वार की औषधियां  
सेवन करें

**गुरुकुल कांगड़ी फार्मसी**  
**हरिद्वार**

**चकण**  
दंत मंजन  
दंत मंजन  
दंत मंजन

**शिकाकाई**  
पाउडर  
शिकाकाई  
पाउडर

**फर्मेसिल**  
फर्मेसिल  
फर्मेसिल  
फर्मेसिल

शाखा कार्यालय-६३ बसो राजा केदारनाथ,  
बाबरी बाजार, दिल्ली-६ फोन: २६६८३८

गुरुकुल  
पण्डित गंगोत्री विश्वविद्यालय

२४/११/४१

ओ३म

साप्ताहिक

कृष्णवर्तो विश्वमार्म

# आर्य सन्देश

बुध ६ दश ४४  
शुक्र १८ प्रति ४ १०

रविवार २२ सितम्बर १८८६  
श्राविक २० कपदे

मुद्रित मूल्य १६७२६४८००००  
आवृत्ति २०० कपदे

भाद्रपद २०४२

दशमिनाम्न—१६१  
विदेश में ४० गमर ३० पौड

## गुरुकुल कांगड़ी हरिद्वार के कुलाधिपति डा. सत्यकेतु एवं कुलपति श्री सत्यकाम वर्मा दिल्ली सभा द्वारा स्वागत समारोह



डा. सत्यकाम वर्मा

रविवार १५ सितम्बर दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के तत्वाधान पर आर्यसमाज हनुमान रोड नई दिल्ली में डा० सत्यकेतु एवं डा० सत्यकाम वर्मा के स्वागत समारोह का आयोजन किया गया। इस अवसर पर भावने हुए श्री रामगोपाल आलवाल ने कहा—यह प्रसन्नता का क्षण है कि गुरुकुल विश्वविद्यालय

के कुलाधिपति एवं कुलपति अपने जो गुरुकुल के स्वामिक तथा लब्ध प्रतिष्ठित विद्वान हैं। गुरुकुल विश्वविद्यालय ने समस्त विश्व को सुयोग्य विद्वान लेखक एवं वक्ता प्रदान किये हैं। एक समय तक धार्मिक सामाजिक एवं राजनैतिक क्षेत्र में गुरुकुल के स्नातकों का वर्चस्व रहा। इस समय फिर हमारे सामने चुनौती है। वही खोई प्रतिष्ठा। फिर जाने को मुझे प्राप्ता है। ओ सत्यकेतु जी और ओ सत्यकाम जी अपने कार्य और प्रयत्न से इस मन्त्रा को उसी उच्च स्थान तक पत्रवाले में लयन हो मकमे। श्री आलवाल ने हमने हुए कहा—आप दानो के मन में पड़ी हुई मालाएँ जिनकी है और जिनकी इनकी पतिष्ठा है उनमें हो कत यो का बोध प्राप्त लोगों के रूपों पर है।

सावर्धनिक सभा के काबाध्यक्ष श्री सोमनाथ भरवाह ने दानो विद्वानों की विद्वत्ता और स्वाभाव एवं कार्य

कुशलता की प्रशंसा की तथा गुरुकुल के भविष्य की कुशलता कामना की। दिवनी आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री सूर्यदेव ने कहा—यह माना कि माग दुग्ध है और काटो १ बरो मे भरा हुआ है। कुशलता और योग्यता इसी में है कि बैधक निबड और उत्साहित होकर विपरीत परिस्थितियों में भी कार्य पूरा कर लिया जाये। इस समय प्रत्येक क्षण नर नारों का अन्त गम्कुन के अन्यान और भव्य का और गी तुई है। गुरुकुल में केवल १० विद्यार्थियों का होना निगति की सम्भारता की प्रकट कर रहा है। भगवत और मुकुन्द ने गजा तथा अन्य प्रकार का समझाए वहा श्रवक है। हमारे मान्य कुलाधिपति और कुलपति हम मन की आशाओं को विश्वास में बदन पायमें सँ ऐंगी शुभ कामना करता है।

श्री रामचान भस्मिक ने सभा का ध्यान धाय विद्वानों और पुरो

हितो के सम्मान की ओर दिलाया। दिवनी धाय के-डोय मन्त्रा के प्रधान श्री महाशय धमपाल ने स्वागत करते हुए हासिक बार्डों की ओर कहा—मन्त्रे पुगनी और सबसे अच्छी हमारी मन्त्रल जिन्ना पढति है। इसका जिनना प्रचार प्रसार होमा उनना हो हम न्द्रिय के न्द्रय को बुका पायम

दि १ धाय प्रतिनिधि सभा के महासमना ३० मंगल में गुरुकुल का गौरव गरिमा का उवाच करते हुए भविष्य के उत्थन हो मकने की मयन क मन्त्रा को

गो मन्त्रकनु एवं गो मयकाम के श्रवण गोमन शब्दों में वक्ताओं की आभाषा न अनुपम काय करने का विश्वास गंगा। इस अवसर पर अनेक शय मान्य मन उत्पलन के।

## स्य. श्री देवव्रत धर्मेन्दु—एक युग की कहानी का अन्त

श्री देवव्रत धर्मेन्दु का १६ सितम्बर को निधन हो गया। शुरू-शुरू की निधता की लपटों में उनकी पार्थिव शरीर के साथ एक युग की कहानी समाप्त हो गयी। जमुना के तीर पर वैदिक सभ्यता की ऐतिहासिक और श्रष्टय स्मृकार मे सम्मिलित नगर आभ्यन्तरी के बीच अचानक बहु सरल श्रव संकेतों का प्रतीक कैहरा मेरे

मानस पटल पर उभरा। एक-एककर उनके कार्यों से जुड़ी अनेक स्मृतियाँ स्फुरकर बाँध बाँधने लगीं।

महात्मा गांधी के श्रष्टययोग आंदोलन से लेकर स्वामी ध्यानानन्द और महात्मा हनुमान के निर्देशों पर बुद्धि तथा वैदिक वय के प्रचार प्रसार के कार्यों तक उनके जीवन की एक प्रकर मधुर स्मृति है। सत्वाधो के सिद्धान्तवादी और सत्तावाद से

शलग हटकर व धर्म प्रचार वेद प्रचार धाय भाषा के उत्थान राष्ट्र निर्माण और युवकों के चरित्र निर्माण के महान् कार्य में जुड़े रहे। वे दल एवं वय से ऊपर रहे, सबको बनाया प्यार वाटते रहे। सिमाना के पहाड़ी गाँवों में घूम-घूम कर उन्होंने वैदिक धर्म का प्रचार किया। साथ ही पहाड़ी लोगों को अनेक समस्याओं के निदान का मा. उनका काय स्तुत्य है।

दिवनी मे गन्त ग्ग प्रचार प्रचार क उ-के बाय मे धाय युवक परिषद के रा यम मे धायमनाज के मन के लिए समग्र और चरित्रवान युवक तयार करने का उनका सकल्प काफी हद तक सन्तन हुआ। एक कुशल वक्ता होने के साथ और अनेक सम्मेलनों मे अपना निह्मण का व क मम न के (शेव पृष्ठ ११ पर)



## सुतसंग-वाटिका

# जीवन सार्थक और श्रेष्ठ कैसे हो ? आत्मचिन्तन के क्षण

आचार्य दीनानाथ सिद्धान्तालकार

केन उपनिषद् में एक कथा प्रती है। पृथ्वी धरा ने वसु आकाश आदि इन तत्त्वों में घनिष्ठता बनायी कि हम ही सर्वशक्तिमत्त्व है। वह अपने स्वामी और निर्माता को भूल गये। उन की जाच करने और उनका धर्मिमान न करने के लिए ब्रह्म शक्ति ने उनकी परीक्षा ली। ब्रह्म ने अपनी ही ईश्वर शक्ति को इन पंच तत्वों से गीन किया। अब पंचो तत्त्व जड़त्व एवम् निष्कण्ठ हो गये। उन्होंने भूल जब जान ईश्वर तब उन्होंने क्षमा मांगते हुए ब्रह्म शक्ति से प्राचना की। "तुम्हारे पदचान् पृथ्वी धरा तेज वायु आकाश पुन साक्षर हो गये। ठीक यही स्थिति आज के मानव की है। अधिमान ने फस जब बड़ा अपने को शक्ति का भण्डार समझने लगता है तभी दुःख कष्ट प्राप्त करता है।

प्रभु शक्ति का विनम्रता में स्मरण करते रहना चाहिए कवन वह प्रभु मूलिक पुन जाग्रत हा प्राणी है।

**भोष्म की साधना**

महाभारत में भीष्मपर्व के अनुसार स्वर्ग-छात्र प्रभु का जब वरणा वृद्ध विनामर्ष भीष्म रण शय्या पर मृत्यु के लिए रहसि नय माधना रत पिनामर्ष प्राणी दीर्घ जीवन पर आध्यात्मिक प्रकाशप्रद उपदेश श्रवण करने जन महर्ष एकर होना था। इस दीर्घायु शान्तिपर्व से इसी सब अनुपम उपदेशों का मण्डप है। आ यातिनक मुक्ति के बग उपाय है। इसके उत्तर में पिनामर्ष कहते हैं—

आत्मा नदी मयमपुष्पनीर्था, सत्योदका क्षीननटा योनिम् । नवामिषक कुंघ पाण्डुपुत्र न वारुराश श्रुयति चान्तरात्मा ॥

यह आत्मचिन्तन रूप नदी, जिसके दोनों किनारे मयमपुष्प सत्य-रूपी जल, क्षीन रूपी घाट है। हे पाण्डुपुत्रो ! वही म्यान करो जिससे अमरताप्राप्ति मुद्र हा बायिका, केवल जल द्वारा आत्ममुक्ति नहीं हो सकती।

**जीवन में छिद्र**

वैदिक धर्म में पवित्र जीवन और

उमके सर्वशक्तिमत्त्व और पवित्रता का माधन हृदय को श्रेष्ठ गुण का भण्डार बनाने पर विशेष बल दिया गया है—

योऽयं यमो, छिद्र वक्षो हृदयस्य मनसो दातिनृणां बृहस्पति-यन्तहृत् । शान्तो भवतु युवन्त्यस्य यम्यति ॥

यजुः ३६३

हमका धर्म करने हुए महर्षि यमानन्द 'धार्मिकचिन्तन' में कहते हैं—हे परमेश्वर ! मेरे हृदय (प्राणात्मा) मन बुद्धि, विज्ञान विद्या और सब इन्द्रियद्रव्य इनके छिद्र के विकास इनको निरूपण करके मलय, धर्मार्थ में स्थापन प्राप्त हो करे। प्राप्त सब भुवनों के प्रति है। इमो-निष्ठा धारणसे वार वार प्रार्थना है कि सब दिन हम लोगों पर कृपा दृष्टि से कल्याणकारक हो। हे परमात्मान ! आपके विना हमारा कल्याणकारक कोई नहीं है। हमको धार हो का सब प्रकार का भण्डार है, जो आप ही पुरा करते।

पंचमे नौका में छोग छेद भी डूबी देने में मय्यं हो नकला है जैसे ही मन व आत्मा में भी कोई स्वल्प पाप ही धीरे धीरे बटना हुआ जीवन नौका को डूबे देने में समर्थ हो सकता है। महाभारत में नारद श्री कृष्ण महाप्रद ने नारदमुनि पाप छिद्र के निष्कासन के दो प्रकार के उपाय बताते हैं—

**दो उपाय नारदमुनि द्वारा**

१. परिमार्जन और अनुमार्जन।

पहले प्रकार के उपाय के अन्तर्गत क्षमा सरलता और कोमलता के द्वारा पाप निवारण होता है और दूसरे साधन अनुमार्जन के अन्तर्गत सेवा मकार, विनम्रता और समर्पण द्वारा हृदय में मद्गुणों के प्रति प्रीति, श्रद्धा विस्वास के मन्त्र उचित और परिवर्तित होते हैं।

**अर्थ शीघ्र सर्वप्रथम**

जीवन की प्रथम पवित्र बनाने के लिए सभी ऋषियों ने जितने साधन बताये हैं उनमें मुख्य धर्म 'शीघ्र' है।

सर्वेषामेव शीघ्राना धर्मशोच परम स्मृतम् । यो धर्मन मुचिहृम मुचि न मुद्वारि मुचि ॥

सब धर्म की श्रद्धा में धर्म मुचि बर्णन वन मन्त्रि-इत्यादि श्रद्धा सवोपरि है। जो धर्मिन इस श्रद्धा का पालन करता है वही वास्तविक श्रद्धा है।

मनु कहते हैं कि जल से शरीर शुद्ध होता है म को पवित्रता सत्य व्यवहार, आत्मा की पवित्रता अध्यात्मविद्या और नपौमय जीवन तथा विचार और मानसिक चिन्तन के साथ स्वा-याय तथा शास्त्र अध्ययन से होती है। मुषिष्ठिर के एक प्रश्न के उत्तर में भीष्म करते हैं कि तीर्थों में श्रेष्ठ तीर्थ विशुद्ध हृदय ही है। पवित्र वस्तुओं में श्रेष्ठ पवित्र विशुद्ध हृदय ही है। श्रेष्ठ जिसे आचरण में लाये वह आचरण सर्वश्रेष्ठ है। इसी-लिए गीता में भगवान् श्रीकृष्ण कहते हैं कि श्रेष्ठ पुण्य जिस प्रकार आचरण करते हैं अन्य व्यर्थन उसी का

अनुकरण करते हैं।

महाभारत मन्वन्धी निगम वाचन जीवन पद्धति के लिए मनन कबीर क शब्दों में शीघ्र पवित्रता के माय पर चलने के लिए मया साधवान और आगरूक रहना होगा। कबीर कहते हैं—

तेरी गठरी में लागे चोर बटो-हिया का सोवे। जागु मवेश बाट धनेरा फिर नहो लाग जोर। अब सागर डक नदी बहते हैं, बिनु उनरे जाये जोर।

कहुत कबीर मुनो भाइ साधो ! जागत ऋज भोः ।

**वेब के शब्दों में—**

जो जागता है उसे ही ऋचाएँ चाहती हैं जो जागता है उसे ही सामवेद प्राप्त होता है, जो जागता है उसे ही प्रभु करते हैं कि मैं तुम्हारा हो गिरूँ। महर्षि यमानन्द ने विष्णु-पान करके भी इसे जगता वर प्राप्त हुआ है। महर्षि यमानन्द की अनुमतागो सुन पन्कर भी नहीं जाग रहे हैं। जाग कर ही हम ऋषिभूषण से मुक्त हो सकते हैं।

## उठ जाग जाग रे स्वाभिमान

उत्तम चन्द्र शरर "मं ७०

मेरे मानस की समर ज्योति, मेरे जीवन के समर प्राण

उठ जाग

मेरे वन बँब का न पार, तेरी शक्ति का क्या बलान ?

तेरे जागे की झुकुटि से रिपुखल धर धर कम्पायमान

उठ जाग जाग रे

तू श्री कृष्ण का चक्र, शिवा की श्रमि राम का धनुष बाण राणा प्रताप का कवच तू ही, गोविन्द सिंह का चण्डीमान

उठ जाग

तू जागे तो जीवन जागे, तू सोये तो नर मृत समान तू प्राणी का प्रेरणा स्रोत, तुम विन प्राणी केवल मसान

उठ जाग

तेरी झुकुटि से जगता है, मानव का सुन बँब महान् तुम विन अमृत भी गरल तुल्य, तू देती विश्व भी सुखा पान

उठ जाग जाग रे स्वाभिमान

# आर्यवीर दल की आवश्यकता

लेखक—श्रीमप्रकाश त्यागी

आज ससार गशानि का घर बना हुआ है। पशुता इस में नुलकर तावड़ नुल कर रहा है। एक राखड़ दूसरे राखड़ को निलने का प्रयत्न कर रहा है। एक संप्रदाय दूसरे संप्रदाय का विनाश करने पर तुला है। इस पागलपन में भगवान् की मूर्ति का सर्वश्रेष्ठ देव 'मनुष्य' का मूल्य दो कीड़ी कर दिया है। ईश्वर पुत्र मनुष्य के जीवन से धाज, लोग बनाए हुए पत्थर के भवनो, मन्दिरों और मस्जिदों का मूल्य अधिक समझते हैं। मान्-शक्ति जिस को गोंद में बठकर घमृत पिया है, आज लोग उसी की टाय पकड़ कर बाजारों में घसाटे फिरते हैं और उसे नाना प्रकार अपमानित करते हैं। बच्चे और बूढ़ तक इस मुशानि के ईश्वर बन रहे हैं। इतना ही नहीं, उस पागलपन का प्रचार करने वाले धर्मवा इन् पागलों को सरदारों की लोग देवता समझते हैं और उन्हें बहुत बड़ा राजनीतिज्ञ (Politician) कह कर पुकारते हैं। आज जो व्यक्ति जितना ही बड़ा मक्कार, भूठा, धोखेबाज तथा निर्दया होता है, वह उतना ही बड़ा नेता समझा जाता है। ये पूर्व नेता अपना पशुता पर राष्ट्रीयता तथा धर्म का मुलम्मा (पानी) बढाकर साधारण जनता का धर्मवा बना रहा है।

आज र यह सच क्यों हा रहा है? इसका विराज क्यों नहीं किया जाता? आज क्या बड़-बड़ संप्रदायक धर्म पत्रों में इस पशुता का प्रोत्साहन दे रहे हैं? इन संप्रदाय प्रवर्तकों के उत्तर का साज से मिले मनुष्य ध्यानावस्थित होकर विचार करे ता वह एक हा परिष्कार पर पहुचगा कि आज ससार में ऐसे श्रेष्ठ वार पुरुष का प्रभाव है जा सत्य को रक्षाथ गुणो का दमन कर सक। दूसरे शब्दा में आज ससार म धार्मिक तथा धार्मिकों दम का अभ्यास है। इसा नाम 'विषय स इष हानि' क कारण बहुत स मानियों का शायद सय यह बात बलगेगा परन्तु वात सत्य है। आज नहीं हा कल उन्हे यह सत्य स्वीकार करना हा पडगा। नाम में भले हा कोई परिवर्तन करने को चेष्टा करे परन्तु इस सत्य स बहुत कदापि जावुल नहीं हो सकता।

ससार म मनुष्यत धाज लोग प्रभाव के अन्विन पावे जाते हैं। पहले गुण्ड, दूसरे शरीफ हिज्जदे तथा तामरे वार पुरुष गुण्डों को परिभाषा प्रभवता करन स्वरूप का बागुन में अन्विन में हा कर चुका है। ये स्वाथान्व है और प्रभन स्वाथ का पुति सत्यत धाज तथा अनुचित उपयो से करते रहते हैं। राखड़-उपनिष, धर्म रक्षा तथा विचार शान्ति इनके मूल्य नारे हैं, और इन्हीं अंश नारों का धाज म ये प्रभने समस्त कुसम करते हैं। इन गुण्डों के एकमेवभाव ही नही सविनु सांख्योमिक सङ्गठन बने हुए है। इन के पास प्रभन न सत्यत माधन तथा सनाय है सभी के स्वरूप भाषन में टकराते रहते हैं। इनके परिष्कारमस्वरूप समथ-ममथ पर युद्धादिन भाषनो रहती है।

शरीफ हिज्जद ब है, जिनके हृदय म भलाई से प्रभ तथा बुराई से घुसा है। परन्तु उनको यह घुसा उनक हृदय को सोमा का कमी उल्लङ्घन नहीं कर पाता, और ना हा उस में उल्लङ्घन करने का साहस है। वे गुण्डों को बुरा ही नहीं समझते अपितु हृदय से उनका विा चाहते हैं, परन्तु उन में गुण्डों का सामना करने का साहस नहीं है। वे शुरु से भय खाते हैं, न उनका कोई सङ्गठन है, ना ही इनके पास स्पेष्ट धन तथा साधन हैं।

तासेर भी पुरुष है, जो शुरु का कुछ नहीं समझते। जिन में विरो-धात्मक शक्ति कूटकर कर भरी है। परन्तु इनके हृदयों में गुण्डों के विनाश को उमङ्ग नहीं है। इनमें विधा का प्रभाव है, जिसके परिष्कारमस्वरूप वे गुण्डों का बालाकियों को न समझकर उन्हे उनके सत्य बन जाते हैं। इन का शोषण उनका शक्ति का दुस्प्रयोग कर रहा है। धन तथा साधन इनके पास हैं ही नहीं, जिनके कारण प्रतका सार्पित होना कठिन है। दूसरे जब इनके हृदय ही भाव शुरु है तो फिर इनके सगठन का प्रभ ही संके उठ सकता है।

अनुपात के विचार से ससार में गुण्डे पिचहतर, शरीफ हिज्जदे बीस तथा और पुरुष पांच प्रतिशत हैं। इस प्रकार आज दुनिया में गुण्डा का एक-छत्र राज्य है। इन्हीं के दमन का प्रभ आज ससार के भले सम्पत्तों के मस्तिष्क बना रहा है। यह बात रकता के साथ कही जा सकती है कि इस समस्या का हल शरीफ हिज्जदे या शुरु वार पुरुष कदापि नहीं कर सकते। ससार को आज ऐसे पुरुषों की आवश्यकता है, जिनके हृदय मनुष्यता से भरे हो। जो धीरा धीरे जने दा' जिन का नारा हो। भ्रम्या तथा प्रवा-चार का विरोध ही नहीं अपितु इन का विनाश करने का जिनमें साहस हो। प्रभने इस सत्य का पुति में जिन्हे अपने सर्वत्र को बाजो लागने की उमङ्ग हा, बर्षान ससार को ऐसे श्रेष्ठ वार पुरुषों की आवश्यकता है, जिनके हृदय और मस्तिष्क दोनों ठीक ही, बुद्धि तथा शक्ति का विनये समन्वय हो।

आवश्यकता है। आज एक ही देश के नही अपितु मवार भर के श्रेष्ठ पुरुषों के एक हठ सगठन की आवश्यकता है, जिस के द्वारा मवार को गुण्डों से रहित करके विचर शान्ति की स्थापना की जा सके।

ऐसे ही श्रेष्ठ वीर पुरुषों के सगठन के लिए 'धार्मिक' दल की गठना हुई है। इस का यह नाम भी इसी सत्य की इष्टि में रच्यकर रचा गया है। मेरा ख विश्वास है कि इस प्रकार के सगठन का नाम इस से अधिक प्रशस्त और ही नहीं सकता। यह नाम अपने तथ्य की पूर्णतया व्यनन करता है। धार्मिक वीर दल के अवधारण भी इसी तथ्य को पुनि करते हैं। जैसे—

- (१) वैदिक धर्म की जय हो।
- (२) धार्मिकों जागो।
- (३) मसार के श्रेष्ठ पुरुषों एक हो जाओ।

इन प्रकार ससार की गुण्डों के दमनार्थ एक मुष्ट धार्मिक दल की आवश्यकता है, जिन में प्रत्येक भले वीर पुरुष को भा लेना चाहिए। यदि भले पुरुषों ने अपने को सगठन न किया तो इसके बडे कुपनिर्माण होगे। याद रहे आज गुण्डापन अपनी सीमा को नाचकर पशुता पर था गया है। एंटम बम जैसे भयकर शस्त्र का महाराज लेकन पशुपता क्या नही कर सकती। सचमुच आज मनुष्यता सङ्कट में है, यदि इनको रक्षा न की गई तो फिर बचे सचे भले व्यक्तियों को भी विचन गी इसी मन्दरी की बड का सहारा लेना पडेगा। इसीए धार्मिकों धार्मिकों दम सर्वत्र धार्मिकों में ऐसे सगठन की रचना करके विचर को सचची शानि का समन्वय मुताए।

## धार्मिक वीरदल के कर्तव्य

आर्यवीर दल के दो महान् कर्तव्य हैं—

(१) धार्मिक धर्म, धार्मिक शानि धार्मिक सभ्यता को रक्षा करना।

(२) समाज में सेवा एवं प्राम्स्वय का प्रार्थन उपनिष्ठा करना।

प्राय सेवा शीर रक्षा दो जिनेधों धन्य है। परन्तु दोनों कर्तव्यों का पालन एक व्यक्ति कैसे करे यह विचारणीय है। परन्तु जब इन बरिद वरुं व्यवस्था पर रक्षिपण करते हैं तो हमारी यह कठिनाई दूर हा जागी है।

धार्मिक जाति एक योडा जाति रही है। जिन में कार्य धीर मुनिधों की इष्टि से चार वर्णों को स्थापना हुई को। इन वर्णों व्यवस्था में विधा प्राप्ति और उसका उपयोग (धार्मिकारिधि) ब्राह्मण के हाथ में सोपा गया। रक्षा और शामन क्षत्रिय के अधिकार में दिया गया। भमाज का भरण-पोषण वीर आर्थिक व्यवस्था (Supply Department) वैश्य जाति को मिली तथा समस्त समाज की सेवा शुरु वर्णों के व्यक्तिके, ऐसी व्यवस्था की गई। प्रत्येक वर्णों के कर्तव्य निर्धारित करने का धर्म यही था कि प्रत्येक वर्ण में चारो वर्णों के गुणों के समन्वय के साथ साथ प्रयत्न एक गुण विशेष रूप से होना चाहिए धर्मीय एक ब्राह्मण धर्म, तप धामन के बहृम्य के साथ रक्षा, पोषण और सेवा के भाव भी प्रभने में धावध धारा करे। क्षत्रिय में रक्षा और शामन की प्रभुल भावना के साथ-साथ नाना, पोषण और सेवा भाव होना आवश्यक है। वश्य के धन्दर उसके पोषण गुण की प्रभुलता के साथ-साथ ब्राह्मण धर्म का ज्ञान, क्षात्र धर्म की शक्ति और शूद्र धर्म की सेवा भावना भी होनी चाहिए। इसी प्रकार शूद्रों के सम्बन्ध में ममर्भ है।

जब हमे बरिद वरुं व्यवस्था द्वारा यह स्पष्ट हा जाता है कि क्षत्रिय के धन्दर रक्षा और शक्ति के गुणों को प्रभुलता के साथ सेवा विधा, पोषण और सेवा के गुण भी होने अनिवार्य हैं तो सेवा और रक्षा का समन्वय सेवा पालन किस प्रकार आर्यवीर दल के मर्कडे है, यह स्पष्ट हो जाता है। धार्मिक वल धार्मिक जाति की क्षात्र शक्ति है। यदि यह शक्ति केवल रक्षा ही में व्यय हो तो रक्षा कार्य के प्रभाव में इस शक्ति का दुरायोग प्राप्तिकता में भी हो सकता है और निर्बली के शोषण में भी लग सकती है। क्षात्र शक्ति का दुस्प्रयोग न हो। इसी भावना में क्षात्र धर्म का क्षात्रि का समन्वय सेवा एवं प्राम्स्वय के साथ किया गया है। सेवा में विनम्रता की आवश्यकता होती है, धन एक क्षत्रिय में जहा विरागों के सम्मूह रडना पाई जावे वहा दोनों एक दुस्रों के सम्मुख सेवा को विनम्रता भी दिखाई दे, यही धार्मिक क्षात्र धर्म है।

अत आर्य वीरदल में इन भावना को बल मिलना हो चाहिए कि धार्मिक वीरों का प्रमुख कार्य धार्मिक धर्म, धार्मिक शानि धार्मिक सभ्यता को रक्षा करना तो है ही परन्तु धार्मिक जाति की रक्षा में विरोधों के सम्मूह रडता का परिचय देते हुए धार्मिक जाति के साथ विनम्रता का कर्तव्य भी होना चाहिए। इस विनम्रता के प्रभाव में ही बहृपण का अहंकार पंदा हो जाता है। प्राय सेवा का प्रमुख कार्य ही शूद्र वर्णों के व्यक्तिके ही करणे परन्तु यदि क्षात्रव्यवस्था पड़ी तो सेवा काय तथा रक्षा के कार्य का उत्तरदायित्व भी धार्मिक वल पर है। इस कर्तव्य को प्रत्येक धार्मिक वीर पहिचाने। यदि की ई धार्मिक वलसे को पाना है, यन्ने को भनन देता है। धाम, पानी, प्रभवार् धर्म्य धार्मिक में फसे हुए व्यक्तियों की प्राण रक्षाथ सेवा कार्य करता

तुलसीराम स्वामी के चार व्याख्यान—  
स्वामी प्रेस मेरठ में प्रकाशित १९०५ में  
तृतीय संस्करण ये व्याख्यान पृथक् भी  
छपे थे।

## तरुण मंच

## उद्बोधन आर्य वीरों के लिए

रामाज्ञा वंरामो

सच-सच—आर्य वीर दल विहार



युवा पागे राष्ट्र को नवसे शक्ति  
शाली शक्ति जगता है। इस शक्ति का  
क्षय राष्ट्रीय शक्ति है। शक्ति आपका  
है। आप शक्ति के प्रतीक हैं। हमारी  
एक मजबूत मस्तिष्क है पर वह क्या  
है? आप इसका बलन नही कर  
पाते इसलिए कि आप अपने मस्तिष्क को  
से परिचित नही है। आप स्वाभाविक  
हैं। बिना इसके ज्ञान कि स्वतंत्रता  
क्या है? आप आत्मिक शक्ति का  
के साथ है बिना यह ज्ञान कि घन  
क्या है? आप जीवित हैं बिना यह  
ज्ञान कि जीवन क्या है। आप को इन  
का सही बोध होना चाहिए

आप हम सभी को मिनकर अपने  
महान् कर्तव्यो के पद पर कदम से  
कदम मिलाकर चलना पड़ेगा।  
आप यह तो जानते ही हैं कि 'ऊठे छोटे  
सोते मिलकर बड़ी नदी बन पाते  
लेते हैं। सभी दिशाओं से आता मन्द-मन्द  
समीर मिलकर नौबलामी पवन का  
रूप लेता है। परो ऊँघ वाह कर  
उड़ते हैं और उससे वे निर्भीकता का

अनुभव करते हैं। आप देख रहे हैं  
विश्व की परिस्थितियाँ बदल रही हैं  
नई स्थितियों में सुधार का निना त  
आवश्यकता है। ऐसे सुधार और  
परिवर्तन की जहाँ मानव मानव का  
शोषण न कर सके हमें सामाजिक  
शासन के विरुद्ध आमन्त्रित क्रान्ति के  
लिए शारीरिक मानसिक तथा  
सामाजिक शक्ति की आवश्यकता है।  
इसके लिए हमें अनेक मायना का  
दोष-जतना होगा।

समय का स्वर है कि न 'प्रलो-  
भनो से दुः' हमें नास्तिक्य के  
दूषित भावों से बचकर शक्ति के  
शूल भरे पद पर प्रज्जित पथ पर अग्र-  
सर होगा है

चलिए हम एक साथ मिलकर  
पवित्रबद्ध होकर पूरी सावधानी के  
साथ अपने निश्चित लक्ष्य की ओर  
बढ़ें।

आप मुनि, दूर सुदूर दिशाओं  
स क्षमियाँ सभी को बनि अनु-  
सूचन हो रहा है।

चलिए, किजुल सोच चलिए।  
एक निश्चित उद्देश्य निश्चित लक्ष्य  
आपकी समीकन प्रताप्ता कर रहा  
है। यह सम्भव है कि आपके परि-  
स्थिति आपका जीवन माय सकता  
है। 'मनि' निम्न और निम्न की  
अपने को 'सत्य करने की भावना  
का नेत्र आगे बलिए। यह भी सम्भव

है कि आपके मायना की वनिबेदी  
पर अपना साथ 'माय' पड़ सकिन  
गुठ 'माय'निक अनुमान्य आपके  
भीतर विरिद्ध और मयप्रेण की  
भावना चाहता है। आप अपने को  
सादर मनीषित कर। गच्छे के लिए  
सनाज के त्रिग धीरे मानवता के  
लिए। बिना के अन्तर्भव ज्ञान वत-  
मान की अन्तर्भव आपके लिए अग्रय  
कोष होगा।

आइए जिन आगे बढ़िए।  
हमारा 'हम' भी गंधी स्वरूप है।  
कितने साष्टम 'आयवीर' हैं जो हमारे  
साथ धर्मिक पदों 'उत्तरे को न्याय'  
है। राष्ट्र के लिये के लिए मान-  
वता के वृद्धि विकास के लिए,  
विशाल और क्रान्तिकारी कार्यक्रम  
आपके मंगल है। इसकी सम्पूर्णता के  
लिए यह विस्तृत अनुश्री और आदेश  
पत्र है।

आइए हम एक मूक के भीतर  
बधकर घोषित कर। मया क शब्द  
परमो एक हो जाया कृष्ण ना विज  
मायम। जहाँ भा हो अपने को न-  
गिन करो और कायारा कर। हम  
मभी मुन्धारे साथ

आप वन्धुओं ना मया नवार  
धोरे धोरे कनि समस्याओं से घिरता  
जा रहा है कष्ट घिर गया है।  
विश्व की मारी समस्याओं के मना-  
वाल और निदान का सम्पूर्ण उत्तर-

दायित्व क्षतिवशों म पदयानन्द  
जी ने आर्यसमाज का मुमुदे किया  
था। महर्षि ने उसके लिए व्यापक  
रूपरेखा प्रस्तुत की थी। ससाज का  
जटिल समस्याओं के नमून विचार  
के लिए जिन कुशल भावी की आर्य-  
क्षयकता है, वे हमारे लिए आर्यवीरों  
के पास हैं। नये विश्व के निर्माण के  
यज्ञ में आर्यवीरों का प्रमुख स्थान है।

आर्य वीर दल राष्ट्र के विकास  
के लिए हृदयकपी तरणों का एक  
संगठन है जो मात्र लाठी चमारे  
वालों का व्यायाम करने वालों का  
संगठन नहीं है। यह मानवता के हित  
में उन अनुनाते प्राण के आर्य वीरों  
का हृद संगठन है जो मानवता की  
सेवा के लिए अपने जीवन की सभी  
लगाता रहा है। यह आर्य वीर दल  
मात्र संगठन या संस्था नहीं यह एक  
आदर्श है। दानवता के विरुद्ध कानि  
की जवाला है। अन्धकार तथा कुरा-  
नियों कुचिवाओं के विरुद्ध ध्वनकी  
आवाज है। अन्धकारों का 'मया' है।

आर्य वीर 'मया' विराम नहीं  
क्षमियाँ का मयक है। उसके मय  
प्राणिनीय आर्य जनि है। मयी  
जाति की विनाश की धीरे नहीं  
निर्माण की धीरे 'मया' है।  
इस प्रकार आर्य वीर दल एक प्रक्रिया  
है और साधन भी आर्य दल वर  
यज्ञ है और प्रार्थना है।

## किशोर मंच

देवताओं में सबसे बड़ा इन्द्र था।  
देवों (राक्षसों) में सबसे बड़ा  
विराचन था। एक बार विराचन  
और 'मया' आत्मा और परमात्मा के  
विषय में बात करने लगे। दोनों की  
मनस्क में कुछ भी नहीं था। वे खुद  
मोक्ष लगे। अन्त में दोनों ब्रह्मा जी  
के पास गये। ब्रह्मा जी ने बात  
बताया। इन्द्र किजुल सारे कपों में  
बा और विराचन ने राजाओं के  
कप पहन रखे थे। उन्होंने ब्रह्मा जी  
से कहा— हम आत्मा और परमात्मा  
के विषय में कुछ बताइए। भा मा

क्या है और परमात्मा के साथ उस  
का क्या सम्बन्ध है? प्रजापति ब्रह्मा  
ने कहा कि पहले दोनों एक वर्ष तक  
ब्रह्मचर्यव्रत धारण करने के भरे पास  
रहें। फिर मुन्धरे इसके विषय में  
बताऊंगा। दोनों ने ब्रह्मा जी की  
बात मान ली। एक वर्ष तक ब्रह्मचर्य  
का व्रत धारण करके फिर दोनों  
प्रजापति के पास गये ब्रह्मा (प्रजा-  
पति) ने उन्हें एक कठोरा विचार और  
कहा—जाओ देखो इसमें तुम्हें क्या  
दिखाई देता है।

दोनों ने कठोरे में देखा। उसमें

## इन्द्र-विराचन

बल-वीर शास्त्री



इन्हें शरीर की छाया दिखाई ना।  
उन्होंने कहा—कठोरे में हमें शरीर  
की छाया दिखाई देती है। हमारे  
दाढ़ी, मूँ, केश, कुण्डल मुकुट आदि  
दिखाई पड़ते हैं।

इसके बाद प्रजापति ने उनके  
वस्त्र उतारवा दिये। उन्होंने फिर  
से कठोरे में देखने के लिए कहा। दोनों  
ने फिर देखा। उन्हें फिर से शरीर  
की छाया दिखाई दी उन्होंने फिर  
प्रजापति से जाकर कहा कि शरीर  
की छाया दिखाई देती है। प्रजापति  
ने कहा— यह शरीर ही ब्रह्म है।

यह बात सुनकर दोनों अपनी  
राजधानी लौट गये। ब्रह्मा (प्रजा-  
पति) को बात याद करके विराचन  
तो अपने शरीर को ही सब कुछ सम-  
झने लगा। वह मूक अन्धका वाता  
अन्धका पहना और शरीर को मजा  
कर खसता। उसके सामी की एगा  
कर लेने और आपस में मंगल कर  
नष्ट हो गये।

इन्ने ने ऐसा नहीं किया। 'मने  
आत्मा के बारे में सोचा, उसको समझ  
ने नहीं आया कि शरीर ही 'कस'  
(पृष्ठ १९ पर)

**महात्मा गांधी और स्वामी श्रद्धानन्द**  
**दोनों को एक जैसी वीरगति प्राप्त हुई**

डा० कमल किशोर गोयनका

भारत के अग्रिमिक काल के इतिहास में अत्यन्त गीतात्मक धर्मक कारणों से महत्वपूर्ण है। एक प्रमुख कारण यह है कि इस गीतात्मक धर्मक युग प्रत्येक धार्मिक सुधारकों विद्वानों जनतेमों प्राति ने ज म लिया धीर देश की सोयी धार दासता में जकडी जनता को जाग्रत कर दिया। ऐसे महत्त्वपूर्ण में महात्मा गांधी धीर स्वाभी अग्रजान का नाम इतिहास के पृष्ठों पर स्वर्णचिह्नों में अंकित है महात्मा गांधी धीर स्वाभी अग्रजान के महत्त्वपूर्ण कारणों में कि जेन अपने अपने काल में प्रकाश ज न कर दी है।

स्वामी अज्ञानदका जन्म २१ फरवरी १८५१ तथा महात्मा गांधी का जन्म अक्टूबर १८६९ को हुआ। १८८३ अज्ञान स्वामी अज्ञान = गांधी ने १८८३ १२ अप्रैल = ५ स्वामी अज्ञान द जन्म १८७८ में जेनेमी से प्राये ५ स्वामी अज्ञान = ५ अपनी जिनालाभा को शास्त्र हर रहे। न तब गांधी प्रारम्भिक पाठ शाला में जाता प्र न कर रहे थे। स्वामी अज्ञान द प्राय १८८९ में स्वामी अज्ञान को विविध सहाय्य ३ तब गांधी सेवा कला का छात्र थे।

गाथा मई १ ६३ में एक बैरिस्टर  
के सैलियन से भारतीयों का मुकदमा  
लड़ने के लिए शिक्षण प्रणीत। तब  
उस समय तक मु. शा. रा. म. प्रा. म. प्रा. म.  
सम्पूर्ण गतिविधियों पर छा. ग. य. और प्रा.  
प्रतिनिधि सभा के प्रधान बन।

गांधी दक्षिण अफ्रीका में कई भारतीय धर्मसमाज के प्रचारकों के संपर्क में आए और उनके भात्म त्याग एवं देशभक्ति को देखकर वे इतने प्रभावित हुए कि जुलाई १९०५ में जब धर्मसमाज के प्रचारक लॉरेन्स प्रमानंद दक्षिण अफ्रीका में गांधी ने उन्हें जोहानिसबर्ग में मत्तपत्र समर्पित किया।

इधर भारत में स्वामी श्रद्धानन्द  
१६ नवम्बर १९८८ में आय प्रतिनिधि  
सभा के माध्यम में गुरुकुल स्थापना का  
प्रस्ताव स्वीकार कर दिया था और धन  
का प्रयत्न म मन १ २ म गुरुकुल

महात्मा गांधी ने अखिल भारतीय कांग्रेस  
में भारतीय कृषियों के सम्मान एवं अधिकारों  
के लिए मन १० में सत्याग्रह आरम्भ

किया यह जन आंदोलन करना देना बिना परब ना केरी लगना और व्यापार करना आगने पर पजीकृत प्रमाणपत्र दिसाना घगठो की छाप देने से इका करना और नटाल की सीमा पार करे टासबाल मे प्रवेश निषेध का उत्सव करना आदि अनेक रूपी मे चम रहा बा

स्वामी भद्रान को वस धारोल  
की जानकारी मिली थी - हैं यह  
न व दृष्टा कि गांधी के नवतस मे स  
जाने वाले स सय ग्रह धारोल न  
धन को धारोवतस है । स्वामी भद्रान  
ने नृत्त न मुक्कल क लाओ को कृपी के क  
मे काय कर्त्त धन सवह करणे की प्रण  
दी इस प्रकार सवृहीत बन मेरे प्रि  
सो ह सवृधन से पत्र के साथ गांधी स  
नश

स्वामी गङ्गानन्द प्रौर मधी के प्रथम  
परिचय का यह कहानी स्वयं महाराज  
गङ्गानन्द यगद्विष्टया के ६ जन्मवत्सर  
१९२७ के प्रथम में स्वामी जी के स्मरण  
बोधक से प्रकाशित की ।

गांधी जी ने धर्म से सम्बन्ध न रखने का  
स्वामी जी ने मुझ-जापन प्रजा था व  
हिंदी में था। उन्होंने मुझ मेरे प्रिय भा  
कहकर सम्बोधित किया था "स बात  
मुझ मु "गिराम का प्रती बन दिया  
इस प्रकार इस छोटे से अभ्युदय ने ज  
सम्बन्ध बना वह स्वामी जी उद्घाटन  
गौरी होने तक धर्म का एक धामी  
सम्बन्धों के रूप में चलता रहा।

महात्मा गांधी के जन्म का  
 भारत प्रायः एक ही श्रद्धा-दिन के रूप में  
 पहली मई को ही मनाया जाता है। १९०७  
 ई. १५ अक्टूबर को गांधी का जन्म हुआ।  
 को यह दिन महाराष्ट्र के जयपुर जिले  
 पन्जे श्वार गांधीनिकेतन में महाराष्ट्र  
 के महाराष्ट्र के जयपुर जिले में हुआ।  
 को हरिदास में प्रवेश। गांधी का  
 स्वामी श्रद्धा में उतने ही जिले  
 का श्वर को एक दृष्टि में ही जिले  
 गांधी को यह सहायता थी कि गांधी  
 जाने पर भारत के तीन महान सुपुत्रों  
 सन श्रव व करने चाहिए इन तीन महान  
 सुपुत्रों में एक स्वामी श्रद्धा ही है।

गांधी ने भारत आने से कई मास पूर्व  
२७ मार्च १९१४ को नेताल (दक्षिण  
अफ्रीका) से स्वामी अद्वानंद को पत्र  
लिखकर उसे भारत आने के लिए

पावनी उसलुका का अन्धक किन्ना भूमाही  
 कायने मे विद्य यह गा हो सम्पन्नको  
 गाये पने मे लिखा गा एउम्न ५५  
 धर्यने नाम हो काय मे के जना  
 हुके । हसति एउमे होली लसति कि  
 फुले धन्यनी को लिख रहा । पावनी  
 हे इत लसति विद्ये लिय छपुम्न भया  
 करत कायिने ही होर हो एउम्न हो  
 ही पाय होर पायने काय मे करत स  
 र्वा करत सनय भग्नी सम्पन्नको  
 न्हा । हो एउम्न मे लसत यह जीउ  
 लसता या कि दुखने लीनाना ठाकर  
 होर ही सुलीन कुम्नार पर पर वायना  
 कितना पल्लव पडा रहा । उम्ने मे  
 पडा बन्हा हे कि पावनी एउमे मे लसता  
 हावने मे लिख किन्ना काय किना या  
 जहोने दुखन मे लीन मे इतने सुन्दर  
 ५५ पित्र लीये मे कि यह प लिले  
 सय लसत हो लीने मे दुखन मे  
 पन् पन् गहा । एउम्न मे नेने मे  
 उम्न होली स्वानी हो दोले होर इत  
 मे लस्यो हो प्रधान मारत मे लीन बहान  
 लसत प्रथि सम्पन्न जहोने इत करत  
 उ कुम्न प्रथि सम्पन्न जहोने इत

महाराजा गांधी के मुद्रकाल किर्तिमो  
पन्थन से पहन सयनलाल गांधी फोनिकस  
पाठालाल के २५ छात्रों के साथ महा पदु  
बुके से गांधी न = फरवरी १९१५ ई  
पत्र लिखकर त्वाभा ख्यातना का बन्धन  
को प्रम दन लाल उनके साथ परिधम  
करने के लिए व यव द टिप्पि धार लिखा  
बिना स सत्रण ही धापे निकट पदु  
कर धापके बरछा म सिर मुकाना मर  
कत-धय है

गांधी अप्रैल १९१५ को गुजरात कागरी पंच जहा स्वाधीन श्रद्धान्त की उपस्थिति में गुजरात के ब्रह्मचारियों ने उनका स्वागत करते हुए मानवस्य भव किया ।

पाथी न धापने उतर मे छव बात  
क साथ लाम्बी बहावन द्वारा उठ्ठे भाइ  
कहने की बात का विवेचन रूप से उत्प्रेषण  
कहने हुए कहा कि जहाँ भाइ जी ने धाप  
धापने एक वचन भाई कहा है उसका  
मुझे बच है। छपया धाप लोग कह  
प्राप्त का करें कि उनका भाई बनने मे  
योग्य हो सक। मैं २ वष धाप धापने दे  
मे धाया हूँ मैं कोई सलाह नही दे सकता  
मैं तो मानवचन्द्र प्राप्त करने धाया।  
धायी जो की भावार्थ की देना मे कह

है ऐसे प्रत्येक प्राणी के सम्मुख मुझने के लिए तैयार हूँ। मैं अपने देश की सेवा में प्राप्त देने के लिए तैयार हूँ। अब मैं विदेश नहीं जाऊंगा। मेरे एक भाई (सकमीदास बाबा) चल बसे हैं। मुझ बाबा है कि महात्मा जी उनका स्थान ले लगे और मरु भाई मानेंगे।

स्वामी ध्यानन्द ने माई के नाते  
माने प्राथीवादि वेदें हए कहा मरु यज्ञ  
मुनकर प्रसन्ता हई कि बाप धर भरत  
ने रहैये भारत धन्य कोनो की याति बाहर  
यहकर भारत की सेवा करने के लिए  
विदेश नही जायेंगे । मरु प्राथा है कि  
मायी भारत के लिए योति स्तम्भ बन  
जायेंगे । स्वामी ध्यानन्द की यह सवि-  
धवासी किन्ती लख हुई, यह हम सारा  
बाशी ही नही सारा स सारा जानता है ।

महात्मा गांधी स्वामी अखानन्द के जीवनकाल में दो बार ८ अप्रैल १९१५ तथा २० मार्च १९३६ को गुप्तक कायची गये तथा उनके अहीद होने के लगभग बार मास उपरांत १६ मार्च १९२७ को दीक्षात भाषण देने गए थे ।

इससे पूरा गांधी २० मार्च १९१९ को मुकदमा के बाविक उत्तर पर जब आप था उहोने मुकदमा कास्य को ह्यामिनि प्रजासय व बीर राठोडय सव्या सानेते हुए स्यामि अखानय प्रजासय करते हुए का था स्याममका को सयसिचिपय का सवय परवतय का सित मुकदमा को स्यामना योर ससेके परि वालन मे विसाए वसत है यर ठीक है सि मयनाय मयोर य म को प्रखालयसय उरफि सित की मयोर गिनि का थयिजनाय है सिनुत यह सव्या सयन स्यामे मे एक स्यामिनि प्रजासयकी बीर राठोडय सव्या है सिमि को प्रयाय को सयकोडय सव्याय य कासय मे बह विलनम मुसत है य स आयन मे स्यामे मे विनय नमिअसय द्वारा दाने सये गांधी के प्रयायको क प्रयासने सयन सयित को मुकदमा के प्रयास की।

महात्मा गांधी न धरणी धातलकबा  
मे पवली यात्रा के धनुष के खब मे  
लिखा जब मैं पहाड़ से सीलेने वाले  
महात्मा को के दशन कटने धौर उमक  
सहसा देवने गयो तो मुझे बढी शक्ति  
मिली। त्रिद्वार के कोलाहल धौर युक्तु  
की शांति के बीच का मेरे हृदय दिशा  
बेधा था। महात्मा न मुक धरने प्र मे  
नहसा गिया ज्ञाचरी मेरे पास से हुट  
न न ये।

यात्रा के व द महात्मा गांधी और स्वामी अष्टानन्द ने सहयोग निरतर बढ़ता गया और स्वाधीनता संग्राम में कई बार मिलकर काम किया जब अंग्रेजों ने रोज द अधिनियम लागू किया तो स्वामी अष्टानन्द ने ३० मार्च १९१६ को दिल्ली में ५० हजार व्यक्ति (शेष पृष्ठ ११ पर)



आचार्य क्षेमचन्द्र 'सुमन'

हिन्दी के प्रान्त्य साधक आचार्य क्षेमचन्द्र सुमन इन दिनों दिवंगत हिन्दी सेवियों की स्मृति को विर-स्थायी बनाने के मशव्वेपूर्वक यत्न में सन्तप्त हैं। दस वर्षों में प्रकाश्य इस विद्यालय ग्रन्थ के दो खण्ड प्रकाशित हो चुके हैं। इस ग्रन्थ में देश-विदेश के हजारों हिन्दी सेवी लेखकों, कवियों, पत्रकारों, हिन्दी प्रचारकों के प्राथमिक पत्रिचय प्रकाशित किये जा रहे हैं।

श्री सुमन को मृत आर्यसमाजी तथा कामेयी हैं। आर्यसमाज में जी उन्हें हिन्दी सेवा के मस्कार मिले। मुमुक्षु महाविद्यालय उवालापुर में प्रसिद्ध विद्वान् ए० नन्देव शास्त्री केदन्तीश के श्री शरणों में अध्ययन के दौरान उन्होंने वैदिक धर्म व भारतीय सस्कृति की मेधा का मकलप लिया। जिससे वे ७० वर्ष की आयु में प्रथो तक नये हुए हैं।

ममन जी को हिन्दी साहित्य व सस्कृति की मेधा के लिए राष्ट्रपति ने मन्त्रालय की 'ग्यासी' में सम्मानित किया। उन्हें पत्रकार शिरोमणि, साहित्यमहर्षि, साहित्य वाक्पति धार्मिक उपाधियों में विशिष्ट

## १६ मिनट्वर को ७०वें जन्मदिवस पर आर्य विद्वान्-हिन्दी सेवी आचार्य क्षेमचन्द्र सुमन

विनकुमार गोयल

किया जा चुका है। स्वाधीनता सेनानी के रूप में उन्होंने प्रधानमन्त्री श्रीमती इन्दिरा गांधी ने नामप्रपत्र भेंट किया था।

सुमन जी आर्यसमाज में सक्रिय योगदान करते रहे हैं। मारीशस में १९७३ में आयोजित १२वें आर्य महा-सम्मेलन में हुए कवि सम्मेलन के वे अध्यक्ष थे। ३५ वर्षों तक उन्होंने मुमुक्षु महाविद्यालय उवालापुर की अग्रतम समिति में विभिन्न पदों पर रह कर शिक्षा क्षेत्र में योगदान किया।

### स्वाधीनता सेनानी

सुमन जी ने स्वाधीनता आन्दोलन में भी सक्रिय भाग लिया था। सन् १९४४ में भारत छोड़ो आन्दोलन में वे वह लाहौर में गिरफ्तार किए गए। वह देश की स्वाधीनता के लिए फीजपुर जेल में पूरे दो वर्ष तक बालागल सज़न करते रहे। पञ्जाब सरकार द्वारा पञ्जाब से निष्कासित कर दिए जाने पर वह अपने धाम वायण्ड (मेरठ) आ गए। ममन जी की सक्रिय नेता ममभक्त उत्तर प्रदेश सरकार में वायण्ड में मजबूरन कर के आये। उनका मम मास तक वे अपने

गाव में मजरबन्द रहे।

सुमन जी ने फीजपुर जेल में 'कारा' नामक एक रोचक खण्ड काव्य की रचना की थी। इस खण्ड खण्ड काव्य में सन् १९६२ के राष्ट्रीय आन्दोलन का मरम बर्णन ममन जी ने प्रथोई डग से किया है। 'कारा' में सुमन जी के देश के युवकों का यो आह्वान किया है।

हम बड़े हमारे जीवन में,  
बरबन तुलना प्रयोग रहे।  
मदियों से मोते भारत के  
तरकर का नीला तोर रहे।  
युग-युग से परबसा पिजरे,  
का बन्ती बान कर रहे।  
है जग मम जिसमें पावन,  
वह बीरो का ममशोर रहे।  
हम बनती आहो से रिपु के,  
प्रायो म्मे जगत छोड चले।  
'जय हिन्द' हमारा नारा है,  
हम नान किने की ओर चले।

सुमन जी ने बड़ा अपने प्रोज-  
म्बी लेखनी के नाथय से स्वाधीनता  
ममम में योग दिया वहा उनको  
प्रोजम्बी वाली में भी देश की नह  
'आई को बाटन कर के स्वाधीनता  
के अमर मम में 'मे को स'र्व मम-

वित करने का आह्वान भी किया।  
न.प.बन्द रहते समय उन्होंने 'कारा'  
के अतिरिक्त 'बन्दी के गाने' नाम  
के काव्य सकलन की रचना भी की  
थी। ममसत कानित के रोचक इति-  
हास के रूप में उनके 'हमारा सचर',  
'नेताजी ममाय', 'आजादी की  
कहानी' आदि राष्ट्रीय भावनाओं से  
प्रोत प्रोत ग्रन्थ उल्लेखनीय हैं।

ममन जी एक यशस्वी साहित्य-  
कार के साथ साथ निर्भीक व सफल  
पत्रकार भी रहे हैं। उन्होंने बड़ी  
'मम्म्बी' 'सिखा म्मा' एव लाहौर  
के 'दिन' हिन्दी मिलाप' के मम्मा-  
कीय विभाग में काफी ममय तक कार्य  
किया वही उनके मम्माकीय लेख  
प्रोजम्बी व राष्ट्रीय भावनाओं से  
प्रोत प्रोत होते थे।

ममन जी ने मममम चार दर्जन  
पुस्तक निरकर व सम्पादित करके  
हिन्दी साहित्य की अभिवृद्धि में मपूर्व  
योग दिया है। 'प्राधुनिक हिन्दी  
कविप्रियों के मम मोन', 'हिन्दी के  
सर्वश्रेष्ठ ममगीन', 'हिन्दी के लोक-  
निय कवि', 'मल्लिका', 'हिन्दी  
साहित्य नये प्रयोग', 'साहित्य  
सोपान' 'सुमन सौरभ', 'प्राधुनिक  
हिन्दी साहित्य', 'हिन्दी साहित्य  
प्रोग' आदि लोकप्रिय ग्रन्थों  
की रचना करके उन्होंने हिन्दी साहि-  
त्य की आगे सेवा की।

७० वर्ष की आयु में साहित्य  
की सेवा में निरन्तर रत हैं। इसी  
प्रकार बामुहोकर वे हिन्दी सेवा  
में लगे रहें, उही कामना है।

'धर्मवत'

पिनमुवा (उ० प्र०)

२० से २० सितम्बर तक कैथल  
में हरियाणा प्रान्तीय आर्यवीर  
सम्मेलन पूरे ममारोह से मनाया जा  
रहा है। सम्मेलन की ध्वजसत्ता  
आर्यजाति के निर्भीक प्रहरी श्री ला०  
राममोगान जी बामप्रम कर रहे।  
हरियाणा में इस प्रकार प्रत्येक वर्ष  
प्रान्तीय स्तर पर सम्मेलन होते रहते  
हैं जिससे पालन भर के आर्यवीर,  
तथा समाजे सम्मिलित होकर ममारो-  
ह की सफल बनती हैं। दिल्ली  
आर्यसमाज का मुख केन्द्र है। देश  
के विभाजन के पश्चात् तभी  
के स्थान पर दिल्ली आर्यों का मड बना  
है। मममन की बात है कि दिल्ली  
में आर्यवीर दल भी अपना स्थान  
बना पाया है। आर्यवीर दल आर्य-  
समाज का मवधर बाज है। युवा  
वर्ग का आर्यममन में प्रवेश द्वार  
आर्यवीर दल ही है। धन दल आर्य  
समाज का मवध है। हरियाणा के  
द्वत प्रान्तीय सम्मेलन में दिल्ली के

## दिल्ली के आर्य वीरो आओ कैथल चलें

(उत्तमचन्द्र शरर)

मममल आर्यवीर दल हरियाणा

आर्यवीरों तथा समाजों को धामन्वित  
करने में प्रसन्नता अनुभव कर रहा  
है। हरियाणा दिल्ली का ममोपवर्ती  
पाल है। दिल्ली के आर्यबन्धु यदि  
मोडा मा कट कर तो हरियाणा के  
आर्यवीरों का उत्साह वे अपने उप-  
स्थिति से बडा सकते हैं। इस के साथ  
ही सेवादल का सुन्दर रूप भी प्रस्तुत  
कर सकते हैं। आर्यसमाज का युवा  
वर्ग अपने इस संगठित कार्यक्रम से  
देश के सम्मूल अपना उज्जवल रूप  
प्रस्तुत कर सकता है। अत दिल्ली

के आर्यबन्धुओं में सावह निवेदन है  
कि वे २०, २१, २२ मिनट्वर को  
कैथल के लिए उीं निर्ज रम।

सम्मेलन में देश भर के आर्य  
नेता पधार रहे हैं। पञ्जाब के युवाओं  
के कारख पञ्जाब का वह सहयोग तो  
हमे न मिल मकेगा जो हम चाहते हैं।  
फिर भी पञ्जाब तथा हिमाचल के  
आर्यवीरों भी इस में यथापूर्व सहि-  
मित होंगे। भाज देश तथा समाज के  
सम्मुख कई चुनौतियाँ हैं, यानकाद  
का रासत मुह बाये लडा है, साम्य-

दायिना, देश के विभाजन के  
पश्चात् भी हमारा पीछा नहीं छोड  
रही, समाज में छनछान तथा वहेज  
जैनी भ्रमभ्रूर बोमारिया समाज को  
सत्य होन बना रही हैं। उबर धार्मिक  
क्षेत्र में धर्मविश्वास और पालण्ड  
प्रकार के विज्ञान के युग में भी आर्य-  
समाज तथा बुद्धिजीवियों की कैवैज  
कर रहे हैं। इन नमाम गावों के विरुद्ध  
आर्यसमाज के युवा वर्ग की संगठित  
आवाज आज समय की मांग है। अत  
दिल्ली तथा आसपास के आर्यबन्धु  
इस आवाज को प्रशानी बनाने में  
दन के कार्यक्रमों को सहयोग  
अवश्य दें।

मेरो उठी कामना है कि समय  
की डम ताग को पुरा करके के लिए  
एक वृद्ध मममन आर्यवीर दल  
दिल्ली की शोर से युवाया जाए।  
दिल्ली देश की ममम गतिविधियों  
का केन्द्र है, यदि आर्यवीरों का स-  
(पेष्ठ ७५ ६ पर)



अध्यक्ष यशपाल सुधाशु अध्यक्ष-वीथ भाषण करते हुए।

केन्द्रीय धार्मिक युवक परिषद् दिल्ली के वार्षिक अधिवेशन में अध्यक्षीय भाषण करते हुए युवा पत्रकार एवम् धार्मिकवेध के सम्पादक श्री यशपाल सुधाशु ने धार्मिक युवकों का आह्वान किया कि वे देश धर्म को रक्षा में तत्पर हों। उन्होंने युवकों की अन्तर्गोष्ठिय मिश्रित पर प्रकाश डालते हुए कहा-सभी देशों में युवकों की भाषाया वार्षिक विकास, आर्थिक विकास से अलग हटकर विज्ञान एवं नये पाष संगीत तथा कर्तव्य विमुक्तता की धोर बढी है। धार्मिक नैतिक मूल्यों का ह्रास भी विद्वन्मन के युवकों में हुआ है। हिप्पी-

## केन्द्रीय धार्मिक युवक परिषद् दिल्ली प्रदेश का वार्षिक अधिवेशन सम्पन्न

दश धर्म और संस्कृति की रक्षा हेतु चरित्रवान् युवक आगे आये

—यशपाल सुधाशु

इज्जत की भावों, कंधे पीर जोन की संस्कृति हमारे अपने देश में भी धर करती जा रही है। तप, समय और सदाचार से अभिभूत हमारी सांस्कृतिक धर्मिता न जाने कहाँ धूमिल हो गया है। अनेक राष्ट्रीय समस्याएँ भी आज हमारे सामने मुंह बाये खड़ी हैं। जिन्हें सामना करने के लिए आज तेज से युक्त बलवान् युवकों की आज नितांत आवश्यकता है।

नैतिक और चार्मिक गुणों से युक्त देशभक्त युवकों और उनके समूहों की आज स्थान स्थान पर आवश्यकता है। यह समय की पुकार है।

श्री सुधाशु जी धार्मिकमात्र प्रचारकों (मन्दिर माय) में आयोजित युवक रैली के समापन समारोह में बोल रहे थे। उन्होंने इस अवसर पर



धार्मिक युवक स्वजागरूकता के समय ध्वज गीत गाते हुए।

अधिकांशिया, मण्डलियों, माता-पिताओं को पुरस्कारों से सिल-डोरी, बेंज आदि से सम्मानित किया।

इस अवसर पर अध्यक्षित कर रहे श्री यशपाल सुधाशु को केन्द्रीय धार्मिक युवक परिषद् दिल्ली की ओर

से एक ट्रफी भी प्रदान की गयी जिसे धर्म जगत् के सम्पादक श्री शितीश बेवालकार ने भेंट किया।

इस रैली में विभिन्न स्थानों से धार्मिक युवकों ने भाग लिया चन्द्र मोहन धार्मिक प्रेस सचिव



केन्द्रीय धार्मिक युवक परिषद् के समापन समारोह में धार्मिक शीतली प्रकाश धार्मिक, श्री यशपाल सुधाशु, श्रीमती सरला मेहता, श्री विश्वपाल जयल, श्री चमकीर एवं श्री धर्मिक धार्मिक।

### परायण महायज्ञ की पूर्णाहुति

धार्मिकमात्र मन्दिर न्यू मोतीनगर में आयोजी पूर्ण के उपलक्ष्य में किये जा रहे यजुर्वेद परायण महायज्ञ की पूर्णाहुति १६ सितम्बर को हुई। इस अवसर पर यजुर्वेद जनता द्वारा पूर्ण सहयोग किया गया। धार्मिकमात्र मन्दिर में यजुर्वेद परायण महायज्ञ के अलावा वेदकथा तथा श्री कृष्ण जन्माष्टमी का भी आयोजन किया गया जिसमें सर्वश्री ५० विवाहाकाल उपाध्याय, ५० भारद्वाज पाण्डेय, ५० भारत मित्र धार्मिक आदि विद्वानों के सुन्दर उपदेश हुए। इस

पुण्य अवसर पर श्री जय भगवान धार्मिक की भजन मण्डलियों द्वारा मनोरम भजन भी सुनाये गये, जिसमें जनता में भरपूर लाभ उठाया। अन्त में समाज के प्रधान श्री तीर्थराम जी धार्मिक ने सब का धन्यवाद किया तथा समाज की ओर से यज्ञोपवेश के रूप में सिलाई की मशीन और यजमानों को स्वामी दयानन्द की बमर कृति सत्यार्थप्रकाश भेंट किया।

तीर्थराम धार्मिक प्रचार

### सितम्बर के प्रवचनकर्ता

धार्मिकमात्र विवेक बिहार में रविवार के साप्ताहिक सत्यम में निम्नलिखित महायज्ञों की स्वीकृति प्राप्त हो चुकी है।

रविवार

१५-९-८५

२२-९-८५

२९-९-८५

उपदेशक महोदय

श्री ५० रविदत्त जी गौतम एम ए साहित्याचार्य

श्रीयुत यशपाल सुधाशु

श्रीयुत जैमिनी सास्त्री

दर्शनभिलाषी

भारती कथुरिया

मन्त्री धार्मिकमात्र, विवेक बिहार







(पृष्ठ ६ का শেষ)

**गोपी श्री अध्यात्म की बीरपति**

के जुलूस का नेतृत्व करते हुए सबका विरोध किया। स्वामी अध्यात्म द्वारा गोपी को भेजे गए सार के अनुसार इस दिन दूध गोपीकाष्ठ के अहिंसे ५ मुखस मान मारे गए तथा १३ पायस एवं २० सायनास हुए।

गोपी ने ३ अग्रहण, १९११ को इस अविवरण १७ वर्ष के लिए स्वामी अध्यात्म को तार दिया और लिखा 'शेजत जानून का विरोध करने में आपने तथा दिल्ली के लोगों ने जिस प्रतिकारणीय कार्य में काम लिया है। इसके लिए मैं आपका तथा दिल्ली के लोगों का साधुवाद देता हूँ। इस उल्लेख के निम्न लिखित वचन की भाषणा का विरोध कर रहे हूँ। यह कोई सामान्य काम नहीं है।

महान बीरपति गोपी धर्मपुत्र से हुए कुलधारी काको के बाद जब गोपीजी ने सत्याग्रह स्वीकृत कर दिया तो स्वामी अध्यात्म ने दिल्ली समिति केब करके धारालन में अपना हाथ लोके किया। स्वामी अध्यात्म गोपी की ओर से लिखा जो गय और उन्होंने गोपी के बुद्धिबोध का ओरवार विरोध किया। यद्यपि गोपी की बहुमान की कि प्रेमभाव फिर भी बना रहा। गोपी ने 'स्वामीजी के स्वस्वरूप' में लिखा कि कि जितना ओरवार उनका विरोध होता था 'जब-जब ओरवार उनका प्रेम भी होता था।

स्वामी अध्यात्म की हत्या स गयी की बड़ा धायालु था। गोपी कावेस केनेटी की बैठक में भाग लेने के लिए गोहा जा रहे थे। उन्हें सोरोमण नामक एक डोटे से लेने लेलायन पर लाया जा-वराय का तार मिला। गोपी इस हत्या के स्त-य के किन्तु उनके विचार में यह हत्या नहीं 'बीरपति' की। गोपी ने गोहाटी की २२ सितम्बर १९२६ की बैठक में इसे धर्मव मरण' एवं 'धन्य मृत्यु' कहा और काफना की कि एसी मृत्यु हम सब को मिले।

२६ सितम्बर १९२६ के धर्मवेसन में गोपी ने हब लोक प्रस्ताव रखा और उसमें स्वामी अध्यात्म के वेषमण, निष्ठा निर्मलपण एवं अन्य गुणों की प्रशंसा की।

'यस इतिहास (३०-१२-१९२६) में' सहोदर अध्यात्म की' शीर्षक से लिखी अपनी अध्यात्म के गोपी ने उन्हें 'बीरता का धरातरा' 'कर्मवीर' एवं 'शोषण' कहा तथा लिखा, 'धर्म और सत्य' के लिए प्राण देने के कारण मृत्यु की वचन हो गयी।' गोपी ने ६ जनवरी १९२७ को बनारस में उन्हें अध्यात्म देने के लिए भगा स्नान किया और उस 'महान धारा' के कार्य को पूरा करने की ईश्वर से प्रार्थना की।

महात्मा गोपी ने स्वामी अध्यात्म के हत्याएँ प्रमाण रखीय को गोपी न मानकर जब धर्मपुत्र एवं गोपी की उत्तरदायी

उत्तरदायी जो स्वामी अध्यात्म, साक्षात् साधनपराय और भवनाहृत बालवीय को इत्यादि का बहुत बोधित कर रहे थे। गोपी ने अनेक बार २०० पन्नों में कहा कि स्वामी अध्यात्म 'इत्यादि का जन्म' नहीं है। गोपी ने कहा कि हिन्दू-मुसलमानों का इस हत्या से विना नवी चाहिए और उनक हत्या से अपने अपने हृदय का पाप को बेना चाहिए। गोपी ने प्रति घोष और बदले को भी वचन विरोधी कहा और निर्दल दिया कि हिंदुओं को धार्य-सम रक्षना चाहिए।

महात्मा गोपी स्वामी अध्यात्म की, कुछ मामलों में असहमति का बावजूद अपना भाई धारपीयन बहुलकी मानते हुए उनके गुणों की प्रशंसा बने रहे। धर्मपुत्रता निवारण के लिए उन्होंने जो कार्य किये उनमें गोपी ने सर्वत्र मुख कट से प्रशंसा की। वचन दोनो वैषम्यको के सेनो एवं कार्यप्रणाली में सार था, लेकिन सग बहु सचो हो कि फा दोनो को एक बीसी बीरपति प्राप्त हुई।

कार्यान्वित से सवार १/६८ धर्मो विहार ५-६-१९२६

(पृष्ठ १९ का शेष)

**देवव्रत धर्मन्द**

बाद भी उन्होंने केवल भाषण देने तक ही अपने आप को सीमित नहीं रखा। बल्कि उन्होंने उनको चिर-स्वाधी बनाये के लिए उन्होंने रचनात्मक कार्य प्रारम्भ किये। बालक वर्गिकाँ, युवक युवतियों में धार्मिक मार्गदर्शक नैतिक प्रतीक के प्रतीक अनेक विषयों पर प्रतियोगिताएं आयोजित करना तथा सत्याग्रहप्रकाश एवं सम्मान सम्मानों परीक्षाएं आयोजित करना तथा युवकों की पगेपकारी एवं सेवाकार्यों के लिए उत्साहित करते रहना उन्होंने अपने जीवन का प्रग बना लिया था। अपने

(पृष्ठ ५ में आगे)

**इन्द्र-विरोचन**

प्रकार बहुत हो सकता है। वह फिर ब्रह्मा (प्रजापति) के पास आया और अपनी धाका को मुद्राय।

ब्रह्मा जो (प्रजापति) ने कहा—'बेटा! तुम्हारी बुद्धि देखकर मुझे प्रमत्तता ही रही है। इस बार तुम्हारे साथ विरोचन क्यों नहीं आया? इन्द्र ने कहा—'वे शरीर को ही सब कुछ समझते हैं। हर समय सुख से जीवन बिताते हैं। शारीरिक सुख को ही वे सच्चा सुख समझते हैं। इस बात से अलग हट कर सोचना नहीं चाहते।

इतना सुनकर ब्रह्मा जी ने इन्द्र को फिर से ब्रह्मचर्य व्रत धारण करने के लिए कहा। इन्द्र फिर वापन आ गया। उसने एक वर्ष तक ब्रह्मचारी का पवित्र जीवन बिताया। एक वर्ष के बाद ब्रह्मा जी के पास गया। ब्रह्मा जी ने कहा—'तबसे वे ब्रह्मचर्य से बढकर कोई तप नहीं है। इसी के

जीवन में जो धन संग्रह उन्होंने प्राप्त किया अपने पास नहीं रखा और न स्वयं उसके उपयोग का ध्यानन लिया वरन एक तपस्वी साधक बनकर धर्म धनपालय साधकैविक धर्म प्रतिनिधि मन्त्रा और अन्य धर्म सामाजिक सम्भावों, गरीब छात्रों के लिए धर्मित कर दिया।

धीर, गम्भीर एवं सौम्य प्रसन्न चित्त धर्म को लेने के बने कुशल वक्ता, कुशल वृत्त कुशल पुरोहित, कुशल प्रशासन कुशल युवा नेता और देवव्रत धर्मन्द को धर्म गन्देश पतिवारी की ओर से विनम्र अर्पण जलि।

—यशपाल माधु

द्वारा हम ब्रह्मविद्या प्राप्त कर सकते हैं।

इन्द्र ने ब्रह्म के स्वरूप को जानने

के इच्छा की। ब्रह्मा जी ने कहा 'आत्मा या ब्रह्म का कोई स्वरूप नहीं होता। इस शरीर के नष्ट हो जाने पर भी आत्मा धमर रहती है। आत्मा की भरती नहीं। इसे किसी प्रकार का रोग या कष्ट नहीं होता।'

ब्रह्मा जी ने यह उपदेश इन्द्र को दिया, जो देवताओं का राजा था, जिनकी सामाजिक दुस्तिमा थी। विरोचन प्रसुरो का नेता था। जो साना, पोना, रहना यही जीवन तत्त्व है ऐसा समझते हैं। वही प्रसुर है, नाम-किर्ति जलित वाले हैं। इन्द्र ने उनकी ज्ञाता मानी थी। पवित्र जीवन बिताया। धानन्द और सुख से जीवन भर गया। इन्द्र की सच्चा ज्ञान मिली। विरोचन को नहीं मिखा। इसलिए वह दुःखी रहता था। सुख और दुःख की यही पहचान है।

□

**आर्यसमाज करौलबाग में****वेद प्रचार सप्ताह एवं****श्रीकृष्ण जन्माष्टमी**

३० अगस्त से ७ सितम्बर तक आर्यसमाज करौलबाग में दिल्ली में वैष्णव एक ब्रह्म व्रज का धर्मो-जन्म किया गया। इस अवसर पर श्री प्रो० रामकिशोर जी की वैदिकभा एवं श्री गलाविमह रायच द्वारा मधुर भजनों का रामस्वादन कराया गया।

७ सितम्बर को आर्यसमाज के प्राणय से श्रीकृष्ण जन्माष्टमी का आयोजन किया गया। इस अवसर पर श्री प्रो० रामकिशोर, प्रा० रमेश चन्द्र श्री प्राचार्य हरिदत्त शास्त्री श्री मोदप्रकाश शास्त्री एवं श्री अजय भटना प्रादि वक्ताओं ने श्रीकृष्ण के उदात्त चरित्र पर प्रकाश डाला। समा का मजाल और श्रमप्रकाश सुनेजा ने किया।

निवेदक

कार्यालय मन्त्री  
दयालचन्द गुप्त

सुलतानपुर महारानी दिवली-३० से मुल गया है जिसमें विचारियों की नि शुक्र शिक्षा एवं धारास को सुविधा है और जनवरी से ७५ इ० मासिक छात्रवृत्ति भी छात्रों को दी जाणी।

मनुदेव शास्त्री, प्रिंसीपल  
सीनाग विद्या मन्दिर  
दुगापुरी सुलतानपुर  
गन्नाई के निवेदक

**स्व० श्री पं० देवव्रत धर्मन्दु श्रद्धांजलि सभा**

दिल्ली की समस्त आर्यसमाजों की ओर से

२२ सितम्बर रविवार को

आर्यसमाज दीवान हाल म प्रात १० बजे प० देवव्रत धर्मन्दु की स्मृति में श्रद्धांजलि सभा का आयोजन किया गया है, इस अवसर पर पहुँचकर कर्तव्य का पालन करे।

मन्त्री—आर्यसमाज दीवानहाल दिल्ली

**“केथल में कवि सम्मेलन”**

पत्रवल। भारोवर दम हरि-राया का प्रान्तीय महा सम्मेलन २२ सितम्बर रविवार से कंथल में हो रहा है। २२ सितम्बर रात्रि ६ बजे कवि सम्मेलन का आयोजन किया गया है जिसमें निम्नलिखित धर्म कविगण पकार रहे हैं—प्रो० उत्तमचन्द शर्मा (सयावली), डा० गताम प्रसाद (कैथल), प्रो०

सियाराम निर्मय (धारा), श्री सत्यपाल बेदार (दिल्ली) श्री सीता राम दीवान, श्री मुनवर माहिक, श्री व्याकुल जी एवं अन्य कई कविगण।

(संयोजित कुमार धारा)

मन्त्री भारोवर दम हरि-राया

संस्कृत पढ़ने वाले छात्रों के लिए शुभ सूचना

“राष्ट्रीय संस्कृत संस्थान” से

**दंतों की हर बीमारी का घरेलू इलाज**

**एम डी एच**

**दंत मंजन**

**लौंग युक्त**

23 जड़ी बूटियों से निर्मित  
आयुर्वेदिक औषधि

दलेख डाक्टर

गुठ की दुर्गन्ध

ठंडा गर्म पानी  
लगाना

वाल का दर्द

अब नये पैकेज  
में उपलब्ध

मिन्नीस्टर्न  
महाशिया की हट्टी (प्रा०) लि०  
B 44 इण्डस्ट्रियल एरिया कीर्ति नगर नई दिल्ली 15  
फोन 538609 537987 537341

**अपने बालों को स्वस्थ, प्राकृतिक काले व चमकदार बनाइये और उन्हें चमकते कीर्ति-भीनी सुगंध में भरकाइये।**

**एम डी एच**

**चमकदार शिकाकाई पाउडर**

एच डी एच शिकाकाई पाउडर बालों की कीमती पूरक काला है तथा उच्च प्राकृतिक काला सुगंधित व स्वस्थ बनाता है।

शिकाकाई रोजा जालसा हूट ब्रैश करके बालों में लगाए जायें बालों में काला तथा एच डी एच शिकाकाई पाउडर एक काला लागकारी प्राकृतिक काला है। इसमें कोई रासायनिक पदार्थ नहीं है।

एच डी एच शिकाकाई पाउडर का बालों में ही निराला प्रयोग कीजिये।

निर्माता  
महाशिया की हट्टी (प्रा०) लि०  
B 44 इण्डस्ट्रियल एरिया कीर्ति नगर नई दिल्ली 15  
फोन 538609 537987 537341

**उत्तम स्वास्थ्य के लिए**

**गुरुकुल कांगड़ी फार्मसी,**

**हरिद्वार की औषधियां**

**खान करें**

**गुरुकुल कांगड़ी फार्मसी**

**हरिद्वार**

**गुरुकुल चॉय**

गुरुकुल चॉय

**भीमसेनी कुरमा**

भीमसेनी कुरमा

**पापेकिन**

पापेकिन

**ओडम**

ओडम

शाखा कार्यालय—६३ गली राजा केदारनाथ  
बाबड़ी बाजार दिल्ली-६ फोन २०६८३८

वित्तीय शाख प्रतिनिधि द्वारा १६ हनुमान रोड नई दिल्ली-१ फोन ३१०१६० के लिए डा० बसन्तलाल द्वारा सम्पादित एक प्रकाशित तथा  
वैयक्तिक प्रेषण यहाँ न० १० कैलाशनगर, दिल्ली-११ से युक्ति। रजि० न० डी० (मो०) ७५६

साप्ताहिक

ओडम्

पुस्तकालय  
इसका स्थापना १९६४ विद्यालय,  
विहार

१९७१

कृष्णान्तो विश्वमार्गम्

# आर्य सन्देश

वर्ष १ संक ५०      रविवार १३ अक्टूबर, १९८१      मुद्रित संख्या १९७२६४०५६      आर्थिक २०५२      दयानन्दम् १९१  
सूचना एक प्रति १० पैसे      आर्थिक २० रुपये      आजीवन २०० रुपये      विदेश में ५० डाक्टर ३० पैसे

## गड़बड़ी फैलाने के लिए पाक से धन

नई दिल्ली, २१ सितम्बर। गुप्त-चर एजेंसियों में केन्द सरकार को धमक किया है कि पाकिस्तान ने अजब के प्रस्ताव उत्तर भारत के कुछ भाग्य क्षेत्रों में प्रशासित पंजा करने के उद्देश्य से कट्टरपंथी मुस्लिम नेताओं और मजदूरों को व्यापक स्तर पर आर्थिक सहायता देने को पेशाकरी की है।

गुप्तचर एजेंसियों की सूचना के अनुसार पाकिस्तान सरकार ने 'बीसा' देने का उद्धार नीति के नाम पर बड़ा सन्ध्या म भारत के मुस्लिम नेताओं व्यापारियों और साक्ष्य व्यक्तियों को पाकिस्तान आने की सुविधा दे दी है। पाकिस्तान इन लोगों के माध्यम से भारत में 'मुस्लिम पर्सनल ला' और 'इस्लाम' की रक्षा के नाम पर मुस्लिम समुदाय को भारतीय समाज से अलग अलग करने का कुप्रचार तथा देने करवाने का इरादा रखता है।

विदेशों में भारत विरोधी ध्वन्य पर नजर रखने वाले गुप्तचर संगठन ने अपनी रिपोर्टें मजाना मजिद के नाम मीलाना अरुदुल्ला बुखारी द्वारा इसी महोत्सव के प्रारम्भ में की गई पाकिस्तान यात्रा का उल्लेख किया है। रिपोर्ट के अनुसार बाहरी इस्लाम ने पाकिस्तान के नेताओं और पत्रकारों के बीच जाकर कहा, भारत में हिन्दू, मुसलमानों और सिखों पर बुरी तरह शरणाधार कर रहे हैं। हालांकि मुसलमानों का पास इस जुलूम के विरुद्ध सबब काव्य के साक्ष्य नहीं हैं। इन काम के लिए पाकिस्तान सरकार और जनता को लड़ाई

लड़ने के लिए आर्थिक और अन्य सहायता करने चाहिए।

इसम बुखारी ने मुत्तेसाम यह यह भी कहा कि इस पाकिस्तान की ताकतवर देखना चाहते हैं। उन्होंने प्रथम में ५० हजार और मुरादाबाद में पांच हजार युवानों के मारे जाने तथा अगले में मुसलमानों के पर्सनल ला के कुछ प्रावधानों के विरुद्ध दालाली कंपनी का उल्लेख करने हुए इस्लामी परम्पराओं की

रक्षा की इनाई की दी है। इसम की टिप्पणियों को पाकिस्तानी प्रबन्धकों ने सुनिये में छापा है। पाकिस्तानी नेताओं ने इसम के साथ हुई गुप्त वार्ताओं में हर सम्भव सहायता के वायदे किए हैं।

गुप्तचर एजेंसिया पाकिस्तान के इरादों को फिल करने के लिए भारत में सक्रिय अन्य आर्थिक नेताओं की गतिविधियों पर भी कड़ी नजर रहे हुए हैं और इनके विरुद्ध

आवश्यक कार्रवाई करने की सद् भी दे रही हैं।

बनाया जाना है कि आशमग के इसम मीताना ओबेदुल्ला खान के एक कट्टर साम्प्रदायिक और उत्तेजक भाषण के टेप को मुस्लिम क्षेत्रों में सुनाने और मुश्क बटवाने की रिपोर्टें भी मजकूर की दी गई हैं। राजस्थान के पाली में भी मिलत ने दिखे गए इस भाषण में मीताना ओबेदुल्ला खान ने तलाक़ गुरा मुस्लिम बीबी की परवरिश का लक्षां देने सम्बन्धी उच्चतम न्यायालय के फैसले का कड़ा विरोध करने और पर्सनल ला के लिए लून की नविया बड़ा देने की पुरजोर अप की है।

इस भाषण में मीताना ओबेदुल्ला खान ने कहा है कि मुस्लिम किसी कोर्ट के पाबन्द नहीं है। ये किसी कोर्ट से सफाई देने ली जाये लेकिन कुतान या पर्सनल ला के बिना कोर्ट में जाने वालों का सफाया कर दिया जाएगा। यदि पर्सनल ला बदले की कोशिश हुई तो बाला साहेब देवरस अटनसिंहारी बाबुरेयी और राजीव गांधी को भी कन मा पडने के लिए मजबूर हान पड सकता है।

बताया जाता है कि इटेली-स्यूरो की रिपोर्टें पर मोराल ने इस भाषण के टेप की प्रतिया जल कर ली गई हैं लेकिन दिल्ली उ० प्र० और विहार के मुस्लिम बहल क्षेत्रों में बला भी यह टेप घटने से बट और बज रहे हैं। इन राज्यों के प्रशासन ने यह तब कोई भी कार्रवाई नहीं की है।

(नवभारत टाइम्स से आभार)

## युवा पीढ़ी को महर्षि दयानन्द का सन्देश सुनायें

—सूर्यदेव

आर्यसमाज साहाय्य मुहम्मद-पुर दिल्ली ने आयोजित एक मास के प्रायवोररल के सिबिर के म्पापन समारोह के अवसर पर जोते हुए समा प्रधान श्री सूर्यदेव ने कहा—

आर्य की आवश्यकता है कि आर्य धाम साहज साहज ने युवकों के शारीरिक बौद्धिक और आर्थिक विकास के लिए इस प्रकार के प्रायवोररल के सिबिर लगने चाहिए। उन्होंने प्रधान, प्रधाप और प्रधापार मिटाने के लिए तथा देश की एकता और अखण्डता के लिए युवकों की जाने धाने के लिए आह्वान किया तथा प्रेरणा दी कि सभी आर्य नर-नारियों को अपने लड़के और लड़कियों को आर्य मत्स्यों में लाना चाहिए और उन्हें धाने धर्म और साधुता का परिचय करना चाहिए। आर्यसमाज का उद्देश्य तो व्यक्ति और समाज के सर्वतो-मुखी विकास

शारीरिक आर्थिक सामाजिक नौकिक एवं पारलौकिक हर प्रकार के उत्थान से जुड़ा हुआ है। बलिक मन्त य सर्वोत्कृष्ट एवं वैज्ञानिक है इनक प्रचार प्रसार के लिए हमें हर सम्भव प्रयत्न करने चाहिए।

समयसर पर ५० युवकों ने तलवार माले तथा व्यायाम प्रादिक का सुन्दर प्रदर्शन किया जिसकी जनता ने मन्तप्राप्त होकर देखा। यह सिबिर श्री धर्मवीर उषिष्ठ प्रशिक्षण के नेतृत्व में सम्पन्न हुआ, सार्वभौम प्रायवोररल दल दिल्ली प्रदेश के अधिवृत्ता श्री प्रियतमदास रसवन तथा मन्त्री श्री ध्यामसुन्दर विरमानी तथा श्री रामसिंह, श्री जगदीर सिंह श्री राजेश जी श्री शांलानायक आदिक की योगदात इस अवसर पर स्तु-न है।

मन्त्री

आर्य समाज साहाय्य मुहम्मदपुर



## आइये वेदमाता की शरण में चलें

लेखिका—श्रीमती सुशीलादेवी विद्यालकृता सिकन्दराबाद

श्रो स्तुता मय। वरदा वेदमाता, प्रचोदयन्ता पावमानी द्विजानाम् ।  
 आयु प्राण प्रजा पशून कीर्ति द्रविण ब्रह्मवर्चसं मह्य दत्त्वा  
 व्रजत ब्रह्मलोकम् ॥



यह धारणाएँ बना पाय हैं। इसमें प्रभु कहते हैं। ऐ मानकों की। मैंने वेदना बनाई। वेदना बनाया। मरना = वेदना का दे दो। मनुष्य कभी है। क्या बर देवे बानी। तुम्हारी ओनी। तुमियों से बरवानों में बर देवानी है। सबको पुरवने ही देणा दो। यह वेदनाया पिबना = दिवों को पावना पाना पिबना करने वानी है। दिव्य कौन ? जिसको दो जन्म दृष्ट हो। जन्म मरण के गर्भ से। पृथ्वी। दूसरा जन्म धारण्य गर्भ से। धारण्य उपनयन नाम ब्रह्मचारिण कर्तव्य से मरत। २। पतस्विज्जिसे दिव्य निर्वात त जान दृष्टमभिगमयन्ति देवा। मी जान जन्म देवे ही सरी का। धारण्य ऐसे हृदय जन्म देवो धारण्य बना। है। वेदनाया ऐसे दिव्यो को पयिब कर देवो है। उनके जीवन कुन्दन बन जाते हैं।

फिर क्या देती है वेदमाता ?  
 सुनिये—प्रायु, प्राण प्रजा पशु,  
 कीर्ति द्विवर्ण और ब्रह्मवर्चस ।

मनुष्य को तीन प्रकार की इच्छाय  
हानी है-पुत्रपगा, वित्तपगा लोक-  
पगा ।

पुत्रपगा=सन्तान की इच्छा  
सभी को त्राणी है। सबकी गोद भी  
रहे च होना कुवक जाना है।  
पुत्रपगा=सन्तान प्राप्त कर  
पुत्रपगा नामक न का पगा  
करना है जो एक है पुत्रपगा वेद-  
माना जा दे। इस इच्छा को  
भा पुत्रपगा है।

वित्तप्राप्ति धन की इच्छा ।  
 भोजनी सबकी भरी रहे । कोई गरीब  
 न हा । अभाव अस्त न रहे । सबके  
 घर धन-धान्य से परिपूर्ण रहे । वैद-  
 माना पशु पशु शब्द से ही सुरु-  
 समृद्धि नापो जाती थी । किसके पास  
 पशुधन—गाय, बैल, घोड़े, हाथी  
 कितने है, इसी से समृद्धि का पता

चलता था तो वेदमाता पशु भी देती है।

वित्तंषणा=पूरी करती है।

लोकैवरा—कीर्ति यथा, मान  
नाम गभी चाहते हैं। तुरे काम करने  
वाला भी चाहता है कि जोई उसे  
दुरा न कहे। अथ जायेन नाम  
जाय। वेदमन्त्र कीर्ति भी देती है  
इसके साथ-साथ वेदमन्त्रा ध्यातु जोई  
प्राप्त भी देती है। जोवेम अरद  
सतम ध्यातु देता। तात्पर्य यह कि  
जो वेद का स्वाध्याय करता है।  
पट कर उसके धनुस्ता प्रपने जीवन्त  
का सवाल करता है उसे जीवन्त मे  
मयवान् के ध्यातीवद है सब कुछ  
प्राप्त हो जाता है।

चार चीजों के समूह का नाम  
मनुष्य है। इमारे पुत्राय न बुद्धि क्षीरं  
क्रतुमा। इमारे पुत्राय न चाश्वि  
कृतं गयेह— यथं, प्रथं काम श्री  
मोक्ष। शरीर के लिए आवश्यकता  
है प्रथं की। प्रथं याने शरीर को  
जीवन रखने के साधन। रोटो,  
कपडा, मकान, शिक्षा। जब जीवन  
है शरीर को खाना चाहिए।  
बहिया लाये या बहिया पर बाहिया  
सबको ही खाना। जीवन चल नहीं  
सकता यहा के शरीर को प्रथं याने  
गरीर रखने के लिये आवश्यक, धनि-  
कार्य स्पष्टन उपलब्धन न हो।

शरीरमात्रं तु धर्मसाधनम् ।

चा । क्यनीति सूत्र मे भी कहा है-  
सुखस्य मूल धर्म ।  
धर्मस्य मूलमर्थ ।

सुख का मूल धर्म है परन्तु धर्म का मूल अर्थ है। अतः धर्ममेवाज्यं निष्फला क्रिया धन पदा करो।

मन के लिए आवश्यकता है काम  
को। बिना कामना के मन ही क्या  
हा कामनायें शिव हो सुख हो।

बुद्धि के लिए धर्म की आवश्यकता है।

धर्म के कारण ही बुद्धि में सत् असत् का विवेक पैदा होना है ।

आत्मा को मोक्ष की आवश्यकता है। हमें शरीर और मन के बन्धन से मुक्त होना है। कैसे ? शरीर और मन के द्वारा ही। यह एक ऐसी पहेली है जिसे सुलझाना है। इसका उपाय है—

तगज्जलो। एक पलङ्ग में धर्म और काम को रखो। दूसरे पलङ्ग में रखो धर्म को तराजू की डही बुद्धि के हाथ में दे दो न धर्म और काम को छोड़ो, न धर्म को छोड़ो। धर्म पूर्वक धर्म और काम का उपभोग करो तो आत्मा को मोक्षमिल जायेगा।

महामारतकार व्यास जी कहते हैं। ऊर्ध्वबाहुविश्राम्येष न च कश्चित् श्रुणोति मा। धर्मादर्धद्वय कामद्वय धर्म किं न सेव्यते ? धर्म और काम कुरे नहीं। शरीर के लिए धर्म अनिवार्य है और मन के लिए काम अनिवार्य है। वह मन ही क्या ? जिसमें कोई कामना न हो ?

अर्थ ग्राह बनकर उसने न लगे। मन में बुरी कामनाय न आयी। मन शिवसकलपी हो इसके लिए धर्मपूर्वक अर्थ और काम का उपभोग करे। बाज अर्थ और काम का पलड़ा भारी हो गया है। धर्म का पलड़ा हल्का हो गया है। इसीलिये इतनी प्रशान्ति इतना असंशय है।

टका धर्म टका कर्म, टका हि  
परमधर्म । टका सत्य धृष्टे नास्ति हा  
टका टकटकमुत्ते । टका ही धर्म  
टका ही कर्म बन गया है । मनुष्य  
का निर्माण नही रहा । पहिले  
धार्मिक व्यवस्था थी । ब्रह्मर्षि मे भर्ष  
का प्रधान सग्रह यज्ञान मिलता  
था गुरुद्वय-धर्म-सम्पादन का आश्रम  
वा पर धर्म धूर्वक । वाजस्यस, सत्यास  
मोक्ष की साधना धार्मिक साक्षात्कार  
के धारम थे । सीधी चढते चढते  
धार्मिक मनुष्य बनकर लक्ष्य तक  
पहुच जाता था । लक्ष्य सभी का  
हीना था-

त्रिविषदु खात्यन्तनिवृत्ति  
प्राप्त्यन्तपरुषार्थः ।

आध्यात्मिक, आधिदैविक, आधि

मौलिक दुःखों से पूर्ण निवृत्ति पाना ही जीवन यात्रा का चरम लक्ष्य था। हम वेदों को भूल गये। वेद की शरण से धाधो सब कुछ मिलेगा। कब ? जब महा दत्ता प्रभु के प्रपण करके 'तेन व्यक्तेन' की भावना से सशरणा के विषयो का भोग करीये। सब आपको व्रजत ब्रह्मलोकम् प्रभु का ब्रह्मलोक=मोक्ष प्राप्त हो सकेगा।

यत् करोषि यद्वसतामि जङ्गु-  
होसि ददासि यत् बलावप्यसि काल्ये-  
मुत्सव परार्थं यत् भगवद्वर्षं की-  
यानां के विना उपमा का प्रसाद पाना-  
कजिह है। उपनिषदों में अष्टावक्र-  
की कथा प्रसिद्ध है। राजा जनक ने  
अष्टावक्र से कहा प्राण मीटो मे प्रभु  
के दर्शन करा दो। अष्टावक्र ने कहा  
करता हूँ परन्तु जब आप प्रभुना  
मन भुमे है न? मन कहाँ प्रभुना  
दर्शन होते हैं। जबल सहर्षे मे अपना  
मुक्त नहीं दिखाई पड़ता। स्थिर प्राण  
मे ही प्रभुना प्रत्यक्ष प्रतिबिम्ब होता  
है। जीना भी एक कला है। इस  
वेदमता की गोप मे बैठकर सीखा  
जा सकता है। भाषाये श्रावण कला  
है। वेद का पठना, पाराना, सुनना,  
सुनाना, सब धार्यों का पत्रम है।  
वेदमता की गोप मे बैठकर धर्म-  
यक्ष श्रोत्र निधेयम का प्रभुत पान  
करे।

परामर्श बहुमूल्य है

परमात्मा ने तुमको दिया  
हसका सदुपयोग करो  
बदले में कुछ न लिया  
इससे परीपकार करो  
ऐसे कार्य करो  
जिससे दुबारा मनुजन्त प्राप्त हो  
ऐसा मार्ग ग्रहणायो  
जिससे सच्चा सुख प्राप्त हो  
निस्सन्देह परमात्मा प्रदत्त  
यह जीवन प्रमूल्य है  
इसको सभासकर रखना  
परामर्श बहुमूल्य है

—शकुन्तलानन्द मुष्ट विसारख  
लालमण, रायबरेली (व.प्र.)

## सारी उलझनों का हल है आर्यसमाज !

कुँवर नुसलाल आर्य मुसाफिर के हृदयोद्गातर



आर्यसमाज एक नये उद्देश्य को लेकर स्थापित हुआ था। प्रजान के धर्मकार को समाज से दूर भगाने के महान् प्रयत्न की आर्यसमाज ने निरन्तर जारी रखा। आर्यसमाज राह भूले जहाजों के लिए लाईट हाउस का काम देता है।

मैं एक जगह किसी लक्षपति सेठ महोदय से बन्दा मानने गया। आर्यसमाज का नाम सुनते ही मैं बरज उठे और कहा—क्या आर्यसमाज धर्मो मराने नहीं है? मैंने कहा—आर्यसमाज नहीं मर सकता, मेरे जैसा व्यक्ति मर जाये तो कोई बात नहीं, लेकिन आर्यसमाज की तो जिन्दा खबर है। अगर कोई यह समझे कि आर्यसमाज मर जायेगा, तो वह गिरा भूषण है।

कुछ यानी एक नाम से सफर कर रहे थे। रास्ते में तूफान के कारण नाम डबाइशाल होने लगा। यानी यानी न एक से कहा—आई नाम डूबने वाला है। कुछ उपाय करो। ता वह उठेगा है—डूबने वाली है ता डूबने दो। मल्लाह का हाड ठुकसान है। उसने हम से किराया ज्यादा माँगा है। वह अपने पाप का फल भोगेगा।

लेकिन वह यानी यह बूल गया कि नाम के साथ वह स्वयं की डूब कर मर जायेगा। ऐसी ही बान हमारे कुछ आई किया करते हैं। आर्य समाज वह नाम है जिसमें सारी सम्पदा, सारा संस्कृति, गीता, रामायण, वेद और धार्मात्मिक मान्यताएँ संकीर्ण सुरक्षित रखी गई हैं। प्रजानाली। अगर वह किसी डूबी तो हम सब डूब जायेंगे। याद रखो इस बात का, आर्यसमाज के गोरख में हमारा गोरख है। आर्यसमाज के जीवन में हमारा जीवन है। आर्यसमाज का मर्म में हमारा मर्म है, आर्यसमाज के प्रतिमान में हमारा प्रतिमान लिखा हुआ है।

एक आर्यसमाज के खालपार उलुख में मैंने अपने आई-बहनों को सैनिक रूप में देखा, हरियाने के बारों को धपनी मस्ती में देखा। राजस्थान की केसरिया रंग की साड़ी पहने बहनों का जब मैं देख रहा था तो उस समय मेरे दिल की कलिया खिल रही थी और मेरी भाषा का सुमन विकसित हो उठा। दिल में एक ध्वनि हुई—आर्यसमाज जिन्दाबाद। महर्षि का स्वरण किया। मेरे भावों यह तुम्हें क्या मान्य कि इस सत्त्वा के बनाने में कितनी जिवनियाँ लगी हैं। इसकी दुनियाद के बन्दर कितने नैताओं के जीवन गले हैं? उन बलिदानियों का बलिदान निम्नल न करो। आर्य बीरो, मैं कोई विद्वान् नहीं है। वेद मन्त्री की गम्भीरता तो ये पण्डित प्राणका बतायेंगे। मैं तो एक बात कहता हूँ। आर्यसमाज के साप्ताहिक उत्सवों में कुछ बैद के मन्त्र पढ़ जाते हैं। उन मन्त्रों में क्या लिखा है—“सगच्छन्न सवच्छन्न” समझो इन मन्त्रों को महारहि की।

राजनीति में जाकर लोग सड़ तो कुछ अच्छा भी लगता है, लेकिन यहा आर्यसमाज में जाकर वो लोग मर्नी, प्रजान या कुछ भी न बनने के लिए लड़ना चाहते हैं। बपरानियों पर हड़मत चलाने के लिए, तो मैं कहूँगा कि तुम अपनी शांति नष्ट कर रहे हो। अपने सारी तपस्या पर पानी करते हो। अगर तुम्हें कबड्डी खेलनी हो तो जाओ पोलिटिकल मैदान में खेलो। अगर दण्ड पाठ के लिए टिकट मिल गया तो सुन्दरें मीन बर्ष के लिए पी बारह है।

अपनी सत्त्वा के आर्यश की कायम रखो। समजित रही तो दुनिया तुम्हारे सामने खुलगा। अपना वही तुम्हें मुकाबिली। अपने को दुनाम करते हो, उसने सर्वसम्मत चुनाव करो—ऐसा प्रयत्न करो। उसमें चुनाव न करना पड़, बीट न मानने पड़े, क्राउड न हो, इस बात की कोशिश करो। जो कुछ कर्मों आर्यश की जिम्मे बरिज पर जायको सिखाए हो उनको प्राने वो काय करते के लिए। यह प्रवृत्ति न आये तो कि हम अपने स्वाध का ऊपर रखकर आर्यसमाज की छो छोनि पहुँचने पर तुल जाय। मैं सारे भारत बर्ष में घूँसता हूँ। मैंने यह

प्रनुभव किया है कि आर्यसमाज सारे भारत की धास्ती है। अगर आस्ती मर गई तो भारत की आरतीयता नष्ट हो जाएगी। वैदिक संस्कृति नष्ट हो जाएगी। आर्यसमाज को छाड़कर और कोई सत्त्वा है फिरका परस्ती से लड़ने वाली? मुह से तो सभी लड़ते हैं, पढ़ते उससे हाथ मिलाये ऐन मौके पर अपने स्वार्थ के लिए। फिरकापरस्त तो ये ज्यादा हैं जो फिरकापरस्ती के साथ फिरकापरस्त सत्त्वाओं के साथ हाथ मिलाते हैं और उनकी पीठ ठोकते हैं। यह वास्तव में धर्म की बात है। आज ईसाई पादरियों में यह दम नहीं है कि वे आर्य विद्वानों के मुकाबले में जाय। इन विद्वानों की रहने दो मेरा भी मुकाबला करने का जाय, तो देखूँ। आज ईसाई पादरी नाइन्सस की मोटी गोल्या सिवाकर राम व कृष्ण के प्रत्तो की चोटिया काट रहे हैं। आज बड़े-बड़े धर्मार्थ आर्यसमाज के खिलाफ नैबक देते फिरते हैं, लेकिन मुसलमानों की फिरकापरस्ती का मुकाबला करने के लिए कोई आगे नहीं जाता। ईसाइयों का जवान देने के लिए कोई तैयार नहीं है। आज बहुत लोग बीड धम का प्रचार करते हैं। हमारी सरकार भी उनकी पीठ ठोका करती थी। बीडों ने राम और कृष्ण के मन्दिरों से उनकी मुर्तियों की निकाल फक कर उनकी जगह बुद्ध की मूर्ति रखी गई है। जिनको अपने गिर पर बढाया, वे हो आज हमारी आस्तीन के साथ बग रहे हैं।

वे प्रचार करते रहते हैं कि सवार घोड़े की टट्टी है। तुम कुछ मत करो। कोई किसी का बाप नहीं, कोई किसी का बेटा नहीं। मैंने कहा 'अगर इस जगत् में कोई किसी का नहीं है तो यह सारा जगत् यतीम-खाना हुआ। यह जगह पूर्ण है, क्योंकि यह पूर्ण से तो निम्नता है। अगर यह दुनिया की अक्षिति क्यूँ है ग्रह सपना है तो तुम्हारे सामने मुक्ति ही मुक्ति है।

एक पण्डित ने लिखा—हिन्दुस्तान में ऐन बम्बई में पंदा हुआ और आर्यसमाज का काम भी दयामन्द ने बम्बई में ही शुरू किया था। ऐन और आर्यसमाज एक बराबर है। ऐन क्यूँ से शुरू होता है। उन पण्डित जी के लिए मेरा जवाब यही है कि आर्यसमाज पाव-ठिबों के लिए ऐन ही है। मोलियों के लिए, पादरियों के लिए, प्रजान फलाने वाला के लिए रुडिबादियों के लिए आर्यसमाज ऐन है और ऐन ही रहेगा। आर्यसमाज का ऐन बम्बई से चला और ऊँचे स्वर में कहा है कि ईसाई भाइयों, सफाई करो, नहीं तो मैं धा रहा हूँ। मफाई हो रही है। किताने बदल गयी। कितानों के तर्ज बदल गये। भारतवर्ष के अन्दर जितने अच्छे कानून बन रहे हैं, वे कोई इन लोगों ने बांटे ही ईजाद किए हैं? वे सब हमारे पीछे हुए। को फिर पीसा गया है। आज देश के अन्दर रहने कानूनन बने कर दिया गया है तो पहले इसकी धावाज कितने उठायी थी? बच्चों के ब्याह न हो, बुरों के ब्याह न हो यह मन्त्र आर्योलन पहले आर्यसमाज में चलाये थे और वे ही बात आज हमारी सरकार प्रमल में ला रही है। अगर यो-हत्या को बन्द करने को धावाज आज उठ रही है तो दयानन्द का यह अपने जीवन में देखा हुआ पहला स्वप्न था। अगर आज हमारे देश में यो-हत्या बन्द नहीं हुई तो यह हमारे लोखरी की कमजोरी की निशानी है। हिन्दी राष्ट्रभाषा हो यह सपना दयानन्द ने देखा था। आज वह स्वीकार हो हो गयी है। राष्ट्रभाषा की पुट्टरानी की जगह यह था बडी।

अगर आर्यसमाज की कोई कमजोरी करना चाहे अपने मे से हो, तो मैं यह कहूँगा कि जलो, दोनो चलकर ताला लग देते हैं। लेकिन याद रखो, आर्यसमाज की नहीं मर्नी। अगर हमारे हाथ से दयानन्द के स्वप्न की पूर्ति न होगी, तो कोई बात नहीं, दूसरों के हाथों से होगी। भाकी सलाम ही सही, इस स्वप्न को साकार कर दिखायो। क्योंकि निवृत्त का, मानके के कल्याण का काभी कोई रास्ता ही नहीं है, दुनिया को दयानन्द के रास्ते पर जाना होगा।

गुरुवर विद्वज्जानद व्याकरण के सूर्य हैं। उनके पार्थिव सरीर के त्याग करने पर देव दयानन्द ने कहा था, 'आज्ञा व्याकरण का सूर्य प्रस्त हो गया है।' ऐसे महान् युग के जरुरी में बेंचकर देव दयानन्द ने पाणिनि की अष्टाध्यायी और पातञ्जल का महाभाष्य पढ़ा था और आर्य-धनार्थ ग्रन्थों के अन्तर को समझा था। आर्य-धनार्थ ग्रन्थों के अन्तर को समझना ही देव दयानन्द को महान्तम उपलब्धि थी। इसी उपलब्धि ने ही भावी भारत के इतिहास में एक नया अध्याय जोड़ दिया।

देव दयानन्द ने स्पष्ट किया कि वाङ्मय के दो रूप हैं। धर्मोपदेश और पौरवेय। पुनः पौरवेय के भी दो रूप हैं आर्य और धनार्थ। आर्य वाङ्मय ब्रह्मा से जर्मिनी पर्यन्त और उसके उपरान्त का सारा वाङ्मय धनार्थ साहित्य धनार्थ वाङ्मय की श्रेणी में आता है। जिनकी भाषा धर्मोपदेश्येय ज्ञान में है उन्हें धार्मिक और शेष सब को उन्हे नैतिक कोटि का स्वीकार किया। क्योंकि—

नास्तिको वेदनिन्द्य ।

—मनु०

जो वेद के अपौरुषेयत्व की स्वीकार करता है वही धार्मिक है। वेद दयानन्द ने इसलिए स्पष्ट रूप से घोषणा की—

'वेद सब सत्य विचारों की पुस्तक है। वेद का पढ़ना, पढ़ाना सुनना सुनाना, सब भाषों का परम धर्म है।'

—धर्मसमाज का तीसरा नियम

आवण्णी उपक्रम पर वेद कथाओं का प्रारम्भ होता है। इसका मुख्य उद्देश्य ही वेद का प्रचार-प्रसार रहता है। इस सुम ध्रुवसर पर वेद के सम्बन्ध में कुछ चिन्तन, मन उप-युक्त रहेगा। हमी इष्टि से हम निम्न तीन भूल भूत प्रयोगों पर विचार करेंगे।

१ वेद की उत्पत्ति किस प्रकार हुई ?

२ वेद का कर्ता कौन है ?

३ वेदों का प्रयोजन क्या है ?

हर सत्य का आधार प्रमाण होता है। प्रमाण भी दो प्रकार का है। स्वतः प्रमाण और परतः प्रमाण। जब अपौरुषेयत्व की बात करते हैं तो इसका अर्थ है कि वेद स्वतः प्रमाण है। ईश्वर का दिया हुआ मानव भाग के लिए अल्लेख्य प्रमाण है। वेद का ज्ञान बिना किसी मेधावान के सब मनुष्यों के लिए है। वे भले ही वे किसी भी जाति वर्ग अथवा देश के

## वेदोऽखिलो धर्म मूलम्

प्रेमचन्द श्रीधर एम० ए०

भी धर्म्य धर्मग्रन्थ हैं सब परतः प्रमाण हैं, क्योंकि वे मनुष्य कृत हैं। मनुष्य सर्वत्र सर्वोत्तमो, सर्वव्यापक, सर्वशक्तिमान् कभी नहीं हो सकता। वह अल्पम् है और उसको शक्ति सोमित है। इस सीमितता और अल्पता के कारण ही उसमें अपूर्णता है। अपूर्णता कभी पूर्णता को जन्म नहीं दे सकती। इसलिए मनुष्यकृत सभी ग्रन्थ अपूर्ण हैं और उनमें शास्त्र तथा सांख्यिक सत्यों की भी अभाव है। प्रायः ऐसे ग्रन्थों की भाषायां साम्प्रदायिक तथा एक-पक्षीय हैं।

ज्ञान भी दो प्रकार का है। स्वाभाविक तथा नैमित्तिक। पशु पक्षी अपने स्वाभाविक ज्ञान के कारण ही तरंगा और उड़ना जानते हैं। एक मत्स्यज के पुत्र को भी अपने पिता से नदी में तरंगा सीखना पड़ेगा। तरंगा तो धन्य बात है, मनुष्य के बच्चे को चलना और बोलना भी सीखना पड़ता है। ऐसे बहुत से प्रयोग किए गए जिनमें मनुष्य के बच्चों की मानव समाज के वातावरण से अलग बलवत्ता तथा और बच्चे कुछ भी नहीं सीख पाए। केवल वन में जिन पशुओं के बीच उन्हें रहना पड़ेगा वेसा उनका भी स्वभाव बना। इससे स्पष्ट है कि मनुष्य के लिए नैमित्तिक ज्ञान की आवश्यकता है। वेद ईश्वर के द्वारा दिया गया नैमित्तिक ज्ञान है जो सृष्टि के प्रारम्भ में मिला।

मॅन्समूलर तो अपने धार्मिक विचारों से ईसाई हैं। वे लिखते हैं—  
"If there is a God who has created heaven and earth it will be unjust on his part if he deprives millions of his sons born before Moses, of his divine knowledge. Reasons and comparative study of religions declares that God gives his divine knowledge from his first appearance on Earth"

अर्थात् यदि धरती और आकाश का रचयिता कोई ईश्वर है तो उसके लिए यह अभाष्य पूर्ण होगा कि वह सदा से पूर्व उत्पन्न अपने लाखों पुत्रों को अपने ज्ञान से वञ्चित न रखे। तर्क और धर्म का मूलमूलक आधार

सृष्टि के आदि में ही अपना ज्ञान मनुष्यों को देता है।

शिक्षा के बिना ज्ञान की उत्पत्ति नहीं हो सकती।

नोपदेशमन्तरा ज्ञानोत्पत्ति ।

हम अपने माता पिता और धर्मार्थ से ज्ञान प्राप्त करते हैं परन्तु आदि सृष्टि में इन सबके ज्ञान प्राप्त का साधन क्या था ?

सगंदि वेदोपदेश पूर्वधर्मार्थ गुरुणा । स एव पूर्वधर्मार्थ गुरु काले-नानवच्छेदात् ।

इस प्रकार परमात्मा 'गुरुणा' गुरु 'उद्घरा'।

स्वामी विद्यानन्द जी महाराज ने अपने ग्रन्थ 'वेदमीमांसा' में बड़ा सुन्दर तर्क दिया है। वे लिखते हैं कि जितनी भी मानव क्रियाएँ हैं उनके कर्ता का स्मरण किसी न किसी रूप में होता है परन्तु वेद के कर्ता का नहीं अतः वेद निश्चित रूप से ईश्वरीय है।

तन्त्र वातिक की व्याख्या में धर्मार्थ कुमारिल अष्ट ने कहा है—

कर्तुः स्मरणाभावापौरुषेया वेदा ।

इस प्रकार प्रत्येक कल्प के आदि में जब सृष्टि का आरम्भ होता है तब—

सूर्याचन्द्रमसौ धाता यथा पूर्वम् कल्पमयत् । ऋ० १०१६०३

और इस प्रकार अपने धनत्व ज्ञान बल से परमात्मा ने अष्ट और सत्य को जन्म दिया—

ऋतञ्च सत्यञ्चाभीदातपसोऽन्यथायत् ।

अनादिनिष्ठाना निष्ठा

वायुतुष्टा स्वयम्भुवा ।

आदी देवमयी दिव्या

यत सर्वा प्रवृत्तयः ॥

सृष्टि के आदि में स्वयम्भु परमात्मा से ऐसी दिव्य आणी (वेद) का आनुवंशिक दृष्टा जो निष्पत्ति है और जिससे ससार की प्रवृत्तियाँ चलीं। साधारणधर्म के निम्न स्तरों के अनुसार भी वेद ईश्वर द्वारा निश्चित

यस्य निश्चितिवेदा,  
यो वेदोऽखिलस्य जगत् ।  
जितो मे मन्त्रो

और ऋग्वेद के मन्त्र १०१६०३ के अनुसार वेद की उत्पत्ति—

तस्मात् यज्ञात् सर्वहृत्,

ऋच सामानि जग्निरे ।

अन्वाति बजिरे ।

तस्मात् यजुस्तस्मादजायत ॥

सत् जिसका नाश कभी नहीं होता, जित् जो सदा ज्ञान स्वल्प है, धान्य जो सदा सुख स्वल्प है। उसी परम ब्रह्म परमात्मा से (ऋच) ऋग्वेद (यजुः) यजुर्वेद (सामानि) सामवेद और (अन्वाति) इस शब्द से अथर्ववेद भी, वे चारों वेद उत्पन्न हुए। इस मन्त्र में 'जग्निरे' और 'अजायते' इन दोनों क्रियाओं से धार्मिक होने से वेद अनेक विधाओं से युक्त हैं, ऐसा जाना जाता है। इसी प्रकार 'तस्मात्' इन से यह निश्चय होता है कि वेद ईश्वर से ही उत्पन्न हुए किसी मनुष्य से नहीं। 'अन्वाति' शब्द से अथर्ववेद को ग्रहण करना चाहिए। महर्षि विद्यानन्द ने ऋग्वेद-दिशा यज्ञमिका में ऐसा धर्म किया है।

'वेद की किसी व्याख्या की समझता या विकलता इस बात पर निर्भर करती है कि उसमें वैदिक धर्म का केन्द्रीय विचार क्या माना गया है और स्वयं वेद की अपनी धर्म, साक्षी उस विचार की कक्षा तक मुष्टि करती है।' इस विषय में ही देव दयानन्द का अष्टकोण विश्लेषण स्पष्ट है और उसका आधार ब्रह्म-धर्म-नीति है।

—श्री धरविज

'महर्षि दयानन्द और वेद'

वेद के एक जन्म मन्त्र से भी स्पष्ट होता है कि वेदों की उत्पत्ति का प्रकाश ईश्वर करता है। कहा है—

'अथर्ववेद मेरे मुख के सममुख, सामवेद लोगों के सान, यजुर्वेद हृदय के समान और ऋग्वेद प्राण के नाह है। इस मन्त्र में सारी सृष्टि की बारण करने वाले परमात्मा को वेद की आणी में 'स्वम्भु' कहते हैं। स्वम्भु त ब्रह्म कर्म निश्चय है।

—अथर्ववेद १०१७१०

और देखिए अतप ब्राह्मण के अनुसार—

एव वा धरे महतो वृत्तस्य नि-  
श्चितिवेदं यद् ऋग्वेदं यजुर्वेदः  
सामवेदोऽवर्णवर्णितः ।

—सा० आ० १०१५/१०१६

यहाँ भी वेदों को ईश्वर से नि-  
श्चित कहा है।

इस प्रकार यह स्पष्ट है कि वेदों का कर्ता परमेश्वर की अविच्छेदक

देश के विभिन्न भागों में उर्दू को द्वितीय राजभाषा बनाए जाने की भाग समय-समय पर उठती रही है। भारत विभाजन के तत्काल बाद उत्तर प्रदेश में यह स्वर उठा। राजकि मुन्शीलम दास टंडन उस समय राज्य विधान सभा के अध्यक्ष थे। उन्होंने स्पष्ट कह दिया—'राज्य की एकमात्र भाषा हिन्दी है, प्रान्त के समस्त कार्य हिन्दी में ही होंगे।'

टंडन जी तेजस्वी राष्ट्र भक्त थे। उन्होंने सदन में घोषणा की थी—'उत्तर प्रदेश विधान सभा में लगभग सवा बार सौ सदस्य हैं, उनमें से एक जी सदस्य भेदे विच्छेद होगा, तो मैं उठी हिन अध्यक्ष पद से त्याग पत्र दे दूंगा।' फिर किसी ने उर्दू की मांग नहीं उठाई।

भारत विभाजन के बाद ताजा थे। उर्दू की मांग उन पर नमक के समान थी। घट किनी की उससे सहानुभूति नहीं थी। भाषा ही मांग उठाने वाले भी धार्य त्यागि के चिकार थे, क्योंकि वे जानते थे कि उर्दू के नाम पर पाकिस्तान बनाया लेने के बाद देश भारत में उर्दू के लिए कोई स्थान नहीं है। न ही कोई स्वायत्ताना सत्कार इसे कभी स्वीकार कर सकती है।

किन्तु भी प्रयास जारी रहे, क्योंकि तत्कालीन प्रधान मन्त्री जवाहर लाल नेहरू मुसलमानों का धार्य-सकता में अधिक प्रभावशाली करने के लिए विव्यात थे। वे उर्दू के विद्वान नमक थे, किन्तु भी बोल बाल में (बाग नमक) उर्दू शब्दों का बहुलता से प्रयोग करते थे। जले ही वे जोड़े बगों न प्रतोते ही। मुसलिम संस्कृति और उर्दू भाषा उन्हें अत्यंत प्रिय थी। उन्होंने स्पष्ट कहा था—'मैं जिसा की दुष्टि से प्रभाव हूँ, संस्कृतिक दुष्टि से मुसलमान हूँ और धार्मिक दुष्टि से मुसलमान हूँ।'

महते हैं कि काबिल कार्य समिति में किसी प्रस्ताव पर ओगार बहुल चल रही थी। नेहरू जी पर कुछ कहती तो बन नहीं पड़ता था, बस बार-बार यही दोहरा रहे थे कि इसे राष्ट्रीय मुसलमान पसन्द नहीं करे। इस पर सरकार बलन भाई पटेल ने हँसते हुए कहा था—'मुने ती मुसलमानों में कोई राष्ट्रीय दिखाई देता नहीं। हाँ, एक ही राष्ट्रीय मुसलमान है, जिसका नाम जवाहर लाल नेहरू है।'

बाग हूँ की की, हँसी से टन हूँ। देश का तत्कालीन नवावरर देश का कि काइकर भी नेहरू

## उर्दू की मांग का विरोध और आर्यसमाज

—सन्तोष 'कण्व'

बी उर्दू को द्वितीय राजभाषा बनाए जाने की मांग का समर्थन नहीं कर सके। एक सार्वजनिक सभा में उन्हें कहना पड़ा था—'हम उर्दू की तरफकी चाहते हैं, किन्तु वह उत्तर प्रदेश की दूसरी भाषा नहीं बनाई जा सकती। ऐसा करने से राज्य का कर्वां दुगना हो जाएगा और बहुत तरह की प्रभावशाली धार्य

नेहरू जी उर्दू को दूसरी भाषा बनाने का विरोध माग धार्मिक स्थिति के कारण कर रहे थे। दूसरे थे यह भी जानते थे कि उर्दू की परास्पात लिपि कार्यालयों के काम-काज में जटिलताएँ हो उत्पन्न करेगी।

धार्यसमाज की दुष्टि में यह कारण गील है। प्रत्यक्ष राष्ट्र के हित का। कर्वां दुगना हो या बीयुना, राष्ट्रीय एकता और प्रसन्नता के लिए किया जाएगा। हमारा विरोध कुछ कदम सत्य पर आधारित है, जिनकी कर्वां धार्य करते हैं।

उर्दू वाले इस स्थिति का लाभ उठाते हुए समय-समय पर अपनी मांग मुखर करते गए। १५ प्रगस्त १९४० को अनेक प्रजनन समस्थाएँ हल हो सकती थी और सम्पूर्ण राष्ट्र उनका एक स्वर से समर्थन करने को तत्पर था, परन्तु नेहरू जी की हठधर्मि के कारण ऐसा नहीं हो सका। धार्य चलकर देश के विभिन्न भागों में भाषा समन्वय उठ साड़ी हुई।

विजयनाम बेलिग कि भागन विभाजन के समय भारत में हो 'राज्य पुनर्गठन धार्यग (१९५६) के भाषा के आधार पर राज्यों के पुनर्गठन की अनुमति कर दी। धार्यसमाज कभी भी इसका प्रयत्न नहीं रहा। धार्य भी नहीं है। हम भाषा, भाग और भाषा में ऐक्य के प्रयत्न हैं। राष्ट्रीय एकता और प्रसन्नता भाषा की प्रस्ताव पर निर्भर करती है।

उपयुक्त धार्यग ने राजभाषा के समन्वय में विजय अनुमति की थी—

'जिस राज्य में ७० प्रतिशत से अधिक एक भाषा की समूह हो उस राज्य को एक भाषा तथा उसके

धार्मिक ३० प्रतिशत से अधिक बोलने वाला कोई अन्य भाषा-समूह हो, उस राज्य को द्विभाषी घोषित किया जा सकता है।'

'जिस जिले में राज्य की घोषित राजभाषा के धार्मिक ७० प्रतिशत से अधिक बोलने वाला कोई अन्य भाषा समूह हो तो उस भाषा को उस जिला विशेष में सरकारी काम-काज के लिए धार्मिक राजभाषा घोषित किया जा सकता है।'

सन् १९७५ में श्री इन्दु कुमार गुजराल की अध्यक्षता में Committee for promotion of Urdu गठित की गई। उस ने भी धार्यग की उपयुक्त अनुमति को दोहरा दिया।

बिहार और उत्तर प्रदेश की जनगणना से मुसलमानों की संख्या ३० प्रतिशत से बहुत कम है। दूसरे सभी मुसलमान उर्दू भाषी नहीं हैं। इस आधार पर कुछ लोग उर्दू को द्वितीय राजभाषा बनाए जाने का विरोध कर रहे हैं। इनमें सत्ताकूल दल कांग्रेस के विचारक, मन्त्री और सामग भी शामिल हैं। इसके अतिरिक्त भारतीय जनता पार्टी, लोकदल, विचार्य परिषद, राष्ट्रीय स्वयंसेवक मण्डल, विजय हिन्दू परिवर्ध जैसे संगठन भी इसी पक्ष में हैं। उर्दू की सर्वप्रथमिका का मामला सर्वोच्च न्यायालय के विचारार्थीन है।

परन्तु धार्यसमाज का पक्ष इससे विजय है। जो लोग उर्दू की मांग को सर्वप्रथमिक बता रहे हैं, वे प्रतीक रूप से मुसलमानों को उत्तर प्रदेश व बिहार के अपनी भाषा की धार्मिक प्रतीक ३० प्रतिशत से अधिक करने को प्रेरित कर रहे हैं, जिनसे हस्तामोकरणी की प्राप्ति तेज हो गई है। यदि वे अपने लक्ष्य में सफल हो जाते हैं, तो उर्दू की मांग को सर्वप्रथमिक बनाने वालों पर क्या तर्क बनेगा? क्या उस समय उर्दू को द्वितीय राजभाषा बना दिया जाएगा?

उर्दू की मांग के साथ उसकी प्रागतिता जुड़ी है। जिला और उनके धार्मिक से क्या जा सकता है?

(मुसलमानों की) भाषा उर्दू है। वे हिन्दी वालों के साथ नहीं रह सकते। उन्हें अलग बगह चाहिए। इन्हीं जिले के कारण भारत टूटा। पाकिस्तान बना। जिनकी उर्दू राजभाषा बनानी थी, वे स्वेच्छा से पाकिस्तान गए। हमने किसी को रोका नहीं। धर्य इम सज्जन भागन में, धर्यवा उसके किसी राज्य विशेष में उर्दू को द्वितीय राजभाषा बनाए जाने की जित करना क्या अनुचित एवं राष्ट्र-द्रोह नहीं है? यदि ऐसा ही करना था, तो विभाजन ही नहीं किया जाता। दोनों बाने एक साथ नहीं चल सकती।

भारत-विभाजन के समय उर्दू में काम करने के प्रभावशी लागी की संख्या आज की अपेक्षा कहीं अधिक थी। उन्हें हिन्दा में काम करना मुश्किल था। जब उन समय उर्दू को द्वितीय राजभाषा बनाने को प्रयत्न-कता नहीं गयी तो धार्य कौन सा पड़ा देट पग?

उर्दू के प्रयत्नशी को कहना है कि उर्दू भी भारत की भाषा है। भारत में ही पंजाब, हरि, कर्ना-कुनी और विजयित हुई। हिन्दी राष्ट्र-भाषा है। उर्दू उसका धार्मिक नहीं खीलती। हिन्दी पटरानी है, तो उर्दू को छोटी रानी बनाकर रख ली।

हमारा मत इससे विजय है। उर्दू भारत की भाषा नहीं है। होती तो पाकिस्तान की राष्ट्र भाषा नहीं बनती। किसी भा तीव्य भाषा को पाकिस्तान अपनी राष्ट्र भाषा कर्वापि नहीं बना सकता।

बही पर स्वतन्त्रता है। अपनी उर्दू को रानी बनाओ या पटरानी, हमारे यहाँ सीतों का चलन नहीं है।

उर्दू पाकिस्तान की राष्ट्र भाषा है। बही की सरकारी भाषा है। उसको यह दर्जा देने के लिए ही हमने अपनी मानु भूमि का विभाजन स्वीकार किया था। कलसे पर पक्षर रखा था। मातामो ने साथ साथ वे बहनों का सुहाग लुटा था। किसी का भाई विच्छा था, तो किसी की बहन लुटी थी। बाप की लाठी दूदी थी, किसी का सहारा छूटा था। नृपना के उन ताण्डव नृत्य में बरती कापी थी, प्राकाश नृत्य था, मानवता लुटी थी, किनके लिए? उर्दू के लिए। उर्दू वालों को जित के लिए। जिला के पागलपन के लिए। धर्य बात का हिंसा भाग जा रहा है? हम बचे हुए भारत में उर्दू के लिए कहीं जगह है? क्या वह कुबानी कम की? क्या वह खुन पानी के लिए कहीं जगह है? क्या वह कुबानी कम की? क्या वह खुन पानी के लिए कहीं जगह है?





## व्यासपुंठ

लेखक—स्वामी सर्वदानन्द सरस्वती

### उपनिषत् कथा-माला-१७

## उपासना

मनुष्य बिना ग्रहकार के रहे। सत्कर्म के करने से मनुष्य को जो अभिमान या होता है उसका नाम ग्रहकार है—संस्कृत भाषा में इसे श्रुता (ग्रहभाव) शब्दों से समझा जाता है। कोई भी सत्कर्म ग्रहकार के साथ मिलकर अपने अपने स्व रूप में नहीं रहता परन्तु वह किन्वा हुमा कर्म न किए के तुल्य हो जाता है। विद्वानों ने इस दोष को दूर करने के लिए बड़े सुन्दर उपदेश दिये हैं—उनका वचन है कि यदि बाएँ हाथ से कोई शुभ काम किया जाये तो उसका ज्ञान बाएँ हाथ को भी न हो। यदि मलिन कर्म किसी के साथ बना करे तो मन इससे बेखबर रहे—ये वचन मनुष्य को इस भूरी भावन (ग्रहकार) को छुटाने के लिए काफी हैं। मनुष्य से यदि कोई काम भ्रष्ट हो जाता है तो वह अपने प्रभुता सुनने के लिए हार और कागज लगाए रहता है यदि कोई उसकी बहाली न करे तो फिर बिना होकर लोगों के सामने अपनी प्रशंसा स्वयं ही करने लग जाता है। यह एक ऐसा कड़ा बन्धन है, ऐसी कड़ी जो भीरे के लिए मनुष्य का इससे स्वतन्त्र होना बना कठिन है। अपनी प्रशंसा बाह्यता अपने आप में एक बड़ा भारी पाप है। इसके प्रभाव से रसायन को निष्फल हो जाता है।

बीज अपने को छुपाता है तो मूल पेदा है और जो बीज बाहर पड़ा रहता है वह बीज या तो पद-दलित हो जाता है या उसे पशु-पक्षी खा जाते हैं। इसकी संस्कृत भाषा में निष्काम कहला गया है। प्रभु-अर्जुन के मन में इसे नाश होने वाला निष्ठा है। जेने बात के ऊपर के छिनके को अवगमन देने में फिर वह खाने के काम तो भ्रान्त है परन्तु अपने उत्पत्ति करने के योग्य रहता है। सत्य कर्म के साथ प्रशंसा का लगा हुमा छिनका मनुष्य को ससार में बाँध लागे का कारण बनता ही रहता है, इसको दूर कर देने से नाशवान नाश हो जाता है और शेष ससार में रह जाते हैं।

प्रभु भक्त इस बात को जानकर नहीं करते हैं। और सत्य पथ का अन्त-मार्ग है। और फिर साक्षात्कार

में जाकर धाराम पाते हैं। इसलिए अपनी प्रशंसा धार करना भारी भूल है। निश्चा है—

तारीक अपनी धार मत करना कभी तू भूल कर।  
ऐव धनता देख ऐसे गैर पर मत कर नजर ॥

जो मनुष्य इस भूरी भावत वाला है वह धरने में है। उच्च से उच्च मनुष्य भी अपनी प्रशंसा करने से छोटा और पवित्र होने पर भी छोटा हो जाता है। यह एक प्रकार का पाप है जो मनुष्य में पर दोष निकालने का स्वभाव बढ़ाता है। और ससार में उसको नकारा जाता है। स्वामी पुण्य धर्मके मनुष्यों के संग से चकराता है और कोई विचार-ध्यान मनुष्य उसको समीप नहीं धारते। स्वामी मत्प पथ से हटाकर कुमार पर चलाती है और फिर दुःख को समीप लाती है। बुद्धिमान मनुष्य वह है जो अपने दुर्गुणों पर ध्यान रहे और दूसरे के दुर्गुणों को रहताल न करे।

स्वामी से काम सारे दुनिया में हैं बिम्ब जाते।  
गुप्त कहाँ वह ये जिसे समा में हैं सुगति ॥

स्वामी से सब काम बिम्ब जाते हैं हमसे कोट करार फिर वे बनने में नहीं धारते। जैसे किसी नेह को जन साधारण की समा में सुनाकर यह बातला कि यह गुप्त नेह है किसी में मन कहना इस वचन से लोगों को हसना और अपने को मूर्ख समझना है। जो मनुष्य स्वामी हो जाता है वह स्वयं अपने आप को बोला देता है और वह गुप्त धारण को बेचकर दुराचरण का मोक्ष लेता है। इससे गुप्त-दुष्ट में समभाव बना रहता है और वचन पर कट्टर धारते हैं। यह स्वामी एक बता है जो शरात को जगती है जो कभी दूर नहीं होती। स्वामी एक आत्मिक ध्यानि है जिसके साथ प्रशंसा बीजना भी धारित है। स्वामी को दूर करने के लिए भूत और बोधा देना भी उसका स्वभाव हो जाता है—

हुवा मिल जो भावता है  
हिदसा हवा है,

नहीं चमकता फिर  
वह तूरेबुधा से।

प्रभु से मिलाप तो मनुष्य को प्राप्त ही है और वह सदा उसके समीप है। प्राप्य बहुत ध्यापक से मिलना नहीं हो सके। केन्द्र और बेरे का सम्बन्ध सदा नहीं है। अनुचित सात्त्विक विचार मनुष्य के चित्त को दूर समय परेशान करके उसकी पवित्रता को तुच्छा से बिगाड़ देते हैं। इसलिए तूरे काम की जिम्मे-दारी से बचने के लिए जीवन के कार्य क्रम को सत्य तथा उचित प्रकार से बनाना ध्यापक है। मन की शुद्धता से जो पुण्य प्रभु के दर्शन को चेष्टा करता है वह भूल पर है। जैसे 'र' के धार्ये 'व' न लिखा जाये जब तक क नहीं हो सकता वस, जब तक मन शुद्ध न हो प्रभु प्राप्ति नहीं होती। फिर भक्त करण प्रकाशित होकर प्रभु-दर्शन से स्वयमेव भावित हो जाता है। मन की शुद्धता के बिना प्रभु प्राप्ति के लिए मनुष्य जिस प्रकार की चेष्टा करता है वह सब व्यर्थ जाती है।

अत उपासना की विधि चित्त की चंचलता को दूर करके परमेश्वर प्राप्ति के योग्य बना देती है। यदि मनुष्य इस अवस्था को ठीक बना ले, तो ज्ञान पथ की और उसका पथ बढ सकता है इसके बिना नहीं है—इसलिए, प्रभु भक्तों का वचन है—

विलबर तेरा देरे धार्ये खडा है।  
मगर मुक्त तेरी नजर में पडा है ॥

जिस की लोक में लोग हैरान न परेशान हैं वह तो अपने नखा है। परन्तु इसको इन बाहरी धारों से देखना चाहते हैं। उनकी धारों से जो बहुत ही दीखती हैं, वे सब महसूस की जाती हैं, परन्तु परमेश्वर धारों से परे हैं। इसलिए वह किसी भी धर्म से मायुक्त नहीं हो सकता। ठीक मलिनका का दूसरा नाम 'ज्ञान' है। प्रभु-भक्त अपने अपने प्रभुभक्त से उसको देख सकते हैं। परन्तु उसकी धार के मूठे प्रेम में दूरा बना दिया है, जब तक यह दूराई दूर न की जाय जब तक उसका दर्शन कठिन है। जैसे किन्हीं से सुनने का और कान से देखने का कार्य कठिन है।

इसलिए प्रभुभक्त मन की शुद्धि के लिए ठीक यत्न करता है। उन ही पुस्तकों का पठन पालन करता है जिनमें यह विषय ही। उन मनुष्यों की संगति में जाना पसन्द करता है, जो उसमें वश हैं। ससार का कोई भी ऐसा कार्य जो इस मार्ग में रुका-वट डाले, वह नहीं करता है। यह वह उपाय है जिससे लोक और पर-लोक दोनों सुखर जाते हैं।

जब सब सहज इच्छाओं से सब हृदय कमुचित होते।  
फिर कहा प्रभु की ज्योति से अन्तर धालोकित होते ॥

इच्छाओं का बढते जाया हृदय में एकाग्रता उत्पन्न नहीं होने देता। भविष्या या हृदय कपी सागर से एक सहर की उठती है, फिर उससे तीरी तीरी बहर स्वयमेव बनती जाती है—इस अवस्था में हृदय में मन बढता जाता है। यह बार बार जीवन और सुख की भावत को साथ लाती है, इससे पीछा छुटाना ही मनुष्य जीवन का सत्य है। परन्तु हर एक विचार को यहा पहुँच नहीं, अनुचित इच्छा से हृदय की शुद्धता नहीं, दोष-मुक्त स्वभाव को दूर करने वाली पुण्य कमाई नहीं। परन्तु जो ध्यान के प्रेमी हैं जो इस गुप्त विचार को हल करने के योग्य हैं, वे सदा कम होते हैं, हर कोई इस पथ का पवित्र होते हैं। जिसके पूर्व पुण्य कर्म सहायक हैं, वर्तमान का पुण्यकर्म ठीक प्रकार से हो और प्रभु की कृपा सहायता हो, वह इस मार्ग पर चल सकता है और वह निश्चय मायमान है, जिस को योग्य पथ प्रदर्शक मिले। परन्तु धावकल योगियों को, मुक्तों की और गुप्त-मार्ग की बड़ी ही चरखा ही रहती है, इसके पीछे ससार की एक भारी सच्चा अपनी सुख-दुःख ही रहती है। बड़ी विचित्र है कि जि जो जीवन दूर परवस्था में कम होनी चाहिए, जिसकी कभी ही सुन्दरता की भोतक है, जिसकी धारिता से प्रकृति ही बदलती है, मनुष्य अपनी बाहरी चेष्टा से यदि इसी धार प्रत्यक्ष हो तो सिवा दुरीरेस्थान के और क्या हो सकता है? प्रत्येक सम्प्रदायधर्मों में अपने विध्य वर्ण को बनाया और उन्हें अपने सिद्धांत का धारक

## उपासना

विश्वासी बनाता हो अपना विशेष कर्तव्य जान लिया है। भारत वर्ष इस बात का दीवाना है, इसीलिए तो हमको न कोई सच्चे होने का स्थान है, और न कोई ठहरने का ठिकाना। कितनी भूल है, कितना अंध-विश्वास है कि भूच को परमेश्वर से ऊँचा स्थान दिया जाए। इससे प्रकट है कि यह देश सत्य मार्ग पर धाकड़ नहीं। ऐसी धनुचित चेष्टा तो हृदय को सुझता प्रकट नहीं करती, परन्तु भूच की जतानी है। विद्वानों का तो कथन है—

विन्दनी को रास्ती से न गुजार।  
कर्म फल से फिर देखा सुकसा।

मनुष्य को चाहिए कि वह अपने जीवन को सत्य-मार्ग पर ही चल कर व्यतीत करे और बनी हुई बात को अपने हाथ से न बिगाड़े। यह नियम कर्म के फल से सुनने होने का है। मनुष्य बुरे कार्य के बोझ से लुका हो जाता है। भ्रम करण की प्रवृत्ति विषम-भ्रम से भ्रुक जाती है, फिर सचकनी से खेल व बुद्धिमानों से बेर हो जाता है। सुख से उठी प्रभु का बन्ध-बाध और दुःख से शान्ति भद्रपुत्र करने का स्वाभाव हो जाता है। फिर जीवन में न तो धार्मिक धान्यधन ही न मृत्यु से अधिक बरबाद होती है।  
हुर एक को सुखी देखकर सुख होना और दुःख में हाथ बटाना उसका स्वाभाव हो जाता है। इन नियमों के पालन करने से मनुष्य में मनुष्यता जा जाती है, यदि ऐसा न हो तो क्रोध-नालच धार्मिक प्रभाव से हृदय बरबाद है। मनुष्य को सांसारिक कारोबार में सच्चा रहना चाहिए और कभी भी मुल से भ्रूत या कटु बचन न कहना चाहिए। व्यवहार और व्यापार में नैकी से काम करना और बोला-देही से बचना चाहिए, इससे मान-मर्त्या और भुम कमाई प्राप्त होती है।

निश्चय से और विचारशील को सगति से प्रामा बनर हो जाता है। यह विचार बहुत धम्मा है। जिसके अनुसार निश्चय करने से परमात्मा का प्रभाव होता है। कामवासना की प्रतिक्रिया से बचना, हृदय के नियमों को कभी प्रकार से पालना, क्रोध और ईर्ष्याओं से पराजित न होकर इस पर विजय पाना, यह कर्तव्य का पूरा कर्तव्य है। इस कर्तव्य की पूरा करते रहना मनुष्य की बुद्धिमान बलता और उसकी धर्म की केपनी से नहीं से जाता है। इस प्रकार से जीवन विद्यमान ठीक

है। जो इस पर धारण करता है, वह ही पूरा मनुष्य है। जो इन नियमों का पालन नहीं करता वह चाहे किसी का पुत्र हो या शिष्य, वह बनर है। जाच करने से यह प्रमाणित हो चुका है कि जब तक मन धनुचिन् इच्छाओं से बरी न हो तब तक बलाई की लता कंसे हरी हो? वह मनुष्य इस पथ में कंसे मति करेगा, जिसके नेत्रों में मनुष्यपुत्रा, की भूल पड़ी हो। मनुष्य को परमेश्वर से अधिक मानना भलाई की बेचकर बुराई की मोल लेना है जो ऐसा करते हैं वह सच्चाई से बरबाद हैं, और भ्रूत के समीप होते जाते हैं। पुत्र तो अपनी चतुरता से भाल उठाने लगे और शिष्य जन बोले में आने लगे। किसी बात है जिसका न माल है और न पता है केवल सहम-परस्ती है, जिससे मनुष्य समाज पर बदा हो पाया है। हा, यह सत्य है, इस काम को बड़ी कर सकता है जो ससार को पदार्थ और बुनिया से कमाने की शक्ल रखता हो। हर एक बड़ विद्या का प्रयोग नहीं इस मनुष्य पूजा से तो यह प्रकट है—

भूतकर्म हृदय सुखा को  
कसा धमा किया।  
अपने घर के बीच में  
घाघ ही को गुम किया ॥

मेरे पिता । मनुष्य-पूजा प्रभु-पूजा के उच्च नियमों को मनुष्य के दिलों से हुर दृढ़कर उनको कपाल बना देती है। यह ऐसी भूल है जैसे कि जिह्वा और कान रखने वाला बुद्ध को गुंजा और बहरा बना दे या अपने ही घर में घर स्वामी गुम हो जाए। ऐसी बातों का नाना केवल अपनी भूल पर लोगो को हँसाना है। जो जिसके योग्य हो उसको बसा समझना जिसकी मनोवृत्ति ससार के उपकार से हो उसका मान करना उसके उपकार में न भूतना भला ही है, मगर उसकी भूल जाना चाहिए। यह जो कुछ कहा गया है उपासना को सीखी के निपरीन होने से कहा है। यह तो मनुष्य के स्वभाव को गुम बनाने परमात्मा की ओर, जो सब भलाइयों का केन्द्र है, से जाती है। इसके बिना प्राप्त किए साक्षात्कार की सीखी किसी को नहीं मिलती है। उपासना की रीति बुरे रास्ते पर चलने वाले पुत्रे दिल की को हसका धनु और बुराई चाहने वाला है, यथाती है। इसके सहारे ही भगवन् मनुष्य में बनावट का स्वाभाव न हो, दिल पर काढ़ हो जाता है। इस सहारे पर बुनिया के सब विद्वान सहज हैं, नही एक बाव है

कि जिस पर चलने से मनुष्य ससार के बचन से मुक्त होकर मुक्ति को प्राप्त करके सदा के लिए प्रसन्नचित हो जाता है। इस काम के करने को इस नियम पर कटिबद्ध होना चाहिए जिससे भागे भागे धारणा की शक्ति बढती जाये, और सांसारिक मोह के बजाय से कमजोरी सामने न आये। यह यह है—

भाल कान गृह बन्द  
कर नाम निरचन से।  
बन्दर के पट तब खुलें  
बाहर के पट दे ॥

देखने के योग्य वस्तु को देखना और न देखने के योग्य को न देखना भाल को बन्द करना है। सुनने के योग्य शब्दों को सुनना और न सुनने के योग्य शब्दों को न सुनना कान को बन्द करना है। फिजूल बातों से से जिह्वा को रोकना और भुम और हिल की बातों का करना जिह्वा को बन्द करना है। इस समय के दृढ़ हो जाने से प्रभु की धर्म है कि भगवन् धारण साक्षात्कार और प्रभु-दर्शन न हो तो मुझे भ्रूत सारको भेरा उड़ाकर करो। यह समय काम बार परमात्मा के गुणों के प्रकट होने में उसके प्यार में बसा ही सहायक है। मगर धर्म कर्म इस पर भ्रमल गलत तरीके से हो रहा है। चप्पा दो चप्पा के लिए भाल कान मुल को बन्द करना ही भुम काम मान लिया गया है। यह किसी सीमा तक साधन के रूप में ठीक तो हो सकता है भगव इससे ठीक रास्ता

सुल बाय, मगर बड़ नहीं होता है। असली नियम जिसमें भूल नहीं है, वह कर्म सिखा गया है कि भाल कान और जिह्वा का ठीक रास्ता में जाना सिद्धि का कारण तो ही सकता है इसके बिना दूसरा कोई उपाय नहीं। भगो के द्वारा बाहरी हृदय जो दुनियावी भ्रमर लेकर भ्रत-करण में जाम होता है, वही उसके जीवन को बर्बाद करने में बम पकड़ लेता है। इन इन्द्रियों और सत्कारों के दोष से हृदित होकर मनुष्य जानता हुआ न जानने और सुनता हुआ न सुनने वालो के बराबर होता है। बुनिया में देखा जाता है, सही है गलत नहीं हो के सगता है। दिवाबाली भ्रमल करने वाले को भीतर शक्ति को नहीं सजालते हैं उनका स्वाभाव ज्यादातर कठोर देला गया है और बाहरी धाकड़नर में फँसकर कुछ भ्रमनाम और कुछ अपने बड़भन को स्तुति सवा करते ही रहते हैं, इस लिए सारी बनावट मलबल निकालने के लिए प्रमाणित होती है और जो भले लोग ठीक रास्ते पर चल रहे हैं वह किछर से धाते हैं और कहा की जाते हैं। कुछ पता नहीं चलता है। वह ससार को कहा बढाते हैं, करक है बुनिया के चाहने वालो का, इस रास्ते में कदम नहीं बढता है और भ्रगर दिवाब के लिए चने तो कदम कदम पर गिर पड़ता है, इसलिये उपासना मनुष्य को भन्दर की सकारी को ठीक करके भ्रसती जागह तक पहुँचाती है।

## आर्यसमाज दीवान हाल, दिल्ली के शताब्दी-समारोह

के उपलक्ष्य में

## निबन्ध-प्रतियोगिता

विषय 'वेद सब सत्य विद्याओं का पुस्तक है'।

पुरस्कार—	प्रथम	१०० रुपये
	द्वितीय	७५० रुपये
	तृतीय	५०० रुपये

- प्रतियोगी की योग्यता न्यू-तन शास्त्री या सनकस होनी चाहिए।
- निबन्ध पुलकेश शास्त्र के २० पृष्ठों में सुलिखित या टंकित प्रसार होना चाहिए।
- निबन्ध की भाषा हिन्दी होगी।
- तीन प्रतिस्पर्धी विद्वानों द्वारा निर्णय किया जायेगा, जो सर्वमान्य होगा।
- निबन्ध प्राप्त की प्रथम दिनां १५ नवम्बर १९८६ है।
- पुरस्कृत विद्वानों को शताब्दी समारोह के भवधर पर सम्मानित किया जायेगा।

संयोजक—

मूलचन्द गुप्त  
मन्त्री

हुरबाब-२२७४४०

आर्यसमाज, दीवान हाल, दिल्ली-६

# खून की नदियों की चेतावनी का उत्तर

शकाली समस्या से अभी हम सुनभ ही नहीं गये थे कि एक और वस्त्रक दरवाजे तक था पहुँची। इस्लामियत का अंतान बीजना उठा। श्री जगन्नाथ शास्त्री द्वारा एक खबर १५ सितम्बर दिल्ली से प्रेषित होकर १६ सितम्बर को "दैनिक" शास्त्र में छपी। शौर्यक था, खून की नदियों की चेतावनी। इस खबर से देश के बहु-संस्कृत समुदाय पर चोट ती है ही, साथ ही देश में अवांति फंला कर एक नये विभाजन की ही प्रक्रिया है। इसका हर देशभक्त को रडकर विरोध करना चाहिए, मौलाना उवे-कुल्ला खान जोश में आकर होश को भूल रहे हैं। उत्तर में निवेदन है कि भाषक ही बार की धीरते मुस्लिम पर्सनल लॉ से तंग थाकृत न्यायालय का बरबादा लटखटाती है। न्याया-

के भण्डे भण्डे पडे लिखे लोग, श्री भव वैदिक बर्म में दीक्षित होकर गायत्री मंत्र पढ़ते लगे हैं। भाषको मदीना मुनिबसिटी के बाइस चांसलर भादरखीय भाई धर्मरेश जी धीर खतारी नवान के पीन डा० भाई भागद सुयन जी से मिलना चाहिए। मौलाना उवेकुल्ला खान का कथन है कि मुसलमान ही भारत के सच्चे सपुत हैं। हम मानते हैं कि भारत में धनक मुसलमान देशभक्त हुए हैं। मान्यवर रसखान, भादर के भीम्य मोहम्मद भली साहब, धमर शहीद धमकाक उल्ला, पुर्व राष्ट्रपति माननीय डा० जाकिर हुसैन एच फलशहीन भली बहमद साहब धीर पुनपुर्व केन्द्रीय मन्त्री भादरखीय छाताना जैलॉ पण हमें गर्व है। मौलाना खान जैसे पाकिस्तानी एजेंट धीर जिन्ना जैसे

इससे भाषकी यह कल्पना की गिरा-बार हो जाती है। मौलाना खान का कहना है कि जो कोई कुरान धीर हमारे पर्सनल लॉ की छेडना उसकी सफाई देने हम कोट में नहीं जावेंगे। बलिक उनकी ही सफाई कर देंगे। इससे यह स्पष्ट सिद्ध हो जाता है कि मौलाना खान की भारतीय सचिधान धीर न्यायालय में विश्वास नहीं है। भाषको तो अपनी पाकिस्तानी इस्लामिक तनवार में विश्वास है। पर मिर्मां याद है भाषको, जिस पर्सनल लॉ की हिदायत करके प्राय मौलाना कर धनगल भाषण कर रहे हैं उस लॉ के हिदायती पाकिस्तानी सरकार ने बगलादेश में पर्सनल लॉ की मानने वालों पर ही बार बार अस्थावार किचे। उनकी रखा हिन्दू बीच वाहिनी ने ही की की उस समय प्राय

दोनों बच्चे जिन्ना दोवार में चुनक विचे थे। जिसे हम अभी भूले नहीं हैं। बन्ना बंगाली एक वीर हकीकत राय की निर्मम हत्या हमें याद है जिसे हम भूले नहीं हैं। ऐसी रवर्गक भटलाओं से इतिहास भरे पडे हैं। जो मौलाना खान जैसे मताम्व लोभों के बिनीने कुकृत्य का परिणाम था। हम बहु-सर्व कुरुकम् के मानने वाले लोग हैं। जियो धीर जीय दो में विश्वास करते हैं। इसलिए मौलाना खान से अतुरोध है कि पिछले इतिहास को न दोहराये। अभी अत्रपति शिवाजी एच महराराण प्रताप का रक्त भोजव है, तरे बरवार में तुम जैसे पात्रियों का सिर काटने वाले बीच धमर-सिंह राठौर का रक्त भोजव है। भारतीय हिन्दुत्व के रक्त को यमनि की कोशिश न करो बरना परिणाम

## खून की नदियों की चेतावनी

(जगन्नाथ शास्त्री द्वारा)

दिल्ली की नवी मुस्लिम बस्तियों में नि कुल्लु बितरित हो रहे एक भाषण के टेप में चेतावनी दी गई है कि यदि कुरान या मुस्लिम पर्सनल ला बरलने के बारे में कोई कार्रवाई की गई तो खून की नदिया बह जायेंगी।

यह टेप धाजमद मरिन्द के हामम मौलाना उवेकुल्ला खान के राजस्थान के पाली रुन्वे में मिलत में दिचे गये भाषण का है।

इसमें दावा किया गया है कि केवल मुसलमान ही भारत के सच्चे सपुत हैं। मतामा गांधी या इन्दिरा गांधी की हत्या किसी मुसलमान ने नहीं की। यदि इतिर गांधी जी के अग्र-रक्षक मुसलमान होते तो यह हिन्द नहीं देखना पडता। भारत की गौरव-

नीय सूचनाएं विदेशों की बेचने वाला कुल्लार नारायण जी मुसलमान नहीं हैं।

भाषण में कहा गया है कि यदि कुरान नहीं रहेगी तो फिर गीता धीर गुरु ग्रथ साहब भी नहीं रहेंगे। मुसलमान किसी कोट में सफाई देने नहीं जायेंगे, लेकिन कुरान या पर्सनल ला के विभाजन को गैर तो हो सकता की सफाई कर दी जायेगी।

मौलाना का कहना है कि कुरान पर पाबंदी लगाने या पर्सनल लॉ बदलने की कोशिश की गई तो हो सकता है कि इतिहास खुद को दोहराये एव बाला साहब देवस, अलत विहारी बाजपेयी धीर राजीव गांधी की कत्तमा पडना पड जाये।

भाषण में कहा गया है कि मुसलमान ही सच्चे बगलावार हैं। इसीलिए

भारत की बरती मा मुसलमानों की मरने के बाव भी अपने लीने में जगह देती है। मुसलमान काकिस्तान तक से बचवा हिन्दुस्तानी है, जब कि भण्डे भण्डे भारत रत्न जीते जी हिन्दुस्तानी रहे पर मरने के बाव पाकिस्तानी बन गये क्याकि उनकी राख हवा में बिखेर दी जाती है, जो जाकर पाकिस्तान में बसती है।

मौलाना का कहना है कि पाकिस्तान नाने में खिताना जल्मा का हाथ है, उनना ही मरदार पडेल का। खिताना मुसलमानों का बोध है, उनना ही भारत के गैर मुसलमानों का। जिन्होंने पाकिस्तान मागा, बले गये। हम किसी की दया पर जिन्दा नहीं हैं। भारत किसी के बाप की जागीर नहीं है।

भाषण में बार बार चेतावनी दी गई है कि वह बजान काट ली

जायेगी, वह खान लॉ के बिनाही, जो कुल्लार या पर्सनल ला जालियाफ होगी।

यह आरोप भी लगाया गया है कि बगलादेशी मुसलमानों की भाव में जिह्वा में हमनागे भारतीय मुसलमानों के नाम चोटर निपट से काट दिचे गये।

भाषण के टेप में कहा गया है कि प्राय मुसलमानों का बल्लेधाम हो रहा है, अस्तमे लुटी या रहे हैं धीरे-बच्चों की खल किया जा रहा है।

मजेदार बात यह है कि संकडों ऐसे तुपे मुस्लिम बस्तियों में फो बाडे एक तुपे जा रहे हैं लेकिन केन्द्रीय गृह मन्त्रालय की कोई जागरूकी नहीं है। एक बरिडर अधिकाारी ने बडे खडक भाव से कहा "हाँ, उडती-उडती खबर सुनी है कि ऐसा कोई डेप है।"

(रैमिक भाषण)

सय का काम है, न्याय वेना इसमें किसी बर्म विशेष का दोष नहीं जो भाषा इतना लोखला रहे हैं। माननीय बालासाहब देवस की अलतविहारी बाजपेयी एव देव के प्रिय नेता माननीय श्री राजीव जी को कत्तमा पडाने की बात धीर हमारी पवित्र गीता एव गुरु ग्रथ साहब की मिटाने की बात, भास्त्रव में हिन्दू समुदाय पर एक गभीर चोट है। पर मैं समकता हू कि मतीर जी गुरु ग्रथ साहब की मिटाने वाला धीर उच्च नेताओं को कत्तमा पडाने वाला भायद अभी पंदा नहीं हुकम। याद रहे आपके उच्च फाटि के मौलवी धीर इस्लाम

देशद्वेष्टी लोग भारत माता के सच्चे सपुत नहीं हो सकते। जिन्होंने देश का बरबारा करके भारत माता के तीन टुकडे करा दिचे वर्ना प्राय भारत दिक्क में सर्वशक्तिमान राष्ट्र होता। मौलाना खान का तर्क है कि श्रीमती इन्दिरा गांधी का धम रक्षक कोई मुसलमान होता तो उनकी हत्या नहीं होती। भाषके इस कथन पर भी प्रत्यक्षिण लग जाता है, क्योंकि भारत में धमकों का पर जमाने बाला मीर जाफर क्या मुसलमान नहीं था, मांसी वाली महराणी लक्मीबाई का तोपची को धमको से मिल गया था, सुदा बलक क्या मुसलमान नहीं था।

कहा है जब एक लाख पाकिस्तानी तलवार ने वुडने डेक दिचे थे। यह है भाषकी पाकिस्तानी तलकत जिसके स्वर में भाव बोध रहे हैं। मौलाना खान एक बात धीर फरमाते हैं जो अक्षयत मकीर एच विचारलौय है। भाषका कहना है कि हम पिछले इतिहास को दोहरावेंगे, किन्तु यह भाषको मतान्व का भ्रम है। पिछला इतिहास हमें याद है लगभग ७०० वर्ष पूर्व एक विदेशी पुन्डे सुहृमय गच-नकी को सज्जाय पुन्डे सुहृमय गच-१७ बार माग किया था। पर मौलाना खान के सफक से एक बार की नहीं कम्मा। गुरु मोहिम्महिद के

मयक होगी। मौलाना खान की तरह ही बहुत से जगजगत्वादी एव देशद्वेष्टी लोग सत्प्रशिक्षण बरद पैलाक हुनार देव की एकता एव बलकता के लिए सतार पैदा कर रहे हैं। यामा मस्त्रिक के काम बल्लुला कुल्लारी की धाजकन पाकिस्तान गये हुए हैं। वह की बर्ता बार के जिलाफ निच बमन कर रहे हैं। भारत सरकार की चाहिए कि वह मौलाना जैसे लोभों की बलिकन गिरफ्तार कर बलिष्ठ कर कीर देव हिंदू की देखते हुए कत्तमीर को बारा ३०० कोलाति-बीर सल्ला की जाने कीर उनी के

(किप कुल्ल १६ अक्टू)



## समाचार सन्देश

### दिल्ली आर्य वीर दल के २० युवकों द्वारा प्रांतीय आर्यवीर दल महासम्मेलन, कैथल में सोल्तास भाग विशाल शोभा यात्रा निकाली गई

हरियाणा आर्यवीर दल के निमन्त्रण पर आर्यवीर दल दिल्ली प्रदेश के २० आर्यवीरों ने नौबे प्रांतीय आर्यवीर महासम्मेलन, कैथल में सोल्तास भाग लिया। आर्यवीर दल दिल्ली के यह युवक, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा की (मैट्राडोर) प्रचार-बाहुन में बैठकर वैदिक नारों को गुंजाते हुए २२ सितम्बर, ८३, शनिवार रात ११ बजे सभास्थल हस्तिना गांधी कन्या महाविद्यालय, कैथल पहुँचे। भोजन खाए के उपरान्त साईं लीन बजे प्रारम्भ हुई शोभायात्रा में विभिन्न प्रदेशों से आये हुए आर्यवीरों के साथ, दिल्ली

आर्यवीर दल के यह युवक लाठी, भाले, तलवारों से सुसज्जित पूर्ण गणवेश में सम्मिलित हुए।

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का मुख्य पत्र, आर्यसन्देश एवं बीमोराख की कृष्ण पर लिखा हुआ ट्रैक्ट लघु पुस्तिका प्रचार एवं प्रसार के लिए सभास्थल पर निःशुल्क वितरित किया गया। प्रायोगिकों ने आर्यवीरों के ठहरे एव साने गीते की सुन्दर व्यवस्था की थी इसके लिए सभी ने मुक्त कंठ से प्रशंसा की।

रहामसुन्दर विरमानी मंत्री

आर्यवीर दल, दिल्ली प्रदेश

### आर्यसमाज तिमारपुर में यज्ञ व वेदकथा सम्पन्न

आर्यसमाज तिमारपुर, दिल्ली-७ में १६ सितम्बर से २२ सितम्बर तक सत्रयुद्ध पारायण यज्ञ एवं वेदकथा समारोहपूर्वक सम्पन्न हुई। वेदों के प्रकाश विद्वान् पुण्य पं० सत्यप्रिय की आचार्य यज्ञ के ब्रह्मा वेत्ता श्री कर्मवीर जी व पुणेहित श्री नानक चन्द जी आर्य वेद पाठों में। सर्वश्री श्री० बीमसिंह, विनोद शर्मा, भानन्द प्रकाश गुप्ता, कृष्णलाल पोपल, महेश्वरी जी, श्रीमती शांति देवी, सुभाष बूढ़ा एवं विमल कान्त शर्मा बारी-बारी से यजमान बने। यज्ञ के पश्चात् प्रतिनिध आचार्य श्री सत्यप्रिय जी ने वेद मन्त्रों की सरल, सहज रोचक व मनोहारी व्याख्या की। रात्रि को सुप्रसिद्ध विद्वान् श्री प्रेमचन्द जी श्रीर एम०ए० को वेदकथा हुई। साथ ही रात्रि को आचार्य श्री सत्यप्रिय जी का भी प्रवचन होता रहा। कथा से पूर्व अजनीपदेशक श्री

सत्यदेव जी स्नातक रेडियो कलाकार एवं तबना वादक की ज्योति प्रशंसा की ने अपने मन्दुर मन्त्रों द्वारा सभी को मनभूषण कर दिया। यज्ञ व कथा में समाज के नयी पीढ़ी-कारियों ने सदस्यों एवं नगर के निवासियों ने काफी सख्या में उपस्थित होकर उत्साहपूर्वक भाग लिया। यज्ञ शेष वितरण के पश्चात् नगर का भी आयोजन किया गया। माता चम्पन देवी आर्य मेख शर्मा चिकित्सालय के चलबाहुन ने भी १५ सितम्बर को काफी सख्या में स्वामीजी रोगियों की आँखों की भी जाँच की।

सबदीप  
विमलकान्त शर्मा  
उपमन्त्री

आर्यसमाज तिमारपुर  
दिल्ली-७

### आर्यसमाज राजौरी गार्डन नई दिल्ली द्वारा वेद प्रचार

१९८३ से १४९८५ की रात्रि तथा १५९८५ की उपनिषदों के महान् विद्वान् प्रो० रत्नसिंह जी एम०ए० के प्रवचन होते रहे। श्रोता-गण काफी सख्या में पधारते रहे तथा उन पर आर्यसमाज का प्रभाव बहुत अच्छा रहा। प्रवचनों से पूर्व श्री सत्य

देव जी रेडियो कलाकार के सभन भी होते रहे।

८६८५ की आर्यसमाज की शोध से श्री कृष्ण जन्म दिवस मनाया गया।

नन्दकिशोर बाटिया  
मंत्री

### आर्यसमाज हनुमान रोड का वार्षिकोत्सव

आर्यसमाज हनुमान रोड का वार्षिकोत्सव बड़े समारोह पूर्वक १५ हनुमान रोड में ११ अक्टूबर से १३ अक्टूबर तक मनाया गया। इस अवसर पर एक सप्ताह पूर्व श्री पं० मदनमोहन विश्वासगार का वेद प्रवचन हुआ। जिसमें धार्मिक जनता ने सहर्ष भाग लिया। प्रवचन से पूर्व श्री सोहनलाल पणिक के मन्दुर प्रवचन हुए। उत्सव के अवसर पर अनेक गण्यमान्य व्यक्तियों और विद्वानों के प्रवचन हुए।

निवेदक  
मन्त्री

आर्यसमाज हनुमान रोड,  
नई दिल्ली

### ग्राम प्रचार

आर्यसमाज आशा पार्क के तत्प्राचार्य ने वेद प्रचार का आयोजन किया गया। यह प्रचार कार्य २६ से २८ सितम्बर १९८३ तक आशा पार्क मार्केट के मध्य में होता रहा। जिस में महात्मा राम किशोर बंस महोपदेशक जी का वेद प्रवचन हुआ साथ ही पं० सत्यदेव स्नातक रेडियो कलाकार के मन्दुर अजनीपदेश से जनता ने बर्षों का प्रभु प्राप्त किया। दिल्ली सभा के वेद प्रचार अधिकृतता स्वामी स्वर्णानन्द सरस्वती जी ने स्वास्थ्य सम्पन्नी कविताओं और हास्य कविताओं द्वारा श्रोतागणों को लाभान्वित किया। आशा पार्क मार्केट में आरी सख्या में श्रोतागण आते रहे। आर्यसमाज तिलक नगर बसक पुरी और प्रशोक नगर से सभी आर्य मन्त्र आते रहे साथ ही सभी ने इस वेद प्रचार कार्यक्रम की प्रशंसा प्रशंसा की और अपनी कालोनियों में कार्यक्रम रखने के लिए आग्रह किया और इस कार्यक्रम के लिए सभा अधिकारियों का बन्धनत्व किया गया।

व्यवस्थापक  
स्वामी स्वर्णानन्द सरस्वती  
अधिकृतता, वेदप्रचार

### आर्य कन्या गुरुद्वल नरेला (दिल्ली) का कीर्तिमान

आर्य जनता की यह जानकारी हुई होगी कि आर्य की प्रिय सखा कन्या गुरुद्वल नरेला की कन्याओं ने इस वर्ष महर्षि वेदानन्द विस्वविद्यालय रोहतक की शास्त्री परीक्षा में उत्तीर्ण परीक्षाओं की योग्यता पूर्ण (मेरिट लिस्ट) में भाग में से पात्र स्थान (प्रथम, द्वितीय, तृतीय, पञ्चम प्राप्ति) तथा एक वर्षीय पदक प्राप्त कर विश्वविद्यालय में अपना कीर्तिमान स्थापित किया है। इसका श्रेय कन्या गुरुद्वल के कुलपति प्रमुख स्वामी श्रीमानन्द जी सरस्वती के पुण्य तथा, तेज एवं ब्रह्माण्ड आश्रमभार्य मान्यवर्गों आचार्य बह्म गुप्ता जी की सुव्यवस्था तथा कर्तव्यपरायण आचार्य बह्म जी सगन को है। स्नातक वहात रात्र्यों से भाई कन्याओं की महर्षि वेदानन्द सरस्वती द्वारा निष्पट आर्य पद्धति के अनुसार शिक्षा-दीक्षा देने वाली एकमात्र इस शिक्षालय सखा के लिए तन मन धन से पूर्ण सहयोग देना आर्य जनता का पुनीत कर्त्तव्य है।

—सहायकता द्वारा

### दिल्ली आर्यसमाजों के अधिकारी चयन हैं

समस्त आर्यसमाज के धार्मिकारी महान् भावों से अनुरोध है कि दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के उपदेशकों एवं अजनीपदेशकों के कार्यक्रम निश्चित करने के लिए वेदप्रचार व्यवस्थापक स्वामी स्वर्णानन्द से मिलें। जो केवल उपदेशक से मिलकर, व्यवस्थापक से सम्पर्क किये बिना कार्यक्रम बनाने में उनको सहयोग कर पने में हन धरमर्ष है। व्यवस्थापक से तिथि रजिस्टर में शक्ति सार लेने तथा उनसे लिखित पत्र व्यवस्था से नें।

महामन्त्री  
सर्वपान  
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा दिल्ली

### आर्यसमाज शौंका दिल्ली-३३ में श्रीकृष्ण जन्म महोत्सव

आर्यसमाज के प्रगल्भ में ७ सितंबर से ८ सितम्बर तक श्रीकृष्ण जन्ममहोत्सव एक समारोह का आयोजन किया गया। जिसमें वैदिक विद्वानों ने श्री कृष्ण के सहस्र पर चरित्र एवं अनेक कथाएँ किये। श्री श्री श्री कृष्ण जन्म से उत्सव का

निर्मा। इस अवसर पर श्री पं०नेल कन्द आर्यवीर आचार्य सत्यप्रिय के प्रवचन हुए।

निवेदक  
सत्यप्रिय/कन्द  
श्री श्री, आर्यसमाज नई दिल्ली





# साप्ताहिक ओड़म आर्य सन्देश

वर्ष ६ अंक ४८  
मूल्य एक अंक १० पैसे

राजिवार, २० अगस्त, १९८०  
आविक २० उपवि

मुद्रित संख्या १६७९६४८०८६  
आविक २०० अंक

आविष्य २०४२

हजारवां अंक १६१  
विषय में १० अंक, १० पैसे

## राष्ट्र रक्षा सम्मेलन राष्ट्र रक्षा के लिए आरक्षण समाप्त करना आवश्यक है

—डा० धर्मपाल

आज भारत की परिस्थितियाँ बड़ी विषम हैं। इसे अन्दर और बाहर दोनों ओर से खतरा है। पञ्जाब, आसाम, नागालैण्ड, आन्ध्रप्रदेश, उत्तरगंगा सभी प्रदेश बचक रहे हैं। जब हम किसी प्रांत विशेष को किसी आघात पर आरक्षण की सुविधा देते हैं जैसे काश्मीर में मिल रही है। धर्म अथवा जाति के आधार पर विशेष सुविधाएं देते हैं तो अन्य लोग भी उसी प्रकार की सुविधाएं पाने का प्रयास करते हैं, और प्रांतो-लन बलाते हैं। वे स्वतंत्र राष्ट्र स्थापित करने का प्रयास करने में

लगे हैं। राष्ट्र रक्षा के लिए धनगाव-बातियों को नष्ट करने के साथ साथ उसकी भावना को समाप्त करना आवश्यक है। आज मनुष्य का चरित्र भी पत्थर की धोर जारहा है। सरकार भी इस दिशा में योगदान करती है। सरकार के व्यवसाय को केवल उत्पादन मुक्त प्राप्ति करने के लिए बन्द करने में धसमर्च है। मछ ममी बराहियों की जड़ है। ये बिचार डा० धर्मपाल ने आर्यसमाज हठसन लाईन, गुप्त तेग बहादुर नगर दिल्ली-६ के आधिकारिक पर व्यक्त किए। उस अवसर पर डा० प्रसादन

कुमार वैशालकर ने अपने भाषण में सम्पूर्ण भारत की दुर्दशा का विवरण दिया और आर्यसमाज से अपेक्षा की कि एक देशव्यापी आंदोलन चलाना जाना चाहिए। मनुष्य अच्छा बनना तो समाज भी अच्छा बनेगा। अतः मनुष्य का निर्माण आवश्यक है। यह कार्य केवल आर्यसमाज ही कर सकता है। इस अवसर पर आर्यसमाज के यशस्वी सम्पादक श्री प० यशपाल सुबाबु ने धर्मजनों का आह्वान किया कि वे सभी मिलकर कार्य करें, आचारबान बन, विवेकी हों और डक सक्ली बनें तभी राष्ट्र का

कल्याण सम्भव है। राष्ट्र सम्मेलन का आयोजन भी नज्दूर गुर्गों ने किया।

आर्यसमाज किम्बे कंप में निखले एक सप्ताह से सुप्रसिद्ध विद्वान् भोजस्वी बक्ता प० यशपाल सुबाबु की कथा हुई और प० बुन्नीलाल के जन्म हुए। १२ अक्टूबर को आर्य महिला सम्मेलन और आर्ययुवक सम्मेलन सम्पन्न हुए।

निवेदक  
गोपाल आर्य मनी

## पाकिस्तान द्वारा राजस्थान सीमा पर बड़े पैमाने पर युद्धाभ्यास

पाकिस्तान ने राजस्थान से लगने वाली सीमा चौकियों के आस-पास युद्धाभ्यासों में बढोतरी कर दी है। भारी मात्रा में अस्त्र-स्त्र सामरिक महेत्त्व के ठिकानों पर इकट्ठे किये जा रहे हैं। प्रांत समाचारों के अनुसार यह आका व्यवस्त की जा रही है, आगामी कुछ महानों में पाकिस्तान इस सीमा क्षेत्र में अहकाने वाली कार्रवाई कर सकता है। पाकिस्तान ने अपने सीमा चौकियों पर सुरक्षा सैनिकों की संख्या में बढोतरी कर दी है। पश्चिमी राजस्थान से लगने वाली सीमागत चौकियों पर पाकि-

स्तान ने पाबनी और दूसरी कोर लगा रखी है। न० भाके अनुसार पाकिस्तान ने पश्चिमी सीमागत पर सैनिक महेत्त्व के ठिकानों पर अमेरिकी राडार लगा रखे हैं। हाल में इनकी संख्या में भी वृद्धि की गयी है। यह भी आशय व्यक्त की गई है कि जसलमेर बाडेर से लगी सीमा में पाकिस्तान ने अपने ठिकानों पर इलेक्ट्रोनिक हथियारों को भी इकट्ठा करना शुरू कर दिया है।

सीमा पर चल रही अशान्ति और खतरनाक गतिविधियाँ चित्ला का विषय हैं। बुली सीमाओं के

कारण अक्सर वे विदेशी नागरिकों की घुस पें को समस्या का सामना करना पडा और पजाब में सिव आनकवाधियों की हथियार प्रशिक्षण की सुविधा मिली। प्रब राजस्थान के साथ लगने वाला ४३० किमीमीटर जल भी चर्चा का विषय बना है। यहाँ विदेशियों और आतंकवादियों की घुस पें के अलावा तस्करों भी एक बड़ी समस्या है।

यह उत्पत्तिसनीय है कि सितम्बर में पाकिस्तान की वायुसेना ने वायुसेना दिवस मनाया था। इस अवसर पर एयर चीफ मार्शल जमाल अह-

मद खान ने एक भाषण जारी कर वायुसेना के अधिकारियों और जवानों से कहा कि वे किसी भी चुनौती का मुआवजा करने के लिए तैयार रहें। उन्होंने कहा कि यदि हम पर युद्ध घोषण गया तो हम उसका कडा जवाब देने में सक्षम हैं।

इसी दिन पाकिस्तान की वायुसेना का सभी ठिकानों, कजल, लाहौर, सरगोवा, चकलाला और पैसावर के वायुसेना अड्डों पर जवानों की शय दिलाई गयी कि वे किसी भी परिस्थिति में जितने से मुकाबले के लिए तैयार रहें।





## सन्ध्या-योग

लेखक—जगत् कुमार शास्त्री

१—धर्मो र्माई सज्जन पुरुषो । हृम सन्ध्या करे, धोखूरोपासना कर गायत्री मन्त्र का अनुष्ठान और भोकार का जप करे । प्रातः काल सूर्य के उदय होने से पहले और सायंकाल सूर्य के अस्त होने के पीछे सन्ध्या का समय है । पञ्च महायज्ञों में सन्ध्या प्रथम और मुख्य है । इसे ब्रह्म यज्ञ भी कहते हैं । इसका एक प्राचीन नाम 'अहुत' भी है । ('अपोऽहुतो, हुतो होम' मन्त्रमूर्ति तृतीय अध्याय) गायत्री मन्त्र व सावित्री मन्त्र की अनुष्ठान विधि भी यही है । धोखूरा जप विधि अथवा धोखूरोपासना भी यही है । इसके गे विभिन्न नाम कुछ तो शास्त्रकारों के विचार प्रकार के आधार पर हैं, कुछ साधकों उपासकों के श्रेणी विभाग के आधार पर । यदि कोई अपना सारा जीवन वा अधिकांश समय सन्ध्या अर्थात् स्तुति प्रार्थना और उपासनापूर्वक भगवान् के मध्यक ध्यान में व्यतीत कर सके तो भी बहुत कम है । परन्तु यदि कोई धार्मिक समय प्रभु भक्ति में न लगा सके तब भी दोनों समय सत्य वा अवश्य करे । सन्ध्या में गायत्री मन्त्र का अनुक्रमानुसार विशेष पाठ और विचार तथा अनुक्रमानुसार ही प्रणव जप भी अवश्य ही करे । जा ऐसा नहीं करता शास्त्रों में उसे दोषी माना गया है । उसके अधिकार का आदेश भी दिया गया है -

२—प्राचीन इतिहास ग्रन्थों को देखने से ज्ञान होता है । एक हमारे पूर्वज राम कुण्ड सोता कुम्भी आदि एवं सब ऋषि मुनि महात्मा, साधु सन आदि नियम पूजन सन्ध्यासना किया करते थे । यात्रा युद्ध आदि तथा योग विपत्ति के समय में भी वे अपने सन्ध्या उत का परिपालन करते थे । सभी लोग बड़े बड़े काम करने दोष धाम्नु को प्राप्त करने में भी समय लगाते थे । आज भी उनकी यशोनामाएं मसार में गाई जा रही हैं । ईश्वर को उन पर विशेष कृपा वा । क्योंकि वे मंत्र ईश्वर के मन्त्रे अर्पण थे ।

३—आज मन्त्र में डग का स्थान योग में ने रखा है । दिवावा प्रतिष्ठा सन्ध्या को बना रहा है । मानो सन्ध्या सन्ध्या हो गया है और भक्त के गण गण के हैं । मास्तिवना और उसके परिणाम में चरित्र-जीवनना गन्तव्य और भी माना प्रशस्त उग्रप्रणव एवं दुःख का हृदय वि । विचार तन्त्र प्र सिद्धा रही हैं । मन्त्रे धार्मिकजन हवा नति का मामला कर सकते हैं । और अपनी हुई दुःख तथा अज्ञान का परम ओ को राक्षसकने । ईश्वर भक्ति से हो पाप मात्र का क्षय प्राप्त पुण्य का उदय प्राप्त और सच्च धार्मिक नर-नारी हवा आज मानव मनुष्य में विचार का कर्म ।

४—सन्ध्या के मन्त्रों ना पाठ जारी रहे स्थिर एवं शान्तचित्त हाफन करण चाहिए उपासना शुद्ध एवं सफेद हो । साथ ही साथ सन्ध्या में जो के अर्थों का मन्त्र योग यति सा हो होना रहे । अर्थ को जानना नती मया योग मफन श्रो सुवदन्ती में मकेगा । अर्थ को जाने नती मया मन्त्र नती सन्ध्या कम में प्रीति बढी । नती मन्त्र प्रीति नती है । उच्चस्वर्ग की प्रेक्षा मात्र ही मन में पाठ और जप आदि नती के लाभ अधिक है । कभी कभी मर्ममिन्न सन्ध्या मन्त्रों में जा उच्चस्वर्ग में पा किया जाता है वन्त तो इन्द्रिय होता है कि जिनको सन्ध्या के मन्त्र शूद्र-शूद्र मान्य नहीं है । उनको भी व मन्त्रना मया हो गये । वह सन्ध्या का मन्त्राण नहीं होता । प्रसिद्धाण नती नती है ।

५—वैदिक मन्त्रा विषयक छोटी बड़ी और गद्य-पद्यमयी अर्थ-ज्ञातक पुस्तक बहुत में विद्वानों में बनाई हैं । सभी उत्तम हैं । साधकों को अपनी अपनी योग्यता और सुविधा के अनुसार किसी भी एक

पुस्तक की सहायता से, अथवा किसी भिन्न वा अन्य विद्वान् की गहा-यता से सन्ध्या के सब मन्त्रों का शुद्ध उच्चारण और अर्थ सीख लेना चाहिए । विभिन्न विद्वानों के अर्थ-प्रतिपादन में जो धार्मिक भेद-प्रभेद पाये जाते हैं, वे सब ऊपरों हैं । वे तो गीरा ही हैं । धार्मिक और तात्त्विक भेद उनमें नहीं हैं । अतः उपासकों को भेद में भी भवेद मान कर ही चलना चाहिए । अर्थ भेद के बिना भेद में नहीं पडना चाहिए । स्वाध्याय से इन प्रकार के सभी सवाय धाराना से ही मिट जाते हैं । (परस्पर विमर्द बर्न न होने चाहिए ।)

६—सन्ध्या की महिमा हमारे धर्मशास्त्रों में बहुत विस्तार के साथ माई गई है । उपनिषद्कारों एवं स्मृतिकार महर्षिों में वैदिक मन्त्रोपासना पर सर्वाधिक बल दिया है । उपासना के अभाव में तो मानव-जीवन कृष्ण, पीका कडवा कुसकुसा और अशान्त बन जाता है । ऐसी अवस्था में उत्तम ज्ञान भी मानसिक विलास अथवा बाजाल होकर रह जाता है । निदान्त उसे कहते हैं, जिसके अन्त में सिद्ध अवश्य ही मिलनी है । सिदान्त आचरण के लिए बने हैं, बाद विवाद से सिदान्तों की परल होती है ।

७—प्रातः काल की सन्ध्या के पर्वचान रात के कायों का, और सायंकाल की सन्ध्या के पर्वचान दिन के कायों का अती प्रकार विचार भी करना चाहिए । यदि किसी से कभी कोई युक्तक हुई हो, तो उस के सुधार का उपाय करना उचित है । ऐसा प्रयत्न करने से मनस्य का चरित्र धार्यन्त निर्मल जीवन शान्त और स्वभाव प्रति सौम्य, शुद्ध एवं स्थिर हो जाता है । फिर प्रभु-भक्ति में मन भी सब लगने लगना है और धर्म में मनुष्य ब्रह्मानन्द में लीन होने की सिद्धि भी प्राप्त कर लेता है ।

८—जो लोग उपासना कर्म द्वारा अपने-अपने जीवन को सुखी, सफल, अजन्मी और शान्त बनाना चाहते हैं उनको सभी प्रकार के मादक द्रव्यों तमोगुणी एवं रजोगुणी भोजनों अधिक पदार्थों, चरित्र-हीन मित्रों और काम क्रोध मद मोह लोभ तथा प्रहकाररूपी मनो-विकारों का परि-त्याग अवश्य ही करना चाहिए । इसे ही धरिपु-दमन कहते हैं ।

९—जप के नाम पर शरीर को कष्ट देना या मुखा उलाना अनुचित है । किसी जप-न-गृह में जाना शुद्ध वायु के सेवन एकान्तवास विशेष अग्रान्त और प्रहानि-निरीक्षण के लिए तो ठीक है अन्यथा नहीं । पर-शूद्रन्धों का परि-त्याग करने तथा कथित वेदों या रमते-राम बन जाना तो एक प्रकार की कायरता ही है । कर्त्तव्य-कर्मों से यह विमुक्तता और शास्त्र विहित जीवन-सर्वश से यह पनामवाद किसी के लिए किसी रूप में भी अव्यक्त नहीं है । न्यास तो अपरिग्रह और त्यागवाद ही है ।

१०—अन्तर्-अपनी सन्ध्या उपासना, जप, अनुष्ठान, साधना आदि-आदि भक्ति-वर्ष के छोटे-बड़े सभी कार्यक्रम उपासक अपने आप ही कर । नौकरी या सुनौमी से करवाने का काम यह नहीं है । किसी कौशल कर्मों में प्रेरित या उत्साही करना तो बात ही दूसरी है ।

११—सन्ध्या-साता की शरण बहल करो । तन के कोने को भक्तिवाद के रंग में रंगो । मन-चन्दर को नम में करो । सच्चे उपासक बनो । उपासना के लाभ बहुत हैं ।



## क्या बरनाला उपद्रवादियों का इलाज कर सकेंगे ?

तीन वर्षों से पंजाब में भाग्य और बुद्धि उठता रहा है हर दिन कोई बोलता कुछ घटना और लोगों के दिलों में दहशत व्याप्त जाती। बुद्धि प्रधानमन्त्री ने समस्या का समाधान करने का हर सम्भव प्रयास किया। स्व० श्री लोनावाल के नाथ हुए समझोते से सारे देश को धाखा बंधी थी, कि पंजाब समस्या का समाधान हो गया किन्तु सन्त लोनावाल की हत्या से फिर धाखाधों पर पानी फिर गया। लेकिन प्रधानमन्त्री ने चुनाव कराकर फिर समस्या को सुलझाने का साहस दिखाया। पंजाब में चुनाव का जगल बजा। सिस और हिन्दुओं ने एक-जुट होकर धातकवाद के भुकावले में बाट डाले। दूसरी तरफ बाबा जोगेन्द्रसिंह का पाटी न चुनाव का बायकाट करने का फैसला किया। उपद्रवादियों ने चुनाव में धातकवाद खाने से कोई कसर नहीं छोड़ा। चुनाव शुरू होने से एक दिन पहले बारावाल, बटाला, दाना-नगर, धर्मपुर, फरीदादर और तलवाड़ा सरबो में उपद्रवादियों ने बम कबजाई की। बटाला में एक बम बमाले से तान बच्य मर गये श्री राजव सभ। क सत्यम भाहिन्द्रप्रसाद धर्मपुर के प्रमुख पय-ब-क का दा लाल का घर तहल-नहल हा-बा। धर्मपुर में चुनाव शुरू होने से दो दिन पूर्व भातकवादियों ने दा का कायकनाभा का जहरला भसाद भिन्ना-क मीन का नाद बुला दिया। कई स्थानों पर तहल बम का भाल। बदला रलय स्टेशन के बाहर एक ट्रांजिस्टर बम काफ़ ख तान व्याप्त था का भात का बाल बड़ा दिया गया। इसक बावजूद चुनाव हुए, प्रकाश नया को सरकार बन गई। केन्द्र सरकार सा भू-चलित थी। उपद्रवाद का सफाया बकाला सरकार के हाथों में है।

१४ दिसम्बर १९८० का जब भकाली दल बना था किसी प्रकार की साम्प्रदायिक भावना का बाज था उसम नजर नहीं आता था किन्तु उसे जसे बकाला दल ने ताकत पकड़ा उसमें कई ऐसे तत्व शामिल हो गये जिनका कारण भकाला दल का बार-दुब-दुब हा गया। उप-वादी तत्त्वा ने भकालिया का फूट का भ्रष्टा लाभ उठाया। भकाली दल में यह नारा उठता रहा, बम भार राजनात साथ साथ बनेगी। राजनात की कुंसा का पान के लिए कुछ नताभा न उपद्रवाद तत्त्वा पर हाथ धरे रखा जिससे उपद्रवाद शांतिधाला हाव गय। इन्हीं के कारण भव तक पंजाब में धातकवाद ज्वालाभुला से लावा निकलता रहा है। भकाला दल का सरकारता बन गया पर प्रश्न यह है क्या भकाली दल उपद्रवादो घड को नया करक धातकवादियों का सफाया करने में सफल होगा ? क्या बहु सन्त लोनावाल के भावना के अनुसार हिन्दू सिस एकता के लिए भाग करणा और स्वयं में उगत घड बन्दो के फोड का इलाज कर पायेगा ?

श्री सुरजोतसिंह बरनाला सबसम्मति से पंजाब के मुख्यमन्त्री बने हैं। उन्होंने कहा श्री-नयी सरकार का पहला काम सारे पंजाब की भावों के भासू पोखने की होगा। हम ऐसा सरकार बनायेंगे जिसे राज्य का हर भावों अपना समक मके। हम श्री बरनाला की सफलता के लिए शुभाशंसा देते हैं। वे सफल हो पर इस स्थिति से हकारा नहीं किया था। सफलता कि बरनाला लोनावाल नहीं है वे सामूहिक भकाली नेतृत्व का एक हिस्सा हैं। बाराबर बालों में बरिष्ठ सारे दल को अपने साथ साथ लेकर चलना उनके लिए एक चुनौती है। मुख्यमन्त्री को साथ ग्रहण करने के बाद श्री बरनाला मुख्तार में धारसा के लिए पृष्ठ में सबसे उनकी धार्मिकता का ता पता चलता है। नु राज्य के ४८ प्रतिशत हिन्दुओं की श्रद्धा और भावना का प्रतीक किसी हिन्दू मन्दिर में बना भी उचित नहीं समझा। इससे हिन्दुओं के मन में क्या विश्वास उगरेगा ? भाव्य बहो जो किसी सिस प्रसन्न ने कहे थे। धगर पंजाब में बास की सरकार बनती है तो सिस जनता इसे हिन्दुओं

की सरकार नहेगी। तो क्या धम भकाली सरकार पर हिन्दू विस्थापन कर ? जब कि यह जो प्रयोग रवैया है जेलो से काफी सिल रिहा जिये गये और किये जा रहे हैं परन्तु जेलो में नन्द प्रविकास हिन्दू श्रमो भी रिहा नहीं किये गए। दूसरी ओर पंजाबियों ने अपने मन में २६ दिसम्बर की बरनाला के मुख्यमन्त्री चुने जाने पर बुनियाद भनाया और कुछहालो की भाशाएं जगायी। लेकिन बाने वाला समय भकाली दल के लिए चुनौतियों में भरा हुआ है। सिखे तीन वर्षों से पंजाब केन्द्र की सहायता पर चलना भा रहा है प्रत्येक तरफ लोगों के ऊपर टेक्सो का बोझ डालना तथा दूसरी तरफ उपद्रवाद को साफ करना काफी ज़ोहिल भरा काम है। सन्त लोनावाल और राजीव गांधी के बीच हुए समझोते ने नाने वाले पंजाब का रास्ता तय कर दिया था। पंजाब की नयी सरकार के लिए उदा रास्ते पर चलना कड़ी चुनौती है। यह सच है कि सिलो के विशाल बहुमत ने इस चुनाव में धातकवादी रीति नाति के विनाक बोट दिया है। बेधर्मसिंह को विस्थापन विमल खानसा का सिस ६०० वोटों से हार जाना इस बात का संकेत है कि उपद्रवादियों से सहानुभूति रखने वाले श्रमो हैं। पंजाब की नयी सरकार को उपद्रवादियों के इन हिमायतियों का मन भी बदलना होगा। उसे अपने कार्यों से निवृत्त करना होगा कि भिन्नवाले और उसके सहयोगियों का रास्ता चलत था। पंजाब और सिस दोनों के लिए ग्रहणकर था। उपद्रवादियों के हीसले श्रमो भी बुलन्द है भारत से बाहर जो श्रद्धाश्रम श्रमो चल रहे हैं बास्तर में काफ़ी विमना-जनक हैं। प्रधानमन्त्री श्री राजीव गांधी की ब्रिटिश यात्रा से तीन दिन पूर्व ब्रिटिश पुलिस ने लगभग एक दर्जन धातकवादियों को गिरफ्तार किया है। ऐसा कहा जा रहा है कि इन लोगों ने श्री राजीव गांधी की हत्या का षडयन्त्र रचा था।

यह भी बहुत स्पष्ट है कि पंजाब के धातकवादियों को अमेरिका ब्रिटेन और कनाडा के बसे सभी सिलो से महायत्ना मिलनी रहती है। धातकवादी प्रधानमन्त्री श्रीमती इन्दिरा गांधी और सन्त लोनावाल जैसे विस्थापन लोकप्रिय नेताओं की हत्या कर चुके हैं और भव भी वे षडयन्त्र करने में लगे हुए हैं। लेकिन यह कुछ भसामान्य सा प्रतीत होता है जब कभी प्रधानमन्त्री शासितन या लन्दन पहुंचने वाले होते हैं तभी बहो की सरकार को धातकवादियों की गतिविधियों की जानकारी मिलती है। क्या यह सच नहा है कि रेशन प्रशासन और श्वेद सरकार की पूरी तरह मालूम है कि उनके देशों में भारत विरोधी गतिविधियां चल रही हैं। दोनों सरकारों को खालिस्तान की माग करने वाले मुट्ठीभर सिलो की सारी कारस्थानियों की जानकारी है। कुछ राजनैतिक प्रसन्नो का यह भी विश्वास है कि अमेरिका, ब्रिटेन तथा कनाडा के शासकों ने जानबूझकर भारत को खलिज करने का षडयन्त्र रचने वालों को प्राथम्य दे रखा है। इन उपद्रवादियों का जो भारत से बाहर है स्वयम्भू पंजाब के किसी सूत्र से भी जुड़ा हुआ लगता है। जो योवनोना वाटर बनती है उनका प्रयोग होना है। इसलिए बरनाला सरकार को देश को प्रसन्नता का चुनौती देने वाली नाकतो से लड़ने के लिए कवर कसगी हो होगी। चुनौती के वे लोग जो बन्दूक और बम की भाषा में बात करते हैं। कल तक वे बन्दूक उन पर तनी हुई थी जिन्हें उपद्रवादो धातकवाद लुन्गुनार के लिए उत्तरदायी समझते थे। अब यह बन्दूक उन पर भी तन सगती है जिन्हें सिस पन्थ के स्वयम्भू सरलक सिलो का गद्गार कह रहे हैं। मतलब साफ है नयी भकाली सरकार को इन भडकों का नयी राह हो नहीं दिखानी उम्हें उसे राह पर चलाने का दायित्व भी भिमाना है। अगर प्यार भी भाषा उम्हें समक न भये तो उनकी भाषा से ही उम्हें सही रास्ते लगाना होगा।

—यशपाल सुनाम्



## व्यासपीठ

लक्षक—स्वामी सदानन्द सन्स्वती

उपनिषत् कथा-माला—१८

## कर्मकाण्ड

हुम है स अ का  
न हो पाक निज ।  
हो नेक सब से  
मज्जन से मिल ।

नेक काम मनुष्य को नेक बनाता है और बुरे कामों से मनुष्य बुरा बन जाता है। बुरे काम से हुबहु गड़ होना और बुरे कर्म से अज्ञान बढ़ता है। नेक धर्मो प्रथम का इच्छुक और इच्छाधीन जो मनुष्य को बुरे कामों की ओर लींचने हैं नमन क ता है। पापों का रास्ता खल जाने से समार मेकधर और मुखावत दिन प्रतिदिन बढ़ता जाता है। कमण्यना मनुष्य को पापों से हटा कर कल्याणमार्ग पर अग्रसर करती है। बुरे काम न करो—हुल्लाश्रीने कमजोर हो जाओगे। यह बात है कि कोई भी पुण्य करने से हा अपने आप बुरा । न जाना है जिस मजेज पर वह खा है। उसके एक धार बुराई और दूसरी धोर अनाई है। यदि बेमकाम है वह अपने काम का बुराई का धोर बढ़ाता । न जाना प्रसिद्ध है इस दुर्ग ज ज है। पर यदि वह सोच समझा धुपामा को अग्रण करता है तो अना हा प्रसिद्ध वह प पाता है। यो चक अ ने बना हुआ धोर को तो प्रथ से ग मिताता है। धोर त्वरे को मवार से घनाता रहता है। परन्तु धाजक निम्न भी बदन गया है—जिन काम के करने से मनुष्य का हृदय पवित्र और बन बरग शुद्ध हो उसे तो कोई विरहा हो निभता है जिस सब का धा म हो द व च नमः परस्पर महोय हो अय से किना को कष्ट न हो। उन क व । काई काई न करना है प त धाजक हर काई बहारा ध चम्बरो का मोकान है और इनके विरुद्ध कहा है। वानो पर काम तक नहा ध ता ।

जमे कोई मम ईश्वर की पूजा बिल्कुन चुपचाप करना प्रष्टा मानते हैं और कोई धन्य धर्मात्मा वडा कर पूजा पा करता ीक मानता है। ई माग से ईश्वर को अपना है तो दूसरा धर्म को अपना है। एक का मय पवित्र को है तो दूसरे का पूव व । किनी न मोम को कसे जाना है तो दूसरे ने उसे उत जाना है।

इस विषय म कहाँ तक कहें हर एक मन ने अपने को दूसरे से पुण्य करने का कोई न कोई ढग निकाला हुआ है। वह किसी हद तक की हो सकते हैं पर वास्तविकता को टीक करने से सहायक नो पर ऐसा नो न हुआ। मनुष्य ने बाह्य धामन्वर को ही सब कुछ मानकर प्रसवित को ली दिया जिससे यह ससार भगनो का कैद बन गया। वम की तो यह धाशा की कि मनुष्य नेक और शुद्ध प्राच गगन करना हो उसके हृदय मे घमड धोर प्रभिमन न हो। एक दूसरे के साथ प्रम का बर्ताव कर शतना के बीज बोने से धोर कमाद करने से सग्न र—यह तो हुआ डोग की वास्तविकता का ध्यान देने से सकड़ी प्रका के बनेड भगे यह तो टीक है कि मनुष्यो ने कुछ न कुछ भेद होना है पर त इस भेद की अधिकना को जमाना शतना कहा है। प्रसूत तो भगनो को मिता है। इसकी प्रभावना से मनुष्य भगनो को उता है। प्रभयितनो तो यह है—

नेकी ही ताकत नही

नो वदी स परहेज कर ।

अपने ऊपर जम करने से

सग्न ईश्वर से डर ।

मनुष्य का यह मुख्य कर्तव्य है कि बागम काम करने वाला ही बने। यदि हमने यह शक्ति न हो तो बुरे काम से दूर रहना तो सामान्य है। यन्त्रीका तो समार के हित धोर क पाग का है। जब मनुष्य अपने स्वभाव को बुराई से हटा कर उसके धाम को जिन से मिग देना है तब उसका वय नेकी करने का स्वभाव हो जाता है। जित की प्रवृत्ति जिनो न किनी धोर नो आवश्यक है। बुराई का मोच व हते ही भलाई का माग आप हो जाता है। जो मनुष्य किसी कसाय बुराई करना है वह धाज नही तो अन्त मुनीवत मे फमना है। अयय से किसी को दु व पहचाना अपने धास को स्वयमेव मुसीबनो मे फसाना है। परमा मा द व नाशक है। अत जो मनुष्य धोर की मुसीबत से बचाता है वह भी अपनी योग्यता के अनुसार प्रयु के इस पुण्य का भागी बन जाता है। दूसरी धोर नही पाता ।

प्रयु स्वतन्त्र है। धत जो कोई किसी को बचन से मुक्त करता है वह मुक्ति पद को पाता और प्रयु के समीप हो जाता है। प्रयु दयालु है। धत जो किसी पर दया करता है वह प्रमत्त प्राण कर कभी नही मरता। हर हाल मे खुश रहना। बुरी बात मुस से कभी न कहना। मुस दु ख के धाघात को गानिपुवक सहना परमे श्वर की धाशा है।

इनके बदले मे स्वास्थ्य प्रमनता धोर सम्मान पाता है। इसलिये मनुष्य बुरे कामों से बचे और भलाई के लिए जाने ब। ससार के किसी मनुष्य को दु व देना किसी बसवान का कर्तव्य नही है। भेरे मित्र। धाप तनिक इस बहुलो पर ध्यान है कि मे मनुष्यो को दुनिया के रास्ते से निकाल कर प्रय से मिलाप की धोर किस प्रकार से जाते हैं। जो मनुष्य को धन्याय से कष्ट पहुचाना है वह प्रयु से दूर हो जाता है। भलाई करना बुराई से परे रहना धोर परहेजगारी का जीवन बिताना पर भेदर को प्राप्त करने का एक विशेष माग है। धोर जिनो को ईमानदार को जो मन्ने धर्मो मे धमब न है दूसरो को कष्ट देने का ध्यान तक नही हो मकना धय एक सच्चा माग है जो प्रयु तक ज पहचता है। स पर चन्ने जला कभी पट कता मही। वह उपाय को प्रय से मिलाप मे सहा यक नो उम पर धावरण करने से कीन कष्ट पाता है ? मनुष्य की मिरावट का मुख्य कारण दूसरो को दु व पहुचाना ही है—

बुराई या भलाई जो है करते। सदा उनका है वसा फल मे भरते ।

मनुष्य बुरे व धने काम के प्रभाव से कभी बच नही सकता। यह नियम व । मज्जन्त धोर बारीक है। स। ससार ईश्वर मे प्रम याग चल रहा है। किसी के पक्ष मफलता चम ही है तो कोई अपने (अशक्ति) को ली मिता रहा है। जिगारनो मे इसकी चोख नही। यह नियम उसे को तसा है। रती भर की नही बवता। मनुष्य पहचो की कुराधो मे जाकर अपने को विपुल चाहे अपने को सार को तार नही

विनाए धोर चाहे धाकाम पर उड जाए। पर इस ससार भर के राज्य मे कोई ऐसी जगह नही जहाँ कर्म अपने परिणाम से पीछा छुड़ा सके। इसलिये विद्वान ने कहा है कि जो मनुष्य धोरी के माय बुराई अथवा भलाई करता है उनका परिणाम लोट कर उसी को प्रभावित करता है। जिसमे मासार्क द व या सुख पैदा होता है धोर यदि प्रला काम फल को दच्छा मे रजिन हो जिस मे विस्वासा बनावट का नगाव हो तो वह (भलाई) कला को मीछ को धोर ले जाना है। इसलिये वर्य की यह धाशा है कि बुरे कामो का त्याग करना ही चाहिए और नेक काय यदि फल की शक्ति रखकर किया जाये तो वह मासार्क सुख देता है। पर यदि भलाई फल की अनिच्छा से की जाए तो उनका फल मोक्ष है। जब मनुष्य को अधिकार है कि जिसर को चाहे अपनी गति बढाए—

सख का फरमान है

मेकी से मारे काम कर ।

मत बदी कर भन से

मग किसी को बदमान कर ।।

जब धास शुभ कामो पर जो सुख का कारणा है उन पर धाजद—शुद्ध मनि सच्चा ज्ञान महनशीलता होतिथारी मत्थना पवित्रा इदिय दमन मनोनिग्रह सुख दु ख की प्रसिद्धता मे निजगना बुरे कामों से अय सत्कर्मो मे निवृत्ता दया, धाराम सतीथ अति दान शुभ कामना वने से परहेज धादि धम्मी मात प्रयु की धोर ले जाती हैं। जिन बुधियो से सब को लाभ धोर ससार मे शान्ति स्थापित हो बही ईश्वर का धाशा है। उनका पालव करना मनुष्य का मुख्य कर्तव्य है धोर जिन मनुष्यो मे ये गुण हो मे देवता कहाते हैं। देवता का कोई विशेष प्रसाद का शरीर मही होता। देवता तो गुणवान को कते हैं।

जिन बुरे कामो से मनुष्य स्वय कष्ट उठाना है धोर धोरी को कष्ट पहुचाना है ये सब कुटो के प्रिय दुष्ट हैं जो निम्नलिखित हैं—

प्रधान बुराई काम, बुधिवार,

(शिव पृष्ठ ११ पर)

## श्रेष्ठ मानव जीवन निर्माण : साधन शील और उसके अंग

नीतिकारों के शब्दों में

शाचार्य दीनानाथ सिद्धान्तालकर



महाभारत आन्तिमपर्व, राजसूय प्रकरण के अध्याय १२२ में दुर्योधन और वृत्रराष्ट्र-पुत्र-पिता का संवाद है जिसमें मोक्षमित्रामह, युधिष्ठिर तथा अन्य कई विद्वान् भी उपस्थित थे। इसका आरम्भ वृत्रराष्ट्र द्वारा पुत्र दुर्योधन की सतपथ ईश्वर कर इस प्रश्न से होता है कि तुम्हारे इस प्रकार सतपथ होने का क्या कारण है जब कि तुम्हारे पास लौकिक सुख समृद्धि क सब साधन उपस्थित है। दुर्योधन स्वभावतः पाण्डवा से बड़ी ईर्ष्या करता था। उसने कहा—युधिष्ठिर के घर में हुआ तो स्नातक स्वर्णपात्रों से भोजन करते हैं जब कि मेरे महानो ने कुछ संक्रांति स्नातक भोजन करने पाते हैं। इसी प्रकार दुर्योधन ने वस्त्र, भवन इत्यादि अन्य कई बड़ बेतन सत्सुखों और पशु पक्षियों का भी जिक्र किया। वृत्रराष्ट्र ने पुनः का ईर्ष्या, द्वेष के त्याग का उपदेश दते हुए कहा—

ह पुनः। यदि तू युधिष्ठिर सदृश सदाका बनव इत्यादि करना चाहता है तब शालवान बन। तब दुर्योधन का यह पुत्रता स्वाभाविक हो या कि यह शाल क्या है? तब वृत्रराष्ट्र ने प्रभावनाकाल का इतिहास सुनाते हुए अपनी एक कथन क प्रमाण से शाल के धर्मों का निम्न बखान किया— धर्मात् (१) धर्म (२) सत्य (३) सदाचार और (४) सत्समा। हे बुद्धिमान्! ये चारो शाल के मूल हैं। इसका आशय व्याख्या करते हुए वृत्रराष्ट्र कहता है—

किसी के भी प्रति मन, वाणी, कर्म से द्राह्म न करना, दया, यशस्वित्व वान, यह शील कहा जाता है। प्राधान्यकाल के नीतिकारों-मर्तुहरि मित्र, चाणक्य इत्यादि ने 'शाल' का कुछ धार्मिक विस्तार से विवेचन किया है। इनके बचनों की हम यहाँ उपस्थित करते हैं।

शीलवान व्यक्ति के गुण—  
मर्तुहरि

मन, बचन और शरीर से सत्कर्म रूपी धर्म से पूर्ण होकर तीनों लोकों की अपने उपकारी से गुप्त करने वाले तथा दूसरों के परमायु सदृश छोटे से गुणों की भी सर्वतः सद्गुण मानकर अपने हृदय में सदा प्रसन्न होने वाले उत्तम शीलवान् पुरुष कितने हैं? विस्तार हो है।

दृष्ट्या का त्याग, क्षमा चारण, मद का त्याग, पाप में प्रीति का त्याग सत्य बोलना, सत्यनों के मानों का धनुस्तरण, विद्वानों की सेवा, पूजनीय व्यक्तियों का आचर, धर्मों के प्रति भी नम्र व्यवहार। अपने गुणों को छिपाना, अपने यश की रक्षा, बुद्धियों के प्रति दया यह सत्गुणों के लक्षण हैं।

शील सर्वश्रेष्ठ सुख है—

बन सम्पत्ति की शोभा सज्जनता, धुरवीरता की शोभा, वाक् सयन, (बड़ बड़ शीघ्र में मारना) ज्ञान की शोभा, शान्ति, विद्या की शोभा नम्रता, मन की शोभा सुपात्र की दान, तप की शोभा, क्रोध न करना, प्रयुक्तों की शोभा, क्षमा और दया का सुख निश्चल व्यवहार है। पर इन सब का मूल शील सदाचार सर्वश्रेष्ठ है।

हिचुरनीति

जो शान्त हुए बैर को नहीं भ्र-काता, न बमरु करता है, अपने की हीन नहीं जाता है 'दुर्दति से पडा है' ऐसा कहकर भयान् नहीं करता भाव उत परम आर्यशील कहते हैं।

अपने सुख में बहुत हर्ष नहीं करता न ही दूसरे के सुख में प्रसन्न होता है। जो देकर परमात्मा नहीं करता, वह सत्पुरुष आर्य शील कहलाता है।

इस ससार में पुरुष का शील ही

चाणक्य नीति

(१) विद्या धन्यास में, परिवार शील से, गुण स धाय और क्रोध नेत्र से पहचाने जाते हैं।

(२) रूप की शोभा गुण से, कल की शोभा शील से, विद्या की शोभा सकलता से और मन की शोभा उसके प्रयोग से होती है।

(३) गुणहीन व्यक्ति का रूप, शील से हीन का कल प्रयोग में न आने से विद्या, और व्यवहार में न से धन का नाश होता है।

(४) जिसके पास विद्या नहीं, तप नहीं, दान नहीं, शील नहीं, गुण और धर्म नहीं ऐसे मनुष्य इस पृथ्वी पर भार रूप में युग के समान लचरते हैं।

इस प्रकार शील के सम्बन्ध में प्राचीन नीतिग्रन्थों में जो विविध-रूप बताये गये हैं, उनका वर्णन करने के बाद वृत्रराष्ट्र अपने पुत्र दुर्योधन को धर्म से कहते हैं—

हे पुत्र! यदि तू युधिष्ठिर से भी विशिष्ट होना चाहता है, तो इस प्रकार जीवन का तत्त्व जानकर शीलवान् बन।

के सी ३७/भी आशोक विहार,  
दिल्ली-५२

## यज्ञोपवीत-महिमा

(एक गीत)

यज्ञोपवीत लेकर बुद्ध को निहारना है।

जीवन सुधारने का सफल चारना है॥

हर भूत की तरफ से मुह अपना फेरना है।

सच्चे श्रुती का पालन करने की श्रेयता है॥

तप त्याग साधना को हर दम उभारना है।

जीवन सुधारने का

गायत्री जाप सन्ध्या स्वाध्याय यज्ञ करना।

दुष्टों की सगति से हरगिज न पाव घटना ॥

मयबान् को कभी न दिल से बिसारना है।

जीवन सुधारने का

समझो ये तीन ऋण हैं ऋण ये तीन धाने।

जब तक हैं श्राव धन से व्यस्त कभी न आने ॥

निष्कपट स्वच्छ सुखर जीवन सुधारना है।

जीवन सुधारने का

पितरों की टहल सेवा देखो की उचित पूजा।

ऋणियों सग जेता कर्तव्य है न डूबा ॥

माता पिता गुरु के ऋण को उतारना है।

जीवन सुधारने का

नेकी के काम करके तत्काल भूल जाना।

निष्काम भाव होकर श्रोतों के काम श्राना ॥

विद्या का सूत्र है यह मन से विचारना है।

जीवन सुधारने का

सुख चित्त धार्यों का यज्ञोपवीत है यह।

सर्व श्रेष्ठ योग पठने ऋणियों की रीत है यह ॥

दुनियाँ में 'पार्थिव' इस के यश की निहारना है।

जीवन सुधारने का

लेखक-पं० सत्यपाल 'पार्थिव'

## यथार्थवाद के परिप्रेक्ष्य में ऋषि दयानन्द का दार्शनिक चिन्तन

ने०—जगदीश भार्य, सिद्धांतरत्न, 'विद्यारद' सासाराम

दयानन्द दय धानु से बना है।  
य का धर्म है देवता। देवता तो  
मो को है—कोट पन्नादि सभी  
सते हैं। पन्ना यहा देवता एन  
वेधेय धर्म है धार्या है। दार्शनिक  
चिन्तन के विवेचनात्मक दृष्टि से  
श्रीवान जयान को देवता ही दर्शन है।

दर्शन के दो मुख्य तत्त्व हैं—ब्रह्मा  
श्रीर दय्य श्रीर दोनों के महशोग से  
बना है दर्शन। यह सारा ब्रह्माण्ड  
दय्य है। ब्रह्मा धार्या है। दर्शन धार्य  
के किसी विशेष विचारधारा से अपने  
को सम्बन्धित रखने वाला व्यक्ति  
दार्शनिक कहा जाता है।

मनुष्य श्रीर दार्शनिकता का  
धृष्ट दयन-सम्बन्ध है। बिना दर्शन  
(Philosophy) के मनुष्य रह ही नहीं  
सकता।

दार्शनिकों को मैं तीन कोटिया  
के निभासित करता हूँ। प्रथम तो  
वे हैं जो टेवल पर बैठकर दर्शन को बात  
करते हैं उनके विचार जीवन से  
कोई मेल नहीं रखते हैं। दूसरे वे हैं  
जो केवल दर्शन के हो विवेचन-  
धार्य का अध्ययन करते हैं। वे अपने  
बन के दार्शनिक विचारों से इन-  
लिग पम्प करते हैं ताकि दूसरे लोग  
उन्हें दार्शनिक समझें। तीसरी कोटि  
वे हैं धार्य हैं जो स्वभावतः दार्शनिक  
होते हैं। उनका चिन्तन यथार्थवाद  
के समन्वित रहता है उनके दार्श-  
निक विचारों से मानवता लाभान्वित  
होना है। ऋषि दयानन्द इसी कोटि  
के दार्शनिक थे।

स्वामी दयानन्द जन्मजात दार्श-  
निक (Born Philosopher) थे। वे  
भाव या काल्पनिक फिलास्फर नहीं  
थे। उन्होंने दयनशास्त्र का किसी  
गुरुकुल या विद्यालय में अध्ययन नहीं  
किया था—उनके जीवन की दो पट-  
तारा ऐसी हैं जो यह प्रमाणित करती  
हैं कि उन्हें मात के दूध की घड़ी के  
साथ ही दर्शन मिला था। पहली  
घटना तो चौदह वर्ष की आयु में  
घटी शिवरात्रि के दिन। पिता जो  
कष्टकर व्यवसाय में श्रीर अपने पुत्र को  
जोबोपायक बनाना चाहते थे। उसे  
शिवरात्रि का व्रत रखने के लिए  
प्रेरित किया। शिव की प्रतीक  
स्वचक्रात्मक कथाओं को सुना कर  
बालक मूलकर (दयानन्द का बच-

पन का नाम) को उत्साहित किया।  
मूल जो के मस्तक में यह व्रता से  
जमा देते हैं कि शिवरात्रि की निष्ठा-  
पूर्वक व्रत रखने वाले भक्तों को शिव  
साक्षात् दर्शन देते हैं। बालक मूल  
भी शिव मन्दिर में रात्रि के समय  
व्रतानुष्ठान में लीन है। तभी एक  
छोटी सी सामान्य घटना घटती है।  
कुछ बूँद शिव से निकलते हैं और  
शिव प्रतिमा पर छलक-झूब बचाते  
हैं। मूलकर इसे देख कर धार्य  
वर्तित हो उठता है। उनके बाल  
मस्तक में भक्तों की बिजलियाँ कीच  
उठती हैं। क्या यह बूँद शिव है जिस  
की प्रतीक कथाओं को मैंने सुना  
है, जो अपने विशुद्ध से धनिक भय-  
कर रासलों को नष्ट करते हैं अपने  
तीसरे नेत्र से बामदेव को मल  
किया है वह अपनी रक्षा इन बूँद  
पूछो से क्यों नहीं कर पा रहा है?  
क्या यह वही शिव है? बालक अपनी  
शकाओं को पिता के समक्ष रखता है।  
पिता जो उत्तर देते हैं उस उत्तर से  
वह सन्तुष्ट नहीं होता है और तब  
भी निम्नता से पिता से कहता है  
कि मैं व्रत नहीं रखूँगा। वह घर  
पहुँचता है और व्रत को तोड़ कर  
भोजन कर लेता है। सच्चे शिव को  
प्राप्त करने का मन में मन्वत्वे लेता  
है उसे मूल पुत्रा से विरहित हो  
जाती है।

शिवरात्रि की घटना से तीन  
बातों का पता लगता है—१ बालक  
मूल की जिज्ञासु शक्ति २ सच्चे शिव  
की प्राप्ति का संकल्प, श्रीर ३ निर्भ-  
यता से अपने विचारों को प्रकट  
करना।

एक दार्शनिक के लिए जिज्ञासु  
होना परत्यावर्ती शर्त है। वेदात का पहला  
सूत्र है—

अथातो ब्रह्मविज्ञाता।

दूसरी बात यह बताती है कि  
उस प्रत्यायु में भी अपने कठोर पिता  
के समक्ष निर्भयता से अपनी शका  
को रखना है। दार्शनिक के लिए  
निर्भयता का गुण धार्यक है ताकि  
वह अपनी विचारधारा को ससार  
के सामने रख सके। तीसरी बात,  
शिव की प्राप्त करने का कठोर व्रत  
का ने-१ है।

दूसरी घटना—पाच वर्षों के बाद

घटती है। बालक मूल अपनी बहन  
और चाचा के मृत्यु-दयों का साक्षात्  
देखता है। उसके बाल-मस्तक में  
इस समय से एक विलक्षण प्रतिक्रिया  
होती है। प्रश्न उठता है मृत्यु क्या  
है? क्या सभी को एक न एक दिन  
मरना है? क्या मृत्यु से बचा नहीं  
जा सकता?

दूसरी घटना से दो प्रश्न उत्पन्न  
हूँ—१ मृत्यु क्या है? २ इस से  
कैसे बचा जा सकता है।

ऋषि दयानन्द का सारा जीवन  
निम्न चार प्रश्नों को सुलझाने में लग  
जाता है—

- १ शिव क्या है?
- २ उसे कैसे प्राप्त किया जाए?
- ३ मृत्यु क्या है? और
- ४ और उससे कैसे बचा जाए?

दर्शनशास्त्र का भी यही मुख्य  
विषय है। उसे प्रमाणित क्या है? किस  
विधि से परमात्मा किया जा सकता  
है? तथा मोक्ष क्या है? और उसकी  
प्राप्ति के क्या साधन हैं?

व्रत स्वामी दयानन्द एक जन्म-  
जात दार्शनिक (Born Philosopher)  
के हसमे कर्तित भी मन्वदेव नहीं।

ऋषि दयानन्द ने दर्शनशास्त्र पर  
कलस से किसी अन्य को रचना नहीं  
की। उनके स्वरचित ग्रन्थों में दार्श-  
निक सूत्र यन्त्र-तन्त्र विवरे हैं। सत्यार्थ  
प्रकाश गृतीय सत्यम धर्म, नवम  
धार्य समुल्लास में प्रसंगवश दार्श-  
निक मन्तव्यों के अध्ययन से पता  
चलता है कि वे उनकोटि के दार्श-  
निक थे। परन्तु कुछ विद्वानों का मत  
है कि उनके स्वकृत किया जा मात  
प्रसंगवश भारतीय दर्शनों के कुछ  
मन्तव्यों के उद्धरण मिलते हैं, वे  
मन्तव्य ऋषि दयानन्द के न हीकर  
उन दर्शनों को भी मन्तव्य कहना  
सुचित मगत है। किन्तु मेरा विचार  
इस विषय से निम्न है। मेरी धार १  
है कि स्वामी जी ने भारतीय दर्शनों  
का बाधार नेकर जिन मन्तव्यों का  
समन्वय किया है, उन्हें 'दयानन्द-  
दर्शन' कहना ही सुचित मगत है।  
धार्य की भाषा में यह कहा जा सकता  
है कि प्राचीन दार्शनिक सिद्धांतों को  
दयानन्द ने एक नवीन शैली, नवीन  
भाषा में सुवोषण करके हम से उसे  
प्रतिपादित किया। 'नवीन कथर के

पुरानी पुस्तक'।

स्वामी दयानन्द महाराज के विविध  
प्रकारों से दार्शनिक तत्त्वों का प्रतिपादन  
किया है। किसी सम्प्रदाय विशेष का  
अनुगमन नहीं किया है। उनके मन्तव्य  
सम्प्रदाय निरपेक्ष तथा समुदाय जीवन  
से सम्बन्ध रखते हैं।

श्री दयानन्द महाराज ने गद्य  
सुभासिक शैली में अपने लघु ग्रन्थों  
में दर्शन तत्त्वों का निरूपण किया  
है। जैसे 'धार्मिक दयन माला' एवं  
स्वमन्तव्यामन्तव्य प्रकाश। इन लघु-  
पुस्तकों में दर्शन के मौलिक तत्त्वों  
का विवेचन प्रस्तुत है। व्रत हम  
नि सकीच कह सकते हैं कि दयानन्द  
एक मौलिक दार्शनिक हैं।

यह बने ही शिव की बात है कि  
धार्मिकसाधन में सत्यात्म रूप में उनके  
निरूपित दार्शनिक मन्तव्यों का कोई  
प्रामाणिक धार्य तैयार नहीं किया  
है। बाष्ठा उसको, विशेष समारोहों  
पर लालो रंग का बजट बनवाता है।  
जो दो-तीन दिनों के तमाशे का नाटक  
क समारोह हो जाता है। इन उत्सवों  
एव समारोहों से किन्चित ही लाभ  
होता है। जितना लाभ होता है उस  
से कहीं अधिक ही हानि होती है।  
काश। इन बजटों का स्वाध्याय भी उन  
के दार्शनिक मन्तव्यों के धार्य से  
लगता तो आज विश्व में दयानन्द,  
दूसरे शकाराध्याय के रूप में समाप्त  
होते। हार्य। हमारी (हमारे विद्वानों)  
की धार्यमन्थता से हमारा कर्त  
कलास का दार्शनिक धार्याय गिरे पड़  
गया है। प्रत्युत।

ऋषि दयानन्द के दर्शन पर  
धार्यकारिक ग्रन्थ बहुत ही प्रत्युत हैं।  
यह प्रयास तो व्यर्थमगत ही है।  
धरणी के दो पुस्तकें बही ही धरणी  
हैं। स्व. पं. गंगाप्रसाद जी उपा-  
ध्याय की Philosophy of Dayan-  
and तथा उनके सुप्रसृत स्व. सत्य-  
प्रकाश जी की A critical study  
of Philosophy of Dayan-  
हिन्दू में उपाध्याय जी की ही एक  
लघु पुस्तक 'शकर रामानुज एवं  
दयानन्द' भी धरणी पुस्तक है। धरणी  
हाल ही में डा० श्रीनिवास शारणी  
जी, श्री दयानन्द पीठ कुल्लुक्षेत्र  
विश्वकोष दयानन्द दर्शन—एक अध्य-  
यन पुस्तक लिखी है। यह पुस्तक  
कई दृष्टियों से धरणी है। श्री देव-  
प्रकाश जी गुप्ता ने भी 'दयानन्द-  
दर्शन' नामक एक पुस्तक लिखी है।  
वे सभी प्रयास व्यर्थमगत हैं—सच्चाई  
यह नहीं। हा, डा० सत्यप्रकाश जी  
को पुस्तक, धार्य प्रतिविम्ब सध  
राजस्थान में प्रकाशित की है।

स्वामी जी के दर्शन के धार्या  
पर पं. उदयश्री जी शारणी के भी

६ दर्शनों का भाष्य प्रकाशित किये हैं, वे भी अनुपम हैं। प० उपाध्याय जो का 'अष्टववाद', 'आकर भाष्यालोचन', 'जीवात्म', 'मै श्रीर मेरा भगवान्' (मूल पुस्तक अनेकों में 'I and my God') एवं भारतीय भाषा में पुस्तक भी दयानन्द दर्शन के सिद्धान्त के आधार पर उपलब्ध है। पर वे सभी पुस्तकें दयानन्द के मौलिक दर्शन के रूप में नहीं हैं। धन्तु।

अब मैं अपने मुख्य विषय पर आता हूँ। स्वामी दयानन्द का दर्शन एक यथार्थवादी दर्शन है (Philosophy free from scepticism and full of hope life and vitality) है, जो जीवन के साथ सहृदय मन्वन्त्र करता है। उनके सभी दार्शनिक मतार्थों को धारण हम यथार्थवादी शक्तिशाली से उपलब्ध कर, तो एक ग्रन्थ बन जायेगा। श्रीर दूसरी बात यह भी है कि भूत, भव, इतनी योग्यता एवं क्षमता भी नहीं है कि इन विषय पर कोई स्वतन्त्र ग्रन्थ लिखे। इस लक्ष्य निम्न में उन के कतिपय दार्शनिक विचारों का अध्ययन प्रस्तुत कर रहा हूँ। मेरा यह लेख एक संकेत मात्र है। धार्मिक-साहित्यिक विद्वानों से मेरा यह नम्र निवेदन है कि वे, 'दयानन्द-दर्शन एवं यथार्थवादी दर्शन' हैं। इस पर एक स्वतन्त्र ग्रन्थ की रचना करे।

### यथार्थवाद से सम्बन्ध

#### मैत्राया का सिद्धान्त—

इस सिद्धान्त में भोक्ता, भोग्य एवं परमात्मा पर विचार प्रस्तुत किया गया है। भोक्ता भोज, भोग्य-वस्तु अजगत् है, तथा परमात्मा इस जगत् का कर्ता-धर्ता और जीवों के कर्म फलों का प्रदाता है।

जड़ जगत् सुख एवं दुःखसम है। स्वामी दयानन्द ने इस सृष्टि को सुख एवं दुःख से मिश्रित माना है। भोक्ता एक युवक कि प्रगल्भात् दुःखमय है। मन्वन्त्र सारास्वत दुःख-स्वल्प। शीत बर्षा को दुःखमय मानकर तथा इसे अक्षिण बतना कर ससार त्यागने का उपदेश देता है।

शांकर-सिद्धान्त के अनुसार यह जगत् मिथ्या है, माया है। एक ब्रह्म ही सत्य है। बत ब्रह्म की श्रान्त के लिए इस मिथ्या एवं माया जगत् को त्यागना ही जीवन का सार सत्य है। मोक्षों एवं शंकर का दार्शनिक सिद्धान्त पलायनवादी सिद्धान्त है। इनके स्थान पर दयानन्द का सिद्धान्त यह प्रतिपादन करता है कि ससार सत्य है पर इसका भोग करना है, संसार से पलायन नहीं

करना है। यह ससार दुःखमय है, इसका निराकरण करते हुए दयानन्द यह प्रतिपादन करते हैं कि ससार केवल दुःखमय नहीं है, सुख और दुःख दोनों कोपेक्षित हैं। बिना दुःख के सुख का भ्रान्त नहीं मिल सकता है।

ससार पूर्ण उपभोग करने के लिए है। 'अष्टि दयानन्द का सिद्धान्त है। परन्तु इसका यह अर्थ कदापि नहीं है कि चार्वाकों की तरह केवल सांसारिक सुखों को ही वांछनीय बतलाया है। वे (स्वामी जी) भोग के साथ समय की भाव्यकता पर ब्रह्मा के साथ जोर देते हैं। यजुर्वेद के इस सिद्धान्त को जीवन में उतारने को कहते हैं। तेन त्यक्तेन जु जीवाः। अर्थात् त्याग के साथ भोग करो।

जीव कर्म करने में स्वतन्त्र है, ऐसा प्रतिपादन कर मनुष्य को कर्म करने की प्रेरणा देते हैं। कर्म स्वातन्त्र्य पर दयानन्द बहुत बल देते हैं। उनको यह धारणा है कि मनुष्य स्वतन्त्र रूप से कर्म करे ही उन्नति के शिखर पर चढ़ सकता है, या पतन की लार् में भी गिर सकता है। मनुष्य अपने कर्मों से ही 'देव', अशुर पिशाच, राक्षस बन जाता है। दयानन्द दर्शन नित्यवादी नहीं है, पुनः धार्मिकवादी है।

जिस प्रकार जीव कर्म करने में स्वतन्त्र है, उसी प्रकार परमात्मा उनके कर्मों को फल देने में भी स्वतन्त्र है। ईश्वरीय अर्थमा में जीवों की स्वतन्त्रता की एक सीमा है। वह क्षीयमान नहीं है। फल भोगने में वह परतब है। परमात्मा स्वभाव से ही न्याय करता है, वह अन्याय कभी नहीं करता। बिना पुण्याधिक्ये वह कुछ नहीं देता। दयानन्द ने स्पष्ट कहा है कि केवल प्रार्थना करने से कुछ नहीं मिल सकता। प्रार्थना के साथ पुण्याधिक्य आवश्यक है। सत्यार्थ-प्रकाश में लिखते हैं— अपने पुण्याधिक्य के उपरान्त प्रार्थना करना चाहिए। जो परमेश्वर के भरोसे बालसी होकर बैठे रहते हैं, वे महामूर्ख हैं। क्योंकि जो परमेश्वर की आज्ञा है, उसको तोड़कर सुख कभी नहीं प्राप्त करता।<sup>17</sup>

मुक्ति, उसका स्वरूप और उसके प्राप्तिके साधन—

'अष्टि दयानन्द ने इस विषय पर सत्यार्थप्रकाश और अ० बा० भूमिका में विस्तृत रूप से विचार प्रस्तुत किया है। उन्होंने यह प्रतिपादन किया है कि जीव स्वभावतः पवित्र है, परन्तु ससार में आकर प्रज्ञान

एव धर्मात्मा में फलकर बन्धन में पड़ जाता है। 'बन्ध' एवं 'भोग' का स्वरूप बताते हुए कहते हैं—

'बन्ध-सन्निवर्तक अर्थात् धर्मात्मा निमित्त से है। जो जो पाप कर्म ईश्वर विमोचनाना प्रज्ञानादि सब दुःख फल करने वाले हैं, इमीलिए यह बन्धन है, जिसकी इच्छा नहीं और भोगना पड़ता है।'

मुक्ति—'अर्थात् सब दुःखों से छुटकर बन्धन रहित सर्वव्यापक ईश्वर और उसकी सृष्टि में स्वेच्छा से विचरना, नियत समय पर्यन्त मुक्ति का भ्रान्त भोगकर पुनः ससार में जाना।'

मुक्ति के साधन— ईश्वरप्राप्तना धर्मात्मा योगाभ्यास धर्मोपश्रान्त, ब्रह्मचर्य से विद्या प्राप्ति, ध्यानादि विद्या का सत्य, सत्य विद्या, सुविचार और पुण्याधिक्य।

'धार्मादिव्यवस्थाना' में भी यही व्याख्यात है।

अष्टि दयानन्द के समय मुक्ति और उसकी प्राप्ति के सम्बन्ध में बड़ा ही भ्रम फैला था। मुक्ति का अर्थ कुछ लोगों के मतानुसार जीव का ब्रह्म ही जाना तथा परमात्मा से मिल जाना अर्थात् उसका 'सत्य' हो जाना था। उसकी प्राप्ति का साधन केवल रामकृष्ण का नाम जपना तथा यात्रा प्राप्ति नदियों में स्नानादि माना जाता था। धर्मशास्त्रा और मुक्ति (मक्ति) दोनों का सम्बन्ध था। इन विचारधारणों के प्रबलक कीई सामान्य मन नहीं थे। बल्कि अपने भ्रम के महान् दार्शनिक विद्वान् धार्माधिक्य शंकर, रामानुज, माध्व, निम्बार्क एवं बल्लभ के। अष्टि दयानन्द ने इन प्रवाहों को उलट दिया। कर्मण्याता को मोक्ष से जोड़कर उसे यथार्थवादी बनाया। यह भी सत्य है कि धात्र को मुक्ति की गलत परिभाषा से लोग पिछे हैं, किन्तु स्वामी जी को विचारधारणा का भी प्रभाव कम नहीं पड़ा है। दयानन्द ने साम्य दर्शन के अनुसार दुःखों से छुटने का उपाय बतना ही पुण्याधिक्य बताया और इसी का फल मुक्ति है, ऐसा प्रतिपादन किया।<sup>18</sup> दुःख तीन प्रकार के हैं।

(क) धार्मात्मिक—अर्थात् शरीर सम्बन्धी पीडा जैसे अवर्यादि। (ख) धार्मिभौतिक—दूसरे प्राणियों से दुःख होना। जैसे सर्पवि तथा चोर शत्रुओं से प्रताडित होना।

(ग) धार्मिदैविक—प्राकृतिक बटनार्थों से जैसे भूकम्प, बाढ़, सूखा, मोलों की वृष्टि, साहसकोषादि।

स्वामी जी ने दुःखों का क्लासिफिकेशन (वर्गीकरण) किया है। क्रम स० (क) शरीर (ख) के द्वारा जो दुःख मिलते हैं, उनको रोकथाम करना, मानव के वश में है। क्रम स० (ग) को रोकथाम हमारे हाथ में नहीं है। जो कि धात्र का विज्ञान भी इन्हें रोकथाम करने का व्यास तो करता है, फिर भी वे हमारे वश में नहीं रहते।

#### मोक्ष से पुनरावर्तन—

स्वामी दयानन्द मुक्ति को भ्रान्त नहीं मानते। उनका यह सिद्धान्त है कि मुक्ति में मूल भोगने के पश्चात् जीव पुनः ससार में लौटता है, यह प्रतिपादन विस्तृत नहीं सा लगता है। अष्टि दयानन्द का मूल विषयक यह सिद्धान्त एक हासिकी विचार है। भारतीय चिन्तकों को यह सर्वमाध्य मान्यता रही है कि मोक्ष के बाद जीव पुनः शरीर धारण नहीं करता है। धर्मनी इस धारणा को वे शास्त्रोपापनिषद् ब्रह्म सूत्र, एव गीता<sup>19</sup> के प्रमाणों से पुष्ट करते हैं।

दयानन्द अपने सिद्धान्त के प्रतिपादन में अष्टि<sup>20</sup> के मनो की, साह<sup>21</sup> की धूर्तों के प्रस्तुत करते हैं। मुक्ति और लक्ष्य से भी अनेक मत की पुष्टि करते हैं। वे निम्न तर्क प्रस्तुत करते हैं—

१ जीव के साधन परिमित हैं, बत उनका फल भ्रान्त कैसे हो सकता है।

२ यदि मुक्त जीव मोक्ष से पुनः न लौटे तो एक दिन ऐसा धारणा कि ससार से जीव का उच्छेद हो जायेगा।

३ दुःख के बिना सुख का अस्तु-मव नहीं हो सकता। मुक्ति का धार्मिकता यही है कि जीव दुःख के बाद सुख और सुख के बाद दुःख को अनुभूति प्राप्त करे।

४ परमात्मा न्यायकारी है, धर्म होने वाले कर्मों का फल भ्रान्त नहीं हो सकता। स्वामी जी ने पुनरावर्तन के सिद्धान्त का प्रतिपादन कर इस विचार को यथार्थ जीवन से जोड़ा है।

#### दर्शनों का सम्बन्ध—

भारतीय एवं पाश्चात्य दार्शनिकों का यह मत रहा है कि भारतीय षडर्शनों में परस्पर विरोध है। स्वा० दयानन्द प्रथम दार्शनिक हैं, जिन्होंने मुक्ति, तर्क एवं शालों के प्रमाणों से सिद्ध किया है कि षडर्शनों में विरोध नहीं है। दार्शनिकों की यह धर्मनी कल्पना है, मनषडन्त सिद्धान्त है।

स्वामी जी ने षड्वन्धनी में ध्वनि रोष कैसे माना है तो उन्हीं के शब्दों में दे रहा हूँ।

जैसे एक विद्या में अनेक विद्याओं के अवयवों का एक दूसरे से भिन्न प्रतिपादन होता है, वैसे ही सृष्टि विद्या के भिन्न भिन्न अवयवों का शास्त्रों में प्रतिपादन करने से इनमें कुछ भी विरोध नहीं है।<sup>14</sup> इस विषय पर सप्र० के नृत्तीय एवं अष्टम सम० में विस्तृत रूप से विवेचन किया गया है। ऋषि दयानन्द का यह प्रतिपादन बहुत ही चमत्कारिक है।

इस सम्बन्ध में वर्तमान समय के प्रसिद्ध दार्शनिक स्व० डा० राधा-कृष्णन के मत का भी प्रयत्नजनक पाठक कर। मैं इसे उद्धृत करने का लोभ सवरण नहीं कर सकता। वे लिखते हैं—

The six systems agree on a certain essentials. The acceptance of the Veda implies that all the systems have drawn from a common reservoir of thought. All the systems protest against the scepticism of the Buddhists and erect a standard of objective reality and truth as opposed to an eternal unstable flux. All the systems accept the view of the great world rhythm vast periods of creation maintenance and dissolution follows each other in endless succession.<sup>14</sup>

**ईश्वर, जीव एवं अकृति—**

ईश्वर—सभी आस्तिक दार्शनिकों ने ईश्वर की सत्ता में विश्वास प्रकट किया है। भगवत् मतमें है तो उसके मूल-कर्म एवं स्वभाव के प्रतिपादन में। ईश्वर के स्वभाव का प्रतिपादन जोश्वर ने सीधा सम्पूर्ण रखा है। कहे सुनि—

नास्तिकता—जो लोग ईश्वर को सर्वव्यापक मानते हुए भी, किसी एक विशिष्ट स्थान में निवास मानते हैं।<sup>15</sup> जैसे वेणुष्ठ लोक, शीतसागर, कैलाश पर्वत, सातवाँ आसमान आदि तथा ईश्वर अपने भक्तों का प्रयास समा करता है यन्त्र की स्थानाओं के लिए मनुष्य रूप में जन्म लेता है इत्यादि, वे सिद्धान्त मनुष्य को पाप करने से नहा रोक सकते। क्योंकि वह यह समझता है कि परमात्मा तो ऐसे स्थान स्थान पर निवास करता है, मैंने उपराधों को नहीं देख रहा है। भगवत् मत करता है भी तो भी उसकी स्तुति, आर्चना करने प० वह

मुझे क्षमा कर देगा। यह भावना भगवत् को ब्रह्मा देती है। जब जब धर्म बढ़ता है, ईश्वर भगवत् ग्रहण करेगा और धर्म की स्थापना करेगा। धर्म की स्थापना और धर्म का उच्छेदन मानव बस की बात नहीं है। यह भावना धर्ममत्तता फैलाती है। इसे ही नास्तिकवाद कहते हैं।

आस्तिकता—आस्तिकवाद का जीवन की यथार्थता से गहरा सम्बन्ध है। एक भौतिकवादी (भनोस्वरवादी) की जीवन पद्धति और एक अध्यात्मवादी (ईश्वरवादी) की जीवन पद्धति में बहुत बड़ा अन्तर है। भौतिकवादी का लक्ष्य भौतिक प्राप्त करना है। चाहे वह किसी भी ढंग से मिले यन्त्र उसने जीवन का मोटो है।

“अथ कृत्वा मृत पिबेत्—अध्यात्मवादी का लक्ष्य सुखमेव पुनर्जन्म। जो वह मानते हैं कि मैं केवल शरीर हूँ। मेरा यह प्रपञ्च और अन्तिम शरीर है। वह शरीर के अतिरिक्त कुछ और सोच ही नहीं सकता। समाजशास्त्रियों ने इस भावना की मज्जा करने के लिए विविध उपान्युसंग हैं। परन्तु चतुर बालक मनुष्य इन उपान्यों से बचने का भी रास्ता निकाल ही लेता है।

यह भावने अध्यात्मवादियों के जीवन पद्धति का निरीक्षण कर। ईश्वरवादी का सिद्धान्त है—

“निश्चयम् चक्षुषा सर्वाणि भूतानि समीक्ष—मैं सब प्राणियों को निज का दृष्टि से देखू। ‘सर्व-वेदा मत्सर्वमामन्ति तेषां सर्वानि च यद्वन्ति यद्विच्छन्ति ब्रह्मार्थं चरन्ति तत् पद सर्वेणैव ब्रवीमि’—ब्रह्मन् जिस पद का सभी वेद बर्णन करते हैं, जिसके लिए सब तप आदि वह विस्मय जाते हैं, जिसकी इच्छा है ही ब्रह्माणां, ब्रह्मार्थ का पालन करता है, यही ईश्वर है। सभी भूत-प्राणियों को निज की दृष्टि से देखने वाला आस्तिक किसी से घृणा द्वेष नहीं करेगा—ईश्वर प्राप्ति के लिए वह ब्रह्मचर्य का पालन करेगा। जिसका भावना ईश्वर प्राप्ति नहीं है, वह ब्रह्मचर्य का भारण क्यों करेगा। उसके लिए तो लज्जाओं का आश्रित ही परम पुनर्जन्म है।

**क्रमस**

**पाद विपर्यया—**

- १ सुखेन्द ४०।१
- २ सत्यव्याप्त्यतय प्रकाश (सिं स्थानी दयानन्द)
- ३ सत्यार्थप्रकाश सत्यम सु०
- ४ स्वतन्त्रव्याप्त्यतय प्रकाश मत्तय स ११, १२, १३

## दिल्ली आय प्रतिनिधि सभा के उपदेशकों के कार्यक्रम महात्मा रामकिशोर वैद्य के कार्यक्रम

१४ से १६ जनवरी ८३  
२० से २२ जनवरी ८३

रामायण की कथा  
यज्ञ-प्रवचन प्रातः

आनन्द निकेतन दिल्ली  
वी० खानवन्ध जी

२८ से ३१ जनवरी ८३  
१ से ३ नवम्बर ८३  
११ से १७ नवम्बर ८३  
२१ से २७ नवम्बर ८३

निवास श्री ४/३ कृष्ण नगर दिल्ली  
धर्मसमाज प्रयाग नगर दिल्ली  
धर्मसमाज भगवत् कालोनी दिल्ली  
आयसमाज शालीमार बाग दिल्ली

यज्ञ-प्रवचन  
श्री राधकृष्ण मुखर्जी के निवास  
स्थान एक २६१ १ रघुबरपुरा न० २ दिल्ली

## आचार्य हरिदेव सिद्धान्त भूषण तर्क केसरी के कार्यक्रम

२४, २६, २७ जनवरी ८३  
२८ व २९ जनवरी ८३  
१, २, ३ नवम्बर ८३  
४ से १० नवम्बर ८३

प्रवचन, रात्रि  
धर्मसमाज कलाह नगर पलवल  
धर्मसमाज बरहारा पुर दिल्ली

सोनील (हरियाणा)  
पवित्र विहार दिल्ली  
धर्मसमाज कलाह नगर पलवल  
धर्मसमाज बरहारा पुर दिल्ली

## दोलकवादी श्री ज्योति प्रसाद आर्य के कार्यक्रम

१४ व १५ जनवरी ८३  
१६, १७, १८ जनवरी ८३  
२८ से ३ नवम्बर ८३  
४ से १० नवम्बर ८३

धाम प्रचार  
धर्मसमाज प्रयाग नगर दिल्ली  
धर्मसमाज बरहारा पुर दिल्ली

वेद सत्त्वान राजौरी गार्डन  
प्रधान विहार दिल्ली  
धर्मसमाज प्रयाग नगर दिल्ली  
धर्मसमाज बरहारा पुर दिल्ली

## पं० सत्यदेव स्नातक रेडियो इन्द्रधन कलाकार के कार्यक्रम

१४ व १५ जनवरी ८३  
१६, १७, १८ जनवरी ८३  
२८ से ३ नवम्बर ८३  
४ से १० नवम्बर ८३

धाम प्रचार  
धर्मसमाज प्रयाग नगर दिल्ली  
धर्मसमाज बरहारा पुर दिल्ली  
धर्मसमाज बरहारा पुर दिल्ली

वेद सत्त्वान राजौरी गार्डन  
प्रधान विहार दिल्ली  
धर्मसमाज प्रयाग नगर दिल्ली  
धर्मसमाज बरहारा पुर दिल्ली

## पं० सत्यदेव स्नातक रेडियो इन्द्रधन कलाकार के कार्यक्रम

१४ व १५ जनवरी ८३  
१६, १७, १८ जनवरी ८३  
२८ से ३ नवम्बर ८३  
४ से १० नवम्बर ८३

धाम प्रचार  
धर्मसमाज प्रयाग नगर दिल्ली  
धर्मसमाज बरहारा पुर दिल्ली  
धर्मसमाज बरहारा पुर दिल्ली

वेद सत्त्वान राजौरी गार्डन  
प्रधान विहार दिल्ली  
धर्मसमाज प्रयाग नगर दिल्ली  
धर्मसमाज बरहारा पुर दिल्ली

## पं० वेदव्यास भजनोपदेशक के कार्यक्रम

१४ से १६ जनवरी ८३  
२४, २५, २६ जनवरी ८३  
२८ से ३ नवम्बर ८३  
१ से १० नवम्बर ८३  
११ से १७ नवम्बर ८३

धर्मसमाज साकेत दिल्ली  
वैदिक प्रचार समिति सोनीपत  
धर्मसमाज लाजपत नगर  
धर्मसमाज भगवत् कालोनी दिल्ली

धर्मसमाज साकेत दिल्ली  
वैदिक प्रचार समिति सोनीपत  
धर्मसमाज लाजपत नगर  
धर्मसमाज भगवत् कालोनी दिल्ली

## पं० चुन्नीलाल भजनोपदेशक के कार्यक्रम

१४ से २३ जनवरी ८३  
२४ से २६ जनवरी ८३  
२८ व २९ जनवरी ८३  
१, २, ३ नवम्बर ८३

धर्मसमाज साकेत दिल्ली  
वैदिक प्रचार समिति सोनीपत  
धर्मसमाज लाजपत नगर  
धर्मसमाज भगवत् कालोनी दिल्ली

धर्मसमाज साकेत दिल्ली  
वैदिक प्रचार समिति सोनीपत  
धर्मसमाज लाजपत नगर  
धर्मसमाज भगवत् कालोनी दिल्ली

## ५. धर्मसमाज साकेत दिल्ली

व्याख्यात रत्न स० २५।३०  
६ साध्यवर्णन—“अथ विविच  
तु साध्यनिवृत्तिरूपतयुद्धाचार्य।”  
स० १५।१  
(आध्यकार स्वा० ब्रह्ममुनि परि-  
भाषक, प्रकाशक—आर्य स० म०  
१०। धर्ममेर)

७. स० ३०।१ सत्यु० ६ पृष्ठ ३८०  
(५० रामनाथ कपूर ट्रस्ट)  
८ छात्रोपनि—न व युवरा-  
बर्णने ८।१५।१

११. स० १०।१ स० २४ म० १-२  
१२. स० १०।१ स० २४ म० १-२  
१३. स० १०।१ स० २४ म० १-२  
१४. स० १०।१ स० २४ म० १-२

## ६. वेदव्यास भजनोपदेशक के कार्यक्रम

१. वेदव्यास भजनोपदेशक के कार्यक्रम  
२. वेदव्यास भजनोपदेशक के कार्यक्रम  
३. वेदव्यास भजनोपदेशक के कार्यक्रम  
४. वेदव्यास भजनोपदेशक के कार्यक्रम

११. स० १०।१ स० २४ म० १-२  
१२. स० १०।१ स० २४ म० १-२  
१३. स० १०।१ स० २४ म० १-२  
१४. स० १०।१ स० २४ म० १-२

११. स० १०।१ स० २४ म० १-२  
१२. स० १०।१ स० २४ म० १-२  
१३. स० १०।१ स० २४ म० १-२  
१४. स० १०।१ स० २४ म० १-२

## ७. वेदव्यास भजनोपदेशक के कार्यक्रम

१. वेदव्यास भजनोपदेशक के कार्यक्रम  
२. वेदव्यास भजनोपदेशक के कार्यक्रम  
३. वेदव्यास भजनोपदेशक के कार्यक्रम  
४. वेदव्यास भजनोपदेशक के कार्यक्रम

११. स० १०।१ स० २४ म० १-२  
१२. स० १०।१ स० २४ म० १-२  
१३. स० १०।१ स० २४ म० १-२  
१४. स० १०।१ स० २४ म० १-२

११. स० १०।१ स० २४ म० १-२  
१२. स० १०।१ स० २४ म० १-२  
१३. स० १०।१ स० २४ म० १-२  
१४. स० १०।१ स० २४ म० १-२





## समाचार सन्देश

साप्ताहिक सस्तगों का विवरण

रविवार २० अक्टूबर १९८५

ग्रन्था मुगल प्रताप नगर—५०  
मुलसीराम धार्यायदेशक प्रक्षोक  
नगर—स्वामी यजानन्द सरस्वती,  
भरमर कालोनी—डा० रघुनन्दनसिंह,  
ग्रान्धन विहार एल ब्याक—महात्मा  
देवेशशिव, हनुपुरी श्रीमती प्रकाश-  
वती शास्त्री किम्वये कथ—५०  
बर्षोंमें शास्त्री विद्यावाचस्पति,  
मुगलखाला टाउन पाठ—२—श्रीध-  
रत शास्त्री, घटर कलाश न—१—  
डा० मु दयाल भूदानी गुडमण्डी—  
स्वामी प्रधानन्द मरस्वती गोविन्द-  
पुर—५० मुनिदेव भजनोपदेशक,  
बुनामण्डी पहाडगज—५० कामेश्वर  
शास्त्री, जनपुरी बो—२—५० देव-  
राज बधिक मिश्रनरी, जगपुरी  
विस्तार—डा० कृष्णवत्त शर्मा,  
टीपौर गार्डन—५० प्रक्षोक कुमाय  
शास्त्री, तिसारपुर—धार्मिकीर गज-  
जीतमिह राणा, तिलक नगर—५०  
ब्रह्मप्रकाश वागीश, देवनगर—डा०  
सुभाषचन्द्र शास्त्री, दरिया गज—  
५० प्रक्षिण्य व्याकरणाचार्य, श्री  
निवासपुरी—५० राधस्वाम शर्मा,  
नारायण विहार— ५० रामवीर

शास्त्री, प्रीतमपुरा—५० सोमदेव  
शास्त्री, प्रसात विहार— ५० मनुदेव  
शास्त्री, एजाकी बाग—५ रमेशचन्द्र  
वेदाचार्य, बरई दारा पुष—श्री धर्मा-  
चन्द्र मतकाना, भोगल—डा० वेद-  
प्रकाश महेष्वरी, मोहलवस्ती—  
५०, मुरारीलाल बेचन महावीर  
नगर— ब्रह्मप्रकाश शास्त्री, राणा  
प्रताप बाग— श्री भरमराज कान्त,  
रघुवरपुरा—५० जय, भगवान मण्डली,  
राजौरी गार्डन—५० हरिश्चन्द्र  
धार्यायदेशक, रमेश नगर— श्री नेत्र-  
पाल धार्य सखीनारी नगर— ५०  
१२०८५ वेदप्रकाश शास्त्री,  
सोहनगज—महात्मा मुनिचक्र वान-  
रस्वी, शादी सामपुरा—५० बलवीर  
सिंह शास्त्री शालीमार बाग—  
स्वामी जगदीश्वरानन्द मरस्वती,  
प्रदिशकर—धार्मिकीर गज— मा० मोहन  
लाल गांधी, मोतीबाग— ब्रह्मचारी  
वेदप्रकाश धार्य ।

व्यवस्थापक  
स्वामी स्वचरानन्द सरस्वती  
अभिछाता वेदप्रचार विभाग  
दिल्ली सभा

आयसमाज पंसा राड "सी ब्लक" जनक पुरा,  
नई दिल्ली-५८ में वेद प्रचार सप्ताह

धार्मिक समाज मन्दिर के प्रागय  
में उपस्थित जनमगूह के सम्मुख  
धार्मिक विद्वानों ने अपने श्रोतस्वी  
विचारप्रकट करते हुए कहा—

आज देश की स्थिति गम्भीर है—  
अलगाववाद के नारे हैं। मनुष्य—  
मनुष्य का प्रागधानक वन रहा है  
ऐसे समय में हमें भी सतक रहकर  
अपने कर्तव्य कर्म का पालन करते हुए  
राष्ट्रहित में धार्मिक बढना होगा। आज  
गोवाल, जहा पर कभी गुरु गोविन्द  
सिंह जी तथा स्वामी दयानन्द अद्वान-  
न्द, महात्मा सुभान्ध कौर लेव-  
राम ने हमें श्रीर सोहाय का वाता-  
वरण बनाया था और जगह जगह  
धार्मिक स्कूलों, डी० ए०वी० स्कूलों—  
कावेजों की नीव रखी थी— उसका  
स्वल्प विकृति हो रहा है। ऐसे समय  
में एक एक जुट होकर महान्धियों  
की प्रेरणा को लेकर धार्मिक बढना  
है। बिष्टनकारी तत्त्वों को  
समाप्त करने के लिए योगिराज श्री

कृष्ण और मर्यादा पुरुषोत्तम राज के  
जीवन से प्रेरणा प्राप्य कर जो हमारे  
धार्मिक महान्ध पुरुष हैं। उन्होंने डी०  
ए० वी० शिखर एवम्वाओं को प्रगति  
का मूल्यांकन भी उपस्थित जनमगूह  
को कराया ।

इस समारोह के अन्य प्रमुख  
वक्ता थे—स्वामी मुनाचरानन्द जी,  
श्री दरबारी लाल जी, डा० राधा-  
कृष्ण ठाकुर, महाल, धार्मिक एवं  
सामाजिक प्रगतिज्ञ जनकपुरी, श्री  
शिवकुमार शास्त्री (विकास पुरी),  
श्रीर विराट सुभुज श्री शिवकुमार  
श्री यह कार्य बडे उत्साह एवं हर्ष  
भरे वातावरण में ७ सितम्बर को  
सम्पन्न हुआ ।

(वेद महेन्द्रपाल सिंह धार्य)

मनी

१९८५ ई० के वर्ष में दयानन्द अनुसंधान पीठ  
पंजाब विश्वविद्यालय से पी०एच०डी० उपाधि  
प्राप्त विद्वान्

डा० वेदपाल वर्णी

धार्यने छतपथ बाह्यए तथा  
महर्षि दयानन्द के यजुर्वेद भाष्य का  
तुलनात्मक अध्ययन प्रस्तुत कर  
१९८५ में पी० एच० डी० की उपाधि  
प्राप्त की है। विद्वान् शोधकर्ता ने  
संस्कृत में प्रस्तुत किये गये धार्यने बीच  
प्रबन्ध में छतपथ की वेदाधी प्रक्रिया  
का विस्तार पूर्वक उद्घापीह कर  
महर्षि भाष्य से उसका समायोजन  
किया है। इसी प्रयत्न में वैदिक यज्ञों  
का स्वम्प, यजुर्वेद का प्रतिपाद  
धार्मिक नाना विषयों की गम्भीर विवे-  
चना शोधकर्ता ने की है। डा० वर्णी  
ने धार्यने भावी शोधकार्य के रूप में  
छतपथ बाह्यए की विस्तृत ऐतिहा-  
सिक समीक्षा की है जुना है ।

डा० राजपाल सिंह

भारतीय बहर्षधर्शन का धार्म-  
समाज की देव पर डा० राजपाल  
सिंह की इसी वर्ष उपाधि प्रदान की  
गई है। डा० सिंह ने धार्मिकसमाज के  
दार्शनिक विद्वानों के कृतित्व का  
ऐतिहासिक विवेचन प्रस्तुत किया  
है।

डा० धर्मदेव शर्मा

धार्यका शोध का विषय स्वामी  
दयानन्द रचित संस्कारविधि का

गुह्यसूत्रों से तुलनात्मक अध्ययन  
था। इस विषय के सदर्थ में शोध-  
कर्ता ने विभिन्न गुह्यसूत्रों का  
अध्ययन कर संस्कारविधि प्रोक्त  
संस्कारों के विधि विधान से उनकी  
तुलनात्मक समीक्षा प्रस्तुत की है।

पंजाब विश्वविद्यालय में डा०  
श्रीमती शास्त्री की प्रेमचन्द  
परवर्ती शिष्टी उपन्यासकारों पर  
धार्मिकसमाज की विचारधारा का  
प्रभाव शोधक शोध काय पर १९८५  
ई० में पी० एच० डी० उपाधि प्राप्ति  
की है।

दयानन्द अनुसंधान पीठ  
के प्रध्यक्ष डा० भवानीलाल भारतीय  
के निदेशन में सम्पन्न उक्त शोध  
कार्यों के अति क्त सम्प्रति स्वामी  
दयानन्द के यजुर्वेद भाष्य में वेदा  
तत्त्व, स्वामी दयानन्द की मनुक्त  
व्याकरण शास्त्र की देव, पुनर्वा-  
गरण धार्यनो की दार्शनिक  
गुह्यसूत्र धार्मिक विषयों पर भी शोध  
कार्य किये जा रहे हैं।

वेदपाल

कालिय सचिव

दयानन्द अनुसंधान पीठ, बड़ीगड

कन्याओं को वेदाचार्य बनाने के लिए  
कन्या वेदगुरुकुलम् बरेली में कन्याओं को प्रविष्ट कराइए  
तीन सौ व्यक्तियों ने  
यज्ञोपवीत अग्रण किये ।

धार्मिकसमाज दासदेव गज  
(पलासु) बिहार में स्वामी अंगनल  
वैदिक यति की धार्मिकता में वेद  
प्रचार का कार्य सम्पन्न हुआ ।  
यजुर्वेदीय यज्ञ में हजारों लोगों ने  
अग्रणी प्रदान की। इस घरसरपर  
तीन सौ लोगों ने यज्ञोपवीत अग्रण  
किये ।

निवेदक  
वेद महेन्द्र

वेदाचार्य  
सावित्री देवी शर्मा एम ए

वेदाचार्य  
श्रीमती देवी शास्त्री एम ए.  
(मुक्याविष्टापीठ)  
(धारावती)

वेदमन्थिर १०३ बाजार मोतीलाल  
बरेली (२० प्र०)

निवेदक  
वेदाचार्य, धार्मिक विषयभाष्य  
एम ए. (धारावत्)

## बड़ें बड़ों का सम्मान करो !

जिस राष्ट्र देश और नृमान के व्यक्ति अपने पूर्वजों, बड़ों का श्रद्धांजन मान करते हैं उनके महान और श्रेष्ठ कार्यों से प्रेरणा लेते हैं तथा पुष्टि प्राप्त करते हैं वे सदा श्री, सम्मानता और श्रेष्ठ के स्वामी होते हैं तथा सभी के बीच बड़ा और कीर्ति के भी भागी होते हैं। 'प्रतिवादन श्रोत्रम्य ित्य बुद्धिप्रेमिण'। ज्वारि तस्य वक्षे ते धामुविद्या यशोवन्म । जा व्यतिन बड़ लोगों की सेवा करते हैं और पात्रावदान शोस हैं उनको अनु विद्या यश और बल बढ़ते हैं।

आज की सभ्यता की प्रगति है। परिवारों के विघटन के कारण बड़ लोगों को बड़ा सम्मान नहीं मिलता जो उन्हें पम्परा से मिलता था था है। वे कवन सुबह दूध लाते या शाम की पार्क में टहलने तक ही रह गये हैं। बड़ लोगों को बंधन था था सहा-नुमति को अपना सम्मान की प्राप्ति बकता है। जगह में हम प्राधान्य को जगह करने के लिए दिल्ली में एक स्वयं सेवी सभा कार्यरत है—ऐज केयर इण्डिया ए ७७ साउथ एक्स-टेशन पार्क II 4 ई दिल्ली-४८

हमो सभ्यता के सदस्यों से जाकिर हुएन कालेज काथ के एन एस एस के स्वयं सेवकों ने भी के दल कालोनी और प्रलोमज कालोनी में बड़ लोगों का स्थिति का सर्वेक्षण किया। स सन् १९८० युवा वर्ष में इन छात्रों का दावा है कि जिन बड़ लोगों को इन्होंने सूची बनाई

### कर्मकांड

(पृष्ठ ४४ भाग)

कुर्कम बुरी नीयन बरे स्वयं दलान, दुर्कम कराना स्वायंता आत्म-बनाया भीरुता सु-ती नवताचीनी ध्वयं क्रोध बर्मानता धर्मगुरु धर्मोय इच्छा रोम तृष्णा बेहदा कौनना धनधनना, बरा स्वभाव बरे सग में प्रीति स-मार्ग में स्वावट—कहा तक कहें—विद्याभ्यास में तुला ध्यानाता और दुर्कमों में प्रवृत्ति उस का धावश हो जाता है। जैतान कोई विशेष प्रसार का बेहदारी नहीं। जिसमें यह बरा यौही वह मनुष्य, शीतान है।

इन लोगों में से बहुत से एक जैसे धीरे एक ही धर्म रखने वाले जान पड़ते हैं पर ऐसा नहीं है उनमें थोड़ा-थोड़ा भेद है। जैसे तृष्णा व लोभ दोनों सदान दीखते हैं पर उनके धर्म में थोड़ा भेद अवश्य है ऐसा ही सब जगह जान लें। ये सब बुरी श्रावत किसी मनुष्य में एक ही समय प्रकट नहीं होती। समय प्राप्ति पर अपने

हैं उनको वाञ्छित सहायता में आन ऐज केयर के माध्यम से और धर्म्य सस्था का माध्यम से उपलब्ध कराये। व युन एक महाना बाद तथा ऐस ही अन्य अनुराल पर इस कालोनी में धर्मधार देखते रहेगे कि उन्हें महाना दो है गई था नहीं। इन छात्रों को बड़ों का सेवा करते समय प्रावीशद मिले हैं और लोगों ने इनके लम्बे जीवन के लिए दुआ की है।

इस सम्बन्ध में सविचार १२ धर्मतुजर को प्राथोचित सर्वेक्षण मूल्यांकन समारोह में श्री धर्षीक जन महानगर पार्षद ने रहा कि छात्रों में ऐसी भावना उपपन्न करने की जरूरत है कि वे अपने बड़ों का सम्मान करें। मुख्य अधिभाषण में श्री महर्षि ने कहा कि हम ऐसी पीढ़ी तैयार कर जो बड़ों का सम्मान करे। फिर हमें ऐज केयर जैसी सस्था की जरूरत है। रहेंगी। इस धर्मवर पर दिल्ली विश्वविद्यालय की डा० ऊषा बनर्जी और ऐजकेयर के श्री एन डी जैन ने बड़ों की सेवा की आवश्यकता पर प्रकाश डाला। ऐज-केयर के अध्यक्ष श्री एन डी जैन ने कहा कि युवा लोगों में ऐसी भावना उत्पन्न करने की आवश्यकता है कि अपने बड़ों का सम्मान कर। समारोह के प्राथोजक डा० चमपाल धार्य ने कहा कि हमने इन युवा छात्रों को इस कार्य से प्रेरित जो जगह कि वे अपने घर में बड़ों बुरों का सम्मान करना सीख।

बल को बढ़ाती है। एक के प्रकाश में दूसरी दब जाती है उनके बढाव-घटाव को जानने वाला मनुष्य मद युगों का नारा क बुरी श्रावने से अपना पीछा छुटनेगा है। इन नियम से ही माध्यम पाता है और प्रभु के समीप होता है। इन स य-मार्ग पर न चलकर मनुष्य दुःख उपाता है और वदना हो जाता है।

## आर्य समाज शादीपुर साम-पुर का वार्षिकोत्सव सभ्यन

आर्य समाज के अवन में १६ सितम्बर से २२ सितम्बर तक वार्षिक उत्सव प्रसंगम से सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर श्री कृष्णदत्त ब्रह्मचारी श्री प्रकाश चन्द शास्त्री, श्री गुणप-चन्द श्री धर्षीक विद्यालकार श्री स्वामी योगानन्द तथा स्वामी प्रमान-ज की आदि महानुभावों के द्वारा वेद प्रवचन हुए।

मन्त्री, कनाराव

## अभी बाकी है !

महावीर और विद्यालकार मुकुल कांयदी

तुमने सब कुछ दिया हमें पर मन का दान अभी बाकी है। बगिया को बहार तो दे दी तोरन दान अभी बाकी है ॥

हर अधिपति पर पर तुम तो जब उजियाला कर जाते हो।

मैं सोचा करता तब मन में कुछ तम जाल अभी बाकी है

तुमने कुटिया के बदले मे, राजभवन के स्वप्न दिखाये।

यहा धरमान अभी तो बारा, कितना दर्द अभी बाकी है

तुमने शासन के कारण ही, ये कानून बना दाले हैं।

किन्तु हर कानून युवा जब, मन-सकार अभी बाकी है

तुमने हिन्दी के बदले मे धर्मों का मान बढ़ाया।

किन्तु जन-जन की भाषा का, गुप्त सम्मान अभी बाकी है

तुमने त्कानों को बाधा, नदियों को कवन पहनाये।

किन्तु परीक्षा-काल है यह तो कितना काम अभी बाकी है

कितना टोस अभी बरारी है, कितने दद विधुर फिते।

हर धासु अमृत हो जाये वह बरदान अभी बाकी है

तुमने बहुत निर्माण कर लिये और योजना बहुत बना ली।

किन्तु चमन की खुशहाली का वह मनु गान अभी बाकी है

तुमने मोना की रखा मे, कितने पहरेदार बिठाये।

किन्तु हमारा यश हो जिससे वह अभियान अभी बाकी है

अभी बाकी है उत्सव, प्राणविक्रम का व वलकन्दर तनाइय और यह वलकन्दर की शक्ति-शक्ति शक्ति से बलकन्दर है।



शिकारिकी  
वाइडिक  
पाउडर



एन की एच शिकारिकी पाउडर का जो लोकरी बंद करता है मन उर प्रकृति का तात्त्विक भाव। सर्व धर्म स्वस्थ बनाता है

उपना १० राश धावता १०० बेहदा बचन व श्रम म-विश्व अभी अगिने मे बन या गया एन की एच शिकारिकी पाउडर एक प्राचत साधकरी प्राकृति से है। उन्मे गेद तामाविक प्रसन्न म्ता है।

एन के एच शिकारिकी पाउडर का प्राप्ति से ही नियंत्रण प्रयोग कीजिये।

निम्नतः

महाशिवि की टुने (मो) लि०  
844-4-401000-सि० की ५०२  
बर्हि-बर्हि १०००४  
फ- 539604 537867 537341



# साप्ताहिक ओ३म् आर्यसन्देश

वर्ग - ६ अंक १०  
मुद्रण एक प्रति १० पैसे

रविवार, ३ नवम्बर, १८८६

वार्षिक २० रुपये

मुद्रित सन् १८७२-७६०६६

आश्विन २०७२

दयानन्दान्वय-१६१

विशेष में २० डालर ३० पीस

## महर्षि दयानन्द निर्वाण दिवस पर

### आर्यसन्देश का उत्कृष्ट विशेषांक

अपने पाठकी की पुरजोर माग की ध्यान में रखकर साप्ताहिक आर्यसन्देश अपनी गौरवमयी परम्परा के अनुसार महर्षि दयानन्द निर्वाण दिवस (वैशाखी) पर एक उत्कृष्ट लेखों से भरपूर आकषक विशेषांक प्रकाशित कर रहा है। यह विशेषांक नवीन नथ्यों शिक्षाप्रद एवं प्रेरणाप्रद लेखों से सुपजित सगृहीय होगा। आर्यसन्देश के पाठक इसे नि शुल्क प्राप्त कर

सकेंगे।

यदि आप अपने घर बैठे श्रुतियों आर्यपुरुषों सन्तो विद्वानों की बाणी एवं सत्यान्देश पढ़ना चाहते हैं तो आज ही साप्ताहिक आर्यसन्देश के मदस्य बन जाइये और विशिष्ट विशेषांक की नि शुल्क प्राप्त कीजिए।

पत्रा सम्पादक—  
साप्ताहिक आर्यसन्देश,  
१५ हनुमान रोड नई दिल्ली  
१०००१



इन्दिरा-स्मृति

कविवर प्रणव" शास्त्री  
एम०ए० महोपदेशक  
शास्त्री सन रामनगर (कटरा)  
आमरा-६ (उ०प्र०)

#### विशेषांक की भलकिया—

- देश की आजादी का दीवाना राजस्थान की भोल जानि का गुन अल्लूड सन्—गोविन्द गुड महर्षि दयानन्द का अनांक्षा शिष्य जिसने स्वतन्त्रता के लिए सेना सजायी थी। इतिहास का मार्मिक प्रसंग
- अंग्रेज चित्तौड़ के किले को अपने कब्जे में लने का पड्यव रच रहे थे। श्रुति दयानन्द ने इसकी रक्षा के लिए अद्भुत साहायिक कार्य किया। इतिहास की गुफा में छिपा श्रुति दयानन्द का एक महान् कार्य।
- स्वामी दयानन्द ने आध्यात्मिक जगत् में अनेकसी कान्ति की, उस कान्ति से मसार वमत्कृत हो सकना है। इसी कारण वे जगत् गर और विश्व वक्ता हैं।
- श्रुति दयानन्द ने नुहुत् भारत का स्वप्न देखा था। उस स्वप्न का पूर्ण करने के लिए उन्होंने क्या मन्त्र दिया ? अनेको खोजपूर्ण, अध्यात्म, शिक्षाप्रद, मनोरञ्जक, ऐतिहासिक लेखों का अग्रुब संकलन होगा इस विशेषांक में।

आज ही अपनी प्रति पुरक्षित कराइये।

बता दे कोई मनुष्यता की महापुजारिणी कहाँ गई है।  
अदम्य दुर्गादेवी की जो की सिद्धवाहिनि कहाँ गई है ॥१॥  
सजाया जिसने स्वतन्त्रता के स्वप्न सुगार धारली को।  
जगाया जिसने प्रमत्तता के प्रमत्त मानो स्वभारती को।  
विकास कीगा बजाने वालों सरस्वती की कहाँ गई है ॥२॥  
धरा के दुर्ग में दुर्गी रनी जो दुष्टों की कहतो रही कहाँ।  
धरा न होवे अघोर मन में न वैश्य खोब विपन्न प्राणी।  
धरा के पुत्रों जरा जो बोली धरा की पुत्री कहाँ गई है ॥३॥  
नही गमन मे कही विर ये प्रपञ्चवादी घटाए काली।  
न ताच पाये महासमर की विनाशकारी प्रकाल काली।  
पुकार ऐसी उठाने वाली सशस्त्र बाणों कहाँ गई है ॥४॥  
न दुष्ट दूषण की चाटना का यहाँ न होने दिया बरेरा।  
उसे घटा दी अमीन जिसने यहाँ जो बाह्य कर धंधरा।  
प्रकाश पीरुष दिखाने वाली विषय भवानी कहाँ गई है ॥५॥  
कही भी उल्लू ने सुकसेना न डाल पाय चमन में डरा।  
नई चमक से नई दमक से किया है जियने यहाँ सबेरा।  
नया ही सूरज उगा गई जो उषा विरल वो कहाँ गई है ॥६॥  
ममझी जिसने सुचास्ता से समानता की सुरुज देखा।  
गिरे दूधो को लगा रहे हो गले से डंके कि स्वप्न देखा।  
स्वराष्ट्र का चिन्म निहार देवी को रग रचना कहाँ गई है ॥७॥  
फि जाते जाते भी रक्त जल से प्रफुल्लता से जिसे है सीमा।  
दिया है आसीष प्रमत्तता से अमर अक्षयिनी रहे अमीना।  
दवीचि श्रुति की मिसाल बनकर सदा सुशामिनि कहाँ गई है ॥८॥

## समाचार सन्देश

### अभिल भारतीय आर्य युवा महामेलन

नई दिल्ली १० अक्टूबर (बृह-स्पतिवा)। आययमाज अमरकली (मन्दिर मार्ग) के ६१व वार्षिकोत्सव के अवसर पर आगामी २४ नवम्बर रविवार को आर्य युवा नेता ब्रह्मचारी आर्य नरेश को अध्यक्षता में 'अभिल भारतीय आर्य युवा मण्डल सम्मेलन का आयोजन किया गया है। जिसमें १००० प्रतिनिधि भाग लेने आए रहें हैं।

युवा महामेलन संयोजक व केन्द्रीय आर्य युवक पण्डित दिल्ली प्रदेश के महासचिव श्री अमिन कुमार आर्य ने एक संस विज्ञप्ति में बताया कि २३ नवम्बर, रविवार को देश के विभिन्न राज्यों के आर्य युवक संगठनों के प्रमुख नेताओं व विद्वानों की बैठक होगी जिसमें युवा वर्ष पर नीजबानों के लिए एक राष्ट्रव्यापी कार्यक्रम बनाने तथा राष्ट्रीय स्तर

पर प्रभावी प्रेरणा निभाने के उद्देश्य से भावी कार्यक्रम बनाया जायेगा आर्य नेता व डी०ए०वी० प्रबन्धकर्मी सभा के कायदाहक अध्यक्ष श्री दरबारी लाल ने सम्पन्न भारत के डी०ए०वी० स्कूल कालेजों के प्रति विद्यो को भी युवक महामेलन को सफल बनाने के आदेश दिए हैं। महामेलन को सारी व्यवस्था आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा, नई दिल्ली कर रहे हैं।

राष्ट्रीय स्तर के इस युवा महामेलन के लिए दिल्ली के विभिन्न स्थानों पर जन सम्पर्क अभियान तथा शैलीय युवक सम्मेलनों का आयोजन भी किया जा रहे हैं।

चन्द्रमोहन आर्य  
(प्रेस सचिव)

केन्द्रीय आर्य युवक परिषद  
दिल्ली प्रदेश

### सिराज खां, सूरज कुमार बने

मुम्बई २३ अक्टूबर (बृह-स्पतिवा)। कुछ दिन हुए वाला-भीर के जो सिराज खां द्वारा कुमारों किरण अग्रवाल के अग्रहण के विषय को लेकर उड़ीसा में प्रबल हलचल मची हुई थी। गत रा० ६-१०-८६ को मुम्बईस्थ आर्यसमाज मन्दिर में जो सिराज खां को सुद्धि संस्कार के पश्चात उनका विवाह सुखी किरण के साथ सम्पन्न होकर एक मधुर का सुखान्त समाप्त हो गया।

श्री सिराज सुखी किरण तथा उनके अग्रवृत्ता और शालीय स्वजन कटक उच्च न्यायालय में न्यायमूर्ति श्री राधाचरण पटनायक के समक्ष अपनी सम्प्रति प्रकट कर्ण के सुननेवर आर्यसमाज की महात्म्य व विवाह के निमित्त प्रस्ताव दिया था। माननीय न्यायमूर्ति ने इसे स्वीकार करते हुए अपने दोष निर्णय में कहा है—'अग्रवृत्ता ने यह निवेदन किया कि मायमा मित्रना पूर्वक मुलमा लिया गया है और इस प्रकार

एक विस्फोटक स्थिति का मुसालन मायापन हो गया है। यह भी तय हुआ है कि आ निगज और सुखी किरण आर्यसमाज की पद्धति के अनुगम विवाह बन्धन में एक हो जाये।

मुम्बईस्थ आर्यसमाज के नवनिमित्त महर्षि दयानन्द निर्वाण शतब्दो स्मारक यज्ञ मण्डप में कटक सुननेवर तथा उड़ीसा के बहु प्रतिष्ठित व्यक्तित्व का उड़ीसा के सुद्धि प्रतिलिपि में श्री सिराज को उपस्थिति में श्री सिराज ने बड़ी प्रसन्नता के साथ श्री 'सूरजकुमार' नाम ग्रहण किया। शुद्धि के अनन्तर श्री सूरज कुमार और कुमार श्री सुखी किरण अग्रवाल का विवाह संस्कार अनुष्ठित हुआ।

उड़ीसा के मंत्री ममाचार पत्रों में इस समाचार को प्रमुख स्थल पर प्रस्तुत किया।

प्रियतमयान

### शुद्धि समाचार

कलकत्ता २ अक्टूबर। आर्य समाज बड़ा बाजार द्वारा आज माय एक भय समारोह में शेष अमो-हसन पुत्र शैल लतीकुट्टिन लाल-दीवी धार (पूर्व) पी० व थाना चन्द्रनगर, जिला हुगली (ब० बंगाल) के आनेदन पर उनकी शुद्धि की प०

ईश्वरदत्त वंश के पीरोहिय व के गो गयी जिसमें समाज के मंत्री लुगटान चन्द आर्य तथा ममाचार के विशिष्ट सहायियों सहित आर्य जनता के लोग भी उपस्थित हुए। शुद्धि के उपरान्त उनका नया नाम अग्रमन्दी स्वीकृत हुआ।

### पाण्डव सण्डन का आह्वान श्री रामनाथ सहगल का वक्तव्य

(निज सन्देशवाता द्वारा)

पिछले दिनों दैनिक समाचार पत्रों में प्रकाशित दो ममानारों के बारे में आर्य जनता का ध्यान आकृषित करना चाहता हूँ। पहला ममाना नन्दन का है जहाँ श्री प० श्रीराम शर्मा की उपस्थिति में गायत्री परिवार की ओर से आयोजित यज्ञ कार्यक्रम के अवसर पर स्वामी प्रसाद ने तथाकथित भगवानों से सावधान रहने का उपदेश देते हुए कहा कि—अब समय आ गया है कि हम लोगों को अपने मकानों पर सूचना पट्टी पर 'बीबेर आफ डाय' के स्थान पर 'बीबेर आफ साइ' प्रकाशित कुत्तों से सावधान के स्थान पर भगवानों से सावधान लिखा कर नगना चाहिए। इसका अर्थ यह है कि वे तथाकथित भगवान कुत्तों से भी अधिक काटने वाले और गिरे हुए हैं।

दूसरा समाचार न्यूयार्क से आया है। लगभग ३ वर्ष पूर्व तथाकथित भगवान् आचार्य रजनीश भारत छोड़कर अमेरिका में आयेगाने में जा बसे। करोड़ों रुपये की विस्तृत प्रमिषि करीब कर बड़ा रजनीशपुरम की स्थापना की। समार की सब से सूर्यवान कार रान्स-रायस का रजनीश प्रयोग करते हैं। उनकी बड़ी की व ओर से सूर्यवान होते पड़ गए हैं। उनके आश्रम में अनुसृत सेवन की पूरी छत्र है। विवासी जीवन व्यतीत करने वाले भगवान रजनीश का कहना है कि उनके अनुयायियों ने उनके साथ घोषा किया, उनकी हत्या का प्रयाग किया तथा उन्हें करोड़ों डालर कर्ज में डुबो दिया।

### वेदप्रचार विभाग का

### द्वितीय वार्षिकोत्सव सम्पन्न

महाशय जुल्लाला धर्मार्थ दुष्ट द्वारा संचालित वेद प्रचार विभाग का वार्षिक उत्सव दिनांक २७-१०-८६ रविवार साय ३ बजे ६/४४ कीति नगर इण्डियन हिल एरिया (M D H) में मावदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान मान्यवर श्री गनगोपाय बानस्पथ की अध्यक्षता में मनाया गया।

इस अवसर पर अनेक प्रतिष्ठित विद्वानों ने शारंगिक जनता का मार्गदर्शन किया।

मुष्ठीराम शर्मा

वेद प्रचार अधिकृत

अब रजनीशपुरम से समाचार से प्राप्त हुआ है कि भगवान रजनीश के लगभग दो हजार अनुयायियों ने रजनीश की भूपूर्व निजी सचिव मा प्रानन्दश्रीना द्वारा रजनीश-वाद पर प्रकाशित पुस्तक की ५००० प्रतियों व सचिव के कपड़ों की वर्षों बनाकर नाच-गा कर उनकी प्रत्येष्ट कर दी।

इन दोनों समाचारों से इस बात का स्पष्ट संकेत मिलता है कि तथाकथित भगवान् भगवान् के पासख से पाषाणय भौतिकवादी जगत् का एक वर्ष ऊँच चुका है। पासख व डोग से आकर्षण होता है। इसलिए शुक्र में उनकी ओर ककना म्माभाविक है। परन्तु पासख की पील मुलने पर उस से पूर्णा भी जल्दी ही हो जाती है।

हमारे देश में जो ईश्वर के नाम पर अनेक पासख फँसे हुए हैं। कहेगी की आवश्यकता नहीं कि इन पासखों के कारण समय समय पर देश की राष्ट्रीय क्षति उठाने वाली है आर्यसमाज अपने जन्म-काल से ही इन प्रकार के जगन्मर्षि का विरोधी रहा है। अपने प्रारम्भिक वर्षों में पासख लखन के लिए आर्यसमाज ने विधायियों से अनेक शास्त्रार्थ किए। अद्य इस दिशा में विधिलता आई हुई है। मैं अपने आर्य विद्वान् उपदेशक व प्रचारक महानुभावों से निवेदन करूँगा कि—पासख सण्डन के कार्यक्रम से पूरी शक्ति के साथ जुट जायें।

मधदीय

(गजेन्द्रप्रसाद मालवीय)  
कार्यलयपायख

### वेद प्रचार सप्ताह

आर्यसमाज यमुना विहार (रजि.) दिल्ली के तत्सत्त्वधान में वेद प्रचार सप्ताह २ से ६ अक्टूबर तक सर्व आचार्य रामचन्द्र जी की अध्यक्षता में पाच दिवसीय यज्ञ के परम्परा पूर्ण आहुति सहित बड़ सप्ताह पूर्वक सम्पन्न हुआ। प्रतिदिन यज्ञ, उपदेश तथा भजनों की मधुर ध्वनि के साथ श्री स्वामी कृष्णानन्द जी, श्री प० शशिसेख जी श्री प० नानक चन्द जी श्री भूषेख जी आदि विद्वानों ने शाय सेकर वेद आर्य पर चलने की प्रेरणा दी।

कमल किशोर आर्य  
उपमन्त्री

आर्यसमाज यमुना विहार (रजि.)  
दिल्ली-५३

## आर्यसमाज सान्ताक्रुज में आर्य ध्यान योग केन्द्र का उद्घाटन

आर्यसमाज ने अपने स्थापना दिवस पर नवनिर्मित वागानुसन्धित ध्वनि श्रृंखला भारत वर्ष की आर्य समाजों में सर्व प्रथम ध्यान योग केन्द्र का उद्घाटन पुण्य स्वामी सत्यपति जी के कर कमलों द्वारा किया गया। इस अवसर पर बोलते हुए स्वामी जी महाराज ने कहा कि आर्यसमाज ने यह कार्य करके अनुकरणीय आदर्श प्रस्तुत किया है, इसकी वृद्ध बड़ी भाव्यता की भी धाज पूरी रही है। मुझे आशा है कि इस ध्यान योग केन्द्र से बम्बई की जनता अधिक से अधिक लाभान्वित होगी। इसे देख कर मुझे हार्दिक प्रशंसा हुई है। यहाँ याकर वास्तविक शांति मिलती है, यहाँ आकर ध्यान लगाया

## आर्यसमाज मन्दिर, वार्ड ब्लाक, सरोजिनी नगर, नई दिल्ली में रतनचन्द आर्य पब्लिक स्कूल के सत्यवती स्मारक भवन का उद्घाटन

बुधवार दिनांक २ अक्टूबर, १९५५ को बड़े समारोह पूर्वक प्रातः ८ बजे से साढ़े १० बजे तक सम्पन्न हुआ। कार्यक्रमों प्रातः ८ बजे विशेष यज्ञ से आरम्भ हुई। उसके पश्चात् प्रातः १० से ११ बजे तक रतनचन्द आर्य पब्लिक स्कूल के छोटे-छोटे बच्चों ने बहुत धार्मिक वैदिक विचारधारा से गीत गीत सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत किया। इस अवसर पर लाला गम्भीरपाल जी शालवाले प्रधान, सार्वभौमिक मन्त्री, श्री धर्मदत्त जी, प्रधान, नई दिल्ली नगर पालिका (मुख्य अतिथि के रूप में), श्री रतनचन्द जी सुद, श्री रामलाल मलिक, श्री हरबल मिह जी केर, प्रधान दक्षिण दिल्ली वेदप्रचार मण्डल डा० धर्मपाल जी, महामन्त्री दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, श्री रामनाथ सहगल, मन्त्री, आर्य प्रादेशिक सभा श्री राजेन्द्र दुर्गा, मन्त्री आर्य केन्द्रीय सभा तथा दिल्ली की बहुत ही आर्यसमाजों के अधिकारी

### वार्षिकोत्सव

आर्यसमाज शालीमार बाग, दिल्ली का वार्षिकोत्सव ११ से १७ नवम्बर ५५ को बृहन्मय से मनाया जा रहा है, जिसमें महात्मा राम किशोर वर महापुरुष का वेदप्रवचन और प० सत्यमेव स्नातक रेडियो कलाकार के सजोतीपेक्ष द्वारा करेगे। श्री ज्योतिप्रसाद दोलक कलाकार साथ रहेंगे।

जा सकता है। ऐसे ध्यान योग केन्द्र का निर्माण प्रत्येक नगर में होना चाहिये। परमात्मा यहाँ के कार्य-कर्ताओं को शक्ति प्रदान करे, जिससे श्रद्धा के झर्रे कायों को पूरा करते रहें।

अन्त में महामन्त्री कौन्टिन देवरन आर्य ने बताया कि इस ध्यान योग केन्द्र के लिए श्री राजेन्द्र बाहुरी जी ने २००००/- रुपये की वास्तु-कुलित मशीन तथा श्री केवलकृष्ण जी मेहरा ने ऊनी कालीन गेट किया है। इनके सहयोग से हम इसे पूरा कर पाये हैं।

(कौन्टिन देवरन आर्य)  
महामन्त्री

एव सदस्य श्री रतनचन्द जी सुद के परिवार के सभी लोग उपस्थित थे। सत्यवती स्मारक भवन का उद्घाटन श्री जे० धारा सुद (सुपुत्र श्री रतनचन्द जी सुद) ने किया। इस भवन के १८ कमरों का निर्माण लगभग ५ लाख रुपये की लागत से श्री रतनचन्द जी सुद ने अपनी स्वयंसेवक श्रमों की श्रमती सत्यवती जी सुद की स्मृति में कराया है।

श्री धर्मदत्त जी, प्रधान, नई दिल्ली नगर पालिका ने घोषणा की कि रतनचन्द आर्य पब्लिक स्कूल को शोध माध्यमा दी जायेगी। श्री रोशनलाल गुप्त, प्रचार मन्त्री आर्य समाज सरोजिनी नगर, प्रबन्धक, रतनचन्द आर्य पब्लिक स्कूल ने सभी का हार्दिक कृत्यवाद किया।

### रोशनलाल गुप्त

प्रधानमन्त्री आर्यसमाज एवं प्रबन्धक रतनचन्द आर्य पब्लिक स्कूल

## वेद कथा एवं वार्षिकोत्सव

आर्यसमाज अमर कालोनी में १ से १० नवम्बर तक वेद कथा और वार्षिकोत्सव मनाया जा रहा है, जिसमें महात्मा रामकिशोर जी वेद वज्र के ब्रह्मा रहेंगे। रात्रि को वेद रहेगा। प० वेद व्यास भजोतीपेक्ष का सगीत का कार्यक्रम रखा गया है।

अध्यक्षता  
स्वामी लक्ष्मणानन्द सरस्वती  
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा

## अन्तर्जातीय विवाह विभाग की स्थापना

यह आवश्यक है कि हिन्दू अपनी सन्तानों की यादिया गुण, कर्म, स्वभाव के बाधार पर करे। इस उद्देश्य की पूर्ति के लिए आर्यसमाज (अनारकली) मन्दिर आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा के तथावधान में एक अन्तर्जातीय विवाह विभाग की स्थापना की गई है। यहाँ इस बात का ध्यान रखा जाता है कि अन्तर्जातीय विवाह में दहेज वाचक न हो। अब तक लगभग ८० अन्तर्जातीय विवाह सम्पन्न हो चुके हैं और सब

## आर्य प्रतिनिधि सभा आन्ध्र प्रदेश के नव निर्वाचन अधिकारी

प्रधान श्री रामचन्द्रराव जी कल्याणी  
उपप्रधान श्री डा० गोविन्दराव जी गो० बोधन  
उपप्रधान श्री पुरुषोत्तम रेड्डी जी पादम्नापेट  
उपप्रधान श्री के० कल्याणकर जी सूर्यनगर  
मन्त्री श्री माणिकराव जी शास्त्री बेगम बाजार  
उपमन्त्री श्री नाममल्लिका जी गोमामहल  
उपमन्त्री श्री लक्ष्मण मिह जी धुबेट  
उपमन्त्री श्री के० श्री रेड्डी जी जयचलार  
कोषाध्यक्ष श्री राजा बी० किशन लाल जी पुस्तकाध्यक्ष श्री प० कुमार श्री शास्त्री

### निवेदक

आर्य प्रतिनिधि सभा  
आन्ध्र प्रदेश  
हैदराबाद

## चम्पारण जिला निर्वाचन सम्पन्न

दिनांक २२-६-५५ को स्थानीय नर कटिया गज आर्यसमाज में श्री राम कुशलाल की अध्यक्षता में चम्पारण जिला सभा का निर्वाचन हुआ। जिसमें आगामी वर्ष के लिए सर्व श्री रामाज्ञा वैरागी प्रधान तथा श्री के० शास्त्री मन्त्री चुने गये।

मन्त्री प्रधान के अतिरिक्त २१ अन्य सदस्य तथा पदाधिकारी चुने गए हैं। सभी कार्य शान्ति पूर्ण बतावरण में सर्व सम्पत्ति से सम्पन्न हुआ।

रामचन्द्र  
भूतपूर्व मन्त्री  
चम्पारण जिला सभा, बिहार

वस्तुतो सुखी हैं। बाण्डिस का समय ११ से ५ बजे तक है और साय ५ बजे से ७ बजे तक व्यक्तिगत बात-चीत के लिए सुरक्षित है। विवाह इच्छुक युवक युवति अवधान उनके सरक्षक निम्न पते पर संपर्क करें।

### डा० मदनपाल वर्मा

प्रधिष्ठाता-अन्तर्जातीय विवाह विभाग  
आर्यसमाज (अनारकली), मन्दिर मार्ग  
नई दिल्ली-११०००१

नोट—सेवा नि शुल्क है।

## आर्यसमाज सफ़दरजंग एम्प्लेव, नई दिल्ली-२१ का निर्वाचन

वार्षिक चुनाव दिनांक २२-६-५५ को श्री लाला रामचरणदास जी की अध्यक्षता में सर्वसम्मति से सम्पन्न हुए। निम्न प्रकार हैं।  
प्रधान श्री बी० सी० अम्बाला  
उपप्रधान श्री जे० एल० भाग्य  
मन्त्री श्री रामचन्द्र गुप्त  
उपमन्त्री श्री के० कुमार  
कोषाध्यक्ष श्री बी० सी० जयन्ता मन्त्री

### रामचन्द्र गुप्त

आर्यसमाज बम्बई की वार्षिक साधारण सभा दिनांक २६-६-१९५५ को सम्पन्न हुई जिसमें आगामी वर्ष के लिए पदाधिकारी सर्व सम्पत्ति से निर्वाचित हुए हैं। कृपया अपने प्रतिष्ठित पत्र में प्रकाशित करने की कृपा करें।

### निम्नलिखित

निर्वाचित हुए—  
परामर्शदाता श्री प० दयाशकर जी शर्मा

प्रधान श्री गणपत राय आर्य  
उपप्रधान श्री जयनप्रसाद गीतम  
उपप्रधान श्री भास्करनाथ वर्मा  
मन्त्री श्री राजेन्द्रनाथ पाण्डेय  
उपमन्त्री श्री चमनलाल बहाना  
कोषाध्यक्ष करसन दाम राणा  
पुस्तकाध्यक्ष श्री भद्रसेन मिश्र  
राजेन्द्रनाथ पाण्डेय मन्त्री

## आर्यसमाज लाजपत नगर में राष्ट्रज्ञा सम्मेलन

आर्यसमाज लाजपत नगर, नई दिल्ली के उत्सव के अवसर पर अद्वेय श्री रामगोपाल जी शालवाले की अध्यक्षता में राष्ट्रज्ञा सम्मेलन दिनांक ३-११-५५, रविवार रात १० से ११ बजे तक मनाया जा रहा है। प्रेषक मेघधाम वेदाङ्ककार

रजि० न० डी० (सी०) ७५६  
R No

सार्वजनिक 'बायोलॉजिकल'  
Post in NDPSO on 1-11-85

३ नवम्बर, १९८५

बिना टिकट भेजने का लाइसेंस न० यू १३६  
Licenced to post without prepayment Licence No U 139

**दंतों की हर बीमारी का घरेलू इलाज**

**एम डी एच**

**दंत मंजन**  
लोग युक्त

23 जड़ी बूटियों से निर्मित  
आयुर्वेदिक औषधि

दुर्लभ डाक्टर

**दंत मंजन**  
लोग युक्त

अब नये पैकिंग  
में उपलब्ध

विश्वप्रसिद्ध  
**महाशियां दी हट्टी (प्रा०) लि०**  
9-44 इण्डस्ट्रियल एरिया सीटी नगर नई दिल्ली 15  
फोन 539609 537987 537341

मसूहों की सूजन  
मुँह की दुर्गन्ध  
ठंडा गर्म पानी  
लगाना  
दांत का दर्द

**अपने मुँह की स्वस्थ, चमकदार चमक से मुँह की  
सफाई और ऊर्ध्व चमक से मुँह की  
सुंदरता लहराइये।**

**एम डी एच**  
**चमकदार**  
**शिकंकाई**  
**पाउडर**

एच की एच शिकंकाई पाउडर दांतों की सफाई में  
बहुत ही लाभदायक है। इससे मुँह की सफाई में बहुत  
सुविधा है।

शिकंकाई 'रोसा' ब्रांड का हल्का गुलाबी रंग का  
पाउडर है। इससे मुँह की सफाई में बहुत  
सुविधा है। शिकंकाई पाउडर एक बालू व साबुन से  
बनाया हुआ है। इससे कोई रासायनिक पदार्थ नहीं है।

एच की एच शिकंकाई पाउडर का लाभ है कि  
यह मुँह की सफाई में बहुत ही सुविधा देता है।

निर्माता  
**महाशियां दी हट्टी (प्रा०) लि०**  
9-44 इण्डस्ट्रियल एरिया सीटी नगर  
नई दिल्ली 110015  
फोन 539609 537987 537341

**उत्तम स्वास्थ्य के लिए**

**गुरुकुल कांगड़ी फार्मसी,**

**हरिद्वार की औषधियां**

**सेवन करें**

**गुरुकुल कांगड़ी फार्मसी**

**उपवास**

**गुरुकुल चाय**

**अमरसैनी**

**पारमिटिन**

**गुरुकुल कांगड़ी फार्मसी**  
**हरिद्वार**

शाखा कार्यालय—१६, गली राधा केशरनाथ,  
बाबूदो बाजार, दिल्ली-६ फोन . २६६८३८

विश्वी कार्यलय—१६, गुरुकुल चमक, नई दिल्ली-१ फोन . २६६८३८ के लिए शा० बसेबाबू हाउस इण्डिया एच प्रकाशित तथा  
रेडिओ डेज, गली नं० १०, कौटिल्यनगर, दिल्ली-६१ में मुद्रित रजि० नं० डी० (सी०) ७५६

साप्ताहिक

ओ३म्

# आर्य सन्देश

पुस्तकालय  
हिन्दू काँग्रेस विश्वविद्यालय  
हरिद्वार

गुरुपुत्रो विश्वमार्गम्

वर्ष ६ भाग २४ अंक  
प्रति ६० पैसे

हरिद्वार, २ सितम्बर, १९२५  
आगतिक २० अंग्रे

मुद्रित सन्देश १९२५ ई० २०५  
आवृत्ति २०० अंग्रे

मासगीर २०५२

वित्तवाचनामिका—१९१  
विशेष में २० अंग्रे २० पैसे

## सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के शिष्टमण्डल की केन्द्रीय गृहमन्त्री श्री एस० बी० चव्हाण से भेंट हैदराबाद आर्य सत्याग्रहियों के सम्बन्ध में जापन

दिल्ली १० नवम्बर।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री रामगोपाल शासनाले के नेतृत्व में आज प्रातः कार्यसभा के शिष्टमण्डल ने केन्द्रीय गृहमन्त्री श्री एस० बी० चव्हाण से भेंट कर उन्हें हैदराबाद आर्य सत्याग्रहियों के सम्बन्ध में एक जापन पत्र दिया।

शिष्टमण्डल ने गृहमन्त्री का ध्यान आकृष्ट करते हुए बताया कि हैदराबाद आर्य सत्याग्रहियों के सामने पकन प्राप्त करने में कुछ विशेष कठिनाइयाँ हैं। १९३०-३२ में पश्चिमी पचास (बो बब पाकिस्तान में है) के लोगों ने भी सत्याग्रह में भाग लिया था। तत्कालीन निजाम स्टेट बब तीन प्रांतों में बिभाजित हो चुका है। उस समय भी लोग जेलों में गये थे, उन्हें निजाम सरकार ने कोई प्रमाण पत्र नहीं दिया था। यह आन्दोलन सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा दिल्ली के तत्वावधान में

चला था और सभा ने सत्याग्रहियों को प्रमाण पत्र भी दिये थे।

शिष्टमण्डल ने यह भी बताया कि अधिकाल सत्याग्रहों अब तक विरामित हो चुके हैं। जो बौद्ध बहुत लोग इस समय गुवावस्था में जी रहे हैं, उनके पास अब ५० वर्ष के उपरान्त कोई प्रमाण पत्र भेज नहीं है। शिष्टमण्डल ने सरकार से माँग की कि जिस प्रकार राष्ट्रीय धारों लन के सेनानियों को कायस के प्रमाण पत्र के आधार पर स्वतन्त्रता सेनानी माना गया था उसी प्रकार केन्द्र सरकार सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा उक्त सत्याग्रह के रिकार्ड के आधार पर प्रमाणित लोगों को स्वतन्त्रता सेनानी स्वीकार कर और गृहसचालय द्वारा स्वीकृत पकन योजना का लाभ प्रदान कर।

गृहमन्त्री भी चव्हाण ने, उपरन्त सभा से सूची भेजने के लिए कहा और आश्वासन दिया कि वे सत्य सर

कार्यों से बाधित करके इसका निष्पक्ष कर्त्तव्य करेंगे। उन्होंने यह भी बताया कि निजाम हैदराबाद आर्य आग्रह, कर्नाटक और महाराष्ट्र में बिभाजित हो चुका है।

शिष्टमण्डल ने श्री वेरसिंह, श्री

योगप्रकाश त्यागी प० विजयकुमार शस्त्री, श्री सोमनाथ एबोकेट और लक्ष्मीचन्द आर्य सहित दिये।

सचिव दायम् शास्त्री  
उपमन्त्री

## आर्य विद्या सभा गुरुकुल कांगड़ी हरिद्वार की बैठक सम्पन्न

आर्य विद्या सभा गुरुकुल कांगड़ी हरिद्वार की बैठक शनिवार ११/११/२५ को कार्यसभाय गम्भीर बीजानहाल में सम्पन्न हुई। इसमें दिनांक ३०/१०/२५ की कार्यवाही सुपुष्ट की गयी तथा सविधान की प्रतिनिरूप देकर प्रकाशन की स्वीकृति दी गई। शेष पदाधिकारियों तथा कार्यकारिणी के सदस्यों का निर्वाचन किया गया। कुल पदाधिकारी और कार्यकारिणी इस प्रकार है। प्रधान-श्री वेरसिंह उपप्रधान—श्री सुवेदित और श्री वेरेन्द्र मन्त्री—श्री बमपाल सहाय न-नो-नो प्रकाशचरी शास्त्री और श्री आचार्य आर्य कोषाध्यक्ष—श्री हरिप्रकाश सत्यस लाला रामगोपाल श्री शासनाले स्वामी भोमानन्द, श्री हरप्रकाश सहाय, महाशय बरपाल श्री तथा श्री पतेन सत्यस। इस पत्र लाला रामगोपाल

शासनाले ने कहा कि मैं गुरुकुल कांगड़ी के किसी भी भगवें में नहीं पकना चाहता और न ही मैं वहाँ किसी सभा का सदस्य हो बनना चाहता हूँ। मेरे पास बहुत काम हैं। मगर सार्वदेशिक सभा का काम भी हज होता है। वहाँ धायस में लोग भगवा करते हैं। मेरे पास बहुत शिकायत आती है। सभी उपस्थित सदस्यों ने माननीय लाला रामगोपाल जी शासनाले से एक स्वर में अनुराध किया है कि आप हमारे ध्यान नेता हैं, सार्वदेशिक को शिरोधार्य सभा सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान हैं। आप पचास सभा के बिभाजन के श्री सर्वमार्थ अधिकाारी हैं। इस सभा का सदस्य बनने की हमारी आर्त्थना को आप धायस स्वीकार करें। अनेक अनुदीर्घों एक प्राचीनता पर किसी प्रकार आर्य (वि० पृष्ठ १० पृष्ठ)

### श्री शीरोलाल खन्ना का निधन

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री रामगोपाल श्री शासनाले के छोटे भाई श्री शीरोलाल श्री खन्ना का अत्यंत अचानक से सभी बीमारों के पश्चात् १०/११/२५ को देहावसान हो गया है। श्री शीरोलाल श्री खन्ना बन्धन में आयापन करते थे। कुछ वर्ष पूर्व बहु अमृतपत्र में अमर गये थे। यह अपने पीछे एक पुत्र छोड़ गए हैं।

परमत्मा से आनना है कि विरामत आर्य को सद्गति प्रदान करे और पश्चात् को इस गुरुकुल विधियों को सर्व सुख उल्लन करने की शक्ति दे।

श्री० सर्वपात्र





## जीवन-संगीत

—चमनलाल (पूर्व प्रधान आर्यसमाज भवशोक विहार)

यह मन बड़ा महत्त्वपूर्ण है इस लिए भी कि यह कृत्रिम से एक बार और सामवेष्ट हो दो बार पाया है। इस मन में सजह शब्द हैं—पहले पद में आठ और दूसरे में नौ शब्द हैं। इस मन में मन को अपने बचपन जवानी तथा बुढ़ापे को याद दिलाकर अतः मे विविध के विधान से बची आने वाली मनुष्य के स्वागत का संकेत है। मनुष्य जन्मी और भयबाहूनी वस्तु को अज्ञान नियन्त्रा प्रभु को धोर से जेजी हुई उसकी उपहार के रूप में स्वीकार करने का आवेष्ट है न कि उससे बचकर परमात्मा को कोसने लगे प्राणी। यही नहीं इस मन में मानव को उसके अपने जीवन की महत्तरता धरातरता का चिन्तन करा कर प्रभु के प्रति सच्ची निष्ठा एवं श्रद्धा प्रत्यक्ष करने के वेद विहित कार्यों को पारक इन संसार रूपी भयसागर से पार होने का बड़ा सुंदर विधान है। जसा कि ऊपर कह था ये है कि मन में मानव जीवन के तीन अक्ष स्थाएँ—आश्रय जवानी तथा बुढ़ापा की और ध्यान विनाकर अंत में चौथी मनुष्य को अक्ष उपहार रूप में लेने को कहा गया है। आश्रय से क्रमिक परिचय न पृष्ठ रूप से अक्ष स्थाएँ।

तीसरी योग्यता शीघ्रता जी ने मानवी अक्षाय को हलक तेरह में इन अक्षमाधो का इस प्रकार बड़ा सुन्दर वर्णन किया है

देहिनी अस्मिन् यथा  
वेष्टे कोमार जीवन जरा।  
तथा देहात्तरप्राप्ति  
वीर्य न न मरुति ॥'

यदि विचार प्रवृत्ति देखा जाये तो जीवन में ये क्रमिक परिवर्तन मानो एक संगीत के समान हैं। संगीत प्रायः बड़ी अच्छा और रचिकर होता है जिसमें उतार चढ़ाव हो। गायक कभी भी ठीक स्वर से और कभी ऊँचे स्वर से गाता है। इस के अभाव में प्रायः लोग मानो को मीरस (Miserable) समझते हैं। पर तुम्हें जीवन संगीत ऐसा सुनोला मीठा और रसीला है कि किसी भी अवस्था में गमभीर इससे उन्नत नहीं। शिथिल एवं और मुगलबन्ध की ती बात

विधु ददारा समने बहना युवान सन्त पतिता जगत्तर ।  
देवस्य पश्य काव्य महित्वाञ्छा ममार स ह्य समान ॥”

श्रुत्य—१०१५५१५

साम—३२५७ २७८२



ही क्या दुसरायी बुढ़ापा जरावस्था से धारणी युक्त होना नहीं चाहता चाहे वह कितनी ही भयकर और दुसरायी क्यों न हो।

अज्ञान गति पतित मूढम  
वधानविहीन जात तुष्यम ।  
बुद्धो याति गृहीत्या दण्डम  
तदपि न मूढचित्त आशा पिण्डम ॥

ऐसी यशस्वी अवस्था में भी कोई मरना नहीं चाहता वरन् ऐसा प्रायः देखने अक्षय सुनने में भी आता है कि बहुधा लोग मर के डरा भेजे हुए उसके दूतों को भी सतावन का विफल प्रयास करते हैं।

मानाविष कलाओं खाना पकाने की कला खाने खाने की कला मन मुक्त त्यागने की कला त्याग करने की कला और संगीत कला आदि कलाओं से परिपूर्ण यह जीवन चार अवस्थाओं से युक्त संगीतमय नहीं यह स्वयं संगीत का प्रतीक होता है।

अतः आधो जरा उपर्युक्त मन के अर्थों के माध्यम से जीवन संगीत का कुछ रसास्वादन करें। विधु ददारा समने

बहुताम नव आत विधु चन्द्रमा की मानिन्द बड़ा सुन्दर लगता है अर्थात् चाहे किसी पशु पक्षी का भी क्यों न हो कौन यदि किसी के बच्चा न हो तो वह सुन्दर मनमोहक शिशु उसकी वेदना का कारण भी बन जाता है। जैसे चन्द्रमा लक्ष्मी को प्यारा लगता है परन्तु वही शीतलता का देने वाला चन्द्रकण जोर यशोदा को भीषण बाला हो जाता है। जैसे कृष्ण उसको पाने की इच्छा करता है और बेचारी यशोदा कृष्ण को नानाविध फुसला कर समुत्पन्न करने में विफल हो जाती है। शिशु जब कुछ बड़ा हो जाता है बलने फिरने का प्रयास करता है और नानाविध चेष्टा में करने लगता है, तो सभी छमे सबकी माता पिता आई बहिन, चाचा बाबा

बुढ़ा मौसी सभी की उत्सुकता का कारण बन जाता है। उस शिशु की उलटी सीधी बार बार गिरने उठने की चेष्टाओं को देखकर सभी आनन्द विभोर हो उठते हैं। भग्न सुरदास के बचन में माता यशोदा कृष्ण के बचने को देखने के लिए कितनी उत्सुक हैं। यही कारण है कि बच्चे की चर का चित्रण कहा जाता है क्योंकि इसके बिना घर अन्ध बन जाता है। कैसा है बच्चे का लाभण्य? युवान सन्त समने बहुताम। इसके पश्चात् जब बच्चा विधु और कोमार अवस्था को पार कर युवा अवस्था को प्राप्त होता है तो अपनी गिराई खलती जवानी में भी शिशु की न्याई अनेकों को भीषण बाला हो जाता है जब वह उपरती जवानी में युवा अवस्था युक्त न बाने कितनी का ध्यान अपनी ओर धाकट कर लेता है। कतिपय लोग किसी सुन्दर आकर्षक युवा को देखकर उस को अपने आमाता के रूप में माने का प्रयत्न करते हैं और कई बार किसी सुन्दर युवती को अपनी वधूवधू के रूप में अपने घर की बच्ची बनाता पावत हैं परन्तु उन आहूँ बालों को वे धारण्य होने के कारण कुछ बचने से लगते हैं परन्तु वह जवानी कम तक रहती है। कुछ ही समय तक अपना चमत्कार दिखाकर अपनी मान-उ आर्षी से धोखल हो जाती है और कभी आपस नहीं आता। इसी लिए किसी ने बड़ा सुन्दर कहा है—  
'जो आकर न आती वह जवानी देखी' और देखते ही देखते उसे बुढ़ापा धा बघोचता है जो उसको नैकच जाता है इसीलिए कहा भी है जो आकर नहीं गया वह बुढ़ापा देखी।  
'पतिता जगत्तर' इस अवस्था में जवानी का वह माध्यम होतार्य आई आई को जाता है और मन भङ्ग प्रत्यक्ष विविध पर आते हैं और इस

अवस्था में वह सुन्दर युवा अक्ष पोले मुहू (बिना दन्त के) बाला बालन को न्याई व्यवहार करने लगता है और अक्ष तक प्यार करने वाले चाहते बाले सभी छोटे बड़े उसे पणा की दृष्टि से देखने लगने हैं और चाहते हैं कि जल्दी ही वह इस सवार से विदाई ले। इस चौथी अवस्था में भगवान का हो एकमात्र सहाय रह जाना है। ऐसे सब अक्ष मानव नो उस बेचारी की निनात उपेक्षा ही करते दिखाई देते हैं।

देवस्य पश्य काव्य महित्वाञ्छा  
ममार स ह्य समान ।

तेसी दयनीय चौथी अवस्था में प्रभु अपनी महान उदारता और कृपा से मनुष्य की उपहार उसकी महान्य तार्थ भेजने हैं और वह इन उपहार को पाकर उस लक्ष्मीमान वधनीय अवस्था से मुक्ति पा जाता है। और लोगों को केवल यही कहते सुनने हैं कि प्रभु का विधान भी कैसा विचित्र है कि कल ही जो अक्ष अन्धित चौबिस या आठ इस संसार से चब बसा है। प्रभु ने नानाविध सवार को अक्षत रचना की है और मनुष्य एक बड़ी विचित्र किन्ती के लिए सर्वार्थों और दूतों के लिए सुन्दर और आनन्ददायिनी सिद्ध होती है। सारा सारा इस मनुष्य शब्द तक से मधीन हो जाता है परन्तु सतत कीर्ति जैसे उसी के स्वागत के लिए सर्वथा तैयार रहते हैं। उन्होंने क्या ही सुन्दर कहा है—

जिस मरने से जग डरे  
मेरे मन आनन्द ।  
इस मरने से ही पाइये  
पूरण परमानन्द ॥

मनुष्य एक पहेली है जिस का समाधान आठ तक भी बच नहीं कर सके। यह साधवत है अमीर गरीब, भववान निर्धन, राजा रज्जु विमान प्रतिज्ञान सभी के लिए समान है। ससार में यही एक ऐसी वस्तु है जिस में सब को एकसमान एक स्थान पर आ सदा कर दिया है। इस का सभी जाना साध्याय है, कोई इसके पास से

(श्री पृष्ठ १९२)



## शाक में मांस परोसा

प्राज्ञ दिनांक ३१.१२.८५ के धार्य समाज के साप्ताहिक उत्सव में यह शाकनक नवा धार्यवेध भीर दुध हुमा कि अश्वीगम मुस्लिम विश्वविद्यालय में २५.१२.८५ अष्टम्वर १९८५ को अन्तर्राष्ट्रीय मनोवैज्ञानिक सम्मेलन सम्पन्न हुआ। जिसके सन्दर्भ में सुलेमान हुमा ने धार्योचित रात्रि भोज में धाराहारी प्रतिधियो को धसल भोजन व्यवस्था में पुन नियोजित इन से शाक में मांस का मिखावट की मयी। जिससे महामान में रोष व्याप्त हो गया और उस वृणित काण्ड की

अश्वीगम मुस्लिम विश्वविद्यालय के एक रीडर ने पुलिस से एक जाई भार बज कराई। इस घटना से धार्य वगत की धार्मिक भावना को ठस पड़नी है। उत्सव में बनेक वक्ताधों ने धीर निन्दा की।

हम जिन्ना प्रशासन से धारेवा करते है कि वे इस घटना को गम्भीरता से ले धीर दोषी व्यक्तियों को उचित दण्ड दिया जाय ताकि भविष्य में इस प्रकार की पुनरावृत्ति न हो।

सत्यपाल पंचनदा  
प्रधान

## आर्यसमाज गोविन्दपुरी का वार्षिकोत्सव

वतमान सन्दर्भ में चार सूत्र

—यसपाल सुधाधु

आर्यसमाज गोविन्दपुरी का मुख्य अधिवेशन २४ नवम्बर की बड़ सभा रोह भूतक सम्पन्न हुआ। इस धर-वर पर श्री रामसरण बास धार्य, श्री यशपाल धार्य, श्री बलवीरत धार्य श्री कृष्णाल सुधाधु आदि वक्ताधों ने उद्बोधन दिया। धार्यसन्धेय के सम्पादक श्री सुधाधु ने कहा, वर्तमान सन्दर्भ में धार्यसमाज की शीघ्र विद्या की धीर श्री अधिक प्रगतिधित धीर उद्बुद्ध करने के लिए चार सूत्रों को धार्य की निराला धार्यकथा है। धीर वे सूत्र हैं—१. देवा २ स्वाध्याय ३ उत्सव सङ्कोच ४ वत्सव सङ्कोच।

आर्यसमाज का इतिहास देवा का ज्वलन्त उदाहरण है। महर्षि दयानन्द के धनुषाधियों है देवा करते करते धरने बलिदान दिये हैं। उन्हें धार्य मानकर हम मह स्वरण वक्ते किधरने मन्दिर में हम देवा की पवित्र भावना से प्रवेष्ट करें न कि धर धीर मान पान की इच्छा से। उन्हीने कहा इस समय हमारा स्वा-

## श्री हरिकृष्णनसिंह मलिक को श्रद्धांजलि

स्वर्गीय श्री हरिकृष्णन मलिक की देहान्त हुमा से समस्त धार्य जनम् में शोक व्याप्त हो गया। उनकी स्मृति में १० नवम्बर को धार्यसमाज दीवान हुमा से एक धार्यसन्धेय समा प्रो० वेदरहित की बध्मयता से हुई। इस धरसर पर धनेक गम्भ्यान् महापुरुषों ने विव-धर धार्या के प्रति अपनी श्रद्धा-लितार्थ धारित की। श्री मलिक विदा-रुद्ध देहान्त जब दिल्ली, धार्यसमाज के प्रसिद्ध कार्यकर्ता धारी एव परोप-कारी थे। उन्हीने सेवाधुक्त होने के धार्य धरणा द्वारा समय समाज देवा में व्यतीत किया। वे सत्यनिक मन्त्र स्वभाव, कर्मन्त, धरणी धार्य धिनप्रदा एवं दुःखा से कष्टों में

ध्याय कम होता जा रहा है। धार्य-समाज के पुस्तकालय में नून लगने लगे हैं। पुराने धार्यों में स्वाध्याय का गुण बड़ा विशेष था। धार्य हुमे उत्सव में नियमित पढ़वते का प्रव बेना होगा। धीर मयी, मीहल्लो, पाकों में कथाओं के धार्यजन किये जाने चाहिए। मन्दिरों से बाहर निकलकर देवी का सन्देश जन जन बड़ धनुषना समय को पुकार है। धीर जोना सूत्र है परस्पर सङ्कोच। धार्यसमाज मन्दिर में धार्य जाने महर्षि के सभी धनुषाधों समस्त धार्य सङ्कोच में एक धरने के साथ धनुष्य का धरित मारा है। धर, एक हुमे के दुःख में सङ्कोच होना चाहिए। इस प्रकार परस्पर सङ्कोच धरेंधर है।

इस धार्यिकोत्सव से पूर्ण एक मनोहर वेदकथा भी हुई। जिसमें प्रवचनकर्ता श्री वेदप्रकाश श्रीधर थे। मनोहारी गायक श्री राधक के वचन हुए।

सम्पादकदा धार्यसन्धेय

प्रसिद्ध थे। प्रसिद्ध सन्ध्याधी की धोमानन्द भी ने उनकी समाज देवा एव धान के शुभ की धृति धृति प्रशंसा की। इस धरसर पर श्री डा धर्यपाल, श्री सोमनाथ मर्याद, श्री सामरन्धर दिवादी, श्री धुलकल्य आदि वक्ताधों से उनके प्रति श्रद्धा-वचन कहे।

धनेक समाजवेधी सत्पाधों ने शोक प्रदाय धारित किये जिससे सार्वदेशिक धार्य प्रतिनिधि समा, दिल्ली धार्य प्रतिनिधि समा, धार्य केन्द्रीय सभा दिल्ली, धार्यसमाज दीवान हुमा आदि सत्पाधों धारित हैं।

किरी संसकसदा

## एक भाषा व एक लिपि से राष्ट्रीय एकता सम्भव

सालनब (रायवरेली) वेसवारा डिब्री कालेज (महाविद्यालय) में प्रख्यात महिला उद्धारक, राधुपति द्वारा सम्पानित धार्यसमाजी नेवा श्री देवीदास धार्य ने राष्ट्रीय एकता व धर्यभता विषय पर भाषण देते हुए कहा कि राष्ट्रीय एकता धार्य व भाषा से नहीं होगी इसके लिए सानु-हित कदम उठाने पड़ेंगे। देवा की एक ही भाषा हिन्दी व सभी राज्यों की भाषाओं की लिपि भी एक ही देवनागरी होनी चाहिए। देव में सब के लिए एक ही कानून भी होना धार्यव्यक्त है। सत्पाध विवेक के सिधे धरन से कानून बनाना धनुषित होना।

श्री धार्य ने कहा कि एकता के लिए विद्याधियों में देशभक्ति, स्वाय आर्यसमाज सराय रोहल्ला

### वार्षिक चुनाव

३ नवम्बर, १९८५ को धार्य-समाज सराय रोहल्ला का १९८५-८६ के लिए वार्षिक चुनाव हुआ। जिसमें निम्न पदाधिकारी चुने गए।

- धीमती धार धरमी श्री, प्रधान
- श्री ज्वालाप्रसाध को उपप्रधान
- श्री रोधपाल धर्य उपप्रधान
- उत्तमचन्द मन्त्री
- देवदेव बड़दा उपमयी
- सामवेहः उपमयी
- धानचन्द कोषाध्यक्ष
- सुधीलकुमार प्रचारनधी
- उत्तमचन्द मन्त्री

## आर्यसमाज निर्माणा विहार दिल्ली-१२ का प्रथम वार्षिक उत्सव सम्पन्न

२८ अक्टूबर से ३ नवम्बर तक सेन्ट्रल पार्क निर्माण विहार में बड़ समारोह धुवक भगमा गया। २८ अक्टूबर से २ नवम्बर तक प्रा. ७३० से ८३० बजे सामवेध महा-पन्न व धारि को ८३० से ९३० बजे श्री वैमिनि धार्य की की देव कथा हुई। ३ नवम्बर को प्रात ८ से ९३० बजे की धुवहित हुई धीर १० बजे से दोपहर १ बजे तक धरित निर्माण सम्मेलन धा० रामरणीध की सावधान प्रदान सार्वदेशिक सभा की बध्मयता से हुआ। श्री विद्याप्रकाश देवी मुख्य धारिनि थे। धनेक विद्यार्थी ने पण्य कर धरने विचार दिये।

प्रेम प्रकाश

मन्त्री

सार्यसमाज निर्माण विहार

व तपस्या की धारणा छोटेपन से ही उत्पन्न करना धार्यव्यक्त है। विद्या धार्यामोय हो बहो धरीक धरणीएक साथ रहे तवा सिद्धा प्राप्त करें।

कालेज के प्राध्याप श्री प्रम-धारी सिंह है श्री देवीदास धार्य का धव स्वागत किया गया धार्या प्रवट किया। रात्रि में वेदप्रचारक के सत्पाधधान में प्रयाग मार्ग बोराहा पर धार्योचित विद्याल समा में श्री देवीदास धार्य का धरितनन्दन किया गया। श्री धार्य ने कृपाशुक्त व आति धाद की छोडेन परे बन दिया। धर्य की धर्यभता की रामकुमार रस्तोकी ने की।

रामकुमार रस्तोकी  
धार्यसमाज

## आर्यसमाज विकासपुरी में विराट जन सभा

१० नवम्बर नई दिल्ली। धार्य-समाज विकासपुरी में धर के समस्त धार्यसमाजों की धीर से विराट जन-सभा का धार्योन्नत किया गया। इस धरसर पर श्री डा० महेश विद्याल-कार, श्री० बलरहित, श्री डा० सदाधर, श्री श्रीवेदास धार्य ने धरने कोजनी धर्यों में महर्षि दयानन्द के महान् कार्यों धीर धार्यसमाज की नाभी योषणाओं पर वचन्य दिये। धर की धार्मिक जनता ने बड़ बड़ धान किया।

सम्पादकदा

## निर्वाचन

सभा का वार्षिक चुनाव ११.१२.८५ को धार्यसमाज मन्दिर, धर्योक्त मन्त्र में श्री धरेंनकाध बलमानी की धर्यभता से सम्पन्न हुआ। जिसने निम्नलिखित पदाधिकारी सर्व-सम्मति से चुने गए—

प्रधान श्री राधाराम धार्य उपप्रधान, महाधाय सुवेध धार्य, श्री योगसेन धार्य मंत्री, धरीश कुमार धार्य सङ्घनी श्री चन्द्रमान सतिधा, श्री योगसेन देहवा कोषाध्यक्ष, श्री चन्द्रमान धार्या केकापरीशक श्री यशपाल धार्या अध्यापक श्री नयपाल माटिका धरीश कुमार धार्य मंत्री

धार्यसमाज मन्दिर, धर्योक्त मन्त्र



संसार का प्रत्येक प्राणी स्वतन्त्र रहना चाहता है। जैसे बच्चा पशु टूटने पर भाग जाता है, पिंजरे में बन्द पक्षी यदि निकलने का अवसर प्राप्त कर ले तो उड़ जाता है, पकड़े हुए सपें, बिच्छू आदि भी भाग जाते हैं। यहाँ तक कि कर्षी से पिंजियाचरी से नाना प्रकार के बन्ध प्राणी भागते हुए पाए जाते हैं। धर्मो मोक्षे हो विनो पूर्व एक पिंजियाचर के होते ने ऐसे लोहे के जंजाल को काट दिया। जिसको बन्दर देख भी नहीं लोभ सकता था। उस लोहे को दुबारा पकड़ कर दोहरे पिंजरे में रखा गया है। तो मनुष्य जाति का तो कहना ही क्या ?

संसार के श्रेष्ठतम व्याकरण-आर्य मर्हण पाणिनि ने कर्षी की परिभाषा की है जो पूर्ण स्वतन्त्र हो गया स्वतन्त्र कर्षी। संसार के सभी राष्ट्र स्वतन्त्र रहना चाहते हैं। इसके लिए नाना प्रकार के युद्ध होते धाये हैं तथा होते रहते, यह स्वाभाविक है। परिहार का प्रत्येक व्यक्ति स्वतन्त्र रहना चाहता है जिसके फलस्वरूप परस्पर में सहार्द्र भावे ओ देखे जाते हैं।

स्वतन्त्रता की अनेक मर्यादाएँ हैं। जैसे यदि सभी को स्वतन्त्रता की पूरी पूरी छूट दे दी जाए तो अपना विनाश भी अवश्यभावी है। धर्म-समाज का रहस्य नियम सब मनुष्यों का सामाजिक सर्वहितकारी नियम पाने में परतन रहना चाहिए तथा प्रत्येक हितकारी नियम में सब स्वतन्त्र रहें। इसके आधार पर परतन्त्रता की स्वतन्त्रता है। स्वतन्त्रता वेदवन्त कानून है जिसके आधार पर चलना हो स्वतन्त्रता है।

कुछ लोग तो स्वतन्त्रता का मन-माना अर्थ करते हुए व्यक्तिगत तथा राष्ट्रीय, प्रान्तीय या वर्ग विशेष के आधार पर एक दूसरे पर हावी होने के लिए नर सहार पर तुल्यक भ्रमना तथा पराधीन अहित करने में ही लगे रहते हैं। बलिक देखा गया है कि भारतवर्ष को छोड़कर अन्य देशस्व बहिष्कृत अधिकारी लोग पूर्ण अन्ध्याय पूर्वक दूसरों को दाना चाहते हैं।

हमारे देश का सदा से ही स्वा-भाषिक नियम रहा है कि किसी की भी अन्ध्याय पूर्वक न बचाया जाये। पशुनु हमारे देश पर जिन जिन लोगों ने शासन किया, उन्होंने बड़े-बड़े नर पराधीन कर दिए। इसके लिए इतिहास साक्षी है। पुरुषोत्तम मानव, स्वामी स्वामन्त्र स्वसत्ती तथा अन्य आत्मिकारियों की सेवा-वर्गी अपने के बहु बाव बिच्छुन सत्य

## सच्चे भारत माता के सपूतो जागो !!!

प० ब्रह्मप्रकाश वागीश, पुरोहित  
धर्मसमाज शांतीनगर बाग, दिल्ली-५२

हो जाती है।

किसी भी दुष्ट तथा विशाल भयन का मुस नीब के ने पत्थर होते हैं जो बिलाली नहीं देते। इसी प्रकार से किसी भी स्वतन्त्र राष्ट्र के वंशान्ति-कारी ही राष्ट्रपुत्री भयन के पत्थर होते हैं जिस पर देश उलट रूप से बसा है। धोक की बात है कि उन लोगों के विषय में, प्रामाणिक तथ्यों तथा उनके बलिदानों को जन साधारण की जानकारी से परे रखा जा रहा है।

किसी भी देश की स्वतन्त्रता दिखाने वाले मनुष्य को निमग्न देकर मुखाते है। जिस मोल की बात सुनकर बड़े बड़े योग्य व्यक्ति भी प्रायः भयभीत हो जाते हैं इसलिए कि हमारे देश में अग्रानवीय अत्याचार बड़े होकर प्राणीमान को जाने का पूर्ण अधिकार प्राप्त हो। स्वतन्त्रता के लिए लगभग ४० वर्ष बाव क्या हुआ। तथा क्या हुआ है? क्या इसी के लिए स्वतन्त्रता प्राप्त की गई हो?

स्वतन्त्रता का लक्ष्य क्या था? सोचिए पशु-पक्षियों का बच रोका जाए। अपनी भाषा का सभी स्तरों पर प्रयोग हो तथा भारत विशाल तथा समुन्नत हो। स्वतन्त्रता के पश्चात् गोवंश का नाश, राष्ट्र-भाषा की पूर्ण अवहेलना, विदेशी शक्ति-निर्वाह, जातीय व्यवहार, साक्ष्य भाषा आदि का सेवन, भारतीय-लता का जोरदार प्रचार करने के युवा-सहित को कमजोर करना और देश भारत को पुनः क्षण क्षण करने की मिश्रीभगत चल रही है।

कुत्ता कौन है? कुत्ता कि करके बना करके लाता है। इसी प्रकार हम सब जनों का वसन ला रहे हैं। कुत्ते की नकल कर रहे हैं। अब ज्यों की पूर्ण अवहेलना हम रखा रहे हैं। हम विरोध ही नहीं करते। हम सहनशीलता का दावा करते हैं। हमें ऐसा चाहिए, देश, धर्म, परिवार आदि में जाये। जहाँ इस विचारधारा के लोग होंगे, वहाँ सर्वनाश ही होगा।

ऐ भारतवासियों, यदि आप में

उन आत्मिकारियों का खौलता हुमा रहत है तो क्यों नहीं भारत माता की रक्षा में सर्वस्व अर्पण कर देते। भारत माता के टुकड़े करने वाले तथा पुष्कला की मांग करने वाले कुत्त हैं, सपूत नहीं। उन्हें जाट बांधो। उन्हें खतम कर दो।

याद रखो किसी वृक्ष के मूल में पानी डालने से वृक्ष बढ़गा, फलेगा, फुलेगा भी। इसी प्रकार यदि देश बचेगा तो घर, सड़क, बाग बगीचे, नाना प्रकार के विज्ञान, कारखाने सेहत व्यापार तथा जन समुदाय बचेंगे धम्पना नहीं। देश को बचाओ।

याद रखो प्रत्येक राष्ट्र अपने देश की पूर्ण निभारिता मान्यताओं के आधार पर चलता है। धर्मशास्त्र और परम्पराएँ उसका मार्ग दर्शन करती हैं। स्वतन्त्र राष्ट्र का संविधान होता है। पर हमारे देश के प्राकान-साणी, दूरदर्शन, समाचार पत्र और राजकीय अधिकारी मने डग से मने रास्ते पर चल रहे हैं।

किसी भी देश की स्वतन्त्रता 'करो या नरो' पर आधारित होती है। देवाधुर सपाम सर्वविधित है। महाभारत सर्वविधित है। हमारे अपने घर में कोई धाम लगाने धाये, तो हम तुल्य बाग बुझाने का उप-कण करते हैं। हमारे देश में धाम लगती है। इसे कौन बुझायेगा? जिस देश की युवाशक्ति तुरी तरह कामाग्नि दुर्व्यसन, मद्य-पान, मोहाहार करने में लगी हो, उस देश का महाविनाश सामने ही है। धात सभी सभल जाधो। अगवाही हो। भारतमाता का धग काटना तो दूर, छुने वालों की सपरिवार, समूह नष्ट कर दो। उन का ऐसा लक्ष्य प्रेक्षी से मित जाए, ऐसा प्रयास करो।

जोआबाई, लक्ष्मीबाई, सोता, सावित्री, सुलभा, दुर्गा, काली आदि की सगिनीं नारिणों अपनी अपनी रूपान रूपान ह्राय में लेकर नररूपों को एकजित करके दिखा दो कि हम आरुमाता को दुष्टी नश्वर से देखने वालों की वही रक्षा करती हैं।

युव विरजानंद, स्वामी वधानन्द,

पन्धरोलख धावाद, जिनमिल, अगत-सिंह भाई परमानन्द, सुभाषचक्र, मोर, मोर सावरकर इत्यादि हजारों बलिदायियों का सुन, पुन पा पानी नहीं। यदि आप से रस्त की पवित्रता का तनिक भी धामास है तो क्यों स्वतन्त्र देश को परतन्त्रता की मोर ले जा रहे हो। धामव्यक्तता इस बात की है कि हम एक जट होकर सच्य करें, सभी सकल होंगे। विरोध करो तन मन धन से उन लोनों का जो हमारे देश में रहकर जो रहे हैं और गुण गाते हैं विदेशों का। अधिकार माने नहीं मिलता, मुचबण्डों से छोना जाता है, सचबाई मानो नहीं, मन-बाई जाती है। इस काम को कुकर्मों और धामास से बलहीन लोग नहीं कर सकते। चोर का चोर विरोध नहीं करता। हम प्रकार से हम भी चोर है यदि हम धाराष्ट्रीय सत्तर्षों का विरोध नहीं करते।

यदि आप अपने को स्वतन्त्र सम-भते हैं तो नाम काम मनी बदलने होंगे। मुसलमान प्राये, उन्होंने प्रयाग का नाम बदलकर ललाहबाद कर दिया। धा पोजी ने मो अपने देश की भाषा और संस्कृति के आधार पर भी नामकरण किया। हमें तो अपने नाम धरने डग से रखने चाहिए, पर हम सेक्टर रखते हैं चणोपको, कोकरो मे और धार के पुरम मे क्यों?

तुम सब को महापाप लगेगा यदि भारतीयता को लिलाजित लेकर अपने घरों मे डंडो, मम्मो, पाप इत्यादि महापातक धामों का प्रयोग करोगे। इन धामों का धर्म भूत धार पापी का मोचक है। टीट्ट, नीरट्ट, रीट्ट, पट्ट, पट्ट, मुकट्ट खाम्द भी चरो में चूट गए हैं। हम लोग कोटी और जेजु छोडकर अही बेषभूषा अपना-कर होजें बन रहे हैं। नारी विदेशी नर बचने की इच्छा कर रही है।

आइयो! कहाँ तक लिखूँ। यदि ठीक ठग से लिखूँ तो रोना पड़ता है। तथा विशाल ग्रन्थ बन जाये। आज हर घर का प्रत्येक सदस्य भारतवर्ष का परम शत्रु बन रहा है। विवाह, भोज, चूनाव समा, खेलकूद आदि सभी मे विदेशीपन है। ऐसा लगता है कि अपने देश में कुछ धाम्द रहा ही नहीं। जो संसार लगनमन दो घरव वर्ष तक भारतवर्ष के चक्रवर्ती राज्य को व्यवस्था के अग्रनंदन बनाता रहा, वह आज घटने टेक चुका है। हमों मे कोट है।

कुछ लोग हैं, जो पूर्ण भारतीय हैं पर वे धर्मव्यस्य। उन्हें राजसत्ता, जनसत्ता, वर्गसत्ता तथा चार भाषि

(शेष पृष्ठ ११ पर)

## एक घटना और एक दुर्घटना

लेखक-म०० प्राचार्य विद्वत्प्रवा ध्यान वेदाचार्य एम० ए०  
वेदमन्त्रि बरेली

(घटना)

दीवान बहादुर बाबू हरबिलास जी शारदा उन अभिनयों में थे जिनमें महर्षि के दर्शन किये थे। वे महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती जी महाराज की धनैक बातें सुनाया करते थे। दीवान बहादुर साहब जीवन भर परोपकारिणी सभा के सदस्य रहे।

डा० रघुवीर ससार प्रसिद्ध मण्डू रिसर्च स्कालर थे। दीवान बहादुर साहब ने डा० रघुवीर को परोपकारिणी सभा में महर्षि के प्रश्नों के सम्पादनार्थ रखा। डा० रघुवीर कुछ काम धक्केपर ने काम करते रहे पर डा० रघुवीर यह चाहते थे कि महर्षि के प्रश्नों पर उनका नाम सम्पादन के रूप में छापा जावे पर दीवान बहादुर साहब ने इसे स्वीकार नहीं किया और स्पष्ट कह दिया कि प्रायः रहमान रहे पर महर्षि के प्रश्नों पर केवल महर्षि का ही नाम रहेगा अन्य किसी का नहीं। डा० रघुवीर ओझकर चले गये। दीवान बहादुर साहब ने कोई पर्वह नहीं की। प्रायः दायजगत यद्देखते कि परोपकारिणी सभा द्वारा प्रकाशित सत्यार्थ प्रकाशादि प्रश्नों पर महर्षि का ही नाम है, अग्रज प्रकाशित प्रत्येक प्रश्न पर लम्बी लम्बी भूमिकाएँ हमका गलत उसका गलत केवल हमारा सही है। ऐसी नृ नृ मैं मैं अग्रज से पूर्व सही रहनी है।

(एक दुर्घटना)

महर्षि वेद विज्ञान विद्यापीठ नोएडा गाँवियाबाद में अनाई प्रश्नों की परोपकार लोडकर प्रायः पाठविधि से प्रथमाः सधमः, साधनी, साचार्य परोपकार का कोस बनाया गया है। सरस्वत दुर्गोबिन्दी वाराणसी ने उन्हें स्वीकार करके मान्यता भी दे दी। पर अभी उस कुछ सुचारु की आवश्यकता है अतः महर्षि योगी जी को सत्यार्थप्रकाश सस्कारविधि में लिखित प्रायः पाठविधि दलनी थी। मैं तदर्थ महात्मा अमर स्वामी जी के प्राथम, गाँवियाबाद गया कि सत्यार्थप्रकाश, सस्कारविधि बहा मिल जायते।

महात्मा अमर स्वामी जी उस सत्यार्थप्रकाश को लिये बैठे थे जो मैं पत्र पर अधिक कराया गया

है उसकी अथक श्रुद्धिओं पर निशान लगा रहे थे। वे सब श्रुद्धिओं की सप्रह करके परोपकारिणी सभा को भेजने कि ऐसा अशुद्ध सत्यार्थप्रकाश तात्प्रपत्र पर अधिकृत कराया गया है। मेरे पास वह अशुद्ध नहीं था मैंने पहलीबार उसे देखा। कुछ स्वस्व मैंने भी देखे जैसे सत्यार्थप्रकाश के सप्तम संस्करण में निरुक्त के नाम से प्रमाण दिया है—

‘अथर्वो मन्त्रदुष्टतो  
मन्त्रान् सप्रापु ।’

पर ऐसा पाठ निरुक्त में कहीं नहीं है। वे तीन स्थानों के टुकड़े हैं ऐसा छापना चाहिए—अथर्व मन्त्रदुष्टम् । मन्त्रान् सप्रापु

(एक अथक धक्का)

दीवान बहादुर साहब ने सत्यार्थ

### जीवन संगति

(पुष्ट का लेख)

बचा नहीं है। कृष्ण भगवान् ने भीता में बड़े सुन्दर शब्दों में कहा है—  
जातस्य हि ध्रुवो मृत्यु ।  
मृत्यु जन्म मृतस्य च ।  
यही बात किसी सन्त ने इस प्रकार कही है—  
धर्मिन् परिवर्तनशील ससारो  
मृत को वा न जायते ।  
इसकी शाश्वतता को ध्यान में रखते हुए स्वर्गीय स्वामी कंबलानन्द जी ने भजन की एक कली में कैसा सुन्दर कहा है—

यहा बह-बह विद्वान् हुए,  
बलवान् हुए वनवान् हुए ।  
पर मोक्ष के पत्रों से केवल,  
कोई रचना में आकर बना न ।  
इस मृत्यु के शासन को वेद में भी वही सामिक शब्दों में इस प्रकार वर्णन किया गया है—  
मृत्युरीते द्विपदा  
मृत्युरीते चतुर्पदाम् ।  
तस्मात्प्रा मृत्योर्गोपते-  
हृद्वरामि सभाविभे ॥

अथर्ववेद ८.१.२१  
अथर्वत मृत्यु दो पावनों च चारपावों पर एक सम शासन करती है। पर-  
मात्मा कहता है कि आ, मेरे पास आ, मत भयभीत हो क्योंकि उस दुर्पति मृत्यु ने तो केवल मैं ही तुम्हें ऊपर उठा सकूँगा हूँ। प्रसिद्ध

प्रकाश के टाइटल पेज पर भी डा० रघुवीर का नाम देना स्वीकार नहीं किया पर इस तात्प्रपत्र वाले सत्यार्थ प्रकाश पर सत्यार्थप्रकाश के प्रत्येक पृष्ठ पर सेठों के नाम, दुकानदारों के नाम फर्म के नाम, कम्पनी के नाम पूर्ण पते सहित तात्प्रपत्र पर अधिकृत किए गए हैं। सत्यार्थ-प्रकाश को तात्प्रपत्र पर अधिकृत करने का धमर नहीं बनाया गया है। प्रत्युत सत्यार्थप्रकाश की छाती पर व्यापारियों की पूर्ण पते सहित तात्प्रपत्र पर अधिकृत किया गया है। इसीलिए उन्होंने धन दिया होगा। उस वृत्त को देखकर एक गहरा धक्का मुझे लगा। यदि आज दीवान बहादुर साहब जीवित होते तो ऐसा जघन्य कृत्य कभी न होता। पता नहीं परोपकारिणीसभा के लोग कुछ देखते हैं या नहीं। वह सत्यार्थ प्रकाश समझ नहीं। कोसियों सत्यार्थ प्रकाश का ऐसा नहीं जो मुद्रित सत्यार्थप्रकाश पर बैठा जाता है। सावैदेधिक सभा को इस वृत्त का ज्ञान नहीं है। धार्यगत को चाहिए कि इस तात्प्रपत्र वाले सत्यार्थ प्रकाश को गलत देखे यह कार्यसमाज के इतिहास में एक कलक है। ●

पाश्चात्य चिन्तक (Andrew Jackson) ने भी इस मृत्यु के शासन की इस प्रकार पुष्टि की है—

When death comes, he respects neither age nor merit. He sweeps from this earthly existence the sick and the strong the rich and the poor and should teach us to live to be prepared for death

अन सिद्ध हुआ कि मृत्यु कभी भी धोर किसी को भी या वृद्धों सेती है यह एक प्रतिष्ठा की तरह है जिसका सत्कार करना हमारा कर्तव्य है। यह टाटा जाने वाला कोई साधारण निमन्त्रण नहीं समझना चाहिए।

अन्वको । हृते चाहिए कि इस क्षण अग्रज ससार ने इस नखर जीवन की असांगता को समझ कर इसके पालन पोषण में ही शास्त्र होकर अपना बहुमूल्य समय व्यर्थ नष्ट न करे। युक्तिमता तो इसमें है कि मोक्ष रूपी वज्र गिरने से अचेत होने से पूर्व ही—

‘अधिति धर्मिणावर्तस्व  
सिन्धोमि शास्त्रिणि सह ।’

अथर्व-८.१.०.१.१

वेद विहित कर्तव्य-अथर्वश्रुति करते हुए इस अथर्वसत्यरूप दिव्य-रूप को अपना रख बना ले—  
‘अग्निं पुरा उपनिशोर पिशाचि-

दिव्यरूपमय से कृष्णम् ।

अथर्व ४.१.१

यही बात उपनिषद् में भी कही है—

‘यद्बुद्धयः अत्यन्तसुखतः य एतद्विदुर्मृगान्ते अभवित ।’

इसी क्रमिक जीवन परिवर्तन की विद्वानों ने ‘जीवन संगति’ के नाम से पुकारा है वृद्ध ने इसे ‘वराते जिनगी’ और अज्ञान भाषा में इसको कहा गया है। इस जीवन संगति की एक उर्द्ध सायर ने दरिया के रूप में सम्बोधित करके उससे ऐसे कहलवाया है। यह रचना डा. बर्ष पुरानी है।

सायर दरिया से—

सुना प्यारे दरिया  
कुछ अपनी कहानी,  
कहा से तेरा बहना  
भाता है पानी ।  
किबर जा रहा है  
टहलता - टहलता,  
कदम तोम-तोम धीरे  
बन-बन है चलता ।

दरिया का उत्तर—

पहाड़ी है अपनी  
जन्म भूमि प्यारी,  
ऊँची पें को बसा  
की हस्ती हमारी ।  
या ऊँचे पें सूत के  
रूँ बघना भूना,  
चमन चारू  
जिसके बा एक फूल  
निरुक्त प्राया इकदिन  
मैं दीवाना बनकर,  
मचाता चला शोर  
बा-बा के चक्कर ।  
कहीं फूल पे मुझे  
पें भूक झुकके घाते,  
लजा करते होठों  
मे कुछ मुसकते ।  
पहाड़ी के मोचे मैं  
बहुत उल्लास मूला,  
किनारों के अन्ध  
चला मे मटकता ।  
सगर धन गया वह  
सखी का जमाना,  
वह जाता रहा भोजी  
का सब तराना ।  
धरत तो भाता है कानों  
मे जोरे समन्दर,  
गया कोई दम मे  
पियरी के धन्दर ॥

अतः धन ये यही कहुँगा कि हमारे पाठकों । यदि जीवन की सफल करना चाहते हो, धीरे मृत्यु के अन्त से बचना चाहते हो तो—  
‘नारायण की नीकों का ध्यान रख, यदि चाहता है कल्याण ।  
याद करने को मोक्ष,  
अन्त को जो अमर्याद ॥ C

प्राचीन योग शास्त्रियों ने प्राण किंचा का विकास किया, जिससे अत्येक गुरुपुत्र स धन विहीन होने पर भी धनने जीवन मे स्वास्थ्य-लाभ कर सकता है उन्हीने प्राणायाम नामक एक ऐसो किया का प्रविष्कार एव प्रयोग किया जिसने मानव शरीर मे होने वाले प्राण का नियमन एव सर्वधन मनुष्य के हाथ मे हो गया। मनुष्य मे इनमे न केवल शारीरिक स्वास्थ्य लाभ हो किया, अपितु मन का बशीकरण भी कर लिया।

मुख्य प्राण दस है—प्राण, अपान, समान, उदान, ध्यान, नाग, कूर्म, क्रकल, देवदत्त और वनजन्म।

प्राण—आत्म, कान मे मुख-नासिका द्वारा निकलता हुआ ठहरता है। शरीर के वृत्ति परमाणु बाहर निकलता है। श्वेत धन को पुरीष, जब को स्वैद एव मूत्र और रसावि को वीर्य बनाता प्राण का हो काम है। इसके स्वप्न रहने से पुष्प का बीर्य बढ़ता है एव हिमवत् जगता है। तथा रबी के रजोविकार नष्ट हो जाते हैं।

शरीर के ऊपरी भाग मे यह कार्य करता है। इस प्राण के साथ सूर्य का मुख सम्बन्ध है। क्योंकि दोनों ही जल हैं। इसी कारण परमे-स्वर से शरीर के ऊपर के भाग मे तेजो को बनाया है। इसी सम्बन्ध मे सूर्यादिव होने पर तेजों की शक्ति बढ़ती है।

अपान—वृत्ति वायु को गुदा द्वार से निकालता है। गुदा से मल, उपस्थ से मूत्र और प्रस्रकोष से वीर्य निकलता तथा गर्भ को नीचे ले जाता है। रबी मग्रीधान के समय वीर्य को इस प्रदान वायु से ही प्रगुण करती है। अतएव अपान वायु के प्रशुद्ध-विगमने पर गर्भ स्थिति नहीं होती।

शरीर के नीचे का भाग इसके धारणी रहता है। पाँचव प्रणि के सम्बन्ध से प्रदान को बाल नीचे को है।

जठराग्नि भी पाँचव ही है। इस के ठीक रहने से प्रदान वायु की समता और प्रत्यक्षा होने से विषमता हो जाती है। इसी कारण प्रदान वायु के क्षुपित होने से रोग हो जाते हैं। स्वप्न में वीर्य-पात होना भी प्रशुद्ध वायु के (विगमने पर) निमित्त कारण से होता है।

प्राण व अपान का परस्पर सम्बन्ध यह है कि बिना नाडी से प्रदान वायु नीचे को जाता है उसी नाडी से ऊपर

## जीवनोपयोगी प्राण-शक्ति

—सोमदेव



को बाणी निकलती है। इसी कारण बोलते समय प्रदान वायु नहीं निकलता प्रदान जब प्रदान वायु निकलता है तब बोल नहीं पाते। अतः इस प्रक्रिया का भी ध्यान रखना प्रणि-वार्थ है।

समान—शरीर में सर्वत्र रस पहुंचाता है। अर्थात् भूत धन-जल को पचाकर शरीर के सब अंगों (अस्थि, मेरु, चर्म, बनाये की नाडियों) को तदनुकूल यथायोग्य विभाग देता है।

व्यान—कमल के तुल्य धाकार बाले हृदय मे ही यह रह करपी शरीर का स्वामी जीवन्त रहता है। इसी हृदय में एक ही एक नाडी है। इस एक ही एक नाडियों मे से एक एक की सो-को शाखा नाडी फूटती है। अर्थात् मूल एक ही एक नाडियों मे एक-एक मे तौ-सौ शाखा निकलती हैं। उन शाखा नाडियों मे से एक-एक के बहुतरु-बहुतर हजार प्रतिशाखा नाडियां होती हैं। इन रूत धार नाडियां का रूप १८ नाडियों मे व्याप्त प्राण विवरता है। शरीर में सर्वत्र गति करता है। जिससे शरीर में वेष्टा प्राणि कर्म, जीवात्मा मन के संयोग से करता है। सुप्त एव स्थूल नाडियों मे रक्त संचार करता भी इसी का कार्य है।

उदान—कण्ठमूल में रहता हुआ शिरयस्क गति करता है। शरीर को उठाये रखना और बल-पराक्रम वृद्धि करता इसका कार्य है। यह धन-पान को शरीर की शक्ति परमाणु वायु को सौंप देता है। सुषुम्णा नाडी के साथ नाभि से ऊपर की ओर उठता हुआ पुण्य-कर्म से जीवात्मा की सुख योग की उत्तम सामग्री से युक्त तथा पाप-कर्म के विरहित होने पर दुःख को सामग्री और तिर्यगादि विपन्न प्राण करता है। तथा पुण्य-पान सम होने पर मनुष्य निमित्त प्राप्त करता है।

उदान प्राण के द्वारा ही शरीर के प्राण का बहुधावर्ध के प्राण से सम्बन्ध है। योनी ग्रन्थ इसी के द्वारा स्थूल शरीर से निकलकर सूक्ष्म-लोकोत्पत्ति में वृत्त करते हैं।

नाभ—इसके द्वारा जीकना, बकना, शक्तिवर्धक का वलन कला एव

दस्तावि होते हैं।

कूर्म—इसके द्वारा शरीर मे सकोचनीय कार्य, यथा पलक मारनादि होते हैं।

क्रकल—इसके द्वारा श्रुतिपासा-भूत व्यासादि की उत्पत्ति होती है।

देवदत्त—इसके द्वारा निद्रा, तन्द्रा, जग्रादौ प्राणि शक्ति होती है।

वनजन्म—इसके द्वारा मूर्छा, बेहोशी तथा खरटा अरना प्राणि होते हैं।

विनेचन—प्राण धारण करने की रीति जब ज्ञात हो जाती है, तब चक्षु के शक्तिहीन होने पर भी पुन उत्तम बुद्धि प्राप्त की जा सकती है। प्राण जाने की सम्भावना होने पर भी पुन प्राण की विचरता जा सकती है। योग योगों की प्रशस्यता होने पर भी योग भोगने की शक्तता हो सकती है। मनुष्य पास धाने के कारण सूर्यदर्शन प्रशस्य होने पर भी दीर्घ आयुष्य की प्राप्ति होने के पश्चात् पुन सूर्य को उपलब्ध हो सकती है। प्राण-रीति के प्रत्यक्ष गति रखने से यह सब कुछ हो सकता है।

प्राण, अपान-वि सब प्राणों की प्रतिष्ठा यदि उत्तम रीति से की जाए तो मनुष्य ज्ञान ज्योति को प्राप्त करता है। इस ज्योति से मनुष्य मनसा, वाचा और कर्मणा शुद्ध विज हो जाता है। क्योंकि प्राण हमारा इन्द्रियों का राजा है।

“राजा मे प्राण” (यजु २०:१४) इतना ही नहीं अपितु इन्द्रियों के भोगों का स्वाहाकार जब प्राण-सर्वधन के लिए होता है तब मनुष्य अत्यन्त तेजस्वी हो जाता है। प्राण के सर्वधन एव उत्पत्ति से मनुष्य मृत्यु से भी भयभीत नहीं होता। इस मय को दूर करने में वह सफल हो जाता है। तब परमेस्वर से प्रायश्चित्त करनी चाहिए, मेरा नाक मे प्राण स्थिरता से रहे। मेरा कान, मेरा श्रोत्र प्राण क्षिन्न-निम्न न होता हुआ मेरे शरीर में कार्य करे। यह प्राण मेरा मित्र बना रहे।

शरीर में प्राण की गति ठीक रहने से चक्षुर की बुद्धि होती है और ध्यान की गति से मन-मुक्तोत्तम

उत्तम प्रकार से होते हैं। इन दोनों के बशीभूत होने से शरीर क्षुण्ण पण नोनेग रहता है। अर्थात् प्राण मे शक्ति का सर्वधन तथा प्रदान से विश्व को दूर करके स्वास्थ्य का संचरण होता है।

अतएव इन्द्रिय होने से मनुष्य भोगों की ओर तीव्र गति से जाता है। और पतित हो जाता है। इस प्रकार भोगों मे कसे हुए मनुष्य प्राण शक्ति को बैठते हैं। क्योंकि प्राण मे स्वस्थ प्राण के होने पर ही वीर्य स्वस्थ रहेगा।

जीव गर्भ के अन्दर रहना हुआ भी प्राण-अपान के व्यापार करता है। इसी कारण वहा उसका जीवन चलता है। यह प्राण ही जब प्रेरणा करता है तब जीव गर्भ से बाहर प्रता है।

हमारे शरीर में जो जो इन्द्रियादिक शक्तिया हैं वे सब प्राण के माध्यम से ही कार्य करती हैं। सुषुप्ति दशा में सब इन्द्रियां तमोगुण रूप प्रकाशर समुद्र में डूब जाती हैं। इसी कारण शरीर का स्वामी जीवन्त न देखता, न सुनता और न बोलता है। क्योंकि उस समय मन भी तमोगुण रूप धारक है तीन हो जाता है। तब भी एक प्राण ही मनुष्य को जलता है कि वह जीवित है। प्राण के शरीर से निकलते ही सब इन्द्रियों की शक्ति भी निष्फल जाती है।

प्राण—शक्ति यज्ञ से बलवान् बनती है। अनेक प्रयोगों मे से यज्ञ का एक अर्थ सत्कर्म करना भी है। स्वार्थ परता से प्राण शक्ति का सकोच होता है। तथा पशु-जन्तु की शक्ति का रक्त से प्राण-शक्ति विकसित होती है। इसलिये (यजु ६:१२) मे कहा गया “प्राण यज्ञ के लिए समर्पित हो”। अथर्ववेद में प्राण को श्रोत्रिय कहा गया है। क्योंकि जब प्राण को शक्ति शरीर से प्रगुप्त हो जाती है तब किसी भी श्रोत्रिय का उपयोग नहीं होता। प्राण-शक्ति के बिना सुख में पाने भी अन्दर नहीं जाता।

शरीर में धातु चक्र हैं। मूलाधार, स्वाधिष्ठान, मणिप्रवर, सूर्य, धना-धन, विष्णु, धाता और सहस्रार-इनमें प्राण कार्य करता है। अमश-मुखा से लेकर चिर तत्र धातु स्थानों में से धातु चक्र हैं। पीठ के मध्यस्थ में धनकी स्थिति है। गतिक्रम में सहस्रार चक्र का स्थान है। प्राण का एक केन्द्र हृदय में है। प्राण-अपान धाता प्राण-चक्र को धारण पीछे गति (चैत्र पृष्ठ ८ पर)

आर्यसमाज और बाजू शिव-  
व्रत लाल

एक नया प्रहार—सितम्बर मास के दूसरे सप्ताह के दैनिक पत्राज केमरी के एक प्रक में श्री सुश्रवन्त सिंह का एक लेख प्रकाशित हुआ। यह लेख 'हिन्दू समाचार' उर्ध्व में भी छपा होगा। मैं यदा कदा श्री सुश्रवन्त सिंह के लेखों को विह्वल दृष्टि से देखा करता हूँ। यह मद्बोध हिन्दुओं पर विशेष रूप से आर्यसमाज पर पड़ कर लेने से बूझते नहीं। बलिहारी पत्राज केमरी के सम्पादन को जो हिन्दू जाति पर ऐसे कृपाशुभों के प्रहार करवाने में अपनी उदारता मानते हैं। इस समय मेरे सामने पत्राज केमरी में छपा उपरोक्त लेख नहीं।

इस लेख में श्री शिवव्रत लाल एम ए की बर्बाद करते हुए लिखा है कि वह नई योग्य और आध्यात्मिक व्यक्ति थे। वह एम ए में एल एल बी थे। इस विभूति को पं० हसराम (महात्मा हसराम) बहु सा० लाकपत राय आर्यसमाज, नैला, धार्य गजट का सम्पादक बनाया। किन्तु आर्यसमाज के नेताओं द्वारा दूसरे मती की भावना से मुझे हीकर आर्यसमाज को छोड़ गये। होशियारपुर के श्री फकीर बदन के उत्तराधिकारी बने। शिवव्रत लाल जी राधा स्वामियों की दयालु भाग शास्त्र के पुत्र बने और दाता दयाल नाम से सम्मानित किये जाते थे।

वेद है कि आर्यसमाज ऐसे भूट की पोल खोलने से प्रभाव करता है। आर्यसमाज पर बनी बरुवाई से प्रभाव किये जाते हैं और वेद पता ही नहीं चलता।

सुश्रवन्तसिंह जी को पता ही नहीं कि दाता दयाल शिवव्रत लाल आर्यसमाज में लाए नहीं गये, वह आप ही आप थे। इन्हें यह भी पता नहीं कि एक युवक को प्रोत्साहन देने के लिए उन्हें धार्य गजट का सम्पादक बनाया गया था अन्यथा आर्यसमाज में तब प्रख्यात दार्शनिक डा० दीनानाथ उन्नीस युवक धार्य गजट की सेवा करने के लिए थे। भाई परमलाल जैसे प्रतिभाशाली स्वस्वी विद्वान् की लेखनी को तब प्रथम मणी हुई थी। श्री शिवव्रत ने धार्य गजट नहीं छोड़ा, उन्हें धार्य गजट छोड़ना पड़ा था ऐसे कहिए कि मैंने धार्य गजट से हटाया गया, धर्मनिरपेक्षता के कारण। वह धर्मनिरपेक्षता क्या थी? इस पर धर्म

## कुछ तड़प कुछ झड़प

लेखक—प्राध्यापक राजेन्द्र 'जिज्ञासु' वेद सदन अग्रोहर

मैं कुछ नहीं लिखता। यह महात्मा हसराम जी की सज्जनता थी कि उन्होंने इस पर कोई कड़ा दण्ड न दिया।

श्री शिवव्रत लाल जी तो बेदाती भी बने। वह स्वामी राम तीर्थ में भी गीत गाते रहे। फिर वेदान्त क्यों छोड़ा? श्रीमान् जी यह तो यहाँ से रहा, वहाँ से रहा, वहाँ से कहीं और चले गये हो रहे।

रही लखन के कारण आर्यसमाज की छोटने की बात तो भी खूब कहो। शिवव्रत लाल जी ऋषि के गीत भी गाते रहे तब क्या उन्हें पता नहीं था कि आर्यसमाज धर्म-विक्रम तो का लखन करता है?

राधा स्वामी मत ने क्या दूसरी का लखन नहीं किया? राधा स्वामियों की पुस्तकों में आपने लिख मत का भी खूब कर लखन किया गया है, पुराना हो तो दाता दयाल जी के उत्तराधिकारियों में से राधा स्वामी गुरु साहिब जी महाराज का साहित्य पत्र लीजिए। राधा स्वामियों का शब्द लेख है कि पुर्व के ऋषि, मुनि महात्मा, व्यास, वसिष्ठ चामरुण्य और इत्यादि के नवी भी सब भटके हुए थे। दाता दयाल के जिन फकीरचन्द जी (परम दयाल) की आप स्तुति कर रहे हैं उनके कहने हैं—“तो सब के सब वास्तविकता से अपरिचित थे।” राधा स्वामी गुरु जी का वचन है—

“नही धार्य परमात्म मानूँ”

किन्तु लिखा है “अस्माहं क्षुदा स्तूयन् न मानो”

“ऋषि मुनि सब  
कोखा खाया।  
नया व्यास  
वसिष्ठ भुजाया।”

ईसाई मत के सत्यापक ईसा वा जैन तीर्थङ्करों पर भी पोट की गई है। प्रमाण चाहिए तो हम दे दें। वैसे धर्मार्थ प्रमाणिक सर्वोक्षा तो बलिदान है। यदि सम्म समाज में विचारक शास्त्र बर्बाद करते हुए मुक्ति या प्रमाणी से एक दूसरे का लखन करे तो इससे खबराना नहीं चाहिए। सन्त फकीर ने क्या खतना (कुल्ल) की, मुक्ति पुत्रा खतना की थीकी आलोचना नहीं की? सिख

पुस्तकों ने क्या दूसरों का लखन नहीं किया?

जिन परम दयाल फकीरचन्द की की सुश्रवन्त सिंह बर्बाद करते हैं, वह परम दयाल धार्य प्रवचनों में अपनी बर्बाद धार्य ही कर लिया करते थे और उनके द्वारा दूसरों का लखन पड़ना हो तो 'वनता अनार्दन' साप्ताहिक होशियारपुर का ८/१५ अर्बस १९०१ ई० का एक ही अंक याद से धन्य तक पढ़ ले, सब पढ़ा चल जावेगा। अत आर्यसमाज पर लखन का कटास करना अपनी भ्रमनता की बर्षाती है। यह सस्ती लोकप्रियता पाने के लिए एक कायरता पूर्ण प्रहार है।

यह छापवेषी समाज सेवक—

अग्रोहर में १८-११-१९२५ ई० को एक शिव मन्दिर का शिला-निष्पाद किया गया। इसकी पत्र अनेकों लोगों को निमन्त्रण पत्र भेजे गये। शिवलिङ्ग पूजा के लिए बनाए गये इस मन्दिर के मंचालक कीर्तन, यह पत्रकर पाठक कोक पढ़ेंगे। उस निमन्त्रण पत्र के नीचे सवालक के रूप में दो नाम हैं एक है बा० हसराम धार्य जी धर्म विधान सभा का चुनाव लड़ रहे हैं और दूसरे महा-पुरुष हैं बा० राजकुमार चौहान। यह धीमान् धर्म इस बड़ी हरियाणा के नमोला कस्बा के डी० ए० बी० कालेज के धार्या हैं। यह मद्बोध एक ही समय में दो दो आर्यसमाजों के सदस्य रहे हैं और श्री हसराम धार्य महा के धार्यसमाज के प्रधान रहे हैं। श्री चौहान बड़ी महानुभाव हैं जिनकी वेसों ने अपनी देहलो की बलिदान सत्ताब्दी के नगर कीर्तन का नाव लीपा था। ऐसा मैंने तब पढ़ा था। धार्यसमाज की सम्मोक्षा से लोचना है कि मोट मोट के बक दे फले कोनों से समाज को लेंड बचाया जावे। सस्ती लोडरी के लिए धार्य छापवेषी में कई प्रकार के कोष समाज का प्रगटि कर रहे हैं। पुराने धार्य समाजी वैदिक संप्रदाय वा वैदिक संस्कारों का प्रचार करने के लिए रड़ प्रगति है। उन्होंने कितने कष्ट रहे। और विरोध का सामना किया परन्तु इनमयाए नहीं। बाएँ ऐसे महापुरुषों के समाज को बर्बाद।

कुछ भूषो का सुभार—

धार्य प्रादेशिक उपसभा हरियाणा में महर्षि बलिदान सत्ताब्दी पर एक स्मारक का निकाशी मुझे यह स्मारक धर्मो धर्मो प्राप्त हुई है। इसमें मेरे लेख में छोपे की भयुधियों के कारण कुछ भयङ्कर भूषों हुई हैं। धार्य सन्देश द्वारा मैं कुछ का सुभार करना चाहता हूँ। कारण यह है कि यह भयङ्कर महत्त्वपूर्ण बातें हैं—

राध युधिष्ठिर सिंह देवाड़ी बाबा की पत्नी प्रथम भारतीय महिला थी जिसे भारतीय नव जागरण के उस काल में किसी स्त्रिय ने कोई पद दिया। यह देवाड़ी के आर्यसमाज की प्रधान चुनी गई। स्मारिका में राध युधिष्ठिर की की पुत्री छपा है। यह झूठ छोपे की है। वर्तमान केन्द्रीय मन्त्री राध बीरेन्द्र सिंह उन माताजी के प्रपौत्र हैं।

मेरे लेख में कुछ पतितयों कर्तव्या लाल की धर्मलक्षारी के बारे में छुट गई जिससे वेदराज के महापुत्र मुहम्मद उमर का नाम अशुद्ध छपा है उनका नाम ऋषि ने श्री अलखारी लिखा था। गुजरापुर के श्री लाला हरजस राव (मीलाना प्रभुल प्रजोज) Extra Asst Commissioner का नाम भी अशुद्ध छपा है। खोज करने वाले विद्वान् नोट कर ल। □

प्राण शक्ति

(शुद्ध ७ का धर्म)

होती है। प्राण का एक भाग सारी की शक्तियों के साथ सम्मन्ध रहता है। दूसरा भाग धार्या की शक्ति के साथ सदैव सम्बन्ध बनाये रहता है। जीवात्मा ही प्राणी का आधार है। इसी के धार्य से शरीर के बीच प्राणी की र्थित रहती है।

निरुक्त—जो मनुष्य तत्त्व से प्राण को जानता है वह जीता हुआ ससारी सुख भोगकर प्राणायामादि रूप योगाभ्यास करके धार्यज्ञान मुक्त हुवा मरने के पश्चात् मुक्त हो जाता है।

पता --

डी० ए० बी० स्कूल  
सालीमपुर बाग, दिल्ली





## रूढ़िवादिता के खिलाफ जंग की शुरुआत

मुस्लिम समाज इन समय बहुत बुरा हाल में है। १५०० साल बाद इस्लाम ने यह भूकम्प धरिया है जिसने इस्लाम की बाँधों पर पड़ती दोवारों को हिलाकर रख दिया है। रूढ़िवादिता के जहाँ की बहाने वाले मुस्लिमों के दिमाग पर शाहबाजों के से ने कराया झटका दिया है। ये इस समय मुख्य हैं कि कहीं रूढ़िवादित बहुत मुस्लिम समाज धरिया धरिदारों को पहुँचाने न लग जाये और उनका बहुत समायत्त न हो जाये। बुधमोर्कोट के इन फंसले को जो कुरान के दायरे के अंदर बिना पकड़ जा है हज़रत पकिम हुषा है उसे गलत साबित करने वालों के साथ हिन्दुत्ववादी अबाज तक सीमित नहीं है बल्कि इसको सीमा सवार के सारे मुसलमान देशों का परिधि तक फेला हुई है। वास्तव में शाहबाजों के का यह फलला इन बातें देशों को खुली ज़ुनूत है जो हम को बाह लेकर भीरता पर चोर धर्याचार करते हैं और उनका धमिकारा हज़म करते रहे हैं। यह क्रान्तिकारी कदम उन लोगों के विरोध में है जो भारत को भारत को उतक सही धमिकारों से बचत करते रहे हैं। शाहबाजों के से यह स्पष्ट है कि वह बड़ाई केवल मान मुस्लिम शाहबाजों का साराई नहीं है बल्कि इस बड़ाई में हर वह भीरत मानिम है जो किसी भी धन, समाज देव का ही और धर्याचारों को किसी भी रूप में सहन कर रही हो। सम्भवत इन्हीं बड़ाई भीरत विलुतता के कारण इसका विरोध इतना व्यापक हो रहा है कि बिना बयानबाज में है।

शाहबाजों की धारों १९३२ के इन्दौर के एक बकोनो जो मुहम्मद अहमद के साथ हुई थी। १९७५ तक पाँच पला का जीवन बड़ा सुखमय बीता। मसलम जीवन के कामतो ४४ वर्ष का बेगम शाहबाजों ने अपने पति के साथ बिताये हैं और उल्लास रहे। १९७५ के पति मुहम्मद अहमद ने यकायक बेगम शाहबाजों का घर से बाहर निकाल दिया। बेगम शाहबाजों १९ वर्ष का बुढ़िया हो चुकी बा। इस उम्र में किसका धारता दु उठी। कौन इस उम्र में उसे पला ल्वाकार करता। धारित उसे धरातल ही एक सड़ा दिखानो दो। और उतने इन्दौर के म्यालय मन्त्रिपुत्र की बदालत में चौबकारी कानून के बहुत १२५ की धारत घ घने पर ५०० रुपये प्रति-मास घर पर पायस का कामतो का। न्यायालय ने बेगम शाहबाजों के पक्ष में निर्णय दिया और मुहम्मद अहमद का २५ वर्षे अर्धबाज के का धारित दिया। यह निर्णय अहमद १९७१ में दिया बा कानूनी का यह राशि अपने साथ के लिए बहुत कम बा। उन्होंने अहमद उम्र न्यायालय में न्यायिक मन्त्रिपुत्र के फल पर पुनराचार के बिन्दु धारित दायर की। जुलाई १९५३ में उच्च न्यायालय ने मुहम्मद अहमद को ७७६-५० २० प्रति माह देने का धारित दिया। इस मुहम्मद अहमद ने सर्वोच्च न्यायालय सुनो में देने बाधिका दाखिल कर उच्च न्यायालय के निर्णय को गलत बताया। सर्वोच्च न्यायालय के पाँच न्यायाधियों का समकर्मिक पाठ न इस धारित। सर्वोच्च न्यायालय को इसमें प्रमुख मुख्य न्यायाधीश था बाई १० वज्रचूड ने। पाठ ने मुहम्मद अहमद को धारितों को धारित किया। देश के इस सर्वोच्च न्यायालय को पाठ न निर्णय दिया कि "एक उलाक़ुदा मुस्लिम भीरत तब तक अपने पति पति को पला कड़वाएगा जब तक वह बहुत सारी धारों कर लेती। धार बा १२५ के अन्तर्गत एक महिला का यह धमिकारा प्राप्त है कि उसका पति उसे जीवन यापन का धारित है। पर्सनल ला के प्राव-धों के मुसलमानों से कोई लेना देना नहीं है।" मुस्लिम पर्सनल ला से यह मान्यता है कि इतने को समयावधि में पति धरनता पला का जीवन यापन का धारित देगा। इतल तीन मास तक की वह बरधि है जिसमें पला पाक जीवन लेती हुए किसी दूसरे मर के साथ बली सारा सम्बन्ध नहीं रख सकती। इसके बाद ही वह दूसरी धारों कर सकती है। सुप्रीमकोर्ट ने अपने निर्णय में यह स्पष्ट किया कि भारत १२५ के अन्तर्गत एक मुस्लिम पति को अपने पलाक़ुदा पला को इतल को धारित के बाइ को जीवन यापन का धारित देना होगा। धर्यात्मिक पाठ ने भीर स्पष्ट किया कि "सही स्थिति यह है कि पति उसकाधुदा पला जीवन यापन करने में सक्षम है तो इतने के बाइ पति को किन्हेवारा समायत्त हो जातो है, उसे बाध देने को बरकत नहीं। बिना न्यायाधीशों ने कहा कि वह कड़वा उल्लास नहीं है कि एक मुस्लिम महिला धार १२५ के अन्तर्गत जीवन यापन धार की माँग नहीं कर सकती।

मुस्लिम पर्सनल ला में 'भेहर' वह राशि नहीं जिसे तलाक के वक्त दिया जाये।" न्यायाधीशों ने यह भी कहा कि धारा १२५ अपने चरित्र में पूरी तरह से धर्म निरपेक्ष है। यह मजाम में शुद्धता के लिए प्रतिबद्ध है। सर्वधार्मिक पाठ ने पूरे देश में सभी वर्गों के लिए समान सिविल कोर्ट बनाने का सुझाव दिया। उससे राष्ट्रीय अखण्डता मजबूत होगी। विद्वान न्यायाधीशों ने यह भी कहा—"भारतीय सिविलान का ४४वा अनुच्छेद मृतपत्र" बनकर रह गया है जिसमें कहा गया है कि सरकार को पूरे देश में समान सिविल कोड लागू करके को मान्यता दिलाने के प्रयत्न करने चाहिए।

सर्वोच्च न्यायालय के इस निर्णय को लेकर पूरे देश में एक बार तहलका मचा। सरकार के अन्दर धार बाहर इसके पक्ष धार विपक्ष में मत प्रकट होने लगे। केन्द्रीय सरकार के दो मन्त्रियों ने इस विषय पर बड़ी बहादुरी के साथ परस्पर विरोधी विचार व्यक्त किये। प्रमुख नेता जकर मुस्लिम समाज को समय के साथ चलने की सलाह दे रहे हैं। जनतापार्टी के महासचिव संयद शाहजुदीन ने सर्वोच्च न्यायालय के निर्णय को मुसलमानों के धार्मिक मामलों में दखल माना।

मुस्लिम पर्सनल ला में सुधार करने बाता भारत अकेला देश नहीं है। सबसे बड़े मुस्लिम राष्ट्र पाकिस्तान में इसमें विशेषता हो चुका है १९९१ में वहाँ यह कानून बना दिया गया बा कि कई धारिणी करने से पूर्व सरकार को मज़ूरी लेनी होगी। उसके अलावा टर्की, मिस्र, इरानेशिया, अलजीरिया टयुनिसिया, मोरक्को, सीरिया, जोर्डन व सुदान बाधि देशों में इसमें संशोधन हो चुका है। इन सबसे अवर इस्लामी गणराज्य ईरान की सर्वोच्च न्यायिक कीर्तिल ने पलियों के हकी की रखा के लिए कुछ निर्देशक सिद्धांत जारी किये हैं। जिसके दो भाग हैं। शायी के वस्तु मरिज अफसर धारी के इतिफिकट पर हर निर्देशक सिद्धांतों की प्रतिका पत्नी को देता है। एक भाग के वस्तु पति पत्नी को तलाक देता है तो पत्नी के वस्तु धमिकारा है, इसका कुचाबा और दूसरे में पति के अलावारा से तब धमिकार पत्नी द्वारा तलाक देने वाले के धमिकारा को बावत जानकारी है। वह १२ धमिकारा ईरान में पत्नी को देने गये हैं।

और इतर भारत के मुसलमान कह रहे हैं सिविलान के अनुच्छेद ४४ को बा तो समायत्त कर दिया बा अबा मुसलमानों को इसका धमिकार होल से बाहर रखा जाये। बाइ तो पर भाव इष्टिया मुस्लिम लोग के अग्र्यता सुलेमान सेठ और मुस्लिम पर्सनल ला बोर्ड यह शोर मचा रहे हैं। शाहबाजों बेगम ने ७ साल छोटी धरातल से लेकर बड़ी बदालत तक बड़ी दिनेरी के साथ वह मुकदमा लड़ा है। धारित किसी मोली में उसका नुह माँगा कल कानूनी के साथ धा हो गया। परन्तु कटुपक्षी मुस्लिमों का दबाव को उस अबा पर ललातर पड़ता रहा और वही हुषा जिसका उर था वह मुक गई। उसमें सर्वोच्च न्यायालय के फैसले को धारित लेने को भाग कर दो। कुछ सुधारवादी मुस्लिम सचकों ने यह धारित लगाना कि रुढ़िवादी मुस्लिम सचकों के दबाव के प्रकर हो उसने अपना ताजा वक्तव्य दिया है। ५०५ मुख्य न्यायाधीशों की बाई १० वज्रचूड ने कहा है कि इस फैसले से एक सामाजिक उल्ल-मुल्ल पैदा हो गई है जिससे यह निष्कर्ष निकलता है कि फैसले पर पुनर्विचार हो। उन्होंने कहा इस फैसले से सर्वो-यत में हलतपक्ष के धारोप का कोई दम नहीं है। बदालत को कुरान के धारों में शरीयत की विवेचना का धमिकार है। श्री वज्रचूड ने कहा इस फैसले को बिना लड़ा हुषा है उसके लिए मुसलमान कटुपक्षियों की योग-न्यता और किसी परिवर्तन को व ल्वाकार कर सने के रवने को ही दोषी ठहराया जा सकता है। उन्होंने कहा इस फलने के विरोध में यह सिद्ध हो गया है कि इस तरह के फैसले को समाज में जबरदस्त बाधकता को।

हमारा कहना इतना ही है सरकार ४४वे अनुच्छेद के अनुसार समस्त देश में एक कानून लागू करना चाहिए तथा समय को धारित के साथ बचता बाधि।

—बासगत बुचाबु



आर्य युवको !

इस समय विश्व का प्रत्येक राष्ट्र यह वष ऋतु - टु य यु प न रूप से म - रहा है। हमारे देश में भी ११ जनवरी १९८६ को स्वामी विवेकानन्द के जन्मदिन ५१ हजारे बुवा प्रधानमन्त्री श्री राजीव गांधी ने युवावर्ष का उद्घाटन किया था और ११ जनवरी को युवा दिवस भी घोषित किया। उस समय यह धारा बची थी कि हमारी सरकार युवावर्ष को एक रचनात्मक दिशा देगी और युवा शक्ति का देश के विकास के लिए उपयोग करेगी। पर मुझे यह कहते हुए अत्यन्त दुःख हो रहा है कि युवा वर्ष समाप्त होने को है, पर अभी तक देश में न युवकों को कोई रचनात्मक दिशा दी जा सकी है न देश के विकास के लिए उनका कोई सदुपयोग किया गया है और न उनके लिए किसी कार्य को कोई ऐसी योजना बनी है, जिससे वे सामाजिक न्विगुं हो।

युवावर्ष के नाम पर इस देश के कुछ युवक आरक्षी में धावोलित युवा समारोह में भाग लेने के लिए गये थे, पर वहाँ पर इन युवकों ने अपनी जिस बिलासी शक्ति का परिचय किया उससे मेरे देश की प्रतिष्ठा पर भाव धारें। नवम्बर मास में दिल्ली विश्व विद्यालय की ओर से निगुंट देशों के युवकों का एक सम्मेलन लगाया गया। पर यह सम्मेलन भी युवकों के लिए किसी रचनात्मक योजना पर विचार नहीं कर सका।

मैंने बचपन में एक कविता पढ़ी थी, जिसकी पहली पंक्ति थी— 'बताए तुम्हें जवान जवानों किसको कहते हैं, बंजरा को जीवनदान जवानों उसको कहते हैं।' इस पंक्ति में जीवन को किसी आनुविशेष के साथ नहीं बांधा गया, बरन उसे एक गन्धि और ऊँची भावना के साथ सम्बद्ध किया गया है। युवक वह है जो स्वार्थों को तिलालि देकर निःस्वार्थ और परप्रेमकार की भावना से रोद्ध, नहीं नती विवेक के कल्याण के लिए आत्मसमर्पण की भावना रखता हो जिम समय महर्षि दयानन्द ने आत्म-साधना की स्थापना करके आत्मसमाधि का लक्ष्य मन्त्रेद का यह वाक्य कि कृष्णजी विश्वमायम् स्थापित किया था, उस समय में भी आर्यजन ने यही भावना भरना चाहते थे कि वे अपने स्वार्थों को छोड़ दें और प्रतिबद्ध ब्रह्म करते हुए विश्व के कल्याण के लिए अपना हाथि, आत्मबलिदान मानना से भर डठ।

याद रखो, हमें विश्व को आर्य

## युवा वर्ष पर आर्य युवकों के नाम सन्देश

डा० प्रसाद वेदालकार

और ससार में जितना प्रशिक्ष है, जो प्रकल्पमाणकारी है, दुष्ट स्वभाव व दुष्ट कर्म हैं उन सबको नष्ट करना है। मन्त्रेद ने ससार को अष्ट बनाने की जहा प्रेरणा दी वहा ससार की दुष्ट प्रवृत्ति को नष्ट करने का आदेश भी दिया।

याद रखो ससार को अष्ट बनाना है तो पहले हमें स्वयं अष्ट बनना होगा। साथ हीर मानवीय दुष्ट से ऊँचा व्यक्ति हो दूसरे को संतर्क पर प्रेरित कर सकता है। जो स्वयं दुष्ट है वह दूसरों को दुष्टता को दूर करने की बात सोच भी कैसे सकता है ?

जब मैं तुम्हें कहता हू कि तुम अष्ट बनो तो मेरा अर्थ होता है कि तुम्हारा शरीर व्यक्तित्व है। तुम शरीर से पुष्ट बनो। यदि तुम शारीरिक दुष्ट से अस्वस्थ और दुबल हो तो तुम भीमे योग्य भी नहीं हो। तुमने पखा और सुना होगा— वीरयोग्या वसुधा बहू धृष्टी कीरों के भीमे के लिए ही है। तुम्हें अपने वे कीरों की भावना भरनी होगी। बरना कि तिम अपनी मांसपेशियों को पुष्ट करना होगा। उनके लिए प्रतिदिन कठिन परिश्रम और व्यायाम करना का अपना स्वभाव बनाना होगा। कालिदास ने वहा था— शरीरमाधु खलु धर्मसाधनम्। शरीर धर्म का अपने कर्तव्य की पूर्ति का प्रथम साधन है। यदि हमने ससार को अष्ट बनाने का अपना कर्तव्य पूर्ण करना है तो पहले अपने शरीर को पुष्ट बनाओ। मुझे तुम्हें यह भी बनाना है कि कीरता या पुष्ट शरीर न तुम्हें निर्बल व अनाथों की दुष्ट स्वभाव से रक्षा करेगी है। वरन व पुष्ट होने का अर्थ किसी को अनाथ व क्षय रूप से देवाना या प्रताड़ित करना नहीं है।

जब मैं तुम्हें अष्ट बनने के लिए कहता हूँ तब तुम्हें अष्ट और तीक्ष्ण अस्तित्व बना बनने की भी प्रेरणा देता हूँ ताकि तुम अपनी अक्षर बुद्धि से अपने प्राण शरीर का ठीक उपयोग कर सको। तुम्हारा अस्तित्व ऐसा हो जिससे नीर और विवेक की समता हो। सत्य को पहचानने और प्रत्यक्ष को त्यागने की समर्थता हो।

समय पर ठीक निर्णय ले और इतना विकसित हो कि बहा भी नये ज्ञान को ग्रहण करके मैं अष्ट बन सकूँ। तभी तुम अष्ट बनोगे कि विश्व में क्या है और क्या है। जब तुम्हें ससार के दुष्टों को नष्ट करने का कार्य सौंपा गया है तो बिना विवेक व ज्ञान के तुम यह काम नहीं कर पाओगे। ससार में कौन दुष्ट है और कौन साधु ? यह बात तुम बिना अष्टके अस्तित्व के नहीं जान सकते। अपना अष्ट अस्तित्व करने के लिए तुम्हें सदा अपने माता पिता, किसी अष्टके गुरु व पर-प्रदत्त के सम्पर्क में रहना होगा ? उनके प्रति तुम्हें आस्था रखनी होगी। मीमांसे ने कहा है— 'अज्ञानान्न समेत ज्ञानम्' अज्ञान व विश्वास से ही अस्तित्व में नित नया ज्ञान आता है और विवेक शक्ति अज्ञान है। जो विचारधारा अज्ञानता का प्रचार करती है वह है। प्राण ससार में एसी अज्ञान पर आधारित अनेक विचारधाराएँ हैं जो व्यक्ति को अज्ञानता का पाठ पढ़ाकर उनके अस्तित्व को धिक्कृत कर देती हैं। तुम्हें उन सबसे बचना है। मैं तुम्हें कहना चाहता हूँ कि तुम महर्षि दयानन्द के सिध्य हो ऊँची के प्रश्नों का मनन करो और उन्हें से अपनी विद्या निर्धारित करो।

पर याद रखो दुष्ट शरीर और स्वस्थ अस्तित्व वाले व्यक्ति ही अष्ट आचार्य के बोधा देखे गये हैं। मैं तुम्हें अष्टके चरित्र का भी उल्लेख देना चाहता हूँ। कोई भी ऐसा काम मत करो जिससे अपने पशुपुत्र गर्व न हो। अष्टके चरित्र के निशानों यही हैं कि व्यक्ति अपने किन्हीं हुए काम का हर जगह वर्चन कर सकता हो। यदि तुमने कोई ऐसा काम किया है जिसे तुम किसी को बता दो नहीं सकते तो वह निषिद्ध कर्म है, उससे बचो। तभी चरित्र पुष्ट होता है।

यह सब है कि आज के युग में सत्याचरण करने व ईशानबारी से रहने में अनेक कठिनायियाँ होती हैं। पर तुम जिस ऊँची कीर महान् सत्या से सम्बद्ध होओगे कि वेब पुत्र महर्षि दयानन्द की तुम सत्याओं को जल्द ही अष्ट की कठिन गति

स्मरण रखो तुमने वही काम करने हैं जो दूसरों के कल्याण के लिए हो। यदि हमने किसी काम से किसी को हानि होगी उसे कभी मत करो। महाभारत में धर्म की परिभाषा आत्मनः प्रतिक्रान्ति परेशान ममाचरेत' के रूप में की गई है। दूसरे के प्रति वहा व्यवहार करो जैसा व्यवहार तुम दूसरे से चाहते हो। तुम्हारे किसी नाम से किसी का दिल न दुखे। बरन तुम्हारे कामों से दूसरों का कल्याण होना चाहिए। महात्मा तुलसीदास ने 'परहित सत्य धर्म महि कोई कह-कर मनुष्य को वही प्रेरणा दी थी। महर्षि दयानन्द ने भी अपने प्रश्नों में बारम्बार यही कहा है कि सपार का उपचार करना हम सबका परम धर्म है।

मैं यह सब तुम्हें इसलिए कह रहा हूँ कि देश का युवक ब्रह्म आज किर्तव्य विभूत है वह कुछ करना चाहता है पर उसे कुछ समझता नहीं है। उनके सामने आज कोई धारण नहीं है। मुझ विश्वास है कि अज्ञान के सिध्य उनके लिए आदर्श सिद्ध होंगे।

महर्षि दयानन्द और आर्यसमाज की प्रेरणा से देश को स्वतन्त्र करने के लिए इस देश के हजारों युवकों ने अपनी कीर्तिश्री दी। आर्यसमाज के लो वनों का इतिहास इस बात का सक्षी है कि आर्यसमाज ने देश की स्वतन्त्रता में महान योगदान किया। श्री धराम जी कृष्ण वर्मा ने विश्व में इहिकव्य होयकरु लीग की स्थापना करके वैदिक संस्कृति का प्रसार विश्वो में भी किया, जिस से देश का स्वाभिमान जागा। लाला लाजपतदा स्वामी अज्ञानान् भाई परमानन्द, सरदार अजीतसिंह, श्री मदनमोहन मालवी, श्री रामदास बिस्मिल, श्री मैदानलाल, डा० रोशन सिंह श्री सरदार भगतसिंह, श्री सुखराजसिंह श्री हरविशाल सारदा तथा अन्य अनेक स्वतन्त्रता प्रियों ने महर्षि से प्रेरणा प्राप्त करके देश की स्वतन्त्रता के लिए अपने को बलिदान किया। मातासरार के मीपला विरोध, राजस्वान व बंगाल के प्रकाश विचार के भूकम्प, देश-विभाजन और स्वतन्त्रता प्राप्ति के बाद सन् १९४७ में पञ्जाब में हिन्दी, रसा-शास्त्रोत्तर बाहि द्वारा आर्यसमाज ने सदा अग्रगण्य के विवेक धर्म के विचारों में आरंभ होता। का स्व

देश को स्वतन्त्रता दिलाने में, देश की कुटिलीयों व अग्रगण्यसो के विचारों में आरंभ होता। का स्व



**महाशियां दी हट्टी (प्रा०) लि०**  
944 इण्डस्ट्रियल एरिया सी० नं० अरर नई दिल्ली 110008  
फोन 639606, 637987 637341

दण्डन का दर्ज

**युवा वर्ष में यदि तुमने योगन के वास्तविक भाव्यों को ग्रहण करने जीवन**

प्रचार-विभाग  
संस्थापक

सिन्धी भाषा में लिखित तथा १५, हुजुवात रोड, नई दिल्ली-१ कोष : ११-१५ के वि. सं० पर्याप्त मात्रा में उपलब्ध एवं प्रकाशित तथा  
वैदिक वेद, नवी सं० १५, केंद्रावस्था सिन्धी ११ में प्रकाशित। प्रकाशक : डॉ० (बी०) केंद्र

सुरक्षाक्षेत्र  
सर्वसंगी विस्मयिकाक्ष  
हिन्दी

ओडम्

साप्ताहिक

कृष्णवर्ण विध्वंसार्थम्

# आर्य सन्देश

बुध ६ घण्टा २६  
शुक्र ६ घण्टा २०

रविवार, १५ दिसम्बर, १९२६  
वारिक २० रविवार

मुष्टि संवत् १९७२६४८०८६  
आजोवन २०० रविवार

मामघी २०४२

दशमिन्वाह—१६१  
विदेश में ४० डाक ३० पैसे

## कश्मीर से धारा ३७० को शीघ्र समाप्त कर देना चाहिए

—सूर्यदेव

धार्मिक पवित्र पुरी नई दिल्ली में बापिकोरस पर भ्रम-रोहण करते समय डा० धर्मपाल ने कहा—'धार्मिकता का एक नियम है प्रविष्टा का नाश और विद्या की वृद्धि करना चाहिए।' इस भ्रम के नीचे खड़े होकर हम प्रतिज्ञा करें कि प्रविष्टा का नाश करने में हम कभी पीछे नहीं हटेंगे। कुछ समाजों के प्रविष्टा ऐसे उपदेशों की भाव करते हैं जो केवल मोटी भाषा बोलते हैं सकारात्मक बोलते हैं। खण्डन की बात नहीं करते हैं। मैं कहता हूँ कि जब तक खण्डन नहीं करते, जब तक बर्तन को भाग नहीं देंगे, तब तक शुद्धता कहाँ से आएगी। यही बात

को मिटा कर ही दूसरी बात बन सकती है। टेप पर पिछला मिटाकर ही नया लिखा जा सकता है। दशानन्द की स्वामी विरजानन्द ने कहा था जो जब तक पढ़ाई उसे भूल जाओ। इन पौधियों की यमुना नदी में फूट कर भागो। अतः हमारा कर्तव्य होगा चाहिए कि हम प्रविष्टा का पाषण्ड का, धर्मविश्वास का नाश करने में सदा तत्पर रहें, किसी से कोई समझौता न करें।

इस प्रसंग पर अनेक गण्यमान्य महापुरुष उपस्थित थे। वीर धार्मिक जनों ने उत्साहपूर्वक काय-कर्म में भाग लिया।

सवादत्ता धार्मिकदेव

स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान दिवस पर

## विशाल शोभा यात्रा

प्रति वर्ष की भाँति इस वर्ष भी स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान दिवस बुधवार, दिनांक २५ दिसम्बर १९२६ को धूमधाम से मनाया जायेगा।

इस प्रसंग पर प्रातः १० बजे से स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान भवन (नया बाजार) से शाम ५ बजे का धारोवन किया गया है जो निधारित मार्ग से होती हुई सात किमा मैदान पर पहुँच कर एक जन सभा में परिवर्तित हो जाएगी। इस सभा में आर्यसमाज के मुख्य नेता तथा देश के प्रसिद्ध नेताओं के भाषण होते हैं।

महाशय धर्मपाल  
प्रधान

प्रधान कुमार सह्याय  
कुमार

आर्य केन्द्रीय सभा (पंजीकृत) दिल्ली राज्य  
१५ हनुमान् रोड, नई दिल्ली-१

## पाखंड खंडनी की आवश्यकता है

—डा० धर्मपाल

धार्मिक पवित्र पुरी नई दिल्ली में बापिकोरस पर भ्रम-रोहण करते समय डा० धर्मपाल ने कहा—'धार्मिकता का एक नियम है प्रविष्टा का नाश और विद्या की वृद्धि करना चाहिए।' इस भ्रम के नीचे खड़े होकर हम प्रतिज्ञा करें कि प्रविष्टा का नाश करने में हम कभी पीछे नहीं हटेंगे। कुछ समाजों के प्रविष्टा ऐसे उपदेशों की भाव करते हैं जो केवल मोटी भाषा बोलते हैं सकारात्मक बोलते हैं। खण्डन की बात नहीं करते हैं। मैं कहता हूँ कि जब तक खण्डन नहीं करते, जब तक बर्तन को भाग नहीं देंगे, तब तक शुद्धता कहाँ से आएगी। यही बात

को मिटा कर ही दूसरी बात बन सकती है। टेप पर पिछला मिटाकर ही नया लिखा जा सकता है। दशानन्द की स्वामी विरजानन्द ने कहा था जो जब तक पढ़ाई उसे भूल जाओ। इन पौधियों की यमुना नदी में फूट कर भागो। अतः हमारा कर्तव्य होगा चाहिए कि हम प्रविष्टा का पाषण्ड का, धर्मविश्वास का नाश करने में सदा तत्पर रहें, किसी से कोई समझौता न करें।

इस प्रसंग पर अनेक गण्यमान्य महापुरुष उपस्थित थे। वीर धार्मिक जनों ने उत्साहपूर्वक काय-कर्म में भाग लिया।

## बाबा पृथ्वीसिंह आजाद नहीं रहे

बहुमंड १० दिसम्बर पंजाब के भूत-पूर्व मन्त्री बाबा पृथ्वीसिंह आजाद का खरब में निधन हो गया। खरब यहाँ में लगभग दस किलोमीटर की दूरी पर है। पंजाब सरकार ने दिव-गत नेता के प्रति सम्मान व्यक्त करते हुए बाबा अपने कार्यालय बन्द कर दिए।

राष्ट्रपति ज्ञानो जलमिह ने स्वतंत्रता सेनानी व पंजाब के भूत-पूर्व मन्त्री पंजाब सिंह आजाद की मृत्यु पर दुःख व्यक्त किया है।

श्रीमता इरुणा आजाद के नाम एक सन्देश सन्देश में राष्ट्रपति ने बाबा आजाद को एक प्रमुख साहित्य-दिए। (देख पृष्ठ १०२)

# मुनि-चोरी के दण्ड का महत्त्व : युधिष्ठिर का विषाद : द्रौपदी-व्यास-कृष्ण द्वारा उद्बोधन : युधिष्ठिर का राजतिलक : अवबोधक प्रसंग

—आचार्य दोनानाथ सिद्धान्तानाथ

गौतम धीर दा भाई तपस्वी ऋषि गगान्त पर दानो के मुख्य वृक्षो धीर फल लो लो लदे धायम ये एक बार लिखित के धायम ये सव प्रमुत् गो कियो प्रकार धायम से निकल रास्ता भूल भटक गई देर तक नही धायो । लिखिन ऋषि का चिन्तित हो धीर उसकी लोख मे धायम मे बाहर जाना स्वाभ विक हो था काफी देर तक भटकन के बाद अपने बग आई शब के धायम के पास गो मिल गई देर तक भाग दौड करने के फलस्वरूप लिखित को भूल मे व्याकुल किया । उसने तत्काल बड भाई गल के धायम म लने पक मस्बाहु फलो म भूल को गुटिन को इसी समय शब गो वहा घबानक धा गये । उ होने भाई को फल से नभ उनसे पूछा कि यह फल तुमने कहा से लिये ? लिखित ने समीप श्राखड बड भाई को प्रणाम कर कहा यह फल के उछान क हो तो फल है । इस का साथ अपने धायम म गो क गुम हो जान धीर उसकी न न ग मे धपनी देर तक को लोख धीर भूल लगने की साग कहानो मुना दो । शब ने इस पर अपना घसोप प्रकट करत हुए कुछ कथा स्वर म कहा तुमने म न म पुखे बिना स्वर हो मेरे उछान म मे चोरी को है न्मोनिण नम श्रव जा के पास जा अपन सस कुकम का थोरा मना । अपना धप न न स्वीकार कर राजा से समुनि दण्ड की प्राप्ता करो लिखिन मुनि बड भाई क श्राप्ता स राज प्रगुन के पास गय धीर अपने धपराध का सारी कहान मुन न न राजा म न्म दिय जान का श्रनगध किय

अप र न्मोनिण जा म  
ण्ड क न्मोनि

"जा ब न्मममम म पड गय उसने म क म निमण्डल म । उके वनाइ म मियमन न राजा क साथ सहानि प्रकट करत हुए सहज हो किमिनिमन नक पहुचने मे ससम यना प्रकट को म निमण्डल मे एक शब्द और प्राप्ता न की मी थी । वह न स समय उचिन न ये । न्म

दवाया गया धीर उनसे पथप्रदशन मागा गया उन्होने समूचा मामला सुन कर कहा—अपराध का दण्ड (कानन का पालन) ना धयव होना चाहिए । वह छोटा है या बडा यह मतभेद का विषय है । परन्तु राष्ट्र चरित्र को रक्षा धीर याय व्यवस्था को मब प्रकार क पसपात से छुटा रचने से लिए उसके पालन म किसी प्रकार का मो न न न न होना चाहिए । बड विद्वान मन्त्री ने मनु प्र० १ दशो १७ १६ के प्रमाण से कहा—

ण्ड का हा शासक मन्त्र  
जागता है

(१) जो दण्ड है वही पुरुष राजा वही याय का प्रवर्तक धीर सब का शासनकर्ता वही चोरो वग धोर चोरो धायमो के वम का प्रतिभू प्रर्षनि जागिन है ।

(२) वही प्रजा का शासनकर्ता का शासनकर्ता वही चोरो वग धोर चोरो के जागना है । इसलिये दण्ड मान सव को हा वम कहते हैं ।

(३) जो न्मण्ड श्रच्छ विचार मे धारण किता त्र य तो वह नभ प्रजा का शासनि करना है धीर जो बिना विचार चलाया अये तो सब धीर स राजा का बिनास करता है ।

लिखिन मुनि का दण्ड

न जान जब उस बड म भाते पूछा कि अब इस लिखिन ऋषि का चोरी क अपराध म क्या दण्ड निया जाय ? नभ बड म नो न कुछ समय क गहन चि नत क बाद कहा— धायविने का मत है कि बिम अभ म धयनि अपराध करना है वह वा न्म ना वा ए पर यह बहुत कठोर धीर धराधारी को भावा मुबार के माग को ससथा श्रवदक कर देना है जो उचित प्रतात नही होता । इमोनि ए मेरा सम्मति म इम युवक का ऐसा दण्ड दिया ज ये जिसे हाथ स दीध काल तक क न परियम किया जाये ।

बड मन्त्री का यह मत राजा

धीर म निमण्डल मे पसन्द किया । लिखित ऋषि कुमार को यह दण्ड सुना दिया गया धीर इसकी सुचना उसके बड भाई गल ऋषि को भी दे दा गई ।

युधिष्ठिर की पत्नी द्रौपदी का अपने पति को समझाना

व्यास मुनि ने यह कथा उस समय सुनाई जब युधिष्ठिर राज्य धीर गहम्ब धायम छोड वरागमवान हो वानप्रस्थ धीर सन्यासो का जीवन व्यतीत करने का निश्चय कर चके थे महाभारत शान्ति पत्र के धनत गत राजवध घनुशासन पत्र के नवम अध्याय से लेकर धगले अध्यायो तक श्रीकृष्ण दीपदी धीर पाचो पाण्डवो सहिन मगोछी मे बसने एक स्वर से अपने बड भाई युधिष्ठिर के उपयन्त्र निश्चय का प्रबल विरोध करते हुए उसे अपने कत य राजवध धीर गहम्ब वम के पालन का उपदेश कई प्रकार की प्राचीन श्रवचोचिन कथाधो धीर उपास्थानो द्वारा पुष्ट किया । प्रमवध हय यहा उस निराधार सवथा धय य कपील कनिष्ठ धीर तारी के लिए ककल रूप लोक प्रचलित मिथ्यावाद का जोरदार शब्दन करना चाहत है जिसके अनुसार दीपदी के पाच पति युधिष्ठिर महित कहे जाते हैं । महाभारत के अनेक प्रमाणो से यह सिद्ध किया जा चुका है कि दीपदी का एकमात्र पति युधिष्ठिर ही था । इस प्रकरण के उतुदस अध्याय म इस सभा मे चरिद्विषाध व्यास मुनि श्रीकृष्ण पंचपाण्डव तथा प्रमुख नाम रिको का उपस्थिति म प्रवक्ता वसामायय पत्र ५ दशो की म दीपदी का प्रवचन देत हुए कहते हैं—

धायने भाइयो के मुने से वेदो के मिदा तो क अनुसार सुनकर जो अब धमराज युधिष्ठिर क कुछ नही बोले नभ महान कुल मे उ पल युवतियो मे श्रद्ध विशाव नेश राजा युधिष्ठिर के सत अभिमान रखन वाली राजा की प्रती हो लाडली वमसा महारानो दीपदी अपने पति देव नृप श्रद्ध युधिष्ठिर को गौरव मन्वीरित कर शास्त्रानुपुर्ण परम मन्वीर बाणी

मे बोली—

इतवन म ११ वष क वनवास धीर एक वष क प्रज्ञातवास म आपके इन सब भाइयो ने मदी गर्मी धाघी पानी आदि प्रतिकम स्थितियो मे सब सहते हुए धायका साथ दिया उस वम आपने कहा था कि बीर नभधो । दयोधन धीर उसके साधियो को हराकर म पत्नी को शत्रयो की लासो स पाट दये । उस समय उदारतापूण नाना प्रकार के वधो द्वारा वगवान की क्षाराधना करते हुए बिजय प्राप्त कर वनवास अनित दुःख सख मे परिणत हो गय । बीर महाराज ! इत वन मे अपने भाइयो को स्वय हा ऐसे बीरतापूण वमन कनन के बाद फिर धाय हस लोगो को क्यो छोड रहे है ?

द्रौपदी ने अपने निराश पति युधिष्ठिर को निम्न प्रक शब्धो मे कहा—

१ न वसीवो वसुधा म डते

न वसीवो वन मनुते ।

न वसीवस्य मह पुत्रा

मत्स्या पक इवासेते ।

म व मां शासिपत्र १४।१३

अर्थात् जो कायर धीर नपुंसक है वह पत्नी का उपभोग नही कर सकता नही वन उपाजन कर सकता धीर न ही उसे भोग सकता है । जैसे केवल कीचड मे मछलिया नही होतीं वैसे प्रजाधन नपुंसक क घर मे पुत्र नही होता है ।

२ जो दण्ड दन की शक्ति नही रखता उस क्षत्रिय को शोभा नही होती । दण्ड न द सकने वाला राजा अब पम्था का उपभोग नही कर सकता । हे भारत ! दण्डहीन राजा की प्रजाधो का कभी सुख नही मिलता । बीर धीर धायमल की वनी इस बार भारतय नारी द्रौपदी के यह शब्द धाय हमारे देश की वतमान राजनीतिक स्थिति पर श्रक्षर घटते हैं ।

राजा के लिए दण्ड उचित

कर्म

—ध्यास

इस सगोछी मे उपस्थित व्यास (धिप पृष्ठ ११ पर)

# आचार्य पृथ्वीसिंह आजाद :

## एक मधुर स्मृति



स्वतन्त्रता सेनानियों के सम्बन्ध में लिखते हुए महात्मा गांधी ने बाबा पृथ्वीसिंह आजाद को स्वाधीनता के मंदिर की यात्रा करने वाला महापुरुष कहा था। महात्मा जी ने कहा था, कोई भी क्रांतिकारी उनके महान् साहसिक कार्यों की बराबरी कर सकता है, मगर उनसे धागे नहीं जा सकता।

पृथ्वीसिंह आजाद का जीवन अस्तव्यस्त रहा तथा वे कठिनाइयों से जूझते रहे। उनका जन्म १५ सितम्बर, १८६२ को पंजाब की पटियाला रिवाजत के लालक गांव में एक निधन परिवार में हुआ था। कुछ समय तक वे अपने पिता के साथ रहे, जा बर्मा में पयुबी की देखरेख करने अपना जीवन निर्वाह कर रहे थे। बर्मा से वे सिंगापुर गए और फिर मनीला। बहास स मरीफा का गये।

अपने वे राष्ट्रीयता की भावना के उत्पन्न होने का श्रेय उन्होंने आर्यसमाज एवम् श्रद्धा दयानन्द, महात्मा गांधी और बंगाल के क्रांतिकारियों को दिया। उनके अनुसार सब स पहल आर्यसमाज में १९०७ में उन्हीं प्रभावित किया। इसका बाद वे बंगाल के सत्यन बिदाह और भासाभाजपतराय के निर्वाचन से प्रभावित हुए। विदेशी दमन से उन्हें सर्वाधिक घृणा थी। उन्हें अपने बाल्यकाल में कनाडा की भारा सयानी (भारता लकड़ी के कारखानों) में काम करना बाध है। बहा रहने के दौरान वे आन्दोलन की ओर जुझा हुए जिसका परिणाम १९१४ में गवर्णमेंटों को स्थापना में हुआ।

गवर्णमेंटों के सदस्यों ने ब्रिटिश सरकार द्वारा भारत के निरादर एवं बर्बरता का समर्थन करने के लिए स्वदेश लांठने और देश की स्वाधीनता के लिए अगलत का नेतृत्व करने का सक्षम लिया था। गवर्णमेंटों के अध्यक्ष बाबा सोहन भाखना के नेतृत्व में पार्टी के कुछ साहसी सदस्य १९१४ में एक जहाज में भारत पहुंचे। यह पार्टी इससे पूर्व कैलिफोर्निया में बनारस गई थी। बाबा उस समय जहाज में ही थे, जब भारत पहुंचते ही गवर्णमेंटों के सदस्यों को निरक्षर कर लिया गया।

सही समय पहला लोहार पदमन का काल का मुकदमा शुरू हुआ। बा। चौबीस क्रांतिकारियों का मृत्युदण्ड धार शेष को अण्डमान में फाँसवान का दावास दिया गया। बाबा पृथ्वीसिंह उनमें से एक थे। कैमल सात व्यक्तियों का फाँसी हुई। बाबा ने अण्डमान जेल से सेल्सुस जेल में राजनीतिक बहिष्कार प्रति किए जा रहे दुर्व्यवहार के विरोध में १५४ दिन की भूख हड़ताल की थी। बाबा जेल में छह वर्ष तक रहे।

जून १९२१ में स्वदेशी नीति से संयम उन्हें पुलिस के साथ मद्रास से राबमहेंद्रो भेजा गया। वर्तमान आन्ध्र प्रदेश में प्रान्ते के निकट वे बलती रेलगाड़ी की बिक्री से बाहर कूट गए। रात भर वे प्रामोण को न में बीसते रहे। प्रान्ती शाम में फिर पकड़ गये और जेल में डाल दिये गए। बुधवार सितम्बर, १९२२ में राजमहेंद्रो से रेल द्वारा नामपुर में जाते जाते समय वे अमरावती के निकट बन्देरा में बलती हुई रेलगाड़ी के सीधासय से कूट गए और भूमिगत हो गये। अगले १६ वर्षों तक उनका कोई पता नहीं बना। देश बदलकर वे कुछ समय तक आबनगर में गुना लोगो की सांठिक व्यापार संचालित रहे और उनमें राष्ट्रप्रेम की भावना जगते रहे। उन्होंने १९३१ में करचो से हुए कांग्रेस अधिवेशन में भाग लिया, जहाँ उनकी अंत क्षान अमृतस बनारस वा से हुई।

करचो से छपदेश में वे सोवियत सभ पहुंचे। कई बार उन्हें

अकमानिस्तान में पकड़ा गया परन्तु हर बार वे किसी तरह बच निकले। सोवियत सभ में भी वे दो महीने जेल में रहे। यह पता चलने पर कि वे गवर्णमेंटों के सदस्य हैं उन्हें छोड़ दिया गया। फिर ब मास्को में ठहरे और तीन वर्ष तक उन्होंने मार्क्सवाद का अध्ययन किया। छपदेश में ही व १९३४ में काबुल पहुंचे जहाँ व पकड़ गये और १३ महीने जेल में बन्द रह। जनता के दबाव में सरकार उन्हें छोड़ दिया गया। फिर ब आली पासपोर्ट पर पाकिस्तान छोटे हुए मद्रास पहुंचे। बाबा ने १९३५ से १९३८ के बीच बम्बई और कलकत्ता में कम्युनिस्ट पार्टी को मजबूत बनाने के लिए कार्य किया।

महात्मा गांधी से उनकी अंत १९ मई १९३८ को जुड़ गई। गांधी जी की मलाह पर उन्होंने पवित्र के आगे आत्मसमर्पण कर दिया, जिसने उन्हें फिर कुछ समय के लिए जेल में बन्द रखा। जेल में रिहा होने पर उन्होंने गांधी जी के साथ उनके आश्रम में काम किया।

बाबा उन कुछ पुराने स्वतन्त्रता सेनानियों में से थे, जिन्होंने इस वर्ष २३ फरवरी को पीट ब्लेयर ने राष्ट्रपति ज्ञानी जैलसिंह द्वारा सम्पूर्ण समर्पण समारोह में भाग लिया था।

बाबा पृथ्वीसिंह आजाद का खेल जगत से भी काफी निकट का रिश्ता रहा। इस उम्र में भी व इतने लोकप्रिय थे कि बुजुर्ग एक्सेलिटिक में उन्होंने देश और विदेश में बृज नाम कमाया।

बाबी हान ही वे हुई विश्व बुजुर्ग एक्सेलिटिस बैम्पियनशिप में बाबा पृथ्वीसिंह आजाद ने सौ मीटर का दोह बीतकर अद्भुत प्रदर्शन कायम की।

(नवम्बर टाइम्स से साभार)



## स्वामी श्रद्धामन्द उपदेशमाला

आर्यसन्देश साप्ताहिक अपने सत्कल्पानुसार एक और विशेषांक अपने श्रद्धा पाठकों के लिए शीघ्र प्रकाशित कर रहा है। स्वामी श्रद्धामन्द प्रथम विचारक, जीवन प्रसा की आत्मव्यपन कर सकने में समर्थ महान् उपदेशक, लेखक मनीषा राष्ट्रमायक थे। उनके मधुर आध्यात्म उपदेशों का एक नकल हम स्वामी श्रद्धामन्द बलिदान दिवस की स्मृति में प्रकाशन कर रहे हैं। यह विशेषांक प्रायकी जीवन भर स्मरण रह सकेगा ऐसा हमारा विश्वास है। साप्ताहिक आर्यसन्देश के सदस्यों के लिए यह नि मुक्त होगा। श्रद्धा प्राप्त की प्राज ही २० रुपये बाणिक, २०० रुपये मेककर आजीवन सदस्य बन जाइये और अपने विशेषांक तथा प्रति सप्ताह चर बने आर्यसन्देश पत्रिका द्वारा उच्चकोटि के लेखों का आनन्द लीजिए।

सम्पादक आर्यस देश  
१५ हनुमान रोड, नई दिल्ली

श्रवित्व।

घाप ता शान्दचित्त होकर मग का ध्यान भोग रहे हैं। अथ वद देख जिसके लिए घाप दिन रात बेचन रहते थे जिस दश न मुधार कं निए घापक शनको वाग विषयान करना पडा उसक दशा क भी श्रारका कुछ धनुगान है।

घाप जीवन पयत्त परमपिता परमात्मा को आज्ञा का पालन करते रहे। जीवन पयत्त आपने एक भी बुरा कर्म नहीं किया। कर्मों के फलवशा घापसे बहुत हो प्रसन्न थे जिस कारण आपको मोक्ष प्राप्त हुआ और ब्रह्म मरण के चक्रक से छुट गये। हमसे तो ब्रह्मा या आप एक दो तो बुरे कर्म घापसे ज्ञानन म क ज्ञाते जिससे घापको फिर भारत मे जन्म लेना पडता और पुन जन्म का धर्षा काम पूरा कर लेते।

घाप धार्यसमाजो की स्थापना की थी। घापके प्रभाव का कारण उस समय भी हमारी जन धायसमाजी बन चुके थे। घापने कठिने कुरी-तियो, धन्यमदा धन्य विषयान को दूर करने का काम धायो को सौंपा। आप हमे ममलार मे हो छोकर मोक्ष को प्राप्त कर गये। यदि आप बध और रह जाते तो देख का बहुत मुमर हो जाता। हमे यह दुःखन देखने पडते।

घापक व्यक्तित्व कृतित्व और सद्गुण मे जाहू का प्रगर था। परिस्थितियाँ और बाधावरण विपट्ट होके बाजबद भी जितना काम घाप अकले कर गये परिस्थितिया धनुकूल होने पर भी हम दो करोड धार्यसमाजो जितना काम नहीं कर सके।

वैदेशी सङ्कट, स्वभाषा तथा स्वतन्त्रता का नाद सर्वप्रथम घापने हो बजाया था। घापने कहा था— 'घापना राज्य चाहे कसा भी हो विदेशी राज्य स फिर भी अन्ध है भारत मे भारतीयो का राज्य ही होना चाहिये।

सन् १९२० म घापने भारत को स्वतन्त्र कराने का काम स्वधार के रूप मे किया। घाप भारत को तुलन स्वतन्त्र कराना चाहते थे। घापके बाद धायो ने भी यह सोचा कि भारत को पहले अग्रणी से मुक्त करव्या जा। फिर धायसमाज का प्रचार और प्रसार करना स्वतन्त्र भारत मे सुमम हा जाएगा। अत परिस्थितिया धनुकूल हो जायगी। तो श्रवित्व का स्वप्न भी सकार हा जाएगा अत धायसमाजी जी-नार ह आपन के स्वतन्त्रता सग्राम मे कूद

## महर्षि दयानन्द का मोक्ष राष्ट्र का दुर्भाग्य

—जगत्प्राम धार्य

पड। धायोपदेशक भजनोपदेशक, हमारे गुच्छुको, स्कनो, कालेको क प्रधापक और डाज ममी घाजादी के दोबाने बनकर स्वतन्त्रता सग्राम मे कूद पड। याननाए नहीं और बसिदास गुए, धन के भारत स्वतन्त्र हो। जिसका श्रेय महर्षि दयानन्द और उनके धनुगानो धायो को मिलना चाहिये वा परन्तु ऐसा हुआ नहीं। घाजादी के बाद राष्ट्र के जो प्रभावक और भाग्य विधाता बनते रहे। उनको धार्यसमाज के सम्बन्ध मे पता भी नहीं था कि भारत को स्वतन्त्र कराने मे धक्कामन योगदान धायसमाजियो का रहा है इसलिये भारत को स्वतन्त्र कराने का श्रेय धार्यसमाज को है। और न ही धार्य नेताधो ने उनके कामो तक धायज पहुचायो। परिणाम यह हुआ कि स्वतन्त्रता के बाद धायसमाज को पुछा भी नहीं गया।

भारण को स्वतन्त्रता के जन्म-दाता महर्षि दयानन्द सरस्वती के मुकाबले मे राजा राममोहनराय ने भारत के लिए कोई विशेष काम नहीं किया। श्रवित्व दयानन्द का राजा राममोहन से कोई काबिला ही नहीं। फिर भी पिछा मन्त्रालय भारत सरकार मे राजा राममोहनराय के नाम पर जोश लाख रुपये का धनुदान धर्षिक देकर उनका स्मारक कायम कर रखा है और भारत को स्वतन्त्र कराने वाले महर्षि दयानन्द का कोई स्मारक नहीं बना पाये और न ही उनके नाम पर कोई धनुदान दिया गया है।

दश दयानन्द धायो आर्यसमाजो की हालत तो आकर देखें मुझे तो ऐसी हालत देखकर छुप छुप कर रोना पडता है।

श्रवित्व। घापका धार्यसमाजो क सस्य भाली पचास बष जैसे पहले होते थे वेसे नहीं रहे। अब तो धायसमाजी स्वाध्यायवादी नही है। घाज के धार्यसमाजी धार्यसमाज और दयानन्द को समझ भी नहीं। श्रवित्व दयानन्द के अन्त और धायसमाज के दोबाने सग्राम हो रहे हैं। अब नको, फसली, धवसरवादी लोग धार्यसमाजो मे रुपये के जोर से धपना सिक्का चलाना चाहते हैं। मर जैसे पुराने धार्यसमाजी जिन्होने

घाज से पचास साठ बष पहले का धायसमाज का स्पर्ण गुप्त दसा है व दुको है और बेबस है।

श्रवित्व। हम पर दया करो। घापका नाम हो दयानन्द है, घापने श्राजीवन परमात्मा की आज्ञा का पालन किया है। वे सच्चिदानन्द घाप से प्रसन्न हैं घापका कहना मानते हैं उनको हमारी धोर से कहे कि घापके धर्मपुत्र धार्य जन घापकी धमर देन वेदो के प्रचार और प्रसार करने वाले दु को हैं और वेदोधारक श्रवित्व दयानन्द का प्राह्वान करते हैं। प्रमो! हमारी पुष्पा मुनो हमारे श्रवित्व को एक बाग पुन भारत मे जन्म द जिससे भारत मे सुधार हो।

प्रमो! हमारे पास सच्चा धोर सुच्चा सोचा है परन्तु पारकी नहीं है। घापके वेदो का ज्ञान रूपो प्रसाद लेने हमारे पास नहीं बाते जहा गला सडा दुर्गुण बला सला सोचा है वहा बाहको की चीज लग रहा है। उस मौदा का उपयोग करके हाति हो उठते है पर सप्तकते नहीं। प्रमो! उनको सत्कुट्ट द।

धायसमाजो मे कुच्छेक लोग ऐसे भी हो गए हैं जिन्होने सुन रखा है कि सप्तम म विषय यमकृत होना चाहिए। सप्तम मे तो यह बासय होता है कि नेता लोग कोई ऐसा काम न करें जिससे देव धोर बर्ष का हानि हो, वह हो धायला धार्यसमाजो ने लाना चाहते हैं। हालांकि अनेक सप्ताहिक सस्य मे श्रवित्व के अतिम सक्त का पाठ होता है और धर्म भी बोला जाता है कि "चित्त मन सब एक हो"। सप्तम का धायला धार्यसमाजो न नहीं बाला चाहिए। धार्यसमाज वेदो पर धारास्त एक विशुद्ध धार्मिक सस्य है। ऐसे लोग धार्यसमाजो मे हो गुच्छेदो बना कर विषय को मजबूत बनाने का कुकर्म करते हैं। ऐसे धनार्थ लोग धार्यसमाज का कोई भी काम नहीं करते और न ही दूसरो को करने देते हैं। धायसमाज का विपट्टन करके दूर बैठ कर तमबाषा देवता चाहते हैं। वे धार्यसमाज के अग्रणी हैं। एक व्यक्ति अपनी योग्यता, क्षमता, लयन और उत्साह के साथ धार्यसमाज का अन्धका काम करते हैं। धार्यसमाज को

अपनी मा समझकर धार्यसमाज को सोच करता है। ऐसे व्यक्ति को सहयोग देना चाहिए, यही धायत्व है। परन्तु होता क्या है कि ईर्ष्या और द्वेष के बीच म कंसकर धार्यसमाज के अन्धे मनो चन रहे काम मे बाधा एक विषय रातकर धार्यसमाज के काम का नही चलने देने कितने वेद की बात है।

धार्यसमाजो मे कुछ व्यक्ति ऐसे भी हैं जिन्होने धायकारो पद पर रहते हुए भी धार्यसमाज का मन मन से निकुल काम नहीं किया न ही उनमें धार्यत्व है परन्तु फिर भी धायकार पद को हल्ला बनी रहते हैं। धायकार पद लेने के लिए गुट-बन्दी बनाते हैं सवाई सगडा करते हैं और धन्यवस्था केसारक बाता-बग्न सगड करते हैं।

जो लोग धायकार पद को हल्ला न रखते हैं न धायसमाज का हो चिन्तन करते रहते हैं और धार्यसमाज का काम दिन रात करते रहते हैं उनसे शिखा तथा प्रेरणा लेनी चाहिए। धार्यसमाज का सून जिस के सिर पर सवाई हो वह धायकार पद लिए बिना भी धार्यसमाज का काम किए बिना नहीं बूझ सकते।

धार्यसमाजो मे प्राय ऐसे लोगो ने बातावरण दूषित कर रखा है। धार्यसमाजो को उन्नति नहीं होने देते। धार्य जनो को सर्वदा ऐसे व्यक्तिधो मे सावधान रहना चाहिए।

जगत्प्राम धार्य  
माधीनगर, दिल्ली-३१

## धार्यसमाज पटेल नगर नई दिल्ली द्वारा वेद प्रचार तथा धायकोसस

धार्यसमाज पटेल नगर छाषा पटेल पार्क में १००० सपास पुष्पाधु की मनोहर वेदका दुर्ग। इस धवसर पर हमारी नर-नारियो ने दो सप्ताह तक धार्य धर्मो पर धायस्त किया मर ज्ञान का धानन्द लयन। वेद कथा के धर्मन सस्यो वेला में ३०० पुच्छ महिसाधो ने धपने दोष लयन कथे का तथा सद्गुण ब्रह्म करने का वत लिया। धायोजन का मन्त्रालन भी बेसारा तमेजा मे किया। प्रात काय एक सप्ताह सद्गुर्वेदीय यज्ञ हुआ जिसके ब्रह्मा जो रेन चरन धोर मे। धनक श्रध्दायु नर-नारियो ने अथा पूर्वक धायस्त प्रक की। धान्तिम विष्णु भी लोमपाव मरवाह के सधायनित्व मे धार्यसमाज सम्मेलन हुआ।

मन्त्री  
धार्यसमाज

उन्नीसवीं शताब्दी के अन्त और बीसवीं शताब्दी के प्रारम्भ में आर्यान्त ब्रह्म मन्त्र्य कृष्ण से राजनीति के क्षेत्र में देश की जो दुर्दशा थी वह सर्वाभावतः या एक और दश जो का साक्षात्पक्ष व दश गुलामी की जजोरी म जकड़ा हुआ, दूसरी ओर सामाजिक कर्म में मनुष्य मनुष्य के मध्य भद्रभाव की दायार, अज्ञाना-वकार, नाराजता का दयनीय स्थिति, धार्मिक जगत् में एकेश्वरवाद के स्थान पर बहुदेवतावाद निराकार परमात्मा के स्थान पर भूति पूजा एवं अवतारवाद के स्थान सहज कर रक्खा था, इतना ही नहीं बल्कि कर्मनुसार वन व्यवस्था की जगह जमायिका पर वन धारणित शाह्यन मण्डली में जगत्मा प्राप्त प्रवृत्ति कर रक्खा था।

ऐसे में परम पिता परमात्मा के नियमावली परम एव सत्य की पुन स्थापित करने हेतु ऋषि दयानन्द का प्रादुर्भाव हुआ। यद्यपि तो घाटत होता ही दुर्दशा है मगर उन् शतमानों की ओर किता धर्मिता या महापुरुष का ही ध्यान जाता है जिसके उत्तर परमात्मा का कृपा दृष्टि होती है। ऐसी ही घटनाएँ, महर्षि दयानन्द के जीवन में घटित हुई, हम इस क्षण में दक्षिण विस्तार में न जाकर पाठकों की शक्ति भूति पूजा से संबंधित घटनाएँ देखेंगे। महर्षि ने अपने पिता की के कहने पर दत्त उपवास रक्खे, और उस उपवास रखन का कोई कृत प्राप्ति न होकर जीवन में एक मात्र मोक्ष उपलब्ध हुआ और उसी मोक्षोपलब्धि होने से ही आज इस माया वस्तु दशा तो क्या विश्व की एक नई कान्ति या मानवता के क्षण में नई दिशा मिली, जिस कान्ति का प्राज मारत में ही नहीं बल्कि समस्त विश्व है उसका अनुसरण किया, चाहे वह राजनीति हो या धार्मिक जगत् की या फिर वाह सामाजिक क्षेत्र ही। महर्षि दयानन्द ही एक ऐसे महामानव हैं जिन्होंने अपनी सूक्ष्म बुद्धि से प्रत्यक्ष क्षेत्र में विचार मयन कर समस्त राष्ट्र को नई दिशा प्रदान करते हुए अपने प्रमत्त ग्रन्थ सत्यार्थ-प्रकाश में अनेकों के साम्राज्य के विचोष में निष्ठा कि विदितियों का राज्य बाह्य किन्तु ही प्रच्छा ही मगर पूर्ण सुखायक राज्य ता स्व-देसियों के राज्य होने में ही है। दुर्दिन जूझ घाटे में दत्त ऐसे ही मानवता को कलक उत्तम पढ़ते हैं, जब तक एक मत, एक शक्ति-साथ एक ही भाषा न होगी जब तक पूर्ण सुख की कल्पना कर निर्गन्ध है। इतना ही नहीं ऋषि दयानन्द ने सत्यार्थ-प्रकाश के आधार पर मनुष्य की श्रमशक्ति से श्रार्षि कि महाप्राप्त युद्ध के

## महर्षि दयानन्द समग्र क्रान्ति के अग्रदूत थे

लेखक-रत्नलाल आर्य निजारा प्रलवर (राज-भार)

पश्चात्त इम आर्यावर्त दश की बड़ी शक्ति हुई है। विनोदिन यह दश रखा तल का ओर आ रहा है। प्रायः महर्षि लिखते हैं कि मुत्त हुए ज्ञान का पुन-निर्माण बड़ा ही दुष्कर कार्य है। जैनी, पुरानी, फिरीनी और कुरानी यह सब मालों के दूत हैं। इसके पश्चात् ही इस आर्यावर्त में घरेलू, राजा नर व मत-मतान्तर प्रचलित हुए हैं। इनका कोई धर्मवा नहीं कर सकता। आज बिना तो सत्प्रदायवाद इन बहुदेवतावाद के मानने पर मिल रहा है और इतना-विन राष्ट्रोत्था नाम की चीज नहीं के बराबर है, मगर हम महर्षि दयानन्द के बताए हुए मय पर चल जसा कि उन्होंने वन व्यवस्था के बारे में उद्घोष करते हुए लिखा और वे मय न उद्घोष करते हुए कहा—

शाह्योऽयं गुलामासौ  
बाह्योऽयं कृत ।  
उत्त तदस्य यद्वैश्य,  
परायं शूद्रोऽजायत ॥

अर्थात्—जिस प्रकार शरीर में सुख अर्थात्, इसी प्रकार समाजकी शरीर में जिसके कर्म शाह्यन के तुल्य हो, जैसा कि स्वामी जी ने लिखा है यज्ञ करना, करना, दान दाना और दान लेना, वैदिकी वम का प्रचा व वेद का पठना और पठना इत्यादि इसो प्रकार से। इस प्रकार शरीर में बाह्यवर्ष धर्मिक है वही राज्यधर्म का ही होता है अन्य नहीं। तासो वर्य जिस प्रकार शरीर में पेट का स्थान है जो कि सभी शरीरों को जोषन का समान विभाग कर दता है इसी प्रकार समाजकी शरीर में जो वैश्य है उस का भी यह कार्य होना चाहिए कि वह समाज के सभी वर्गों में वम का समान रूप से बट-बटा करे और प्रभाव न बा नारा करे। बोधा वर्य जिस प्रकार शरीर में पेट की स्थिति है कि शरीर को का बोझ बोते हैं, इसी प्रकार समाज की शरीर में जिसको पडन पडान से कुछ नहीं जाने अर्थात् निर्बद्ध हो लें उसे दुष्ट कहना, मगर महर्षि ने लिखा कि बूझ भी अपने-तम कर्म से दिव समाज को प्राप्त होता है और दिव शरीर की काम करे तो वह भी दत्त जो जाना है। मरवि

न मया न अस्पृश्य समक मान वाले के प्रति बहुत महान् काय किया है। महर्षि दयानन्द के पश्चात् ही स्वामी अद्वानन्द और महात्मा गांधी न इस कार्य को प्राय बढाया। यह सारा कार्य ही ऋषि दयानन्द की धारणा थी। प्राज अग्र रत्नके दश चिह्नो पर अग्र धर्म आर्यावर्त दश का मानव बले तो इसमें कोई शक नहीं कि हम अपने पिछले गौरव का पुन प्राप्त कर सकते हैं। इस वर्ष व्यवस्था पर आधारित सामाजिक व्यवस्था मगर पुन गुरुकुल प्रणाली के मा-व से सरकार द्वारा व्यवस्थित हो तो किसी प्रकार का भेदभाव असमानता साम्प्रदायिकता छुड़ाओ, राष्ट्र की एकता और प्रवृत्ति को जगह पर एक ही भाषा, एक ही मत काम रहकर प्राय साम्राज्य की एव राज्य राज्य को कल्पना परिलक्षित हो सकते हैं।

धार्मिक जगत् में भी हम एकेश्वरवाद पर अग्र धर्म दयानन्द के बताए हुए मय पर चल तो सारा सारा ही मोक्ष का प्राप्ति से सकता है और तभी सारा व पुण धार्मिक सम्भव है। कई क्षणों में तो ईश्वर तक को मान्यता नहीं है और जिस देश में है यहा पर भी एक ईश्वर के स्थान पर स्वयं सिद्ध परमात्मा मौजूद है और प्रत्यक्ष कलम मतो के प्रादुर्भाव होने से मनुष्य की बुद्धि प्रवर्धित हो ही गई है, इसलिए महर्षि दयानन्द ने धार्मिक क्षेत्र में एकेश्वरवाद पर बल देते हुए लिखा और वेद का मन्त्र उद्धृत करते हुए कहा कि 'न नस्य प्रतिगर्हित मय्य नाम मनुष्यम् ।'

अर्थात् उस निराकार परमात्मा की कोई प्रतिमा नहीं है जिसका कि नाम बड़ी महानता के साथ लिया जाता है, इसी से साथ उन्हीने सभी पवित्र के मन्त्र का हवाला देते हुए कहा कि—

अन्धन्तम प्रविशति ये  
असम्प्रतिपुत्रास्त ।  
ततो भूप इव ते ततो  
वेदसम्भूता । ततो ।

अर्थात् ने मनुष्य अन्धकार में प्रविष्ट होते हैं जो असम्प्रति अर्थात् (बड़ बुद्धि की उपयोगता करने हैं)

होने के बा प्रकृति द्वारा निर्मित मृष्टि कुछ स्थूल जडपदार्थों की जसे कि मृत्तिका की उपयोगता करने है इसी-लिए तो महर्षि दयानन्द ने 'सिपुजा और अन्धकारवाद का प्रबल तक और युक्ति से खण्डन किया और एक ईश्वर का प्रचार किया कि वह कहा कि परमात्मा सर्वव्यापक है उसकी भूति या प्रतिमा नहीं है और जो मनुष्य परमात्मा की एक स्थान पर अन्तता और मानता है वह पापादि वम और कुलेष्टा किने बिना नहीं रह सकता बल्कि जो मन्त्राय परमात्मा को सर्वव्यापक मानता और जानता है वह किसी भी जगह यहा तक कि अपने मन में भी दुर्भावना नहीं प्राने देता मगर आजकल की शाह्यन मण्डली ईश्वर की भूति पूजा के दायरे में सीमित कर रामलोलोपाधी और रासलीलाधरे द्वारा भूति पूजा और अन्धकारवाद की बढावा दे रही है और मनुष्य मात्र को परमात्मा के सही स्वरूप का दिग्दर्शन न कराकर धर्मकाय की गहरी छाई में डबेले रहती है। इस निरुद्ध अग्र ऋषि दयानन्द न होने तो प्रायका यह धर्मार्थन दश न जाने कबूत सत्सतता का बा निरता । फिर भी उनका उत्त शक्तिप्रिणी धर्मसमाज देश में फैले भूतिपूजा अन्धकारवाद कूपाक्षत का हनन ही नहीं बल्कि सुखित वाक्तावली द्वारा हमारे समाज में अस्पृश्य समको जने वाले लोगों का विदेशी वम के नाम पर प्रवर्धित कर रहे हैं एव अग्र सामाजिक प्रविशाय एव राष्ट्र के विरोध स्वरूप जितने भी कार्य हैं ध्यान देकर इस देश को एक सूत्र में पिरोने का कार्य जैसा धर्मसमाज कर रही है प्रत्य नहीं। इस प्रकार जो महर्षि दयानन्द न प्रत्यक्ष क्षेत्र में जो वैचारिक कान्ति की वह सदा ही सदा अनुकरणीय थी और रहेगी।

### चतुर्वेद पारायण यज्ञ

१५ सितम्बर में २० सितम्बर ८५ तक समय प्रातः ७.३० से १३.३० तक

शाह्योपेद्र या यज्ञ  
अन्वेद तथा यजुर्वेद  
राशि ७.३० से ८.३० तक  
मन्त्र पाठ पारायण  
मानव अक्षयवेद

स्थान श्री मनोहर विद्यालय का निवास १०० छाता सभाजी शक, फतेहपुरा (विष्णु)

लाल की वमभाषा के सामने) प्रवचन प्रतिदिन दोनो समय यज्ञ ३ बार दन दन मन

श्री सत्यपूजन योगी धर्मवा ५० हरिश्चन्द्र सिद्धांतालय काय

मन्त्री



# मानव का कल्याण मानवता से बुरों की भलाई करना आदर्श परोपकार

—धामनी प्रकाश सूर एम००— श्रीनार्पक

संसार में ईश्वर का जना में मानव को मन्वा-कष्ट कर्म की मन्वा नी गई है। अथ मन्व प्राणी केवन अपने कल्याण की सोचते हैं और दूसरे ज्ञानवन् म कीर छोनकर खाने में ना नही हिचकिचाव भयोकि उनमे बुद्धि का प्रभाव है। मनुष्य को इसी-लिए सर्वोच्च माना गया है कि उसमे एक विलक्षण शक्ति है जिसका नाम हमारे शास्त्रों ने बुद्धि व विवेक कहा है। विवेक के कारण ही मानव धर्म-कर्म करके मानवता का कल्याण कर सकता है। यदि मानव ने यह भिन्नता नहीं तो निम्नलिखित ब्रह्मावत के अनुसार यह मानव कहलाने का अधिकार ही नहीं रहता—

आहारनिद्रावस ज्ञानञ्च,  
साधनभवेत्तु पशुभिर्नरानाम्।  
धर्मो हि विषयमविका विषयो,  
धर्मेण हीना पशुभि समाना ॥

एषात आहार निद्रा भय और विलास मानना मारो बात मनुष्य और पशु ने एक समान ही हुआ करती है। धर्म ही वह गुण विशेषता है जो मनुष्य और पशु में भेद करती है। धर्म के अभाव में मनुष्य पशु से भी गण्य होता है। जिसे मनुष्य के लिए धर्म कर्म गया है। वह कामन्व ने यही है कि मनुष्य केवल अपने लिए जीने वाला और कदल अपने कुछ स्वार्थों का ध्यान रखने वाला प्राणी नहीं है। वह एक सामाजिक प्राणी है अतः उसका प्रत्येक कार्य-व्यापार प्रत्येक कदम अपना ही नहीं बल्कि सम्पूर्ण समाज और जीवन का हित साधन करने वाला होता चाहिए यही मनुष्यता का मन्वा लक्षण है।

किन्तु धर्मविषय के साथ यह स्वीकार करना पड़गा कि आज का मनुष्य सहित स्वार्थों और आत्म-जीवी होता जा रहा है। वह जन्मा-वृक्ष अपने स्वार्थ साधना में तो व गति में गगन रहा है। उसे दूसरों के दुःख प्रत्याय प्रत्याचार प्रसिधायन दुखने को चिन्ता नहीं। यही कारण है कि आज के लोग और भय और प्रभावित का वातावरण बना हुआ है, हाह-कार भय भरा है। वैदिक, दैविक, भौतिक तथा आज जलाए सब को प्राप्ता उसे प्रभाव का ही लक्षण कहा जाएगा। आज सारे जीवन में और समाज में प्रभु-वृत्तियां चर गई हैं। वह 'स कमीटी पर पूरा नहीं'—अर्थात् कि 'बड़ो मनुष्य है कि जो

मनुष्य के लिए धर्म।' जब तक सब के कल्याण की भावना मनुष्य में जागृत नहीं होती तब तक जाति दश और राष्ट्र का उत्थान सम्भव नहीं होगा। इस मानव कल्याण की भावना से प्रोत्-प्रोत् होकर ही हमारे प्रधानमन्त्री श्री राजीव गांधी मध्य-प्रदेश के आदिवासियों में कैसे धर्मिक व्यक्तित्व दुःख भाषाए सुनने गए। उसके पश्चात उड़ीसा के दोन बुद्धियों को पुकार सुनकर धर्मवाच व अथ से तत्त्व लोगों को पूर्ण आश्वासन देकर उनके कष्ट निवारण के लिए पूर्ण सहयोग के लिए कहा है। यह मानव योगि हो ऐसी दुर्लभ योगि है जिससे मानव दूसरों के कष्ट हरण कर सकता है और मानवता का कल्याण करने में समर्थ हो सकता है। आज मनुष्य में अंधकार व चरित्र हनन का बीजबाला धर्मिक हुआ गया है क्योंकि यह मानवता के हित को मूल गया है। आज एक देश दूसरे देश को निगलना चाहता है और शक्तिवाली राष्ट्र अपनी प्रभु सत्ता से छोटे राष्ट्रों को आस पिछा रहे हैं और महाशक्तियों के बल पर उन्हें भयभीत कर रहे हैं। जब तक समाज की देव की, राष्ट्र की प्रवृत्ति धर्म विमुख रहेगी राष्ट्र का कल्याण यथासम्भव नहीं है। सुख व समृद्धि उसी के पाव चपटों है जो मानवता के कल्याण के लिए अग्रसर होता है।

इन नर नन को पाकर कोई न कोई सामाजिक कार्य प्रवर्धन करना चाहिए। यह पत्र भौतिक बरों तो प्रवर्धनमात्रो नश्य है या आत्मा धर्म है और उसी व्यक्तियों की आत्मा बलवानों व पवित्र होती है जो पाप वृत्ति से दूर रहकर सत्सर्ग में प्रार्थक समय अवलोक करता है। धर्म के अनुसार धार्मिक करता है अपने वृत्तियों का बाह्यमुद्रा न करके अन्त-मूल करता है उसका धर्म मानव मात्र का कल्याण हो होता है और परोपरी को वह अपनी पीडा समझा है और दूसरों के पीडा में दुःख को भी महान समझकर उसके निवारण का पूर्ण प्रयास करता इसा सच्चे पिता ईश्वर की पीडा का अधिकारी हो जाता है। जन्म-मरण के चक्कर से दूर होकर वह अमरता ही जाता है।

(अथ पृष्ठ १२ पर)

टेक

नुरो की भलाई करना सबसे अच्छा काम है। छडा दे नुराई उसकी जिससे वह बदनम है ॥ छडा दे नुराई नुरा धन्ये काम करने लगे शायद उसकी देस उसकी भी सुचरने लगे। बताओ नो इससे अच्छा और क्या प्रोग्राम है छडा दे नुराई उसकी जिस से वह बदनम है ॥१॥ कोई बुरा होता नही बुरी हो नुराईया लुटता था राजाना जो लोग और लुगाइया। जिसका आज विद्वद् द्विपि वाल्मीकि नाम है छडा दे नुराई उसकी जिस से वह बदनम है ॥२॥ शिक्षा देकर दूर करे प्रज्ञानी की प्रज्ञानता, धर्म शिक्षा देने पर भी किसी की नहीं मानता। फिर तो उस पापी के लिए राम है धनयथाम है, छडा दे नुराई उसकी जिस से वह बदनम है ॥३॥ मुसलमान ने भी मुसलमान को बरबाद किया, भारत ने कुर्बानी करके बलना को भाखाद किया। प्रूठी बिजुल से क्या धर्म की खतरे में इस्लाम है, छडा दे नुराई उसकी जिस से वह बदनम है ॥४॥ बहुराष्ट्रवाद जफर का बेटा एक रोक मधुरा मया, वजानन्द ने पेर पकड़े पाच गिल्ली देकर कहा। लुदा के फलसे तुम्हे गाह का मयाम है, छडा दे नुराई उसकी जिससे वह बदनम है ॥५॥ स्वामी दयानन्द ने कहा था तहसीलदार को, छोड दो गारा सुनो वेद के प्रचार को। धर्मोन्मत्त तुं होए पर परेयाओं का गुनाम है, छडा दे नुराई उसकी जिससे वह बदनम है ॥६॥ पिताया बा पूष जहर गेर करके किसी ने, पाँच सौ रुपये दे करके कहा था यह—द्विपि न। दयानन्द की तरफ से यह आपकी ताना है, छडा दे नुराई उसकी जिससे वह बदनम है ॥७॥ ईश्वर की प्रसली शक्ति मत्प्राय-सकाश में, यथम नाम महबल पारधये सन्मूलास म। ज्ञान से अच्छा जाप धोड म नाम्दाम नाम है, छडा दे नुराई उसकी जिससे वह बदनम है ॥८॥ एक डेड मित्र बाकी रह गया था फासी का, रिता जन्म फिकरा था वह अन्त ईसा मसी का। दू गुड ऐण्ड कोरेड पासिरो कलाम है ॥९॥ छडा दे नुराई उसकी जिससे वह बदनम है ॥१०॥ कृष्ण जैसी नीति रहे राम ली मर्यादा रहे, पृथ्वीसिंह जेबक कहै लासन प्रजावाद है। जिसने भेट भवन जिसका शिकोहपुर घाम है, छडा दे नुराई उसकी जिससे वह बदनम है ॥११॥

टिप्पणी—धर्मसंग्रह के सुविख्यात धर्म अमल उपदेशक श्री बाबु कवि चौधरी पृथ्वीसिंह जेबक ने अपने स्वर्णवास से कुछ पहेले, दुर्बानों के सुधार तथा उनके कोष निवारणार्थ १० पद्याओं का यह गीत बनाया था। जैसे माधुर्षी के मत्स्य से रत्नाकर डाक कवि वाल्मीकि द्विपि बना था। भारत ने बंगलादेश स्वतंत्र कराया। प्रभु बुजानन्द की राजनैतिक गुप्त मधुरा पचावत वीरकृष्ण जन्मद्विपि स० १९१३ वि० में दिल्ली नरेश बहादुर शाह का नेत्र फिरोजशाह ने गुप्त को पाच गिल्ली भेटकर सम्मान किया तथा अपने पिता का भा सम्मान विदेश दिया था। वह शाहजादा प्रोग्राम हार के पश्चात मक्का मदीना जाकर सन् १८९६ ई० में गुजरा था। महर्षि दयानन्द के उपदेश से अयोध्या स्वतंत्र अयोध्या बन गया। विद्यादात जलन्याय की महर्षि ने पाच सौ रुपये दिए बहु पश्चाताप पूर्वक दुर्लभ सहित मरा। कहा है ईसा मसीह ने फासी के मयम मो पटोपकार की बात कही थी, ईश्वर अस्मि नाम धोड म स्वतंत्र सर्वोच्च उपासना है, दुराष्ट्रों के लिए रामकृष्ण का दण्ड चाहिए। चौधरी पृथ्वीसिंह का ग्राम शिकोहपुर है।

शेषक निहालसिंह धर्म पता उज्जैन सेठी रोहतक

## पुस्तक समीक्षा—

## ‘प्रभुदर्शन’

लेखक श्री यशपाल जी ‘धार्यन्व’  
प्रकाशक महिला धार्यसमाज, रू‘शन रोड, मुरादाबाद। मूल्य केवल प्रचार

‘प्रभुदर्शन’ की बात प्रायः सभी मत मतांतर करते हैं और इस सब में धारा जितना भ्रम व्याप्त है शायद ही धार्य किसी विषय में हो। प्रस्तुत पुस्तक में लेखक ने प्रभुदर्शन का वैदिक दृष्टिकोण धार्यन सरस और सरल शब्दों में सुन्दर तर्क और शारदीय प्रमाण के साथ प्रस्तुत किया है।

श्री यशपाल जी धार्यन्व धार्यक वर्णों से धार्यने केवो तथा लघु पुस्तकों के माध्यम से इस वैदिक मान्यता की निरन्तर सेवा कर रहे हैं। हमारा निश्चय है कि धार्यजगत में इस प्रकार के धार्यक प्रचार की न केवल मुरादाबाद होगी और धार्यक से धार्यक पुस्तक विनिरण द्वारा प्रचार प्रसार

होगा धार्यतु साहित्य प्रकाशन की सेवा श्रेष्ठ धार्यक धार्यसमाज के प्रकाशन विभाग की सहायता करने।

श्री ‘धार्यन्व’ स्वाध्यायीकी और धार्यसमाज हरधला कालीनी मुरादाबाद के सन्धि सदस्य हैं। उनकी बीस के लगभग इस प्रकार की पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी हैं।

मैं उन्हें और धार्यसमाज के महिला विभाग की जिन्होंने उनको प्रस्तुत पुस्तक का प्रकाशन कराया है बधाई देता हूँ।

प्रमचन्द्र श्रीधर एम ए  
३६/१ रणजीतसिंह मार्ग  
आवर्गनगर दिल्ली-११००३३

## देवदयानन्द बता गये

लखन—स्वर्गाय १० देवेन्द्र जी नृपान  
स्वान पी० सूरनपुर बि० गाजियाबाद (२००१-२)

भारत देख हमारा याग बन जाए स्वर्ग नग्निया।  
देव दयानन्द बना गए हमें वैदिक वर्म डगरिया ॥

एक जल्ला का पूजन हो ना पूज दर दीवारी की।  
मन्थ्या हुवन कर नर-नारी रख गुड बिचारी की।  
धर्यन के घट-घट भर हुए हो कौड खास कुटरिया।

सभा सचिव मन्त्री सदस्य में अनु बंद के जाता हो।  
गज्य की गद बनाकर खेल राम भरण से आता ह।।  
मीता जैसी माता हो जो तज दे महल शटरिया ॥

शिल्प धार्यन के पंडित हो और सुखी ममी किसान हो।  
कान पकड़ जाए शेरों के बच्चे भरन ममान हो।  
गुग के नृत्य नगर में उदल बखड गाय बछिया।

धार्य है शुभ घडी दस में फिर स नव निमाए की।  
गुड भावना बनी रह प्रम देवैन्द्र तुफान की  
चाह कोई उछाने मोना चादी बीच बजरिया ॥

## गाजर के गुण

ले० स्वामी म्यकपानन्द सरस्वती

## गांव शहर बिकते हैं

यज भन हो जाता है  
जब समिधा और धार्यत में  
हम्य तो बहो रहता है  
मन दूधन हो जाता है  
और जब—

इदम मन का स्थान  
स्व ग्रहम ले लेता है  
तब श्रवतर्तित होता है जयचन्द  
और सोमनाथ का मय्य शिवालय  
रु-रु-रु होकर बिखर जाता है  
गौरी के राक्षसी कदमों में।

गम का बन गमन  
दयानन्द का बैराग्य  
महावीर का अपरिग्रह  
गुड का राज्य त्याग  
मान ऐतिहासिक घटनाएँ नहो यो  
इमकी पुष्टभूमि में या  
पनाज की समष्टिगत  
गुड जीवन के सत्कल्प का पाठ  
हम्य सद्भाद दशरुधर की भगिनी  
रुद्र की अपराध और  
और वैशाली की आश्रपाली  
इष्टान यौवन, बन छवि लेबर भी  
राजित हो रह गई थी

क्यों वृषणा रहा गांधी मान नगोटी में  
हैंसे समक पाये धार्यधवासी उसकी  
माया  
हॉकड, कर्नाटक, केरल, तमिलनाडु  
हैंसे बन गए उसके धनुषगामी

निरन्तर उपासत बुद्धि सत्याग्रह  
इन सब का सुदर्म क्या था ?

दो पैसे सेर के नमक हेतु  
दाखी योगा, लाठी और  
चौसठ हजार व्यक्तियों का  
कारावास भर देना  
हंस कर सहना सभी याननाएँ

क्या केवल घटतीस वर्षों में  
राष्ट्र का चरित्र बदल जाता है  
यज बहो रहता है  
मन कुण्ठित हो जाता है  
नग जाती है मेवादादी की  
नन्मी चक्रवर्ती पक्षिधरा  
और राजनयिक भवनी में  
सेवादा छुटते हैं  
सेवक की धाजों पर

हृदय की मर्जी पर  
गांधी बहो रहते हैं।  
सेवाधिकारी बन जाते हैं  
लारकिस बन्धु, और व्यापारी-  
मणिकाना कुम्भ नारायण  
सेवक हनुमान् की गरिमा भूलकर  
डुगने लगते हैं स्वामी के रहस्य  
धर्यत गुड  
धरणी धुधता पर उतर आते हैं  
बल्ले लगे हैं सविधान के पुच्छ  
देख जायदाद का रूप ले लेता है  
वन्दे लयते हैं उसके वृ गाग  
यज भन हो जाता है  
और बिखर जाते हैं धारी और  
राखस हो राखस!

—नरेश मुख ‘नौरव’

आजकल गाजर की फलन बुक  
हो गई है और बाजार में सभी प्रकार  
की गाजर उपलब्ध है। गाजर कई  
रंगों में होती है जैसे कि काली  
नारंगी बैंगनी और नाल रंग की  
गाजर। इन सभी प्रकार की गाजरों  
में धार्यके प्रकार के गुण होते हैं।  
किन्तु विशेष लाभ की दृष्टि से देशी  
गाजर धार्यक लाभदायक होती है।

कहावत है कि—

गाजर, बबबा घमला  
गाजर में मन लाय।  
धारा बड़े कम्बो मिटे,  
सुन साफ हो जाब ॥

गाजर के उपयोग करने व खाने  
का ढंग इस प्रकार—गाजर कम्बो  
खाने से तथा चबा-बना कर खाने से  
पेट साफ रहता है। गाजर में १२  
किस्म के लवण पाये जाते हैं। इसमें  
सल्फर, सोडियम क्लोरीन, मैग्ने-  
शियम, कैल्शियम सिलिकन पो-  
शियम इत्यादि सभी तत्व मौजूद है।  
जो कि कम्बो दूर करने में सहयोगी  
है।

गाजर स्वास्थ्य वर्धक और गुण-  
कारी तत्वों का मण्डार है। गाजर  
के रस में उपरोक्त सभी तत्व पाये  
जाते हैं जो सामग्री को पुष्टिकारक  
होते हैं। गाजर का हलुवा बना कर

जो खाया जाता है। गाजर की छील  
कर बीच की नली को निकाल देना  
चाहिए। फिर पानी में खोकर पीया  
कस म कस कर दूध में पकाना चाहिए  
गंगा होने पर मोठा मिला कर  
हलुवा तैयार होता है। कुछ लोग  
माया (सोडा) भी मिलाते हैं जिससे  
मायाम पिस्ता काज इलायची  
मिलाकर तयार करने हैं जिसके  
सेवन करने म सरीर पुष्ट होता है।

गाजर की सब्जी बना कर खाने  
से पेट साफ रहता है नया पेट की  
बीमारी खत्म होती है। रक्त शुद्ध  
होता है। इसलिए गाजर का उपयोग  
धर्यक करना चाहिए। गाजर की  
बाबू म भून कर खाने में बहुत गुण  
बढ़ जाते हैं किन्तु धमकी करके खाना  
चाहिए नहीं जो दानो की जब खराब  
हो जाती है।

गाजर का मुखवा भी बनाया  
जाता है जो कि कम्बो को खत्म कर  
के भूल बढ़ाता है। गाजर के रस में  
पोडा सा गुड मिलाकर पोने से भून  
बिकार दूर होता है। साथ ही चम  
रोग ठीक होते हैं। सन्तो मिसली है।  
आजकल सोसम है प्रयोग कर लाभ  
उठाया।



## समाचार सन्देश

**आगामी १५ फरवरी १९८६ को दिल्ली में  
डी०ए०वी० शताब्दी समारोह पर  
विशाल गोभा यात्रा कार्यक्रम  
ममी आर्यसमाजों व आर्यजनों में  
इसमें भाग लेने की अपील**

दिल्ली, ४ दिसम्बर

नागदेशिक धर्म्य प्रतिनामि ममा के प्रधान श्री रामगोपाल शालवाले ने आगामी १५ फरवरी १९८६ को डी०ए०वी० शताब्दी समारोह पर निकान वाले विशाल गोभा यात्रा में शामिल होने के लिए सभी आर्य समाजों व कार्यकर्ताओं को विशेषकर दिल्ली की समस्त आर्य जनता से अपील की है कि इस दिन सभी लोग धर्म्य कार्यक्रमों को छोड़कर इस गोभा यात्रा में बड़ी संख्या में भाग लें।

यह गोभा यात्रा प्रातः ११ बजे

**विस्थापितों और घुसपैठियों में भेद किया जाए  
हिन्दू रक्षा समिति की अत्यन्त पबिता राक्षस रानी  
का वक्तव्य**

धर्म्य समझौते के धर्मगुरु बगलादेश में धर्म्य में आए लोगों को १० साल के लिए मरदान से बर्षित करने का नियम बिदाय का विषय बन गया है। इसके कारण बगलादेश से आए हिन्दू विस्थापितों के मन में आक्रोश उत्पन्न रहा है। उनका कहना है कि भारत विमान के समय उन की हत्या के विरुद्ध उन्हें बगलादेश तत्कालीन पूर्वी पाकिस्तान में रहने के लिए बिदाय किया गया था। उन्होंने कभी पाकिस्तान बनाने का न तो समर्थन किया था और न ही उन्होंने मातृभूमि भारत से अपना सम्बन्ध विच्छेद किया था। इसलिए वे घुसपैठियों नहीं बल्कि विस्थापित हैं और मातृभूमि में मरदान बापस लौटना उनका अधिकार है। बगला देश से आये हिन्दुओं के इस कथन में कल्ल है। वे घुसपैठिये नहीं बल्कि विस्थापित हैं इनके विषयों पर धर्म्य में भूमि हृष्यने और राजनैतिक स्थायी को दुष्टत्व रखकर इसे बगलादेश में मिलाने की योजना मन में रखने वाले मुस्लिम तत्त्व घुसपैठिये हैं। घुसपैठिया और शरणार्थियों में अन्तर समझना चाहिए।

लालकिला मदन में प्रारम्भ हुआ और बाद में लोक धन्दापर नई सड़क चारदो बाजार होजकाजी धर्म्यरी गेट, मिण्टो रोड, कनाट लेस रीगल बिल्डिंग, पामिषामेट स्ट्रीट सरदार पटेल चौक गोस बाकलाना, बिबला मन्दिर से होती हुई साय ५ बजे आर्यसमाज मन्दिर मार्ग नई दिल्ली में समाप्त होगी।

इस अवसर पर धर्म्य कार्यक्रमों का भी आयोजन किया जा रहा है।

प्रचार विभाग सार्वदेशिक सभा,

दिल्ली

**महर्षि दयानन्द जन्म स्थान टंकारा, जिला राजकोट  
(सौराष्ट्र) भारत सरकार द्वारा अकस्मिक प्रस्तुत क्षेत्र घोषित**

धर्म्य जनता की सूचनाय निवेदन है कि युग प्रवर्तक महर्षि दयानन्द की जन्म भूमि टंकारा, बाज धकाक के कराल गाँवों में जा रहा है। भारत सरकार ने टंकारा (जिला-राजकोट) सहित समस्त सौराष्ट्र की धकाकप्रस्त घोषित कर दिया है।

टंकारा में दम समय उपदेशक विशालय गोपाला धार्मिक कार्य महर्षि दयानन्द स्मारक ट्रस्ट टंकारा द्वारा चलाये जा रहे हैं। इसके कारण टंकारा ट्रस्ट को काफी धार्मिक सकट का सामना करना पड़ रहा है। वहाँ पर पानी बिल्कुल सूख गया है, जिस से काफी सकट उत्पन्न हो गया है।

येरी समस्त धर्म्यसमाजों स्वी-

**वेद प्रचार गोष्ठी**

धर्म्य १८-१९-१९८५ परीषद् कारिणी सभा के सत्सामधान में चलिसेले के अवसर पर मध्याह्न सत्र में चर्चा की गई। रामस्वरूप खोसबक गोष्ठी में कदा कि (१) चर्चिष्ठ वेद मध्य उसी घेली में पूरा हो (२) सब धामाओं में इसका धनुवाद हो (३) धर्म्यों का निरा करण हो। (४) एक निश्चित रूप रेखा धनुवाद विमिल रेखाओं के सुन-वासियों में वैदिक धर्म के उपदेश की व्यवस्था हो। इन पुरी पर गभीर विचार करने के लिए सध्वप्रतिष्ठ वैज्ञानिक विज्ञा वेत्ता स्वामी सत्य प्रकाश जी की धर्म्यप्रता में गोष्ठी हुई।

कमय स्वामी धोमानन्द जी महाराज (प्रधान, परीषद्कारिणी सभा) सत्यप्रिय धारकी (हिंसा) प० धर्म्यप्रिय जी (बरीध), डा० मवानीलाल जी मारवणी (बरीध), धी० वेरासह जी (नई दिल्ली), वैद्य प० ब्रह्मानन्द जी (धर्म्य), पु० खोसबकी (प्राचार्य-कमय तुल्लुल चित्ती), प० धर्म्यप्रिय जी (अध्यक्ष) बजराल साह जी (डोडियाणा), बरवोर जी (छाटवी), बरीलाल जी (देवस), सोहनलाल शरदा जी (शाहपुरा नीलावाडा) वर सत्यम सिंह जी, धीमती मिश्रलेख (महिषा धर्म्यसमाज धर्म्य), मजनीपेच्छक देवराज जी, मोक्षदास धानप्रणी जी (सिधवा), प्रदीप (धारी), वैद्य धर्मसिंह जी कोठारी ने विचार व्यक्त किये। धार्मिक पाठ किरीडीसक जी पुण्य में किम्बा।

सब धर्म्यों में सख प ने व सत्स जामा में धर्म्यी बात कही। उप-

धर्म्यसमाजों एवं धर्म्य धर्म्य सत्सामाजों से तथा सभी धर्म्यजनों से भी धर्म्यता है कि इस सकट की वही में हमारी धार्मिक सहायता करने की कृपा कर इसके लिए हम धर्म्य के धर्म्यारी रहेंगे। यह सहायता की सति आप बेकाइफत धर्म्य मनीधार्म्य द्वारा महर्षि दयानन्द स्मारक ट्रस्ट टंकारा ३६३६५० (सौराष्ट्र) गुजरात धर्म्य इसके उप कार्यालय महर्षि दयानन्द स्मारक ट्रस्ट टंकारा, धर्म्यसमाज (धनारकली), मन्दिर मार्ग नई दिल्ली-१ के पते पर भिजवा सकते हैं।

रामनाथ सहगल  
कमनी

रोमट पार्षी विषयो के बारे में क्या कमिया रही है? क्यों रही है? कमी कैसे दूर हो सकती है? इन सब पर चर्चा की गई। वक्तव्यों में धर्म्य के कार्य की विधा की ओर सकेत किए। धोलापार का यह धर्म्य 'यह कि इस प्रचार की गोष्ठी बाध बार हो। उपरोक्त धर्म्य विषयों पर धर्म्य जनसंघ में कई कई दिन 'गोष्ठी' होती धर्म्यप्रतिष्ठ है। इन धर्म्यों पर गोष्ठी हुए धर्म्य, हर सत्र में हो, भारत के धर्म्यता धर्म्य रेखाओं में भी हो। धर्म्य गोष्ठी से ही सत्योप न कर दिया जाये वरन धर्म्य प्रचार के धर्म्य-त्मक कार्य चलिसे गति से चल। वे जपेसाए धर्म्यताओं की रही। विधान है इन धर्म्यप्रिय धर्म्य के सन्धान में धर्म्यसमाज समकाल का सन्ध सह-योग परीषद्कारिणी सभा को मिलना रहेगा।

रामस्वरूप  
गोष्ठी समोजक

**धार्मिक विवरण**

प्रचार पर धर्म्य भी धर्म्य धर्म्यसमाज में कराए।

गोहत्या, दहेज, महासमुद्रा के विरुद्ध तथा धर्म्यसमाज क शाहीरी की पूर्ण जीवनीय स्वाइडम द्वारा विलसार्थ बतायी है। जोसेली गीत भी होते हैं। विजली का धर्म्य धर्म्य

धार्मानन्द मजनीक

धर्म्य धर्म्य  
१/९३५९ धर्म्यधर्म्य, मनी न० २  
वेस्ट रोहतास नगर  
बाहदुरा, दिल्ली-३२

## दिल्ली की आर्यसभाओं के साप्ताहिक ससंग रविवार १५ दिसम्बर १९८५

प्रतापनगर-ड० भोष्मप्रत शास्त्री, भानन्दबिहार जेलरोड-प० हरि-  
द्वन्द्व धार्य । धार्यरूपा सम्बोधन-  
प० उदयशंकर धर्माचार्य । इन्द्रपुरी-  
प० वेदप्रकाश शास्त्री । किष्क-  
केम्प-प० ब्रह्मप्रकाश शास्त्री । गुज-  
राणा टाउन-डाक्टर रघुनन्दन  
निहल । मोक्षिन्दपुरी-स्वामी यज्ञानन्द  
सरस्वती । लक्ष्मीनगर बिस्तार-  
प० बुधनालाल धार्य भ्रमनोपदेशक ।  
चूनामण्डवी गृहाङ्गव-डा० छविगुण  
शास्त्री । जलकपुरी की जलाक-  
प० धर्मवेक शर्मा । तिलकनगर-डा०  
वेदप्रकाश महेश्वरी । टेङ्गनगर-प०  
श्रीमदेष शास्त्री । दरियागञ्ज-ब्रह्म-  
चारिणी, पण्डिता रामदेवी एम०ए० ।  
नामलराय-ब्रह्मचारी मनुदल शास्त्री,  
नारायण बहुराज-प० रामवीर शास्त्री,  
आदिवास पुरी-प० अग्रनान काल  
धर्मोपदेशक । टैमोर गार्डन-प०  
काकेश्वर शास्त्री । प्रीतमपुरा-प०  
वेदपाल धार्य । प्रज्ञातबिहार-प०  
बन्धनलाल धर्मोपदेशक । पञ्जाबीबाग  
एकसेन्सन-प० वेदव्यास धार्य भ्र-  
मनोपदेशक । पञ्जाबी बाग-धार्य  
हरिदेव सिद्धान्तभूषण । मोक्ष-

महात्मा वेदेष विज्ञ । मोहनबस्ती-  
प० तुलसीराम धार्य । मोतीबाग-  
प० बलवीरसिंह शास्त्री । महावीर-  
नगर-प० रमेशचन्द्र वेदचार्य ।  
राणाप्रताप नाम-प० श्रवण विद्या-  
लाल । राजीवी गार्डन-प० ब्रह्म-  
प्रकाश बागेश । रमेशनगर-धर्म-  
वीर रमणवीरसिंह राणा । लक्ष्मीबाई  
नगर-प० नन्दलाल निर्मल सिद्धान्त  
शास्त्री । लक्ष्मणगो-मा० मोहनलाल  
गोषी । लोहनागञ्ज-प० मुनिदेव  
भक्तनोपदेशक । शास्त्रीनगर बाग-डा०  
सुभाषचन्द्र शास्त्री । शायी कामपुर-  
प० देवराज वैदिक मिशनरी । बी-  
नगर-श्रीमती कस्तूरी देव धार्य ।  
हौजबास-धार्य । इयामलाल ।  
प्रतापनगर शाहूचरण-महात्मा राम  
विश्वरिष । टीकानगल-धार्य  
हरिदेव सिद्धान्तभूषण । बोट क्लब  
पोहलर १ बजे से २ बजे तक ६, १०,  
११, १२ २३ दिसम्बर प्राचार्य हरि-  
देव सिद्धान्तभूषण नक केसरी का  
प्रवचन होगा ।

### व्यवस्थापक

स्वामी स्वकृपानन्द सरस्वती  
प्राध्यापिता वेदप्रचार

## दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के उपदेशकों के कार्यक्रम दिसम्बर १९८५

१ महात्मा रामकिशोर जी वेद  
महोपदेशक ६ दिसम्बर से १५ दिस-  
म्बर धार्यसमाज भ्रमनामण्डो गृहा-  
दरा २२, २३, २४ दिसम्बर-धार्य-  
समाज सोहना [हरिधामा] २२, २३  
दिसम्बर धार्यसमाज मोतीनगर नई  
दिल्ली-१५.

२. पण्डित सत्यमेव स्नातक  
रेडियो टी०वी० कलाकार ६ से १५  
दिसम्बर नक भ्रमनामण्डो गृहादरा,  
समीत कार्यक्रम रहेगा ।

३ पण्डित जोतीप्रसाद गोलक  
कलाकार ६ से १५ दिसम्बर भ्रमनाम-  
ण्डो गृहादरा-समीत कार्यक्रम ।

४ प० वेदव्यास धार्य प्रचारक समीत  
कलाकार ६ से १५ दिसम्बर, धार्य-  
समाज कृष्णनगर कार्यक्रम रहेगा,  
१५ से २२ दिसम्बर, धार्यसमाज  
श्रीमदनगर सोनीपट (हरिधामा) ।

५. धार्यार्थ हरिदेव सिद्धान्त-  
भूषण ६ से १३ दिसम्बर, पोहलर  
बोट क्लब कार्यक्रम रहेगा ।

६ प० बन्धनलाल धार्यप्रचारक  
समीत १५ दिसम्बर अस्त ६ बजे,

लक्ष्मीनगर बिस्तार (समीत कार्यक्रम)  
१५ से २० दिसम्बर तक पोहलर १  
बजे से २ बजे तक बोट क्लब कार्य-  
क्रम समीत द्वारा प्रस्तुत करेगे ।

### व्यवस्थापक

स्वामी स्वकृपानन्द सरस्वती  
प्राध्यापिता वेदप्रचार विभाज  
दि० अ० प्र० सभा

## हरिजन युवक बनवारी विधियों के चमूल से मुक्त

### करा दिया गया

तिजारा । दिनांक ४-१२-८५  
श्राप सातोपाका (टुकड़ा) की  
मस्तिष्क के इन्फार्मल्टी फकीर प्रादि  
साधियों द्वारा हरिजन युवक बनवारी  
को धर्म परिवर्तन के लिए उठा लिया  
गया बा जिसको वाना टुकड़ा के  
धमक प्रयासों से धार्यसमाज एवं  
विश्व हिन्दू परिषद तिजारा के कार्य-  
कर्ताओं ने मुक्त कराकर शुद्ध कर  
लिया गया है ।

विजनदास धार्य  
मन्त्री

धार्यसमाज तिजारा, अलवर

## आर्यवीर दल की देन युवकों का शारीरिक स्वास्थ्य विकास

ने०-रामाज्ञा बैरागी सचानक

मार्गदर्शक धार्यवीर दल बिहार

युवकों की पीढ़ी, राष्ट्र के  
भविष्य की धाराशिला होती है ।  
इस धाराशिला को सशक्त रखने  
के लिए युवकों के शारीरिक स्वा-  
स्थ्य के विकास की दिशा में धार्यवीर  
दल का प्रयास हमारे सामने है ।  
धार्यवीर दल की शाखाओं और  
सिखियों के माध्यम से युवकों को पूर्ण  
धनुशासित जीवन जीने और ब्रह्म-  
मुहूर्त में उठने की प्रवृत्ति को जागृत  
करने की प्रयासों की जाती है । इन  
शाखाओं के माध्यम से शारीरिक  
शक्ति की सशक्त बनाने का प्रयत्न  
किया जाता है । दैनिक व्यायाम का  
धम्यास युवकों के लिए अत्यन्त मिष्ट  
होता है । ऐसे प्रसन्न उदाहरण हमारे

सामने हैं, जो धर्मयोग दल से मजबूत  
होने में उन्हें आनन्दमय हो रही  
शक्ति से क्षीण हो चके थे उनके  
शरीर मजबूत बरिच शक्ति का  
निमाण हो रही हुआ वरन् उनके  
शरीर नवजीवन का मंचन हुआ ।  
व एक धार्यवीर और माहारी युवक के  
रूप में मयाज के बीच प्रतिष्ठित  
हुए । धार्यवीर दल की स्पष्ट मान्यता  
है कि बरिचबान युवक हो जागृत  
राष्ट्र के निर्माण में महो भागीदार  
होते हैं । युवकों का बरिच ही राष्ट्रीय  
बरिच को निश्चिन्त करता है । धार्य  
वीरदल नाशक जो धन्य है दली लक्ष्य  
और उद्देश्य को केन्द्र धरन है ।

## साधना की भूमि या साधना मन्दिर

पक्षों गण्ड का शरीर है, जन्मता  
प्राण है और सस्कृति है मन शरीर  
प्राण और मन के सम्मिलन से ही  
राष्ट्र की शाखा का निर्माण होता है ।  
हमारे देश का नाम आर्यवर्त है,  
भारत है । भारतीय तात्पर्य धार्य  
सस्कृति की स्पष्ट परिभाषा है-  
कृपन्तो विरचयाम्य और हमारी  
सस्कृति का स्वर है- सर्वे भवन्तु  
सुखिन । इस परिभाषा के अध-  
यन के लिए धिया और स्वाध्याय  
धनियाई है । वेदो में उत्तम कोटि  
के राष्ट्र निर्माण के लिए सामयिक  
तेज तथा शारीरिक शक्ति का प्राप्ति  
के लिए प्रार्थना को गई है । इस  
दृष्टि से इस परम पावन लक्ष्य की  
प्राप्ति के लिए धार्य वारदल और  
स्वाध्यायी प्रकृति का धनुप्रति  
करने, ब्रह्मचर्य धम पालन करने के

साध ही शारीरिक स्वास्थ्य की  
सम्पन्नाति के लिए और विशिष्ट युवकों  
की धीर धर्मशक्ति जागत करने के  
लिए मानवता प्रिय या मानवता मन्दिर  
के निर्माण को योजनाओं की अतिम धम  
दिखा गया । धार्य वीर दल की और  
से भागत कि विभिन्न प्रवृत्तों में बहुत  
मार्ग मानवता मन्दिर स्थापित किए  
गए । यह योजना सफल रूप से प्वा-  
सित और प्रतिष्ठित हुई है । बीच से  
कुछ स्थितिता भी धार्य है किन्तु  
अब पूरा जागरण है । जिसके लिए  
हमारे प्रधान सचानक का बाल  
दिवाकर हनुष नया उपपन्न सचान-  
क डा० देववत प्राचार्य समर्पित  
हैं । धार्यवीर दल के कार्यो की विशेष  
जागृतारी हेतु 'धार्यवीर दल एक  
परिचय' पुस्तक छप गई है अलवर  
पट ।

## शोध-संगोष्ठी

"प्राज्ञ दिनांक २४ १९-८५ ई०  
की स्वामी समर्थनानन्द वैदिक शोध  
संस्थान गुरुकुल प्रभात धाम  
(डोहरी) भोला भाल मरठ (उत्तर  
प्रदेश) में युवक स्वामी विवेकानन्द  
की सरस्वती की प्रत्यक्षता में एक  
शोध समीचीन सम्पन्न हुई । जिसका  
संयोजन डा० निरुपणी जी विद्याल-  
कार ने किया है । इस समीचीन का  
विषय था- वैदिक सन्निधियों में  
देवतावाद' इस समीचीन के प्रोफेसर  
शेरसिंह, श्रीमती प्रभात शोभा, डा०  
कर्णसिंह, डा० वेदपाल (पञ्जाब वि०  
वि०), डा० तथा दुर्गाधिया, डा० वेद-

प्रकाश, कु० गोला (शोध छात्रा वि०  
वि०), सुनीता वर्मा, श्री सोमेश्वर  
शतशु, श्री विश्वनाथ तथा ब्रह्म-  
चारी भाग्यलति प्रादि विचारकों ने  
अपन विचार व्यक्त किये । धर्म में  
गुम्फल के मर्षो प० श्री इन्द्रराज जो  
ने सस की बयबाद देत हुए शोध  
संस्थान की योजना पर प्रकाश डाला  
अधली समीचीन १३ जनवरी १९८५  
की प्रायोगिकता का निश्चय  
किया गया ।

भबदीय  
इन्द्रनाथ मन्त्री

## ग्रेटर कैलाश १ में आर्य युवा सम्मेलन सम्पन्न

आर्यसमाज ग्रेटर कैलाश १ के वार्षिकोत्सव पर आयु युवा सम्मेलन की आयोजन करते हुए आ प्रथम सहमेलन में सामाजिक संस्थाओं से भाग की कि वे युवकों को उचित प्रतिनिधि बंद। युवा समूह के उपस्थिति में कुछ आयु संस्थाएं हा काय कर्मों में युवाओं का स्थान दे पाई है। आयु समाज के प्रारम्भिक इतिहास में हम देखते हैं कि युवा वय की प्रचार शक्ति व उम्र हंस हा आयुसमाज ने बहुमुखी उन्नति की।

प्रसिद्ध धार्मिक और वसवारी एम

## आर्य सत्याग्रह हैदराबाद पेशन का मामला

दिल्ली २ दिसम्बर।

जिन लोगों ने हैदराबाद आर्य सत्याग्रह १९३६-३९ में [सत्यदेविक सभा द्वारा संचालित निजाम हैदराबाद के विरुद्ध आंदोलन] का भाग लिया था और [अन्तर्जाल] का सजा हुई था। उन सब सत्याग्रहियों से निवेदन है कि अपना प्राधान्य वन धर्म नाम पिता के नाम स्थान बहा से सत्याग्रह के लिए एए वे आर्य बहा निरपराध हुए [तिथि] जेल का नाम बहा प्रारम्भ में यज्ञ एए और बहा से छूट तथा छूटने की [तिथि] के

ए वे आर्यसमाजों से अपील की कि वे युवकों को भागवित करने के लिए मन्दिरों में प्रशाद भाग्यशास्त्राए जको करादेह के इ और योगासन कलाओं का प्रायोजन कर।

युवा धर्मका और नरेन्द्र धर्मस्थी ने कहा कि ई भी सत्या युवकों के धाने में ही गतिशील होती है। युवाओं को ब्यसनों से मुक्ति दिला कर राष्ट्र की सेवा में उन्हें आर्य समाज ही लया सकता है।

चन्द्र मोहन आर्य

विबरण सहित अधिकतम २० दिसम्बर १९८५ तक साप्ताहिक आर्य प्रतिनामाध सभा महर्षि दयानन्द प्रबन्ध रामलीला स्थान नहीं दिल्ली २ के पते पर भिजवा देवे ताकि उनका मामला केन्द्रीय सरकार के सामने पेशन हेतु स्वीकृत करया जा सके। इसके उपरान्त यदि कोई व्यक्ति छुट गया तो साप्ताहिक सभा का उम्मेद नामसे में किसी भी प्रकार के सहयोग के लिए उत्तरदायी नहीं होगी।

सामवापाल सासवाले

प्रधान साप्ताहिक सभा दिल्ली

## मातृ मन्दिर कन्या गुच्छल की छात्राओं के वेदमन्त्र की धूम

२६ दिसम्बर २६ दिसम्बर तक मातृ मन्दिर की छात्राओं ने पलायन विहार के छात्रागत विद्यामण्डल में आयोजित विद्याय युवुद्ध परायण यज्ञ में मन्त्रिका का कार्य सफलता पूर्वक सम्पन्न किया। बालिकाओं के मन्त्र वेद मन्त्रोच्चारण से हुए २ के अनेक धामा का सत्ता की सत्ता में चलता [अभ्युपनिषद्] और उन्होंने बालिकाओं को स्नेह से संकाद किया बन्ध, तथा ११०१ २० की बली श्रुति की।

बालिकाओं के मावपुत्र प्रणाम

## लुधियाना में विशाल पारिवारिक सत्संग

आर्यसमाज महर्षि दयानन्द बाजार लुधियाना के सहयोग से आर्य युवक सभा की ओर से रविवार १९ नवम्बर १९७५ को साय ३:१५ बजे से ६ बजे तक श्री राम गुच्छल की याद के निवास स्थान पर पारिवारिक सत्संग का आयोजन किया गया। इस अवसर पर गुरेन्द्र कुमार जी शास्त्री ने यज्ञ सम्पन्न कला तथा उनका मनोहर प्रवचन हुआ। वेद प्रचार, अन्नम म वसा लुधियाना की ओर से श्री किरपा राम आर्य तथा श्री यशपाल जी आर्य ने अनेकों

का कार्यक्रम प्रस्तुत किया। इस सारे समारोह की अध्यक्षता श्री नवनील नाल जी द्वारा प्रधान आर्यसमाज महर्षि दयानन्द बाजार लुधियाना, ने की। बहुत बड़ी संख्या में सत्संग प्रमियों ने इस सत्संग में भाग लेकर वन लभ उठाया।

रिश्तेज वात धार

धर्मस्थ

वेद प्रचार विद्याम

आर्यसमाज महर्षि दयानन्द बाजार

लुधियाना

## वेद प्रचार सप्ताह सम्पन्न

आर्यसमाज बसईं दारापुर रतन पाक रामगढ़ ए एष आई कालोनी नई दिल्ली ११००१५ से ५ नवम्बर से १० नवम्बर १९८५ तक वेदप्रचार सप्ताह का कार्यक्रम सम्पन्न हुआ जिसमें यज्ञ के बह्मा डाग वन देव सर्वा तथा सतदेव जी रेडियो, कलाकार के प्रतिनिध प्रजन और आचार्य हरिदेव जी तन केशरी द्वारा कथा के माध्यम से वेद भाग पर चलने का सहपदेश हुआ। पुष्पहृति के दिन श्री० मारत मित्र जी शास्त्री खुशो राम जी ने यज्ञ एवं वेद के सम्पन्न में सहपदेश दिया। इसी अवसर पर श्री रामकुमार जी यागो सदस्य दिल्ली नगर निगम न श्री० कुलीचन्द

पुस्तकालय एवं वचनालय का प्रपन करकमलो से उदघाटन किया और ३१०० रुपये प्रदान कर सभी लोगों को वेद उपनिषद् गायत्री प्रादि यशों के अध्ययन को प्रेरणा दी। स्व० श्री० कुलीचंद जी का पुत्री श्रीमती शान्ति सनवास ने ५०० रुपये तथा धार्मिक पुस्तक प्रदान की। श्री प्रगताराम जी भूतपुत्र की संस्मरण सभी का धन्यवाद और समय समय पर शब्दो-शब्दो यशों के अध्ययन के लिए धान का निमन्त्रण दिया।

कृष्ण कुमार छाबड़ा

अन्वी

आर्यसमाज बसईं दारापुर नई दिल्ली ११००१५

## आर्यसमाज शालीमार बाग दिल्ली में योग प्रशिक्षण शिविर का समापन समारोह सम्पन्न

माननीय श्री स्वामी धर्मोत्साहन जी महाराज के निदेशन में २० ११ १९८५ से चलाये जा रहे योग प्रशिक्षण शिविर का समापन समारोह निम्न कार्यक्रमानुसार आयोजित किया गया है—

रविवार दिनांक ११ १९८५

प्रातः ५:३० बजे यज्ञ

६:०० बजे योगाभ्यास

७:३० बजे योग प्रशिक्षण

शिविर समापन

समारोह

अध्यक्षता स्वामी जगदीशानन्द जी बनना बहाचारी बित्तेन्द्र व साधो

## सर्वप्रिय दानवीर प्रधान श्री सोहनलाल जी तुली के आकस्मिक निधन पर भावभीनी श्रद्धांजलि

आर्यसमाज किशनगज (मिल एरिया) दिल्ली के अर्थ व प्रधान श्री सोहनलाल जी तुली जिनका आकस्मिक निधन ११ ११ ८५ को हुआ और किया रतन कुशवार दिनांक २० ११ ८५ को हुई उसमें आर्यसमाज किशनगज (मिल एरिया) की ओर से निम्नलिखित श्रद्धांजलि प्रस्तुत की गई।

अर्थ व श्री सोहनलाल जी तुली आर्यसमाज किशनगज (मिल एरिया) दिल्ली के अर्थ वे वाले इस महापुरुषों ने से एक महान पुत्र के को धाने चलकर ने एक आर्यसमाज के कर्म कार्यगत के रूप में उमरे और यशों तक इस आर्यसमाज के प्रधान पर को सुशोभित करते रहे। उनके अर्थक पक्षिय त्याग निस्वार्थ सेवा तथा उनकी निष्ठावान कुछ शायनाओं की यह अर्थ है कि इस शोध में वैदिक धर्म के प्रचारार्थ इस आर्यसमाज का अपना एक

डा० रघुवीर वेदासकार डा० वन

प्रातः ८:५५ बजे शान्तिपाठ व

प्रसाद वितरण

आर्य सन सपरिवार सावर धाम

जित ही।

निवेदक

श्रीमन्मत्त मारडाक मन्त्राली शोध राय हरिदाम गुप्त नगदील चन्द्र गुप्ता देवराज कालरा कमला तल गाढा डा० आर०के० गोमय भोला चक्र ब्राह्मण वेदप्रकाश महता नानक चन्द गुप्ता।

महत्त्वपूर्ण ऊँचा स्थान है। इन शब्दों के साथ विनम्र ध्याना के प्रति अपनी श्रद्धांजलि धारित की गई।

इसके अतिरिक्त इस आर्यसमाज के सत्संग प्रधान डा० एष एष कायरा एष कायरा एष की श्री ओषी प्रधान बाजार केनेटी किशनगज दिल्ली ६ के अतिरिक्त आर्य समाज के एक प्रमुख नेता मलिक रामलाल श्री मोक्षप्रकाश शास्त्री श्रीमती कोशला मलिक भूतपुत्र कान्सलर श्री बलवीर मित्र धानव और श्री कामेश्वर शास्त्री ने श्री धर्मोत्साहन विद्यालय धाना की शान्ति एष सत्संग के लिए सट १। इस शोध तथा में १५०० से भी अधिक बहुर और आई सपरिवार के।

[जि ए पाठक]

मन्त्री

आर्यसमाज किशनगज (मिल एरिया) दिल्ली-६

## आवश्यकता है

सुयोग्य वर वधू मेलान के लिए श्री धान्यदेव, सजीवक आदर्श विवाह नेत्र दिल्ली प्राय प्रतिनिधि सभा १५ हनुमान रोड नई दिल्ली से संपर्क करें।

निम्न युवक युवतियों के लि-  
सुयोग्य मेल वांछित हैं—

सुयोग्य वर चाहिए—

१ कन्या २४ वर्ष ५-३ बी० ए० पिता दिल्ली में व्यापाररत, २ कन्या २२ वर्ष ५-४ बी०/काम सरकारी सेवा में ३ कन्या २१ वर्ष ५-४ बी० काम गृहकार्य में दक्ष, ४ कन्या २१ वर्ष, ५-४ एम०० बी० एड, ५ कन्या २४ वर्ष ५-३ बी० ए० प्राय एड हज़ार रुपये मासिक ६ कन्या २० वर्ष ५-३ बी० काम, सरकारी सेवारत, प्राय १,५००/- मासिक ७ कन्या २३ वर्ष ५-३ बी० काम पिता प्रिंसिपल, ८ कन्या २३ वर्ष बी० ए० बा० एड पिता आई० एम० ९ कन्या २३ वर्ष ५-४ बी० ए० बी० एड सरकारी सेवा ३०० रुपये मासिक, १० कन्या २६ वर्ष ५-७ बी० ए०, ११ कन्या २८ वर्ष ५-७ कूट नर्सिंग ट्रेनिंग कार्यरत १० कन्या २२ वर्ष, ५-४ बी० ए० प्राय १५५० रुपये मासिक १३ कन्या २१ वर्ष ५-२ प्रध्यापिका ११००/- रुपये मासिक, १४ कन्या २० वर्ष ५-४ बी० ए० ट्रेनिंग कोर्स, प्रोपटर

टैलीकाण प्राय ११००/- मासिक।

सुयोग्य वधू चाहिए—

१ युवक २५ वर्ष ५-३ मैकनिकल इन्जीनियर प्राय १०००/- रुपये मासिक २ युवक २४ वर्ष ५-८ ईच इलेक्ट्रीकल इन्जीनियर प्राय १५००/- मासिक ३ युवक २४ वर्ष ५-२ एम० बी० एम० ४ युवक २८ वर्ष ५-८ ईच एम० बी० बी० एम० २३००/- मासिक, ५ युवक २० वर्ष ५-७ ईच एम० बी० बी० एम० २३००/- मासिक ६ युवक ३० वर्ष ५-८ एम० बी० एम० ३०००/- मासिक ७ युवक ३० वर्ष ५-८ प्रोसेसर पी० एच० बी० प्राय २,५००/- मासिक, ८ युवक २८ वर्ष ५-८ मैकेनिकल इन्जीनियर प्राय २३००/- मासिक, ९ युवक २२ वर्ष ५-७ बी० काम, प्रपना कार्यदायक फोटोस्टेड २,०००/- मासिक १० युवक २७ वर्ष ५-८ ईच बी० काम एडिशनल एयर लाइन्स १८०० मासिक, ११ युवक २७ वर्ष ५-७ एम० एल० बी० प्रपना व्यापार २,०००/- मासिक १२ युवक २८ वर्ष ५-७ एम० काम यूनिवर्सल बक प्राय १,०००/- मासिक, १३ युवक २३ वर्ष ५-४ बी० ए० प्राय १०००/- मासिक, १४ युवक २८ वर्ष ५-८ सरकारी सेवा १०००/- मासिक।

डा० चमपाल प्राय  
महामन्त्री

## मृनि-चोरी

(पट्ट ० का नेत्र)

मुनि ने पूर्वजित शस और लिखित कथा को ओग सकन कन एण कथा—हे पाण्डव शब्द युधिष्ठिर। राजा मुचुम्न द्वारा लिखित को शब्द प्रदान रूपी शब्द कम क फलस्वरूप निन्द्य ही उच्चनम प्र पात्रन होया व्याम मुनि कहने हैं—

(१) महाराज। प्रजापना का पालन पुर्णकप से करना ही क्षत्रिय का मुख्य धर्म है। श्रम्य काम कुमांग नुम्य हैं। श्रत तुम मन को शोक म निमन मन करो।

(२) देवर्षज सत्युषव। नम प्रपना पत्नी व भाइयो की हितकर बात सुनी। राजन दृष्टधारण कानन का पालन। ही क्षत्रिय धर्म है। सिर मुडाकर स-यासो वन जाना ठीक नही।

शोक मत करो —श्रीकृष्ण

इम संगोष्ठो मे श्रीकृष्ण श्री उन्मिल्य है। धर्जन न उनसे प्रायना की—हे माधव। धर्मपुत्र युधिष्ठिर स्वयं नगरो मे वसुधो के विद्योय से शोक सन्त्यत हो स्वयं ही दक्ष मागरे मे ब्रह्म मये हैं। भाग इन्हें वर्य दीजिए। उस मयम योडूण बोले—

१ सिंह युध। तुम शोक मत करो। शोक नो सरीर को सुखा देने वाला होता है। दस ममरागण मे जो कीर भार गये है मे फिर सहज ही मिल सके यह शभव नही है।

## गुरुकुल महाविद्यालय शुक्ताल का महोत्सव सभ्यन्

गुरुकुल महाविद्यालय शुक्ताल म०नगर का २१ वा वार्षिक महोत्सव २४ स २७ नवम्बर तक बड़ हर्षोन्मास के वातावरण मे सभ्यन् हुआ। महोत्सव मे समाज सुधार धान्दोलन प्राय सम्मेलन शिक्षा सम्मेलन किसान सम्मेलन व व्यापार सम्मेलनो का प्रायोजन किया गया। महान्सव मे लगभग ५० हजार लोगो ने भाग लिया।

सम्मेलन मे मव श्री स्वामी धानन्वेश जी धान्तिवेश जी चन्द्रदेव जी, धीरसिंह शास्त्री प्रमपाल शास्त्री बी० प्रियव्रत जी सहदेव वषडक, वीरेश्वरीर भैमप्रथ, धान्ति व्मरूप जीतो, प्रादि अनेक मुख्य वक्ताओ न दश को समस्याओ जैसे शराब का बढता हवा प्रचलन वहेज अनुमान हीनता, राष्ट्रीय सुरक्षा वर्तमान शिक्षा प्रणाली देश की प्रषण्डता किसानो की समस्या प्रादि विभिन्न विषयो पर धन्ये धन्ये विचार व्यक्त किये।

० गजन। जेम सपने मे मिले हा वन जागन पर मिथ्या हो जाते है उम प्र १८ वा क्षत्रिय नवसमरे मे नष्ट ११ गये है उनके दर्शन श्रम शभव नजे है।

३ क्षत्रिय धम मे नवर रहने वाल वर वेदाङ्गो के पारतन यह शूर वीर नरेड पुण्यमयी वीरमति को प्राण हुये है उनके लिए नुनू शोक नह करना चाहिए।

युधिष्ठिर का नगर मे प्रवेश

प्रपना वमशोला वीरमाना बुद्धिमाना द्रोपदी तप पूत व्याससिनि धीर नोति तथा वर्ये क प्रभाव महारा श्रीकृष्ण तथा धरने चारो भाइयो के उत्साहवर्धक शब्दो को नुन युधिष्ठिर को धारमविवशस की ज्योति प्रदात हो गई। सुसज्जित धामके स्वस्थ रथ पर माता कुन्ती महारानी द्रोपदी और द्रष्ट वर्यो से सज्जित भाइया धीर से सहिद उच्च स्वस्थ सन्मिलित विभिन्न वाय ज्यो धीर मस्त गज धन्य प्रादि क रथ पर विराजमान वेद पाठो विद्वान् द्विज वय क गुणगान धीर मयल स्तोत्र पाठ की मवुर वाणी से नूजते हस्तिनापुर नगरो मे सहस्रो वायो शोबल वद नर-नारियो को बिह्व धीर सतत गुण वर्यो सलित सन्नाद युधिष्ठिर ने राजधानी हस्तिनापुर मे प्रवेश कर प्राय ताप्राग्य को चतुर्दिक नहरानी भजना कहराई।

प्राचाय दीनानाथ सिद्धालाल कार क सो ३०/वी प्रशोक विहार दिल्ली-१२

स्वामी धान्दवशाजी को धन्यवाता

मे २४ नवम्बर म चर रह युजुर्ब महाराज की पुर्णहृति २० नवम्बर को हुई। गुरुकुल की पवित्र यज्ञवेदी पर हज रा नर नागियो मे यज्ञोपवीत ब्रह्मचर्य वानप्रस्थ प्रादि की दीक्षाए वी धीर शराव माय, वृषपाल प्रादि सभ्यन् निषिद्ध पदायो को-यान्ने की प्रतिज्ञाए की।

इस महायज्ञ क प्रायक्षोय भाषण म वदो के प्राण्ड विद्वान श्री स्वामी धानन्देश ना महाराज ने प्रपनी पुरातन सस्कृति एव यज्ञो के महत्त्व पर विचार व्यक्त करते हा कथा कि समाज के मयो वर्यो का राष्ट्र उत्थान एव अल्पशता क लिए सन्न क्रिया-शील रहना चाहिए।

सबादावना धानन्देश्वर



अपने तर्कों को एवरेष्ट, प्राकृतिक कलाय व मनोमहुर  
समाप्ति और उर्वर चन्द्र की शक्ति-शक्ति  
समय से महकड़ें।



एम डी एम

शिवाकार्क  
पाउडर

एय की एय शिवाकार्क पाउडर मासो की शीकरी बुर करता है तथा उर्वर माहसि प्राता सुगन्धन व स्वस्थ बनाता है।

शिवाकार्क रौड, शकता हजर बोडा कलक व कलक सुगन्धन बरी बुनिया मे अनायास एय की एय शिवाकार्क पाउडर एक प्रयास साकार हो शक्ति के है। इन्ने कोर् रसायनिक प्रभाव नही है।

एय की एय शिवाकार्क पाउडर का प्राय के ही लिखित प्रयोग कीजिये।

निर्माता  
महासिंघा वी हरी (प्रा०) लि०  
३ 44, इन्डस्ट्रियल एरिया, शीरी अरु  
अर्ध दिल्ली ११००१५  
फोन 538909 537987, 537341

## दांतों की हर बीमारी का घरेलू इलाज

एम डी एच

**दंत मंजन**  
लोगा युक्त

23 जड़ी बूटियों से निर्मित  
आयुर्वेदिक औषधि

उत्तम का दस्तूर



उब नये पैकिंग  
में उपलब्ध

विन्दी मूल्य

महाशिया वी हट्टी (प्रा०) लि०

9 44 इण्डस्ट्रियल एरिया बीकानेर जिला, राजस्थान-334001

फोन 539608 531987 537341



मन्मोही जी मजूमदार



सुहृद् जी शर्मा



ठाकुर जी पाणी



दात का दर्द

## बाबा पृथ्वीसिंह

(पृष्ठ ६ का नेष)

कार व महान समाज सुधारक  
है बताया। उ होने कहा कि पञ्जाब के  
लिए उनकी नवाबों को विधायक  
पिछड़ वर्गों के लिए किए गए कों  
को लम्बे समय तक याद किया  
जाएगा। उनका मृत्यु म अग्रणीय  
वर्षित हुई है।

पञ्जाब और हरियाणा के मुख्य  
मन्त्रियों और धर्मक नवाबों न भा  
बाबा बाबाद का धर्मनी भावभीनी  
प्रभावित धर्मन की है।

सावदेशिक धर्म प्रतिनिधि सभा  
के प्रधान श्री रामगोपाल शानबाहे  
ने कहा—श्री बाबाय पृथ्वीसिंह  
बाबाद स्वतंत्रता सभा के प्रबल  
योद्धा महाविद्वान् के सच्चे धर्म  
यात्री महात्मा गांधी के शिक्षा निदेशन  
ने धर्मक धारोचना म बढ चढ कर  
म म करने वाले राष्ट्र सेवक थे।  
राज्या के

महात्मा गांधी ने कहा निम्न व  
उन्होंने हरिजनो के बीच रहकर उन  
की शिक्षा सहयोग कर सही रास्ता  
दिखाया और उन्हें धर्म परिवर्तन से  
बचाया। प० मदनमोहन मालवीय ने  
उन्हें काशी बुलाकर सम्मानित किया  
और बाबाय शब्द से सम्बोधित

किया श्री बाबाय का भावनिधि  
सभा के उपप्रधान रहे। गुरुकुल  
कागड़ी के कुलाधिपति और पञ्जाब  
प्रतिनिधि सभा के भी प्रधान रहे हैं।  
जीवन के अन्तिम काल में उनकी  
इच्छा सत्याग्रहकाश का गुरुमुखी से  
अनुवाद करने की था जो पूर्ण नहीं  
हा पाई। उनके जाने म धर्मय जगत  
को गहरा खलि पहुँचा है।

सावदेशिक धर्म प्रतिनिधि सभा  
नई दिल्ली दिल्ली बाय प्रतिनिधि  
सभा धर्म के द्वारा सभा दिल्ली  
धर्मसमाज दोबान हाल गुरुकुल  
कागड़ा हरिद्वार आदि अनेक संस्थाओं  
में शोक सवेदना के म दश मिले हैं।

## मानव का कल्याण

(पृष्ठ ६ का नेष)

ऐसे मनुष्य हमेशा धर्म से सामने इस  
उर्विन का अनुसरण करते हैं। होरा  
जनम प्रभाव है वृद्ध से सभा प्यारे  
और वह इस्लाम से सदा यही प्राप्ति  
करता हुआ इस संसार में विचरत  
करता है।

सब का भला कभी भगवान।  
सबका सब विधि हो कायान्ति ॥



उत्तम स्वास्थ्य के लिए

गुरुकुल कांगड़ी फार्मसी,

हरिद्वार की औषधियां

सेवन करें

बाबा कार्यालय—६३, गली राजा कैलाशबा,  
बाबाजी बाबा, दिल्ली-६ फोन: २६१८३८

**गुरुकुल काँगड़ी फार्मसी**

उत्तम स्वास्थ्य के लिए

गुरुकुल कांगड़ी फार्मसी, हरिद्वार

**उ३म**

गुरुकुल काँगड़ी फार्मसी

गुरुकुल काँगड़ी फार्मसी

गुरुकुल काँगड़ी फार्मसी

गुरुकुल काँगड़ी फार्मसी

गुरुकुल काँगड़ी फार्मसी

गुरुकुल काँगड़ी फार्मसी

गुरुकुल काँगड़ी फार्मसी

विन्दी बाय प्रतिनिधि सभा १५, सुभाष रोड, नई दिल्ली-११०००१ के लिए डा० बसपाय द्वारा सम्पादित एवं प्रकाशित तथा  
वैदिक नेष, नवी ०० १५, वैदिकनेषय विन्दी-११ में मुद्रित। रवि ०० १० (मो०) १३६

